पर्दे से प्राप्त संख्या

ओइम् प्राप्त।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

6-11, 18, 19, 39, 42, 45, 46, 49, 51, 52, 57

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वर्ष ६ | अंक १ | रविवार ४ नवम्बर १९८४ | आर्य संवत्सर १९६०८५३०८४ | १९ कार्तिक २०४१ | दयानन्दाब्द—१५८

अलगाववाद की ताकतों का विरोध करना होगा

हम राष्ट्र को खण्डित नहीं होने देंगे सभी देशवासी संकल्प लें

स्वराज्य के मन्त्रदाता महर्षि दयानन्द का दिल्ली में १०१वां भव्य निर्वाण दिवस

आर्य नेताओं का उद्बोधन :

विशाल सार्वजनिक सभा मे महर्षि को श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। महर्षि दयानन्द सरस्वती पहले भारतीय थे जिन्होंने उन्होंने उन्नी-सवीं शताब्दी में सम्पूर्ण मानव समाज के अभ्युदय की बात कही वह पहले भारतीय चिन्तक थे जिन्होंने पूर्ण स्वराज्य की बात कही उसके बाद में दूसरे राजनीतिज्ञों और कांग्रेस ने दुहराया। आज वे ही ताकतें फिर एकजुट हो रही हैं जिन्होंने देश को पहले तोडने की कोशिश की थी धर्म प्रदेश एवं भाषा के आधार पर अलगाववाद की मांग का हमें जम कर विरोध करना होगा पिछला वर्ष झंझावात का बीता है उसमें आर्यसमाज ने अलगाववाद और विखण्डन के विरुद्ध राष्ट्रीय सुरक्षासेना द्वारा की कार्यवाही का समर्थन किया है।' इन शब्दों में सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने दीवाली २४ अक्तूबर, १९८४ के दिन प्रातः रामलीला मैदान में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा आयोजित विशाल जनसभा का उदबोधन किया। भारत सरकार की स्वास्थ्य उपमन्त्रिणी सुश्री कुमुद बेन जोशी ने जनता का आह्वान करते हुए कहा—'आज हम संकल्प करना होगा कि हम राष्ट्र को खण्डित नहीं होने देंगे हमारा पूर्ण स्वराज्य टूटे नहीं, सुदृढ़ और पुष्ट हो इसके लिए आर्यजन प्रयत्नशील हों। नारी को उसका सम्मान दिलाने वाले महर्षि दयानन्द ही थे आर्यसमाज के दस नियम हमारे लिए पथ प्रदर्शक हैं। नई पीढ़ी को उनका अनुसरण करना चाहिए। इस अवसर पर श्री क्षितीश वेदालंकार और श्री वाचस्पति उपाध्याय के भाषण हुए।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री शालवाले ने घोषणा की कि १९२१ में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध निकाले गए जलूस का घण्टाघर में नेतृत्व करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द के नाम पर चांदनी चौक का नाम श्रद्धानन्द चौक रखने का प्रस्ताव दिल्ली प्रशासन ने स्वीकार कर लिया है इससे पूर्व निगम ने चौक पर रामशरण अग्रवाल चौक की पटटी लगाई थी।

आर्य महासम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए प० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार परिद्रष्टा गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हनुमान रोड समाज के प्रधान श्री राममूर्ति कैला उनका स्वागत कर रहे है।

ऐसी उपस्थिति पहले कभी नहीं

इस अवसर पर भाषण देते हुए स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने कहा—आज केन्द्रीय सभा द्वारा चालीसवां बार महर्षि निर्वाण दिवस मनाया जा रहा। परन्तु मैं कह सकता हूं कि यज्ञ व ध्वजारोहण के समय इतनी बड़ी उपस्थिति पहले कभी नहीं रही। हमें स्मरण रखना होगा कि जिस राष्ट्र जन मानस से संस्कृति, परम्पराएं तथा तत्व निकल जाते हैं, उसकी आत्मा खत्म हो जाती है। देश की आत्मा की सुरक्षा के लिए उसकी संस्कृति और सभ्यता की रक्षा करनी होगी।

साहित्य परम्परा और संस्कृति की रक्षा कर ही भारत की आत्मा को चिरजीवी कर सकते हैं। भू पू संसद सदस्य श्री शिवकुमार शास्त्री ने कहा कि महर्षि ने प्रतिकूल परिस्थितियों में कार्य कर भारतीय आत्मा की रक्षा की है। उन्होंने भारतीय महिलाओं को ऊपर उठाया है आर्यसमाज ने क्षेमकरणदास जैसे कायस्थ कुल में जन्मे व्यक्ति को त्रिवेदी बना कर अथर्ववेद का भाष्य करने की क्षमता पैदा की। इसी प्रकार शूद्रकुल में जन्मे प० सुदर्शन देव सच्चे ब्राह्मण होकर वेदभाष्य कर रहे हैं।

सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने १९वीं शताब्दी के युगप्रवर्त्तकों में महर्षि दयानन्द की कार्ल मार्क्स से तुलना की। विरोधी भी आर्य समाज के नियमों की महत्ता स्वीकार करते हैं। महर्षि ने दिल्ली में संसार भर का एक धर्म प्रचलित करने का प्रयत्न किया था।

इस सभा में स्त्री आर्यसमाज पंजाबी बाग की मन्त्रिणी श्रीमती आदर्श कुमार और श्रीमती ए डी कपूर ने श्रीनगर के हजूरी बाग के ध्वस्त आर्यसमाज मन्दिर और आर्य पाठशाला के पुनर्निर्माण के लिए ८०००) आठ हजार रुपए का चैक सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले को भेंट किया। बुधवार २४ अक्तूबर को दीवाली का पर्व दिल्ली भर की आर्यसमाजों आर्य संस्थाओं और आर्यजनता ने आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में १०१ वें निर्वाणोत्सव के रूप में मनाया। प्रातः ८ बजे विशाल यज्ञ हुआ, उसके बाद स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने ओ३म पताका फहराई।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रेमलाल तलवाड़

अग्नि आदि देवता क्यो कहलाते है ?

—मनोहर विद्यालकार

अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता
वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता
विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता यजु० १४।२०

ऋषि विश्वदेव दवता— अग्न्याद्य छ द —भुरिग ब्राह्मी त्रिष्टप

शब्दार्थ (अग्नि) उन्नयन मार्गदर्शन गति कान्ति और भस्म करन वाले तत्व—परमात्मा जीवात्मा मन गुरु ब्राह्मण महापुरुष अग्नि आदि (देवता) स्वय दीप्त दूसरो को दीप्त करन और किसी न किसी रूप म दान करन के कारण देवता है। (वात) गतिमय होकर प्रदूषण तथा दोषो को दूर करने वाल तत्व (सूय) उत्पादन करन प्ररणा दन ए वय मय हान तथा ऐश्वय व प्रकाश देने वाल तत्त्व(चन्द्रमा) अभिलाषाओ का पूर्ण करन तथा आह्लादित करने वाले तत्त्व (देवता) देवता हैं (वसव) निवास का साधन बनने आपत्तियो से आच्छादन द्वारा रक्षा करने व न तथा अधकार को दूर करन वाल तत्व (रुद्रा) उपदेश द्वारा ज्ञान या परिताप देन वाले तथा दण्ड द्वारा अपराधियो को रुलाने वाल तत्व (आदित्या) प्रदूषण तथा अतिरिक्त भाग को लेने वाले अदिति प्रकृति के पुत्र अर्थात उसके निकट रहने वाले तत्व (मरुत) कम बोलकर विविध प्रकार से रोचमान हाने तथा दूसरो को रोचमान करने और अपने व्रत का पूर्ण करन म मरन तथा मारने स न हिचकन वाल (विश्वेदेवा) जगत क अय सब दिव्य गुण सम्पन्न तत्त्व (देवता) देवता हैं (बृहस्पति) बड लोको तथा सस्थानो के पालक तथा रक्षिता (इन्द्र) किसी भी ऐश्वय से सम्पन्न तत्त्व तथा (वरुण) मत पदार्थो तथा भावो को वरण करने और कराने वाल तत्व देवता है

निष्कर्ष —जगत के प्रत्यक पदार्थ म दिव्यता या दान देन और लाभ पहुचान का सामर्थ्य है इसलिए उसे देव या देवता कह सकत है वेद म प्रयुक्त सभी नाम आख्यातज अथात यौगिक है इसलिए प्रत्यक नामवाची शब्द के स्थान और प्रसग की दृष्टि से अनक अथ किए जा सकते हैं। किसी भी नामवाची शब्द को किसी एक पदार्थ क लिए रूढ नही मानना चाहिए। जगत क प्रत्यक पदार्थ म परमात्मा की अदृश्य शक्ति काय करती है इसलिए प्रत्यक पदार्थवाची नाम स अन्तिम अभिधेय वही है प्रत्यक मनुष्य इस मन्त्र मे वर्णित देवताओ म स किसी क भी गुणो को धारण करके देव या देवता बन सकता है।

विशेष इस मन्त्र क ऋषि शब्द का अर्थ व्यक्त करता है कि विश्व का प्रत्यक पदार्थ दिव्य है अथवा वह परमात्मा ही विश्वदेव है उसके गुणो तथा उपयोगो का जानने वाला उनसे लाभ प्राप्त कर सकता है

मन्त्र क प्रत्येक नामवाची शब्द को देवता माना है इससे भी ऊपर के सकेत की पुष्टि होती है कि मन्त्र म आया प्रत्येक नामवाची शब्द देवता के गुणो से युक्त है मन्त्र क छन्द का शब्द अथ व्यक्त करता है कि यदि त्रिष्टुप बन अर्थात काम क्रोध लोभ का अवरोध कर शरीर मन आत्मा तीनो की साधना कर और ज्येष्ठ समवयस्क तथा कनिष्ठ तीनो की स्तुति अर्थात उनके साथ यथ योग्य व्यवहार कर तो प्रत्यक पदार्थ से अपना भरण पोषण कर सकत है और ब्राह्मी स्थिति को प्राप्त करके ब्राह्मगुणो से युक्त होकर कुछ अशो मे ब्रह्मसम बन सकत है

अथपोषक प्रमाण—नामानि आख्यातजानि निरु० १ १२ तन्नाम यनाभिदधाति स त्वम। देवता देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा या दव सा दवता निरु ६ १५। अग्नि —अग्रणी भवति अग्र प्रणीयते अग्नयति स नमन न न म प यति स्नहयति अ ग—नि एति(इणगतौ [illegible] वा दह भस्मी करण के दग्ध को) नि (नीञ प्रापण) वात —वा गतिग धनयो। ग धन हिंसनम सूय —षू प्ररण षूञ प्रसवैश्वयय। षुञ अभिषव। चन्द्रमा — चन्दि आह्लादने दीप्तौच। वसव — वस निवासे वस आच्छादने विवासयति वा तमा। मरुत मितरवति अमितरवति बहुप्रकारम मितममित वा रोच ते रोच यति वा म्रिय ते वा घ्नन्ति पुरुषा रुद्रा — रुत शब्दपदेश कुर्वति रोदयति वा आदित्य आददति आदीप्यन्त वा अदित पुत्रा वा। विश्वेदेवा —सब देवा। बृहस्पति —बृहता लोकाना बृहतो वा जगत पति पालयिता रक्षिता वा इन्द्र —इरा अन्न दधाति धारयति ददातिवा बीज व्रीह्यादि दणानि विदारयति वा इ दव द्रवति गच्छति वा इ दौ रमते इन्ध दीपयति शरीर भूत दि इध्यते प्राण वा इद करोति उत्पादीकराति पश्यति वा। अस्य सवस्य शुभाशुभकमणा द्रष्टा वा। वरुण आव णाति आवियत वा वृणा वरण।

५२२ ईश्वरभवन खारीबावडी
दिल्ली ६

※ दीवाली दयानन्द की ※

लेखिका श्रीमती सुशीलादेवी विद्यालकृता साहित्यरत्न

एक बार महर्षि अरविन्द से किसी ने ने पूछा—आप दयानन्द जी को स्वामी दयानन्द या महर्षि दयानन्द क्यो नही कहते ? सिर्फ दयानन्द ही क्यो कहते है ? महर्षि अरविन्द ने कहा—महर्षि तो भारत भूमि पर अनेक हुए है और स्वामी भी जहा जहा दृष्टिगोचर हो जाते है पर तु भारत की भूमि पर दयानन्द जसा आज तक न कोई हुआ है न होगा। इसलिए मैं तो उन्हे दयानन्द ही कहूगा। वस्तुत दीन दुखियो पर दया करके ही आनन्दित रहने वाले दयानन्द अपने आप मे एक ही थे। दीवाली की रात्रि है। ऋषिदयानन्द का पूर्ण शरीर रोम रोम छालो से भरा पडा है। कोई साधारण व्यक्ति होता तो करा हते कराहते ही कमरा सिर पर उठा लेता पर तु वाह रे दयानन्द! उस पीडा असह्य पीडा म भी मुख पर अनिवचनीय आभा! लोगो न पूछा स्वामीजी आप कहा है ? उत्तर मिला—ईश्वरेच्छा म। सच मुच ही दिल देता ऐसा परवरदिगार द फिर रञ्ज का घडी भी खुशी म गुजार द

पीडा की घडियो म भी सबको आनन्द बाटन वाला अनोखा ही व्यक्ति था दयानन्द। स्वामीजी को अपने दद की चिंता नही थी। चिन्ता थी तो यह कि जाते जाते भी सबके दिलो म प्रकाश की किरण बिखेर कर जाए। प० गुरुदत्त विद्यार्थी नास्तिक थे। प्रभु विश्वास के लिए भी तो प्रभु की कृपा की आवश्यकता है न यमैवष वृणुते तेन लभ्य वहप्रभु कृपा का घडी गुरुदत्त विद्यार्थी के लिए आ पहुच थी। स्वामी जी न भक्तो ने कहा

१ सब खिडकिया दरवाजे खोल दो। २ सब लोग मेरे पीछे आ जाओ। ३ प० गुरुदत्त विद्यार्थी को अपने सामने की दिशा म खडा रहने के लिए कहा प० गुरुदत्त विद्यार्थी ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त थे ऋषि के साथ तक वितर्क करते थे। पर तु उनमे प्रभु पर विश्वास आना न हो सका। महर्षि से कहते स्वामीजी! आपके तक अकाट्य है पर तु क्या करू। मन म विश्वास नही जमता ऋषि कहते वह समय भी आएगा जब विश्वास जमेगा ऋषि ने सोचा। इस अधेरे दीए का प्रकाशित करना है। ऋषि दयानन्द ने प्रभुभक्ति क मन्त्र पढे। ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्र तन्न आसुव। पढा ओ अग्ने नय सुपथा राये भी पढा प्राणायाम द्वारा अपन श्वास बाहर निकाल और अपने प्यारे प्रभु की गोद म जा पहुचे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो गुरुदत्त दख रहे थे कि यह कौन सी अदृश्य शक्ति है जिसके सहारे से इस पीडा म भी ऋषि के चेहरे पर दिव्य तेज है। चमक है। मुसकान है। मानो प्यारे प्रीतम से भेट करने जा रहे हो। जरूर कोई आध्यात्मिक शक्ति है। अधेरा छट चुका था। प्रभु विश्वास का प्रकाश मन म व्याप्त हो गया था। यह थी दयानन्द की दीवाली रजनी की तमपक्ति कहा जब दीपपक्ति जगमग करती। क्या प्रकाश की किरण पाकर रह सकता काली धरती।

१६ ७४ ६ वरदान पुर मारडपल्ली सिकन्द्राबाद (आन्ध्र प्रदेश)

एकता का बल।

पजाब के महाराजा रणजीतसिंह अपनी राजधानी लाहौर म थे कि उन्हे उनके गुप्तचरो ने खबर दी कि कबीली लुटेरो का एक दल सरहद के सूबे के पेशावर शहर म घुस गया है और उसे लूट रहा है। महाराजा रणजीतसिंह ने तुरन्त इलाके के सेनापति को बुलाया और पूछा— आपने पेशावर नगर की सुरक्षा क्यो नही की ? सेनापति ने कुछ सकोच से कहा— महाराज हमारे पास शहर मे केवल १५० सनिक थ और कबीली लुटेरो की सख्या डेढ हजार थी फलत हम उनका मुकाबला नही कर सके।

महाराज रणजीतसिंह ने अपने साथ केवल डेढ सौ सिपाही लिए और वह पेशावर मे लुटेरो की भीड पर टूट पडे। उन सनिको की वीरता और तलवारो के हमले के के सम्मुख कबीली लुटेरे टिक नही सके वे भागते ही नजर आए। लौटकर महाराज ने सेनापति से पूछा— मेरे साथ कितने सिपाही थे और कबीली कितने सिपाही थे ? सेनापति ने कहा महाराज आपके साथ केवल डेढ सौ सिपाही थे और कबीले डेढ हजार थे। महाराज ने कहा— इतने पर भी वे हार गए क्या कारण है? आपकी बहादुरी और रौबदाब के कारण! महाराज ने कहा नही मेरे अकेले की बहादुरी से नही पर सबकी मिली हुई बहादुरी के कारण। इसी एकता से एक एक वीर दुश्मनो के सवा लाख के बराबर हो गया।

—नरेन्द्र

ब्रह्मचर्य से मृत्यु पर विजय

ओ३म ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत ।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्य स्वराभरत ।।अथर्व ११ ५ १६

ब्रह्मचर्य और तप से देवो ने मृत्यु को दूर किया । इन्द्र ने ब्रह्मचर्य से ही देवो अथवा दिव्य शक्ति सम्पन्न इन्द्रियो के लिए तेज एव सुख को धारण किया ।

सत्य एव न्याय का पक्षधर

पत्र के इसी अक मे बडौदा की आर्यसमाज खारीवाव मार्ग के एक उत्साही आर्य कार्यकर्त्ता ने बडी वेदना से एक प्रश्न उठाया है कि जिस आर्यसमाज की स्थापना मे बहुसख्यक जनता के सहयोग के साथ मुसलमानो एव सिखो का योगदान रहा काकडवाडी आर्यसमाज मे शिलान्यास पत्थर मे उनके नाम का उल्लेख है लाहौर मे आर्यसमाज की स्थापना एक मुस्लिम सज्जन के घर हुई फिर क्या कारण है कि उसी आर्यसमाज का पाकिस्तान मे पृथक स्वतन्त्र अस्तित्व नही ? उनका तथा उन जैसे विचारको का कथन है कि जिस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्य एव न्याय के पक्षधर थे वैसे उनके अनुयायी नही रह गए है। महर्षि दयानन्द सरस्वती मुस्लिम विश्व विद्यालय गए तो उन्होने जहा निराकार भगवान की स्तुति की वहा उनके पैगम्बर एव धर्मग्रन्थ की युक्तियुक्त आलोचना करने मे कभी सकोच नही किया। थियोसाफिस्ट आर्यसमाज के सिद्धान्तो के अनुकूल थे परन्तु महर्षि ने किसी भी बड से बडे मानव को खुदा का खास पैगम्बर मानने से इन्कार कर दिया। महर्षि को भारतीय या विदेशी सम्प्रदायो एव मत मतान्तरो से किसी तरह का राग या अनुराग नही था इसके बावजूद उन्होने सब धर्मो के मौलिक सत्य सिद्धान्तो की एकता तथा उनके साम्प्रदायिक दूषणो की कलई खोलने मे कभी सकोच नही किया। वह मत विशेष के आग्रही का उसके अच्छे और बुरे तत्वो को ठीक से समझ कर वेदानुकूल सत्य अप्रकाश के समझने के लिए निरन्तर प्रवृत्त रहने थे इसी कारण इनकी सत्य एव न्यायप्रियता का सभी स्वीकार करते थे।

आर्यसमाज सस्था और इसके सस्थापक महर्षि का सन्देश पिछली सवा शताब्दी से देश विदेशो मे गूज रहा है। इसके प्रारम्भिक जीवन मे इसके सदस्यो एव कार्यकर्ताओ की सत्यनिष्ठा एव उच्च लक्ष्यो के लिए न्यौछावर करने की वृत्ति सभी सराहते थे। स्वाधीनता के सघर्ष का प्रश्न होता था अथवा समाज मे व्याप्त कुरीतियो बुराइयो को दूर करने एव जनता के दुख दैन्य को दूर करने का जब कभी कोई भी प्रश्न उठता था तब उसमे महर्षि के अनुयायी आर्य बन्धु सदा आगे रहते थे प्राकृतिक सामाजिक एव राष्ट्रीय विपदा आने पर ये कर्मठ आर्य बन्धु सदा सर्वदा आगे रहते थे राष्ट्रीय चारित्रिक जन जीवन के वे अग्रणी थे परन्तु आज स्थिति कुछ वैसी नही रह गई। यह ठीक है कि आज ससार भर मे ५ ६ हजार से भी अधिक गिनती मे आर्यसमाज कार्यरत है। इन सस्थाओ के अन्तर्गत सहस्रो शिक्षण सस्थाए अज्ञान को दूर करने मे प्रयत्नशील हैं इसी तरह हरिजनोद्धार नारी समुन्नति कुरीतियो के निवारण मे भी बडी सख्या मे आर्यजन एव सस्थाए कार्य कर रही है। इतने लम्बे जाल के साथ यह भी उल्लेखनीय है कि आज आर्यसमाजो एव आर्यसस्थाओ का भौतिक स्वरूप बहुत विराट हो गया है और विश्व भर मे इस विचारधारा को अगीकार करने वाले भी कोटि कोटि आर्यजनो की गिनती की जा सकती है परन्तु इसके बावजूद प्रदेशो सम्प्रदायो व समाज मे फैली बुराई अन्याय एव अभावो को दूर करने मे सस्था तथा उसके समर्थको का पहला जैसा प्रचण्ड सामूहिक उत्साह देखने को नही मिलता।

यही कारण है कि आज पहले जैसे शास्त्रार्थ देखने को नही मिलते सिखो मुसलमानो ईसाइयो अथवा हिन्दू धर्म के परम्परागत बुराइयो एव न्यूनताओ की ओर इगित कर सच्चे मानवधर्म का सन्देश सुनाने वाले नही मिलते। हमे स्मरण रखना होगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कुरीतियो एव मतवादो से परिपूर्ण कथित विराट हिन्दू समाज के अग रूप मे आर्यसमाज का प्रारम्भ नही किया था। उन्होने तो भारतीय विदेशी सभी सम्प्रदायो की कुरीतियो एव अन्धविश्वासो भ्रान्त धारणाओ का उन्मूलन कर ज्ञान विज्ञान से परिपुष्ट मानव धर्म के प्रतीक वैदिक धर्म का सन्देश सुनाया था। जब वह निराकार भगवान का स्तवन करते थे उसका गुणानुवाद करते थे तब ईसाई मुस्लिम और सिख उनके चरणो मे पहुचते थे परन्तु उनके पहुचने पर वे उनके मतो की कुरीतियो और बुराइयो का पर्दाफाश करने मे रत्ती भर भी सकोच नही करते थे। यदि महर्षि ५९ वर्ष की आयु मे ही बलि नही चढ जाते तो सम्भव था कि वह अपनी शतायु की स्थिति मे उन प्रदेशो का पूरा कायाकल्प कर जाते जहा आज पाकिस्तान का विदेशी निर्माण कर गए हैं। महर्षि निर्वाण के बाद की तथा आर्यसमाज के जीवन की दूसरी शताब्दी मे यदि हम महर्षि के द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण कर बुराई को बुराई और अच्छाई को अच्छाई कहने की दृढता और सच्चाई का अनुसरण कर सके तो अगले वर्षों मे महर्षि और आर्यसमाज का सन्देश ऐसे क्षेत्रो मे व्याप्त हो सकेगा जहा वह आज दिखाई नही दे रहा।

त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत हिन्दी अनिवार्य विषय

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि दिल्ली प्रशासन ने ११ १० ८४ को हिन्दी शिक्षक सम्मेलन मे की गई घोषणा के अनुसार नवी तथा दसवी कक्षाओ मे त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत हिन्दी को अनिवार्य विषय बनाने का निर्णय किया है। इस निर्णय के लिए दिल्ली प्रशासन धन्यवाद का पात्र है और केन्द्र सरकार से आग्रह करते है कि वह इस निर्णय को शीघ्र स्वीकार करे और यह दिल्ली के स्कूलो मे यथाशीघ्र लागू किया जा सके। ग्यारहवी तथा बारहवी कक्षाओ मे सभी विषयो का माध्यम हिन्दी रखा जाना चाहिए ग्यारहवी तथा बारहवी कक्षा के विद्यार्थी भारतीय साहित्य के ज्ञान से वचित न रह जाए इस उद्देश्य से इन कक्षाओ मे किसी एक भारतीय भाषा को विकल्प अनिवार्य किया जाना चाहिए।

वस्तुत हिन्दी को उसका उचित प्रतिष्ठित स्थान केवल तभी मिलेगा जब सभी उच्च शिक्षा की तथा सभी पदो पर नौकरी की परीक्षाओ मे से अग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त की जाए।

डा० कृष्णलाल प्रधान आर्यसमाज एव सयोजक हिन्दी उपसमिति
आर्यसमाज सरस्वती विहार दिल्ली ११००३४

पाकिस्तान मे आर्यसमाज का अस्तित्व क्यो नही ?

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायियो से मैं कहूगा वर्तमान समय मे आर्यसमाज पर गाधीवादी एव गोलवलकरवादी गुटो का वर्चस्व छाया हुआ है यदि आर्यसमाज के अस्तित्व पर इसकी स्थापना से लेकर देश के विभाजन काल तक और तबसे वर्तमान समय तक चिन्तन किया जाए तो यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी क्षेत्रो मे प्रबल पुरुषार्थ करते हुए भी आर्यसमाज का पृथक अस्तित्व बनाए रखने मे पर्याप्त उपेक्षा की गई है अन्यथा आज भी पाकिस्तान मे आर्यसमाज अपना अस्तित्व बनाए रखता एव भारत की राजनीति पर जोरदार प्रभाव डाल सकता था। यह एक मौलिक तथ्य है कि आर्यसमाज के द्वार मनुष्य मात्र के खुले हैं। अब समय की पुकार है कि महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायियो को आर्यसमाज को अपने विशुद्ध स्वरूप मे उभारकर विश्वव्यापी बनाने के लिए अपनी कमर कसनी चाहिए।

—प्रा धर्मेन्द्र धीग्रा आकार कज खारीवाव मार्ग बडौदा । ३९०००१

क्या देव यज्ञ त्रेता युग की कल्पना है ?

श्री युधिष्ठिर जी मीमासक ने अपनी वैदिक स्वर मीमासा मे पृष्ठ ८७ पर लिखा है कि वेदार्थ का क्षेत्र आधिदैविक तथा आध्यात्मिक जगत है परन्तु कालान्तर मे इनके साथ वेदार्थ का एक गौण क्षेत्र यज्ञ भी सम्मिलित हो गया। मनुष्यो की बुद्धि का ह्रास देखकर ऋषियो ने त्रेता युग के आरम्भ मे अग्निहोत्र दर्श पौर्णमास विविध श्रौत यज्ञो की कल्पना की उत्तर काल मे वेदार्थ के वास्तविक अर्थ लुप्त हो गए। और गौण याज्ञिक अर्थ ही प्रधान हो गए मन्त्रो का यज्ञ कर्म के साथ काल्पनिक गठबन्धन कर्मकाण्ड मे मन्त्रो का जो विनियोग किया गया वह इस प्रकार काल्पनिक है—जैसे रामचरित निदर्शन के लिए रची गई रामायण की चौपाइयो का रामलीला के पात्रो के साथ गठबन्धन है। अत यज्ञो के पराधीन होने के कारण याज्ञिक अर्थ गौण है। मन्त्रो का याज्ञिक अर्थ तो ऊपर से जोडा गया है। इसका वेद के साथ कोई सम्बन्ध नही साक्षात कोई सबध नही है क्यो कि यज्ञो का आरम्भ त्रेता युग के आरम्भ मे हुआ। अत एव भावी वेद मे पश्चात भावी यज्ञो का विधान कैसे हो सकता है ? अत वेद के जिन मन्त्रो मे यज्ञ इष्टि क्रतु आदि शब्दो का निर्देश है उनमे भी त्रेता युग के आरम्भ किए गए द्रव्यमय यज्ञो का वर्णन नही है। श्रीमान जी यदि यज्ञ कर्म त्रेता युग के ऋषियो की कल्पना है तो श्री स्वामी दयानन्द जी ने अपने सत्यार्थ प्रकाश सस्कार विधि आदि पुस्तको मे यज्ञ करने का विधान क्या किया है ? और यज्ञ के लाभ वेद मन्त्र क्यो लिखे हैं ? तथा आर्यवर शिरोमणि राजे महाराजे ऋषि महर्षि सब यज्ञ करते थे यदि अब भी यज्ञ करें तो सब सुखी हो जाए।

—आचार्य स्वामी रामेश्वरानन्द गुरुकुल घरौडा करनाल (हरियाणा)

उत्तराखण्ड के सीमान्त प्रदेश मे

राष्ट्र और धर्म-रक्षा अभियान

—**स्वामी वेदमुनि परिव्राजक**, अध्यक्ष—वैदिक संस्थान, नजीबाबाद, उ० प्र०

राम कृष्ण और ऋषि-मुनियो की सन्तानो ! उत्तराखण्ड के सीमान्त प्रदेश गढवाल के पौडी, चमोली, उत्तर काशी और टिहरी जनपदो के निवासियो की अविद्या और निधनता का अनुचित लाभ उठाने के लिए ईसाई इन क्षेत्रो मे स्कूल कालिजो तथा अस्पतालो का जाल बिछाने मे लगे है। ईसामसीह के जन्म दिन पर तेल, साबुन बनियान, कापी पन्सिलो आदि का भरपूर वितरण करते है। दूसरी ओर उस क्षेत्र के सवण हिन्दू शेष हिन्दुओ से घोर घृणा करते है। यह स्थिति यदि अधिक चलती रही तो वहा के अविद्या-ग्रस्त दलित हिन्दू ईसाई बन जाएगे और तब इस सीमान्त प्रदेश की दशा भी नागालैण्ड जैसी हो जाएगी।

नागालैण्ड जो ईसाई बहुलक्षेत्र बन चुका है वहा के ईसाई बने हुए नागाओ को चीन ने छापामार युद्ध का प्रशिक्षण देकर शस्त्रास्त्र दिए और अब लगभग बीस वष से वे लोग देश से विद्रोह कर रहे है तथा भारत सरकार व देश के लिए सिर दर्द बने हुए हैं। गढवाल जैसे सीमात प्रदेश मे जो एकदम चीन की सीमा पर स्थित है यदि ईसाइयत बढती है तो चीन यहा भी शस्त्रास्त्र बाटने और उन हिन्दू से ईसाई बने लोगो को छापामार युद्ध का प्रशिक्षण देने मे नही चूकेगा। उस समय की स्थिति की कल्पना करके भी रोमाच हो आता है। इस स्थिति को उत्पन्न होने से रोकने और देश के लिए वह दुर्भाग्य-पूर्ण अवसर न आने देने के लिए वैदिक संस्थान नजीबाबाद ने कृतसकल्प होकर काय प्रारम्भ कर दिया है।

अविद्या मे पडे हुए दलित निधन जनो मे काय करने के साथ-साथ वहा के सवर्णों मे भी इस बात का प्रचार करना अत्यावश्यक है कि यह दलित वर्गों के लोग घृणा के पात्र नही, अपितु उन्ही ऋषि-मुनियो और राम कृष्ण की सन्ताने है, जिनके आप हैं। वे भी आय थे और उनकी सन्तान होने से आप और ये सब आय (हिन्दू) है। इस प्रकार के प्रचार से सवर्णो मे दलितो के प्रति घृणा की समाप्ति होगी। ऐसा होने से ईसाइयत की गति मन्द हो जाएगी और ईसाइयत से सैद्धान्तिक टक्कर लेकर उसका प्रचार रोका जा सकेगा। यदि उन लोगो के साथ सवर्णों का घृणा का व्यवहार बना रहा तो लाख प्रयत्न करके भी ईसाइयत की बाढ को नही रोका जा सकता। इसी कारण वैदिक संस्थान नजीबाबाद ने वहा के प्रचार के लिए साहित्य वितरण का काय प्रारम्भ किया है।

इस समय 'हिन्दू नही आय' पुस्तक पाच सहस्र छपवाकर वितरित कराई जा रही है और अब 'वर्ण जन्म से नही अपितु गुण कम से' छह सहस्र छप रही है। इसे छपवाने के लिए दान प्राप्त हो चुका है। इसके तुरन्त पश्चात् 'आयसमाज क्या है' पुस्तक की भी लागत ५००)रु है। इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द प्रणीत सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रन्थ का वितरण भी गढवाल क्षेत्र मे कराना है। ४००) सैकडा सत्यार्थप्रकाश का मूल्य है। इसके साथ ही ईसाई मत के विषय मे भी पुस्तक तैयार की जा रही है उनके प्रकाशन और वितरण के लिए भी दानी महानुभावो का सहयोग आवश्यक है।

आर्यो सावधान !

आर्यसमाज की यह निबलता रही है कि वह जाति बन्धन नही तोड सका और महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दो मे 'वतमान जाति भेद को समाप्त किए बिना वर्ण व्यवस्था का क्रम ठीक नही हो सकता।'

हम दिन-रात वण व्यवस्था के गुण-कर्मानुसार होने के पक्ष मे धुआधार भाषण करे और लेख लिखे तथा जन्मगत जाति भेद का खण्डन करे किन्तु जातिभेद को तोडने के लिए तैयार कदापि न हो तो हम ऋषिवर दयानन्द के शिष्य और वेद के भक्त नही अपितु द्रोही प्रमाणित हो जाते है।

वैदिक संस्थान, नजीबाबाद ने मार्च सन्, १९८३ मे सैकडो आयसमाजो को अपने जातिभेद निवारक विभाग की नियमावली व विज्ञप्ति भेजी थी, परन्तु खेद यह है किसी एक भी आर्यसमाज का इस कार्य मे सहयोग प्राप्त नही हुआ हो सो ही बात नही, अपितु प्रतिक्रिया भी उपलब्ध नही हुई।

संस्थान ने अपनी विज्ञप्ति समाजो को इसलिए भेजी थी कि आयसमाजे अपने अपने क्षेत्र से एक एक, दो-दो सदस्य भी संस्थान के जातिभेद निवारक विभाग के लिए बना देगी तो सहस्रो न सही, सैकडो सदस्य तो बन ही जाएगे और इस प्रकार जातिभेद निवारण की ओर हमारा यह एक पग होगा।

व्यवस्था यह बनाई गई है कि जो व्यक्ति अपनी सन्तानो के विवाह जाति-बन्धन तोडकर करना चाहे, वे सदस्य बने तथा ऐसे व्यक्ति जिनके सम्मुख बच्चो के विवाह का प्रश्न शेष न हो, इस कार्य मे सहायतार्थ सदस्य बने। सदस्यता शुल्क १०० रुपए वार्षिक अथवा १० रुपए मासिक रखा गया है। साथ ही यह सूचना भी दी गई थी कि कम से कम २५० रुपए एक बार देकर वैदिक संस्थान के आजीवन सदस्य बनने वाले सज्जन जातिभेद निवारक विभाग के सरक्षक माने जाएगे। यदि कुछ समाजे ऐसी हो, जो जातिभेद तोडकर अपनी सन्तानो के विवाह कर सकने का साहस करने वाले तथा धन द्वारा इस काय को प्रोत्साहन देने वाले सदस्य भी न दे सके तो कम से कम २५० रुपए भेज कर वे समाजें स्वय तो सदस्य बन सकती थी, किन्तु ऐसा किसी एक भी समाज ने नही किया।

आर्यजन स्वय भी सोचे और अपनी समाज के साप्ताहिक और अन्तरग अधिवेशन मे भी इस प्रश्न पर विचार करे कि वतमान परिस्थितियो मे, जब इस्लाम और ईसाइयत हमे हडपने की पूरी शक्ति के साथ जुटे हुए है बिना इस प्रकार के ठोस पग उठाए क्या साप्ताहिक और वार्षिक अधिवेशन और उनमे होने वाले धुआधार भाषण हमे बचा सकेंगे ?

जब कही से भी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नही हुई तब मन को बडी ठेस लगी। हमारे जीवन मे कोई वैदिक आचार नही, हम वेदो का स्वाध्याय करते नही। वैदिक संस्कार और आय पव-पद्धति के अनुसार पर्व हमने अपनाए नही तथा जातिभेद तोड कर हम-सतानो के विवाह करने को तैयार नही तो 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के घोष लगाने मात्र से क्या होगा ?

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है कि "चौका लगाते-लगाते राज्य पाट, धन-धाम सब पर तो चौका लगा दिया और कही जाकर बस भी करोगे।" सोचना पडता है कि यदि गुरुवर आज होते और हमारी इस शोचनीय पीडादायक स्थिति को देखते तो कह उठते कि स्वाहा-स्वाहा करते करते सभ्यता, संस्कृति, आचार-व्यवहार सब कुछ तो स्वाहा कर बैठे और कही जाकर बस भी करोगे।' क्या आय जन इस दिशा मे विचार करने को तैयार हैं ? यदि हा तो दृढ निश्चय के साथ आगे बढिए, आपका स्वागत है। यदि नही, तो परिणाम भोगने और इतिहास के पृष्ठो पर यह अकित कराने को तैयार रहिए कि विषदाता जगन्नाथ ने तो महर्षि दयानन्द के नश्वर शरीर की हत्या की थी, उनके वास्तविक हत्यारे तो उनके मिशन की हत्या करने वाले उनके शिष्य ही हैं, जो घोष तो 'महर्षि दयानन्द की जय, वैदिक धम की जय और आर्यसमाज अमर रहे' के लगाते रहे किन्तु आचरण द्वारा यह सिद्ध करते रहे कि वास्तव मे हम न तो महर्षि दयानन्द के शिष्य हैं न वेदभक्त और न आयसमाजी ही हैं।

श्रद्धा-निष्ठा से आर्य स्त्री समाज का उत्सव सम्पन्न

१२-१०-८४ शुक्रवार हनुमान रोड, आर्य स्त्री समाज का वार्षिकोत्सव मान्या बहिन ईश्वरदेवी जी की अध्यक्षता मे हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। यज्ञ, स्तुति प्रार्थना बहिन कृष्णा जी वडेरा से सौजन्य से विधिवत-बडी श्रद्धा निष्ठा से हुई।

श्री कृष्ण रसवन्त की प्रेरणा से पहाडगज की बहिनो ने भजनो से समा ही बाध दिया। रघुमल स्कल की छात्राओ ने रगारग कायक्रम प्रस्तुत किया। 'वाणी की महत्ता' विशेष प्रेरणादायक और प्रभावशाली रही। अध्यापको ने भी भजन सुनाए।

आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर की छात्राओ ने वेद पाठ किया। कु० क्रान्ति ने 'आचार्य देवोभव' विषय पर प्रभावशाली व्याख्यान दिया। बहनो ने भावविभोर होकर गुरुकुल की कन्याओ को पुरस्कार तथा साधुवाद दिया।

श्रीमती कृष्णा महेन्द्र की कविताए हृदयग्राही रही।

दिल्ली की प्रमुख स्त्री समाजो की प्रतिनिधि बहिनो ने बहुत योगदान किया। विशेषकर, मंदिर माग, करोलबाग और राजौरी गाडन, दीवानहाल इत्यादि ने। भजनो और कविताओ की होड-सी लगी रही। भूतपूव प्रधान शाति मलिक ने अपनी विदेश यात्रा के संस्मरण सुनाए।

श्री उषा शास्त्री और श्री० डा० शशिप्रभा के व्याख्यान मन्त्रमुग्ध करने वाले थे। विदुषी बहिनो का स्वागत भी वैदिक-साहित्य से किया गया। डा० चन्द्रप्रभा तथा प्रकाश शास्त्री की कविताए मनमोहक रही।

—प्रकाश आर्या मन्त्रिणी

श्री सत्यदेव स्नातक द्वारा वेद प्रचार

आयसमाज आनन्दविहार हरिनगर एफ ब्लाक मे १५ अक्तूबर से २१ अक्तूबर तक प्रात ६-३० से ८ बजे तक श्री सत्यदेव स्नातक ने यज्ञ का सचालन एव वेदोपदेश किया। प्रतिदिन रात्रि को ८ से १० तक वीर वीरागनाओ के चरित्रो का व्याख्यान प्रस्तुत किया।

यात्रा-पर्यटन : वैदिक परम्परा में

ऐतरेय ब्राह्मण की एक कथा के अनुसार जब राजा हरिश्चन्द्र का पुत्र उत्पन्न हुआ और कुछ बड़ा हो गया तब वह वन मे पर्यटन के लिए निकल पड़ा। जब जब उसकी वापस लौटने की इच्छा होती थी, तब-तब इन्द्र उसे कहते थे—पर्यटन करते रहो, पर्यटन करते रहो, 'चरैवेति चरैवेति'। पयटन का माहात्म्य बताते हुए वहा कहा है कि जो विचरण करता है उसे ही मधु मिलता है—चरन् वै मधु विन्दति'। दृष्टान्त सूर्य का दिया गया है कि देखो, सूर्य प्राची मे उदय होकर गगन मे यात्रा करता हुआ प्रतीची मे पहुच जाता है और फिर प्रतीची से प्राची मे, यह यात्रा करता हुआ थकता नही है।

सूर्य के समान ही वेदो के अन्य प्रधान देव भी यात्री हैं। उनके वाहनो का भी आलकारिक वणन मिलता है। इन्द्र के वाहन 'हरि' हैं, अग्नि के 'रोहित', आदित्य के 'हरित' अश्वियुगल के 'रासभ' पूषादेव के अज', मरुतो की 'पृषतियां', उषा की 'अरुणवर्णा गौए', सविता के 'श्याव', बृहस्पति के 'विश्वरूप' और वायु के नियुत'। वेदो मे पयटन के साधन मनुष्य के अपने पैर, अश्व, रथ, जलयान, आकाशयान, अग्नियान, विद्युतयान आदि वर्णित हुए है। ऋग्वेद मे 'भुज्यु' की समुद्र यात्रा के प्रसग मे उसके जलीय यान के टूट जाने तथा अश्वियुगल द्वारा उसे समुद्र मे डूबने से बचाकर यानो द्वारा सकुशल यथास्थान पहुचा दिए जाने का वणन मिलता है। 'भुज्यु' समुद्र पार से भोग्य पदार्थों को आयात-निर्यात करने वाला व्यापारी है।

किसी काल मे धार्मिक दृष्टि से भारत मे समुद्र यात्रा निषिद्ध ठहरा दी गई थी, परन्तु वेदो मे समुद्र यात्रा के कई प्रसग आते हैं। अश्वियुगल द्वारा भुज्यु' के समुद्र उद्धार का वर्णन देखिए—

> तिस्र क्षपस्त्रिरहातिव्रजद्भि
> नासत्य भुज्युम् ऊहथु पतङ्गं ।
> समुद्रस्य धन्वन्नाद्रस्य पारे
> त्रिभी रथै शतपद्भि षडश्वै ।।
>
> ऋ १ ११६ ४

यहा समुद्रयात्री 'भुज्यु' को डूबने से बचाने की अश्वियुगल की कार्यकुशलता वर्णित की गई है। जो तीन दिन और तीन रात्रि लगातार चलते हैं ऐसे यानो मे चढाकर अश्वि युगल भुज्यु को उसके पिता के पास लाते है। इस काय मे तीन प्रकार के रथो का प्रयोग करते हैं—जलयान, स्थलयान और आकाशयान। उन रथो मे सैकडों कला यन्त्र लगे होते हैं और अग्नि, वायु आदि छह अश्व जुते होते हैं।

ऋग्वेद मे कहा है कि इन्द्रदेव शुभ उद्देश्य से पयटन करने वाले प्रत्येक यात्री के रथ की रक्षा करत हैं—त्व त्यमिटतो रथमिन्द्र प्राव सुतावत (ऋग् १० १७१ १)। वेद के अनुसार पैदल पर्यटन का भी महत्त्व है। अथववेद मे पैदल चलने या दौडने की क्षमता को वाछनीय बताते हुए लिखा है कि—हे पुरुष, यदि तू घोडे जैसी तेज चाल से तीन या पाच योजन दौड सकता हो और उसी चाल से फिर लौट सकता हो, तभी तुझे पुत्रो का पिता बनने का अधिकार है—

> यद् धावसि त्रियोजन,
> पञ्चयोजनमाश्विनम् ।
> ततस्त्व पुनरायसि,
> पुत्राणा नो असः पिता ।।
>
> अथव ६ १३१ ३

—डा० रामनाथ वेदालंकार

वैदिक साहित्य मे यात्राए कई प्रकार की पाई जाती हैं, यथा विजय-यात्रा, शैक्षणिक यात्रा, व्यापार यात्रा, सास्कृतिक यात्रा। राजा लोग चक्रवर्ती सम्राट् बनने के लिए अश्वमेध यज्ञ करते थे, जिस मे घोडे को साथ लेकर सैनिक सवत्र पर्यटन करते थे। जो घोडे को पकडने का साहस करता था, उसके साथ युद्ध होता था और उसे पराजित कर अपने अधीन कर लिया जाता था। यह एक प्रकार की विजय-यात्रा होती थी।

छान्दोग्य उपनिषद् मे सत्यकाम जाबाल को उसके आचार्य चार सौ गाए सौप कर कहते है कि इन्हे ले जाओ, इनके साथ साथ परिभ्रमण करते रहो जहा ये जाए, जाने दो। जब चार सौ की हजार हो जाए तब लौट कर आना। सत्यकाम पयटन करता रहता है और इसी काल मे प्रकृति-निरीक्षण करते-करते ऋषभ, अग्नि, हस और एक जलचर पक्षी मद्गु के स्वभाव आदि को देखते-देखते उसे क्रमश ब्रह्म के एक एक पाद का ज्ञान होकर चतुष्पाद ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है। यह सत्यकाम का शैक्षणिक पयटन है।

छान्दोग्य उपनिषद मे ही आरुणि का पुत्र श्वेतकेतु पयटन करता-करता पचाल देश के क्षत्रियो की सभा मे जा पहुचता है। राजा प्रवाहण जैवलि उससे पाच प्रश्न पूछते हैं। एक का भी उत्तर उससे नही बनता। तब ज्ञानचर्चा होती है और पाचो रहस्यात्मक प्रश्नो का उत्तर उसे मिल जाता है। इसी प्रसग मे प्राचीन शाल, सत्ययज्ञ, इन्द्रद्युम्न, जन और बुडिल नामक पाच व्यक्ति विभिन्न स्थानो से शैक्षणिक शिविर के लिए एकत्र होते हैं और 'आत्मा कौन है ब्रह्म क्या है ?' इन विषयो पर सेमिनार लगता है।

बृहदारण्यक उपनिषद मे जनक के यज्ञ मे कुरु देश और पचाल देश के सभी प्रमुख ब्राह्मण आकर एकत्र होते है। जनक की यह जिज्ञासा होती है कि इनमे सबसे बडा विद्वान कौन है। वह एक हजार गाए इकट्ठी कर प्रत्येक के दोनो सीगो पर दस-दस स्वर्ण-मुद्राए बाधकर ब्राह्मणो को सम्बोधित कर कहता है कि आपमे जो सबसे बडा ब्रह्मवित् हो वह इन गायो को हाक ले जाए। किसी को साहस करते न देख याज्ञवल्क्य अपने शिष्य सामश्रवा को कहते हैं कि इन गायो को हाक कर ले चलो। याज्ञवल्क्य का दुस्साहस समझकर सब कुपित हो जाते हैं और उसके ज्ञान की परीक्षा लेने के लिए उससे एक एक करके प्रश्न पूछते हैं। यह भी एक अच्छा शिक्षण-शिविर हो गया है, जिसमे अनेक रहस्यमय प्रश्न सामने आते है और याज्ञवल्क्य उन सबका सही उत्तर देते चलते है। इस प्रकार के शिक्षण-शिविर उपनिषद् काल मे प्राय लगते रहते थे।

छान्दोग्य मे एक पयटक उषस्ति चाक्रायण की कथा मिलती है, जो अपनी पत्नी के साथ हस्तिपालो के एक ग्राम मे जा पहुचा था। वहा उसे भिक्षा मे एक हाथीवान से झूठे कुल्माष ही खाने को मिल पाए। उन्ही से उसने क्षुधा शान्त की। अगले दिन उसे पता चला कि कोई राजा यज्ञ कर रहा है। वह वही जा पहुचा और यज्ञ के पुरोहितो को चैलेंज दे बैठा कि यदि तुम अपने अपने काय के देवता को बिना जाने यज्ञ-काय करा रहे हो तो तुम्हारा मूर्धा गिर जाएगा। अन्त मे उस का पाण्डित्य देखकर राजा ने उसी को मुख्य पुरोहित के रूप मे वर लिया। इस प्रकार उपनिषदो मे कोई विद्वान् यत्र-तत्र अपनी विद्वता का सिक्का जमाने के लिए भी पयटन करते दिखाई देते है।

व्यापार यात्राए भी होती हैं। इस प्रसग मे भुज्यु की समुद्र यात्रा का उल्लख पूव किया जा चुका है। अथववेद के वाणिज्य सूक्त मे द्यावा पृथिवी के मध्य मे विद्यमान आकाश मार्गो द्वारा वणन है—

> ये पन्थानो बहवो देवयाना
> अन्तरा द्यावापृथिवी सचरन्ति ।
> ते मा जुषन्ता पयसा घृतेन
> यथा क्रीत्वा धनमाहराणि ।।
>
> अथव ३ १५ २

अपनी सस्कृति के प्रचार के निमित्त सास्कृतिक यात्राओ का सकेत भी वेदो मे मिलता है। इन यात्राओ द्वारा हम अपनी सस्कृति को विश्व मे फैला सकत हैं—सा सस्कृति प्रथमा विश्ववारा (यजु० ७ १४)। प्राचीन आर्य लोग इस वैदिक सन्देश का अनुसरण करके अमेरिका, चीन, जावा, सुमात्रा आदि मे अपनी सस्कृति का प्रचार करते रहे हैं। विभिन्न देशो की चित्रकला, मूर्ति, प्राचीन सिक्को आदि से ये तथ्य प्रमाणित होते है।

१।११६ फूलबाग पन्तनगर (नैनीताल)

एक की महत्ता

लेo स्वामी स्वरूपानन्द, अधिष्ठाता वेदप्रचार वि, दि आ प्र सभा

एक ओ३म को ध्याइए, सकल प्रपञ्च विसार।
सर्वोत्तम प्रिय नाम यह, सुमरो बारम्बार ।।

खेल रहे है खिलाडी, एक गेंद से खेल।
एक नजर की चूक से, हो जात है फेल ।।

देखो गाडी रेल मे, डिब्बे रहे अनेक।
ले जाता है खीचकर, सबको इजन एक।।

एक सूय आकाश मे, देता है प्रकाश।
एक सत्य के वचन का, करे सभी विश्वास।।

एक ही भला सपूत है, कुल की राखे लाज।
एक ही शुद्ध विचार से, सफल होय सब काज।।

एक पूर्णिमा चन्द्र से, खिले चादनी रात।
एक दूल्हा के साथ मे, शोभा देय बारात।।

एक अकेले ने किया, वेदो का प्रचार।
दयानन्द ऋषिराज को, जाने सब ससार।।

जाना सबको एक दिन, छोड जगत जजाल।
सबके सिर मडरा रहा, एक काल विकराल।।

एक व्रत धारण करो, रहो स्वस्थ सानन्द।
एक ईश की शरण गह, पाओ परमानन्द।।

चण्डीगढ़ का प्रश्न अबोहर-फाजिल्का से जुड़ा

प्रधानमन्त्री का कथन चण्डीगढ़ पंजाब का ही है, अर्द्ध-सत्य है–प्रो० शेरसिंह

समाचार पत्रो मे प्रकाशित प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के उस वक्तव्य पर जिसमे उन्होने कहा है कि 'चण्डीगढ तो पजाब का ही है' पर अपनी प्रतिक्रिया करते हुए हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो शेरसिंह ने प्रधानमन्त्री के कथन को अर्द्ध सत्य कहा है। उन्होने स्मरण करवाया है कि प्रधानमन्त्री ने चण्डीगढ के बदले अबोहर फाजिल्का हरयाणा को देने का एवाड दिया था। अत चण्डीगढ पजाब को दिया जाता है तो अबोहर फाजिल्का पर हरयाणा का पूरा अधिकार है। उन्होने स्पष्ट किया कि शाह कमीशन के फैसले के अनुसार चण्डीगढ को हिन्दी भाषी क्षेत्र मानकर हरयाणा मे शामिल करने का निर्णय था, परन्तु प्रधानमन्त्री ने अकाली नेता सन्त फतेहसिंह की जान बचाने के लिए ही शाह कमीशन के निणय को बदलकर चण्डीगढ पजाब को तथा अबोहर-फाजिल्का हरयाणा को देने का एवार्ड दिया था।

प्रो० शेरसिंह ने अपने वक्तव्य मे प्रधानमन्त्री को सुझाव दिया है कि चण्डीगढ पजाब को देने से पूर्व अबोहर फाजिल्का हरयाणा को सौंपा जाए। अन्यथा हरयाणा की जनता इस अन्याय को सहन नही करेगी।

बालावास मे शराब का ठेका बन्द होने पर आर्य विजय-महोत्सव

आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ की ओर से ग्राम बालावास जिला हिसार मे १४ अप्रैल से शराब के ठेके पर धरना आरम्भ किया गया था। यह धरना निरन्तर ६ मास तक जारी रहा और धरना स्थल पर प्रतिदिन यज्ञ, सत्सग तथा शराब के विरुद्ध प्रचार किया गया। इस प्रकार शराब की बिक्री बन्द हो गई। हरयाणा के इतिहास मे यह इस प्रकार का एक प्रथम उदाहरण है।

अन्तत जनशक्ति के सामने शराब के ठेकेदार तथा सरकार ने ८ अक्तूबर को इस ग्राम का ठेका बन्द कर दिया। इसी उपलक्ष्य मे बालावास मे १४ अक्तूबर को आर्य विजय महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर हासी, लाडवा, कवारी, मुजादपुर, उमरा, सुलतानपुर, धनाना, भोजराज, गारणपुरा कला, नूरा, नलवा, दुमेठा डोभी, मुकलान, धीरणवास, आर्यनगर, दौराला, मानशान, तोशाम, शाहपुर, सागा, हिसार दिल्ली, रोहतक, भिवानी, भिवानी, खानक आदि स्थानो से भारी सख्या मे नर-नारी उपस्थित हुए।

आर्यसमाज निर्माण विहार नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज निर्माण विहार (यमुना पार) नई दिल्ली का चतुर्थ वार्षिकोत्सव १७ अक्तूबर से २१ अक्तूबर, १९८४ तक सेन्ट्रल पार्क निर्माण विहार मे बडे समारोह पूर्वक मनाया गया। १८ से २० अक्तूबर तक प्रात यजुर्वेद महायज्ञ हुआ। जिसके ब्रह्मा प० विश्वामित्र मेधावी, कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय सिराथू (इलाहाबाद) थे। रात्रि को श्री मेधावी जी के प्रभावशाली प्रवचन होते रहे।

२१ अक्तूबर को प्रात १० बजे यज्ञ की पूर्णाहुति हुई जिसमे श्री विद्याप्रकाश सेठी, श्री सूर्यदेव, प्रधान दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा, श्री कुन्दनलाल भाटिया, सनातन धर्म सभा (प्रीति विहार वाले) ने भाग लिया। १० बजे से १ बजे तक राष्ट्रीय एकता सम्मेलन ला रामगोपाल शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक सभा की अध्यक्षता मे बडी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमे श्री रामचन्द्र विकल सदस्य राज्यसभा, आचार्य हरिदेव व प० विश्वामित्र मेधावी व अन्य विद्वानो ने अपने विचार रखे। अन्त मे श्री विद्याप्रकाश सेठी के कर कमलो द्वारा सत्यार्थप्रकाश परीक्षाओ मे उत्तीर्ण बच्चो को प्रमाण-पत्र दिए गए।

आर्यसमाज विनय नगर वाई ब्लाक सरोजिनी नगर नई दिल्ली के तत्वावधान मे वेद प्रवचन

सरोजिनी मार्किट पार्क (पजाब नेशनल बैंक के सामने) सोमवार ५ नवम्बर १९८४ से १० नवम्बर १९८४ तक रात्रि ७ ३० से ६ बजे तक आचार्य पुरुषोत्तम जी वेदकथा किया करेंगे। श्री सत्यदेव स्नातक (रेडियो सिंगर) के मनोहर भजन होंगे।

नवयुवको को प्रोत्साहन दीजिए

आर्यसमाज एक पवित्र धार्मिक सस्था है, यह एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है। धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक उन्नति के लिए जाग्रत करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। वेद ईश्वर की कल्याणी वाणी है। वेद का पढना-पढाना और सुनना सुनाना सभी आर्यों का परम कर्तव्य है। वेद और मनुस्मृति के आधार पर महर्षि स्वामी दयानद ने 'सत्यार्थप्रकाश' जैसे अमूल्य ग्रन्थ को लिख कर रास्ते से भटके लोगो को नई दिशा दी। वेद को छोडकर सत्यार्थप्रकाश जैसा अन्य ग्रन्थ नही हो सकता। वैदिक साहित्य का स्वय भी अध्ययन करें और दूसरो को भी स्वाध्याय करने की प्रेरणा दें। आज की युवा पीढी आर्यसमाज से विमुख होती जा रही है। सभी पुराने आर्यसमाजियो को नवयुवको को प्रोत्साहन देना चाहिए उन्हे आर्यसमाज मे आगे आने का अवसर देना चाहिए अपनी धर्मपत्नी, लडके, लडकियो व परिवार के अन्य सदस्यो को आर्यसमाज मे लाना चाहिए जिससे वे आर्यसमाज के कार्यक्रमो मे रुचि लें।

—पुष्पकर लाल आर्य १०७ हाऊसिंग बोर्ड कालोनी, भिवानी (हरियाणा)

आर्ययुवक महासम्मेलन ११ नवम्बर को होगा

आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग मे ६० वे वार्षिकोत्सव पर ११ नवम्बर को दोपहर २ बजे से ५ बजे तक आर्ययुवक परिषद् के तत्वावधान मे आर्ययुवक महासम्मेलन किया जाएगा। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री आर्यनरेश होगे और ध्वजारोहण दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री विद्याप्रकाश सेठी करेंगे सम्मेलन का उद्घाटन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामत्री डा० धर्मपाल आर्य करेंगे। मुख्य अतिथि आर्यसमाज पश्चिम बिहार के प्रधान श्री हीरालाल चावला होगे। प्रो० सारस्वत मोहन महीषी डी ए वी कालेज अबोहर, प्रो० वेदसुमन वेदालकार डी ए वी कालेज करनाल आदि के भाषण होगे और आर्ययुवक आसन, दण्ड बैठक, लाठी तलवार, जूडो-कराटे बाक्सिग के प्रदशन करेंगे।

आर्यसमाज गोविन्दपुरी का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज गोविन्दपुरी (कालका जी) नई दिल्ली-१९ का ११ वा वार्षिकोत्सव २५ से २८ अक्तूबर तक मनाया गया। उसमे स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। रात्रि का स्वामी दीक्षानन्द जी की कथा हुई। २६ अक्तूबर के दिन आर्य महिला सम्मेलन किया गया। २८ अक्तूबर को आर्य सम्मेलन मे स्वामी दीक्षानन्द जी एव प शिवकुमार शास्त्री के भाषण हुए। ऋषि नगर आर्य स्त्री समाज के सहयोग से किया गया।

गुरुकुल शुक्रताल का वार्षिकोत्सव

बसप्रचाराथ बसो की विशेष व्यवस्था

वैदिक योग श्रम गुरुकुल शुक्रताल का बीसवा वार्षिकोत्सव ५ से ८ नवम्बर तक हो रहे है। इस अवसर पर म सव पारायण महायज्ञ भी हो रहा। जिसकी पूर्णाहुति ८ नवम्बर को होगी ५ नवम्बर को योग साधना शिविर आयोजित होगा। उत्सव पर ब्रह्मचारी योगासन व्यायाम ल ठी सरिया माडना जजीर तोडने काच पीसन आदि के कायक्रम प्रदर्शित करगे।

उत्सव का आयोजन कार्तिक पूर्णिमा क अवसर पर किया जा रहा है जब गगा स्नान के लिए लाखो नर नारी गगा तट पर बसे शक्रताल आते है। आयसमाज का स देश प्रचारित प्रसारित करने के लिए यह अच्छा अवसर है दि ली आय प्रतिनिधि सभा की ओर से गुरुकुल जाने के लिए विशेष व्यवस्था की गई है। ७ नवम्बर का प्रात ७ बजे आयसमाज करौल बाग से बस चलगी और वापसी ८ नवम्बर को दोपहर २ बजे होगी। बस दिल्ली साय ५ बजे पहुचेगी दस से अधिक सवारिया होने पर उ हे सम्बन्धित समाज से लिया जाएगा। प्रति व्यक्ति बसो का किराया ३२) है निवास और भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से की गई है यह गुरुकुल दि ली से ८० मील दूर मुजफ्फर नगर के पास है जो सज्जन अपनी कारो स जाना चाह जा सकते है। इस अवसर पर दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा की ओर से उपदेशक प्रचारक और प्रचार वाहन भेजने की व्यवस्था की गई है। सीटो का आरक्षण दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा कार्यालय (३१०१५० फोन) या आयसमाज करोलबाग ५६७४५८ पर ५ नवम्बर तक करवा सकते हैं। बस व्यवस्था के सयोजक श्री रामलाल मलिक हैं।

मस्जिद मोठ क्षेत्र मे ग्राम प्रचार

मस्जिद म ठ क्षत्र मे दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा और दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के सयुक्त तत्वावधान म दि० २७ १० ८४ चौधरी भद्रसेन पटवारी की अध्यक्षता मे ग्राम प्रचार क य सम्पन्न हुआ श्री ईश्वरचद मारल इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। सभा के भजनोपदेशक श्री चुन्नीलाल और श्री वेदव्यास जी ने सु दर उपदेश किया। सभा की प्रचार वाहन भी वहा पर गई जिसमे कसेट और लाउडस्पीकर आदि लगा है।

स्मरण रखें कि दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह मे दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे क्ष त्रीय महर्षि निर्वाण शताब्दी मनाई जाएगी। अपना सक्रिय सहयोग दें।

सीवान मे शुद्धि सस्कार

हि दू धम से बिछडकर मुस्लिम सम्प्रदाय म गए हुए ग्राम तुलसीपुर पो० पचफडवा जिला फैजाबाद निवासी दा राजपूत महानुभावो का उनकी इच्छानुसार सीवान आयसमाज प्रागण मे आय सस्दयो एव अ य प्रतिष्ठित सज्जनो की उपस्थिति में ता० १६ ९ ८४ को शुद्धकर पुन वदिक धम मे सम्मिलित किया गया तथा उक्त शुद्ध किए गए शाबीर हुसनखा का श्री शकपालसिह तथा मुहम्मद मुस्लिमखा का शिवपालसिह नामकरण किया गया।

सीवान आयसमाज प्रागण मे ता० २२ २ और २४ सितम्बर ८४ को वेद कथा एव वेद प्रचार काय सम्पन्न हुआ।

करनाल मे श्री देवीदास आय का अभिनन्दन

करनाल आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान मे आयोजित महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह के अवसर मे विख्यात महिला उद्धारक आयसमाजी नेता श्री देवीदास आय (कानपुर) का नागरिक अभिनन्दन किया गया। अभिनन्दन पत्र मे हजारो पतित कन्याओ व महिलाओ को गुण्डो से मुक्त कराने विधर्मियो को हि दू धम शामिल करने तथा अन्य समाज सुधार के कार्यों की भूरि भूरि प्रशसा की गई।

शत शत प्रणाम :—

(शरर एम ए)

आतुङ्ग हिमालय श ङ्ग तुल्य उज्ज्वल महान
गम्भीर पर पावन चरित्र गगा समान।
ओ ब्रह्मचय साकार दिव्य जीवन अनप पाखण्ड दम्भ के लिए उग्र विद्रोह रूप
ओ दया अहिंसा स य याय के चम कार—ओ अबला दीन अनाथ दलित के चीत्कार
ओ पयोदधि से शा त बिजलिया से विह्वल
ओ प्रखर तेज मे सूय च द्रमा से शीतल
निर्भीक तपस्वि पवित्र ट कोप न धारि—ओ आय ऋषिवर दय नन्द ओ ब्रह्मचारि
ओ जगहित निज जीवन अर्पित करन वाले
विष पी पी कर भी पीडा हरने वाले
ओ तेजस्वि ओ क्रा तदर्शी आ स यकाम
युगपुरुष हमारा युग युग तक तुमको प्रणाम।

स्वराज्य मन्त्र के उदगाता महर्षि दयान द

४ नवम्बर रविवार रात्रि ८ १५ पर आकाशवाणी के दि ली ए क द्र स प्रो० जयदेव आय की एक वार्ता प्रस रित होगा जिसका विषय है— स्वरा य म त्र क प्रथम उदगाता—महर्षि दयान द।

नागालैंड में वेद प्रचार कार्यक्रम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री वेद व्यास आर्य ने ८ अक्तूबर से २० अक्तूबर तक भारत के पूर्वोत्तर अंचल में अवस्थित नागालैंड की यात्रा की। इस यात्रा में स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती श्री पृथ्वीराज शास्त्री कोषाध्यक्ष श्री वेदप्रकाश मेहता और श्री तनेजा भी गए थे।

दीमापुर में १२ अक्तूबर से १८ अक्तूबर तक दयानन्द सेवाश्रम के विद्यालय में स्वामी दीक्षानन्द जी ने महायज्ञ कराया रात्रि को वेदोपदेश एवं भजनोपदेश का आकर्षक कार्यक्रम हुआ जिसमें स्थानीय जनता ने उत्साह से भाग लिया। एक विशेष कार्यक्रम में १५ अक्तूबर के दिन सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले तथा सभा मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने जनता का उद्बोधन किया।

दशहरा पर्व और रावण वध—

आर्यसन्देश के अक्तूबर के अंक में श्री कृष्णदत्त का लेख राम आदरणीय ही नहीं अनुकरणीय भी हैं पढ़ा। लेखक की भावनाओं से सहमत होना आवश्यक है किंतु ऐतिहासिक तथ्य यह है कि राम ने रावण का वध आश्विन में नहीं अपितु चैत्र में किया था जैसा कि वाल्मीकि रामायण से विदित होता है। वस्तुतः यह पर्व विजयदशमी का है जो क्षात्रधर्म में स्वीकृत विजय यात्राओं तथा अस्त्र शस्त्रों के प्रदर्शन से सम्बद्ध है। इस विषय में मैं अधिक जानकारी के लिए महात्मा अमर स्वामी रचित पुस्तक क्या रावण विजयदशमी को मारा गया था? पढ़ने की संस्तुति करता हूं।

डा० भवानीलाल भारतीय चण्डीगढ़

मस्जिद मोठ में ग्राम प्रचार कार्यक्रम

७ अक्तूबर को ।। से १ बजे तक चौधरी भद्रसेन पटवारी की अध्यक्षता में दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में महिला मण्डल आर्य जनरल स्टोर मस्जिद मोठ के समीप ग्राम प्रचार कार्यक्रम हुआ। इसमें संगीताचार्य श्री चुन्नीलाल और संगीताचार्य वेदव्यास के भजन हुए।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा आयोजित १०१वें महर्षि निर्वाण उत्सव पर रामलीला मैदान में आयोजित विशाल सभा को सम्बोधित करती हुई केन्द्रीय स्वास्थ्य उपमन्त्रिणी सुश्री कुमुद बेन जोशी। मंच पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले स्वामी विद्यानन्द सरस्वती डा० धर्मपाल महाशय धर्मपाल श्री सूर्यदेव श्री रतनचन्द सूद उक्त सभा के अवसर पर भाषण देते हुए श्री क्षितीश वेदालंकार।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारीलाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४ रघुबरपुरा न० २

रजि० न० डी (सी०) ७५

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वर्ष ८ अंक २ रविवार ११ नवम्बर १९८४ आर्य संवत्सर १९६०८५३०८४ २५ कार्तिक २०४१ दयानन्दाब्द १५८

अलगाववादी देशी-विदेशी षड्यन्त्रों का घृणित परिणाम

प्रधानमन्त्री इन्दिरागाधी की हत्या : भारतीय लोकतन्त्र को गहरी क्षति

गुप्तचर व्यवस्था प्रधानमन्त्री को रक्षा करने मे सर्वथा विफल रही

राष्ट्र के नेताओ को भावपूर्ण श्रद्धांजलियो

नई दिल्ली । ३१ अक्तूबर १९८४ के दिन प्रात ९ । बजे प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी पर उनके सफदरजग नई दिल्ली स्थित निवास स्थान पर उनके दो सुरक्षा अगरक्षको द्वारा गोलिया मारकर हत्या कर दी गई। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान सस्थान म उनके १६ गोलियो से छलनी शरीर ने प्राण त्याग दिए । प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या का सभी राजनीतिक दलो और नेताओ द्वारा लोकतन्त्र पर भारी आघात बताया गया । भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई ने कहा— लोकतन्त्र को आतकवाद और मता धता से बचाना सभी का कत्तव्य है । दलित मजदूर किसान पार्टी के नेता श्री चरण सिंह ने कहा— यह मानना पडगा कि देश के इतिहास मे उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है । उनकी हत्या मे प्रत्येक देशभक्त को आघात पहुचा है । भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा— उनकी हत्या से समूचे राष्ट को गहरा आघात पहुचा है । जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री चन्द्र शेखर ने कहा— महात्मा गाधी की हत्या के बाद यह हमारे सावजनिक जीवन का सबसे दुखान्त घटना है । काग्रस (ज) क अध्यक्ष श्री जगजीवनराम ने कहा— 'श्रीमती गाधी की हत्या से देश पर भारी विपदा आ गई है । उनकी हत्या से स्पष्ट है कि हमारी गुप्तचर व्यवस्था प्रधानमन्त्री की सुरक्षा करने से पूणतया असफल रही है ।

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री रामगोपाल शालवाले और महासचिव श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने श्रीमती गाधी के जीवन पर कायरतापूण हमले की निन्दा करते हुए उसे देश का विघटन चाहने वाली अलगाववादी देशी विदेशी गहरे षडयन्त्रो का परिणाम कहा । उन्होने भारतीय जनता और राजनीतिक दलो से अपील की है कि उन्हे देश को अस्थिर करने के लिए प्रयत्नशील और राष्ट्र के शत्रुओ को पहचान कर उनका कडा सयुक्त मुकाबला करना चाहिए ।

भारत मा के रूप मे बलि दे दी

इन्दिरा जी के बलिदान पर श्री शालवाले दीवान हाल आर्यसमाज मे शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज दीवान हाल के साप्ताहिक सत्सग के बाद भारत का प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की दर्दनाक हत्या पर प्रस्ताव पारित किया गया । सभा को सबोधित करते हुए सावदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा कि श्रीमती गाधी की दर्दनाक हत्या से समूचा ससार हिल गया है । श्रीमती गाधी ने जिन लोगो पर विश्वास किया उन्होने विश्वासघात करके आश्चर्यचकित कर दिया

श्रीमती इन्दिरा गाधी

याद हमेशा करेगा भारत देश तुम्हे
अमर जगत मे हो गया इन्दिराजी का नाम ।

भारत की स्वतन्त्रता अखण्डता और प्रभुसत्ता की रक्षा करते हुए उन्होने अपने शरीर की अन्तिम बूद भी बलि दे दी

गाधी को श्रद्धाजलि अभी तक भारत माता की कल्पना करके ही लोग जयजयकार करते थे । उन्होने तो साक्षात भारत माता का रूप धारण करके अपना का बलिदान किया है

हिसा देश के लिए कडी चुनौती

इन्दिरा जी का बलिदान राष्ट्रीय एकता के लिए

—श्री बाल्दे

आर्यसमाज अजमेर के प्रधान तथा तथा दयानन्द कालेज अजमेर आदि आर्य समाज की शिक्षण सस्थाओ के मन्त्री और रेडक्रास के चेयरमैन श्री दत्तात्रय बाल्दे ने श्रीमती इन्दिरा गाधी के असामयिक निधन पर शोक सवदना व्यक्त की है ।

उन पर किए गए कायरतापूण और विश्वासघाती आक्रमण की निन्दा करते हुए उन्होने कहा है कि हमारे देश की राजनीति मे हत्या और हिंसा का उदाहरण सारे देश के लिए चुनौती है ।

श्रीमती इन्दिरा गाधी ने देश की अखण्डता स्वतन्त्रता और एकता के लिए जीवन भर दृढता से जो सघष किया, उसी के लिए यह उनका एतिहासिक बलिदान हुआ है ।

विश्व मे सम्मानजनक स्थान दिलाया

प्रधानमन्त्री की हत्या अत्यन्त निन्दनीय

दिल्ली सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव का वक्तव्य

नई दिल्ली । दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूयदव ने एक प्रस वक्तव्य मे घोषित किया है कि देश की लोकप्रिय नेता प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरागाधी की जघन्य हत्या की सारा आयजगत कड शब्दा मे निन्दा करता है । श्रीमती गाधी ने देश को विश्व क राष्ट्रो एव अन्तर्राष्ट्रीय क्षत्र मे सम्मानजनक स्थान दिलाया था । हम आज इस विपत्ति के समय प्रण लेना चाहिए कि राष्ट की अखण्डता के लिए प्राणपन से काय करते रहगे ।

शहादत से सीख लें : अखण्डता रखें

इन्दिरा जी का निधन मानव मात्र की क्षति—शालवाले

नई दिल्ली । सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने एक प्रस वक्तव्य मे घोषित किया है कि श्रीमती इन्दिरा गाधी का निधन केवल भारत के लिए नही मानव मात्र के लिए एक महती क्षति है । सारा आयजगत इसमे शोक सन्तप्त एव स्तब्ध है तथा इस निलज्ज हत्याकाण्ड की भर्त्सना करता है । हमे आशा है कि राष्टवादी शक्तिया श्रीमती इन्दिरा गाधी की इस शहादत से पाठ लेकर राष्ट की अखण्डता के लिए एकजुट होकर काय करेंगी ।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

परमात्मा हमारी राक्षसो व धूर्तो से रक्षा करे

—प्रेमनाथ एडवोकेट

पाहि नो अग्ने रक्षस पाहि धूर्तेराव्ण ।
पाहि रिषत उतवा जिघासतोबृहद्भानो यविष्ठ्य ।।
(ऋ० १।३६।१२)

घोर काण्व-ऋषि अग्नि देवता, विराट् पथ्या बृहती छन्द, मध्यम स्वर ।

शब्दार्थ—[बृहद्भाननो] हे महान् तेज वाले [यविष्ठ्य] बलवत्तम [महान् अनन्त बल वाले] [अग्ने] ज्ञान स्वरूप सर्व पूज्यो दुष्टो को दग्ध करने वाले [न] हमारी [रक्षस] राक्षस अर्थात् हिंसाशील दुष्ट स्वभाव मनुष्य से [पाहि] रक्षा करो (वान) हमारी [धूर्ते] विश्वास घातक छली कपटी (वा) [अराव्ण] दान धर्म रहित कृपण मनुष्य से [पाहि] हमारी रक्षा करो। [उत] और [रिषत] व्याघ्रादि हिंसक प्राणियो से [वा] अथवा (जो दुष्ट अथवा पागल) [जिघासत] (हमे मारने की जो इच्छा करता है उससे भी [पाहि] हमारी रक्षा करो ।

व्याख्या—इस वेदमन्त्र मे परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि वह हमे राक्षसो, धर्तो, स्वार्थी कृपण (जो धन होते हुए भी कुछ भी दान नही करते) मनुष्यो वा हिंसक (व्याघ्र सर्वादि) जीवो से हमारी रक्षा करे ! कोई भी प्रार्थना हमारी सफल नहीं हो सकती जब तक हम उसके लिए स्वय पुरा पुरुषाथ न करें, व्यक्तिगत अथवा मिलकर अथवा शासन (सरकार) की सहायता से। इसके लिए हमे बलवान् होना चाहिए और सब साधनो उपसाधनो से सुसज्जित होना चाहिए, आपस मे मेल-मिलाप से एक दूसरे की सहायता करते हुए रहना चाहिए वा शासन पूरा प्रजातान्त्रिक होना चाहिए और शासनवर्ग मे कोई छली कपटी स्वार्थी हिंसक नही होना चाहिए। इसके लिए हमे लोकसभा अथवा विधानसभा आदि के चुनावो मे बिना किसी जाति आदि के भेदभाव के धार्मिक (सदाचारी) विद्वानो को ही मतदान करना चाहिए। ताकि हमारे देश मे अथवा ससार मे रामराज्य (शाति सपन्न) ही हो।

अग्ने इस वेद मन्त्र मे परमात्मा को 'अग्ने' कहकर सम्बोधित किया गया है। 'अग्नि' शब्द अग-गतु' धातु से निकला है जिसके अर्थ हैं ज्ञान, गमन, प्राप्ति वा पूजा के। परमात्मा ज्ञानस्वरूप सर्वज्ञ व्यापक, सबको प्राप्त करने वा पूजा के योग्य होने से उसको 'अग्नि' कहते हैं। वह अग्रणी (हमारा सबका नेता) वा दुष्टो का दाहक होने से भी उसको अग्नि कहते है।

रक्षस—'रक्षस' शब्द के अर्थ है 'राक्षस' के अर्थात् जो अपने स्वार्थ की रक्षा करता है और इसके लिए छल, कपट, चोरी, डाका वध आदि करता है।

अराव्ण—यह शब्द 'रा' धातु से निकला है, जिसके कार्य दान' करने के है और दान धर्म से रहित कृपण दुष्ट मनुष्य है उसको अराव्ण कहते हैं अर्थात् परमात्मा हमे 'अराव्ण' जो दानशील नही उससे भी हमारी रक्षा करे। इस शब्द का रामायण वाले रावण से कोई सम्बन्ध नही।

भावार्थ—सब मनुष्यो को चाहिए कि वे सब प्रकार रक्षा के लिए सर्वाभिरक्षक परमात्मा से सर्वदा प्रार्थना करें और अपने आप भी बलवान् हो या दुष्ट स्वभाव वाले प्राणियो से दूर रहे वा सब पापो से दूर रहें। और शासक (प्रधान मन्त्री, मुख्य मन्त्री आदि को भी छली, कपटी, चोरो डाकुओ व हत्यारो आदि से रक्षा के लिए बाध्य करे, जिससे देश मे शाति का राज्य हो और प्रजा सुखी हो।

बी०-१०३, नीति बाग, नई दिल्ली-४९

जोधपुर मे महर्षि निर्वाण शताब्दी

१०-११-१२ नवम्बर, १९८४ को जोधपुर मे प्रातीय स्तर पर महर्षि निर्वाण शताब्दी मनाई जा रही है। जसवन्त कालेज के पास दयानन्द मार्ग, जोधपुर मे यह शताब्दी कार्यक्रम किया जा रहा है।

आर्यसमाज लक्ष्मीनगर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज लक्ष्मीनगर, विस्तार, दिल्ली ५२ मे आर्यसमाज का दूसरा वार्षिकोत्सव रविवार, ११ नवम्बर, १९८४ को प्रात ८।। से दोपहर १।। बजे तक श्री रत्न सिंह धर्माण्डल्य की अध्यक्षता मे मनाया जा रहा है। इस अवसर पर श्री यशपाल शास्त्री, श्री रामचन्द्र विकल, पवन कुमार शास्त्री, श्री जैमिनी शास्त्री आदि के भाषण होगे।

सेवा की सच्ची भावना।

उस वर्ष पजाब मे भयकर अकाल पडा था, जैसा कि बूढो की याद मे भी कभी नही हुआ था। उन दिनो पजाब मे महाराणा रणजीत सिंह का राज था। उन्होने ऐलान करवा दिया 'हुक्म महाराज का, शाही कोठार हर जरूरतमन्द के लिए खुले हैं, 'हर जरूरत मन्द एक बार मे जितना अनाज उठा सके, ले जाए।" ऐलान होते ही जरूरत मन्द प्रजा उमड पडी, गावो-शहरो से अकाल से पीडित लोगो का सिलसिला बन गया। उन दिनो लाहौर मे एक सद्गृहस्थ वृद्ध सज्जन कहते थे। कट्टर सनातनी विचारो के, जीवन मे कभी उन्होने कभी हाथ नही पसारा था, अन्धेरा होने पर वह शाही कोठार के द्वार पर पहुचे, वहा दरवाजा खुला था, किसी तरह की कोई जाच-पडताल पूछताछ नही हुई। उन्होने बडी झिझक से अपनी चादर फैलाई, उसके कोने मे थोडा-सा नाज बाधा, अधिक अनाज उठाना उनके लिए कठिन था। इतने मे पगडी बाधे एक आदमी वहा आया। उसने कहा—"भ्राताजी, आपने तो बहुत कम अनाज लिया।" वृद्ध सज्जन बोले—"असल मे मैं बूढा लाचार हू, इस अकाल मे थोडा अनाज लेना ही ठीक है, जिससे सब जरूरतमन्दो को अन्न मिल जाए।"

उस आगन्तुक ने वृद्ध सज्जन की गठरी खोल दी। उसमे भरपूर अनाज भर दिया। वृद्ध सज्जन ने कहा— मैं इतना अनाज नही उठा सकता और न इसकी मजदूरी का पैसा ही दे सकता हू।" बूढे सज्जन हिचकते ही रहे, उस अजनबी ने वह अनाज का गट्ठर उठा लिया और चल पडा। घर के द्वार पर दो बच्चे खडे थे, बोले—'बाबा कहा चले गए थे?" बूढा चुप रहा। अजनबी ने पूछा—'घर मे कोई बडा लडका नही है?" बूढा बोला—'लडका था, पर काबुल की लडाई मे कुर्बान हो गया, अब वह है और मेरे ये दो पोते।" वह अजनबी बोला—"भाई जी, धन्य हैं आप, जिनका बेटा देश के लिए कुर्बान हो गया।"

रोशनी मे वृद्ध सज्जन ने उस अजनबी को पहचान लिया। वह स्वय महाराजा रणजीत सिंह थे, वृद्ध पोतो से बोले—'इनके सामने मत्था टेको" और खुद भी प्रणाम करने लगे, बोले—"आज बडा पाप हो गया, आपसे बोझा उठवाया।" "नही, वह पाप नही मेरी किस्मत है कि मैं एक शहीद के परिवार की सेवा कर सकू। आप सबकी सेवा करना मेरा फर्ज है, जब तक जीवन है, आप हमारे साथ ही रहिए।" —नरेन्द्र

दक्षिण-पूर्वी एशिया

(थाईलैंड, मलायीशिया, सिंगापुर, जावा और बाली की द्वितीय सास्कृतिक तीर्थयात्रा)

१९ जनवरी, १९८५ से २ फरवरी १९८५ तक दो सप्ताह की यात्रा का कुल व्यय १३९५० रुपए प्रति व्यक्ति (जिसमे हवाई जहाज द्वारा जाना-आना, वातानुकूलित होटलो मे निवास, डीलक्स बसो द्वारा दर्शनीय स्थानो का अवलोकन तथा शाकाहारी प्रात काल और साय काल का भोजन व्यय शामिल है।)

दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशो मे अब से केवल चार सदी पहले तक हिन्दू धर्म एव भारतीय सस्कृति का प्रचार था। वहा बाली नाम का एक ऐसा द्वीप है, जिसमें अब भी पच्चीस लाख के लगभग हिन्दू रहते हैं, और जिसे सच्चे अर्थो मे 'लघु आर्यावर्त' कहा जा सकता है। जावा के निवासियो मे भी पैतीस लाख के लगभग हिन्दू हैं। इन द्वीपो मे अनेक ऐसे मन्दिर व तीर्थ स्थान भी है, जिनका हरिद्वार व रामेश्वरम् के समान महत्त्व है। इस तीर्थयात्रा मे सम्मिलित होकर दक्षिण-पूर्वी एशिया के लाखो हिन्दुओ के साथ एकात्मकता व सम्पर्क स्थापित कीजिए, और भारत के विशाल सास्कृतिक साम्राज्य की एक झलक देखिए। साथ ही, वहा के हिन्दुओ को महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओ तथा आर्यसमाज के कार्य से परिचित कराइए।

विवरण के लिए सम्पर्क करें—

—श्री अशोक त्रिखा

ट्रवल ट्रस्ट, बी-२४, निजामुद्दीन ईस्ट, नई दिल्ली-२९
टेलीफोन-६९८०५१

धर्मपूर्वक धन की प्राप्ति

ओ३म् भूर्भुव स्व सुप्रजा प्रजाभि स्याम।
सुवीरा वीरै सुपोषा पोषै ॥ यजुर्वेद ८ ५३

हम भूलोक, अन्तरिक्ष लोक और द्युलोक की उपलब्धियो मे सयुक्त हो तथा सन्तानो से अच्छी सन्तानो वाले और पोषक पदार्थों से अच्छे पोषक अथवा भोज्य पदार्थों वाले हो।

एक युग बीता : नए युग की शुरूआत

हमारे महान राष्ट्र पर सकट की काली घटाए कई बार घिरी हैं हर बार वह सभी बाधाओ विरोधो एव प्रतिकूल परिस्थितियो से जूझता हुआ बढता गया है। सन् १९४८ ई० की ३० जनवरी को म गाधी का जब बलिदान हुआ था, उस समय हमारी राजनीतिक स्वाधीनता को प्राप्त किए हुए कुछ महीने ही व्यतीत हुए थे परन्तु उस समय देश का नेतृत्व करने के लिए प० जवाहरलाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई, डा० राजेन्द्रबाबू जैसे परीक्षित एव परखे हुए नेताओ का पथ-प्रदर्शन उपलब्ध था। १९६४ मे २७ मई के दिन जब प० नेहरू का देहावसान हुआ था तब देश के सम्मुख एक बडा प्रश्न था कि प० नेहरू के बाद कौन ? परन्तु जल्दी ही श्री लाल बहादुर शास्त्री एव श्रीमती इन्दिरा गाधी ने अपने-अपने समयो मे देश की बागडोर सम्भाल कर यह प्रदर्शित कर दिया कि हो सकता है अनुभव की दृष्टि से वे नई पीढी के रहे हो परन्तु अपनी निष्ठा, दृढता और अनुपम देशभक्ति मे वे किसी से भी पीछे नही रहे, दोनो ने अपने कर्तृत्व से प्रमाणित कर दिया कि सच्ची निष्ठा और तपे हुए समपण से राष्ट्र लिए उच्चतम कीर्तिमान स्थापित किए जा सकते हैं।

प्रियदर्शिनी इन्दिरा गाधी को नेहरू जी ने अपने प्रसिद्ध पत्रो मे लिखा था— 'इतिहास का अध्ययन अच्छा होता है परन्तु यह कही बेहतर है कि खुद इतिहास लिखा जाए।" इन्दिरा जी ने अपने यशस्वी जीवन से सिद्ध कर दिया कि अपने पिता की तरह वह भी साहस की नेत्री थी। उन्होने शुरू से ही प्रत्येक समस्या का अध्ययन कर स्वत अपना मन बनाया। जिस प्रकार की प्रचण्ड बाधाओ एव प्रतिकूल परिस्थितियो का उन्होने सामना किया उसमे दूसरा कोई भी व्यक्ति पस्त हो सकता था वे परिस्थितिया चाहे सन १९६९ मे राष्ट्रपति के पद के निर्वाचन का प्रश्न रहा हो अथवा १९७१ म बगला देश के सम्बन्ध मे पाकिस्तान से युद्ध हो, अथवा हिन्द महासागर मे अमेरिकी सातवें बेडे की उपस्थिति हो अथवा सन् ८४ म उग्रवाद के गढ को ध्वस्त करने का समय रहा हो उन्होने पूरी दृढता, साहस और लगन से भीषणतम परिस्थितियो और बाधाओ का सामना कर प्रदर्शित कर दिया कि वह नवीन भारत की अदम्य भावनाओ की सच्ची प्रतीक थी। अपने कार्यों से उन्होने समाजवाद के सिद्धात की प्रतिष्ठा की तो साथ ही अल्पसख्यको का विश्वास भी प्राप्त किया।

३१ अक्तूबर को प्रात देशी-विदेशी साम्राज्यवादी अलगाववादी ताकतो के हिंसक प्रहार से भारतीय राष्ट्र एव जनता की आकाक्षाओ की प्रतीक श्रीमती इन्दिरा गाधी का पार्थिव शरीर निष्प्राण हो गया है। उनके असामयिक दु खद निधन से आधुनिक भारत का एक युग बीत गया है और नए युग की शुरूआत हुई है। अभी तक सकट की घडिया गहराने पर देश को या तो अनुभवी एव परीक्षित नेतृत्व का लाभ मिलता था, अथवा उसे ऐसे मार्गी मिले जो अनुभवी और परीक्षित तो न थे, परन्तु उन्होने लम्बे समय तक अनुभवी व्यक्तियो के सान्निध्य मे समुचित पथ प्रदर्शन पाया था। आज देश के क्षितिज पर अलगाववादी आतकवाद की हिंसक घटाए घिर आई हैं, ऐसे समय यदि प्रमुख राजनीतिक दल राष्ट्रीय हितो के लिए एक व सयुक्त होकर कार्य कर सकें और राष्ट्रीय समस्याओ को सुलझाने का प्रयत्न करें तब स्थिति का समुचित समाधान हो सकता है। इन्दिरा जी के असामयिक निधन से भारतीय राजनीति मे एक अपूरणीय शून्य पैदा हो गया है जिसे भरने के लिए सभी राष्ट्रहितैषियो को प्रयत्नशील होना चाहिए। आर्यसमाजो एव आर्यजनो को इस सकट की घडी मे राष्ट्रीय चरित्र को अधिकाधिक खरा, सच्चा और प्रामाणिक बनाने का प्रयत्न कर भावी दिशा-निर्धारण मे अपना उल्लेखनीय योगदान करना चाहिए जैसा कि उन्होने राष्ट्र के नव जागरण एव स्वाधीनता सघर्ष के दिनो मे प्रस्तुत किया था।

आर्य विद्वानो, समाधान करो या सशोधन करो!

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित ब्रह्मयज्ञ मे जो मन्त्रो का क्रम सस्कार विधि ग्रन्थ मे बताया है उसमे अनेक परिवर्तन क्यो, वर्तमान मे प्रचलित सन्ध्या पुस्तको मे प्राय १९ मन्त्रो का क्रम बताया है, परन्तु ऋषि आज्ञानुसार मन्त्रो की सख्या २१ है। इसके अतिरिक्त प्रारम्भ मे सकल्प का उच्चारण बताया है। शनो देवी० मन्त्र द्वारा तीन स्थानो पर आचमन बताया है। इस प्रकार विधि विधान मे शान्तचित्त होकर सन्ध्या करे। प्राणायाम करें तो न्यून से न्यून पौन घण्टा तो समय लगता ही है, परन्तु देखा यह जाता है कि आयजन खाना पूर्ति के लिए तीन मिनट या पाच मिनट से ज्यादा समय सन्ध्या मे नही लगाते।

'अथ नित्य सन्ध्या यज्ञोपासनाविधि क्रम— सदा स्त्री पुरुष १० बजे शयन और रात्रि के प्रहर ब्रह्मवेला मे ४ बजे उठकर प्रथम हृदय मे परमेश्वर का चिन्तन करके धर्म अर्थ का विचार करना और धम और अर्थ के अनुष्ठान व उद्योग करने मे पीडा यदि हो तथापि धर्मयुक्त पुरुषार्थ को कभी नही छोडना चाहिए। किन्तु सदा शरीर और आत्मा की रक्षा के लिए युक्त आहार विहार औषध सेवन सुपथ आदि से निरन्तर उद्योग करके व्यावहारिक और परमार्थ कर्त्तव्य कर्म की सिद्धि के लिए ईश्वरोपासना भी करना। जिस परमेश्वर की कृपा दृष्टि और सहाय से महा कठिन कार्य भी सुगमता से सिद्ध हो सके इसके लिए निम्न वेद मन्त्रो से ईश्वर की प्रार्थना सपरिवार मिलकर करें।

ओ३म् प्रातरग्नि० आदि ऋग्वेद के मण्डल ७ सूक्त ४१ मन्त्र १ से ५ तक का पाठ करें। तत्पश्चात् शौच दन्तधावन, मुख प्रक्षालन करके स्नान कर। सन्ध्योपासनादि नित्य कर्म नीचे लिखे अनुसार यथा विधि उचित समय मे किया करें।

प्रारम्भ मे सकल्प उच्चारण करें, ओ३म तत्सत् ब्रह्मणो आदि क्रिया सहित करें। फिर इन मन्त्रो का एक-एक आचमन करें। ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा, ओ३म् अमृता पिधानमसि स्वाहा ओ३म् सत्य यश श्रीमयि श्री श्रयता स्वाहा इसके अनन्तर गायत्री मत्र द्वारा शिखा बाधकर रक्षा करे। आचमन मन्त्र— शनो देवी द्वारा तीन आचमन, अथ इन्द्रिय स्पर्श मत्र —ओ३म वाक वाक् आदि, अथ ईश्वर प्रार्थना पूर्व मार्जन—ओ३म् भू पुनातु शिरसि आदि, प्राणायाम मत्र—ओ३म् भू भुव आदि, अघमर्षण मत्रा —ओ३म् ऋतच सत्यच आदि तीन मत्र।

अथ मनसा परिक्रमा मत्र—ओ३म प्राची मे ऊर्ध्वा पयन्त ६ मन्त्रो द्वारा परमेश्वर से प्रार्थना करें। अथोपस्थान मत्रा— तत्पश्चात् परमात्मा का उपस्थान अर्थात् परमेश्वर के निकट मैं और मेरे अति निकट परमात्मा है, एसी बुद्धि एव धारण करके करें।

उपस्थान मत्रो मे वर्तमान प्रचलित सन्ध्या पुस्तको मे एक महत्त्वपूण मन्त्र को हटा दिया है। मत्रो का क्रम भी बदल दिया है। यह आय जनो की भारी भूल है ऐसा जान पडता है। उपस्थान मत्रा का क्रम और सख्या महर्षि द्वारा निर्धारित निम्न प्रकार सस्कार विधि गृहस्थ प्रकरण मे विद्यमान है। अथ उपस्थान मत्रा —

ओ३म् जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो नि दहाति वद।
सन पषदति दुर्गाणि विश्वा नावेन सिन्धु दुमनात्याग्नि ॥
ओ३म चित्र देवाना मगादनिक आदि ॥२॥
ओ३म् उद्वय जात वेदस देव वहन्ति केतव आदि ॥३॥
ओ म् उद्वय तमसस्परिस्व पश्यन्तु आदि ॥४॥
ओ३म् तच्चक्षुर्देव हित आदि ॥५॥

पुन — गायत्री मत्र, अथ समपणम् हे ईश्वर दयानिधे आदि, ओ३म् नम शम्भुवाय च आदि मत्र से परमात्मा को नमस्कार करके श नो देवी इस मत्र से तीन आचमन करके अग्निहोत्र का आरम्भ करे।

आर्य विद्वानो से विनम्र प्रार्थना है कि उपर्युक्त क्रमानुसार मत्रो का सशोधन करा जाए। इस क्रम का सकलन ऋषि ग्रन्थ के आधार पर शाहपुरा निवासी आय बधु श्री सोहनलाल जी शारदा द्वारा प्रकाशित पुस्तक अथ नित्य सन्ध्या यज्ञोपासना विधि' नि शुल्क मगाकर ऋषि आज्ञानुसार अपने परिवार को श्रद्धावान् बनावे, यही विनम्र प्रार्थना है। —कश्यपदेव वानप्रस्थी वैदिक सत्सग आश्रम, पुष्कर

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एव दीपावली पर्व

आर्यसमाज शिवाजी चौक खडवा मे ऋषि दयानन्द निर्वाण दिवस एव दीपावली पर्व दिनाक २४-१०-८४ को समारोहपूर्वक मनाया गया। पर्व पद्धति के अनुसार बृहद् यज्ञ सन्ध्या प्रार्थना के पश्चात् श्री रामचन्द्र जी आर्य प्रधान आ० स० खडवा ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर सारगर्भित भाषण दिया, श्री प० नन्द किशोर जी द्विवेदी ने 'देश की वर्तमान परिस्थिति और हमारा कर्त्तव्य' पर अपने विचार रखें।

जीवन ज्योति के प्रतीक

—चमनलाल प्रधान आर्यसमाज अशोक विहार दिल्ली-५२

पर्वो तथा त्योहारो का मानव के जीवन मे एक ऊचा स्थान है। स्वर्गीय लोकमान्य बालगगाधर तिलक यहा तक कहा करते थे कि त्योहारो को मनाना ही कि देश राष्ट्र के जीवन ज्योति का प्रतीक है। जितने जितने उत्साह, उल्लास श्रद्धा और प्रेम से कोई राष्ट्र अपने त्योहार मनाता है, उसी अनुपात मे उस राष्ट्र के निवासियो मे जीवन ज्योति समझनी चाहिए हमारे देश मे जितनी अधिक सख्या मे त्योहार मनाए जाते है सम्भवत विश्व के किसी अन्य देश मे नही मनाए जाते होगे। हमारे कुछ त्योहार ऋतुपरक और कुछ महापुरुषो के नाम से सम्बन्धित है। कुछ राष्ट्रीय त्योहार भी है। परन्तु इन सब मे तीन बडे त्योहार अयोध्या पति मर्यादा पुरुषोत्तम राम के नाम से सम्बन्धित है—रामनवमी— जो प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला नवमी को देश विदेशो मे बडे उत्साह से मनाई जाती है परन्तु दो त्योहार विजयदशमी का त्योहार असोज मास की शुक्ला १० वी को मनाया जाता है। जिसके सम्बन्ध मे कहा जाता है राम की राक्षसपति रावण पर विजय इस दिन हुई थी और तीसरा त्योहार दीपावली विजय दशमी के ठीक बीस दिन बाद आता है। कार्तिक की कृष्ण पक्ष की अमावस्या को मनाया जाता है कि अयोध्यावासियो ने श्री राम जी की रावण पर विजय प्राप्ति करके वापस लौटने पर दीप माला का उत्सव मनाया था परन्तु इतिहास व राम जीवन के सबसे प्रमाणित ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण से इन त्योहारो का इन तिथियो मे पडना कदाचित प्रमाणित नही होता। ये सब घटनाए सक्षेप मे इस प्रकार है –

अयोध्यापति राजा दशरथ जब वृद्धावस्था को प्राप्त हुए तब उन्होने राज्य के मन्त्रियो, गुरुजनो तथा और अन्य अनेक राजाओ को बुलाकर उनके सम्मुख राम —अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य का कार्य भार सौंपने का प्रस्ताव रखा और उनकी अनुमति से राम को युवराज के लिए सब सामग्री जुटाने के आदेश दिए गए। यह चैत्र मास का महीना था।

इति प्रत्यच्य तान् राजा ब्राह्मणा निदमब्रवीत्। वसिष्ठ वामदेव च तेषामेवोपशृण्वताम्। 'चैत्र श्रीमानय मास पुण्य पुष्पितकानन। यौवराज्याय रामस्य सवमेवोपकल्प्यताम्।।

परन्तु विधि का विधान बडा विचित्र है। आदमी सोचता कुछ है, परन्तु परमात्मदेव की कुछ और ही रचना है।

चैत्रमास के पुष्य नक्षत्र मे निष्पाप राम को अयोध्या का युवराज बनने की बजाय दुष्टा दासी मन्थरा तथा कैकेयी के षडयन्त्र रचने के कारण साधु वेश मे पिता की आज्ञा से वन जाना पडा और जब भरत जी राम को वापस लौटाने वन मे गए तब चित्रकूट पर्वत पर कुटी बनाकर रहते थे।

'अनन्तरम् तत्सरितश्चित्र कूटश्च पवन। तया पर्णकुटी तात तत्र तौ वसतो ध्रुवम्।।'

भरत मण्डली के आग्रह करने भी राम ने १४ वर्ष के वनवास की अवधि की समाप्ति से पूर्व लौटने से इन्कार कर दिया तो भरत राम की पादुकाए लेकर राम से चौदह वर्ष की समाप्ति पर लौटने की प्रतिज्ञा वचन ले वापस चले गए और यह कहते हुए कि यदि चौदह वर्ष के अन्तिम दिन राम न लौटेंगे तो मैं (भरत) चिता बनाकर अग्नि मे प्रवेश कर दूगा।

भरत के लौटने पर राम ने चित्रकूट छोड कर किसी अन्य स्थान पर जाने का निश्चय किया और इस प्रकार वन मे घूमते घूमते और ऋषि आश्रमो की आभा शोभा देखते दस वर्ष बीत गए और दण्डकारण्य मे एक सुन्दर स्थान पचवटी मे कुटी बनाकर शेष चार वर्ष बिताने का १८८३ से निश्चय किया।

हनुमान जी ने राम को सीता का सदेश दिया और रावण द्वारा दी गई दो मास की अवधि बताई, तो राम बडे आतुर होकर बोले यदि सीता एक मास तक भी जीएगी तो बहुत समझो, मै तो उसके बिना एक क्षण भी नही जी सकता। अत राम ने सुग्रीव को जल्दी से लका पर चढाई करने को कहा और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र मे चढाई कर दी और जब रावण पर श्रीराम ने विजय प्राप्त की, तब चौदह वर्षों मे से केवल एक दिन शेष था, अत राम जी उसी दिन अयोध्या जाना चाहते थे, इसलिए वह रावण के पुष्पक विमान मे ठीक १४ वर्ष की समाप्ति पर अयोध्या जा पहुचे।

यहा रहते-रहते शरद ऋतु बीत गई हेमन्त का आरम्भ हुआ। कुछ समय पश्चात् रावण छल-कपट से माता सीता को हर कर ले गया। उसको अपनी अशोक वाटिका मे रखकर, डरा-धमका कर सीता को अपनी पत्नी बनाने मे असफल रहा, तो उसने सीता को एक वर्ष का समय सोचने के वास्ते दिया और जब हनुमान सीता को लका मे मिला तब उस एक वर्ष मे से केवल दो मास ही शेष रह गए थे।

इस सब घटनाचक्र से स्पष्ट है कि राम रावण युद्ध फाल्गुन चैत्र मास मे हुआ और चौदह वर्ष भी चैत्र मास मे ही समाप्त होते हैं। अत विजयदशमी का त्योहार असौज मास मे न मना कर कहीं चैत्र मास में मनाना चाहिए और इसी प्रकार दीपावली, विजय दशमी मे दूसरे ही दिन कही चैत्र मास मे पडती है। यह तो हुई इन दोनो त्योहारो का राम से सम्बन्ध रखने वाली बात। न जाने कब से यह प्रथा चली। इतिहासशास्त्रियो का यह कर्त्तव्य है कि ठीक ठीक खोजकर सही तिथिया इन त्योहारो को निश्चत करे।

दीपावली त्योहार का एक अपना ही विशेष महत्त्व हैं, इसको राष्ट्रीय त्योहार कहना भी कुछ अनुचित न होगा। यह ऋतुपरक और फसली त्योहार भी कहलाता है दूसरे शब्दो मे इसे 'नवशस्येष्टि' भी कहना ठीक ही होगा क्योकि इस अवसर पर सावनी (खरीफ) की फसल के अनाज ज्वार, मक्का, बाजरा, उडद, चावल, गुड-शक्कर तिलादि सभी आ जाते हैं और सभी लोग इसको लक्ष्मी-पूजा के रूप मे मनाना बडा पुण्य समझते है। लक्ष्मी के स्वागत के लिए सारी रात्रि घरो मे रोशनी रखते है ताकि कही अमावस्या की घोर अधेरी रात्रि मे प्रकाश के अभाव मे लक्ष्मी वापस न चली जाए। इसी लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए कुछ धूर्त, मूर्ख लोग जुआ खेलकर आनन्द लूटते हैं, क्योकि ऐसे लोगो का अन्धविश्वास है कि जो इस दिन जुआ नही खेलता, वह नरक मे जाता है जबकि वेद मे जुआ खेलना, दुष्कर्म पाप बताया है। जैनियो के लिए भी यह दिन कुछ कम महत्त्वपूर्ण नही है। क्योकि आज के दिन उनके अन्तिम तीर्थंकर महावीर स्वामी ने निर्वाण प्राप्त किया था। आज के ही दिन सन् १९०९ मे स्वामी राम ने गगा माता की गोद मे जीवित समाधि ली थी, परन्तु इस दिवस का महत्त्व एक सौ एक वर्ष से पूर्व अर्थात् और बढ गया है।

जब इस कार्तिक की अमावस्या के दिन युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस नश्वर देह को त्याग कर मृत्यु पर विजय प्राप्त कर—'ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो। कहते-कहते जगज्जननी जगदम्बा माता की परम पावनी गोद मे विश्राम पाया था। उसी दिन मे आर्य लोग इस त्योहार को ऋषि निर्वाणोत्सव अथवा ऋषि बलिदान' के रूप मे प्रतिवर्ष मनाते हैं।

गत वर्ष अजमेर मे उनकी बलिदान शताब्दी बड़े समारोहपूर्वक मनाई गई थी और उसके बाद पूरे वर्ष भिन्न-भिन्न स्थानो पर यह उत्सव मनाया जा रहा है क्षेत्रीय अवसर पर।

दीपावली हर वर्ष आती है और आर्यबन्धु ऋषि भक्त उनके जीवन मे घटी अनेक घटनाओ की चर्चा करके अपने को कृत्य-कृत्य समझते हैं, परन्तु जरा ध्यान देकर देखें तो सही क्या ऋषि द्वारा छोड़े अपूर्ण कार्य किस हद तक वे पूरे कर पाये। गत एक सौ एक वर्षों मे। देश के आचार, नैतिकता का पतन ऋषि के समय से भी कही अधिक इस समय हो गया है। महर्षि एक जाति व देश विशेष के लिए कार्य नहीं करते थे। वह तो समस्त विश्व की मानवता के कल्याण के लिए सारा जीवन प्रयत्नशील रहे और इसी मानव-कल्याण के लिए उन्होने अपनी १८-१८ घटे की समाधि का दिव्य आनन्द भी त्याग कर ईंट-पत्थरो के प्रहार सहे और विष के प्याले भी पीए। उन्होंने वेद को स्वत प्रमाण मान कर इसके आधार पर प्रचार किया और प्राचीन ऋषि-मुनियो की विस्तृत परम्पराओ को फिर से जीवित किया।

वह महान देशयोद्धा थे और देश को सम्पन्न, शक्तिशाली स्वावलम्बी और स्वतन्त्र सत्ता वाला देखना चाहते थे। सामाजिक कुरीतियो के बड़े शत्रु थे और बडे विरोध और प्रतिकूल वातावरण मे भी अकेले ऋषि ने कुरीतियो के बडे गढ को चूर-चूर करके रख दिया। उन्होने प्रान्तीय भेदभावो को भुलाकर स्वय गुजराती होते हुए भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप मे स्वीकार किया और अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी मे ही लिखे। देश की एकता अखण्डता के लिए वह जीवन भर प्रयत्नशील रहे।

दीपावली निर्वाण दिवस पर ऋषि के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि यही होगी कि हम सब एकजुट होकर आपसी भेदभावो को भुलाकर निष्काम भाव से ऋषि के अधूरे कार्य की पूर्ति मे यथाशक्ति सहयोग देकर ऋषि के ऋण से उऋण होने का प्रयत्न करे।

आर्यसमाज तिलकनगर का ३५ वा वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज तिलकनगर, नई दिल्ली १८ का ३५ वा वार्षिकोत्सव ११ नवम्बर से १८ नवम्बर तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर इन्ही दिनो प्रात ७॥ से ९ बजे तक सामवेद यज्ञ प० यशपाल सुधाशु के ब्रह्मत्व मे हो रहा है। प्रतिदिन रात्रि को ८ से ८-४५ बजे तक प० चुन्नीलाल जी के भजनोपदेश तथा ८-४५ से ९-४५ तक प० यशपाल सुधाशु के वेदोपदेश होते हैं। १८ नवम्बर को पूर्णाहुति होगी। उसके बाद श्री रामगोपाल शालवाले, श्री सूर्यदेव जी, महाशय धर्मपाल जी, डा० धर्मपाल जी, एव श्री रामगोपाल के प्रवचन होगे।

भारत में युवा आन्दोलन

भारत के नवनिर्माण एव पुनरुत्थान म युवाशक्ति अपना गौरवपूण सहयोग दे सकती है। इस सामयिक प्रश्न पर राजधानी दिल्ली स निवाचित ससद सदस्य श्री सज्जनकुमार के विचार—

प्रस्तुतकर्त्ता रोशनलाल गोयल

▭ युवाशक्ति सम्पूण राष्ट की दिशा को परिवर्तित कर सकती हैं। आप युवा आन्दोलन से कैसे काय की अपेक्षा कर सकते हैं ?

नि सन्देह युवाशक्ति सम्पूण राष्ट को नई दिशा दे सकती है लकिन उसके लिए प्रौढ नेतृत्व की अनिवाय शत है। युवा शक्ति से मैं रचना मक कार्यों को अपक्षा करता हू।

▭ भारत म राजनीतिक सामाजिक एव सास्कृतिक स्तर पर कितने ही युवा सगठन हैं। उदाहरण क लिए राजनीतिक पार्टियो के युवा दल अथवा सगीतकारो एव चित्रकारो के युवा सगठन अथवा छात्रा की यनियन। ये सगठन भारत के उ थान म किस प्रकार सहायक हा सकत हैं ?

जिन युवा सगठनो का जसा स्वरूप है और उनका जो उद्द श्य है वे सामाजिक जीवन के उसी पहलू को परिष्कृत कर काम कर सकते हैं। सामाजिक सगठन ग्रामीण क्ष त्रो मे व्याप्त अ धविश्वासा रूढिया एव दहेज जसी दोषपूण परम्पराओ से मुक्त कराने की दिशा मे काम कर सकत है राजनीतिक युवा सगठना के विषय मे मेरी राय बिल्कुल साफ है कि उ हे जब तक प्रौढ नतत्व नही मिलेगा उ ह दिशाभ्रम हो सकता है।

▭ कालजो और स्कूलो मे क्या युवाओ का उचित निदशन मिल गया है ? यदि आपका उनका नेतत्व करन की प्राथना की जाए तो आप क्या क्या सुधार लाएगे ?

यह प्रश्न अप्रासगिक सा है औ भी आपका आग्रह है ता मैं अपनी राय आ को देता हू। शिक्षा सस्थाओ क वात वरण सतोषजनक नही है। शिक्षा सस्थाओ का वातावरण और अपने विद्या र्थियो की मन स्थिति ठीक हो इस वात वरण के लिए उत्तरदायी हैं मक प चार के लिए बहुत कठोर प्रयास अपक्षित हैं।

▭ सिनमा और नाटको का युवाजनो पर कैसा प्रभाव पडता है ?

अनुकूल नही कहा जा सकता चकि नाटक या फिल्मे उद्द श्यपूण न होकर व्यावसायिक होते हैं। उनके निर्माण के पीछे अर्थोपाजन की भावना निहित होती है।

▭ क्या अ तर्राष्टीय युवा के द्र और नेहरू युवक केन्द्रो का सचालन अपक्षित ढग स हो रहा है ? क्या इनम किसी सुधार की आवश्यकता है ?

अ तरा ष्टीय युवा के द्रा एव नेहरू युवक के द्रा स मेरा बहुत सम्पक नही रहा है इसलिए उनके सम्ब ध मे कोई राय जाहिर करना यायसगत नही हागा। ऐसे सगठनो मे सुधार की आवश्यकता तो निर तर बनी रहती है।

▭ ग्रामीण क्षेत्रो म युवा आ दालनो का किस प्रकार गति प्रदान का जा सकती है ? प्रौढ शिक्षा एव साक्षरता अभियान म इनका क्या मागदशन हा सकता है ?

ग्रामीण क्षत्रा म युवाशक्ति को सग ठित करना बहुत आवश्यक है। ग्रामीण क्ष त्रो म अ त र ज नन है कि ८० प्रतिशत लाग रहन ह स्व भाविक है कि वहा अपार युवाशक्ति सुप्तावस्था म पडी है। शहरी क्षत्रा का युवावग अपक्षाकृत जाग रूक भी है। ग्रामीण क्ष त्रो मे सामाजिक एव सास्कृतिक युवा सगठनो का गठन किया जाना चाहिए। इस काय को सर कार या राजनीतिक दल कर यह अच्छा नही है। इस काय को वे लोग अधिक अच्छी तरह कर सकते है जो देहाती परि वेश म पल हो और पढ लिखे हो। गम्भीर समस्या तो यह है कि गावो के पढ लिखे युवा भी शहर की ओर जा रहे हैं।

— गाधी जी और बाद म ज पी ने भी जन आदोलनो को चलान मे छात्रा का सहयोग लिया आपके इस विषय म क्या विचार है ?

ग धाजी का दष्टिक ण रचना मक था। उ ह न युवाशक्ति का विदेशी सर कार क खिलाफ सघष करने की प्रेरणा दी थ और वह गुलामी क खिलाफ जिहाद थ स्वय विपरीत ज पी क आ दोलन किसी भी दृष्टि मे रचना मक नह कहा ज सकता वह आ द लन निवाचित जन प्रतिनिधि के खिलाफ था ऐसी परिस्थितिय म छात्रा के राज नीति म सक्रिय भाग लेने का एक समय है उन्होंने शिक्षक सस्थाओ का बहिष्कार करके सडको पर आदोलन करने के लिए उकसाया को मैं किसी भी दृष्टि से उचित नही मानता। गाधी जी और ज पी के आह्वान मे जमीन और आसमान का अतर है। एक रचनात्मक है और दूसरा नका रा मक।

▭ सजय जी युवा आन्दोलन के मेरुदण्ड थ। परिवार नियोजन वृक्षारोपण आदि कायक्रम देश को समद्धि की ओर ले जाने वाले थे। आशा की जाती है कि आप और आपके साथी इस दिशा मे भर-सक प्रयास करेंगे।

देश की युवाशक्ति को रचनात्मक दिशा देने का पूण श्रय श्री सजय गाधी को है। श्री सजय गाधी ने युवाशक्ति को उस नाजुक वक्त पर अपना सक्षम नेतत्व प्रदान किया जब वह दिशाहीन होकर किंकत्तव्यविमूढता की स्थिति म थी। उनके पाच सूत्री कायक्रम का मैं माग दशक सिद्धा तो के रूप मे स्वीकार करता हू।

▭ नेहरू जी का ज म दिवस हम बालदिवस के रूप मे मनाते है। वह बालको से क्या क्या अपेक्षाए रखते थे ? क्या हम आज उनके सदेश को बच्चो मे प्रसारित प्रचारित कर पा रहे है ?

प० जवाहरलाल नेहरू बच्चो मे राष्ट क भविष्य को देखना चाहते थ कि भारत के प्रत्येक बालक का सर्वांगीण विकास है। ताकि वह देश का जागरूक नागरिक बने और राष्ट्र के हितो की रक्षा कर सके। प० जी के आदर्शों सिद्धा तो और मा यताओ का प्रच र और प्रच र अधिक व्यापक होना च हिए विशेष रूप से देहाती क्षत्रो म

▭ सम्पूण भारत की भ वा मक एकता के लिए युवा आ दोलन किस प्रकार सहायक हो सकते हैं ?

आज हमारे देश मे ऐसे तत्त्व सक्रिय हैं जो साम्प्रदायिकता जातीयता और क्ष त्रीयता का विष फैलाकर राष्ट्रीय भावा मक एकता का तोडकर अपने सकु चित स्थानीय हितो को पूरा करना चाहते हैं। युवाशक्ति ऐसे तत्त्वो का शा तिपूवक दढता के साथ सगठित होकर अगर मुका बला कर तो राष्ट का बहुत बडा हित सम्पन्न कर पाएगे युवको का च हिए कि वे लोकशिक्षण का काय कर औ एसे तत्त्वो के खिलाफ लोकमत तयार कर।

युवाओ का अग्रणी हाथ है ? असम की समस्या किस प्रकार हल हो सकती है ?

प्रत्यक्ष रूप से देखने से ऐसा लगता है असम आ दोलन का नेतृ त्व युवको के हाथ म है। लकिन वास्तव मे ऐसा नही है परोक्ष मे उनकी प्रेरक शक्ति वे राज नीतिक तत्त्व हैं जिनकी दष्टि म राष्टीय हित गौण और दलगत हित सर्वोपरि है।

अब आप ही देखिए असम आ दोलन ने ऐसा हिंसा मक मोड लिया है। वहा का जन जीवन अस्त व्यस्त हो गया था बन्द करना घेराव वहा की दिनचर्या हो गई थी तेलशोधक कारखाना महीना स बन्द पडे था। परिवहन व्यवस्था भग हो गई थी सरकारी कमचारी काय पर नहीं जाते थ। इस स्थिति को कौन ठीक मानेगा।

सरकार ने आद लन कार्यों के नेताओ को पारस्परिक बातचीत के लिए कई बार आमन्त्रित किया उनकी बहुत सारी मागो को सरकार ने मान भी लिया है सरकार इस बात को मानती है कि असम मे विदेशियो की समस्या और सका कोई सवैधानिक रचना मक व्यवहारिक हल होना ही चाहिए लकिन इसके लिए आ दोलन का तरीका अपनाया जाना राष्ट के हित म नही है। पारस्परिक बातचीत से एक प्रतिष्ठापूण हल खोजा जा सकता है।

आप इस अवसर पर युवाओ के लिए कोई सदेश देना चाहेगे।

मैं अपने युवा साथियो से कहना चाहूगा कि वे राष्ट के हितो के खिलाफ आचरण करने वाले राष्ट्रघाती तत्त्वो के खिलाफ एकजुट होकर सघष कर उन का चि तन और कार्य रचनात्मक होना चाहिए तथा प्रौढ नेतत्व के प्रति वे अपनी आस्था कायम रखे

युवक रचनात्मक सोचे रचनात्मक करे।

— असम आन्दोलन का चलाने म एज ४ ५ नवम्बर नग नली ३३

● ● ✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲ ● ● ●

एक सवाल

ज व म स्वरूपानन्द सरस्वती अधिष्ठाता वेद प्रचार

एक व्यक्ति ने स्वामी जी से ऋष पूछा ओ आय

अब कम कर उडकर मुझको समझाय।

स्वाग तमाशे खेल म आता अति आनन्द

कथा कीतन प्रभ जपन आता नही पसन्द।

रात रात भर जागना स्वाग तमाशे जाय।

कथा कीतन मे मुझे लगी नीद दबाय।

प्रभु भगति सत्सग का बिस्तर कामल फूल।

खेल तमाशे स्वाग के बिछे सेज पर शूल।।

तीव्र शूल लखकर वहा नीद नही ठहराय।

पुष्प देखकर चैन की बसी वेद बजाय।।

जनता शांति और सद्भाव बनाए रख

श्री शालवाले द्वारा व्यापक हिंसा की भर्त्सना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने दिल्ली मे और देश के विभिन्न स्थानो मे हुई हिंसा की भर्त्सना की तथा आम जनता से शांति तथा जातीय सद्भाव बनाए रखने का अनुरोध किया। उन्होने कहा कि श्रीमती इंदिरा गाधी ने भारत्त्व और एकता के लिए अपने प्राण न्योछावर किए। उनके आदर्शों के अनुसार राष्ट्रीय एकता के लिए कार्य करके ही हम उन्ह सच्ची श्रद्धाजलि अर्पित कर सकेंगे।

स्वर्गीया श्रीमती इन्दिरा गाधी के लिए आर्यसमाजो मे शोकसभाए

सभा प्रधान श्री सूर्यदेव और महामन्त्री डा धर्मपाल ने दिल्ली की सभी आर्यसमाजो से अनुरोध किया है कि वे अपने साप्ताहिक अधिवेशनो मे स्व० श्रीमती इन्दिरा गाधी के लिए शोक सभाए तथा शांति यज्ञ आयोजित करे। शोक प्रस्तावो की प्रति राष्ट्रपति, प्रधानमत्री और गृहमत्री को भेजें तथा समाचार पत्रो में भी दें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती पार्क का उद्घाटन

महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाणोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाणो त्सव दिनाक २८-१०-८४ को प्रात ८-३० से १२-१५ तक महर्षि दयानन्द सरस्वती पाक मे इस क्षेत्र की समस्त समाजो केशव पुरम (लारेन्स रोड) अशोक विहार फेज I-II रानी बाग पजाबी बाग तथा त्रिनगर के सहयोग से डा स्वामी कृष्णानन्द जी की अध्यक्षता मे बडे उत्साह तथा धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर वृहद यज्ञ हुआ जिससे ब्रह्मा श्री प० राजवीर शास्त्री थे।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती पाक का उद्घाटन श्री दीपचन्द बन्धु (उपमहापौर द्वारा किया गया। इस पाक के नाम करण कराने का श्रेय इस क्षेत्र के श्री निगम पार्षद श्री साहिब सिंह जी वर्मा को प्राप्त है। जिनके व्यक्तिगत अथक प्रयासो से दिल्ली म पहलीबार एक बहुत बडे पाक का नाम महर्षि के नाम पर रखा गया।

श्री दरबारी लाल का स्वागत किया गया। महर्षि का श्रद्धाजलि देते हुय समस्त समाजो को इस पाक मे प्रतिवर्ष इसी प्रकार उत्सव मनाने के लिए प्रेरणा दी तथा अपना पूण सहयोग देने का वचन दिया।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूयदेव जी का स्वागत किया गया। श्री स्वामी विजयानन्द जी ने श्रद्धाजलि देते हुए आयसमाजो को सतर्क रहकर और अधिक शक्तिशाली बनने का आह्वान किया।

उपमहापौर श्री दीपचन्द जी बन्धु के स्वागत के लिए आए सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल के बच्चो द्वारा बजाया गया बैण्ड वास्तव मे सराहनीय था।

आर्य विद्यामन्दिर आयसमाज केशव पुरम (लारेन्स रोड) तथा कुलाची हसराज मॉडल स्कूल अशोक विहार के बच्चो के रगा रंग कार्यक्रम उपस्थित सभी जनो मोह रहे थे।

मनेन्द्र शक्ति विद्यालय त्रिनगर के बच्चो ने भी बासुरी वादन से अतिथि का मन मोह लिया।

मुख्य अतिथि ने मच पर बोलते हुए अपना समाज से अटूट सम्बन्ध बताया और कहा कि आर्यसमाज जैसी श्रेष्ठ सस्था ससार मे कोई दूसरी नही है। उन्होने आगे कहा कि हमे पार्टी विशेष से दूर रहकर समाज कल्याण मे लगे रहना चाहिए।

श्रीमती सुषमा आर्या ने अपने मधुर गीतो से श्रोताओ को मुग्ध किया। श्रीमती प्रेमशील महेन्द्र की उपस्थिति ने मच की शोभा मे चार चाद लगा दिए।

स्वर्गीय श्री दीपचन्द जी आर्य (क्रांति साबुन) वालों के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री वेदपाल जी ने पाक के स्तम्भ मे लगाए गए महर्षि के नाम, नियम तथा शिक्षाओ से युक्त तीनो शिलाओ का व्यय करीब ३००० रुपए सहर्ष वहन किया।

मच टैन्ट आदि की व्यवस्था श्री दरबारी लाल जी ने स्वय कराकर समाजो को अनुगृहीत किया।

भारतीय संस्कृति का अपमान-लता

बम्बई। स्वर कोकिला लता मगेशकर ने कहा है कि श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या से वह सारी भारतीय सस्कृति हिल गई है, जिसमे महिलाओ के लिए विशेष सम्मान है।

लता मगेशकर ने श्रीमती गाधी को श्रद्धाजलि देने के लिए बुलाए गए एक समारोह मे भजन बोलने से पूर्व यह बात कही।

हत्यारो ने श्रीमती गाधी की हत्या करके हजारो सालो से चली आ रही भारतीय सस्कृति को चोट पहुचाई है। उन्होने भारत का अपमान किया है, उन्होंने आरी सस्कृति को तहस-नहस कर दिया लेकिन हिंसा का जवाब हिंसा नही है। घृणा को घृणा से समाप्त नहीं जा सकता। घृणा तो प्यार से ही समाप्त हो सकती है।

आर्य स्त्री समाज अशोक बिहार का वार्षिकोत्सव

आर्य स्त्रीसमाज अशोक विहार फेज-१ दिल्ली ५२ का १०वा वार्षिकोत्सव शुक्रवार दिनाक १६ ११ ८४ को आर्यसमाज मदिर एफ ५ अशोक विहार दिल्ली ५२ मे श्रीमती सरला महता की अध्यक्षता मे दोपहर १२।। से ४।। तक हो रहा है, जिसमे श्रीमती डा शान्ति देव बाला आचार्या लखनऊ विश्वविद्यालय के ओजस्वी भाषण, श्रीमती ईश्वर देवी जी तथा अन्य विदुषी बहिनो के प्रवचन होगे।

यज्ञ की ब्रह्मा श्रीमती शान्तिदेवी अग्निहोत्री तथा कविता पाठ कवयित्री श्रीमती पदमा शर्मा मेरठ वालो के होगे।

सभी आर्य बहिनो मे इसमे भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया जाता है। आर्य समाज अशोक अशोक विहार फेज I F 5 का वार्षिकोत्सव भी १२ ११ ८४ से १८ १२ ८४ तक होगा।

भजन श्री पथिक जी के रात्रि को हुआ करेंगे। उच्च कोटि के विद्वानो के भाषण भी होगे।

सभी आमत्रित हैं

सयोजिक श्रीमती प्रेमशील महेद्र होगी। —पदमा तलवाड मत्रिणी आर्य स्त्रीसमाज

एक सामयिक ग्रन्थ तूफान के दौर से पजाब

तूफान के दौर से पजाब—लेखक श्री क्षितीश वदालकार प्रकाशक—दि वर्ड पब्लिकेशन्स ८०७।६५ नेहरू प्लेस, नई दिल्ली १९। पृष्ठसख्या २२०, अजिल्द का मूल्य ४८)।

यह तथ्य है कि सतलुज से खैबर तक और लद्दाख से सि धु की सीमाओ तक फैला विस्तृत भूभाग का ४० वर्ष का खालसा राज केवल दस वष की अल्पावधि मे विदेशी षडयन्त्र निहित स्वार्थों पारस्परिक फूट के कारण ब्रिटिश साम्राज्य मे विलीन हो गया था। खालसा राज के खत्म होते ही समस्त सिख सैनिको को निहत्था करके वेतन देकर घरो पर वापस पक्की छुट्टी पर भेज दिया गया, दूसरे सेना मे सिखो की भर्ती बन्द कर दी गई तीसरे सिखो ने बिना किसी विरोध के हथियार डाल दिए। कुछ ही वर्षों मे बेरोजगार खालसा सैनिक सिखो के समूह बेतरतीब घूमने लगे। उस समय सर जान लारस और लार्ड डलहौजी न दमन की अपेक्षा सुविधा देकर खालसा सिख सैनिको को विद्रोही पूरबियो और मुस्लिम सैनिका के विरुद्ध प्रतिशोध की भावना से भर दिया। जागीरो और पे शनो के आश्वासन से वे फिरगियो के हाथ के खिलौने बन गए, उन्होने आजादी की लडाई मे अग्र जो का साथ दिया।

बात बडी अटपटी लगती है परन्तु है सौ टके सच्ची कि महाराजा रणजीत सिंह के खालसा राज को समाप्त करने वाला लार्ड डलहौजी जूते पहनकर स्वर्णमन्दिर गया था और उसके स्वागत मे वहा दीवाली मनाई गई थी स्वर्णमन्दिर की चाबिया अग्र जो को सौप दी गई थी सिंह सभा का सदस्य एक अग्र ज हो सकता था परन्तु सहजधारी हिन्दू नही, सन १८५७ के स्वत त्रता युद्ध म अग्रेजो के विरुद्ध लोहा लेने वालो का गद्दार कहा गया था गोरक्षा के लिए प्राण न्योछावर करने वाले नामधारी कूकाओ को पथ-भ्रष्ट कहा गया।

पिछले जून मास मे पाकिस्तान,अमेरिका कनाडा और ब्रिटेन स्थित तत्वा के सहयोग से भारत के पश्चिमोत्तर क्षत्र से खालिस्तान बनाने का षडय त्र पनप रहा था। विगत ३ वर्षों से पजाब मे हत्याओ, डकैतियो, लटमार और अराजकता का नग्न नृ य प्रचलित था पडयन्त्र एव इन काण्डो से त्रस्त होकर केन्द्रीय सरकार को वहा आपरेशन ब्लू स्टार करना पडा। आपरेशन के फलस्वरूप वह षडयन्त्र तो अकारथ गया पजाब मे परिवतन का नया माहौल आया। इस घटनाचक्र के बावजूद आतकवादियो ने सुरक्षा सैनिको के माध्यम से उन्हे मरवाकर ३१ अक्तूबर के दिन भारत की लोकप्रिय प्रधानमन्त्री की हत्या करवा दी है।

पिछले वर्षों मे पजाब तूफान के भीषण दौर से गुजरा है उस दौर की भीषण प्रतिक्रिया प्रधानमन्त्री इन्दिरा जी की हृ या से भारतीय राष्ट्र को भी सहनी पडी है, पजाब की यह सारी समस्या क्या है उसकी पृष्ठभूमि किन तत्त्वो ने तैयार की है, और उनका समुचित समाधान क्या हो सकता है इन सबका सामयिक विवेचन प्रस्तुत सामयिक ग्रन्थ मे किया गया है राजनीतिविज्ञान के अध्येताओ के साथ सामान्य पाठको के लिए भी यह ग्रन्थ पठनीय है।

'एकला चलो रे!'

नई दिल्ली 'एकला चलो रे श्री गुरुदेव रवीद्रनाथ की यह कविता श्रीमती इन्दिरा गाधी की कुछेक चुनीदा पसन्दीदा कविताओ मे से एक थी। इस कविता के लिए श्रीमती गाधी के दिल मे एक खास जगह थी। अक्सर वो इस कविता को बगला मे सुनाया करती थी।

हत्या से एक माह पूव ही एक विदेशी लडकी ने उन्हे एक कविता भेजी थी जिसे उसके दिल ने कही गहराई मे छुआ था। श्रीमती गाधी उस लडकी का एकला चलो भेजना चाहती थी इसलिए उन्होने इस कविता के कई अनुवाद करवाए और उनमे छाटकर खुद अपनी कलम से उसमे फर बदल किए ताकि जो भावना वो कविता मे चाहती हैं वो उसमे आ सक। श्रीमती गाधी ने अपनी कलम से उस लडकी को एक खत लिखा कि गुरुदेव की कविता का मैंने यह टूटा फूटा अनुवाद किया है।

आह इंदिरा!

रक्षक ही भक्षक बन जाय नही मिलेगी कही मिसाल।
क्रूर कमीने हत्यारा ने, कैसा रचा घिनौना जाल।
छीन लिया क्यो हाय हमसे ? इंदिरा जसा अदभुत लाल।
कैसा विधि का वज्रपात यह, शोकाकुल है भारत भाल।

—प्रकाश प्रभाकर (सोनीपत)

इन्दिरा हत्या-योजना का ब्लू प्रिंट कनाडा स्थित उग्रवादियो ने भेजा था!

नई दिल्ली ६ नवम्बर। दिवगत प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या के सिलसिले मे केन्द्रीय गुप्तचर ब्यूरो को कुछ ऐसे सूत्र मिले हैं, जिनसे हत्या के षडयन्त्र में कुछ विदेशी सगठनो का हाथ होने तथा उनके द्वारा कुछ अधिकारियो के माध्यम से भ्रातिया फैलाए जाने की पुष्टि हुई है। इसके साथ ही इन चौकाने वाले सुरागो से जाच की दिशा ही बदल गई।

गृहम त्रालय के सूत्रा के अनुसार श्रीमती गाधी की हत्या के सिलसिले म गुप्तचर ब्यूरो के अधिकारी चार विभिन्न कडिया को परस्पर जोडकर जाच पडताल कर रहे हैं। ये कडिया राम मनोहर लोहिया अस्पताल म भर्ती हत्यारा सतवत सिंह उसे शपथ दिलाने वाला ज्ञानी चरणजीत सिंह जो दुघटना म घायल होकर तीथराम अस्पताल मे भर्ती है और कुछ सूत्रा के अनुसार विदश भाग गया बताया जाता है, एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी और हत्यारा का एक अन्य साथी जो फिलहाल हिरासत म है।

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह मे निर्वाण शताब्दी के अवसर पर भव्य स्मारिका का प्रकाशन अपनी रचनाए और विज्ञापन भेजिए

श्रद्धा-सुमन

सत्य का सदा छला असत्य ने, रही सत्य की परम्परा ये।
छलवाता रहा सदा अपने को कभी न पाछे हटा कदम य।
बलिपथ पर ही चलता वीरो का कम रहा है।
निभय और दृढ निश्चय उनका मम रहा है।
बलिपथ के अन्तिम छोर पर अमर व का कुम्भ भरा है।
जो भी है उस छोर पे पहुचा उसने उसका वरण करा है।
बलिपथ के ये अनुयायी, युगपुरुष सभी कहलाते है।
जनमानस की सेवा कर, ये सभी अमर हो जात हैं।
मानवता के लिए समर्पित हुए यहा अनगिन बलिदान।
उनम हुआ आज नवाप्रकित, इन्दिरा जी का नाम।
तुमने अपने अभिक्रम से भारत का ऊचा भाल किया।
जो भी निश्चय लिया देशहित पूर्ण उसे तत्काल किया।
तुम अमर हुई तुम अजर हुई तुमको प्रणाम हमारा है।
तुम परम सत्य मे लीन हुई, तुमको प्रणाम हमा रा है।

—आनन्द रक बन्धु'

इंदिरा दहेज-हत्याओं के विरुद्ध प्रबल जनमत पैदा करने की पक्ष मे थी

दिवगत प्रधानमन्त्री श्रीमती इदिरा गाधी भारतीय महिलाआ के जीवन स्तर और उनकी स्थिति म सुधार लाने की प्रबल समथक थी लेकिन वह यह भी चाहती थी, कि भारतीय महिलायें भारतीय समाज की बडी मस्थाम्रा को ध्यान मे रखकर अपनी समस्याआ पर विचार करें।

उनका विचार था कि दूसरे देशा के महिला आदालनो जहा पुरुषो के बराबर अधिकार प्राप्त करो का सघष है और भारतीय स्थिति म बहुत अन्तर है। उनकी इच्छा थी कि महिलाओ को अपने व्यक्ति व का इस ढग से विकास करना चाहिए कि समाज के हित म उसका अत्यधिक प्रयाग हो सके। उन्होने स्पष्ट किया था कि जैसे पुरुष और महिलाआ न एकजुट हाकर भारत की आजादी के लिए सघष किया था उसी प्रकार अब भारत क विकास और प्रगति के लिए इकट्ठा काम करें।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के लिए श्री डा० धमपाल आय द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस, २२७४ रघुबरपुरा न० २, गाधीनगर, दिल्ली ३१ मे मुद्रित। १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० रजि० न०, डी (सी०) ७५६

ओ३म्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वर्ष ६ अंक ३ रविवार १८ नवम्बर १९८४ आर्य संवत्सर १९६०८५३०८४ ३ मार्गशीर्ष २०४१ दयानन्दाब्द—१५८

इंदिरा जी का निधन मानव मात्र के लिए महती क्षति

सभी राष्ट्रवादी शक्तियां शहादत से सीख लें : अखण्डता की रक्षा करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दीवान हाल में शांति-यज्ञ व श्रद्धांजलियां

नई दिल्ली। इन्दिरा गांधी युगमानवी थीं, वह भारतीयता का जीवन्त प्रमाण थीं, यह अत्यन्त खेद की बात है कि पंजाब के लोगों ने जहां लाजपतराय मदनलाल ढींगरा और भगत सिंह जैसे शहीद और राष्ट्रवादी रहे श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या की जघन्य हत्या का अपराध किया।" रविवार ११ नवम्बर को प्रातः १० बजे दीवान हाल में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में आयोजित एक श्रद्धांजलि सभा में लोकसभा के अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ ने उक्त उद्गार प्रकट करते हुए आगे कहा— शुद्ध आत्मा, कर्म व तपस्या से ही यह घृणित पाप धोया जा सकेगा। कितने दुःख की बात है कि रक्षक ही भक्षक हो गया। ठीक उसी प्रकार जैसे एक डाकू ने साधु के वेश में सन्त हरिदास के घोड़े पर कब्जा कर लिया था।

इस अवसर पर केन्द्रीय ऊर्जा मन्त्री श्री पी० शिवशंकर ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के अद्वितीय गुणों व बहादुरी की प्रशंसा की। प्रमुख पत्रकार श्री दीवान द्वारका खोसला ने श्रीमती गांधी को राष्ट्रमाता की संज्ञा देते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सभा में सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले, दैनिक हिन्दुस्तान के सम्पादक श्री विनोद कुमार मिश्र आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती आदि ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए उनके उज्ज्वल व्यक्तित्व एवं कार्यों से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

ऊर्जा मन्त्री श्री पी० शिवशंकर श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए। बाएं से लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री शालवाले कोषाध्यक्ष श्री सरवाहा आदि।

आततायियों के विरुद्ध कार्यवाही हो

श्रद्धांजलि सभा से पूर्व दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए शांति यज्ञ किया गया। सभा में एक प्रस्ताव स्वीकृत कर घोषित किया गया कि देशी विदेशी साम्राज्यवादी, अलगाववादी ताकतों के हिंसक प्रहार से भारतीय राष्ट्र की जनता की आकांक्षाओं की प्रतीक श्रीमती इंदिरा गांधी की असामयिक हत्या से भारत की स्वतन्त्रता एकता अखण्डता और प्रभुसत्ता की रक्षार्थ उन्होंने शरीर की अंतिम बूंद तक भारत माता की वेदी पर बलिदान कर दी।

श्रीमती गांधी एक महान आत्मा थीं उन्होंने भारत को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानजनक स्थान दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाही। उनका निधन केवल भारत के लिए ही नहीं अपितु मानव मात्र के लिए एक महती क्षति है। इस अवसर पर सभी राष्ट्रवादी शक्तियों को उनकी शहादत से सबक लेकर राष्ट्र की अखण्डता तथा प्रभुसत्ता के लिए एकजुट होकर प्राणपण से कार्य करने का संकल्प लेना चाहिए।

इस सभा में उपस्थित आर्यजनों ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हुए उनके परिवार जनों तथा मानव मात्र को सान्त्वना के लिए प्रभु से प्रार्थना की। साथ ही यह प्रण भी किया गया कि श्रीमती गांधी के बताए हुए मार्ग पर चलकर सदा राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य करते रहेंगे। आर्यसमाज श्री राजीव गांधी के नेतृत्व में राष्ट्रोत्थान के लिए सभी कार्यों को पूरी शक्ति से पहले की ही भांति करता रहेगा। साथ ही हम सरकार से अपेक्षा करते हैं कि आततायियों, उलटा सीधा लिखने बोलने वाले देशी विदेशी समाचार पत्रों सामाजिक और धार्मिक कार्यकर्ताओं तथा नेताओं के विरुद्ध न्याय संगत कार्यवाही की जाएगी।

इन्दिरा जी शताब्दी की सबसे महान् महिला

आर्यसमाज लन्दन के प्रधान प्रो० सत्यदेव एन० भारद्वाज ने ब्रिटेन स्थित भारतीय उच्चायुक्त की मार्फत भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को सन्देश भेजकर भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी पर किए कायरतापूर्ण घातक हमले की तीव्र भर्त्सना करते हुए श्रीमती गांधी को इस शताब्दी की सबसे महान महिला घोषित किया है। आशा है कि पूर्व परम्पराओं का पालन करते हुए भारत को समृद्ध शक्तिशाली और दूसरे देशों के लिए अनुकरणीय बनाया जाएगा।

पुलिस अधिकारियों की सराहना

आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान श्री सूर्यदेव ने एक प्रेस वक्तव्य में पिछले दंगे दौरान चांदनी चौक में क्षेत्र में स्थानीय जनता की जान माल की सुरक्षा में स्थानीय पुलिस अधिकारियों की दूरदर्शिता व कार्य कुशलता को सराहा है फलतः यहां के किसी धार्मिक भी स्थान को क्षति नहीं पहुंची।

श्रद्धांजलि निमित्त हवन भजन-कीर्तन

रविवार ११ नवम्बर को संसद सदस्य एवं विश्व सिन्धी समाज के अध्यक्ष आचार्य भगवान देव के सान्निध्य में १३ लोधी एस्टेट नई दिल्ली ३ में विशेष श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर दिवंगत प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी की स्मृति में श्रद्धांजलि परक हवन भजन-कीर्तन किया गया।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति व्यवस्थापक—डा० गणेशीलाल

परमात्मा सब सृष्टि के उत्पादक

त्वमस्य पारे रजसो व्योमन स्वभूत्योजा अवसे धृषन्मन ।

चकृषे भूमि प्रतिमानमोजसोऽप स्व परिभूरेष्या दिवम् ॥ ऋ० १।५२।१२॥

आंगिरस सव्य ऋषि, इन्द्र देवता, निचृत्त्रिष्टुप् छन्द, धैवत स्वर।

शब्दार्थ—हे परमैश्वर्यवन् परमात्मन्। [त्वम्] आप [अस्य] इस ससार के [रजस] पृथिव्यादि सब लोको (तथा) [व्योमन] आकाश के (भी) [पारे] पार अर्थात् परे ही (और) [स्वभूत्योजा] अपने अनन्त ऐश्वर्य वा पराक्रम से विराजमान हो के [धृषन्मन] दुष्टो के मन को धर्षण अर्थात् तिरस्कार करते हुए [अवसे] (हमारी रक्षा के लिए [परिभू] सब पर वर्तमान और सबको [एषि] प्राप्त हो रहे हो (किञ्च आपने) [ओजस] अपने ओज अर्थात् अनन्त सामर्थ्य से [प्रतिमानम्] अवधि सहित ठीक मान से [भूमिम्] भूमि को (क) [स्व] सुख विशेष मध्य लोक, (वा) [दिवम्] परमाकाश अथवा सूर्यादि द्युलोक को (तथा) [अप] अन्तरिक्ष लोक का जल (इन सबको) [आचकृषे] अच्छी प्रकार रचा है॥

व्याख्या—पृथिवी सूर्य चन्द्रमा तारा गणादि विविध प्रकार के सब लोक लोकान्तरो की ठीक परिमाण से ज्ञानपूर्वक रचना करने वाला परमात्मा ही है। वह अनन्त है वह इस समस्त सृष्टि के अन्दर और बाहर भी व्यापक हो रहा है। उसका पार कोई नही पा सकता। वह अनन्त ऐश्वर्य वा अनन्त बल वाला भी है और हमारी रक्षा के लिए दुष्टो के मनो को सदा तिरस्कार कर रहा है जिससे उन को पाप करते समय भय, शका व लज्जा उत्पन्न होती है और फिर भी यदि हम दुख पाते हैं तो इस लिए कि हम इसके लिए पूर्ण पुरुषार्थ नही करते हैं अथवा जिन को हम चुनाव द्वारा शासकाध्यक्ष (प्रधानमन्त्री मुख्यमन्त्री आदि) बनाते हैं वह ऊचे आचार का अथवा बलवान मन वाला नही होता और अपने कर्त्तव्य का पालन नही करता। यदि हम अपनी सहायता स्वय नही करेंगे, तो परमात्मा हमारी सहायता नहीं करेगा।

भावार्थ—परमेश्वर सबसे उत्तम और सब दुखो से परे अपने अनन्त ज्ञान वा अनन्त सामर्थ्य से इस समस्त जगत की अद्भुत रचना करने वाला है और सर्वत्र व्यापक होकर इन सब लोकालोको की ठीक व्यवस्था भी कर रहा है और सब जीवो को उनके पाप-पुण्यो का फल यथोचित देकर पूर्ण न्यायधीश सिद्ध हो रहा है। ऐसे ही सभेश (प्रधानमन्त्री अथवा मुख्यमन्त्री) को भी चाहिए कि ठीक शासन द्वारा प्रजा को सुख देवे अर्थात् कोई चोर-डाकू, हत्यारा, छली, कपटी, विषयी, जुआरी, आलसी अथवा विद्याहीन देश मे न रहे और प्रजा की रक्षा पूर्णतया करे।

बी० १०३, नीतिबाग, नई दिल्ली-४९

आर्यसमाज को आय का एक प्रतिशत या अधिक क्यों ?

—रामस्वरूप

भारत मे आर्यसमाज के प्रातीय सगठन व विदेश मे राष्ट्रीय सगठन प्राथमिक (कम से कम १० सभासद्) आर्यसमाजो से आय का १० प्रतिशत लिया करते हैं। प्रातीय सगठनो को प्राथमिक आर्यसमाजो से शिकायत रहती है कि प्राथमिक सभासदो की आय के अलावा अन्य आय (किराया आदि) का भाग नही मिलता प्राथमिक आर्यसमाजें परेशान हैं कि सभासद् उनकी आय का एक प्रतिशत नही देना चाहते। बहुत थोडे से ऐसे सभासद् हैं जो स्वेच्छा से एक प्रतिशत या अधिक देते रहते हैं। अभी अधिक आर्यसमाजें तो ऐसी ही हैं जिनके सारे अधिकारी भी १प्र नही देते हैं। सभासदो मे जहा तक प्रेरणा भरने की बात हैं वह कार्य तो पुरोहित एव यति कर सकते हैं। सगठन या प्राथमिक समाज के अधिकारी तो व्यवस्था को इस प्रकार से करे कि एक प्र० मिल ही जाए, वरन् इससे भी अधिक ही मिले। प्राथमिक आर्यसमाज मे जो उपस्थिति-पुस्तक हो इसमे निम्न सूचनाए हो—१ सभासद् बनने की तिथि, २ नाम। इसके साथ वर्ण-व्यवसाय-विद्या-उपाधि आदि को पैत्रक मान रखे उपनाम नही हो। ३ पिता का नाम या पति। अथवा पत्नी। नाम, ४ स्ववश नाम। विवाहित स्त्री सभासद् है तो उसका वश, पति का नही। ५ व्यवसाय। अपनी मेहनत की आय का साधन। ६ पूरा पता। जिसमे चिट्ठी मिले, साथ ही कोई घर पहुचना चाहे तो पहुच सके। ७ स्व अर्जित आय —

अपने शारीरिक या बौद्धिक श्रम द्वारा प्राप्त आय तो एक भाग है। यदि मेहनत की कमाई से बचत होती है जो अधिकोष (बैंक) मे जमा है तो उसका ब्याज भी। साथ ही अपनी मेहनत से कोई मकान बनाया या बनाए हैं तो उनका किराया भी।

उपस्थिति पजिका मे दिनाक १ से ३१ तक सकेतित होती है। अत सभासद् अपने हस्ताक्षर जिस दिन आएगा, उस दिन कर देगा। आय भरने का जो स्थान है उसमे भी सभासद् के हाथ की लिखावट होनी चाहिए। कोषकार एक प्रतिशत आदि की रसीद अपने हाथ से बनाऐ। सभासद् स्वय ही आय भरेगा तो अपने का अधिक उत्तरदायी मानेगा। आमदनी के लिए जो खाना (कालम) हैं उसमे से तीनो स्रोत लिखे जाएगे। हर स्रोत मे जो आय उस मास विशेष मे होवे वह सभासद् द्वारा लिखी जाए।

बिना मेहनत की आय भी हो जाती हैं। जैसे उपहार। मास या वर्ष मे जो उपहार मिलते हैं—यदि कुछ, तो उसका भी सकेत हो। पिता या दादा आदि की ओर से मिला धन व उसका ब्याज भी जायदाद व उसका किराया ये तो उपहार है ही। उसकी पत्नी अभिभावको से किसी प्रसग मे उसको कोई वस्तु मिले या धन-सम्पत्ति आदि ये सब उपहार ही हैं। कारण इनकी प्राप्ति से उसकी अपनी मेहनत तो कुछ है नही। ससुराल वालो से प्राप्ति चाहे विवाह के समय अथवा विवाह के बाद मे वह तो सारी उपहार है।

आर्यसमाज, वेद प्रतिपादित आश्रम पद्धति को स्वीकार करता है। किसी भी प्रकार का वशगत वा पैतृक अथवा श्रमहीन अधिकार वेदानुकूल नही हैं। आश्रम शब्द ही बताता है, सब ओर यानी ६ दिशाओ मे जो हैं उनके लिए श्रम करना हैं। अत आर्य सभासद् होने को सार्थक करना है तो पितृवश-मातृवश पत्नी के माता-पिता के वश या अन्य किसी से किसी भी प्रकार का उपहार नही लिया जाए। 'उपहार' से जो मासिक या वार्षिक आय है उसका एक प्रतिशत ही क्या वह तो पूरी ही आर्यसमाज को दी जानी उचित है। यदि सभासद् कही अन्य लोक कल्याणकारी सस्थाओं का भी सदस्य है तो उपहार की आय मे से उनको भी दे सकता है, परन्तु आर्य सभासद् के लिए योग्य तो यही है कि श्रम रहित-पैतृक अधिकार आदि की आय स्वय के उपभोग मे नही ले। ऐसा होने से आर्यसमाजो की आय तेज गति से बढ जाएगी। एक प्रतिशत स्वश्रम आय देने से ही आर्यसमाजो की आय अच्छी मात्रा मे बढ सकेगी।

सभासदो की आय का एक प्रतिशत या अधिक ? इस बारे मे हर प्राथमिक आर्यसमाज मे परिचर्चा आयोजित की जाए। किस किस प्राथमिक समाज मे कितने सदस्य एक प्रतिशत देंगे, कितने अधिक प्रतिशत देंगे। ये आकडे भी एकत्र किए जाए। एक प्रतिशत या अधिक वालो को पदाधिकारी का प्रतिनिधि बनाने मे वरीयता दी जाए। सार्व आर्यसमाज सगठन को योग्य है कि सब आय पत्रो मे यह निबन्ध प्रकाशित कराए। प्रान्तीय-राष्ट्रीय सार्वदेशिक सभा की आय बढाने का वातावरण इस रीति से बनेगा।

स्वाध्याय-सुख,
गणेश कुटीर, गेदालाल मार्ग,
अजमेर-३०५००१

धर्म की दुहाई।

महाभारत के युद्ध का प्रसग है। कौरवो और पाण्डवो की सेनाओ के मध्य भीषण युद्ध चल रहा था। कौरवो के पहले दो प्रधान सेनापति भीष्म पितामह और गुरु द्रोणाचार्य युद्ध क्षेत्र से विदा हो चुके थे। कौरवो की सेनाओ का नेतृत्व योद्धा कर्ण को सौपा गया था। कर्ण ने एक सर्पाकार बाण डोरी पर चढाकर फेंका चतुर सारथी श्री कृष्ण ने रथ के घोडो की लगाम खीचकर उन्हे घुटनो के पर बैठा दिया। रथ नीचा हो गया, पहिए पृथ्वी मे गड गए, कर्ण का तीर सिर पर गुजरते हुए उसके मुकुट को गिरा गया, युद्ध के नियमो के अनुसार कर्ण को युद्ध बन्द कर देना चाहिए था, परन्तु वह युद्ध करता रहा, श्री कृष्ण ने पहिए को निकाल दिया और अर्जुन लडता रहा, कुछ ही देर मे अर्जुन के तीर से कर्ण बेहोश हो गया, अर्जुन ने युद्ध बन्द कर दिया।

इतने मे कर्ण के रथ का पहिया पृथ्वी मे धस गया, कर्ण ने अर्जुन को सग्राम-धर्म की दुहाई दी तब श्री कृष्ण ने उत्तर दिया—'जब भीम को जहर-भरा भोजन दिया था, तब तुम्हारा धर्म कहा गया था, जब माता कुन्ती समेत पाण्डवो को जलाने के लिए लाक्षागृह का निर्माण किया गया था, तब तुम्हारा धर्म कहा गया था, तेरह बरस का बनवास पूर्ण होने पर जब तुम लोगो ने पाण्डवो का राज नही लौटाया, तब तुम्हारी धर्म की दुहाई कहा गई थी, अकेले बालक अभिमन्यु को छह महारथियो द्वारा मारते समय तुम्हारा धर्म कहा गया था आततायी लोगो द्वारा धर्म की दुहाई शोभा नही देती।" कर्ण लडने लगा, उसके बाण से अर्जुन सुन्न हो गया। अवसर पाकर कर्ण पहिए को गढे से निकालने लगा, तब तक अर्जुन सचेत हो गया था, उसने कर्ण के सम्भलने से पहले ही उसकी गर्दन पर निशाना जमा दिया।

—नरेन्द्र

भगवान् शांतिप्रद हो !

ओ३म् श नो मित्र ! श वरुण श नो भवत्वर्यमा।
श न इन्द्रो बृहस्पति शनो विष्णुरुरुक्रम ।। ऋ० १-९० ९,
यजु० ३६ ९, अथर्व० १९ ९६

मित्र स्वरूप भगवान् हमारे लिए सुखकारी हो, सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर सुखदायक हो, न्यायकारी ईश्वर हमारे लिए शान्तिप्रद हो, नियामक इन्द्र एव सद्विवेकी बृहस्पति तथा कल्याणकारी विष्णु रूप परमेश्वर हम सबके लिए कल्याणकारी हो।

शक्तियों के संघर्ष में हमारा दायित्व

आर्यसमाज सामान्यत प्रत्यक्ष राजनीति में भाग नहीं लेता, परन्तु वह राष्ट्रीय रगमच पर घटने वाले हिंसक राष्ट्रविरोधी घटनाचक्रो की उपेक्षा भी नही कर सकता। पिछले दो-तीन वर्षों से देश के पश्चिमोत्तर क्षेत्र मे जिस प्रकार के हिंसक राष्ट्रविरोधी अलगाववादी कृत्य हो रहे थे, जिनसे देश का यह सवेदनशील क्षेत्र सकटग्रस्त हो उठा था, उसे नियन्त्रण करने के लिए जून के प्रथम सप्ताह मे केन्द्रीय सरकार को आतकवादियो के अमृतसर स्थित गढ का नियन्त्रण करने के लिए सैनिक कार्यवाही करनी पड़ी। उस कार्यवाही के बाद प्रदेश मे स्थिति कुछ नियन्त्रित हुई थी कि ३१ अक्तूबर के दिन भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इदिरा गाधी की उनके सुरक्षा सैनिको ने ही हत्या कर दी। इस घटना से सारा देश स्तब्ध एव किकर्तव्यविमूढ सा हो गया। खेद का विषय है कि कुछ गुमराह लोगो ने इस घृणित कृत्य पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। यह खेद की बात है कि इसकी भी अत्यन्त भीषण प्रतिक्रिया हुई। देश के अनेक स्थानो पर अव्यवस्था और अराजकता स्थापित करने की कोशिश की गई। यह सतोष की बात है कि प्रारम्भिक अव्यवस्था के बाद अब सारे देश मे शाति स्थापित हो गई है।

देश में शासन चाहे किसी भी दल का हो, परन्तु प्रत्येक राष्ट्रवादी को कुछ मौलिक बुनियादी विषयो मे स्पष्ट नीति अगीकार करनी चाहिए। आधुनिक प्रजातन्त्री राष्ट्रो की तरह हमे यह अगीकार करना चाहिए कि देश उन्नति कैसे करे, वह किस प्रकार की रीति-नीति अगीकार करे, वह किस प्रकार के वाद को मान्य करे, उसमे स्वतन्त्रता रखने के बावजूद राष्ट्र को आतरिक अव्यवस्था एव बाह्य आक्रमणो से सुरक्षित करने के लिए किसी प्रकार का मतभेद नही होना चाहिए। गन्धर्वों के राजा चित्ररथ द्वारा कौरव पक्ष के नेताओ को गिरफ्दार करने पर युधिष्ठिर द्वारा अपने भाइयो को दी हुई सीख हमारे लिए आज भी मागदर्शक हो सकती। युधिष्ठिर ने अपने भाईयो को परामर्श दिया था—'कौरव सौ हैं और हम भाई पाच। हमारे आपसी विवाद या मनभेद हो सकते हैं, उन्हे सुलझाने के लिए हमें यत्नशील होना चाहिए। परन्तु यदि हमारे विरुद्ध कोई बाहरी शक्ति आए तो हमे मिलकर एक सौ पाच के रूप मे व्यवहार करना चाहिए।' आज हमारे राजनीतिक नेता स्वस्थ प्रजातन्त्र की इस सीख को मानकर राष्ट्रीय व्यवहार मे कार्य करें तो अनेक समस्याए सुलझ सकती है।

इसी के साथ हमे यह भी स्मरण रखना होगा कि भारत की स्वतन्त्रता देश की केन्द्रीय सत्ता के दिर्बल होने से अनेक बार खतरे मे पडी है। जब-जब केन्द्र कमजोर हुआ, देश बट गया और विदेशी यहा प्रभुत्व स्थापित करने मे सफल हुए। इसी के साथ हम यह भी नही भूल सकते कि हमारे देश मे जयचन्द, और मीरजाफर और दूसरे गद्दार पचमागी सदा रह हैं, जिनके धोखे से देश का पराजय का सामना करना पड़ा। देश की प्रधानमन्त्री की हत्या सुरक्षा सैनिको द्वारा लाखो विदेशी मुद्रा की घूस लेने के कारण ही सम्भव हुई। स्पष्ट है कि हमारे देश मे वह राष्ट्रभक्ति, वफादारी और नैतिकता नही है जो दूसरे देशो मे है। देश भर मे—कम से कम आर्यजनो मे नैतिकता एव चरित्र के ऊचे मापदण्ड को स्थापित करने मे आर्यसमाज अपनी यशस्वी भूमिका प्रस्तुत कर सकता है। भारत मे दैवी आसुरी शक्तियो के सघर्ष की घडी मे कुछ सहस्र-लक्ष या कोटि सच्चे आर्यजन अपनी तन-मन धन की आहुति देकर भारतीय सस्कृति एव वैदिक मानवीय तत्त्वज्ञान की प्रतिष्ठा मे अपनी गौरवपूर्ण भूमिका प्रस्तुत कर सकते हैं।

आर्यसमाज सगठन और पौरोहित्य अधिष्ठाता

सार्वदेशिक-राष्ट्रीय-प्रदेशो की आर्य प्रतिनिधि सभाओ मे वेदप्रचार अधिष्ठाता हुआ करता है। ठीक ऐसे ही पौरोहित्य अधिष्ठाता भी हर स्तर पर हो। सार्वदेशिक का पौरोहित्य अधिष्ठाता, सूचनाए प्राप्तकर्ता रह, राष्ट्रीय पौरोहित्य अधिष्ठाओ से। उनका मार्गदर्शन भी करता रहे। इसी प्रकार से राष्ट्रीय पौरोहित्य अधिष्ठाता प्रदेश पौरो अधि, जिला पौरो अधि किया करें। जिले स्तर पर जैसे पौरो अधि हो वैसे ही हर प्राथमिक आयसमाज म पुरोहित हो। सबकी विविध (शारीरिक-आत्मिक-सामाजिक) उन्नति करने की क्षमता उत्पन्न करना भी एक काय है पौरो अधि का। जिला पौरो अधि के आगे प्रखण्ड (या कि नगरपालिका) स्तर पर पौरो अधि बन सके तो बहुत अच्छा। अन्यथा तब तक जिला पौरो अधि प्राथमिक आयसमाजो का क्षेत्र (ग्राम पचायतें या नगर खण्ड) तय कर दें। सरल योग के माध्यम से शारीरिक-आत्मिक उन्नति तथा परिवार (या कुटुम्ब) मधुरता से सामाजिक उन्नति करन का सतत प्रयास पौरो अधि करें। गोष्ठी या शिविर कोई भी एक माध्यम बनाया जा सकता है इस कार्य के लिए।

आर्यसमाज भवन मे जो पुरोहित सब आर्य सभासदो की परिवार (पत्नी-सतानें) गोष्ठी कराके ही नियमित रूप से। आवश्यकतानुसार आय पत्नी, आय पुत्र (या पुत्री) इन इनकी गोष्ठिया भी कराई जाए। अलग-अलग तथा पूरे परिवार की सम्मिलित गोष्ठियो के अतिरिक्त पुरोहित हर सभासद् के परिवार मे जाया करें। वहा सबकी सम्मिलित तथा व्यक्तिगत चर्चाओ के माध्यम से पारिवारिक स्वास्थ्यवर्द्धन करें। ताकि सभासद् के परिवार जनो मे परस्पर मित्रता-मधुरता बढती रहे, और ये परस्पर व्यक्ति विकास करते रहे। यह कार्य इतना प्रभावशाली हो सकता है कि जो आर्य सभासद् नही वे भी 'आय पुरोहित' को बुलाने लगें। पुरोहित हर सभासद् की सतानो का पूरा विवरण भी रखे ताकि आर्य पुत्र (या पुत्री) के विवाह सम्बन्धी माग दर्शन कर सके। कार्य का विवरण पुरोहित भेजे, प्रखण्ड (या जिला) पौरो. अधि को। ऐसे ही प्रदेश-राष्ट्रसार्वदेशिक पौरो अधि को विवरण जाये। यदि कोई सभा तैयार हो। तो उस क्षेत्र के पुरोहितो को प्रशिक्षित किया जा सकता है।

—रामस्वरूप द्वारा स्वास्थ्य-सुख, गणेश कुटीर, गेंदालाल माग, अजमेर-३०५००१

"महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर और इतिहास चिन्तन"

शिवाजी के प्रयत्न से समूचे देश मे एक अस्थायी उत्साह फैल गया और हमने समझ लिया कि देश सगठित हो गया। परन्तु समूचे समाज रूपी शरीर मे पडी हुई दरारें और छिद्र गुप्त रूप से काय किया करते है। उनके कारण हम किसी उच्च आदर्श को चिरकाल तक बनाए नही रख सकते। शिवाजी ने इन दरारो को वैसी की वैसी बनाए रखना चाहा। वह मुगलो के आक्रमण से एक ऐसे हिन्दू समाज की रक्षा करना चाहता था, तो जातिभेद के विभाजन और अलगाव को ही जीवन का धर्म समझता है। वह विषमता से भरे हुए गगा-जमुनी समाज को समूचे भारत का विजेता बनाना चाहता था, इसलिए मानो वह बालू की दीवारे खडी कर रहा था। वह असम्भव को सम्भव बनाने जा रहा था। जाति पात से बुरी तरह दबे हुए भीतर से फटे और बिखरे हुए हिन्दू समाज का भारत जैसे विशाल महाद्वीप पर स्वराज्य स्थापित करना मनुष्य की शक्ति से बाहर और निसर्ग के विरुद्ध है। (शिवाजी एण्ड हिज टाइम्ज, पृष्ठ-४३०-४३७)

प्रेषक प्रा धर्मेन्द्र घोग्रा, ओकार कुज, खारीबाव रोड, बडोदरा ३९०००१

स्वामी दयानन्द और महात्मा गाधी

दि ७ अक्तूबर के आयसदेश मे डा कमलकिशोर गोयनका ने उपयु क्त शीर्षक लेख के अन्तर्गत महात्मा गाधी के स्वामी दयानन्द एव आर्यसमाज विषयक विचारो की सुन्दर विवेचना की है। यहा यह स्मरणीय है कि २९ मई १९२४ के 'यग इण्डिया' मे महात्माजी ने सत्यार्थप्रकाश को एक निराशाजनक पुस्तक तथा स्वामी दयानन्द को असहिष्णु, अनुदार तथा हिन्दू धम को सकीर्ण बनाने वाला आदि लिखा था। कालान्तर मे दिल्ली के लाला ज्ञानचद ने सत्यनिर्णय शीर्षक पुस्तक लिखकर महात्माजी की इन आपत्तियो का उत्तर दिया था। यह ग्रथ १९३३ ई मे प्रकाशित हुआ था। इसका उर्दू सस्करण इजहारे हकीकत शीर्षक से प्रकाशित हुआ।

डा भवानीलाल भारतीय, चण्डीगढ

दक्षिण एशिया की सांस्कृतिक तीर्थयात्रा

— डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

हजारों पर्यटक प्रतिमास भारत से थाईलैंड और सिंगापुर जाते हैं। उनमें से कुछ पूर्व दिशा में और आगे बढ़कर हागकाग तक चले जाते हैं और कुछ जापान तक। पर्यटकों के लिए ये देश विशेष आकर्षण रखते हैं। सिंगापुर और हागकाग कस्टम्स फ्री (आयात कर से मुक्त) नगर हैं। वहां टेलीविजन, घड़िया, ऊनी वस्त्र और वीडियो आदि सस्ते मूल्य पर प्राप्त किए जा सकते हैं। आधुनिक, भौतिक सभ्यता का उत्कर्ष जापान में देखने को मिलता है। और हागकाग तथा पटाया (थाईलैंड की एक नगरी) विलासिता के प्रसिद्ध केन्द्र है। इन सब की ओर पर्यटकों का आकर्षक होना सर्वथा स्वाभाविक है।

पर सिंगापुर के दक्षिण-पूर्व में इण्डोनेशिया के जो द्वीप हैं, उनकी ओर भारत के पर्यटकों का अभी ध्यान नहीं गया। प्रकृति की रमणीयता तथा आधुनिक सुख-साधनों की दृष्टि से ये द्वीप विश्व के किसी भी पर्यटन-स्थल से कम नहीं हैं। बाली द्वीप में अमेरिका, आस्ट्रेलिया, जापान और यूरोप से लाखों पर्यटक भ्रमण के लिए आते हैं। और दक्षिण-पूर्वी एशिया में एक पर्यटन केन्द्र के रूप में उसकी बड़ी ख्याति है, पर भारत से कोई भी पर्यटक या यात्री वहां नहीं जाते। यह बात इस कारण और भी अधिक आश्चर्य की है, क्योंकि बाली द्वीप के ६५ प्रतिशत निवासी हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं, और धर्म तथा संस्कृति की दृष्टि से भारत के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। केवल बाली में ही नहीं, अपितु इण्डोनेशिया के जावा व सम्बक आदि द्वीपों में भी लाखों हिन्दुओं का का निवास है, और ये द्वीप सांस्कृतिक दृष्टि से अब तक भी भारत से प्रभावित है। सोलहवीं सदी के प्रारम्भ तक इण्डोनेशिया के प्रायः सभी द्वीपों में हिन्दू धर्म का प्रचार था और वहां के राजा हिन्दू धर्म के अनुयायी थे। उस समय तक दक्षिण पूर्वी एशिया का यह क्षेत्र वृहत्तर भारत का ही अंग था। पिछली चार सदियों में इण्डोनेशिया के बहुसंख्यक निवासी को इस्लाम को अपना चुके हैं पर अपनी प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराओं का उन्होंने परित्याग नहीं किया है। वहां की भाषा, कला, रीति-रिवाज, त्योहार, उत्सव, मनोरंजन आदि सब पर भारत का पूरा-पूरा प्रभाव आज भी विद्यमान है। हिन्दू धर्म का अभी वहां लोप नहीं हुआ है। इण्डोनेशिया के जो लोग हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं, उनकी संख्या अस्सी लाख के लगभग हैं, जिनमें से पच्चीस लाख के लगभग बाली द्वीप में निवास करते है, और दस लाख के लगभग सम्बक द्वीप में। इण्डोनेशिया के ये हिन्दू फीजी, मारीशस के सुरि[illegible]म और केनीया आदि हिन्दुओं के समान गत सौ डेढ़ सौ वर्षों में वहां जाकर नहीं बसे हैं। भारतीय हिन्दुओं के समान वे भी हजारों वर्षों से हिन्दू धर्म का अनुकरण कर रहे हैं। बाली द्वीप तो सच्चे अर्थों में हिन्दू प्रदेश या आर्य राज्य है। कोई-कोई भारतीय हिंदू पिछली सदी में वहां अवश्य गए हैं, और वहां के भी कोई-कोई विद्यार्थी शांति निकेतन व हिन्दू विश्वविद्यालय संस्थाओं में शिक्षा के लिए आए हैं, पर सुदूर दक्षिण-पूर्वी एशिया के इन लाखों हिन्दुओं के साथ भारत का सम्बन्ध नाम मात्र का ही रहा है। गुप्तवंश के काल (चौथी-छठी सदी) के पश्चात विद्वानों व पण्डितों की कोई भी मण्डली इस क्षेत्र में नहीं गई, जिसके कारण इण्डोनेशिया के हिन्दू धर्म का भारत के हिन्दू धर्म के साथ सम्पर्क नहीं रह गया, और मध्यकाल में भारत में जिस भक्ति आंदोलन का प्रादुर्भाव हुआ, और कृष्ण ने विष्णु के अवतार के रूप में जो महत्त्वपूर्ण स्थान इस देश के हिंदू धर्म में प्राप्त कर लिया, इण्डोनेशिया के हिन्दू उससे अपरिचित रहे।

यह प्रसन्नता की बात है, कि इस क्षेत्र के हिन्दुओं के साथ सम्पर्क स्थापित करने की ओर कतिपय महानुभावों का ध्यान गया, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दू पर्यटकों की एक मण्डली भारत से दक्षिण-पूर्वी एशिया की यात्रा के लिए गई और थाईलैण्ड तथा सिंगापुर के साथ-साथ वह जावा और बाली द्वीपों में भी गई। इस मण्डली में बीस नर-नारी थे, जो सभी सुशिक्षित एवं उदबुद्ध वर्ग के थे। परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती (अ[illegible] दा उच्च [illegible] शिष्यों तथा एक शिष्या के साथ), चित्रकला के [illegible] [illegible]कार श्री वेन्द्र, धर्मस्थल कर्नाटक के प्रतिनिधि श्री लक्ष्मीनारायण आल्वा, विश्व हिन्दू परिषद् के प्रचार-मन्त्री श्री दत्तात्रेय तिवारी, आर्य वानप्रस्थ आश्रम हरिद्वार के डा० मेहता, लखनऊ विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डा० शांति देवबाला, कानपुर के प्रसिद्ध पत्रकार श्री सत्यनारायण जायसवाल, डा कमला प्रधान श्रीमती रश्मिजी देवी, श्री रामाज्ञा ठाकुर आदि कितने ही सम्भ्रान्त एवं सुशिक्षित नर-नारी इस यात्रा-मण्डली सम्मिलित हुए थे। मैं भी इस यात्रा में साथ गया था। यात्रा की सब व्यवस्था ट्रैवल ट्रस्ट (बी, २४ निजामुद्दीन ईस्ट,) नई दिल्ली द्वारा की गई थी, और इस कम्पनी की ओर से यात्रा का प्रबन्ध श्रीमती ऊषा त्रिखा के हाथों में था। इण्डोनेशिया की यात्रा पर गई इस पर्यटक-मण्डली को सच्चे अर्थों में भारतीय हिंदुओं का प्रतिनिधि कहा जा सकता है। तीन दिन बैंगकाक तथा पटाया का परिभ्रमण कर २५ सितम्बर, १९८४ की रात के नौ बजे हम जकार्ता पहुंचे। जकार्ता जावा का सबसे बड़ा नगर है, और इण्डोनेशिया की राजधानी है। उसकी जनसंख्या ७५ लाख से भी अधिक है। शान शौकत और सांस्कृतिक पैमाने में वह किसी भी आधुनिक नगर से पीछे नहीं है। जकार्ता की भूमि पर पैर रखते ही मुझे राजा पूर्णवर्मा का ध्यान आया, जो छठी सदी में इस प्रदेश का शासक था। उस समय इस नगरी का नाम जकार्ता न होकर तारूम था। राजा पूर्ण वर्मा ने वहां एक नहर का निर्माण कराया था, जिसका नाम गोमती था। चन्द्रभागा नहर वहां पहले से विद्यमान थी, जिसे पूर्ण वर्मा के पिता राजाधिराज ने बनवाया था। गोमती नहर के निर्माण के पूरा हो जाने पर राजा पूर्ण वर्मा ने एक हजार गौवें ब्राह्मणों को दक्षिणा में प्रदान की थी। मैं तारूम नगरी के प्राचीन शिला लेखों के स्मरण में मग्न था। नमस्ते शब्द सुनकर मेरा ध्यान भंग हुआ। सामने देखा, तो इण्डोनेशिया की पार्लियामेंट के हिन्दू सदस्य श्री पुण्यात्मज हमारा स्वागत करने के लिए खड़े थे। भारत से आए इतने विद्वानों को अपने देश में देखकर उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की, और अगले दिन का कार्यक्रम निर्धारित कर हम अपने होटल में चले गए। जकार्ता में हमने बहुत कुछ देखा, पर ६५ एकड़ के विस्तृत क्षेत्र में निर्मित लघु इण्डोनेशिया ने हमें विशेष रूप से आकृष्ट किया। इण्डोनेशिया का निर्माण बहुत से छोटे बड़े द्वीपों से मिलकर हुआ है। इनके निवासियों की सभ्यता, संस्कृति, रहन-सहन तथा खान-पान आदि में बहुत अन्तर है। लघु इण्डोनेशिया में विविध द्वीपों की संस्कृति को सजीव रूप से प्रस्तुत किया गया है। जावा, बाली, सुमात्रा, कलिमन्तन (बोर्नियो) आदि सभी द्वीपों के लिए उसी शैली के भवन बनाए गए हैं। और उसी प्रकार के भोजन आदि की वहां व्यवस्था की गई है, जैसे कि उन द्वीपों में यथार्थ पाए जाते हैं। उनके प्राकृतिक दृश्य भी वास्तविकता के अनुरूप हैं। मिनी इण्डोनेशिया का अवलोकन कर सारे देश का यथार्थ आंखों के सामने स्पष्ट हो जाता है।

लघु इण्डोनेशिया के समीप ही एक भव्य हिन्दू मन्दिर है। इस सुदूर देश के हिन्दू किस ढंग से दैनिक प्रार्थना-उपासना करते हैं, इसे देखने का अवसर हमें इस मन्दिर में जाकर प्राप्त हुआ। सायं काल का समय था। आठ से अधिक नर-नारी वहां उपस्थित थे। मन्दिर के प्रांगण में एक ऊंचे चबूतरे पर सब बैठे हुए थे। हम भी एक ओर बैठ गए प्रार्थना-उपासना प्रारम्भ हुई। ओ३म् भूर्भुवः स्व के गायत्री मन्त्र के साथ सन्ध्या के मन्त्रों का उच्चारण प्रारम्भ हुआ। सब उपस्थित नर-नारियों ने समवेत स्वर में वेद के मन्त्रों तथा महाभारत आदि के श्लोकों से प्रार्थना-उपासना की। जकार्ता के हिन्दुओं की सन्ध्या के बाद हम सबने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विहित विधि से सन्ध्या तथा प्रार्थना मन्त्रों का पाठ किया। कैसा अद्भुत दृश्य था। हम इन्डोनेशिया की भाषा नहीं समझते थे। और वहां के लोग हिन्दी से अनभिज्ञ थे पर हमें परस्पर जोड़ने वाली हम सब में एकात्मकता की भावना उत्पन्न करने वाली वेद शास्त्रों की वे धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएं थी, जिन्हें हमने समान रूप से विरासत में प्राप्त किया था। ओ३म के नाम, गायत्री मन्त्र तथा वैदिक सूत्रों व महाभारत के श्लोकों ने हमें इस ढंग से एक मजबूत सूत्र में बांध रखा था, कि सैकड़ों वर्ष बीत जाने पर भी उसके सुदृढ़ बंधन में ढील नहीं आई थी। श्री पुण्यात्मज इस अवसर पर हमारे साथ थे। वह भी अपने देश के हिन्दु[illegible] के पूजा पाठ में अन्य पण्डितों के समान ही भाग ले रहे थे। पार्लियामेंट के सदस्य होने के नाते उनमें उच्च व श्रेष्ठ होने की भावना प्रादुर्भूत नहीं हुई थी। हमारे स्वागत में जकार्ता के हिन्दू मन्दिर में जलपान की भी व्यवस्था की गई थी। हमने इन्डोनेशिया के हिन्दू भाइयों के साथ बैठकर फल, मिष्ठान्न, चाय, दूध आदि ग्रहण किए। सब कोई यह अनुभव कर रहे थे, कि दो सुदूरवर्ती देशों के हिंदू सैंकड़ों वर्षों के पश्चात् आज फिर मिल कर एक साथ बैठे हैं। धर्म और संस्कृति की उनमें ऐसी एकात्मता है, जिसे न हजारों मीलों की दूरी शिथिल कर सकी है और न सैकड़ों वर्षों का अन्तराल।

दो दिन जकार्ता का परिभ्रमण कर हम लोग जकार्ता गए। यह मध्य जावा का प्रधान नगर है। बोरोबदूर का विशाल बौद्ध महाचैत्य उसके समीप ही है। उस की गिनती संसार के सात आश्चर्यों में की जाती है, जिसे देखने के लिए अमेरि[illegible] यूरोप, जापान आदि सब देशों से लाखों प्रतिवर्ष लोग जकार्ता आते हैं। इन्डोनेशिया का एक अन्य द्वीप सुमात्रा है। जिसके शैलेन्द्र वंशी राजा बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। इनकी राजधानी श्रीविजय थी। शैलेन्द्र राजा बड़े प्रतापी थे। अपनी शक्ति का विस्तार करते हुए आठवीं सदी में उन्होंने जावा को भी जीत लिया था। श्रीविजय (सुमात्रा) के इस वैभवशाली बौद्ध सम्राटों ने ही जावा में जोगजकार्ता के समीप बोरोबदूर के महाचैत्य का निर्माण कराया था। महाचैत्य नौ विशाल चबूतरों व चक्करों से मिलकर बना है,

(शेष पृष्ठ ६ पर)

अस्तेय-चोरी न करना

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम ए एल टी

'अस्तेय' न होने से लाखो रुपए का नुकसान सरकार को और दूसरे शब्दो मे जनता का हो रहा है। एक घटना सुनिए।

रेलवे कर्मचारियो को रेल मे बिना टिकट चलने का अधिकार सरकार ने दिया है या नही। पर उन्होने स्वय ले लिया है। इसके लिए उन्हे एक मत्र सीखना पडता है। मत्र बतलाने से पूर्व एक घटना सुनाऊ ? मैं एक बार देवरिया से गोरखपुर आ रहा था। मेरे पास टिकट भी था। मैं बिना टिकट यात्रा करना अपने प्रति, जनता के प्रति और राष्ट्र के प्रति अपराध मानता हू। बहुत यात्रा भी नही करता, परन्तु जहा मैं रेल मे बैठा था, वही मुझसे दाई ओर तीन अप टू डेट सज्जन भी बैठे थे। बाते वे कुछ हिन्दी और कुछ अग्रेजी मे कर रहे थे। शायद रेलवे मे कुछ अच्छे क्लर्क थे। टिकटचैकर ने एक व्यक्ति को टिकट न होने के लिए दण्डित करने की धमकी दी और कुछ ले देकर बिना रसीद के उसे छोडा और वह आगे बढा और उन सज्जनो से भी टिकट मागा। उन्होने एक मन्त्र पढा। मन्त्र था 'स्टाफ'। अर्थात् टिकट मागने पर स्टाफ शब्द उच्चारण किया। टिकट चैकर आगे बढा। दूसरे ने भी कहा 'स्टाफ'। वह तीसरे के पास पहुचा वह भी बोला 'स्टाफ। उसके बाद मैं था। मेरे पास टिकट तो था पर मैंने भी सोचा कि 'स्टाफ' शब्द की शक्ति का परिचय प्राप्त करू अत टिकट मागने पर बडी गम्भीरता से बोला 'स्टाफ'। आप विश्वास कीजिए, वह मुझे भी छोड कर आगे बढ गया।

गेट से बाहर जाते हुए भी मैंने उन लोगो के मार्ग का अनुसरण किया। जब मैं वहा भी स्टाफ कहने से बिना टिकट दिखाए बाहर जाने लगा तो उनसे इसका अभिप्राय समझने के विचार से अपना टिकट लौटाया और उन्हे उनका कर्त्तव्य सुझाया। पर मेरी कौन सुनता है ?

जातीयता के नाम पर चुनाव लडने वाले, मुसलमानो और हिन्दुओ की धार्मिक भावनाओ को उभार कर एम एल ए बनने वाले राजनीतिक नेता, महाराष्ट्र, असम, पजाब, बगाल राजस्थान को मारकर सम्पन्न होने वाले दूसरे प्रान्तीय सज्जन चोरो की गिनती मे आएगे। इसी प्रकार हिन्दीभाषियो को हटाकर अग्रेजी के हिमायती लोग ऊची नौकरिया पाने पर स्तयवृत्ति वाले नही माने जाएगे ? किसानो को मजदूर बना कर, रात-दिन गुलामो की भाति उन्हे कष्ट देकर उनके द्वारा पैदा किए मुफ्त के अनाज से अपने कोठे भरकर धनवान बनने वाला जमीदार चोर है। मजदूरो से दस-दस घटे तक बैलो की तरह काम करवा कर उन्हे पेट भर भोजन न देने वाला, उनके रहने की ठीक व्यवस्था न करने वाला, उनके बाल बच्चो की चिन्ता न रखने वाला और इस प्रकार धनी बनने वाला कारखानेदार चोर है। अध्यापको से विद्यालय मे ६-६ घटा पढवाने वाला, उन्हे चार-चार मास तक वेतन न देने वाला, वेतन कम देकर अधिक पर हस्ताक्षर करवाने वाला स्वय जाली हिसाब रखने वाला विद्यालय का प्रबन्धक और प्रधानाचार्य क्या चोर की श्रेणी मे न आएगे ? इनका कार्य अन्याय और अधर्म पर आधारित है। किसानो पर चाहे उनके यहा अनाज हुआ हो, या न हुआ हो, मनमानी ब्याज की दर लगाने वाला, उनके अनाज को जब्त करवा कर उसके घर-बार को नष्ट करवा देने वाला, बाल-बच्चो को अनाज का मोहताज बना देने वाला, स्वय मौज उडाने वाला, हृदयहीन कृपण, साहूकार अधम का स्तेय का अर्थशास्त्र चला रहा है। ये सभी चोर हैं। हमे समाज मे इन कार्यों के प्रति घृणा के भाव भरने होगे ? परन्तु, साथ ही हम बुराई से घृणा करने वाले हो, बुरे से नही यह भी ध्यान देने योग्य बात है।

बडी बडी छुट्टियो के अवसर पर रेलवे कम्पनिया जोनल टिकट चालू करती हैं, उन पर लोगो के नाम और उम्र दर्ज रहती है पर बहुत से धनी और राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता दूसरो के टिकटो का प्रयोग करते हैं और इसे अनुचित नही समझते।

कचहरी के क्लर्क या पेशकार से आपकी भेट हुई हो और हाथ उठा कर लोगो को सचेत करते हुए बापू के चित्र को दिखाकर उसके नीचे लिखे शब्दो घूस लेना और देना पाप है' की ओर सकेत किया हो तो आपको वह व्यक्ति जरा मुस्कराते हुए बडी नम्रता और विश्वास के साथ यही कहता मिलेगा, 'भाई, आप जानते नही, इसका क्या मतलब है? देखते नही राष्ट्रपिता बापू हाथ उठाकर स्पष्ट रूप मे अपनी अगुलियो से इशारा कर रहे हैं कि अग्रेजो के समय जो सवा रुपये की दक्षिणा या घूस ली जाती थी वह लेना-पाप उसके उसके स्थान पर पाच रुपए लेने चाहिए।

इस प्रकार उचित या अनुचित उपायो का अवलम्बन करके मनुष्य धन बटोरने मे लगा है। अभी आपने देश के बडे से बडे वनस्पति व्यापारियो के गाय की चर्बी वनस्पति मे मिलाने की कथा सुनी ही है और उसमे गाय को माता मानने वाले तथाकथित अहिंसक लोग हैं। हम सेंध लगाकर चोरी करने वालो को घृणा की दृष्टि मे देख रहे हैं किसी के घर जाकर रुपए एव अन्य वस्तुए उठाने वाले को नफरत की दृष्टि से देखते है, परन्तु देखा जाए तो ससार के अधिकतर व्यक्ति अपने-अपने दायरे मे गठकतरे, चोर, डाकू और लुटेरे है। डाक्टर बढ रहे हैं। आज डाक्टरो के साथ रोग बढ रहे हैं। वकील बढ रहे हैं तो मुकदमे चोरिया और अन्याय बढ रहे हैं। आज का डाक्टर रोग और रोगी को ध्यान दिए बिना रोगी की जेब पर ध्यान दे रहा है। इसलिए रोग बढ रहे हैं। गोरखपुर के चिकित्सको का अनुभव आपको बताऊ तो आप आश्चर्य करेंगे कि डाक्टर रोगो के विषय मे कितने अनभिज्ञ हैं।

अभी १०-१५ वर्ष पूर्व की बात है। मेरी धर्मपत्नी के कान के पास दर्द प्रारम्भ हुआ। मैंने एक डाक्टर को दिखाया। यद्यपि वह कणरोग विशेषज्ञ नही थे परन्तु कान देखने के बाद नाक भी चढाते हुए तथा कुछ चिन्ता व्यक्त करते हुए बोले, वेदालकार जी जानते हैं, कान का पर्दा एफैक्टेड है। एफेक्टेड शब्द सुनते ही मैंने उन्हे अच्छी दवा देने को कहा। उन्हो ने ऐसी दवा डाली कि अभी तक दर्द कान और गाल के बीच मे था अब वह कान के अन्दर भी होने लगा और वह छटपटान लगी। मैंने कहा डाक्टर अच्छे हैं दवा लगती है तो घबराती क्यो हो ? अब तो ५) खर्च भी हो चुके है। परन्तु उस दवा को दुबारा डलवाने को वह किसी तरह तैयार नही हुई और रात भर छटपटाती रही। अच्छा ही हुआ, वह दवा पडती रहती तो अवश्य ही उनका कान का पर्दा जाता रहता।

अब मैं दूसरे डाक्टर के पास पहुचा। उन्होने कान देखकर जरा गम्भीरता से कहा कि कान मे छेद हो गया है। आप यह दवा डालिए और लाल,पीली नीली, हरी पचासो गोलिया एक के बाद दूसरी खाने को दी और १०) प्रतिदिन का नुस्खा तैयार हो गया। दिन ४-५ चिकित्सा के बाद हालत वैसी की वैसी रही तो मैने उन्हे एक प्रसिद्ध डाक्टर के पास भेजा। उन्होन उसका कान साफ किया और कुछ दवाए मे खाने लिए और एक-दो इजेक्शन देकर कहा, 'मास्टर साहब, अब बस समझिए। पन्द्रह रुपए प्रतिदिन के हिसाब से ४-५ दिन चिकित्सा के बाद भी कोई लाभ न होने पर मैंने अपने पुत्र के साथ दूसरे प्रसिद्ध डाक्टर के यहा भेजा। उन्होने तो गजब कर दिया। वह जब मेरे पुत्र के साथ लौटी तो उनके सिर के चारो ओर प्लास्टर चढा हुआ था और वे एक कमाडर सी दीख रही थी घर आते ही मैंने उन्हे सैल्यूट मारा और कहा 'अब ठीक है।'

वह जरा उद्विग्न-सी दीख रही थी। परेशान होकर अगले दिन वह पट्टी उतार कर फेंक दी और दर्द जरा भी कम न हुआ। अब मैंने कण रोग विशेषज्ञ सरकारी अस्पताल के डाक्टर की सेवा मे उपस्थित होकर अपनी गाथा गाई। उन्होने कान देख कर चिन्ता व्यक्त करते हुए बडे प्रेम से घर आने की सलाह दी। मैंने सोचा कि डाक्टर मरीजो से सहानुभूति रखता है और घर आने की स्वीकृति उन्हे दी तो तत्काल उन्होने कहा वैसे घर पर देखने की मेरी फीस दस रुपए है पर आप अध्यापक हैं अत आप से आठ लूगा। लेते आइएगा।

अभी उनसे निबट कर मैं चिन्ता मे मे डूबा हुआ घर आ रहा था कि एक दुकान पर बैठे डाक्टर को देखा। उन्होने मरीज को देखा—अच्छी तरह देखा आखिर वे परिचित डाक्टर थे। थोडी देर बाद अत्यन्त गम्भीर और चिन्तित मुद्रा मे कहा वेदालकार जी, यह कान का दर्द नही, यह उपद्रव दात दर्द का है, और यह साधारण दात का दर्द नही बल्कि मेरा ख्याल है कि यह कैंसर है।' कसर? कैंसर सुनते ही मेरा दिमाग बिगडा। कैंसर – ठीक हो या न हो, यदि मुझे चिकित्सा करानी पडी तो कहा से आएगा पैसा ? अब मैंने दात के कैंसर को दिखाने के लिए दात के डाक्टर की शरण ली। उनका आर्यसमाज से प्रेम था— समयाभाव से आते तो कम थे पर उनका परिवार महिला आर्यसमाज मे आता रहता था। उन्होने कहा 'शास्त्री जी,सब डाक्टर कुछ नही जानते। याद रखिए कान का दर्द यहा नही होगा यहा तो दात का दर्द होगा और दो तीन दिन दवा देने के बाद उन्होने दात उखाड दिया और अब वह कैंसर गायब हो गया, कान ठीक हो गया, विटामिन की कमी पूरी हो गई। आज भी जब डाक्टरो की याद आती है तो हृदय काप उठता है।

२०-२२ दिन मे पूरे ४००-४५० रुपए डाक्टरो की सेवा मे गए। उनके भव्य प्रासादो के निर्माण मे काम आए। क्या डाक्टर और वकील, अध्यापक और उपदेष्टा यजमान और पुरोहित राष्ट्रोद्धार के लिए अस्तेय वृत्ति अपनाने का प्रयत्न करेंगे। महाराज शिवाजी न सन्त तुकाराम के लिए पालकी, मशाले, घोडे और सवारिया भेजी। उन्हे देखकर तुकाराम ने कहा 'भगवन् ये घोडे ये पालकिया ये छत्र चामर सब किस लिए है ?' तुकाराम तो सेवा के लिए सेवा चाहते थे, उन्हे मोक्षफल भी नही चाहिए था। स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा मोक्ष के स्थान पर दुखी जनता की सेवा पुनर्जन्म लेकर चाहता हू। यह है अस्तय वृत्ति।

आप वैदिक सस्कृति का दृष्टिकोण देखिए पैसा एक साधन है साध्य नही, रास्ता है मजिल नही। यही अस्तेय व्रत है।

१७५, जाफरा बाजार गोरखपुर

आर्यसमाज पानीपत को सफल शताब्दी

अनेक अनुकरणीय यज्ञ एव ग्रन्थ-प्रकाशन

आर्यसमाज (बडा बाजार) पानीपत को स्थापित हुए सौ वर्ष हो चुके हैं आर्य समाज (बडा बाजार) पानीपत का शताब्दी समारोह बडी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।

रविवार १४ १० ८४ का वह दृश्य भव्य था जबकि आर्यसमाज के सम्पूर्ण भारत के उच्चस्तरीय विद्वानो को जिन्होने अपना जीवन वैदिक साहित्य के अवगाहन मे झोक दिया सम्मानित किया गया। जन समाज मे विशाल मच पर बैठ विद्वानो को श्रद्धा से फल मालाओ के साथ स्वागत किया प्रत्येक को १५०० रुपए व शाल दो पुस्तकें प्रशस्ति पत्र तथा आने जाने का मार्ग व्यय दिया। सम्मानितो मे एक थी अमर शहीद श्री रामप्रसाद बिस्मिल की बहन श्रीमती शास्त्री देवी जी।

समारोह के आयोजको ने आम जनता को जानकारी के लिए आग्रयणष्टि (नवपुस्येष्टि) तथा पौणमासेष्टि यज्ञो को कराने की व्यवस्था की। इन यज्ञो को कराने के लिए दक्षिण के विद्वान श्री रगनाथ कृष्ण सलूकर बाजपेयी को महाराष्ट्र से श्री अग्निहोत्री रामानुज ताताचार्य कुम्भकोणम को तमिलनाडु से तथा प० विश्वनाथ जी शास्त्री को आध्रप्रदेश से आमन्त्रित किया गया। इनकी देख रेख मे यज्ञ किए गए। इन विद्वानो के विचारो को जनता ने अपार श्रद्धा व शाति से सुना यद्यपि वे भाषण संस्कृत भाषा मे थे।

आर्यसमाज की शताब्दियो व अन्य शताब्दियो के अवसरो पर स्मारिका निकालने की परम्परा म आर्यसमाज पानीपत ने एक नई परम्परा स्थापित की है। स्मारिका के स्थान पर एक ग्रथ प्रकाशित किया है। धर्म और सस्कृति के नामक इस ग्रन्थ मे वेद विषयक उच्चकोटि के विद्वानो के लेख हैं। लेखो की विभिन्नता इसी से स्पष्ट होती है कि उसमे वैदिक गणित जैसे लेखपूर्ण डायग्रामो के साथ है। इसके अतिरिक्त यह पुस्तक का व्ययम चित्रो व कविताओ के साथ एक पृथक विशेषता रखती है। आर्यसमाज ने यह पुस्तक अर्थ की दृष्टि से नही अपितु वैदिक साहित्य के प्रचार की दृष्टि से प्रकाशित की है।

आर्यसमाज ने इस अवसर पर नेत्रहीनो के लिए भी आयोजको ने ब्रेलिपि मे मे आर्याभिविनय का प्रकाशन किया जो शीघ्र ही नेत्रहीनो के हाथो मे पहुच जाएगा। हैदराबाद से आमन्त्रित सृष्टि विज्ञान की प्रदर्शनी भी दर्शनीय थी जिसमें वेदानुसार सृष्टिकाल की गणना चित्रित की गई थी।

शताब्दी तथा गोहत्या सम्बन्धी प्रस्ताव पारित हुए तथा लोगो शराब न पीने व मास खाने का प्रण किया।

शता० समारोह मे सम्मिलित विद्वानो की अनेक विषयो पर गोष्ठिया हुई या ब्रह्म परिषद के नाम से एक परिषद का गठन हुआ। स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को सवसम्मति से इस परिषद का प्रधान मनोनीत किया गया।

प्रधानमन्त्री पर घातक हमले की भर्त्सना

दिल्लीभर की आर्यसमाजो मे विशेष शोकसभाए

दिल्ली प्रदेश की लगभग सभी आर्यसमाजो मे ४ नवम्बर के दिन साप्ताहिक सत्सग के बाद अन्तर्राष्ट्रीय गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की नेत्री एव भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इदिरा गाधी की निमम हत्या पर विशेष शोकसभाए कर हार्दिक शोक एव सवदना प्रकट की गई साथ ही दिवगत आत्मा की सदगति के लिए शाति एव शोक मग्न परिजनो की सान्त्वना के लिए प्रार्थना की गई।

आर्यसमाज नरेला म प्रस्ताव के बाद हिंसक घटनाओ की रोकथाम के लिए भरसक प्रय न करने का फसला किया। आर्यसमाज के पदाधिकारियो व सदस्यो की एक शाति समिति बनाई गई। आर्यसमाज बाजार सीताराम ने शोक प्रस्ताव के साथ कठिन परिस्थितियो म प्रधानम त्री का कार्यभार सम्भालने वाले श्री राजीव गाधी की सफलता की कामना की। आर्यसमाज सदर बाजार और आर्यसमाज गुजरावाला टाउन ने और शोक पुस्तक के साथ प्रधानम त्री श्रीमती इदिरा गाधी पर किए हमले की तीव्र भर्त्सना की।

आर्यसाज मोतीनगर ने शोक प्रस्ताव स्वीकृत कर यह माग भी की कि जिन लोगो क घृणा और द्वेष भरे प्रचार के परिणामस्वरूप यह घृणित कार्य हुआ है, वे तुरन्त ऐसा घृणित प्रचार ब द कर और राजनीति को हिंसा से मुक्त करें।

दक्षिण एशिया की सास्कृतिक तीर्थयात्रा (पृष्ठ ४ का शेष)

जिनमे से प्रत्येक ऊपर का चक्कर अपने से नीचे वाले चक्कर की तुलना मे थोडा भीतर की ओर सिमटा हुआ है। नौ चक्करों या चबूतरों मे से निचले छह समकोण चतुर्भुज के रूप मे है और ऊपर के शेष तीन चक्कर गोलाकार हैं। सबसे निचले चबूतरे या चक्कर की लबाई ४०० फुट है और सबसे ऊपर वाले की ९० फुट। महाचैत्य के चबूतरो की दीवारो पर रूपावलिया बनाई गई हैं जिनमे बुद्ध की जीवनी को प्रस्तरो पर उत्कीर्ण किया गया है। मूर्तिकला की दृष्टि से ये रूपावलिया अत्यन्त उत्कृष्ट है। इस प्रकार जो चित्रावलिया बोरोबुदूर के महाचैत्य पर उत्कीर्ण हैं उन्हे यदि एक साथ एक पक्ति मे लगा दिया जाए तो उनकी लम्बाई साढे तीन मील हो जाएगी। चित्रावलियो के बीच बीच मे गवाक्ष बने हैं जिनमे से प्रत्येक मे ध्यानी बुद्धो की एक एक मूर्ति प्रतिष्ठापित है। सारे महाचैत्य मे ऐसी ४३२ मूर्तिया हैं। हमारी मण्डली मे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के चित्रकार श्री बेन्द्रे भी थे। वह इन मूर्तियो और रूपावलियो को देखकर इतने अभिभूत हो गए कि उन्हे न अपना ध्यान रहा और न समय का। वे एक टक हो इस अदभुत महाचैत्य और उसकी उत्कृष्ट कला को देखते रह गये।

जोग जकार्ता के क्षेत्र मे कितने ही हिन्दू मन्दिर भी विद्यमान हैं। प्राम्बनन का शिव महादेव का मन्दिर इनमे सबसे अधिक महत्त्व का है। यह मन्दिर एक ऊचे विशाल चबूतरे पर बना है। और इसके चारो ओर चार द्वार हैं। मन्दिर की दीवारो को अलकृत करने के लिए प्रस्तरो पर पदम पुष्पो, आदि की आकृतियो को उत्कीर्ण किया गया है और रामायण की सम्पूर्ण कथा रूपावलियो के रूप मे अ कित की गई है। पौराणिक देवी-देवताओ की भी कितनी ही मूर्तिया मन्दिर की दीवारो के साथ निर्मित हैं। शिव महादेव के इस विशाल एव गगन चुम्बी मन्दिर के दोनो ओर दो अन्य मन्दिर हैं और उनसे कुछ हट कर छोटे छोटे मन्दिरों की श्रृ खला ने चारो ओर उन्हे घरा हुआ है। इस प्रकार मुख्य मन्दिर के अतिरिक्त जो अन्य मन्दिर जो अन्य मन्दिर वहा खण्डित या अखण्डित दशा मे वहा विद्यमान हैं उनकी सख्या २४० है। हम उस समय की कल्पना कर रोमान्चित हो गए जब कि ये सब हिन्दू मन्दिर पूर्ण व अखण्डित दशा मे थे, और जब इनमे पूजा पाठ के लिए श्रद्धालु हिन्दुओ की भीड रहा करती थी। उस समय भगवान शिव महादेव के विशाल

(शेष पृष्ठ ७ पर)

समाज का कार्य देश-विदेशों मे फैलाएं

दयानन्द के आदर्श पर चलें : ऋषि मेला सम्पन्न

इस वर्ष दीपावली के पश्चात् १०१ वा समारोह अजमेर स्थित ऋषि उद्यान मे दिनाक २७, २८, २९ अक्तूबर को धूमधाम से मनाया गया। समारोह के अवसर पर यजुर्वेद की पावन ऋचाओ से ऋषि उद्यान स्थित विशाल यज्ञशाला मे यज्ञ सम्पन्न किया गया। २६ अक्तूबर को विश्वामित्र मेधावी कुलपति गुरुकुल सिराथू के ब्रह्मत्व मे यज्ञ का प्रारम्भ हुआ।

वेदपाठ का कार्य प्रो० रामवीर शास्त्री, प० मदनमोहन शास्त्री, प० रामदेव एव प्रो धर्मवीर आदि विद्वानो ने सम्पन्न किया। स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती डा० सत्यदेव आदि के धर्मोपदेश हुए। इसके अतिरिक्त इस अवसर पर आर्य कन्या महाविद्यालय की छात्राओ तथा भजनोपदेशक श्री पन्नालाल जी पीयूष ने अपने मधुर सगीत और भजनो से आर्य जनता को आर्यत्व का परिचय कराया।

अन्तिम दिन २९ अक्तूबर को यज्ञशाला मे विशिष्ट कार्यक्रम सन्यास दीक्षा का सम्पन्न हुआ। कश्यपदेव वानप्रस्थ ने स्वामी ओमानन्द जी महाराज से सन्यास की दीक्षा लेकर देश मे घूम-घूम कर आर्यसमाज के प्रचार का सकल्प लिया।

यज्ञ के अवसर पर अलग-अलग दिन श्री श्रीकरण शारदा श्रीमती कमला शारदा श्री कर्मचन्द जी गुप्त सपत्नीक, श्री धर्मसिंह जी कोठारी सपत्नीक श्री पूनम चन्दजी आर्य व अन्य अनेक स्थानीय एव बाहर से पधारे सज्जनो ने यजमान बनकर अपनी श्रद्धा पूर्ण आहुति प्रदान की।

ऋषि मेले का विधिवत प्रारम्भ यज्ञ के पश्चात् ध्वजारोहण से हुआ। २७ अक्तूबर को प्रात काल यज्ञ के उपरान्त सभा प्रधान आर्य जगत् के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने ध्वज का उत्तोलन कर ऋषि मेले का प्रारम्भ किया।

इस अवसर पर स्वामी जी ने आर्यजनता का आह्वान किया और कहा आज समाज को देश और विदेश मे फैलाने के लिए सगठित होकर हमे बडी सख्या मे अपने व्यक्तिगत कार्य को छोडकर देश-देश तक सन्देश लेकर जाना चाहिए।

आर्यसमाज भटिण्डा के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री रोशनलाल, उपप्रधान—श्री अमरनाथ, मन्त्री—श्री कृष्णकुमार उपमन्त्री—श्री बिहारीलाल, कोषाध्यक्ष—श्रीमती कमलाजी भाटिया, लेखानिरीक्षक —श्री ओम्प्रकाश भगला

दक्षिण एशिया की सास्कृतिक तीर्थयात्रा

(पृष्ठ ६ का शेष)

मन्दिर का यह सुविस्तृत परिसर कितना भव्य एव आकर्षक होगा, इतनी कल्पना मे ही चित्त मे एक सात्विक भावना तथा श्रद्धा का प्रादुर्भाव होने लगता है।

शिव-महादेव के विशाल मन्दिर के अतिरिक्त अन्य भी बहुत से मन्दिर प्राम्बनन के क्षेत्र मे हैं। इनमे चण्डी कालसन, चण्डी सरी, चण्डी मेन्दुत और चण्डी सर ओग्रड के मन्दिर उल्लेखनीय है। हमने इन पर भी दृष्टिपात किया और यह तथ्य स्पष्ट रूप से हमारे सम्मुख आ गया कि अब से कुछ सदी पूर्व तक सम्पूर्ण जावा मे हिन्दूधर्म का प्रचार था। अब जावा के बहुसख्यक निवासी इस्लाम को अपना चुके है पर उन्होने अपनी संस्कृति का परित्याग नही किया है। प्राम्बनन के मन्दिरो का दर्शन करते हुए हमने एक कृषक परिवार से बातचीत की। पूछने पर ज्ञात हुआ कि वे सब मुसलमान हैं, पर उस परिवार की गृहिणी का नाम सुश्री था। और सन्तान से दुष्यन्त तथा सुकीर्ति। जावा मे सर्वत्र यही दशा है। हम चाहते थे कि पूर्वी जावा भी जाए। दसवी सदी के द्वितीय चरण मे इन्डोनेशिया की राजशक्ति पूर्वी जावा मे केन्द्रित होनी प्रारम्भ हो चुकी थी। वहा के सब राजा हिन्दू धर्म के अनुयायी थे, और उन्होने बहुत से भव्य व विशाल मन्दिरो का निर्माण कराया था। पूर्वी जावा के इन मन्दिरो मे सुर-बाया मन्दिर सब से प्रसिद्ध हैं। समय के अभाव से हम इनका अवलोकन नही कर सके। हम शीघ्र से शीघ्र बाली द्वीप जाना चाहते थे जो वर्तमान समय में भी वस्तुत एक हिन्दू प्रदेश है। २८ सितम्बर को तीसरे पहर हम बाली की राजधानी डेनपसार पहुच गए थे।

ए-१।३२ सफदरजग एन्क्लेव,
नई दिल्ली-२९

ऋषि मेले पर टकारा चलें

महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टकारा मे टकारा ट्रस्ट की ओर से ऋषि मेला १६,१७, १८, फरवरी १९८५ को मनाया जाएगा। दिल्ली से एक विशेष रेलगाडी का प्रबन्ध किया जा रहा है। इस समय ऋषि दयानन्द जन्मस्थली टकारा मे अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, गोशाला बाहर से आने वाले अतिथियो के लिए अतिथि गृह आदि कार्य सुचारु रूप से चल रहे हैं। जिन कार्यों पर ट्रस्ट का अढाई लाख रुपए वार्षिक व्यय हो जाता है। ऋषि मेले के अवसर पर ऋषि लगर की भी ट्रस्ट द्वारा नि शुल्क व्यवस्था होती है। अत ऋषि भक्त दानी महानुभाव इसके लिए अधिक से अधिक दान की राशि महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा पिन-३६३६५० अथवा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के उप कार्यालय—आयसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली को चैक, ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा भिजवाने की कृपा करें।

गुरुकुल होशगाबाद का समुचित विकास होगा

दिनाक २१-१०-८४ को गुरुकुल होशगाबाद मे व्यवस्था समिति की बैठक हुई जिसमे निर्णय किया गया कि, गुरुकुल की (कृषि गोशाला) यज्ञ शाला का विकास सुव्यवस्थित ढग से किया जाएगा। गुरुकुल होशगाबाद की व्यवस्था पर आर्य प्रतिनिधि सभा (म० प्र० विदर्भ) ११२००० रु० प्रतिवर्ष व्यय करती है। अत आगामी वर्षों में ४० एकड जमीन हरित क्राति के माध्यम से घाटे को कम किया जाएगा।

ऋषि निर्माण शताब्दी

हम मिलकर सभी मनाएंगे

ऋषि निर्वाण-शताब्दी हम, मिलकर सभी मनाएंगे।
वेद प्रचारक दयानन्द का, शुभ सदेश सुनाएंगे॥
लहराएंगे ओम पताका, दयानन्द नगर बसाएंगे।
उड़े सुखद, सुगध हवन की, वेद मन्त्र गुंजाएंगे॥
होगा वातावरण शातिमय, सकट दूर भगाएंगे।
कर नष्ट अविद्या अन्धकार, सत्य मार्ग दरशाएंगे॥
सभी करेंगे प्रेम परस्पर, दुर्व्यवहार मिटाएंगे।
निज देश धर्म पर तन, मन, धन, अर्पण करना सिखलाएंगे॥
पावन वैदिक सत्य डगरिया, भूले उन्हे बताएंगे।
है वेद प्रमाणित सत्य ज्ञान, जन-जन को पाठ पढाएंगे॥
मद्य, मास मादक द्रव्यो से, रहना दूर सिखाएंगे।
दहेज आदिक कुप्रथाए, जग से नाश कराएंगे॥
सब मिथ्या पन्थ-विसार प्यार की, बन्सी मधुर बजाएंगे।
करकष्ट विकार मिटाने को, सुख शात सुधा बरसाएंगे॥
ऊच, नीच और भेद-भाव तज, सबको गले लगाएंगे।
ऋषि निर्वाण शताब्दी हम, मिलकर सभी मनाएंगे॥

अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग ले०—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती,

वेदविद्यालय गौतमनगर मे विश्वशांति महायज्ञ

श्रीमद्दयानन्द वेदविद्यालय, ११९ गौतमनगर, नई दिल्ली-४९ मे १८ नवम्बर से ९ दिसम्बर ८४ तक विश्व शाति महायज्ञ स्वर्गीया प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के पवित्र सपनो को साकार करने के लिए चारो वेदो के ब्रह्म पारायण महायज्ञ के माध्यम से सम्पन्न होगा।

यज्ञ समय—प्रात ६ से ९। साय—३ से ६।

जघन्य हत्या की निन्दा

आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी के साप्ताहिक अधिवेशन मे एक प्रस्ताव द्वारा भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की जघन्य हत्या की निन्दा की गई। आर्य समाज लल्लापुरा का होने वाला ३८ वा वार्षिक उत्सव जो १५ नवम्बर से १८ नवम्बर ८४ तक होने वाला था उसको स्थगित किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रैस, २१७४ रघुबरपुरा न० २, गांधीनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित ।१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० रजि० न०, डी (सी०) ७५१

ओ३म्

कृण्वन्ता विश्वमायम्

आर्य सन्देश

दिल्लो आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ५० पैसे वष ६ ग्रक ४ रविवार २५ नवम्बर १९८४ आय सवत्सर १९६०८५३०८४ ३ मागशीष शु० २०४१ वि० दयानन्दाब्द—१५८

निर्वाण शताब्दी को निर्माण कार्य मे बदल दो-सभा प्रधान

दिल्ली मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी, व्यापक स्तर पर दिसम्बर १९८४ के अन्तिम सप्ताह मे मनायी जायेगी।

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूयदेव ने बताया : दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा दिसम्बर १९८४ मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी । आयोजन कर रहा है। इस अवसर पर आयसमाज का सदेश घर घर पहुचाने के लिए ल्ली के विभिन्न स्थानो पर यश, भजन एव वेदोपदेश आयोजित किए जाएगे। प्रथम न की शोभायात्रा और अन्तिम दिन के कार्यक्रम सम्मूहिक रूप से केन्द्रीय स्थान पर ायोजित किए जाएगे। वेद तथा आर्ष ग्रथो के आधार पर सक्षिप्त ट्रैक्ट छपवाकर ार्यसमाज का जनसाधारण मे प्रचार करने हेतु वितरित किए जाएगे। दिल्ली के प्रत्येक ोने मे ग्रामो पुलर्वास कालोनियो और पिछडी बस्तियो तक मे हम आपके सहयोग से ार्यसमाज का सदेश पहुचाना चाहते हैं।

सभा प्रधान ने दिल्ली की सभी आर्यसमाजो, स्त्री समाजो डी ए वी स्कूलों तथा न्य आर्य सस्थाओ के अधिकारियो तथा दानी महानुभावो से अपील की है कि वे इस ार्य को सुचारु रूप से कराने मे तन, मन, धन से सहयोग दें। क्योकि सहयोग के बिना ह काय भव्य रूप से सम्पन्न करना सभा के लिए सम्भव न हो सकेगा। उनके ात्विक दान का उपयोग आर्यसमाज का सन्देश घर-घर पहुचाने मे किया जाएगा। न्होने आयजनो का आह्वान किया कि वे निर्वाण शताब्दी को निर्माण काय मे बदलने । लिए पूरी शक्ति लगा दें।

हरियाणा प्रान्तीय आर्यवीर महासम्मेलन

आयवीर दल हरियाणा का प्रान्तीय महासम्मेलन जो कि गत ३ ४ नवम्बर को नश्चित था प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की जघन्य एव निमम हत्या के शोक मे थगित कर दिया गया था। अब राष्ट्रहित मे वह माननीय श्री ओमप्रकाश जी त्यागी, हामन्त्री सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की अध्यक्षता मे आगामी १ तथा २ दिसम्बर दिन शनिवार एव रविवार को भीमनगर गुडगाव मे होगा। इसमे १००० ार्यवीर पूण गणवेश मे भाग लेंगे। देश के मूधन्य युवक आय विद्वान भी सम्मेलन को म्बोधित करेंगे।

आर्यसमाज पाण्डव नगर का पांचवा वार्षिकोत्सव

९ दिसम्बर १९८४ रविवार को प्रात ९ बजे से १ ३० तक समसपुर रोड, श्री ुलाटी जी के मकान के निकट निर्माणाधीन आयसमाज मन्दिर प्लाट न० ई-१६१ ाण्डव नगर मे बडे समारोह से मनाया जाएगा। आर्यसमाज के उत्साही एव कर्मठ धान श्री विद्यासागर ने बतलाया है कि इस अवसर पर बडे-बडे सन्यासी, महात्मा एव उपदेशक तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आर्यसमाज पाण्डव नगर को २७० वर्ग गज भूमि दान मे मिल गई है। इस पर निर्माण काय चल रहा है। सपरिवार पधारकर धम लाभ उठायें। इस भवन की यज्ञशाला का शिलान्यास प्रसिद्ध उद्योगपति श्री विद्या प्रकाश जी सेठी करेंगे। भवन निर्माण पर लगभग दो लाख रुपये व्यय होगे। यह सारा व्यय दानी महानुभावो के सक्रिय सहयोग से ही होगा। आयजनो से प्राथना है कि अधिक से अधिक सहयोग करे।

श्रीमती इन्दिरा गाधी के ६८वे जन्मदिवस पर चन्ननदेवी आर्य धमार्थ नेत्र चिकित्सालय का संकल्प

—ओमप्रकाश आर्य

महाशय चुन्नीलाल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा सचालित माता चन्नन देवी आर्य धमार्थ नेत्र चिकित्सालय के अधिकारियो, कर्मचारियो एव डाक्टरो द्वारा प्रातः काल यज्ञ के पश्चात् श्रीमती इन्दिरा गाधी जी को श्रद्धाजलि देते हुए प्रतिज्ञा की गई कि गत पाच वर्षों की भाति प्रधान मन्त्री के २० सूत्री कायक्रम के अन्तगत अन्धापन निवारण में कोई कसर उठा कर नही रखी जाएगी।

स्मरण रहे कि गत पाच वर्षों से लगातार यह चिकित्सालय स्व प्रधान मन्त्री का जन्मदिन मनाता चला आ रहा है। जिसमे नेत्र शिविर लगाकर ५०० से १००० तक नि शुल्क नेत्र आपरेशन किए जाते हैं। हजारो बच्चो एव ग्रामो मे जाकर हजारों भाई बहनो के नेत्र परीक्षण किए जाते हैं और दवाइया बाटी जाती हैं। स्व प्रधान मन्त्री जी के २० सूत्री कायक्रम के अन्तगत चिकित्सालय ने एक चलता फिरता नेत्र चिकित्सालय बनाया है, जो ग्राम ग्राम मे जाकर जहा नेत्र बिना किसी जाति धम आदि भेद भाव के परीक्षण करता है, तथा राष्ट्रीय एकता का भी प्रचार करता है।

अखिल भारत वर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा की ओर से विदेश यात्रा

सभा प्रधान श्री रामलाल मलिक ने बताया कि इस मिनी विदेश यात्र के लिए दिल्ली पालम से २३ ३ ८५ रात्रि को ९ बजे बेंकाक के लिए प्रस्थान होगा। पटैय्या (बेंकाक) थाईलैण्ड कुआला लम्पूर, पिनाम (मयेशिया) सिगापुर, बम्बई होते हुए दिल्ली २ ४ ८५ को रात्रि २ बजे वापस पहुचेंगे। विस्तृत निवारण के लिए आयसमाज करोलबाग ५६७४५८ आर्यसमाज अनारकली ३४३७१८ श्री रामलाल मलिक ५६७२६२ ५६२५१० पर सम्पर्क करें।

प्रधानमंत्री राजीव गाधी के लिए दीर्घायुकामना

श्रीमती इन्दिरा गाधी की निमम हत्या पर दिल्ली की विभिन्न आयसमाजो की विशेष बैठको मे शाति यज्ञ और श्रद्धाजलि सभाए आयोजित की गयी। इन बैठको में प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी की दीर्घायु के लिए भी कामना की गई। आर्यसमाज अशोक नगर लक्ष्मी नगर मे और दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मन्दिर ४७ आर्यसमाजो तथा केन्द्रीय आय युवक परिषद दिल्ली मे उपरोक्त आशय के प्रस्ताव प्राप्त हुए।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—डा० गणेशीलाल

परमात्मा सबको अच्छी प्रकार जानता है हम भी उन्हे जाने ?

—प्रेमनाथ एडवोकेट

विजानीह्यार्यान ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान ।
शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन ॥ ऋ० १।५१॥

आंगिरस सव्य ऋषि इन्द्र देवता विराड जगती छन्द धैवत स्वर।

इन्द्राय हे सबको यथा योग्य जानने वाले ईश्वर! आप [आर्यान] धार्मिक विद्वान परोपकारी मनुष्यो को [विजानीहि] विशेष रूप से जानते हो [च] और [ये] जो [दस्यव] चोर डाकू विश्वासघाती मूर्ख स्वार्थी अनार्य मनुष्य हैं उनको भी जानते हो। आप कृपया यह जो दस्यु हैं इनको [बर्हिष्मते] उत्तम धर्म्य व्यवहार आदि की सिद्धि वा शांति सम्पन्न के लिए [रन्धय] समूल नष्ट कर दीजिए (तथा) सत्य भाषण ब्रह्मचर्य व्रतो से रहित अनाचारियो पर समस्त जगत अद्भुत रचना करने वाला है। और सर्वत्र व्यापक होकर इन सब लोक लोकान्तरो मे ठीक व्यवस्था भी कर रहा है और सब जीवो को उनके पाप-पुण्यो का फल यथोचित देकर पूर्ण न्यायाधीश वर्तमान हो रहा है। ऐसे ही सभेश (प्रधान मन्त्री अथवा मुख्य मन्त्री) को भी चाहिए कि ठीक शासन द्वारा प्रजा को सुख देवे अर्थात कोई चोर डाकू हत्यारा छली कपटी विषयी जुआरी देश मे आलसी अथवा विद्याहीन न रहे और प्रजा की रक्षा वा उसका पालन पूर्णतया करें।

बी १०२ नीति बाग नई दिल्ली ४६

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की देश-व्यापकता

सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के मूल सिद्धांतो के विषय मे पूछा जा सकता है कि आज के परिवेश मे वे क्या व्यवहारिक हैं? क्या उन्हे क्रियान्वित किया जा सकता है? आज का गुरु उन आदेशो पर चलने के लिए तैयार नही है जो हमारे कथनानुसार गुरुकुल शिक्षा पद्धति मे अन्तर्निहित है। वह प्राचीन गुरुओ का सा तपस्यामय जीवन बिताना नही चाहता। वह कहता है कि मुझे तप नही करना दूसरो की तरह आराम की जिंदगी है। उस आराम का मकान चाहिए गर्मियो मे एयर कन्डीशनर चाहिए सर्दियो मे गीजर तथा हीटर चाहिए आमोद प्रमाद के लिए रेडियो तथा टेलीवीजन चाहिए। इस सबके लिए उसका वेतन दिनोदिन बढ़ना चाहिए। जहा तक शिष्यो का सम्बन्ध है वे गुरु को न पिता के समान मानते है न पिता का मा उसे आदर दे सकते है उनके लिए गुरु एक वेतनभोगी सेवक है जो वेतन पाने के लिए नौकरी करता है प्राचीन काल की तरह वह अपने गुरु को गुरु मानकर वह सम्मान देने के लिए तैयार नही जो प्राचीनकाल के शिष्य गुरुकुलो मे रहते हुए अपने गुरुओ का दिया करते थे। वहा तक शिक्षा संस्था मे कुल की भावना के अनुभव करने का सम्बन्ध है गुरु भी शिष्य भी उसे एक टीचिंग शाप अध्यापन की दुकान ही समझते हैं और कुछ नही। आज जितना बडा विद्यालय है उतनी बड़ी राशि शुल्क की पब्लिक स्कूलो मे पढाया तो वही जाता है जो अन्य साधारण स्कूलो मे पढाया जाता है परन्तु पब्लिक स्कूल के नाम से उनमे शुल्क सैकडो गुणा ज्यादा लिया जाता है। पब्लिक स्कूल—यह एक चालू सिक्का हो गया है न इसमे पब्लिकपना रहा, न स्कूलपना रहा। पब्लिक स्कूल यह नाम रख लिया ताकि ज्यादा से ज्यादा शुल्क वसूल किया जा सके या बच्चो को अंग्रेजी रहन सहन सिखा दिया जा सके।

ऐसी स्थिति मे गुरुकुल के वे आदर्श जिनकी पिछले लेख मे चर्चा की गई है, कहा तक समयानुकूल तथा व्यवहारिक है। अध्यापक तो वैसे ही मिलगे जैसे मिल रहे हैं। आजीविका के लिए अध्यापन कार्य करने वाले बच्चो का जीवन बनाने के लिए तप त्याग और तपस्या करने वाले नही।

शिक्षा किन्ही आदर्शों को सामने रख कर दी जाती है। जब अंग्रेज लोग भारत आए तब इस उद्देश्य से कि राजकाज मे अंग्रेजो तथा जनता के बीच सम्पर्क स्थापित हो सके और शासन करने मे सुविधा हो आंग्ल शिक्षा प्रणाली का सूत्रपात हुआ जिसका श्रेय मैकाले को है। इस युग मे अनेक आंदोलनो का जन्म हुआ जिनमे से शिक्षा के क्षेत्र मे जिस आंदोलन ने जन्म लिया वह गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आंदोलन था। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आदर्श था कि ऐसे व्यक्ति तैयार किए जाए जो प्राचीन वैदिक संस्कृति से ओत प्रोत हो भारतीय संस्कारो तथा आदर्शों को जीवन मे घटाकर देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने को सिपाही बना सकें।

इस प्रणाली का बीज ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश मे था परन्तु इसे मूर्त रूप दिया महात्मा मुंशीराम जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का केन्द्र हरिद्वार के समीप रखा गया। जिस समय हरिद्वार के समीप कागडी ग्राममे गुरुकुल की स्थापना हुई उस समय देश परतन्त्र था और परतंत्रता के युग की प्रतिक्रिया का रूप ही शिक्षा के क्षेत्र मे गुरुकुल था। शिक्षा का माध्यम हिन्दी को रखा गया और रसायन गणित ज्यामिति भौतिकी आदि विषयो का अंग्रेजी के स्थान मे हिन्दी मे पढाया जाने लगा, इन विषयो पर हिन्दी मे ही पुस्तकें प्रकाशित की गई। विद्यार्थियो को घुडसवारी तीर दाजी आदि सिखाए गए। विद्यार्थियो की दिनचर्या ऐसी रखी गई जैसी सैनिको की होती है। प्रात काल चार बजे उठ जाना, सध्या-उपासना के बाद भिन्न भिन्न प्रकार के योगासन करना दड बैठक व्यायाम कुश्ती करना जिससे शरीर पुष्ट हो सर्दी गर्मी सहना जूता धारण न करना आदि दिनचर्या ऐसी रखी गई जिसे देखकर बरबस कोई कह देता था कि यहा तो सैनिक तैयार किए जाते हैं।

सरकारी क्षेत्रो मे प्रसिद्ध था कि गुरुकुल कागडी मे क्रांति के सैनिक तैयार किए जाते हैं। इसी किंवदन्ती को सुनकर लार्ड नेस्टन लार्ड चेम्सफोर्ड तथा बरतानिया के प्रधान मन्त्री रैम्जे मैक्डोनाल्ड गुरुकुल देखने के लिए आए थे। वे लोग चाहते थे कि गुरुकुल सरकारी मदद ले ले ताकि क्रांतिकारियो का दल गुरुकुल से उदासीन हो जाए। महात्मा मुंशीराम जी ने सरकार के हाथो जाना अस्वीकार कर दिया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश का रूप-रंग बदल गया स्वतन्त्रता प्राप्ति के रूप मे देशवासियो का उद्देश्य बदल गया, उसके अनुरूप गुरुकुल शिक्षा पद्धति का सरकार से किसी प्रकार की सहायता न लेने की नीति भी बदल गई। सरकार अपनी थी सरकार चाहती थी कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति के मूल सिद्धान्त बने रहे और उनमे सफलता प्राप्ति के लिए गुरुकुल पद्धति के संचालको के हाथ दृढ किए जाए। दुःख की बात यह है कि सरकार ने जिस उद्देश्य से हमे आर्थिक सहायता देना शुरू किया उस उद्देश्य को क्रियात्मक रूप देने मे हम सफल नही हुए। हम सफल नही हुए—इसका यह कारण नही था कि हमने सरकारी सहायता प्राप्त करना शुरू किया हम इस कारण सफल नही हुए क्योकि हम भी बहाव के साथ बह गए।

इसमे कोई सन्देह नही कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति के जो आधारभूत सिद्धान्त हैं वे शिक्षा क्षेत्र मे सर्वमान्य हैं कोई उनसे इन्कार नही कर सकता। गुरु का अपने छात्रो को पुत्रवत मान कर उनके साथ जीवन बिताना, सब छात्रो का एक साथ रहना, अपने को दूसरो के साथ भाई भाई का सम्बन्ध रखना जैसा परिवार मे होता है, ऊंच नीच का भेदभाव न होना न जातपात का भेदभाव होना, जल्दी सोना जल्दी उठना सन्ध्योपासना करना, तपश्चर्या तथा ब्रह्मचर्य का जीवन बिताना भोजन करना और व्यायाम आदि से शरीर को हृष्ट पुष्ट बनाना—कौन सी शिक्षा पद्धति है जो इन बातो को स्वीकार न करेगी। इसी का नाम आश्रम-वास है इसी का नाम गुरुकुल वास है।

गुरुकुल कागडी को विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त हो चुकी है, परन्तु इसमे गुरुकुलीयता नही आई। विश्वविद्यालय के छात्र साइकिलो पर चढकर बाहर से आते है, और पढकर अपने-अपने घरो को चले जाते हैं प्रोफेसरो का भी यही हाल है। अन्य स्कूलो कालजो की तरह वे पढ़ाकर अपने घर आ बैठते हैं। रहना सहना उनका उसी तरह का है जैसा दूसरे अध्यापको का होता है। तपश्चर्या का किसी प्रकार का वातावरण नही है। वे गुरुकुल मे रहने वाले गुरु या आचार्य नही है लेक्चरर रीडर तथा प्रोफेसर है।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति का मूलाधार तो गुरुकुल कागडी ही है। वर्तमान मे गुरुकुल कागडी को दो भागो मे बाटा जा सकता है। एक भाग तो वह है जो चालू पद्धति पर ही चल रहा है, दूसरा भाग वह है जिसमे गुरुकुल पद्धति के सिद्धांत लागू हो रहे है या हो सकते हैं। दूसरे भाग का गुरुकुल कहकर हम ग्रान्ट पहले भाग के लिए ले रहे हैं। पहले भाग मे छात्रो की सख्या अधिक है परन्तु वह नाममात्र का गुरुकुल है, दूसरे भाग मे छात्रो की सख्या कम है परन्तु यथार्थ मे वही गुरुकुल है। इस गडबडझाले मे से निकलने का उपाय यही है कि हम दूसरे भाग को इतना बढाए कि उस भाग मे पढने वाले छात्र ही पहले भाग मे प्रविष्ट हो और धीरे धीरे स्थिति यह आ जाए कि पहले भाग मे सिर्फ गुरुकुल मे शिक्षा प्राप्त छात्र ही रह जाए, ऐसे छात्र जिन्होने गुरुकुल के विद्यालय विभाग मे शुरू से शिक्षा प्राप्त की हो। गुरुकुल शिक्षा पद्धति को देश व्यापक बनाने की पहली शर्त यह है कि गुरुकुल कागडी मे विद्यालय विभाग से विश्वविद्यालय विभाग तक वे ही छात्र भर जाए जो गुरुकुल शिक्षा पद्धति से पढ़े हो जिनका सोना जागना खाना पीना, बोलना चालना, वेश भूषा—सब कुछ गुरुकुलीय हो।

जहा तक पुस्तक शिक्षा का प्रश्न है हमे यह समझकर चलना चाहिए गुरुकुल शिक्षा पद्धति वास्तव मे जीवन की पद्धति है। शिक्षा के क्षेत्र मे हम जहा संस्कृत साहित्य, दर्शन तथा वेदादि प्राचीन ग्रन्थो एव उनकी रिसर्च पर विशेष ध्यान देते हैं वहा पाश्चात्य विद्वानो को भी पाठविधि मे स्थान देते हुए यह ध्यान मे

(शेष पृष्ठ ६ पर)

प्रभु का आश्रय मिलता रहे

ओ३म उद्वय तमसस्परि स्व पश्यन्त उत्तरम ।
देव देवत्रा सूयमगन्म ज्योतिरुत्तमम ।।

हे प्रभु, आप समस्त चराचर जगत के आत्मा हैं मुमुक्षुओ गुणी धर्मात्माओ और योगियो आदि को सब प्रकार का आनन्द देने वाले जगत के प्रलय के बाद भी नित्य स्वरूप मे विराजमान सर्वानन्दस्वरूप अज्ञानान्धकार से परे वत्तमान आपको हमे प्राप्त हो ।

राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानो।

बृहस्पतिवार १५ नवम्बर १९८४ के दिन दिल्ली के कांस्टीटयूशन क्लब मे एक विचारोत्तजक परिचर्चा हुई। परिचर्चा म तूफान के दौर मे पजाब की समस्या पर विभिन्न पहलुओ से चर्चा की गई। चर्चा म भाग लेने वाले दिल्ली के कुछ प्रमुख पत्रकार थे। पत्रकार श्री खशवन्त सिंह ने कहा— पजाब की समस्या हिन्दू सिख सरकार और विपक्ष की दृष्टि से नही दखना चाहिए। उन्होने कहा कि किसी भी स्थिति म देश का विभाजन नही होना चाहिये क्योकि अनेक विषमताओ के बावजूद भारतीय जनता एक है। इस अवसर पर नवभारत टाइम्स के सम्पादक श्री राजेन्द्र माथुर ने कहा राष्ट्रपति को सर्वोपरि मानते हुए अलग पहिचान बनाए रखन वाली प्रवत्तियो का सफाया किया जाना चाहिए। जनसत्ता के सम्पादक श्री प्रभाष जोशी ने कहा हिन्दुओ और सिक्खो को भारतीय दृष्टिकोण अपना कर अपनी समस्याए हल करनी चाहिए। और आध्यात्मिक परम्पराओ को आगे बढाना चाहिए। परिचर्चा मे अभिव्यक्त विचारो से यह तो स्पष्ट है कि सभी वक्ता इस बात म तो सहमत थे कि अनेक विषमताओ के बावजद भारतीय जनता एक है इसलिए उसका विभाजन नही होना चाहिए। यह ठीक है कि विभिन्नताओ एव विरोधो के बावजद भारत एक और अखण्ड रहा है परन्तु यह भी ठीक है कि उसकी एकता को खण्डित करने के लिए व्यवस्थित प्रयत्न किए गए है।

उक्त परिचचा म भाषण देते हुए पत्रकारो ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कुछ वर्ष पूर्व सिख धर्म की पथक पहचान लगभग समाप्त सी हो रही थी वह समाप्त न हो प्रत्युत उनकी पहचान अलग बनी रहे इसके लिए व्यवस्थित प्रयत्न किए गए। सिख पूजा स्थानो म इस शताब्दी के प्रारम्भ मे भारतीय हिन्दू मन्दिरो म चिह्न एव विग्रह विद्यमान थे उन्हे ब्रिटिश शासको के इशारे पर हटाया गया। इसी प्रकार पिछल दिनो पश्चिमोत्तर क्षेत्र म जो घटनाए हुई उनम स्पष्टतया एक लक्ष्य काम कर रहा था कि हिन्दू पूजास्थानो मे अपवित्र वस्तुए फक कर तथा निहत्थी जनता पर आक्रमण कर दो प्रमुख सम्प्रदायो के मध्य अलगाव पैदा किया जाए। एक सुधी पत्रकार ने यह ठीक ही कहा है जहा तक सिख गुरुओ विशेषतया नानक वाणी का प्रश्न है वह सन्त कबीर आदि सन्तो के विचारो से पर्याप्त साम्य रखती है। यदि भारतीय धर्मों की आध्यात्मिक परम्पराओ पर बल दिया जाए। और उनकी व्यवस्थित व्याख्या और प्रचार किया जाए तो वतमान भेद एव विभिन्नताए समाप्त हो सकती है। वक्ताओ ने इस तथ्य पर भी बल दिया कि भारत की एकता एव अखण्डता को नष्ट कर अलगाव की प्रवत्तियो को बढाने के लिए विदेशी साम्राज्यवादी शक्तिया मदद कर रही हैं।

पिछले दिनो नानक जयन्ती के आस पास पाकिस्तान मे पश्चिमी देशो से आसग अलगाववादी उग्रवादी सिखो को वहा के शासको ने खुला प्रोत्साहन दिया। प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के हत्यारे ने यह सूचना भी दी है कि प्रमुख हत्यारे बअन्त को हत्या के निमित्त ओस्लोस्थित भू पू भारतीय राजदूत हरी इंसिह ने एक लाख पौण्ड दिए थे। और दूसरे हत्यारे सतवन्त को भी ६५ हजार डालर की धनराशि नकद मिलने की बात स्वीकार की है। कहा जा सकता है कि विदेशी साम्राज्य की शक्तियो को यह स्वीकार नही है कि भारत एक एव सयुक्त रहते हुए एशिया और विश्व की एक महाशक्ति बने। ये उसके केन्द्रीय शासन को निबल करने के लिए प्रयत्नशील हैं वे अलगाववादी सिक्खो को भारी आर्थिक प्रलोभन एव अस्त्रास्त्रियो की मदद से भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के असामयिक निधन से देश में शून्य की स्थिति पैदा हो और केन्द्रीय सत्ता किसी भी तरह निबल न हो, साथ ही भारतीय धर्मों के मूल आध्यात्मिक धार्मिक तत्व एक जसे हैं हमे मिलकर रहना चाहिए लक्ष्य की पूर्ति के लिए आर्यसमाज एव आर्यसमाजो को अपनी सक्रिय भूमिका प्रस्तुत कर राष्ट्र को सबल एव सुदृढ करना चाहिए।

दहेज लानत नहीं समाज के लिए एक प्रथा है

आज का प्रचलित दहेज शब्द का पूर्व नाम गौदान या कन्यादान था। यह सिलसिला रामचन्द्रजी के वक्त से चला आया है। जैसे कि सीताजी का विवाह राम के साथ हुआ था तब राजाजनक ने सीता को दान के रूप मे बहुत कुछ दिया था। अत इसका नाम गौदान था कन्यादान था। मतलब यह होता है कि गाय साथ मे जाये अर्थात उसका खाना कपडा अच्छा मिलता रहे।

प्रत्येक पारिवारिक जन अपनी प्रिय पुत्री को प्रसन्न रखने के लिए अपनी तरफ से ज्यादा से ज्यादा देने की कोशिश करता है। ताकि लडके के मा बाप भी खुश रहे तथा लडकी का हक भी अदा हो जाय।

एक बात समझ मे नही आती किसी की सास का जलन की खबर नही मिलती लेकिन जब भी देखा हुआ या सुना है लडकी ने खुदकुशी करली सास ससुर से तग आकर क्या कभी लडकी घर का कोई काम नही करती। यह एक अजीब मामला है। जब तक गौदान की प्रथा प्रचलित थी तब देश मे यह सब कुछ नही होता था। लेकिन जब से यह दहेज प्रथा के रूप मे आया है तभी से झगडे शुरू हो गये हैं किन्तु अब भी कई घराने हैं जो सतोषी जीव है जो कुछ मिले सब ठीक है। अपना सब शांति से दिन काटते है।

जब लडकी का जन्म होता है तो घर म किसी प्रकार की खुशी नही मनाई जाती है लडकी को पराया धन माना गया है। पराये धन [illegible] किसी भी व्यक्ति का [illegible] कर्त्तव्य करने पडते हैं। जब लडकी हर प्रकार की परीक्षा पास कर लेती है तब उसकी नौकरी की चिन्ता लग जाती है प्रत्येक को नौकरी वाली मागता है। वसे देखा जाय नौकरी वाली मिल जाए तो सोने के ऊपर सुहागा होता है वहा लडकी घर की मुफ्त की सेविका है अब पढाई का मामला समाप्त हो जाता है तो ब्याह या शादी का मामला आता है कितना देना पडता है कितनी परेशानी उठानी पडती है। अपनी इज्जत की खातिर कर्जा लेना पडता है। क्या कुर्बानी है ?

वैसे देखा जाए तो दुल्हन स्वय एक प्रकार का दहेज पढी लिखी नौकरी वाली है साथ सब कुछ लाई है। अगर नौकरी वाली नही तो उसे गृहिणी सेविका माना जाता है।

सबसे महाकुर्बानी नौ माह पुत्र पुत्री को कोख मे रखा जा है मगर उसके सास ससुर व पति का नाम उनके नाम के साथ [illegible] दिये जाते [illegible] नाम नहीं क्या ला जबाब कुर्बानी है अन्त कन्यादान है [illegible] सन्तुष्ट रहा [illegible] ईश्वर का [illegible] फिर वे घर म कितनी खुशी व शांति रहती है। [illegible]

वैदिक अन्त्येष्टि कर्म से सम्बन्ध नहीं

एक ऐसी बात जो आर्यसमाज [illegible] उसकी ओर आपका ध्यान खीचना चाहता हूँ। प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी का जो भावना भरा अन्त्येष्ठि कर्म टेली विजन दूरदर्शन पर शनिवार ३ नवम्बर १९८४ के दिन दिखाया गया उसमे आर्यसमाज के [illegible] इनो की आवाज भी सुनाई देती थी। उन्होने प्राथनामन्त्र पढे शान्ति प्रकरण के मन्त्र पढे [illegible] उपनिषद का पाठ भी किया था तथा गायत्रीमन्त्र से स्वाहाकार के साथ आहुति भी दी।

इन सब का वैदिक अन्त्येष्ठि कर्म के साथ कोई सम्बन्ध नही। क्या आप बता सकते हैं कि वे कौन से आर्य विद्वान थे। यदि कोई सज्जन वैदिक विधि से अन्त्येष्टि कर्म नही कराना चाहते तो आर्यविद्वान वहा जाकर हास्यास्पद क्यो बने। श्रद्धाजलि तो शालीन ढग से भी दी जा सकती है।

—सत्यदेव विद्यालकार शान्तिसदन १४५।४ सैण्ट्रल टाउन जालन्धर

पटाखो की करामात

दिनाक २४ १० ८४ अक्तूबर दीपावली की रात्रि को आपके प्रिय आर्य प्रकाशन मे आग लग गई यह पटाखो की करामात थी। हम अपने गृह पर दीपावली यज्ञ कर रहे थे। प्रात दस बजे सूचना मिली आस पास के लोगो ने बहुत शीघ्र आग पर काबू पा लिया फिर भी हजारो रुपयो का साहित्य जल गया तथा लोगो द्वारा लूट लिया गया। आप लोगो से सात्विक सहयोग की आशा करते है। जैसा कि पहले आप हमारे प्रकाशन से स्नेह करते हैं—करते रहेंगे।

—तिलकराज आर्य अध्यक्ष आर्य प्रकाशन
८१४ कूण्डेवालान, अजमेरी दरवाजा दिल्ली

दक्षिण-पूर्वी एशिया की सांस्कृतिक तीर्थयात्रा

(२) बाली द्वीप में

जब हम हवाई जहाज द्वारा बाली पहुचे तब एक अद्भुत दृश्य देखने मे आया। हवाई अड्डे पर वाद्य सगीत की धूम मची था, और दो दर्जन के लगभग गायकों और गायिकाओ द्वारा मगलगान गाया जा रहा था, हवाई जहाज से उतरते हुए यात्रियो की ओर गायिकाओ की यह मण्डली आगे बढने लगी। सबके हाथो मे पुष्पमालाए तथा फूलो के गुच्छे थे। हम सोच रहे थे कि इण्डोनेशिया के कोई मन्त्री व उच्च प्रशासक बाली आए हैं, जिनके स्वागत मे यह आयोजन किया गया है। पर हमारे आश्चर्य का ठिकाना नही रहा जबकि स्वागत के लिए आगे बढती हुई नृत्यागनाए हमारे सम्मुख रुक गई। वे हमारी मण्डली के नेता के गले मे पुष्पमाला डालना चाहती थी। आर्यसमाज के मूर्द्धन्य नेता स्वामी आमानन्द सरस्वती हमारे साथ थे। मेरे सकेत पर जब एक नृत्यागना उनके गले मे माला डालने लगी, तो स्वामी जी को सकोच हुआ। पर मेरे अनुरोधपर उन्होने यह औपचारिक सम्मान स्वीकार कर लिया। अन्य सब यात्रियो को पुष्पगुच्छ समर्पित किए गए। इन्हे बाली की परम्परागत कला के अनुसार अत्यन्त सुन्दर रूप से बनाया गया था। हमारे इस शानदार स्वागत का आयोजन ट्रेवल ट्रस्ट द्वारा किया गया था।

हमारे स्वागत के लिए बाली के अनेक हिन्दू नेता एव विद्वान भी हवाई अड्डे पर आए हुए थे। हमने उनके साथ अगले दिन का कार्यक्रम निर्धारित किया, और हम विश्राम के लिए होटल चले गए। डनपसार (बाली की राजधानी) के जिस होटल मे हम ठहरे, वह समुद्र तट पर एक रमणीक उद्यान मे था। निवास के लिए छोटी छोटी कुटिया बनी हुई थी। बाहर से देखने पर वे झोपडिया दिखाई देती थी, पर उनके अन्दर आधुनिक वैज्ञानिक युग के सब सुख साधन विद्यमान थे। प्रत्येक कमरे के साथ पृथक् बाथरूम था जिसमे ठण्डे पानी के साथ साथ गरम पानी के नल भी थे। सब कमरो मे टेलीफोन भी थे, और उनकी सज्जा आधुनिक ढग से की गई थी, कुटी के अन्दर बैठकर ऐसा प्रतीत होता था मानो हम रमणीक प्राकृतिक वातावरण के हरेभरे उद्यान मे अवस्थित किसी अत्याधुनिक होटल मे ठहरे हुए हैं। ओग जकार्ता का हमारा होटल भी कुछ इसी ढग का था। जावा और बाली मे भारत की जो प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा अभी तक सुरक्षित है, ये होटल उसके अनुरूप ही थे। इनके दरवाजो तक पर रामायण की कथा की रूपावलिया उत्कीर्ण थीं, और हिन्दू देवी-देवताओ के चित्र चित्रित थे।

२१ सितम्बर, शनिवार को बाली की उदयन यूनिवर्सिटी के इन्स्टिट्यूट आफ हिन्दू धर्म मे एक विशेष आयोजन किया गया। इण्डोनेशिया मे सरकार का एक विभाग धर्म मन्त्रालय (मिनिस्टी आफ रिलीजन) के नाम से भी है। इसके अधीन हिन्दू धर्म के लिए एक पृथक् डाइरेक्टरेट (निदेशालय) है, जिसके डाइरेक्टर जनरल पद पर श्री पूज या श्री पूज्य नियुक्त है। श्री पूज वेदशास्त्रो के प्रकाण्ड पण्डित है। गीता, मनुस्मृति, ईशोपनिषद, श्वेताश्वर उपनिषद आदि का वह इण्डोनशियन भाषा मे अनुवाद कर चुके है, और आजकल वेदो का अनुवाद करने मे लगे हैं। ऋग्वेद सामवेद और अथववेद का वह अनुवाद कर भी चुके हैं, और इनके कुछ अश प्रकाशित भी हो गए है। इन सबका प्रकाशन इण्डोनेशिया की सरकार द्वारा किया जा रहा है। सरकार के हिन्दू डाइरेक्टरेट की ओर से बाली की उदयन यूनिवर्सिटी के तत्वावधान मे इस्टिट्यूट आफ हिन्दू धर्म का सचालन किया जा रहा है। हमारी बहुत इच्छा थी, कि इस सस्थान मे जाकर बाली के हिन्दू विद्वानो के साथ सम्पर्क करें, और वहा प्रचलित हिन्दू धर्म के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त करे। श्री पूज के प्रयत्न से इसके लिए समुचित आयोजन की व्यवस्था हो गई। हिन्दू धर्म के ये महान विद्वान एव नेता इसी प्रयोजन से जकार्ता से एक हजार मील से भी अधिक दूरी पर स्थित डेन पसार आए थे और उनके निर्देशन में हमे उस आयोजन मे सम्मिलित होने का सुअवसर मिला था जिसमे बाली के अनेक प्रमुख विद्वान् उपस्थित थे। हमे यह जान कर सुखद आश्चर्य हुआ कि इस्टीटयूट आफ हिन्दू धर्म मे दो हजार के लगभग विद्यार्थी वेदशास्त्र, हिन्दू दर्शन, कर्मकाण्ड, पुराण, महाभारत तथा सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन कर रहे हैं। सम्भवत भारत मे भी कोई ऐसी शिक्षा सस्था नही है, जिसमे इतनी अधिक सख्या मे विद्यार्थी हिन्दू धर्म के अध्ययन मे रत हो।

हिन्दू धर्म सस्थान (इस्टिट्यूट) मे हमे बाली मे हिन्दू धर्म का जो स्वरूप है उससे परिचय प्राप्त करने का अवसर मिला। हिन्दू धर्म बहुत प्राचीन है। समय समय पर उनके नए विचार-सम्प्रदायो तथा पूजा पद्धतियो का विकास होता रहा है। भारत मे हिन्दू धर्म के कितने ही स्वरूप हैं। शैव, वैष्णव, शाक्त आदि विविध सम्प्रदाय हिन्दू धर्म के अन्तर्गत है। अद्वैतवाद, विशिष्टा द्वैतवाद और त्रैतवाद तीनो हिन्दू दार्शनिक विचारधारा मे विद्यमान है। प्रतिमास पूजा के साथ-साथ याज्ञिक कर्मकाण्ड और निर्गुण ब्रह्म की पूजा को भी हिंदू धर्म मे स्थान प्राप्त है। वेदशास्त्र मे सामान्य रूप से निष्ठा रखते हुए भी हिन्दुओ के विविध सम्प्रदायो की पूजा पद्धति तथा दार्शनिक मन्तव्यो मे भारी अन्तर है इस दशा मे अस्वाभाविक नही है, कि भारत से हजारो मील की दूरी पर स्थित बाली के हिन्दू धर्म की पूजा पद्धति तथा मन्तव्य भारत के हिंदू धर्म से कुछ भिन्न हो सक्षप मे उसका परिचय प्रस्तुत है। बाली के हिंदू धर्म के पाच मूल सिद्धात हैं। एकेश्वरवाद, आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म, कर्मफल और मोक्ष। ईश्वर एक है। ब्रह्मा विष्णु और शिव एक भगवान के ही तीन रूप है। सृष्टि के उत्पादक के रूप मे ईश्वर ब्रह्मा

—डा० सत्यकेतु विद्यालकार

कहता है। सृष्टि के पालनकर्त्ता के रूप मे उसे विष्णु कहते हैं और जब वह सृष्टि को अपने मे विलय कर लेता है तो उसे शिव या महेश की सज्ञा दी जाती है। बाली के हिन्दू यह नही मानते कि शिव सृष्टि का सहार करता है। उनका मत है कि सृष्टि या प्रकृति भी अनादि व अनन्त है। प्रलय मे परमेश्वर सृष्टि का विलय करता है, सहार नही। विश्व की इस सर्वोपरि शक्ति को बाली के हिंदू शिव महोदय कहते हैं। वही उनका प्रधान या एकमात्र उपास्य देव है। जिसे हम मृत्यु कहते हैं, वह वस्तुत शरीर की मृत्यु होती है, आत्मा की नही। आत्मा भी अजर तथा अमर है। पच महाभूतो से निर्मित शरीर के अन्त के साथ आत्मा का अन्त नही हो जाता। अपने कर्मों के अनुरूप आत्मा का पुनर्जन्म होता है।

मध्यकाल मे इण्डोनेशिया के हिंदू देवी देवताओ की प्रतिमाओ को मन्दिरो मे प्रतिष्ठापित कर उनकी पूजा किया करते थे, पर वर्तमान समय मे बाली के हिन्दुओ की पूजा पद्धति के प्रतिमाओ या मूर्तियो की पूजा का स्थान प्राप्त नही है। वहा प्रत्येक परिवार के घर मे एक पूजास्थल होता है। जिसके एक भाग को पद्मासन कहा जाता है। पद्मासन मे परिवार के लोग त्रिसध्या करते हैं। त्रिसध्या के मन्त्र वेदशास्त्रो से लिए गए हैं। मन्त्रोच्चारण करने के पश्चात् ध्यान किया जाता है। इस ब्रह्मयज्ञ के अतिरिक्त अन्य यज्ञ भी किए जाते हैं, पर केवल विशेष अवसरो पर। पितरो की पूजा बाली मे प्रचलित है और परिवार के पूजास्थल का अन्य भाग इसी पूजा के लिए प्रयुक्त किया जाता है। परिवार के पूजा स्थलो के अतिरिक्त प्रत्येक ग्राम मे एक-एक केन्द्रीय पूजास्थल (जिसे बाली मे 'पुर' कहते हैं) होता है। जो सार्वजनिक सामूहिक पूजा के काम आता है। इसी प्रकार प्रत्येक जिले मे एक एक केन्द्रीय पूजास्थल या 'पुर' की सत्ता है और सम्पूर्ण बाली का एक सर्वोपरि या सार्वभौम मन्दिर है, जिसे वे साक्षी का मातृ मन्दिर कहा जाता है। यह केवल बाली के हिंदुओ का नही अपितु सम्पूर्ण इण्डोनशिया के हिंदुओ का सर्वप्रधान 'पुर' है और यहा पूजा के लिए सारे देश के श्रद्धालु नर-नारियो का आगमन होता रहता है। विश्व हिन्दू परिषद ने इसे विश्व भर के हिन्दुओ के लिए तीर्थ के रूप मे स्वीकार कर लिया है और अब भारत के हिन्दुओ के लिए भी इसका यही महत्त्व हो गया है, जो बद्रीनाथ या रामेश्वरम का है। यद्यपि बाली मे मूर्तिपूजा का प्रचलन नही है, पर कतिपय देवमूर्तिया अब भी वहा विद्यमान हैं, और जनता उनके प्रति श्रद्धा भी रखती है। ऐसी एक प्रतिमा भगवती दुर्गा की है।

इण्डोनेशिया के हिन्दुओ का यह विश्वास है, कि महर्षि अगस्त्य ने वहा आ कर धर्म का प्रचार किया था। अगस्त्य के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा है हमने वह अगस्त्य गुफा भी देखी, जहा महर्षि ने तपस्या की थी और वहा रहकर उन्होने धर्म की स्थापना की थी। अगस्त्य के पश्चात् महर्षि मार्कण्डेय इण्डोनेशिया गए थे। वहा के हिन्दू धर्म सस्थापक के रूप मे उनका भी अत्यधिक आदर करते हैं। गुणवर्मा नामक एक अन्य आचार्य भी दक्षिण पूर्वी एशिया के क्षेत्र मे धर्म प्रचार के लिए गए थे बाली के लोग उन्हे भी सम्मानपूर्वक स्मरण करते हैं।

जनता के जीवन पर हिन्दू धर्म का क्या प्रभाव पडता है ? इस विषय मे श्री डाक्टर शर्मा ने हमे कुछ महत्त्वपूर्ण बातें बताई। डा० शर्मा असम (भारत) की गौहाटी यूनिवर्सिटी मे सस्कृत विभाग के अध्यक्ष है, और गत सवा साल से बाली की उदयन यूनिवर्सिटी मे डेपुटेशन पर जाकर सस्कृत के प्रोफेसर पद पर कार्य कर रहे हैं। उन्हे इण्डोनशिया भाषा का समुचित ज्ञान है, और बाली के जनजीवन का उन्हे अच्छा परिचय है। उन्होने हमे बताया कि सवा साल के बाली निवास मे चोरी की कोई वारदात उनके सुनने मे नही आई। वहा के लोग आपस मे लडते-झगडते भी नही है। यदि किन्ही की मोटर साइकिले आपस मे टकरा जाए, और किसी को चोट भी लग जाए, पर वे लडने या एक दूसरे को दोष देने के बजाय मुसकराते हुए 'ओ३म् स्वस्ति' कहकर अपने-अपने रास्ते पर चले जाते हैं क्योकि वे कर्मफल पर विश्वास रखते हैं, और मानते हैं कि जिसका दोष होगा उसे परमेश्वर कर्मफल देगा ही, परस्पर लडने से क्या लाभ। हिन्दू समाज का ऐसा ही उज्ज्वल रूप चीनी यात्री फाहियान ने भारत मे

(शेष पृष्ठ ५ पर)

मानव-जीवन का सर्वश्रेष्ठ मार्ग

बैदिक साहित्य और साथ ही सस्कृत साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पशु-पक्षी, कीट-पतग—रेगने इत्यादि योनियो के प्राणि अधम स्तर के हैं, और भयकर पापो के फलस्वरूप हैं। अथववेद ८४२२ मन्त्र 'उलूययातु' इत्यादि के अनुसार उल्लू, भेडिया, कुत्ता, चिडिया (कोक) गिद्ध, गरुडरु ६ राक्षमो से बचने और इन्हे समाप्त कर देने की प्राथना की गई है। इसके विपरीत दैनिक यज्ञ है जिस मन्त्र को ५ बार पढा जाता है—'अयन्त इध्म आत्मन्' मे प्रजा, पशु, ब्रह्मवचस, अन्न और अन्न को खाने वाले 'अन्नाघ इनकी बुद्धि की प्रार्थना की गई है। यज्ञ से पूर्व स्वतिवाचन के मन्त्रो मे प्राथना की गई है —'गोपतौस्यात बहीयजमानस्य पशून् पाहि' गौए के स्वामो हो और यजमान के पशुओ की रक्षा करो। शान्ति करण के मन्त्रो मे 'समुसन्तु गाव ' श नो अस्तु द्विपदे चतुष्पदे' और 'द्यौ शान्ति' मन्त्र मे तो जड चेतन सब प्रकार के पदार्थों मे और उनके द्वारा शान्ति की कामना की गई है।

अमानव योनि, प्रेरक आदर्श

इसके साथ यह भी ध्यान देने योग्य तथ्य है कि साहित्य—विशेषत 'सस्कृत साहित्य' मे श्रेष्ठ गुणो की जितनी उपमाए हैं, वे सब पशु-पक्षियो अथवा अचेतन पदार्थों पर हैं। उदाहरण के लिए शक्ति और पराक्रम के लिए सिंह, सौन्दय के लिए कमल, पवित्रता और शुद्धता के लिए हस' अदृष्ट योगी जनो के लिए परम हस, मीठे स्वर और गान के लिए कोकिल आशा और प्रतीक्षा के लिए 'चातक' सग्रह की भावना के लिए मधुकर (भ्रमर), भारत का राष्ट्रीय पक्षी 'मयूर' आनन्द अवस्था मे नाचने वाला, प्रसन्न, सुन्दर नासिका के लिए तोता (शुक), आशा मे बठने के लिए चातक, चालाकी-धूतता के लिए लोमडी, स्वमिभक्ति के लिए कुत्ता, सीधा सरल व्यक्ति के लिए गौ, परिश्रमी के लिए बैल, अन्धकार मे भी प्रकाश के लिए जुगनू, सेवा और परिश्रम के लिए हाथी, मस्ती और उछल-कूद के लिए मृग, मेहनत के लिए बैल, चचलता के लिए बदर, धूर्तता के लिए गीदड टेढेपन के लिए सप इसी प्रकार वृक्षो मे कल्पद्रुम, चन्दन, पारिक्षति चम्पक, अशोक, मालजी, केतकी दाडिम, द्राक्षा, नारियल, शाल्यलि नीम, इक्षु (गन्ना), कपास, करीर, बास, लता इत्यादि चेतन अचेतन पशु-पक्षी, पदार्थ इत्यादि की उपमाओ से भारत का सस्कृत साहित्य भरा पडा है जब कि मनुष्य सबश्रेष्ठ प्राणि कहा जाता है।

ध्रुव सत्य मानव सर्वश्रेष्ठ है

ध्रुव सत्य यही है कि मनुष्य सवश्रेष्ठ है। क्याकि उसके पास बुद्धि, मन, आभा सहित वह अदभुत शक्ति भण्डार है जिस के सहारे सवगुण भण्डार परमात्मा से बल और प्रकाश की याचना और उसके लिए अहर्निश सक्रिय रहता हुआ अध पतन के अन्धकारमय गर्त से निकल हिमालय की सर्वोच्च चोटी तक पहुच सकता है। विश्व इतिहास इस प्रकार के ज्वलन्त जीवन के व्यक्तिया से आपूरित है। अथववेद मे भक्त प्रभु से प्रार्थना करता है—

आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार

पृठात् हृथिव्या अहयन्तरिक्ष मारुहय अन्तरिक्षात्। दिवमारुहय दिवो नाकस्य पृष्ठात् स्वर्ज्योति रगहम्।

अर्थात् पृथ्वी की पीठ से अन्तरिक्ष पर पहुचू। अन्त से द्यौलोक और द्यौलोक से सुखप्रद ज्योति को प्राप्त करू। पर कैसे ? क्या छलाग मारकर ? नही—इस के लिए नीतिकारो ने तीन मार्ग बताए हैं—

प्रथम मार्ग—पिपीलिका

१ पिपीलिका मार्ग—चिऊटी का मार्ग। मकान के फश के एक कोने मे अन्न पडा है। चिऊटी उसे ऊपर छत पर ले जाना चाहती है। वह अन्न कण को अपने मुह मे डाल धीमे-धीमे आगे बढती हुई छत पर चढना प्रारम्भ करती है। आप ध्यान से चिऊटी के क्रिया-कलाप का निरीक्षण करें। जहा एक ओर आगे बढ रही है वहा साथ ही रास्ते मे मिलने वाली चिऊटिया के मुह से मुह लगा फर्श पर पडे अन्य के बारे मे वह सन्देश देती जाती हैं। एक अग्रेज विद्वान ने इस तुच्छ और अति स्वल्प प्राणी के बारे मे चिरकाल तक अध्ययन करने के बाद अपनी पुस्तक मे लिखा है कि 'सगठन और पारस्परिक एकता और सोहार्द की दृष्टि से चिऊटी मनुष्य से कही अधिक आगे हैं। वस्तुत श्रेयमार्ग पर चलने के लिए नियमित और अटूट भले ही स्वल्प धैय सहित प्रयत्न अनिवाय है। गीता मे श्रीकृष्ण का निम्न उपदेश साधक के सम्मुख अहर्निश रहना चाहिए—

शनै शनैं रुपरयेन् बुद्ध्याधृति गृहीतया।
आम सस्थ मनद कृत्वा न किचि यि
चिन्तयेत्॥ ६।५

अर्थात्—धैय से काबू की गई बुद्धि की सहायता से धीमे-धीमे अपने मन मे सासारिक विषयो के उदासीन रहने का अभ्यास करो। इन दोनो साधनो के बाद मन को आत्मा के आधीन करे। इसकी फलप्रति कही फिर किसी प्रकार की चिंता न करें।'

महाभारत, उद्योग पर्व ३३।४२ मे व्यासमुनि कहते है कि जिस प्रकार दीपक वल्मीक (अपना मिट्टी से धीमे-धीमे घर घर बनाता है, इसी प्रकार किसी प्राणि को कष्ट न देता हुआ पर लोक सहायता के लिए धम का धीमे-धीमे सचय करे। नीतिकार कहते हैं 'प्रतिदिन मनुष्य अपने आचरण की पडताल कर यह देखे कि क्या मैं पशु माग पर चल रहा हू अथवा श्रेष्ठ पुरुषो के मार्ग पर। हे मनुष्य ! बार-बार सावधान होकर यह देखे कि क्या मैं पशु तुल्य हू अथवा श्रेष्ठ पुरुषो की तरह।

तुम्हारे जीवन का आज के दिवस याद रखो सूय अस्त हो जाएगा।

२ कपि मार्ग

दूसरा कपि—बानर मार्ग है। सदा चचल, अस्थिर और एक शाखा व वृक्ष से दूसरी शाखा व वृक्ष पर सदा छलाग मारते रहना। सारा जीवन इस प्रकार चचलता मे ही नष्ट कर देना, इस मार्ग का यही परिणाम होता है।

३ विहगम मार्ग

विहगम अर्थात् आकाश मे बहुत ऊचा उडने वाले पक्षी को कहते है। ससार मे कुछ व्यक्ति ऊचा उडने वाले पक्षी की तरह इतने उच्च चरित्र के हाते हैं कि सामान्य पुरुष उनकी ओर आश्चय और भ्रमसे नत मस्तक हो देख तो सकता है पर उनका उस सामान्य व्यक्ति क लिए सम्भव नही हाता। कबीरदास न ऐसे महापुरुषों के लिए ही शायद कहा था

ऊचा ऊचा सब कोई कहे,
ऊचन मे ताल खजूर।
बैठन को छाया नही,
फल पाना अति दूर॥

योगदर्शन का माग—दृढ भूमि

महाकवि कालिदास न रघुवश के प्रारम्भ से ही श्रीराम के जीवन की तुलना उस आम्र वृक्ष से की है जो छाया और फलो से भरपूर है। थके यात्री को इसके नीचे बैठ पूर्ण शान्ति और भूख मिटाने के लिए फल—दोनो की यथेष्ठ प्राप्ति होती है। इसी लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयत्न मानव को करना चाहिए —अपने और दूसरो के कल्याण के लिए। इसे ही योगदशन के प्रथम पाद मे 'जीवन की दृढभूमि' कहते हुए दीघकाल निरन्तर और श्रद्धापूवक' पालने का उपदेश दिया गया है।

के सी ३७ बी अशोक विहार दिल्ली-५२

पृष्ठ ४ का शेष

देखा था जब वह गुप्त देश के शासनकाल मे भारत आया था। डा० शर्मा के अनुसार हिन्दू धर्म से प्रभावित बाली के जन जीवन का आज भी यही उज्ज्वल रूप है। बाली के हिन्दू जब परस्पर मिलते हैं तो 'ओ स्वस्ति अस्तु' कहकर एक दूसरे का अभिवादन करते हैं। विद्वान व बडे लोग आशीर्वाद देते हुए 'ओ दीर्घायुरस्तु' तथा 'ओ अविघ्नमस्तु' भी कहते हैं। वहा के जनजीवन पर सस्कृत भाषा के इस प्रभाव को देखकर गौरव की अनुभूति होती है। केवल बाली मे ही नही अपितु अन्यत्र भी सस्कृत का यही प्रभाव विद्यमान है। वहा के होटलो के नाम स्वस्तिक' 'अम्बर रक्त' और 'आय' आदि है। एक बैंक का नाम 'अर्थलोक है। इण्डोनेशिया मे राजपति की 'कपाल नगर' सज्ञा है। वहा की भाषा मे नगर का अर्थ है राज्य और सस्कृत मे मूर्धा का पर्याय है। हेनपसार के हवाई अड्डे की दीवारो पर रामायण की कथा रूपावलिया चित्रित है। बाली मे प्रवेश करते ही यह अनुभव होने लगता है, कि हम आर्यावत्त' मे आ गए हैं। जहा की प्रत्येक व्यक्ति हिन्दू या आय है, और जहा बहुत से लोगो को गायत्री मन्त्र कण्ठस्थ है।

इण्डोनेशिया मे धर्मशिक्षा सबके लिए अनिवार्य है। हिंदुओ को हिन्दूधम को शिक्षा अनिवाय रूप से दी जाती है और उसमे उत्तीर्ण हुए बिना कोई विद्यार्थी ऊपर की कक्षा मे नही जा सकता। यही कारण है कि वहा के सब निवासी अपने धर्म से परिचय रखते हैं।

बाली के राज्यपाल श्री मन्त्र हैं। हम उनसे भेट करने के लिए उत्सुक थे। अपने व्यस्त समय मे से दस मिनट निकाल कर उन्होने हमसे मिलना स्वीकार कर लिया। पर जब हम उनसे बात करने बैठे, तो समय का किसी को ध्यान नही रहा। एक घण्टे तक उनसे बातचीत होती रही। भारत की विद्वत्मण्डली से मिलकर उन्होने कहा सदियो के बाद भारत के इतने विद्वानो ने हमारे देश मे पदार्पण किया है। भारत से हजारो पयटक अमेरिका, युरोप, जापान आदि जाते हैं। पर दक्षिण पूर्वी एशिया के इस क्षेत्र मे भारतीय यात्रियो की यह पहली मण्डली आई है। प्रकृति की रमणीयता की दृष्टि से यह देश अनुपम है। भारत के साथ हमारा सम्बन्ध हजारो साल पुराना है। हमारी और आपकी सास्कृतिक तथा धार्मिक परम्पराए एक हैं। इस दशा मे हमारे और आपके सम्बन्धो मे वृद्धि हानी चाहिए। मुझे आशा है, कि भविष्य म भी भारत के विद्वानो व यात्रियो की मण्डलिया बाली आती रहगी। राज्यपाल महादय न जलपान द्वारा हमारा आतिथ्य किया और हमारे साथ फाटो भी खिचवाई। जिस आत्मीयता क साथ श्रीमन्त्र ने हम स भेट की, उससे सबके हृदय गद्गद् हो गए।

उसी दिन सायकाल हिन्दूधम सस्थान मे एक अन्य आयोजन हुआ, जिसमे स्वामी ओमानन्द सरस्वती के शिष्य ब्रह्मचारी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

महर्षि का संदेश विश्व मे फैलाओ

अरबी भाषा मे सत्यार्थप्रकाशकाप्रचार–प्रसार।

बम्बईमे महर्षि निर्वाण शताब्दी

बम्बई महानगरी की समस्त आर्यसमाजो की ओर से आर्यसमाज सान्ताक्रुज के तत्वावधान मे रामलीला मैदान चचगेट मे महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती की अध्यक्षता मे १८ १९ अक्तूबर को मनाई गयी। कार्यक्रम १८ अक्तूबर का फिल्मी कलाकारो एव सगीतकारो ने महर्षि दयानन्द की सगीतमय श्रद्धाजलि से प्रारम्भ किया। पार्श्वगायिका सुश्री जयश्री शिवराम एव दीपक चौहान आदि के गाये महर्षि हम तेरे उपकार न भूला। धन्य है तुमको महर्षि तू ने हम जगा दिया गीत बहुत सराहे गए।

१९ अक्तूबर को विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियो ने महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी श्रद्धाजलिया प्रस्तुत की। वक्ताओ ने महर्षि को युगदृष्टा समाजसुधारक अन्धविश्वासो के उन्मूलक एव भारतीय सस्कृति का पुनरुद्धारक बतलाया। डा० कुशाद ने कहा जो हिन्दू धर्म छोडकर अन्य मजहबो मे चले गये थे शुद्धि का चक्र चलाकर दयानन्द और उनके अनुयायियो ने उन्हे पुन गले लगा लिया। अध्यक्षीय भाषण मे स्वामी सत्यप्रकाश ने कहा महर्षि ने सोई हुई अज्ञानता एव अन्धविश्वास मे भटकती आर्य जाति को सही मार्गदर्शन देकर एकता के सूत्र मे बांधने की कोशिश की। २० अक्तूबर को सभा मे डा० अमरेश आर्य और स्वामी सत्यप्रकाश जी ने कहा कि महर्षि के सन्देश को फैलाने के लिए हमे मिशनरी तैयार करने होगे जो भारतीय सस्कृति सभ्यता को देश विदेश तक पहुचा कर सत्य की प्रतिष्ठा करे। डा० अमरेश आर्य ने सकल्प किया कि वह एक लाख सत्यार्थप्रकाश अरबी भाषा मे प्रकाशित करके स्वामी दयानन्द सरस्वती के सन्देश को विश्व के कोने कोने मे पहुचाएगे।

ग्रन्थियो की राजनीतिक भूमिका रोको

हरयाणा रक्षावाहिनी के प्रधान प्रो० शेरसिंह का आह्वान

हरयाणा रक्षावाहिनी एव आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अध्यक्ष प्रो शेरसिंह ने एक वक्तव्य मे कहा है दरबार साहब अमृतसर के ग्रथियो की चर्चा आज कल अखबारो तथा समाचार पत्रो मे हो रही है। जिस प्रकार मन्दिर मे पुरोहित होते है उसी प्रकार गुरुद्वारो मे ग्रथी नियुक्त किए जाते है वर्तमान ५ मुख्य ग्रथी अपना धर्म प्रचार कार्य छोडकर राजनीति के दलदल मे फसने लगे हैं। उन्होने हाल ही मे शिरोमणि अकाली दल की तदर्थ समिति को भग करके नई समिति का गठन किया है। सरदार प्रकाशसिंह मजीठ कार्यकर्त्ता प्रधान का इसलिए हटाया है क्योकि उन्होने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी को शोक सन्देश भेजा था।

रामकृष्ण का आदर्श अपनाए

नेपाल मे व्यापक वेद प्रचार

श्री ५ महारानी के जन्म दिवस पर दिनाक ६ नवम्बर से १६ नवम्बर तक वीरगज गीता भवन के प्रागण मे गायत्री महायज्ञ तथा वेद प्रवचन हो रहा है। जिसमे स्वामी कात्यानन्द जी श्री प० रामानन्द शास्त्री श्री प० गगाधर शास्त्री उपदेशक तथा श्री दयानन्द सत्यार्थी भजन उपदेशक पधारे हुए हैं। दिनाक १० ११ ८४ को श्री रामाज्ञा वरागी सचालक की अध्यक्षता मे हुई जिसमे आर्य वीर दल के गठन पर प्रकाश डालते बताया कि किसी भी देश के युवक और युवतियो का जीवन चरित्र ऊचा होना चाहिए तभी राष्ट्र की उन्नति होती है। अत राम और कृष्ण के जीवन चरित्र आदर्श अपना कर अपना तथा अपने राष्ट्र को ऊचा उठाए।

गुरुकुल सस्थाओ द्वारा हमले की भर्त्सना

महासभा गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैसवाल कला (सोनीपत) एव कन्या गुरुकुल खानपुर कला के वरिष्ठ सदस्यो एव विभिन्न शिक्षण सस्थाओ की सयुक्त बैठक मे पद्मश्री सुभाषिणी देवी की अध्यक्षता मे प्रस्ताव स्वीकार कर भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की निर्मम हत्या की कडी भर्त्सना की गई। साथ ही भू पू शिक्षामन्त्री हरयाणा सस्थाओ के प्रधान चौ० मार्डूसिंह के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया गया।

मानवता के लिए बड़ी चुनौती

सर्वजातीय सर्वखाप पचायतद्वारा जघन्य हत्या की निन्दा

बेरी जिला रोहतक। नवम्बर को सर्वजातीय सर्वखाप पचायत के सम्मेलन मे २७ खापो के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। सर्वसम्मति से प्रस्ताव स्वीकार कर घोषित किया।

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की उनके अगरक्षको द्वारा निर्मम हत्या देश की एकता और अखण्डता के लिए ही नही बल्कि मानवता के लिए भी बडी चुनौती है। साम्प्रदायिकता के जहरीले रग मे रगे हुए एक सम्प्रदाय के लोगो के हाथो विश्व की महान नेता की हत्या एक जघन्य अपराध है और देश की अस्मिता और एकता पर गहरी चोट है। सर्वजातीय सर्वखाप पचायत का यह सम्मेलन इस घृणित अपराध और षडयन्त्र की घोर निन्दा करता है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की देश व्यापकता

(पृष्ठ २ का शेष)

रखते है कि हमारी शिक्षा गुरुकुलीय जीवन पद्धति को अपना मूल समझे और जीवन निर्माण की उस दिशा को सर्वत्र मूर्द्धन्य समझे। गुरुकुल जीवन पद्धति एक आदोलन है जिसका उद्देश्य उस मानव का निर्माण करना है जिस प्रकार का मानव हम समाज मे देश मे और विश्व मे देखना चाहते है ऐसा मानव जो अध पतन के सब प्रलोभनो से मुक्त होकर शुद्ध मानव जीवन का निर्माण करे। इसके लिए नीव का काम गुरुकुल जीवन पद्धति के उन मूल तत्त्वो को उभारने से ही किया जा सकता है अन्यथा शिक्षित होकर भी हम अशिक्षित रहेगे इस प्रकार की जीवन पद्धति का गुरुकुल विश्वविद्यालय मे केन्द्र बनाकर सकी शाखाए हर शहर हर राज्य मे खोलन की योजना का देश व्यापक रूप देने से ही नव मानव का निर्माण हो सकता है। देश का आवश्यकता पुस्तकीय शिक्षा के साथ साथ गुरुकुलीय जीवन के सिद्धान्तो को व्यापक रूप देने की है।

डब्लू ७७ ए ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली ४८

वह देश के लिए शहीद हुई

विश्व इतिहास मे अनूठे कीर्तिमान

इन्दिराजी को श्रद्धाजलिया

नई दिल्ली। भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इदिरा गाधी की उनके सुरक्षा सैनिको द्वारा हत्या किए जाने पर व्यापक प्रतिक्रिया हुई। आयसमाजो आयसस्थाओ एव सामान्य जनता ने इस पर गहरा दुख अभिव्यक्त किया है। भारतीय हिन्दू रक्षा समिति एव दयानन्द सस्थान की अध्यक्षा पण्डिता राकेशरानी ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा इदिराजी का सारा जीवन राष्ट्र और समाज के लिए अर्पित था। अभावग्रस्त लोगो के लिए उनके हृदय म सहानुभूति का सागर लहराता था वह देश के लिए जीवित रही और देश के लिए शहीद हुइ।

आयसमाज बिडला लाइस कमलानगर क्षत्र ने अपने शोक प्रस्ताव म घोषित किया—श्रीमती गाधी के दूरदर्शी साहसपूण नेतृत्व म देश ने प्रत्यक क्षत्र मे जो कीर्तिमान स्थापित किए है उनके लिए श्रीमती गाधी विश्व इतिहास मे चिरविस्मरणीय रहगी। उनके निधन से राष्ट्र को जो अपार क्षति हुई है, वह अपूरणीय है।

आयसमाज कृष्णनगर ने एक प्रस्ताव द्वारा अपन ही सरक्षको द्वारा विश्वासघातपूवक प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या के कुत्सित कृत्य तथा घिनौने षडयत्र की निन्दा की।

बिना लाइसेंस तलवार रखने की छूट हो

एक अन्य प्रस्ताव द्वारा आयसमाज कृष्णनगर ने भारत सरकार और प्रधानमत्री से माग की कि अपनी रक्षा के लिए दिल्ली के सभी आयबधुओ को दिल्ली व पजाब की भाति बिना लाइसस तलवार रखन की छट दी जाए।

आयसमाज लक्ष्मीनगर विस्तार दिल्ली ९२ न एक प्रस्ताव द्वारा उन तत्वो की घोर निन्दा की जो इस जघन्य कुकृत्य के लिए जिम्मेदार है भारत विरोधी शक्तियो के इशारे पर ही एक षडयत्र द्वारा भारतीय राष्ट्रीय नेतृत्व को समाप्त करने की कोशिश की गई है।

आयसमाज रानी तालाब गुरुकुल विभाग फीरोजपुर शहर न एक प्रस्ताव मे दिवगत आत्मा की धार्मिक सामाजिक एव राजनीतिक उपलब्धियो की चर्चा की

शास्त्रार्थ महारथी प० गणपति शर्मा की मूर्ति प्रतिष्ठित

चूरुश्री मे श्री शर्मा के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाल जाएगा

चूरू। शास्त्रार्थ महारथी प० गणपति शर्मा की आवक्ष प्रतिमा उनक जन्म स्थान राजस्थान चूरूनगर के इन्द्रमणि पाक मे स्थापित की गइ है। प० गणपति शर्मा पुरानी पीढी के आय विद्वान तथा अपूर्व वक्ता थ। उनका निधन १९१ मे हुआ था। इस प्रतिमा की स्थापना चूरू नगर की एक सास्कृतिक सस्था नगरश्री ने की है। प्रतिमा के लिए नगर पालिका चूरू ने प्रमुख सावजनिक उद्यान मे स्थान उपलब्ध कराया तथा नगर के धनी मानी सज्जनो ने उन्मुक्त रूप से धन प्रदान किया। यह स्मरणीय है कि इस नगर मे आयसमाज भी नही है।

प्रतिमा का अनावरण आयसमाज के प्रमुख शोध विद्वान डा भवानीलाल भारतीय ने किया। मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुए उन्होने प० गणपति शर्मा के वैदुष्य पर विस्तारपूवक प्रकाश डाला तथा नगरवासियो को प० गणपति जी की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए धन्यवाद दिया। नगरश्री के मत्री प्रसिद्ध पुरातत्वविद और लेखक श्री सुबोध अग्रवाल ने सभा का सचालन किया और समारोह की अध्यक्षता डा० ब्रह्मानन्द शर्मा (पूर्व अध्यक्ष प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर) ने की। श्री सुबोध अग्रवाल न विश्वास दिलाया कि निकट भविष्य म नगरश्री के द्वारा प गणपति शर्मा के जीवन एव व्यक्तित्व को चरूश्री नामक पत्रिका के एक विशेषाक के रूप मे प्रकाशित किया जाएगा। यह भी स्मरणीय है कि आर्य सामाजिक मर्यादा को ध्यान मे रखते हुए प्रतिमा पर फूल मालाए अपित नही की गइ और समारोह एक इतिहासपुरुष की स्मृति को सुरक्षित रखने की भावना से ही सम्पन्न किया गया।

भारत को अन्तर्राष्ट्रीय शिखर पर पहुचाया

१० नवम्बर को महाशय धमपाल की अध्यक्षता म महाशय चुनीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट के वेद प्रचार विभाग की ओर से श्रीमती इन्दिरा गाधी के जघन्य हिंसा काण्ड की निन्दा करते हुए घोषित किया गया कि श्रीमती गाधी ने अपना सारा जीवन राष्ट्र सेवा मे समर्पित किया तथा भारत को अन्तर्राष्ट्रीय क्षत्र मे उन्नत शिखर पर पहुचाया। परमात्मा से यह प्राथना भी की गई कि प्रधानमन्त्री राजीव गाधी को श्रीमती गाधी के अधूरे काय को पूण करने की शक्ति प्रदान करें।

—आयसमाज मन्दिर माग द्वारा गायत्री मन्त्रोच्चारण के बाद दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

सार्थक पूजा

महाराष्ट्र मे एक बड सत हुए है—सत एकनाथ। एक बार तीर्थाटन करते हुए वह प्रयागराज पहुचे वहा उन्होने अपनी बहगी म दो कावरी त्रिवेणी क पवित्र जल से भरी। सोचा उसे रामेश्वरम मे चढाएग। उन साथ पूरी सतम डली थी। यात्रा करत करते सतो की टोली रामेश्वरम के पास जा पहुची। लक्ष्य समीप ही था कि सत एकनाथ ने देखा—रामेश्वरम तीर्थ के मुख्य द्वार क समीप रास्ते पर एक गधा पानी की प्यास से व्याकुल तडप रहा था। लक्षणो से लगता था कि यदि कुछ पलो मे ही उस पानी न मिला तो वह तडप तडपकर जान दे देगा। उसकी दशा देखकर सत एकनाथ द्रवित हो गए। उन्होने अपनी बहगी मे कावरी खाली और उसमे पवित्र त्रिवेणी जल लेकर उस प्यासे गधे को पिला दिया। और वह स्वस्थ सशक्त होकर घास चरने लगा।

सतो की उस मण्डली को सत एकनाथ का यह व्यवहार पसन्द नहीं आया। एक बडबोला साधु बोल उठा एकनाथजी आप तो बड सत समझे जाते है पर तु आप तो महामूख निकले। इतना कष्ट तपस्या कर प्रयागराज का पवित्र गगाजल आप रामेश्वरम के मन्दिर पर भेट चढाने के लिए लाए उस आपने व्यथ ही एक मूख गधे को पिला दिया। आप रामेश्वरम के तीथ पर जल स्नान के पुण्य से वचित रह गए। सत एकनाथ ने हाथ जोडकर कहा—हमारा दयालु भगवान तो सभी चराचर जीवो मे व्याप्त है सारा ससार ही उसका असली स्वरूप है मैने तो एक पीडित दुखी प्राणी को पानी पिला दिया। उसकी प्राणरक्षा की। समझो मेरी पूजा तो सार्थक हो गइ। नरेन्द्र

30 वें सस्करण से उपरोक्त मूल्य देय होगा।

आर्यसमाज जगपुरा का वार्षिकोत्सव

नवनीतलाल सत्यप्रिया ट्रस्ट का जानोपयोगी काय

आयसमाज भागल के ४४ वे वार्षिकोत्सव पर २६ अक्तूबर को श्रीमती प्रेमशील की अध्यक्षता मे महिला सम्मेलन हुआ। श्रीमती उषा शास्त्री एव माता लाजवन्ती जी ने वतमान समय मे नारी का कर्त्तव्य विषय पर उद्बोधन किया। सन्यासिनी मीरा यतिजी न अरुन्दती तारे का उदाहरण देते हुए सहनशीलता द्वारा परिवारो को सुखी करने का परामश दिया।

शनिवार २७ अक्तूबर को नवनीतलाल सत्यप्रिया ट्रस्ट के तत्वावधान मे श्रीमती सत्यप्रिया जन्मदिवस मनाया गया। धार्मिक परीक्षाओ मे प्रथम द्वितीय, तृतीय आने वाले छात्र-छात्राए पुरस्कृत किए गये। आर्य पाठशाला जगपुरा को ट्रस्ट की ओर से १०००) का दान दिया गया।

महर्षि निर्वाण दिवस कविराज खजानचन्द की अध्यक्षता मे मनाया गया। इस अवसर पर वैद्य रामकिशोर श्री कर्णदेव शास्त्रीश्री ब्रजलाल शास्त्री, श्री सत्यदेव भजनोपदेशक ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला।

श्रीमती सत्यवती सूद आय सैकेण्डरी स्कूल मे आर्य वीरागना प्रशिक्षण शिविर की सफल छात्राए पारितोषिको से सम्मानित की गईं।

मानव-जीवन का सर्वश्रेष्ठ मार्ग (पृष्ठ ५ का शेष)

रामवीर तथा ब्रह्मचारी विरजानन्द वेद-कर्णी ने योगासनो का प्रदर्शन किया। ब्रह्मचय के पालन तथा योगाभ्यास से मनुष्य कितनी शक्ति प्राप्त कर सकता है जिससे कि लोहे की छड त माडी जा सकती है, इसे क्रियात्म देखकर सब कोई आश्चयचकित र , सस्थान के दो हजार के लगभग छात्रो तथा आचार्यों पर इस प्रदर्शन का अच्छा प्रभाव पडा। इन्डोनेशिया के हिन्दुओ की दृष्टि मे गगा जल का बहुत महत्त्व है। ये उसे पवित्र मानते हैं। गगा के अतिरिक्त यमुना, नर्मदा, गोदावरी आदि अन्य भारतीय नदिया भी उनकी दृष्टि मे पवित्र हैं। वहा के हिन्दुओ को उपहार मे देने के लिए हम बगाजल साथ ले गए थे। उसे उन्होने कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया।

गली मे हम उन आकर्षण पर्यटन स्थलो के अवलोकन के लिए भी गए, पर लिए वहा का प्रधान आकर्षण वह था, जिसमे भारत की प्राचीन धा सास्कृतिक परम्पराए ओत-प्रोत थीं। हम वहा की भाषा नही जानते र वहा के लोग हमारी भाषा नही समझते थे, पर यह जानकर कि हम भी हिंदू हैं उनके मुखमण्डल पर आत्मीयता के जो भाव उजागर हो जाते थे, उनके माधुर्य को शब्दो द्वारा प्रकट नही किया जा सकता।

ए १/१३२ सफदरजग एनक्लेव,
नई दिल्ली-२९

आर्यसमाज पहाड़गज चूना मण्डी का ४८वाँ उत्सव

आयसमाज पहाडगज चूनामण्डी नई दिल्ली का ४८ वा वार्षिकोत्सव १६ से २५ नवम्बर तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर १६ से २४ नवम्बर तक प्रात ६ से ८ बजे तक चतुर्वेद शतकम यज्ञ तथा उपदेश का कायक्रम होगा। इन्ही दिनो रात्रि को ८।। से १० बजे तक वेदकथा होगी। २३ नवम्बर को प्रात ११ से ५ बजे तक आय महिला सम्मेलन २४ नवम्बर को रात्रि के ७-३० से १० बजे तक आययुवक सम्मेलन होगे। २५ नवम्बर को प्रात ८ से १० तक यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद १० से १२-३० तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होगा।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के लिए श्री डा० धमपाल द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस, २५७४ रघुबरपुरा न० २, गांधीनगर, दिल्ली-३१ मे मुद्रित।१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० रजि० न०, डी (सी०) ७५९

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे   वर्ष ६   अंक ५   रविवार २ दिसम्बर १९८४   आर्य संवत्सर १९६०८५३०८४   १० मार्गशीर्ष शु० २०४१ वि० दयानन्दाब्द—१५८

जनतन्त्र का आठवां महाकुम्भ प्रारम्भ

चुनाव रणभेरी बजी : नामांकन पत्र भरे गए

"सुराज्य बनाने के लिए अपना मत दें" आर्य समाज की घोषणा

नई दिल्ली। भारत मे लोकतन्त्र की आठवी ससद के लिए चुनाव घोषणा हो चुकी है। २४ दिसम्बर एव २७ दिसम्बर ८४ को लगभग ३८ करोड मतदाता विश्व के सबसे बड जनतन्त्र के लिए ५१५ प्रतिनिधियो का चयन करेंगे।

महर्षि दयानन्द और आयसमाज ने देश की स्वतन्त्रता और जनतन्त्र के लिए सतत प्रयत्न किया है। देश के हित को आयसमाज ने सदैव सर्वोपरि माना है और ठीक उसी दिशा मे प्रयत्नशील रहा है। क्योकि यह आयसमाज का अपना स्वभाव है, कत्तव्य है। आयसमाज का अपना मत है कि देश मे सुराज्य स्थापित किया जाए। फलत यहा पर स्वस्थ स्वच्छ न्याय परायण लोकप्रिय प्रशासन के लिए राष्ट्र के समस्त नागरिक विवेक से काम लेगे ऐसी आयसमाज की मान्यता है।

रामगोपाल शालवाले की बिहार यात्रा

सफलता पूर्वक सम्पन्न

डा० दुखनराम से विचार-विमर्श

दिनाक २४ नवम्बर ८४ गया रेलवे स्टेशन पर सैकडो की सख्या म विभिन्न आयसमाजो के अधिकारियो एव कायकर्ताओ ने लाला रामगोपाल शालवाल का शान-दार स्वागत किया। रेलवे स्टेशन पर श्री प्रतिनिधि सभा के प्रधान पडित वासुदेव शर्मा, मन्त्री हरिदास ज्वाल आर्यवीर दल के सचालक रामाश्रय वैरागी नवादा के मत्री द्वारका-प्रसाद आदि आयजन स्वागताथ उपस्थित थे।

रेलवे स्टेशन से लालाजी आयसमाजमन्दिर में पधारे जहा हजारो की सख्या मे लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। लोगो ने सावदेशिक प्रधान का हार्दिक स्वागत किया और उन्ह पुष्प मालाओ से लाद दिया। लालाजी का ओजस्वी भाषण हुआ। इसी प्रकार के कार्यक्रम बिहार के अ य आयसमाजा —नवाद रजौली मे भी हुए। पटना म लालाजी ने दुखनराम से भट की। अन्त मे समस्त आयसज्जनो ने सभा प्रधान को रेलवे स्टेशन पर भाव भीनी विदाई दी।

वैदिक धर्म-महासभा का चुनाव

हाल ही मे वैदिक धम-महासभा के पदाधिकारियो का जो चयन किया गया वे निम्न प्रकार से है —

स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती—सस्थापक एव प्रधान। महात्मा आनन्द मुनि वानप्रस्थी—उप प्रधान। स्वामी जगत मुनि जी—उपप्रधान। स्वामी गोरक्षा सरस्वती—उपप्रधान। डा० सुदशन देव आचाय (एम० ए० पी० एच० डी० रोहतक)—महा-मन्त्री। बाल ब्रह्मचारिणी बहिन कलावती शास्त्री।—मन्त्री एम० ए० प्रभाकर—स्वामी योगानन्द सरस्वती—मन्त्री। श्री अनरसिंह आय क्रांतिकारी—प्रचारमन्त्री एव कोषाध्यक्ष।

देश मे डाकघरो की स्थिति

- १५ अगस्त १९४७ को स्वतत्रता प्राप्ति के समय हमारे देश मे केवल २२ ११६ डाकघर थे।
- ३० सितम्बर, १९८४ तक डाकघरो की सख्या बढकर १,४४ ७७२ हो गई।
- ग्रामीण क्षत्रो मे डाकघर इस प्रकार से खोले जा रह हैं कि ग्रामीणो को डाकघर पहुचने के लिए तीन किलोमीटर से अधिक न चलना न पड। पिछडे और जनजाति क्षेत्रो को डाकघर खोलने मे प्राथमिकता दी जाती है।
- बचत करने की आदत डालने के लिए प्रत्येक डाकघर मे बचत बैंक की सुविधा है और यह देश का सबसे बडा बैंकिग तत्र है।
- देश की कुल पाच लाख पेटिकाओ मे से चार लाख से अधिक ग्रामीण क्षत्रो मे हैं।
- देश के विभिन्न भागो के लोगो के बीच सम्पक की कडी होने के कारण डाक तत्र राष्ट्रीय एकता का एक प्रभावी यन्त्र बन गया है।

भारत का समुद्री तट

- भारत का समुद्री तटवर्ती क्षत्र ६०८० कि० मी० लम्बा है तथा इस तट रेखा पर १० प्रमुख तथा १८५ छोटे बन्दरगाह के अलावा असख्य छोट छोट पत्तन हैं।
- हमारे देश म समुद्र मे चलन वाले ६० लाख जी० आर० टी० स अधिक जहाजो का बेडा है।
- भारत का विदेशी व्यापार २० ००० करोड रु० का है और लगभग यह पूरा व्यापार समुद्र स होता है। विदेशी व्यापार की ३३ प्रतिशत से अधिक की ढुलाई भारतीय जहाजो द्वारा होती है।
- अपतटीय क्षत्र मे तेल की खोज के लिए देश मे २,०[illegible] करोड रु० का निवेश हुआ है और हम शीघ्र ही ३०० लाख टन तेल निकाल [illegible]गे।
- हमारे पास हिन्द महासागर म अधिकतम विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र है जिसमें खनिज एव जैव सम्पदाओ का विशाल भडार है।
- भारत मे समुद्री सतह के खनन मे अग्रणी निवेशक की स्थिति प्राप्त कर ली है और खनिज सम्पदाओ के विभिन्न स्रोतो की खोज के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

वाई० बी० चह्वाण नहीं रहे

भूतपूव उप प्रधान मन्त्री वयवृद्ध स्वतन्त्रता सैनानी एव देश के मूर्धन्य राजनेता श्री यशवत राव चह्वाण का २५ नवम्बर का दिल्ली म देहावसान हो गया। उनकी आयु ७१ वष की थी।

हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष का निधन

विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष महाराणा भगवत सिंह जी का निधन हो गया। उन्हे दिल का दौरा पडा था। वे ६० वष के थे।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—डा० गणेशीलाल

परमपिता परमेश्वर ने सृष्टि के आदि मे आज से एक अरब छियानवे करोड आठ लाख और हजारो वर्ष पूर्व मानव-कल्याण के लिए चार ऋषियो की आत्माओ मे एक-एक वेद का ज्ञान दिया इसीलिए वेद का नाम श्रुति भी है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है यह तर्क युक्ति शास्त्र प्रमाण एव स्वय वेद प्रमाण से भी सिद्ध किया जा सकता है। जैसा कि यजुर्वेद मे कहा है —

तस्मादयज्ञात सर्वहुतऋच सामानि जज्ञिरे।
छन्दासि जज्ञिरे तस्माद यजुस्तस्माद जायत्॥
(यजु० ३१।७)

यानी उसी परमेश्वर से ही ऋग, साम, यजु और अथर्व वेदो की उत्पत्ति हुई।

ऐसा ही हम अथर्व वेद का एक और मन्त्र लेते हैं —

यस्मादृचो अपातक्षन् यजुयस्माद पाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गि रसो मुखम्॥
स्कम्भ त ब्रूहि कतम स्विदेवस॥
अथर्व १०-२३॥

अर्थात् उस (स्कम्भम्) सर्व जगत को धारण करने वाले परमेश्वर को वेदो का कर्त्ता जानो। ऐसे वेद तथा मनुस्मृति आदि मे अनेको प्रमाण हैं। हम शत पथ ब्राह्मण का एक प्रमाण और भी लेते हैं— महर्षि याज्ञवल्क्य अपनी पण्डिता पत्नी मैत्रेयी को बता रहे हैं—एव वाअरे अस्य महतो भूतस्य नि श्वसितमेतद ऋग्वेदो यजुर्वेद सामवेदाऽथर्वाङ्गिरसे शत० का० १४ अ० ५)

अर्थात् हे मैत्रयी। जो आकाशादि से बडा सब व्यापक परमेश्वर है उसी से ऋग, यजु० साम और अथर्व ये चारो वेद उत्पन्न हुए हैं। जैसे मनुष्य के शरीर से श्वास बाहर आता है, वैसे सृष्टि के प्रारभ मे वेद ईश्वर से प्रकट होते है और जैसे श्वास अन्दर को जाता है, वैसे ये प्रलय काल मे ईश्वर के ज्ञान के अन्दर विद्यमान रहते है। इनका नाश कभी नही होता।

अब कुछ शकाओ का समाधान कर देना भी उचित है—

(१) निराकार ईश्वर से शब्द रूप वेद कैसे उत्प[illegible]?

समाधान सब शक्तिमान ईश्वर बिना मुख प्राण के भी उनका कार्य कर सकता है। जैसे मन मे विचार के समय मुखादि की आवश्यकता नहीं होती है। अनन्त सामर्थ्य-वान ईश्वर अद्भुत महान सृष्टि की रचना निराकार होते हुए भी करने मे पूर्ण समर्थ है वैसे ही वेद ज्ञान प्रदान मे भी वह निराकार होकर भी समर्थ है।

(२) ससार की उत्पत्ति मे जीव समर्थ नही है पर व्याकरणादि की भाति वेद भी बना सकता है।

समाधान —जैसे मनुष्य मकान, सडक, पुल, नहर, रेल, जहाज, रोकेट आदि ईश्वर की सृष्टि से पदार्थ लेकर ही बना सकता है वैसे ही ईश्वर के दिए वेद ज्ञान के बाद ही अपना ज्ञान विस्तृत कर पुस्तके भी बना सका है। अन्यथा नही।

अगर किसी बालक को एकान्त मे रखकर पाला जाय और उससे बातचीत न किया जाय तो उसे मरण पर्यन्त मनुष्यपने का ज्ञान भी नही हो। अभी भी बिना सिखाये कोई कुछ नही जानता जैसे कि जगली मनुष्य कुछ भी उन्नति नही कर पाता है। वेदोपदेश के बिना मनुष्य पशुवत ही रहता, ग्रन्थ रचना की बात ही क्या? जैसे भेडिये के पास का बालक देखा जा सकता है।

(३) स्वाभाविक ज्ञान से मनुष्यो ने विकास कर वेद बनाये।

समाधान —उपरोक्त बालक और वनवासी जैसे स्वाभाविक ज्ञान कुछ भी उन्नति नही कर पाते हैं वैसे ही स्वाभाविक ज्ञान, वेदादि को समझने मे मात्र सहायक होता है उससे ज्ञान बढाकर मनुष्य अपना विकास कर सकता है। जैसे अभी भी विद्वानो को शिक्षा वद या विद्वानो के ग्रन्थो को पढे बिना कोई भी विद्वान नही हो सकता है।

ईश्वर सब विद्यायुक्त है अत वेद भी सब सत्य विद्याओ से युक्त ग्रन्थ हैं।

वेद मे भ्राति कारण-कुरान, पुरान बाइबिल, जैन, बौद्ध, चार्वाक आदि की बातो का प्रचार ईश्वरीय ज्ञान के रूप मे हो जाने तथा इनका सृष्टि क्रम युक्त प्रमाण तथा विज्ञान से विरोध होने तथा सायण रावण, महीधर, उव्वट, स्कन्द स्वामी, मैक्स मूलर आदि के गलत वेद भाष्यो से इनका विज्ञान युक्ति और सच्चाई से विरोध होने के कारण, तथाकथित मजहबो को धर्म मानने तथा वेद, धर्म और ईश्वर के नाम पर एव परलोक आदि के नाम पर ठगी प्रारम्भ होने के कारण तथा वेद विरुद्ध वेद के नाम पर प्रचार हो जाने के कारण, वैज्ञानिक आदि इन बातो को गलत मानने लगे पर, जिन्होने भी सच्चे वेद भाष्य को जो कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पूर्ण प्रमाण सहित किया है देखा उन्ही की भ्राति वेद पर से हट गयी और वही वेद की श्रेष्ठता और महत्ता का पूर्ण कायल हो गया।

जैसा कि महर्षि अरविन्द ने भी लिखा है—स्वामी दयानन्द ने वेद भाष्य कुजी दे दी है।

मैक्स मूलर ने कट्टर ईसाई होने के कारण सन् १८६६ ई० मे वेद के सबध मे लिखा है—

यानी 'वैदिक सूत्रो की एक बडी सख्या बचकाना कठिन, अधम और साधारण है।"

वह तो उसे चरवाहे का गीत तक मानता था। मैक्समूलर ने १८६८ ई० मे भारत के सचिव ड्यूक आफ आरगाइल' को पत्र लिखा था—

यानी भारत का प्राचीन धर्म नष्ट प्राय है। और यदि ईसाई धर्म उसका स्थान नही लेता तो यह किसका दोष होगा?

वही मैक्स मूलर स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य और ग्रन्थो को देखकर "भारत हमे क्या सिखा सकता है।' नामक पुस्तक मे लिखता है—

यानी मानव मस्तिष्क का जैसा भी वातावरण अपने स्वाध्याय के लिए उसे चुनना चाहिए—वह चाहे धर्म हो या फिलोसफी (विज्ञान) साइस हो या कला, कानून हो या व्यवहार परमार्थ विद्या (ईश्वर) या देव पूजा तुम्हे भारत मे ही जाना चाहिए। क्योकि अत्यन्त मूल्य-वान पदार्थों मे से कुछ पदार्थ केवल भारत मे ही हैं। आगे वह कहता है—

यानी कठिनता से ही पठन-पाठन का महकमा कही होगा जिसने भारत के प्राचीन साहित्य से नया प्रकाश न लिया है।

इसी प्रकार वर्तमान समय मे भी कम से कम एक दर्जन इमाम अनेको पी एच डी तथा जमाइत इस्लाम के प्रधान आदि भी ऋषि दयानन्द सरस्वती के वेद भाष्य एव ग्रन्थो से प्रमाणित हो वेद प्रचार मे लग गये। अत हमे भी ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो एव उनके वेद भाष्यो को देखकर वेद शास्त्र की सत्यता और सार्वभौमिकता को स्वय जानना एव सब को जनाना चाहिए।

लेखक—बिन्देश्वरी कु० सिंह
आ० स० निदेशक
५०२, केन्द्रीय जल आयोग
सेवा भवन राम कृष्ण पुरम
नई दिल्ली-६६

हास्य विनोद

जैसा सवाल वैसा जवाब

बगाल के नवाब सिराजुद्दौला ने अपने हिन्दू दरबारियो से प्रश्न किया, "आप लोगो के पचाग मे ग्रहण तथा ज्योतिष सम्बधी बातें पहले से बता दी जाती है। पर भूकम्प के बारे मे आपका ज्योतिष क्यो चुप रहता है? बेचारे पण्डित कुछ उत्तर न दे सके। कृष्णा नगर के राजदरबार मे एक हसोड दरबारी गोपाल भाड रहता था। वे उसके पास गते और उससे जवाब देने को कहा। वह सिराजुद्दौला के दरबार मे हाजिर हुआ। वहा जब यही प्रश्न किया गया तो वह बोला, "हजूर हम हिन्दुओ के मुर्दे जलाये जाते है। हम हिन्दुओ की आत्मायें सीधी स्वर्ग तथा आकाश की ओर जाती है। वहा से वे अपने कुटुम्बियो को आकाश तथा नक्षत्र आदि की सब बातें बताती रहती है। खता मुआफ हो मुसलमानो के मुर्दे जमीन मे दफनाये जाते है। उनकी रूहे जमीन के भीतर जाती है और भूकम्प तो जमीन के भीतर से होता है इसलिए यह सवाल अपनी कौम वालो से पूछिये वहा की बातें वही बता सकते है।

नवाब लाजवाब हो गये।

हेवी इलैक्ट्रिकल्स आर्यसमाज को शोक

आर्यसमाज हेवी इलेक्ट्रीकल्स की एक सभा मे प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के दुखद निधन पर शोक प्रस्ताव पारित कर इन्दिरा गाधी की हत्या के बाद हो रहे जघन्य कृत्यो को समाप्त कर देश मे शातिपूर्ण स्थिति कायम करने की माग की गयी।

सभा ने दिवगत आत्मा की शाति के लिए दो मिनट का मौन धारण कर परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की।

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह मे

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी

कार्यक्रम

- शोभायात्रा
- वैदिक साहित्य का वितरण
- विभिन्न क्षेत्रो मे यज्ञ भजन और वेदोपदेश
- सार्वजनिक श्रद्धाजलि सभा

ओ३म्

आर्य सन्देश

हिन्दू सिख एक है।

विश्व मे जितने भी सिख हैं। व सदा से हिन्दू थे, हिन्दू है और हिन्दू रहेंगे भी। श्री गुरु गोविन्दसिंह का जन्म पटना मे २२ १२ १६६६ई० मे हुआ था। श्री गुरुगोविंद सिंहजी महाराज ने केश कघा,कड़ा कृपाण और कच्छ धारण कराकर हमे सबल बनाया इससे पूर्व के गुरुओ ने इन्हे रखने की प्रेरणा नही दी थी। यह किसी से छिपा नही है कि भारत मे पहले किस बेरहमी से हिन्दुओ और गुरुओ को विधर्मी बनाने के लिए विवश किया जाता था। विधर्मियो से लडने के लिए दसवें गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज ने दशमेश सेना का सगठन करके उन्हे पचाकरार से अभिसिक्त किया और कहा कि सवा लाख मे एक लडाऊ तब गोविन्दसिंह कहलाऊ।' पाच प्यारे भारत के विभिन्न जातियो के लोग थे। भाई दयाराम खत्री थे धमदास दिल्ली के जाट थे, भीकमचन्द द्वारका के धोबी थे हिम्मतराम जगन्नाथपुरी के कहार थे, और साहबचन्द बिन्दर के हज्जाम (नाई) थे। गुरु जी मुगल बादशाहो के साथ कई बार लडाई लड। सेना को सुसगठित शक्ति के लिए और मुगलो की शक्ति को दीक्षा करने के लिए वे जीवन पयन्त युद्धरत रहे। गुरुओ ने अपना जीवन सपरिवार हिन्दू हिन्दुस्तान धम और गोरक्षा मे उत्सग कर दिया। येहि देहु आज्ञा तुक को खपाऊ गोघात का दुःख जग से मिटाऊ।' सिख तो यह भूल रहे है कि परमात्मा को निरन्तर भजने वाले माला जपने वाले गुरु महाराज ने जब हिन्दुओ पर सकट तथा धमपतन देखा तो कृपाण को मालारूपी रक्षा कवच मान लिया। वे जीवन पयन्त लडकर भी दिल्ली के सिंहासन को विधर्मियो से मुक्त नही करा सके। दुश्मन हमारी फूट और कमजोरी को जानते थे। फलत उन्होने कई राजाओ को प्रलोभन देकर मिला लिया था। अपनी स्वाथ लोलुपतावश राजाओ ने गुरु जी को हिन्दू धम रक्षाथ याचना को ठुकरा दिया। फलत हमारा मध्यमवर्गीय और निम्नवर्गीय हिन्दू समाज विभाजित हो गया। सैकडो वर्षों की गुलामी के बाद जब हम स्वतन्त्र हुए तो आज सिख राष्टपति भी भारत के सिंहासन पर विराजमान हैं। क्या वे हिन्दू सिख सम्प्रदायवादी पाकिस्तान मे अफसर पद पर विराजमान हैं? आप नकारात्मक उत्तर देंग। भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान से हिन्दुओ और सिखो को चावल और गेहू आदि से ककड मिट्टी की तरह निकाल फेंका गया। असख्य नारियो ने अपनी इच्छा रक्षा के लिए डूबकर या आत्मदाह करके अपने प्राणो की बलि चढा दी। उन्होने हिन्दुओ के धन सम्पत्ति, इज्जत, जवान बेटे बेटियो तथा लोगो के प्राण छीन लिए। प्रथम गुरु श्री नानकदेव जी की जन्मभूमि ननकाना साहेब पजा साहेब और पजाब की राजधानी लाहौर थी। इसे विधर्मियो के हाथ से हम स्वतन्त्र नही कराते है। इसके विपरीत आज विधर्मियो के उकसाने पर उनका साथ देने के लिए भारतीय सिखो ने अपने ही हिन्दू भाइयो पर आघात करना प्रारम्भ कर दिया। सिख भाइयो! आप कहते हैं कि स्वण मदिर की पवित्रता बनाई रखी जाय। आप चाहते तो गुरुद्वारो की पवित्रता के लिए प्रारम्भ से ही उग्रवादियो को मदिर मे शरण (तरजीह) नही देते। पजाब मे चल रही हिंसा की आतकवाद के खिलाफ सिख एक गुट होकर आवाज उठाते। सैनिक प्रवेश से पवित्रता नष्ट नहीं हुई अपितु स्वण मदिर की पवित्रता और मदिर दोनो सुरक्षित रह गये। नही तो उग्रवादी स्वण मदिर को उडा देते। इदिरा जी ने स्वण मदिर बचा लिया पर इदिरा जी को नही बचने दिया। स्वण मदिर टूटे और बन भी गये। लेकिन हजारो लोग मिट गये। जिस मा की गोद खाली हो गई। जिस बहन की माग उजड गई। जिसके माता पिता भाई बहन पति पुत्र समाप्त हो गये क्या उन्हे अब प्राप्त हो सकते हैं? देश के अन्दर ये शमनाक काण्ड से देश कमजोर होगा। दुश्मन आप पर हावी होगें और आप सभी गुलाम हो जायेंगे। यह खूनकी होली बन्द भाई चारा, प्रेम शाति स्थापित करें और देश की एकता अखण्डता को बनाये रखें। खालिस्तान समथक उग्रवादियो के विरुद्ध देश के सभी सिख एक होकर आवाज बुलन्द करें। इसी मे देश और देशवासियो का भला है। अब सिख भाई गुरुओ की वाणी औरकुर्बानी को भूलते जा रहे हैं। हम अब उनकी वाणी पर नही चलते। श्रीराम को हिन्दू भी और सिख भी मानते हैं। फिर फक क्या है? गुरु ग्रन्थ साहब मे तो अनेको जगह राम के नाम तथा ब्रह्मा विष्णु महेश आदि के नाम आये हो हैं। गुरु जी ने भी कहा कि श्रीराम गुण गाओ।' श्रीराम बोलन वाले सभी गुरु के शिष्य हैं। सिफ केश दाढी रखने वाले ही शिष्य हैं ऐसी बात नही। कही भी हिन्दू सम्मेलन होता है तो गुरुओ के नाम पर द्वार सज्जा दी जाती है। गुरुओ के चित्र और जीवनवृत प्रदर्शित किये जाते हैं तथा उनके अनुकरण करने की प्रेरणा दी जाती है श्री गुरु गोविन्दसिंह के दोनो पुत्र धरे हिन्द बनकर हसते-हसते सरहिन्द की दीवारो मे चुन दिये गये। मगर विधर्मी नही बने। गुरु तेगबहादुर ने दिल्ली मे शीश कटा दिया। लेकिन हिन्दू धम की रक्षा से मुह नही मोडा और न विधर्मी बने। ऐसे ही अनेको जान कुर्बानिया देकर नर नारियो ने अपनी जीवन गाथा अमर कर ली। २६ सितम्बर १९८१ और जुलाई १९८४ मे तीन बार भारतीय वायुयानो का अपहरण कर लाहौर ले जाया गया तथा अपहरण कर्त्ताओ को शस्त्र दिये गये। पाकिस्तान के उग्रवादियो को सैन्य शिक्षा दी गई। पाकिस्तान के मुसलमान गुरुमुखी जानते हैं। उन्होने अपने केश दाढी बढाये और पजाब मे घुसपैठ किया। सिखो से दोस्ती कर उन्हें गुमराह किया।

यही नीति है 'फूट डालो राज करो' की। मदिरो गुरुद्वारो मे गा काट कर फेंकना गुरुग्रन्थ रामायण गीता आदि को जलाना या पवित्र स्थलो को विनष्ट करना इत्यादि सच्चे सिख कभी नही कर सकते। सत्ता की इस क्रूर मार मे सकडो नर नारियो बच्चे व्यवसायी अफसर सेना, आदि मारे गये। ऐसा करने से किसकी क्षति हुई? सम्पत्ति लुटे गये दुकानो मे आग लगायी गई। उग्रवादी सिखो ने खुद सिखा को मारा। ये सब क्यो हुए? अन्तत पाकिस्तानी सिखो के भेष मे पकड गये। पाकिस्तानी शास्त्रस्त्र बराद हुए क्या इन सब बातो से भी भारतीय सिखो और अलगाववादियो की आखें नहीं खुली जिस दिन पजाब भारत से अलग हो जायेगा। ठीक उसके बाद वह पाकिस्तान का अग बन जाएगा। उसके साथ साथ कश्मीर भी। यह भारत तो सिख भाइयो का है। बुलन्दी से सिर उठाकर गुरुओ की वाणी का प्रचार कर और अखिल भारत को पुन अखण्ड बनाकर गुरु के सपनो को साकार करें।

लेखक क्रातिकारी सूर विश्वम्भर आर्य
समस्तीपुर (बिहार)

मैं आधुनिक भारत के महान पथ प्रदशक स्वामी दयानन्द के प्रति श्रद्धाजलि प्रस्तुत करता हू जिन्होने मत मतान्तरो और अनुष्ठानो के बीहड जगल मे से जिसमें देश के पतन के काल मे गहरी घास उग आयी थी माग को परिष्कृत किया ताकि हिन्दू लोग परमात्मा के प्रति निष्ठा और मानव सेवा का सादर और विवेकपूण जीवन व्यतीत कर सक।

—रवीन्द्र नाथ ठाकुर

राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय नवजागरण और महर्षि दयानन्द

—श्री रामगोपाल जी शालवाले

यह कहने मे हमे सकोच नही है कि इस समय राजनैतिक दल धर्म निरपेक्षता की आड मे भारत के बहुमत की पग-पग पर अवहेलना कर रहे है। इन सबका मुकाबला करने के लिए आर्य समाज को हिन्दू जाति का एक प्रचण्ड सगठन खडा करके ईसाई,मुसलमान और सिक्खो, के अलगाववाद के नारे का देश भर मे सक्रिय विरोध करते हुए जन आन्दोलन चलाना चाहिए।

ससार के इतिहास मे प्राय देखा जाता है कि समय समय पर मानव-जाति को उठाने के लिए कुछ विशेष आत्माए इस धरती पर अवतीर्ण होती हैं। सृष्टि की उत्पत्ति एक अरब सत्तानवे करोड वर्ष पुरानी हो चुकी है। महापुरुषो की लम्बी सूची मे अनेक पराक्रमी व चक्रवर्ती राजा-महाराजा, ऋषि मुनि, बडे-बडे योद्धा एव उच्च कोटि के महा-मानव इस धरती पर पैदा हुए और अपना-अपना काम करके उसकी छाप ससार पर छोड गए।

ससार की राजनीति मे सबसे पहले सम्राट् वैवस्वत मनु हुए, उन्होने राज्य-प्रणाली का आविष्कार किया और वेद के आधार पर उस समय की जनता को अपने-अपने कर्त्तव्य के पालन की ओर अग्रसर किया। इसी प्रकार सदिया बीतती गई और बडे-बडे महापुरुष अपना अपना काम करते चले गए, किन्तु इतिहास मे उनकी अमर गाथाए आज भी सुरक्षित है।

आर्यभूमि भारत मे लगभग ५ हजार वर्ष पूव महाभारत के युद्ध के पश्चात् बडे-बडे राजाओ और महाराजाओ का ह्रास हुआ और वैदिक धर्म का लोप होने लगा। महाभारत के पश्चात् भारत मे धर्म का जो ह्रास हुआ, उसका दिग्दर्शन इतिहास के पृष्ठो मे भी देखा जा सकता है। राजनीतिक गिरावट के साथ-साथ धार्मिक गिरावट भी इस देश मे आई और वैदिक धर्म अनेक रूपो मे बट गया। वाममार्ग का उदय हुआ और वाममार्ग के कारण जैन और बौद्ध धर्म ने जन्म लिया। हिन्दू समाज वैष्णव तथा शाक्त आदि अनेक सम्प्रदायो मे विभक्त हो गया, जिसके परिणाम स्वरूप अनीश्वरवाद का प्रादुर्भाव हुआ।

जैन और बौद्ध धम के प्रचार का सामना करने के लिए शकराचाय भारतीय मच पर उभरे और इन नास्तिक मतो का मुकाबला करने के लिए उन्होने अद्वैत ब्रह्म का प्रतिपादन किया। जहा नास्तिक लोग प्रकृति की उपासना करते थे और ईश्वर की स्तुति व सत्ता से इन्कार करते थे, वही आचाय शकर ने प्रकृति का खडन कर एक ईश्वरवाद [illegible] उन्होने ईश्वर, जीव और प्रकृति के अनादि सिद्धात का प्रतिपादन किया और धम के नाम पर मूर्त्तिपूजा, अवतारवाद, मृतक-श्राद्ध, छूत छात आदि का घोर विरोध किया कि धर्म के ह्रास के कारण राज्य का भी ह्रास हो गया है। इसलिए उन्होने इस देश की राजनीतिक परिस्थितियो को सुधारने का काम किया, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दू जाति मे राज-नीतिक और धार्मिक चेतना पैदा हुई।

सन् १८५७ ई० मे महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की। अपने अमर ग्रथ सत्याथ प्रकाश' में खुले रूप मे अपने देश मे अपने राज्य का समथन किया और विदेशी राज्य की बुराइयो पर खुले रूप से अपने विचार जनता के सामने रखे।

सन् १८८५ मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एक अग्रेज मि० ह्यूम ने की, किन्तु उस समय कांग्रेस के सामने पूर्ण स्वतन्त्रता का कोई लक्ष्य नही था, बल्कि लक्ष्य यही था कि जिलाधीश और पुलिस अधिकारी भारतीय हो। इसी आधार पर मि० ह्यूम ने तत्कालीन शासको से विचार-विमर्श किया। किन्तु इससे १० वष पूर्व ही महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना करके पूर्ण स्वतन्त्रता की माग कर दी थी, जिसे ४६ वष पश्चात् कांग्रेस ने लाहौर-अधिवेशन मे प० जवाहरलाल की अध्यक्षता मे स्वीकार किया था।

स्वामी दयानन्द ने १८७२ ई० मे कलकत्ता के प्रमोद कानन मे बैठकर तत्कालीन वायसराय मि० लाड नार्थब्रुक के साथ जो भेट की थी, उसमे वायसराय महोदय ने महर्षि दयानन्द से कहा था—"स्वामी जी! आप ईसाई, मुसलमान, पौराणिक व जैन आदि धर्मों का खण्डन करते हैं, आपकी जान को कोई खतरा तो नही है? अन्यथा आपकी सुरक्षा का प्रबन्ध कर दिया जाएगा।" महर्षि दयानन्द ने जवाब दिया था—"नहीं महोदय, आपके शासन में मेरे धर्मप्रचार मे किसी प्रकार का खतरा नही है। मुझे सर्वशक्तिमान् ईश्वर पर विश्वास है, वही मेरा सरक्षक है।" इस पर वायसराय ने बडे गम्भीर भाव से कहा—"महाराज! यदि हमारा राज इतना अच्छा है तो आप जब उपदेश करते हैं तो परमात्मा से प्रार्थना कर दिया करे कि अग्रेजो का राज बहुत दिनो तक चलता रहे।' वायसराय की यह बात सुनकर महर्षि दयानन्द का चेहरा ताम्बे की तरह लाल हो गया। उन्होने कहा—"अग्रेज सरकार बहुत दिन तक चले, ऐसी प्राथना मैं नही कर सकता। मैं तो भगवान् से यही प्राथना करता हू कि वह कैसा अच्छा दिन होगा जब अग्रेज भारत छोडकर चले जाएगे।" इस मुलाकात के बाद ही अग्रेज सरकार का रवैया स्वामी दयानन्द के प्रति बहुत कठोर हो गया और उनके पीछे सी० आई० डी० लगा दिए गए एव उन्हे मरवाने के षड्यन्त्र किए जाने लगे।

जोधपुर मे डा० अली मर्दान खा, जिसने महर्षि का इलाज अन्तिम समय मे किया था, वह भी अग्रेजो का पिट्ठू था। राष्ट्रीय और धार्मिक चेतना के अग्रदूत महर्षि दयानन्द ने अजमेर मे आज से ठीक १०१ वर्ष पूर्व दीपावली के दिन इस ससार को सदैव के लिए त्याग दिया।

३ नवम्बर से ६ नवम्बर, ८३ तक हमने युगपुरुष महर्षि दयानन्द का निर्वाण शताब्दी-समारोह सोत्साह मनाया था लोग पूछते हैं, आयसमाज का जनता को क्या कार्यक्रम देना चाहिए। मेरा कहना है कि महर्षि दयानन्द ने आयसमाज के दस नियम बनाकर धर्म के सिद्धात का जो स्वरूप हमारे सामने रखा है, वह इतना पूर्ण है कि उससे बाहर कोई चिन्तन की चीज ही नही रह जाती।

मैं आर्य बन्धुओ से इतना ही कहना चाहता हू कि वे आपसी झगडे मन मुटाव को दूर करें, यही, आयसमाज की प्रगति मे रोडा है। हमे एक-दूसरे पर विश्वास करके समझने का प्रयास करना चाहिए। यज्ञो के माध्यम से हम धार्मिक वृत्ति का प्रचार करें, घर-घर मे वैदिक ज्योति जगाए और इसका प्रचार-प्रसार करें।

नया जन आन्दोलन अपेक्षित

३७ वर्ष की राजनीतिक स्वतन्त्रता का सिंहावलोकन करते हुए यह कहने मे हमे सकोच नही है कि इस समय राजनीतिक दल धम निरपेक्षता की आड म भारत के बहुमत की पग-पग पर अवहेलना कर रहे हैं। इन सबका मुकाबला करने के लिए आय-समाज को हिन्दू जाति का एक प्रचण्ड सगठन खडा करके ईसाई, मुसलमान और सिक्खो के अलगाववाद के नारे का देश भर मे सक्रिय विरोध करते हुए हुए जन-आन्दोलन चलाना चाहिए। आज चुपचाप होकर काम करने का अवसर नहीं है, अपितु प्रचार की भी बडी आवश्यकता है। आय बन्धु इस दिशा म भी सदैव जागरूक रहे।

प्रधान—सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

दक्षिण पूर्व एशिया की सांस्कृतिक तीर्थ यात्रा

दक्षिण पूर्व एशिया की जो सास्कृतिक तीर्थ यात्रा श्रीमती इन्दिरा गाधी के निधन के फलस्वरूप स्थगित कर दी गयी थी उसकी तिथिया अब २ फरवरी १९८५ से १६ फरवरी १९८५ कर दी गयी है।

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें —

श्री अशोक त्रिखा, टेवल ट्रस्ट, बी-+24 निजामुद्दीन ईस्ट, नयी दिल्ली—13 (दूरभाष-980216)

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज शान्ति नगर, सोनीपत, (हरियाणा) की प्रबन्धक समिति का गठन निम्न प्रकार हुआ - श्री वैद्य जयकृष्ण दास (सरक्षक), श्री रामलाल मदान (प्रधान), श्री हरिचन्द स्नेही (मत्री), श्री मेहरचन्द, कोषाध्यक्ष

श्री धर्मदेव चक्रवर्ती, 10 माडलबस्ती दिल्ली, 5 ने सुझाव दिया है कि आर्य सन्देश साप्ताहिक पत्र मे कुछ परिवतन किये जाय। जैसे उपदेशको की लम्बी सूची न प्रकाशित की जाय साथ ही साथ आपने यह भी बताया कि महिलाओ, शिशुओ, ज्ञान विज्ञान, थोडी राजनीति तथा महापुरुषो की जीवन गाथाये नियमित रूप से छपनी चाहिए। जिससे कि आर्य सदेश पत्रिका का स्तर सुधारा जा सके। आर्य सन्देश के सम्पादक मण्डल ने उनके सुझावो को स्वीकार करके तदनुरूप पत्र का सम्पादन कार्य प्रारम्भ कर दिया है।

राम जन्म भूमि के मुक्ति हेतु प्रकाशवीर शास्त्री के प्रयास

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

उन दिनो भारत के प्रधानम त्री श्री जवाहरलाल नेहरू व भारत सरकार न देश मे साम्प्रदायिक तनाव के कारणो को दूर करने तथा हिन्दू मुसलमाना मे साम्प्रदायिक सदभाव उपन्न करने की योजना के नाम पर यह निश्चय किया था कि जो मस्जिदें हिन्दुओ के अधिकार मे हैं वह हिन्दुओ से लेकर मुसलमाना को दे दी जाय।

सन १९४७ मे पाकिस्तान बन जाने पर जिन स्थाना के मुसलमान उधर चले गये थ वहा की मस्जिद बकार हो गयी थी। पाकिस्तान से बघर होकर लाखो की सख्या म हिन्दू इधर भारत मे आये थे इन्होने जहा जहा पाकिस्तान गये हुए मुसलमानो के मकान रिक्त पड देखे वह उ ही मकानो मे रहने लगे। जिन स्थानो तथा जिन नगरो के जिन क्ष त्रो के सभी मुसलमान पाकिस्तान भाग गये थे वहा की मस्जिद बकार पडी थी। पाकिस्तान से आने वाल शरणार्थी बन्धुओ ने ऐसी मस्जिदो मे भी रहना प्रारम्भ कर दिया था।

भारत सरकार की योजना उन्ही मस्जिदो को मुसलमानो को देने की बनी थी। मुसलमानो ने यद्यपि ऐसी कोई माग नही की थी। न तो ससद मे और न ससद से बाहर ऐसी कोई आवाज सुनाई दी थी। सुनायी देती भी तो कहा से और क्या सुनायी देता जिन मस्जिदो म पाकिस्तान से आये हुए हिन्दू शरणार्थी बसे हुए थे उन क्ष त्रो मे कोई मुसलमान था ही नही तो वहा कौन नमाज पढने जाता तथा किस प्रकार उन मस्जिदो के लिए आवाज उठती ?

वास्तव मे बात यह है कि स्वत त्र भारत मे प्रथम बार उन दिनो भारत सरकार के गाधीवाद मे धम निरपेक्षता का उबाल आ रहा था और उस समय के भारत सरकार के प्रमुख श्री जवाहरलाल नेहरू ने मुसलमानो को मस्जिद सौंपने की योजना बनाकर उस उबाल को प्रकट किया। वह मस्जिद रिक्त करायी गयी। उन बर्बाद होकर आए भारत भक्त हिन्दुओ को एक बार फिर शरणार्थी बना दया गया और इस प्रकार बापू के लाडलो ने अपने पूज्य बापू के सत्य अहिंसा मन्त्र की जाने या अनजाने मे हत्या कर दी।

मस्जिद रिक्त करायी गयी और मुसलमान सगठनो को आह्वान किया गया कि वह उन्हे सम्भाल। पता नही कहा कहा से मुल्ला लोग लाकर उन मस्जिदा मे अजान देने और नमाज पढने के लिए बठा दिय गय। उनमे मे से बहुत सी मस्जिदो को तो बर्षों तक मुल्ला उपलब्ध नही हो सके।

ससद-केसरी स्व पण्डित प्रकाश वीर जी शास्त्री उन दिनो लोक सभा के सदस्य थे। १९६१ की श्री कृष्ण ज म अष्टमी के अवसर पर उन्होने लोक सभा मे यह प्रश्न एक प्रस्ताव के रूप मे उठाया उन्होने अपने प्रस्ताव मे कहा था कि मैं भारत सरकार की इस भावना स सहमत हू कि देश मे साम्प्रदायिकता के विषय को समाप्त करने के लिए विभि न मतो के नागरिको मे पारस्परिक सदभाव उत्पन्न करना आवश्यक है इस सिलसिले मे पाकिस्तान बनने पर बहुत से मुसलमानो के उधर चले जाने के कारण बकार पडी जिन मस्जिदो मे पाकिस्तान से आये हुए शरणार्थी बस गये थे भारत सरकार ने उन मस्जिदो को मुसलमानो को सौंपने की जो योजना बनायी है उसी के सन्दभ मे मेरा यह कहना है कि साम्प्रदायिक तनाव का कोई भी चिन्ह शेष नही छोडा जाना चाहिए। इसीलिए मेरा यह प्रस्ताव है कि श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर योगीराज श्रीकृष्ण के जन्म स्थान मथरा मे श्रीकृष्ण ज म

मन्दिर का तुडवाकर मुगल सम्राट औरगजेब द्वारा बनवायी गयी मस्जिद हिंदुओ को दिला दी ज य तथा साथ ही विदिशा (मध्य प्रदेश) का विजय मन्दिर राम जन्म स्थान अयोध्या की ब बरी मस्जिद विश्वनाथ महादेव काशी के मन्दिर का जो भाग मुसलमानो के अधिकार मे हैं वह और सम्भल जिला मुरादाबाद का हरिहर महादेव का मन्दिर भी जो मस्जिद बना हुआ है हिन्दुओ को दिला दिया जाय।

उससे ठीक अगले दिन आय समाज दीवान हाल दिल्ली की उस महती सभा मे जो श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य मे आयोजित की गयी थी श्री शास्त्री जी ने अपने भाषण मे लोक सभा के अपने उक्त प्रस्ताव की चर्चा करते हुए कहा था कि मैं यह जानता था कि लोक सभा मे मेरे इस प्रस्ताव पर विचार भी नही होगा कि तु फिर भी मैंने इस प्रस्ताव को रखा था तो इसलिए कि इसकी चर्चा लोक सभा की फाइल मे आ जायेगी जो एक दस्तावेज के रूप मे सुरक्षित रहेगी और भविष्य में भारत की भावी सन्ततियो को प्रेरणा का कारण बनेगी तथा उन्हे यह स्मरण करायगी कि यह भावना अतीत मे भी कभी मरी नही थी।

अब सन १९८४ मे ठीक २३ वष बाद हम कृष्ण भक्त राष्ट्रवादियो से कहना चाहते है कि प्रत्येक वष श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मनाने वाले क्या आप लोग ससद केसरी स्वर्गीय श्री पण्डित प्रकाश वीर शास्त्री के उन उदगारो से सहमत हैं जो उन्होने १९६१ की श्री कृष्ण ज माष्टमी के अवसर लोक सभा मे प्रकट किय थे और क्या उन भावनाओ का मूल्याकन कर आप उनकी रक्षा के लिए तयार हैं जो उ होने उस सभा मे व्यक्त की थी। यदि हा तो सगठित होकर इसके लिए प्रयत्न कीजिए यदि प्रयत्न किया गया तो सफलता आपके पास होगी आने वाले ससद के निर्वाचन से पहल ही इस आवाज को उठाइय।

अध्यक्ष वैदिक सस्थान नजीबाबाद उत्तर प्रदेश

स्वार्थी पच

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती अधिष्ठाता वेद प्रचार

[काव्यमय दृष्टान्त]

कुछ श्वान इकटठ हुए जहा पर सघन वक्ष का थी छाया।
मिल करके एक पचायत की जो हुआ फसला समझाया।
वृद्धा काल थे पच बड प्रधान बने पचायत कर।
प्रस्ताव पास यह कर दीना बात य प्रम सहित कर कर।।

बोल मनिये अय ! जाति ब धु ! तुम बाज न आये हरकत से।
हद मे न तुम्हारी पग धरता है कोई भाई दहशत से।।
तुम लडते रहते आपस मे बदनाम नाम है श्वानो का
अब लडो नही आदर करिये अपने आये मेहमानो का।।

एक तो जमाना बहुत बुरा मुश्किल है नही पेट भरता।
महगाई भी जोरो पर है अब दिल भी धीर नही धरता।।
घर घर दुत्कारे जाते हैं कुत्ता कूकर कह कह बोल।
कुछ भाई बड भाग्यशाली जो बठ कारो मे डोल।

बूढा बोला जाति बन्धुओ अब लडना परस्पर करो बन्द।
जो करे उल्लघन उसका भी दे दण्ड करो मिलकर प्रबन्ध।
हो गया पास प्रस्ताव सभी ने पचो का माना कहना।
भाई भाई सब लड नही आपस म मिल जुल कर रहना।

उस वक्ष के ऊपर एक चील उडकर दूरी से आइ थी।
एक म म का टकडा लगा चोच मे उठा कही स लाई थी।
था वजन अधिक उस टुकड मे था रखा चाच मे दाब सिरा।
गया छूट चोच से अकस्मात पचो के बीच मे आन गिरा

देखा जो बीच मास पडा तो मुह म पानी भर आया।
झट कालू उस पर टूट पडा बूढा भी आगे को धाया।
हो गयी भग पचायत सब होने लागी छीना झपटी।
क्या कर सभासद बचारे जब पच होय छलिया कपटी।।

ऐसे ही पच स्वार्थी जो स्वाथ हित टूट-टूट पडते।
अपनी ही उदरपूर्ति का मित्रो के साथ लड रहत।।
यह स्वाथ सगठन की रस्सी का पल मे तोड फाड देत
कहे स्वरूपानन्द स्वार्थी पल मे प्रम तोड देते।।

दिल्ली आर्य वीर दल की बठक

आय वीर दल दिल्ली प्रदेश का एक अत्यावश्यक बठक दिनाक २ दिसम्बर १९८४ रविवार को प्रात ११ बजे आयसमाज चूना मण्डी पहाडगज नई दिल्ली ५५ मे होगा। सभी आय बन्धुओ से विनम्र अनुरोध है कि समय पर पधार कर आय वीरो का उत्साह बढाय। प्रत्यक आयसमाक के प्रधान तथा मन्त्रियो से विशेष प्राथना है कि निश्चित समय पर अवश्य पधारें तथा अपनी आयसमाज से कम से कम दो आय वीरो को साथ लाय।

हैदराबाद सत्याग्रह

भारतीय स्वाधीनता सम्मान योजना गृहमन्त्रालय की शिफारिश

—ब्रह्मदत्त स्नातक

सन् १९७२ मे स्वतन्त्रता रजत जयन्ती के अवसर पर केन्द्रीय सरकार ने स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन का श्रीगणेश किया। यह ५००० रुपए वार्षिक आय से कम वालो को ६ मास का कारावास, भूमिगत नजरबन्द (भारत की भूमि मे होने पर) या सम्पत्ति जब्त होने आदोलन के दौरान अपग होने अथवा रोजगार के स्रोत समाप्त हो जाने पर मिलती थी। आजादी के पूर्व की रियासतों मे प्रजातन्त्री अधिकारो तथा भारत मे विलय के प्रश्न पर पीडितो को भी इसमे शामिल किया गया था। बाद मे १९८० में ५००० रुपए की सीमा हटाकर अन्य रियायते भी दिया जाना शुरू करके उसका नाम सेनानी पेंशन की बजाय स्वाधीनता सेनानी योजना १९८० कर दिया गया। इस दिशा मे आवश्यक प्रशासनिक एव वित्ताय कदम केन्द्रीय सरकार ने उठाये। भारत म विलय के प्रश्न पर पीडितो को भी इसमे भी शामिल किया गया था। बाद मे १९८० मे ५००० की सीमा हटाकर अन्य रियायतें भी दिया जाना भी शुरू करके उसका नाम स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन की बजाय स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना १९८० कर दिया गया, इस दिशा मे आवश्यक प्रशासनिक एव वित्तीय कदम केन्द्रीय सरकार ने उठाए। भारत सरकार ने इस काम को करने के लिए गृहमन्त्रालय के अन्तर्गत गृहमन्त्री और राज्य के गृहमन्त्रियो के अतिरिक्त आठ ससद सदस्यो की एक समिति गठित की। इससे पहले यह नही बनी थी। गत वर्ष तक इसकी ६ बैठको मे स्वीकृत अनेक सुझावो को सरकार ने माना है। भूतपूर्व ससद सदस्यो को यह सम्मान पेंशन अतिरिक्त दी जाती है। वर्तमान मे केन्द्र सरकार इन सम्मानितो को ३००) और इनकी विधवा पत्नी को २००) मासिक देती है।

१९७२ की ताम्रपत्र देने की योजना १९७६ मे बन्द कर दी गयी। परन्तु १९८० मे वह पुन जारी कर दी गई और केन्द्रीय सरकार के अनुरोध पर उनको नि शुल्क चिकित्सा, यात्रा आदि की सुविधा भी बहुत सी राज्य सरकारें दे रही हैं। पेंशन की सीमा मे जो राज्य सरकारो के द्वारा दी जाती है, भिन्न-भिन्न है। १००-१५० के बीच। इस सम्बन्ध मे धार्मिक आन्दोलन मानकर आर्यसमाज ने सामूहिक रूप से हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १९३९ के पीडितो के लिए कोई माग नहीं की। भूतपूर्व निजाम रियासत के अधिकाश आयसमाजी पीडितो ने व्यक्तिगत रूप मे आध्रप्रदेश कर्नाटक और महाराष्ट्र राज्यो के काग्रसी नेताओ के प्रमाण पत्रो, जेल तथा यातनाओ के प्रमाण स्वरूप १९७२ की योजनाओ के तहत यह लाभ उठाया है। शेष भारत मे भी कुछ लोगो को आर्यसमाज नाम के छोड देने पर पेंशन मिली है। खेद यही है कि आज तक इस सम्बन्ध मे समवेत रूप मे कोई प्रयत्न नही हुआ है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा क वतमान प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने गत वर्ष २० नवम्बर को तत्कालीन प्रधानमन्त्री स्व श्रीमती इन्दिरा गाधी को एक विस्तृत पत्र लिखकर ध्यान खीचा। जिस पर गृहमन्त्रालय ने हैदराबाद आर्यसमाज के १९३९ के सत्याग्रह को इस योजना के अन्तगत अस्वीकार कर दिया।

इन पक्तियो के लेखक ने भारत सरकार की सेवा मे प्रविष्ट होते समय १९५३ म स्पष्ट रूप से सघ लोकसेवा आयोग को लिख दिया था कि हैदराबाद आर्यसत्याग्रह मे लगभग ६ माह वह जेल मे रहा था। जब १९७२ की योजना स्वतन्त्रता सेनानियो के लिए निकली तब उसने १९७४ में ताम्रपत्र पाने (वेतन ५००० वार्षिक से ज्यादा था) और इस श्रेणी के सरकारी कर्मचारियो के लिए दी जाने वाली रियायतो के लिए न्याय पूर्वक माग की परन्तु कुछ नही बना। सरकार का उत्तर था कि उक्त आदोलन को सरकार ने स्वतन्त्रता आदोलन का अश अभी तक नही माना है। इस सम्बन्ध मे तत्कालीन मूचनामन्त्री को इसम पूर्व भी जो आवेदन दिए गये थे और गृहमन्त्रालय से उनका उत्तर नकारात्मक मिला। मेरे इस मामले के बारे मे सार्वदेशिक सभा के भू पू प्रधान एव भू पू ससद सदस्य और मेरे जेल के सहयात्री श्री नरदेव स्नातक ने सबधित मन्त्रियो को पत्र लिख और आर्यसमाज आदोलन के दूरगामी राष्ट्रीय प्रभाव का उल्लेख किया परन्तु सरकार ने कुछ नही माना। जनता गवनमेन्ट के गृहमन्त्री चौ चरणसिंह से आवेदन करने पर पर भी परिणाम शून्य रहा।

अन्त मे मैंने २८-१३-८३ को स्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी को अन्तिम पत्र डाक द्वारा व्यक्तिगत सबोधन के साथ लिखा जिसमें सरकार के पिछले निर्णयो की असफलता और पुनर्विचार के लिए लिखा गया। उन्होने वह पत्र गृह मन्त्रालय को आवश्यक कार्यवाही के लिए भेज दिया। उधर मैंने अखिल भारतीय स्वाधीनता सेनानी सगठन को विशद नोट और परिशिष्टो के साथ भेजने के अलावा इस सम्बन्ध मे हिंदी-अंग्रेजी पत्रो मे आवाज उठाई और सगठन के सदस्यो के साथ बैठकें की।

आर्यसमाजी जनता को यह जानकर हर्ष होगा कि गृहमन्त्रालय की सम्बन्धित सलाहकार समिति ने सर्वसम्मति से हैदराबाद के आर्यसमाज सत्याग्रह को स्वाधीनता सग्राम के रूप में स्वीकार कर लिया है और मन्त्रीमण्डल की मजूरी के लिए भेजने का निश्चय किया है।

आशा है कि स्व इन्दिरा गाधी के जीवनकाल मे जो निणय लिया गया है, उसे मन्त्रिमण्डल की भी स्वीकृति अवश्य प्राप्त होगी। सम्पन्न कराने के लिए उद्योग कर रहे हैं। एक युग के बाद उन स्वाधीनता सेनानियो और उनके वारिसो के लिए यह एक सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की अन्तरंग सभा की बैठक

सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने एक विज्ञप्ति द्वारा बताया कि आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की अन्तरग सभा की एक अत्यावश्यक बैठक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, केन्द्रीय के वार्षिक अधिवेशन तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के सम्बन्ध मे विचार करने हेतु शनिवार १ दिसम्बर १९८४ को साय ५-३० बजे आर्यसमाज मन्दिर, करोल बाग, नई दिल्ली मे सभा प्रधान श्री महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता मे होगी।

निर्वाण दिवस के अवसर पर विशेष लेख

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजीकृत) को आवश्यक बैठक

सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने एक विज्ञप्ति द्वारा बताया कि दिल्ली प्रदेश समस्त आर्यसमाजो, स्त्री समाजो, शिक्षण तथा अन्य सम्बद्ध सस्थाओ के अधिकारियो एव कार्यकर्ताओ की एक अत्यावश्यक बैठक महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के सम्बन्ध मे कार्यक्रम की अन्तिम रूपरेखा और धन सग्रह की योजना बनाने हेतु बृहस्पति २९ नवम्बर १९८४ को मध्यान्होतर ५-३० बजे आर्यसमाज मन्दिर, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली मे होगी।

कानपुर मे सिखो को मुसलमान होने से बचा लिया गया

कानपुर। हाल के हिंसक दगो मे यहा से काफी सिखो को आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने समय पर मुसलमान होने से बचा लिया। घटना इस प्रकार बतायी जाती है कि हिन्दू सिख के नाम से हुए सघर्ष मे नवाबगज छावनी क्षेत्रो मे काफी सिख भाइयो ने अपने परिवारो के साथ छावनी मे मुसलमनो के यहा शरण ली थी। सिखो के मन मे उस समय हिन्दुओ के विरुद्ध उत्तेजना भी थी। उस उत्तेजना को और भडकाया गया। और उन्हे परामश दिया गया कि वह मुसलमान हो जायें। इसके लिए वह तैयार हो गये। मस्जिद मे धर्म परिवर्तन का कार्य क्रम बनाया गया।

कर्फ्यू के बीच किसी ने केन्द्रीय आय सभा व जिलाआर्य प्रतिनिधि सभा कानपुर के अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य को फोन द्वारा सूचना दी। इस पर श्री आय ने तुरन्त ऐसे सिख भाइयो से सम्पर्क किया। और उनसे कहा कि धम सौदा बाजी की वस्तु नही हैं। काफी समझाने के बाद उनका क्रोध शात किया। श्री आर्य ने उनको आय मन्दिर मे रहने का आग्रह किया। इम पर इन सिख परिवारो ने मुसलमान होने का विचार बदल दिया और मौके पर पहुचने के लिये श्री आर्य का धन्यवाद किया व उनसे कुछ सहायता भी प्राप्त की।

श्यामप्रकाश शास्त्री

एक परिवार की शुद्धि

हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति समालखा मडी मे ता० ८-११-८४ को शाम के ४ बजे श्री हरिसिंह प्रधान आर्यसमाज गाव भोरा रसूलपुर जिला सोनीपत के यहा श्री वेदप्रकाश शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज समालखा मण्डी से पारिवारिक यज्ञ करावाया गाव के काफी स्त्री और पुरुष सम्मिलित हुए आर्यसमाज समालखा मण्डी के भी अधिकारी व सदस्य आए हुए थे। १० व्यक्तियो ने यज्ञोपवीत धारण किए। स्वामी सेवानद ने जो हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति समालखा के महामन्त्री है वैदिक धर्म की विशेषता और शुद्धि की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्री कवरसिंह पुत्र श्री नसरू मूला जाट ने स्वेच्छा से परिवार सहित वैदिक धर्म की दीक्षा ली।

आर्यसमाज बेलामेघ (समस्तीपुर) मे देवयज्ञ

(१) आर्यसमाज बेलामेघ (समस्तीपुर) म २० १० ८४ को देव यज्ञ तथा मजदूर नर नारियो को भोजन कराकर वस्त्र दान कमनश्वर आय ने किया। अपने पूवजो के वार्षिरिव अवसर पर इस कायक्रम मे क्रातिकारी सूर विश्वम्भर आय ने कहा कि असहाय की सहायता करना ही सच्ची पूजा व्रत और सबसे बडा धम है। इस अवसर पर श्री नवल किशोर शास्त्री श्री चन्द्रदेव सत्यार्थी न अपने अपने विचार प्रकट किए।

(२) आयसमाज समस्तीपुर मे राष्टीय गोरक्षा सघ की बैठक क्रातिकारी सूर विश्वम्भर आय की अध्यक्षता मे की गई तथा जिल के सभी प्रखण्ड म कायक्रम चलाने के लिए एक समिति बनाई गई सयोजक श्री नवल किशोर शास्त्री नगरपालिका अध्यक्ष श्री परमेश्वर चौधरी कबीर आश्रम के महन्त जी प्रो० मदन जी (मधु) प्रो० अखलेश्वर जी अधिवक्ता श्री मातीलाल जी तथा दीनदयाल कालरा जी। इस बठक मे एक प्रस्ताव पास किया गया कि प्रत्याशियो स गोहत्या पर प्रतिब ध लगाने के लिए लिखित आश्वासन ल। लिखित आश्वासन जनता को नही देने पर जनता उह काले झण्ड दिखाकर गो हत्यारे वापस जाओ के नारे लगाये।

(३) समस्तीपुर मे ११ ११ ८४ को आयसमाज विश्व हिन्दू परिषद राष्टीय स्वय सेवक सघ भारतीय जनसघ, विद्यार्थी परिषद तथा गायत्री परिवार के सदस्यगण थे। क्रातिकारी सूर विश्वम्भर की अध्यक्षता मे एक बैठक म गायत्री महायज्ञ करने पर विचार किया गया। इस बैठक मे ए० डी० एम० कई अधिकारी गण तथा शहर के कई प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। विश्वम्भर जी ने कहा कि हमारा देश धम सकट म है। इसलिए सभी राजनैतिक पार्टी धार्मिक सस्थाए जो हि दू राष्ट्र मे आस्था रखत हैं उन्ह एक जुट होकर हि दू राष्ट्र गोहत्या पर प्रतिब ध मुसलमाना को मत नहीं देन का और नही खडा होने पर प्रतिबन्ध लगाया जाए घुसपैठियो को निकाला जाए अलगाववादी तत्वो के खिलाफ मिल जुलकर खुलकर आवाज उठानी चाहिए। कोई भी सस्था अपने अपने बैनर मे कायक्रम को कर। लेकिन सहयोग सभी का होना चाहिए। इससे हम सभी मजबूत होगे और हमारा जा उद्देश्य हो उसकी पूर्ति हा सकेगी और फिर यह देश आर्यावत कहलाने लगेगा। पाकिस्तान मे हवन पूजन सभी समाप्त हो गए। इस देश मे इस्लाम फैला तो यहा भी सभी तरह के हवन पूजन पाठ समाप्त हो जायगे।

शोक सभा

भारत की भूतपूव प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के निधन पर देश भर के आय समाजो मे उनके द्वारा आयोजित शोक सभाओ के सदेश जो हमारे कार्यालय को निरन्तर प्राप्त हो रहे हैं उनमे से कुछ निम्न हैं —

प्रान्तीय आय महिला सभा अशोकनगर फौजरोड आय समाज सान्ताकुन्ज बम्बई १ मोतीबाग नयी दिल्ली ल इन विवेक विहार दिल्ली भिन्नमिल कालोनी शाहदरा दिल्ली।

जिला हिसार मे वैदिक धर्म प्रचार

दिनाक 10 से 16 नवम्बर1984 तक हिसार जिले के निम्न ग्रामो मे कबारी सातराड कला धमाना उमरा, बूरा बालाखास मे वैदिक धम के प्रचार का प्रोग्राम किया गया। जिनम निम्न विद्वानो ने भाग लिया—आय जगत के प्रकाण्ड विद्वान डा सुदशन देव आचाय महामत्री वैदिक धम महासभा स्वामी मेधान द जी स्वामी आनन्द मुनि स्वामी रामानन्द जी स्वामी कीर्तिदेव जो व नारायणदेव प तेजपाल भजनोपदेशक (आय प्रतिनिधिसभा हरियाणा) ब्रह्मचारिणी बहन कलावती आचार्या कन्या गुरुकुल गाठीयार बहन सावित्री महाशय रिसाल सिंह आदि विद्वान सन्यासी उपदेशक आदि के महत्वपूण प्रवचन एव भजन हुये। उपराक्त विद्वानो ने इन गाव मे प्रात काल यज्ञ व साय काल ईश्वर वेद पाखण्ड अहेत्र शराब, चोरी, भ्रष्टाचार बन्द करो आदि विषयो पर विस्तार से प्रकाश डाला। गाव के प्रतिष्ठित लोगो ने इन आय विद्वानो का हृदय से स्वागत किया। सभा को व क या गुरुकुल गणियार को दिल खाल कर दान दिया।

सत्यार्थ प्रकाश

—श्री राधश्याम आय विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना सुल्तानपुर उ प्र

सत्य माग दिखलाने वाला ज्ञान—विवक बढान वाला।
भू पर फैली गहन तमिस्रा – को निश्चि त मिटाने वाला।
जिससे दिव्यालोक ग्रहण कर हुआ प्रकाशित भू—आकाश।
दिव्य वही सत्याथप्रकाश।।

भ्रान्ति समस्त मिटाने वाला दूर प्रमाद भगाने वाला।
सारी धरती पर निभय हो—डका सत्य बजान वाला।
अजेय शस्त्र हैं इसके चौदह—सत्य शिवम सुन्दर समुल्लास।
दिव्य वही सत्याथप्रकाश।।

सच्चा दृश दिखाया जिसने जीवन माग बताया जिसने।
सारे विधर्मियो की शेखी—क्षण मे धूल मिलाया जिसने।
क्रान्ति प्रणना बन युवको का मा की सहस जगाया श्वास।
दिव्य वही सत्याथप्रकाश।।

पाखण्डो को ललकारा मानवता का मिला सहारा
पोल खुली मत मता तरो की—जाग उठा भारत सारा।
जिसके रहते कभी विश्व जन किंचित होग नही हताश।
दिव्य वही सत्याथप्रकाश।

श्रीमती इंदिरा गांधी के लिए प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा शोक सभा

सु श्री कुमुद बेन जोशी केन्द्रीय स्वास्थ्य राज्यमन्त्री ने शोक सभा मे श्रीमती गांधी को महामानवी की संज्ञा दी। १७ ११ ८४ शनिवार मा य बहिन सुश्री ईश्वर देवी जी की अध्यक्षता मे स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की निमम हत्या पर शोक सभा हुई जिसमे दिल्ली की प्रमुख आय प्रतिनिधि बहिनो ने श्रद्धाजलिया अर्पित की।

इन्दिरा जी को भारतीय प्रगति की आत्मा विश्व शांति की अग्रदूत और अद्वितीय राजनेत्री कहा गया। निर्भीकता से राष्ट्रहित जीने मरने की अमर प्रेरणा बन गई।

सवप्रथम सभा प्रधाना श्रीमती सरला महता ने शोक प्रस्ताव पढा जिसके समथन मे बहिनो ने अपनी वेदनाए अभिव्यक्त की।

मुख्य अतिथि कुमुद बहिन जोशी बाबर विद्या बहिन शाह और कौशल्या मलिक सभी ने उनके सस्मरण सुनाए? बहिनो का हृदय भारी था और नेत्र सजल थे।

सभा ने प्रतिज्ञा की कि हम शान्ति सदभाव राष्ट मे स्थापित करके राजीव गाधी को अपना सम्पूण स्नेह समथन प्रदान करगे। यही उस महान आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धाजलिया होगी।

'शत शत तुम्हें प्रणाम'

(राधेश्याम एडवोकेट)

भारत की हे भाग्य विधाते मानवता की ज्योति पुनीत।
युग युग तक ऋणी रहेगा तेरा सारा जगत विनीत॥
गौरव की गाथाए तेरी बनी धरा पर दिव्य सलाम।
शत-शत तुम्हे प्रणाम॥
अपने शौय तथा साहस से देश महान बनाया।
कण-कण मे इस पुण्य भूमि के जाग्रत ज्योति जगाया।
जब तक सरज च द रहेगा अमर रहेगा तेरा नाम।
शत शत तुम्हे प्रणाम॥
चतुमु खी बह प्रगति राष्ट की कहती अमर कहानी।
शक्ति पूजक! हे इन्दिरा गाधी वीर जयी! बलिदानी॥
दीन-दलित की अहे रक्षिका तुम को युग का आज प्रणाम।
शत शत तुम्हे प्रणाम॥

पहलवान ऋषि प्रकाश का अन्तर्राष्ट्रीय विवाह सम्बन्ध

नई दिल्ली ४ नवम्बर गुरु हनुमान के शिष्य राष्टीय पहलवान ऋषि प्रकाश (बाकनर दिल्ली निवासी) सुपुत्र श्री मांगेराम आय का शुभ विवाह आयुष्मती लक्ष्मी (मिसुको) सुपुत्री श्र मूताका कात्सुसी टोकियो (जापान निवासी) के साथ बिना दहेज वैदिक रूप से सम्पन्न हुआ। दिल्ली के प्रबुद्ध नागरिको पत्रकारो पहलवानो ने वर वधू को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर विभिन्न सस्थाओ को एक सौ एक रुपया दान दिया गया।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के लिए श्री डा० धमपाल द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४ रघबरपुरा न० २ गांधीनगर दिल्ली ३१ मे मुद्रित। १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० रजि० न० डी (सी०) ७५१

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे   वर्ष ६   अंक १२   रविवार, १० फरवरी, १९८५   आर्य सम्वत्सर १९६०८५३०८४   फाल्गुन २०४१   दयानन्दाब्द—१६०

महर्षि दयानन्द शताब्दी दिल्ली का अभूतपूर्व श्रद्धाञ्जलि समारोह धूमधाम से सम्पन्न

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह एवं केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्री के० सी० पन्त मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए ।

स्वामी दयानन्द स्वतंत्रता के अग्रदूत एवं महान् समाज सुधारक थे—महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के समापन समारोह में समापन भाषण करते हुए राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने कहा—

मुझे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह का उदघाटन करते हुए बडी प्रसन्नता हो रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती इस देश की उन महान् विभूतियो मे से थे जिन्होने समाज मे फैली कुरीतियो को मिटाने, लोगो को अन्धविश्वास से मुक्ति दिलाने और स्त्रियो तथा पददलितो के कल्याण के लिए निर्भीक होकर आवाज उठाई थी। उन्होने भारतीय समाज मे नई जागृति पैदा करने की कोशिश की। वे सच्चे समाज सुधारक थे।

उन्होने भारतीय समाज को एक नई रोशनी देकर उसे फिर से अपने पैरो पर खडा होने की प्रेरणा दी। उन्होंने शिक्षा का प्रसार, अछूतो का उद्धार बाल विवाह का विरोध और विधवा विवाह का प्रचार कर के समाज मे एक नई क्रान्ति पैदा की। वे स्त्री शिक्षा और नारी स्वतन्त्रता पर बल देते थे ताकि समाज का यह अंग किसी भी प्रकार से पीछे न रह जाए।

ऋषि दयानन्द सच्चे देशभक्त थे और उन्होने भारत के नव जागरण मे बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और देश मे स्वदेशी आन्दोलन की नीव रखी। सन् १८५७ की आजादी की पहली लडाई में भारतीयो को जो असफलता मिली थी उस से हार न मानते हुए उन्होंने खुल कर कहा—

शेष पृष्ठ २ पर

महर्षि दयानन्द राष्ट्रीय पुनर्जागरण के प्रकाश-स्तम्भ थे-

राजीव गांधी

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर प्राप्त प्रधान मन्त्री का सन्देश

महर्षि दयानन्द हमारे राष्ट्रीय पुनर्जागरण के प्रकाश स्तम्भो मे से एक थे। वे हमारे प्राचीन गौरव के अथक प्रचारक थे, लेकिन साथ ही वे अन्ध विश्वास के कट्टर विरोधी थे। वे विवेक सम्मत जीवन दर्शन के समर्थक थे। महर्षि जी जैसी महान विभूतियो से ही हमारे देश की सांस्कृतिक परम्परा कायम रही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण शताब्दी के अवसर पर मैं उनको अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समापन समारोह तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम मे मंच पर आसीन बायें से—राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह, शिक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त, सभा प्रधान श्री सूर्यदेव श्री स्वामी दीक्षानन्द जी, सेठ महाशय धर्मपाल जी एवं सभा मन्त्री डा० धर्मपाल जी।

सम्पादक—[illegible] एम० ए०   व्यवस्थापक—डा० [illegible]   प्र० सम्पादक—डा० धर्मपाल

हे नर ! तू अपने को जान

सुरेशचन्द्र वेदालंकार

एम० ए० एल० टी० ६ ए० इ १, गोवरा गोरखपुर

सुपर्णोऽसि गरुत्मान्
पृष्ठे पृथिव्या सीद ।
भासाऽन्तरिक्षमापृण
ज्योतिषा दिवमुत्तभान
तेजसा दिश उदद्दृंह ॥
यजु० १७ । ७२

हे मनुष्य (सुपर्ण असि) तू पखो वाला ऊंची उडान लेने वाला है (गरुत्मान् असि) महान् आत्मा वाला है तू (पृथिव्या पृष्ठ सीद) पृथ्वी के पृष्ठ पर बैठ (भासा) अपनी चमक से (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष को (आपृण) भर दे (ज्योतिषा) ज्योति से (दिवम्) द्यु लोक को (उत्तभान) ऊपर थाम ले (तेजसा) तेज से (दिश) दिशाओं को (उदद्दृंह) अर्थात् हे नर ! तू सुपर्ण है ऊंची उडान लेने वाला है ऊंची महत्वाकांक्षा वाला है जीव ! तू गरुत्मान् है गुरु आत्मा वाला है पृथिवी के सिंहासन पर बैठ वहां बैठकर ऐसा चमक कि अपनी चमक से अन्तरिक्ष को परिपूर्ण कर दे अपनी जगमग करती ज्योति से द्युलोक को थाम ले अपने तेज से दिशाओं को उठा ले।

मनुष्य के लिए कितना प्रेरणादायक है यह मन्त्र सफलता न भविष्य के गर्भ मे छिपा हुई है न वह अगम्य है वह तुम्हारे निकट है तुम्हारी पकड के भीतर है। सुअवसर आने वाला नही वह आ गया है। स्वर्ग आकाश मे छिपी हुई चीज नही है वह तुम्हारे अन्दर है। संसार की सभी श्रेष्ठ वस्तुएं जीवन की सारी सफलताए तुम्हारे पास आ रही हैं। अपनी शक्ति मे विश्वास [illegible] अपनी आकांक्षा [illegible] ऊंचा रख [illegible] उसके लिए अपना शक्ति को समझ लेना चाहिए यह मन्त्र कहता है—

हमारा शरीर जड है शरीर का चलाने वाला जीवात्मा चेतन है। शक्ति से भरा है [illegible] जीवात्मा मनुष्य जान लेता है तो वह उन्नति की चरम सीमा [illegible] जाता है अरे मनुष्य [illegible] उन्नति करने वाले सुपर्ण हो तुम गरुत्मा वाले महान हो। उसे यह समझ है और जिस दिन वह यह समझ जायगा तो उस [illegible] उस यह प्रतीत हो जाएगा कि वह एक घर का एक देश का या एक जाति का नही किन्तु सम्पूर्ण पृथ्वी का पुरुष है। तब वह अब अपने को विश्व का पुरुष समझेगा। विश्व मे एकता का अनुभव करेगा और अपनी उन्नति की ओर अपनी महानता को ओर जाने के मार्ग को जान जाएगा तब इस एकत्व भावना का यह परिणाम होगा कि पदार्थ हो उसका स्वाम हो जाएगा और तब वह अपनी दृष्टि से अन्तरिक्ष को भर देगा। उस विश्व व्यापक जीवात्मा की मानसिक चमक इस जगत् को चकाचौंध कर देगी। हे जीव ! तू अपनी शक्ति को जानता नही समझता नही। इस जगत को आदर्श विश्व के रूप मे परिवर्तित करने की क्षमता रखने वाले राम कृष्ण शंकराचार्य स्वामी दयानन्द स्वामी श्रद्धानन्द महात्मा गान्धी की शक्ति तुझ मे भी है। बस तू अपनी छिपी ज्योति को प्रकट कर चमका तब तेरा तेज दिग दिगन्त तक ऐसा फैलेगा कि विश्व के सब प्राणी तेरे तेज के प्रकाश मे अपना अज्ञान और अभाव दूर कर सकेंगे। तब तू अपनी उन्नति से न होकर सब की उन्नति मे अपनी उन्नति समझेगा अपने को देख। इस अन्तरिक्ष को अपनी चमक से चमका अपनी ज्योति से द्युलोक को भर पृथ्वी तथा दिशाओ को उन्नत कर।

हे नर तू साधारण आदमियो की तरह क्यो बैठा है तू तो वह अग्नि है जो कि अपने प्रदीपन से सम्पूर्ण संसार को व्याप्त करने वाला है। तू उठ अपने को जान तू सुपर्ण है तू गरुत्मान् है।

[पृष्ठ १ का शेष]

राष्ट्रपति का भाषण

स्वामी दयानन्द स्वतन्त्रता के अग्रदूत थे

कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सब से उत्तम होता है।" विदेशी राज्य कभी अच्छा नही होता।' सन १८६३ मे इन के गुरु स्वामी विरजानन्द ने गुरु दक्षिणा के रूप मे ऋषि दयानन्द से यह वचन लेकर उन्हें विदा किया था कि वह अपना सारा जीवन लोक कल्याण के लिए लगा देगे। इसी की पूर्ति के लिए ऋषि दयानन्द अगले २० वर्षो तक देश भर मे घूम घूम कर जन कल्याण स्वदेश प्रेम और सत्य का प्रचार करते रहे। लाला लाजपत राय और स्वामी श्रद्धानन्द जसे महान लोक नेता उन्ही की देन है। उन्ही के सन्देश से अनेक भारतीय नर नारी स्वतन्त्रता संग्राम मे कूद पड़े थे।

वह समाज मे सभी वर्गो की उन्नति के समर्थक थे। उन्होने आर्य समाज की स्थापना करते समय जो १० नियम बनाए थे उन मे से ९ वा नियम यह रखा था कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सतुष्ट नही रहना चाहिए बल्कि सब की उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए।" यह समाज के लिए उन का मूल मंत्र था और इसी के लिए उन्होने समाज के हर कमजोर वर्ग को ऊंचा उठाने की कोशिश की थी।

वे भारतीय संस्कृति भारतीय भाषा और भारतीय शासन के हामी थे। वे देश के लिए स्वदेशी भाषा चाहते थे और इसी के लिए उन्होंने अपने ग्रन्थो की रचना हिन्दी भाषा मे की थी। जिसे लगभग १०० साल बाद स्वतन्त्र भारत मे राज भाषा का दर्जा हासिल हुआ। उन्होने इन ग्रन्थो की रचना उस समय खडी हिन्दी में की थी जब कि अभी तक हिन्दी गद्य का पूरी तरह विकास भी नही हुआ था। इस प्रकार से उन्होने हिन्दी के विकास मे भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था।

श्री अरविन्द घोष ने उन के विषय मे कहा था—

> वे परम्परा की इस विचित्र सृष्टि के एक अनोखे योद्धा और मनुष्य तथा मानवीय संस्थाओ का संस्कार करने वाले महान् शिल्पी थे।

यह देश स्वतन्त्रता के अग्रदूत, महान समाज सुधारक अन्ध विश्वास और रूढिवाद की बेडियो को काटने वाले महान संन्यासी महर्षि दयानन्द सरस्वती का सदा ऋणी रहेगा। महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी उन के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा था—

> मैं सादर प्रणाम करता हू उस महान गुरु स्वामी दयानन्द को जिन की दूर दृष्टि ने भारत की आत्मा मे सत्य और एकता का बीज देखा।

आज देश की एकता और अखण्डता के लिए जो चुनौती दी जा रही है इस का सामना करने के लिए हम सब को ऋषि दयानन्द द्वारा दिखाए गए देश प्रेम और भारतीयता के मूल मन्त्र से प्रेरणा लेनी चाहिए।

इन शब्दो के साथ मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हू।

। जय हिन्द।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर स्मारिका का विमोचन करते हुए राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह साथ में श्री के० सी० पन्त एवं श्री रामगोपाल शालवाले

राष्ट्रीय एकता और आर्यसमाज

सपादक धर्मपति
वाचक : मनोजकुमार मिश्र

ले०—डाक्टर धर्मपाल आर्य

राष्ट्रीय एकता और अखण्डता सदृश प्रश्न पर्याप्त समय से भारतीय मानस को झिझोड़ते रहे हैं और देश के लिए सकटापन्न स्थितियों का कारण भी बनते रहे हैं। राजनीतिक सामाजिक और सांस्कृतिक मचों से यह सवाल अनेक बार उठाया गया है और इस पर चिन्ता भी प्रकट की गयी है। यह दुखद स्थिति है जिसका हम एक दूसरे को अहसास तो कराते है, पर राष्ट्रीय एकता के लिए कोई ठोस कदम नही उठा पाते। इस वर्ष तो यह सवाल इतनी तेजी से उठा कि सारे देश की आत्मा को ही तिलमिला गया। राष्ट्रीय एकता के लिए श्रीमती इन्दिरा गांधी के बलिदान ने हमारा मस्तक खाली है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि देश सकट के समय इस देश ने आश्चर्यजनक एकात्म सवदन और शक्ति से काम लिया है। हर आम आदमी चाहे वह पजाब का हो या तामिलनाडु का उत्तर प्रदेश का हो या केरल का, हिन्दू हो या मुसलमान, सिख-ईसाई हो या कोई अन्य मतावलम्बी सभी का चिन्तन सवदना की उसी मुलायम पर सुदृढ सांस्कृतिक डोर से जुडा है जिसे कवियो ने अपने काव्य मे अभिव्यक्ति प्रदान की है चित्रकारो ने अपनी राजपूत, कागडा और मुगल आदि शैलियो मे चित्रित किया है, जिसकी आत्मा नानक मीरा, सूर कबीर, टैगोर और सुब्रह्मण्यम भारती की धुना मे आत्मसात् है। एकात्म की इस धारा को, जो राजनैतिक विचार दर्शन पहचान सकेगा वही इस देश की धरती को अखण्डता म बाध रख सकेगा। क्षत्रीयता या क्षत्रीय स्वायत्तता की माग दोष नही है पर इसका राष्ट्रीय एकता से जुड रहना परमावश्यक है। इस बहुभाषी बहुधर्मी और विविधतापूर्ण भारतीय राष्ट्र के आम आदमी हो की सवेदनशील सांस्कृतिक एकता से परे होकर यदि कोई राजनीतिक चिन्तन का विचार उठा भी तो आम आदमी उसे स्वीकार नही करेगा।

राष्ट्रीय एकता के लिए प्रयास आज से नही किये जा रहे है। इतिहास के साक्ष्य वर्तमान है कि पुराने समय म भी राष्ट्र की एकता की कडी म पिरोने के लिए प्रयास किये जाते रहे है। राम और कृष्ण का युग भी एकता के लिए प्रयास का युग रहा है। गुप्तकाल मे भी ऐसे प्रयास किए गए है। मुगल साम्राज्य के दिनो मे भी अनवरत प्रयास किय गये, जब छोटे-छोटे राज्यो को अपने बड साम्राज्य मे मिलाया जाता रहा है। सघ मे शक्ति होती है, इस बात को उन्होन जान लिया था। केवल राजनीतिक स्तर पर नही, सामाजिक, धार्मिक, जातीय स्तर पर भी एसे प्रयास किये गये।

सन् १८७७ मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एकता सम्मेलन किया, जिसमे सर सैयद अहमद खा और श्री केशवचन्द्र सेन सम्मिलित हुए थे। आर्यसमाज के प्रवर्तक युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज के निर्वाण को सौ से अधिक वर्ष बीत चुके है, पर जैसा कि सदा होता आया है महापुरुषो के जीवन तो प्रेरणा दायी होते ही है, उनका निर्वाण भी, उनका बलिदान भी प्रेरणादायक होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत मा के ऐसे ही सपूत थे जिनका मन-हृदय इस देश की दुरवस्था को देखकर रो पडा था। उनका इस भारत-भू पर अवतरण उस समय हुआ जब यह देश पराधीन था। सवत्र अविद्या और अन्धकार की घटाए छाई हुई थी। भारतीय सभ्यता, संस्कृति और साहित्य की होली हो रही थी। इतिहास मे परिवर्तन करके उसे विकृत किया जा रहा था। सत्य-सनातन वैदिक धर्म लुप्त हो रहा था। चारो ओर अनाचार का साम्राज्य था। नारी जाति की स्थिति दयनीय थी। शूद्र को और नारी को वेद पढने, शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार नही था। सती प्रथा का दानव मुंहे ग्रसित किये था। इस घोरतम अन्धकार से हमे निकालने के लिए, असत्य से सत्य की ओर ले जाने के लिय महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमे सहारा दिया था। उन्होंने देश की एकता के लिए, राष्ट्र के कल्याण के लिए, मनुष्य को वास्तव मे मानव बनने के लिये जो प्रयास किए वे अभूतपूर्व है।

लाखो की सख्या मे शिक्षित लोग उनकी ओर आकर्षित हुए। मुसलमान, सिख और ईसाई भी उनके दर्शन से प्रभावित हुए और अनुयायी बने।

परम आदरणीय मन्त्री जी श्रीमती मन्त्रिणी जी,

सादर नमस्ते।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी की अभूतपूर्व सफलता मे आपकी सभा के अधिकारियो कार्यकर्ताओ का तन, मन धन से जो सहयोग और सद्भाव इस सभा को प्राप्त हुआ है। उसके लिए मैं अपनी ओर से तथा इस सभा के अन्य अधिकारियो की ओर से आप सभी का हृदय से आभार प्रकट करता हू और आपका धन्यवाद करता हू।

आशा करता हू कि भविष्य मे भी इस सभा के सभी कार्यक्रमो मे आपका तथा आपकी सभा का सहयोग निरन्तर हमें प्राप्त होता रहेगा।

भवदीय

धन्यवाद।

डा० धर्मपाल आर्य, महामन्त्री

मान्य सुधांशु जी

सप्रेम नमस्ते

आर्य सन्देश का सम्पादन भार आपने सभाल लिया है इसकी मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है। आप जैसा कवि हृदय पत्र की शोभा को चार चाद लगायेगा ऐसी पूर्ण आशा है।

आपका अपना

उत्तम चद शरर'

आपका ३० दिसम्बर का अक बहुत समय बाद पूरा का पूरा अथ से इति तक पढा और बहुत पसद आया।

इससे पहले कभी पूरा का पूरा अङ्क [illegible] ही पढ़ा था।

भवदीय

मनोहर विद्यालकार

सम्पादक जी !

सप्रेम नमस्ते।

आर्य सन्देश साप्ताहिक का शुभ सन्देश मिला। लगा कुछ तरुणाई बोधगम्यता का सन्देश आ गया। पर कुछ प्रश्न भी मन मे हैं

१ क्या इस के पेज बढ़ाये जा सकेंगे ?

२ क्या लेखो का स्तर भी ऐसा ही अच्छा रखा जा सकेगा ?

३ क्या राजनीति से ऊपर उठ कर वैदिक आध्यात्मिक दृष्टिकोण लेकर चल सकेंगे ?

यदि हा तो एक अच्छी शुरुआत के लिए मैं और मुझ जैसे प्रबुद्ध पाठक आभारी हैं।

भावुक

हरिदत्त वेदालकार

कैलाश कालोनी नई दिल्ली

मान्य सम्पादक जी

बहुत बहुत बधाई।

आर्य-सन्देश के २३ दिसम्बर और ३० दिसम्बर के दो अक पढने को मिले। दोनो अक पढकर मन सुमन खिल गया। सारे ही लेख खोजपूर्ण, रोचक शिक्षाप्रद थे। कृपया इस आध्यात्मिक और आदर्श स्तर को बनाये रख।

पुन हार्दिक बधाई

डा० शिवमूर्ति

माडल टाउन दिल्ली

महर्षि के स्मृति चिह्न

२३ दिसम्बर के आर्य-सदेश मे श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति का राजधानी दिल्ली मे महर्षि के निवास स्थानो को तलाशने तथा वहां पर किसी प्रकार के स्मारक आदि बनाने का सुझाव ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी तथा महत्त्वपूर्ण है। परन्तु बात केवल दिल्ली की ही नही है। देश के उन सभी स्थलो पर जहा जहा स्वामी जी गए थे और ठहरे थे, इस प्रकार के शिला लेख लगाए जाने चाहिए। कई वर्ष पूर्व सार्वदेशिक सभा ने एक प्रस्ताव स्वीकार किया था जिसमे आर्यसमाजो को आदेश दिया गया था कि यदि उनके नगरो मे स्वामी जी का पदार्पण हुआ था तो वे अपने समाज मदिर में ही एक शिलापट्ट लगाकर महाराज के आगमन तथा प्रत्यागमन की तिथिया अकित कराए। स्व० प्रो० महेशप्रसाद मौलवी ने इस सम्बन्ध मे रुचि लेकर स्वामी दयानन्द कब और कहा शीर्षक एक ट्रैक्ट तैयार किया था। इसका समुचित सशोधन (तिथियो की दृष्टि से) प० युधिष्ठिर मीमासक ने कर दिया है। मैंने भी स्वलिखित श्री महाराज की जीवनी मे इसी तिथि-पत्र का प्रयोग किया है।

आर्यसमाज मे इतिहास बुद्धि का दिनो दिन ह्रास हो रहा है तथा चमत्कारवाद तथा अलौकिकता की बातें बढ रही हैं। आवश्यकता है कि समय रहते महर्षि द्वारा पवित्री कृत स्थानो की भौगोलिक यथार्थता का पता लगाया जाए और वहा पर महर्षि की पुनीत यादगारें स्थापित की जावें।

भवानीलाल भारतीय

चण्डीगढ

वेदों में समाज शब्द की उद्भावना का मूल स्रोत

—पं० बुद्धदेव विद्यालंकार

ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि-पर्यन्त मनीषियों ने जिस वेदसदन का निर्माण किया था उसके तोरण द्वार पर भगवान् मनु का अमर वाक्य आज भी अंकित है—'वेदो अखिलो धर्ममूलम्'। यहां वेद शब्द से ऋक्, यजु, साम और अथर्ववेद एवं अखिल शब्द से कृत्स्नता द्योतित होती है। मनु द्वारा प्रयुक्त धर्म शब्द वर्णाश्रम कर्त्तव्यों का वाचक है। यहां का वर्ण शब्द समाज-निर्माण का और आश्रम शब्द व्यक्ति-निर्माण का द्योतक है। किसी भी स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण व्यक्ति और समाज के समन्वय मे है।

व्यक्ति और समाज एक छड़ के दो किनारे हैं। जब तक इन्हें जोड़ा न जाये तब तक न राष्ट्रहित होगा न विश्वहित। भूल से समझा यह जाता है कि व्यक्ति समाज का और समाज व्यक्ति का विरोधी तत्त्व है। यही कारण है कि इन दोनों तत्त्वों को आधार बनाकर अनेक वादों का जन्म हुआ है। आज का युग समाजवाद और साम्यवाद का युग माना जाता है। विश्व के वायुमंडल मे इन दोनों शब्दों की इतनी गूंज है कि जिससे आबालवृद्ध प्रभावित हैं। इन दोनों के आधार पर ही रूस और चीन जैसे राष्ट्रों का निर्माण हुआ। समाजवाद पर विशाल साहित्य निर्माण हो चुका है। विद्यालयों, विश्व-विद्यालयों में इसने पृथक् विषय का रूप धारण कर रखा है। इन महत्त्वपूर्ण वादों के सम्बन्ध मे वेद में भी कोई व्यवस्था है या नहीं, इस पर विचार करना आवश्यक है, परन्तु हम इस लघु लेख मे इस पर विचार न करके मात्र वेदों में समाज शब्द की उद्भावना का मूल स्रोत तक ही सीमित रहेंगे।

वेदों मे हमे जहां समाज के पर्याय ग्राम, समिति, सभा, इत्यादि शब्द मिलते हैं, वहां समाज शब्द की उद्भावना जिस शब्द मे निहित है उसका प्रयोग बहुधा देखने मे आता है वह है सम उपसर्ग, इसी को हम समाज, समता समानता, एकता आदि शब्दों की उद्भावना का मूलस्रोत कह सकते हैं। वेदों का ग्राम शब्द आज प्रचलित समाज शब्द की उद्भावनाओं को जितना सजोये हुए है सम्भवत उतना समाज शब्द भी नहीं। ग्राम और समाज दोनों शब्द समूह, सगठन और संघ के वाचक हैं। समाज शब्द मे एकमात्र समूह के सभी व्यक्तियों का एक होकर चलने की भावना निहित है, जबकि ग्राम शब्द मे समूह के सभी व्यक्तियों का परस्पर एक दूसरे को ग्रहण करने और उनके ग्रास का प्रबन्ध करने की भावना निहित है। मनुष्य को आज की भाषा में सामाजिक पशु (Social animal) कहा जाता है। वेदों में उसके लिए ग्राम्य-पशु का प्रयोग हुआ है। इन ग्राम्य पशुओं की संख्या एक नहीं पांच है और शतपथ ब्राह्मण के अनुसार सर्वप्रथम मनुष्य, अश्व, गौ, अवि और सब से अन्त मे अजा है। इन सभी पशुओं को जहां एक-दूसरे के साथ मिलकर रहना रुचिकर है, वहां अपनी ही जाति के साथ भी मिलकर रहना चाहते हैं। जब तक मिलकर रहने की भावना मनुष्येतर पशुओं में है तब तक उस संगठन का नाम समज है। जैसे ही उस भावना की उत्क्रान्ति मननशील मनुष्य में हुई, तो उस समूह का नाम समाज हो गया।

ग्राम्य पशुओं के परिगणन में अन्तिम पशु अज है। अज धातु का अर्थ गति है, समाज शब्द मे भी वही अज धातु प्रयुक्त हुई है। जैसे ही गति में एकता आई कि झटिति समाज का निर्माण हुआ। उससे आगे ज्यों ही वाणी में एकता आई कि समाज में उत्क्रान्ति हुई उससे उत्क्रान्त अवस्था वह है कि जब समूह के व्यक्तियों के मनन भी एक हो जाए। इसी को कहेंगे समज से समाज अवस्था में उत्क्रान्त हो जाना। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त मे आदेश दिया जाता है 'संगच्छध्वम्' तुम सब मिलकर चलो, 'संवदध्वम्' तुम सब मिलकर बातचीत करो, 'सं वो मनांसि जानताम्' तुम सब के मन मिले हुए हों। जब तक व्यक्तियां संगच्छध्व का पालन करती हैं, तब तक वह समज-अवस्था कहलाती है। जैसे ही वह सं व मनांसि मे उत्क्रान्त हो जाती है, वैसे ही समाज निर्मित हो जाता है। इस प्रकार समाज-निर्माण के लिये जहां एक उच्चार, एक आचार और एक विचार का होना आवश्यक है, वहां इन तीनों मे भी एकता होनी आवश्यक है।

जहां यह गर्व का विषय है कि वर्तमान समाज शब्द जिन-जिन उद्भावनाओं को संगृहीत किये हुए है उन सभी भावनाओ को वेदों में अत्यन्त उदात्त शब्दों मे प्रकट किया गया है वहां यह जानकर आश्चर्य होगा कि वेद और वैदिक साहित्य मे समाज शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है। हम यह दिखा चुके हैं कि ग्राम्य पशुओं में अज पशु जिस की संज्ञा उस की गति के कारण है, उस गति को किसी अन्य साधन के द्वारा एक कर देने का नाम समज है उसी गति को अन्तर्मन के द्वारा एक कर लेने का नाम समाज है।

वेद और वैदिक साहित्य में अज और अजा शब्द ब्रह्म, जीव और प्रकृति के वाचक हैं। इन की यह संज्ञा दो कारणो से है एक तो निरन्तर गतिशील होने के कारण 'न जायते इति अज'। इन तीनों में ही दो तत्त्व चेतन हैं और प्रकृति जड़ है। प्रकृति को चलाया जाता है, उस को चलाने वाली सर्वातिशायी सत्ता ब्रह्म और एकातिशायी सत्ता जीव दोनों ही चेतन और अजन्मा हैं। जब यह गति एक होकर किसी भी चेतन सत्ता से चलाई जा रही हो तब उस का नाम समज-अवस्था या सांख्य के शब्दों में साम्यावस्था है। लेकिन जब यह गति जीव में देखी जाती है, तो वह अपने ज्ञान और प्रयत्न का प्रयोग स्वतन्त्रता से करता है, उसे किसी चलाने वाले की आवश्यकता नहीं होती। तब जो अवस्था उत्पन्न होती है उसे समाज और साम्यावस्था भी कह सकते हैं। वेदों को अजा प्रकृति की समज और साम्यावस्था अभिप्रेत नहीं, जिन के चलाने वाले कोई और हों, उसे ज्ञानवान् प्रयत्न-शील व्यक्तियों की वह समाज और साम्यावस्था अभिप्रेत है, जहां की व्यक्तियां किसी के द्वारा न चलायी जाकर स्वयं चलें। इस का वर्णन अथर्ववेद के निम्न मन्त्र में हुआ है

नाम नाम्ना जोहवीति पुरा सूर्यात्पुरोषसः।
यदजः प्रथमं संबभूव स ह तत् स्वराज्य-
मियाय यस्मान्नान्यत् परमस्ति भूतम् ॥
१०।७।३१

जिन अज नामवाली अर्थात् नित्य कहलाने वाली सत्ताओं को अज नाम से बुलाया जाता है वे पुरा सूर्यात्; पुरा उषस', सृष्टि के आरम्भ के होने वाले सूर्य और उषा से भी पूर्व विद्यमान थे, वे सम्पूर्ण गतिशील, अजायमान व्यक्तियां एक हुई, निश्चय ही वह स्थिति स्वराज्य अवस्था को प्राप्त हुई, इस से परम उत्कृष्ट अवस्था और कोई न थी। इस ऋचा में सृष्टि-रचना की पूर्वावस्था से लेकर परमोत्कृष्ट स्वराज्य अवस्था तक का वर्णन है। यही वह सूत्र है जिसे समाज अवस्था का जनक कह सकते हैं। जब-जब नये समाज का निर्माण होगा तब-तब प्रजा (प्रकृति) अजायमान अवस्था में रहेगी, अराज विगत राज अवस्था में रहेगी। जैसे-जैसे इस अवस्था से उभरने का विचार बढ़ेगा, वैसे ही वैसे प्रजापति विजायमान अवस्था की ओर अग्रसर होगा। (यजु० ३१।१८) इस को हम वैदिक भाषा मे अजायमान अवस्था न विजायमान अवस्था मे उत्क्रांति कहेंगे। अथवा 'विगतो राट् यस्मात् विराट्' अवस्था से 'विशेषेण राजत इति विराट्' कहेंगे। विशेषेण राजने विराट् अवस्था की विशेषता यह है कि उस संगठन की सभी व्यक्तियां स्वय राजते इति स्वराट् अवस्था को प्राप्त हों। यह अभिप्राय है 'स्वराज्य-मियाय' शब्द का ऐसे व्यक्तियों का एक होकर गति करना कि जिस का प्रत्येक व्यक्ति स्वय राजमान हो, समाज कहलायेगा।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में 'प्रजापति-श्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते'। (यजु० ३१।१९) मन्त्रार्थ में उन दोनों अवस्थाओं का स्पष्ट उल्लेख है। पहली को अजायमान और दूसरी को विजायमान, पहली का विगत राट् और दूसरी का विशेषेण राजते इति विराट्, पहली को समज और दूसरी को समाज अवस्था कहेंगे। अजायमान से विजाय-मान और समज से समाज में उत्क्रांति होने के लिए किन-किन अवस्थाओं से जाना होगा अथवा क्रमिक विकास करना होगा उस का उत्कृष्ट वर्णन अथर्ववेद के निम्न सूक्त में है—

विराड् वा इदमग्र आसीत्तस्या जाताया
सर्वमबिभेदियमेवेदं भविष्यतीति ॥
सोदक्रामत्सा गार्हपत्ये न्यक्रामत् ॥
गृहमेधी गृहपतिर्भवति य एवं वेद ॥
सोदक्रामत्साहवनीये न्यक्रामत् ॥
यन्त्यस्य देवा देवहूतिं प्रियो देवानां भवति
य एवं वेद ॥
सोदक्रामत् सा दक्षिणाग्नौ न्यक्रामत् ॥
यज्ञर्तो दक्षिणीयो वासतेयो भवति य एवं
वेद ॥
सोदक्रामत्सा सभायां न्यक्रामत् ॥
यन्त्यस्य सभां सभ्यो भवति य एवं वेद ॥
सोदक्रामत्सा समितौ न्यक्रामत् ॥
यन्त्यस्य समितिं सामित्यो भवति य एवं
वेद ॥
सोदक्रामत्सामन्त्रणे न्यक्रामत् ॥ यन्त्य-
स्यामन्त्रणमामन्त्रणीयो भवति य एवं वेद ॥
अथर्व० ८।१०

सृष्टि के आरम्भ में सर्वप्रथम विराट् अवस्था थी, अज अवस्था तो थी, सम्राट् अवस्था न थी। अज अवस्था तो थी, परन्तु समाज अवस्था न थी, व्यक्तियां थीं, पृथक्-पृथक् तो थीं, परन्तु संगठित न थीं, वह अज भी गतिशील तो थी, परन्तु एक होकर (सं) गतिशील (अज) न थे समाज न थे। सर्वप्रथम विराट् अवस्था में उत्क्रांति हुई और दो व्यक्तियो ने परस्पर एक-दूसरे को

(शेष पृष्ठ ५ पर)

वेदों में समाज शब्द

शेष पृष्ठ ४ का

ग्रहण किया। जिस ने ग्रहण किया वह गृहा और जिस को ग्रहण किया वह गृहिणी कहलायी। इस से गृहपतिसंस्था का गृहस्थाश्रम का निर्माण हुआ। यह सूत्रपात था कि अब समाज की ओर उत्क्रान्ति कर रहा था अथवा विराट् (विगत राट) विराट् (विशेषण राजत) का और उत्क्रान्ति कर रहा था आज भी गृहस्थाश्रम गार्हपत्यागार का नींव विवाह संस्कार की पाणिग्रहण विधि से डाली जाती है। कन्या का पिता स्वयं अपनी कन्या के हाथ वर के हाथ में सौंपता हुआ कहता है—असकृता कन्या प्रतिगृह्णातु भवान् उत्तर में वर वधू के हाथ ग्रहण करके कहता है गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तम्। यहां गृहा गृहिणी, ग्रहण गृभ्णामि, गृह, गृहस्थाश्रम शब्दों में ग्रहणार्थक धातु के प्रयोग से पता चलता है कि विराट् अवस्था से अगला चरण गार्हपत्यसंगठन है। इस से अगला चरण वह है जिस में एक गृहस्थ दूसरे गृहस्थ को मंगलावसरों पर आह्वान करता है। यह आह्वनीय अवस्था होती है। सम्मिलित गृहस्थ जहां परस्पर एक दूसरे से मंगलावसरों पर अपनी अपनी भेंट (आर्थिक) देते हैं वहां मिलकर भी अपनी सम्मति प्रकट करते हैं। यह हवि वहां वैश्वानर होती थी वहां अन्नादि के रूप में भी होती थी उसी का हवि के नाम से (याज्ञिक परिभाषा में) बुलाया जाने लगा और जब यह हवि सब ओर से (आ) डाली जाने लगी तो इस का नाम आह्वनीय हो गया। सब ओर से हवि प्राप्ति का परिणाम हुआ कि वह गृहस्थ दक्षिणायुक्त होकर दक्षिणाग्नि को प्राप्त हो गया समृद्धि को प्राप्त हो गया ऐश्वर्य को प्राप्त हो गया। दक्षिणा का अर्थ ही समृद्धि है। (निरु० १।७)

आह्वनीय अवस्था में जब एक गृहस्थ ने अपने मंगलकार्य में दूसरे गृहस्थ को ससम्मान आहूत किया और दूसरे गृहस्थ ने भी सश्रद्धा आहुति डाली तो सहज परिणाम हुआ कि ग्राम संस्था का निर्माण हुआ जिसे उक्त सूक्त ने सभा शब्द से अभिहित किया है।

इस के विपरीत एक गृहस्थ ने आपत्ति की संकट की अवस्था में सहायता दूसरे गृहस्थ को बुलाया तो इन सब ने मिलकर (सम्) बाधाओं का प्रतीकार किया तो उस संगठन का नाम संग्राम हो गया जिसे सूक्त ने समिति सम् इति शब्द से अभिहित किया है॥ यहां संग्राम शब्द के रूढार्थ को छोड़ना होगा।

अथर्ववेद (७।१३।१ में सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियां कहा है। आजकल की भाषा में लोअर और अपर हाउस कहा जा सकता है इन शब्दों के साथ आमन्त्रण सभा भी लगा है जो सम्भवतः मन्त्रिमण्डल की ओर संकेत है।

इस प्रकार उपर्युक्त सूक्त ने समाज से समाज में उत्क्रान्ति हेतु ये सात चरण विराट गार्हपत्य आह्वनीय दक्षिणाग्नि सभा समिति और आमन्त्रण दर्शाये हैं।

वसन्त मेला हकीकत राय बलिदान दिवस सानन्द पूर्वक सम्पन्न

अखिल भारतीय हकीकत राय समिति और आर्यसमाज विनय नगर नई दिल्ली की ओर से रविवार दिनांक २७ जनवरी १९९५ को प्रातः ९ बजे से दोपहर २ बजे तक आर्यसमाज मन्दिर वाई ब्लाक सरोजनी नगर नई दिल्ली में बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रातः ८.३० बजे से ९.३० तक पं० ... शर्मा शास्त्री जी पुरोहित आर्यसमाज ने ही स्वयं बृहद् यज्ञ कराया। ९.३० बजे से ११ बजे तक श्री श्री गुलाब सिंह राघव के मनोहर भजन हुए। और महाशय धर्मपाल जी प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा ने वीर हकीकत को श्रद्धांजलि अर्पित की। ११ बजे से १.३० बजे तक बच्चों ने वीर हकीकत के जीवन पर कविता भाषण प्रतियोगिता में भाग लिया। जिसमें ... प्रमुख और आर्य बालगृह ... के बच्चों ने भी भाग लिया। रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल सरोजनी नगर के बच्चों ने विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जो आर्यसमाज के विचारों से ओत प्रोत था।

अन्त में स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा हुई जिसमें श्री सूर्यदेव जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा श्री ... नारायण जी हाथी दांत वाले श्री कृष्ण चोपड़ा सुपुत्र स्वर्गीय श्री उत्तमचन्द चोपड़ा श्री रतनचन्द जी सूद श्री जगन्नाथ राय सूद श्री देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक, श्री हरबंस लाल कोहली प्रधान दक्षिण दिल्ली आर्य प्रचार मण्डल श्री सरदारी लाल वर्मा व दक्षिण दिल्ली की सभी आर्यसमाजों के अधिकारी उपस्थित हुए और वीर हकीकत को श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री रतनलाल सहदेव प्रधान समिति ने स्वर्गीय श्री उत्तमचन्द श्री चोपड़ा श्रीमती पुरुषोत्तम देवी चोपड़ा सूद श्रीमती सत्यवती सूद की ओर से सभी के लिए प्रीति भोज का प्रबन्ध किया गया। कार्यक्रम में हजारों लोग उपस्थित थे।

रोशनलाल गुप्ता
मंत्री

वैवाहिक विज्ञापन

एक सुन्दर स्वस्थ्य डाक्टर (एम० बी० बी० एस० एम० एस०) आयु २९ वर्ष कद १६७ सें० मी० विशुद्ध शाकाहारी युवक के विवाह हेतु सुन्दर ... डाक्टर की आवश्यकता है। लड़का विदेश में कार्यरत है शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क करें।

पता—वीरेन्द्र कुमार ... दयानन्द नगर
गाजियाबाद यू० पी०
फोन ४११६१ ८४ १८१

आर्य सन्देश साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बनें, और [बनाएँ]

क्योंकि यह पत्रिका—

(१) वैदिक मान्यताओं को उजागर करती है।

(२) आर्यों (हिन्दुओं) की महान परम्पराओं की याद दिलाती है।

(३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति से आत्म चेतना जागृत करती है।

(४) भारतीय संस्कृति के भूले बिसरे प्रसंगों, महापुरुषों तथा आदर्श संस्कारों को प्रकाश में लाती है।

(५) ऋषि मुनि तपस्वी आप्तविद्वानों की वाणी का बोध कराती है।

(६) परमेश्वर की पवित्र वाणी वेद का जीवनोपयोगी मधुर सन्देश लाती है।

(७) नये लेखकों कवियों चिन्तकों, प्रतिभाशाली विद्वानों साहित्य सेवियों को प्रोत्साहन देती है।

(८) धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक ज्योति से मन-मन्दिर को प्रकाशित करती है।

(९) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद्, स्मृति, कल्प सूत्र, आरण्यक ब्राह्मणग्रन्थ गीता, रामायण नीति ऐतिहासिक अमूल्य आर्ष ग्रन्थों जिन को अधिकांश लोगों ने पढ़ा तो क्या देखा भी नहीं, समस्त आध्यात्मिक जगत् को जिन ग्रन्थों पर सदा गर्व रहेगा उन सभी के बहुमूल्य मोती हर सप्ताह बटोर कर आपकी अंजली भर देती है।

(१०) अतएव देर न कीजिए आज ही अपना वार्षिक चन्दा २० रुपये भेजिये, वर्ष में अनेक विशेषांक तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर प्रकाशित ५० रुपये मूल्य की भव्य मनोहारी स्मारिका निःशुल्क दी जायेगी।

सम्पादक
आर्य सन्देश

महाबलिदानी पं० लेखराम से

—शरर एम० ए०

क्या विचित्र विह्वलता लेकर तुम आये थे।
दीपक पर जलते पतंग को भी देखा है
लेखराम तेरी उमंग को भी देखा है
वह जलता है जैसे कुछ सोच सोचकर
दीपक के चहुं दिश मंडरा साहस बटोरकर
पर तू सीधा दीपक की लौ से टकराया
तेरी विह्वलता को रुकना तनिक न भाया
क्या अरमान हृदय में जलने के पाए थे
क्या विचित्र विह्वलता

विह्वलता जो रुकी न संघर्षों से जूझकर
किया निमन्त्रित मृत्यु को भी जान बूझकर
जिस के वश में विकल हृदय कुछ सोच न पाया
हंसते-हंसते अंधकार में कदम बढ़ाया
हृदय रक्त से सींच दिया उजड़ उपवन को।
निज जीवन से मृतकों में फूंका जीवन को।
प्राणों में अङ्गार धधकते से लाए थे।
क्या विचित्र

पुत्र मोह जिसमें दशरथ को मरते देखा।
पुत्र मोह मानव मन की कोमलता देखी।
छोड़ न पाये थे प्रताप भी जिस ममता को
लेखराम! तूने जीता उस दुर्बलता को।
धन्य धन्य कहता है जग तेरी श्रद्धा पर
अमर रहेगा नाम तेरा जग की जिह्वा पर
दयानन्द के सच्चे सैनिक बन तुम आये थे
क्या विचित्र विह्वलता लेकर

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समापन समारोह पर

आर्यसमाज ने आजादी का भव्य महल बनाया है

रामचन्द्र विकल, ससत् सदस्य

ऐ मादरे हिन्द गमगीन न हो
दिन अच्छे आने वाले हैं।
आजादी का पैगाम तुम्हें
हम जल्द सुनाने वाले हैं।

महर्षि दयानन्द धार्मिक सामाजिक एवम् आर्थिक नेता ही नहीं एक महान राजनीतिज्ञ भी थे। उन्होंने कहा था—विदेशी राजा प्रजा के साथ पुत्रतुल्य व्यवहार करने वाला भी अच्छा नहीं होता। उनके इन्हीं दो शब्दों ने पराधीन भारत में राज्य क्रांति कर दी। १८५७ की क्रांति की शुरुआत भी महर्षि दयानन्द द्वारा ही हुई। वे स्वतन्त्रता के प्रथम प्रेरणास्रोत थे। उनकी प्रेरणा से ही क्रांतिकारी शिरोमणि श्याम जी कृष्ण वर्मा विदेशों में बैठकर क्रांति का सूत्रपात करते रहे। देश के समस्त आर्य बन्धु एवम् आर्य महिलाएं गुरुकुल और डी ए वी कालिज एवम अनेक आर्य संस्थाएं आजादी के यज्ञ में आहुति देते रहे। एक भी आर्यसमाजी परिवार ऐसा नहीं है जिसने देश की आजादी के लिए अपना बलिदान एवं सहयोग न दिया हो। महर्षि दयानन्द के सुयोग्य शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वतन्त्रता के लिए अत्यधिक बढ़कर कार्य किया। जलियांवाला बाग के जघन्य काण्ड के बाद कांग्रेस समाप्त प्राय हो गयी थी। स्वामी श्रद्धानन्द ने कांग्रेस को पुनर्जीवित किया। अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बनकर एवं जनआह्वान कर उन्होंने देश की जनता में उत्साह की लहर दौड़ाई।

दिल्ली में जब स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में रहते थे वहां उनसे मिलने तथा प्रेरणा लेने पं० जवाहर लाल नेहरू महात्मा गांधी तथा सुभाषचन्द्र बोस आया करते थे।

ला० लाजपत राय से लेकर शहीद भगतसिंह चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल सभी आर्यसमाजी परिवारों की सन्तानें थीं।

मैं निःसंकोच होकर कह सकता हूं यदि महर्षि दयानन्द और उन द्वारा प्रस्तावित आर्यसमाज न होता तो देश आजाद न होता। आर्यसमाज के कवियों गायकों ने गीत बना बना कर देश की निराश जनता में आशा का संचार किया।

महर्षि दयानन्द की कृपा से आर्य समाज ने स्त्री शिक्षा बालविवाह विधवा विवाह राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार स्वदेशी का प्रचार हरिजन उद्धार छुआ-छूत निवारण कोई भी ऐसा कार्य नहीं जो राष्ट्र को मजबूत करने वाला कार्य न हो जो आर्यसमाज ने शुरू न किया हो। बाद में राष्ट्रीय कांग्रेस ने इन्हीं आर्थिक और सामाजिक कार्यों को अपनाया।

आजादी मिलने के बाद आर्यसमाज राजनीति से उदासीन हो गया है। आर्य समाज ने आजादी का महल बनाकर दूसरों को सौंप दिया उसमें झाड़ू लगे न लगे कोई देखने वाला नहीं। अतः मैं आह्वान करता हूं आप राजनीति में आयें। कुछ धार्मिक संस्थाएं जिन में राजनैतिक चेतना है राष्ट्रीय चेतना नहीं है जिनकी संख्या देश भर के आर्यसमाजियों के मुकाबले बहुत कम है वे अपनी मांग मनवा लेते हैं। और आप बस दूर खड़े देखते रह जाते हैं। जब जब देश पर आन्तरिक वाहरी संकट आया आर्यसमाज देश की रक्षा के लिए हमेशा आगे आया है। ताजा ज्वलन्त उदाहरण है हमारे सामने श्रीमती इन्दिरा की हत्या के बाद देश हिल गया था। आर्यसमाज तथा श्री ला० रामगोपाल शालवाले बधाई के पात्र हैं उन्होंने राष्ट्रहित में तथा देश की अखण्डता के खतरे को समझते हुए कांग्रेस को समर्थन दिया। यह समर्थन कांग्रेस को ही नहीं देश को विघटनकारी शक्तियों को ललकारने वाली समय की आवाज थी। जो आर्यसमाज की राष्ट्रभक्ति की प्रतीक थी। □

आधुनिक भारत के निर्माता: महर्षि दयानन्द

कृष्णचन्द्र पंत

महामहिम राष्ट्रपति जी आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी गण, देवियो और सज्जनो! मैं आपका आभारी हूं जो मुझे इस अवसर पर लाये कि मैं महर्षि दयानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित कर सकूं। आज राष्ट्रपति जी यहां पधारे हैं और सारे भारत की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करने का अधिकार उन्हीं को है। इसकी मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि वे स्वयं पधारे हैं। महर्षि हमारे देश के चोटी के महापुरुषों में से हुए हैं। हमारा प्राचीन देश है, हजारों साल का इसका इतिहास है गौरवमय इतिहास है। इसका हमें गर्व है। इसमें धूप-छाया दोनों रही हैं। विजय के झण्डे भी हम ने देखे पराजय का अनुभव भी इस देश को है। जब-जब इतिहास में यह देश थक गया, निराश हो गया हतोत्साहित हुआ, उस समय में इसके अन्दर महापुरुष पैदा हुए। जिन्होंने हमें नया जीवन दिया है। नई चेतना दी है। ऐसे महापुरुषों में महर्षि दयानन्द भी थे। मैं समझता हूं जैसा कि श्री रामगोपाल जी ने कहा कि हम महर्षि जी के जीवन से बहुत कुछ सबक ले सकते हैं। वे तो सोच दृष्टि और कर्म तीनों के धनी थे। लेकिन जिस चीज का प्रभाव आज तक मिला वह मन ही में है उनकी देशभक्ति। जैसा कि अभी उन्होंने १८५७ की चर्चा की वह चर्चा असल में स्वराज्य की थी और महर्षि जी ने ही की थी और इसको याद रखना चाहिए कि १८५७ में जब भारत की जनता निराश हो चुकी थी उस समय कोई रास्ता दिखाने वाला नहीं था। कई धार्मिक संकीर्ण लोग हमारी स्वतन्त्रता के लिए एक दूसरे से लड़ रहे थे। वो जमाना था जिस वक्त स्वामी जी ने एक नया रास्ता दिखाया। मैं समझता हूं कि बड़ी दिलचस्प बात थी जिसकी ओर रामगोपाल जी ने इशारा किया। भारतवासियों के अन्दर स्वाभिमान जगाया और उन्होंने भारत के अतीत का फिर से भारत वासियों पर विश्वास पैदा किया, उसमें शाश्वत मिलावट को उनके सामने रखा जो आज की दुनिया से मेल नहीं खाता उसको छोड़ने का प्रयास करवाया। वे एक समाज सुधारक थे। वो जमाना ऐसा था जब बाल-विवाह प्रचलित था और कई कुरीतियां समाज के अन्दर थीं, इन सभी के खिलाफ आवाज महर्षि दयानन्द जी ने उठाई। जो सुधार वर्षों से शुरू हुआ और १०० साल से चलता आ रहा है, इसमें बहुत सी चीजों का आरम्भ उन्होंने अपने जमाने में किया था। बहुत से लोगों का

(शेष पृष्ठ ९ पर)

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त का स्वागत करते हुए सभा प्रधान श्री सूर्यदेव जी

आर्य नेताओं के ओजस्वी भाषण एवं श्रद्धाञ्जलियां

हिमगिर सा उद्दाम--दयानन्द

श्री स्वामी दीक्षानन्द का शताब्दी पर आवाहन

किसी भी महापुरुष को कुछ विशेषवत् नाम दिया जाता है और उस नाम से उसे स्मरण करते हैं। जैसे कि राम को धनुष वाला, कृष्ण को मुरलीवाला गुरु गोविंद सिंह को पंजाब में एक नाम दिया गया कमान वाला। इसी तरह महर्षि दयानन्द को जब कोई नाम दिया जाए तो कहा जाएगा 'वेदों वाला'। वेदों पर धूल जम गई थी, जिंदगी समाप्त हो जाती, किन्तु लोग वेदों तक नहीं पहुंच पाते थे। जितने महापुरुष आए, सुधारक आये, वे वेदों तक नहीं पहुंच पाये थे। समाज की दशा उल्टी हो गई थी अनेक उल्टी उल्टी प्रथाएँ चल पड़ी थी। जब ऋषि ने वेदों की ओर लौटो का नारा दिया तो लोगों को लगा कि कोई उल्टी बात कही जा रही है। लेकिन उन्होंने जो कुछ उल्टा था उसको उलट दिया, उल्टे को उलट देना ही सीधा करना है। उलटे कोष को ऋषि ने सीधा कर दिया, व्यक्ति के लिए वेद का मार्ग सरल कर दिया। इसलिए उन्हें वेदों वाला कहा जाता है। जो खरा उतरा उसे ले लिया, जो व्यर्थ था उसे छोड़ दिया।

हिमगिरि से गंगा बहती है, सारी दुनिया यही कहती है। आज किसी ने हरिद्वार में गंगा उलट दयी। ऋषि की दुन्दुभि बज गयी।

सारी दुनिया के सामने महर्षि दयानन्द अकेला था और निर्भय होकर दुनिया को निर्भयता का पाठ पढ़ा गया। उन्होंने कहा था शक्ति स्थापना करनी है तो वेदों को आधार बनाओ। संसार के समस्त महान् कार्यों में दयानन्द अग्रणी बनके सदैव रहा है।

एक बार की बात है एक सज्जन राम-राम जप रहे थे पास में एक मुल्ला जी बैठे थे। उन्होंने कहा कि क्या जप कर रहे हो? उस व्यक्ति ने कहा मैं अपना इष्ट जप रहा हूं। मुल्ला जी बोले मैं आपको इस से बढ़िया नाम बताऊंगा जो नाम तुम जप रहे हो वह जहां खत्म होता है वहां से मेरा बताया नाम शुरू होता है। तुम राम जपते हो राम में 'म' बाद में है म से मुहम्मद होता है, तुम मुहम्मद जपा करो। वह व्यक्ति मुल्ला की बात सुन चुप हो गया, पर पास बैठे एक महाशय जी बोल बैठे, मुल्ला जी, मैं आपको आप वाले नाम से भी बढ़िया नाम बताऊं, जहाँ से मुहम्मद खत्म होता है वह नाम वहां से शुरू होता है और वहीं पर खत्म होता है—दयानन्द। द से दयानन्द शुरू होता है और 'द' पर ही खत्म होता है।

दूसरी बात दयानन्द ने देशभक्ति दी। अपने को परखना है तो वेदों से परखो और दूसरों को परखना हो (दूसरी संस्थाओं मजहबों को) तो राष्ट्रभक्ति से परखो। आर्यसमाज इस क्षेत्र में खरा उतरा है। संस्था कोई भी हो, पर यह संस्था ही एकमात्र ऐसी है जो धार्मिक बाद में, पहले राष्ट्रवादी है। राष्ट्र पर कहीं भी चोट होती है तो पीड़ा इसे ही होती है। देश के विभाजन की जहरीली बातें जब आर्यसमाज सुनता है इसका सीना दर्द से फटता है। हम सदा शान्ति के उपासक रहे हैं। हम ने खून दिया, खून किया नहीं। हिंसा के रास्ते से हम सदा दूर रहे हैं, यदि आज भी बलिदान की आवश्यकता पड़ी तो आर्यसमाजी दयानन्द का प्रत्येक भक्त कभी किसी से पीछे नहीं रहेगा। दुख होता है यह देखकर कि जिन शहीदों ने अपने खून से आजादी के वट वृक्ष को सींचा। आज उन का नाम तक नहीं लिया जाता। पं० रामप्रसाद बिस्मिल को भुला दिया गया है। मैं मांग करता हूं, प्रधानमंत्री को देश को एक रखने के लिए यदि कठोर कदम भी उठाना पड़े तो उठाना चाहिए। जनगणना के समय जाति वर्ग आदि को अलग-अलग न रखकर एक सूत्र में पिरोया जाना चाहिए। गौ को शीघ्रातिशीघ्र राष्ट्रीय पशु घोषित कर वध से बचाना चाहिए।

हमारी मांग है आप भाषा कोई भी पढ़ायें, पर उसकी लिपि देवनागरी होनी चाहिए।

अंग्रेजी या उर्दू सबकी लिपि देवनागरी होनी चाहिए।

अध्यक्षीय भाषण

समारोह के अध्यक्ष श्री रामगोपाल शालवाले ने अपने भाषण में देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति और अंग्रेजी राज्य के अन्त के सदर्भ में महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की सर्वोपरि भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कांग्रेस ने १९४२ में भारत छोड़ो का नारा दिया था जब कि महर्षि ने कांग्रेस के जन्म से १३ वर्ष पूर्व ही १८७२ में भारत के गवर्नर जनरल से भेंट होने पर सरकारी सहायता और सम्मान की पेशकश को जो उन्होंने ब्रिटिश राज के कुछक अच्छे कार्यों की मान्यता के उपलक्ष्य में की थी ठुकराते हुए कहा था कि "मैं तो यह चाहता हूं कि देश शीघ्र से शीघ्र ब्रिटिश जुए से मुक्त होकर स्वाधीनता प्राप्त करे।"

श्री शालवाले ने अपने भाषण में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिए जाने और गोहत्या बन्दी के लिए महर्षि की सर्वोपरि भूमिका की चर्चा करते हुए कहा कि महर्षि ने अपने सब ग्रन्थ हिंदी में लिखे। अपने जीवन काल में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए कई मेमोरेंडम भारत सरकार को भिजवाए। गोहत्या बंदी के लिए हजारों व्यक्तियों के हस्ताक्षरों से युक्त महारानी विक्टोरिया को भेजे जाने के लिए मेमोरेण्डम तैयार कराया। उन्होंने गोरक्षा विषय पर गोकरुणानिधि अनुपम पुस्तक लिखकर प्रचारित की थी।

श्री शालवाले ने आर्यसमाज द्वारा किए गए कार्यों एवं प्रयासों पर प्रकाश डालते हुए भारत सरकार से एक बार पुन सम्पूर्ण गोहत्या बंदी और गाय को राष्ट्र पशु उदघोषित करने की भी मांग की।

उन्होंने महर्षि के अन्तिम समय के प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो का हवाला देते हुए आर्यों और आर्य संस्कृति के प्रेमियों को उनके छोड़े हुए काम को बढ़ाने और उसे दृढ़ रूप देने का आह्वान किया।

श्री शालवाले की अपील शक्तिशाली राष्ट्र की कामना थी

आठवीं लोकसभा के चुनाव में आर्यसमाज के शिरोमणि संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले द्वारा कांग्रेस (आई) के समर्थन की अपील के विरुद्ध कुछ समाचार पत्रों में आर्यसमाज के कतिपय महानुभावों के विचार पढ़कर आश्चर्य हुआ।

जब जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी की अध्यक्षता में आनन्दपुर साहिब का प्रस्ताव पारित हुआ, भारत के कई क्षेत्रों में अराष्ट्रीय शक्तियां सक्रिय रूप से विदेशी धन के बल पर भारत की एकता को खंडित करने का काम कर रही थी। पाकिस्तान द्वारा उग्रवादियों को इतने अस्त्र-शस्त्र दिए गए कि स्वर्ण मन्दिर फौजी किला बन गया, पंजाब में अल्पसंख्यक हिंदुओं को बेरहमी से मारा काटा गया। लाहौर हवाई अड्डे पर पाकिस्तान द्वारा विमान अपहर्ताओं को पिस्तौल दी गई। खालिस्तान के स्वयंभू राष्ट्रपति जगजीतसिंह चौहान द्वारा इंग्लैंड में भारत को टुकड़े-टुकड़े करने की साजिश की घोषणाएं होती रहीं और चुन चुनकर राष्ट्रीय व धार्मिक नेताओं की हत्या की योजनाएं बनाई गई, उग्रवादियों द्वारा दिल्ली व पंजाब में मविशम जलाया गया, जम्मू काश्मीर में राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करके पाकिस्तानी झण्डा फहराया गया। जम्मू काश्मीर में ही आर्यसमाज मन्दिर व आर्य कन्या विद्यालय का उग्रवादियों द्वारा जला कर लाखों रुपयों की सम्पत्ति स्वाहा कर दी गई। उस समय उक्त आर्य बन्धुओं को इनके विरुद्ध बोलने का साहस नहीं हुआ। लाला रामगोपाल जी शालवाले द्वारा समय समय पर इन राष्ट्र विरोधी कारवाइयों के विरुद्ध बोलने पर भिंडरवाला के समर्थकों द्वारा श्री शालवाले व श्री ओमप्रकाश त्यागी महामंत्री सार्वदेशिक सभा को जान से मारने का धमकी पत्र मिला। उस समय भी ये लोग चुप रहे क्योंकि राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के लिए जिसने भी आवाज उठाई थी उनमें से अधिकांश को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा था। प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी तक को इसीलिए बलिदान होना पड़ा।

भारत के असंख्य राजनीतिक दल जो लोकसभा के कुल एक चौथाई सीटों पर अपने दम पर चुनाव नहीं लड़ सके उन दलों की मिली-जुली सरकार के साथ देश का भाग्य सौंपना उचित नहीं था। ऐसी स्थिति में कांग्रेस (आई) के समर्थन के अलावा दूसरा विकल्प जनता के सामने नहीं था। सन् ७७ में जनता ने एक अवसर विरोधी दलों को जनता सरकार बनाने का दिया था जो पूर्णतया असफल सिद्ध हुआ।

अब जिन हमदर्द लोगों के समर्थन में कतिपय आर्य बन्धुओं ने आर्यसमाज संगठन के सर्वोच्च नेता व प्रमुख राष्ट्र भक्त श्री रामगोपाल शालवाले पर अपना आक्रोश निकालने का प्रयत्न किया है उनको हमारी सलाह है कि वे पहले स्वयं अपने अन्दर झांककर देखें। महर्षि दयानन्द के विचारों पर मनन करें। सार्वभौम राष्ट्र के अस्तित्व पर विचार करें। विकल्प विहीन अस्थिर एवं अनिश्चित राजनीतिक दलों की स्थिति पर भी विचार करें। यदि श्री रामगोपाल शालवाले की अपील से देश की एकता, अखण्डता एवम् इसके अस्तित्व को खतरा पैदा हुआ हो या आर्य जाति या आर्य समाज के आंदोलनकारी इतिहास की गरिमा पर आंच आई हो अथवा सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्याग के सिद्धांत पर चोट पहुँची हो तो इन लोगों के कथन को सही माना जा सकता है, अन्यथा श्री शालवाले द्वारा शक्तिशाली राष्ट्र के निर्माण की कामना से कांग्रेस के पक्ष में जो अपील प्रसारित की गई थी उससे देश में आर्यसमाज का गौरव बढ़ा है।

राजीव मेहरा
गावड़ी एक्सटेंशन, घौंडा, दिल्ली

श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा

३६३६५०

जिला राजकोट (गुजरात)

दिल्ली कार्यालय—आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

रजत जयन्ती विशाल समारोह निमन्त्रण

मान्यवर

सादर नमस्ते

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी १६, १७, १८ फरवरी १९८५, शनिवार, रविवार, सोमवार को ऋषि जन्म स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का विशाल समारोह होने जा रहा है। देशदेशान्तर से पधारे आर्य विद्वान् तथा कलाकार ऋषिभक्त अपनी श्रद्धाञ्जलि ऋषि के प्रति अर्पित करेंगे। इस बार स्वामी सत्यपति महाराज की अध्यक्षता में महर्षि मेला से पूर्व "योग शिक्षण शिविर" का भी आयोजन किया गया है, जो कि १० फरवरी में १६ फरवरी तक चलेगा। जो महानुभाव इस में सम्मिलित होना चाहें तुरन्त उपरोक्त पते पर सूचित करें।

ऋषि मेले पर आवास भोजन का पूर्ण प्रबन्ध टंकारा-ट्रस्ट की ओर से होगा।

टंकारा ट्रस्ट के आधीन निम्न कार्य चल रहे हैं—

१ ऋषि जन्म-गृह का प्रबन्ध
२ अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय
३ गो-संवर्धन केन्द्र (विशाल गोशाला)
४ दिव्य दयानन्द दर्शन चित्र गृह
५ अतिथि-गृह
६ आर्य साहित्य प्रचार केन्द्र, पुस्तकालय तथा सार्वजनिक वाचनालय।

ऋषि जन्म स्थान टंकारा की कुछ विशेष आवश्यकताएं भी है। पानी की भयंकर कमी, ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग का एक सेठ के व्यक्तिगत कब्जे में होना तथा टंकारा की संस्थाओं का अपेक्षित विकास।

ये तीन मुख्य कार्य हैं जो टंकारा स्मारक के पूर्ण विकास में बाधक हैं। टंकारा उत्सव की सफलता, टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा वहां के कार्य का कठिनाइयों को दूर करने के लिए टंकारा-ट्रस्ट के अधिकारी तथा ट्रस्टी जनता-जनार्दन के सहयोग से प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं।

ऋषि भक्तों की सूचनार्थ यह भी लिख देवें कि टंकारा में जो गोशाला है, उस में ३० गौवें हैं। इस गोशाला से विद्यार्थियों को शुद्ध दूध मिलता है। परन्तु हर वर्ष गोशाला में २५०००/- का घाटा हो जाता है जो कि आप जैसे ऋषि-भक्तों और गोभक्तों के दान से ही पूरा होता है।

आप से आग्रह और सविनय प्रार्थना है कि इस पवित्र यज्ञ कार्य में अपनी सहायता का हाथ अवश्य बढ़ाइए। ऋषि जन्मस्थान ही यदि दर्शनीय और पूर्णतया विकसित न हुआ तो आर्यसमाज जैसी महान् संस्था कैसे विश्व में अपना सिर ऊंचा कर सकती है।

प्रति वर्ष सहस्रों ऋषि-भक्त ऋषि बोधोत्सव पर टंकारा पधारते हैं। उन के आवास और भोजन आदि का पूरा प्रबन्ध निःशुल्क टंकारा-ट्रस्ट की ओर से किया जाता है। इस के अतिरिक्त उत्तर भारत के यात्रियों के लिए प्रतिवर्ष ट्रेन तथा स्पेशल बसों का भी प्रबन्ध किया जाता है। बसों द्वारा आप टंकारा के अतिरिक्त अन्य दर्शनीय स्थानों को भी देख सकते हैं।

विनम्र निवेदन

आप से विनम्र निवेदन है कि आप टंकारा अवश्य पधारें और इस सारे कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपना आर्थिक सहयोग भी दें। यह राशि आप क्रास चैक, क्रास बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर से "टंकारा सहायक समिति" के नाम से इस के कार्यालय आर्यसमाज, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भिजवा सकते हैं।

आप से सानुरोध प्रार्थना है कि अपनी ओर से अपनी आर्यसमाज की ओर से, अपनी स्त्री समाज की ओर से, अपनी शिक्षण संस्थाओं की ओर से अधिक से अधिक राशि भेजें।

विशेष सूचना—टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि कर से मुक्त है।

निवेदक,
श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट-टंकारा
के अधिकारी तथा ट्रस्टीगण

आप बधाई के पात्र हैं

२० तारीख को प्रत्यक्षरूप से दिल्ली नहीं पहुंच पाया, लेकिन टी० वी० पर तथा समाचार पत्रों से आपके समारोह की पूरी जानकारी प्राप्त हो गई। यह सारा कार्य जिस क्रम और अनुशासन के द्वारा सम्पन्न हुआ, उसका सारा समस्त श्रेय केवल आपको देना अतिशयोक्ति न होगी, जहां आप जैसे कर्मठ, परिश्रमी तथा जागरूक कार्यकर्ता होंगे, वहां कोई भी, बड़े से बड़ा कार्य पूरा किया जा सकता है। टी० वी० के परदे पर मैं विशेष रूप से आपको ढूंढ रहा था लेकिन आप तो उस समय भी प्रबन्ध के कार्य में न जाने कहां-कहां भाग-दौड़ कर रहे होंगे। वास्तव में आप जैसे व्यक्ति तो भवन की नींव के पत्थर की तरह हैं। नींव का पत्थर भवन को पूरी मजबूती तथा सुरक्षा प्रदान करता है लेकिन हमें वह दिखाई नहीं देता। वास्तव में आपकी यही भावना मुझ जैसे साधारण युवक को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है, इसीलिए मैं समय-समय पर आपसे मिलकर मार्गदर्शन तथा नवीन योजनाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करता हूं।

आपने तालकटोरा स्टेडियम में इतने बड़े कार्यक्रम को सहज ढंग से करा डाला साथ में पुस्तक भी प्रकाशित करा डाली, आपकी जो भी प्रशंसा की जाए कम होगी।

—प्रो० अनिरुद्ध भारती

यह पत्र समारोह समिति को एक कार्यकर्ता के लिए नहीं बल्कि उन सभी का प्रशस्ति पत्र है जिन्होंने नाम की कामना न करके समारोह को सफल बनाने में योग दिया।

दीप

—रामेश्वर 'हिमांशु'

जग में दयानन्द दीप,
जो तुमने जला दिया।
अज्ञान-आंधियों से भला,
ये बुझेगा क्या ॥
मतों की भयानक भीड़ में,
जब खो गए थे हम।
विमुख अपने धर्म से,
सब हो गए थे हम ॥
तब धरा पर ज्ञान का,
इक मन्दिर बना दिया।
उसमें फिर 'प्रकाश' का,
झरना बहा दिया ॥
भारत माँ थी बंधी हुई,
गुलामी के पाश में।
स्वदेशी राज्य अच्छा—,
हमें यह पाठ पढ़ा दिया।
उसमें फिर अपने त्याग का,
भी रंग मिला दिया ॥

अमर रहे गणतंत्र हमारा

राधेश्याम आर्य

हिमगिरि से ले हिंद जलधि तक
छा जाए चेतना सुवासित।
भारत के प्रांगण से भागे
विस्तृत जो अन्याय असित।
पाखण्डो के गढ पर फिर से
चले अभय हो तीव्र दुधारा।
अमर रहे गणतंत्र हमारा॥

मानवता के तत्त्व सिसकते—
हुए धरा पर हो आश्वस्त
दानवता का अट्टहास सब
भू का हो पतनोन्मुख पस्त।
वेद ज्ञान की दिव्य गंग मे
अमृत पान करे जग सारा।
अमर रहे गणतंत्र हमारा।

सत्य सनातन धर्म सुवैदिक
वेदो का फैले धरती पर।
सभ्य सुसंस्कृत श्रेष्ठ बन सब—
वसुधा के वासी नर नारी
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का—
गजे भू पर अविरल नारा।
अमर रहे गणतंत्र हमार॥

सुखी तथा समृद्ध गुणी हों
ऋषि मुनियो के हम अनुयायी।
ज्योतिष्मान करें मानव मन
फटे स्वार्थ लिप्सा की काई।
बढ सुपथ पर निर्भय होकर
भारत यह प्राणो से प्यारा।
अमर रहे गणतंत्र हमारा॥

आर्य विद्यालयो के प्रबन्धको प्रिंसिपल महोदयो के नाम

आवश्यक परिपत्र दूरभाष ३१०१५०

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा प्रत्येक आर्य शिक्षण संस्थाओं मे नैतिक शिक्षा की पुस्तकें लगवाई जाती हैं। उन्हीं के अनुसार चार कक्षाओ की परीक्षाओं का आयोजन भी करती है।

परिषद इस वर्ष नीति प्रवेशिका (कक्षा ५) नीति अधिकारी (कक्षा ८) नीति ज्ञानी (कक्षा १०) नीति विशारद(कक्षा १२) की परीक्षाए सभी विद्यालयो मे २५ फरवरी १९८५ सोमवार को आयोजित करेगी। परीक्षा फार्म आपकी सेवा मे अविलम्ब भिजवा दिये जायेंगे। पुस्तकें आप शीघ्र मगवा लें अगर मगवाने की सुविधा न हो तो कार्यालय को सूचित करें। जिनके पास पुस्तक आ चुकी हैं व उनकी धनराशि शीघ्र परिषद कार्यालय १५ हनुमान् रोड नई दिल्ली मे भिजवाने की कृपा कर।

भवदीय
प्रस्तोता
चन्द्रदेव
आर्य विद्या परिषद दिल्ली
१५ हनुमान् रोड नई दिल्ली ११०००१

कृष्णचन्द्र पन्त

(पृष्ठ ६ का शेष)

विचार है कि वे आधुनिक विचारो का तिरस्कार करते थ ऐसा नहीं है व विज्ञान के औद्योगीकरण आदि क प क्ष म थे। मगर राष्ट की आवश्यकता को उन्होंने पहले समझा आज आवश्यकता इस बात की है कि हम केवल उनका यान न करें बल्कि देश की एकता अखण्डता स्वाभिमान के लिए दे चरित्र हेतु नवयुवको मे आज यक काय प्रण ला को पैदा करें व सारे आदर्शो को जिन्हें हम रे सामने महर्षि ने रखा है उनको आज हमने अपने चरित्र म ढालकर साथक बनाना है। महाष ने सम्पक भाषा के रूप मे हिंदी के महत्त्व को समझकर उसे सीखा और अपनाया और बाद मे उसे राष्ट्र भाषा के रूप मे प्रचारित किया महर्षि दयानन्द आधुनिक भारत के निर्माताओं मे प्रमुख थे।

आज इस भारत की अखण्डता के लिए हमे यदि बलिदान भी देना पड तो हम पीछे न रहे।

गीतिका

रामनिवास विद्यार्थी

परमेश के गुण गाते चलो।
सद्धर्मधारा बहाते चलो॥
राहो मे आए जो अवरोध वन।
कलुषपन मन से हटाते चलो।
आलस्य जडता को निर्मूल कर।
पुरुषार्थ मे जगमगाते चलो।
तज क्षुद्र अनुदार दुर्भावना।
उदार निज मन बनाते चलो॥
ईश्वर के व्रत मे व्रती भक्त बन।
तुम आर्य सब को बनाते चलो॥

आर्यसमाज बाकनेर दिल्ली में बृहद् यज्ञ एवं वैदिक धर्म प्रचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आर्यसमाज मन्दिर बाकनेर में १३ जनवरी से २० जनवरी तक महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। प्रतिदिन प्रात ६ बजे से ११ बजे तक बृहद यज्ञ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पूज्य स्वामी अमृतानन्द जी थे जिसमे निम्नलिखित यजमानो ने सैकडो धर्मप्रेमी श्रद्धालुओ सहित भाग लिया सर्वश्री मागेराम आर्य ज्ञानप्रकाश बाबू उदयसिंह, मेहरलाल पवार प० मुन्शीलाल जिलसिंह आर्य, रिसालदार रत्नसिंह ओमप्रकाश गुप्त मुख्याध्यापक सूबेसिंह हवासिंह खत्री। यज्ञ के पश्चात महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन तथा आर्य सिद्धान्तो पर कथावाचक श्री मेहरलाल पवार द्वारा कथा हुई।

१६ जनवरी को दिल्ली देहात की आर्यसमाजो के पदाधिकारियो तथा सुप्रसिद्ध समाज सेवी एव कार्यकर्ताओ ने भाग लिया। बृहद यज्ञ के पश्चात श्रद्धांजलि सभा मे स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती का ओजस्वी एव प्रेरणादायक भाषण सुनने के लिए ग्रामीण युवको एव विचारशील प्रबुद्ध अध्यापको का सागर उमड पडा। दो हजार से भी अधिक के इस विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने हरियाणा और दिल्ली देहात मे आर्यसमाज के कार्य का प्रभावकारी वर्णन प्रस्तुत किया। प्रथम बार ऐसे विशाल सत्संग मे आए बहुत से एम० ए० पास अध्यापको की तो चिन्तनधारा ही बदल गई। ग्रामीण बन्धुओ ने भी अपने क्षात्रधर्म के मूल स्वरूप को पहचानते हुए सन्मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा ली। प्रवचन के पश्चात् दिल्ली देहात के आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ की बैठक दिल्ली देहात वेद प्रचार मडल के प्रधान श्री अभयराम जी की अध्यक्षता मे हुई। इसमे ग्रामो मे आर्यसमाजो की स्थापना एवम् इनका सम्बन्ध दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ कराने का निश्चय किया गया। श्री मागेराम आर्य ने सुषुप्त आर्यसमाजो मे नवजीवन लाने के लिए कटिबद्ध होने का आवाहन किया। श्री मेहरलाल पवारने सभी आगन्तुको का आभार प्रदर्शन किया।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शती
एव
मानव जागृति सप्ताह

दिल्ली आर्यसमाज आर्य पुरा (रामस्वरूप हाल) सब्जी मडी, दिल्ली-७ मे १३ जनवरी ८५ से २० जनवरी ८५ तक बडी धूमधाम से मनाया गया। जिस मे नित्यप्रति प्रात श्री प० धर्मेन्द्रपाल शास्त्री की अध्यक्षता मे सामवेदीय यज्ञ, जिसमे वेदपाठी, गिरीशचन्द्र शास्त्री थे। रात्रि ७-३० बजे से महाशय चुन्नीलाल जी एव रामबीर जी के सुमधुर भजन होते रहे। श्री प्रेमचन्द श्रीधर जी द्वारा वेदकथा के रूप में मानव जागृति के लिए वेदमन्त्रो की व्याख्या करते रहे। २० जनवरी को विशेष उल्लास के साथ महायज्ञ की पूर्णाहुति मे सहस्रो व्यक्ति सम्मिलित हुए।

मन्त्री
आर्यसमाज आर्यपुरा
सब्जी मण्डी, दिल्ली-७

कन्या गुरुकुल हाथरस

आगरा निवासी श्री चौ० त्रिलोक सिंह जी, बोर्ड आफ रेवेन्यू के पूर्व सदस्य ने छात्रवृत्ति की स्थानीय निधि के लिए दस हजार रुपये दान दिये हैं।

आगरा निवासी श्री विष्णुदेव पोद्दार एडवोकेट ने कन्या गुरुकुल मे प्रतिदिन होने वाले यज्ञ के लिए १०० रुपये मासिक देने का शुभ सङ्कल्प किया है।

आवश्यकता है—

कन्या गुरुकुल के लिए अवकाश प्राप्त चिकित्सक और अनुभवी नर्स की आवश्यकता है साथ ही आर्य विचारो की ऐसी महिलाओ की आवश्यकता है जो छोटी कन्याओ की देखभाल कर सकें।

मुख्याधिष्ठात्री
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय

विज्ञापन सूचना

आर्यसमाज लुधियाना रोड, फिरोजपुर छावनी के लिए योग्य पुरोहित चाहिए। अपनी योग्यता अनुभव और संस्कारादि करवाने मे दक्षता सम्बन्धी विवरण भेजे। पत्र व्यवहार मन्त्री, आर्यसमाज मन्दिर, लुधियाना रोड, फिरोजपुर छावनी, (निवास स्थान व बिजली आदि की सुविधा नि शुल्क होगी)।

शास्त्रार्थ संग्रह

आर्यसमाज के इतिहास मे आज तक जितने भी शास्त्रार्थ हुए हैं, उन सब का एक संग्रह श्री स्वामी अमर स्वामी जी प्रकाशित कर रहे हैं। अत. आप सब से प्रार्थना है, यदि आप के पास शास्त्रार्थ विषयक सामग्री हो तो कृपया रजिस्ट्री द्वारा २५ फरवरी तक भिजवाने का कष्ट करें। पुस्तक छपने के बाद पुस्तक के उपहार सहित तथा आपके सहयोग का उल्लेख करते हुए आपकी सामग्री सादर भिजवा दी जायेगी।

पता—अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
३/३६, दयानन्द नगर,
गाजियाबाद (उ० प्र०)

प्रबन्धक
शास्त्रार्थ संग्रह प्रकाशन समिति

देशान्तर प्रचार के लिए प्रचारको की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने देशान्तर प्रचार पर विशेष ध्यान देने का निश्चय किया है। पिछले सौ वर्षों के दौरान विश्व के अनेक देशो मे आर्यसमाज का सदेश पहुँचा। मोरिशस, ब्रिटिश गायना और त्रिनिडाड जैसे देशो मे यह एक प्रमुख शक्ति के रूप मे उभरा। विश्व के जिन देशो मे अब तक आर्यसमाज का संगठन कायम हो चुका है। उसका श्रेय कुछ व्यक्तियो की स्वत प्रेरणा और भारत से गए विद्वान् प्रचारको की कठिन साधना को ही है। आर्यसमाज ने इन देशो मे वैदिक धर्म के प्रचार के साथ ही सामाजिक क्रान्ति के आन्दोलन और राजनैतिक चेतना जगाने मे भी प्रमुख भूमिका अदा की। पर अब ऐसा अनुभव हो रहा है कि सैद्धांतिक प्रचार मद होता जा रहा है, क्योंकि विश्व स्तर पर संगठित प्रयास की कमी रही। अभी तक विश्व के बहुत सीमित क्षेत्र मे ही आर्यसमाज का प्रचार हो पाया है, इसे विश्वव्यापी बनाने की आवश्यकता है ताकि विश्व मानवता का कल्याण हो सके। अतएव हम ऐसे महानुभावो की जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं जो देशान्तर प्रचार के कार्य मे अपना समय देने को तत्पर हों।

इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि वे इस विज्ञप्ति के सबध मे हम से पत्र-व्यवहार करने का कष्ट करें। अपने पत्रोत्तर मे वे अपनी आयु, शैक्षणिक योग्यता, भाषाओ का ज्ञान, आर्यसमाज से सम्बन्ध, प्रचार कार्य का अनुभव, प्रकाशनो की सूची एवम् अन्य आवश्यक जानकारियों का विवरण देने का कष्ट करें। अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान अनिवार्य है। भारत अथवा देशान्तर के तीन ऐसे प्रमुख आर्य जनों का नाम और पता भी लिखें, जो आपके कार्यों के विषय मे भली-भांति जानते हो। यह भी सूचित करने का कष्ट करें कि वे कितना समय इस कार्य में दे सकते हैं। सभी महानुभावो को अपने प्रथम पत्र मे ही पूर्ण विवरण दे देना योग्य होगा। आशा है कि देशान्तर प्रचार मे सहयोग प्रदान करने हेतु आप अपना अमूल्य समय हमें प्रदान करेंगे। धन्यवाद,

भवदीय
डा० आनन्द प्रकाश
उपमंत्री सभा एवं
संयोजक-विदेश प्रचार उपसमिति

आर्यसमाज दीवान हाल मे यज्ञ और वेद प्रचार

आयसमाज दीवान हाल मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य मे आयोजित यज्ञ एवम वेदकथा समारोह पूवक सम्पन्न हुई। इस अवसर पर प्रात काल यज्ञ श्री प० राजगुरु का अध्यक्षता मे श्री प० यशपाल सुधाशु एवम प० सुरेन्द्र कुमार शास्त्री के द्वारा सपन्न हुआ। रात्रि मे श्री प० राजगुरु के आजस्वी प्रवचन हुए। जिनसे अनेक आय नर नारी जीवन का शिक्षाप्रद शिक्षाओ द्वारा प्रभावित हुए।

१३ जनवरी यज्ञ मे चादनी चौक क्षेत्र के सासद श्रा जयप्रकाश अग्रवाल ने भी यज्ञ मे आहुति प्रदान का।

मन्त्री
मूलचन्द गुप्त
आयसमाज दीवान हाल दिल्ली

स्मारिका प्राप्ति के लिए ध्यान द

जिन आय सदेश के ग्राहको को स्मारिका नही मिली व १७ फरवरा शिव रात्रि को फिरोजशाह कोटला मैदान मे सभा कार्यालय से या १५ हनुमान रोड से अपनी ग्राहक सख्या दिखाकर कभी भी ले सकते हैं।

—सम्पादक

आर्यसमाज तीमारपुर, दिल्ली मे शताब्दी समारोह पर यज्ञ तथा वेद प्रवचन

१३ जनवरी २० से जनवरी तक प्रात यज्ञ एव सायकाल प्रवचन श्री प० दिनेश चन्द्र पाराशर के द्वारा सम्पन्न हुए। श्री तुलसीराम जी की भजन मण्डली द्वारा मधुर भजन हुए। भारी जनसमूह ने इस अवसर पर वदज्ञान एव मधुर भजनो द्वारा धम लाभ उठाया।

रामेश्वर दास
प्रधान
आयसमाज तीमारपुर दिल्ली

ईसाई युवती की शुद्धि व विवाह

९ १२ ८४ को आयसमाज मन्दिर ग्रटर कैलाश २ मे कुमारी उषा लौरी को उनकी इच्छानुसार शुद्ध करके वैदिक (हिन्दू) धम मे लेकर नाम उषा रखकर श्री चेतन सोनी से विवाह कराया गया वर वधू दोनो पक्षो ने नव-दम्पती का आशीर्वाद दिया।

रघुनन्दन गुप्त
मन्त्री आयसमाज
ग्रटर कैलाश II नई दिल्ली ४८

प्रयाग निकेतन, जवाहर नगर मे महायज्ञ

पूर्णाहुति रविवार १० जनवरी को ११ ३० बजे होगी

स्व० स्वामी प्रभु आश्रित जी महाराज के ९८वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य मे आयोजित यज्ञ के अध्यक्ष हैं पूज्य महात्मा दयानद। स्वामी दीक्षानन्द महात्मा बलदेव प० रामप्रसाद वेदालकार श्री पृथ्वीराज शास्त्री श्री नरेश ब्रह्मचारी आदि विद्वानों के जीवनोपयोगी विचार भी सुनने को मिलेंगे।

ऋषि लगर—१२ बजे ऋषि लगर का आयोजन है। भारी सख्या मे पधारकर धम लाभ उठायें।

निवदक
अग्निहोत्री परिवार
प्रयाग निकेतन
३१ यू० बी० जवाहर नगर दिल्ली ११०००७

आर्यसमाज कृष्णानगर मे ऋग्वेद परायण यज्ञ एव स्वागत

आयसमाज मन्दिर कृष्णा नगर दिल्ली ५१ मे १७ १२ ८४ से २३ १२ ८४ तक क्षत्रीय उप प्रतिनिधि सभा जमनापार के तत्वावधान मे ऋग्वेद परायण यज्ञ महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह के रूप मे मनाया गया। जिसमे श्री ओम प्रकाश जी शास्त्री खतौली वालो के प्रवचन एव प० सत्यदेव जी स्नातक के भजन हुए। अन्तिम दिन २३ १२ ८४ को मास्टर ओमप्रकाश जी आय एव श्रीमती उषा शास्त्री के भी प्रवचन हुए। लाला रामगोपाल शाल वाले का सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान चुने जाने पर दिल्ली प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूयदेव जी के तत्वावधान मे स्वागत किया गया पूर्णाहुति प्रवचनो भजनो एवम अभिनन्दन के पश्चात ऋषि लगर भी किया गया।

जगदीशनाथ भाटिया
आयसमाज मन्दिर
कृष्ण नगर दिल्ली ५१

श्री रामगोपाल शालवाले का स्वागत करते हुए आयसमाज कृष्णनगर के प्रधान श्री डा० जगन्नाथ।

ऋषि मेला (ऋषि बोधोत्सव)

रविवार १७ फरवरी १९८५

स्थान—फिरोजशाह कोटला मैदान

प्रातः ८-०० बजे : यज्ञ

प्रातः ९-३० बजे : ध्वजारोहण

प्रातः १०-०० बजे : खेल-कूद प्रतियोगिताएं

प्रातः ११-३० बजे : भाषण प्रतियोगिता

विषय—राष्ट्रोत्थान मे महर्षि दयानन्द का योगदान

दोपहर १-०० बजे : सास्कृतिक कार्यक्रम

अपराह्न २-०० बजे : सार्वजनिक सभा

अध्यक्षता--लाला रामगोपाल शालवाले

मुख्य अतिथि--श्री बलराम जाखड़

लोकसभा अध्यक्ष

प्रमुख वक्ता—श्री ओमप्रककाश पुरुषार्थी श्री शिवकुमार शास्त्री श्री क्षितीश कुमार वेदालकार, श्री पृथ्वीराज शास्त्री (वैदिक मिशनरी)

अधिक से अधिक सख्या मे परिवार सहित पहुँच कर कर्त्तव्य पालन कीजिए।

नोट कृपया अपनी आर्यसमाज के सत्सग स्थगित कर समय पर पधारने का कष्ट कर।

— निवेदक —

महाशय धर्मपाल	सूर्यदेव
प्रधान	महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पजीकृत)

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-१ दूरभाष ३१०१५०

श्री दीनानाथ सिद्धान्तालंकार का अभिनन्दन

आर्य समाज अशोक विहार फेस-१ दिल्ली ५२ में १६ दिसम्बर को विशेष उत्सव सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर आर्य जगत के ९१ वर्षीय विद्वान उपदेशक चितक लेखक, राष्ट्र सेवक स्वामी श्रद्धानन्द के प्रमुख शिष्य आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। श्री आचार्य जी ने अनेक वैदिक पुस्तकें लिखी हैं तथा कई एक पत्रों के सम्पादक रहे हैं।

—कुलभूषण साहनी मन्त्री

आर्य जगत् की शान २०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अन्तर्गत करमुक्त होगी।

सारा दान बैंक/मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्री माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, बी १ जनकपुरी नई दिल्ली ५८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओ के नाम चिकित्सालय की शिला पर अकित किए जाएगे।

निवेदक

रामगोपाल शालवाले सरक्षक चिकित्सालय एव प्रधान सा० आ० प्रति० सभा	सूर्यदेव प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	महाशय धर्मपाल प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा	ओमप्रकाश आर्य मन्त्री महाशय चुन्नीलाल चेरि ट्र

सौजन्य से महाशिया दी हट्टी प्रा० लिमिटेड ९/४४ कीर्तिनगर औद्योगिक क्षेत्र नई दिल्ली ११००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां सेवन करें

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ, चावडी बाजार, दिल्ली-६
फोन २६९८३८

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी० (सी०) ७२१

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे   वर्ष ८   अंक १३   रविवार १७ फरवरी १९८५   आर्य संवत्सर १९६०८५३०८४   फाल्गुन २०४१   दयानन्दाब्द—१६०

शिवरात्रि के महापर्व पर विश्व भर की आर्यसमाजों में ऋषि बोधोत्सव की धूमधाम

महर्षि दयानन्द विश्व के महान् धर्मोद्धारक एवं समाजसुधारक थे

एच० के० एल० भगत

आर्यसमाज शाहदरा दिल्ली द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द बोधोत्सव के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए केन्द्रीय संसदीय मंत्री श्री एच के एल भगत ने महर्षि दयानन्द द्वारा किये गये महान समाज सुधार के कार्यों की विस्तृत जानकारी देते हुए उन्हें महान सुधारक धर्मोद्धारक एवं क्रांतिकारी बताया। उन्होंने आर्य समाज के द्वारा किये गए महान कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा—समस्त सुधार के कार्य स्त्री शिक्षा अछूतोद्धार संस्कृति और सभ्यता की रक्षा सब आर्यसमाज ने अपनाया है। मैं समझता हूं सरकार का २० सूत्री कार्यक्रम जो राष्ट्रीय कल्याण का सूत्र है वह आर्यसमाज ने पूर्व ही

अपनाया हुआ है। उन्होंने आर्यसमाज को उसके द्वारा किये गए महान कार्यों के लिए साधुवाद दिया।

अध्यक्षीय भाषण करते हुए श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज को एक प्रबल आन्दोलन के रूप में जन्म दिया है। आर्यसमाज अपने जन्म से ही अराष्ट्रीय तत्वों से अन्याय असत्य अज्ञान जहालत से लड़ता चला आया है। इस अवसर पर हम ऋषि के कार्यों को पूर्ण करने का व्रत ग्रहण करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा—ऋषि दयानन्द ने राष्ट्रभक्ति मातृभक्ति पितृभक्ति गुरुभक्ति (आचार्यसम्मान) और प्राणिमात्र के प्रति प्रेम सिखाया है। उन्होंने वर्ग जाति से ऊपर उठकर मनुष्यता का पाठ पढ़ाया। उन्होंने कहा—महर्षि द्वारा संस्थापित आर्यसमाज देश समाज की विषम परिस्थितियों में भी अपने सुधारवादी दृष्टिकोण में संलग्न रहा है। हमें आज और भी अधिक प्रबुद्ध होकर कार्य करते रहने की प्रेरणा लेनी चाहिए।

ऋषि मेला (ऋषि बोधोत्सव)

रविवार, १७ फरवरी १९८५

स्थान—फिरोजशाह कोटला मैदान

प्रातः ८.०० बजे यज्ञ

प्रातः ९.३० बजे ध्वजारोहण

प्रातः १०.०० बजे खेल-कूद प्रतियोगिताएं

प्रातः ११.३० बजे भाषण प्रतियोगिता

विषय—राष्ट्रोत्थान में महर्षि दयानन्द का योगदान

दोपहर १.०० बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम

अपराह्न २.०० बजे सार्वजनिक सभा

अध्यक्षता—लाला रामगोपाल शालवाले

मुख्य अतिथि—श्री बलराम जाखड़ (अध्यक्ष लोकसभा)

सुश्री कुमुद बेन जोशी

प्रमुख वक्ता—श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी

श्री शिवकुमार शास्त्री श्री क्षितीश कुमार वेदालंकार

श्री पृथ्वीराज शास्त्री (वैदिक मिशनरी) श्री पं० [illegible] शास्त्री

अधिक से अधिक संख्या में परिवार सहित पहुंच कर कर्तव्य का पालन कीजिए।

नोट [illegible] आर्यसमाज के सत्संग स्थगित कर समय पर पधारने का कष्ट करें।

प्रधान—[illegible] — निवेदक — महामन्त्री—[illegible]

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पंजीकृत)

१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

दयानन्द थे ऋषि दातार

सरल [illegible]

कौन दिवाकर बना जगत में जब छाया था तिमिर अपार ?
विश्व प्रेम का सिन्धु रहा था किस के उर में लहरें मार ?
घोर निराशा के पतझर में लाया कौन वसन्त बहार ?
दया दृष्टि से ज्ञान वृष्टि से दूर किये किस ने अविचार ?
दयानन्द थे दयानन्द थे दयानन्द थे ऋषि दातार ॥ १ ॥

कौन [illegible] वह प्रबल ईश की असुर गए जिस के सब हार ?
कौन बना था कर्णधार अज्ञान सिन्धु के करने पार ?
दुराचार पाखण्ड हटाकर दिया कौन 'अमृत भंडार' ?
भारत भू पर लेकर उतरा कौन ऋचाओं की झंकार ?
दयानन्द थे दयानन्द थे दयानन्द थे ऋषि दातार ॥ २ ॥

कौन 'वैद्य' जर्जर समाज का किया सफल जिसने उपचार ?
कौन जाह्नवी जिसके मुख से बही ज्ञान की अविरल धार ?
भटक रहे थे इधर उधर जो झूठे ग्रन्थों में झक मार ?
दे 'सत्यार्थ प्रकाश' किया किस ने संशय गढ़ को मिस्मार ?
दयानन्द थे दयानन्द थे दयानन्द थे ऋषि दातार ॥ ३ ॥

नाथ अनाथों का विधवाओं का था कौन बना आधार ?
दीन हीन को गले लगाया गऊओं की किन सुनी पुकार ?
स्वयं गांठ से ही धन देकर किस ने घातक किया फरार ?
किस ने किया 'सरल' क्षण में विष देने वाले को भी प्यार ?
दयानन्द थे दयानन्द थे दयानन्द थे ऋषि दातार ॥ ४ ॥

सम्पादक—[illegible] एम० ए०   सहसम्पादक—डा० [illegible]   प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

इन्द्र वर्धन्तो अप्तुर कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । अपघ्नन्तो अराव्णः ।

ऋ० ९ । ६३ । ५

पदार्थ—(इन्द्र) परमेश्वर का (वधन्त) गुणगान करते हुए (अप्तुर) कर्मों को करते हुए (विश्वम् आर्यं कृण्वन्तो) विश्व को श्रेष्ठ करते हुए (अराव्ण अपघ्नन्त) अराति भावना तथा कृपणों को दूर करते चले चलो।

गीतिका

परमेश के गुण गाते चलो।
सद्धर्मधारा बहाते चलो ॥
राहो मे आए जो अवरोध बन।
कजूसपन मन से हटाते चलो ॥
आलस्य जडता को निर्मूल कर।
पुरुषार्थ से जगमगाते चलो ॥
तज क्षुद्र अनुदार दुर्भावना।
समुदार निज मन बनाते चलो ॥
ईश्वर के व्रत मे व्रती भक्त बन।
तुम आर्य सब को बनाते चलो ॥

उपास्मै गायता नर पवमानायेन्दव । अभिदेवा इयक्षते ।

साम उत्तरार्चिक १।१।१।

पदाथ—(नर) हे उपासक नेता जनो (अस्मै) इस परमात्मदेव के लिए (देवान् अभि इयक्षते) दिव्य गुणो के सग करने के लिए इच्छुक तुम सब (इन्दवे पवमानाय) आह्लादक पावनकर्ता प्रवाह रूप प्राप्त प्रभु के लिए (उप) उपासना करो (गायत) स्तुति गान करो।

गीतिका

आगे बढने के अभिलाषी नर ईश्वर का गुण गायन कर।
कर ल समुपासन पावन का नर प्रभुवर का गुण गायन कर ॥
पावन करन वाला है जो उससे जीवन मन कर पावन।
पवमान सोम रस सागर का धाराधर का समुपासन कर ॥
तू दिव्य गुणो को लक्ष्य किये आत्मिक अध्वर इच्छुक होकर।
आह्लादक कान्त प्रशान्त परम सर्वेश्वर का स्तुति गायन कर ॥
देवो का सगतकर्ता हो जा दैवी सम्पत्तिदाता है।
उस परम रसीले प्यारे का सुख सागर का अवगाहन कर ॥
तू चरण शरण मे आजा रे उस ईश्वर को अपना प्यारे।
आनद कद सच्चिदानद करुणाकर का गुण गायन कर ॥

अन्धा अमित्रा भवत शीर्षाणोऽहय इव।
तेषां वो अग्नितुन्नानामिन्द्रो हन्तु वर वरम् ॥

साम उत्तरा० २२। ८। १

पदार्थ—(अमित्रा) हे अस्नेही जन (अन्धा भवत) अन्धे हो। (अशीर्षाण) सिर रहित, मूर्ख मस्तिष्कहीन (अहय इव) सर्पवत् (भवत) हो। (तेषां वः अग्नितुन्नानाम्) तुम ज्ञानाग्नि द्वारा परे धकेल दिए जाओ। (वर वरम् इन्द्र हन्तु) प्रत्येक को चुन-चुनकर परमेश्वर मारे।

जो प्यार नही करते जो हैं मदान्ध प्राणी।
आखो के होते भी अन्धे हैं अभिमानी ॥
हैं नहो दूर द्रष्टा जो स्वार्थ अन्ध-द्वेषी।
मस्तिष्क हीन हैं वे अविवेकी अज्ञानी ॥
सिर फिरे द्वेष-विष से अहिवत् डसने वाले।
खुद भी उस से जलने की करते नादानी ॥
ज्ञानाग्नि उन्हें चुन चुनकर बाहर कर देवे।
प्रेमामृत रस पी से दुनिया मानी जानी ॥
कर स्नेह सभी से तू है यही बुद्धिमानी।
जन स्नेह सुधा द्वारा कर सफल जिन्दगानी ॥

ओ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शयोरभि स्रवन्तु नः ॥ यजु० ३६। १२

पदार्थ—(देवी आप) सर्व प्रकाशक सर्व व्यापक प्रभु (न अभिष्टये पीतये शं भवन्तु) हमें अभीष्ट आनन्द रस पान के लिए कल्याणकारी हो। (न शयो अभि स्रवन्तु) हमारे लिए सुख की सर्वत्र वृष्टि करे।

यही विनय है तुम से बारम्बार।
दया वृष्टि कर सुखद वृष्टि कर करुणा करुणागार ॥
हे जग को चमकाने वाले नवजीवन सरसाने वाले।
व्यापक विश्व समाने वाले शान्ति वृष्टि बरसाने वाले ॥
दिव्य व्याप्त कल्याणी धारा बरसा अविरल धार।
हे आनन्द कन्द सुखराशि मेरे प्रभु हे घट-घटवासी ॥
करुणा घन हे विश्व प्रकाशी हर जीवन दुख दैन्य उदासी।
कर विभोर सब ओर बहा दो शान्ति सुधा रस सार ॥
मनवाछित आनद हेतु आ, हरने सब दुख द्वन्द्व हेतु आ।
सोम दिव्य रसपान हेतु आ, करने जन कल्याण हेतु आ ॥
हो साक्षात् दिव्य रस नस-नस कर जीवन सचार।

भाषान्तरकार—रामनिवास विद्यार्थी
फजलपुर, मुन्दर नगर, (मेरठ

आर्य पर्व सूची (१९८५)

सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्यसमाजो की सूचना के लिए स्वीकृत आर्य पर्वों की सूची प्रकाशित किया करती है। सन् १९८५ की सूची इस प्रकार है—

स०	पव	सौरतिथि		चन्द्रतिथि अग्रेजी	दिन
१	मकर सक्राति	१ माघ २०४१	माघबदि ८, २०४१	१४-१-१९८५	सोमवार
२	वसन्त पचमी	१२ माघ २०४१	फा० सु० ५, २०४१	२६-१-१९८५	शनिवार
३	सीताष्टमी	१ फा० २०४१	फा० ब० ८, २०४१	१२-२-१९८५	मगलवार
४	दयानन्द बोधरात्रि (शिवरात्रि)	६ फा० २०४१	फा० ब० १३,२०४१	१७-२-१९८५	रविवार
५	वीर लेखराम तृतीया	११ फा० २०४१	फा० सु० ३,२०४१	२२-२-१९८५	शुक्रवार
६	नवसम्येष्टि (होली)	२४ फा० २०४१	फा० सु० १५, २०४१	६-३-१९८५	बुधवार
७	नव सवत्सरोत्सव एव आयसमाज स्थापना दिवस	९ चैत्र २०४१	चैत्र शु० १ २०४२	२२-३-१९८५	शुक्रवार
८	रामनवमी	१७ चैत्र २०४१	चैत्र शु० ९, २०४२	३०-३-१९८५	शनिवार
९.	हरि तृतीया	५ श्रावण २०४२	श्रावण शु० ३, २०४२	२०-७-१९८५	शनिवार
१०.	श्रावणी उपाकम	१४ भाद्रपद २०४२	श्रावण सु० १५, २०४२	३०-८-१९८५	शुक्रवार
११	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	२२ भाद्रपद २०४२	भाद्रपद बदि ८, २०४२	७-९-१९८५	शनिवार
१२	गुरु विरजानन्द दिवस	२३ आश्विन २०४२	आ० बदि १०, २०४२	९-१०-१९८५	बुधवार
१३	विजय दशमी	६ कार्तिक २०४२	आ० सु० १०, २०४२	२२-१०-१९८५	मगलवार
१४	महर्षि निवाण दिवस (दीपावली)	२७ कार्तिक २०४२	कार्तिक बदि ३०, २०४२	१२-११-१९८५	मगलवार
१५	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	८ पौष २०४२	अगहन सु० १२ २०४२	२३-१२-१९८५	सोमवार

टिप्पणी—१ इन पर्वों को वैदिक धर्म के प्रचार और वैदिक सस्कृति के प्रसार का महान् साधन बनाना चाहिए।
२ देशी तिथियो के घटबढ जाने से अग्रेजी तारीख मे परिवर्तन हो सकता है।

ओमप्रकाश त्यागी
सभा मन्त्री

लघु कथा (व्यंग्य)

आवश्यकता

खाने की मेज पर पूरे परिवार के साथ बैठे रिटायर्ड बाबू सकटाप्रसाद ने अपने बेटे से कहा "बेटा, मैं सोचता हूँ बडे के पास दिल्ली रह आऊ।"

"बाबू जी आप ठीक ही सोच रहे हैं किंतु आपके चले जाने से यहा बडी तकलीफ हो जायेगी।'

'क्यो, भला मेरे जाने से ?"

हा बाबू जी अपना नौकर भी तो छुट्टी पर गया है, दूध, राशन, सब्जी, ये सब लाने के लिए घर मे कोई तो होना चाहिए," बहू ने अपनी दिक्कतें गिना दी।

"हा बाबू जी, मधु ठीक कह रही है, बेबी और पिंटू की परीक्षाए भी इसी माह मे हैं, ये दोनो ही हिसाब मे कमजोर हैं, आप देख लेंगे तो "

बाबू संकटाप्रसाद को बडकऊ का पत्र याद हो आया—"मैं एक माह के लिए घर से जा रहा हूँ, आप आ जायें तो घर सुरक्षित हो जाये।" बाबू जी का मन तिलमिला उठा और वह अधखाये ही उठ गये।

११७/एक/२३३ नवीन नगर, कानपुर

सम्पादकीय

घटना और बोध

वह १८३९ को महाशिवरात्रि थी जब एक छोटी-सी घटना ने बालक मूलशंकर के जीवन मे महान् क्रान्ति कर दी। और वे सच्चे शिव की खोज मे एक दिन घर से निकल पड़े। घटनाए अपने आप मे छोटी या बड़ी नही होती। उनके परिणाम से ही उनको छोटा या बड़ा कहा जाता है। हमारे जीवन मे इतस्तत अनेक घटनाए घटित होती रहती हैं परन्तु उनका प्रभाव हमारे जीवनो मे क्रान्ति नही कर पाता। इसलिए उनका घटित होना इतना कीमती नही। प्रत्येक घटना एक शिक्षा है, वही कीमती है। जेम्स वाट को केतली के ढक्कन को भाप से उठते गिरते देख चमत्कारिक अनुमान हुआ कि भाप मे अत्यधिक शक्ति होती है। वही व्यक्ति भाप के इजन का आविष्कारक महान् वैज्ञानिक बना। न्यूटन को बाग मे पेड़ से टूटकर गिरते सेब को देख यह कौतूहल जगा, फल नीचे ही क्यो गिरा? ऊपर क्यो नही गया? वे धरती की गुरुत्व आकर्षण शक्ति के मर्मज्ञ हुए। इसी सिद्धात पर अनेक विज्ञान के लाभकारी चमत्कार उन्होने जगत् को दिए। समर्थ गुरु रामदास को पडित द्वारा "सावधान" कहने मात्र से वैराग्यबोध हो गया।

मूलशकर एक घटना से ही सच्चे शिव को खोज मे गृहत्याग कर चले और महर्षि दयानन्द के नाम से विश्व विख्यात हुए। बहन और चाचा को मृत्यु उनके वैराग्य का कारण बनी। महात्मा बुद्ध भी शव को देखकर ही ससार की नश्वरता से खिन्न होकर महल त्याग वन को चल पड थे। पर महात्मा बुद्ध के वैराग्य मे कर्त्तव्य विमुखता अधिक थी।

महर्षि दयानन्द को एक ही बार बोध हुआ, ऐसा नही कहा जाना चाहिए, अनेक बार जीवन के घटना क्रमो ने उन्हें बोध कराया।

योगी ऋषिराज समाधि के आनन्द मग्न, एक चीत्कार से हिल उठते हैं। विधवा मा अपने बच्चे को लाश को नदी मे बहा उस पर लिपटा चीथडा भी अपनी लाज को ढापने के लिए उतारकर चली जा रही है। और अपनी गरीबी बबसी पर चीत्कार कर रही है। उस कारुणिक दृश्य ने महर्षि को भारत की दीन दशा और गुलामी का अहसास कराया। आखो से विहीन गुरु विरजानन्द ने भी स्वामी दयानन्द को ज्ञान, विज्ञान और देश, समाज के प्रति कर्त्तव्य बोध कराया।

महर्षि दयानन्द ने सच्चे शिव की उपासना का ससार को बोध दिया। महर्षि दयानन्द का एक मनुष्य से लेकर समाज और राष्ट्र से लेकर विश्व तक को मूल भूत समस्या एव विषमता के खिलाफ सशक्त आन्दोलन आर्यसमाज एक दिशा बोध है। इसीलिए तो इन महापुरुषो ने कहा था—

'सगठित कार्य दृढता, उत्साह और समन्वयात्मकता की दृष्टि से आर्यसमाज की समता कोई समाज नही कर सकता। —सुभाषचन्द्र बोस

जहा जहा आर्यसमाज है वहा-वहा जीवन-ज्योति है।

—महात्मा गाधी

आर्यसमाज एक वास्तविकता है जिस से जन साधारण का आश्चर्य-जनक उत्थान हुआ है। इतिहासकार यदुनाथ सरकार

आर्यसमाज दिशाबोध है परन्तु व्यक्ति से ही समाज बनता है आज आवश्यकता है व्यक्ति-व्यक्ति मे वचारिक क्राति एव दिशा बोध की। जो प्रत्येक दयानन्द भक्त और वैदिक धर्मी को पूर्ण करना है। जीवन के प्रत्येक-घटनाक्रम से हम बोध ग्रहण कर सकते है। —यशपाल सुधाशु

आरक्षण की नीति पक्षपात का द्योतक

भारत सरकार के द्वारा चलायी गयी आरक्षण नीति बहुत ही खतरनाक है। कुछ वर्ग या जाति विशेष के आधार पर भेदभाव करते हुए कम योग्यता वाले व्यक्ति को अधिक योग्यता वाले सवर्ण व्यक्ति के सामने नौकरी पर रख लेने वाली तथा-कथित आरक्षण नीति प्रतिभा के सामने और राष्ट्रीय उन्नति के सामने आड आती है। एक इन्जीनियर यदि कम योग्यतावाला, केवल जाति के आधार पर किसी बाध या पुल बनाने, कारखाना निर्माण के काम पर लगाया जाये और योग्य व्यक्ति की उपेक्षा की जाये यह देश के साथ विश्वासघात होगा। ऐसे व्यक्ति के द्वारा बनाया गया बाध, पुल कितने दिनो तक चलेगा? कारखाना क्या उन्नति करेगा? कम योग्यता का डाक्टर कितने रोगियो का आपरेशन कर प्राण लेगा? इस पर विचार किया जाना चाहिए। यदि शोषित दलित पीडित वर्ग के रूप मे विचार की आरक्षण की नीति का समर्थन करते हैं तो यह इस प्रकार होना चाहिए जो पिछड़ा और असहाय वर्ग है उनको नि शुल्क शिक्षा, पुस्तकें, चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करायी जानी चाहिए। योग्यता में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए अत इस नीति मे उचित सशोधन किया जाये।

बलजीत शास्त्री

आर्यसमाज कालकाजी

कुलपति सम्मेलन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की संस्तुतियां

आरक्षण आवश्यक है—

१९ जनवरी के विविध परिचर्चा सत्रो मे यह निश्चय किया गया कि वर्तमान सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक अवस्थाओ के परिप्रेक्ष्य मे भारतीय शिक्षण सस्थाओ मे अनुसूचित और जन-जातियो के लिए आरक्षण जारी रखा जाए। युग युग से चले आ रहे शोषण तथा भेदभाव के विरुद्ध एक मुआवजे के रूप मे, शैक्षिक तथा आर्थिक विकास मे योगदान के रूप मे शक्ति तथा प्रभावशाली स्थान प्राप्त करने के साधन रूप मे, अनुसूचित वर्ग मे प्रतिभा के प्रोत्साहन तथा उसके समुचित विकास के लिए समानता तथा सामाजिक स्तर के उत्थान के लिए सविधान में दिए गए आश्वासनो की पूर्ति के लिए भावनात्मक एकता तथा सामाजिक न्याय प्रदान करने के लिए तथा एक जातिहीन समाज के निर्माण के लिए आरक्षण आवश्यक है।

आवश्यकता इस बात की भी है कि आरक्षण नीति का पुनमूल्याकन किया जाए। अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियो मे जागृति के लिए नि शुल्क शिक्षा, नि शुल्क भोजन पुस्तक छात्रवृत्तिया चिकित्सा कपड तथा आत्म-निर्भरता को प्रेरणा तथा सुविधाए दी जाय। प्रशिक्षण के लिए कक्षाए तथा अन्तरिम पाठ्यक्रम शुरू किए जाय। उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए रोजगार के अधिकाधिक साधन उपलब्ध कराये जाय। शिक्षा का व्यवसायीकरण करते हुए अनुसचित वर्ग के विद्यार्थियो के लिए पोलिटेकनिक स्थापित किये जाय। अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थी शिक्षा अधूरी न छोड इसके लिए उन्हें तथा उनके अभिभावको को विशेष प्रोत्साहन दिया जाये। आर्थिक पिछडापन दूर करने के लिए व्यावहारिक स्तर पर उनकी सामाजिक आवश्यकताओ को पर्याप्त रूप मे पूर्णता देने के लिए इन वर्गों के मेधावी छात्रो को विशेष रूप से ऊपर लाने के लिए आर्थिक सामाजिक शैक्षणिक मनोविज्ञान तथा राजनैतिक रूप से आरक्षण नीति का पुनमूल्याकन किया जाना चाहिए शिक्षा समानता तथा समान अवसर दिये जाने के सिद्धान्त पर आधारित हो आरक्षित विद्यार्थियो को उनकी मातृभाषाओ मे शिक्षा ग्रहण करने तथा सामाजिक प्रशासनिक सेवाओ मे उनका उपयोग करने को छूट हो। सब लोग सुखी हो, वे समान रूप से जाति धर्म वर्ग तथा किसी भी भेद-भाव से मुक्त होकर राष्ट्रीय धारा मे जुड सके। इसके लिए एक भावनात्मक वातावरण बनाने के लिए प्रचार तन्त्र का मजबूत होना आवश्यक है।
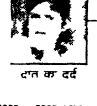
सत्य के प्रबल समर्थक : स्वामी दयानन्द

—प्रकाशवीर शास्त्री

आर्यसमाज की स्थापना तो जरूर १८५७ मे हुई। पर इससे पहले भी स्वामी दयानन्द ने ऐसे ही कुछ और सगठनो की भी नीव डाली थी। उत्तर प्रदेश मे आर्य समाज की स्थापना से एक साल पूर्व नैनीताल मे स्वामी जी ने ऐसा ही एक सगठन बनाया जिसका नाम सत्य शोधक समाज था। प्रतीत ऐसा होता है—ब्रह्मसमाज प्रार्थनासमाज आदि सगठनों से लगता मिलता नाम आर्यसमाज सभवत स्वामी जी को अधिक रुचा हो। इसीलिए उन्होने बाद मे उसे अपना लिया। पर धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रो मे स्वामी दयानन्द जिस सत्य का प्रचार करना चाहते थे उसका आभास सत्य शोधक के नाम से ही अच्छा पता लगता है। सत्य का प्रचार करते समय स्वामी जी के मन मे न तो कोई पूर्वाग्रह ही था और न ही दूसरे धर्माचार्यों की तरह किसी बात को उन्होने यह कहा यह ही अन्तिम सत्य है कोई बिन्दु इस पर लग ही नही सकता। बल्कि कही कही तो उनके लखो मे यह भी सकेत मिलता है—जो कुछ उन्होने लिखा है उसमे प्राप्त तथ्यो से यदि परिवर्तन की गुजाइश दिखाई दे तो वह निस्सकोच कर लिया जाए।

सत्य शोधक समाज की ही राह पर चलते हुए ऋषि दयानन्द ने अपनी प्रमुख पुस्तक का नाम भी सत्यार्थप्रकाश रखा। सत्य की तह मे पहुचने के लिए स्वामी जी ने इसके चौदह समुल्लासो मे यो तो प्राय हर प्रमुख विषय को ही उठाया है। ग्रन्थ का प्रारम्भ भी उन्ही दिनो आस्तिकता की आड मे भिन्न भिन्न नामो से चल रही ईश्वर की छाप दुकानो की असलियत क्या है? यही से उन्होने किया है। यह समय वह था जब शैव लोग वैष्णवो की पगडी उछालते थे और वैष्णव उन्हे बुरा भला कहते थे। स्वामी जी ने सप्रमाण उन सब नामो की व्याख्या करते हुए कहा यह तो सब ही नाम उस एक अद्वितीय शक्ति के हैं फिर झगडा किस बात का है? गीता के शब्दो मे यह तो सारे रास्ते पहुचाते ही एक मजिल पर हैं। ऐसे ही और भी अनेको सामाजिक प्रश्न सत्यार्थप्रकाश मे स्वामी जी ने उठाये। जन्मना जाति, स्त्रियो को शिक्षा से वचित रखना बाल-विवाह वृद्ध विवाह और पुनर्विवाह का निषेध आदि अनेको सामाजिक अभिशाप ऐसे थे जिनमे देश और समाज दोनो तबाह हो रहे थे। स्वामी जी ने अपने भाषणो मे और ग्रन्थो मे इन्हे बडे आडे हाथो लिया। भारत मे प्रचलित सभी मत-मतान्तरो को वह अपना मानते थे। इसीलिए उनकी कमजोरियो का भी इस ग्रथ मे उन्होने प्रश्न उठाया है। सत्यार्थप्रकाश की इस भूमिका मे बडे ही निर्लेप भाव से उन्होने यह लिखा है—

मेरा इस ग्रथ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य अर्थ का प्रकाश करना है। अर्थात जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नही कहलाता जो सत्य के स्थान मे असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाए। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहलाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मतवाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने मे प्रवृत्त होता है। इसीलिए वह सत्य मत को प्राप्त नही हो सकता। इसीलिए विद्वान आप्तो का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यो के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दे। पश्चात् वे स्वयम् अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द मे रहें। मनुष्य की आत्मा सत्यासत्य की जानने वाली है। तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हेतु हठ दुराग्रह और अविद्यादि दोषो से सत्य को छोड असत्य मे झुक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ मे ऐसी बात नही है और न किसी का मन दुखाना या किसी को हानि पहुँचाने का तात्पर्य है।

इससे अधिक निरभिमानीपन और क्या किसी का हो सकता है। दूसरा कोई होता तो लिख जाता इस मे अब कोई सशोधन की गुंजाइश नही है। पर स्वामी जी का मस्तिष्क इस विषय में बहुत साफ था—सत्य की खोज जारी रहनी चाहिए और जब भी कोई नया सत्य सामने आये तो उसे खुले हृदय से स्वीकार कर लेना चाहिए।

आर्यसमाज के दस नियमो मे एक नियम के तो शब्द ही यह हैं—'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। इन दस नियमो मे भी सब से अधिक बल स्वामी जी ने सत्य पर ही दिया है। दस मे से तीन नियमों में तो सत्य का स्पष्ट उल्लेख भी है। पहले ही नियम मे आया है—'सब सत्य विद्या और पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है। पाचवें मे—सब काम धर्मानुसार सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए। इसी तरह तीसरे नियम के प्रारम्भ मे लिखा है—'वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है। उसका पढना और पढाना सब आर्यों का परम धर्म है।' वेद का ज्ञान किसी जाति अथवा देश विशेष की सम्पत्ति नही है। मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए आदि सृष्टि मे मिला यह ईश्वरीय ज्ञान है। प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से देखने का आदेश भी सब से पहले वेद ने ही दिया।

स्वामी दयानन्द के समाज सुधार कार्यक्रमो और सैद्धातिक सच्चाइयों की उन दिनों देश विदेश दोनो मे भी अच्छी धूम मची हुई थी। थियोसोफिकल सोसायटी के सचालकगण तो आर्यसमाज के विचारो से इतने प्रभावित थे कि एक बार तो उन्होने सोसायटी को आर्यसमाज मे मिलाने का निर्णय ही ले लिया। स्वामी जी से बहुत दिनो तक इस सम्बन्ध मे उन का पत्र-व्यवहार भी चला। अन्त मे उक्त सोसायटी के सस्थापको मे से दो प्रमुख व्यक्ति कर्नल अलकाट और मैडम ब्लेडवट्स्की बम्बई आकर स्वामी जी से मिले। कई दिनो तक यहा भी विचार विनिमय चलता रहा। लगभग सभी बातो पर दोनो पक्ष सहमत भी हो गये। पर यह ही बात ऐसी रही जिससे बेल मढे न चढ सकी। आर्यसमाज के तीसरे नियम में जो यह वाक्य है—वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, उसमे से सत्य शब्द को थियोसिफिकल सोसायटी वाले हटाना चाहते थे। उनका कहना था—इससे दूसरे धर्म-ग्रन्थो का अप्रत्यक्ष खडन होता है। स्वामी जी ने उनकी बात बडी गम्भीरता से सुनी और सहज भाव से उत्तर देते हुए कहा सत्य पर तो आर्यसमाज की नीव ही मैंने रखी है। यदि सत्य ही उसमे से निकल गया तो रह क्या जाएगा। सत्य से समझौते का अभिप्राय ही असत्य को प्रोत्साहन देना है। इस तरह थियोसिफिकल सोसायटी की वह विलय वार्ता बीच मे ही टूट गई।

ऐसा ही एक प्रकरण उदयपुर मे स्वामी दयानन्द के जीवन मे आया। महाराणा उदयपुर उनकी विद्वत्ता पर मुग्ध थे। स्वामी जी भी महीनों-महीनो रह कर वहा उपदेश करते रहे और सत्यार्थप्रकाश तथा वेदभाष्य के लिखने का काम भी उनका वहा चलता रहा। महाराणा उदयपुर ने एक बार स्वामी जी से कहा—महाराज यह तो आप जानते ही हैं यह मेरी गद्दी एकलिंग महादेव जी की गद्दी है। मैं और मेरा परिवार तो उनकी धरोहर का रखवाला है। पर मेरी बजाय आप जैसा विद्वान् साधु यदि इस धरोहर को सभाले तो कितना अच्छा हो। धर्म प्रचार मे भी यह सहायक होगी और दूसरे भले कामो मे भी इसका सदुपयोग हो सकेगा। पर महाराज! एक छोटी सी शर्त इसके साथ यह है—मूर्तिपूजा का जो खडन आप करते हैं वह जरूर बन्द करना पडेगा। भले ही आप स्वय चाहे मूर्ति न पूजें। स्वामी जी उठे और कमडल हाथ मे लेकर उदयपुर से चल दिए। कहने लगे राजन्! एक दौड मे तेरी रियासत पार कर सकता हू। इसका प्रलोभन देकर मुझे सत्य से डिगाना चाहता है। मैं तो उस राजा की आज्ञा का पालन करने ससार मे आया हूँ जिसकी रियासत मे जीवन भर दौडूगा तो भी उसे पार नही कर सकता।

लोकेषणा और वित्तेषणा यह दो प्रलोभन ऐसे हैं जिनमे साधारण मनुष्य फस कर रह जाता है। पर स्वामी जी को यह दोनों प्रलोभन भी अपने पथ से डिगा न सके। तीसरी स्थिति बल प्रयोग की और थी। जब उनसे अमृतसर मे किसी ने काश्मीर यात्रा मे प्राणो के सकट का भय दिखाकर रोकना चाहा तब स्वामी जी ने कहा—सत्य का प्रचार करने मे यदि मेरे हाथो की अगुलिया भी मोमबत्ती की तरह तिल-तिल करके जलाई जायेंगी और उनमे असत्य का अधेरा दूर होने मे मदद मिलेगी तो मैं अपने प्रयास को सफल समझूगा। तेरह बार तो उनके शरीर पर विष का प्रयोग किया गया। कभी पान मे कभी दूध मे और कभी भोजन मे जहर मिलाकर दिया गया। कर्णवास मे तो एक जागीरदार ने तलवार से ही उन पर वार कर दिया। पर स्वामी जी ने तलवार रोककर ज्यो ही उसका गट्टा पकडा तो ऊपर का खून ऊपर और नीचे का नीचे बन्द हो गया। तलवार ही उसके हाथ से छूटकर गिर पडी। इसी तरह हरिद्वार के लगे कुम्भ के मेले मे उन दिनो पाखड के विरुद्ध आवाज उठाना कितना कठिन काम था। वह भी तब जब कि सगी-साथी कोई न हो। पर सत्य पर जमी आस्था ने उनमे न जाने कहा का साहस भर दिया। जो वह अकेले ही पाखण्ड खण्डिनी पताका हाथ मे लेकर वहा डट गये।

सत्यार्थप्रकाश मे स्वामी जी ने कई ऐसी सैद्धातिक सचाइयो का भी प्रतिपादन किया है जो व्यवहार में आज तक आर्यसमाजियों के गले से नीचे भी नही उतर सकी। इनमे एक नियोग का सिद्धात भी

(शेष पृष्ठ पर ११)

सांख्य ईश्वरवादी है

—श्री प० सत्यप्रिय जी शास्त्री, एम ए साहित्याचार्य
प्राचार्य, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरियाणा)

विश्व का सम्पूर्ण दर्शन शास्त्र आस्तिक एव नास्तिक इन दो भागो म विभक्त है। इन म आर्यावर्त का दर्शन आस्तिक कोटि म आता है। जिन म न्याय वैशेषिक सांख्य योग वेदान्त एव मीमासा इनका प्रमुख स्थान है। ये सभी ईश्वरवादी दर्शन हैं। इनमे स सांख्य के सम्बन्ध म निरीश्वरवादी होन का सर्वाधिक प्रचार है जिसके मूल म एक कारण तो यह रहा कि बौद्धकाल के प्रभुत्व काल मे उनके विद्वानो ने सांख्य परम्परा के पुरातन आचार्य वार्षगण्य के सम्बन्ध मे नास्तिक होने का बढचढ कर प्रचार किया जो कि सांख्य एव कपिल के साथ अटूट सबध के कारण अनायास ही कपिल के साथ जुड गया। उसी आधार पर बाद म अनिरुद्ध एव विज्ञानभिक्षु जैसे सांख्य के विख्यात भाष्यकारो के द्वारा तदनुरूप भाष्य लिखे जाने स सांख्य के सिद्धान्त का मजबूत अग बन गया। दूसरा कारण यह है कि सांख्य का एक सूत्र ईश्वरासिद्ध के सम्बन्ध मे कपिल का यथार्थ मत न जान सकने के कारण स उत्पन्न हुई भ्रान्ति थी प्रसग यह स आरम्भ होता है—

यत्सबद्ध सत तदाकारोल्लेखि विज्ञान तत् प्रत्यक्षम। सांख्य १।८९

अर्थात जिसके साथ सम्बन्ध होता हुआ उसी के आकार का उल्लेखन अथवा निदर्शन करने वाला जो विज्ञान वह प्रत्यक्ष है। यह प्रत्यक्ष का लक्षण कहा है। इसमे शका यह है कि इसमे तो केवलमात्र बाह्य स्थूल विषयो का ही ग्रहण होने से इस लक्षण म सूक्ष्म विषयो का ग्रहण न होने से इस लक्षण मे अव्याप्ति होगी तब आगे कहा—

योगिनामबाह्यप्रत्यक्षत्वान्न दोष। सांख्य १।९० तथा—

लीनवस्तुलब्धातिशयसम्बन्धाद्वाऽदोष। सांख्य १।९१

अर्थात योगीजनो का तो आन्तरिक प्रत्यक्ष होता है। इसलिए उक्त लक्षण मे यह दोष नही है तथा अन्य अवस्थाओ स भी सूक्ष्म वस्तुओ का ज्ञान हो जाता है अत किसी भी तरह से दोष नही है। यहा पर प्रकृति का तत्त्व समझाने के अभिप्राय से आशका की जाती है कि शास्त्रो मे कहा कही पर परमात्मा को जगत का उपादान कारण माना गया है तो फिर प्रकृति को मानने की क्या आवश्यकता रह जाती है। तब कहा है—

ईश्वरासिद्ध। सांख्य १।९२

अर्थात उपादानकारण रूप परमात्मा की सिद्धि नही हो सकती है यहाँ ईश्वर के जगत का उपादान कारण होने का ही सूत्रकार व्याख्यान कर रहे है न कि ईश्वर की सत्ता स इन्कार कर रहे हैं क्योकि ग्रन्थ की अन्त साक्षी इसमे विद्यमान है। जैसे—

स हि सर्ववित सर्वकर्ता। सांख्य ३।५६

तथा—

ईदृशेश्वरसिद्धि सिद्धा। सांख्य ३।५७

अर्थात वह परमात्मा सर्वत्र एव समस्त विश्व का रचयिता है और इस प्रकार ईश्वर की सत्ता सिद्ध है। इसी स्थान पर कहा है—

अकार्यत्वेऽपि तद्योग पारवश्यात्। सांख्य ३।५५

अर्थात जगत ईश्वर का कार्य न होने पर भी जगत का ईश्वर के साथ नियम्य नियामक का रचना तथा रचयिता का सम्बन्ध है क्योकि प्रकृति जड होने से सर्वथा ही परतन्त्र है अत की इस अन्त साक्षी म कपिल का ईश्वर को मानना अभीष्ट है। इसके अतिरिक्त कपिल स्थान स्थान पर अपने मन्तव्य की पुष्टि म वेद को उद्धृत करता है जिसका अभिप्राय है कि इस प्रकार वेद भी मेरे मत की पुष्टि करता है। इस प्रकार कपिल ने अपने सम्पूर्ण ग्रन्थ मे श्रुति या श्रुत शब्द को इकतालीस बार उद्धृत किया है। कपिल इतना बडा भारी वेदभक्त है। परन्तु मनुजी लिखते हैं कि नास्तिको वेदनिन्दक अर्थात वेद की निन्दा करने वाला नास्तिक होता है। कपिल जी तो वेद की प्रशसा मे जुटे हैं फिर वह नास्तिक कैसे हो गये। किसी भी दर्शनकार ने इतनी बार वेद को उद्धृत नही किया है फिर यह है कि कपिल जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष को मानते है जो मोक्ष को मानता है वह नास्तिक कैसे हो सकता है? इतना ही नही बल्कि अपने ग्रन्थ का उपसहार मोक्ष पर ही करते हैं—

यद्वा तद्वा तदुच्छित्ति पुरुषार्थस्त दुच्छित्ति पुरुषार्थ। सांख्य ६।७०

अर्थात जैसे भी हो मोक्ष प्राप्त करना चाहिए अब बताओ ये नास्तिक कैसे ठहरे गीता मे श्री कृष्ण कहते हैं कि सांख्ययोगौ पृथग्बाला प्रवदन्ति न पण्डिता। अर्थात बचकाना बुद्धि वालो का कहना है कि सांख्य और योग अलग अलग है बुद्धिमान ऐसा नही कहते हैं वैसे भी सांख्य और योग एक दूसरे के पूरक हैं तब सर्वथा विरुद्ध मत वालो का परस्पर पूरकता कैसी कदाचित हो ही नही सकती है। इसी प्रकार सांख्य और योग का अस्तित्व निर्णय क्रम ले पूर्व जन्म सम्बन्धी अभाव का खण्डन करता है तो क्या ऐसी मनोवृत्ति नास्तिक स्वीकार किया करते हैं। वैसे भी कपिल जी कर्दम ऋषि के पुत्र थे तथा जिनकी माता जी का नाम देवहूति था जो कि स्वायम्भुव मनु की पुत्री थीं माता भी ऋषिका तथा पिता भी ऋषि इन दोनो से उत्पन्न हुआ पुत्र नास्तिक कैसे हो सकता है जिसे पितृ परम्परा तथा मातृवंश परम्परा से वेद का ज्ञान मिला हो उसका नास्तिक होना कदाचित सम्भव नही है। इसी प्रकार कपिल जी योग के अगो का वर्णन अपने शास्त्र म करते हैं योगागो का वर्णन परमात्मा की प्राप्ति तथा ईश्वर का साक्षात करने की इच्छा तथा सिद्धान्त को प्रकट करती है नास्तिक को इससे क्या लेना देना है? इन सभी प्रमाणो स कपिल जी के सम्बन्ध म फैलाया गया यह भ्रम कि वे नास्तिक हैं सर्वथा ही दूर हो जाना चाहिए तथा हमे कपिल के वास्तविक स्वरूप के दर्शन करने चाहिए जो कि वैदिक मन्तव्यो के अनुकूल तथा सर्वथा ही आस्तिक है तथा जो कपिल को एक पक्का ईश्वर विश्वासी सिद्ध करते हैं।

□

ऋषिवर को याद करके !

—मोहन लाल शर्मा 'रश्मि'

होते न जो अगर तुम रहते न हम किधर के।
कहता है मन मेरा ये ऋषिवर को याद करके॥

सद ज्ञान का ये रास्ता दिखलाता कौन हम को।
ये वेदो के मन्त्र पावन सिखलाता कौन हम को॥

दुनिया को प्यार बांटा था तुम ने तो जी भर के।
कहता है मन मेरा ये ऋषिवर को याद करके॥

सारे वे अत्याचारी थे तुम से डर के भागे।
सोये थे जो अब तक वे सारे के सारे जागे॥

ध्वज ओम का यहा पर ऊचा हुआ फहर के।
कहता है मन मेरा ये ऋषिवर को याद करके॥

सच्चे शिव की खातिर दर दर की खाक छानी।
आखिर को बात तेरी यहा सारे जहा ने मानी॥

दयानन्द कभी भी न रहा जग मे डर के।
कहता है मन मेरा ये ऋषिवर को याद करके॥

योगी महा तपस्वी था वो बाल ब्रह्मचारी।
सेवा मे थी गुजारी यहा जिस ने उम्र सारी॥

आर्यवीर हम हैं बस उसकी ही डगर के।
कहता है मन मेरा ये ऋषिवर को याद करके॥

चुन चुन के काटे जिस ने सुमन यहा बिछाये।
जिसके गीत 'रश्मि' यहा सारे जहा ने गाये॥

अमृत देके जग को प्याले पीये जहर के।
कहता है मन मेरा ये ऋषिवर को याद करके॥

भीलैण्ड गज दाहोद (गुजरात)

गुरुदेव ! है जीवन मेरा ससार के लिए

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती—वेद प्रचार अधिष्ठाता

गुरुदेव ! है जीवन मेरा ससार के लिए।
सम्पूर्ण मनुज जाति के उपकार के लिए।

वेदो की ज्योति सब जगत् मे जगाऊगा।
पाखड की लका मे अग्नि मैं जलाऊगा॥

उद्यत रहूगा यज्ञ के विस्तार के लिए।
गुरुदेव ! है जीवन मेरा ससार के लिए॥

प्रचलित करूगा शुद्ध वर्ण आश्रम अवस्था।
कर दूगा नष्ट द्वेष भेद भाव की दुरवस्था॥

कोई नही अछूत है सब प्यार के लिए।
गुरुदेव ! है जीवन मेरा ससार के लिए॥

प्रिय मातृ शक्ति को नही विद्या जो पढाते।
कह नरक द्वार जिनको जूती पग का बताते॥

तत्पर रहूगा उनके मैं उद्धार के लिए।
गुरुदेव ! है जीवन मेरा ससार के लिए॥

व्रत ब्रह्मचर्य के गुरु ! आजन्म पालूगा।
शिक्षा पुनीत आपकी जीवन मे ढालूगा॥

सर्वस्व है सद्धर्म पर बलिहार के लिए।
गुरुदेव ! है जीवन मेरा ससार के लिए॥

यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप

लेखक शिवाकान्त उपाध्याय

(१) यज्ञकर्म—यज्ञ मानव जीवन का परम आवश्यक कर्त्तव्य कर्म है। जब तक मनुष्य अपने जीवन को यज्ञमय नही बना लेता, उसका मानव जीवन सफल नहीं होता। यजुर्वेद के प्रारम्भ मे ही पहले मन्त्र में यह प्रार्थना है कि "इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो व सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे" हे सविता देवता! हम सब को अन्न, बल, शक्ति ऊर्जा और पराक्रम के लिए श्रेष्ठतम कर्मो मे दीक्षित करो। यही श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ का स्वरूप है। शतपथ ब्राह्मण का ऋषि स्पष्ट घोषणा करता है 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमम् कर्म" १।७।१।५ इस प्रकार स्पष्ट विदित है कि मानव जीवन में यज्ञ-कर्म का बडा प्रभाव है और प्रयास पूर्वक यज्ञ कर्मो से कभी भी विमुख नही होना चाहिए। मनु महाराज लिखते हैं—"पचैतांस्तु महायज्ञान् यथाशक्ति न हापयेत्।" मनु० ४।२१। गीता में योगिराज भगवान् श्रीकृष्ण की स्पष्ट घोषणा है यज्ञदानतप कर्म न त्याज्य कार्यमेव तत्। यज्ञो दान तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्॥ महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश और गृह्यसूत्र ग्रन्थ संस्कारविधि मे यज्ञ की महिमा गाई है और प्रत्येक नर-नारी के लिए यज्ञ करने का विधान किया है। विना यज्ञ के मनुष्य अधूरा है और मनुष्य क्या परमात्मा भी विना यज्ञ पूर्ण नही। सृष्टि के प्रारम्भ मे उसने भी महान् यज्ञ किया एव सृष्टि-निर्माण किया। 'सह यज्ञा प्रजा सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापति।' गीता। इस प्रकार यज्ञ एक महान् कर्तव्य है और इस का प्रकाश जनसाधारण के मध्य होना आवश्यक है।

(२) यज्ञ का अर्थ—यज्ञ शब्द यज धातु से बनता है जिसका अर्थ है, देवपूजा संगतिकरण और दान। इन तीनो तरह के कर्मों की सगति वर्तमान युग के परिप्रेक्ष्य मे लगानी पडगी और देवताओं के नाम पर नाना प्रकार की ऊटपटाँग पूजन प्रणालियों को ठीक रूप मे लाना पडगा। सगतिकरण और दान का अर्थ हर एक व्यक्ति को समझाना पडेगा। यज्ञ केवल मात्र हवनकुण्ड में थोडी समिधा प्रज्वलित करके थोडा घृत और सामग्री मात्र डाल देने का नाम नही है। इसकी उचित विवेचना की आवश्यकता है।

(३) वर्तमान युग विज्ञान का युग है। वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य मे प्रत्येक बात का स्पष्टीकरण आवश्यक है। आज का मानव किसी भी बात को कहने मात्र मे मानने के लिए उद्यत नहीं है परन्तु वह प्रत्येक बात को वैज्ञानिक दृष्टिकोण मे परखना चाहता है। कोई भी कार्य करने से पहले या किसी भी तात्त्विक विश्लेषण के लिए विज्ञान उसकी गहराई मे तर्कपूर्वक पहुचने का प्रयास करता है। अत यज्ञ कर्म को भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पूर्णरूपेण समझना पडेगा, क्यों कि वैदिक वाङ्मय मे यज्ञों का बडा महत्त्व कहा गया है। जैसा ऊपर कहा जा चुका है। शतपथ ब्राह्मण की स्पष्ट घोषणा है—'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म। इस घोषणा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सिद्ध करना पड़ेगा। इतना ही नही शतपथ ब्राह्मण तो एक कदम और आगे बढ़कर उद्घोष कर रहा है कि सम्पूर्ण प्रत्यक्ष यज्ञ प्रजापति का ही स्वरूप है—एष वै प्रत्यक्ष यज्ञो यत् प्रजापति। जिस प्रकार सूर्य इस विस्तृत यज्ञ का केन्द्र है। उसी प्रकार यज्ञकुण्ड इस भुवन का केन्द्र है—इय वेदि भुवनस्य नाभि। इस प्रकार यदि सम्पूर्ण विश्व ब्रह्माण्ड की रचना पर गौरपूर्वक विचार किया जाय तो इस को यज्ञ का प्रतीक कहा जा सकता है।

(४) अब आइए समष्टि से व्यष्टि में इस यज्ञ के स्वरूप को देखने का प्रयास करें। जैसे ससार के अन्दर नाना प्रकार के सृजन और विनाश में सूर्य का प्रमुख स्थान है, जैसे मानव शरीर के निर्माण और विनाश में अग्नि रूप प्राण की ही प्रधानता है, उसी प्रकार यज्ञ को भी सुसम्पन्न करने के लिए अग्नि की ही प्रधानता है। यह अग्नि ही यज्ञ का देवता है, पुरोहित है, ऋत्विज, होता और रत्न, धाता है। ऋग्वेद के अनुसार "अग्निमीके पुरोहितम् यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारम् रत्नधातमम्।" इस प्रकार एक एक बात स्पष्ट उभरकर सामने आ जाती है कि सम्पूर्ण विश्व (विराट् शरीर) के साथ सूर्य, प्राणी मात्र के शरीर के साथ प्राण और यज्ञ के साथ अग्नि का एक ही प्रकार का सम्बन्ध है। जैसे सूर्य अपने ताप, प्रकाश से तथा अपनी किरणों के माध्यम से भेजी हुई ऊर्जा के द्वारा ससार में फल-फूल, अन्न, वनस्पतियाँ, औषधि आदि का निर्माण करता है, सम्पूर्ण पृथिवी को रत्नगर्भा बनाता है, जैसे स्वस्थ प्राण अपने विभिन्न रूपों मे शरीर के अन्दर प्रवेश करके गर्मी पैदा करता है, सजीवनी शक्ति का निर्माण करता है और शरीर के पोषण के लिए आवश्यक पदार्थों के निर्माण में सहयोग करता है, ठीक उसी प्रकार यज्ञकुण्ड मे प्रज्वलित अग्नि भी यज्ञीय पदार्थों को आत्मसात् करके उन्हें उनके सूक्ष्मातिसूक्ष्म कणों मे विभक्त करके उनके अन्दर छिपी कल्याणी शक्ति को हजारो गुणा विकसित करके प्रा ी मात्र के कल्याण के लिए सुलभ और उपयुक्त बनाता है। जो कुछ हमारे पूर्वज ऋषि विद्वान् यज्ञ के माध्यम से जन-कल्याण का कर्म करते थे। वही सब कुछ आज वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशाला में पदार्थों का उचित सगतिकरण करके आग्नेय तत्त्वों के माध्यम से कर रहे हैं। विभिन्न प्रकार की औषधियों का निर्माण भी उसी पद्धति पर ही हो रहा है। आज का वैज्ञानिक इस बात पर विश्वास रखता है कि किसी रोग के निदान में Tablets से ज्यादा लाभकारी Liquids हैं और Liquids से ज्यादा Gaseous form में दी हुई दवाइयां हैं। शीघ्र प्रभावी बनाने के लिए Tablets की जगह पर Injections और Injection की जगह मे Gaseous form में दवाओं का परीक्षण सर्वमान्य हो चुका है। जिन जडी-बूटियों अथवा भौतिक पदार्थों को विभिन्न प्रकार के रासायनिक प्रयोगों द्वारा Tablets, liquids या Gaseous form में आज का Chemist दवाओं का रूप दे देता है, उन्हीं तमाम जड़ी-बूटियों और भौतिक पदार्थों को हमारे पूर्वज विद्वान् यज्ञकुण्ड की प्रज्वलित अग्नि में डालकर सम्पू विश्व के निदान के लिए मुफ्त में दिया करते थे। कुछ अबोध नासमझ अपनी झूठी विद्या का दिखावा करके यह कहने का दुस्साहस करते हैं कि यज्ञ में डाला पदार्थ तो जलकर राख हो जाता है और महगाई के युग में यह सब करना व्यर्थ है उनसे नम्र निवेदन है कि प्रथम तो वे यज्ञ की प्रक्रिया को समझें और फिर विज्ञान के सिद्धान्त को समझने का प्रयास करें। विज्ञान के आधार पर Matter can nither to created to distroyed (Industructivities of matter) पदार्थ न तो बनाया जाता है और न बिगाडा जा सकता है केवल आग्नेय तत्त्वों के प्रभाव से रासायनिक परिवर्तन करके उनकी दशाओं में परिवर्तन किया जा सकता है। बिना गर्मी लिये या दिये कोई रासायनिक क्रिया सम्भव ही नही है। इसी को विज्ञान की भाषा में Indothermic reactions और Exo thermic reaction की सज्ञा दी जाती है। इस प्रकार अग्निहोत्र के माध्यम से पदार्थों का उचित समतिकरण करके विभिन्न प्रकार के रासायनिक परिवर्तन के द्वारा लोगों के हित के लिए उन्हें सुलभ करना ही यज्ञ का प्रयोजन है। chemist दवाओं का मूल्य लेकर लोगों का हित करता है परन्तु यजमान यज्ञ के द्वारा बिना मूल्य लिये ही सब-साधारण का हित करना अपना कर्तव्य कर्म समझता है।

इस प्रसग में एक बात और निवेदन करना चाहता हू। आज के युग में वायु, जल, अन्न आदि हर एक पदार्थ में प्रदूषण की बिभीषिका का प्रकोप है। सारे संसार के सामने इन प्रदूषणों को मिटाने के लिए एक समस्या उत्पन्न हो गई है। मेरा विश्वास है और नम्र निवेदन भी है कि यदि घर-घर यज्ञ का करना कराना प्रारंभ हो जाय तो यह सब कुछ सुधर सकता है और विश्व सुख की सांस ले सकता है। शिकागो में एक विश्व विद्यालय की स्थापना हुई है, जिस का नाम ही है Agnihotra univarsity है। इस विश्वविद्यालय में नाना प्रकार के प्रयोग किए जा रहे हैं और उन्हें यज्ञ की प्रक्रिया पर विभिन्न सफलताएं भी मिल रही हैं। इस दिशा में वहां के वैज्ञानिकों का प्रयास और परीक्षण स्तुत्य हैं।

(५) अब थोड़ा-सा यज्ञ में प्रयुक्त अग्नि के स्वरूप की भी चर्चा करना उचित समझता हूँ। अग्नि तीन प्रकार की होती है। (१) पवमान (२) पावक (३) शुचि।

पृथ्वी पर की अग्नि को पवमान कहते है। इसी को निर्मन्थ अग्नि भी कहते हैं। पावक अतरिक्ष की अग्नि है तथा शुचि द्युलोक की अग्नि है। जहां तक इनके स्वरूप का वर्णन मिलता है, पवमान पार्थिव अग्नि का स्वरूप है जो घन (Solid) है। अन्तरिक्ष की अग्नि 'पावक' तरल (Liquid) है और द्युलोक की अग्नि विरल (Gaseous form) में है। यही Solid Liquid Gas पदार्थ के तीन स्वरूप हैं, जिनके परिवर्तन में अग्नि ही साधक है। आज का विज्ञान चाहे जितना भी समर्थ हो गया हो पर ऋषियों की खोज और उनके ज्ञान के सामने अभी भी यह विज्ञान अधूरा है।

ऋषियों ने अपने तप से ज्ञान के उपार्जन और प्रभु के सान्निध्य से प्राप्त शक्ति के द्वारा इन तमाम अग्नियों को ब्रह्माण्ड से पिण्ड में और समष्टि से व्यष्टि में देखने का प्रयास किया और सर्वोत्कृष्ट वैज्ञानिक ढग से इस प्रकार की अग्नि को यज्ञकुण्ड के अन्दर प्रज्वलित करने का विधान किया है। आइये इस यज्ञ की अग्नि का वैज्ञानिक स्वरूप भी देखने का प्रयास करें—

जड जगत् मे व्यापक यज्ञ का केन्द्र सूर्य है—

स य विष्णुर्यज्ञ स। स य स यज्ञोऽसौ स आदित्य।

श० १४।१।१।६

इसी व्यापक यज्ञ का चित्र हमारे प्राचीन ऋषियो और विद्वानो ने अपने तप और चिन्तन से इस पृथिवी पर चित्रित करने का यत्न किया। और यज्ञवेदी की रचना कर उस के मध्य में यज्ञकुण्ड बना उस मे अग्नि की स्थापना करने की व्यवस्था की।

यह सर्वविदित बात है कि अरणि मन्थन से यज्ञ की अग्नि पैदा होती है। पुराने समय में दो लकडियों के घर्षण से अग्नि प्रज्वलित करके यज्ञकुण्ड के लिए प्रयोग करने की व्यवस्था थी। आजकल भी कहीं कहीं लोग इस प्रकार अग्नि पैदा कर के यज्ञ करने का विधान करते हैं। यह अरणिमन्थन किस बात का रहस्य स्पष्ट करता है, इस का वैज्ञानिक पक्ष विचारणीय है—

द्यु लोक, पृथिवी लोक और अन्तरिक्ष लोक ये तीन लोक हैं। द्युलोक सबसे ऊपर अन्तरिक्ष मध्य में और पृथिवी सब से नीचे या बीच में। अब इस द्युलोक से पृथ्वी लोक का सम्बन्ध अग्नि के माध्यम से स्थापित करने के लिए यज्ञ की व्यवस्था की गई। द्यावा तथा पृथिवी के घर्षण से अग्नि पैदा होती है। विज्ञान की भाषा में यही Positive और Negative

Charges हैं जिन से विद्युत् पैदा होती है। वैदिक वाङ्मय में स्थान-स्थान पर विभिन्न रूपों में इसी बात को कहा गया है। उदाहरणार्थ जीवन की सम्भावना के लिए अग्नि तथा सोम, ऊष्मा तथा शीत, मित्र तथा वरुण, द्युलोक तथा पृथिवी का पारस्परिक सम्बन्ध बड़ा आवश्यक है। यजुर्वेद के एक मन्त्रांश को देखिए—'विघाते अग्ने त्रेता त्रयाणि' पृथिवी और द्युलोक को मिलाने में अन्तरिक्ष की अग्नि का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण योगदान है। जो कि एक माध्यम का काम करती है। हम लोगों ने विज्ञान में ऊष्मा के विकीरण का सिद्धान्तों में Conduction, Convection और Rediation के बारे मे पढा है। क्या यहा वेद में द्युलोक की अग्नि पृथिवी पर पहुँचाने के लिए Rediotria की पुष्टि नही होती। आज के वैज्ञानिकों और सुधी पाठकों के लिए यह एक विचारणीय और अनुसन्धान का विषय है।

इसी अग्नि को ऋषियो ने अरणि मन्थन के द्वारा यज्ञकुण्ड में स्थापित करने का विधान किया है।

५ इस सन्दर्भ मे यज्ञवेदी और यज्ञकुण्ड के वैज्ञानिक स्वरूप का भी विश्लेषण अपेक्षित है। पृथिवी के ऊपर जहां यज्ञ की वेदी बनती है उसी को यज्ञ का केन्द्र स्थान भी माना जाता है। यह यज्ञवेदी सारे विश्व की नाभि है। इस यज्ञ वेदी को वामन विष्णु का रूप कहा है। यज्ञो वै विष्णु। यहां एक पौराणिक उपाख्यान की चर्चा कर देना उचित समझता हूं। लोग कहते हैं कि विष्णु ने वामन रूप में बलि को छला था और तीनों लोकों को तीन पग में नाप लिया था। इस का रहस्य ऋग्वेद के निम्न मन्त्र से स्पष्ट हो जाता है—इद विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। ऋ० १।२२

यह इस यज्ञवेदी का और यज्ञ का प्रभाव है कि देवता तो क्या साधारण मनुष्य भी तीनों लोको का राजा बन सकता है और अग्निहोत्र आदि कर्म के द्वारा तीनों लोकों में अपने यश को फैला सकता है। यही यज्ञ कर्म वामन विष्णु के रूप में तीन पगों मे सब कुछ नाप लेता है।

यज्ञवेदी की रचना को जितनी भी सतर्कता और गम्भीरता से देखा जाए उतना ही सुस्पष्ट और सुदृढ़ विचार बनता जायेगा कि व्यापक सृष्टि की प्रत्येक गतिविधि को ऋषियों ने यज्ञ के माध्यम से बड़ी कुशलतापूर्वक चित्रित किया है। यज्ञ की व्यवस्था के माध्यम से सम्पूर्ण सृष्टि के नियमों का वैज्ञानिक रहस्य और ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

यज्ञकुण्ड का निर्माण भी कितना वैज्ञानिक और ज्यामितिशास्त्र (Geometrical Science) से परिपूर्ण है, इस का उल्लेख भी विचारणीय है। यज्ञकुण्ड में अग्निचयन के लिए ३६० ईंटों का विधान है। मानव शरीर में भी ३६० अस्थिया होती हैं। और सवत्सर में दिनों की सख्या भी ३६० ही होती है। इस विचार की पुष्टि शतपथ ब्राह्मण में उपलब्ध है। एक पाश्चात्य वैज्ञानिक डाक्टर R Hoernle ने भी अपनी पुस्तक Medicion of Ancient India Part I Ostreology में इस बात की चर्चा की की है और इस सिद्धान्त की पुष्टि की है। क्या आज के वैज्ञानिकों के लिए यह खोज का विषय नहीं हैं कि ३६० ईंटों, ३६० अस्थियों और ३६० दिनो का मानव जीवन और सृष्टि के वातावरण के साथ क्या सम्बन्ध हो सकता है?

इस यज्ञवेदी का इतना महत्त्व है कि यजु० ३।५ मे इसे देवयजनि पृष्ठ कहा है। "देवयजनि पृष्ठे अग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे।" इस पर बैठने वाला देवत्व को प्राप्त कर लेता है। जो इस यज्ञ चक्र को समझ लेता है, वह सारे ब्रह्माण्ड चक्र को समझ लेता है। यज्ञकुण्ड के चारों तरफ मेखला, यज्ञवेदी को अच्छी प्रकार से सजाना भी एक महत्त्व का विषय है और आवश्यक कर्तव्य है। केलों के खम्भे बन्दनवार, पत्तों के गुल्म और फूलों के गुच्छे से सारी वेदी सजी रहनी चाहिए। मेखलाएं जल से भरी रहनी चाहिए। इन तमाम प्रयोगों का बहुत बड़ा वैज्ञानिक रहस्य है। यह केवल दिखाने के लिए या वेदी को आकर्षक बनाने के लिए ही नही है, बल्कि इन के द्वारा Co_2 (कार्बन-डाइ आक्साइड) या इसी प्रकार की और अनावश्यक विषैली गैसो का जो यज्ञकुण्ड से निकलती हैं, ग्रहण कर ली जाती हैं और यज्ञ का प्रभाव पूर्णत लाभदायक ही होता है।

यज्ञकुण्ड के निर्माण में एक और बात भी विचारणीय है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कुण्ड बनाने का विस्तृत वर्णन अपने गृह्यसूत्र ग्रन्थ संस्कारविधि में बड़े विस्तार से किया है। हवन कुण्ड के नीचे की तथा ऊपर की चौड़ाई तथा कुण्ड की ऊचाई का अनुपात वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गवेषणा का विषय है। विभिन्न प्रकार के ढग के कुण्ड बनाने की प्रथा के पीछे भी ज्यामिति की विभिन्न रचना का विज्ञान छिपा है।

६ यज्ञकुण्ड के अन्दर किस प्रकार अग्न्याधान करना चाहिए, इस का भी वैज्ञानिक-स्वरूप बड़ा रोचक है। ऋग्वेद में एक मन्त्र आता है—समिद्धो अग्निर्निहीत पृथिव्याम्। प्रजापति ने अग्नि को पृथ्वी के केन्द्र में रखकर प्रज्वलित किया। इस मन्त्राश मे समिद्ध शब्द इस बात का प्रतीक है कि प्रजापति के द्वारा जिस अग्नि का आधान पृथ्वी के गर्भ मे हुआ वह अग्नि प्रज्वलित नहीं थी। वह प्रज्वलित अग्नि के पूर्व का रूप था जिसे हम आग्नेय परमाणु कह सकते हैं। यही आग्नेय परमाणु पृथ्वी के अन्दर प्रविष्ट हुआ और फिर पार्थिव परमाणुओं में हरकत के कारण उन के अन्दर Electric Charges की सृष्टि हुई और फिर सूक्ष्म रूप में पडे आग्नेय परमाणु घर्षण के द्वारा क्रियाशील हो उठे तथः अग्नि का प्रज्वलित रूप प्रकट हो उठा। इस प्रकार की क्रिया ने पृथ्वी के अन्दर छिपे पदार्थों को नाना प्रकार के रूपों मे परिवर्तित कर दिया और अपार ऊर्जा शक्ति का निर्माण हुआ जिस ने पदार्थों के अन्दर निहित शक्ति को कई गुणा विकसित करके नाना प्रकार की वस्तुओं का निर्माण किया और पृथ्वी रत्नगर्भा बन गयी। देखते देखते सारी धरती औषधि फल-फूल वनस्पति, अन्न आदि से लहलहा उठी यह सब कुछ पृथ्वी के केन्द्र में प्रजापति द्वारा स्थापित अग्नि का प्रकट और व्यापक रूप बन गया। इसी कारण पृथ्वी को अग्नि की पत्नी कहा है। पृथिव्यग्ने पत्नी। गो० उ० २।९। विवाह सस्कार में पति इसी बात को स्मरण करके प्रतिज्ञा करता है कि "द्यौरहम् पृथिवी त्वम्।" पति अग्नि का रूप है और पृथिवी का रूप है पत्नी। उपरोक्त कथन की पुष्टि में यजुर्वेद का यह मन्त्रांश प्रस्तुत है—"माता पुत्रं यथोपस्थे साग्नि बिभर्तु गर्भ आ"। यजु० ११।५७। जिस प्रकार माता अपने पति का प्रतिरूप अपने गर्भ में धारण करती है उसी प्रकार पृथ्वी अग्नि को अपने केन्द्र में धारण करती है। उसी प्रकार पृथ्वी अग्नि को अपने केन्द्र में धारण करती है।

बस इसी क्रिया का एक छोटा सा चित्र हमारे ऋषियों ने यज्ञकुण्ड में अग्नि का आधान करके दिखाया और फिर कुछ प्राप्त करने के लिए उसे प्रज्वलित करने का आदेश किया। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इन दोनो क्रियाओं को सम्पन्न करने के लिए दो मन्त्रों का विधान किया है। मनुष्यों को जीवन मे उन्नति और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए यज्ञों का अनुष्ठान करना पड़ता है और अग्नि प्रज्वलित करनी पड़ती है। अपने पुरुषार्थ और तप से इस प्रज्वलित अग्नि को शनै शनै सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान करना पडता है। शतपथ ब्राह्मण में एक आदेश है—अग्निर्वै यज्ञस्यावरार्ध्यो विष्णु परार्ध्यं। ५।२।३।६ यदि यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित नही होगी तो उस यज्ञ में डाली हुई आहुतिया व्यर्थ हो जायेंगी। प्रज्वलित अग्नि पर पडी आहुतियां हव्य बन जाती हैं और सार्थक होती है तथा वही देवताओं को प्राप्त होती हैं। स इद्देवेषु गच्छति ·· ऋषियों ने कितनी बुद्धिमत्ता पूर्वक यज्ञ के रहस्य को स्पष्ट किया है। स्वय यजमान परमात्मा द्वारा रचे हुए इस ब्रह्माण्ड में विस्तृत विशाल यज्ञ को करने का सङ्कल्प करता है और अपने जीवन मे सकल्पाग्नि को प्रज्वलित करके जीवन यज्ञमय बना डालता है।

७ ब्रह्माण्ड का यज्ञ सूर्य के ताप के सहारे चल रहा है तथा परमात्मा उस का सचालक है। धरती का यज्ञ, यज्ञकुण्ड मे प्रज्वलित अग्नि के सहारे चल रहा है और यजमान उस का सचालक है। इसी प्रकार शरीर के अन्दर का यज्ञ प्राणों के द्वारा चल रहा है। और आत्मा इस का सचालन कर रहा है। इस प्रसग में मैत्रायणी उपनिषद् की एक स्पष्ट घोषणा है—

अथोपांशुरन्तर्याममभि भवन्नन्तर्याम उपांशु च। एतयोरन्तरादेवौष्ण्य प्रासुवत्। यदौष्ण्य स पुरुष। अथ य पुरुष सो अग्निर्वैश्वानर। मैत्रायणी उ० २।६

अर्थात् प्राण और अपान या उपाशु और अन्तर्याम के पारस्परिक घर्षण से उष्णता उत्पन्न होती है। वही पुरुष और प्राणियों मे वैश्वानर अग्नि है। यही अग्नि यदि ९८ ८°F से बढ़कर १०७° F के ऊपर पहुँच जाती है तो अथवा घटकर ९७°F के नीचे पहुँच जाती है तो जीवन समाप्त हो जाता है। प्राणी के अन्दर प्राणात्मक स्पन्दन सदा के लिए बन्द हो जाता है। जैसे ताप की कमी से यज्ञ समाप्त हो जाता है अधिकता के कारण शरीर का यज्ञ समाप्त हो जाता है। उसी प्रकार यज्ञ के अन्दर प्रज्वलित अग्नि का भी प्रभाव है। किस मात्रा में कितनी उष्णता की आवश्यकता है यह विचारणीय है। किस प्रकार की समिधा

शेष अगले अक में

ईशोपनिषत् का अध्ययन—

कर्म-महिमा

जगदीश आर्य, सि० रत्न
सासाराम, बिहार

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

यजु० अ० ४०, म० २। ईशो० मन्त्र २।

(इह) इस संसार मे (कर्माणि) कर्मों को (कुर्वन एव) करते हुए ही (शत समा) सौ वर्षों तक (जिजीविषेत्) जीने की इच्छा करो। (एव) यही एक मार्ग है (त्वयि नरे) तुझ मनुष्य मे (न लिप्यते कर्म) कर्म लिप्त न होंगे। (इत अन्यथा) इस से भिन्न दूसरा कोई मार्ग (न अस्ति) नही है।

व्याख्या—कर्म करना मनुष्यो का स्वभाव है। बिना कर्म किए मनुष्य एक क्षण भी नही रह सकता। गीता मे आया है—'न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः॥' (अ० ३।४)

अर्थात कोई पुरुष किसी अवस्था मे भी बिना कर्म किए क्षण भर भी नही रह सकता। क्योकि सम्पूर्ण जन प्रकृति जन्य स्वाभाविक रागादि गुणो से परवश हो, कर्म मे प्रवृत्त होते हैं। (गीता)

वेद माता आदेश देती है कि तुम कर्म करते हुए ही जीने की इच्छा करो। यहा 'जिजीविषेत्' पद विधि लिङ् मे आया है।

जीने की इच्छा तो सभी करते हैं। मरना कोई नही चाहता, मरणासन्न व्यक्ति भी जीना चाहता है। किसी कवि ने कहा है—'अङ्ग गलितं पलितं मुण्डं दशनविहीनं जातं तुण्डम्। वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम्॥' अंग गल गए हैं सिर हिल रहा है, दात गिर गए है, लाठी के बिना चला नही जा रहा है, फिर भी जीने की आशा नही छूटती। जब जीने की इच्छा है, तो आलसी बनकर क्यो जीया जाय। परन्तु आलसी भी तो कुछ न कुछ करता ही है। जैसे खाना-पीना, चलना-फिरना आदि। परन्तु यहा कर्म करने का जो आदेश है, वह ऐसे कर्मो से है, जिस का सस्कार सूक्ष्म और कारण शरीर पर पडता है और वे ही सस्कार अगले जन्म को प्रभावित करते हैं।

जब कर्म करना जीव का स्वभाव है तो प्रश्न उठता है कि कैसा कर्म किया जाए। बन्धन का कारण कर्म है। इधर मा श्रुति कहती है कि तुम कर्म करो, इस से तुम मे कर्म लिप्त न होगे। यह कैसे? इस के लिए कर्म की फिलासफी समझनी होगी। कर्मो की तीन श्रेणिया हैं—'कर्त्तुम्-अकर्त्तुम् और अन्यथा कर्त्तुम्। कर्म करना कर्म न करना और उल्टा करना।' इस मे कर्म न करना और कर्म का उल्टा करना ही बन्धन का कारण है। आर्ष ग्रन्थो मे जहा भी 'कर्म' करने का निर्देश आया है। वह वेद विहित कर्म से ही आशय रखता है। सत्यार्थप्रकाश मे स्वामी दयानन्द जी अपने स्व रचित श्लोक मे 'कर्म' का अर्थ वेद विहित कर्म ही करते हैं।

कर्म करने वाले को विद्वान् लोग प्यार करते है। वेद मे आया है—'इच्छन्ति देवा सुन्वन्त न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।' (देवा) विद्वान् लोग (सुन्वन्तम्) कर्म करने वाले पुरुष को (इच्छन्ति) चाहते है (स्वप्नाय) आलसी प्रमादी को (न स्पृहयन्ति) प्रेम नही करते।

मन्त्र का अन्तिम पद है 'त्वयि नरे न लिप्यते कर्म' कर्म तुम मे लिप्त न होंगे, अर्थात् बन्धन के कारण नही होंगे। यह कैसे। अन्यत्र आया है 'लोकोऽयं कर्मबन्धन' लोक मे कर्म बन्धन के कारण हैं।

इस मन्त्र के पूर्व जो मन्त्र आया है, उस मे दो पद महत्त्व के है—'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' और दूसरा पद है 'मा गृध'। इन का क्रमश अर्थ है त्याग पूर्वक भोगो को भोगना अर्थात् कर्म करना, और दूसरे पद का अर्थ है आसक्ति लालच न रखो। इन दो पदो की सगति इस मन्त्र मे लगावे। मन्त्र मे, कैसा कर्म किया जाय, इस का रहस्य खोल दिया है। यज्ञीय कर्म करना अर्थात् स्वार्थ रहित कर्म। एक उदाहरण से इसे स्पष्ट करता हू। एक मनुष्य किसी अन्य मनुष्य का, अपनी स्वार्थ-सिद्धि मे बाधक समझ कर हत्या करता है, तो वह निन्दा का पात्र होता है, उसे दण्ड भी मिलता है। वही मनुष्य जब राष्ट्र या समाज का हित ध्यान मे रख नर-सहार करता है, तो वह यश का पात्र होता है और उसे पुरस्कार मिलता है। ऐसा क्यो हुआ? इसलिए कि पहले कर्म मे यज्ञ की भावना, अर्थात् निःस्वार्थ भावना नही है, जब कि दूसरे कर्म मे यज्ञीय भावना, निःस्वार्थ भावना प्रबल है, यही 'त्यक्तेन भुञ्जीथा' है।

कर्त्तव्य समझ कर भी जो कर्म न किये जाए, अकर्त्तव्य कर्म किए जाए तो बन्धन के कारण बनते है और जन्म-मरण के चक्कर मे फसाते हैं। ईशो० का तीसरा मन्त्र कहता है—

असुर्या नाम ते लोकाऽअन्धेन तमसाऽऽवृता।
तांस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जना॥

इस मन्त्र मे आया हुआ 'आत्महन' पद महत्त्वपूर्ण है। आत्महन वह कर्म है जो यज्ञीय भाव से न किया जाए, अर्थात् जो आसक्ति पूर्ण, स्वार्थमय एव लोभ की भावना से परिपूर्ण हो। ऐसा ही कर्म बन्धन का कारण है और जिस के चलते जीव आवागमन के चक्कर मे पडा रहता है।

'बन्धन' शब्द का सामान्य अर्थ बाधना या फासना है। परन्तु दर्शन-शास्त्र मे एक विशेष अर्थ रखता है। न्याय दर्शन मे एक सूत्र है—'बाधना-लक्षण दुःखम्' अर्थात् बन्धन ही दुःख का लक्षण है, पहचान है।

गीता मे, यजु० ४०।२ के मन्त्र पर आधारित एक श्लोक है—'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।' तुम्हारा अधिकार कर्म करने मे है, फल मे अधिकार नही है। इस श्लोक को समझने मे एक बडी भ्रान्ति फैली हुई है। अर्थात् फलो की आकाक्षा न रखते हुए कर्म करते रहो। ऐसी विचारधारा अस्वाभाविक सी लगती है। किसान गेहू बोता है तो इसी फल से इसी विश्वास एव आकाक्षा से कि फसल अच्छी मिलेगी। अगर उसे यह विश्वास हो जाए कि मैं जो गेहू बोने का कर्म कर रहा हूँ वह निष्फल जायगा तो वह कर्म करेगा ही नही। कर्म न करने वाला व्यक्ति आलसी एव प्रमादी है। महाभारतकार (गीता का यह श्लोक मूल मे महाभारत के भीष्म पर्व मे है) की यह मंशा नही है कि कर्म करने के पूर्व ही फल की कामना कर ली जाए। महाभारतकार यह कहना चाहता है कि तुम्हारे चिन्तन का क्षेत्र 'फल' नही है। प्रश्न चिन्तन का है। जब यह निश्चय हो गया कि हमारा यह कर्म कर्त्तव्य के क्षेत्र मे आता है तो उसे निष्ठापूर्वक कुशलता से कर्म करना है। फल तो उसे मिलेगा ही। केवल फल का चिन्तन कर्त्तव्य कर्म करने मे बना रहेगा तो कर्त्तव्य का पालन ठीक से न होगा। तथा अपेक्षित फल न मिला तो दुःख भी होगा। क्योकि यह कोई अनिवार्यता नही है, आपका फल मे अधिकार तो है नही। एक उदाहरण से स्पष्ट करता हू। जो अपने पुत्र को अपना कर्त्तव्य समझ कर उस का लालन-पालन-शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध करते हैं, इस भावना, इस आकाक्षा से नही करते कि मेरे वृद्ध होने पर या अशक्त होने पर यह पुत्र मेरी सेवा-शुश्रूषा, देख भाल करेगा। यहा वह किसी प्रकार के फल की आशा नही रखता। अब अगर पुत्र अपने कर्त्तव्य का पालन नही करता है, तो भी पिता को दुःख नही होगा। क्योकि प्रारम्भ मे उस ने किसी फल की अपेक्षा नही रखी थी। और अगर कही पुत्र ने अपने कर्त्तव्य का पालन किया तो पिता को अधिक प्रसन्नता होगी। क्योकि यह एक सामान्य नियम है कि कोई अप्रत्याशित रूप से अनपेक्षित सुखद फल मिलता है तो अत्यधिक प्रसन्नता होती है। इस उदाहरण से यह साफ हो गया कि फल का चिन्तन अगर कर्म पर हावी रहे, तो वह दुःख और बन्धन का कारण होता है। जिस पर अपना अधिकार नही, उस की चिन्ता करना आर्योचित मार्ग नही है।

अब कर्म के दूसरे पहलू पर विचार करे, कर्म ही बन्धन का कारण है और कर्म से ही बन्धन मुक्त भी होना है। यह कैसे? जो कर्म बन्धन का कारण है वह बन्धन से मुक्ति कैसे दिलायेगा। अनाचार करने से मनुष्य रोगी होता है, दुःखी होता है, बन्धन मे जकड जाता है। दूसरी तरफ उसी रोग का उपचार करने से रोग छूट भी जाता है। अर्थात् बन्धन से छूट जाता है। एक और दृष्टान्त ले, एक मनुष्य किसी के साथ चार सौ बीस करता है। न्यायाधीश उस अपराध के कारण उसे कारागृह मे डाल देता है। अब यहा चार सौ बीस कर्म है, और जेल मे जाना उस का फल है, अर्थात् बन्धन है। चार सौ बीस करने मे वह स्वतन्त्र था परन्तु कारागृह मे जाना उस के अधिकार की बात नही थी। अब अगर वह जेल में अनुशासन मे रहता है, जेल के नियम जो कैदी के लिए बने हैं, उन का सच्चाई से पालन करता है तो वह नियत अवधि से पूर्व ही छूट भी जाता है। क्योकि जेल का नियम है कि जो कैदी अनुशासन मे रहते हैं, उन्हें जेल मैनुअल के अनुसार सजा की अवधि मे छूट मिलती है। यहा अनुशासित ढग मे रहना भी कर्म है और यही कर्म बन्धन से मुक्ति दिलाने का कारण भी है। और जो कैदी जेल के नियम-कायदे का पालन नही करते है, जेल तोड कर भाग जाने का प्रयास करते हैं, वे पकड जाने पर पुनः जेल मे भेज दिए जाते हैं और उन की सजा की अवधि बढ जाती है। यहा बन्धन कडा हो जाता है।

अब कर्म के एक अन्य पहलू पर भी विचार प्रस्तुत करता हू। कर्म के बुरे संस्कारो को अर्थात् बन्धन को कर्मों के द्वारा हल्का भी कर सकते है और कर्मो के बुरे सस्कारो के प्रवाह को रोक भी सकते हैं तथा उन्हे अच्छे सस्कारो मे परिवर्तित भी कर सकते हैं। यह कैसे? विद्यालय के एक विद्यार्थी को नकल करने के अपराध के कारण बीस रुपये फाइन हुआ। फाइन भुगतान करने की उसे एक माह की अवधि मिली। अब वही छात्र, अवधि के बीच में किसी अच्छे कर्म के कारण उसे चालीस रुपये का पुरस्कार मिला। अब इस मे बीस रुपये का दण्ड माफ कर दिया गया। अच्छे कर्म के प्रभाव ने बुरे कर्म के प्रभाव को कम कर दिया। इसी प्रकार पूर्व जन्म के किए हुए बुरे कर्मों के सस्कारो को अच्छे कर्मों के द्वारा पूर्व सस्कार को प्रभावहीन कर सकते है या उस की क्लिष्टता को हल्का कर सकते हैं। बुरे कर्मो के सस्कार के प्रवाह को रोक सकते है। यह इस प्रकार से होगा, श्याम ने राम को किसी कारण से एक थप्पड लगा दिया। श्याम के मानस मे उस कर्म का सस्कार पडा। उधर राम ने थप्पड का जवाब दिया तो उस पर उस के कर्म का सस्कार पडा। हिंसा-प्रतिहिंसा क्रिया-प्रतिक्रिया से सस्कारो का प्रवाह चल पडा। अब अगर राम, श्याम के थप्पड का जवाब न दे चुप हो जाए, शात रहे, मन से भी शात रहे तो सस्कार का प्रवाह रुक गया। श्याम का भी क्रोध शांत हो गया, उस के बुरे सस्कार वही रुक गए, क्योकि दोनो तरफ सस्कार के बीज को कोई खाद नही मिला। सस्कार के प्रवाह को चलाने या रोकने मे दोनो स्वतन्त्र हैं।

इस वेद मन्त्र द्वारा परमपिता परमात्मा हमे यह निर्देश दे रहे हैं कि वेद विहित कर्मों को अर्थात्, यज्ञीय भावना से करते हुए ही जीने की इच्छा करो। बुरे कर्म अर्थात् अवैदिक कर्मों का लेप चढता है। लेप का भाव है सस्कार, वासनाओ का लेप। बार-बार जन्म-मरण का चक्कर इन्ही सस्कारों के कारण होता है।

अद्वैतवादियो ने इस मन्त्र का अर्थ भिन्न प्रकार मे किया है। आद्य शकराचार्य ने अपने ईशोपनिषत् के भाष्य मे इस मन्त्र का भाव यह बतलाते हैं कि अज्ञानी ही कर्म करते हैं। जो सन्यासी हैं, जिन्हें ज्ञान निष्ठा है, उन्हें कर्म करने की आवश्यकता नही है। यह मन्तव्य वेद विरुद्ध है। □

व्यक्ति और समाज व्याहृतियों की छाया में

लेखक स्व० स्वामी आत्मानन्द जी महाराज

संसार में कोई प्राणी ऐसा न मिलेगा, जो अपने अस्तित्व की रक्षा न करना चाहता हो। 'मैं मिट जाऊं" इस भाव का प्रकाश कोई प्राणी करना नही चाहता। इस के विपरीत यदि कोई उस के विनाश का यत्न करे तो वह अपनी रक्षा के लिए जो कुछ उस से बने पूरा प्रयत्न करता है। वह अस्तित्व दो प्रकार का है 'वैयक्तिक' और 'सामाजिक"। इन दोनो का परस्पर गहरा सम्बन्ध है यदि व्यक्ति विकृत या नष्ट हो जावे, तो समाज का अगभङ्ग हो जाता है और समाज का अस्तित्व न रहे, तो व्यक्ति के अस्तित्व का कोई प्रश्न ही नही रहता।

हमारे धार्मिक साहित्य में व्याहृतिया, ओं भू, ओ भुव, ओ स्व, ओ मह, ओ जन, ओ तप, सत्यम् ये सात हैं। मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण का रहस्य तथा उस की सामाजिक शक्तियो के विकास का तत्त्व इन्ही सात व्याहृतियो मे गागर मे सागर की भाति भरा हुआ है। इन में से पहली तीन व्याहृतियो को महाव्याहृति कहा जाता है और शेष को केवल व्याहृति कहते हैं। इन व्याहृतियो के द्वारा मनुष्य के अस्तित्व का निर्माण तथा उस की रक्षा किस प्रकार होती है। यह इस लेख का प्रतिपाद्य विषय है।

व्याहृति—व्याहृति नाम ऐसे वक्तव्य का है जिस मे अनेक रहस्यो का सग्रह थोड शब्दो मे किया गया है। जिस सक्षिप्त से वाक्य मे गुप्त और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उपदेश भरा हो उसे व्याहृति कहते हैं। आगे व्याहृतियो के अर्थों का उल्लेख किया जायेगा।

'ओम् भू'—यह पहली व्याहृति है। 'भू' इसकी उत्पत्ति 'भू" धातु से हुई है। भू धातु के प्राप्ति आदि और भी कई अर्थ हैं, परन्तु सत्ता इन सब मे मुख्य है। यो कह सकते हैं कि सत्ता मे ही शेष सब अर्थ समाये हुए हैं। सत्ता का अर्थ है 'अस्तित्व"। इसलिए यह शब्द सन्देश देता है कि मनुष्य का सब से पहला कर्त्तव्य अपने अस्तित्व की रक्षा करना है। मनुष्य के अस्तित्व को स्थिर रखने के लिए उसे जिन साधनो, जिस सामग्री अथवा जिस कार्यक्रम की आवश्यकता है उन सब की रक्षा करना भी अस्तित्व की रक्षा के लिए आवश्यक हो जाता है।

हम पहले लिख आये हैं कि अस्तित्व दो प्रकार के हैं। एक व्यक्तिगत और दूसरा सामुदायिक। ये दो प्रकार के जीवन ही मनुष्य का कार्यक्षेत्र है। मनुष्य में जितना आकर्षण अपने व्यक्तित्व के लिए है उतना ही समाज के लिए भी है तब तो ठीक है, अन्यथा उस के जीवन का एक अश अधूरा है। सब के बिना मनुष्य असहाय है। यद्यपि कई लोग स्वेच्छा से अरण्यवास पसन्द करते हैं तथापि उन का अन्तिम उद्देश्य सामुदायिक हित के लिए अपने आप को शक्तिशाली बनाना ही होता है। साधु सन्त जङ्गल मे रहते हैं, आत्म साक्षात्कार करते हैं, परन्तु अन्त में ऋषि दयानन्द जैसे सम्पन्न महापुरुष अपनी उस सचित शक्ति का प्रयोग जनता की अर्थात् समुदाय की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिए ही करते हैं। इस प्रकार व्यक्तिगत, जातीय तथा राष्ट्रीय अस्तित्व की रक्षा करने का सकेत इस पहली व्याहृति से मिलता है। आज मानव अपने सामाजिक अस्तित्व को भुला बैठा है, यही कारण है कि समाज का सहयोग न होने से वह अपने व्यक्तिगत अस्तित्व का भी पूर्ण विकास नही कर पाता जितना खिन्न हम अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की हानि से होते हैं उतने अपने सामाजिक बन्धन के स्वार्थ की हानि से नही होते और यही दशा हमारी हानि के समय हमारे सामाजिक बन्धु की होती है, इस प्रकार परस्पर सहयोग न होने से हम दोनो ही अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से वचित रह जाते हैं। ऐसे अवसरो पर गम्भीर दृष्टिपात कर हमे निर्णय करना चाहिए कि हमारा सामाजिक जीवन हमारे लिए कितना अमर ज्योति का सचारक है। यह सामाजिक जीवन ही तो है जो विद्वेष का विध्वस कर प्रेम को गद्दी पर बैठाता है फूट का खिर फोड सयोग का समाधान करता है और मै का मान मर्दन कर हम के भव्य भाव को अन्तःकरण मे जागृत करता है। 'भू' धातु का दूसरा अर्थ है प्राप्ति। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए मनुष्य कुछ न कुछ प्राप्त करना चाहता है, "भूमि, भवन, भोजन, भगवान्, यश, धन, बल, सुख, ओज, महान्।

प्राय ये ही उस की प्राप्ति की वस्तुए हैं। इन के प्राप्त कर लेने पर उस के अस्तित्व का पूर्ण निर्माण होता है। इन मे से प्रत्येक वस्तु की प्राप्ति के लिए कितने ही मनुष्य पशु आदि सहयोगियो की आवश्यकता पडती है और बिना सामाजिक जीवन को सुन्दर बनाये उचित रूप मे यह सयोग सम्भव नही। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय मे स्पष्ट कहा है 'सब की आत्माओ को अपनी आत्मा मे और अपनी आत्मा को सब की आत्माओ मे समझो, सामाजिक भावना को और भी सुन्दर बनाने के लिए आगे चलकर दूसरे मन्त्र में कहा—'सब की आत्माओ को अपनी आत्मा और अपनी आत्मा को सब की आत्मा समझो।' तात्पर्य यह हो है कि अपनी तरह सब ही को सुखी बनाने का यत्न करो। कैसा सुन्दर मार्ग है—हम के बिना मैं का और मैं के बिना हम का सुन्दर निर्माण असम्भव है। बस यह व्याहृति हमे अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए व्यक्ति और समाज दोनो का साथ साथ ही निर्माण सिखाती है।

ओम् भुव —'भुव' यह शब्द भी भू धातु से ही बना है। इसलिए इस के भी सत्ता और प्राप्ति दोनो अर्थ मे थोडा सा अन्तर भी है। भू का अर्थ है अस्तित्व का निर्माण करना और भुव का अर्थ है निर्माण की भावना करना। भू व्याहृति के कार्यक्रम मे शरीर और इन्द्रिय का प्रयोग है और भुव के कार्यक्षेत्र मे हृदय का प्रयोग है। भू का सम्बन्ध पृथ्वी से है तो भुव का कार्य क्षेत्र हमारे स्थूल शरीर का निर्माण करता है और भुव के कार्य क्षेत्र मे सूक्ष्म शरीर को उन्नत बनाया जाता है। स्थूल शरीर तथा स्थूल इन्द्रियो की चाहे कितनी भी उन्नति कर ली जावे, परन्तु सूक्ष्म शरीर के प्रधान तत्त्व अन्तःकरण का उत्थान हुए बिना व्यक्ति और समाज दोनो की एक साथ उन्नति करनी कठिन होगी। यह ठीक है कि स्थूल शरीर के द्वारा हम अनेक पदार्थो का निर्माण और उस की प्राप्ति कर सकेंगे, परन्तु अन्तःकरण मे उदार भावनाओ का विकास किये बिना उन प्राप्त की हुई वस्तुओ को समाज का समझना हमारे लिए कठिन होगा। आज के युग मे भू का आश्रय लिया जा रहा है भुव का नही। यह ही कारण है कि आज प्राणी-जगत् दुःख के सास ले रहा है। भुव का अर्थ दुःखो का दूर करना इसलिए किया जाता है कि भुव का आश्रय लेने पर ही हम प्राणी मात्र के कल्याण की भावना कर, स्वय भी सुखी हो सकते हैं और दूसरो को भी सुखी बना सकते हैं।

ओम् स्व — स्वर्' यह तीसरी व्याहृति है। स्वर का अर्थ आनन्द भी है। "स्वर् ज्योतिरगामहम्" (मैं स्वर् नामक ज्योति के पास पहुँच गया) इस मन्त्र भाग के अनुसार स्वर का ज्योति अर्थ भी है। और 'सुवर्ग्याय शक्त्या" (शक्ति के उत्तम वर्ग में जाने के लिए) इस मन्त्र भाग के अनुसार इस स्थान को उत्तम वर्ग मे रहने का स्थान भी माना गया है। आनन्द शब्द उपनिषदो मे ब्रह्म के अर्थों मे आता है सब से महान ज्योति भी ब्रह्म ही है। इन दो अर्थों को जानकर यह बिना कठिनाई के ही समझ मे आ जाता है कि उस उत्तम वर्ग का निवास स्थान भी ब्रह्म ही है। ब्रह्म मे मुक्त आत्माओ का प्रवेश ही सम्भव है, इसलिए यहा उत्तम वर्ग का अर्थ होगा मुक्त आत्माओ का झुण्ड।

स्वर् शब्द का अर्थ जानने के बाद पाठक समझ गये होगे कि हमारे पहली दो व्याहृतियो के द्वारा प्रकट किये गये, स्थूल और सूक्ष्म दोनो ही क्षेत्रो के कार्यक्रम का अन्तिम लक्ष्य स्वर्ज्योति की प्राप्ति है। अर्थात् ब्रह्म रूपी परमज्योति के अन्दर प्रवेश है। इस कार्यक्रम को अपनाने के बाद ही हमारा अस्तित्व पूरा होता है और हमे वह वस्तु मिल जाती है जिसकी प्राप्ति के बाद और कुछ प्राप्त करने योग्य नही रह जाता।

हम पहले लिख आये हैं कि इन तीनो व्याहृतियों को महाव्याहृति कहते हैं। सक्षेप में इनका भाव जान लेने के बाद पाठक यह समझ गये होगे कि ये तीनों व्याहृतियो मनुष्य जीवन के पूर्ण लक्ष्य पर पूरा प्रकाश डालती हैं। इसलिए इनका यह नाम सार्थक है। इन तीनो महाव्याहृतियो द्वारा प्रकट किये परम लक्ष्य की प्राप्ति क लिए ही शेष चार व्याहृतियो के आदेश का अनुसरण आवश्यक है, यह भाव आगे की चार व्याहृतियो मे स्पष्ट किया जायेगा।

ओम् मह —इस व्याहृति का अर्थ है है महत्त्व-बडप्पन। ससार के कार्यक्षेत्र मे आकर खडा होते ही मनुष्य को समझ लेना चाहिए कि मैं महान् हू। जब मनुष्य ऐसा समझ कर कार्यक्षेत्र मे आकर खडा होगा तो उसके लिए यह सम्भव है कि किसी समय वह अपने महत्त्व पर आये हुए आवरण को उतार कर फेक सकेगा और अपने वास्तविक स्वरूप महत्त्व को प्राप्त कर सकेगा। परन्तु जिसने अपने आप को पहले ही हीन समझ लिया है उसका अपने आप तो महत्त्व की ओर अग्रसर होना कठिन दूर की बात है दूसरे के सहारे से भी आगे बढना असम्भव हो जाता है। न उसका व्यक्तिगत उत्थान होता है और न वह समाज का अग ही बनने योग्य होता है। भारत क दलित वर्ग की ओर भारत के ही नही सारे ससार के ही दलित वर्ग की चिरकाल मे ऐसी ही अवस्था देखने मे आ रही है। भारत के उन्नत वर्ग ने उन्हे समय-समय पर, महाशय हरिजनादि जिन जिन उत्तम शब्दो से सम्बोधित किया अपने महत्त्व की ओर ध्यान न देने के कारण वे शब्द उनके काल्पनिक हीन स्वरूप के साथ जुडने के कारण हीन ही होते चले गये।

आत्मा और आत्मा मे परस्पर भेद क्या है। मानव शरीर और मानव शरीर एक जैसे ही तो हैं। भेद केवल इतना ही है कि एक ने अपने महत्त्व को समझ कर उसे मांज धोकर निखार लिया है और दूसरा खान मे पडे हुए मिट्टी से लथपथ हीरे की तरह अपने आप को हीन ही समझता आ रहा है। दलित वर्ग की इस भावना को अपनाने मे इस वर्ग का ही हाथ नही है समाज का भी इसके पतन मे गहरा भाग है। स्वार्थी समाज ने अपने दास ही बनाये रखने के लिए अथवा किसी और कारण से, इनके महत्त्व को मलिनता के आवरण से बाहर निकलने ही नही दिया। अपने इस कर्म के फल को भी समाज ने कम नही भोगा। भारत के पहले

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्यवीर दल शिविर

समस्त आर्यवीर बन्धुओं को सूचित किया जाता है कि मई तथा जून १९८५ में नवादा तथा हजारी बाग में शिक्षक प्रशिक्षण आर्यवीर दल शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसकी निश्चित तिथि तथा स्थान की घोषणा शीघ्र ही की जाएगी विशेष कर छात्रों की सुविधा के लिए गर्मी की छुट्टी में ही शिविर लगाया जा रहा है ताकि विद्यालय तथा महाविद्यालय के अधिक से अधिक छात्र भाग ले सकें। तैयार रहें, सूचना की प्रतीक्षा करें आपकी सारी सुविधाओं का ध्यान रखा जाएगा।

निवेदक
रामाज्ञा बैरागी
प्रधान संचालक, सार्वदेशिक आर्यवीर दल,
बिहार

वार्षिकोत्सव सूचना

आदरणीय मन्त्री जी

आर्यसमाज बीकानेर का ३३वां वार्षिकोत्सव दिनांक २, ३ मार्च १९८५ शनि तथा रविवार को हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर मैजिक लालटेन शो बजन के अनुसार कुश्ती कबड्डी दौड़ शुद्ध वेदमन्त्रोच्चारण, आर्यमतव्यों पर भाषण तथा निबंध प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं। प्रातः बृहद् यज्ञोपरान्त आर्यसमाज के नोतिनिष्ठ संन्यासी महात्माओं के जीवनदायी प्रवचनों की समुचित व्यवस्था है।

मेहर लाल
मंत्री
आर्यसमाज बीकानेर
दिल्ली-४०

वेद प्रवचन

आर्यसमाज शालीमार बाग के तत्त्वावधान में श्री वेदप्रकाश मेहता के निवास स्थान पर स्वामी दयानन्द जी सरस्वती महाराज का शनिवार और रविवार को वेद प्रवचन हुआ। इस अवसर पर अनेक धार्मिक जन उत्साहपूर्वक उपस्थित रहे।

रघुबीर वेदालंकार

भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली में २७।१।८५ को साप्ताहिक सत्संग में हकीकतराय के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं के लिए भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को विशिष्ट पुरस्कारों एवं प्रत्येक प्रतियोगी को प्रोत्साहन से पुरस्कार पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार वितरण का प्रबन्ध श्री लाला किशोरीलाल जी के द्वारा किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम सर्वथा प्रेरणादायक एवं सफल रहा।

संयोजक
आचार्य रवीन्द्र आत्रेय
आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली ६

आर्यसमाज भवन निर्माण के लिए धनराशि की अपील

आर्यसमाज किदवई नगर नई दिल्ली की स्थापना १९६० में हुई थी। परन्तु उस समय भवन अस्थायी रूप में बनाया गया था। जो इस समय पूर्ण रूप से जीर्ण-शीर्ण हो गया है। इस कार्य में आप सभी धार्मिक बहन-भाइयों की सहायता एवं सहयोग की आवश्यकता है। भवन में लगभग २५ हजार की लागत आने की सम्भावना है। कृपया अपना चैक, ड्राफ्ट मनीआर्डर, 'आर्यसमाज ए २६८ किदवई नगर नई दिल्ली २३ के पते पर भिजवायें।

निवेदक
मन्त्री
मदनपाल वर्मा

आर्यसमाज नीलोखेडी में वेद प्रवचन

आर्यसमाज मन्दिर नीलोखेडी, करनाल में महात्मा वेद रामकिशोर की १३ से १७ फरवरी तक वेदकथा हो रही है और श्री प० चुन्नीलाल के मधुर भजन भी होंगे।

मन्त्री
लोकनाथ

आर्यसमाज राजौरी गार्डन में वेद कथा सम्पन्न

४ फरवरी से १० फरवरी तक आर्यसमाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली में श्री प० यशपाल सुधांशु एम ए द्वारा मनोहर वेदकथा धूमधाम से सम्पन्न हुई। कथा से पूर्व श्री विजय भूषण आर्य के मधुर भजन हुए।

मन्त्री
नन्दकिशोर [illegible]

आयकर परिसर (आई० टी० ओ०) में वेदप्रचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार वाहन द्वारा आयकर परिसर (इनकम टैक्स आफिस) में दिनांक ५ फरवरी से ८ फरवरी १९८५ तक मध्याह्न भोजन के विश्राम के समय बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ। यह अपने प्रकार का एक नया प्रयोग होने पर काफी सफल रहा। धर्म प्रेमी राज्य कर्मचारियों ने काफी उत्साह दिखाया तथा इस अवसर पर साहित्य वितरण भी हुआ। कार्यक्रम की सफलता का श्रेय स्वामी स्वरूपानन्द, प० वेदव्यास तथा ढोलक कलाकार ज्योति प्रसाद को है।

प्रचार मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, हनुमान् रोड नई दिल्ली

पुरस्कार घोषणा

आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार १९८५ सघड विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर की ओर से इस विश्वविद्यालय द्वारा प्रति वर्ष एक ऐसे विद्वान् को सम्मानित किया जाता है जिसका कि वेद प्रचार में उल्लेखनीय योगदान रहा हो।

गत वर्षों में यह पुरस्कार क्रमशः आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, श्री भवानी लाल भारतीय श्री विश्वनाथ विद्यालंकार आचार्य श्री सत्यकाम विद्यालंकार को दिया जा चुका है।

सघड विद्यासभा ट्रस्ट जयपुर ने इस वर्ष उक्त पुरस्कार वैदिक विद्वान् पण्डित भगवद्दत्त वेदालंकार को प्रदान करने की स्वीकृति दी है।

ज्ञातव्य है कि यह पुरस्कार विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर कुलाधिपति महोदय द्वारा भेंट किया जाता है। इस पुरस्कार में १००० रुपये की राशि एवम् अंगवस्त्र भेंट किया जाता है।

भवदीय
वीरेन्द्र अरोड़ा
कुलसचिव, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा, इटावा

अपील

इस गुरुकुल में १५ ब्रह्मचारी वेदाध्ययन कर रहे हैं। जिनका भोजन छादन रहन सहन आप सभी दानी महानुभावों के सहयोग पर निर्भर है। यह गुरुकुल एसे पिछड़े क्षेत्र में शिक्षण कार्य कर रहा है जहां ईसाई मुसलमान अत्यधिक धनराशि का अपव्यय करके समस्त क्षेत्रीय जनता को भरमा रहे हैं। यह गुरुकुल ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षण शैली पर आधारित है। अतः आप का सहयोग परमावश्यक है।

आचार्य स्वामी रामदेव

आर्यसमाज मन्दिर शकरपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

१० फरवरी रविवार वार्षिकोत्सव के शुभावसर पर इस क्षेत्र के काफी धार्मिक बन्धुओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। इस उत्सव की अध्यक्षता श्री रामगोपाल शालवाले ने की। सभा प्रधान श्री सूर्यदेव तथा गुलाबसिंह, राघव" स्वामी स्वरूपानन्द, मा० ओमप्रकाश आर्य आदि गीतकार एवं वक्ताओं ने अपना प्रेरणाप्रद सन्देश दिया।

प्रधान—
नारायण दास खन्ना

आर्यसमाज झिलमिल, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

इस समाज में एक 'सत्संग भवन' व यज्ञशाला के ऊपर "गुम्बद" बनाने का कार्य धन के अभाव में काफी दिनों से रुका पड़ा है। सभी बड़ी बड़ी समाजों के अधिकारियों व दूसरे दानी सज्जनों से प्रार्थना करते हैं कि इस अधूरे कार्य को पूरा करने में हमारी सहायता करें। धन्यवाद—

निवेदक—सूर्यप्रकाश [illegible]
(प्रधान)

व्यक्ति और समाज—

(पृष्ठ ९ का शेष)

के और अब के सब के सब अब भग समाज की इसी हीन नीति के परिणाम हैं। परन्तु अब भी समाज उसी मार्ग पर चल रहा है।

समय-समय पर ऋषि दयानन्द और महात्मा गान्धी जैसे महापुरुष आये और चले गये, परन्तु फिर भी समाज के कान पर जूं न रेंगी। समाज कह सकता है कि हम ने उन्हें आर्य नाम दिया महाशय नाम दिया और हरिजन नाम दिया, परतु आप किसी निर्धन का नाम करोडपति रखते रहें उससे उसे क्या लाभ। यह शब्द तो उल्टा उसके उपहास का कारण बनेगा। माना जा सकता है कि यदि समाज उसे धन देता, भूमि देता, विद्या देता, वर्ण देता और रोटी बेटी देता तो यह वर्ग समाज का प्रबल अंग रीढ की हड्डी बनता, और समाज के हाथों उसका महत्व निखर जाता। हम यह कहना चाहते हैं कि जब तक समाज और समाज के व्यक्ति अपना और अपने अंगों के महत्व को जागृत नहीं करते तब तक महाव्याहृतियों के क्षेत्र में जाने का अवसर मिलना कठिन है। इस चौथी व्याहृति का लक्ष्य तब ही पूरा होगा जब कि समाज अपने एक भी व्यक्ति को हीन देखकर तड़प उठेगा और उसके वास्तविक उत्थान में अपना सर्वस्व लगाने को उद्यत हो जायेगा। व्यक्ति समाज और राष्ट्र महान् हैं, यह ही इस व्याहृति का निर्देश है।

ओम् जनः—यह पांचवीं व्याहृति है। इस व्याहृति का अर्थ है प्रजनन सन्तान का उत्थान। व्यक्ति और समाज के अस्तित्व तथा उसके महत्व की आधार शिला प्रजनन से रखी जाती है। यह ही कारण है कि आर्य जाति में गर्भाधान संस्कार को बहुत महत्त्व दिया गया है। एक आर्य वहां से ही अपनी सन्तान का निर्माण आरम्भ कर देता है। यदि बाल्य-अवस्था में ही उसके महत्व को जगाना आरम्भ न किया तो उसका अस्तित्व निर्जीव हो जायगा, या किसी महान् आवरण के गर्भ में जा छिपेगा। इसलिए व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों ही जीवनों के उत्थान का आरम्भ प्रजनन से ही होता है। इसलिए माता पिता बनने वाले नवयुवकों को सन्तति निर्माण के सब उपायों को प्रयोग में लाकर इस व्याहृति के आदेश का पालन करना चाहिए।

ओम् तप—तप का संक्षिप्त अर्थ है कष्ट सहन करना। सन्तान निर्माण, महत्व का विकास, आनन्द की प्राप्ति, सूक्ष्म शरीर की भावना और स्थूल शरीर की कर्म क्षेत्र में प्रवृति, ये सारे ही कार्य ऐसे हैं कि उनके मार्ग में कष्टों का आना आवश्यक है। इन कष्टों के अवसर पर जो मनुष्य भीरु बनकर पग पीछे हटा लेगा, उसे बढाने का कोई और भी अवसर बिना कठिनाई के मिल सकेगा यह सम्भव नहीं। महर्षि दयानन्द के जीवन के आरम्भिक भाग को हम एक सूत्र से ओत-प्रोत पाते हैं। इन दोनों भागों में हमें स्पष्ट ही एक सूत्र जगदीश की झलक दिखाई पड़ती है। पत्थरों, तलवारों, विषों सिंहों और भयकर वनों के झमेलों में होकर न टूटता हुआ, यह सूत्र अन्त तक कैसे जा पहुंचा। इस प्रश्न की छानबीन कर उत्तर देते समय हमें एक ही साधन दृष्टिगोचर हुआ है, और उसका नाम है तप। माता-पिता को भी सन्तान के निर्माण में इसी प्रकार के तप का आश्रय लेना पड़ेगा, तो ही वे इस व्याहृति से लाभ उठाकर अपने समाज में अपना स्थान ऊंचा कर सकेंगे।

ओम् सत्यम्—सत्य का अर्थ है मन, वाणी और कर्म में समानता। यह एक ऐसा सिद्धान्त है जिसे विश्वास का जन्मदाता कह सकते हैं। विश्वास के अभाव में समाज टुकड़े-टुकड़े हो जाता है और व्यक्ति बिखर कर असहाय पड़े रह जाते हैं। इस व्याहृति के इस प्रकार निरर्थक हो जाने पर शेष सब व्याहृतियां भी अपने अपने काम को करने में असमर्थ रह जाती हैं। धर्म की सब से पुष्ट आधार शिला सत्य है और यह ही आचार का सब से बड़ा मूलमन्त्र है। समाज के संगठन का यही मूलाधार है और व्यक्ति के विकास का आधार यह ही है। ऋषि दयानन्द जैसे महापुरुषों के जीवन इस सत्य के ही प्रकाश से चमक रहे हैं और चमकते रहेंगे। हम व्यक्ति और समाज में सत्य को पैदा करें यह ही सातवीं व्याहृति का उपदेश है।

हमने संक्षेप में इन सातों व्याहृतियों के भाव को व्यक्ति और समाज के उत्थान में परम साधन कहा है, पाठक इस विषय पर विचार करें।

सत्य के प्रबल

(पृष्ठ ४ का शेष)

है। समाज को भ्रष्ट होने से बचाने के लिए महाभारत में जो काम युद्ध के बाद महात्मा विदुर ने किया लगभग वैसा ही सुझाव ऋषि दयानन्द ने दिया है। छिप-छिपकर पाप करने के बजाय यदि उसे धार्मिक प्रथा का रूप मिल जाय तो समाज में अनाचार भी नहीं फैलेगा और मर्यादा बनी रहेगी। सत्यार्थप्रकाश में उन्होंने लिखा है—बहुत-सी परिस्थितियां ऐसी होती हैं जब वंश चलाने के लिए और भ्रष्ट होने से बचने के लिए नियोग आवश्यक है। स्त्री पुरुष दोनों में से कोई भी सन्तानोत्पत्ति के लिए अशक्त हो अथवा लम्बे अरसे के लिए प्रवास चले गये हो तो बजाय छिप छिपकर दुराचार करने के उसे वैध रूप ही क्यों न दिया जाए। वैसे यह भी कोई नया सिलसिला नहीं है। स्वामी जी ने लिखा है—

पाण्डु राजा की स्त्री कुन्ती और माद्री ने नियोग किया। व्यास जी ने चित्रांगद और विचित्र वीर्य के मर जाने के पश्चात् उन अपने भाइयों की स्त्रियों में नियोग करके अम्बिका अम्बा में धृतराष्ट्र और अम्बालिका में पाण्डु और दासी में विदुर की उत्पत्ति की। इतिहास भी इस बात में प्रमाण है।

कुछ दिन पहले तक यह बात सुनने में भी अटपटा-सी लगती थी। पर अब जबकि विज्ञान ने विधवाओं और अविवाहित माताओं का बोद पुरुष संयोग के बिना हरी करनी प्रारम्भ कर दी तो किसी को आश्चर्य नहीं लगता। ट्यूब से जो बालक आजकल जन्म ले रहे हैं आखिर वह भी तो विनियोग का ही परिवर्तित रूप है। पीछे नई दिल्ली के बालक इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट में जब एक देवी ने इसी विधि से बच्चे को जन्म दिया तो वह यों तो बहुत खुश थी पर एक ही शिकायत उसे रही—बालक का नाक बैठी हुई है उसका चेहरा कुछ ठेठ पहाड़ी जैसा है। डाक्टर ने कहा—अगली बार जो भी चेहरा आप पसन्द करें। पहले उस व्यक्ति को हमारे पास भेज दें। फिर आप को दुबारा शिकायत का अवसर नहीं आएगा, अब बताइये यह नियोग नहीं तो क्या है?

युक्ति-तर्क और प्रमाणों से पुष्ट सिद्धांतों के आधार पर सत्यार्थप्रकाश जब स्वामी जी लिख चुके तो उसके अन्त में पृथक से भी कुछ पृष्ठ उन्होंने जोड़े। न पृष्ठों का नाम उन्होंने रखा। 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' अर्थात् कुछ वह बातें जिन्हें वह मानते हैं अथवा जिन्हें नहीं मानते। इन में मनुष्य की परिभाषा करते हुए स्वामी जी ने लिखा है—जो अन्याय को मिटाने में प्राणों तक की बाजी लगा दे मैं उसे ही मनुष्य कहता हूं। यह परिभाषा दूसरों पर घटती हो या न घटती हो पर स्वामी जी पर एक देशी रियासत (जोधपुर) में इसी तरह के अन्याय का सामना करते हुए उन्हें विष दिया गया और उसी में उन का निर्वाण भी हुआ। सत्य का प्रचार करने में कठिनाइयाँ तो आनी स्वाभाविक ही हैं। जिनके स्वार्थ पर अथवा कमजोरियों पर चोट पड़ती है उनका तिलमिलाना भी स्वाभाविक है। पर यह ही वह समय है जब व्यक्ति के धैर्य और साहस की परीक्षा होती है। इन्हीं पृष्ठों में महर्षि भर्तृहरि के एक श्लोक का उद्धरण भी स्वामी जी ने दिया है। प्रतीत होता है यह श्लोक उन्हें बहुत पसंद था।

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

राजनीति के पंडित प्रशंसा करें चाहे निन्दा करें। सम्पत्ति रहे चाहे जाए और मृत्यु भी आज आती है या कल आती है, इसकी परवाह किये बिना धैर्यवान् पुरुष कभी सत्य और न्याय का मार्ग नहीं छोड़ते।

भाषण प्रतियोगिता

ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में आर्य युवक परिषद (पंजीकृत) दिल्ली की ओर से सदैव की भांति दिनांक १७ फरवरी १९८५ को ऋषि मेले के अवसर पर मुख्य-मंच से प्रातः ११ ३० बजे भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है।

विषय— राष्ट्रोत्थान में महर्षि दयानन्द का योगदान

कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय डा० धर्मपाल जी करेंगे।

प्रतियोगिता में एक संस्था से एक छात्र/छात्रा चार मिनट तक बोल सकेंगे।

प्रथम द्वितीय तृतीय छात्र छात्राओं को दो दो प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जायेंगे।

निवेदक —

प० देवव्रत धर्मेन्दु, प्रधान — मूलचन्द गुप्ता, संयोजक — ओमप्रकाश, मंत्री

आर्य युवक परिषद् (पंजी०) दिल्ली।

आर्य जगत् की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय (अनुमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अन्तर्गत करमुक्त होगी।

सारा दान चैक/मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्री माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय बी-१ जनकपुरी नई दिल्ली ५८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएंगे।

निवेदक

रामगोपाल शालवाले संरक्षक चिकित्सालय एवं प्रधान, सा० आ० प्रति० सभा — सूर्यदेव प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा — महाशय धर्मपाल प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा — ओमप्रकाश आर्य मंत्री महाशय चुन्नीलाल चेरि० ट्रस्ट

सौजन्य से महाशिया दी हट्टी प्रा० लिमिटेड ९/४४ कीर्तिनगर, औद्योगिक क्षेत्र नई दिल्ली-११००१

आर्य सन्देश साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बने, और बनाएँ

क्योंकि यह पत्रिका—

(१) वैदिक मान्यताओं को उजागर करती है।

(२) आर्यों (हिन्दुओं) की महान् परम्पराओं की याद दिलाती है।

(३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से आत्म चेतना जागृत करती है।

(४) भारतीय संस्कृति के भूले बिसरे प्रसंगों, महापुरुषों तथा आदर्श संस्कारों को प्रकाश में लाती है।

(५) ऋषि मुनि तपस्वी आप्तविद्वानों की वाणी का बोध कराती है।

(६) परमेश्वर की पवित्र वाणी वेद का जीवनोपयोगी मधुर सन्देश लाती है।

(७) नव लेखकों, कवियों, चिन्तकों, प्रतिभाशाली विद्वानों, साहित्य सेवियों को प्रोत्साहन देती है।

(८) धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक ज्योति से मन-मन्दिर को प्रकाशित करती है।

(९) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद्, स्मृति, कल्प सूत्र आरण्यक ब्राह्मणग्रन्थ गीता, रामायण, नीति, ऐतिहासिक, अमूल्य आर्ष ग्रन्थों जिन को अधिकांश लोगों ने पढ़ा तो क्या देखा भी नहीं, समस्त आध्यात्मिक जगत् को जिन ग्रन्थों पर सदा गर्व रहेगा उन सभी के बहुमूल्य मोती हर सप्ताह बटोर कर आपकी अंजली भर देती है।

(१०) अतएव देर न कीजिए आज ही अपना वार्षिक चन्दा २० रुपये भेजिये वर्ष में अनेक विशेषांक तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर प्रकाशित ५० रुपये मूल्य की भव्य मनोहारी स्मारिका निःशुल्क दी जायेगी।

सम्पादक
आर्य सन्देश

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां सेवन करें

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
फोन. २६९८३८

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी० (डी०) ७५१

ओ३म्

आर्य दिवाकर

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वर्ष ६ अंक १४ रविवार, २४ फरवरी १९८५ आर्य संवत्सर १९६०८५३०८४ फाल्गुन २०४१ दयानन्दाब्द—१६०

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव समारोहपूर्वक सम्पन्न

महामना मनीषी स्वामी दयानन्द का जीवन युग-युगों तक संसार को प्रेरणा देता रहेगा

लोकसभा अध्यक्ष--श्री बलराम जाखड़

दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आयोजित ऋषि दयानन्द बोधोत्सव के अवसर पर भाषण करते हुए श्री बलराम जाखड ने कहा—आज का दिवस बोध का, कुछ जानने का, सत्य को खोजने का दिवस है। आज उस महामना मनीषी ऋषि को सच्चाई का बोध हुआ था। वे सच्चे शिव की प्राप्ति के लिए गृहत्याग कर चल पडे थे। समस्त विश्व को उन्होने सत्य पथ दिखाया। वे ऐसे उच्चकोटि के आदर्श पुरुष थे जिनका जीवन युग-युगो तक ससार को प्ररणा देता रहेगा।

श्री बलराम जाखड ने आह्वान करते हुए कहा—ऋषि दयानन्द ने सस्कृत, सस्कृति गौ की रक्षा करने के लिए बल दिया था। सस्कृत सभी भाषाओ की जननी है, गाय हमारी माता है उसकी पूर्ण सुरक्षा की जानी चाहिए। उन्होने कहा—मैं अनुरोध करूंगा, आज हमे मानव कल्याण के भाषण न देकर महर्षि दयानन्द द्वारा बतलाये गये मन्तव्यो का अनुसरण करना चाहिए। मैं ससद मे यथासभव जो कुछ हो सका अवश्य करूगा।

श्री प० राजगुरु शर्मा ने सम्बोधन करते हुए कहा—प्राचीन भारत मे राजा अश्वपति ने ऋषियो को कहा था मेरे राज्य मे कोई चोर व्यभिचारी स्त्री पुरुष नही कोई ऐसा व्यक्ति नही जो यज्ञ रोपकार न करता हो आप मेरे राज्य मे प्रवेश कर अन्न जल ग्रहण कर। दुर्भाग्य से आज ऋषियो के देश मे चारित्रिक पतन पराकाष्ठा पर है। तथा भारतीय ससद और विधान सभाएँ इससे अछूती नही हैं अत निर्वाचन से पूर्व विधानसभा और ससद के लिए खडे हुए प्रत्याशियो को घोषणा करनी चाहिए कि वे किसी प्रकार के मादक द्रव्य का प्रयोग नही करते तथा उनका व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन निर्दोष एव स्वच्छ है। ऐसे लोग ही देश का कल्याण कर सकते हैं। इसके साथ देश के प्रत्येक नागरिक को अपने महर्षियो से प्ररणा लकर जीवन और चरित्र को सुधारना चाहिए। मैं प्रशासन मे स्वच्छता लाने के लिए किये जा रहे प्रधानमन्त्री के प्रयास का स्वागत करता हू उन्होने सरकार से माग करते हुए कहा सस्कृत हमारी देववाणी है जिस पर प्रत्येक भारतीय को गर्व है उसकी रक्षा के लिए शासकीय सेवाओ मे प्राथमिकता दी जानी चाहिए। तथा सस्कृत के अध्ययन एवम अध्यापन हेतु माध्यमिक विद्यालयो से ही सस्कृत अनिवार्य घोषित करनी चाहिए।

चित्र मे—श्री बलराम जाखड भाषण करते हुए, मच पर बैठ हुए श्री सच्चिदानन्द शास्त्री श्री पृथ्वीराज शास्त्री श्री प० राजगुरु शर्मा श्री ओमप्रकाश त्यागी श्री महाशय धर्मपाल श्री लाला रामगोपाल शालवाले दिखाई दे रहे हैं।

श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा गौ को राष्ट्रीय पशु घोषित कर गौ की सुरक्षा की जाए तथा सस्कृत के अध्ययन करने वालो को विशेष प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

श्री पृथ्वीराज शास्त्री ने नागालेण्ड और उडीसा मे अपने कार्य की चर्चा करते हुए कहा कि ईसाई पानी के गिलास पर गरीब लोगो का ईमान लूट रहे हैं। अत सरकार को धर्मान्तरण रोकने के लिए कानून बनाना चाहिए क्योकि इससे राष्ट्रद्रोह उत्पन्न हो रहा है।

इस अवसर पर श्री ओमप्रकाश त्यागी एव श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

यज्ञ पर अनेक स्त्री पुरुषों ने दोष त्याग एवं परोपकारी कार्य करने का संकल्प ग्रहण

फिरोजशाह कोटला मैदान मे आर्य केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान मे आयोजित यज्ञ प्रात ८ बजे प्रारम्भ हुआ। इस यज्ञ मे श्री महाशय धर्मपाल, श्री के० ए० भाटिया श्री तीर्थ राम टन्डन एव श्री योगेश आर्य यजमान रूप मे उपस्थित हुए। यज्ञ के ऋत्विक् के रूप मे श्री प्रकाश चन्द्र शास्त्री एव श्री प० यशपाल सुधाशु ने मन्त्रोचारण तथा यज्ञ सचालन किया। श्री प० सुधाशु ने इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को यज्ञ पर व्रत ग्रहण करने का उपदेश दिया। जिससे प्ररित होकर लगभग ५५ स्त्री एव पुरुषो ने यज्ञ पर अपने दोष त्याग एव परोपकारी एवम् आध्यात्मिक कार्य करते रहने का व्रत ग्रहण किया।

ध्वजारोहण

यज्ञ के पश्चात ध्वजारोहण पर श्री सूर्यदेव ने आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए कहा—हमारी सस्कृति और सभ्यता का प्रतीक ये ध्वज हमे राष्ट्र एव धर्म के प्रति कर्त्तव्य निभाते रहने का सन्देश देता है। हम अपने आपको और विश्व को श्रेष्ठ आर्य बनाने का सकल्प ल। ध्वजारोहण क पश्चात् श्री मूलचन्द जी के सयोजन मे खेल कूद एव भाषण प्रतियोगिता का छात्र छात्राओ का कार्यक्रम हुआ। जिसमे युवा पीढि ने महर्षि के राष्ट्रोत्थान सम्बन्धी निर्देशो पर प्रकाश डाला।

सम्पादक—यशपाल सुधांशु एम० ए० व्यवस्थापक—डा० [illegible] प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

वह मृत्यु से नहीं डरेगा

यशपाल सुधांशु

अकामो धीरो अमृत स्वयम्भू रसेन तृप्तो न कुनश्चनोन ।
तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्योरात्मान धीरमजर युवानम् ॥

अथर्व० १०।८।४४

अर्थ—परमेश्वर अकाम" कामना रहित, "धीर धीर अचलायमान, अमत ' अविनाशी कभी न मरने वाला "स्वयम्भू ' स्वय-भू अपने आधार से सदा विद्यमान, रसेन तप्त आनन्दरस से तृप्त 'कुतश्चन न ऊन कही भी न्यून नही न्यूनतारहित 'तमेव धीरम् अजर युवानम्" उस धीर, अजर, सदा नवीन युवा "आत्मानम्" सर्व व्यापक परमात्मा को "विद्वान् न मृत्यो बिभाय ' जानकर ही मनुष्य मृत्यु से नही डरता। मृत्यु से निर्भय हो जाता है।

उद्देश्य—मनुष्य भगवान् को जान कर मृत्यु के दु ख से बचे निभय होवे।

व्याख्या—अनादि काल मे जन्म-मरण का चक्र चलता रहा है, और चलता रहेगा। क्या विद्वान क्या मूर्ख गरीब-अमीर बलवान निबल, योगी-भोगी सब मृत्यु की पकड म हैं। काल बडा कराल है दो पैर वाले—पक्षी मनुष्य आदि और चार पैर वाले—पशु कीट आदि सभी पर वह शासन करता है।

"मृत्युरीशे द्विपदा मृत्युरीशे चतुष्पदाम्।

मृत्यु— मृत' मिट्टी यु ' मिश्रणा-मिश्रणयो मिलना और जुदा हाना। वह यम रूप परमात्मा इस जीव को 'मृत्' अथात् पचभूतयुक्त शरीर से जोडना और (मरण के रूप मे) अलग करता है। मृत यौति वियौति च ' एक पिंड मे जुडना और एक मे अलग हो जाना ही मृत्यु है। केवल मात्र इतनी ही प्रक्रिया का ज्ञान न होने से ही समस्त प्राणीमात्र म मृत्यु का भय व्याप रहा है। मृत्यु से डरना दर्शन की भाषा मे अभि निवेश कहलाता है जिससे ज्ञानी अज्ञानी सभी पीडित है। सारा ससार भय से त्रस्त है। सब से बडी सजा मौत सब स बडा दु ख मौत इसी से डर और डरा रहा आदमी।

वद का ऋषि कहता है—

तमेव विद्वान न बिभाय मृत्यो ।

उसे जानकर मृत्यु का डर नही रहगा।

तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्य पन्था विद्यतेऽयनाय ।

यजुवद ३१-१८

उस परमेश्वर का जानकर ही मृत्यु मे पार हुआ जा सकता है और कोई रास्ता है ही नही।

बच्चा डर गया, किसी अनजानी वस्तु का दखकर चीख पडा बचने का रास्ता है केवल मा की गोदी। गली से चीखता दौडता हुआ आकर मा के दामन को पकड कर सहमा-सहमा हाथ ऊपर उठाता है। आसुओं से चेहरा भीगा है। मा ने गोद मे ले लिया, अब उसे किसी का डर नही, जो हाथ काप रहे थे वे अब तन गये, मुटिठयाँ कस गयी और मुक्का तानता है अब उस डरावनी भयावह वस्तु पर।

काल के पजे से डरे मनुष्य! परमात्मा हम सब की मा है, वह जगदम्बा है उसकी गोदी, उसकी शरण सभी भयो से मुक्ति दिलाने वाली है। उसकी उपासना कर उसकी गोदी मे बैठ। पर पहले उसकी गोदी मे बैठने योग्य बन। देख वह कैसा है?

अकामो धीरो अमृत स्वयम्भू —

वह कामनाओ से रहित है और हम कामनाओ से घिरे हैं। ये कामनाए ही हमारा बन्धन बन गई हैं। जो बधन हमने बाध लिये हैं उनसे निष्काम होकर ही बचा जा सकता है। ससार वाटिका का वह माली धीर है, उससे बडी कोई शक्ति नही जो उसे प्रकम्पित कर सके वह अचलायमान है और हम हर एक झोके पर कापने लगत हैं, थोडा सा भी दु ख हमारे दिल को दहला जाता है। पर जो उसका सम्बल लेता है वह धीर हो जाता है। पहाड से भारी विशाल दु ख को वह तृण समझकर झेल जाता है। मनुष्य मर्त्य कहलाता है क्योकि शरीर मरण धर्मा है। आत्मा अमर है, इस इन्द्र का योग्य साथी 'इन्द्रस्य युज्य सखा' परमात्मा अजर अमर है, तो तू भी अमृत का घूट भर अपने पुण्यो से गुण, धर्म, महान कर्मो से यश प्राप्त कर अमर हो जा।' किन्तु यह तभी सभव है कि जब तू उस स्वयम्भू (अपने आधार से विद्यमान परमात्म-स्वरूप) के स्वाभाविक गुण को अपने जीवन म उतारेगा। अपना आधार स्वय बनेगा दूसरो के सहारे की आकाक्षा नही करेगा।

वह आनन्दघन प्रभु रसेन तृप्त आनन्दरस से भरा-पूरा है। आनन्द का स्रोत निरन्तर बह रहा है। तू ईर्ष्या, द्वेष घृणा की आग म झुलसता, कुढता रहता है। सफलताए बहुत दूर तेरा मजाक उडाती रहती है। आ, थोडी सी मस्ती ले न उस आनन्द स्वरूप की गोदी म बैठ, कुछ पल के लिए अपन आप को विस्मत कर दे केवल मा की गोदी का चरम सुख, तुझ युग युगो से प्यासे चातक को आह्लाद से चमत्कृत कर देगा। उस मस्ती म कर्तव्य के उन्माद मे भरकर ससार यात्रा में प्रवृत्त हो। पर देख! कोई त्रुटि कोई कमी जीवन में मत रहने देना। नही तो औंधे मुँह गिरेगा और फिर उठना और भी कठिन हो जाएगा। तेरा आदर्श तो पूर्ण ब्रह्म है, 'न कुतश्चनोन' कही से न्यून नही है। और तुम न्यूनताओ, लघुताओ, हीनताओं से भरे हो। याद रख एक दोष ही अमरता के स्वच्छ वारि को जीवन घट से रिक्त कर देता है। इन छिद्रो से बचना होगा, जीवन नैय्या को एक छेद से, एक दोष से ही डूबने का खतरा हो जाता है। उस अतुलनीय से अपनी तुलना करते हुए, अघमर्षण करते हुए अनुपम बना।

खुदा की है इबादत,
खुदा सा हो जाऊ।

विधाता की इस अनुपम सृष्टि मे उस विचित्र चित्रकार को हर कण मे, हर वस्तु मे देख। उसकी शक्ति हवाओ के वेग मे, सिंधु की मचलती लहरो मे दिखाई देगी। उसका तेज सूरज की किरणो मे दृष्टि-गोचर होगा। उसका धैर्य पहाडो की अचलता में नक्षत्रो के प्रशासन मे दिखाई देगा, उसका आनन्द रस फूलो के सौंदर्य और सुगन्ध मे झरत निर्झरों मे प्रतीत होगा। यही रस पक्षियों के स्वरो मे चहक रहा है। हर रचना मे उसकी पूर्णता दिखाई पडती है, कोई भी रचना कही से भी न्यून नही है। फिर उसी परमात्मस्वरूप को हर आत्मा मे, हर प्राणी मे देख। सब एक विधाता की सन्तान हैं सबसे हमारा गहरा नाता है, सब अपने हैं हमारे अपने। फिर किस को किसका डर, सर्वत्र प्रेम, आनन्द के ही दर्शन होगे। आत्मवत् देखना ही धर्म है, अपनी आत्मा से भिन्न व्यवहार करना ही अधर्म है।

मृत्यो स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति। उप०

जो व्यक्ति अपने से इस संसार मे नानात्व, भिन्नता देखता है, वह मृत्यु को प्राप्त होता है। जो एकत्व प्राणि मात्र में आत्मवत् व्यवहार करता है उसे न कोई मोह, न कोई शोक होगा। वह समस्त भयों से मुक्त रहेगा।

तत्र को मोह क शोक एकत्वमनुपश्यत ।

उस धीर, अजर, सदा नवीन, जरा-मरण रहित युवा को जानने वाला मृत्यु आदि के भयो से दूर हो जाता है। क्योकि—

यस्य छायाऽमृत यस्य मृत्यु ।

उसकी छाया, आश्रय ही मोक्ष सुख-दायक है उसकी भक्ति न करना, उस की शरण से अलग हटना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है।

भक्त जब उस परमात्मा की उपासना से उसके रग मे रग जाता है भक्ति के रस मे बहने लगता है फिर वह मौत को एक खेल समझता है। शरीर का छूटना पुराने वस्त्रो के त्याग से अधिक महत्त्व नहीं देता। वह इस ससार को सराय और अपने को शाश्वत यात्री (जो सदा से यात्रा पर है) समझता है। फिर उसे यह धर्मशाला यह सराय छोडने मे कैसा दुःख होगा बल्कि अपनी मजिल पाने की कौतूहलता मे वह सराय की तरफ पीछे मुड के भी नही देखेगा। वह तो मस्ती से गा उठेगा।

जिस मरने से जग डरे मेरे मन आनन्द।
मरने से ही तो पाइये पूर्ण परमानन्द ॥

ऋषिवर महामना

नाथशरण आर्य

स्वशक्ति से किसने विश्वव्यापिनी—
उठा लिया धरणी के सुव्योम को,
स्वयम् प्रसूता कलिताम्बरा मयी—
कछार मे फैली पादपावली।
प्रबुद्ध रूपा शुभ पावकागना—
प्रचण्ड थी वाणी पुण्य मगला,
सप्राण थी जैसे श्वेत चन्द्रिका—
मरुत्सखा सी सुधा पयस्विनी।

सतर्क श्रद्धा क्षीराम्बु सी मिली—
जहा न थी कर्कशता कठोरता,
आषाढ का वर्षणशीलमेघ था
सपुत्र था वह गौतम कणाद का।
सुवीर्य गुल्का, नवशस्य श्यामला—
क्षमा सदृश वह पृथ्वी स्वरूप था।
विरत किया पीडा के कुपन्थ से
स्वघातको को स्वद्रव्य दान दे।

सिद्धात मे अगदपाद सा अडिग—
खरदूषणो मे सौमित्र राम था,
करस्थ अगीकृत वद को किया—
उदार चेता ऋषिवर महामना।
स्वराज्य का पोषक मंत्र द्रष्टा—
साकेत कृत धर्मा वा कृतार्थ था,
बढे उसी का हम दृष्टि बिन्दु ले—
सहस्र चेता स्वराष्ट्र के लिए।

सम्पादकीय

ओ३म्
आर्य सन्देश

धर्मवीर पं० लेखराम
अमर बलिदानी

धर्म पर बलिदान होने वाले वीर योद्धा पं० लेखराम का स्मरण आते ही एक दिव्य आकृति मानसपटल पर उभरती है। एक ऐसे माझी की याद आती है जो उफनती नदी के प्रबल वेग का विपरीत धारा में अपनी नाव खेता चलता है और कभी थकता नहीं निराश भी नहीं होता। संसार ऐसे लोगों को उन्मत्त कहा करता है। धर्म की धुन के धनी पं० लेखराम का जीवन महर्षि दयानन्द और वैदिक धर्म के प्रति पूर्ण समर्पित था। वे अपनी धर्म-प्रचार यात्रा में कभी थके नहीं रुके नहीं। विदेशी षडयन्त्रों के जाल में भारतीय संस्कृति विगत शताब्दियों से जकडी चली आ रही है। इस देश के भोले भाले नागरिकों का छल बल से धर्म परिवर्तन किया जाता रहा है। १९वीं शदी में हिन्दू धर्म उस कच्चे आटे के दीपक की तरह हो गया था जिसे घर में रखें तो चूहे खा जाएं और बाहर रखते हैं तो कौए उठा ले जाएं। किसी के छूने मात्र से ही धर्म से अलग जाति से अलग कर दिया जाता था। ऐसे कच्चे धागे जैसे धर्म को तोडने के लिए अनेक मतावलम्बी ईसाई और मुसलमान हिन्दुओं को अपने जाल में जकडते चले जा रहे थे। उस काल में महर्षि दयानन्द द्वारा दिया शुद्धि सुदर्शन चक्र पं० लेखराम ने अपने हाथ में उठा लिया। और उसका ऐसा कुशलता के साथ संचालन किया अनेक बिछुड़े भाई फिर हिन्दू होकर अपने पुराने घर में लौट आये। उनके जीवन की इस घटना से तो शरीर रोमाञ्चित हो जाता है। जब उन्हें पता चला अमुक ग्राम में कुछ लोग मुसलमान होने जा रहे हैं। वे उस समय घर बैठे भोजन करने ही जा रहे थे कि पत्र द्वारा उन्हें सूचना मिली उसी अवस्था में उठकर वे रेलगाडी द्वारा उस गांव के लिए चल पडे। उस गांव में कोई रेलवे स्टेशन नहीं था उन्होंने चलती गाडी से छलांग लगा दी। रेल से गिरने से उन्हें चोट भी लगी खून से रंगे वस्त्रों से ही वे उस स्थल पर पहुंचे जहां कुछ हिन्दू भडकावे में आकर अपना धर्म परित्याग करने जा रहे थे जैसे ही उन्होंने पं० लेखराम को और उनके त्याग को देखा वे भाव विभोर हो गये। उन्होंने यह कह कर धर्मपरिवर्तन से अपना निश्चय बदल लिया कि जिस धर्म में ऐसे हमारे रक्षक भाई हैं जो अपनी जान पर खेल कर हम को बचाने आये हैं हम उस धर्म को कदापि नहीं त्याग सकते।

पं० लेखराम ने अपने जीवनकाल में अनेक पुस्तक लिखी जो लगभग ३१ हैं। ये सभी पुस्तक विधर्मियों के प्रश्नों के उत्तर में लिखी गयीं। महर्षि दयानन्द के प्रामाणिक जीवन चरित्र को लिखने का श्रेय भी धर्मवीर लेखराम को ही जाता है। देश के कोने कोने में जाकर उन्होंने अलभ्य तथ्य एकत्रित किये। हिन्दू देवी देवता और संस्कृति पर कीचड उछालने वाले अनेक मुल्ला मौलवी विधर्मियों से उन्होंने अनेक शास्त्रार्थ भी किये। उनकी विद्वत्ता से तर्कप्रहारों से विधर्मी जनों में आतंक फैल गया। उन पर मिर्जापुर प्रयाग लाहौर मेरठ दिल्ली बम्बई की अदालतों में मुकदमे भी डाल गए परन्तु अदालत द्वारा उनके लेखों भाषणों में कोई भी आक्षेप की बात न पाकर मुकदमे खारिज कर दिए गए। चारों ओर से लोहा लेने से मुसलमान मतान्ध क्रुद्ध हो गए। ऐसे ही एक नीच हत्यारे की वे बलि चढ गये।

उन्होंने आर्यसमाज के भव्य भवन को बनाने में नींव का कार्य किया है। ऐसा उपदेशक ऐसा लेखक ऐसा अमर सेवक ऐसा क्रांतिकारी पाकर आर्यसमाज गर्वित है। उनके बलिदान के पश्चात् उनकी पत्नी का त्याग भी स्तुत्य है। उनके बीमे से २००० रुपये मिले। वे उन्होंने गुरुकुल कांगडी में दान कर दिए छात्रवृत्ति के लिए। उसी छात्रवृत्ति से पं० बुद्धदेव विद्यालंकार जैसा ओजस्वी विद्वान आर्यसमाज को मिला है। धन्य है वीर लेखराम धन्या है उनकी पत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी। धन्य हैं महर्षि दयानन्द जिन्हें ऐसे बलिदानी शिष्य मिले।

आर्यसमाज का अतीत बलिदानियों से शोभित है परन्तु आज हम उन वीर बलिदानी शहीदों की शौर्य कथाओं को भूलते जा रहे हैं। स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हंसराज को तो फिर भी स्मरण किया जाता रहा है शहीद लेखराम कुछ उपेक्षित हो रहे हैं। यदि वीरता को न पूजा न सराहा तो वीरता की जननी बांझ हो जायेगी। क्योंकि—

प्रेरणा शहीदों से यदि हम न लेंगे
आजादी ढलती हुई सांझ हो जाएगी।
यदि वीरों को पूजा हम नहीं करेंगे
तो सच मानो वीरता बांझ हो जाएगी।

यशपाल सुधांशु

स्मारिका के प्रति

मान्यवर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रकाशित स्मारिका का अवलोकन किया। यद्यपि इस स्मारिका का आयोजन संयोजन एवं प्रकाशन सभी कुछ समीचीन है पर इसका सर्वप्रथम सम्पादकीय लेख महर्षि दयानन्द एक ज्योति स्तम्भ सचमुच इस स्मारिका की भी एक ज्योति है। सप्त अनुच्छेदीय इस लघु निबन्ध में लेखक ने महर्षि के सर्वाङ्गीण दिव्य गुणों को मञ्जुल और प्राञ्जल भाषा में जिस साहित्यिक विधा से प्रस्तुत किया है वह स्मारिका में अपना एक अनौपम्य प्रतिष्ठापित करती है।

गत दिसम्बर के आर्यसन्देश के एक अंक में स्वामी श्रद्धानन्द जी को प्रदत्त लेखक की एक अनुपम श्रद्धाञ्जलि भी देखने को मिली थी। परन्तु उससे भी कहीं अधिक बढ चढकर महर्षि दयानन्द के प्रति समर्पित यह श्रद्धाञ्जलि है।

इसको पढ़कर मैं इस विचार में पड़ गया कि क्या महर्षि के प्रति इससे भी अच्छी कोई श्रद्धाञ्जलि हो सकती है? यद्यपि कालो ह्ययं निरवधि विपुला च पृथिवी इस उक्ति के अनुसार किसी क्षमता को अन्तिम कहना कठिन है परन्तु मेरा मन यह निश्चित रूप से स्वीकार कर रहा है कि महर्षि के प्रति यह सर्वोत्तम श्रद्धाञ्जलि है।

परम पिता परमात्मा ऐसी प्रतिभा के धनी ऋषिभक्त सुधांशु एक नहीं अनेकानेक समुत्पन्न करे जो अपनी दिव्य प्रतिभा की नव्य रश्मियों से आर्य-साहित्यिक गगन को सदा समालोकित करते रहें। इस मंगल कामना के साथ।

मंगलाभिलाषी

दिनांक १०.२.८५ सुरेन्द्र कुमार शास्त्री साहित्याचार्य

स्मारिका सम्पादन

आप की भेजी हुई स्मारिका प्राप्त हुई बहुत बहुत धन्यवाद। स्मारिका का सम्पादन बहुत अच्छा हुआ है लेख अच्छे भी हैं प्रेरणादायक व ज्ञानवर्द्धक भी सभी कविताएं अच्छी एवं सुन्दर है। आप लोगों ने इस स्मारिका के सम्पादन में स्वस्थ दृष्टिकोण पैनीदृष्टि और गुणग्राहकता का सुन्दर अभिनव परिचय दिया है।

हार्दिक बधाई
प्रिंसिपल माधो सिंह
बड़ौत (मेरठ)

लेखक महानुभावों से--

हम आपके लेख एवं कविता का स्वागत करते हैं किन्तु--

१. अपने लेख वेद दर्शन उपनिषद् स्मृति कल्पसूत्र आरण्यक ब्राह्मणग्रन्थ गीता रामायण नीति ऐतिहासिक आर्ष ग्रन्थों को आदर्श परम्परा को ध्यान में रखकर भेजें। किसी एक विषय से सम्बन्धित लेख भी अपेक्षित है।
२. सत्संग वाटिका स्तम्भ के लिए वेदोपदेश (मन्त्र व्याख्या) जो सरल एवं भाव पूर्ण हो की नितान्त आवश्यकता है।
३. ईश्वर भक्ति ऋषि दयानन्द एवं बलिदानी वीरों का शौर्य कथा संयुक्त कविता गीत भी प्रकाशित किए जा सकेंगे।
४. जिस लेखक एवं कवि की रचना और लेख प्रकाशित होंगे उन्हें आर्यसन्देश एक वर्ष तक विशेषांक सहित निःशुल्क दिया जाता रहेगा।
५. किसी लेख एवं कविता के अस्वीकृत होने की दशा में वापस भेजने के लिए हम बाध्य नहीं है।

—सम्पादक आर्यसन्देश

आज की उलझनों के दर्पण में--

नारद श्री कृष्ण संवाद

—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

दो प्रकार की आपत्तियां—स्वकृत-परकृत

महाभारत शान्ति पर्व अध्याय ८१ मे नारद श्रीकृष्ण संवाद आता है। श्रीकृष्ण पारिवारिक कलह के हेतु बहुत खिन्न और दुखी थे। श्रीकृष्ण कहते है --

हे महामन ! जैसे दो जुआरियो की एक ही माता एक की जीत चाहती है तो दूसरे की पराजय भी नही चाहती। उसी प्रकार मैं भी इन दोनो आहुक और अक्रूर आपस मे लड़ने वाले दोनो ही जिसके स्वजन हो उसके लिए इससे बढ़कर दुःख की बात क्या होगी ? और वे दोनो ही जिसके सुहृत् न हो उसके लिए भी इससे बढ़कर दुःख की बात क्या हो सकती है ? नारद जी ! इस प्रकार मैं सदा उभय पक्ष का हित चाहने के कारण दोनो ओर से कष्ट पाता रहता हू। ऐसी दशा मे मेरा अपना तथा इन जाति भाइयो का भी जिस प्रकार भला हो वह उपाय बताने की कृपा करे।

श्री कृष्ण की यह समस्या आज की परिस्थिति मे प्रत्येक संवेदनशील मानव की समस्या है। बोलचाल की भाषा मे कहें तो प्राय कहा जाता है कि दो नौकाओ पर पैर मत रखो किसी एक नौका पर ही पैर रखना होगा। सामान्यतः यह ही प्रतीत होता है। पर प्रश्न तो यह है कि यदि यही सामान्य रूप मे समझ मे आने वाली स्थिति ही इसका सबल समाधान होता तो श्री कृष्ण सदृश धीमान् व्यक्ति को नारद से पूछने की भला क्या आवश्यकता थी ? वस्तुतः समस्या पचीदा है, दो नौकाओ पर पैर रखने के सदृश है। इसीलिए श्री कृष्ण को नारद से पूछने की इतनी प्रबल आकांक्षा उसी प्रकार हुई जिस प्रकार गीता के दूसरे अध्याय के सातवें श्लोक मे अर्जुन अपनी दयनीय मानसिक समस्याओ मे उद्विग्न हो श्री कृष्ण से निवेदन करता है -

यत श्रेय स्यात निश्चितं ब्रूहि तन्मे।
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥

हे कृष्ण ! मेरे लिए एक निश्चित श्रेय मार्ग बताओ मैं आप का शिष्य हू तेरी शरण मे आया हू।

यहां अर्जुन का जो मानसिक द्वन्द्व है ठीक उसी प्रकार की डावांडोल स्थिति श्री कृष्ण जी की नारद मुनि के सम्मुख थी। नारद का जो उत्तर है वह आज के पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा प्रतिहिंसा से पूर्णत आपूरित वातावरण मे अवश्य सशक्त प्रतीत नही होता पर इस तथ्य को दृष्टि मे रखते हुए कि—"हिंसा से प्रतिहिंसा का प्रादुर्भाव स्वाभाविक ही है नारद का समाधान सर्वथा रोगमूल निवारण है। नारद मुनि कहते हैं— आपत्तियां दो प्रकार की होती हैं बाह्य और आभ्यन्तर। ये दोनो ही स्वकृत और परकृत भेद से दो दो प्रकार की होती हैं। स्वकृत का अभिप्राय अपने ही कर्मो द्वारा उत्पन्न और परकृत जो किसी दूसरे के निमित्त से पैदा होती है। नारद मुनि कहते है—बिना लोहे का वह शस्त्र जिससे आप विजय प्राप्त कर सकते हैं निम्न है-

(१) अन्न दान करना (२) सहनशीलता (३) सरलता (४) व्यवहार और वचन मे कोमलता तथा (५) यथायोग्य आदर सत्कार पूर्ण व्यवहार।

यह तो वह साधन है जिनका सम्बन्ध दूसरो के साथ है। पर सजातीय बन्धु अगर आप के प्रति कटु और ओछा व्यवहार करें तो उनके निवारण का उपाय मधुर वचन द्वारा उनके हृदय बाद मे मन को शान्त कर देता है।

उपनिषद् और गीता के शब्दो मे

उपनिषदो की आध्यात्मिक भाषा मे यदि नारद मुनि के श्री कृष्ण को दिये गये उपर्युक्त उपदेश को प्रस्तुत करें तो बोध और प्रतिबोध इन दो शब्दो द्वारा अभिव्यक्त कर सकते हैं। जब मानव का हृदय बहिर्मुख होता है अर्थात् वह सदा दूसरो के दोष देखता है और दूसरो द्वारा अपने प्रति व्यवहार मे सदा दोष और त्रुटि पर ही चिन्तन कर अपने भीतर मानसिक अशान्ति उत्पन्न करता रहता है तब उसे उपनिषद् की भाषा मे बोध कहा जाता है। जब इसके सर्वथा विपरीत वह अन्तर्मुख हो तनिक धैर्य और आत्मचिन्तन से विचार करेगा तब वह प्रतिबोध की स्थिति को प्राप्त करने योग्य होगा। नारद मुनि ने श्री कृष्ण को स्वकृत और परकृत आपत्ति सम्बन्धी जो उपदेश दिया है वह उपनिषत् के बोध और प्रतिबोध के मार्ग का ही द्योतक है। इसी प्रकार गीता के १६वें अध्याय के पहले चार श्लोको में दो प्रकार की सम्पत्ति दैवी और दूसरी आसुरी सम्पत् का वर्णन किया है। दैवी सम्पत् के अन्तर्गत—(१) अभय (२) अन्तःकरण की निर्मलता (३) ज्ञान और योग मे निष्ठा (४) दान (५) दम (६) यज्ञ (७) स्वाध्याय (८) तप (९) सरलता (१०) अहिंसा (११) सत्य (१२) अक्रोध (१३) त्याग (१४) शान्ति (१५) दूसरो के दोष न ढूंढना (१६) प्राणियो पर दया (१७) लोभ का न होना (१८) स्वभाव मे कोमलता (१९) लज्जाशीलता (२०) तेज (२१) क्षमा (२२) धैर्य (२३) पवित्रता (२४) द्वेष न होना (२५) अधिक अभिमान न होना—यह दैवी सम्पत्ति के गुण हैं।

आसुरी प्रकृति के अंग हैं—(१) दम्भ (२) दर्प (३) अभिमान (४) क्रोध (५) पारुष्य=कठोरता (६) अज्ञान श्री कृष्ण कहते है कि दैवी संपद् मोक्ष देने वाली और आसुरी सम्पद् बन्धन में डालने वाली है।

यादव वंश की रक्षा—नारद द्वारा उपाय

श्री कृष्ण यादव वंश के अग्रतम नेता थे। नारद मुनि इसी पृष्ठभूमि मे श्री कृष्ण को परामर्श देते हुए कहते हैं—

हे केशव ! आप यादव वंश के मुखिया हैं। यदि इसमे फूट हो गयी तो इस समूचे वंश का विनाश हो जायेगा। आप ऐसा मार्ग अपनाएँ जिससे आप का नेतृत्व पाकर इस यादव गणतन्त्र राज्य का मूलोच्छेद न हो जाय। बुद्धि, क्षमा और इन्द्रिय निग्रह के बिना तथा धन वैभव का त्याग किये बिना कोई राज्य अथवा संघ किसी बुद्धिमान् पुरुष की भी आज्ञा के अधीन नही रहता है। महाभारत शान्ति पर्व अध्याय ८१ के इस प्रकरण मे श्री कृष्ण के प्रश्नो के उत्तर मे नारद मुनि कहते है कि—हे श्रीकृष्ण ! अपने पक्ष की ऐसी उन्नति होनी चाहिए जो धन यश तथा आयु की वृद्धि करने वाली हो और कुटुम्बी जनो मे से किसी का विनाश न हो यह सब जैसे भी सम्पन्न हो वैसा ही आप करें।

परिमार्जन और अनुमार्जन—नारद

यादव गणतन्त्र के अग्रगण्य एकमात्र नेता श्री कृष्ण का इस गणतन्त्र की रक्षा, उन्नति और पारस्परिक सद्भावना की वृद्धि और सतत विकास की दिशा मे दिये जा रहे अपने उपदेश का उपसंहार करते हुए नारद मुनि कहते हैं कि आप परिमार्जन और अनुमार्जन इन दोनो मार्गो का समन्वित और सतत अवलम्बन करने वाले हो।

श्री कृष्ण का यह प्रश्न अब स्वाभाविक ही था कि परिमार्जन और अनुमार्जन इन दोनो प्रकार के मार्गों को आप मुझे विस्तार मे समझा दें। तब नारद मुनि इसके उत्तर मे कहते है—

परिमार्जन के अन्तर्गत यह साधन हैं (१) क्षमा —यह निर्बल का नही सशक्त का साधन है। प्राय यह समझा जाता है कि सब नपुंसक व्यक्ति ही क्षमा अपनाते हैं। महाभारत मे पाण्डवो को कौरवो द्वारा पाण्डवो के प्रति किये जा रहे अपमानजनक व्यवहार के प्रति सहनशीलता का उपदेश देते हुए अर्जुन और भीम को क्षमा के बारे मे कहते है 'अग्नि मे तपे लाल अङ्गारे को हथेली पर रखने के सदृश क्षमा बलिष्ठ व्यक्ति का ही गुण होना है। क्षमा बलवतां हि भूषणम्'—धर्मराज के शब्द है—क्षमा बलवान् का भूषण है।

नीतिकार कहते है—

(१) क्षमा शस्त्र करे यस्य
दुर्जन किं करिष्यति।
अतृणे पतितो वह्नि
स्वयमेव उपशाम्यति॥

(२) नरस्य आभरणं रूपं
रूपस्य आभूषणं गुणः।
गुणस्य आभूषणं ज्ञानं
ज्ञानस्य आभूषणं क्षमा।

भावार्थ—जिसके हाथ मे क्षमा रूपी हथियार है दुर्जन उसका क्या बिगाड़ सकता है। जिस जगह कोई तिनका नहीं है वहां अग्नि स्वयं ही शान्त हो जाती है।

मनुष्य का आभूषण रूप है रूप का आभूषण गुण है, गुण का आभूषण ज्ञान और ज्ञान का आभूषण क्षमा है।

परिमार्जन के अन्तर्गत दूसरा साधन सरलता है अर्थात् गुणवान् होना।

नीतिकार कहते है—

गुणा कुर्वन्ति दूतत्वं
दूरेऽपि वसतां सताम्।
केतकी गन्धमाघ्राय
स्वयम् आयान्ति षट्पदाः॥

भावार्थ —सरलता सदृश श्रेष्ठ पुरुषो के गुण दूर होते हुए भी दूत का काम करते है जैसे भ्रमर केतकी की सुगंध के लिए स्वयं ही दूर से आते हैं।

(३) परिमार्जन के अन्तर्गत तीसरा साधन—कोमलता है इसका दूसरा नाम है शील इसका अभिप्राय नीतिकार के शब्दो मे—

अद्रोह सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा।
अनुग्रहश्च दानं च शीलमेतत विदुर्बुधा॥

भावार्थ—मन वचन कर्म और वाणी से किसी के प्रति द्रोह का भाव न होना इसके विपरीत दया कृपा और दान यह शील है और यही कोमलता है।

अनुमार्जन—नारद मुनि ने श्री कृष्ण को यादवगणतन्त्र की रक्षा के जो उपाय बताये है उनमे 'अनुमार्जन' के बाद दूसरे साधन सेवा सत्कार उपकार द्वारा दूसरे के हृदय मे प्रीति उत्पन्न करना है। प्राचीन भारत के नीतिकारो ने परोपकार की बहुत प्रशंसा की है। जैसे—

(१) परोपकाराय फलन्ति वृक्षा
परोपकाराय वहन्ति नद्य।
परोपकाराय दुहन्ति गावः
परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥

(२) परोपकार कर्तव्य
प्राणैरपि धनैरपि।
परोपकारजं पुण्यं
न स्यात् क्रतुशतैरपि॥

(३) तृण चाहं वरं मन्ये
नरादनुपकारिणः।
घासो भूत्वा पशून्पाति
भीरून्पाति रणाङ्गणे॥

भावार्थ—(१) परोपकार के लिए वृक्ष फल देते हैं, परोपकार के लिए नदियां बहती हैं। परोपकार के लिए गौएं दूध देती परोपकार के लिए यह शरीर है।

(२) प्राण देकर और धन देकर भी परोपकार करना चाहिए। परोपकार से जो पुण्य प्राप्त होता है वह सौ यज्ञो से भी नही होता।

(३) अनुपकारी पुरुष की अपेक्षा मैं तिनके को भी अधिक अच्छा मानता हू क्योकि घास के रूप मे उसके द्वारा गौओं से दूध मिलता है और युद्ध मे जब डरपोक उसे मुख मे डाल भागता है तब वह अपनी रक्षा कर लेता है।

आज की पारिवारिक सामाजिक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय—पेचीदा और एक दूसरे मे प्रबल रूप से उलझी परिस्थितियो मे नारद द्वारा श्री कृष्ण को बताये गये उपाय मौलिक रूप मे सर्वथा संगत सक्षम और अनुकरणीय हैं—ऐसा हमारा दृढ़ विचार है। □

के० सी० ३७/बी
अशोक विहार [illegible]

भारत की मौलिक एकता

लेखक—पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

हिमालय से लेकर बंगाल की खाड़ी तक प्राकृतिक सीमाओं से बंधा अखण्ड भारत एक है। कभी कभी जहरीली हवाएं चलती हैं सीमाएं सिकुड़ने की आशंकाएं पैदा कर जाती हैं। आज फिर ऐसी बागी हवाएं देश में विषगन्ध फैला रही हैं। लेकिन सदियों का इतिहास कहता है युग आये चले गये सिंहासन बदलते रहे ताज बदलते रहे लेकिन देश अखण्ड और एक रहा है।

बड़ी खोज के साथ हम यह लेख प्रस्तुत कर रहे हैं। पं इन्द्र जी (सुपुत्र स्वामी श्रद्धानन्द) उच्चकोटि के साहित्यकार पत्रकार इतिहासकार राजनीतिज्ञ थे। उनकी लौह लेखनी से कोई विषय अछूता नहीं रहा। आज के सन्दर्भ में यह लेख पठनीय है।—सम्पादक

[१] यदि गम्भीरता से विचार किया जाय तो प्रतीत होगा कि आज तक जितने प्रश्न उठाये गये हैं उनमें से शायद ही कोई ऐसा बेमतलब प्रश्न हो जैसा निम्नलिखित प्रश्न है—

क्या भारत एक देश है?

इस देश का नाम कुछ ही रहा हो परन्तु सदा कोई न कोई नाम तो रहा ही है। जब नाम रहा है तो नामी भी रहा ही है। सदियां गुजर गयीं हम कहें कि युग गुजर गये तो भी अत्युक्ति नहीं यह देश और इसका नाम विद्यमान रहे हैं। ऐसी दशा में यदि कोई व्यक्ति यह प्रश्न उठावे कि यह देश एक देश है या नहीं तो इसे बेहूदा प्रश्न ही कह सकते हैं। भारत का नाम चाहे कुछ ही रहा हो जब से इतिहास का कोई भी निशान मिलता है तब से यह एक देश माना जाता रहा है और आज भी माना जाता है जब यह देश उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा हुआ था तब यहां के स्मृतिकार ने कहा था—

> एतद्देशप्रसूतस्य
> सकाशादग्रजन्मनः ।
> स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्
> पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

इस देश में उत्पन्न हुए ब्राह्मणों के समीप आकर पृथ्वी भर के मनुष्य अपने चरित्र को सीखें उस दिन भी यह एक देश था और आज भी। जब यह पराधीनता की असह्य शिला के नीचे से निकलने का यत्न कर रहा है तब भी यह एक देश ही है। जो लोग इसकी एकता से साफ इन्कार करते हैं वह स्वयम् अपने मुंह से अपना खण्डन कर देते हैं।

उनका प्रस्ताव है कि हिन्दुस्तान के टुकड़े कर दो। टुकड़े एक चीज के किये जाते हैं। यदि वह पहले टुकड़े हैं तो उनके विभाजन का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। जो लोग इस देश के विभाजन का प्रश्न उठाते हैं वह इसकी मौलिक एकता का स्वयं स्वीकार कर लेते हैं। वह जब विभाजन का प्रस्ताव करते हैं तो वह वाक्य के आरम्भ में जो शब्द लिखते हैं अन्त में उसी पर हड़ताल फेर देते हैं। अंग्रेजों ने अपने शेष शासनकाल के १५० साल तक यह सिद्ध करने का यत्न किया कि न इण्डिया कभी एक रहा और न रहेगा। वस्तुतः बात यह है कि इस सारे समय में अंग्रेज इस देश को एक मानते रहे और आज भी मान रहे हैं। जो उन्होंने एक समझकर इसका शासन किया और आज भी कर रहे हैं। लोग देश का अंग भंग करना चाहते हैं वह विभाजन का प्रश्न उठाकर ही यह सिद्ध कर रहे हैं कि आज तक यह देश एक है। इसे मैं भारत की मौलिक एकता कहता हूं। जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले। जो किसी राजनैतिक स्वार्थ की सिद्धि के लिए भारत की एकता से इंकार करना चाहते हैं उन्हें भी लाचार होकर मानना पड़ता है कि जब मानवीय इतिहास की किताब खुलती है तब भी यह देश एक था मध्यकाल में भी एक रहा और आज भी एक है।

[२] जैसे मनुष्य का व्यक्तित्व जन्म से मृत्यु तक एक रहता हुआ भी अनेक अवस्थाओं में से गुजरता है उसी प्रकार देश का व्यक्तित्व भी एक रहता हुआ परिस्थितियों के अनुसार पलटता रहता है। भारत का व्यक्तित्व अनेक युगों में से होकर गुजरा है। सम्राट भरत से पहले के समय को हम भारत के इतिहास का आदिकाल या उषःकाल कह सकते हैं। इस काल में भारत के व्यक्तित्व का निर्माण हो रहा था। आर्य जाति दासों और दस्युओं पर विजय प्राप्त करके देश की भौगोलिक और सांस्कृतिक एकता की स्थापना का प्रयत्न कर रही थी। प्रयत्न कितनी सदियों तक जारी रहे यह कहना कठिन है। प्राचीन साहित्य के अनुशीलन से प्रतीत होता है कि वह आर्य अनार्य संघर्ष अनेक सदियों तक जारी रहा होगा।

भरत में वह संघर्ष समाप्त हुआ जिसने भारत में आर्यों की अबाधित सत्ता को दृढ़ता से स्थापित कर दिया। यहां भारत के प्राचीन इतिहास का दूसरा अध्याय शुरू होता है। देश के अनार्य और दस्यु या तो नष्ट हो गये हैं अथवा शक्तिहीन होकर राज नियम के नीचे आ गये हैं। मानव धर्मशास्त्र और सम्राट भरत का एकच्छत्र शासन—यह दो उस युग की मूलभूत घटनाएं हैं।

भारत की राजनैतिक एकता स्थापित हो जाने का यह अभिप्राय नहीं समझना चाहिए कि एक बार देश का एकछत्र शासन हो जाने के पश्चात् उसकी स्थिति में फिर कोई परिवर्तन नहीं आया। उसमें अनेक परिवर्तन आते रहे। वह परिवर्तन दो तरह के थे। भारतीय साम्राज्य का केन्द्र बदलता रहा। कभी वह अयोध्या में जाता कभी इन्द्रप्रस्थ में कभी चक्रवर्ती राज्य की राजधानी बनने का सौभाग्य पाटलिपुत्र को प्राप्त हुआ तो कभी उज्जयिनी को। केन्द्र स्थान बदलते रहे परन्तु साम्राज्य की परिधि लगभग समान रही। उत्तर में सिन्धु दक्षिण में रामेश्वर पूर्व में आसाम और पूर्वीय समुद्र और पश्चिम में काठियावाड़ और सह्याद्रि भारत की यह सीमाएं छोटे मोटे परिवर्तनों के साथ स्थिर रहीं। कभी उत्तर दिशा से यवनों ने आक्रमण कर दिया तो कभी सिथीयन हूण तथा शक लोगों ने। कुछ समय के लिए उन्होंने देश के भिन्न टुकड़ों को अपने अधीन भी कर लिया परन्तु शीघ्र ही भारत में कोई विजेता उठा और उसने विदेशी आक्रमणकारियों को परास्त करके देश को फिर स्वाधीन कर दिया। दक्षिण में भी थोड़े बहुत उलट फेर होकर रहे। उस समय के आर्य विजेताओं की यह नीति नहीं थी कि भूमि के जिस भाग को जीता जाय इसकी स्वाधीन सत्ता को मिटा दिया जाय। महाराज रामचन्द्र ने लंका पर विजय प्राप्त की और उसे विभीषण को सौंप दिया। दक्षिण के राजाओं के सम्बन्ध में उत्तर के शासकों की यही नीति मध्यकाल में भी रही। वे सारे भारत पर अपने चक्रवर्ती राज्य की सत्ता को स्थापित करना पर्याप्त समझते थे इससे देश की एकता भी कायम रहती थी और प्रान्तों की स्वाधीन सत्ता भी। उस समय बहुत कम ऐसा अवसर आया जब लगभग सारे देश को अथवा यों कहें देश के बड़े भाग का एकछत्र राजा कोई न रहा हो। कभी राघव तो कभी कौरव कभी मौर्य तो कभी गुप्त। वंश बदलते रहे पर एक सत्ता किसी न किसी स्थान पर कायम रही। यदि किसी बाहरी आघात के कारण कुछ समय के लिए भारत का भंग हुआ भी तो थोड़े ही समय में युद्ध द्वारा या विदेशी जातियों के भारतीय बन जाने के कारण एकता फिर स्थापित हो गई। हम कह सकते हैं कि शायद सैंकड़ों सदियों के उतार चढ़ाव भारत की भौतिक एकता को नष्ट नहीं कर सके। भारतवासी जानते थे कि यह हमारा देश है और विदेशी स्वीकार करते थे कि भारतवर्ष भारतवासियों का देश है और वह अन्य सारी दुनिया से अलग भौगोलिक राजनैतिक और सामाजिक स्थिति रखता है।

(३) मुसलमानों के शासन काल में भारत की मौलिक एकता और भी अधिक स्पष्टता से प्रकट हो गई। मुसलमान आक्रमणकारियों के अनेक जत्थों ने थोड़े थोड़े समय के पश्चात् उत्तर दिशा से भारत पर आक्रमण किये। उनमें से किसी जत्थे के सरदार को भारत का थोड़ा सा हिस्सा जीतने में सफलता हुई और किसी को अधिक हिस्सा जीतने में। दोनों ही दशाओं में मुसलमान शासकों की प्रवृत्ति यह रही कि वह सारे हिन्दुस्तान के स्वामी बन सकें। उन लोगों की दृष्टि में सारा हिन्दुस्तान वही था जिसका अपना पुराना नाम भारतवर्ष था। जितने वंशों ने राज्य किया उन में से सभी ने निरन्तर यह यत्न जारी रखा कि वह सारे देश पर अपनी हुकूमत कायम कर। कामयाबी तो सभी राजवंशों ने की परन्तु उनमें से आंशिक सफलता मुगल वंश के राजाओं को हुई। वह पूरे नहीं तो ८० फीसदी भारत के हाकिम बन गये थे। यह ध्यान देने योग्य बात है कि जब तक वह शक्ति सम्पन्न रहे सारे देश पर शासन स्थापित करने की उनकी प्रवृत्ति जारी रही। उनकी दृष्टि में यह बात एक निश्चित सत्य के रूप में विद्यमान रही कि हिन्दूकुश पर्वत से लेकर रामेश्वर तक का हिन्दुस्तान एक ही देश है। हिन्दुस्तान का बादशाह वही कहला सकता है जो इस सारे देश का बादशाह हो।

मुगल साम्राज्य का अन्त एक विशाल राज्यक्रान्ति के मध्य में हुआ। हम विश्वास से कह सकते हैं कि यदि उस क्रान्ति के बीच में पश्चिम की जातियां न आ पड़तीं तो आज से १५० वर्ष पहले भारतवर्ष में पूर्ण स्वराज्य स्थापित हो गया होता परन्तु भाग्य को कुछ और ही मंजूर था। जिस समय देश में क्रान्ति की उथल पुथल मची हुई थी उस समय यहां पश्चिम के लोग साधन सम्पन्न होकर आ गये और भारतवर्ष पर अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थापित हो गया।

अंग्रेजों के शासनकाल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसने प्रारम्भ से ही भारतवर्ष की प्राकृतिक सीमाओं को अपना लक्ष्य बना लिया। उन्होंने मन में समझ लिया कि हिन्दुस्तान का मालिक वही हो सकता है जो सारे देश का शासक हो और सारा देश वही है जिसका पुराना नाम भारतवर्ष है। एक सदी के निरन्तर प्रयत्न से वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल हुए। सारा भारतखण्ड अंग्रेजों के राजनीति कोश में Indian Empire (भारत साम्राज्य) था। अंग्रेज शासकों ने सिद्धांत रूप में और व्यावहारिक रूप में भारतवर्ष को एक और अखण्ड देश स्वीकार किया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जब कभी मनुष्य जाति के इतिहास पर से अन्धेरा का पर्दा उठा होगा तब से यह देश एक और अखण्ड समझा जाता रहा है। युग आये और चले गये भिन्न भिन्न जातियों के नाम गद्दियों पर बैठे और काल के गाल में विलीन हो गये परन्तु आज तक भारत की मौलिक एकता की उपेक्षा कोई भी न कर सका जो सारे देश का शासक बन गया। यह है भारत की मौलिक एकता। न वह आज तक खण्डित हुई और न आगे खण्डित होगी। □

यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप

लेखक शिवाकान्त उपाध्याय

८ सृष्टिविज्ञान मे इस यज्ञ का एक और स्वरूप हम लोगो के सामने उपस्थित होता है जिस प्रकार जीवन की रक्षा के लिए वाक्+प्राण+मन तीनो का होना अनिवार्य है उसी प्रकार सृष्टि रचना के लिए अग्नि वायु आदित्य का होना भी परम आवश्यक है। यही अग्नि वायु और आदित्य त्रयी विद्या के स्रोत है अग्नि ऋग्वेद का ऋषि है वायु सामवेद का और आदित्य यजुर्वेद का ऋषि है वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यदि इस बात पर विचार करें तो एक बात स्पष्ट हो जाती है—अग्नि ऋग्वेद के अन्दर पिण्ड के निर्माण का विज्ञान देता है। वायु पिण्ड मण्डल को घेरने वाली परिधि तथा आदित्य पिण्ड मण्डल का केन्द्र बिन्दु है जहा से गति का स्फुरण होता है। यह अग्नि ही तो है जो सृष्टि रचना के कण कण मे समाया हुआ है इसी अग्नि के द्वारा ही रूपवान् पदार्थों की सृष्टि हो रही है इस अग्नि को ही यज्ञ वेदी मे प्रज्वलित कर सृष्टि निर्माण का एक यज्ञ चक्र ऋषियों ने प्रस्तुत किया इस के वैज्ञानिक रहस्य पर अनुसधान अपेक्षित है।

६ यज्ञ की समिधा —

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यज्ञ की समिधा का चयन करते हुए भी ऐसी समिधाओ का वर्णन किया है जो जलने के बाद कोयला न बन पाए समिधा ए जलकर राख हो जाए ऋषि पचमहायज्ञ विधि में लिखते हैं पलाश शमी पीपल वड गूलर आम बिल्व आदि की समिधा वेदी मे चुनना चाहिए। समिधाए कीड़ा लगी न हो मलिन देश मे उत्पन्न न हो और अपवित्र पदार्थ आदि से दूषित न हो ऐसी समिधाओ का विधान ऋषियो ने क्यो किया? इसका वैज्ञानिक पक्ष आज के वैज्ञानिक युग मे विचारणीय है। जो लकड़ी जलकर कोयला बनाती हैं उनमे कार्बन Carbon की मात्रा अधिक होती है और Co^2 Gas का निर्माण अधिक होता है परन्तु जो समिधा जलकर राख हो जाती है उसमे Carbon की मात्रा बिल्कुल ही नगण्य होती है और जो कुछ Carbon होता है वह भी यज्ञीय पदार्थों के साथ नाना प्रकार के और दूसरे सूक्ष्म रासायनिक पदार्थ बनाने मे प्रयुक्त हो जाता है और Co_2 या इस प्रकार की दूसरा और कोई गैस जिससे नुकसान हो सकता है नही उत्पन्न हो सकती। इस प्रकार सम्पूर्ण यज्ञीय पदार्थ और समिधा अग्नि के साथ आत्मसात होकर वातावरण को पवित्र करने का रसायन बन जाती है और यज्ञवेदी के चारों ओर सुगन्धित और स्वास्थ्य वर्धक सृष्टि का निर्माण होने लगता है। यदि असावधानी के कारण कभी कोई विषैली गैस या Co_2 आदि का निर्माण हो भी जाता है तो वेदी मे लगे पत्तो के गुल्म और वन्दनवार केले के खम्भे आदि के द्वारा इन तमाम गैसो का ग्रहण हो जाता है और शुद्ध आक्सीजन का निर्माण हो जाता है। यज्ञ के चारो तरफ मेखलाओं मे भरा जल इन विषैली गैसो को अपने अन्दर घुला लेता है और उनका कोई बुरा प्रभाव नही पड़ता। हा यज्ञ के माध्यम से निकला सूक्ष्म गैस के रूप मे विभिन्न पदार्थ वातावरण को शुद्ध पवित्र करने मे सहायक हो जाता है। वर्तमान युग मे वैज्ञानिको को इस सन्दर्भ मे अवश्य अनुसधान करना चाहिए और यज्ञ के माध्यम से ससार के अन्दर व्याप्त प्रदूषण को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

१० यज्ञ मे प्रयुक्त द्रव्य—

यज्ञ के अन्दर प्रयोग मे आने वाले पदार्थों के ऊपर भी विचार करना आवश्यक है महर्षि स्वामी दयानन्द ने चार प्रकार के द्रव्यो के प्रयोग का वर्णन अपने ग्रन्थ सस्कारविधि मे लिखा है।

(१) सुगन्धित—कस्तूरी केशर अगर तगर श्वेत चन्दन इलायची जायफल जावित्री आदि।

(२) पुष्टि कारक—घृत दूध फल कन्द अन्न चावल गेहू उड़द आदि।

(३) मिष्ट शक्कर शहद छुआरे दाख आदि।

(४) रोगनाशक—सोमलता गिलोय आदि औषधिया।

इन पदार्थों के साथ भात खिचड़ी (बिना नमक) खीर लड्डू मोहन भोग आदि पदार्थों को भी यज्ञ मे डालने का विधान है।

उपरोक्त विधान से स्पष्ट विदित होता है कि यज्ञ मे फल फूल अन्न वनस्पतिया और औषधियो को ही डालना चाहिए। इस प्रसग मे शतपथ ब्राह्मण का निदेश द्रष्टव्य है—अग्निहोत्र व यज्ञो वनस्पतियज्ञिय इति वनस्पतयो हि यज्ञीया नहि मनुष्या यज्ञना यद्वनस्पतयो न स्युस्त स्मादाहु वनस्पतियज्ञिय इति। श०।३।१।३ अर्थात यज्ञो के अन्दर वनस्पतिया का ही प्रयोग होना चाहिए। यदि उपरोक्त पदार्थ न मिले और यज्ञ करना हो तो किससे यज्ञ किया जाए इस प्रसग मे शतपथ ब्राह्मण मे याज्ञवल्क्य और जनक का सवाद पढ़ने लायक है।

तद्धैतज्जनको वैदेह याज्ञवल्क्य पप्रच्छ वेत्था अग्निहोत्र याज्ञवल्क्य वेद सम्राडिति किमिति पय एवेति।२ यत पयो न स्यात केन जुहुया इति। व्रीहियवाभ्यामिति। यद व्रीहियवौ न स्याताम केन जुहुया इति। या आरण्या ओषधय इति। यदा ऽऽरण्या ओषधयो न स्यु केन जुहुया इति। वानस्पत्येनेति। यद वानस्पत्य न स्यात केन जुहुया इत्यद्भिरिति। यदापो न स्यु केन जुहुया इति। ३।स होवाच न वा इह तर्हि किंचनासीदथैतत सत्य श्रद्धायामिति। वत्थ याज्ञवल्क्याग्निहोत्र धेनुशतन्ते ददामीति हो वाच।४।

शत० ११।३।२ ४

जनक ने याज्ञवल्क्य से पूछा—हे याज्ञवल्क्य क्या तुम अग्निहोत्र का तत्त्व जानते हो? याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया कि सम्राट मैं अग्निहोत्र का तत्त्व जानता हू।

जनक ने पूछा—किस पदार्थ से हवन करना चाहिए? दूध से। यदि दूध न मिले तो? जौ चावल से। यदि जौ चावल न मिलें तो जगली अनाज से। जगली अनाज फल आदि कुछ भी न मिले तो जल के द्वारा हवन करना चाहिए और जब जल भी न मिले तो किस पदार्थ से यज्ञ करना चाहिए? इस पर याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया कि यदि कुछ भी पास न हो तो सत्य का श्रद्धा मे हवन करते रहना चाहिए। इस प्रकार का उत्तर सुनकर जनक ने याज्ञवल्क्य को एक सौ गौए दान मे दी और कहा कि आप यज्ञ को ठीक प्रकार से जानते है।

उपरोक्त कथानक से स्पष्ट है कि यज्ञीय पदार्थ अन्न। फल फूल वनस्पति औषधी आदि ही हो सकते हैं। दूसरी चीजें हविष नही बन सकती। लोग यज्ञ के अन्दर अज्ञानता वश अथवा भावकतावश ऐसे पदार्थ भी डाल देते हैं जिनका निषेध है और यज्ञ तामसी बन जाता है। अच्छे प्रभाव के स्थान पर बुरे प्रभाव वाला यज्ञ अनिष्टकारक हो जाता है

इस प्रसग मे एक बात की चर्चा अवश्य करना चाहता हू। कुछ लोग यज्ञ मे पशुओ को मार मारकर उनका मास डालते है और प्रमाण मे पशु बलि वाले अश्वमेध यज्ञ आदि का उदाहरण देते हैं। आजकल इस प्रकार के भ्रामक प्रचार सरिता आदि पत्रिकाओ मे बहुत जोर से किए जा रहे हैं। वेद के मन्त्रो का दुष्ट विनियोग करके अपने पक्ष मे इस प्रकार की गलत बातो का प्रमाण वेद से निकालने का दुस्साहस भी कुछ हठी व्यक्ति कर रहे हैं।

वेदमन्त्र के दुष्ट विनियोग का निम्न उदाहरण देखने योग्य है—पशुबलि के समर्थक जब बकरी के बच्चे (मैमने) को फासी लगाकर मारते हैं तो यजुर्वेद के निम्नलिखित मन्त्र को पढते हैं ऋतस्य त्वा देवहवि पाशेन प्रति मुञ्चामि। यजु० ६।८ मन्त्र का अर्थ है कि हे विद्वानो की हवि! तुम्हें अविद्यादि बन्धन से छुड़ा कर ज्ञान के पाश मे बाधता हू। (स्वामी दयानन्द भाष्य) यहा बकरे के गले मे फन्दा डालने का कोई विधान नही है। पर स्वार्थ वश मासाहारियो ने इस मत्र का गलत अर्थ करके इस का दुष्ट विनियोग कर डाला और पशु बलि सिद्ध करने का दुराग्रह प्रारम्भ कर दिया। इसी मत्र से अगले मन्त्र मे निम्न आदेश है अनु त्वा माता मन्यता मनु पितानु भ्राता सगर्भ्यो नु सखा सयूथ्य। य० ६।९।

इसका अर्थ करते हुए मासाहारियो ने घोषणा की कि हे बकरी के बच्चे तुम्हें मारने के लिए तुम्हारे माता पिता भाई बन्धु सब अनुमति दें। क्या कोई बुद्धिमान व्यक्ति उपरोक्त कथन को सच मान सकता है। बकरी के माता पिता कहा मिलेंगे और अपने ही बच्चे को मारने का अनुमति क्यो और कैसे देंगे। मन्त्र का उचित अर्थ है कि माता पिता बन्धु वर्ग सब लोग अपनी सन्तान को आचार्य को देकर अच्छी शिक्षा और ब्रह्मचर्य आदि गुणो मे सम्पन्न करने की अनुमति दें।

एक और प्रसग देखिये—यजुर्वेद का मन्त्र है—वाच ते शुन्धामि प्राण ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रन्ते शुन्धामि नाभिन्ते शुन्धामि मेढ्रन्ते शुन्धामि पायुन्ते शुन्धामि चरित्रास्ते शुन्धामि।

यजुर्वेद ६।१४

इस मन्त्र का दुष्ट विनियोग किया गया और निम्न प्रकार से इस के गलत अर्थ का प्रचार हुआ।

यजमान की पत्नी बकरी के मारे बच्चे के विभिन्न अगो का स्पर्श करके कहती है कि हे मेमने तेरी वाणी प्राण चक्षु कान नाभि उपस्थेन्द्रिय गुदा तथा तेरे चरित्र को शुद्ध करती हूँ। एक बात विचारणीय है जब बकरा ही मर गया तो लाश को छूकर क्या कुछ शुद्ध किया जा सकता है और कौन इस प्रकार की भाव भाषा को सुनेगा। लाश तो मरी पड़ी है पर शुद्धिकरण हो रहा है। कैसी विचित्र विडम्बना है। इस मन्त्र का उचित अर्थ निम्न प्रकार है—आचार्य अपने शिष्य से कहता है कि मैं तुम्हारी वाणी प्राण चक्षु श्रोत्र नाभि आदि को शुद्ध करता हू जिससे तुम अच्छे गुणों मे प्रवृत्त हो।

जिन लोगो ने उपरोक्त मत्रो का दुष्ट विनियोग किया है उनके सामने एक और प्रश्न उपस्थित हो गया। इसी अध्याय का अगला मत्र आशीर्वाद का मत्र है। प्रकरण के अनुसार आचार्य अपने शिष्य को आशीर्वाद देता है कि वाक त आप्यायताम प्राणस्त आप्यायताम चक्षुस्त आप्यायताम श्रोत्र त आप्यायताम। ६।१५

तेरी वाणी उन्नत हो प्राण बलादि गुण युक्त हों दृष्टि निर्मल हो कान

सद्गुण व्याप्त हो तथा तेरे दिन सुखपूर्वक बीतें। परन्तु इन मासाहारियो ने इस मन्त्र को भी घसीटने का प्रयास किया और मन्त्र का दुष्ट विनियोग करके इसे मरे हुए बकरे के लिए आशीर्वचन बना दिया, मरे हुए बकरे से कसाई कहता है कि—'हे मरे हुए बकरे तेरी वाणी फले फूले, तेरा प्राण फले फूले, तेरे चक्षु फलें-फूलें, तेरे कान फलें फूलें और तेरे दिन सुख शान्ति से बीते।

इस प्रकार की असम्भव और असगत बात का प्रश्रय इन पशु बलि का विधान करने वाले पाखण्डियो ने वेदो के मन्त्रो का गलत विनियोग करके लोगो मे किया और यज्ञो में पशु बलि का भ्रामक और गलत प्रचार किया।

यहा एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हू कि पशयाग मे मास-भक्षियों ने मन्त्रो का दुष्ट विनियोग और उनका गलत ऊट-पटाग अर्थ इसलिए कर दिया कि इन मन्त्रो का प्रयोग पशु सज्ञपन मे किया गया है। पशु और सज्ञपन दोनो शब्दो को न समझने के कारण यह भूल हो गई। पशु शब्द की उचित व्याख्या समझने पर यह भूल न होती। पश्यतीति पशु। पशु का अर्थ है बालक। अथर्व १४।२।७६ वितिष्ठन्ताम् मातुरस्या उपस्थात् नाना रूपा पशवो जायमाना। यहा पशुओ का अर्थ बालक ही है। Grifeth ने भी इसमे पशु का अर्थ Babies ही किया है।

सज्ञपन का अर्थ भी मारना लिया गया जो कि सम्भव नही है। सज्ञपन का अर्थ है सम्यक प्रकारेण ज्ञान देना। पशु सज्ञपन का अर्थ पशुओ को मारना न होकर पशुओ को सम्यक् प्रकार से ज्ञान देना। सज्ञपन का अर्थ मारना नही हो सकता। इसमे शतपथ का प्रमाण उल्लेखनीय है।

जीवमेव देव मा हविरमृतममृतानाम्। ३।८।२।४

देव लोग जीवित है मुर्दे नही—इसलिए उनकी हवि भी सजीव हो सकती है मुर्दा नही। जीव वै देवाना हवि.। इस प्रकार पशु सज्ञपन का अर्थ हुआ कि विनीत बालक अपने आचार्य से विद्यावान् होने की प्रार्थना करे और आचार्य उसे उचित शिक्षा देकर उपरोक्त मन्त्रो द्वारा आशीर्वाद दे और उसका निर्माण करे।

इस प्रकरण मे पशु शब्द का वैज्ञानिक पक्ष भी विचारणीय है। शतपथ ब्राह्मण मे एक स्थान पर आता है कि —(प्रजापति) तेषु (पशुषु) एवम् (अग्निम) अपश्यत् तस्माद्वै ते पशव। श० ६।२।१।४ प्रजापति ने इन पशुओ मे अग्नि को देखा, इसी कारण इन्हे पशु कहते है। ये पशु द्युलोक और अन्तरिक्ष लोक के अन्दर उत्पन्न वे कण और रेणु हैं जिन्हे रात्रि या अधकार मे देखा जा सकता है। इसलिए इन्हें पशु कहते हैं (पश्यतीति पशु) यहा इन पशुओ का वर्णन नही है जो पृथ्वी पर घूमते रहते है। इन पशुओ मे आग्नेय कण हैं, इनके अन्दर चमक है। इन पशुओ के अन्दर से विकीरण होता रहता है तथा निर्विघ्न अन्तरिक्ष मे ये पशु भ्रमण करते रहते हैं। इन्ही आग्नेय तत्वो को यज्ञ के अन्दर प्रयोग करने का विधान है। यजुर्वेद मे स्पष्ट आता है—देवा यद् यज्ञ तन्वाना अबध्नन् पुरुषम् पशुम्। विद्वान् जो यज्ञ करते हैं उसमे पुरुष पशुओ को बाधते हैं। य० ३१।५१ बाधना शब्द यहाँ सगतिकरण की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कर रहा है न कि पशुओं के बाधने की ओर। लोगो ने पशु का वैज्ञानिक स्वरूप न समझ कर यज्ञ के निमित्त घोडा—गधा, बकरा आदि लाकर बाधना शुरू कर दिया और देखते देखते इन पशुओ की बलि प्रारम्भ हो गई जबकि बहुत स्पष्ट वर्णन है—

राष्ट्र वा अश्वमेध। अन्न हि गौ। अग्निर्वा अश्वा। आज्य मेध। शतपथ ब्राह्मण। शतपथ ब्राह्मण मे एक प्रसग पर इन घोडो गधो और बकरो का वर्णन मिलता है —

क्षत्र वा अश्वश्वो वैश्य च शूद्र चानुरासभो ब्राह्मणमज। श० ६।४।४।१४

घोडा क्षत्रिय के अनुकूल गुणवाला है वैश्य शूद्र—गधे के गुण वाले हैं तथा ब्राह्मण बकरे के गुणवाला होता है। इन उदाहरणो से स्पष्ट है कि यहा पशु शब्द का अर्थ घोडा गधा या गाय आदि के रूप मे पशु नही है यहाँ तो पशु वे अणु परमाणु के रूप हैं। वे द्यौलोक, अन्तरिक्षलोक मे आग्नेय शक्ति के साथ विचरण कर रहे हैं। इन्ही पशुओ को यज्ञ के निमित्त उपयोग मे लाया जाता है।

इन पशुओ मे अग्नि व्याप्त है और उनकी चमक से ये कण चमकते हैं। एक और प्रसग प्रस्तुत करना उपयुक्त होगा।

आग्ने वाव सर्व पशु। ऐ० ब्रा० २।६
आग्नेया पशव। तै० ब्रा०। १।१४।३
सर्वे पशवो यदग्नि तस्माद् अग्नौ पशवो रमन्त। शत० ६।१।४।१२

इन उदाहरणो से स्पष्ट विदित होता है कि जिन पशुओ का यज्ञ मे वर्णन है वे साधारण पशु नही हैं। ये पशु अग्नि मे रमा करते हैं और ये पशु आग्नेय परमाणु द्युलोक से अन्तरिक्ष लोक होते हुए पृथ्वी लोक तक भ्रमण करते रहते हैं। एक पशु अथवा परमाणु Electricaly Changed Graficles हैं जो Positive Charge के साथ तीनो लोको मे घूमते रहते हैं। जैमिनी ब्राह्मण मे एक वर्णन मिलता है—अष्टातमान् पशून्। जै० ३।८।१८। यहा पशु आठ प्रकार के बतलाये गये हैं। यह आठ प्रकार के Charged कणो का ही वर्णन है जो प्रकाश युक्त हैं और अपनी रश्मियो का विकीरण करते रहते हैं।

ततो रेवतय पशवोऽसृज्यन्त।
जै० १।१४०।

आग्नेयाश्च मरुतश्च पशु।
जै० २।२३१।

ये अग्नि और मरुत के Sarticles चमकने वाले होते हैं। इन आठ प्रकार के पशुओ (Charged Sarticles) के अन्दर विभिन्नता का कारण भी जैमिनी ब्राह्मण मे बडे वैज्ञानिक रहस्य का सकेत करता है।

ऊनातिरिक्तो मिथुनौ प्रजननौ। ऊनम् अन्यस्य अतिरिक्तम अन्यस्य ऊनम् अतिरिक्तादि वै मिथुनात प्रजा पशव प्रजायन्ते। जै० २।६६१।

नाना प्रकार के मिथुन की क्रिया अर्थात् घर्षण से विभिन्न Charged Sarticles "पशु" की उत्पत्ति होती है। अन्तरिक्ष के अन्दर वायु और अग्नि पृथ्वी आदि के परमाणु विभिन्न परिस्थितियो मे भिन्न भिन्न से सयोग घर्षण आदि द्वारा अनेक प्रकार के पशुओ का निर्माण करते हैं। इन परमाणुओ का दिव्यत्व Reflecting Properties भी भिन्न भिन्न होता है।

मीमासा दर्शन मे अग्निष्टोम का वर्णन मिलता है। इस अग्निष्टोम के आठ प्रकार भी इन्ही आठ तरह के Charged Sarticles की Reflecting Properties का प्रारूप है।

इन तमाम उपरोक्त उदाहरणो द्वारा यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यज्ञ के पशु आग्नेय परमाणु ही हैं और इनका किञ्चित मात्र भी सम्बन्ध इन साधारण पशुओ मे नही है। अत यज्ञ के अन्दर बकरे घोडे आदि पशुओ की बलि का कोई वर्णन अथवा विधान नही है। सुधी पाठक और आज कल के वैज्ञानिको का यह उत्तरदायित्व है कि इन तमाम बातो को विज्ञान के परिप्रेक्ष्य मे देखने और समझने का प्रयत्न करे। सम्पूर्ण वैदिक वाङमय इस प्रकार के अनेको वैज्ञानिक रहस्यो से परिपूर्ण है। हमे प्रयास पूर्वक इन बातो को समझना पडेगा और पशु बलि ऐसे महान् पाप को सम्पूर्ण रूप से बन्द करने और कराने का सकल्प लेना होगा।

आर्ष ग्रन्थो का पठन पाठन बन्द होने के कारण और परम्पराओ मे पौराणिकता के सन्निवेश के कारण यज्ञो का वास्तविक विज्ञान सम्मत शास्त्रीय स्वरूप हमारे सामने बहुत धुधले रूप मे प्रकट होता है आज ऋषि परम्पराए उनका वैज्ञानिक स्वरूप, उनकी महत्ता और उपयोगिता हमारी सूझबूझ से बहुत ऊपर की वस्तु जान पडती है। फिर भी प्रयास अवश्य होना चाहिए। उसी दिशा मे एक हल्का सा प्रयास प्रस्तुत करने का प्रयत्न इस निबन्ध मे किया गया है। —यज्ञ मे प्रयुक्त क्रियाओ का वैज्ञानिक स्वरूप ●

दानवता के पथ पर बढ़ते मानवता के आज चरण

राधेश्याम आर्य, विद्यावाचस्पति

मानवता का होता है उपहास
नष्ट हुआ है शुचिता का विश्वास,
क्रन्दन ही क्रन्दन का जगती—
तल पर, हुआ अमर सा वास।

बिखरा है बहु द्वन्द्व-दुराव,
होता है दुर्गुण का स्राव,
भ्रमित हुई है बीच भवर मे—
आज मनुजता की ही नाव।

वर हैं सभी बने अभिशाप
बढा रक्त का अतुलित चाप,
आती है वसुधा कण कण से—
दनुज वृत्तियो की कटु भाप।

लुठित त्याग तथा बलिदान,
कुठित स्वर्गिक स्वाभिमान,
सोया पडा हुआ है युग का —
अमिय अमिटसा नवअभिमान।

दुरभिसन्धियो का जजाल,
घिरता घने तिमिर का जाल,
दुराग्रही मानस की वृत्ति—
दिखाती भैरव रूप अकाल।

करता है युग हाहाकार,
सकट बढता अगम अपार
सर्वनाश की ज्वालाओ मे—
जलता धू धू कर ससार।

नही रहा अब सत्याचरण,
कही उपद्रव कही मरण,
दानवता के पथ पर बढते—
मानवता के आज चरण।

युद्ध-लूट है, बरबादी,
विध्वसोन्मुख आबादी,
युग की सकट मे है फसी—
अजर-अमर सी आजादी।

साहस-प्रतिभा व उत्साह,
करते प्रतिक्षण आत्मदाह
आती वसुधा के प्रतिकण से—
करुणाभरी असीमित आह।

पाशविक प्रवृत्तियो की सतुष्टि
करती अपनी मोहक पुष्टि
बलि देकर करते रहते हैं—
सत्प्रवृत्तियो की, हम तुष्टि।

है आह्लाद भरा आमत्रण
देता इस जगती का कण कण
मनुपुत्रो! अब उठो! बढो तुम—
स्वीकारो, समग्र निमत्रण।

युग का है इतिहास बुलाता
मनुज मनुज का अभिनव नाता
भावी पृष्ठो मे खोलो तुम—
दिव्य शक्ति ले, अपना खाता॥

गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय में सन्दर्भ सेवा

जगदीश विद्यालकार
पुस्तकालय अध्यक्ष, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पुस्तकालय आन्दोलन के प्रणेता ऋषि दयानन्द—गुरुकुल पुस्तकालय की स्थापना भी गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के साथ ही हुई। गुरुकुल की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी ने १९०२ में ऋषि दयानन्द सरस्वती के शिक्षा सम्बन्धी विचारों को मूर्त रूप देने हेतु की। ऋषि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना करते हुए अपना यह मत भी प्रकट किया था कि आर्यसमाज के माध्यम से प्रत्येक आर्य जन स्वाध्याय में रुचि जागृत करें तभी विद्या की वृद्धि तथा अविद्या का नाश हो सकता है। ऋषि दयानन्द ने अज्ञान से ज्ञान की ओर आर्य जनों को प्रवृत्त करते हुए आर्यसमाज के संविधान में इस व्यवस्था को अंगीकृत किया जिसके अनुसार आर्यसमाज के पदाधिकारियों में पुस्तकालयाध्यक्ष का प्रतिस्थापित किया।

आर्यसमाज की इस संरचना में पुस्तकालयाध्यक्ष के पद का सृजन ऋषि दयानन्द सरस्वती की उस दिव्य दृष्टि को प्रकाशित करता है जिसके अन्तर्गत आर्य जनों को ऋषि ने यह आह्वान किया कि प्रत्येक आर्य स्वाध्याय में लीन रहे तथा विद्या की वृद्धि करे। पुस्तकालयाध्यक्ष के इस पद की व्यवस्था के साथ ऋषि दयानन्द का यह एक अपूर्व स्वप्न था कि प्रत्येक आर्य सभासद अपने स्वरूप को पहचानने हेतु श्रेष्ठ ग्रंथों का पारायण निरन्तर करता रहे। स्वामी श्रद्धानन्द ने भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही पुस्तकालय निर्माण की ओर गम्भीरता से ध्यान दिया।

आर्यसमाज और गुरुकुल पुस्तकालय—

स्वामी दयानन्द सरस्वती को भारत में पुस्तकालय आंदोलन का पितामह कहा जा सकता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उस समय समाजों की स्थापना के साथ ही प्रत्येक समाज में एक पुस्तकालय की कल्पना की तथा उस पुस्तकालय की देख रेख हेतु पुस्तकालयाध्यक्ष के पद का सृजन किया।

सत्यार्थप्रकाश के रूप में स्वामी दयानन्द ने जिस कृति का जन समुदाय के रूप में सामने रखा, वह कृति भी हजारों सन्दर्भों से सत्यासत्य के तत्वों को उद्भावित करने के महान् सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में आवेष्ठित है। वैदिक विषयों पर प्रमाण सहित जबाव देने वाला ऐसा सुन्दर सन्दर्भ ग्रन्थ विश्व के पुस्तकालय को स्वामी दयानन्द से प्राप्त हुआ।

गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय में भी ऋषि दयानन्द के इन विचारों का प्रतिबिम्ब बृहत् रूप से देखने को मिलता है। ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रंथ तथा उन ग्रंथों पर लिखी विस्तृत समीक्षाएं पुस्तकालय में आर्य सामाजिक संग्रह के रूप में पृथक् कक्ष में सयोजित हैं। इसके अतिरिक्त वैदिक सिद्धांतों एवं आर्य सामाजिक जीवन मूल्यों पर प्रकाश डालने वाले सहस्रों ग्रंथ भी इस कक्ष के साथ सम्बद्ध हैं।

गुरुकुल के छात्र का तथा गुरुकुल के पुस्तकालय का अतरंग गभस्थ सम्बन्ध है। गुरुकुल में प्रत्येक छात्र ज्ञान की जिज्ञासा प्राप्त करने हेतु पुस्तकालय की शरण में आता है, तथा पुस्तकालय के द्वारा उसकी इस ज्ञान क्षुधा को विपुल वैदिक साहित्य के सागर द्वारा तृप्त किया जाता है। पुस्तकालय में रखी उपस्थिति पंजिका के अनुसार गुरुकुल में पढ़ने वाला हर दूसरा छात्र पुस्तकालय का उपयोग करने पुस्तकालय आता है।

सन्दर्भ सेवा

पुस्तकालय की सदभ सेवा का अभिप्राय समझने हेतु पहले संस्कृत कोश के अनुसार सन्दभ शब्द का अभिप्राय अर्थ समझ लेना चाहिए। सदभ शब्द संस्कृत धातु दृभ (बाधना या बुनना) में 'सम्' उपसर्ग लग कर बना है। अर्थात् एक साथ बाधने वाला, संयोजित करने वाला, मिलाने वाला जो कि प्रतिपादित करते हैं। दो या अधिक वस्तुओं का संयोग। पुस्तकालय के सन्दर्भ में दो बिन्दु हैं पाठक तथा पुस्तक पाठक का पुस्तक में लय हो जाना ही सदर्भ सेवा की चरम सफलता है।

पुस्तकालय के द्वारा पाठकों को दी जाने वाली वैयक्तिक सहायता को ही सन्दभ सेवा कहा जा सकता है। सन्दर्भ सेवा का केन्द्र बिन्दु पाठक ही होता है जिसका प्रणय पुस्तक से कराया जाता है। एक विदेशी विद्वान् जेम्स आई वायर ने पुस्तकालय की सन्दर्भ सेवा की व्याख्या इन शब्दों में की— 'अध्ययन और शोध काय हेतु पुस्तकालय संग्रह की व्याख्या करने में प्रदत्त सहानुभूतिपूर्ण और अनौपचारिक वैयक्तिक सहायता को सन्दर्भ काय कहते है।"

उपर्युक्त परिभाषा के सन्दर्भ में गुरुकुल पुस्तकालय का सर्वाधिक उपयोग यहां के छात्र, प्राध्यापक एवं समीपस्थ रहने वाले शोध अध्येता निम्न प्रकार से उठाते हैं।

वांछित पाठ्य सामग्री में सहायता—

गुरुकुल में पढने वाला प्रत्येक छात्र प्राध्यापक एवं शोधकर्ता पुस्तकालय में उपलब्ध पाठ्य सामग्री निम्न प्रकार से खोजने का कार्य करता है।

१ ५० प्रतिशत छात्र, प्राध्यापक एवं कर्मचारी सम्बद्ध पुस्तकालय कर्मचारी से पुस्तक के नाम या लेखक के आधार पर सीधे कर्मचारी से वांछित पुस्तक प्राप्त करते हैं। इस कार्य में पुस्तकालय में २० वर्षों से कायरत बुकलिफ्टर गोविन्द एवं घनश्याम का वांछित पुस्तकों के सम्बन्ध में अर्जित लम्बे अनुभव का लाभ यहां के छात्र एवं प्राध्यापक त्वरित रूप से उठाते हैं। पुस्तक का नाम कहते ही ये कर्मचारी उस पुस्तक को पाठकों तक पहुंचा देते हैं। इस के अतिरिक्त पुस्तकालय के २० प्रतिशत पाठक वांछित पाठ्य सामग्री खोजने हेतु पुस्तकालय में उपलब्ध विषयानुसार रजिस्टरों की सहायता लेते हैं। जिस के अन्तर्गत उन्हें पुस्तकालय के विषयवार संग्रह की जानकारी प्राप्त हो जाती है। वांछित पुस्तक का वर्गीकृत नम्बर इन रजिस्टरों में देखने में मिल जाता है। जिसे पुस्तकालय कर्मचारी को देकर प्राप्त कर लेते हैं। २० प्रतिशत पाठक वर्ग केटेलाग की सहायता से वांछित सामग्री की खोज करते हैं।

२ नवीनतम विश्व साहित्य की जानकारी निम्न सन्दर्भ ग्रन्थों के आधार पर दी जाती है।

१—बुक्स इन प्रिन्ट (यू एस ए) १९८३—अमेरिका में १९८३ तक प्रकाशित समस्त पुस्तकों की जानकारी लेखक विषय एवं शीषक के अनुसार।

२—ब्रिटिश बुक्स इन प्रिंट १९८४—ब्रिटेन में प्रकाशित १९८४ तक की समस्त पुस्तकों की जानकारी।

३—ब्रिटिश नेशनल बिबलोग्राफी ब्रिटेन में उपलब्ध समस्त प्रकार की १९८३ तक की पुस्तकों की सूचना।

४—इण्डियन बुक्स इन प्रिन्ट १९८४—भारत में १९८४ तक प्रकाशित समस्त पुस्तकों की जानकारी देने वाला सन्दर्भ ग्रन्थ।

५—पुस्तक समीक्षा पत्रिकाओं द्वारा नवीनतम पुस्तकों की जानकारी पुस्तकालय में निम्न पुस्तक समीक्षा पत्रिकाए आती हैं।

१—बुक रिव्यू डाइजेस्ट
२—इनप्रिन्ट
३—इंडियन बुक क्रोनिकल
४—इंडियन बुक इंडस्ट्री
५—साहित्य परिचय
६—विकास न्यूज इत्यादि

विभिन्न प्रकाशकों के केटेलाग जो विषयानुसार व्यवस्थित हैं, अवलोकन हेतु पाठकों को उपलब्ध हो सकते हैं।

शोध के क्षेत्र निश्चित करने में सन्दर्भ सहायता—

गुरुकुल का कोई छात्र शोध उपाधि हेतु पंजीकरण कराना चाहे तो उसे पुस्तकालय के द्वारा शोध के उसके रुचि के विषय की जानकारी दी जा सकती है तथा बहुत से शोध छात्र अपना विषय चुनने में इस सन्दर्भ सेवा का लाभ उठा रहे हैं। शोध छात्रों को सेवाए निम्न प्रकार से दी जा रही हैं।

१ पुस्तकालय के सन्दर्भ विभाग में भारत के सभी विश्वविद्यालयों में १९८३ तक किये शोध कार्यों की जानकारी 'एसोसियेशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटी' द्वारा संपादित "बिब्लियोग्राफी ऑफ डॉक्टरल डिजर्टेशन १८७०-१९८३" नामक सन्दर्भ ग्रन्थों की सहायता से दी जाती है। इन बहुखंडी सन्दर्भ ग्रन्थों से शोध छात्रों को यह जानकारी हो जाती है कि उनके रुचि के विषय में शोध काय भारतीय विश्वविद्यालयों में कहां हुआ है तथा किसके निर्देशन में यह कार्य किया गया है।

२ इसी प्रकार समाज विज्ञान, कला तथा विज्ञान के शोध छात्रों को भारत वर्ष के विश्वविद्यालय के ही शोध काय की जानकारी नहीं दी जाती बल्कि विश्व के प्रमुख विश्वविद्यालयों में उनके रुचि के शोध क्षेत्रों में क्या-क्या कार्य हुआ है इस की जानकारी "डिजर्टेशन एब्सट्रक्ट भाग-ए एवं बी" के माध्यम से दी जाती है। यह सन्दर्भ ग्रंथ मासिक पत्रिका के रूप में मिसिगन विश्वविद्यालय यू एस ए से निकलता है। इसके अन्दर विषय का वर्गीकरण के अनुसार किये गये शोध कार्यों का सार संक्षेप भी प्रकित होता है।

पुस्तक चयन में सहायता—

पुस्तकालय में प्राध्यापकों द्वारा श्रेष्ठ साहित्य को क्रय करने की संस्तुति देने हेतु उन्हें निम्न प्रकार की सन्दभ सहायता पुस्तकालय में उपलब्ध कराई जाती है।

(क) विषयवार पुस्तक विक्रेताओं के नवीनतम केटेलाग पुस्तक चयन (?) सम्बद्ध विभागों को भेजे जाते हैं।

(ख) पुस्तक समीक्षा पत्रिकाए उपलब्ध कराई जाती हैं।

(ग) नवीनतम पुस्तकों की प्रदर्शनियां आयोजित की जाती है। पुस्तकालय द्वारा गत एक वर्ष में विभिन्न पुस्तक विक्रेताओं को आमन्त्रित कर तीन पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन हुआ। इन प्रदर्शनियों के माध्यम से प्राध्यापकों द्वारा पुस्तकालय हेतु २.५० लाख रुपये मूल्य की अनमोल पुस्तकों का चयन किया गया।

५ विश्व में प्रकाशित पत्रिका साहित्य की जानकारी—विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों को विश्व में प्रकाशित उन के विषय में सम्बद्ध पत्रिकाओं एवं उन में

शेष पृष्ठ ११ पर

अमर शहीद पं० लेखराम आर्य मुसाफिर

—प० भवानी प्रसाद

संसार के इतिहास को बनाने वाले विविध धर्मों के संस्थापक अपने विचारों के पीछे पागल बने हुए अपनी धुन के पक्के ऐसे ही भावुक महानुभाव थे। यदि धर्म-संस्थापकों की जीवनियों का मनन किया जाए तो यह विशेषता उन सब में सामान्य रूप से उपलब्ध होगी। बुद्ध ईसा, मोहम्मद, कबीर दयानन्द, गांधी सभी अपने विचारों के प्रचार में भावुक प्रतीत होंगे। उन के सिद्धांतों का प्रसार भी संसार में अनेक भावुक अनुयायियों के द्वारा ही हुआ है। बुद्ध के आनन्द आदि प्रमुख भिक्षु, ईसा के पीटर आदि शिष्य, मोहम्मद के अत्युत्साही (जोशीले) अली और उमर आदि खलीफा इस के उत्तम उदाहरण हैं।

आज इस शताब्दी के अद्वितीय धर्म-संस्थापक, आर्यसमाज के आचार्य महर्षि दयानन्द के एक ऐसे ही भावुक शिष्य अविश्रान्त धर्मप्रचारक के पवित्र चरित्र की पर्यालोचना का प्रसङ्ग प्राप्त है।

आर्यसमाज के परिमित मंडल में तो कोई भी ऐसा व्यक्ति न होगा जो धर्मवीर प० लेखराम के नाम और काम को न जानता हो किन्तु आर्यसमाज से बाहर भी करोड़ों मनुष्य प० लेखराम के नाम से परिचित हैं। प० लेखराम की भावुकता ही सर्वसाधारण में उन के इस परिचय की मूल-कारण बनी थी। वैसे तो वे पंजाब के जेहलम जिले के एक अप्रसिद्ध सारस्वत ब्राह्मण कुल में जन्मे थे परन्तु उन में अपने पितृकुल की सैनिकवृत्ति से आया हुआ शरीर का संगठन तथा क्षात्रतेज का कुछ अंश भी अवश्य विद्यमान था। उन के पितामह महता नारायणसिंह पंजाब के सिक्खकालीन विप्लव के वीर योद्धा थे और कई संग्रामों में अपने हाथ दिखा चुके थे। उन्हीं महता नारायणसिंह के पुत्र महता तारासिंह हुए जिन के पुत्र प० लेखराम का जन्म ८ सौर चैत्र संवत् १९१५ विक्रमी को शुक्र के दिन उक्त सैदपुर ग्राम में हुआ था।

वे बाल्यकाल से ही भावुक तथा धार्मिक थे। अपने चचा प० गंडाराम जी को एकादशी का व्रत करते हुए देखकर बालक लेखराम ने ११ वर्ष की अवस्था में बड़ी श्रद्धा से एकादशी का व्रत विधिपूर्वक रखना आरम्भ कर दिया था। उन को बाल्यकाल में केवल उर्दू फारसी की शिक्षा मिली थी, क्योंकि उस समय पंजाब और संयुक्त प्रान्त में उसी के पढ़ाने की परिपाटी प्रचलित थी। यह शिक्षा आगे चलकर उन के मोहम्मदी मत की आलोचना करने में बहुत सहायक हुई। उन के विद्यार्थी-जीवन में केवल यही बात उल्लेख योग्य है कि वे तब भी स्वतन्त्रताप्रिय, अनुल्लंघ्यमति तथा तात्कालिक प्रत्युत्तर प्रवीण थे और कविता की ओर भी उनका कुछ झुकाव था।

संवत् १९३२ वि० के पौष मास में वे अपने चचा पंडित गंडाराम इन्स्पेक्टर पुलिस की सहायता से पेशावर पुलिस में सार्जेण्ट के पद पर नियुक्त हो गए। ऊपर बताया जा चुका है कि प० लेखराम के बालहृदय में ही भावुकता तथा धार्मिकता का अंकुर विद्यमान था। धार्मिक सिख सिपाही के सत्संग से उन की प्रवृत्ति पूजा-पाठ में किशोरावस्था से ही हो चुकी थी। वे प्रातःकाल स्नान-ध्यान में निमग्न रहते और गुरमुखी में लिपिबद्ध भगवद् गीता का पाठ किया करते थे। श्री कृष्ण की भक्ति में तन्मय रहते थे। जीव ब्रह्म की एकता के विश्वासी और वैराग्य प्रवण थे। २१ वर्ष की अवस्था में उन के माता-पिता ने उन को विवाह बन्धन में आबद्ध करना चाहा पर उन्होंने अपने वैराग्यवश उस को स्वीकार न किया। उन का धर्म जिज्ञासा दिन प्रतिदिन बढ़ती ही गई। उन्हीं दिनों उन को लुधियाना के प्रसिद्ध स्वतन्त्र विचारक मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी के ग्रन्थ पढ़ने का अवसर मिला। अलखधारी जी के ग्रन्थों से उनको ऋषि दयानन्द के आर्य धर्म-प्रचार और आर्यसमाज की स्थापना का वृत्तान्त ज्ञात हुआ और उन्होंने डाक द्वारा ऋषि दयानन्द प्रणीत ग्रन्थों को मंगा कर पढ़ना आरम्भ किया। इससे उनके विचार सर्वथा बदल गए और वे आर्य बन गए। घटनाक्रम की कैसी विलक्षण समानता है कि पंडित लेखराम जी के समान इन पंक्तियों के लेखक का विचारप्रवाह मुंशी कन्हैयालाल जी अलखधारी की पुस्तकों द्वारा ही आर्यसमाज और उस के आचार्य के ग्रन्थों की ओर फिरा था, किंतु जुगनू और सूर्य में क्या साम्य हो सकता है? पंडित लेखराम की शुद्ध और भावुक प्रकृति ने उन को ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों से प्रभावित करके धर्मवीर आर्यपथिक बना दिया और यह चिकना घड़ा वैसे का वैसा ही विद्यमान है।

वैदिक धर्मावलम्बी बन कर पंडित लेखराम ने संवत् १९३६ वि० के अन्तिम भाग में सीमाप्रान्त के यवन प्राय पेशावर नगर में आर्यसमाज की स्थापना की थी। उस समय पेशावर आर्यसमाज के सर्वेसर्वा वे ही थे। वे और उनके चार-पांच साथियों से ही पेशावर आर्यसमाज संगठित था। पंडित लेखराम के मन में जीव ब्रह्म की एकता आदि के विषय में कुछ शंकाएं उस समय तक बनी हुई थी। उनकी निवृत्ति के लिए उन्होंने आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द के स्वयं दर्शन करने का निश्चय किया और साढ़े चार वर्ष की नौकरी के पश्चात् एक मास की छुट्टी लेकर १७ मई सन् १८८० ई० (सं० १९३७ वि०) को अजमेर पहुँचकर सेठ फतहमल जी की वाटिका में ठहरे हुए ऋषि दयानन्द के प्रथम और अन्तिम बार दर्शन किए। इस समागम का वृत्तान्त उन्होंने स्वयं इस प्रकार दिया है—

स्वामी दयानन्द के दर्शन से यात्रा के सब कष्ट विस्मृत हो गए और उन के सत्योपदेश से सब संशय निवृत्त हो गए। उन्होंने महर्षि से उन से जयपुर में एक बंगाली की उपस्थित की हुई यह शंका पूछी कि जब आकाश और ब्रह्म दोनों सर्वव्यापक हैं तो दो व्यापक एक स्थान पर कैसे रह सकते हैं? महर्षि दयानन्द ने एक पत्थर उठाकर कहा कि जिस प्रकार इस में अग्नि, मिट्टी और परमात्मा तीनों व्यापक हैं। उसी प्रकार ब्रह्माण्ड में आकाश और ब्रह्म दोनों व्यापक हैं। सूक्ष्म वस्तु में उस से भी सूक्ष्मतर वस्तु व्यापक रहती है। ब्रह्म सूक्ष्मतर होने के कारण सर्वव्यापक है।' लेखराम जी लिखते हैं कि 'इससे मेरी शान्ति हो गई।' उन्होंने महर्षि के अन्य संशय उपस्थित करने की आज्ञा देने पर उन से दस प्रश्न पूछे थे। उनमें से ३ उन्होंने उत्तर सहित स्वयं लिखे हैं। शेष उनको विस्मृत हो गए थे।

१म प्रश्न—जीव ब्रह्म की भिन्नता में कोई वेद का प्रमाण बतलाइए।'

उत्तर—यजुर्वेद का सारा चालीसवां अध्याय जीव और ब्रह्म का भेद बतलाता है।

२य प्रश्न—अन्य मतों के मनुष्यों को शुद्ध करना चाहिए या नहीं?

उत्तर—अवश्य शुद्ध करना चाहिए?

३य प्रश्न—विद्युत् क्या वस्तु है और कैसे उत्पन्न होती है?

उत्तर—विद्युत सब स्थानों में है और रगड़ से पैदा होती है। बादलों की विद्युत् भी बादलों और वायु की रगड़ से उत्पन्न होती है।

अन्त में मुझे आदेश दिया कि '२५ वर्ष की आयु से पूर्व विवाह न करना।'

ऋषि दयानन्द के स्वल्प सत्संग से पण्डित लेखराम के धार्मिक विचार दृढ़ हो गए और वैदिक धर्म पर उन का विश्वास चट्टान के समान अटल हो गया।

अजमेर से लौट कर उन को दिन रात प्रचार की ही धुन लगी रहती थी। उन्होंने पेशावर आर्यसमाज की ओर से अपने सम्पादन में धर्मोपदेशक नामक उर्दू का मासिक पत्र जारी कराया। उस के साथ ही मौखिक व्याख्यान भी प्रायः देते रहते थे। कुछ दिनों पश्चात् उन की बदली पेशावर से अन्य पुलिस स्टेशनों को हो गई। उन की धार्मिक लगन के कारण उनके विधर्मी अफसर उन से मनोमालिन्य रखने लगे थे। उधर प० लेखराम की स्वतन्त्र आत्मा विग्रहित स्ववृत्ति (सेवा-वृत्ति) में दिनों दिन खिन्न होती जाती थी। अन्त में उन्होंने २४ जुलाई सन् १८८४ (सं० १९४१ वै०) को सदा स्मरणीय तिथि को पुलिस की सेवा से त्यागपत्र दे दिया और उस में यह भी लिख दिया कि दो महीने की कानूनी मियाद के पश्चात् मुझको रोकने का अधिकार किसी को भी न होगा। दो महीने पश्चात् २० सितम्बर सन् १८८४ ई० (सं० १९४१ वै०) को उन्होंने मनुष्यों के दासत्व से सदा के लिए मोक्ष लाभ किया। इस दासत्व शृंखला के कटते ही सार्जेण्ट लेखराम, पण्डित लेखराम बन गए। अब वे दिन रात आर्य धर्म के प्रचार में रत रहने लगे। एक ओर वे वैदिक धर्म के विरोधियों की आक्षेपपूर्ण पुस्तकों के उत्तर लिखने में संलग्न रहते थे तो दूसरी ओर मौखिक प्रचारार्थ बराबर पर्यटन करते रहते थे। इस अहर्निश की यात्रा के कारण उन का नाम 'आर्य मुसाफिर' आर्य यात्री या आर्य पथिक प्रसिद्ध हो गया और आर्यजनता में आर्य पथिक पण्डित लेखराम के नाम से विख्यात हो गए।

उन के लेखबद्ध प्रचार या पुस्तक प्रणयन का सूत्रपात उन के मुसलमानों के अहमदिया सम्प्रदाय के प्रवर्तक कादियान जिला गुरदासपुर निवासी मिरजा गुलाम अहमद कादियानी के साथ संघर्ष से हुआ था। उक्त मिरजा ने एक पुस्तक बुराहीन ए अहमदिया लिखी थी, जिस में आर्यसमाज पर बड़े कटु आक्षेप किए गए थे। प० लेखराम ने उन के उत्तर में अकाट्य तर्कपूर्ण 'तकजीब बुराहीन ए-अहमदिया' ग्रन्थ लिखा। फिर मिरजा ने अनुचित आक्रमणों से परिपूर्ण सुर्म-ए-चश्म आरिया लिखा जिस के उत्तर में पण्डित लेखराम ने युक्तियों के जाल से परिपूर्ण नुस्ख-ए-खब्त अहमदिया प्रणीत किया। मिरजा ने घोषणा की थी कि मेरे पास ईश्वर के दूत संदेश लाते हैं और मैं अलौकिक चमत्कार दिखला सकता हूं तथा जिस मनुष्य को मृत्यु के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करूंगा वह मनुष्य एक वर्ष के भीतर मर जाएगा। यदि मैं ये दोनों कार्य न कर सकूं तो मैं कादियान में आपके पास रह कर उन की परीक्षा करने वाले मनुष्य को २००) मासिक की दर से २४००) दूंगा। पण्डित लेखराम ने उन के इस आह्वान को स्वीकार करके उसकी परीक्षा करनी चाही और उस को २४००) जमा कर देने को लिखा किंतु उस ने नाना प्रकार के बहाने बना कर टाल दिया। पण्डित लेखराम ने स्वयं कादियान पहुंच कर मिरजा से मौखिक विवाद किया जिस में वह निरुत्तर हो गया। जनता में उस के हेत्वाभासों और चमत्कारों की पोल खुल गई और उसके बहुत से अनुयायियों पर से उसका प्रभाव उठ गया। मिरजा से पण्डित लेखराम का यह संघर्ष दिन प्रतिदिन उग्रता ही गया और उसने ऐसा भयंकर रूप धारण किया कि अन्त में पण्डित लेखराम इसी की बलि हो गए। (क्रमशः)

आर्य जगत् के समाचार

कुष्ठ निवारण धाम का शुभारम्भ

नागदा। आर्यसमाज द्वारा संचालित आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय के तत्वावधान मे कुष्ठ निवारण धाम का शुभारम्भ महामहिम प्रो० के० एम० चाण्डी राज्यपाल मध्य प्रदेश के कर कमलो द्वारा दिनाक २३ १ ८५ को सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर राज्यपाल महोदय ने उपस्थित विशाल जन समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाज सुधार के लिए महान क्रान्तिकारी कार्य किये हैं उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज की आज समाज सुधार एवं राष्ट्र निर्माण के कार्यों मे प्रमुख भूमिका रही। आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति का हजारो वर्ष पूर्व हमारे यहा आविष्कार किया गया था। आयुर्वेद से ही पश्चिमी जगत् ने ऐलोपथी का आविष्कार किया। खुशी की बात है कि इसके महत्व को हम फिर से महसूस करने लगे हैं। हमे इसमे आधुनिक नये तरीके अपना कर इसको विकास के पथ पर आगे बढाना है। कामधेनु औषधियो से कुष्ठ निवारण मे सफलता मिले यही मेरी शुभ कामना है।

समय से पूर्व समारोह स्थल पर राज्यपाल महोदय के पधारने से जनता का हृदय गद्गद हो गया। स्वागत द्वार से कुष्ठ निवारण धाम तक कतार से खडी नन्ही बालिकाओ ने आपके शुभागमन पर पुष्प वर्षा करके स्वागत किया। सर्व प्रथम सपत्नीक आपने यज्ञ वेदी पर हो रहे यज्ञ मे घृत से पूर्णाहूति दी। इसके बाद दीप प्रज्वलित करके कुष्ठ निवारण धाम का शुभारम्भ किया। आप का यहा हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई समुदाय के प्रतिनिधियो ने मालाओ से स्वागत किया इसके साथ ही आर्यसमाज नागदा की ओर से श्री डा० एन० माथरिया आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय की ओर से श्री सेवाराम आर्य नगरपालिका नागदा की ओर से श्री जगदीश पोरवाल ने पुष्प मालाओ से स्वागत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री प्रो० पी० रूगटा उपाध्यक्ष ग्वालियर रेयान नागदा द्वारा की गई तथा संचालन श्री टी० बी० सिंह ने किया। कार्यक्रम की सफलता मे श्री बी० के० तिवारी की प्रमुख भूमिका रही समारोह की सर्वत्र प्रशसा की गई।

प्रचारक—जोधसिंह राठौर　　मन्त्री—आर्यसमाज नागदा

पजाब केसरी लाला लाजपतराय के संस्मरणो का सकलन

एक निवेदन

प्रात स्मरणीय पजाब केसरी लाला लाजपतराय का परिचय देने की आवश्यकता नही है। जैसा सर्वविदित है वे महान् देशभक्त दूरदर्शी राजनेता राष्ट्रहित के सजग प्रहरी स्वतन्त्रता आन्दोलन के अमर शहीद प्रखर विचारक कुशल सम्पादक ख्याति प्राप्त लेखक ओजस्वी वक्ता प्रगतिशील शिक्षाशास्त्री आर्थिक विकास के प्रबल उन्नायक सगठित श्रम आन्दोलन के जनक तथा समाज सुधारक थे। उनके अनेक जीवन चरित्र उपलब्ध है जिनमे उनके जीवन तथा सर्वतोमुखी कार्य कलापो का विशद विवरण मिलता हैं। पर उनकी संस्मरण प्रधान कोई पुस्तक नही मिलती। संस्मरण व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा चरित्र की सूक्ष्म तथा अतरग विशेषताओ को उद्घाटित करते है।

मैं लाला लाजपतराय के संस्मरण सकलन के कार्य मे गत अनेक वर्षो से लगा हुआ हू तथा इस कार्य मे पर्याप्त सफलता भी मिली है। देश विदेश के लगभग १३० व्यक्तियो के संस्मरण प्रधान लेख प्राप्त हो चुके है। संस्मरण लिखने के वे ही अधिकारी हो सकते हैं जिनका लाला जी से व्यक्तिगत सम्पर्क रहा हो—यह सम्पर्क निकट का रहा हो अथवा दूर का—जिन्होने उनके सान्निध्य मे रहते हुए उन्हे देखा समझा हो जिन महानुभावो से लाला जी का सम्पर्क रहा हो उनसे मेरा विनम्र आग्रह है कि वे अपना संस्मरण प्रधान लेख भेजने का कष्ट करे। उन महानुभावो के नाम तथा पते की सूचना के लिए भी निवेदन है जो लाला जी के विषय मे व्यक्तिगत जानकारी रखते है।

आशा है पजाब केसरी की स्मृति मे समर्पित इस पुनीत कार्य मे सब सज्जनों का सहयोग तथा पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

विष्णु शरण
एल १७५ कोटरा सुलतानाबाद भोपाल ४६२-००३

बलवीर हकीकत राय को याद किया गया

आर्यसमाज मन्दिर न्यू मोती नगर मे धर्मवीर बाल हकीकत राय का बलिदान दिवस बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया। अनेक स्कूल के छात्र छात्राओ ने भाषण कविता नाटक एवं सामूहिक गान मे भाग लेकर बलिदानी वीर के कार्यों को स्मरण किया।

इस अवसर पर दानवीर महाशय धर्मपाल जी ने लगभग १५०० रु० के पारितोषिक सिल्वर शील्ड कप मे तथा बहुत सी ज्ञानवर्धक पुस्तकें विजयी छात्रछात्राओ को प्रदान की।

तीर्थराम आर्य
सयोजक—धर्मवीर बाल हकीकत राय बलिदान समिति।

आर्यसमाज दरियागज का निर्वाचन

आर्यसमाज दरियागज नई दिल्ली २ का वार्षिक चुनाव दिनाक १० २ ८५ मे विधिवत् सम्पन्न हुआ जिसमे निम्न अधिकारीगण सर्व सम्मति से चुने गये।

१ श्री बी० बी० सिंहल—प्रधान
२ श्री धर्मपाल गुप्ता—उपप्रधान
३ श्री एस एम भटनागर
४ श्री वीरेन्द्रपाल रस्तगी—मन्त्री
५ श्री दत्त यादव आर्य—उपमन्त्री

अन्तरग सदस्यो के चुनने का अधिकार अधिकारी वर्ग को सभा ने प्रदान किया।

मन्त्री आर्यसमाज दरियागज नई दिल्ली २

सीताष्टमी एवम् ऋषिबोधोत्सव

प्रान्तीय आर्य महिला सभा के तत्वावधान मे आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर मे २७ फरवरी को प्रात ११ ३० बजे से ४ १० तक श्रीमती शातिदेवी अग्निहोत्री की अध्यक्षता मे समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर श्रीमती सुभद्रा वर्मा श्रीमती पद्मा शर्मा शास्त्रिका (मेरठ), डा शशि प्रभा श्रीमती सुषमा मल्होत्रा आदि अपने भाषण एवं कविता पाठ करेंगे।

प्रधाना सरला महता मन्त्रिणी—प्रकाश आर्या

अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष पर फुटबाल टूर्नामेन्ट का अभूतपूर्व आयोजन

नेता जी सुभाष शाखा प्रथम, भगतसिंह शाखा द्वितीय: सर्वोत्तम खिलाडी का पुरस्कार आशे थाऊ ने जीता

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे युवा वर्ष के उपलक्ष्य मे गणतन्त्र दिवस पर २६ व २७ जनवरी ८५ को छत्रसाल स्टेडियम माडल टाऊन दिल्ली मे फुटबाल मुकाबलो का आयोजन किया गया। परिषद् की शाखाओं के इस आयोजन मे १२ टीमो ने भाग लिया जिस मे नेता जी सुभाष शाखा रानी बाग प्रथम व विक्रान्त नगर की भगत शाखा द्वितीय तथा गुरु तेग बहादुर नगर का तीसरा स्थान रहा।

इस के अतिरिक्त मगोल पुरी जहांगीर पुरी किशनगज ऋषि नगर, पुष्पा, जि नगर सब्जी मण्डी समय पुर बादली की टीमो ने भाग लिया। प्रथम द्वितीय शाखा को शील्ड तथा खिलाडियो को मैडल दिए गए। सर्वोत्तम खिलाडी श्री आशे थाऊ विक्रान्त नगर को फुटबाल खेलता खिलाडी के प्रतीक चिन्ह से विशेष पुरस्कृत किया गया।

अनिल आर्य

गुरुकुल कागडो पुस्तकालय

(शेष पृष्ठ ८ का)

प्रकाशित सामग्री की जानकारी निम्न सन्दर्भ स्रोतो से दी जा रही है।

(क) अधिकाश विषयो में अन्तर्राष्ट्रीय सार सक्षेप पत्रिकाएँ मगवाई जा रही हैं जो उन उन विषयों मे प्रकाशित सामग्री का सार सक्षेप प्रस्तुत करती हैं। जैसे साइक्लोजिकल एब्सट्रक्ट मासिक-मनोविज्ञान की ५००० पत्रिकाओ का सार सकलन प्रस्तुत करती हैं। फिजीकल रिव्यू एब्सट्रक्ट, भौतिक विज्ञान की १००० पत्रिकाओ का सार प्रस्तुत करती है। डिजर्टेशन एब्सट्रक्ट कला एव विज्ञान में विभिन्न विश्वविद्यालयो में स्वीकृत प्रत्येक पाक्षिक अक मे १५०० शोध कार्यो का सार सक्षेप दिया जाता है। इसी प्रकार कन्टेन्ट कन्टेन्स के नाम से साप्ताहिक पत्रिका मे कला एव विज्ञान की ३०० अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओ की विषय सूचिया दी जाती हैं। मैथमैटिकल रिव्यू के द्वारा गणित के विषय मे प्रकाशित अधिकाश साहित्य का सार सक्षेप सकलित किया जाता है। ये सब पत्रिका सदभ ग्रन्थ पुस्तकालय मे सदर्भ हेतु हर समय विद्यमान रहते हैं।

(ख) बहुधा प्राध्यापकों को 'अलरिच इन्टरनेशनल पिरियोडिकल्स' निर्देशिका के माध्यम से यह जानकारी भी अविलम्ब दी जाती है कि उन के विषय मे पत्रिका साहित्य कहा कहा से किस तरह का निकल रहा है। भारतीय पत्रिकाओ की जानकारी प्राध्यापकों की डायरेक्टरी आफ इन्डियन पिरियोडिकल एव प्रेस एण्ड एडवरटाईजर वार्षिक निर्देशिका के द्वारा दी जाती है।

६ वैदिक सिद्धान्तो की पृष्ठपोषित करने वाले प्रमाणो की अविलम्ब जानकारी देना—गुरुकुल पुस्तकालय का प्रधान लक्ष्य गुरुकुल के स्थापना मूल्यो से जुड़ा हुआ है। बहुधा यहा पढने वाले छात्रों मे तथा प्राध्यापको मे वैदिक सिद्धान्तो के सदभ जानने की जिज्ञासा रहती है। इस दृष्टि से पुस्तकालय के रूप मे हम ने यहा केनन आफ नेमोनिक्स' का सर्वथा नवीन प्रयोग किया। उस के अन्तर्गत विद्यार्थी काल मे लेखक के द्वारा याद किए गए लगभग १००० वेद मन्त्र एव दर्शन सूत्रो या सचयन किया गया जिसे वर्गीकृत विषयानुसार बाटा गया। बहुधा जो भी जिज्ञासु छात्र वैदिक सिद्धान्ता पर प्रमाण जानना चाहे उस याद किए गए मन्त्रो का उदवाट्य नथा सदभ बिना किसी विलम्ब के दे दिया जाता है। इस प्रकार की सदर्भ सेवा मे सदभ कर्ता का वैदिक वाड्मय मे गहरी पैठ होना आवश्यक है यह एक सर्वथा नवीन प्रयोग है तथा गुरुकुल पुस्तकालय के पुस्तकालयाध्यक्ष की हैसियत से लेखक इस का क्रियान्वयन सदर्भ सेवा में कर रहा है। इस प्रकार की एकेश्वरवाद पुनर्जन्म त्रैतवाद, मूर्तिपूजा, कर्म फल मोक्ष, षोडष सस्कार आदि के बारे मे तुरन्त सदर्भ दिए जाते हैं।

गुरुकुल प्रकाशन सदर्भ सेवा—गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय द्वारा शोध एव प्रकाशन के वेद मे गत ८० वर्षों मे बड़ा भारी कार्य हुआ है। अधिकाश लोगो को इस की जानकारी न होने से उन्हें गुरुकुल साहित्य के क्षेत्र में योगदान नगण्य दिखलाई पड़ता है। बाहर के विद्वानो के तथा गुरुकुल के छात्रो एव प्राध्यापको को भी यहा के प्रकाशनो एव शोध प्रवृत्तियो की जानकारी अब निम्न प्रकार से उपलब्ध कराई जा रही है।

१ पुस्तकालय के द्वारा गुरुकुल विश्वविद्यालय के समस्त शोध एव प्रकाशन कार्यो को एकीकृत कर दिया गया है। जिस क अन्तर्गत निम्न सूचनाएँ पाठको तथा जिज्ञासु शोध छात्रो को एक ही प्रकाशन मे उपलब्ध हो जायेंगी।

(क) गुरुकुल के स्नातको द्वारा प्रकाशित प्रमुख साहित्य।

(ख) गुरुकुल के द्वारा प्रकाशित सम्पूर्ण साहित्य की जानकारी।

(ग) गुरुकुल के द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी साहित्य की जानकारी।

(घ) गुरुकुल द्वारा स्वीकृत पी० एच० डी० शोध प्रबन्धो की सूची।

(ज) शोध कार्य प्रगति मे।

(झ) गुरुकुल मे स्वीकृत शोध उपक्रम।

(ट) गुरुकुल के प्राध्यापको के प्रकाशन।

(ठ) गुरुकुल छात्रो की हस्तलिखित पत्रिकाएँ।

पुस्तकालय मे उपलब्ध उपयुक्त सम्पूर्ण साहित्य का पृथक सग्रह गुरुकुल स्नातक प्रकाशन सग्रह के नाम से बनाया गया है।

ग्रन्थ

१ मोनियर विलियम्स एम० ए० सस्कृत इगलिश डिक्शनरी १८९९ पृ० ११४३।

२ वायर जे० रेफरेन्स वर्क" १९३० पृ० ४।

३ रगानाथन एस० आर० रेफरेन्स सर्विस एण्ड ह्यूमनिज्म १९०४, पृ० ३३।

४ बिवल सी० एम० गाइड टू रेफरेन्स बुक्स पृ० ३७ एडीशन सप्तम।

आर्य सन्देश साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बने, और बनाएँ

क्योंकि यह पत्रिका—

(१) वैदिक मान्यताओ को उजागर करती है।
(२) आर्यों (हिन्दुओ) की महान् परम्पराओ की याद दिलाती है।
(३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से आत्म चेतना जागृत करती है।
(४) भारतीय सस्कृति के भूले बिसरे प्रसगो, महापुरुषो तथा आदर्श सस्कारो को प्रकाश मे लाती है।
(५) ऋषि मुनि तपस्वी आप्तविद्वानो की वाणी का बोध कराती है।
(६) परमेश्वर की पवित्र वाणी वेद का जीवनोपयोगी मधुर सन्देश लाती है।
(७) नये लेखको कवियो चिन्तको, प्रतिभाशाली विद्वानो, साहित्य सेवियो को प्रोत्साहन देती है।
(८) धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक ज्योति से मन-मन्दिर को प्रकाशित करती है।
(९) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद्, स्मृति, कल्प सूत्र, आरण्यक, ब्राह्मणग्रन्थ गीता रामायण, नीति, ऐतिहासिक, अमूल्य आर्ष ग्रन्थो, जिन को अधिकाश लोगो ने पढा तो क्या देखा भी नही समस्त आध्यात्मिक जगत् को जिन ग्रन्थो पर सदा गर्व रहेगा उन के बहुमूल्य मोती हर सप्ताह बटोर कर आपकी अजली सभी भर देती है।
(१०) अतएव देर न कीजिए आज ही अपना वार्षिक चन्दा २० रुपये भेजिये वर्ष में अनेक विशेषाक तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर प्रकाशित ५० रुपये मूल्य की भव्य मनोहारी स्मारिका नि शुल्क दी जायेगी।

सम्पादक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ मे मुद्रित। रजि० न० डी० (सी०) ७५६

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वर्ष ८ अक १५ | रविवार, ३ मार्च, १९८५ | आर्य सवत्सर १९६०८५३०८४ | फाल्गुन २०४१ | दयानन्दाब्द—१६०

देश के कोने कोने में आर्यसमाज मन्दिरों की स्थापना की जाये

—रामगोपाल शालवाले

२४ जनवरी रविवार को आर्य समाज मन्दिर नारायणा विहार, दिल्ली का उदघाटन करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा—वैदिक धर्म और सस्कृति की रक्षा के लिए तथा आने वाली पीढी को सस्कारित करने के लिए देश के कोने-कोने मे आर्यसमाज मन्दिरो का निर्माण आवश्यक है। विश्व मे समस्याएँ बढ रही हैं, मानवता का ह्रास हो रहा है, अशान्ति के घेरे बढ रहे हैं। आज आवश्यकता है ऋषि दयानन्द के सैनिको और अनुयायियो की जो ससार मे प्रेम प्यार और सेवा सहयोग का दीपक जलाये। ऋषि दयानन्द के सन्देश को घर-घर मे सुनाने की आज नितान्त आवश्यकता है। उन्होने आह्वान करते हुए कहा—आओ हम अपने तुच्छ स्वार्थ और और द्वेष भाव से ऊपर उठकर आर्यसमाज के मिशन को और भी आगे बढाये। श्री शालवाले ने आर्यसमाज नारायणा विहार के कार्यकर्ताओ एव सहयोगियो की भव्य भवन एव सुन्दर यज्ञशाला बनाने पर प्रशसा की।

इस भव्य यज्ञशाला का उदघाटन श्रीपाद स्वामी दीक्षानन्द जी ने किया। इस अवसर पर श्री स्वामी विद्यानन्द जी प० शिवकुमार शास्त्री एव प० सच्चिदानन्द शास्त्री भी उपस्थित थे। आर्यसमाज नारायणा विहार के उदघाटन के अवसर पर एक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गयी जिसका नेतृत्व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने किया। इस अवसर पर अनेक बसो, टेम्पुओ और पैदल स्त्री पुरुषो तथा सस्थाओ के छात्र छात्राओ ने बढ चढ कर भाग लिया। □

ये आवाज कहां से आई !

बोये बीज फूट के किसने वैर की ज्वाला ये भडकाई।
जहर घोलने वालो की यह आवाज कहा से आई॥

भाई-भाई हम सदियो से थे एक ही मा के बेटे।
किसने आकर हम सब की ये दौलत आज लुटाई॥

हर मुश्किल मे सदा यहा हम मिल जुल के रहते थे।
सन्तो की शिक्षा तक को, है किसने आज भुलाई॥

क्यो छाया ये सन्नाटा क्यो सहमी रातें।
क्यो खामोश हर स्वर है यहा बजती थी शहनाई॥

सदा सम्मान रहा यहां पर हमारी इन माता बहनो का।
है किसने कुकर्म किये ये, यह किसने लूट मचाई॥

सुख के खातिर आपस में हम सब रक्खें भाईचारा।
जीवन के हर क्षेत्र से आर्यो ! हम दूर करें बुराई॥

सब का मन दुखता है हर बरबादी के कारण।
फूट परस्तो की बातें ये कब किस को यहाँ सुहाई॥

—हम रक्खें नजर ऐसो पर, जो घर मे आग लगाते।
अब कोई भी कम हमारा ना 'रश्मि' हो दुखदाई॥

—मोहनलाल शर्मा "रश्मि"
फ्रीलैण्ड गज-दाहोद।

स्वामी श्रद्धानन्द जन्म-दिवस

दिल्ली नगर निगम द्वारा आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द जन्मदिवस समारोहपूर्वक मनाया गया इस अवसर पर महापौर श्री महेन्द्रसिह साथी ने कहा—भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो आर्यसमाज हमे हर कोने पर खडा दिखाई देता है। इसकी उपेक्षा नही की जा सकती। उन्होने स्वामी श्रद्धानन्द को अछूत एव दलितोद्धारक तथा भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम का महान् योद्धा बताया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने उद्बोधन करते हुए कहा—स्वामी श्रद्धानन्द समय को चुनौती का प्रबल जवाब थे। अग्रेजी साम्राज्य के काल मे भारतीय शिक्षा और सभ्यता की मजाक उडाई जाती थी। ऐसे चुनौतीपूर्ण वातावरण मे उन्होने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की स्थापना कर ससार को आश्चर्यचकित कर दिया। उन्होने इस प्रणाली मे प्राचीन ज्ञान-विज्ञान से लेकर आधुनिकतम विज्ञान, तकनीकी तथा भौतिक अभौतिक विद्या विज्ञान को अपनाया अग्रेज सरकार हैरान थी कि कैसे एक बियावान जगल मे बिना किसी सरकारी सहायता के इतना बडा कार्य किया जा रहा है।

उन्होने कहा—स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन एक दिशा मे नही सर्वाङ्गीण दिखाई पडता है। वे अनाथ रक्षक दलितोद्धारक व अछूतोद्धारक, हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रतीक, एक तपस्वी पत्रकार-शिक्षक के रूप मे भी दिखाई पडते हैं।

आर्यसमाज जनकपुरी

आर्यसमाज जनकपुरी बी ब्लाक मे भी स्वामी श्रद्धानन्द जन्म दिवस मनाया गया। इस अवसर पर महाशय धर्मपाल ने ध्वजारोहण किया तथा अनेक विद्वानो ने स्वामी श्रद्धानन्द को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की

गो-हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध की मांग

२४ फरवरी, रविवार, आर्यसमाज कीर्तिनगर के वार्षिकोत्सव पर बोलते हुए श्री रामगोपाल शालवाले ने गो-रक्षा की अपनी माग को दोहराते हुए कहा—भारत सरकार को गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लागू करना चाहिए। गौ को राष्ट्रीय पशु घोषित करना चाहिए। उन्होने उपस्थित जनसमूह को याद दिलाते हुए कहा कि गत वर्ष कीर्ति नगर मे ही एक मास की फक्ट्री के विरोध मे आर्यसमाज ने कार्य किया था और हम अपने उद्देश्य मे सफल हुए थे। आज हमे अपनी यह माग और भी जोरदार शब्दो मे उठानी चाहिए। साथ ही हमे गोपालन के लिए भी हर सम्भव सहयोग देना चाहिए। ●

[illegible] 'आर्य' [illegible] | [illegible]—डा० [illegible] | प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

सत्संग वाटिका

पाप-निवारण

—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

त्व हि विश्वतोमुख त्रिश्वत परिभूरसि । अप न शोशुचदघम् ॥
—अथर्व० ४ । ३३ । ४

शब्दार्थ—हे (विश्वतोमुख) सर्वद्रष्टा और सब ओर से उपदेश करने वाले प्रभो ! (हि) क्योंकि (त्वम्) तू (विश्वत) सब ओर चारों ओर (परिभू) परिव्याप्त (असि) है अत (न) हमारे (अघम्) पाप को (अपशोशुचद्) जलाकर भस्म कर दे नष्ट कर दे।

व्याख्या—मन्त्र मे एक ही उपदेश है, परन्तु है अत्यन्त उपयोगी और कल्याणकारी। इस दिव्य उपदेश पर चिन्तन और मनन कीजिए—

अप न शोशुचदघम् ।

प्रभो ! हमारे पाप को जलाकर भस्म कर दे।

पाप एक रोग है और यह शारीरिक रोगो से अधिक भयकर है। यह रोग मनुष्य को निबल बनाकर बुद्धि को नष्ट-भ्रष्ट कर देता है। पापी को सुख की प्राप्ति नही होती। महर्षि मनु कहते हैं—

अधार्मिको नरो यो हि
यस्य चाप्यनृत धनम ।
हिंसारतश्च यो नित्य
नेहासौ सुखमेधते ॥
—मनु० ४ । १७०

जो मनुष्य अधार्मिक है, जिसका धन पाप के द्वारा उपार्जित है जो सदा दूसरो को सताता रहता है, वह इस लोक मे सुखी नही होता फलता और फूलता नही।

नाधर्मश्चरितो लोके सद्य फलति गौरिव ।
शनैरावर्तमानस्तु कर्तुर्मूलानि कृन्तति ॥
यदि नात्मनि पुत्रेषु न चेत्पुत्रेषु नप्तृषु ।
न त्वेव तु कृतोऽधम कर्तुर्भवति निष्फल ॥
—मनु० ४ । १७२-१७३

अनुष्ठान किया हुआ अधम लोक मे गौ-पृथिवी के सदृश तत्काल फल नही देता। जैसे पृथिवी बोते ही फल नही देती किन्तु धीरे-धीरे फलोन्मुख होती है वैसे ही पापकर्म भी तत्काल ही फल नही लाता किन्तु धीरे-धीरे पुष्ट होता हुआ अन्तत पापकर्ता की जडो को काट देता है।

यदि पाप का फल स्वय को नही मिलता तो पुत्रो को मिलता है यदि पुत्रो को भी नही मिलता तो पौत्रो और प्रपौत्रो मे अवश्य मिलता है। किया हुआ अधम कभी भी निष्फल नही होता।

इस विषय मे एक सुन्दर दृष्टान्त है। एक सिंह प्यास से व्याकुल था। पानी पीने के लिए वह एक नदी मे प्रविष्ट हुआ। उसकी प्यास तो बुझी, परन्तु वह कीचड मे फस गया। बहुत जोर लगाया परन्तु निकल न सका। प्यास दूर हुई अब भूख सताने लगी। तीन दिन पश्चात् एक गीदड उधर से निकला। शेर ने कहा—"मेरे पास आ तेरे पिता का एक सन्देश है, उसे सुन जा।' गीदड बोला— मुझे तेरे पास आने से डर लगता है तू दूर से ही कह दे। शेर ने कहा—'तेरा पिता और मेरा पिता दोनो मित्र थे अत मुझ से तुझे कोई हानि नही होगी। तू मेरे निकट आ। मैं तेरी पीठ पर हाथ फेरकर तेरे पिता का सन्देश तुझे सुनाऊगा। यदि मैं तेरे साथ बुरा करू तो मेरी सन्तान के आगे आये।" गीदड आश्वस्त होकर कुछ आगे बढ गया। शेर ने अपनी सारी शक्ति लगाकर एक छलाग लगाई परन्तु गीदड तक पहुँचने से पूर्व एक ठूठ पर जा गिरा, उसकी आते निकल आईं। शेर की यह दशा देख गीदड मुस्कराता हुआ आगे बढा। शेर ने पूछा, 'ओ गीदड ! यदि तुझे पता हो तो यह बता दे कि मैंने तो सन्तान पर आने की बात कही थी मुझे यह फल क्यो मिला।" गीदड ने उत्तर दिया— यह तो तेरे बाप ने जो कसम खाई थी उसका फल मिला है तेरी कसम तेरी सन्तान के आगे आएगी।'

पाप का फल तो भोगना ही पडता है, अत पापो से बचने का प्रयत्न करना चाहिए। परन्तु औषध सोचने से पूर्व मनुष्य पाप क्यो करता है, यह जानना भी आवश्यक है।

पाप का कारण क्या है ? ईसाई और मुसलमानो ने शैतान की कल्पना की हुई है। वही सारे पाप कराता है। यदि शैतान ही पाप कराता है तो दण्ड भी उसे ही मिलना चाहिए। वस्तुत यह एक मिथ्या कल्पना है।

मनुष्य कर्म करने मे स्वतन्त्र है। वह जो कुछ चाहता है करता है। अपनी कर्म-स्वतन्त्रता मे ही वह पाप मे प्रवृत्त होता है। गीता मे इस विषय पर उत्तम प्रकाश डाला गया है। अर्जुन ने श्रीकृष्ण से पूछा—

अथ केन प्रयुक्तोऽय पाप चरति पूरुष ।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजित ॥
—गीता० ३ । ३६

हे वार्ष्णेय ! यह मनुष्य इच्छा न होते हुए भी जबरदस्ती से, दबाकर जोता गया या किसकी प्रेरणा से पाप करता है ?

श्री कृष्ण ने उत्तर दिया—

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भव ।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ॥
गीता० ३ । ३७

रजोगुण से उत्पन्न, बहुत अधिक खाने वाला, महापापी काम और क्रोध ही मनुष्य को पाप मे खीचते हैं—ये ही वस्तुत शत्रु हैं।

महाभारत में लोभ को भी पाप का कारण बताया गया है—

पापानां विद्ध्यधिष्ठान लोभमेव द्विजोत्तम ।
लुब्धा पाप व्यवस्यन्ति नरा नातिबहुश्रुता ।
—महा० वन० २०७ । ५८

हे द्विजोत्तम ! लोभ को ही पापो का घर जानो। जिन्होंने शास्त्रो का बहुत श्रवण नही किया है, ऐसे लोभी मनुष्य ही पाप करने का विचार करते हैं।

रोग का निदान। अब इसकी औषधि खोजनी चाहिए। ईसाई कहते हैं कि ईसा पर ईमान लाने से, मुसलमान कहते हैं हजरत मोहम्मद पर ईमान लाने से और पौराणिक कहते हैं गगा मे डुबकी लगाने से पाप नष्ट हो जाते हैं परन्तु ये बातें तर्क और युक्ति विरुद्ध हैं। आर्ष ग्रन्थो मे पाप से बचने के उपाय निम्नरूप मे बताये गये हैं—

ख्यापनेनानुतापेन तपसाऽध्ययनेन च ।
पापकृन्मुच्यते पापात् तथा दानेन चापदि ॥
—मनु० ११ । २२७

अपने पाप को सर्वसाधारण मे प्रकट करने मे, पश्चात्ताप करने मे कठिन तपश्चरण से वेदाध्ययन जपादि से और आपत्ति में पडे हुए व्यक्तियो को दान देने से पापी मनुष्य पाप से छूट जाता है।

ये पाच उपाय हैं जिनसे पाप मे फँसा हुआ व्यक्ति पाप के सस्कारो से बच जाता है और उसकी अगली पापात्मिका वृत्ति नष्ट हो जाती है। उसकी वृत्ति का मुख पाप से हटकर धर्म की ओर मुड जाता है। आइए, तनिक एक-एक उपाय पर विचार करें।

१ **ख्यापन**—मैंने यह बुरा कर्म किया है, इस प्रकार अपने मुख से अपने पाप के कथन करने का नाम 'ख्यापन' है। मनुष्य पाप को बुरा समझता है, अत उसे छिपाने का प्रयत्न करता है जिससे दूसरो की दृष्टि मे वह घृणा का पात्र न बने। यदि मनुष्य पाप को अपने मुख से स्वीकार कर ले तो उसका आत्मा पाप से बचने का प्रयत्न करता है, क्योकि वह समझता है कि मुझे पाप को छिपाना तो है नही फिर मैं पाप कर्म को छोड क्यो न दूँ ? विद्वानों के समक्ष अपने पाप को स्वीकार करना और एकात मे परमात्मा के समक्ष अपने पापो का कथन करना और उनसे छुटकारा पाने के लिए प्रार्थना करना पाप से बचने का हेतु है।

२ **अनुताप**—पश्चात्ताप से भी मनुष्य पापो से बचता है। पाप करके सन्तप्त होने से [शोक ! मैंने प्रमाद से यह क्या कुकर्म किया है, इस प्रकार मानस खेद से] मनुष्य पापो से बच जाता है। 'फिर ऐसा नही करूंगा'—इस प्रकार प्रतिज्ञा द्वारा वह पवित्र होता है।

अपने दुष्कृत्यों पर पश्चात्ताप या अनुताप करना कितना मधुमय है ! पश्चात् का अर्थ है बाद। 'अनु' का भी वही अर्थ है। ताप का अर्थ है उष्णता, गर्मी। अनुताप और पश्चात्ताप—इन दो शब्दों से ही प्रतीत होता है मानो शुद्ध, स्वच्छ, स्वर्णमयी हार्दिक भावना अपने दुष्कृत्यों के कारण मन्दी हो गई है और वह एक जलती हुई तापपूर्ण भट्टी के समान विद्यमान है। अब 'अनुताप' पापो, दुष्कृत्यों के पश्चात् होने वाला यह ताप—पूर्वकृत कर्मों को भस्मीभूत करके उस आत्मा को सुन्दर एव निर्मलरूप प्रदान करेगा।

अनुताप से मनुष्य कैसे पवित्र हो जाता है, इस विषय मे एक आख्यायिका घटना पढिए।

एक मुमुक्षु दीक्षित होने के लिए कबीर के पास गया। दीक्षा देने से पूर्व कबीर जी ने कहा—

बेटा तूंबी भरके लाना
रे गुरु ने मंगायी।
पहले बक्त तू पटनी लाना,
नदी ताल के पास न जाना।
कूँआ बावली छोड़ के लाना
तूबी भर के लाना रे।
तूबी भर के लाना रे, बेटा!
गुरु ने भर के मगायी।

कैसा अमूल्य जल मँगवाया है ! कुआ, नदी, ताल, तलैया झील, पोखर का जल नही। उन्हें उस जल से क्या काम ? गुरु का भाव था—"पुत्र ! तुम आज मुझसे दीक्षा लेने आये हो परन्तु क्या तुम नही जानते कि तुम पर आवरण पडा हुआ है। अपने कुकर्मों पर जब तक तुम पश्चात्ताप नही करते तब तक मैं तुम्हें दीक्षा नही दे सकता। तुम अनुताप करो। अपने पापो के लिए इतना अनुताप करो, इतना रो दो कि तुम्हारे नेत्रो के जल से यह तूबा भर जाए।

वेद मे कहा है—

इदमाप प्र वहत यत्कि च दुरितं मयि ।
यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम् ॥
ऋ० १० । ९ । ८

हे जलो ! मेरे शरीर और मन में जो दुष्प्रभाव, दुष्ट इच्छा, वासना या मलिन

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादकीय

ओ३म्
आर्य सन्देश

प्रकृति का महोत्सव

भारत देश अपनी गरिमामयी परम्पराओं से, आध्यात्मिक सम्पदाओं से, संस्कृति सभ्यता की विशेषताओं से सम्पन्न रहा है। इन्हीं विशेषताओं में एक विशेषता है यहां के पर्व (त्यौहार)। संसार के सभी वर्ग सम्प्रदाय एवं जातियों में और देशों में कोई न कोई दिन नियत है जब वे अपने समस्त दुःख दर्द भुला कर उत्सव मनाते हैं। व्यक्ति विषाद अवसाद में घिरा न रहे एक ही रस में वह खिन्न न हो जाये, वह जीवन के समस्त रंगों रसों का स्वाद ले सके इसी धारणा को ही लेकर सम्भवतः हमारे पूर्वजों ने पर्वों की संरचना की थी। समस्त विश्व में सब से अधिक पर्व भारत में ही मनाये जाते हैं।

वसन्त ऋतु का आगमन हो गया है। नौ रसों से रसित नव रंगों के परिधानों से विभूषित प्रकृति अपनी नाट्य कला का समस्त भुवन में परिचय दे रही है।

सेम्बल की ऊँची-ऊँची डालियों पर खिलते लाल-लाल फूल,खेत में फूलती पीली-पीली सरसों,बागों में महकती अमराई वन की कटीली झाड़ियों में सजे फूलों के गुच्छे, शुष्क वृक्षों की चोटियों से निकलते अंकुर पर्वत की उजड़ी शृंखला पर उगती हरी-हरी घास और ऊँचे शिखर से धरती के सीने पर गिरता गर्जता झरना, मचलती इठलाती नदियों की निर्मल धारा, बांसों के झुरमुट से आती पपीहे के मधुर रागिनी, कोयल और बुलबुलों की कूक से गूंजते उपवन यह महोत्सव है उस परम विधाता की सृष्टि का, जो महोत्सव अविराम चल रहा है। हर ऋतु मोहक उत्सव लेकर आती है और कह कर जाती है मानव क्यों तू निराश है, उठ! उत्सव मना गुनगुना खिलखिला झूम झूम कर उस परम आनन्ददाता के गीत गा। जब प्रकृति में उत्सव है फिर मानव जीवन में पर्वों का, उत्सवों का उल्लास क्यों न हो, ऐसा ही एक उल्लास है होली। जी हां, होली जो यज्ञ का अपभ्रंश है। नवीन फसल के आगमन की खुशी का महोत्सव है। समस्त भेद भाव भुलाकर गले मिलकर एक हो जाना और आनन्द सिन्धु में डूब जाना इसका सन्देश है। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने गाया था—उत्सव अमार जाति आनन्द अमार गोत्र। उत्सव ही हमारी जाति है और आनन्द ही हमारा गोत्र है। सब कुछ भूलकर आनन्द-उत्सव में मस्त हो जाना पर्व है।

वेद में कहा है—हसा मुद हसा मृत। प्रसन्नता में झूम और हंसते-नाचते जीवनयापन कर। जीवन में समस्याएं हैं कठिनाइयां भी हैं परन्तु उन्हीं से दुःखी होते रहने से जीवन कुसुम मुरझा जाता है।

इस ऋतु में गेहूं चना, मटर, सरसों, जौ आदि के पकने की दशा में यह पर्व मनाया जाता है। रूस में फसल काटने पर किसान अपने सगे सम्बन्धियों एवं मित्रों को दावत देकर उत्सव मनाते हैं। जापान में धान की फसल कटने पर उत्सव मनाते हैं। चावल की रोटियां एवं मादक द्रव्यों से आनन्द मनाते हैं। इङ्गलैण्ड में पोल (May Pole) का उत्सव मनाया जाता है। योरोप में (St Valentine s day) सेन्ट वेलन्टाइन का दिवस मनाया जाता है।

इस प्रकार की उत्सव परम्परा होली भी है। परन्तु आज यह पर्व बड़ा विकृत रूप ले चुका है। असभ्य और अशिष्ट बनकर रंग फेंकना, गरीबों के एक दो मात्र वस्त्र को रंग देकर बेकार कर देना तथा गोबर, कीचड़, तेजाब, रेत आदि प्रमत्त होकर फेंक देना मनुष्यता से नीचे गिरना है। होली के पर्व को भांग, शराब पीकर ऊधम मचाने वालों ने भी गन्दा कर दिया है।

रंग की आड़ में अश्लीलता भी हेय है। हमारी संस्कृति में भाभी आदि को माता की दृष्टि से देखा जाता है उन के साथ अभद्रता का व्यवहार होली की आड़ लेकर करना असभ्यता है। सभी सभ्य जनों को ये दोष दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। हर नौजवां को अपनी हिम्मत और शक्ति से दीन दुखिया के आंसू पोंछ खुशियों के फूल खिलाते रहना चाहिए। "जोश" ने सच कहा है—

> नवीन युग के उपासना की अभिलाषा की तुझे कसम है
> तू अब नये विचारों के भगवान पैदा कर।
> बहार में तो जमीन से ही बहार उग आती है,
> गर तू मर्द है तो खिजां में बहार पैदा कर॥

—यशपाल सुधांशु

अपने पाठकों से

आप पाठकों के अनेक पत्र प्रति सप्ताह मिलते रहते हैं। आपकी प्रशंसा प्रशस्ति के लिए हम आभारी हैं। स्मारिका के लिए आप के अनेकों अनेक पत्र प्रशस्ति में लिखे मिले हम उन में से कुछ ही प्रकाशित कर पाये। सभी को प्रकाशित करने के लिए स्थानाभाव है। केवल मात्र सम्पादकीय के लिए भी बहुत पत्र मिले हैं जो आप के द्वारा स्नेह सिक्त थे। पिछले दो मास में लगभग २०० ग्राहक तीव्रता के साथ बने है, इस से आप के प्रेम अनुग्रह का विशिष्ट प्रमाण मिलता है। हम आपकी आकांक्षाओं के अनुरूप इस पत्र को सजाने में संलग्न हैं।

हमारे कुछ पाठकों को शिकायत थी कि इस के पृष्ठ बढ़ाए जाएं, यह शिकायत हम ने उन की दूर कर दी है। पाठकों की मांग पर सत्संग वाटिका" स्तम्भ हम ने शुरू किया है जिस में हर बार सत्संग में सुनाया जा सकने वाला वेद व्याख्यान हुआ करेगा। सहर्ष हम यह भी सूचित कर रहे हैं कि एक अभिनव विशेषांक २४ मार्च को धूमधाम से प्रकाशित कर रहे हैं। यह विशेषांक अपने ढंग का अनोखा ही होगा। आशा है आप का प्रेम स्नेह, एवम् आशीष इस साप्ताहिक पत्र को अवश्य मिलता रहेगा।

शुभकामनाओं के साथ—
सम्पादक—यशपाल सुधांशु

शुभकामना

श्रीयुत सुधांशु जी !
सादर वन्दे मानवम्।

आर्य सन्देश के पिछले अंकों को देख कर मन प्रसन्न हो गया।

आपकी सम्पादन शैली प्रेरणादायक आप संस्कृति प्रसविनी है। आशा है आपके कुशल सम्पादन में आर्यसन्देश' आर्य जगत् में प्रसिद्धि प्राप्त करेगा।

आनन्द सुमन
तपोवन आश्रम देहरादून २४८००८

स्मारिका बेहद अच्छी

'आर्य-सन्देश के विशेषांक के रूप में छपी मन्त्र मनोहारी नयनाभिराम स्मारिका प्राप्त हुई। स्मारिका वास्तव में आकर्षक एवं प्रभावशाल थी। इसका मुखपृष्ठ अति सुन्दर एवं शोभनीय था। इसमें सभी लेख पठनीय एवं शिक्षाप्रद थे। जिन्हें पढ़कर काफी प्रेरणा मिली तथा काफी जानकारी प्राप्त हुई। स्मारिका में सम्पादकीय लेख का तो अलग ही महत्त्व रहा। स्मारिका के इस कुशल सम्पादन के लिए बधाई स्वीकार करें।

—रामकुमार आर्य
ग्राम० पो०-दुल्लागढ़ गोहाना (सोनीपत)

आप का 'स्मारिका पत्र प्राप्त हुआ धन्यवाद अध्ययन करने पर पता चला कि आप ने इस की सफलता के लिए बहुत प्रयत्न किया है। इस सफलता हेतु आप सब को बहुत-बहुत बधाई हो।

निवेदक—योगेन्द्रपाल सेठ
प्रधान आर्यसमाज जालन्धर

वेदों द्वारा विश्व को भारत की अमूल्य देन

—डा० मिट्ठनलाल आर्यप्रेमी

दुनिया मे आज भी ऐसे कई सिद्धात व मायनए है जिनका सही विव ण (परिचय) उपलब्ध नही है ज्ञात नही है या फिर भ्रम पूण है ऐसा ही एक जटिल प्रश्न गणित की मूल मौलिकता का है। जिसका प्रामाणिक उत्तर वेदों के आधार व सौजन्य से आपके सामने रख रहा हू। वह भी चुनौती से।

विश्व को विश्व का कोई भी गणितज्ञ यह नही बता पा रहा है कि अक गणित बीजगणित कहा से आई ? किस ने दी ? कब दी और कैसे दी ? कई मानते हैं ० जीरो (शून्य) भारत ने दिया। कोई अकावली भारतीय होना मानते हैं। विदेशी गणितज्ञ इसे बबीलोन चीन रोमन ग्रीक ईजिप्ट मिश्र की देन कहते हैं। फ्रास वाले दशमलव प्रणाली अपनी देन कहते हैं सब विद्वान् विचारक काल्पनिक बातें करत हैं। अपने देश को गौरव दिलाने की पश कश करते हैं और प्रयत्न किये भी हैं। कितु उनके पास प्रत्यक्ष व ठोस मौलिक प्रमाण नही हैं।

सत्य की खोज करना विज्ञान वेत्ताओ का काम है। सत्य का प्रचार व प्रसार करना विज्ञान सवाददाताओ का कतव्य है।

वेद सब स यविद्याओ का पुस्तक है। आज वेद पर अनुसधान व खोज अनिवाय है क्योकि वेद भारत की अमूल्य निधि सस्कृति व वाडमय की अक्षय धरोहर हैं। जिस पर प्रत्यक भ रतवासी को गव होना चाहिए और है भी।

आधुनिक विश्व के समस्त इतिहास वत्ता पुरातत्ववत्ता व जीवज्ञ विद्वान् मानते है कि विश्व का प्राचीनतम ग्रथ ऋग्वद है। इसके बाद यजुवद है।

आज मैं गव के साथ कह सकता हू कि अकगणित बीजगणित व दशमलव प्रणाली विश्व को भारत की अमूल्य व सैद्धातिक देन है।

मैं आपके सामने अकगणित बीज-गणित की मूल मौलिकता सिद्धात व मत्र पेश कर रहा हूं जो यजुर्वेद के सौजन्य से है। उसमे अकित है जिसका सरल शब्दाथ व भावाथ साथ है।

यजुवद अध्याय १७ मत्र (२) इमा मे मुष्मिल्लोके (एक को दस से दस दस को दस से सौ यानी दशमलव प्रणाली) (१००००००००००००००००० दस शख उच्चतम अक) आज तक इस अक से बडा कोई अक है ? न भूतो न भविष्यति। यजुवद अध्याय १८ मत्र २४ एका कल्पताम्।

विषम भिन १+२=३ एक और मेरे २=तीन ३+२=५ इत्यादि ३३ यजुवद अध्याय १८ मत्र २५ चतस्रश्च कल्पताम्।

सम भिन ४+८=१२ चार आठ मेरे बाहरा इत्यादि ३२ आज तक जो मायताए एव उदाहरण प्रस्तुत हैं दृष्टि गोचर हैं। आये हैं व सब इसके बाद के है। इसके वशज हैं न कि पूवज।

नीड का नव निर्माण

—डा० आनन्द सुमन

विश्व का नाड डगमगा रहा है। राक्षसी प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है। मानव मानव का शत्रु हत्यारा भाई मा बहनो का सती व उजाडने वाला सुहाग छीनन वाला पिता सतानो का दध छीन कर शराब की बोतलो मे ढ्वन वाला असुरता की सामा पार करता सकल मानव समाज अस्थिर हो गया है। भौतिकतावाद के नशे मे हमारी सस्कृति के हमारे नियमो तक को तोड दिया है मानव समाज कराह रहा है इस कराहट मे आशा की एक किरण अभी भी शेष है असुरता की प्रवृत्ति समाप्त की जा सकती है मानवता को पुन वि व म प्रतिष्ठापित किया जा सकता है। बहनो के उजड़े सतीत्व वापस लौट सकते हैं। सतानो को पुन भारतीय सस्कृति के रग मे रगा जा सकता है। भारतीय सस्कृति कोई ऐरी गैरी वस्तु नही जो क्षणिक स्पश मात्र स चूर चूर हो जाये। समय समय की बात है कि विश्व गुरु की सन्तानो न अपन ही हाथो अपनी विश्ववारा सस्कृति को समाप्त करने का षडयन्त्र किया दोष दो हजार साल की गुलामी का है जिसन हमे चितन शून्य बना दिया हमारे विचारो मे आमूल परिवतन कर दिया हमारी शिक्षा पद्धति जीवन पद्धति तक को विपरीत दिशा मे मोड दिया। हम क्या बहके सारा ससार ही बहक गया क्योकि सारा ससार तो हमारे पथ पर ही चलता था। आवश्यकता है हम सब मिल कर कुसस्कारो को समाप्त करें सुसस्कारो को प्राप्त करें। लिखने या कह देन मात्र से तो सस्कार बनत नही। यदि हम पुन अपना सनातन प्रतिष्ठा को प्राप्त करना चाहत हैं तो हमे निःसकोच पाश्चात्य भौतिक आसुरी विचारो को त्याग कर सनातन वैदिक सस्कृति के विचारो को स्वीकार करना होगा। यही इस युग की प्रथम आवश्यकता है। अन्यथा इसी प्रकार हम लुटते रहेंगे पिटते रहेंगे। अपन हाथो अपनी माताओ बहनों से बलात्कार करते रहेंगे। जागो मानवो ! मानवता को आ मा मे धारण करो बहनों व माताओ को पुन यत्र नायस्तु पूज्यन्ते के सदेशानुसार स्थान दो। सतानो को सुसस्कारो मे शिक्षित दीक्षित करो। तभी विश्व रूपी नीड का नवनिर्माण सम्भव है।

सत्य और वेद

—रामसुमेर मिश्र एम०ए०

महर्षि दयानन्द की घोषणा है कि वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है। यदि यह कहा जाए कि वेद सत्य हैं तो सायण महीधर को भी सत्य कहना होगा। महर्षि ने सायण महीधर को असत्य कहा है। वेद पुस्तक है। यह तो भाष्यकार से अपेक्षा की जाती है कि वह उनका सत्य अर्थ करे अर्थात् शोधकर्ता से इस बात की अपेक्षा की जाती है कि वह पुस्तक का अथ किसी रूढि पक्षपात या उन्माद से प्रेरित होकर न करे। महर्षि जब वेद को सत्य घोषित करते हैं तो उनका निर्देश होता है कि वेदो मे इतिहास नहीं है वह देश काल सापेक्ष नही है। वेदो में आख्यान सब काल सब स्थान और सभी व्यक्तियो के लिए हैं उनमें देश काल और व्यक्तियों के अनुसार परिवतन नही है। वेद किसी वाद या मत का दिग्दशन नहीं कराते वह सत्य के लिए दृष्टि देते हैं। भावना और उन्माद से प्ररित व्यक्ति तो स्वय किसी दृष्टि के आवेश मे आवृत है वह सत्य दृष्टि ग्रहण के लिए दीक्षित नही है। केवल सत्य विद्याओ का विद्यार्थी ही यह दृष्टि धारण कर सकता है जिनमे वेदो का आख्यान निदश व सदेश है सायण मही-धर आदि इस दृष्टि के अभाव मे किसी दृष्टि से प्ररित होकर वेदो का अथ कर गए जो सत्य से बहुत दूर हो गया।

सत्य वह है जो एक जैसा रहे। बदल जाने वाला या होकर न रहने वाला सत्य नही कहा जाता। दूसरी भाषा मे इसे त्रैकाल अबाधित कहते हैं। वेद सत्य दृष्टियो के आख्यान सत्य धम के निर्देश व दुष्टो से रक्षित होने के आदेश से भर पूर मत्रो व छदो की पुस्तकें हैं। इनमे जो जैसा है उसका वैसा ही वर्णन है। यदि पदाथ बदल जाने वाला है होकर न रहने वाला है त्रैकाल बाधित है तो उसका वैसा ही आख्यान है। पदाथ सत्य है या असत्य यह प्रश्न करने वाला ही भ्रमित है। जो वतमान मे है उसके नही का प्रश्न ही भ्रम है। हा हम उसके सही स्वरूप की खोज कर सकते हैं। वह भूत मे नही था भवि ष्यत मे नही रहेगा बदलने वाला है। इस उत्पत्ति विनाश वाले का वतमान मे अस्तित्व कैसे होता है। यह खोज हमे दृष्टि लाभ करा सकती है जिससे हमारा व्यव हार व धम हमे सुख और दुःख प्राप्त करा सकता है।

हमको दृष्टि से दृश्य का बोध होता है और खोज-कर्ता दृश्य से दृष्टि की खोज करता है। अद्वैतवादी दृश्य से न ही दृष्टि की खोज करते हैं और न दृष्टि से दृश्य का आख्यान ही। वे एक प्रश्न जो दृष्टि के लिए अपेक्षित था उसे दृश्य पर गढकर स्वय पथ भ्रष्ट हो जाते हैं। इस बाद से ससार असत्य पथ का पथिक बन बहुरे अधकार मे डूब गया। यह प्रश्न तो पदार्थ विद्या का प्रश्न है। पदाथ विद्या का विद्यार्थी इससे जिज्ञासा की वेदना ले सकता है और रहस्य का पता लगा सकता है। वेद पदाथ विद्या की पुस्तकें नही हैं। सत्य की खोज उनका विषय नही है मूल सत्य का वणन उनका विषय है। यह दृष्टि ही वह मूल दृष्टि है जिसके परिप्रेक्ष्य मे ही जीवन और पदार्थ की आगे खोज सम्भव हुई है। इसीलिए महर्षि की घोषणा है कि ईश्वर सब सत्य विद्याओ का आदि मूल है। महर्षि का आगे सकेत यह भी है कि पदाथ विद्या से जो कुछ भी जाना जाता है उसका भी आदि मूल ईश्वर ही है।

मूल दृष्टि के अभाव मे मनुष्य सत्य का बोध नही कर सकता। यह सत्य आर्य-समाज की मूल मान्यता है। मूल सत्य की दृष्टि पाने के बाद विद्वानो से अपेक्षा की जाती है कि वतमान प्रगतिशील जटिल परिस्थितियो मे मानव के लिए वे प्रशस्त पथ की खोज करें जिससे जीवन समाज के लिए समस्या न बनकर एक आदर्श सफलता प्राप्त कर सके। वतमान की देनो को नकारने या उन्हें बुरा कहने से सत्य और दृष्टि मे टकराव उत्पन्न होगा जिसमे जीवन की हार ही सम्मुख है। पदाथ गुण दोष मय हैं। जीवन गुण ग्राही बने इस लक्ष्य की प्राप्ति मे वैदिक दृष्टि सेवा रत बने इसकी अपेक्षा विद्वानो से है।

१२४ बी/६८९ गोविन्दनगर कानपुर

बलिदानो के गुण गाने का युग है

रोने का नही अब तो
बलिदानों के गुण गाने का युग है।
पथ से भटके हुए पन्थ को
फिर पथ पर लाने का युग है॥

रोने से ज्योति घटती है
आशा की डाली कटती है।
अपने पले हरेक बूटे पर
अब तो फल लाने का युग है ॥१॥

वीर क्रांति कर देते हैं
और भ्रांति हर देते हैं।
अपनी सोई हुई चेतना जगा
आज गाने का युग है ॥२॥

पूर्ण रूप से अधिकार समझ कर
सब कुछ सभव प्यार समझ कर।
कब जीती तलवार सत्य को
फिर से ले आने का युग है ॥३॥

प्रम मोम कर दे पत्थर को,
प्रेम जिला दे मृतक नर को।
अपने घर को बड़े प्रेम से 'व्याकुल'
सजवाने का युग है ॥४॥

रचयिता प्रकाशवीर 'व्याकुल'
आर्यसमाज नया बास दिल्ली

भारतीय संस्कृति के गौरव-स्तम्भ : वेद

—आचार्य रामानद शास्त्री
महोपदेशक बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार

'वेद' का अर्थ ज्ञान है यह ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ मे परमपिता परमात्मा के द्वारा चार ऋषियो के हृदय म प्रेरित हुआ। जिन के नाम अग्नि, वायु, आदित्य और अगिरा हैं। वेद स्वय कहत है—

यज्ञेन वाच पदवीमायन् ।
तामन्वविन्दन् ऋषिषु प्रविष्टाम् ॥

अर्थात्—परमात्मा के द्वारा ऋषियों के हृदय मे दी गई वाणी पदबद्ध होकर आई। परम्परा के द्वारा 'श्रुति कहलाई।

पूर्व मे कहा गया है कि 'वेद का अर्थ 'ज्ञान' होता है। वही ज्ञान चार भागो मे विभक्त है। उन्हे ही ऋक्, यजु, साम एव अथर्व वेद के नाम से पुकारा जाता है।

भगवान् मनु का कहना है कि—

भूत भव्य भविष्यच्चसर्वं वेदात् प्रसिद्धयति अर्थात् अतीत, वर्तमान तथा भविष्य का ज्ञान वेदो से प्राप्त होता है।

क्योंकि सर्वं वेदाद्धि निर्बभौ—

अर्थात् सम्पूर्ण ज्ञान वेदो से ही प्रकाशित हुआ है।

महाभारत के रचयिता वेदव्यास जी कहते हैं कि—'सर्वविदु वेदविदो वेदे सर्व प्रतिष्ठितम्।

अर्थात् वेदो का ज्ञाता सब कुछ जानता है क्योंकि वेद से ही सारी विद्याएं प्रकाशित हुई हैं।

वेदव्यास तो इतना आगे बढकर कहते है कि—'जो यहा (वेदो मे) है वही अन्यत्र है और जो यहाँ नही है, वह कही नही है।'

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने आर्यसमाज के तीसरे नियम मे लिखते हैं—

"वेद सब सत्यविद्याओ का पुस्तक है। वेदो का पढना एव पढाना सब आर्यों का परम धर्म है।' शिक्षा, कल्प, निघण्टु, निरुक्त, व्याकरण और ज्योतिष, इन्हे वेदाङ्ग कहत हैं। इनके द्वारा वेदो का सत्यार्थ जाना जाता है।

आयुर्वेद, धनुर्वेद गन्धर्ववेद, वास्तुकला, शालिहोत्र आदि ग्रथो के कर्ता मुनियो ने लिखा है कि— यह सब ज्ञान हम ने वेदो से प्राप्त किया है।

सांख्य, न्याय, वैशेषिक, योग, पूर्वमीमासा एव वेदान्तादि दर्शन शास्त्रो का तात्पर्य यही है कि वेदो की अपौरुषेयता सिद्ध की जाय।'

वेदो के महान् विद्वान् वेदसमुद्र मधुसूदन ओझा ने कहा है कि—'पौरस्त्य पाश्चात्य दर्शनों का उल्लेख ऋग्वेद मे उपस्थित है।' उन्होंने ऋग्वेद के नासदीय-सूक्त मे १० पाश्चात्य दार्शनिक विचारो का पूर्ण विवेचन किया है।

मैक्समूलर के शब्दो मे ऋग्वेद के अदर सारे प्रचलित धर्मों के सूक्ष्म बीज है। उन का यह भी कहना है कि—ऋग्वेद विश्व की सबसे प्राचीन पुस्तक है। इतनी पुरानी होते हुए भी इसमें पूर्णविराम अथवा अर्ध-विराम म परिवर्तन नही हुआ है। अर्थात् कही पर इसम पाठ-भेद नही मिलता है। इसका कारण परम्परा से वेदो का पदपाठ, घनपाठ, जटापाठ आदि ८ प्रकार स पढने की परम्परा तथा रटने की विधि है। इसी प्रकार सैकडो पण्डितो ने वेदो को कण्ठस्थ किया है।

भाषाविज्ञान-वेत्ता यह मानते हैं कि सृष्टि की आदिम अवस्था मे कुछ ही भाषाएँ थी। कुछ लोग यह भी कहने लगे हैं कि एक ही भाषा थी, जिस से सारी भाषाएँ अपभ्रश रूप मे प्रकट हुई। बाइबिल की पुरानी पुस्तक, जिसे 'ओल्ड टेस्टामेण्ट' कहते हैं, मे कहा गया है कि प्रारम्भ मे एक ही भाषा थी, यहोवा ने बहुत कर दिया। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि वह 'भाषा' वेद की भाषा ही हो सकती है। यहाँ हम बहुत शब्दो को न लेकर केवल ईश्वरवाची शब्दो को ही लेते है—पारसी अपने ईश्वर को 'अहुरमज्दा' कहते हैं। ऋग्वेद मे इन्द्र को 'असुरमघ्य' कहा गया है। इसी प्रकार यहूदी अपने ईश्वर को 'यहोवा कहते हैं जबकि वेद मे यह्वतम शब्द इन्द्र के लिए आया है, जिसका अर्थ अतिशक्तिशाली होता है। मैक्समूलर का कहना है कि— ओम्' शब्द स ही 'अल्ला' शब्द निकला है। कुरान के प्रसिद्ध भाष्यकार मुहम्मद अली ने अपने कुरान भाष्य मे लिखा है कि—'अल्ला अव्युत्पन्न शब्द है, यह अरब मे ईश्वर के लिए पुरातन काल से बोला जाता है।

कालक्रम से वेदार्थ की परम्परा बन्द हो गई। केवल कण्ठस्थ करने तथा पाठमात्र की परम्परा प्रचलित रही। अर्थ की परम्परा की जगह विवाह उपनयन, शवदाह आदि सस्कारो मे मन्त्रो का विनियोग मात्र रह गया।

लौकिक संस्कृत भाषा और वेद की भाषा मे अन्तर है। वैदिक सस्कृत तथा वेद के व्याकरण तथा वैदिक कोष से वंचित पण्डित वेदार्थ करने लगे, जिससे वेदार्थ दूषित हो गया। यहाँ मैं कुछ शब्दों का उल्लेख करता हू:—

वैदिक शब्द	अर्थ	लौकिक सस्कृत
अप्सरा	बिजली	वेश्या
घृताची	पानी	नारी-विशेष
कण्व	मेधावी	ऋषि-विशेष
सीता	हल का कर्षण	नारी-विशेष
विश्वामित्र	सर्वमित्र	ऋषिविशेष
विष्णु	सूर्य	ईश्वर या विष्णु

इत्यादि वेदार्थ मे रूढ़ि की भी प्रधानता होती है। इस प्रकार मनमानी अर्थ चल गया है।

वेदमत्रो से पशु-हिंसा भी चल पडी जिसके लिए वेदव्यास महाभारत मे कहते हैं कि—' धूर्तै प्रवर्तितम् एतद् नैतद् वेदेषु विद्यते। अर्थात्' धूर्तों ने इसे चलाया है अन्यथा वेदो मे पशुहिंसा नही है।

राजा कूटदन्त के यहा बहुत पशु मारने अर्थात् बलि के लिए लाए गये थे। बुद्ध ने कहा कि— हे राजन! पहले के ब्राह्मण घी दूध से हवन किया करते थे।"

आज से ५०० वर्ष पूर्व के लगभग विजयनगर मे राज्य पण्डित आचार्य सायण ने अनेक पण्डितो की सहायता से वेदो का भाष्य किया किन्तु वेदार्थ मे रूढि तथा व्यक्तिवाचक शब्दों को लेकर इतिहासपरक अर्थ कर दिये। जैसी प्रतिज्ञा उन्होने अपने भाष्य की भूमिका मे की थी उसका पालन उन्होने नही किया। कही-कही अश्लील अर्थ भी लिख दिया। जिससे वेदार्थ दूषित हो गया। मैक्समूलर ने उसी के अनुसार अपना अर्थ किया तथा उसका सम्पादन भी किया।

महीधर तथा उव्वटादि भाष्यकारो ने वेदार्थ वाममार्ग के अनुसार किया, जिससे प्राज्ञ जनो के हृदय में वेदो के प्रति घृणा होने लगी। लोग यही समझने लगे कि वेदो मे कुछ नहीं है, बहु-ईश्वरवाद का उल्लेख है। अग्नि वायु जल पृथ्वी पहाड आदि की पूजा है इत्यादि।

ऐसी स्थिति मे महर्षि स्वामी दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। स्वामी जी ने वेदार्थ की शैली प्रस्तुत की तथा बतलाया कि वेदो का अर्थ निघण्टु निरुक्त व्याकरण आदि प्राचीन ग्रन्थो के आधार पर करना चाहिए। उन्होने सच्चे अर्थों का दिग्दर्शन कराया। यहा पर केवल एक मत्र नमूने के तौर पर उपस्थित करता हू। यजुर्वेद का मन्त्र है—

ये वाजिन परिपश्यन्ति पक्वम्।
य इमाहु सुरभिर्निहरेति ।

यह मन्त्र राज-प्रकरण का है—

ये (जो) वाजिनम् (घोडे) को परिपश्यन्ति—पक्वम् (परिपक्व अर्थात् योग्य) हो गया। इससे सुरभि—(गन्ध) निकलती है इसे (निहरेति) निकालो।"

अर्थात् घोडा जब युवा होता है तो उससे एक विशेष गन्ध निकलती है। इसी से अश्वगन्धा नामक औषधि भी वैसी ही गन्धवाली होती है। राजा को चाहिए कि ऐसे घोडे को कार्य मे लगाये। किन्तु विदेशी भाष्यकारो ने लिखा है कि यज्ञ मे घोडा मारकर डालो जब पक जाये तो यजमान उसे खाये।

कुछ लोग वेदो का इतिहासपरक अर्थ कर उसमे आर्य और अनार्य की लडाई का वर्णन करते है। किन्तु उन्हें समझना चाहिए कि आर्य' कोई जाति नही अपितु जो सद्गुण सम्पन्न हैं वही 'आर्य हैं। इसीलिए कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' कहा गया है। अर्थात् 'आर्य बनाओ' इसलिए आर्य और अनार्य का युद्ध नही, अपितु शरीर मे भीतर दुष्ट विचार ही दुष्ट तथा शुभ विचार ही इन्द्र हैं।

यही इन्द्र-वृत्रासुर' के युद्ध का रहस्य है। इसी का रूपातर कही शैतान कहा गया है क्योकि वृत्र को 'स्तेन' कहा गया है। महाविद्वान् डाक्टर अम्बेदकर ने अपनी पुस्तक Who Were the Shudras मे स्पष्ट लिखा है कि आर्य बाहर से नही आये। डाक्टर साहब कहते हैं कि—

जो लोग 'अनास्' शब्द से चिपटी नाक वाले का ग्रहण करते हैं कि वे गलत अर्थ करते है क्योकि 'अनास ऋग्वेद का शब्द है। अपशब्द बोलनेवाले के लिए कहा गया है। उन्होने पाणिनि व्याकरण का प्रमाण भी उद्धृत किया है।

मैक्समूलर ने एक व्याख्यान मे कहा था कि आर्य जातिवाचक शब्द नहीं अपितु भाषावाचक शब्द है। भाषा के दो प्रमुख विभाग हैं—आर्य भाषा एव अनार्य भाषा।

कुछ भाषाविज्ञान के आधार पर अर्थ कर वेदो का अनर्थ करते है किन्तु महर्षि स्वामी दयानन्द के प्रादुर्भाव से वैदिक सूर्य का उदय हो गया है। धीरे-धीरे लोग समझने लगे है कि वेद ही मानव के लिए प्रकाशस्तम्भ है। वेदो में व्यक्ति की पूजा नहीं है सारे विश्व के प्राणियो को मित्र की दृष्टि से देखने का आदेश है। देश, जाति काला-गोरा आदि का भेद वेदो मे नही है? अत वेदो का प्रचार एव पठन पाठन होना चाहिए।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

यह सच है सिकन्दर हारा था और पोरस विजयी

लेखक—पी० एन० ओक

भारत से शत्रुता करने वाले आज के पड़ौसियों के सुगम आक्रमणों से सर्वथा विभिन्न प्राचीन भारत की सुदृढ़ सुरक्षा-पंक्ति के कारण उस समय के आक्रमणकारी लड़खड़ाते और नाक रगड़ते हुए वापस जाने पर विवश हुए थे।

ऐसा ही एक दुस्साहसी यूनान का सिकन्दर था जिसने भारत की सीमाओं के साथ छेड़खानी करने पर अपने जीवन की कटुतम घूंट का पान किया और दुर्गति के कारण जो अपने प्राण ही गवा बैठा।

किंतु सिकन्दर की पराजय होने पर भी हमारे इतिहास उसके दुर्भाग्य को भारत की अजेय सन्तान पोरस पर उसकी महान विजय का वर्णन करते अघाते नहीं। असत्य का यह घोर इतिहास भारतीय इतिहास में इसलिए पैठ गया है क्यों कि हम को उस महान् सघर्ष के जितने भी वर्णन मिले है वे सब के सब यूनानी इतिहासकारो के किए हुए है। और यह तो सर्वज्ञात है ही कि घोर पराजयो मे अपना मुख काला करने वाले आक्रमणकारी भी अपने पराभवो को विजय के आवरण मे, छद्म रूप मे प्रस्तुत करते हैं। यही बात सिकन्दर की भारतीय वीरपुरुषो से भिड़न्त मे हुई है।

सिकन्दर महान जैसा कि वह पुकारा जाता है ईसा पूर्व ३५६ मे जन्मा था। वह मेसेडोनिया के राजा फिलिप द्वितीय और एपिरोट की शाहजादी ओलिम्पियस का पुत्र था। अपनी राजनीति निपुणता एव बुद्धि चातुर्य के लिए फिलिप तो विख्यात था, किन्तु कहा जाता है कि सिकन्दर की माता असस्कृत अशिक्षित अशोभन एक अभिचारिणी एव आलसी महिला थी।

सिकन्दर के बाल्यकाल मे मेसेडोनिया के दरबार का वातावरण अपने राज्यो की सीमाओ का विस्तार करने और इसी हेतु भयकर युद्धो की योजनाए बनाने से आपूरित रहता था। प्रतिक्रमणात्मक युद्धो मे यशार्जन करने एव सभी यूनानी राज्यो का अग्रणी बनने की महान् आकाक्षा मेसेडोनिया मे स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी।

जब सिकन्दर १४ वर्ष का हो गया, तब उसकी शिक्षा के लिए प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक अरस्तू को नियुक्त किया गया। सिकन्दर का निरकुश अदम्य साहस शैक्षिक अनुदेशो अथवा दार्शनिकतापूर्ण परामर्श के वशीभूत न हो पाया। अपने गुरु के पास विनीत भाव से बैठे रहने की अपेक्षा यात्रियो साहसी व्यक्तियो, सैनिको और राजदूतो के मुख से नये-नये वर्णन सुनना सिकन्दर को अधिक रुचिकर थे। उसको अन्य लोगो के मर्मस्थल मे पीड़ा पहुंचाकर आनन्द लेना अच्छा लगता था। एक बार जब उसका पिता राजधानी से बाहर था, तब उसने राज्य की सैनिक टुकड़िया लेकर पहाड़ी क्षेत्र के विद्रोहियो को दबाने के लिए चढाई कर दी थी।

लगभग इसी समय सिकन्दर के माता-पिता के मध्य पारिवारिक कलह बढती जा रही थी। उन लोगो ने पृथक् हो जाने का निश्चय किया। फिलिप ने क्लियोपैट्रा नामक दूसरी पत्नी बना ली। रानी ओलिम्पियस राजमहल छोड़कर चली गई। सिकन्दर, जिसका उद्दड स्वभाव अपनी मा के स्वभाव से ही अधिक मिलता था, अपनी मा के साथ ही चला गया। फिलिप को क्लियोपैट्रा से एक पुत्र प्राप्त हुआ, जो राजसिंहासन के लिए समान दावेदार बन गया। कुछ समय पश्चात् फिलिप की हत्या कर दी गई और इस पितृ हत्या के लिए इतिहास ने सिकन्दर पर सदेह किया है। अपने पिता की हत्या मे भागीदार होने की बात असम्भव प्रतीत नही होती क्योकि वह माता के साथ साठ-गाठ किया ही करता था।

अनेक वर्षों तक सेना को यह ज्ञात रहा था कि सिकन्दर ही शाही युवराज एव राज्य का वास्तविक उत्तराधिकारी है, अत उसके पिता की मृत्यु के पश्चात् राज्यासन को बलात ग्रहण करने मे उन लोगो ने सिकन्दर की पूर्ण सहायता की। राज्यासन पर बैठने के पश्चात सिकन्दर ने अपने चचेरे एव सौतेले भाई को मरवा डाला था जिससे राजसिंहासन के लिए अन्य प्रति अधिकारी न रहे।

अब सिकन्दर समाहरण और विस्तारण के मार्ग पर चल पड़ा। उसने सबसे पहले विद्रोही पहाड़ी लोगो का दमन किया। फिर वह पश्चिम की ओर चल पड़ा और डनूब नदी का तटवर्ती क्षेत्र अपने अधीन कर बैठा। इस बीच थेबस की जनता ने उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया। सिकन्दर ने उनके ऊपर अति चपलता से भीषण आक्रमण किया और उनकी राजधानी को धूल मे मिला दिया। इस घटना ने भावी योद्धा के रूप मे उसका यश चहुँ ओर प्रसारित कर दिया। एथेन्सवासियो तथा अन्य सभी यूनानी समाजो ने सिकन्दर के सम्मुख घुटने टेक दिए और ईरान तथा अन्य देशो को जीतने मे उसको सहायता देना स्वीकार किया।

इस प्रकार सभी प्रकार की सहायता से आश्वस्त हो ३३४ ई० पू० मे सिकन्दर विश्व-विजय करने को निकल पड़ा। मेसेडोनियनो, इलिरियनो थ्रेसियनो तथा यूनानी समाजो की ४०,००० सेना लेकर सिकन्दर पूर्व की ओर चल पड़ा।

सिकन्दर सर्वप्रथम ट्राय की यात्रा पर गया और विजय की भावी यात्राओ के लिए ईश्वरीय आशीर्वाद प्राप्त करने की इच्छा से उसने विश्वास और निष्ठापूर्वक ट्रोजन-युद्ध के हुतात्माओ की पूजा की।

सिकन्दर के प्रस्थान का समाचार सुनकर ईरान के राजा ने सिकन्दर की विजयाकाक्षाओं को शैशवावस्था मे ही रौंद डालने के विचार से उससे भी अधिक सख्या मे अपने सैनिक भेज दिए। सिकन्दर अभी 'एशिया लघु' को जीतने में सफल नही हुआ था। दोनों की सेनाएं ग्रेनिकस के तट पर भिड़ गईं। घमासान युद्ध हुआ। सूर्यास्त होते-होते ईरान की सेना के द्वारा प्रतिरोध ढीला पड़ गया और वह भाग खड़ी हुई।

'एशिया लघु' से बाहर जाने वाले सभी मार्गों पर अब सिकन्दर का पूर्ण अधिकार था। उसने स्थानीय यूनानी उपनिवेशो को स्वतन्त्र हो जाने की घोषणा कर दी विजित प्रदेशों पर राज्यपाल नियुक्त कर दिए और स्वय को सम्राट् घोषित कर दिया। नये गृहीत क्षेत्र सिकन्दर के अधीन शीघ्र इसलिए हो गए क्योकि इसकी विशाल यूनानी जनसख्या एव सैनिक-शक्ति सहायक सिद्ध हुई थी।

एक वर्ष पश्चात् सिकन्दर ने उत्तरी फ्रिजिया मे गोरडियस के राज्य पर आक्रमण किया और उसे अपने अधीन कर लिया। किवदन्ती के अनुसार यही पर प्राचीन फ्रिजियन-राजा गोरडियस के रथ से बधी गोरडियन गाठ को सिकन्दर ने अपनी तलवार से काटा था।

थल सेनाभियान के साथ-साथ सिकन्दर की नौ-सेना हैलेस्पोन्ट क्षेत्र मे चल गई थी। वह जगी बेड़ा सिकन्दर को स्वदेश से सम्पर्क बनाए रखने मे सहायक हुआ था। किंतु अब चूँकि वह दूरस्थ प्रदेशो तक जाने का इच्छुक था, अत उसने अपनी नौ सेना को अपने मूल अड्डे पर लौट जाने का आदेश दे दिया।

हैलेस्पोन्ट क्षेत्र से सिकन्दर की नौ-सेना को उसके राजा का आदेश मिला कि वह यूनान के राज्य पर आक्रमण करने के लिए तैयार रहे। अपनी गृहभूमि पर आक्रमण की आशका दूर करने के लिए सीरियाई समुद्री तट पर चढाई कर देने के लिए ईरान का राजा डेरियस स्वय ही एक बहुत बडी सेना लेकर सीरिया मे प्रविष्ट हुआ। दोनों सेनाए ई० पू० ३३३ मे ईसस मे एक-दूसरे से भिड़ गई। ग्रीक इतिहासकारो ने लिखा है कि अपने महिला वर्ग को पीछे ही छोड़कर ईरानी सेना अस्त-व्यस्त हो भाग खड़ी हुई, किन्तु सिकन्दर ने पकड़ी गई महिलाओ के साथ व्यवहार करने में सूरता एव सयम का परिचय दिया। डेरियस ने अपना आधा राज्य समर्पित कर देने का प्रस्ताव रखा किंतु सम्पूर्ण राज्य-समर्पण से कम कोई बात सिकन्दर को सन्तुष्ट कर ही नहीं सकती थी।

उसने अब 'टायर' को जा घेरा। घेरा सात मास तक चला, और सम्पूर्ण फ़िनिशिया उसके अधीन हो गया। बाद में गाजा पर अधिकार कर सिकन्दर मिस्र में घुसा। ईसा पूर्व ३३२-३३१ के वर्ष की शीत ऋतु मिस्र मे ही व्यतीत करने वाले सिकन्दर को ही इसी समय सिकन्दरिया की स्थापना करने का श्रेय दिया जाता है। किंतु जैसा बहुधा हुआ है, हो सकता है कि किसी पूर्वकालीन नगरी पर ही सिकन्दर ने अपना नाम थोप दिया हो।

मध्य सागर के सम्पूर्ण पूर्वीय क्षेत्रों को अपने अधीन कर लेने के पश्चात् सिकन्दर ने अपनी आंखें ईरान पर लगा दी। ई० पू० ३३१ में उसने २० सितम्बर के दिन टिग्रिस नदी पार की। ज्यों ही वह मेसोपोटामिया से पार गया और आगे बढ़ा त्यो ही डेरियस के सेनापतित्व में ईरानी सेना गोगमिल नामक स्थान पर उसके सम्मुख आ खड़ी हुई। भयंकर अल्पकालिक सघर्ष हुआ। ईरानी सेना को फिर पराजित होना पड़ा और डेरियस मीडिया को भाग गया। गोगमिल के युद्ध को ही 'अरबिल-युद्ध' के नाम से भी पुकारा जाता है अरबिल इस स्थान से ६० मील दूर एक नगरी है।

सिकन्दर ने परशिया-साम्राज्य के बेबिलोन प्रदेश को भी अपने अधीन कर लिया और ईरान की राजधानी परसोपोलिस मे प्रवेश कर उस समृद्ध नगर को अपने पैरो तले रौंद डाला व फिर उसको आग लगा दी। कहा जाता है कि किसी पूर्व राजा क्षरक्षेस द्वारा यूनानी मन्दिरो को ध्वस्त कर दिये जाने के बदले मे यह जघन्य कार्य किया गया।

डेरियस उत्तर की ओर भागा। किंतु अब उसकी खोज निरन्तर की गई। एक राजा दूसरे राजा का पीछा कर रहा था। डेरियस को घेर लिया गया। उसके साथ उसका चचेरा भाई एव थोड़े से सरदार ही थे ई० पू० ३३० की ग्रीष्म ऋतु थी। इसके पूर्व ही कि सिकन्दर के साथी आगे बढ़कर डेरियस को बन्दी बनाते, डेरियस के साथियो ने उसका प्राणान्त कर दिया और उसका मृत शरीर सिकन्दर को सौंप दिया।

इसके बाद कश्यप (क्षोर) सागर के तटीय पहाड़ी प्रदेशों को रौंदता हुआ सिकन्दर अफगानिस्तान की ओर बढ़ गया अब उसने अपनी जीतों पर घमण्ड होने

लगा था। अब वह स्वय को अर्थेश्वर समझने लगा था और अपने को पूजने का अधिकारी समझ बिना नू नच किए अप्रतिरोधित समर्पण चाहता' था। उसने ईरानी राजचिह्न व राजोचित वेशभूषा अगीकार कर ली। इस काय ने उसके मेसेडोनियनों की सैनिक टुकडियो मे रोष उत्पन्न कर दिया। उनको सदेह होने लगा कि उनका मूर्तिवत् समादरित नेता उनका तिरस्कार करने लगा था और उनसे विरक्त होने लगा था क्योकि वह ईरानी राजोचित वेशभूषा को पहनकर दरबार मे आता था और अन्य लोगो से निश्चित समर्पण भाव की अपेक्षा करता था। सिकन्दर की सेना के विभिन्न वर्गों मे घोर असन्तोष की लहर फैल गई। सिस्तान मे प्रोपथेशिया के स्थान पर डेरा डाले हुई सेना मे घोर विभेद फैल गया। अश्व-सेनाध्यक्ष फिलेटस एव कुछ अन्य लोगों पर सिकन्दर की हत्या करने की योजना बनाने का आरोप लगाया। सिकन्दर ने उनको मौत के घाट उतारने का निश्चय लगभग किया ही हुआ था किंतु फिर कुछ सन्मति आ गई। उसको स्पष्ट हो गया कि ऐसा कोई भी पग और भी विभेद पैदा कर देगा इसीलिए वह नरम पड गया।

ई० पू० ३२८ की वसन्त ऋतु मे सिकन्दर ने हिन्दूकुश पार किया और सम्पूर्ण बैक्ट्रिया अपने अधीन कर लिया। विलुप्त होते दीख पडने वाले विभेद फिर से उभर आये। उस समय तक सिकन्दर पूरे रूप मे मदोद्धत अधिपति बन चुका था। अनेक सैनिक-अधिकारीगण पर अपने अधिनायक के विरुद्ध षड्यन्त्र करने का अभियोग लगाया गया और उनको मार डाला गया।

ज्यो ही उसकी सेनाए सिंधु नदी की ओर बढी, त्यो ही भारतीय पठान कबाइलियो ने उनको निरन्तर छिपे हुए स्थानो से शत्रुओ पर आघात पहुंचा पहुंचाकर, तग किया। ये उस समय भारत की बाह्य प्रतिरक्षा पक्तिया थी। एक किंवदन्ती के अनुसार यही वह समय था जब सिकन्दर ने पवित्र माउण्ट नूसा और उस पर डियोनियस का पथ खोज निकाला था।

अब सिकन्दर सिंधु नदी पार कर भारतीय उप-महाद्वीप की सीमाओं पर आ खडा हुआ था। सिंधु पार भारतीय प्रदेश मे उत्तरी क्षेत्र मे तीन राज्य थे। जेहलम नदी के चहुं ओर के क्षेत्र पर राजा आम्भि राज्य करता था। तक्षशिला उसकी राजधानी थी। चेनाब से लगते हुए क्षेत्रों पर पोरस का राज्य था, और एक तीसरा राजा कश्मीर के चहुं ओर की अभिसार भूमि पर शासन करता था। राजा आम्भि का पोरस से पुराना बैर था, अत उसने सिकन्दर के आक्रमण के समय को अपनी शत्रुता का पूरा-पूरा बदला लेने का उपयुक्त अवसर समझा। अभिसार लोग पोरस और सिकन्दर, दोनो को मित्रतापूर्ण व्यवहार बनाए रखने का वचन देकर तटस्थ बैठने का निश्चय कर बैठे। इस प्रकार पोरस अकेला ही रह गया जिसको सिकन्दर का सामना करना था। सिकन्दर को आम्भि से सभी प्रकार की सक्रिय सहायता प्राप्त थी।

पारस्परिक वर्णनो मे कोई तिथिया उपलब्ध नही है। सिंधु के ऊपर एक स्थायी पुल बना लिया गया और सिकन्दर की सेनाए भारत मे प्रविष्ट हो गई। आक्रामक सेना ने अटक के उत्तर मे १६ मील पर पडाव डाला। ग्रीक-वर्णनो मे अनेक असगतिया त्रुटिया और न्यूनताए ढूंढी जा सकती हैं, क्योकि उनके लिए इसका स्पष्टीकरण करना कठिन है कि उनके मूर्तिवत् समादरित एव आत्मश्लाघी सिकन्दर ने भारत मे अपकृत्य क्यो किए! इसी कारण वे यह चित्रण करने का ढोंग करते हैं कि अपनी विशालता के कारण सिकन्दर ने अपनी भारत विजय के परिणाम व्यय कर दिए थे और वह अपनी मूल भूमि को लौट गया था।

यह विस्मरण नही करना चाहिए कि सिकन्दर जब अपने देश को वापस चला, तब तक उस का मद झाड दिया गया था। उसका दिल टूट चुका था वह विषम रूप से घायल हो चुका था एव उस की विशाल शक्तिशाली सेना बुरी तरह तहस नहस हो चुकी थी।

प्लूटार्च के अनुसार २० ००० पदाति एव १५ ००० अश्वारोहियो की सिकन्दर की सेना पोरस द्वारा युद्धक्षेत्र मे एकत्र की गई सेना से सख्या मे बहुत ही अधिक थी। सिकन्दर की सहायता आम्भि की सेनाओ और पारसी सैनिको ने भी की।

महाराष्ट्रीय ज्ञानकोष के सप्तम भाग के पृष्ठ ५३१ पर लिखा है कि सिकन्दर और पोरस की सेनाओ का परस्पर सघर्ष चेनाब नदी के तटो पर हुआ था। किंतु कर्टियस लिखता है कि, 'सिकन्दर जेहलम के दूसरी ओर पडाव डाले पडा था। सिकन्दर की सेना का एक भाग जेहलम के द्वीप में पहुंच गया। पोरस के सैनिक उस द्वीप मे तैरकर पहुंचे उन लोगो ने उसका घेरा डाल दिया और यूनानी अग्रिम दल पर हमला बोल दिया। उन्होने अनेक यूनानी सैनिको को मार डाला। मृत्यु से बचने के लिए अनेक यूनानी नदी में कूद पडे, किंतु वे सब उसी मे डूब गये।

ऐसा कहा जाता है कि अपनी सेना सहित सिकन्दर ने जेहलम नदी को एक घनी अधेरी रात मे नावो द्वारा हरणपुर से ऊपर ६० मील की दूरी पर तेज कटाव के पास पार किया। पोरस के अग्रिम-दल का नेतृत्व उसका पुत्र कर रहा था। भयकर मुठभेड मे वह मारा गया। ऐसा कहा जाता है कि इस दिन वर्षा हो रही थी और पोरस के विशालकाय हाथी दलदल मे फसगये। किन्तु यूनानी इतिहासकारों द्वारा दिए गये वर्णनों की भी यदि ठीक से सूक्ष्म-विवेचना कर ली जाए तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि पोरस की गजसेना ने शत्रु शिविर मे प्रलय मचा दी थी और सिकन्दर की शक्तिशाली फौज को तहस-नहस कर डाला था।

एरियन ने लिखा है कि, 'भारतीय युवराज ने सिकन्दर को घायल कर दिया और उसके घोडे बूसे फेलस को मार डाला।"

जस्टिन कहता है कि ज्यो ही युद्ध प्रारम्भ हुआ पोरस ने महानाश करने का आदेश दे दिया।'

अनावश्यक रक्त पात रोकने के लिए पोरस ने (उदारतावश) केवल सिकन्दर से अकेले ही निपट लेने का प्रस्ताव रखा। सिकन्दर ने उस (वीर-प्रस्ताव) को अस्वीकार कर दिया। आगे जो युद्ध हुआ उसमे उसका मर्मान्तिक आघात के कारण उसी के नीचे ढेर हो गया। 'घडाम से युद्ध-भूमि मे गिर जाने पर सिकन्दर को शत्रुओ से घिर जाने का भय उत्पन्न हो गया किंतु उसके अगरक्षक द्वारा वह वहा से लुक छुपकर खिसका दिया।

पोरस के हाथियो द्वारा यूनानी सैनिकों मे उत्पन्न आतक का वर्णन करते हुए कर्टियस ने लिखा है— इन पशुओ ने घोर आतक उत्पन्न कर दिया था और उनकी (तूर्यवादक जैसी) प्रतिध्वनित होने वाली भीषण चीत्कार न केवल घोडो को भयातुर कर देती थी जिससे व बिगडकर भाग उठते अपितु घुडसवारो के हृदय भी दहला देती थी। इसने इनके वर्गों मे एसी भगदड मचाई कि अनेक विजयो के ये शिरोमणि अब ऐसे स्थान की खोज मे लग गये जहा इनको शरण मिल सके अब सिकन्दर ने छोटे शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित अग्रेनियनो एव थ्रेसियनो को आज्ञा दी कि वे गजसेना के विरुद्ध कार्यवाही करे। इस प्रत्याघात स चिढकर उन आहत पशुओ ने क्रुद्ध हो आक्रमणकारियो पर भीषण हमला कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप व लोग उनके पैरो तल रौंद डाले गये। सर्वाधिक हृदय-विदारक दृश्य तो वह था जब वह स्थूल चर्म पशु अपनी सूड से यूनानी सैनिक को पकड लेता था उसको अपने ऊपर वायु मण्डल मे अधर हिलाता था और उस सैनिक को अपने आरोही के हाथो मे सौंप देता था जो तुरन्त उसका सिर धड से अलग कर देता था। इस प्रकार परिणाम सन्देहास्पद था कभी मेसेडोनियन लोग हाथियो के पीछे भागते थे और कभी उनसे दूर दूर भागने को विवश हो जाते थे। इसी प्रकार सारा दिन व्यतीत हो जाता था, और युद्ध चलता ही रहता था।

डियोडोरस सत्यापित करता है कि, विशालकाय हाथियो मे अपार बल था, और वे अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुए। उन्होने अपने पैरो तले बहुत सारे यूनानी सैनिको की हड्डिया पसलिया चूर चूर कर दी। हाथी इन सैनिको को अपनी सूडो से पकड लेते थे और भूमि मे जोर से पटक देते थे। वे अपने विकराल गज-दन्तो से सैनिको को गोद गोदकर मार डालते थे।'

ये सब वर्णन स्पष्टत प्रदर्शित करते हैं कि युद्ध या तो सूखी जमीन पर लडा गया था अथवा यदि भूमि गीली भी थी तो भी उसमे पोरस की सेना दलदल मे नही फसी थी—जैसा कि असत्य प्रचारित किया जाता है।

पोरस की वीर सेना द्वारा शत्रु हृदय मे प्रस्थापित भयकर आतक के इन वर्णनो के होते हुए भी पक्षपातपूर्ण कुछ यूनानी वर्णनो मे दावा किया गया है कि पोरस घायल हुआ था, पकडा गया था और उसकी सेना को शस्त्र त्याग करने पडे थे।

—'इतिहास की भयकर भूलें' से साभार

(क्रमश)

तेरी लीला ललित ललाम है

—स्वामी सोमानन्द (शीतल)

अन्तर्यामी स्वामी तुम को बारबार प्रणाम है।

तुम ने लोक रचाये हैं,
सूर्य चन्द्र चमकाये हैं।
रूप अनूप बनाये हैं॥

ऊषा मे सन्ध्या मे तेरी लीला ललित ललाम है॥१॥

विद्युत् की गति चचल मे
वन पर्वत जल मे थल मे।
अलि-अवलि फूलों मे फल मे॥

सघन लताओ मे पक्षीगण गाय रहे गुण-ग्राम हैं॥२॥

तू महान् से महान् है
और न कोई तेरे समान है।
ये वेदो का प्रमाण है,
दिया ऋषि ने यह ज्ञान है॥

'शीतल' जगती तल पर तुम को सुमिर मिले विश्राम है॥३॥
अन्तर्यामी स्वामी तुम को बारबार प्रणाम है॥

आर्यपथिक अमर शहीद प० लेखराम जी के बलिदान दिवस तथा होली के पवित्र पर्व के एक ही दिन ६ मार्च को पड़ने पर हमारा कर्त्तव्य

—चमनलाल अशोक विहार

उपास्मै गायना नर पवमानायेन्दवे । अभिदेवा इयक्षते ।

भावार्थ—प्रभु उपदेश करते हैं कि हे मनुष्यो महनीय दिव्यगुण वाले समाजसेवी पुरुषो के चरित्रो का बड़े अच्छे प्रकार से मनन करके उनके पदचिह्नो पर चलकर अपने चरित्र को भी उनके समान उत्तम बनाओ ऐसे अनुकरणीय महान् व्यक्तियो की आर्यसमाज के गौरवमय इतिहास मे कुछ कमी नही है। आर्यसमाज का इतिहास बलिदानो का इतिहास है इसमे आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती सर्वप्रथम ऐसे महान् व्यक्ति हुए हैं जो देश जाति और राष्ट्र की निष्काम भाव से सेवा करते करते कुछ स्वार्थी और धर्म विरोधी लोगो के षडयन्त्र का शिकार हुए और विश्वास घाती अपने रसोइया जगन्नाथ के द्वारा दूध मे हलाहल विष दिये जाने के कारण देश की वेदी पर अपने प्राणो की बलि दे दी। इसके पश्चात् आर्यसमाज स्थापना के पहिले पचास साठ वर्षो मे बलिदानो की झड़ी सी लग गई दिखाई देती है। इन मे से कुछ धर्मान्ध लोगो के छुरे और गोली का शिकार हुए और कुछ ने निजाम हैदराबाद की जेल मे परम प्रेरणामय अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का आन्दोलन करते हुए अपने जीवनो की बलि दी। इन मे से महर्षि की बलि के बाद धर्मवीर अमर शहीद प० लेखराम जी का नाम स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य है जिन्होने आर्यसमाज का प्रचार करते हुए हिन्दू जाति की रक्षा मे अपने जीवन की आहुति ३९ वर्ष की छोटी सी आयु मे ही ७ मार्च सन् १८९७ मे दे दी। वह जालिम धर्मान्ध मुसलमान युवक पण्डित जी के पास शुद्ध होने के लिए आया था परन्तु उसने छुरा पेट मे घोंप कर उनका जीवन समाप्त कर दिया। ऐसे महान् पुरुष द्वारा उपस्थित आदर्शो को जीवन मे धारण करके देश और जाति के गौरव को ऊंचा कर सकते हैं। प० लेखराम जी महर्षि स्वामी दयानन्द के सच्चे भक्त और आर्य हिन्दु जाति के निष्ठावान् सेवक थे। पण्डित जी का प्रतिक्षण आर्य संस्कृति एव वैदिक धर्मियों और हिन्दुओ को ईसाई मुसलमान न बनने देने में ही व्यतीत होता था। आप का छोटा सा ३९ वर्ष का जीवन बड़ा संघर्ष और आत्मगौरव का एक प्रेरणादायक कहानी है। आप उर्दू फारसी के महान् विद्वान होने के अलावा अरबी के भी पण्डित थे। यही कारण था कि मुसलमानो के साथ शास्त्रार्थ मे आपके कुरान के ज्ञान और अरबी भाषा की विद्वत्ता को देखकर बड़े बड़े मौलवी चकित रह जाते थे। लेखराम जी बड़े कुशल व्याख्यानदाता थे। अन्य धर्मों की त्रुटियो पर आप इस कुशलता से प्रकाश डालते थे कि उसमे किसी प्रकार की कटुता एव छिछोरापन न आने पाता था। और यही कारण था कि आप के व्याख्यानो मे सभी धर्मों के लोग विशेषत मुसलमान लोग भारी संख्या मे सम्मिलित होकर रस लेते थे? यद्यपि आप सभी धर्मों का खण्डन मण्डन समान रूप से करते थे तो भी मुसलमानो के अलावा शेष धर्म वालो को आप के प्रति कोई विशेष शिकायत न थी क्योंकि आप की सुधार भावना को वे अच्छी तरह समझते थे। पंजाब सनातन धर्म सभा के महोपदेशक प० दीनदयालु जी तो आप को हिन्दु धर्म जाति का परम रक्षक मानते थे और कहा करते थे कि प० लेखराम जी के होते हुए हिन्दुओ की जड़ कोई भी खोखली नही कर सकता। मुसलमान विशेषकर अहमदी कादियानी आप से बहुत द्वेष रखते थे और आप की जान के पीछे पड़े रहते थे इसका एकमात्र कारण यह था कि आप उनको बार-बार शास्त्रार्थ के वास्ते आह्वान करते रहते थे और उनके झूठ कलामो का मुंह तोड़ जवाब देते थे और ऐसा युक्ति सगत भाण्डा फोड़ करते थे कि उन को कोई जवाब न देते बन पड़ता था। जब ही अहमदियो की कोई पुस्तक प्रकाशित होती अथवा कोई लेख पढ़ने को मिलता आप तुरन्त अविलम्ब पुस्तिका द्वारा लेख वा व्याख्यान मे उसका ऐसा भाण्डा फोड़ करते कि वे दंग रह जाया करते थे। उन्होने इससे छुटकारा पाने के लिए अनेक स्थानो पर आप पर कोर्टों मे अभियोग चलाये परन्तु लाहौर मेरठ बम्बई तथा दिल्ली आदि सभी जगह आप निर्दोष सिद्ध हुए। प्रचार कार्यों मे आप इतने व्यस्त रहते थे कि आप का भाई वा एकमात्र पुत्र की मृत्यु की खबर भी किसी प्रकार की बाधक नही होती थी। सर्दी गर्मी यात्रा की थकावट और तकलीफ भी किसी प्रकार की बाधा उपस्थित न करती थी। कई बार तो हिन्दुओ को मुसलमान बनने से बचाने के लिए प्राणो की बाजी लगाकर चलती ट्रेन से छलांग लगाकर यथासमय वहां पहुंचते थे। ऐसे थे निर्भीक प्रचारक हमारे लेखराम जी।

पण्डित जी का व्यक्तिगत जीवन बड़ा सादा आडम्बर से कोसो दूर था। वह बालकपन से ही पूजापाठ धार्मिक ग्रन्थो के पढ़ने मे रुचि लेते थे। पूरी परिपक्व ३५ वर्ष की आयु मे उन्होने विवाह किया और कुल तीन वर्ष बड़ी सादगी से गृहस्थ की जुम्मेदारियां पूरी करी परन्तु प्रचार कार्य निरन्तर चलता रहा आप आर्य समाज अथवा हिन्दू धर्म पर कोई भी आक्षेप सहन नही कर सकते थे। आप का कार्यक्षेत्र बड़ा व्यापक बन गया था। किसी भी हिन्दु को मुसलमान अथवा ईसाई बना लेना तब तक ही सम्भव था जब तक कि आप को इसका ज्ञान न होता जैसे ही आप को पता चलता आप तुरन्त दौड़धूप करते और उनको पतित होने से बचा लेते थे। आपने वहां सहस्रो शास्त्रार्थ किये वहां लगभग तीन दर्जन छोटी बड़ी पुस्तकें भी लिखी। महर्षि स्वामी दयानन्द की तरह आप का भी पूर्ण विश्वास था कि वैदिक शिक्षा के प्रसार के बिना ससार का उद्धार कठिन है। इस हेतु वह विदेशो मे भी प्रचार करने के लिए जाने की योजना भी बनाते थे। उन्होने कुछ पुस्तको का अरबी मे भी अनुवाद किया था। परन्तु दुर्भाग्यवश दुष्टाचारी विरोधी मुसलमानो ने उनका पीछा न छोड़ा और जैसा कि पहिले लिख चुके हैं। ७ मार्च सन् १८९७ को लाहौर मे उनके पेट मे छुरा घोंपकर एक दुष्ट ने उनकी हत्या कर दी और सदैव के लिए उस वैदिक जगमगाते हुए सूर्य को अस्त कर दिया।

याद रहे लेखराम जी का बलिदान हिन्दू जाति की रक्षा करते हुए हुआ। परन्तु दुख है कि हिन्दु जाति फिर से सकट ग्रस्त है। विधर्मी लोग अरब देशो तथा पाश्चात्य देशों की विपुल धनराशि के बल बूते पर अशिक्षित साधन हीन पिछड़े हिन्दुओ को एव तथा कथित हरिजनो और अछूतो को प्रलोभन देकर अथवा डरा धमका कर उनको धर्म परिवर्तन करने पर बाधित कर रहे हैं। मीनाक्षीपुरम जैसी घटनाएं फिर से घटने लगी हैं। यही नही जिन हिन्दू जाति के लोगो को मुसलमान न होने देने अथवा पहिले से हुए मुसलमानो को हिन्दू धर्म मे वापस लाने के लिए हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि का चक्र चलाया था और जिसके परिणाम स्वरूप उनको एक विधर्मी मुसलमान ने उनकी छाती मे गोली दाग कर उनकी हत्या की थी आज वही मेव पुन मुसलमान होते जा रहे हैं। यदि ऐसा ही होता रहा और हम न जागे तो वह दुर्दिन दूर नही है कि जब आज की बहुसंख्यक हिन्दू जाति अल्प संख्यक घोषित की जावे और विधर्मी लोग इस स्थिति का राजनैतिक लाभ उठाकर अपना शासन स्थापित कर दें। स्थिति बड़ी भयंकर है। इस वर्ष प० लेखराम जी के बलिदान दिवस पर सभी हिन्दू विशेष कर आर्यसमाजी सभी भेद भावो को भुलाकर कुछ ऐसे ठोस कदम उठाने की योजना बनावें जिससे से भय कर स्थिति का सामना करके विधर्मियो के नापाक इरादे विफल कर दें और उनको मुंह की खानी पड़े। यह वर्ष और भी महत्त्वपूर्ण इसलिये भी है कि होली का पवित्र पर्व और लेखराम जी का बलिदान दिवस हमारी याद में अंग्रेजी तारीखों के अनुसार एक ही दिन ६ मार्च को आ पड़ा है जब कि इन हिन्दी तिथियो के अनुसार बलिदान दिवस फाल्गुन तृतीया (लेखराम तृतीया) और होली फाल्गुन पूर्णिमा को होते हैं जो कभी भी एक दिन नही पड़ा करते। प० लेखराम जी का जहां एक मात्र यही सदेश था कि सब हिन्दू सवर्ण और अछूत छोटे बड़े सब मिलकर सगठित होकर एक सुदृढ हिन्दू जाति के तौर पर अपना अस्तित्व स्थापित करें। वहां होली का एक सदेश मंजुल मिलन भी है कि सब लोग आपसी भेद भाव भुलाकर छोटे-बड़े सभी मिलकर रहें और पुरखो का इस दिन के लिए यह भी कहना है कि आज के दिन कोई अस्पृश्य नही है सभी एक दूसरे की सहानुभूति के पात्र हैं। वेद का पवित्र सदेश भी यही है कि सब छोटे बड़ो के साथ मिलकर कार्य करें और आनन्द रत हों।

यशोभिरपिकक्षमि स रभामहे।

ऋग्वेद १०।१३४।७

अत हमारा सब का कर्तव्य है कि हम समय के प्रभाव को देखें और हिन्दू जाति को विनाश के गड्ढो मे गिरने से बचायें। यही समय की पुकार है।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान निबोधत।

आओ जरा पण्डित जी की जीवन तालिका पर दृष्टिपात कर लें—

सैय्यदपुर नाम के ग्राम तहसील चकवाल जिला जेहलम (पाकिस्तान) में महता तारा सिंह के घर मे जन्म— १८५८

दिहाती स्कूल मे उर्दू फारसी पढ़ने के लिए स्कूल मे दाखिल— १८६४

चचा गण्डासिंह के पास पिशावर जाना— १८६९

चचा की नौकरी स्थानान्तर होने पर प० जी का वापस घर— १८७२

पुलिस में नौकरी पेशावर में—१८७५

ऋषि दयानन्द के दर्शनों के लिए अजमेर जाना— १८७९

नौकरी छोड़ना— १८८०

पेशावर मे आर्यसमाज स्थापना—१८८०

कुम्भ मेले पर महात्मा मुंशीराम के साथ प्रचार कार्य— १८९१

३५ वर्ष की आयु मे २६ वर्षीय लक्ष्मी देवी से विवाह— १८९३

पुत्र जन्म— १८९५

पुत्र मृत्यु १८९६

एक धर्मान्ध मुसलमान द्वारा पेट में छुरा घोंप कर हत्या— ६ मार्च १८९७

अन्तिम संस्कार लाहौर में सहस्र लोगों का शव यात्रा मे सम्मिलित होना— ७ मार्च १८९७

समीक्षा

वैज्ञानिक वैदिक चिन्तन

—प्रो० प्रतापसिंह

समीक्षक डा० विजय द्विवेदी

प्रकाशक—आर्यकुमार सभा (रजि०), किंग्सवे दिल्ली-९

ऋषि बोधोत्सव १९८४। मूल्य १.७५, पृष्ठ ५०

आज का विश्व भौतिक विकास के मद में उन्मत्त होकर पैशाचिक नृत्य कर रहा है। सभी जीवों में अपने को सर्वश्रेष्ठ मानने वाला मानव भौतिकता के गहन आवर्त में हिंसक जीव जन्तुओं को भी लज्जित कर रहा है। इसका अन्त कहा होगा, यह भी बताना बड़ा कठिन है। परन्तु इतना निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि आज की सर्वव्यापी परिस्थितियाँ कल्याणी वेदवाणी का अनुसरण न करने के कारण ही पैदा हुई हैं। वैदिक चिन्तन का अभाव और पश्चिमी विचारधारा का प्रभाव—इन दोनों का सम्मिलित स्वभाव आज के मानव समाज को एक ऐसे पड़ाव पर ले आया है जहाँ ठहराव नहीं केवल बहाव है। बहाव यानि विनाश। इन से बचाव का एक ही रास्ता है—वेद का पढ़ना पढ़ाना सुनना और सुनाना, क्योंकि वेद ही सब सत्य विद्याओं का और मानव जीवन में पैदा होने वाली समस्याओं के समाधान का आदि स्रोत है।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रो० प्रतापसिंह ने अपने चार लेखों में वैदिक-चिन्तन को सरल, स्पष्ट एव वैज्ञानिक भाषाशैली में निरूपित किया है। 'विषय-प्रवेश' में बताया गया है कि जीवन और जगत् में द्वन्द्व की शाश्वत स्थिति होने के बावजूद भी 'चिन्तन' के स्तर पर एकरूपता 'छिपी है।' बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय ही विश्व चिन्तन का लक्ष्य व ध्येय है। 'प्रकृति और सृष्टि' अध्याय में विभिन्न दर्शनों के सन्दर्भ से प्रकृति एव सृष्टि के रहस्य को समझने के लिए लेखक ने वैज्ञानिक पद्धति का सहारा लिया है। इसी तरह 'आत्मा-परमात्मा, ज—'जीवन दर्शन तथा संग्राम' कर्म—सकाम-निष्काम' अध्यायों में इन विषयों पर संक्षेप में किन्तु गहराई के साथ विचार किया गया है। लेखक की विवेचना शैली जितनी रोचक है तर्क भी उतना ही तत्त्वपूर्ण है। यह पुस्तिका गहन अध्येताओं के लिए जितनी उपयोगी है, उतनी ही सामान्य के लिए भी। केवल पुस्तिका का शिरोनामा एक संशय पैदा करता है कि क्या वैदिक चिंतन में कुछ ऐसा भी है जो वैज्ञानिक नहीं है?

प्रेषक—विजय द्विवेदी
महाराजा पूर्णचन्द महाविद्यालय बारीपदा (७५७००१)
(उड़ीसा)

नभ के तारे

—डा० रमेशकुमार लौ'

समीक्षा— डा० विजय द्विवेदी

प्रकाशक—आर्यकुमार सभा किंग्सवे दिल्ली। प्र० लिपि—सातवा संस्करण २०४१ विक्रमी। मूल्य १.५०, पृ० सं० ५०

आलोच्य कृति बाल साहित्य का विषय है इसमें शिशुओं की अत्यधिक उन्नति से सम्बन्धित तथा उन्हें चरित्र बल से पुष्ट होने की प्रेरणा देने वाली अठारह रचनाएँ हैं। इन रचनाओं के कुछ कथानायक हमारे इतिहास के महान् हैं तो कुछ ऐसे लोग भी हैं जो अपेक्षाकृत कम जाने माने जाते है। इस में वस्तुत नाम को ही नहीं काम को महत्त्व दिया गया है। लेखक का उद्देश्य 'यही रहा है कि इसे यथासम्भव रोचक व उपयोगी बनाकर अपने कुमार भाइयों के हाथ में दिया जाए। कहने की जरूरत नहीं है कि लेखक अपने ध्येय में पूरी तरह सफल रहा है।

'नभ के तारे' में उन महामनाओं के जीवन प्रसंग हैं जिन्होंने बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय के महत् आदर्शों के सामने स्वार्थ और आत्म सुख को हय माना तथा कर्तव्य की बलिवेदी पर बड़ी बड़ी आहुतियाँ दी। अपने त्याग बलिदान के कारण ही वे तिमिराच्छन्न आधुनिकता के नभ में ज्योतिष्मान् सितारों की तरह जगमगा रहे हैं। इनमें अहिल्याबाई महात्मा गांधी वीर दुर्गादास, स्वामी राम महामना मालवीय स्वामी दयानन्द सरस्वती भीष्म पितामह प० लेखराम भगवान् श्रीराम लाजपतराय, गुरु तेग बहादुर नेता जी सुभाष बोस आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

भारत भूमि सदा से वीर प्रसविनी रही है। यहाँ काल के हरेक खण्ड में सत्य-निष्ठ त्यागी, तपी परोपकारी सेवाव्रती समाज सुधारक और युगान्तकारी महामानव पैदा हुए हैं। इन महाजनों द्वारा दिखाए गए पथ को भुलाकर आज हमारे किशोर इस ओर भाग रहे हैं जहा भौतिक सुख सहजता से मिल सकें। अभिभावक भी इसी नाम की प्रेरणा दे रहे हैं। हमारी शिक्षा संस्थाएं आदमी को आदमी बनाने की जगह हृदयहीन वैज्ञानिक मानव निर्मित करने की फैक्टरियां बन गई है। साहित्य अपनी तमाम विकृतियों के साथ आदर्शों का महा श्मशान तथा धर्म धधा बन गया है। भ्रष्टाचार को राजनैतिक प्रशासन ने आज के जीवन का अपरिहार्य अग मान लिया है। ऐसी स्थिति में किशोरों को चरित्रबल कहाँ से मिले? श्री 'लौ' ने इस छोटी सी पुस्तिका के जरिए भावी पीढ़ी को आत्मबल से दीप्त करने का चरित्र निर्माण करने का सराहनीय प्रयास किया है। पुस्तिका के सात संस्करण इसकी लोकप्रियता के प्रमाण हैं। कामना है इसके और संस्करण हो, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इसके प्रकाश में देश जाति हित अपने जीवन के ध्येय की सही पहिचान कर सकें। कृति की भाषा सरल है। इसे बच्चे और कम पढ़े लिखे व्यक्ति भी आसानी से पढ़ और समझ सकते हैं।

प्रेषक—विजय द्विवेदी
महाराजा पूर्णचन्द्र महाविद्यालय बारीपदा-७५७००१, (उड़ीसा)

अपराधी अधिकारियों को फांसी हो

जासूसी काण्ड के अभियुक्त अधिकारियों ने देश के साथ जो विश्वासघात किया है, वह एक अमिट कलंक है। भारत जैसे देश में, जहा पर राष्ट्र के लिए सर्वस्व समर्पित करने वाले सपूत पैदा होते रहे हो, इस प्रकार का घिनौना कृत्य सम्पूर्ण दृष्टि से अक्षम्य है। इस जासूसी काण्ड ने यह प्रमाणित कर दिया है कि हमारे देश में प्रशासन तंत्र तथा गुप्तचर विभाग कितना अक्षम व अकर्मण्य हैं। इस काण्ड के सबंध में किसी भी प्रकार की ढिलाई प्रदर्शित करना, भविष्य में राष्ट्रघाती हो सकता है। इस काण्ड में जितने भी अभियुक्त गिरफ्तार किए गए हैं उन्हें खुले आम फांसी की सजा दी जाये और उन समस्त स्रोतों का पता लगाया जाये जिनके माध्यम से यह घृणित कार्य होता रहा है।

राधेश्याम आर्य, मुसाफिर खाना, सुल्तानपुर, उ० प्र०

आर्यसमाज किदवई नगर, नई दिल्ली की अपील

इस मन्दिर की स्थापना १९६० में हुई थी उस समय एक अस्थायी भवन बना लिया गया था। अब इसका भवन बहुत ही जीर्ण शीर्ण हो गया है। सत्संगीजनों को भवन में बैठने में कठिनाई होती है वर्षाकाल में छत टपकती रहती है। अतः हम भवन निर्माण के लिए आपका सहयोग चाहते हैं। इसके साथ हमारी योजना है—

(१) दलित वर्ग के लिए नि:शुल्क प्रौढ़शिक्षा तथा सन्ध्याकाल में दलित वर्ग के शिशुओं को नि:शुल्क शिक्षण।

(२) धर्मार्थ होम्योपैथिक डिस्पेन्सरी।

(३) धर्मार्थ पुस्तकालय एव वाचनालय संचालन।

इस समस्त पुण्य के महान् कार्य में आप सब भाई बहनों का तन मन धन से सहयोग अपेक्षित है। दिल खोलकर अधिक से अधिक दान दें। अपना मनीआर्डर, चैक, ड्राफ्ट इस पते पर भेजें।

ए-२७४, आर्यसमाज किदवई नगर, नई दिल्ली-२३
आभार सहित डा० मदनलाल—मन्त्री

शुभ विवाह सम्पन्न

दिल्ली। सार्वदेशिक सभा में ऋग्वेद के अंग्रेजी भाष्य के सम्पादक एव पत्रकार गुरुकुल ब्रह्मदत्त स्नातक एम० ए० की सुपुत्री दीपिका आत्रेय एम० एस-सी० का शुभ विवाह जम्मू निवासी श्री राममूर्ति शर्मा के सुपुत्र डा० रवीन्द्र शर्मा एम० बी० बी० एस० के साथ १० फरवरी ८५ को वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् स्वागत एव प्रीतिभोज में उपस्थित थे। जम्मू में सम्बन्ध वैदिक के अवसर पर प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० योगेन्द्रपाल शास्त्री ने यज्ञ एव सम्पन्न कराई।

निवेदक—
रघुनाथ प्रसाद पाठक

वार्षिकोत्सव

महर्षि दयानन्दार्य गुरुकुल कृष्णपुर मझना [फर्रुखाबाद] उ० प्र० के पावन प्रांगण में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह का आयोजन १६-१७-१८ मार्च ८५ को बड़े ही हर्षोल्लास के साथ किया जा रहा है। जिसमें आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् सन्यासी महोपदेशक पधार रहे हैं।

निवेदक
आर्य चन्द्रदेव शास्त्री कुलपति

आर्य जगत् के समाचार

आर्य आदर्श विद्यालय, आदर्श नगर, दिल्ली मे ऋषि बोधोत्सव तथा भाषण प्रतियोगिता

आर्य आदर्श विद्यालय, आदर्श नगर, दिल्ली मे ऋषिबोधोत्सव तथा भाषण प्रतियोगिता' आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान मे तथा स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की तीन प्रेरणादायक घटनाए विषय पर प्राथमिक कक्षा के छात्रो की भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। कार्यक्रम रोचक, प्रेरणादायक तथा शिक्षाप्रद रहा। स्वामी जी ने बच्चो को आशीर्वाद दिया तथा पुरस्कार दिए। दीपिका बत्रा प्रथम तथा नीतू आहूजा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किए। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द का सारा जीवन घटनाओ से भरा पडा है। हमे उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। यह बोधोत्सव हमे भी बोध कराने आया है कि हम भी कुरीतियो बुराइयो, तथा बुरे विचारो से समझौता न करे। सदा दृढता से उनका मुकाबला करे।'

सयोजक—महावीर बत्रा

दिल्ली सभा द्वारा वेद प्रचार

मैं ११-२-८५ को हयात रीजेन्सी किसी काय से करीब १२-३० बजे दोपहर गया था। वहा से जब मैं आने लगा तो उसके पीछे सरकारी कार्यालय है जहाँ पर आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का प्रचार वाहन नजर पडा। वहा पर श्री प० सत्यदेव जी स्नातक के भजन व उपदेश तथा श्रद्धेय स्वामी स्वरूपानन्दजी के प्रचार का लोगो पर काफी प्रभाव पडा। वहा दैनिक प्रचार की आवश्यकता है। क्योकि वहाँ पर कई राजकीय कार्यालय है वोट क्लब से अधिक प्रभावी प्रचार रहेगा।

देवेन्द्रकुमार शास्त्री आर्यसमाज मन्दिर, रमेश नगर

कृषि अनुसधान सेवा परीक्षा मे हिन्दी माध्यम

कृषि अनुसधान सेवा परीक्षा मे कुछ समय पहले तक अग्रेजी माध्यम ही था। सन् १९८५ मे होने वाली परीक्षा मे सभी विषयो के प्रश्नपत्रो के उत्तर हिन्दी मे देने की छूट रहेगी। यह परिवर्तन सभी दृष्टि से स्वागत योग्य है। हिन्दी-भाषी क्षेत्रो के विद्यार्थियो को इस सुविधा का पूरा लाभ उठाना चाहिए। वे हिन्दी मे अपने विचार बहुत अच्छी प्रकार व्यक्त कर पाएगे तथा उनकी सफलता के अवसर पहले की अपेक्षा अधिक अच्छे रहगे।

हिन्दी-भाषी क्षेत्रो के कृषि विश्वविद्यालयो को भी चाहिए कि वे अपनी सभी कक्षाओ मे विभिन्न कृषि विषय हिन्दी माध्यम से भी पढाए जाने की व्यवस्था करें। इस समय विद्यार्थियो का काफी समय अग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त करने मे लग जाता है। हिन्दी माध्यम होने से उस समय का काफी भाग बच सकेगा जिसे वे कृषि विषयो मे पारगत होने मे लगा सकेंगे। जहा-जहा उच्च स्तर की कृषि शिक्षा हिन्दी माध्यम से देने की व्यवस्था है उसकी सूचना कृपया "महामत्री हिन्दी व्यवहार सगठन ई-९, २३ बसत विहार नई दिल्ली ११००५७' को देने का कष्ट करे। जिन कृषि शिक्षण सस्थानो मे यह सुविधा अभी नही है, वहा के अधिकारियो से सम्पर्क करके उसकी व्यवस्था कराने के लिए सभी को प्रयत्न करना चाहिए।

हरिबाबू कसल
महामत्री, हिन्दी व्यवहार सगठन,
डी-३५, साउथ एक्सटेशन, भाग एक, नई दिल्ली-११००४९

आर्यसमाज मन्दिर सैजपुर

आर्यसमाज मन्दिर, सैजपुर बोघा, अहमदाबाद के वार्षिक चुनावो मे प्रधान श्री गोविन्दराम सदोरोमल उपप्रधान श्री गुरदासमल छागाराम, मत्री श्री हरीलाल गुरदासमल उपमत्री श्री नेणाराम मालहूमल, कोषाध्यक्ष श्री दौलतराम जी व निरीक्षक श्री लक्ष्मीचन्द मोहनलाल जी सर्वानुमति से चुने गए।

वार्षिकोत्सव

'आर्य कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली का वार्षिक महोत्सव दिनाक ९-१० मार्च १९८५ शनिवार, रविवार को कुल भूमि मे समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। इस शुभ अवसर पर अनेक सन्यासी, महात्मा विद्वान उपदेशक भजनीक तथा माननीय राष्ट्रीय नेता पधार कर उपदेशामृत पान करायेगे।'

निवेदिका—आचार्या कन्या गुरुकुल नरेला, दिल्ली

आवश्यक सूचना

वैदिक यति मडल की ओर से वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद मे १६ मार्च से ३१ मार्च १९८५ तक स्वाध्याय संस्कृत शिक्षण शिविर लगाया जायेगा। अत सब इच्छुक मान्य यतियों (सन्यासी, नैष्ठिक ब्रह्मचारी तथा वानप्रस्थियो) से प्रार्थना है कि समय पर पहुच कर अवश्य लाभ उठावें। सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि आदि पुस्तकें कापी लेखनी तथा ऋतु अनुसार वस्त्र अपने साथ अवश्य लावें। भोजन का प्रबन्ध आश्रम की ओर से होगा।

निवेदक
अध्यक्ष स्वामी सर्वानन्द
वैदिक यति मडल

ऋषि बोधोत्सव शिवरात्रि

आर्यसमाज अड्डा होशियारपुर, श्रद्धानन्द बाजार, जालन्धर

आर्यसमाज अड्डा होशियारपुर (स्वामी श्रद्धानन्द बाजार, जालन्धर मे १७ फरवरी १९८५, प्रात ८ बजे से १२ बजे तक ऋषिबोधोत्सव शिवरात्री पर्व के उपलक्ष्य मे बडे समारोह से मनाया गया। सन्ध्या प्रार्थना के पश्चात् स्वस्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। स० र० दोआबा हायर सै० स्कूल के तथा दोआबा माडल गर्ल्ज हाई स्कूल के अध्यापक तथा छात्र एव अन्य धार्मिक विचारधारा के जन सैकडो की सख्या मे सम्मिलित हुए यज्ञ के पश्चात् स्कूल के छात्र तथा छात्राओ तथा प्रिंसिपल अमृतलाल जी खन्ना, योगेन्द्रपाल सेठ प्रधान समाज श्री ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट, श्री प्रो० आनन्दसागर जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को बडी भावभीनी श्रद्धाञ्जली भेंट की।

महर्षि दयानन्द वेद वेदाङ्ग गुरुकुल का द्वितीय वार्षिकोत्सव

महर्षि दयानन्द वेद वेदाङ्ग गुरुकुल चौमा का द्वितीय वार्षिकोत्सव प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर पावन वेद पारायण यज्ञ का माघ शुक्ला ११ रविवार, सृष्टि सवत् १९६०८५३०८८ दयानन्दाब्द १६० को श्री जयदेव जी वकील के यजमानत्व मे शुभारम्भ हुआ एव यज्ञ का समापन माघ शुक्ला १५ मगलवार तदनुसार ता० ५-२-८५ के यजमान श्री लक्ष्मीनारायण जी गोस्वामी दम्पती के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। प्रथम दिवस के ब्रह्मा और वक्ता सार्वदेशिक सभा के उपमत्री एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० राजगुरु शर्मा थे। आपने गुरुकुल की भूमि पर से अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही कर्त्ता अधिकारियो को धन्यवाद दिया। पुन इस भूमि पर किसी को भी नही बसाया जाये इस आदेश के साथ तन मन धन से सहयोग देकर गुरुकुल की सर्वांगीण उन्नति की प्रतिज्ञा ली। द्वितीय व अन्तिम दिन के ब्रह्मा गुरुकुल के अधिष्ठाता महात्मा आत्मदेव जी वानप्रस्थ कुशल वेदवक्ता उज्जैन निवासी थे। उनके सान्निध्य मे निम्नांकित दो प्रस्ताव पारित किये गये तथा एक महिला और १५ युवकों ने यज्ञोपवीत धारण करके दुर्व्यसन छोडने की प्रतिज्ञा ली।

१—महर्षि दयानन्द वेद वेदाङ्ग गुरुकुल धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय चलाया जाय सर्वप्रथम चौमा ग्राम मे चल रहे शासकीय आयुर्वेदिक औषधालय से वर्तमान मे बने हुए भवन मे सहयोग लिया जाय तत्पश्चात् आधुनिक उपकरणो से युक्त औषधालय भवन हेतु एक लाख की राशि प्राप्त करने हेतु समिति आगर कानड बडोदिया शाजापुर, सारगपुर, शुजालपुर उज्जैन इन्दौर, भोपाल के कार्यकर्त्ताओ की गठित की जाये। आयुर्वेदभवन एव श्री स्वामी श्रद्धानन्द द्वार का शिलान्यास करवाने हेतु केन्द्र शासन तथा मध्य भारत शासन के वरिष्ठ अधिकारी सार्वदेशिक सभा के प्रधान एव किसी श्रेष्ठ दानदाता से सम्पर्क स्थापित किया जाय। इस कार्य हेतु श्री प० राजगुरु जी शर्मा महू श्री डा० मोहनलाल जी शर्मा नवीन प्र० सम्पादक लालमाटी आगर तथा श्री सेकमल जी जैन सम्पादक आगर को नियुक्त किया जाये।

२—इस क्षेत्र को ४० वर्ष पूर्व आर्यसमाज ने ईसाइयो के चगुल से मुक्त कराया था। पश्चात् कार्य सुषुप्त अवस्था मे हो गया था। पुन इस क्षेत्र को चरित्र एव नैतिक शिक्षा देने हेतु धार्मिक शिक्षा का कोर्स अजमेर से बुलाकर प्रथम छ माह में १२५ युवक को प्रौढ शिक्षा में दीक्षित किया जायेगा। इस कार्य हेतु श्री कालीराम जी अलख, श्री शिवसिंह जी आर्य कानड श्री रमेशचन्द्र जी शर्मा इकलेरा, श्री लक्ष्मीनारायण जी गोस्वामी तथा श्री गोकुलप्रसाद जी पेन्टर चित्रकार बडोदिया, श्री रमेशचन्द्र जी समिति का गठन करके शीघ्र ही कार्य का सचालन करें। पश्चात् हर्षोल्लास के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

अधिष्ठाता
स्वामी आत्मानन्द सरस्वती

आर्यसन्देश विशेषांक

२४ मार्च आर्यसमाज स्थापना दिवस पर आर्यसन्देश का हम स्मरणीय सग्रहणीय विशेषांक प्रकाशित कर रहे है। विद्वान् लेखक अपने लेख निम्नाकित विषयो पर भेजने की कृपा करें।

१ स्वामी दयानन्द ने आध्यात्मिक जगत् को महान् देन दी है।
२ महर्षि दयानन्द आधुनिक तकनीकी के पोषक एव वैज्ञानिक थे।
३ भारतीय समाज के जागरण मे आर्यसमाज का योगदान।
४ आर्यसमाज क्या चाहता है?
५ हिन्दी भाषा के उत्थान मे आयसमाज की भूमिका।
६ वैदिक दार्शनिकत्व।
७ ऋषियो और योगियो की तेजस्वी परम्परा मे दयानन्द।

लेख भेजने का पता—

सम्पादक—आर्य सन्देश साप्ताहिक
१५, हनुमान् रोड नई दिल्ली-११०००१

पाप-निवारण

(पृष्ठ २ का शेष)

अंश है उस सब को बहा ले जाओ। यदि मैं किसी के प्रति कोई द्रोह करूँ, कोई निन्दनीय वचन बोलूँ या असत्य वचन कहू, उस सब को दूर कर दो।

कुंए और तालाब के जल मे वह शक्ति कहाँ है, जो दुरति द्रोह आदि को धो सके। पश्चात्ताप का जल ही यह कार्य कर सकता है।

३ तप—पाप से बचने का तीसरा उपाय तप है। वेद मे कहा है—

विश्वमारुहत् तपसा तपस्वी।
—अथर्व० १३। २। २५

तपस्वी तप से ऊपर उठता है उन्नति करता है।

पाप से बचने का उपाय यह है कि मनुष्य धर्म कार्यों में लगा रहे। तप क्या है? तप का अर्थ अपने चारो ओर अग्नि जलाकर बैठना नही है। एक पांव पर खड़े हो जाना भी तप नही है। तप का अर्थ है द्वन्द्व सहन। सुख-दुःख भूख-प्यास, गर्मी सर्दी, हानि-लाभ जीवन-मरण—इन में सम रहने का नाम तप है। मनुष्य पाप कब करता है। दुःख से दुःखित होकर और सुख मे अभिमान से फूलकर मनुष्य पाप करता है। द्वन्द्व सहन से मनुष्य पापों से बच जाता है।

४ वेदाध्ययन—वेद का स्वाध्याय मनुष्य को पापो से बचाता है। वेद के सारे उपदेश मनुष्य को अनिष्ट से बचने और इष्ट की प्राप्ति के लिए उपदेश देते हैं। वेदो का अध्ययन मनुष्य को पाप और अन्याय के मार्ग से हटाकर अभ्युदय इहलौकिक उन्नति और निश्रेयस्-मोक्ष के मार्ग पर चलने के लिए हृदय मे उत्साह और साहस भर देते हैं।

मनु महाराज कहते हैं—

वेदाभ्यासोऽन्वहं शक्त्या
महायज्ञ क्रिया क्षमा।
नाशयन्त्याशु पापानि
महापातकजान्यपि ॥
—मनु० ११। २४५

प्रतिदिन वेदों का स्वाध्याय, पञ्च-महायज्ञो का अनुष्ठान और क्षमा—सहनशीलता—ये कर्म महापातकों से उत्पन्न होने वाले पापो को भी शीघ्र नष्ट कर देते हैं फिर साधारण पापो की तो बात ही क्या है अत इनका आचरण यथाशक्ति करते रहना चाहिए।

५ दान—दान देना पापो से बचने का पाचवां उपाय है। दीनो के दुःख दूर करने और याचको की आशा पूर्ण करने मे धन का व्यय करना अन्तःकरण को निर्मल एव पवित्र बनाता है। पात्र को दिया गया दान व्यर्थ नही है अपितु लाभ है।

किसी कवि ने क्या सुन्दर कहा है—
भिक्षका नैव भिक्षन्ते बोधयन्ति गृहे गृहे।
दीयतां दीयतां नित्यमदातु फलमीदृशम् ॥

भिक्षुक मागते नही हैं अपितु घर घर जाकर लोगो को बोध प्रदान करते हैं। वे कहते हैं नित्य दान दो दान न देने पर तुम्हारा दशा हमारे जैसी हो जाएगी।

दीन-दुःखियो को दान दो। आवश्यकता से अधिक धन जब दीन और दुखियो की सेवा मे लग जाएगा तब मनुष्य मद्य-मास आदि के दुराचार से बच जाएगा।

निबन्ध प्रतियोगिता

स्वर्गीय श्री लालमन आर्य की पुण्य स्मृति में एक अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। निबंध के विषय निम्नांकित हैं।

१- महर्षि दयानन्द के सपनो का भारत

२- वर्तमान चारित्रिक संकट, समस्याओं का समाधान

किसी एक विषय में हिन्दी में २ हजार शब्दों में लिखे गये निबन्ध की तीन प्रतियां भेजना आवश्यक है। निबन्ध लिखने की अन्तिम तिथि २० मार्च, १९८५ है।

प्रथम पुरस्कार १००० रुपये, द्वितीय ५०० रुपये, तृतीय ३०० रुपये ५ सान्त्वना पुरस्कार प्रत्येक को १०० रुपये।

प्रतिष्ठित विद्वानों का एक निर्णायक मण्डल निबन्धों का मूल्यांकन करेगा, जिस का निर्णय सर्वमान्य होगा।

निबन्ध भेजने का पता—

श्री तिलकराज गुप्त
संयोजक—श्री लालमन आर्य, निबंध प्रतियोगिता
प्रधानाचार्य—हंसराज माडल स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वर्ष ८ ग्रक १६ रविवार १० मार्च १९८५ ग्रार्य सवत्सर १९६० ५३०८४ फाल्गुन २०४१ दयानन्दाब्द—१६०

अमर शहीद पं० लेखराम ने आत्मबल से इस्लाम और ईसाइयत की आंधी को रोका

—सूर्यदेव

ग्रार्यसमाज शालीमार बाग के वार्षिकोत्सव पर बोलते हुए दिल्ली ग्रार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने यह उद्गार व्यक्त किये। उन्होने ग्रार्य जनता को ग्राह्वान किया कि हम ग्रमर शहीद लेखराम के बताये हुए मार्ग पर चलते हुए ग्रार्यसमाज की दुन्दुभी बजाते हुए संसार को ग्रार्य बनाग्रो, इस नारे को क्रियान्वित करे। स्वामी श्रद्धानन्द ने पं० लेखराम की हत्या पर कहा था—शहीद के खून की एक एक बूद से एक एक वीर उत्पन्न होगा जो ग्रार्य धर्म की रक्षा व प्रसार मे ग्रपना जीवन लगा देगा। हम सब को चाहिए कि शहीद की चिता के समीप खड होकर प्रतिज्ञा करे कि ग्रापस की फूट मिटाकर सब से प्रेम पूर्वक मिलकर कार्य करेगे तथा शहीद के ग्रनुसार लेखन कार्य को निरन्तर जारी रखगे।

ग्रार्यसमाज शालीमार बाग मे पं० लेखराम पुस्तकालय का उद्घाटन ग्रार्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय जी ने किया तथा ११००/ रु० का पुस्तकालय हेतु सात्त्विक दान दिया।

इस ग्रवसर पर ग्रायोजित वेद सम्मेलन मे श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, प्रो० रतनसिह, डा० वाचस्पति उपाध्याय, प० प्रमचन्द, श्रीधर तथा डा० ग्रानन्द प्रकाश ने वेदो की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए ग्राय जनता को उद्बोधित किया कि वे वेदानुसार ग्रपने जीवन को ढालें।

इस ग्रवसर पर स्वामी विद्यानन्द जी का उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा ग्रपनी पुस्तक तत्त्वमसि के लिए पुरस्कृत होने पर ग्रभिनन्दन किया गया। स्वामी जी ने ध्वजारोहण करते हुए ग्रो३म् ध्वज की पताका लहराते रहने के लिए ग्रार्य जनता से ग्रनुरोध किया कि वे वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए पूरी शक्ति से काम कर। २ फरवरी १९८५ को चून्नीलाल मेहता भाषण प्रतियोगिता ग्रायोजित की गई जिसमे क्षेत्रीय विद्यालयो के छात्र/छात्राग्रो ने भाग लिया। चल वैजयन्ती डी० ए० वी० स्कूल शालीमार बाग को प्रदान की गयी। मेहता परिवार ने सभी बच्चो को भारी पुरस्कार प्रदान किये। १ जनवरी १९८५ को श्रीमती ईश्वर देवी की ग्रध्यक्षता मे ग्रार्य महिला सम्मेलन सम्पन्न हुग्रा, इसमे श्रीमती प्रमशील महेन्द्र श्रीमती शकुन्तला दीक्षित ग्रौर डा० वर्मा ने महिलाग्रो के उत्थान के लिए ग्रपने विचार प्रस्तुत किए।

धार्मिक उन्माद का नमूना

इण्डोनेशिया के धर्मान्ध मुस्लिमो ने बोरोबुदुर के विशाल बौद्ध मन्दिर को बम विस्फोट से ध्वस्त कर दिया। ग्रनेक स्तूप कई विस्फोटो से टूट गये। विश्वप्रसिद्ध इस मन्दिर मे महात्मा बुद्ध के जीवन चित्रो के साथ रामायण की दर्शनीय कथा भी उत्कीर्ण है। इसका निर्माण ग्राठवी शताब्दी मे प्रसिद्ध राजा शैलेन्द्र के वशजो ने कराया था।

यह कारवाई धार्मिक उन्माद तथा मदान्धता से कही ग्रधिक भयकर ग्रौर मानव जाति के विरुद्ध है। स्मरणीय है दो वर्ष पूर्व सयुक्त राष्ट्र सघ ने शिक्षा, विज्ञान ग्रौर सास्कृतिक सगठन (यूनेस्को) ने लगभग ३० करोड रुपया व्यय कर इसका जीर्णोद्धार किया था।

श्रुति का गान करो

—उत्तम चन्द शरर

नक्षत्रों से ग्रालोकित यह नभ का ग्रागण
हरा भरा यह स्नेह सिक्त धरती का बाना
ऊषा का लाना सलज्ज स्मित ग्रधर बिम्ब पर
ग्ररुण सारथी का गुलाल चहुँ दिश बिखराना
रवि शशि की यह ग्रांख मिचोनी रैन दिवा की
घाटी की सरिता का बल खा खा इठलाना
सौरभ पूरित वर्ण वर्ण सुमनो के ग्रांचल
मलय पवन का ग्रात पथिक को धीर बधाना
किसी सहृदय कवि का है यह काव्य मनोरम
बादल के ग्रवगुण्ठन मे शशि का मुस्काना
देख काव्य कवि को जानो यदि जान सको रे।
उस के दिव्य गीतो का श्रुति मे गान करो रे।

ग्रार्यसमाज स्थापना दिवस

ग्रार्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान मे दिल्ली की समस्त ग्रार्य समाजों का सामूहिक विशाल कार्यक्रम २४ मार्च, १९८५ को दोपहर २ बजे ५ बजे तक विट्ठल भाई पटेल हाउस, रफी मार्ग नई दिल्ली के प्रागण मे समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। ग्रधिक से ग्रधिक सख्या मे पधारें।

निवेदक सूर्यदेव
महामन्त्री

शोक प्रस्ताव

दिल्ली ग्रार्य प्रतिनिधि सभा के समस्त ग्रधिकारी एवं कर्मचारी ग्रार्यसमाज शक्तिनगर, ग्रमृतसर के यशस्वी प्रधान श्री जगदीशराज जी के ग्राकस्मिक देहावसान पर गहरा दुःख एव शोक व्यक्त करते हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि वह दिवगत ग्रात्मा को सद्गति प्रदान करे ग्रौर उनके वियोग में सतप्त दुःखी पारिवारिक जनों को इस महान् दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—डा० धर्मपाल (महामन्त्री)

महात्मा हंसराज जन्म दिवस

ग्रार्य प्रादेशिक सभा दिल्ली की ग्रोर से हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी २१ ग्रप्रैल रविवार को त्यागमूर्ति हसराज जी का जन्म दिवस समारोह ९-३० बजे से १२-३० बजे तक तालकटोरा गार्डन के इण्डोर स्टेडियम मे समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। इस समारोह के ग्रध्यक्ष ग्रार्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् एव सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज होंगे। उक्त ग्रवसर पर समस्त ग्रार्यजन भारी सख्या मे पधारे।

डा० धर्मपाल—महामन्त्री, दिल्ली ग्रार्य प्रतिनिधि सभा

सम्पादक—यशपाल 'सुधांशु' एम० ए० व्यवस्थापक—डा० [illegible] प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

सत्संग वाटिका

ससार वास्तव मे ससार है। इसे व्यर्थ ही उदासीनो ने असार बता दिया। इस मे एक से एक सार पदार्थ भरे पड़े हैं। दिव्य रत्न दिव्य औषधियां अन्य अनेक अद्भुत चमत्कार दिखाने वाली जड़ी बूटियां और धातुएँ इसी संसार मे हैं। बिजली इसी ससार से निकली जो रात को दिन बना रही है और महीनो का काम मिनटो मे कर डालती है। ऐक्सरे (सूर्य की किरण विशेष) इसी ससार का चमत्कार है, जो शरीर के भीतर हड्डियो को प्रत्यक्ष दिखा देती है। सहस्रश रोगियो को इससे लाभ पहुंचता है। बिजली की चिकित्सा से भी रोगियो को अपार लाभ हुआ है। रेडियम जैसी धातु जिस पारस मणि ही कहना चाहिए इसी संसार की ही देन है। रेडियो यन्त्र कितना अद्भुत है जिसके कारण जहाजो मे बैठे बैठे समुद्र के वक्षस्थल पर ही स्थल-वासियो से बातचीत करिये गाने का रस लीजिये। एक देश के व्याख्यान दाता के व्याख्यान दूसरे दूसरे देश मे अपने कमरे मे बैठे बैठे सुनिए। हवाई जहाज मे, आकाश मे उड़ते-उड़ते भूमि वालो से बातचीत करते रहिए। यह सब चमत्कार इसी ससार मे से निकल पड़े। यूरोप का सब विज्ञान-वैभव इसी ससार मे तो पहल छिपा पड़ा था। वैज्ञानिक लोग इस ऐश्वर्य को कही स्वर्ग से तो नही माग लाये। इसी मिट्टी में से जल में से अग्नि वायु मे से, यह दिव्य चमत्कार प्रकट हो गए। केवल पुरुषार्थ का फल है। मेहनत की, जान लड़ाई बुद्धि को कष्ट दिया इन्द्रियो को थकाया जीवनों को गला दिया तपस्या मे दीवाने हो गए, तब यह दिव्य चमत्कार देखने को मिले। जब तप किया तो प्रकृति देवी की इन दिव्य विभूतियो को पाया। बिना तप किए क्या पानी मे से प्रकाश (विद्युत्) निकल सकता था। क्या यह बात समझ में आती थी कि पानी के गिरने मे भी एक गुप्त शक्ति है जिससे बिजली मिल सकती है? पर आज बम्बई नगर को यही पानी के झरनों से प्राप्त हुई बिजली प्रकाश प्रदान कर रही है। अनेक कल कारखान इसी की बदौलत चल रहे हैं। इस ससार मे अनेक सार गुप्त हैं। तप करो प्रकट होंगे। उद्यमहीन बैठा रहे कुछ नही पाएगा। एक उर्दू कवि कहता है —

हस्ती के शजर में अगर
ख्वाहिश है चमक जाओ।
कच्चे न रहो बल्कि
किसी रङ्ग में पक जाओ।

जिस प्रकार भौतिक ससार मे अनेक गुप्त सार थ जो प्रकट हो गए और अभी हैं, जिनकी प्राप्ति के लिए वैज्ञानिक तप कर रहे है ठीक इसी प्रकार आध्यात्मिक ससार मे भी अनेक गुप्त चमत्कार हैं, जिनकी धधली छाया आज मैस्मरेजिम, हिप्नाटिज्म, थाटरीडिंग, प्लैंचट पर रूहो को बुलाना आदि क्रियाओं मे दीख पड़ी है। परन्तु इन कार्यों मे अभी इनके कर्ता ही भ्रान्ति के शिकार हैं। इनसे ऊपर काम है योग, जिसके द्वारा आध्यात्मिक विभूतियो का दर्शन होता है। जब योग करता है तब —

उघरहिं विमल बिलोचन ही के।
मिटहिं दोष दुख भव-रजनी के॥

जीवन में तप का महत्त्व

—प० बिहारीलाल शास्त्री काव्यतीर्थ

पवित्र ते वितत ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वत ।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत्समाशत ॥

★

श्रुति तत्त्वज्ञ ब्रह्मनिष्ठ गुरु की सेवा रूप तप से, मन को एकाग्र कर अन्तर्जगत् की ओर ले जाने वाले अभ्यास रूप तप से इन्द्रियो द्वारा सदा गमन करने वाली मनोवृत्तियो को रोककर अन्तर्मुखी करने रूप तप से जब मनुष्य आभ्यन्तर दृष्टि को प्राप्त कर लेता है तब आध्यात्मिक विभूतियों के दर्शन पाता है। एक दो विभूतियो से ही यदि वह कृतकृत्य हो गया तब तो गया बीता, और यदि बराबर खोज करता चला गया और तप से न बिचला तो पूर्ण विभूति तक, परम ऐश्वर्य तक वहा तक कि जहा जाकर फिर फिर कुछ शेष न रहे, पहुँच जाएगा। वही ब्रह्म तत्त्व है। उसी के लिए आस्तिक जगत् इच्छुक है। उसी की स्तुति प्रार्थना मे धार्मिक ससार लीन है। ज्ञान अज्ञान युक्त किसी भी रीति से उसी की उपासना मे मतमतान्तरवादी बहे चले जा रहे हैं। अभिलाषा सबको है। नास्तिक भी निवृत्ति चाहता है पूर्णता का अभिलाषी है। हा उसके पाने का उपाय उसका और है। वह बालू में तेल ढूढ रहा है। उसे भी उसकी तलाश है। वह शान्त और परिवर्तनशील प्राकृत रूपो मे विराम चाहता है जो अनहोनी बात है। विरति तो एकरस अखण्ड तत्त्व मे ही हो सकती है यह तो केवल ब्रह्म ही है। वह अरूप है इन्द्रियातीत है वाचामगोचर है इसलिए नास्तिक कहता है कि वह नहीं है। जब प्रपात मे विद्युत् है आकाश मे ईथर व्याप्त है परन्तु विज्ञानशून्य स्थूलबुद्धि ग्रामीण कहता कि नही ऐसा नही है वैज्ञानिक तो प्रत्यक्ष कर चुका और उस तत्त्व को दिखा चुका है वह कैसे निषेध करे। इसी प्रकार ब्रह्मनिष्ठ ऋषियों ने ब्रह्म का साक्षात् किया और साक्षात्कार की योग्यता रखने वाले निर्मल हृदयो को, भाव रखने वालो को उसका प्रत्यक्ष कराया भी परन्तु अविद्योपहत नेत्रों के लिए तो दर्शन कराना कठिन ही था। काव्य मे रस है, सहृदयो को उसका अनुभव होता है परन्तु काव्य वासनारहित जनो को नही। इसी प्रकार पिंड-ब्रह्माण्ड सब मे रस रूप ब्रह्म (रसो वै स) समाया हुआ है परन्तु उस को बिना तप के नही चखा जा सकता। यही बात वेद भगवान् उपर्युक्त मन्त्र मे बताते हैं—

(ब्रह्मणस्पते) हे वेद के पति प्रभो (ते) आपका (पवित्र) पवित्र ब्रह्मानन्द (सर्वविततं) सब जगह फैला हुआ है। (प्रभुः) आप सबके स्वामी (गात्राणि) शरीरो मे (विश्वत) सब ओर (पर्येषि) व्यापक हो अर्थात् हमारे शरीर मे आप सब जगह व्यापक हैं घट-घट में आपका आनन्द समाया हुआ है परन्तु—

(अतप्ततनू) जिसने अपने शरीर को, मन को बुद्धि को योगाग्नि में नही तपाया और (आम) कच्चा है, अभ्यास की अग्नि में नहीं तपा है (न तदश्नुते) वह आपके उस पवित्र रस को नही चख सकता, (शृतास इद्वहन्त-स्तत्समाशत) ज्ञान तप योगाग्नि में जो पक गए हैं वे ही उसे धारण करते हुए अच्छी प्रकार चखते हैं। ब्रह्मानन्द पवित्र है, सर्वत्र फैला हुआ है, हमारे शरीर मे व्याप्त है पर हम उसे बिना तप के नही पा सकते। उपनिषद् कहती है तपसा चीयते ब्रह्म (मुण्डक) ब्रह्म तप से चुना जाता है। कबीर साहब भी कहते हैं—

हवस करे प्रिय मिलन की
और सुख चाहे अब।
पीर सहे बिन पद्मनी
पूत न लेत उछग॥

अर्थात् बिना कष्ट उठाए भगवान् से मिलना नही हो सकता। सूफी सरमद कहता है —

उम्रे बायद कि यार आयद ब किनार।
ईं दौलते सरमद हमा कसरा न दिहन्द।

अर्थात् ईश्वरीय सम्पत्ति हर किसी को नही मिल सकती। भगवान् के दर्शन पाने को बहुत समय चाहिए।

अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्। (गीता)

अनेक जन्म सिद्धि करनी होती है तब परमगति मिलती है। साराश यही है कि बिना तप किये भगवान् को नही पा सकते। परन्तु तप ज्ञानपूर्वक होना चाहिए। साधन वह जो साध्य तक पहुँचा दे। अगर साध्य तक नही पहुंचाता तो वह साधन व्यर्थ है और पहुँचने वाले में, यदि साध्य का लक्ष्य नही है, तब भी साधन व्यर्थ है। तप साधन है, ईश्वर प्राप्ति साध्य है इसलिए ईश्वर प्राप्ति को लक्ष्य करके तप किया जावे और तप की वही विधि हो जो ईश्वर प्राप्ति मे साधक हो अत ज्ञानपूर्वक ही तप होना चाहिए, एक मनुष्य चाहता है दूध लेना और सेवा करता है घोड़े की। उसके श्रम में कमी नहीं परन्तु यह साधन साध्य के लिए ठीक नहीं। साध्य (दूध की प्राप्ति) के लिए उसे गौ की सेवा करनी चाहिए। एक मजदूर भी शारीरिक श्रम करता है और एक पहलवान भी। पहलवान का लक्ष्य है अपने शारीरिक अवयवो को पुष्ट करना अत उसके अग पुष्ट और सुदृढ़ हो जाते है। मजदूर का लक्ष्य है मजदूरी पाना, अत मजदूरी पा सकता है। इसलिए तप की विधि और लक्ष्य शास्त्रानुसार होना चाहिए। भारत मे स्त्रिया और साधु लोग कायक्लेश तो बहुत उठाते हैं परन्तु उससे आत्मिक लाभ कुछ नही होता। कारण—विधि का ठीक न होना तप के वर्णन मे योग दर्शन भाष्यकार व्यास मुनि कहते हैं—तपो द्वन्द्वसहनम्, द्वन्द्व च जिघत्सा पिपासे, स्थानासने, काष्ठमौनाकारमौना च, व्रतानि चव यथायोग कृच्छ्चान्द्रायणसान्तपनादीनि।

भूख प्यास, स्थान, आसन, काष्ठ के समान मौन रहना, कृच्छ्चान्द्रायण सान्तपन आदि व्रत तप हैं। ●

आँखों का विशाल निःशुल्क शिविर

लाला दीवानचन्द जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में दीवानचन्द ट्रस्ट द्वारा दीवान चन्द नर्सिंग होम मद्रास होटल २ जैन मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१ मे निःशुल्क नेत्र शिविर लगाया जा रहा है। १५, १६, १७ मार्च को प्रात ८ बजे से रोगियो की जाच होगी। आपरेशन वाले रोगियों को उसी दिन दाखिल कर लिया जाएगा। भोजन दवाइयाँ, आपरेशन तथा चश्मे का व्यय ला० दीवानचन्द ट्रस्ट द्वारा किया जाएगा। कृपया अपने बिस्तर, भोजन के बर्तन साथ लायें।

निवेदक
दूरभाष ३४३३३६ अशोक मल्होत्रा

★ दयानन्द वचनामृत ★

मैंने आर्यसमाज का उद्यान लगाया है। इसमे मेरी अवस्था माली की सी है। पौधो मे खाद डालते समय राख और मिट्टी माली के सिर पर पड ही जाया करती है। मुझ पर राख और धूल चाहे जितना पडे, मुझे इसका कुछ भी ध्यान नही, परन्तु वाटिका हरी भरी बनी रहे, और निर्विघ्न फूले फले। □

मेरा उद्देश्य इस प्रकार लोगो को मिलाना है, सकल समुदायो को एकता मे लाना चाहता हू कि कोल भील से लेकर ब्राह्मण पर्यन्त सब मे एक ही जातीय जीवन की जाग्रति हो। चारो वर्णो के लोग एक दूसरे को अग अगी समझे। □

सम्पादकीय

ओ३म्

आर्य सन्देश

एक भारी षड्यंत्र

"भारत तरह तरह के झगडो से भर गया है, वह हताश दीन हीन है, उसमे मौत का काला साया मडराता नजर आ रहा है। हिन्दू धर्म ने हिन्दुओ मे द्वेष और अन्ध विश्वास सदा सदा के लिए भर दिया है। हिन्दुओ के लाखो देवता हैं उनकी कोई एक समान पूजा पद्धति नही है और वे धर्म के नाम पर हत्या करते है। भारत की ६६ करोड जनता को दु खो और कष्टो से मुक्ति पाने के लिए ईसा मसीह का अनुयायी बन जाना चाहिए।"

ये शब्द पढकर आपको कैसा लगा है? इस से भी कटु घृणित शब्द अमरिका के इवजलिकल सगठन ने ५ जनवरी को न्यूयार्क के अपने टेलीविजन प्रसारण मे कहे। दो घण्टे के प्रसारण मे भारत की बहुसख्यक जनता का जिस भद्दे रूप मे प्रस्तुत किया है, उससे न केवल हिन्दुओ का बल्कि सारे हिन्दू धर्म का अपमान हुआ है, अपितु यह सारे भारत देश का अपमान है।

ऐतिहासिक दृष्टि से यदि देखा जाये, दुनिया मे युद्धो का घृणित सूत्रपात ईसाइयत से ही हुआ है। जितना अन्धविश्वास बाइबिल और ईसाइयत मे है इतना शायद कही हो। ईसाइयो ने जितना खून अपने ही भाइयो (ईसाई) का बहाया है उतना उन्होने दूसरे का नही बहाया। जितने सत्यकथन करने वाले, मार्टिन, लूथर या वैज्ञानिक गलीलियो, ब्रूनो आदि अनगिनत लोगो को सतापित किया और मृत्यु के गाल मे पहुचाया उतना पाप शायद ही किसी मजहब ने कमाया हो। हमारी दृष्टि निन्दा करने की नहीं है, हमारी सस्कृति तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की सस्कृति है, जहा सारी धरती के दु खो को अपना दु ख समझा जाता है। हमारी पावन वेद ऋचा कहती है—

मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षामहे।

समस्त प्राणिमात्र को हम मित्र की दृष्टि से देखे। सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु। सब दिशाए हमारी मित्र हो जाय। हमारी आर्य सस्कृति मे तो ईसाई बन, मुसलमान बन, हिन्दू बन का उपदेश नही है, यहा तो कहा गया है—मनुर्भव। मनुष्य बन, इन्सानियत सीख। इससे बडा धर्म और क्या हो सकता है।

इवेंजलिकल सगठन ने अपने प्रसारण मे धन की अपील भी की है जो ईसाई मिशन के धर्म परिवर्तन के काम आये। और आप जानते ही हैं यह पैसा भारत मे ईसाईकरण के लिए प्रयोग किया ही जा रहा है। इस षड्यन्त्र से नागालैण्ड और मिजोरम, गोवा तो ईसाईयत के चगुल मे आ ही गया है। अब उनका लक्ष्य मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय तथा झारखण्ड का क्षेत्र मुख्य है।

अगर भारत सरकार ने तुरन्त ही कोई विशेष कदम नहीं उठाया तो भारत के शत्रुओ के नापाक इरादे जरूर सफल हो जायगे।

भारत सरकार को चाहिए, आदिवासी, वनवासी, गिरिजन सेवा तथा शिक्षा के नाम पर जो ईसाई सगठनों को करोडो रुपया अनुदान दिया जाता है वह तुरन्त बन्द कर दिया जाये तथा इस प्रकार के प्रसारणो का विरोध किया जाये। ●

पब्लिक स्कूलों की संस्कृति

भारतीय परिवेश की उपजाऊ भूमि मे पब्लिक स्कूलो का विकराल वृक्ष दिनोदिन बढता जा रहा है। इस पौधे का बीज अग्रेजो द्वारा बोया गया, अग्रेजो के मानसपुत्र तथाकथित उच्चवर्ग द्वारा पोषा गया। आज इस वृक्ष के कुफल भारतीय सस्कृति पर गिरकर सडाध पैदा कर रहे है। कान्वेन्ट स्कूलो मे बच्चो का पढाना फैशन नही, मजबूरी सा होता जा रहा है। मेरे एक परिचित की सुपुत्री का सम्बन्ध एक सम्भ्रान्त परिवार से होने की बात चली, लडके वालो ने साफ-साफ कहा—"देखो जी लडका कान्वेंट मे पढा है, इतने हजार रुपये पढाई मे व्यय हुए हैं लडकी भी पब्लिक स्कूल की पढी होनी चाहिए।" जहा विवाह सम्बन्धो मे पब्लिक स्कूल से पढे वर वधू को बढावा दिया जाता है वहा नौकरी मे तथा समाज मे पढे-लिखे व्यक्ति को सभ्य कहलाने का भी अधिकार मिलता है।

इगलण्ड मे इटो, हैरो, विन्चेस्टर, रग्बी आदि लगभग एक दर्जन ऐसे स्कूल हैं जो तथाकथित उत्तम शिक्षा और सभ्यता के जनक कहलाते है। ये स्कूल बेहद खर्चीले तथा अफसरशाही के लिए सुरक्षित बने हुए हैं।

भारत मे भी अग्रेजो ने यही श्रृ खला प्रारम्भ की। पहले इनमे राजवश के सपूत प्रविष्ट हुआ करते थे, उसके बाद ये व्यापारी वर्ग के अधिक आय वाले व्यक्तियो के लिए सुरक्षित हो गये। आज भारत मे ख्याति प्राप्त ये स्कूल सट जेवियर (कलकत्ता), सेंट पाल्ज (दार्जिलिग) ला मार्टिनरी, (लखनऊ) विशप काटन (शिमला), लारेन्स स्कूल इनमे बडे-बडे राजनेता, अभिनेता करोडपतियो के बच्चे शिक्षा पा रहे हैं। इन पब्लिक स्कूलो मे बच्चो को प्रवेश दिलाना भी किला जीतना है। भारत भर मे जितने भी विख्यात पब्लिक स्कूल हैं, अधिकाश ईसाइयो के द्वारा ही सचालित हैं और इनमे पढने वाले छात्र अपनी सस्कृति अपना धर्म अपने महापुरुष राम, कृष्ण आदि तथा अपने पर्व त्यौहार भूलते जा रहे हैं। और एक दिन ऐसा आयेगा जब मैकाले की नीति पूर्णत सिद्ध हो जायेगी। उसके स्वप्न के अनुसार ये भारतीय तन से भारतीय होगे पर मन से पूर्ण ईसाई हो चुकेगे। ईसाइयो ने अपनी प्रचार योजना मे मूलत दो लक्ष्य रखे हैं, शिक्षा पर अधिकार तथा अस्पतालो का प्रसार। आज उनकी यह योजना मूर्तरूप धारण कर चुकी है। अच्छे अस्पताल, अच्छे स्कूल सब ईसाइयो के हाथ मे हैं, इनके माध्यम से ही ये ईसाईकरण मे लगे हैं। भारत सरकार को इस समस्या को समझते हुए इन सबका राष्ट्रीयकरण कर लेना चाहिए। शिक्षा क्षेत्र मे ऊँच नीच का भेद मिटाकर देश के भावी कर्णधारो का भविष्य उज्ज्वल करना चाहिए।

आर्यसमाज की कार्य योजना ईसाई, मुस्लिम तत्त्वो के बढते खतरनाक पजो से अपनी सस्कृति और सभ्यता को बचाना है। देश मे अराष्ट्रीय तत्त्व बढते जा रहे हैं, इसका एक कारण यह भी है कि हम सजग नही हैं। स्वामी दयानन्द ने जिस शिक्षा पद्धति को ससार के सामने रखा वह गौरवपूर्ण पद्धति है। उसके अपनाने के लिए हमे भरसक प्रयत्न करना चाहिए। महात्मा मुन्शीराम के सामने जब यह चुनौती आयी, घर मे अपनी ही बच्ची को जब यह गाते सुना—ईसा-ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल। ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया, ईसा मेरा राम रमैया। उन्हे दिखायी दिया राम कृष्ण की सस्कृति गिरती जा रही है बस स्वामी दयानन्द की शिक्षा पद्धति के स्वप्न का एक आदर्श नमूना उन्होंने हरिद्वार मे गुरुकुल कागडी के रूप मे स्थापित किया। जिसे देखने इगलैण्ड के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री रेम्जे मैकडानल्ड आये, और देखकर अत्यधिक प्रशसा की।

आज आवश्यकता है इस बात की, जितने स्कूल ईसाई खोलते जा रहे हैं, हम उनके मुकाबले पर उसी स्तर के वैदिक सस्कृति के अनुरूप स्कूल खोलें और वही सुविधाएँ प्रदान करें। —यशपाल सुधांशु

विचार मन्थन

लेखक बलजीत शसात्री

समुद्र अपनी उत्ताल तरगो से फेन उगल रहा था बार-बार एक लहर किनारे को तोड़ने की असफल कोशिश करती और बन्दरिया के द्वारा खेलते हुए नवज त शिश सम खीच ली जाती। लहर फिर समुद्र माता की गोद से निकलकर हहराती हुई किनारो को तोड उस पार जाना चाहती लहर की इन्छा होती इस समुद्र के घरे से निकल उस पार क्या है ? यह जानन की समुद्र की गाद मे लौटी लहर को समुद्र ने उत्तर दिया— वत्स ! सुनो इस रहस्य को तुम नही जान पाओगे। (ससार सागर के किनारे खडा दर्शक भी यही जानना चाहता है कि उस पार क्या है ? मै इसको जानूं पर कोशिश असफल जाती है फिर किनारे पर लौट जाता है।) किनारो का धैर्य देखो जो सदियो से सागर को मर्यादा मे बाधे खड हैं। ज्ञान एव कमरूपी किनारे से बधा मनुष्य का ज वन सतुलित ठहरा हुआ होता है। ठहराव मन की वृत्तियो का चेतना का नही। हिम क समान बाहर से सघन अन्तर मे तरल सोता बहता रहे। बाहरी आक्रमणो से सुरक्षा के लिए कठोरता और अन्दर दया करुणा सेवा का स्रोत हृदय से बहता हुआ जन जन तक पहुचे। यह है जीवन का सगीत।

समुद्र के किनारे विचारो मे डूबा मनुष्य खडा सोच रहा है— यह सागर कितना विशाल है और बाहर से कितना शात है अपनी किनारो की मर्यादा मे, परन्तु इसके अन्तर मे एक क्षण का भी ठहराव नही हर पल आन्दोलन हो रहा है। लहरे एक दूसरे से टकराती हुई बढी चली आ रही हैं, मिलने किनारे से और फिर लौट जाती हैं। यह क्रम अनन्त काल से चल रहा है। कभी रुकता नही न कभी रुकेगा।

यह शात दिखने वाला समुद्र है महान् पुरुष। अन्दर की लहरे हैं उसक हृदय मे उमडते विचार लगातार मथन हो रहा है। बाहर आ रहे हैं किनारे पर उन प्यासे लोगो की प्यास बुझाने जो पिपासित हैं। कोई आये और शात करे प्यास को और माग दिखा दे सीधा जिस से सारी भटकन मिट जाये। विचारो के मथन से ही निकलता है अमृत और यहा आकर जीवन शात हो जाता है। मधुर सगीत की झकार निकलती है सारा वातावरण उस मधुर झकार से स्निग्ध हो जाता है। ऐसे बनाकर चलना इस जीवन को, वह जीवन का सगीत तुम्हे आनन्दित करेगा तो बाहर भी आनन्दमय वातावरण बनेगा। जो भी तुम से सम्पक करेगा वही झकृत हो उठेगा। चञ्चल धारा पर्वत से जब चली कल-कल छल-छल करती मैदान में आकर शात हो गयी गम्भीर हो गयी और सागर म मिल कर शात हो गयी। बचपन की चञ्चलता का जवानी मे सम्भलना प्रौढावस्था मे लाकर शात गम्भीर स्थिर बना देता है मनुष्य को तभी पूर्णता आती है। उनके अपने जीवन मे सन्तोष आ जाता है। दूसरे के प्रति दया उमडती रहती है। हृदय के अन्दर जरा-सा भी मनुष्य क्या प्राणि-मात्र का दुख देखा और चल पडे उसे दूर करने। यही दृश्य देखा था रत्नाकर नाम के डाकू ने—एक शिकारी ने काम-मोहित हुए क्रौञ्च दम्पती को तीर द्वारा एक को मार दिया दूसरा क्रौञ्च उसके पास मे बैठा विलाप कर रहा था। यह दृश्य देखते ही उनके हृदय से निकल पडा (मा निषाद ।) कवि बन गये।

दूसरी घटना ने डाकू से महर्षि वाल्मीकि बना दिया। चोर था साधु ने इतना ही पूछा था जो पाप तुम करते हो क्या उस पाप के फल मे तुम्हारे परिवार वाले भी भागीदार बनेंगे। जिनके लिए तुम यह पाप करते हो। पूछा ! जवाब नकारात्मक था। बस वही से मस्तिष्क मे विचार आ गया, अब तक जो जीवन-धारा उल्टी बह रही थी वह अब सीधी बहने लगी। नीचे की ऊर्जा अब ऊपर को बहने लगी थी। जो विचार अवरुद्ध नदी मार्ग की तरह बाधा से रुके थे वह एक ही झटके में उस सारी बाधा को पार करके बह चल। आदि कवि बना दिया। ऐसी शक्ति सब मे है उसे पहचानने की आवश्य-कता है। पहचानो और चल पडो। परोप-कार भावना तो रत्नाकर के मन मे थी, पर मार्ग गलत था। वेद सन्देश देता है—

कालो अश्वो वहति । समय रूपी (अश्व=अ+श्व जो आज है कल नही) घोडा भाग रहा है इसको पहचान उठ और उसके ऊपर सवार हो जा। कर्म-क्षेत्र मे कर्मवीर बनकर कर्म करते हुए अपने को मुक्त कर ल सब एषणाओ स और इन वद की ऋचाओ को अपन जीवन का उद्देश्य बनाकर चल।

> उपह्वरे गिरीणा सङ्गमे च नदीनाम्।
> धिया विप्रो अजायत ॥

'पर्वतो की गुफाओ मे और नदियो के सगम पर विद्वान् पण्डितो की बुद्धि पवित्र बनती है।'

महात्मा मुशीराम ने इसी मन्त्र को अपने जीवन म उतारा और सर्वस्व त्याग गये। गगा के किनारे गुरुकुल कागडी की स्थापना की। मुशीराम न स्वामी श्रद्धा-नन्द बनकर इस ऋषि दयानन्द का दीवाना बनकर स्वय की बलि देकर मिल गया उस परम शान्त किनारे से अपने को मुक्त कर लिया जन्म मृत्यु के चक्र से। और इस अवस्था का वर्णन एक शायर ऐसे करता है—

> 'खुदा करे के खुदा भी वहा पर न हो,
> मैं हू और सनम हो, और कोई दरमियाँ न हो।'

कबीरदास ने भी ऐसे ही कुछ अनु-भूति को व्यक्त किया है—

> जब 'मैं' था तब हरि नही।
> अब हरि है मैं' नाहि ॥

प्रात काल की नन्ही चिडिया सन्देश देती है, सोने वालो उठो। अपने प्रभु का गुणगान करते हुए पहुँच जाओ कर्मक्षेत्र में, योगीराज श्रीकृष्ण जी का गीता के प्रथम श्लोक मे ही यह सन्देश है—धर्म-क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता । धर्म के क्षेत्र मे धर्म के अनुसार कर्म से क्षेत्र मे कर्म के अनुसार मनुष्य धर्म की मर्यादाओ मे रहकर कर्म के क्षेत्र मे उतरे और अर्जुन की तरह अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए पत्ते और टहनिया न देखते हुए बस चिडिया (लक्ष्य) की आँख की ओर ही निशाना साधे और पूर्ण करे। वही सच्चे कर्मवीर होते हैं। ऐसे ही कर्मवीरो के लिए कवि ने लिखा है—

> देखकर बाधा विविध,
> बहु विघ्न घबराते नहीं
> रह भरोसे भाग्य के,
> दुख भोग पछताते नही।
> काम कितना ही कठिन हो,
> किन्तु उकताते नही।
> भीड मे चचल बने
> जो वीर दिखलाते नही।
> हो गए एक आन मे
> उनके बुरे दिन भी भले।
> सब जगह सब काल मे,
> वे ही मिले फूले-फले ॥

प्रभात की प्रथम किरण जब धरा पर पडी चारो ओर से अन्धकार ने अपना साम्राज्य समेटा और भागने लगा। नन्ही किरण जवान हो गयी अंधेरा भागकर पुल के नीचे छिप गया। सूर्य की नन्ही किरण जब दूर सागर मे अपने पिता सूर्य के साथ विश्राम करने हेतु सागर में विलीन हो गयी। अन्धकार का साम्राज्य फैल गया, प्रात काल सूर्य रश्मि को अंधेरे ने देखा और भागा। परेशान हो प्रजापति के पास शिकायत लेकर गया। सूर्य से प्रजापति ने पूछा—'तुम अन्धेरे को परेशान करते हो क्यों ? उसकी शिकायत है आप उसके पीछे भागते हो।' सूर्य ने कहा—'ठीक है, पर उस अंधेरे को बुलाओ। मैंने तो आज तक उसे देखा ही नही। अंधकार से कहा गया—तुम सूर्य के सामने आकर कुछ कहो। अंधेरे ने कहा—कैसे आऊँ उसके सामने मेरा अस्तित्व नही रहता, नष्ट हो जाता है।

बात सामान्य सी है प्रकाश के सामने अंधेरा है ही नही। प्रकाश की अनुपस्थिति का नाम अंधेरा है। प्रकाश होगा तो अंधेरा हो ही नही सकता, यह न जानकर हम अंधकार से भयभीत होते रहते हैं। प्रकाश और तम (अंधेरा) हम सबके अन्दर विद्यमान है। जिसने प्रकाश देख लिया अज्ञान का तम दूर भाग गया। ज्ञान की नन्ही रश्मि हृदयाकाश पर चमक कर जगमग कर देती है। सारा ससार ऐसे मनुष्य के गुण गाने लगता है।

प्रथम पाठ माँ की कोख से निकलकर शिशु माँ की गोद मे लोरी के साथ पढता है और उन्ही लोरियों के सस्कारो से कोई बन जाता है धर्मराज युधिष्ठिर और कोई दुर्योधन अन्यायी। कुछ पिछले कर्म और यहाँ की सगति से माता पिता से, समाज से मिले सस्कार से मनुष्य का वृत्तियाँ बनती हैं, जो उसके जीवन को अपने अनुरूप चलाती है। तुलसीदास जी ने ऐसे मनुष्य की स्थिति का चित्रण किया है—

> तुलसी पिछले पाप से हरि चर्चा न सुहाय।
> जैसे ज्वर के ताप से भूख विदा हो जाय ॥'

दुर्योधन को श्रीकृष्ण ने कहा—दुर्यो-धन इस तेरी हठ के भयकर परिणाम होगे युद्ध से महाविनाश हो जायेगा, यह धरा वीरो से शून्य हो जायेगी। इसलिए अपने पाण्डव भाइयो को पाँच गाँव दे दे। सारा जगडा समाप्त हो जायेगा। दुर्योधन ने उस समय कहा था—हे ! श्रीकृष्ण मैं जानता हू कि मैं अन्याय कर रहा हू, इसके भयकर परिणाम स क्षात्रधर्म का विनाश हो जायेगा, और वर्ण संकरता बढेगी। यह सब जानते हुए भी मेरी वृत्ति इन बुराइयो की ओर से नही हटती इसलिए—'सूच्यग्र न दास्यामि विना युद्धेन केशव।' अब तो युद्ध ही अन्तिम फैसला करेगा।

महर्षि वाल्मीकि जी ने भी रामायण में इस बात को स्वीकारा। वह कहते हैं—विनाशे बहवो दोषा जीवन् प्राप्नोति भद्रकम्। ५।१३।४५

'विनाश मे बहुत सारे दोष रहते हैं। जीवन के रहते हुए ही मनुष्य भलाई को कल्याण को पाता है।' इन सब इतिहास के पन्नो से शिक्षा ले अपने को सभाल अपनी वृत्तियो को सभाल। निराशा को त्याग और आशा का दीप अपने पवित्र हाथों में लेकर उस मजिल को खोज, प्राप्तकर जिससे तुम भटक गये हो। कवि इस जीवन का वर्णन करते हैं—

> 'जीवन है एक फूल की मुस्कान।
> जो औरो के लिए लुटाता प्राण ॥'

मनु और राष्ट्र

डा० वासुदेवशरण अग्रवाल

मनु का भारतवर्ष एक पुण्यभूमि है। वह इसे देवनिर्मित देश मानते हैं। इस यज्ञीय देश में जो आचार प्रचलित था, उसके लिए मनु के हृदय मे गर्व है। वह सदाचार कहा गया है और मनु आर्योचित गौरव के साथ उस सदाचार को पृथ्वी के सब मानवों के लिए आदर्श मानते हुए अपने राष्ट्र को सबसे ऊंचे आसन पर स्थापित कर देते हैं। इस प्रकार की भावना ही राष्ट्र के अमर जीवन का हेतु है, जो उसे अन्धकार मे भी आत्मविषाद से बचाता है। अर्वाचीन भारत के पुनरुत्थान के तोरणद्वार पर मनु का यह श्लोक सोने के अक्षरो मे लिखा जाएगा।

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन ।
स्व स्व चरित्र शिक्षेरन्पृथिव्या सर्वमानवा ॥

अर्थात् इस देश मे जन्म पाय हुए श्रेष्ठजन्मा पुरुषो से पृथिवी के सब मानव अपने चरित्र की शिक्षा ग्रहण करें।

राष्ट्र मे राजा की आसदी (गद्दी) सबसे ऊंचा स्थान ह, जहां स दण्ड प्रवृत्त होता है। मनु को अराजक राष्ट्र से घृणा है। अराजकता की व्यवस्था मे मात्स्यन्याय के द्वारा बलवान् निबलो का भक्षण और शोषण करन लगते हैं। जब तक राजनीति ठीक है, तभी तक मनु की पद्धति ठीक चलती है। स्वराष्ट्र मे राजशक्ति के लड़खड़ाते ही मनु की आदर्श व्यवस्थाएँ भी बैठ जाती हैं। इसीलिए मनु न राष्ट्रीय शक्ति के मूल को महती देवता माना है। मनु के अनुसार धर्म का ही दूसरा नाम दण्ड है। दण्ड के निर्बल होने पर धर्म रसातल को चला जाता है। यह स्मरण रखना चाहिए कि मनु का धर्म थोथा परलोक-विश्वास नही है, बल्कि वह प्रजाओ का धारण और सवर्धन करने वाली जीवन की एक शक्तिशाली पद्धति है। दण्ड ही न्याय का मूल है। जब दण्ड का प्रणेता साधु अर्थात् निष्पक्ष भाव से दण्ड का प्रयोग करता है, तभी प्रजाएँ एक-दूसरे को दबाना नही चाहती। मनु के अनुसार दण्ड ही राजा है, दण्ड ही नेता है, दण्ड ही शासिता है और दण्ड ही राष्ट्र मे अकेला पुरुष है। दण्ड के सामने अन्य सब कुछ स्त्री की तरह प्रतीत होता है। सब भूतों का गोप्ता प्रजापति का पुत्र ब्रह्मतेज स युक्त दण्ड ही है, जिससे राष्ट्रीय धर्म विचलित नही होते। इस प्रकार का सबसे निडर रहने वाला और सबको निडर रखने वाला दण्ड जब तक राष्ट्र का ककुद् या सबसे ऊंचा स्थान बना रहता है, तभी तक राष्ट्र की आत्मसम्पदा पनपती रहती है। मनु का आदर्श राष्ट्र के ब्राह्मधर्म और क्षात्रधर्म का (जिन्हे आजकल की राजनीतिक परिभाषा मे Legislative और Executive शक्ति कहते हैं) सुन्दर समन्वय है—

नाब्रह्म क्षत्रमृध्नोति नाक्षत्र ब्रह्म वर्धते ।
ब्रह्म क्षत्र च सपृक्तमिह चामुत्र वर्धते ॥
—९।३२२

अर्थात् बिना ब्रह्म के क्षत्र और बिना क्षत्र के ब्रह्म का विकास नही होता। ये मिलकर ही इस लोक मे और परलोक मे सवर्द्धित होते हैं।

इस प्रकार की व्यवस्था मे मस्तिष्क और बल दोनो की पूजा की जाती है। मनु के आदर्श ब्राह्मण वे हैं जिन मे उच्च राष्ट्रीय सस्कृति मूर्तिमान् रूप धारण करती है। वे ब्राह्मण धर्म के कोश हैं। राष्ट्रीय धर्मों का निर्माण इसी प्रकार के ज्ञानियो की परिषद् मे होता है, राजदण्ड तो उन धर्मों को प्रचलित रखता है। मानव-सस्कृति बहुसख्या पर निर्भर नही है। एक ज्ञानी दस हजार मूर्खों से श्रेष्ठ है।

एकोऽपि वेदविद्धर्मं, य व्यवस्येद्द्विजोत्तम ।
स विज्ञेय परो धर्मो नाज्ञानामुदितोऽयुतै ॥

मानव धर्मशास्त्र बुद्धि का समादर करता है। वह जकड़ने वाले धर्मों का पुलिन्दा नही है। युगधर्म के अनुसार कानूनो की वृद्धि और विकास करने के उदार बीज इस शास्त्र मे जान-बूझकर रखे गये हैं। शिष्ट विद्वानो की दशावरा परिषदो को सगठित करने का विधान इसीलिए था।

मनु के अनुसार विद्वान् या कर्मशील ज्ञानी का मूल्य सबसे अधिक है। धन, बन्धु आयु कर्म और विद्या, ये पाच आदर की चीजे हैं, इन मे बाद की वस्तु पहले से श्रेष्ठ है। धन से ज्ञान बहुत ऊंचा है। यही ऋषियो का पैमाना था जिससे मानव की ऊंचाई नापी जाती थी और मनु ने इसी को अपनाया है। मनु की दृष्टि मे 'मनुष्य सबके केन्द्र मे है उसी का निर्माण सब शास्त्र और धर्मों का ध्येय है। मनुष्य की समृद्धि के लिए ही आदर्श-सस्थाओ का विकास राष्ट्र मे किया जाता है मनु का विचार है कि राजा ही युग का प्रवर्तक होता है (राजा हि युगमुच्यते), अतएव सप्राण राज्य की ठीक व्यवस्था मानव समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसकी सिद्धि के लिए जहा एक ओर वीर्यवान् दण्ड की स्थापना चाहिए, वहीं दूसरी ओर राष्ट्र की प्रज्ञा मे निर्मलता और तेज भी आना चाहिए।

(हिन्दी विश्वभारती स साभार)

उपनिषदों का शान्ति-मन्त्र

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

उपनिषदों के आरम्भ तथा अन्त मे साधारणत तीन शान्ति-मन्त्रो का प्रयोग किया जाता है। उनमे से एक प्रसिद्ध मन्त्र पूर्णमद. पूर्णमिदम् है। इससे पूर्व कि हम ईशोपनिषद् के मन्त्रो का क्रमश व्याख्यान करें इस शान्ति मन्त्र के बारे मे कुछ कहना चाहते हैं, पूर्णमन्त्र इस प्रकार है – पूर्णमद पूर्णमिद पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥ अर्थात् वह भी पूर्ण है और यह भी पूर्ण (है) पूर्ण मे से पूर्ण को ही लिया गया है। पूर्ण से पूर्ण भाग को लेने पर भी पूर्ण बचा रहता है। इस मन्त्र में, निम्न बिन्दु विचारणीय हैं—

(१) 'अदस्' और 'इद सर्वनाम किस पदार्थ की ओर इगित कर रहे हैं।

(२) वह वस्तु भी पूर्ण है और यह वस्तु भी पूर्ण है।

(३) पूर्ण से पूर्ण ही उत्पन्न होता है।

(४) पूर्ण को निकाल लेने पर भी शेष पूर्ण ही रहता है।

मन्त्र-वर्णित इन प्रश्नों पर विचारने से एक बात तो स्पष्ट है कि एक पदार्थ वह है कि जिस मे से कुछ निकाला जाता है और दूसरा पदार्थ वह है कि जिसे निकाला गया है और वे दोनों के दोनो पूर्ण हैं। अवश्य ही ऐसा पदार्थ चेतन-तत्त्व न होकर जड-तत्त्व होना चाहिए। अत हमारी तुच्छ सम्मति में यदि 'वह' सर्वनाम ब्रह्माण्ड का वाचक है तो 'यह' सर्वनाम पिण्ड का वाचक है। इद शब्द का प्रयोग अपने अति निकट प्रत्यक्ष पदार्थ के लिए किया जाता है। व्यक्ति के अत्यन्त निकट उसका अपना देह ही है। और वह-सर्वनाम का प्रयोग दूरस्थ परोक्ष वस्तु के लिए होता है सो हमारी दृष्टि मे वह-सर्वनाम से अभिप्रेत ब्रह्माण्ड है अर्थात् हम कहेंगे वह ब्रह्माण्ड भी पूर्ण है और यह पिण्ड भी पूर्ण है। इसी के आधार पर 'पिण्डब्रह्माण्डयोरैक्यम्' 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' आदि सूत्र प्रचलित किये गये। यदि यह सत्य है कि जो कुछ ब्रह्माण्ड मे है, वह पिण्ड मे भी है तो 'अदस्' सर्वनाम का वाचक ब्रह्माण्ड होगा और इद सर्वनाम का वाचक पिण्ड होगा। ब्रह्माण्ड और पिण्ड के तुल्य होने से और पूर्ण होने से इन्हें पुर कहा जाता है। ब्रह्माण्ड मे से पूर्ण पिण्ड के निकलने पर भी उसमे न्यूनता नही आती और शेष पूर्ण ही रहता है।

'वह' और 'यह' सर्वनाम (उपादान) कारण और कार्य के भी वाचक हो सकते हैं। प्रकृति कारण में इस कार्य-जगत् को निकालन पर कारण प्रकृति मे कोई अन्तर नही आता, वह सदा पूर्ण ही बनी रहती है।

'वह' और 'यह के सूत्र को हम वृक्ष और बीज पर भी लागू कर सकते है। जहां वृक्ष पूर्ण है वहां बीज भी पूर्ण है। पूर्ण वृक्ष मे से पूर्ण बीज को निकालने पर भी वृक्ष पूर्ण ही बना रहता है।

वैदिक सृष्टि-विज्ञान मे दो समुद्र माने जाते हैं—एक आकाशीय समुद्र और दूसरा पार्थिव समुद्र। ये दोनो ही समुद्र पूर्ण हैं। आकाशीय समुद्र वाष्पमय है और पार्थिव समुद्र जलमय है। जलमय समुद्र मे से यदि जल का वाष्पीकरण द्वारा निकाला जाये तो भी इसमे न्यूनता नही आती। वाष्पीय समुद्र यदि जल मे परिवर्तित होकर नदियो द्वारा समुद्र मे पहुंच जाय तो आकाशीय समुद्र मे कोई न्यूनता नही आती। यही प्रयोग हम पिता और पुत्र के लिए भी कर सकते हैं। परमात्मा मे यह सूत्र व्याप्त नही होता क्योकि उसमे से कोई वस्तु न निकाली ही जाती है और न डाली जाती है। हां यदि उसे ज्ञानमय माना जाय तो कहा जा सकेगा कि उसमे रहने वाला ज्ञान भी पूर्ण है और उसके द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान भी पूर्ण है। उसके ज्ञान मे से वेद-ज्ञान को निकालन पर भी अवशिष्ट पूर्ण ही रहता है। और यही सूत्र परमात्मा के आनन्द-गुण पर भी चरितार्थ हो सकता है। अत हम कहेंगे पूर्णम् अद पूर्णम् इदम्। □

तथाकथित विश्वविजेता सिकन्दर, सम्राट पोरस से

लेखक—पी० एन० ओक

अनुवर्ती घटनाओ से यह स्पष्ट हो जाता है कि उपर्युक्त धारणा मनगढन्त एव स्वार्थप्रेरित विभ्रान्ति है। यूनानी इतिहासकारो की इच्छा यही रही है कि हम विश्वास कर कि असख्य नरमेध क्रूर हत्याओ और सम्पूर्ण समृद्ध नगरियो का ध्वसकर्ता सिकन्दर उस समय अत्यन्त प्रफुल्लित हुआ था जब बन्दी बनाये जाने पर पोरस ने उससे निर्भीकता से अपने साथ राजा जैसा व्यवहार करने को कहा था कि सिकन्दर ने न केवल उसे उसका प्रदेश उदारतावश वापस कर दिया था, अपितु अपनी ओर से भी कुछ और प्रदेश पोरस को द दिया।

'ईथोपियायी महाकाव्यो का सम्पादन करन वाले श्री ई० ए० डब्ल्यू० बैज ने अपनी र ना मे सिकन्दर के जीवन और उसके विजय अभियानो का वर्णन सम्मिलित किया है। उनका कहना है कि, "जेहलम के युद्ध मे सिकन्दर की अश्व सेना का अधिकाश भाग मारा गया था। सिकन्दर ने अनुभव कर लिया था कि यदि मैं लडाई जारी रखूगा, तो पूर्ण रूप से अपना नाश कर लूगा। अत उसने युद्ध बन्द कर देने के लिए पोरस से प्रार्थना की। भारतीय परम्परा के सत्यानुरूप ही पोरस ने शरणागत शत्रु का वध नही किया। इसक बाद दोनो न एक सन्धि पर हस्ताक्षर किय। अन्य प्रदेशो को अपने साम्राज्याधीन करने मे फिर पोरस की सहायता सिकन्दर न की।

सिकन्दर की पराजय के लिए श्री बैज द्वारा दिया गया कारण यह है कि उसके सैनिक युद्ध मे अपने हजारो साथियो की क्षति से दु खित हो चुक थे। उन्होने अपन शस्त्रास्त्र फेक दिय और अपने नेता से शान्ति के लिए प्रयत्न करने की प्रार्थना की। श्री बैज का कहना है कि शान्ति की प्रार्थना करत समय सिकन्दर ने निवेदन किया था— श्रीमान पोरस! मुझे क्षमा कर दीजिए। मैंने आपकी शूरता और सामर्थ्य शिरोधार्य कर ली है। अब इन कष्टों को मैं और अधिक सह नही सकूगा। दु खी हृदय हो मैं अब अपना जीवन समाप्त करन का इरादा कर चुका हू। मैं नही चाहता कि मरे सैनिक मेरे ही समान विनष्ट हो। मैं वह अपराधी हू जिसने इन सैनिको को कराल काल के गाल मे धकेल दिया है। किसी राजा को यह शोभा नही देता कि वह अपने सैनिको को इस प्रकार मौत के मुह मे धकेल दे।

अनुवर्ती घटनाओ द्वारा प्रस्तुत ऐसे स्पष्ट साक्ष्यो के होन हुए भी इतिहासकार उपयुक्त उद्धरण को प्रक्षिप्तांश कहने और इसीलिए उनकी अवहेलना करने के दुराग्रह पर अड हुए हैं। तर्क के लिए यह मान लेने पर भी कि उपर्युक्त उद्धरण प्रक्षिप्तांश ही हैं हम यह प्रश्न करते हैं कि पोरस के सिर का डरियस के सिर की भांति काट वाले सिकन्दर ने न केवल पोरस को जीवन दान दिया अपितु उसको बन्दी अवस्था से मुक्त किया उसको उसका सम्पूर्ण राज्य लौटा दिया और सद्भावना वश पुरस्कार रूप कुछ और प्रदेश भी भेंट मे द दिया। यह उतना ही अयुक्तियुक्त है। जितना यह कहना है कि किसी पुरस्कार-वितरण-समारोह मे सहसा प्रकट होकर अपना शीश तीव्र गति से क्रुद्धावस्था मे हिलाने वाला भयकर विषधर अकस्मात् ही मुस्कराता हुआ आकर्षक राजकुमार बन गया और पुरस्कार वितरण करने लगा।

यही तथ्य, कि पोरस ने सिकन्दर से अपना प्रदेश खोने की अपेक्षा कुछ जीता ही था, प्रदर्शित करता है कि सिकन्दर ने न केवल शान्ति के लिए क्षमा याचना की अपितु यह भी कि उसका पराभव इतना पूर्ण था कि उसे अपने कुछ भू क्षेत्र भी पोरस को भेंट करने पड थे। इन यूनानी वर्णनो पर भी विश्वास करते हुए कि सिकन्दर ने कुछ भू-प्रदेश जीतने मे पोरस की सहायता की थी यह भी बिल्कुल स्पष्ट है कि अपना घमड बिल्कुल चूर चूर हो जाने पर सिकन्दर ने अत्यन्त दयनीयावस्था मे पोरस का सहायक हो सेवा करना स्वीकार कर लिया और भारत मे अतिक्रमण कर प्रविष्ट होने क दण्डस्वरूप पोरस के लाभार्थ कुछ भू प्रदेश जीतने का वचन दिया। यह हो सकता है कि वह अतिरिक्त भू प्रदेश घोषित रूप मे शत्रुभाव बनाए रखने वाले तक्षशिला के राजा आम्भि और राजनयिक-तटस्थता बनाए रखने वाले अभिसार लोगों का रहा हो।

सिकन्दर का सामर्थ्य प्राचीन भारत की प्रतिरक्षात्मक लौह-दीवार से टकरा कर ऐसा चूर-चूर हो गया था कि पोरस के साथ युद्ध के पश्चात् उसके सैनिको ने आगे युद्ध करने से साफ इन्कार कर दिया। यह भली भांति कल्पना की जा सकती है कि जब पोरस अकेला ही सिकन्दर और आम्भि की मिली-जुली सामर्थ्य को धूल मे मिला सकता था तो सिकन्दर कभी भी सिंधु नदी के पार नही आता यदि केवल आम्भि की राष्ट्रभक्ति और न्यायबुद्धि पोरस के प्रति उसके शत्रु भाव की दास न हो जाती।

वापस जाने का निश्चय भी कर लेने के पश्चात् यह स्पष्ट है कि सिकन्दर को उन प्रदेशों से होकर जाने की अनुमति नही मिली थी, जिनको उसने पहले जीता था

यह लिखित तथ्य भी कि अभिसार ने सिकन्दर से मिलने से इन्कार कर दिया था सिकन्दर की पराजय का सकेतक है। जैसा कि दावा किया जाता है, यदि वास्तव मे सिकन्दर ने पोरस की शक्ति का पराभव किया होता तो अभी तक तटस्थ रहने वाला अभिसार शान्ति बनाए रखने एव मित्रता अर्जन करने के लिए झटपट सिकन्दर के पास दौडकर गया होता।

> श्री ई० ए० डब्ल्यू० बैज का कहना है कि शांति की प्रार्थना करते समय सिकन्दर ने निवेदन किया था—"श्रीमान् पोरस! मुझे क्षमा कर दीजिए। मैंने आपकी शूरता और सामर्थ्य शिरोधार्य कर ली है। अब इन कष्टों को मैं और अधिक सह नही सकूगा। दु खी हृदय हो मैं अब अपना जीवन समाप्त करने का इरादा कर चुका हू। मैं नही चाहता कि मेरे सनिक मेरे ही समान विनष्ट हो। मैं वह अपराधी हू जिसने इन सैनिको को कराल काल के गाल मे धकेल दिया है। किसी राजा को यह शोभा नही देता कि वह अपने सैनिको को इस प्रकार मौत के मुह मे धकेल दे।"

ग्रीक-इतिहासकारो के अनुसार तो हमे विश्वास कर लेना चाहिए कि सिकन्दर की सेनाएँ बिना प्रतिरोध के बिना किसी रोक-टोक के चेनाब तथा रावी नदी पार कर गई थी। यह स्पष्ट रूप में दर्शाता है कि जब पोरस ने अपने तत्काल शत्रु सिकन्दर को आम्भि के उत्तरी प्रदेश और वहा से सिन्धु के पश्चिम की ओर वापस लौट जाने से मना किया था तब पोरस ने विशाल-हृदयतावश अपने प्रदेश के मार्ग से सुरक्षित चले जाने मे सहायता देने का आश्वासन दिया था, यदि सिकन्दर दक्षिण की ओर जाता।

पोरस की ओर से यह अत्यन्त दूरदर्शिता का पग था क्योकि यदि उसने सिकन्दर को आम्भि के क्षेत्रीयमार्ग और वहा से अफगानिस्तान जाने की अनुमति दे दी होती, तो जैसा कि अनुवर्ती मुस्लिम आक्रमणकारियो ने अनेक बार किया, वैसा ही सिकन्दर ने भी कृतघ्नतापूर्वक अन्य आक्रमण करन के लिए सेना का पुन एकत्रीकरण किया होता।

ज्यो ही सिकन्दर की सेनाओं ने रावी नदी पार की त्यो ही भारत की द्वितीय सुरक्षा पक्ति ने अपना जौहर दिखाया। पोरस ने अपने ही भू प्रदेश द्वारा उनको सरक्षात्मक व्यूह-रचना में सन्नद्ध कर दिया था। किन्तु उसे ज्ञात था कि हमारे वीर क्षत्रियो द्वारा पूर्ण सन्नद्धता एव उत्साह पूर्वक आरक्षित भारत के अन्य भागो से भी सिकन्दर अक्षुण्ण नही जा सकता था। इतना ही नही, जब वह अन्य रास्ते से लौटकर जाता तब उसकी वापसी पर उसकी पूरी चटनी बनाई जाती और विश्व विजेता होना तो दूर उसे तो असहाय एव अकिंचनावस्था मे पहुचा दिया जाता। यही हुआ भी। अत इतिहास को यह अवश्य ही ध्यान रखना चाहिये कि एक पराभूत शत्रु की अपेक्षा पोरस का सम्मान तो उस भारतीय महान् नेता और राजनीतिज्ञ के रूप मैं अवश्य किया जाना

उसकी सेना को चूर चूर कर दिया था, और निर्मद शोकाकुल एव प्रायश्चित्त-कर्ता के रूप में ही सिकन्दर को वापस घर भेजने के लिए बाध्य कर दिया था।

रावी और व्यास नदी के मध्य भाग मे सिकन्दर की सेनाओ को अनेक विकट लडाइयाँ लडनी पडी थी। प्राचीन काल मे भारतीय सेनाए इतनी सावधान एव सतर्क थी कि वे किसी भी प्रकार का सशस्त्र अतिक्रमण सहन नही करती थी। प्रत्येक नागरिक एक सैनिक था। राष्ट्र-भक्ति का स्थान किसी भी प्रकार अपवित्र दयाभाव नही ले पाता था। व्यास के तट पर पहुंचते पहुचते सिकन्दर के सैनिको ने और आगे कोई भी लडाई लडने से साफ इन्कार कर दिया क्योकि शस्त्रधारी होने के कारण उनको प्रत्येक पग पर रोका गया था। विकट सशस्त्र प्रतिरोध किया गया था वे भूखे रहे थे, उनको घर की याद सताने लगी थी क्षत-विक्षत एव युद्ध करने से थक चके थे। अनेक युद्ध लड चुके थे। पोरस के साथ उनका युद्ध एशिया मे चौथा एव अन्तिम महान् सघर्ष था। इसकी भयावह स्मृतियाँ उनके लिए हृदयकपित कर देने वाली थी।

जिन मार्गों से सिकन्दर वापस आ रहा था, उनमे उसका आगमन अभिनन्दनीय न होने के कारण सिकन्दर के भूखे मरते सैनिको ने असावधान नागरिक-समुदायो को लूटना शुरू कर दिया। किंतु इस तथ्य को यूनानी वर्णनो मे इस असत्य दाव का प्रमाण कहकर प्रस्तुत किया गया है कि पोरस के तथाकथित पराभव के पश्चात् और अधिक प्रदेशो का जीतने एव लूट का माल एकत्र करन के लिए सिकन्दर दक्षिण की ओर मुड गया।

सिकन्दर सिन्ध और मकरान के मार्गों से वापस गया। प्रत्येक स्थान पर उसकी शोचनीयावस्था को प्राप्त सेना के विभिन्न वर्ग भारतीयो द्वारा छुटपुट आक्रमणो भुखमरी एव रोगो म ग्रस्त होकर सख्या मे कम ही कम होते गय।

इस वापसी के समय मलावी नामक एक भारतीय जन जाति न सिकन्दर के यूनानी राक्षसी झुण्डो का कडा मुकाबला किया। इनमे होने वाली अनेक मुठभेडो मे स्वय सिकन्दर भी घायल हुआ था। एक सघर्ष मे तो उस के टुकड-टुकडे कर दिये जाने वाले थे। प्लूटार्क ने उल्लेख किया है 'भारत मे सबसे अधिक खूंखार लडाकू जाति मलावी लोगो के द्वारा सिकन्दर की देह के टुकडे-टुकडे होने ही वाले थे अपनी छोटी सी टुकडी और स्वय अपने को ही इन बर्बर लोगों के तीर-भालो के भयानक सघातो से परेशान पाकर वह इन लोगो के मध्य मे कूद पडा। उन लोगों ने हाथापाई तक में भयकर आक्रमण किया। उनकी तलवारें और

हार मान अपने देश चल पड़ा

उसे भयानक रूप में आहत कर दिया। शत्रु का एक शर-सधान इतने प्रबल वेग से हुआ था कि उसके शिरह-बख्तर को पार कर गया और उसकी पसलियो मे घुस गया। सिकन्दर घुटनों के बल आ गिरा। उसी समय उसका शत्रु करवाल लेकर उसका शीष उतारने के लिए दौड पडा। प्यूसेस्टस और लिम्नेयस ने स्वय को सिकन्दर की रक्षार्थ आगे कर दिया, किन्तु उनमे से एक तो मार डाला गया और दूसरा अत्यन्त घायल हो गया।"

इसी मारकाट के बीच मे सिकन्दर की गर्दन पर भारी मोटे सिरे वाली छड़ी का प्रहार हुआ। उसका अगरक्षक उसे उसकी अचेतावस्था मे ही किसी सुरक्षित स्थान पर ले गया।

लौटते समय भी यूनानी राक्षसो ने अकथनीय अत्याचार किया है। विजयोन्माद अथवा पराजय-जन्य नैराश्य, दोनो ही अवस्था मे सिकन्दर की यूनानी सेना अत्यन्त क्रूर व्यवहार करती थी। जब जनता उनकी सहायता करने से इन्कार कर देती थी तो वे अत्यत नृशसतापूर्वक उन शान्त नागरिको पर झपट पडते थे और बच्चो व महिलाओ को मौत के घाट उतारने लगते थे।

मलावियो की ही भाति म्यूजिकन, ऑक्सीकन व साम्बुस (सभी भारतीय जातिया) सिकन्दर की अतिक्रमणशील सेना पर भीषण प्रहार करने की दृष्टि से संगठित हो गई। अत्यन्त कठिनाई से और बुरी तरह पिटी हुई थोडी-सी सेना मात्र के साथ सिकन्दर सिन्धु नदी के मुहाने तक पहुँच पाया। चूकि अपने शस्त्रो एव सैनिको की अजेयता मे सिकन्दर का विश्वास भग हो गया था, इसलिए उसने स्थल-मार्ग छोडकर समुद्र के रास्त जाने का विचार किया। उसने एक दल सैन्य-गतिविधि—अनुसधानकार्य के लिए आगे भेज भी दिया। किन्तु उस में समुद्र मार्ग से जाने का भी उत्साह नही था। अत अत्यन्त सकोचपूवक उसने बलूचिस्तान पार कर पश्चिम की ओर जाने का विचार किया। इस क्षेत्र मे भी ओरिटस लोगो ने यूनानी सेनाओ को भारी पीडा पहुचाई। रसमालन और पासनी पहुँचते पहुँचते वहा का भीषण ताप उसके क्षुधार्त विकल सैनिकों को ले बैठा। उनकी सख्या और भी कम हो गयी। थका-मादा और निराश हो उसने मक्रेसिया पार किया और वह कारमेनिया पहुच गया। वहा क्रेटर्स के नेतृत्व मे एक टुकडी और नौ सेना का एक भाग उससे आ मिला। कुछ कम शत्रुत्वपूर्ण क्षेत्र मे इस प्रकार सेना के अशों के आ मिलने से मार-मार कर गिरा दी गई और लगभग विनष्ट कर दी गयी सेना मे कुछ आशा का सचार हुआ। इन विजित प्रदेशों में भी सिकन्दर द्वारा

आचरण स स्थानीय जनता को कुपित कर रखा था। लोगो ने उन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह कर रखा था। इसलिए सिकन्दर का उन राज्यपालो को बदलना पडा।

सिकन्दर को बहुत बार एक महान् और नेक राजा के रूप मे चित्रित किया गया है। किन्तु एरियन लिखता है कि "जब बैक्ट्रिया के बसूस को बन्दी बनाकर सिकन्दर के सम्मुख लाया गया, तब सिकन्दर ने अपने सेवको से उस को कोडे लगवाए, और उस के नाक और कान कटवा डाले। बाद मे बसूस को मरवा डाला गया। सिकन्दर ने कई फारसी सेनाध्यक्षो को नृशसतापूर्वक मरवा दिया था। फारसी राजचिह्नो को धारण करने पर सिकन्दर की आलोचना करने के अपराध मे सिकन्दर को स्वय अपने ही गुरु अरस्तु के भतीजे कलस्थनीज को मरवा डालने मे भी कोई सकोच नही हुआ था। क्रोधावेश मे उस न अपने ही मित्र क्लाइटस को मार डाला था। उस के पिता का विश्वासपात्र सहायक परमेनियन भी सिकन्दर के द्वारा मौत के घाट उतार दिया गया था। जहा कही भी उस की सेना गयी, उस ने समस्त नगरो मे आग लगा दी, महिलाओ का अपहरण किया और बच्चो को भी तलवारो की धारो पर सूल डाला। ग्लिम्पसिस आफ वर्ल्ड हिस्ट्री' के ७२ वे पृष्ठ पर स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है 'सिकन्दर वृथाभिमानी उद्धत और अनेक बार अत्यन्त क्रूर व हिंसक था। वह स्वय को ईश्वर के समान ही समझता था। क्रोध क क्षणा म अथवा आवेशावस्था मे उस ने अपन ही सर्वोत्तम मित्रो के पुत्रो का वध किया और महान् नगरो को उन के निवासियो सहित ही पूणत ध्वस्त कर दिया।

अन्य धर्मों की महिलाओ मे ईरान की दो शहजादियो का सिकन्दर न अपन घर मे डाल लिया था। उस के सेनापतियो ने भी जहाँ कही वे गये अनेक महिलाओ को बलपूर्वक अपनी रखैल बना कर रख लिया था।

भारत मे उस का सघर्ष उस की मौत का परवाना बन गया था। अपने घर वापस जाते समय जब वह मीडिया मे शिविर डाले पडा था उस की सेना मे भी भयकर विद्रोह फैल गया। सिकन्दर ने मेसेडोनियनो को बर्खास्त कर देने और और अन्य जातियो मे से सेना मे भरती कर लेने की धमकी दी। बहुत कठिनाई से विद्रोह शान्त हुआ और सिकन्दर ई० पू० ३२३ मे बेबिलोन पहुचा।

बेबिलोन से प्रस्थान करने की निश्चित तिथि से दो दिन पूर्व सिकन्दर अपने मित्र मीडियस के घर पर एक भोज मे गया हुआ था। भारत-विजय करने का गर्वीला मस्तक नीचे झुक जाने की कटु स्मृतियो को भुला देने के लिए अत्यधिक मद्यपान के कारण वह ज्वरग्रस्त हो गया। उस समय वह केवल ३३ वर्ष का था। ज्वर चढा रहा व और भी तेज हो गया। १० दिन के बाद उस की वाकशक्ति लुप्त हो गयी और फिर ई० पू० ३२३ मे जून की २८ तारीख का वह अचेतावस्था म मर गया।

सिकन्दर क मरणापरात 'ओगस नामक एक पुत्र जन्मा था किन्तु कुछ महीने के भीतर ही सिकन्दर की पत्नी एव अबोध शिशु मार डाले गये।

सिकन्दर का उच्छ्रखलनीय जीवन वृत्त अकस्मात् अतिक्रमण से प्रारम्भ हुआ, किन्तु जब उस का साहस न्याय एव विवक की परिधि सीमाओ को लाघ गया और जब उस ने भारत की सुदृढ प्रतिरक्षा शक्ति से टकराने का यत्न किया तब वह घिघयाता हुआ लडखडाता हुआ वापस भेज दिया गया था। वह भारत मे मरते-मरते बचा। बुरी तरह से घायल हो जाने के कारण जब वह भारत से लौटा तो अपने घर पहुचने से पूर्व ही मर गया। उस की शक्तिशाली सेना पूर्णत नष्ट भ्रष्ट हो चुकी थी। अत इतिहासकारो को पुन पोरस सिकन्दर सघष का मूल्याकन कर पारस को निर्विवाद रूप मे विजेता घोषित करना चाहिए। अब उपयुक्त समय है कि यूनानी वृत्त लेखको के पक्षपातपूण दावो की अत्यन्त सूक्ष्मता से जाच पडताल की जाए जिस से सिकन्दर के भारतीय अभियान की सत्यता का ज्ञान हो जाए। □

'इतिहास की भयकर भूलें' से साभार

गृहस्थ आश्रम के लक्षण

(सत्यार्थप्रकाश से)

जिस कुल मे भार्या से भर्त्ता और पति से पत्नी अच्छे प्रकार प्रसन्न रहती है उसी कुल मे सब सौभाग्य और ऐश्वर्य निवास करते हैं। जहा कलह होता है वहा दुर्भाग्य और दारिद्रय स्थिर होता है। जो स्त्री पति से प्रीति और पति को प्रसन्न नही करती तो पति के अप्रसन्न होने से काम उत्पन्न नही होता। जिस स्त्री की प्रसन्नता मे सब कुल प्रसन्न होता है उसकी अप्रसन्नता में सब अप्रसन्न अर्थात् दुःखदायक हो जाता है।

धर्म कुछ भी न करे परन्तु धर्म के नाम से लोगो को ठगे। सर्वदा लोभ से युक्त कपटी ससारी मनुष्यो के सामने अपनी बडाई के गपोडे मारा करे प्राणियो का घातक, अन्य से वैरबुद्धि रखने वाला, सब अच्छे और बुरो से भी मेल रखे उसको वैडाल व्रतिक अर्थात् बिडाले के समान धूर्त और नीच समझो। कीर्ति के लिए नीचे दृष्टि रक्खे, ईर्ष्यक किसी ने उस का पैसा भर अपराध किया हो तो उसका बदला प्राण तक लेने को तत्पर रहे चाहे कपट, अधर्म, विश्वासघात क्यों न हो अपना

झूठी क्यो न हो परन्तु हठ कभी न छोडे एसे लोगो को बगुले के समान नीच समझो। ऐसे-ऐसे लक्षणो वाल पाखण्डी होत हैं उन का विश्वास वा सेवा कभी न करे।

सदा इढकारो कोमल स्वभाव जितेन्द्रिय हिंसक क्रूर दुष्टाचारी पुरुषो से पृथक् रहनेहारा धर्मात्मा मन को जीत और विद्यादि दान से सुख को प्राप्त होवे। परन्तु यह भी ध्यान रक्खे कि जिस वाणी मे सब अर्थ अर्थात् व्यवहार निश्चित होते है वह वाणी ही उनका मूल और वाणी ही से सब व्यवहार सिद्ध होत हैं उस वाणी को जो चोरता अर्थात् मिथ्याभाषण करता है वह सब चोरी आदि पापो का करने वाला है। इसलिए मिथ्याभाषणादिरूप अधर्म को छोड जो धर्माचार अर्थात् ब्रह्मचर्य जितेन्द्रियता से पूर्ण आयु और धर्माचार से उत्तम प्रजा तथा अक्षय धन को प्राप्त होता है तथा जो धर्माचार मे वर्त्तकर दुष्ट लक्षणो का नाश करता है उसके आचरण को सदा किया करे।

जैसे नदी और बडे-बडे नद तब तक भ्रमते ही रहते हैं जब तक समुद्र को प्राप्त

आश्रम स्थिर रहते हैं। (जैसे वायु के आश्रय सब प्राणी हैं वैसे गृहस्थाश्रम सब आश्रमो का आश्रय है) बिना इस आश्रम के किसी आश्रम का कोई व्यवहार सिद्ध नही होता। जिसस ब्रह्मचारी वानप्रस्थ और सन्यासी तीन आश्रमो को दान और अन्नादि देके प्रतिदिन गृहस्थ ही धारण करता है इससे गृहस्थ ज्येष्ठाश्रम है अर्थात् सब व्यवहारो मे धुरन्धर कहाता है। इसलिये जो मोक्ष और ससार के सुख की इच्छा करता हो वह प्रयत्न से गृहाश्रम का धारण करे जो गृहाश्रम दुर्बलेन्द्रिय अर्थात् भीरु और निर्बल पुरुषो से धारण करने अयोग्य है उसको अच्छे प्रकार धारण करे। इसलिए जितना कुछ व्यवहार ससार मे है उसका आधार गृहाश्रम है। जो यह गृहाश्रम न होता तो सन्तानोत्पत्ति के न होने से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम कहा से हो सकते। जो कोई गृहाश्रम की निन्दा करता है वही निन्दनीय है और जो प्रशसा करता है वही प्रशसनीय है। परन्तु तभी गृहाश्रम मे सुख होता है जब स्त्री और पुरुष दोनो परस्पर प्रसन्न विद्वान् पुरुषार्थी और सब प्रकार के व्यवहारो के ज्ञाता हो। इसलिये गृहाश्रम के सुख का मुख्य कारण ब्रह्मचर्य और पूर्वोक्त स्वयवर विवाह हैं।

आर्यसमाज के पुराने साहित्य सेवी

पं० बद्रीदत्त शर्मा जोशी

डा० भवानीलाल भारतीय

पत्रकार और लेखक प० बद्रीदत्त जोशी का जन्म १८६६-६७ ई० (१९२४ वि०) मे काशीपुर जिला नैनीताल मे हुआ। इनके पिता प० पुरुषोत्तम जोशी व्याकरण साहित्य एव ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान् थे। सस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा बद्रीदत्त जी को अपने पिता से ही मिली। घर पर ही उनका फारसी शिक्षण भी हुआ। १८८१ मे वे मुरादाबाद आये और यहाँ की सस्कृत पाठशाला मे प्रविष्ट होकर उन्होने व्याकरण एव साहित्य का आगे अध्ययन किया। इस पाठशाला मे प्रवेश के समय उनकी आयु मात्र १५ वष की थी। यहा उन्हे प० भवानीदत्त जोशी से पढन का सुयोग प्राप्त हुआ जो अपन युग के अच्छे वैयाकरण थे। उनके सहाध्यायियो मे प्रसिद्ध पत्रकार प० पद्मसिह शर्मा तथा सुप्रसिद्ध सनातनधर्मी विद्वान् प० ज्वालाप्रसाद मिश्र भी थे। स्व० साहू श्यामसुन्दर की प्रेरणा से जोशी जी आर्यसमाज मे प्रविष्ट हो गए। जब प० रुद्रदत्त शर्मा आर्यसमाज मुरादाबाद के उपदेशक पद को त्याग कर कलकत्ते प्रसिद्ध हिन्दी साप्ताहिक भारतमित्र के सम्पादक बन कर चले गए, तो उपदेशक का पद प० बद्रीदत्त जोशी को मिला। आर्यसमाज मुरादाबाद के पाक्षिक मुख पत्र आर्यविनय का सम्पादन भी कुछ काल तक उन्होने किया था। जब आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिमोत्तर प्रदेश (वर्तमान उत्तर प्रदेश) की स्थापना हुई और मुन्शी नारायण प्रसाद (महात्मा नारायण स्वामी) को इस सभा का मन्त्री बनाया गया, तो पडित बद्रीदत्त सभा के कार्य मे भी मुरादाबाद रहते हुए सहयोग देने लगे। उन दिनो सभा का कार्यालय मुरादाबाद मे ही था। यह स्मरणीय है कि मुन्शी नारायण प्रसाद के हृदय में आर्यसमाज के प्रति आस्था के बीज का वपन करने वाले तथा उनका उपनयन सस्कार कराने वाले भी जोशी जी ही थे।

१८९० से १८९९ तक प० बद्रीदत्त जोशी ने आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक पद पर कार्य किया। इस अवधि मे उन्होने अनेक शास्त्रार्थ किए तथा अनेक स्थानों पर आर्यसमाजें स्थापित की। मुरादाबाद मे सनातनी पडित गोकुलचन्द से मूर्ति-पूजा पर उनका प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था। १८९९ मे आपने प्रतिनिधि सभा मे त्याग-पत्र दे दिया और मेरठ कालेज सोसायटी में चले गए तथा लगभग पाच वर्ष तक ऐंग्लो वैदिक स्कूल डी० ए० वी० कानपुर का (पुराना रूप) मे धर्मशास्त्र के अध्यापक रहे। डी० ए० वी० कालेज देहरादून के सस्थापक मुन्शी ज्योतिस्वरूप आप पर कृपा भाव रखते थे। १९०१ मे जोशी जी मेरठ से अजमेर आये और वैदिक यन्त्रालय मे ग्रन्थ सशोधन का काय करने लगे। तीन वर्षा तक बाबू राम विलास शारदा के मार्गदर्शन मे कार्य करने के उपरान्त ये पुन मेरठ आ गए।

१९०४ मे प्रसिद्ध टिहरी शास्त्रार्थ टिहरी महाराजा श्रीमान् कीर्तिशाह बहादुर के निमत्रण पर हुआ। टिहरी नरेश ने आर्यसमाज के नेता मुन्शी ज्योतिस्वरूप को आर्य विद्वन्मण्डल के साथ शास्त्राथ हेतु आमन्त्रित किया। तब प० बद्रीदत्त जोशी महामहोपाध्याय आर्य मुनि पडित तुलसीराम स्वामी आर्यसमाज के प्रवक्ता के रूप मे सम्मिलित हुए। १३ दिन तक यह शास्त्रार्थ महाराज के सभापतित्व मे सम्पन्न हुआ सनातन धर्म के प्रवक्ता रायबहादुर पडित दुर्गादत्त पत तथा लाहौर सनातन धर्मसभा के पडित कालूराम शास्त्री थे। इस घटना के पश्चात् जोशी जी कानपुर चले आये और डी० ए० वी० कालेज सोसायटी की ओर से धर्मप्रचार करने लगे। प्रचार हेतु अब उन्हें महाराष्ट्र आध्र तथा बिहार आदि प्रान्तो के सुदूर स्थानो मे भी जाना पडता था। कानपुर की डी० ए० वी० कालेज सोसायटी के तत्त्वावधान मे प्रकाशित होने वाले आर्य समाचार उर्दू मासिक का सम्पादन भी आपने लगभग ८ वर्ष तक किया।

१९१३ मे जोशी जी कानपुर से पुन मुरादाबाद चले आए और आर्यसमाज के प्रचार तथा ग्रन्थ लेखन के कार्य मे जुटे रहे। १९१६ मे अलीगढ के पी० सी० द्वादशश्रेणी प्रेस मे रह कर महाभारत के सशोधन का कार्य किया। १९१७ में इलाहाबाद आये और हिन्दी प्रेस मे कार्य करने लगे। कालातर मे मुट्ठीगज स्थित कन्या पाठशाला मे अध्यापक बन गए। यहा ठाकुर बलनाथ सिह की प्रेरणा से आपने विधवा विवाह के समर्थन मे एक पुस्तक लिखी जिस पर आपको एक सहस्र रुपये पारितोषिक स्वरूप ठाकुर साहब ने प्रदान किए और स्वव्यय से पुस्तक की तीन हजार प्रतिया छपाईं। १९२० मे जोशी जी मुरादाबाद चले आये। प० शकरदत्त शर्मा की शर्मा मैशीन प्रेस से प्रकाशित होने वाले शंकर का सम्पादन करने लगे। १९२५ में मुरादाबाद की बलदेवार्य संस्कृत पाठशाला मे अध्यापक बने। १२ वर्ष पश्चात् १९२७ मे प्रेम विद्यालय ताडीखेत में अध्यापन कार्य स्वीकार किया। पश्चात् गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे तीन वर्ष तक रह कर अध्यापन कार्य करते रहे। बीच में डेढ वर्ष तक (१९३४ के अन्त तक) पुनः ताडी खेत रह कर ज्वालापुर आ गये। स्वल्प समय पश्चात् मुरादाबाद चले गये और वहीं ग्रन्थ लेखन कार्य में संलग्न रहे। १९४९ ई० मे ८३ वर्ष की आयु में आपका निधन हुआ।

आर्यसन्देश विशेषांक

२४ मार्च आर्यसमाज स्थापना दिवस पर आर्यसन्देश का हम स्मरणीय सग्रहणीय विशेषांक प्रकाशित कर रहे है। विद्वान् लेखक अपने लेख निम्नांकित विषयों पर भेजने की कृपा करें।

१ स्वामी दयानन्द ने आध्यात्मिक जगत् को महान् देन दी है।
२ महर्षि दयानन्द आधुनिक तकनीकी के पोषक एव वैज्ञानिक थे।
३ भारतीय समाज के जागरण में आर्यसमाज का योगदान।
४ आर्यसमाज क्या चाहता है ?
५ हिन्दी भाषा के उत्थान मे आर्यसमाज की भूमिका।
६ वैदिक दार्शनिकत्व।
७ ऋषियो और योगियो की तेजस्वी परम्परा मे दयानन्द।

लेख भेजने का पता—

सम्पादक—आर्य सन्देश साप्ताहिक
१५, हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

कैसे होली आज मनाएं ?

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

गूज रहा है जहाँ अभय हो
मानवता का क्रन्दन,
होता जहाँ निरन्तर नियमित
दानवता का, पशु प्रवृत्ति का
कलुषित-कुटिल-कुमार्ग-स्वार्थ का
स्वागत व अभिनन्दन,
होता नही मनुजता का
शुचिता का, समरसता का,
सौम्यता का स्पन्दन,
असम जलता हो, जलती हो
पञ्चनदो की धरती,
ऋषियों का यह देश जल रहा
भारत माँ की पुण्य अस्मिता
जलती हो निशि-वासर,
होता हो
भुखमरी, गरीबी, महगाई का
ताडव नर्तन
भ्रष्टाचारो का फैला हो
जाल अमन्द-विवर्तन,
जहाँ सरे बाजार
नारी की अस्मत लुटती हो
नव वधुएँ भी जहाँ वह्नि की
हवि चढती हों
वहाँ आज हम
कैसे—
होली का त्यौहार मनाए ?
देश जल रहा, जलती है मानवता,
फिर—
क्या होली आज जलाए ?

विश्व मे सार्वभौम चार महादुःख हैं। इनकी अत्यन्त निवृत्ति का नाम ही पुरुषार्थ है। इनकी निवृत्ति के लिए प्रत्येक पुरुष को एक न एक दुःख के निवारण का व्रत लेना होता था। एक कहता था मैं अविद्या दुःख का नाश करूगा, दूसरा कहता मैं अन्याय-दुःख का नाश करूगा, तीसरा कहता था मैं अभाव-दुःख का नाश करूगा और चौथा कहता था मैं आलस्य दुःख का नाश करूगा। प्रत्येक आर्य को एक न एक व्रत लेना ही होता था और व्रत भी वह जो समाज, राष्ट्र और विश्व का आधार हो। उसे अनन्य व्रत होना होता था। निष्कमण्य व्रतहीन व्यक्ति को दस्यु माना जाता था। इसीलिए आर्य राष्ट्र अयोध्या मे कोई भी (नालस) व्रतहीन मनुष्य नहीं था। इस व्रतरूप अग्नि को आधान करनेवाला ही आर्य कहलाता था। शूद्र जहा आलस्य निवारणार्थ कर्ममय जीवन व्यतीत करना पसन्द करता था वहा उसका वह कर्म अन्य वर्णियो का अनुकरण करना था। फिर शूद्रो का व्रत क्या था—'शूद्रा स्वधर्मनिरतास्त्रीन्वर्णानुपचारिण' वे इन तीन व्रतधारियो मे से किसी व्रतधारी के समीप रहकर उसकी सेवा व्रत लेते थे। किसी समाजसेवा-व्रतहीन की नौकरी हम किसी अवस्था मे नही करेंगे यह उन का व्रत था। इस प्रकार उस नगरी मे कोई व्रतहीन नही था। इसलिए सब सुसयत थे। जिसके जीवन का एक निश्चित व्रत व पवित्र ध्येय होता है, उसे दुराचारी बनने की फुर्सत ही नही रहती। यही अयोध्या के दिव्य जीवन का रहस्य था।

तरुण मञ्च

तुम किधर जा रहे हो ?

लेखक प० बुद्धदेव विद्यालकार

वर्तमान युग मे रूस उस ओर जाने का यत्न कर रहा है। वहा १ नर नारी तम्बाकू पीना छोड रहे हैं, २ शराब पीना छोड रहे हैं ३ बड-बूढो का तथा अपने देश का और अपने देश के वीर-पूर्वजो का पूर्ण श्रद्धा से सत्कार करते हैं, ४ गृहस्थाश्रम को सुखी बनाने के लिए कुटुम्ब का आदर करते हैं। जो माता जितने अधिक बच्चो की मा होती है उसको उतना अधिक आदर दिया जाता है और राज्य से हर बच्चे के लिए उत्तरोत्तर अधिक सहायता मिलती है। ५ व्यभिचारी की खूब निन्दा की जाती है। ६ तलाक की प्रथा दिन-प्रतिदिन कडे नियमो मे जकडी जा रही है, जिस से गृहस्थो के लिए एक दूसरे को छोडना हसी खेल का सामान नही रहा, ७ वहा लडके लडकियाँ इकट्ठे पढते थे परन्तु इस के बुरे परिणाम देखकर उन्होंने ब्रह्मचर्य-रक्षा तथा सिपाहियो मे वीरता उत्पन्न करने के लिए लडके-लडकियो का इकट्ठा पढना बन्द कर दिया। ८ वहाँ बच्चे छुट्टी के दिन के अतिरिक्त दिनो मे सिनेमा थियटर आदि मे नही जा सकते और छुट्टी के दिन भी किसी अध्यापक अथवा किसी बडे के साथ जा सकते हैं, अकेले नही। ९ स्कूल मे छुट्टी के पश्चात् भी बालको पर कडा नियन्त्रण रखा जाता है, वे व्यर्थ इधर-उधर घूम नहीं सकते। १० मास्को में दस बजे के बाद १६ वर्ष से कम आयु के बच्चों को सडको पर घूमने की छूट नहीं। देखो! वे कितने वेग से तुम्हारी संस्कृति की ओर आ रहे हैं और तुम सिगरेट के पीने मे अपना गौरव मानते हो। शराब तुम मे बढ रही है, तुम्हारे धर्मग्रथ तुम्हें मना करते हैं, पर तुम उल्टे चलते हो तुम्हारे देश के कम्युनिस्ट बडो का अनादर, देश से द्रोह, तथा राम कृष्ण, चाणक्य शिवा जी अकबर सरीखे पूर्वजो से घृणा करना सिखाते हैं। हमारे देश मे गृहस्थाश्रम की खिल्ली उडाई जाने लगी है—तलाक पर जोर दिया जा रहा है—बच्चो की मा का अनादर होने लगा है। यहा लडके-लडकिया इकट्ठे नही पढते थे, उन्हे प्रेरणा करके इकट्ठा पढाया जा रहा है। हमारे देश के कम्युनिस्ट कालेजों मे हडताल करवाते हैं जिससे सिनेमा टिकट सस्ते दामो मे मिलें। तुम्हारे देश मे कृष्ण-सुदामा रात-दिन गुरुकुल मे गुरु जी के साथ रहते थे। आज स्कूल के समय के पश्चात् आवारागर्दी करते है। यहाँ रात को व्यर्थ घूमने पर नियन्त्रण लगाने का कोई नाम भी नही लेता।

रूस के लोगो ने जिन बातो को बुरा समझकर छोड दिया है, उन्हे तुम ग्रहण कर रहे हो। ऐसे लोगो को हमारे शास्त्रकार वान्ताशी कहते हैं। वान्ताशी का अर्थ है—वमन (उलटी) किए हुए को खानेवाला। मेरे प्यारे नौजवानो! तुम वान्ताशी मत बनो। सोचो तुम किधर जा रहे हो। यह रास्ता अयोध्या जाना तो दूर रहा मास्को भी नही जाता। तुम अयोध्या की ओर क्यो नही जाते। जो कुछ मास्को मे है वह सब अयोध्या मे है परन्तु उससे भी अधिक कुछ है वह है सयम। जिसकी ओर मास्कोवाले जा रहे हैं। एक और गुण भी है वह है, परमात्मा का प्रेम। जब मास्को सयम की ओर चला है तो प्रभु-प्रेम भी वहा आकर रहेगा परन्तु तुम तो सदा से सयम और प्रभु-प्रेम के धनी रहे हो। इसी के बल पर महात्मा गाधी ने बिना हथियारो के विदेशियो के हाथो से अपना राज्य ले लिया।

अब तुम स्वतन्त्र हो। अब तो तुम्हारे पास हथियार भी हैं। सयम और प्रभु प्रेम के साथ शस्त्र-बल को मिलाकर अपने राष्ट्र की रक्षा करो। चलो अयोध्या की ओर—सोचो तुम किधर जा रहे हो? □

जाग ! ज्वाला जाग !!

लेखक . यशपाल सुधाशु

परमात्मा ने जब सृष्टि की रचना और अपनी सर्वोत्तम कृति मनुष्य को बनाया, तो उसे युवक के रूप मे ही जगतीतल पर अवतरित किया। विशाल हृदय, भविष्य की आशाओं को निहारती प्रसन्न आखे, कुछ कर गुजरने को आतुर कसी मुट्ठिया, लक्ष्य की ओर बढते तीव्रगामी पग, ये ये वे युवा जिनके लिए ईश्वर ने आदेश दिया कि—'उत्क्राम महते सौभगाय'=ऐ पुत्र! महान् सौभाग्य के लिए उत्क्रमण करो, तुम्हारा पग उठे ऊपर उठने के लिए, आगे बढने के लिए। अब मेरा कार्य समाप्त हुआ अब तुम्हारा कार्य आरम्भ हुआ है। अपना भाग्योदय करने के लिए उत्क्रमण करना होगा। पुत्र ने पिता के आदेश को शिरोधार्य किया, उसने उत्क्रमण किया, परिक्रमण किया, विक्रमण किया। आवश्यकता पडी तो आक्रमण भी किया। क्या नहीं जानते कि इतिहास को गढा है युवाशक्ति ने। युग-युगों को हिलाया है युवाशक्ति ने। गौतम, कपिल, कणाद, जैमिनी की धरती पर आध्यात्म धारा युवाओ ने ही बहाई। चौदह वर्षों तक वन मे रहकर आततायियो के सिर कुचले हैं युवाओ ने। सयम की विषम जजीर को पहन, सेवा-साधना से श्रीराम को जिलाने वाले वीर हनुमान् युवा ही तो थे। कस के अन्यायपूर्ण शासन को पददलित करने वाल कृष्ण युवा ही तो थे। रक्तरजित रण भूमि मे सत्रस्त अशोक को अहिंसा और बौद्ध धर्म की दीक्षा देने वाले उपगुप्त युवा ही तो थे। अत्याचारी राजा नन्द के वश का विनाश करने वाले चन्द्रगुप्त युवा ही तो थे, बौद्ध और जैन नास्तिक-मतो का उन्मूलन करने वाले आचार्य शकर कुल ३२ वर्ष के युवा ही तो थे। वर्तमान युग के निर्माता वेदो के पुनरुद्धारक महर्षि दयानन्द युवा ही तो थे। विदेशों में आजाद-हिन्द फौज को तैयार करने वाले नेताजी सुभाष बोस क्या युवा नही थे? अथाह शक्ति के प्रतीक हैं युवक। परन्तु खेद है कि आज का युवक पलायनवादी हो गया है। दिनोदिन वह भाग रहा है पलायन कर रहा है, अपनी सभ्यता-सस्कृति सेवा-भक्ति देश-धर्म सभी से। गाँव के युवा शहरो की ओर और शहरो के युवा विलासिता की ओर उन्मुख हैं। अपने आपको, समाज को रिश्ते-नातो को भुलाने के लिए नशीले पदार्थों का अधाधुध उपयोग कर रहे हैं। १९६१ से अमेरिका से उठे हिप्पी आदोलन ने विश्व भर के युवाओ को झकझोर कर रख दिया है। इस आदोलन की देन है पॉप (पाप) सगीत। प्राचीन अमरिकन जाज सगीत की तो ताल-स्वर की एक विधा थी भी, परन्तु इसमें न ताल न स्वर बस है तो अमर्यादित हो हल्ला, भड भड। उसकी देन है जीन्स, कैबरे, डिस्को तथा नशों का बढता प्रकोप।

मेरे युवा साथी अपने को भुलाने की आवश्यकता नही, अपने को पहचानने की जरूरत है जानने की जरूरत है। तुम्ही तो थे जिन्होंने वीर भगत बनकर फासी के फन्दे पर युग-युगो तक गाया जाने वाला गीत गाया था। अपने खून से अपना चेहरा तमतमाने वाले, सलवारों के साये में हिन्दू धर्म की पताका फहराने वाले वीर बैरागी तुम्ही तो थे फासी घर मे दण्ड बैठक लगाकर मृत्यु को डराने वाले बिस्मिल तुम ही तो थे। राम-कृष्ण की धरती के सपूत जाग। उठ देख तेरी धरती विषैली हवा से झुलस रही है।

रोक दो हवा के कदम जो चली है आज,
सैक्स की धुनो पे गाय, जिन्दगी के साज
राष्ट्र को चहकता हुआ, प्राण चाहिए,
स्वाभिमान चाहिए और बलिदान चाहिए।

तुम्हारे आस पास क्या हो रहा है, अन्याय, अत्याचार शोषण, बलात्कार बढते विघटनकारी तत्त्व नृशस हत्याएँ और तुम देखते हुए भी नही देखते सुनते हुए भी नही सुनते।

बारात हो, या वारदात
अब खिडकियां नही खुलती।
क्या लहू पानी हो गया है?

युग पुरुष दयानन्द ने कहा था, अन्याय, अत्याचार करने वाले से अधिक सहने वाला पापी होता है तो क्या पाप के भागी हम नही बन रहे? मेरे युवा तेरे अगडाई लेने का समय आ गया है। जाग, जाग ज्वाला जाग। उपनिषद के ऋषि के इस मन्त्र को गा गुनगुना— उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत। उठो! जागो वरो को प्राप्त करके औरो को भी जगाओ। □

आर्य जगत् के समाचार

दिल्ली की आर्यसमाजो के नाम अत्यावश्यक—परिपत्र

आर्यसमाजो का वित्तीय वर्ष ३१ मार्च १९८५ को समाप्त हो रहा है। आप ३० अप्रैल १९८५ तक निम्नलिखित विवरण तथा धनराशि सभा कार्यालय मे भिजवाने की कृपा करें।

१ १ अप्रैल १९८४ से ३१ मार्च १९८५ तक का वार्षिक विवरण।
   (अ) यज्ञ सस्कार, शुद्धियाँ, अन्तर्जातीय विवाह, दिन के समय साधारण रीति एव बिना दहेज कराये गये विवाहो का तथा समारोहों का विवरण।
   (आ) समाज के अधीन चल रही सस्थाओ, विद्यालयो, चिकित्सालय, पुस्तकालय सेवा समिति आदि का विवरण।

२ १ अप्रैल १९८४ से ३१ मार्च १९८५ तक आय व्यय विवरण।

३ सदस्यता शुल्क का दशाश वेद प्रचार न्यूनतम १०१ रुपये और आर्यसन्देश का वार्षिक शुल्क २०/- रुपये।

आशा है कि आप समयानुसार कार्यवाही करके सक्रिय सहयोग प्रदान करेंगे।

निवेदक—डा० धर्मपाल
महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की मासिक बैठक

आर्य केन्द्रीय सभा की आगामी मासिक बैठक आर्यसमाज मन्दिर माडल टाउन दिल्ली-९ म १० मार्च १९८५ को अपराह्न ४-०० बजे आर्यसमाज स्थापना दिवस (२२-३-८५) के आयोजन के सम्बन्ध मे विचार करने हेतु आयोजित की गयी है।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि इस बैठक म पधार कर अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

महामन्त्री—सूर्यदेव

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बिरला लाइन्स का वार्षिकोत्सव १८ फरवरी से २४ फरवरी तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री प० रामकिशोर वैद्य की वेद कथा हुई।

तथा श्री प० हरिदेव, आचार्य गुरुकुल गौतम नगर द्वारा सामवेद पारायण यज्ञ हुआ।

मन्त्री—जयकृष्ण आर्य

अनाथ महिला का विवाह

३ २-८५ को आर्यसमाज समस्तीपुर के सरक्षण मे रह रही एक अनाथ कन्या अजना चक्रवर्ती का विवाह सस्कार श्री लाल बाबू सिंह ग्राम शली पुर जिला समस्ती पुर के साथ बड ही धूमधाम से सम्पन्न हुआ। समस्तीपुर की जनता पर आर्यसमाज के इस रचनात्मक कार्य का बहुत प्रभाव पडा है।

मन्त्री—नवल किशोर

वैवाहिक विज्ञापन

२८ वर्षीय, गुरुकुल स्नातक, एम० ए० हिन्दी, सस्कृत, आर्य प्रचारक तथा निजी कारोबार मे अच्छी आय (जाट जातीय) वर के लिए एक सुयोग्य एवं सुन्दर कन्या चाहिए। दहेज एव जाति बन्धन नही।

पत्र व्यवहार का पता—

भोजराज शास्त्री
आर्यसमाज माडल टाउन
सोनीपत (हरियाणा) १३१००१

भाषण प्रतियोगिता का पुरस्कार

आर्य युवक परिषद (रजि० दिल्ली के तत्वावधान मे महर्षि बोध उत्सव के शुभ अवसर पर ' राष्ट्रोत्थान मे महर्षि दयानद का योगदान'' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन कोटला फिरोजशाह नई दिल्ली मे महाशय धर्मपाल जी (प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली) की अध्यक्षता मे हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। इस प्रतियोगिता मे २५ आर्य सस्थाओ के छात्र-छात्राओ ने भाग लिया जिसमे सर्वप्रथम पारितोषिक व 'सत्यप्रिय चल 'विजयोपहार' आर्यसमाज लोधी रोड के छात्र राजू विज्ञानिक ने प्राप्त किया।

सभी वक्ता बच्चो को उत्साहवर्धनार्थ पुरस्कार स्वरूप तीन सौ रु० का वैदिक साहित्य परिषद् द्वारा एव एक हजार रुपये की नगद राशि सभा मे उपस्थित आर्य जनता द्वारा वितरण की गई।

—कमल किशोर आर्य

आर्यसमाज की कृपा

आर्यसमाज सीताराम बाजार के मन्त्री श्री बाबूराम गुप्त के पास २३ फरवरी'८५ को गोल डाकखाना नई दिल्ली मे बैठा था। वे वहा असिस्टेण्ट पोस्टमास्टर है? अचानक उनके कमरे में उन के पोस्टमास्टर श्री सेवा सिंह आए जिनका स्थानान्तरण उसी दिन बम्बई मे हुआ था। उनके साथ नये पोस्टमास्टर भी थे।

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई जब दोनो पोस्टमास्टरो ने स्नेह-दृष्टि स गुप्त जी को देखा और श्री सेवा सिंह ने मुस्कराते हुए उन्हे एक प्रशसापत्र दिया जिस मे अ० पो० मास्टर के तौर पर उन के निष्ठापूर्वक कार्य की सराहना बहुत सुन्दर शब्दो मे की गई थी।

मैंने उस पत्र को पढा और गुप्त जी को बधाई दी। उनका केवल यही कह था कि 'यह सब आर्यसमाज की कृपा है, उस मा की ही यह एक बडी शिक्षा है कि अपने कर्तव्य का पालन धर्म समझ कर जी-जान से करो।

ओमप्रकाश, प्रिंसिपल

आर्यसमाज अशोक विहार फेज-२ का वार्षिक निर्वाचन

आर्यसमाज अशोक विहार (गुरुकुल) फेज-२ का वार्षिक निर्वाचन दिनांक २४ फरवरी'८५ को आचार्य श्री दीनानाथ जी सिद्धान्तालंकार की अध्यक्षता मे सर्व सम्मति से निम्नलिखित प्रकार से सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री पी० एन० सरीन
मन्त्री—श्री अशोक बवन
कोषाध्यक्ष—श्री बलदेव राज सचदेवा
अन्तरग सदस्यो के चुनने का अधिकार प्रधान जी को सभा ने प्रदान किया।

मन्त्री, आर्यसमाज अशोक विहार, फेज-२

वार्षिक यज्ञ, उत्सव

सम्भूदयाल दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम, दयानन्द नगर, गाजियाबाद २८वां वार्षिक यज्ञ महोत्सव दिनाक ७ अप्रैल रविवार से १४ अप्रैल १९८५ रविवार तक समारोहपूर्वक आयोजित किया गया है जिसमे उच्चकोटि के विद्वान्, सन्यासी व भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती

वार्षिक चुनाव

आर्य युवक परिषद् (रजि०) दिल्ली का वार्षिक चुनाव १७ मार्च, १९८५ रविवार को आर्य समाज दीवान हाल, चादनी चौक, दिल्ली-६ में मध्याह्न २ बजे सम्पन्न होगा।

—कमल किशोर आर्य

आर्यसमाज गंगागंज प्रयाग का वार्षिकोत्सव

इस आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव १३ मार्च से १७ मार्च तक होने जा रहा है। इस अवसर पर अनेक विद्वान्, याचक पधार रहे हैं।

मन्त्री—त्रिभुवन सिंह

आहूवान

—स्व० कुवर सुखलाल आर्य मुसाफिर

गफलत मे क्यों पडे हो भारत के मौ निहालो ।
जागो हुआ सवेरा हिन्दुस्तां के लालो ॥
दुनिया की गैर कौमे देखो तो कहा पहुँची ।
फिर अपनी दुर्दशा पर तुम इक निगाह डालो ॥
सच मानिये कि नेशन पल भर मे उठ उठो हो ।
तुम इसको उठाने का बीडा अगर उठा लो ॥
फूट और अविद्या ने अधेर मचाया है ।
इन दुश्मनो को अपने घर से अभी निकालो ॥
पाखण्ड की चट्टानें बढने ही नही देंगी ।
क्या देखते हो इनको मिल जुल के पीस डालो ॥
नीच और अछूत कह कर ठुकरा रहे हो जिनको ।
भाई हैं ये तुम्हारे इनको गले लगा लो ॥
अव्वल तो तुम किसी को गिरने न दो "मुसाफिर' ।
गलती से अगर कोई गिर जाये तो उठा लो ॥

बोधोत्सव एवं यज्ञ

आर्यसमाज पश्चिम विहार द्वारा २४ फरवरी १९८५ को ऋषि बोधोत्सव यजुर्वेद (शतक) एव गायत्री महायज्ञ के साथ बडी धूमधाम से मनाया गया । यज्ञ के ब्रह्मा माता आशा रानी जी थी व यज्ञ के सयोजक श्री भरत सिंह गुप्त थे । उन्होने ४ युवक दम्पतियो को यजमान बनाया । इस अवसर पर समाज के प्रधान श्री हीरालाल चावला ने ऋषि बोध सम्बन्धी विषय पर प्रकाश डाला । तत्पश्चात् ऋषि लगर का भी आयोजन किया गया था ।

हरिचन्द अयरथ
A I/११० पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६३

निर्वाचन सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाँवा का साधारण अधिवेशन १७ २-८५ को आर्य-समाज भीमनगर, गुडगाँवा मे हुआ । इस मे वर्ष १९८५ के लिए निम्नलिखित अधिकारियों का चुनाव श्री भीमसैन दीवान की अध्यक्षता मे सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ ।

प्रधान—श्री मुन्शीराम सचदेवा
उपप्रधान—श्री सत्यपाल आर्य
महामन्त्री—श्री कन्हैयालाल आर्य
मन्त्री—श्री ओमप्रकाश कालडा
कोषाध्यक्ष—श्री विद्याभूषण शास्त्री
भण्डारी—श्री दौलतराम सेठी
लेखा निरीक्षक—श्री हरिदत्त शास्त्री ।

इस अवसर पर आर्यसमाज भीमनगर, गुडगाँवा की ओर से सहभोज का आयोजन हुआ ।

विनीत .
कन्हैयालाल आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन . ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी० (सी०) ७५६

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

साप्ताहिक

दिल्ली आर्य प्रतिनधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वर्ष ६ अंक १७ | रविवार, १७ मार्च, १९८५ | आर्य संवत्सर १९६०८५३०८४ | फाल्गुन २०४१ | दयानन्दाब्द—१६०

पंजाब का उपेक्षित हिन्दू और अकाली नेताओं के तेवर

सत लोंगोवाल के साथ सात अन्य अकाली नेताओ की रिहाई पंजाब समस्या हल करने मे सहयोगी कदम है। लगभग सभी राजनैतिक वर्गों द्वारा स्वागत भी किया गया है, परन्तु अकाली नेताओ के तेवर अभी बदले नही हैं। शिरोमणि प्रबन्धक कमेटी के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री प्रेमसिंह लालपुरा ने अपनी मागें पुन दोहराई हैं। जब तक वे सात मागें पूरी नही होती, उनका अल्टीमेटम बरकरार है। उन की मागे हैं—सभी अकाली नेता रिहा किये जाये। अखिल भारतीय सिख छात्र फेडरेशन पर से प्रतिबन्ध हटे। उन सिख सैनिको को फिर से बहाल किया जाये, जो स्वर्ण मन्दिर मे सैन्य कार्रवाई के दौरान अपनी बैरको से जोश में बाहर निकल आए थे। अकाली दल की तदर्थ समिति के सयोजक श्री सुरजन सिंह ठेकेदार का कहना है—पंजाब और अन्य स्थानो पर गिरफ्तार अकाली नेताओ और सिख युवको को रिहा किया जाए, विशेष न्यायालयो की समाप्ति हो, पंजाब मे काला कानून समाप्त हो।

दूसरी ओर १३ मार्च से २७ मार्च तक दिल्ली मे आल इण्डिया सिख कान्फ्रेंस ने "विरोध दिवस" मनाने का निश्चय किया है। वे दिल्ली दगो मे मरे लोगो की न्यायिक जाच के लिए २७ मार्च को वोट क्लब पर धरना भी देगे। विस्मय की बात तो यह है इन अकाली नेताओ का बयान भी अटल नही है। लगता यह है कि इनके पीछे उग्रवाद की शक्ति अधिक प्रभावी है। जब तक उग्रवाद को सख्ती से नही दबाया जाता और शान्तिप्रिय नेताओ को विश्वास में नही लिया जाता समस्या का समाधान सम्भव नही।

पंजाब मे गैर सिख या हिन्दू ५० प्रतिशत से कम नही हैं। सिखो मे आध से अधिक नामधारी, निरंकारी, उदासी, राधास्वामी बदई सिख, राम गढिये और कम्युनिस्ट सिख अपने को अलग कौम नही मानते। इन सबको मिला-जुलाकर जो बहुसख्या है। ये सब हिन्दू समाज के अग हैं और सरकार को चाहिए कि अकालियो से बातचीत करते समय पंजाब के हिन्दू प्रतिनिधियो को शामिल किया जाये तभी समस्या का सही हल सामने आ सकता है। ●

देश में प्रजातंत्र और उसका हृदय ठीक कार्य कर रहा है

विधानसभा के निर्वाचन मे अधिकाश राज्यों मे कांग्रेस (आई) को प्रबल लोकमत मिला, जो इस बात को प्रकट करता है कि देश की सामान्य जनता ने राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को ही इस चुनाव का भी मुख्य मुद्दा माना है। परन्तु साथ ही जिन राज्यो मे जनता ने यह समझा कि कांग्रेस (आई) का स्थिर विकल्प है वहा पुन विरोधी दलो को अवसर प्रदान किया। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि देश में प्रजातन्त्र और उसका हृदय ठीक स्थान पर हैं। इन चुनावो ने पुन यह दर्शाया कि विश्व मे सबसे परिपक्व लोकतन्त्र भारत मे ही है। साथ ही यह भी सिद्ध कर दिया कि चुनावो मे जनमानस का स्थान ही सर्वोपरि होता है। चुनावो मे प्रयुक्त प्रचार साधन आदि की बात गौण है। जनता नये सिरे से देश का पुनर्निर्माण चाहती है, यह भी असदिग्ध है। पिछले लोकसभा निर्वाचन के उपरात युवा प्रधानमन्त्री माननीय राजीव गाधी ने प्रशासनिक एव न्याय व्यवस्था का सुधार, काले धन पर आधारित समानान्तर अर्थव्यवस्था की समाप्ति, पडोसी देशो से स्पष्टवादिता एव विरोध पक्ष को आदर देने सम्बन्धी जो घोषणाएँ की उनका बहुत व्यापक प्रभाव हुआ। प्रगति के अनेक कार्यक्रम समयबद्ध रूप से चलेंगे, ऐसा विश्वास प्रकट किया गया। ३५ वर्षों मे दलबदल रोकने का प्रभावकर उपाय नही हो सका। वह एक मास के अन्दर ही दलबदल विरोधी कानून के रूप मे सामने आ गया, जिससे लोकतन्त्र की मर्यादा की रक्षा की जा सके। इस विधेयक के पारित होने से विरोधी दलो को ही अधिक लाभ होगा, जिनके विधायक सत्ता पक्ष की ओर सरलता से आकर्षित हो जाते थे। पत्रकारो की स्वतन्त्रता से भी लोक-अभिव्यक्ति को बढावा मिलेगा। पर साथ ही पत्रकारिता के सही विकास के लिए पीत पत्रकारिता से भी बचना चाहिए।

केन्द्र सरकार की उपरोक्त प्रगतिशील एव जनहितकारी नीतियो ने जनमानस को प्रभावित किया और उसका परिणाम विधानसभा चुनाव परिणामो के रूप मे सामने है। नि सन्देह बहुमत ने पुन श्री राजीव गाधी के नेतृत्व मे विश्वास व्यक्त किया है। इस सदर्भ मे एक विचारणीय बात जरूर है। वह यह कि चुनाव इतने महगे हो गए हैं कि ९९ प्रतिशत लोग चुनाव नही लड सकते। इस प्रश्न पर अवश्य विचार होना चाहिए अन्यथा आम जनता की चुनाव-प्रक्रिया मे दिलचस्पी नही रहेगी, जो जनतन्त्र के लिए घातक होगा। —डा० आनन्द प्रकाश

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल द्वारा

आर्यसमाज स्थापना दिवस

२४ मार्च, १९८५ को आर्यसमाज मन्दिर मालवीय नगर मे प्रात ८ बजे से १ बजे तक आर्यसमाज स्थापना दिवस बड समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। अनेक उच्चकोटि के विद्वान् एव नेता पधार रहे हैं। इस अवसर पर ऋषि लगर का भी आयोजन है।

—रामसरन दास आर्य, मन्त्री

स्थापना दिवस पर प्रसाद वितरण

आर्यसमाज शालीमार बाग की ओर से झुग्गी झोपडी कालोनी मे प्रात ८ बजे से ११ बजे तक वेद प्रचार एव मिष्ठान्न वितरण का आयोजन किया गया है।

—डा० रघुबीर 'मुमुक्षु', प्रधान

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान मे

आर्यसमाज स्थापना दिवस का भव्य समारोह

२४ मार्च, रविवार को २ बजे से ५ बजे तक विट्ठल भाई पटेल हाउस रफी मार्ग नई दिल्ली के प्रागण मे धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर अनेक गण्य-मान्य प्रतिष्ठित विद्वान् एव देश प्रसिद्ध नेता पधार रहे हैं।

अध्यक्ष—श्री रामगोपाल शालवाले

वक्ता—श्री जैन मुनि सुशील कुमार, श्री सीताराम केसरी, श्री रामचन्द्र 'विकल', श्री द० शिवकुमार शास्त्री, डा० वाचस्पति उपाध्याय

अधिक से अधिक सख्या में पधार कर धर्मलाभ उठायें।

प्रधान—महाशय धर्मपाल | महामंत्री—सूर्यदेव

सम्पादक—यशपाल 'सुधांशु' एम० ए० | व्यवस्थापक—डा० गणेशीलाल | प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

सत्संग वाटिका

सुख का आधार 'सेवा'

श्याम सुन्दर स्नातक, आर्य महोपदेशक

यो आध्राय चकमानाय पित्वोऽन्नवान् सन् रफिताय उपजग्मुषे ।
स्थिर मन कृणुते सेवते पुरोतो चित् मर्डितार न विन्दते ।

★

वद मे समझाने की अपनी अपूर्व शैली है। इस मन्त्र मे कहा है—सेवा करने का अभ्यास करना चाहिए। यह भी एक प्रकार की साधना है पुण्य है। अन्त म इसम सुख मिलता है। जो एसा नही करते उनकी गति का इस वेद मन्त्र मे वर्णन है। कहा है— मर्डितार न विन्दते उसे सुख नही मिलता जो गरीब की सेवा नही करता। उसे ठुकराता है उसकी बद नसीबी को देखकर इतराता है जो खाता पीता हो कर भी पास आये साधनहीन दुखी आपद्ग्रस्त के लिए मन को सकीर्ण कठोर कर लेता है और सेवते पुरो तो चित्' उसके सामने सेवन करता है (मौज करता है)।

इसी सूक्त मे आगे कहा है—मनुष्य को दूरदर्शी बनना चाहिए सेवा करना बहुत कठिन कार्य है ठीक है। परन्तु सेवा करने वाले अपना ही कल्याण कर रहे होते है क्योकि ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रा मनुष्य के सब दिन एक समान नही रहते। रथ के चक्र के समान यह जीवन है—सुख-दुख दोनो जीवन के साथ साथ चलते हैं। जब मनुष्य देखे कि दिन अच्छे है दो रोटी आराम से मिल रही हैं, यही उपयुक्त अवसर है सेवा का। पर सेवा उसकी करे जिसका सहारा कोई नही, जो कृश है दुखी है। वेद मे इसे इस रूप मे कहा है—

> ओ३म् पृणीयात् इद् नाधमानाय
> तव्यान् द्राघीयासम्
> अनुपश्येत पन्थाम् ।
> ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रा अन्यमन्य
> उपतिष्ठन्ति राय ॥

यह धन मैल है हाथ का आज है कल नही। सेवा भी उसी की होती है जिसने पहले की हो। आज हम दूसरो का ध्यान करते हैं कल हमारा भी दूसरे ध्यान करेंगे, परवाह करेंगे।

इस सन्दर्भ मे एक बात विशेष है। ससार मे सब से भयावह मृत्यु है। यह मृत्यु केवल गरीब को भूखे को ही नही आती रजे हुए=तृप्त भी मौत के घाट उतरते है। जो दूसरो की, दुखियो की सेवा करते हैं। अपनी क्षमताओ के अन्तर्गत दूसरो को लाभान्वित करते हैं, वे दुखी नही होते कम्पित नही होते। इसके विपरीत कृपण व्यक्ति जो अपनी विद्या अपने अर्जित या सञ्चित धन या साधना अभ्यास से प्राप्त बल आदि से दूसरो का भला नही करते वे समय आने पर सुख से वचित रहते हैं। कहा है—

> ओ३म् न वा उ देवा क्षुधमिद् वध ददु,
> उताशितमुपगच्छन्ति मृत्यव ।
> उतो रयि पृणतो नोपदस्यति,
> उतापृणन् मर्डितार न विन्दते ।

किसी भी जन्म-प्राप्त व्यक्ति की मृत्यु अवश्यम्भावी है। अन्तर जीवन-यापन की विविधता मे है। एक बात ध्यान देने योग्य है—बहुत से भक्त लोग =धार्मिक जन एसा मान लेते हैं कि जो भी द्वार पर आये दो। इसमे सुपात्रता का ध्यान अति आवश्यक कहा है—

> कृशाय कृतविद्याय वृत्तिक्षीणाय सीदते।
> अपहन्यात् क्षुधा यस्तु न तेन पुरुष समः॥

मनुस्मृति मे मनु जी ने लिखा है जो समर्थ होकर भी कार्य करने की शक्ति होने पर भी काय न कर के भिक्षा मांगते हैं वे अगले जन्म मे उन्ही घरो में पशु बनते हैं। सस्कारविधि मे और सत्यार्थप्रकाश मे महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने भी श्लोक देकर स्पष्ट किया है। वहाँ शब्द हैं—

> (शास्त्रे) ते हु प्रेत्याभिगच्छन्ति
> पशुताम् अन्नदायिनाम् ।

आज कल हम देखते हैं कि धर्म का सहारा लेकर अनेक गेरुवे कपडो मे झुण्ड के झुण्ड धनी व्यक्तियो की Calonies (कालोनियो मे) आकर अनेक झूठे सच्चे बहानो से पैसा मांगते हैं। कोई यात्रा के नाम से, कोई भण्डारे के नाम से तो कोई मदिर बनवाना है। ५ लाख लगेंगे आप जो दे सकें दे दें। प्राय लोग फस जाते हैं। यह रोग अब उत्तरोत्तर बढ ही रहा है सावधानी अपेक्षित है। ये लोग विद्याहीन होते हैं एकत्रित धन को व्यसनो मे लगाते हैं। इस से पाप बढता है। भिक्षा देने मे, सहायता देने मे भी विवेक एव सावधानी चाहिए।

सुख प्राप्ति के चार आधार हैं—उपासना के अतिरिक्त धर्म शान्ति, सतोष और सेवा। इस लेख मे सेवा पर विचार व्यक्त किये हैं। आशा है स्वाध्यायशील पाठक सार ग्रहण करेंगे। अन्त में समापन करने से पूर्व श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य जी के जीवन की घटना भी लेखनीबद्ध करता हूं। बहुत पुरानी बात है एक व्यक्ति ने आ कर मद्रास मे उन से अपनी व्यथा सुनाई—मेरी जेब कट गई है, मैंने लाहौर जाना है, ये पता है। मैं Advocate हू, वकालत करता हू। उन्होंने कहा कल आइयेगा। इतने मे उन्होने लाहौर फोन कर के मित्रो द्वारा जाच कराई। सब कुछ झूठ निकला अगले दिन जब वे महानुभाव आये तो पुलिस देख कर स्तब्ध रह गये। सेवा कीजिए परन्तु सचेत होकर। सेवाधर्म परमगहन योगिनामप्यगम्य। ●

पता बी० २०१ ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली

हम प्रसन्न रहें

सुरेशचन्द्र वेदालकार

विश्वदानी सुमनस स्याम पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।
तथा करत् वसुपनिवसूना देवा ओहानो अवसामभिष्ठा ॥
ऋ० ६।५२।५

हम (विश्वदानी) सदा, सवकाल (सुमनस) आनन्दित प्रसन्न मन (स्याम) रहे (नु) और (उच्चरन्तम्) उदय होते हुए (सूर्य) सूर्य का (पश्येम) देखते रहें। (वसूना) एश्वर्या का (वसुपति) ऐश्वर्य पति (देवान्) देवो का (ओहान) वहन करने वाला और (अवसामभिष्ट) रक्षण करने के साथ आने वाला म श्रेष्ठ प्रभु (तथाकरत्) वैसा करे।

इस ससार म दुख और चिन्ता, ये मनुष्य का घर रहते हैं। इस दुख और चिन्ता का महायुद्ध अनादिकाल से अनवरत रूप म चल रहा है। ज्यो ज्यो वैज्ञानिक उन्नति हो रही है एक नई सभ्यता का विकास हो रहा है य चिन्ताएं बढती जा रही है। ससार म फैली हुई व्याधियो रोगो और दुखो का कारण चिन्ता है। चिन्ता ही मनुष्य के सुखमय जीवन क लिए सबस बडी बाधा है। स कृत के एक कवि ने लिखा है—

> चिन्ता चितासमा व्युक्ता
> बिन्दुमात्रविशेषिता।
> सजीव दहते चिन्ता,
> निर्जीव दहते चिता ॥

इसी भाव को व्यक्त करते हुए दूसरे कवि ने इस बात को इस प्रकार कहा है—

> चिन्ताचिताद्वयोमध्ये
> चिन्ता एव गरीयसी।
> चिता दहति निर्जीव
> चिन्ता दहति सजीवकम् ॥

चिन्ता और चिता की तुलना में चिन्ता अधिक भयकर है। चिता निर्जीव शरीर को जलाती है और चिन्ता सजीव शरीर को जलाती है। चिन्ता मनुष्य को एसे खा जाती है जैसे घुन लकडी को अदर म खा जाता है। चिन्ता शरीर का नाश कर जाती है। उसम हृदय की बीमारिया, रक्तचाप हो जाता है। अत चिन्ता को छोडना चाहिए। चिन्ता चरित्र और स्वभाव पर प्रभाव डालती है। मुझे एक वृद्ध की कथा का स्मरण हो आता है। वे पेशन ले रहे थ। उन्हे पेशन लेते लेते उससे भी अधिक समय हो गया था जितने वर्ष उन्होने वास्तविक नौकरी की थी। हम लोग अक्सर उनके विषय मे चर्चा करते रहते थे कि यमराज के दरबार मे उनके कागज गायब हो गए हैं। इस लम्बी आयु मे भी व सदा प्रसन्न और खुश नजर आते थे। एक बार एसा हुआ कि जब वे अपनी पेंशन लेने ट्रेजरी मे गए तो ट्रेजरी के पेंशन देने वाले बाबू ने कहा बाबू जी, आपका पेंशन का कागज इधर उधर हो गया है, मिल नही रहा। अगल महीने दोनों महीनो की ल लीजिएगा। बाबू जी, मुस्कराते हुए चले आए। ऐसी घटना दो-तीन महीने लगातार हुई पर उन्हें तब भी कोई चिन्ता न हुई। एक बार उनका कागज मिल गया। बाबू ने उनसे क्षमा-याचना की और उन्हे पेंशन दने लगा। वे बडे जोर से हसे। सभी उनकी हसी की आवाज सुनकर उधर देखने लगे। एक ने ऐसे हसने का कारण पूछा। बाबू जी बोले मैं तो समझता था कि मेरा वहा का (यमलोक का) ही कागज गायब हो गया है पर महीनो मे पता चला कि यहा का भी गायब हो सकता है। उन्होने अपनी प्रसन्नता का कारण और दीर्घायुष्य का कारण चिन्ता न करना और प्रसन्न रहना बताया। उन्होने यह भी

(शेष पृष्ठ ११ पर)

★ दयानन्द वचनामृत ★

हमने लोगो के कठोर हृदयो को कोमल बनाना है, दूर भागतो को आकर्षित करना है। यदि वे अत्याचार भी करे तो अपने उदात्त उद्देश्य को दृष्टि मे रखकर हमे तो उनसे प्रेम ही करना चाहिए। धर्म के नाम से बदला लेने की भावना सर्वथा अभद्र है। □

हमारे उपदेश आज विरेचक औषधि की भाति घबराहट अवश्य लाते है। परन्तु है वे जातीय शरीर के सशोधक और आरोग्यप्रद, वर्तमान आर्य सन्तान चाहे जो हमे कहे। □

सम्पादकीय

ओ३म्
आर्य सन्देश

पंजाब समस्या

उचित वातावरण की प्रतीक्षा

सरकार ने पजाब समस्या के समाधान के लिए लोंगोवाल एव तलवडी के साथ छ बड अकाली नेता रिहा कर सद्भावनापूर्ण कदम उठाया है। यह फैसला श्री राजीव गाधी के इस बयान के आधार पर लिया कि सरकार पंजाब समस्या को जल्दी से जल्दी हल करने के लिए सही माहौल बनाएगी।

गृहमन्त्री श्री एस०बी० चव्हाण ने प्रेस कान्फ्रेंस मे स्पष्ट किया कि सरकार हर तरह की आतंकवादी गतिविधियों से सख्ती से निपटेगी। कानून और व्यवस्था की स्थिति को स्थिर रखने को सर्वोच्च प्राथमिकता देगी और उग्रवादियो, राष्ट्रविरोधी व समाजविरोधी तत्त्वों के खिलाफ कडी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा है अगर सम्भव हुआ तो सरकार संसद के बजट अधिवेशन में ही एक विधेयक पेश करेगी, जिसमे राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को बढावा देने वाले आप्रवासी भारतीयो की सम्पत्ति जब्त करने का प्रावधान होगा।

श्री राजीव गाधी पजाब समस्या का जल्दी से जल्दी समाधान चाहते है। सरकार सही माहौल बनाने का प्रयत्न भी कर रही है परन्तु अकाली जिस प्रकार आनन्दपुर साहब प्रस्ताव को मुख्य मुद्दा बनाकर चल रहे हैं तथा अलगाववाद को बढावा दे रहे है, ऐसे वातावरण में समझौते के आसार नजर नही आते। अकाली दल अपने मोर्चे को और भी सशक्त करने के लिए सभी सिख दलो को एकजुट करने के प्रयत्न मे लगे है। इस समय विचार किया जा रहा है लोंगोवाल अकाली दल, तलवडी अकाली दल, स्त्री अकाली दल, मास्टर तारासिह अकाली दल, यूथ विंग अकाली दल और आल इण्डिया सिख स्टूडेण्ट्स फैडरेशन को एक मञ्च पर लाया जाये। सभी अकाली दलों का नाम खत्म कर एक नाम शिरोमणि अकाली दल रखा जाये। यूथ विंग अकाली दल की जगह आल इण्डिया स्टूडेन्ट्स फैडरेशन अकाली दल के हरावल दस्ते का काम करे। सभी सिख धार्मिक सगठनो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के घेरे मे लाये जाये। इन सगठनो मे भिडरावाला सम्प्रदाय, अखण्ड कीर्तनी जत्था, निर्मल सम्प्रदाय तथा निहग सगठन हैं। इस सारे काम को सिरे चढाने के लिए सिह साहेबान को अधिकार दिये जाने की सम्भावनाएं हैं। सिह साहेबान जो हुक्मनामा जारी करगे वह सभी को मान्य होगा।

आनन्दपुर साहब प्रस्ताव का प्रारूप जत्थेदार टोहरा के कहने पर सरदार कपूरसिंह आई०पी०एस० (सेवामुक्त) ने तैयार किया था। बाद में आनन्दपुर प्रस्ताव को अन्तिम रूप देने के लिए अकाली नेताओ की कमेटी बनाई गई थी। उसमे बहुमत जत्थेदार टोहरा की विचारधारा वाले सदस्यों का था। इस प्रस्ताव का सबसे अधिक राजनैतिक लाभ जत्थेदार गुरचरण टोहरा को हुआ जिसके कारण वह आज तक पूर्ववत् शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के प्रधान चले आ रहे हैं। इस प्रस्ताव के प्रारूप को बताते हुए लिखा है—

'मिथा विच पथक आजाद हस्ती दा एहसास कायम रखना है अग्गे अजेहा देश, काल घडना जिस विच सिख पथ दे कौमी जजबे तथा कौमियत दा प्रगटावा पूरन तौर ते कुदरती तरीके नाल प्रफुल्लित हो सके।"

इस प्रस्ताव के साथ अलग-अलग घटको द्वारा अनेक असम्भव माग उठाई जाती रही। पिछले सालो मे पजाब के हरे भरे प्रदेश मे जिस प्रकार खून की धारे बहाई जाती रही यह सब अलगाववाद की उन्मादी विचार-धारा के कारण ही बहाई गई।

अब देखना यह है कि जिस एकता और अखण्डता का नारा देकर श्री राजीव गाधी सत्तारूढ हुए हैं, जिस दृढता और और स्वच्छता का उन्होने जनता जनार्दन को अहसास दिलाया है, उस दृढता और कठोरता को आगे भी अपनाए रख सकगे या नही। हमारे नीति ग्रथो मे साम, दाम, दण्ड और भेद—चारो प्रकार मे से जिस से काम निकल सके अपनाने के लिए कहा गया है। सबसे उचित तो सीधी उगली से घी निकल जाये यही अच्छा है अन्यथा टेढी तो करनी पडती ही है। लोक कहावतो मे कहा गया है—राजकारी गरम की, दुकनदारी नरम की। दुकनदार अच्छा वह जो ज्यादा मधुर प्रीतिकारक व्यवहार करे। राजा अच्छा वह है जो अपने कानून के पालन के लिए कठोरता अपना सके। गृहमन्त्री ने जैसे कहा है उग्रवादी तथा अराष्ट्रीय तत्त्वो से सख्ती से निपटा जायेगा—यह उनकी घोषणा अभिनन्दनीय है।

—यशपाल सुधाशु

प्रतिक्रिया

सम्पादक सुधाशु जी!

आपका सम्पादन पढकर हर्ष हुआ। आप ने वक्ता के रूप मे तो धाक जमाई ही है देखना यह है कि सम्पादन के क्षेत्र मे कहा तक धाक जमाते हैं।

कविवर मनीषी के सम्पादन के बाद से आर्यसन्देश का स्तर पिछड गया था। अब बहुत कुछ आशाएँ जगी हैं। मेरी ओर से शुभकामनाएँ।

—धर्मदेव चक्रवर्ती १६ माडल बस्ती दिल्ली

आर्यसन्देश के आप द्वारा सम्पादित लगभग सभी अंक पढे। पढ कर मन बहुत प्रसन्न हुआ। सभी अको के लेख प्रेरणादायक एव शिक्षाप्रद थे। ३ मार्च का सम्पादकीय 'प्रकृति का महोत्सव' जो होली और वसन्त दोनो के उत्सव एव लालित्य को उजागर कर रहा था, बेहद पसन्द आया। ऐतिहासिक सिकन्दर सम्बन्धी लेख नवीन शोध प्रस्तुत करता है। पत्र की प्रगति पर हार्दिक बधाई। —सुशील कुमार

आर० ६८६ न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली

आर्यसन्देश' की प्रति निरन्तर मिल रही है। इस कृपा के लिए आपका हृदय से आभारी हूं।

१० फरवरी १९८५ के अक मे सुरेशचन्द्र वेदालकार द्वारा लिखी गई उक्ति सराहनीय है। सम्पादकीय, महर्षि दयानन्द शताब्दी समारोह सम्पन्न एव अन्य समाचार बहुत ही गहन व उपयोगी जानकारी देने वाले है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में आपका बहुत ही गौरवशाली स्थान है। आप निरन्तर प्रगति के पथ पर बढते रहे, यही मेरी हार्दिक मगलकामना है।

अपनी कृपा सहयोग व सद्भावना निरन्तर बनाये रखियेगा।

—श्यामसुन्दर शर्मा
सम्पादक पालिका समाचार

आप जैसे सुयोग्य मनीषी विचारक युवा विद्वान के द्वारा अब आर्य सन्देश मे दिव्यता आयी है। आपकी पवित्र कर्मठता एव सुललित सम्पादन कला से 'आर्य सन्देश' निरन्तर निखरता रहे यही शुभकामना है।

—आचार्य रवीन्द्र आत्रेय

वाणी

लेखक प० सत्यपाल शास्त्री

जगदीश्वर की इस कलापूर्ण सृष्टि मे मानव योनि के लिए सर्वोत्तम और अलौकिक देन है वाणी। जिसके द्वारा मानव अपने हृदयगत विचारो को साकार रूप देता है। यदि मानव को वाणी प्रदान न की गई होती तो मानव भी पशुओ की तरह अपने आन्तरिक विचारो को व्यक्त न कर पाता। इसकी जानकारी के लिए गूगो को देखा जा सकता है जो कि बेचारे अपने विचार भी सकेतो द्वारा ही प्रकट कर पाते है। पशु पक्षी और वाणी-विहीनो को देखकर ही मानव ने पुकार की है—

वाङ् म आस्येऽस्तु।

अर्थात् "मे आस्ये वाक् अस्तु ' मेरे मुह मे बोलने की शक्ति बनी रहे। वाणी हो और बोलने की शक्ति-वाक शक्ति न हो तो वाणी का न होना बराबर ही है। वेद ने तो—

पावका न सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञ वष्टु धिया वसु ॥

(ऋ० १ । सू० ३ । १०)

इस मन्त्र मे वाणियो का वर्णन किया गया है। वे पावका=पवित्र करने वाले व्यवहारो को बताने वाली, सरस्वती =प्रशसनीय और सब उत्तम विद्याओ की प्रदात्री, वाजिनीवती=विद्याओ से सिद्ध की हुई क्रियाओ से युक्त वाणी को प्राप्त करो। साथ ही वेद माता ने कहा—

चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्।
यज्ञ दधे सरस्वती ॥

(ऋ० १ । ३ । ११)

जो आप्त अर्थात् पूर्ण विद्या युक्त और छल आदि दोष रहित विद्वान् मनुष्यो की सत्योपदेश करने वाली यथार्थ वाणी है, वही सब मनुष्यो के सत्य ज्ञान होने के लिए योग्य होती है। अविद्वानो की नही। अत वेद ने पुन कहा कि मनुष्यो को—

इळा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुव।
बर्हि सीदन्तु अस्त्रिध ॥

(ऋ० १ । १३ । ९)

इळा—जो कि पठन पाठन की प्रेरणा देने वाली सरस्वती=जो उपदेश रूप ज्ञान का प्रकाश करने और मही=जो सब प्रकार से प्रशसा करने योग्य है ये तीनो वाणी कुतर्क से खण्डन करने योग्य नही हैं तथा सब सुख के लिए तीनो प्रकार की वाणी सदैव स्वीकार करनी चाहिए, जिस म निश्चलता से अविद्या का नाश हो।

चतुष्पाद गौ

गौ का अर्थ वाणी भी है। यह 'वाक् चतुष्पाद अर्थात् चार पाद वाली है। वाक् चत्वारि पदानि परिमिता।'

नाभि, उर और कण्ठ मे तीन पाद तो गुप्त है और जो चतुर्थ पाद है वह व्यक्त है। इस प्रकार ये वाणी के चार पाद हैं। इन चार पाद अर्थात् स्थानों मे यह वाणी उत्पन्न होती है। परन्तु इन वाणी के स्थानो को साधारण मनुष्य जान नही सकते, इन्हे योगी लोग ही ध्यान धारणा से जान सकते हैं।

मनीषिण ब्राह्मणा विदु।

ज्ञानी ब्रह्म को जानने वाले ही इस बात को जान सकते हैं। अथर्ववेद ने तो आदेश दिया है कि—

ऊर्जा मधुमती वाक्।
मधुमतीं वाचम् उदेयम्।
मण्डल २। काण्ड १६। म० १, २।

वाणी मीठी हो और बलशालिनी हो। मनुष्य मीठी और बलयुक्त वाणी से आपस मे बातचीत करें।

इतनी आवश्यक वस्तु भी उस परमेश्वर ने बिना मांगे प्रदान की है। यह उसकी कितनी बडी दया है। इसे प्राप्त करके यदि अनुकूल उपयोग न कर पाये तो कही ऐसा न हो कि विश्व विधाता अपनी व्यवस्था के अन्तर्गत हम से इस परम देन वाणी का सम्बन्ध विच्छेन्द कर दें और परिणामत हम गूंगे की भांति आंख, नाक और हाथ आदि के सकेत करते दिखाई दें।

वाणी का उपयोग किया और कर्कशा वाणी के रूप मे, तो क्या भला कर्कशा-वाणी का ससार मे कोई मूल्य होता है? वाणी की सार्थकता तो मधुर- भाषी रहने मे है। किन्तु हम इसे स्वीकार क्योकर करें?

देखिये! उस शिशु के जीवन पर विचार कीजिये जो अभी-अभी ससार मे आया है। ससार मे आने पर उसका सर्वप्रथम सस्कार महर्षि दयानन्द जी महाराज ने 'जातकर्म लिखा है। उसमे एक विधि है कि जब बालक उत्पन्न हो उसकी वाणी पर सोने की शलाका से शहद मे डुबोकर, ओ३म् लिखा जाये।'

इस प्रकार की विधि का आशय क्या है? इस पर थोडा सा विचारना आवश्यक है। सोने की शलाका से ही क्यों लिखा जाये? किसी अन्य धातु की सहायता से क्यो न लिखा जाये? यत धातुओ मे सोना सब से अधिक मूल्यवान् है। साथ ही सौन्दर्य मे कमाल है। चमक सब से निराली है, जो चमक सदैव उसके साथ रहती है। यहा बालक पर सस्कार डाला जा रहा है कि स्वर्ण के सारे गुणो का बालक मे समावेश कर दिया जाये। बालक की वाणी से निकलने वाला एक-एक शब्द स्वर्ण की भाति चमकता हुआ, सौन्दर्य से परिपूर्ण होकर मूल्यवान् निकले। खनिज विद्या विशेषज्ञो की राय है कि "सोना पहिनने, खाने आदि से कैसर नही होता है।' अत इस धातु का विधान ऋषियों ने रक्खा है।

फिर क्या आवश्यकता पडी कि शहद मे ही भिगोकर लिखा जाये? किसी पाग अथवा चीनी, गुड, शीरा आदि से लिखा जा सकता था। किन्तु ऐसा नही किया गया।

वस्तुत चीनी, गुड-पाग आदि जितनी भी मिठाइया हैं ये सब की सब एक एक एक वनस्पति का सार हैं और कारण का नाश करके बन पाती हैं किन्तु शहद फूल को नष्ट करके नही निकलता अपितु फूल भी सुरक्षित रहता है और शहद भी बनता है। शहद मे सभी वनस्पतियों का सार, मधुमक्षिकाओ ने एकत्रित किया होता है। फिर वसत जैसी ऋतु का शहद तो और भी अधिक वनस्पतियो के रस से सयुक्त होता है। साथ ही शहद की सात्विकता भी निराली है। परिणामत बालक जब बोले तो शहद की भाति मधुर-भाषी हो। सस्कृत मे शहद को "मधु कहते हैं। अत बालक जब से बोलना सीखे तभी से सोने की भांति मूल्यवान् और शहद की भांति मीठा ही बोले। इसमें वाणी की उपयोगिता है। रही बात वाणी पर ओ३म् लिखने को। यह भी रहस्य की बात है साहित्य मे अन्य अनेक शब्द भरे पडे है उनमे से चाहे जिसे लिख लेवें?

वेद ने इसका उत्तर दिया—

ओ३म् प्रतिष्ठ

अर्थात् 'ओ३म्' का ही प्रतिष्ठान करो। अन्य किसी शब्द का नही। क्योंकि ओ३म् को वेद ने—

'ओ३म् ख ब्रह्म'

कहकर पुकारा है अर्थात् "ओ३म्' सर्वव्यापक और सब स महान् है। साथ ही मानव जीवन के प्रारम्भिक समय से लेकर जीवन के अवसान पर्यन्त वेद ने एक मात्र साधन 'ओ३म्' को ही बताया। और कहा—

'ओ३म् क्रतो स्मर'

हे क्रतो! कर्मशील मानव! तू अपने जीवन भर "ओ३म्' का स्मरण कर। इस सब का अभिप्राय है कि जीवन भर तू आस्तिक बना रह। जीवन की कठिन से कठिनतम घडियो मे भी ईश्वर-विश्वास बनाये रख। ईश्वर-विश्वास से ही आत्म-विश्वास उत्पन्न होता है। इसी का नाम स्वाभिमान है। इसी से मानव धरती पर रह पाता है।

यह जातकर्म सस्कार जहां बालक के लिए जीवनोपयोगी है, वहां विशेषरूपेण इस सरस्वती देवी कल्याणी वेदवाणी को महत्ता प्रदान करने वाला है। सार निकला कि बालक की वाणी से निकलने वाला एक-एक शब्द ईश्वर मे विश्वास और आस्था प्रतिष्ठित करते हुए स्वर्ण की भाति मूल्यवान् और मधु की भाति मधुमय हो। तभी तो मानव आत्म-विश्वास के आधार पर प्रभु के सामने अपने को प्रस्तुत करता हुआ, उपासक के रूप मे कहता है—

'वाचा वदामि मधुमत्'

परमेश्वर! मैं जब भी मुंह खोलू तो मधु की भांति मीठा ही बोलूं। वाणी का माधुर्य बेगानों को अपना बना लेता है। अपनो को बेगाना बना देती है वाणी की कर्कशता, रूखापन और निष्ठुरभाषिता।

इसी भाव को लेकर वेद ने कहा—

'ऋच वाच प्रपद्ये'

वेद कहता है कि वाणी को ऋचा बना लो—

एक कवि ने इसी भाव को लिखा—

बनोगे खुसरवे-अक्लीम मे
दिलखोरी जुबां होकर।
जहांगीरी करेगी ये
अदा नूरेजहां होकर ॥

मधुरता वाणी का सत् प्रयोग है। वाणी ऋचा बन जाये। वाणी की कर्कशता और कटुता से महा भयकर परिणाम निकलते देखे गये हैं और वाणी के माधुर्य से बडे से बडे विरोधियो को पिघलते देखा गया है। जिसका इतिहास साक्षी है। जानकारी के लिए भारत का इतिहास पढ जाइये। जिसमे आपको अनेक उदाहरण इस प्रकार के मिल जायेंगे।

सन्तो की सूक्तियां शूरवीरों के उद्बोधन, समरांगण की ललकारें, कवियों की कविताएं और मा की लोरियां आदि के विभिन्न रूपों में प्रयुक्त वाणी राष्ट्र की उन्नति का कारण बनती है इसके सत्प्रयोग से जहाँ राष्ट्र उन्नति की चरम-सीमा पर पहुँच जाते हैं, वहा असत्प्रयोग से अवनति की पराकाष्ठा करके ही दम लेते हैं। वैदिक वैजयन्ती कन्धो पर रख यूरोप के अन्धकारमय वातावरण मे प्रकाश जगाने वाले पुलस्त्य, व्यास और नारद आदि ऋषियो ने जिस भारत को जगद्गुरु के स्थान पर पहुचाया था, महर्षि गौतम, कपिल, कणादादि ने जहां बैठकर आत्मा परमात्मा के गुप्त रहस्यो का उद्घाटन किया था, उसी पावन भूमि मे वाणी के कुप्रयोग से लका और कुरुक्षेत्र के महा भयकर युद्ध भी हुए। शताब्दियो तक, सहस्राब्दियों तक भी उनके घाव न भरे जा सके। महारानी कैकेयी के वचनों की कीमत महाराजा दशरथ को ही नही, पीढियो तक को चुकानी पडी।

वर्तमान दिल्ली, पूर्व नाम इन्द्रप्रस्थ, में निर्मित पाण्डवों के चामत्कारिक राजप्रसाद के झरोखे में बैठी हुई द्रौपदी ने भूल से "अन्धों के अन्धे ही होते हैं" यदि ये शब्द नही कहे होते तो शायद सम्भव है

[illegible]

पाठकगण ! लोहे का लगा तीर निकल सकता है परन्तु वाणी का बाण जीवन भर कसकता रहता है। प्रताप और मानसिंह पृथ्वीराज और जयचन्द के इतिहास अभी पुराने नही पडे हैं। परिणामत मानसिंह और जयचन्द परायो से मिलकर घर का सत्यानाश करा बैठ।

पानीपत की तीसरी लडाई मे भोसला वश के मराठो ने भरतपुर के राजा सूरजमल और इन्दौर के महाराज होल्कर को वाणी के बाणो स घायल न किया होता तो व क्यो वापिस रातो रात घर लौट आते ? इन महा भयकर परिणामो को देखकर ही मानव पुकार कर कहता है कि—

'जिह्वामूले मधूलकम्

प्रभो ! मेरी वाणी मे मधु भर दो। इसे मधुमय कर दो। मधुमयी वाणी ही यश और श्री की जननी है। अत शतपथ ब्राह्मण ने वाणी का कामधेनु कहा है।

वाग्वै कामधेनु

वाणी सफल कामनाओ की पूर्ति की साधिका है। कोई भी काय ससार मे ऐसा नही जो मीठी वाणी से पूरा न हो सके। कहा है कि—

कागा काको धन हरे
कोयल काको देय।
एक जिह्वा के कारणे,
जग अपुनो कर लेय॥

महामना आचार्य प्रवर चाणक्य महाराज ने अपने शास्त्र मे राजदूत का विशेष लक्षण मृदुभाषी होना माना है। पाण्डवो ने योगेश्वर श्री कृष्णचन्द्र महाराज को सम्भव है इसीलिए अपना प्रतिनिधि बनाया हो। प्रिय भाषा मे कहे गये वाक्य विरोधी पर भी अपना प्रभाव किये बिना नही रहते। अप्रिय सत्य भी होगा तो गले से नीचे नही उतर पायेगा। अत अत व्यास जी ने कहा—

सत्य ब्रूयात् प्रिय ब्रूयात्
न ब्रूयात् सत्यम प्रियम्।

प्रियवाणी से कहा गया दोष भी मानव सुगमता से स्वीकार कर लेता है महाकवि तुलसी ने मीठी वाणी को ही वशीकरण मन्त्र कहा है—

वशीकरण एक मन्त्र है
तजि दे वचन कठोर

साथ ही रहीम ने जूते खाने का सस्ता नुस्खा लिखा—

जिह्वा कह भीतर गई जूते खात कपाल।

ससार मे हम देखते हैं कि अनेक मनुष्य अत्यत ही कटुभाषी होते हैं। उनकी कर्कशा वाणी के कारण बात की बात में लडाई हो जाती है। ऐसे कठोरभाषी लोगों के लिए वेद के माधुर्य को एक कवि ने यो प्रकट किया—

कुदरत को नापसन्द है सख्ती बयान मे।
इससे नहीं लगाई है हड्डी जबान में॥

अत वाणी को अत्यन्त सरल और मधुर रक्खा जाये। युद्ध से विमुख के निम्न शब्दो ने मैदान मे लाकर खडा कर दिया—

सुखिन क्षत्रिया पार्थ !
लभन्ते युद्धमीदृशम्।

वेद की भाषा म यू कहा जा सकता है—

मैत पन्थामनुगा भीम एष।

एक साधारण से लकडहारे को वाणी की चोट ने महाकवि कालिदास बना दिया। जिस का सस्कृत साहित्य मे एक ही स्थान है। वाणी के एक हा बाण ने प्रेम मे प्रमत्त नवयुवक को सन्त तुलसीदास बनाकर छोडा। बात हा तो थी लग गई। देश भारत को दो भाषाओ के हीरे मिल गये दो महाकवियो के रूप मे।

वीरभूमि राजस्थान के तो कण कण मे वे हुकारें और ललकारें आज भी सुनाई देती हैं कि—

उद्यान ते पुरुष ! नावयानम्

जब शूरवीर चूडावत पत्नी के प्रेमपाश मे बधे कह उठे कि—नाह युद्धे गमिष्यामि युद्धन किं प्रयोजनम्। इस निबल और कायर पुरुषो जैसी वाणी को सुनकर क्षत्राणी मचल उठी और अपने पति को वद की भाषा में बोली—

कुल मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहित।
बोली राजपूतस्य नाथ !
आज ते मति पधारो रण माँहि।
तलवार बताओ हू जास्यू थे
चूडि पहिन लो घर माँहि॥

क्षत्राणी की इस स्वाभिमान भरी भाषा न चूडावत को झिझोड सा दिया और साथ ही सीधा हाथ तलवार की मूठ पर जा पडा। बस फिर क्या था कुपित क्षत्रिय कुमार शत्रु की मौत बनकर टूट पडा। वाणी का प्रभाव सूर्य बनकर चमका। जयपुर के महाराज जयसिंह को महाकवि बिहारी की मीठी चोट—

अली कली ते ही बिध्यो

रास्ते पर ले आई। जिससे जयसिंह की कमान सीधी हो गई। भूषण और चन्दबरदाई न शिवा जी और पृथ्वीराज को कभी भी दुर्बल नही होने दिया। ★

पता—वेद सदन ककर खेडा मेरठ।

वार्षिक निर्वाचन

आर्यसमाज पूरनपुर का वार्षिक निर्वाचन दिनाक २७ २ ८५ मे विधिवत सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्न पदाधिकारी सर्व सम्मति से चुने गये।

प्रधान—श्री तुलसीराम आर्य
उप प्रधान—श्री जय जयराम आर्य
श्री महा० सियाराम आर्य
मन्त्री—श्री सुखलाल आर्य
उपमन्त्री—श्री जितेन्द्र कुमार आर्य
श्री केशवदत्त आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री विजय कुमार आर्य
पुस्तकाध्यक्ष—श्री द्वारिकाप्रसाद आर्य
सूचना एव प्रसार मन्त्री—
डा० भगवान सिंह आर्य

हिन्दी बोली 'आई' से

रचयिता—सुरेन्द्रकुमार शास्त्री

हिन्दी बोली आई म तू आई मैं छली गई।
मेरे कारण तू आई थी तू आई मैं चली गई।
मैंने तुझ को वोट दिलाय तूने मरी वाली बोली।
जब आई बारी ससद मे, तूने निज बोली बदली।

तू पली स्वदेशी बोली म, पर शपथ विदेशी मे क्यो ली ?
उपकार मेरे सब भूल गई क्या हुआ तुझे बतला पगली ?
यदि ऐसा गतिविधि रही तेरी क्या बरशगी जनता अगला ?
मेरे ही टुकडो पर पलत मेरा ही चीर हरण करती।

मैं बनी राष्ट्र की जब भाषा मेरा अवमानन करता
लकर के शपथ विदेशी म सम्मान तुझे मिल पायगा ?
कोई पैदा होगा रूसी जा तुझ को सबक सिखायगा।
विजयालक्ष्मी पडित का जो तुझ को याद दिलायगा।

ओ भाई ! इस कर्तव्य मे देखो नहि दोष अकेला तेरा है।
अच्छे अच्छे सिहो को भी इसी दोष न घेरा है।
रखते हैं नाम दमकिपा जो, व भी तो मुझ को भूल गय।
टी० वी० पर राष्ट प्रसारण मे अग्रजी वे भी बोल गय।

हिन्दी हित दावा करते जो हिन्दी पर धावा बोल गये।
राखी पर लाज यह जाखड' न सस्कृत मे जिनकी शपथ हुई।
श्री नारायण की कृपा हुई, सस्कृत म यह भ शपथ हुई।
बलराम नारायण मिल करके हिन्दी की नैया पार कर।

राजीव खिवैया नैय्या के उनसे मिलकर सुविचार करें।
अब समय है सभा विधानो का, उनमे हिन्दी मे शपथ चले।
बदलें अब भी अपने पथ को, अब तक जो यह कुपथ चल।

फार्म ४ नियम ८ के अतर्गत

आर्यसन्देश साप्ताहिक की घोषणा

प्रकाशन स्थान	नई दिल्ली
प्रकाशन अवधि	साप्ताहिक
मुद्रक का नाम	डा० धर्मपाल
(क्या भारत का नागरिक है ?) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	भारतीय
पता	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली।
प्रकाशक का नाम	डा० धर्मपाल
(क्या भारत का नागरिक है ?) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	भारतीय
पता	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली।
सम्पादक का नाम	यशपाल सुधाशु
(क्या भारत का नागरिक है ?) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	भारतीय
पता	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली।
उन व्यक्तियो के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हो।	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली।

मैं डा० धर्मपाल एतदद्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एव विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

डा० धर्मपाल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

दिनाक १७ मार्च १९८५

प्रदूषण—समस्या और समाधान

लेखक यशपाल आर्यबंधु,

परम पिता परमात्मा ने अपनी इस विशाल सृष्टि मे जीवो के कल्याण के लिए नाना ऐसे पदार्थ उत्पन्न किये है कि जिनके बिना जीवन की कोई कल्पना भी नही कर सकता। वायु और जल उनमे से सर्वप्रमुख है। इन दोनो के बिना जीवन की कल्पना की ही नही जा सकती। किंतु दुर्भाग्य यह है कि यही दोनो आज सर्वाधिक दूषित हो रहे हैं। यह प्रदूषण ईश्वर प्रदत्त नही मानव निर्मित है। हम उनमे प्राणप्रद वायु को निरन्तर श्वास प्रश्वास द्वारा दूषित करते रहते हैं। किंतु यह तो जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। सांस लिये बिना प्राणी जीवित नही रह सकता। अतः श्वास-प्रश्वास द्वारा वायु के प्रदूषण को रोका नही जा सकता। दुःख और आश्चर्य तो इस बात के लिए है कि जो मानव बिना किसी अनिवार्य आवश्यकता के वायु को दूषित करता रहता है—वह है धूम्रपान के द्वारा वायु प्रदूषण। धूम्रपान से होने वाला वायु प्रदूषण देखने मे बड़ा नगण्य सा लगता है किंतु यदि सामूहिक रूप से इस प्रदूषण का आकलन किया जाये तो सृष्टि मे प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण सिद्ध हो सकता है। धूम्रपान से होने वाली व्यक्तिगत हानियां एवं रोग तो होते ही हैं, प्रदूषण भी अत्यधिक होता है।

आज मानव ने जिस प्रकार की औद्योगिक सभ्यता का विकास कर रखा है, उसमे प्रदूषण दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। और स्थिति इस विस्फोटक स्थिति को पहुँच चुकी है कि यदि इसे तुरन्त न रोका गया तो शायद हम पीने के लिए स्वच्छ जल और सांस लेने के लिए स्वच्छ प्राणप्रद वायु भी उपलब्ध न हो सके। कल कारखानो से उठने वाला धुआं तथा अन्य प्राणघातक गैसें तथा इंजनो और मोटरो से निकलने वाला धुआं वायु को अत्यधिक मात्रा मे दूषित कर देता है। इसकी कल्पना हम इसी बात से कर सकते है कि अमरिका आदि मे बड़े-बड़े महानगरो के बड़े बड़े चौराहो पर ट्रैफिक पुलिस के सिपाही को सांस लेने के लिए आक्सीजन का सिलण्डर अपने कन्धे पर उठाए रखना पड़ता है। अन्यथा मोटरो के धूए से उन्हें सांस लेना भी दुश्वार हो सकता है। अभी हाल ही मे भोपाल मे घटी भयंकर गैस दुर्घटना कितनी भयावह थी कि जिसकी कोई कल्पना भी नही नही कर सकता। ये सब औद्योगिक सभ्यता के ही तो अभिशाप हैं।

फरवरी ८४ के दूसरे सप्ताह मे चण्डीगढ़ मे प्रदूषण विषयक सेमिनार मे पढ़े गये शोध पत्र प्रदूषण की मुंह बोलती तस्वीर है। मध्य प्रदेश कौंसिल आफ साइंस एण्ड टेक्नोलोजी के सचिव तथा विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन की वनस्पति शास्त्र की अध्ययनशाला के प्रमुख डा० प्रेमशंकर दुबे का एतद् विषयक वक्तव्य भी कोई कम चौंकाने वाला नही।

डा० दुबे के अनुसार सारणी ताप बिजली घर से प्रतिदिन उड़ने वाली एक हजार टन कोयले की राख तथा सल्फर आक्साइड गैस आस पास के वनो के लिए खतरा पैदा किये हुए है। स्थिति की गम्भीरता इसी से आंकी जा सकती है। इस पर भी दुःख इस बात का है प्रदूषण से होने वाली हानियो से हम आंखें मूंदे बैठे हैं। किन्तु आंखे मूंद लेने से खतरा टल नही जाता। लगता है भोपाल की घटना को लोग भूल से गये हैं। क्योकि मरने वाले तो बेचारे मर गये। जिन की आंखें गईं सो तो चली ही गईं। जिन्हे पक्षाघात हो गया, वे बेचारे उसे भोग ही रहे हैं। ये सब तो हो चुके। अब किसे चिन्ता है कि इस से भविष्य मे कुछ और भी हानि हो सकती है।

वायुमण्डल मे जो गंदगी मानव निरन्तर प्रक्षिप्त किये जा रहा है वह वर्षा आदि के द्वारा पृथ्वी पर लौट आती है। इससे नदियो का जल ही नही अपितु पृथ्वी के भीतर का जल भी कुछ अंश तक दूषित हो जाता है। फिर कीटनाशक पदार्थो के नाम पर कितना विष हम पृथ्वी पर फैंक रहे है इसकी कौन कल्पना कर सकता है? विषाक्त जल तथा वायु से पेड़ पौधे भी विषाक्त होते चले जा रहे हैं। कितना विष हमारे भीतर पहुंच रहा है इसका अनुमान लगाने मात्र से ही हृदय कांप उठता है। यह और बात है कि विष का प्रभाव हमे तत्काल दिखाई न दे क्योकि वह धीरे धीरे पिलाया जा रहा है और हम भी उसके अभ्यासी होते चले जा रहे हैं पर ऐसा नही कि इसका दुष्प्रभाव न हो। वैज्ञानिको का कथन है कि इस विषमय वातावरण का प्रभाव जीन्स (प्रजनन अणुओ) पर सर्वाधिक होता है। इस कारण आने वाली पीढ़ी हमारी तुलना मे इससे अधिक प्रभावित होगी। भावी संतति के निर्बल क्षीणकाय और विकलांग होने की सम्भावनाएं दिनो दिन बढ़ती जा रही है। वैज्ञानिक निरन्तर चेतावनी दे रहे है कि यदि प्रदूषण की यही गति रही तो पृथ्वी का सम्पूर्ण जीवन गम्भीर संकट मे पड़ सकता है। मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ के मेडिकल कालेज के शरीर रचनाशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डा० मेहदी हसन का मत है कि वृद्धावस्था मे जिस प्रकार स्मरण शक्ति का ह्रास हो जाता है, उसका कारण एक प्रकार के पिगमेंट्स होते हैं जो कि वृद्धावस्था मे मस्तिष्क मे तेजी से बनने लगते हैं। इन पिगमेंट्स के कारण स्मरणशक्ति इस प्रकार की हो जाती है कि बीस साल पहले की बातें तो याद आने लगती हैं किन्तु दो दिन पूर्व की घटनाएं विस्मृत होने लग जाती हैं। डा० मेहदी हसन ने चेतावनी दी है कि यदि प्रदूषण इसी प्रकार बढ़ता रहा तो आने वाले बीस पच्चीस वर्षों मे यह स्थिति हो जायेगी कि किसी भी अवस्था के व्यक्ति मे इस प्रकार के पिगमेंट्स मस्तिष्क मे बनने लगेंगे और वह दो दिन पूर्व की घटनाओ को भूलने लगेगा। राजस्थान बोर्ड आफ इण्डियन मेडिकल के अध्यक्ष वैद्य श्री ब्रह्मानन्द त्रिपाठी ने वियतनाम की घटना से सिद्ध किया है कि प्रदूषण विकलांगता का कारण होता है। यह बात भोपाल की गैस दुर्घटना के संदर्भ मे भी सिद्ध हो चुकी है। यह विकलांगता केवल महिलाओ के वर्तमान गर्भस्थ बालको तक ही सीमित नही अपितु भावी संतति के लिए भी हानिकारक हो सकती है। ऐसा वैज्ञानिको का मत है।

वैज्ञानिको की इन चेतावनियों और प्रदूषण के दुष्प्रभावो को ध्यान मे रखते हुए संयुक्त राष्ट्रसंघ ने विश्व के सभी देशो के नाम एक अपील जारी की है जिसमे कहा गया है कि— 'धरती केवल एक है, यह धरती तथा इस पर उपलब्ध पानी, हवा और दूसरे जीवनधारक तत्त्व यदि एक बार विषाक्त और भ्रष्ट हो गये तो दुबारा इनका निर्माण करने का सामर्थ्य मनुष्य का नही है। इसलिए इस प्रदूषण को रोकने के लिए यथासम्भव उपाय किया जाना चाहिए।' (देखें—लेखक की पुस्तक 'हवनयज्ञ की वैज्ञानिकता पर आचार्य वागीश द्वारा लिखित भूमिका प्राप्ति स्थान आर्यसमाज रेलवे हरथला कालोनी मुरादाबाद)

आचार्य वागीश ठीक ही लिखते हैं कि 'संयुक्त राष्ट्रसंघ ने यह अपील तो जारी कर दी है किन्तु प्रश्न यह है कि प्रदूषण को रोकने का उपाय क्या है?" फिर स्वयं ही इसका उत्तर देते हुए आचार्य जी लिखते हैं कि—'हमारा सुविचारित मत है कि अग्निहोत्र ही इस समस्या का एकमात्र समाधान है।" हमारी भी यही मान्यता है कि इस समस्या का एकमात्र समाधान अग्निहोत्र ही है। हमने अपनी पुस्तक 'हवन यज्ञ की वैज्ञानिकता' मे इसका विस्तार के साथ वर्णन किया है। लेख का कलेवर हमे उन सबका यहां वर्णन करने की अनुमति नही दे रहा। फिर भी हम यहां यह बता देना चाहते हैं कि प्रदूषण की समस्या का संसार के पास एकमात्र समाधान यदि कोई है तो निश्चय ही वह अग्निहोत्र ही है। आचार्य वागीश जी के इस कथन से हम पूर्णतया सहमत हैं कि—' विश्व के तमाम वैज्ञानिक मिल कर बहुत सोच विचार और अनुसन्धान के बाद जो भी कोई उपाय सोचेंगे। उसमे किसी न किसी रूप मे अग्नि के साथ प्रदूषण नाशक पदार्थों का संयोग अवश्य सम्मिलित करना पड़ेगा और इस तरह वह अग्निहोत्र का ही बदला हुआ रूप होगा।' (देखें-भूमिका हवन-यज्ञ की वैज्ञानिकता)। इस सम्बन्ध मे महर्षि दयानन्द सरस्वती का कथन है कि — ब्रह्माण्ड मे संचार करने वाला जो वायु है वही जीवन का हेतु है। अन्तर वायु द्वारा ठीक-ठीक व्यापार होवे इसलिये बाहर का ब्रह्माण्ड वायु शुद्ध रहना चाहिए। ब्रह्माण्ड वायु शुद्ध करने के लिए यज्ञ कुण्ड में घृत कस्तूरी केशरादि सुगंधित पुष्टिकारक द्रव्यो का हवन करना चाहिए।" (देखें—पूना प्रवचन—यज्ञ और संस्कार विषयक) महर्षि आगे लिखते हैं कि—' अब कोई शंका करे कि होम एक छोटी सी कृति है इससे ब्रह्माण्ड वायु कैसे शुद्ध होगी? समुद्र मे एक चम्मच भर कस्तूरी डालने से क्या सारा समुद्र सुगंधित और शुद्ध होगा? इसका समाधान यह है कि सो बड़े रायते मे थोड़ी सी ही बघार से रुचि आ जाती है, यह प्रत्यक्ष है। इसकी जैसी उत्पत्ति समझी जाती है तद्वत् यह प्रकार भी है। कोई ऐसी शंका करे कि होम तो यहां करो और अमेरिका मे उसका परिणाम कैसे होगा? तो उसका समाधान यह है कि वायु द्वारा शुद्धि सर्वत्र फैले यह वायु का धर्म है।" (पूना प्रवचन—वही) और वायु अपने धर्म का निर्वाह करता ही है। फिर अग्नि मे डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होकर सूर्य को प्राप्त होता है और सूर्य अपनी किरणें समस्त संसार पर बिखेर देता है, अतः इसमे शंका कहां रह जाती है।

वेद मे अनेक स्थलो पर अग्नि को देवदूत कहा गया है। यही समस्त देवो तक हवि पहुंचाता है। ब्राह्मण ग्रंथो मे इसे देवताओ का मुख कहा गया है। जिस प्रकार हमारा यह मुख सभी भोग्य पदार्थों को ग्रहण कर एवम् उन्हें दांतो द्वारा पीस कर फिर शरीर के अंग प्रत्यंग को परिपुष्ट करता है, ठीक उसी प्रकार देवताओ का यह मुख भी समस्त देवों को परिपुष्ट करता है, इसमे तनिक भी संदेह नही। घृत विशेष करके गोघृत अत्यन्त विषनाशक है। यदि संसार के समस्त विषों को एक अकेले गोघृत से हरना चाहें तो निर्विवाद हर सकते हैं। संसार घृत जैसा कोई भी अन्य ऐसा पदार्थ उत्पन्न नही कर सका जो प्रज्वलनशील भी हो और स्निग्ध भी सुगन्धित भी हो और पुष्टिकारक भी तथा इन सबसे ऊपर जो विषनाशक भी हो। ऐसे उत्तम पदार्थ से संसार के कल्याण की भावना से जब हवन यज्ञ किया जायेगा तो निश्चय ही

(शेष पृष्ठ ११ पर)

द्रौपदी चीर-हरण एक कोरी कल्पना : महाभारत की अन्तः साक्षी

लखक महावीर नीर विद्यालकार गुरुकुल कागडी 'विद्यालय विभाग हरिद्वार

महाभारत की अन्त साक्षी के आधार पर—जब जूआ खेला गया और द्रौपदी को सभा मध्य अपमानित किया उस समय श्री कृष्ण जी महा राज अपनी द्वारिकापुरी से भी और हस्तिनापुर से भी अति दूर थे। इस लिए एक महान पुरुष को चीर हरण जैसी वीभत्स घटना मे चित्रित करना बुद्धिमानो की प्रज्ञा का श्रेष्ठ उदाहरण नही।

भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के भू० पू० महानिदेशक श्री प्रो० ब्रजवासी लाल का कथन है कि रामायण और महा भारत कोई काल्पनिक इतिहास नही है किन्तु उसके मूल मे सत्यता है। भले ही उसमे बाद मे कवि की कल्पना की उडान और सवर्द्धन के कारण बढ चढ कर बात लिखी गयी हो। श्री लाल ने महाभारत काल की सत्यता जानने के लिए हस्तिना पुर इन्द्रप्रस्थ वरनावा कुरुक्षेत्र मथुरा, पानीपत आदि का उत्खनन व सर्वेक्षण करके उपरोक्त विचार अभिव्यक्त किये हैं। इसमे कोई शक नही कि मूल रूप मे घटना मे सत्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे महाभारत की श्लोक सख्या मे निरन्तर वृद्धि की चर्चा की है। स्वामी जी के विचार पठनीय और मननीय हैं।

हम भी यहाँ महाभारत की अन्त साक्षी के आधार पर उस तथ्य का निरूपण करेंगे जो हमारे हृदयो से अन्ध श्रद्धा की जडता वश आज भी उखडता नही है। महाभारत की विशिष्ट घटना है— द्रौपदी का भरी सभा मे अपमान कौरव वश के विनाश मे इस घटना का महान् महत्त्व है। न जूआ (द्यूत) होता और न यह घृणित कार्य होता। विनाशकाले विपरीत बुद्धि। ज्ञानी मानी शूरवीर परस्पर कट कट कर मर गए। वेद के ज्ञाता होने पर भी युधिष्ठिर ने जूआ खेला। वेद कहता है— अक्षैर्मा दीव्य कृषिमित् कृषस्व कहते हैं। शकुनि की चालाकी से हार गए। क्यो जी! स्वय हारने पर अन्यो को दाव पर लगाने का क्या अधिकार था? सर।

द्रौपदी का भरी सभा मे अपमान हुआ। उसे कटुवचन कहे गए दुशासन ने उसकी केश राशि पकड कर जबरदस्ती सभा में लाकर घोर अपमान किया। किन्तु द्रौपदी विदुषी थी उसने स्पष्ट रूप से सभासदो से पूछा कि— महाराज युधिष्ठिर ने अपने आप हार जाने के बाद यदि मुझे दाव पर लगाकर हारा है तो मैं कैसे हारकर दासी भाव को प्राप्त हो गयी। इस बात को सुनकर जहाँ दूसरे लोग मुह लटकाकर या फेर कर बैठे रह गए वहाँ सभा के मध्य विदुर जी न सम योचित सत्यवाणी का प्रयोग कर द्रौपदी के सभा में लाए जाने और उसके अपमान को महान् दुष्कृत्य और धर्महीन कृत्य बताकर कौरवो के विनाश की आशका अभिव्यक्त की। समस्त दुष्ट मण्डली की निन्दा की। वे कहते हैं—

न हि दासीत्वमापन्ना कृष्णा भवितुमर्हति।
अनीशेन हि राज्ञैषा पणे न्यस्तेति मे मति ॥
सभा पव ६६।८

तदनन्तर विकर्ण ने भरी सभा में जो साहस का परिचय दिया वह इतिहास की महान घटना है। विकर्ण ने सब सभासदो से प्रश्न किये तो किसी ने उसे उत्तर न दिया। तब विकर्ण बोला—

साधारणी च सर्वेषां पाण्डवानामनिन्दिता
जितेन पूर्व चानेन पाण्डवेन कृत पण।
इय च कीर्तिता कृष्णा सौबलेन पणार्थिना
एतत् सर्व विचार्याह मन्ये न विजितामिमाम्।

जब यह बात विकर्ण ने कही तो सभा मे हगामा खडा हो गया। महाभारत मे पढिये—

एतच्छ्रुत्वा महान नाद सभ्यानामुदतिष्ठत।

तदनन्तर विदुर जी ने कहा—

द्रौपदी प्रश्नमुक्त्वैव रोरवीति ह्यनाथवत्।
न च विब्रूत त प्रश्न सभ्या धर्मोऽत्र पीड्यते ॥

साथ ही विकर्ण की बात को पुष्ट करते हुए विदुर जी कहते हैं—

विकर्णेन यथा प्रज्ञमुक्त प्रश्नो नराधिप।
भवन्तोऽपि हि त प्रश्न विब्रुवन्तु यथामति ॥

इस प्रकार विकर्ण और विदुर जी ने द्रौपदी के सभा मध्य लाए जाने का घोर विरोध किया। अन्य सभासदो को भी उकसाया। तब दुष्ट मण्डली का विरोध होने लगा। भरी सभा मे भयकर विस्फोट होता देख। यथा—

त वै शब्द विदुरस्तत्त्ववेदी
शुश्राव घोर सुबलात्मजा च।
भीष्मो द्रोणो गौतमश्च पि विद्वान्
स्वस्ति स्वस्तीत्यपि चैवाहुरुच्चै ॥
ततो गान्धारी विदुरश्च पि विद्वा
मुत्पात घोरम लक्ष्य राज्ञ।
निवेदयामासतुरार्तवित् तदान्ततो
राजा वाक्यमिद बभाषे ॥

पाठक इन श्लोको मे स्पष्ट रूप से दुष्ट मण्डली के विरोध मे एक क्रान्ति का उदघोष है निर्दोष द्रौपदी के अपमान को क्या पाण्डव हितैषी प्रजा चुपचाप सह सकती थी। तदनन्तर धृतराष्ट्र की आख खुली वे बोले—

हतोऽसि दुर्योधन मन्दबुद्ध यस्त्व
सभायां कुरुपुङ्गवानाम्।
स्त्रिय समाभाषसि दुर्विनीत
विशेषतो द्रौपदीं धर्मपत्नीम् ॥

महाराज धृतराष्ट्र ने महान् विपद आयी समक्ष द्रौपदी का रनिवास मे भेजा एव पाण्डवो को दासभाव से मुक्त कर दिया यहा आकर एक अध्याय समाप्त हो जाता है। न यहाँ तक चीर हरण की बात है न कुछ यह प्रसग यही समाप्त हो जाता है किन्तु प्रत्येक बात मे अलौकिकता का पुट देने वालो ने प्रक्षेप की बहु भरमार की है कि अगला अध्याय पूरा द्रौपदी के चीर हरण का देकर श्री कृष्ण जी का उसका वस्त्र बढाते चित्रित कर दिया है। जब कि चीर हरण जैसी घटना वहा हुई नही थी। वहा तो द्रौपदी को सभा मध्य लाकर खडा कर दिया गया था वहा उसका घोर अपमान था। क्योकि द्रौपदी स्वय कहती है— सभा मैं इससे पूर्व स्त्री जाति को इस प्रकार कभी अपमानित नही किया गया यथा धर्म्या स्त्रिय सभा पूर्वे न नयन्तीति न श्रुतम्। स नष्ट कौरवेषु पूर्वो धर्म सनातन ॥

हाँ दुष्ट मण्डली उसका महान् अप मान कर सकती थी यदि विदुर और विकर्ण मण्डली ने घोर विरोध न किया होता। उनके विरोध करने का ही यह फल हुआ कि सभा मे कौरव पक्ष के वीर भी इनके साथ हो गए और इस दुष्ट आच रण के विरोध मे बोल पडे।

इसी प्रकार उद्योग पर्व मे कुन्ती भी श्री कृष्ण को सन्देश देते हुए चीर हरण की बात कही नही कहती बल्कि वह सर्वत्र ही द्रौपदी के अपमान और दुशासन तथा दुर्योधन द्वारा कहे गए कटु व्यग्य वचनो की बात ही कहती है कुन्ती को सब से अधिक दुख इसी बात का है कि—

न राज्यहरण दुख द्यूत चापि पराजय।
प्रव्राजन सुताना वा न मे तद्दुःखकारणम् ॥
यत्र सा बृहती श्यामा सभाया रुदती तदा।
अश्रौषीत् परुषा वाचस्तन्मे दुखतर महत् ॥
स्त्रीधर्मिणी वरारोहा क्षत्रधर्मरता सदा।
नाध्यगच्छत्तदा नाथ कृष्णानाथवती सती ॥

वह कहती है—श्री कृष्ण मुझे राज्य के छिन जाने का इतना दुख नही जूए मे हारने और बनवास होने का भी मेरे मन मे उतना महान् दुख नही है। परन्तु भरी सभा मे मेरी सुन्दरी युवती पुत्रवधू द्रौपदी ने रोते हुए जो दुर्योधन के कटु वचन सुने वे वही मेरे लिए महान् दुःख का कारण बन गए हैं।

इसी प्रकार श्री कृष्ण महाराज जब सन्धि के लिए हस्तिनापुरे जाते है तब द्रौपदी जो उन्हे वचन कहती है वे अन्त ज्वाला का धधकता रूप ही हैं। वह कहती है दुशासन ने जो भरी सभा मे उस बाल खीचकर अपमानित किया था उससे वह अब तक जल रही है। मेरे उस अपमान को मत भूलना। अर्जुन श्री कृष्ण जी से कहते है कि पाप बुद्धि दुशासन ने जैसे द्रौपदी को सभा मध्य खीचा था उस अपमान को कैसे भुलाया जा सकता है।

प्रकारान्तर से हम यहा महाकवि भास के दूतवाक्यम् नाटक के भी कुछ उदा हरण दे रहे हैं। यथा— द्रौपदी केश धर्षणमत्रालिखितम्। तथा— एष दुःशा सनो द्रौपदीं केशहस्ते गृहीतवान। इनसे ज्ञात होता है कि भास के समय तक चीर हरण जैसी घटना अमान्य थी अपितु दुशासन द्वारा द्रौपदी के केश पकडकर सभा मध्य लाकर उसे अपमानित करन की घटना का ही महत्त्व था।

इसी सदर्भ म हम यह भी तथ्य महाभारत की अन्त साक्षी के आधार पर रखना चाहेगे कि जब जूआ खेला गया और द्रौपदी को सभा मध्य अप मानित किया गया उस समय श्री कृष्ण जी महाराज अपनी द्वारिका पुरी से भी और हस्तिनापुर से भी अति दूर थे। इसलिए एक महान् पुरुष को चीर-हरण जसी बीभत्स घटना मे चित्रित करना बुद्धिमानो की प्रज्ञा का श्रेष्ठ उदाहरण नहीं। पढिए उद्योग पर्व का यह श्लोक—

ऋणमेतत् प्रवृद्ध मे हृदयान्नापसर्पति।
यद् गोविन्देति चुक्रोश कृष्णा
मा दूरवासिनम् ॥

अर्थात् जिस समय कौरव सभा में द्रौपदी का अपमान हो रहा था मैं (श्री कृष्ण) हस्तिनापुर से बहुत दूर था उस समय कृष्णा ने आर्तभाव से गोविन्द कहकर जो मुझे पुकारा था उसका मेरे ऊपर ऋण बढता ही जा रहा है मेरे हृदय से दूर नही होता। अपराधी कौरवो का सहार किए बिना उसका भार दूर नही होगा। वस्तुत यदि अपमान के समय कृष्ण वहां होते या पहुच गए होते तो महाभारत वही हो गया होता। क्योंकि कृष्ण उस समय के महान् धर्मज्ञ महान् पराक्रमी महान् राजनीतिज्ञ व कूटनीतिज्ञ और राष्ट्रीय नेता थे।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सत् चित् की आनन्द यात्रा

श्रीमती सुभाषिणी वर्मा, बिलासपुर

सत् चित् कौन है ? और यह आनन्द यात्रा क्या है ? यहाँ हम इसकी चर्चा करेंगे। जीवात्मा का स्वरूप सत्य और चैतन्य है उसमे आनन्द का (सुख का) अभाव है । इस आनन्द अथवा सुख की प्राप्ति मे ही जीवात्मा सलग्न रहता है। उसकी यही सलग्नता उसकी आनन्द के लिए यात्रा है जिसमे अनादि काल से लगा हुआ है। जीवात्मा का सत् चित्त स्वरूप जिस क्षण आनन्द स्वरूप (सुखमय) हो जाएगा। उसी पल उसकी यह यात्रा समाप्त हो जाएगी। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए समय-समय पर अनेकानेक सम्प्रदायो ने जन्म लिया। अनेक धर्म गुरु पैदा हुए, जिन्होने अपने-अपने तरीके से इस आनन्द (सुख) की प्राप्ति का मार्ग खोजा और उसे जनता के समक्ष रखा, जनता ने उसे कितना समझा कितना माना, यह तो कहना कठिन है किन्तु समय के साथ इन मार्गो मे सकीणता आ गई और मनुष्य मनुष्य के बीच दीवारें खड़ी होती गई।

प्रश्न यह है कि मनुष्य आनन्द (सुख) तक क्यों पहुँच नही पाता है ? इस क्यो के उसने बहुत बार खोज की और उसका पालन भी किया किन्तु कालान्तर मे प्रत्येक वस्तु को सरल से सरलतम बनाने के प्रयास ने उसमे विकृति उत्पन्न कर दी, और मनुष्य मार्ग से भटक गया। इसका कारण यह है कि मनुष्य ससार मे कुछ इस प्रकार से रहता है कि वह शरीर और आत्मा को एक में मिला लेता है, इस आनन्द की ओर जाने वाली यात्रा को भी सशरीर पूर्ण करना चाहता है। शारीरिक सुख की पूर्ति के लिए अधिकाधिक सुख सुविधा के सामान एकत्र कर आनन्द का एक कल्पित भवन बना लेता है। ये सुख सुविधा के सामान साधन हो सकते है साध्य नही, साध्य तो कुछ और ही है। जिन्होने इस साध्य को समझा है उन्होने पूजा-पाठ या उपासना को अपनाया है। आज पूजा-पाठ उपासना के नाम पर जो कुछ करते हैं वह भी केवल कर्मकाण्ड होता है। चाहे वह हवन हो अथवा मूर्ति पूजा हो, चाहे भजन कीर्तन हो। उसका किंचित् मात्र भी प्रभाव हमारे अन्तरतम पर नही पड़ता है और यही कारण है कि हम सच्चे आनन्द की अनुभूति नही कर पाते हैं। पूजा-पाठ अथवा उपासना वह प्रक्रिया है जो मनुष्य के अन्तरतम को झकझोड़ कर रख दे, उसका मन्थन कर दे, मनुष्य का व्यक्तित्व निखर कर सामने आ जाए। ऐसा हो नही पाता है। इसका कारण यह भी है कि पूजा-पाठ-उपासना थोड समय के लिए होती है। अधिक समय मनुष्य बाह्य जगत् मे क्रियाशील रहता है और बाह्य जगत् का दूषित वातावरण मनुष्य पर दूषित प्रभाव डालता रहता है।

हमें जीने की कुछ ऐसी कला चाहिए कि हम अपने मे ही जी सकें। यह बात निर्विवाद सत्य है कि मनुष्य बिना कुछ किए नहीं रह सकता है। मनुष्य सम्पूर्ण दिन किसी न किसी कार्य में व्यस्त रहता है। इसलिए आनन्द प्राप्ति का सीधा-सरल एव जन सामान्य के लिए एक ही उपाय है कि वह अपनी एक रुचि बना ले, उसके अनुकूल कार्य लेकर उसमें रम जाए, इस रम जाने को हम साधना कह सकते हैं। साधना मनुष्य को सदा आनन्द देती है, वह साधना चाहे सगीत की हो, चाहे कला की हो, चाहे साहित्य की हो, या समाज सेवा की हो। साधना का रूप कुछ ऐसा होना चाहिए कि मनुष्य स्वय को भूल जाए, उसी मे लीन हो जाए। एक बार ऐसी साधना मे लीन हो जाने से अकथनीय आनन्द की प्राप्ति होती है। साधना करके देखिए, ऐसी साधना, जिसमे साधक और साध्य का भेद मिट जाता है। जिस क्षण, जिस पल ऐसी साधना में लीन हो जाएगे, सच मानिए जीवन का वह क्षण, वह पल धन्य होगा। उस क्षण उस पल ही उस परम आनन्द का साक्षात्कार हो जाएगा और मनुष्य जीवन धन्य बन जाएगा।

साधना से सब कुछ मिल जाता है साधना कभी अधूरी नही रहती है। भले ही किसी को आनन्द की अनुभूति में कम समय लगेगा। किसी को अधिक सफलता अवश्य मिलेगी। सफलता के रहस्य के सम्बन्ध में किसी नवयुवक ने रूसी लेखक टाल्सटाय से पूछा, आपकी सफलता का रहस्य क्या है ?

"बेटे—इस रहस्य का नाम है धैर्य।" टाल्सटाय ने मुस्कराते हुए कहा—"ससार में ऐसा कोई काम नही जिसे पूरा न किया जा सकता हो बशर्ते कि करने वाले में धैर्य हो।"

नवयुवक ने कहा—"किन्तु एक काम ऐसा है जो बहुत धैर्य रखने पर भी नहीं किया जा सकता।"

"वह क्या ?"

"चलनी मे पानी भरना।"

"ओह ! इसमें क्या बड़ी बात है" टाल्सटाय ने मुस्कराते हुए कहा—"इसे भी किया जा सकता है बशर्ते कि पानी के जमने तक कोई धैर्य रख सके।"

अत परमानन्द की प्राप्ति भी हो सकती है बशर्ते कि हम में उतना धैर्य हो। □

पृष्ठ ७ का शेष

द्रोपदी चीर हरण एक कोरी कल्पना

अब आप महाभारत के वन-पर्व का एक उदाहरण देखिये। जिस समय पाण्डव वनवासी हो जाते हैं तब श्री कृष्ण जी उनके कुशल-मगल पूछने वहाँ दल-बल सहित पहुचे। बाते होने लगी। बातो हा बातो मे श्री कृष्ण जी ने बडे कष्ट से कहा—

एव निहत्य समरे सौभ शाल्व निपात्य च।
आनर्तान् पुनरागम्य सुहृदां प्रीतिमावहम् ॥
व० प० ४०

तदेतत् कारण राजन् यदह नागसाह्वयम्।
नागम परवीरघ्न न हि जीवेत सुयोधन ॥
व० प० ४१

मय्यागतेऽथवा वीर द्यूत न भविता तथा।
अद्याह किं करिष्यामि भिन्नसेतुरिवोदकम् ॥
व० प० ४२

अर्थात् राजन् क्योकि मैं सौभ और शाल्व को युद्ध मे संलग्न करने के निमित्त हस्तिनापुर से दूर था। (शाल्व ने भयंकर विस्फोटक पदार्थों से युक्त एक यान निर्मित किया था जिसका नाम सौभ था, इसमे भयकर मारक शक्ति थी, जिसे नष्ट करने मे कृष्ण जी को बडा परिश्रम और पराक्रम करना पडा) इसीलिए द्यूत सभा मे उपस्थित न हो सका। यदि मैं वहाँ पहुँच गया होता तो दुर्योधन जीवित नही रह सकता था अथवा मेरे वहाँ पहुँचने पर जूआ होता ही नही। किन्तु राजन् ! अब पर से पुल टूटे हुए के समान अब मुझे बताओ मैं आपका वही प्रिय करूंगा।

पाठक ! यह एक श्लोक ही 'चीर-हरण' की वैधता को चुनौती देकर उसे अवैध घोषित कर देता है, उसकी मान्यता के भ्रम को खण्डित कर देता है। चीर-हरण जैसी घटना महाभारतीय इतिहास मे हुई नही, इसे हमे सत्य परिप्रेक्ष्य में लेकर देखना चाहिए। विदुर और विकर्ण मण्डली के साहसिक एव ऐतिहासिक वचनों का वहाँ महत्त्व है, द्रोपदी के चीर अपमानित करने के लिए दुर्योधन की आज्ञा से दुःशासन के बढते कदम और दुष्कृत्य करने को उद्यत हाथ विकर्ण मण्डली के विक्षुभित होने और प्रजाजनों के विरोध एव उत्पात के कारण वहीं रुक गए। समस्त सभासद और धृतराष्ट्र तथा गान्धारी एक अनहोनी घटना को महाभारतीय इतिहास मे जुड़ने बचा गए। ●

स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद दोहे

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

प्रात काल जो नियम से, जाए घूमने रोज।
बल बुद्धि दोनो बढ़ें, मिटे कब्ज का रोग ॥

प्रबल भूख भोजन करे, तेल मले स्नान।
रहे स्वस्थ नीरोग तन, सुखी रहे इन्सान ॥

गाजर, बथुआ, आवला, जो खाये मनलाय।
भूख बढ़े कब्जी मिटे, खून साफ हो जाय ॥

अगर कब्ज है उदर में, भूख विदा हो जाय।
रस गन्ने का पीजिये, नीबू अदरक साथ ॥

गर कमजोर दिमाग है, तो कर इतना काम।
साथ शहद के खाइये, भीगे हुए बादाम ॥

हरड, बहेडा, आंवला, चौथी नीम गिलोय।
जो इनका सेवन करे, सुन्दर काया होय ॥

चाय, तम्बाकू डालडा, जो नहीं करे प्रयोग।
उससे डरकर भागते, भाँति-भाँति के रोग ॥

हरड, बहेडा, आंवला, जल में रखो भिगोय।
छींटे मारे आंख में, निर्मल ज्योति होय ॥

आर्यसमाज बांकनेर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बाकनेर (दिल्ली) का ३३ वा वार्षिकोत्सव २ ३ मार्च १९८५ को अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज बांकनेर (दिल्ली) का ३३ वा वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। उत्सव का प्रारम्भ बृहद् यज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा थे प० देवेन्द्र नाथ शास्त्री। स्वामी अमृतानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे "वेद सम्मेलन" हुआ। छात्रो ने निबन्ध प्रतियोगिता (विषय—स्वामी दयानन्द सरस्वती) तथा भाषण-प्रतियोगिता (विषय—आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम) मे उत्साह के साथ भाग लिया। निबन्ध प्रतियोगिता के विजेता थे देवकान्त पवार, कुलदीप कुमार तथा राकेश कुमार और भाषण प्रतियोगिता मे ज्ञानप्रकाश, राजेन्द्रसिंह व कुलदीप ने क्रमश प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया। प० आशानन्द जी भजनीक ने 'मैजिक लैण्टर्न' द्वारा आर्यसमाज के सिद्धान्तों का मार्मिक विवेचन किया। युवकों मे सगठन की भावना एव ब्रह्मचर्य रक्षा के लिए विभिन्न खेल-प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओ मे हजारो की सख्या मे प्रान्तीय, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी युवको ने भाग लिया। विजेता खिलाड़ियो का विवरण इस प्रकार है—

१ वाली बाल शूटिंग—प्रथम—प्रिसस्पोर्टस क्लब नई दिल्ली।
द्वितीय—सिंहल स्पोर्टस क्लब, देवली।

२ कबड्डी सीनियर (राष्ट्रीय) प्रथम—एल०एस० न० २ स्कूल, नरेला
द्वितीय—दिल्ली अग्नि शमन सेवा

३ कुश्ती—२५ कि० से ७४ कि० तक के वजन की कुश्तियो मे क्रमश दयानन्द, नवीन, सुशील, वीरेन्द्र जयकरण, पुरुषोत्तम, रमेश विनोद वीरसिंह तथा युद्धवीर प्रथम स्थान पर रहे तथा लोकेश, जयप्रकाश, सतीश, रमेश, वीरेन्द्र, विजय, विजेन्द्र, महावीर, अजय तथा चन्द्रभान ने क्रमश द्वितीय स्थान प्राप्त किया। १५०० मीटर की दौड मे अशोक पराशर, समन्दर सिंह, सुरेन्द्र कुमार क्रमश प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर रहे। सर्वश्री विपिन कुमार जैन, दयानन्द सिंहल (वालीबाल), सुरेश, नरेन्द्र तथा सुरेन्द्र प्रकाश का कबड्डी का खेल प्रशसनीय था।

'आर्य युवक सम्मेलन' श्री विद्या प्रकाश सेठी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। सेठी जी ने अपने कर कमलों द्वारा विजेताओ को आकर्षक पुरस्कारो से सम्मानित किया। आर्यसमाज के उत्सव मे इतनी बडी सख्या मे युवको के सोत्साह भाग लेने की उन्होने भूरि-भूरि प्रशसा की। अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष मनाए जाने की सही दिशा में इसे एक सही कदम बताया। दानवीर सेठी जी ने आर्यसमाज को ग्यारह सौ रुपये का पुण्य दान दिया। आर्यसमाज बांकनेर के प्रधान श्री मातेराम आर्य ने सभी को हार्दिक धन्यवाद दिया। —मेहरलाल (मन्त्री)

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

"आर्यसमाज मयूर विहार का तृतीय वार्षिकोत्सव रविवार दिनाक १० मार्च ८५ को प्रात ८-३० बजे से दोपहर १-०० बजे तक समारोहपूर्वक मनाया गया।

(स्थान पाकिट तृतीय शापिंग सेन्टर के सामने)

जिसमें आर्यसमाज के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों के प्रवचन हुए तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक के मधुर भजन भी हुए।

भवदीय
ठाकुर दत्त खन्ना (मन्त्री)

देशान्तर प्रचार के लिए प्रचारकों की आवश्यकता

उपरोक्त शीर्षक से एक विज्ञप्ति गत जनवरी मास में आर्यसमाज की पत्रिकाओ मे प्रकाशित की गई थी, जिसके उत्तर मे कुछ पत्र हमे प्राप्त हुए हैं। देशान्तर प्रचार के कार्य मे ऐसे उच्च शिक्षित सज्जनो को वरीयता दी जायगी जो आर्यसमाज के सगठन को शक्तिशाली बना सकें। इन प्रचारको को विदेशो की सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियो के अनुकूल प्रचार प्रणाली को अपनाते हुए आर्यसमाज के सगठन को नई दिशा देना साप्ताहिक सत्सग और आर्य पर्व-पद्धति का ज्ञान कराना, आर्य वीर दल व महिला सगठन की नीव डालना आर्य साहित्य के स्वाध्याय की प्रेरणा देना, आर्य शिक्षण सस्थाओ मे अध्यापको एव छात्र-छात्राओ को वैदिक धर्म के मूल सिद्धातो का परिचय देना और समाचार पत्र रेडियो, टेलिविजन के माध्यम से जन-सामान्य को आर्यसमाज के सिद्धातो का ज्ञान कराना होगा। एक देश मे अथवा उस क्षेत्र मे कम से कम एक वर्ष का समय देना अपेक्षित है। सार्वदेशिक सभा अपने निर्देशन एवम् अनुशासन मे यह कार्य करायगी। कालान्तर मे विश्व के सभी भागों मे आर्यसमाज के कार्य का विस्तार करना, देशान्तर की आर्यसमाजो व प्रतिनिधि सभाओ से निकट सम्बन्ध स्थापित करना तथा आर्यसमाज के अनुकूल विश्व सस्थाओ मे अपने मन्तव्य को पहुँचाना, हमारी दीर्घकालीन योजना का लक्ष्य है। इसकी प्रथम कड़ी के रूप मे कुछ योग्य आर्य जनो की सेवाए इस कार्य में ली जायेंगी।

इच्छुक महानुभावो को पत्र व्यवहार के लिए हम पुन अवसर दे रहे हैं। अपने आवेदन पत्र मे वे अपनी आयु, शैक्षिक योग्यता, भाषाओ का ज्ञान, आर्यसमाज से सम्बन्ध, प्रचार कार्य का अनुभव, प्रकाशनो की सूची एवम् अन्य आवश्यक जानकारियो का विवरण देने का कष्ट करें। अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान अनिवार्य है। भारत अथवा देशान्तर के तीन ऐसे प्रमुख आर्य जनो का नाम और पता भी लिखे जो आपके कार्यों के विषय मे भली भाति जानते हो। यह भी सूचित करने का कष्ट करें कि कितना समय इस कार्य मे दे सकते हैं। सभी महानुभावो को अपने प्रथम पत्र मे ही पूर्ण विवरण दे देना योग्य होगा। आशा है देशान्तर प्रचार मे सहयोग प्रदान करने हेतु इच्छुक महानुभाव अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

भवदीय डा० आनन्द प्रकाश
उपमन्त्री सभा एव
सयोजक—देशान्तर प्रचार समिति

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली द्वारा होली मिलनोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज हनुमान रोड के तत्त्वावधान मे ७ मार्च १९८५ को प्रात ९ से १२ बजे तक मलाद्व स्क्वेयर कालीबाडी मार्ग नई दिल्ली मे बड उत्स ह एव धार्मिक रीति से मनाया गया। इस क्षेत्र मे रहने वाले सरकारी अधिकारियो एव डा० राममनोहर लोहिया हस्पताल के डाक्टरो ने इसमे सोत्साह भाग लिया। कार्यक्रम यज्ञ से प्रारम्भ हुआ, फिर स्वामी स्वरूपानन्द जी के मनोहर गीत एव भजन हुए। श्री प० रूप किशोर शास्त्री ने होली के महत्त्व को बताते हुए कहा कि यह एक पवित्र और मेल मिलाप का त्यौहार है। हमे सब भेद भाव भुलाकर और मन मुटाव को भूलकर सब को गले लगाना चाहिए मनुष्य-मनुष्य मे भेद डालने वाले ऊँच नीच और असभ्य विचारो को को छोड़ देना चाहिए। इस क्षेत्र के बच्चो ने भी सुन्दर भजन एव गीत गाये। इस क्षेत्र की एसोसिएशन के प्रधान डा० एस० के मिनोचा ने आयसमाज द्वारा इस पावन आयोजन करने एव इस आयसमाज के उप प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा के सपरिवार आने का धन्यवाद किया।

(के० एल० भाटिया)
मन्त्री

वानप्रस्थ दीक्षा

आर्यसमाज नारायण विहार के वार्षिकोत्सव पर प्रसिद्ध समाजसेवी श्री दीनानाथ गुप्ता एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री देवी ने "वानप्रस्थ" ग्रहण किया। इस अवसर पर सैकडो स्त्री पुरुष उपस्थित थे।

चतुर्वेद शतक यज्ञ

आर्यसमाज रानी बाग के कर्मठ कार्यकर्ता श्री कृष्णचन्द्र गुप्त के निवास १००/११ रेलवे कालोनी, शकूर बस्ती में ८ से ९ मार्च तक चतुर्वेद शतक यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी जीवनानन्द जी थे। सैकडों स्त्री पुरुषो ने यज्ञ एव प्रवचन का आनन्द लिया। इस अवसर पर श्री कृष्णचन्द्र गुप्त ने अपने पौत्र के नामकरण पर २१ रुपये आर्यसन्देश के लिए प्रदान किए। संयोजक तुलसीदास मल्होत्रा

आर्य जगत् के समाचार

गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर के लिए अपील

हापुड़ से ३ मील पूर्व गढ़ मार्ग पर सुरम्य वातावरण मे ततारपुर के निकट स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती त्रिवेदतीर्थ ने गुरुकुल की स्थापना की। तब से लेकर सस्था अपनी संस्कृति एव वेद के प्रचार मे अहर्निश प्रयास कर रही है। प्रात काल ४ बजे से रात्रि के ६ बजे तक की निश्चित दिनचर्या मे छात्र अपने जीवन का निर्माण कर वेद एव दयानन्द के कार्य को पूर्ण करने का व्रत लेते हैं। सार्वदेशिक आर्यवीर दल की नियमित शाखा भी लगती है जिसमे छात्र विभिन्न शस्त्रास्त्रो को सीखते एव उनका अभ्यास करते हैं। शास्त्रो का पठन-पाठन करते हुए छात्र समाज सेवा मे समय व्यतीत करते हैं लेकिन साधनो के अभाव मे जितना चाहते हैं नही कर पाते। यदि आप सभी आर्य महानुभावो का कृपादृष्टि हो जाये तो देव दयानन्द के ऋण से उऋण होने के लिए दोनों का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। अत आइये और संकल्प लीजिए कि ऋषि की वाटिका को हम हरा-भरा बनायेंगे। इस समय निम्न आवश्यकताएं हैं जिसे आप सब पूरी कर सस्था मे प्राण सञ्चार कर सकते हैं।

यज्ञशाला जिसका शिलान्यास शिरोमणि आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने किया था वह अभी अधूरी है।

१ छात्रावास कक्ष २ विद्यालय भवन कक्ष ३ अतिथि कक्ष ४ कार्यालय कक्ष ५ सत्संग भवन, ६ यज्ञ वेदमन्दिर ७ वेद प्रचार वाहन, ८ स्नानागार, ९ टंकी, १० टेप रिकार्डर माइक, ११ गोशाला।

इन सब में लगभग ९ लाख रु० का व्यय आने की सम्भावना है।

प्रात एवं सायं वैदिक यज्ञ सम्पन्न होता है। उसके लिए घी घी-सामग्री एव छात्रों की छात्रवृत्ति का भी सहयोग कर सकते हैं।

२. जो सज्जन उक्त योजनाओ मे सहयोग करेंगे उनके नाम से ही पत्थर लगाया जायेगा। ५०१/- देने अथवा अधिक देने वाले सज्जनो के नाम भी पत्थर पर आयेंगे।

धन भेजने के लिए

मुख्याधिष्ठाता—गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर हापुड़,
गाजियाबाद (उ०प्र०)

चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट एव मनिआर्डर द्वारा भेज सकते हैं।

निवेदक आचार्य धर्मपाल

निर्वाचन सम्पन्न

४-३-८५ सोमवार, दीवान हाल मे वेदप्रिय सुशीला आनन्द की अध्यक्षता में सभा का चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हो गया।

प्रधाना—	सरला मेहता	सहमन्त्रिणी—	कृष्णा चड्ढा
उपप्रधाना—	सुशीला आनन्द	उपमन्त्रिणी—	शकुन्तला दीक्षित
उपप्रधाना—	प्रेमशील	,,	चन्द्रकला
,	शकुन्तला आर्या	कोषाध्यक्षा—	तारा वैद
,	शान्ति देवी मलिक	सह ,, —	सत्या वैद
महामन्त्रिणी—	प्रकाश आर्या	, , —	कृष्णा ठुकराल

आर्य कवि सम्मेलन

आर्यसमाज सदर बाजार मे धर्मवीर प० लेखराम के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य मे २४-२-८५ को आर्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमे श्री उत्तमचन्द्र जी 'शरर' श्री सत्यपाल जी 'बेकार' श्री व्याकुल जी आदि कवि महानुभावो ने प० लेखराम जी के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंगों को काव्य पाठ के द्वारा प्रस्तुत करते हुए उस अमर बलिदानी को अपनी सादर श्रद्धाञ्जलि समर्पित की। सम्पूर्ण कार्यक्रम के सूत्रधार श्री ला० किशोरीलाल जी के सुप्रयास से ११००) की धनराशि भी दान रूप मे प्राप्त हुई सारा आयोजन प्रेरणास्पद एव सफल रहा।

आचार्य रवीन्द्र आत्रेय

वार्षिकोत्सव आर्यसमाज नरेला

आपको जानकर अति हर्ष होगा कि आपके आर्यसमाज नरेला का ५५ वां वार्षिक उत्सव दिनांक ३० व ३१ मार्च १९८५ को बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर साधु, सन्यासी महात्मा, केन्द्रीय नेता एव मधुर भजनोपदेशक पधार रहे हैं। धर्म लाभ उठायें।

निवेदक
आनन्द कुमार (मन्त्री)

आर्यसमाज हजारी बाग मे आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर

समस्त आर्य वीरो को सूचित किया जाता है कि दिनांक १५ मई से ३० मई १९८५ तक एक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर हजारी बाग आर्यसमाज बिहार में लगाया जा रहा है। आप अधिक से अधिक सख्या मे भाग लेकर प्रशिक्षण प्राप्त करें। साथ ही सभी समाजों के सभासदो एवम् अधिकारियो से निवेदन है कि बिहार भर की प्रत्येक आर्यसमाज से कम से कम ५ आर्य युवक अवश्य इस शिविर में भेजें।

वस्तुत यही एक मात्र रचनात्मक पक्ष है जिसके द्वारा आर्यसमाजों में वैदिक सिद्धान्तो से परिचित युवको को अग्रसर कर आप आनन्दित होकर बिहार राज्य मे आर्यसमाज के गौरव की रक्षा कर सकते हैं।

बालदिवाकर हंस—प्रधान सचालक

महात्मा वेदभिक्षु । जयन्ती समारोह

दयानन्द संस्थान और हिन्दू रक्षा समिति के संस्थापक स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु जी का ५७ वां जन्म दिवस वेद मन्दिर (इब्राहीमपुर गांव) मे १४ मार्च से १७ मार्च तक मनाया जायेगा।

समारोह १४ मार्च को प्रात ८ बजे यजुर्वेद पारायण यज्ञ से प्रारम्भ होगा। इसकी पूर्णाहुति १७ मार्च को प्रात १० बजे होगी। १५ और १६ मार्च को यह यज्ञ प्रात ८ बजे से हुआ करेगा। १६ मार्च को दोपहर बाद दो बजे कार्यकर्ताओ की बैठक और हिन्दू रक्षा सम्मेलन होगा। १७ मार्च को पूर्णाहुति के तुरन्त बाद साढे दस बजे महात्मा वेदभिक्षु जयन्ती सभा होगी जिसमे स्वर्गीय महात्मा जी को श्रद्धाञ्जलियां भेंट की जायेंगी।

वार्षिकोत्सव सूचना

गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर (हापुड़) जि० गाजियाबाद का वार्षिकोत्सव १६ से १८ मार्च तक बडे धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिसमें भारत वर्ष के उच्चकोटि के विद्वान् एव आर्यनेता पधार रहे हैं।

अध्यक्ष चन्द्रपाल सिंह

आर्यसमाज पुल बंगश का निर्वाचन

दिनांक १०-२-८५ को आर्य समाज का वार्षिक अधिवेशन श्री युगल किशोर जी (भूतपूर्व प्रधान) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये।

१	श्री लालचन्द जी	प्रधान	५	श्री कृष्णलाल जी	उपमन्त्री
२	,, युगल किशोर जी	उपप्रधान	६	,, रमेश कुमार जी	,,
३	डा० हंसराज जी	,,	७	,, हरीशचन्द्र जी	कोषाध्यक्ष
४	श्री सुरेशकुमार जी	मन्त्री	८	,, वृजलाल जी	भण्डारी

भवदीय रमेशकुमार उपमन्त्री

वार्षिकोत्सव आर्यसमाज नजफगढ़

आर्यसमाज नजफगढ़ नई दिल्ली-४३ का ५३ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २१, २३, २४ मार्च १९८५ को बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिस में आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् सन्यासी महोपदेशक तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

रघुनाथसिंह (प्रधान)

सिन्धी आर्य सम्मेलन

सभी आर्य बन्धुओ को सुनकर यह प्रसन्नता होगी कि, दिनांक १७, १८, १९ मई १९८५ मे—

अखिल भारतीय सिंधी आर्य सभा के द्वारा पुणे में आर्यसमाज पिम्परी में तीन दिन का सिंधी आर्य सम्मेलन मनाया जा रहा है।

(१) सम्मेलन करने का उद्देश्य आपस में मिलना (२) एकीकरण (३) विचारों का आदान प्रदान करना (४) कुरीतियो से छुटकारा (५) वैदिक धर्म की जानकारी और पाखण्ड का विनाश करना।

निवेदक मन्त्री

आर्यसमाज रक्सौल का वार्षिक चुनाव

आज दिनांक १९-२-८५ को आर्यसमाज रक्सौल पू० चम्पारण के अन्तरंग सभा का वार्षिक चुनाव श्री शिवशंकर प्रसाद आर्यसमाज मनाही की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसके निम्नलिखित अधिकारी एवं सदस्य चुने गये।

१	प्रधान—	श्री ओमप्रकाश/राजपाल
२.	मन्त्री—	डी० के० शास्त्री
३	कोषाध्यक्ष—	रामनारायण राम लोहिया

मन्त्री आर्यसमाज रक्सौल

प्रसन्न रहे

(पृष्ठ २ का शेष)

कहा कि मैं अपने पुत्र, पौत्रो और प्रपौत्रों से खेलता हूँ, चिन्ता में नही रहता। यही मेरे दीर्घायुष्य का रहस्य है। वेद ने कहा है, स्वर्ग और कही नही इस पृथ्वी पर ही है। ऋग्वेद १०-८५-४१ मन्त्र कहता है—

इहैव स्त मा वियौष्ट विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।
क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे ॥

ओ लोगो, इस ससार मे रहो, अलग मत होओ हमेशा पुत्रों और पौत्रो के साथ खेलते हुए अपनी आयु बिताओ।

चिन्ता और अप्रसन्नता से मनुष्य का मानसिक ह्रास होता है। उत्साह, स्फूर्ति, शान्ति और शक्ति नष्ट हो जाती है। चिन्ता, मूर्छा और ज्वर के संनिपात की अवस्था है। यह रोगी केवल स्वयं ही दुःखी नही रहता अपने पड़ोसियों, सबन्धियों और हितचिन्तको को भी अपना दुःख देता चलता है। इसलिए मन्त्र में प्रार्थना की गई है—"हे प्रभो, हम सदा प्रसन्न रहें, आनन्दित रहें, 'सुमना' रहें। ऐश्वर्य के स्वामी प्रभु से केवल यही मांग है कि हे आनन्द के सागर आनन्द का एक कण हमें दो और उसके लिए हमें 'सुमना' बनाओ। हम आनन्दित रहे।

यह जीवन केवल फूलो की शय्या नही, इसमे काटे भी हैं। इन काटों को हटाने का मार्ग है 'सुमना' होकर आगे बढो-आगे बढो। प्रसन्नता तुम्हारा वरण करेगी। □

६ ए ई-१, ओबरा मिर्जापुर

प्रदूषण समस्या

(पृष्ठ ६ का शेष)

ससार के विष को हरने मे सफलता प्राप्त होगी। महर्षि का कथन है कि—"जब वायु और वृष्टि जल को बिगाडने वाला सब दुर्गन्ध मनुष्यो के ही निमित्त से उत्पन्न होता है तो उसका निवारण करना भी उनको योग्य है।" और निवारण का उपाय है हवन-यज्ञ। महर्षि का सुस्पष्ट कथन है कि "यह कार्य अन्य किसी प्रकार से सिद्ध नही हो सकता।" अत अवसर है आर्यसमाज हवन-यज्ञ के प्रचार और प्रसार द्वारा विश्व का विष हरने के लिए आगे आये। यदि आर्यसमाज ऐसा कर सका तो फिर विश्व भर मे फैलने में उसे देर नही लगेगी। पर यह कार्य कहने से नही करने से होगा।

आर्य निवास, चन्द्र नगर,
मुरादाबाद-२४४०३२

तुम भारत के भाग्य विधाता थे

रचयिता :
शकुनचन्द्र गुप्त विद्यावाचस्पति

तुम स्वराज के व्याख्याता थे
आधुनिक राष्ट्र के जन्मदाता थे
भारत के भाग्य विधाता थे
आधुनिक समाज के निर्माता थे
वेदपथ के प्रदर्शक थे
भटकों के मार्गदर्शक थे
आडम्बर के विरोधी थे
अन्याय के प्रतिरोधी थे

तुमने मूकराष्ट्र को राष्ट्रभाषा दी
पीड़ितों को नई आशा दी
धर्म की नई परिभाषा की
दूर सब की निराशा की
नये भारत की सृष्टि की
सर्वत्र ज्ञान की वृष्टि की
कैसे करें तुम्हारा गुणगान
ऋषिवर दयानन्द तुम थे महान

आर्य सन्देश साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बने, और बनाएँ

क्योकि यह पत्रिका—

(१) वैदिक मान्यताओं को उजागर करती है।

(२) आर्यो (हिन्दुओं) की महान् परम्पराओं की याद दिलाती है।

(३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से आत्म चेतना जागृत करती है।

(४) भारतीय संस्कृति के भूले बिसरे प्रसगों, महापुरुषों तथा आदर्श संस्कारों को प्रकाश में लाती है।

(५) ऋषि, मुनि, तपस्वी आप्तविद्वानों को वाणी का बोध कराती है।

(६) परमेश्वर की पवित्र वाणी वेद का जीवनोपयोगी मधुर सन्देश लाती है।

(७) नये लेखकों, कवियों, चिन्तकों, प्रतिभाशाली विद्वानों, साहित्य सेवियो को प्रोत्साहन देती है।

(८) धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक ज्योति से मन-मन्दिर को प्रकाशित करती है।

(९) वेद, उपवेद, दर्शन, उपनिषद्, स्मृति, कल्प सूत्र, आरण्यक, ब्राह्मणग्रन्थ गीता, रामायण, नीति, ऐतिहासिक, अमूल्य आर्ष ग्रन्थों, जिन को अधिकांश लोगों ने पढा तो क्या देखा भी नही, समस्त आध्यात्मिक जगत् को जिन ग्रन्थो पर सदा गर्व रहेगा उन के बहुमूल्य मोती हर सप्ताह बटोर कर आपकी अजली भर देती है।

(१०) अतएव देर न कोजिए आज ही अपना वार्षिक चन्दा २० रुपये भेजिये, वर्ष मे अनेक विशेषांक तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर प्रकाशित, ५० रुपये मूल्य की भव्य मनोहारी स्मारिका नि शुल्क दी जायेगी।

सम्पादक : आर्य-सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन : ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा ... दिल्ली ... में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वष ८ अक २० | रविवार ७ अप्रैल १९ ५ | आर्य सवत्सर १९६०-५३०८५ | चैत्र २०४० | दयानन्दाब्द—१६१

देश की स्वाधीनता व एकता के लिए आर्यसमाज ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है —हंसराज भारद्वाज

आर्यसमाज स्थापना-दिवस पर आर्य नेताओं का उद्‌बोधन

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान मे २४ मार्च १९८५ को आर्यसमाज का ११०वा स्थापना-दिवस समारोह विट्ठल भाई पटेल हाउस के प्रागण मे दिल्ली की सभी आर्यसमाजो एव शिक्षण सस्थाओ द्वारा बड धूमधाम से मनाया गया।

इस अवसर पर बोलते हुए समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय राज्य विधि मत्री श्री हसराज भारद्वाज ने अपने उदगार व्यक्त करते हुए कहा कि आज देश की एकता व अखडता को हमे हर कीमत पर बनाये रखना चाहिए तथा देश को बाहरी खतरो से सामना करने के लिए हमे एक जुट होकर कार्य करना है। इस सदर्भ मे आर्यसमाज ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। उन्होंने कहा कि भारत ऋषि मुनियो की पुण्य भूमि है। समय-समय पर यहा महापुरुषो ने जन्म लिया है। इसी भारत भूमि पर आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द ने जन्म लिया और उन्होने आर्यसमाज की स्थापना कर देश मे फैली विभिन्न कुरीतियो का डटकर विरोध किया।

दिल्ली के मन्नापौर श्री महेन्द्र सिह साथी ने कहा कि जब मैं भारत की आजादी के आन्दोलन का इतिहास पढता हू तो मेरे सामने यह एकदम स्पष्ट हो जाता है कि उस इतिहास मे से यदि आर्यसमाज के इतिहास को निकाल दिया जाय तो ऐसा लगता है कि जसे आजादी के आन्दोलन को ही निकाल दिया हो। उन्होने भाव विह्वल होकर कहा कि कल ही मुझे एक चिटठी मिली है जिसमे लेखक ने अपना नाम नो दिया है लेकिन पता नही दिया। उस चिट्ठी मे मुझसे कहा गया है कि १० अप्रैल तक तुम यह बता दो कि तुम हिन्दुओ के साथ हो या सिखो के साथ क्योकि १० अप्रैल के बाद हमने हिन्दुओ का साथ देने वाले सिखो को खत्म करने का फैसला कर लिया है। पता न होने से मै उस चिट्ठी के लेखक को जवाब तो नही दे सका परन्तु इस सावजनिक सभा घोषणा करता हू कि न मैं हिन्दुओ के साथ हूँ न सिखो के साथ हूँ ता देश की आत्मा के साथ हूँ। इस तक जिन हिन्दुओ ने देश की आजादी मे अपना योगदान दिया है और देश की एकता और अखडता बनाये रखने के लिए जूझ रहे हैं। उन हिन्दुओ के साथ भी हूँ वसे सिखो के साथ भी हू। परन्तु देश साथ गद्दारी करने वाले या देश विभाजन चाहने वाले या खून होली खेलने वाले सिखो के साथ किसी भी हालत मे नही हूँ।

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर बोलते हुए श्री महेन्द्रसिह साथी मच म बैठ बायें से श्री रामगोपाल शालवाले केन्द्रीय राज्यमन्त्री श्री हसराज भारद्वाज श्री बलराज मधोक श्री सोमनाथ मरवाह श्री क्षितीश कुमार श्री महाशय धर्मपाल जी।

उन्होने पजाब की समस्या की चर्चा करते हुए कहा कि जब से उग्रवादियो ने अपनी अलगाववाद की भावना फैलायी है तब से पजाब का विकास रुक गया है। तहसात पजाब के खेत उजड गये है और कारखाने बन्द हो गये हैं। पजाब के नाम पर बन्दूक की गोली से अपना इरादे पूरे करने वालो ने जहा सारे देश को अपने विरुद्ध कर लिया है वहा पजाब

(शेष पृष्ठ १० पर)

पंजाब समस्या पर श्री शालवाले प्रधानमंत्री जी से मिले

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले आज प्रात प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी से मिले। उन्होने प्रधानमत्री जी को पजाब की समस्या और उस पर हिन्दू जनता के विचारो से उन्हें अवगत कराया। बातचीत के दौरान श्री शालवाले ने पंजाब में वातावरण के सुधार के लिए अकालियों की भाँति वहाँ के नजरबन्द हिन्दू नेताओ को भी अविलम्ब रिहा करने की माँग की।

श्री शालवाले ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के धन से गुरुद्वारो में शस्त्रास्त्र के ट्रेनिंग देने के प्रावधान तथा हाल में चण्डीगढ आदि मे हुए हिंसात्मक घटनाओ की ओर भी प्रधानमन्त्री जी का ध्यान आकृष्ट करते हुए आग्रह किया कि

(शेष पृष्ठ दो पर)

डा. हरिप्रकाश ने गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता पद का कार्यभार संभाला

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले श्री ओमप्रकाश त्यागी (मत्री) तथा श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, प० सत्य देव विद्यालकार गुरुकुल कांगडी हरिद्वार मे पधारे। श्री रामगोपाल शालवाले अपने साथियो के साथ सीधे गुरुकुल कागडी फार्मेसी गए जहाँ पहले ही सैकडो कार्यकर्ता एव कर्मचारी उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रेम एव सद्भाव के वातावरण मे उक्त अवसर पर डा० हरिप्रकाश ने गुरुकुल कागडी फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष पद से त्यागपत्र दिया तथा श्री बलदेव आयुर्वेदालकार को फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया।

फार्मेसी के हाल मे सैकडो कर्मचारी एव अधिकारियो के मध्य श्री

(शेष पृष्ठ दो पर)

सम्पादक—यशपाल 'सुधांशु' एम० ए० | व्यवस्थापक—डा० सच्चिदानन्द | प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

सत्संग वाटिका

प्रस्तुत मन्त्र महर्षि दयानन्द को अत्यधिक प्रिय था। अतः सर्वप्रथम उन्हीं के किये अर्थ प्रस्तुत कर रहे हैं।

अर्थ—हे सकल जगत् के उत्पत्ति कर्ता समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए, जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं वह सब हम को प्राप्त कीजिए।

प्रस्तुत मन्त्र प्रार्थनापरक है और प्रार्थना का अर्थ प्रायः लोग याचना या मांगना कर लिया करते हैं। हमारी दृष्टि में यह अर्थ यथार्थ नहीं। प्रार्थना का वास्तविक अर्थ तो चाहना है मांगना नहीं। चाहने और मांगने में जो अन्तर है उसे हृदयंगम कर लेने से यह तथ्य प्रमाणित हो जायेगा। मांगने में मांगने वाले को किसी वस्तु की प्राप्ति में अपनी मांग प्रस्तुत करने के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं करना होता। हां मांगने में आत्म एवं दीन भाव लाने अवश्य ही आवश्यक हैं। यदि ऐसा न किया जाये तो फिर उसका प्रभाव भी नहीं पड़ता। किन्तु चाहने में अपने पूर्ण पुरुषार्थ की परम आवश्यकता हुआ करती है। वस्तुतः प्रार्थना है ही—अपने पूर्ण पुरुषार्थ के पश्चात् सहायता की इच्छा करने का नाम। साथ ही याचना में जहां मन में हीन भाव उत्पन्न होने लगते हैं वहां चाहने में ऐसी बात नहीं होती अपितु उसमें तो आत्मतोष तथा आत्मविश्वास जाग्रत हो उठता है। कविवर रहीम ने क्या सुन्दर कहा है—

> रहिमन याचकता गहे
> बड़े छोट ह्वै जात।

अर्थात् मांगने से बड़ा व्यक्ति भी छोटा हो जाता है। प्रार्थना—मानव गाथा में प्रार्थना को याचना के अर्थ में कभी स्वीकार नहीं किया। उनका कथन है कि प्रार्थना करना याचना करना नहीं। वह

आध्यात्म सुधा

ले० यशपाल आर्य बन्धु

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव॥ यजु० ३०।३

तो आत्मा का पुकार है। वैसे प्रार्थना का अर्थ भी प्रकृष्ट अर्थ अर्थात् उत्कृष्ट प्रयोजन के लिए पुरुषार्थ सदैव अपेक्षित हुआ ही करता है। प० चमूपति जी ठीक ही लिखते हैं कि उपासकों की परिभाषा में प्रार्थना और प्रतिज्ञा पर्याय हैं। हाथ पसारे हैं तो हाथ हिलाने भी स्वयं होंगे। (द्रष्टव्य—सन्ध्या रहस्य पृष्ठ २५) इसी प्रकार प० लेखराम आर्य मुसाफिर अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक कुलियात आर्य मुसाफिर में लिखते हैं कि—सच्ची प्रार्थना को सकल्प कहते हैं और सकल्प शुभ गुणों को धारण करने की इच्छा को कहते हैं। जबकि महर्षि दयानन्द का कथन है कि—अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए परमेश्वर वा किसी सामर्थ्य वाले मनुष्य के सहाय लेने को प्रार्थना कहते हैं। (आर्योद्देश्य रत्नमाला) स्पष्ट है कि उपरोक्त किसी भी महामनीषि ने प्रार्थना का अर्थ याचना करना नहीं माना। वस्तुतः जब अपने पूर्ण पुरुषार्थ के पश्चात व्यक्ति थक कर चूर हो जाता है और फिर भी कार्य की पूर्ति दिखाई नहीं देता तो वह व्याकुल हो उठता है। उस व्याकुलता भरे क्षणों में अन्तःकरण से जो पुकार उठती है वही सच्ची प्रार्थना है। डा० रामचरण महेन्द्र के अनुसार मनोविज्ञान की दृष्टि से प्रार्थना एक प्रकार का आत्मसकेत है। हमारे जीवन में सकेत या सूचनाए हमें आगे बढ़ाती हैं। हम चुपचाप अपने को जैसा कहते हैं या मानते जाते हैं वैसे ही निरन्तर बनते जाते हैं। हमारी प्रार्थनाएं भी एक प्रकार की सूचनाए या सकेत ही हैं। हमारी अपनी ही भावनाए हमारे मुख से निकलकर हमारे गुप्त मन का निर्माण करती हैं। (कल्याण प्रार्थनांक पृष्ठ ३८३)

यही भाव लेकर जब हम इस मन्त्र पर विचार करते हैं तो चाहने वाली बात और भी पुष्ट हो जाती है। क्योंकि इस मन्त्र में जो दुर्गुणों को दूर करने की प्रार्थना की गई है उसमें यदि हम स्वयं दुर्गुण त्यागने का कोई प्रयत्न ही न करें तो फिर यह हमारी प्रार्थना किस काम की? जब हम स्वयं दुर्गुणों को त्यागने एवं सद्गुणों को धारण करने के लिए प्रयत्नशील होते हैं और फिर भी हम सफल नहीं हो पाते, दुर्गुण हठात हमें आ कर घेर लेते हैं तब व्याकुल हो उठना स्वाभाविक है। और व्याकुलता भरे इन क्षणों में हमारे अन्तःकरण से जो पवित्र पुकार उठेगी वही वास्तविक प्रार्थना होगी। और यदि ऐसा नहीं हुआ तो फिर प्रार्थना एक शाब्दिक व्यायाम बनकर ही रह जायेगी। यदि हम अपने प्यारे प्रभु से दुर्गुणों और दुर्व्यसनों को दूर करने की प्रार्थना करते हैं तो हमें स्वयं भी उसके लिए कुछ न कुछ पुरुषार्थ करना होगा। इसीलिए हम प्रार्थना को चाहना कहते हैं। यदि हमारी चाह होगी तो फिर हम भी दुर्गुणों और दुर्व्यसनों को दूर करने और सद्गुणों को धारण करने के लिए अवश्यमेव प्रयत्न करेंगे। फिर अपने पुरुषार्थ और ईश्वर की सहायता से हमारा मनोरथ अवश्यमेव सिद्ध होगा इसमें किंचिन्मात्र भी सदेह नहीं है।

यह मन्त्र एक व्यावहारिकता की ओर सकेत कर रहा है। वह यह है कि प्रथम हमें दुर्गुणों और दुर्व्यसनों को त्यागना है फिर सद्गुणों को धारण करना। यह अत्यन्त व्यावहारिक बात है। प्रथम हम अपने मलिन पात्रों को स्वच्छ करते हैं फिर उनमें स्वादिष्ठ पदार्थ डालते हैं। यदि हम ने पात्र स्वच्छ नहीं किया तो उसमें डाला हुआ खाद्य पदार्थ भी मलिन हो जायेगा। अतः व्यावहारिकता इसी में है कि प्रथम हम अपने अन्तःकरण को पवित्र करें उसकी मलिनता को दूर करें फिर सद्गुणों को धारण करें। यदि हम भद्र प्राप्त न भी कर सकें केवल दुरित को ही दूर करने में सफल हो गये तो भी यह बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। किन्तु जब प्रभु की कृपा और अपने पुरुषार्थ से दुरित भी दूर हो गये और भद्र भी प्राप्त हो जाये तो फिर कहना ही क्या? मन्त्र भी प्रथम दुरित को दूर करने की बात कहता है पश्चात भद्र प्राप्ति की।

इस मन्त्र की एक विशेषता और भी है। वह यह कि यह मन्त्र बहुवचन में है। एक अकेला दुरित नहीं त्यागे हम सभी दुरित को त्याग कर सद्गुणों को धारण करें। एक अकेला उन्नति को प्राप्त हो और शेष सारा समाज अवनति को तो काम नहीं चलता। एक भद्र हो और शेष अभद्र तो भी नहीं। इसीलिए मन्त्र में बहुवचन का प्रयोग होकर यह कहा गया है कि हम सब दुर्गुण दुर्व्यसनों और दुःखों से छूट कर सद्गुण सुकर्म और स्वभाव तथा पदार्थों को प्राप्त हों। आर्यसमाज का नियम भी है कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सतुष्ट नहीं होना चाहिए। अतः हम सब मिलकर दुर्गुणों दुर्व्यसनों को त्यागने और सद्गुणों को प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करें और सविता जो कि गुप्त प्रेरक देव है उससे सहायता की इच्छा करें इसी में हमारा कल्याण है।

—आर्य निवास चन्द्रनगर
मुरादाबाद २४४०३२

हरिप्रकाश ने कार्यभार

(पृष्ठ १ का शेष)

रामगोपाल जी शालवाले ने घोषणा की कि आज से डा० हरिप्रकाश गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता पद पर आसीन होंगे। उन्होंने सभी कर्मचारियों और अधिकारियों से श्री बलदेव जी को भी पूर्ण सहयोग देने की अपील की। इसी मास दिल्ली में श्री सोमनाथ जी मरवाह गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा तथा सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार भी वहाँ पहुंच गए। वापसी से श्री सभा प्रधान जी के साथ उपरोक्त सभी लोग गुरुकुल कांगड़ी के कार्यालय गए। वहीं पर श्री बलभद्र कुमार हूजा ने गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता के पद से अपना त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर डा० हरिप्रकाश को गुरुकुल कांगड़ी का मुख्याधिष्ठाता नियुक्त किया गया। डा० हरिप्रकाश ने अपने पद का चार्ज ग्रहण कर लिया है।

इस अवसर पर सभी महानुभावों ने डा० हरिप्रकाश के मुख्याधिष्ठाता पद ग्रहण करने पर अपनी शुभकामनाएं प्रकट की।

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा दिल्ली

पंजाब समस्या

(पृष्ठ १ का शेष)

पंजाब समस्या के सम्बन्ध में पंजाब के विशिष्ट हिन्दुओं से भी प्रधान मन्त्री जी का विचार विमर्श करना आवश्यक है।

श्री शालवाले ने बाद में एक प्रसंग में कहा कि प्रधानमन्त्री जी ने उन्हें आश्वासन दिया है कि सरकार पंजाब के नजरबन्द हिंदुओं को रिहा करने पर विचार कर रही है।

श्री शालवाल ने यह भी कहा कि प्रधानमन्त्री जी ने आश्वासन दिया है कि चुनाव के समय जिन नीतियों की घोषणा की थी सरकार उससे पीछे नहीं हटेगी। उन्होंने यह भी बताया कि पंजाब के हिन्दुओं का एक शिष्टमण्डल शीघ्र ही प्रधान मन्त्री जी से मिलकर अपनी स्थिति स्पष्ट करेगा। प्रधानमन्त्री जी ने शिष्टमण्डल से मिलने की स्वीकृति दे दी है।

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

★ वचनामृत ★

"ईसाइयत और पश्चिमी सभ्यता के मुख्य हमले से हिन्दुस्तानियों को सावधान करने का सेहरा यदि किसी व्यक्ति के सिर बाँधने का सौभाग्य प्राप्त हो तो स्वामी दयानन्द जी की ओर इशारा किया जा सकता है। १९वीं सदी में स्वामी दयानन्द जी ने भारत के लिए जो अमूल्य काम किया है उससे हिन्दू जाति के साथ-साथ मुसलमानों तथा अन्य धर्मावलम्बियों को भी लाभ पहुँचा है।"

—पीर मोहम्मद यूनुस

'महर्षि दयानन्द भारतमाता के उन प्रसिद्ध और उच्च आत्माओं में से थे, जिनका नाम संसार के इतिहास में सदैव चमकते हुए सितारों की तरह प्रकाशित रहेगा। वे भारतमाता के उन सपूतों में से हैं जिनके व्यक्तित्व पर जितना भी अभिमान किया जाए थोड़ा है। नेपोलियन और सिकन्दर जैसे अनेक सम्राट एवं विजेता संसार में हो चुके हैं, परन्तु स्वामी जी उन सब से बढ़कर थे।'

—खदीजा बेगम एम०ए०

सम्पादकीय

भिंडरावाले के उत्तराधिकारी बनने की होड़

पंजाब की समस्या अब केवल अकाली दल और सरकार की समस्या नहीं रह गई है, सारे देश का हित इसके साथ जुड़ा हुआ है। जब कुछ समय पूर्व उग्रवादियों और पृथकतावादियों ने देश की एकता और अखंडता को चुनौती दी थी तब सारा राष्ट्र चिंतित हो उठा था। पंजाब भारत का सीमावर्ती राज्य है और अगर वहां कोई गड़बड़ होती है इसका असर अन्य राज्यों पर भी अवश्य पड़ता है।' प्रधानमन्त्री का यह कथन यथार्थ है। अकाली नेताओं का रुख प्रारम्भ से ही ऐसा रहा है कि यदि उनकी एक मांग स्वीकार की जाती है वे झट अपनी दूसरी मांग सामने रख देते हैं। उनकी आम धारणा बन गई है सरकार आन्दोलन की धमकियों से डरकर झुक जायेगी। उनके दबाव में आकर सरकार का झुकना समस्या को बढ़ावा देना है। वैसे भी समझौते का मार्ग दिखाई पड़ने से पूर्व ही उग्रवादी कोई न कोई धमाका करके वातावरण विषाक्त कर देते हैं।

सोचने और विचार करने पर दिखायी यह देता है पंजाब संकट की जड़ में राजनैतिक प्रतिद्वन्द्विता है। इसी से राजनैतिक वातावरण में जहर घुल रहा है, सीधी-सच्ची बात नहीं कही जाती। नित नयी मांगें शर्तें समझौते के लिए पेश की जाती रही हैं। पंजाब की जनता की समस्या देश के अन्य राज्यों की जनता की समस्या जैसी ही है। परन्तु साम्प्रदायिक आधार पर राजनीति चलाने का परिणाम यह हुआ पंजाब दो खेमों के बंट गया है। जहां गुटबन्दी हो, साम्प्रदायिकता का बोलबाला है। वहां पर शान्ति और स्थिरता की कल्पना नहीं की जा सकती।

जेल से छूटने के बाद हरचन्दसिंह लोंगोवाल अपने गुट को पुष्ट करने में लगे हैं। उनका यह कहना है कि जब तक केन्द्र सरकार उनके सामने घुटने न टेक दे, वे बातचीत नहीं करेंगे। सरकार (उनकी मांग के अनुसार) फौज के बागियों को छोड़ दे, सिख स्टूडेंट फैडरेशन से प्रतिबन्ध हटाले तो अकाली नेता कहते हैं हम प्रसन्न होंगे। अकाली नेताओं को खुश करने के लिए ही यदि सरकार कायम है तो वह आनन्दपुर प्रस्ताव को भी मान लेगी। फिर बातचीत की जरूरत ही कहां रह जायेगी? इस समय अकाली नेता एक दूसरे से बढ़ चढ़कर उत्तेजक भाषण दे रहे हैं। रही सही कसर शिरोमणि गुरुद्वारा कमेटी ने पूरी कर दी है जिसने एक प्रस्ताव में सेना में विद्रोह करने वालों की प्रशंसा की है। कुछ अकाली नेता जिनमें ठेकेदार सुरजन सिंह और उनके साथी शामिल हैं श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या को उचित ठहरा रहे हैं।

जब जनरैल सिंह भिंडरावाले ने इन मुख्य दो गुटों से अलग अपना गुट खड़ा कर लिया था, तब तलवंडी ने उसका समर्थन किया था और श्री लोंगोवाल ने उसका विरोध करने के बजाय उससे भी बढ़ चढ़कर उत्तेजक भाषण देने शुरू कर दिये थे। परन्तु अब जनरैल सिंह भिंडरावाले तो नहीं है पर अब ये नेता उनके उत्तराधिकारी बनने की होड़ में शामिल हैं। भिंडरावाले को शहीद करार दे रहे हैं। कुछ ऐसे सिर फिरे हैं जो भिंडरावाला जीवित है कहकर लिखकर पंजाब की ग्रामीण जनता को बरगला रहे हैं। इधर तलवंडी कह रहे हैं सरकार पहले आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव स्वीकार करे तब बातचीत की जायेगी। लन्दन 'आबजर्वर' में उन्होंने एक वक्तव्य प्रकाशित कराया है। जिसमें वह सिखों के लिए अलग विधान अलग झण्डा अलग सरकार की मांग करते हैं। उनके एक साथी ने कहा कि २५ वर्ष के लिए पंजाब का शासन सिखों के हवाले कर दिया जाए और दो कौमों के आधार पर चुनाव कराए जाय। मतलब यह है कि अकाली दल का ही शासन होना चाहिए। मास्टर तारासिंह ने एक बार कहा था कि मोर्चा लगाने पर जो कुछ मिल जाए उसे स्वीकार कर लो परन्तु अपने लक्ष्य को कभी निगाहों से ओझल मत होने दो।

उग्रवादी फिर अपने बिलों से बाहर निकलने लगे हैं

अतः शुरू से ही अकाली नेता पंजाब की जनता को उत्तेजित करने में लगे हैं। अकालियों से किसी भले की आशा नहीं करनी चाहिए। वह समझौता करना नहीं चाहते क्योंकि वह जानते हैं कि कोई भी समझौता किया तो जिन लोगों को तरह तरह के सब्ज बाग दिखाकर उन्होंने उत्तेजित कर रखा है वह उनकी जान के दुश्मन बनकर सामने आ जायेंगे। वैसे भी अकाली ऊंट की नकेल उग्रवादियों के हाथ में है। जब तक उग्रवाद का इलाज कठोरता से नहीं होगा समस्या मुंह बाये सामने खड़ी ही रहेगी। गृहमन्त्री श्री चव्हाण ने राज्य सभा में कहा कि पंजाब में उग्रवादियों की मदद व प्रोत्साहन देने वाले स्वर्णमन्दिर व अन्य धर्मस्थलों में शस्त्र तस्करी करने वाले व उग्रवादियों को प्रशिक्षण देने वाले विदेशी तत्त्वों की पड़ताल का कार्य जारी है।

हाल ही में कुछ पकड़े गये सिख उग्रवादियों से दिल्ली में पूछताछ की गयी तो उन्होंने स्वीकार किया कि पाकिस्तान में विभिन्न शिविरों में प्रशिक्षण प्राप्त ३०० उग्रवादी भारत में प्रविष्ट हो गए हैं। पंजाब से जो खबरें आ रही हैं उनसे पता चलता है कि पंजाब के तीन सीमा से लगे जिलों—गुरुदासपुर अमृतसर और फिरोजपुर के साथ आने वाली सीमा से गुमराह नौजवानों को पाकिस्तान भेजने का धन्धा जोर-शोर से चल रहा है। कहा जाता है सैनिक कारवाई से पहले लगभग १५०० उग्रवादी भागने में सफल हो गये थे। सम्भवतः वे अपने बिलों से निकलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जैसे-जैसे पंजाब से सेना हटनी शुरू हुई है, उग्रवादियों की गतिविधि फिर बढ़ती जा रही है।

भारत का भाग्य सशक्त योग्य युवा हाथों में है पर यह समय ही बता पायेगा कि हमारे कर्णधार इस भंवर से नैया खे पाने में कितने कुशल सिद्ध हो पाये?

—यशपाल सुधांशु

प्रसुव यज्ञम् – यज्ञ का प्रसार करो

लेखक प० वीरसेन वेदश्रमी, वेद विज्ञानाचार्य, वेद सदन, महारानी पथ इन्दौर

(१) वसो पवित्रमसि।
यज्ञ पवित्र है। यजुर्वेद १।२

यज्ञो का प्रचार आवश्यक है तथा आज की परिस्थिति मे तो परम आवश्यक तथा अनिवार्य है। आज की सर्वो योगी आवश्यकता यज्ञ ही है क्योकि यह पवित्रमसि—अर्थात् पवित्र है परम पवित्रकर्ता भी है एक ही प्रकार म नही अपितु सैकडो एव सहस्रो प्रकार से पवित्रकर्ता है तथा पवित्रता का हेतु है—ऐसा यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के दूसरे मन्त्र मे बताया है। पुन वेद तीसरे मन्त्र मे कहता है—

(२) वसो पवित्रमसि शतधारम्।
यज्ञ सैकडो प्रकार से पवित्रता करता है। यजुर्वेद १।३

यह यज्ञ असख्यात ससार का धारण करने और शुद्धि करने वाला कर्म है। तथा वही यज्ञ अनेक प्रकार के ब्रह्माण्डो का धारण करने और शुद्धि का निमित्त सुख देने वाला है जैसा कि—वसो पवित्रमसि सहस्रधारम् यजुर्वेद के अध्याय प्रथम के तीसरे मन्त्र मे बताया है। वेद ने यज्ञ की महान् सामर्थ्य का यहा प्रतिपादन किया है। यज्ञ जहा पवित्रता समस्त ससार की ही नही अपितु अनेक प्रकार के ब्रह्माण्डो की भी करता है वहा वह साथ साथ अनेक प्रकार के ज्ञात एवम् अज्ञात प्रकार से ससार को धारण भी करता है। अत वेद ने कहा—

(३) आयुर्दा असि आयुर्मे देहि।
यज्ञ आयु प्रदाता है। यजुर्वेद ३।१७

अर्थात् यज्ञ निश्चय आयु देने वाली है हम को वह आयु प्रदान करे। यह रहस्य मय जीवन मन्त्र जीवन तन्त्र समस्त विश्व मे प्रसारित कर देना चाहिए। वर्तमान समय मे जीवन मृत्यु (इस समय प्रदूषित पर्यावरण मे वायुमण्डल मे प्राण एव जीवनीय अमृत प्रदाता शक्ति का विनाश एव क्षय निरन्तर हो रहा है और प्राणघातक असुरतत्व विषयुक्त अनेक प्रकार की गैसों की वृद्धि तीव्रता से फैलती जा रही है। इनसे बचने के लिए

(४) माह्वा।
यज्ञ को कभी मत छोडो। यजु० २।१

इस पवित्रकर्ता वायु के साथ देश देशान्तरो मे फैलने वाले वायु को शुद्ध करने वाले ससार को धारण करने वाले उत्तम स्थानो से सुखो को बढाने वाले यज्ञ को मत छोडो- अर्थात् यज्ञ का अनुष्ठान प्रतिदिन अवश्य करो। ऐसा वेद का स्पष्ट इस सम्पूर्ण मन्त्र मे आदेश है तथा इसी वेद के मन्त्र मे धौरसि—भी कहकर विज्ञान के प्रकाश का हेतु भी है और सूर्य की किरणो मे स्थिर होने वाला भी है यह भी बताया है यज्ञ करोगे तो यज्ञ के विज्ञान का प्रकाश होगा। वह यज्ञ नष्ट नही होगा। सूर्य की किरणो मे स्थिर होने वाला है। यह भी ज्ञात हो जावेगा और वायु के साथ देश देशान्तरो मे भी फैलता है, यह भी सिद्ध होगा। वायु को शुद्ध करने वाला है यह विज्ञान भी सिद्ध होगा। वायु की शुद्धि के कारण विश्व को जीवन देकर धारण करने वाला है यह भी अनुभूत हो जायगा।

(५) प्रदूषण के घातक परिणाम—

भोपाल के वायु प्रदूषण ने सिद्ध कर दिया है कि उसके अनेक प्रकार के दुष्परिणाम हुए और उत्तरोत्तर प्रकट हो रहे है। मनुष्य मरे भी बीमार भी पडे। पशु पक्षी, जलीय प्राणी मरे जो बचे उनमे भी न्यूनाधिक विकार हुए और हो रहे है। वृक्ष वनस्पति, अन्न, फल शाक सब्जी नष्ट हुई विषयुक्त हो गई और जिनने सेवन किया उनको रोग न्यूनाधिक हो रहे हैं। गर्भस्थ शिशुओ पर भी अनेक प्रकार के दुष्परिणाम प्रकट होने लगे हैं। ये सब कुप्रभाव पर्यावरण के दूषित होने से हुए। अत दूषित पर्यावरण के शोधन के लिए विशाल रूप से यज्ञ अवश्य करना चाहिए। कारखाने बन्द नही हो सकते। मोटर कार ट्रक, रेल, हवाई जहाज चलना बन्द नही हो सकते हैं। पर्यावरण को शुद्ध पवित्र निर्विष करने के लिए उत्तम जीवनीय रोग निवारण एव पुष्टि प्रदाता तत्त्वो का प्रसारण यज्ञ के द्वारा सरलता से सम्भव है। अत वर्तमान समय मे यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

(६) इस यज्ञ मपत प्रये।
आज की परिस्थिति मे यज्ञ को प्रधानता दो। यजु० १।१२

आज के समय मे यज्ञ के सुगम एव विज्ञानयुक्त कर्म को वर्तमान समय के भारतीय वैज्ञानिक हृदय से स्वीकार करते हुए भी सार्वजनिक रूप से व्यापार मे लाने मे अपनी प्रतिष्ठा की हानि अनुभव करते हैं और वैदेशिक वैज्ञानिकों की ओर मार्ग दर्शन की प्रतीक्षा मे रहते हैं। वे जो उपाय करे वैसा ही हम भी अनुसरण करे तो अपनी प्रतिष्ठा है। परन्तु विदेश के वैज्ञानिकों को यज्ञ का ज्ञान ही नही है। भारतवासी तो जानते हैं। भारत के वैज्ञानिको ने इस समय पर्यावरण शोधन कार्य मे ससार के वैज्ञानिको का मार्गदर्शन करने मे अग्रसर होना चाहिए। इस यज्ञ कार्य को प्राथमिकता प्रदान करें।

(७) महान वैज्ञानिक महर्षि दयानन्द—

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ससार के महान् उपकार के लिए प्राणिमात्र के जीवन के लिए यज्ञ करना अति आवश्यक बताया। पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए और जीवनीय बनाने के लिए वायुमण्डल को शुद्ध करने, वृष्टि जल आदि की शुद्धि तथा उसे सुसस्कृत कर समस्त देश देशान्तरो एव पृथिवी अन्तरिक्ष और द्युलोक मे फैलाने के लिए लक्षाहुति के यज्ञो का विधान किया। अर्थात् एक लाख या अधिक आहुति वाले यज्ञ कुण्ड और उनके लिए विविध प्रकार के हव्य पदार्थो का विधान किया। ऐसे लक्षाहुति कुण्ड चार चार हाथ लम्बे, चौडे गहरे तथा २ लाख आहुतियो के लिए छ हाथ के कुण्डो के निर्माण का विधान किया। २ मीटर -३ मीटर लम्बे चौडे कुण्डो मे विशाल परिमाण मे बडे-बडे यज्ञ होने चाहिए, तभी पर्यावरण के प्रदूषण शान्त होंगे।

(८) लक्षाहुति यज्ञो से शान्ति एव सुख प्राप्ति—

ये लक्षाहुति कुण्ड दैनिक अग्निहोत्र के लिए नही है। किसी श्रौत योग व इष्टि के लिए नही हैं और षोडश सस्कारो के लिए भी नही हैं अपितु सार्वभौम प्रदूषित पर्यावरण के नाश तथा अनुकूल पर्यावरण बनाने के लिए ही हैं। ऋग्वेद दशम मण्डल के सूक्त ९८ के मन्त्र दसवें एव ग्यारहवें मे ९९ हजार आहुति का उल्लेख वृष्टि यज्ञ के लिए है। अत पर्यावरण शोधन ऋतु सुधार, अवर्षण रोक कर वृष्टि करने, उत्तम कृषि, मेघो की वृद्धि आदि के लिये बडे-बडे, यज्ञो का करना परम आवश्यक है। इससे अति वृष्टि अनावृष्टि, तूफान आदि भी शान्त होंगे। ऐसे लक्षाधिकाहुति यज्ञ अनेक स्थानो पर होने चाहिये। एक कुण्ड निर्माण के द्वारा अथवा अनेक बडे-बडे कुण्डों मे यज्ञ हो सकते है। परिस्थिति विशेष मे ही इनका आयोजन होता है। आज के समय मे जब पृथिवी अन्तरिक्ष, सर्वत्र प्रदूषण हो प्रदूषण फैल रहे हैं, तो इनका अनुष्ठान करना परम आवश्यक एव हितकारी है। अन्य कोई उपाय है ही नही।

(९) घृतेन वर्धयामसि।
यज्ञाग्नि को घृत से प्रचण्ड रखो।
यजु० ३।१

इस यज्ञ की अग्नि को घृतादि की आहुतियों से बढाते हैं। (यजु ३ ३) यज्ञ का प्रधान द्रव्य घृत है। आवश्यकता अनुसार उसमें चार प्रकार के होम द्रव्य सुगन्धित रोग नाशक, मिष्ट पदार्थ और पुष्टिकर्ता पदार्थों की भी आहुति होती है। ये ही पदार्थ पर्यावरण को निर्विष करते हैं शुद्ध पुष्ट और रोगनाशक बनाते हैं। प्रकृति के रोग या उपद्रव अतिवृष्टि अनावृष्टि आधी तूफान आदि का भी निवारण करते हैं। घृत को आयुर्वेद मे विष शामक बताया है। अनेक विष, उपविषो का शोधन घृत दूध, तक्रादि मे होता है। साप काटने पर या सखियादि विष खा लेने पर घृत पिलाकर ही चिकित्सा हमारे देश मे प्रचलित थी और है भी। अर्थात् जिस प्रकार घृत को पिलाने से शरीर निर्विष हो जाता है उसी प्रकार पर्यावरण के प्रदूषणो के शमनार्थ वायु मण्डल को घृताहुति के धूम्र से पूर्ण कर देने से आश्चर्यजनक लाभ अवश्य होगा। पर्यावरण जीवनप्रद बनेगा। अत यज्ञ परम आवश्यक है। यज्ञान्त के मन्त्र मे सर्वान्नि कामान्त्समश्नुय शब्द हैं। अर्थात् यज्ञो से सब कामनाओ की पूर्ति होती है। यही कामना पूर्ति का भाव यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु—मन्त्र म है। उससे भी आहुति यज्ञान्त मे है। अत यज्ञ सब कार्यों की सफलता का प्रबल साधन है। ऐसा सुनिश्चित विचार सब ने ग्रहण कर यज्ञानुष्ठान करने मे अग्रसर होना चाहिए।

— ० —

श्रुति सुधा

सुखदा जीवनदा, कल्याणी,
अमृत है वेदो की वाणी।

दुखो का भजन करती है,
मानस का रजन करती है।

भ्राति न पास फटकने देती,
जन मन को न भटकने देती।

सब दुरितो की नाशक है यह,
मंगल मार्ग प्रकाशक है यह।

जीवन मर्यादा - विधि इसमे,
सद् विद्याओ की निधि इसमें।

जिसने भी श्रुति-सुधा चखी है,
उसकी काया पलट गयी है।

डा राजा प्रताप सिंह 'राजा' गन्नौरी
एम० ए० पी० एच० डी०
५ प्रोफेसर्स कालोनी कैथल (हरि०)

आर्यसमाज के उत्थान के लिए कतिपय सुझाव

लेखक—डा० रघवीर मुमुक्षु

(१) आर्य सन्यासियों एवं वानप्रस्थों का एक ऐसा सशक्त संगठन है जो कि समस्त प्रचार व्यवस्था को सम्भाल ले। ये प्रचारक केवल निर्धारित तिथियों में ही समाजों के उत्सवों अथवा कथाओं में न जाएं अपितु एक एक व्यक्ति एक जिला तहसील अथवा एक निश्चित परिधि वाले कुछ नगरों गावों को लें तथा योजनाबद्ध ढंग से वहां के जन जन में प्रवेश करके आर्य वेद का प्रचार करें। ये व्यक्ति वैदिक धर्म एवं संस्कृति के प्रचारार्थ पूर्णतया प्रशिक्षित हों। मौखिक प्रचार के अतिरिक्त लेखन चिकित्सा यज्ञ अध्यापन साहित्य वितरण आदि के द्वारा भी आर्यसमाज का सन्देश घर घर पहुंच सकता है। संन्यासी एवं वानप्रस्थ अपने गृहस्थ काल के घरों में रहने का मोह छोड़ दें। भारत में अभी ऐसे बहुत से स्थान हैं जहां उनकी महती आवश्यकता है।

(२) जो लोग वानप्रस्थ अथवा सन्यास धारण नहीं कर सकते तथा नौकरी अथवा अपने वरलू कार्यों से निवृत्त हो चुके हैं ऐसे समाज सेवी व्यक्तियों का भी एक संगठन हो जिसके अधीन रहकर अपनी रुचि तथा शक्ति के अनुसार ये लोग विभिन्न प्रकार से समाज सेवा कर सकें। ऐसे ही लोगों का पण्डित वर्ग आर्य समाज के अनुसंधान कार्य को सम्भाल सकता है जो कि आर्यसमाज में अब तक उपेक्षित सा है।

(३) योजनाबद्ध तरीके से उपदेशक विद्यालयों में अथवा अन्य किस प्रकार से उपदेशक प्रचारक बनने की ट्रेनिंग दी जाय। जिसके अनुसार पौराणिक मुसलमान ईसाई बौद्ध जैन तथा अन्य नये सम्प्रदायों के सिद्धांतों के पूर्ण ज्ञाता विद्वान् तैयार किए जाएं। अन्य सम्प्रदाय वालों का शास्त्रार्थ का चैलेंज दिया जाय। इसके साथ ही वैदिक सिद्धांतों के ज्ञाता उपदेशक उन सिद्धांतों का प्रचार करते रहें। किसी भी शास्त्र का गम्भीर ज्ञान न करके कहानियों चुटकलों के माध्यम से लच्छेदार भाषा में श्रोताओं का मनोरंजन करने की प्रथा समाप्त होनी चाहिए। उपदेशक बनने से पूर्व उसी प्रकार की ट्रेनिंग दी जाय जैसी कि देवबन्द में मौलवी बनने के लिए तथा बेलूरमठ में राम कृष्ण मिशन का प्रचारक बनने के लिए बी०ए० परीक्षा पास होने पर भी कई वर्ष तक प्रशिक्षण दिया जाता है।

(४) समाजों तथा सभाओं का कार्य केवल साप्ताहिक सत्संग वार्षिकोत्सव तथा सम्मेलनों तक सीमित न रहकर पूरे वर्ष के लिए एक ठोस कार्यक्रम बनाया जाए तथा जन सम्पर्क किया जाए। वर्ष की समाप्ति पर कार्यक्रम की पूर्णता अपूर्णता सुधार पर विचार किया जाए।

(५) प्रचार का एक सशक्त माध्यम है साहित्य। इस दिशा में ईसाई कितने यत्नशील हैं वह इससे ही जाना जा सकता है कि सड़कों पर चौराहों पर यहां तक कि व्यापक घरों में जा जाकर ये लोग छोटे छोटे ट्रैक्टों के द्वारा ईसाईमत का प्रचार कर रहे हैं। सार्वदेशिक सभा अच्छे साहित्य का प्रकाशन करता है किन्तु उसकी अपेक्षित बिक्री नहीं हो पाती। सार्वदेशिकसभा अपने अधीनस्थ सभी सभाओं को तथा वे समाएं अपने से सम्बन्धित सभी समाजों को अनिवार्य रूप में वह साहित्य भेजें जिसको कि उनके सदस्य भी खरीदें तथा दूसरे लोगों में उसका प्रचार भी करें।

(६) प्रत्येक आन्दोलन का प्राण उसकी युवा शक्ति होती है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने इस शक्ति को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के रूप में साथ लिया। राजनीतिक क्षेत्र में भी युवा कांग्रेस युवा लोकदल आदि के माध्यम से विभिन्न संगठनों ने इस शक्ति का उपयोग लिया है। आर्यसमाज में भी आर्य कुमार सभा आर्य युवक परिषद आर्य वीर दल की स्थापना इसी उद्देश्य से हुई थी। इन संगठनों में शक्ति भी थी तभी तो महात्मा हंसराज तथा स्वामी श्रद्धानन्द जैसे लौह पुरुषों का अध्यक्षता इनको प्राप्त हो सकी। आज इन संगठनों की शिथिलता के कारण ही युवक वर्ग आर्यसमाज में नहीं आ रहे हैं। जो आर्यसमाज के लिए चिन्ता का विषय है।

(७) आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में निरन्तर घटती हुई उपस्थिति तथा बच्चों एवं युवा वर्ग की अनुपस्थिति सभी के लिए चिन्ता का विषय है। इसके लिए आवश्यक है कि सत्संगों में प्रौढ दार्शनिक एवं वैदिक व्याख्यानों के साथ साथ बच्चों के लिए रुचिकर सरस-सुबोध कार्यक्रम हो तथा उनको इतना क्रियात्मक बनाया जाए कि जिससे युवकों के लिए भी वे आकर्षण का केन्द्र बनें। वैसे यह भी सत्य है कि यदि माता-पिता बच्चों को दो चार वर्ष का होने पर लगातार आर्य समाज के सम्पर्क में रखें तो ऐसा हो नहीं सकता कि बड़ा होने तक समाज के प्रति उसकी रुचि न बनी रहे। मेरी यह धारणा है कि माता पिता अपने बच्चों को जैसा चाहें बना सकते हैं। यदि बच्चे अथवा युवक आर्यसमाज में नहीं आते तो इसमें अधिक दोष उनके अभिभावकों का है।

(८) यज्ञ तथा योग के द्वारा भी हम जन समुदाय को आर्यसमाज की ओर आकृष्ट कर सकते हैं। यद्यपि इस ओर किसी को बलात् प्रेरित नहीं किया जा सकता किन्तु यदि आर्यसमाज में कुछ साधु सन्त वानप्रस्थ सन्यासी योगविद्या में पारङ्गत हो जाएं तो जन समुदाय योग तथा आध्यात्मिकता के नाम पर ठग रहने वाले पाखण्डी धर्म गुरुओं से बचकर आर्यसमाज की शरण में आ सकेगा। इसी प्रकार यज्ञ भी जन समुदाय की श्रद्धा का केन्द्र है। खुले स्थानों में परिवारों में इसका प्रचार करके हम जनसमुदाय को अपनी ओर आकृष्ट कर सकते हैं।

(९) उत्तर भारत में तो शिथिल अथवा सशक्त किसी न किसी रूप में आर्यसमाज का प्रचार हो ही रहा है। दक्षिण भारत की स्थिति तो और भी सोचनीय है। वहां के लिए हमें प्रत्येक प्रान्त की भाषा में प्रचार करने वाले उपदेशक तैयार करने होंगे। यह कार्य सभाओं के द्वारा ही सम्भव है। प्रत्येक प्रान्त में उपदेशक विद्यालय खोलकर वहीं की भाषा में अलग अलग प्रांतों के लिए अलग उपदेशक तैयार किए जाएं अथवा उत्तर भारत से ही दक्षिण की भाषाओं के जानने वाले प्रचारक भेजे जाएं। इसी प्रकार प्रत्येक प्रान्त की भाषा में आर्य समाज का साहित्य प्रकाशित करके वितरित किया जाए। प्रत्येक प्रान्त में हिन्दी शिक्षण केन्द्र खोलकर भी आर्यसमाज वहां पर हिन्दी राष्ट्रीय एकता तथा आर्य समाज का प्रचार कर सकता है।

सृष्टि का नियम ही यह है कि विकास के साथ ह्रास भी जुड़ा रहता है। संसार का प्रत्येक जड चेतन पदार्थ पदार्थ इससे युक्त है। कभी आर्य वैदिक धर्म ही तो संसार में प्रचलित था भारत धर्म गुरु था। कालक्रम से वह वैदिकधर्म भारत में भी तिरोहित हो गया। यही बात आर्यसमाज के साथ है। वह भी फला फूला देश विदेश में फैला किन्तु समय के प्रभाव से अछूता न रहा तथा पहले की अपेक्षा ह्रासोन्मुख हो गया। इस स्थिति को न तो नकारने की जरूरत है तथा न ही इससे डरकर हतोत्साहित होने की बात है। यदि त्रुटियां अनिवार्य हैं तो उनका इलाज भी सम्भव है। इसलिए अब हमें न तो आंखें मूंदकर बिना कोई ठोस कार्यक्रम बनाए प्रचार में लगे रहना चाहिए तथा न त्रुटियों से घबराकर साहस छोड़कर बैठना चाहिए। आत्म परीक्षण करना बुरा नहीं किन्तु अनिवार्य है।

इन समस्याओं पर विचार करने के लिए आवश्यकता है कि आर्यसमाज का नेतृवर्ग पण्डित वर्ग तथा उपदेशक वर्ग इस ओर ध्यान दे। सम्मेलन उत्सव आदि करने के साथ साथ इन बातों पर विचार करने के लिए भी कोई बैठक अथवा संगोष्ठी बुलायी जाए। वह गोष्ठी चाहे कई दिन चले किन्तु कोई न कोई निर्णय लेकर ही उठे। वह देखे कि रोग क्या है तथा उसका उपचार कैसे सम्भव है?

यदि हम संगठित रूप में इस ओर सोचें तो कोई कारण नहीं कि आर्यसमाज के प्रति लोगों की वही धारणा बन जाए जो कि दीनबन्धु एण्ड्रयूज ने इन शब्दों में व्यक्त की थी मुझे एक आग दिखलायी पड़ती है जो सर्वत्र फैली हुई है। यह आग सनातन आर्य धर्म को स्वाभाविक पवित्र दशा में लाने के लिए एक भट्टी में है जिसे आर्यसमाज कहते हैं मैं इस अग्नि को माङ्गलिक समझता हूं।

लहरो मे नैया बही जा रही है

प्रकाशवीर व्याकुल'—

लहरो मे नैया बही जा रही है सुनी जा रही न कही जा रही है।
असुर मन मे बैठे असुर दल डरे क्यो यह मार कब से सही जा रही है॥
बहुत दूर है देश इतिहास से अब
डगर झूठ की ही गही जा रही है।
वतन के किनारो पे खतरे बने हैं
बचाए कोई जो रही जा रहा है।
बने मौडर्न तज पुराने चलन को
न जाने किधर ये बही जा रही है।
पिला के बहुत दूध हैं नाग पाले
मनुजता उन्ही से दही जा रही है।
हमारे हो हैं जो विधर्मी बनाये
बताए पुरानी वही जा रही है
वही फूट और लूट रक्षक है भक्षक
बनी बात बिगडी रही जा रही है॥
विकट यह समस्या है व्याकुल कवि को
कोई तुक मिलाई नही जा रही है।

१८५७ के संग्राम में महर्षि दयानन्द

लेखक—प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

मानव का इतिहास मनुष्य द्वारा किए मुक्ति के प्रयासों का इतिहास है। दासता से मुक्ति चाहे वह राजाओं की हो या व्यक्तियों की हो या व्यक्ति के अपने ही मन या इन्द्रियों की दासता हो, इस से छुटकारा पाने के लिए मनुष्य सदा से प्रयत्न करता आ रहा है। यूरोप में १५ वीं शताब्दी में पोपवाद से मुक्ति के लिए लूथर ने जो क्रांति की वह धर्म की (जो वास्तव में अधर्म था) मुक्ति के लिए थी। इस सुधार का युग कहा जाता है। इसके बाद १७-१८ शताब्दी में पुनर्जागरण (रनसा) का युग है। क्रिया की प्रतिक्रिया और उसकी भी प्रतिक्रिया मानव का निरन्तर स्वभाव बन गया है। और इसी में वह अपने लिए उपादेय मार्ग को ढूंढने का, नया मार्ग बनाने का प्रयास करता है।

जिस तरह से यूरोप में मानव को गाढ़ निद्रा से जगाने के लिए लूथर ने उसे झटका दिया उसी प्रकार भारत में जो है सो ठीक है राम—भला करेंगे की मूर्च्छा में से इस देश के मानव को निकालने के लिए १८ वीं तथा १९ वीं सदी में राजा राममोहन राय स्वामी दयानन्द केशवचन्द्र सेन ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा महात्मा गांधी ने झकझोरा।

इनमें स्वामी दयानन्द तथा महात्मा गांधी को छोड़कर बाकी सभी समाज सुधारक थे। राजा राममोहन राय का काल १७७२ से १८३३ का स्वामी दयानन्द का १८२५ से १८८३ तक का केशवचन्द्र सेन का काल १८६६ से १८८४ तक का, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का काल १८२० से १८९१ तक का तथा महात्मा गांधी का काल १८६९ से १९४८ तक का है। राजा राममोहन राय ने ब्राह्म समाज को ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज को, केशवचन्द्र सेन ने प्रार्थना समाज को ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने विशेष तौर पर विधवा विवाह आदि सुधार को जन्म दिया। महात्मा गांधी ने इन सभी सुधारकों के आंदोलनों के परिणाम स्वरूप फलित हुए जाग्रत राष्ट्रवादी समाज को ब्रिटिश दासता से मुक्ति के लिए अहिंसक आंदोलन का मौलिक हथियार दिया।

यह काल १८ वीं तथा १९ वीं शताब्दी का था जिसमें भारत में क्रान्तिकारी लहरों ने जन्म लिया। ये दो उभरे थी सामाजिक क्रांति तथा राष्ट्रवाद की चेतना के जागरण की क्रांति। राजा राममोहन राय केशवचन्द्र सेन तथा ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का कार्य सामाजिक क्रांति तक सीमित रहा। स्वामी दयानन्द तथा महात्मा गांधी का कार्य सामाजिक तथा राजनैतिक अथवा राष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों में छा गया। राजा राममोहन राय ने तो अपने आत्मचरित्र में यहां तक लिख दिया कि अंग्रेजों का शासन इस देश के उत्थान के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। इसके विपरीत ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ८ वें समुल्लास में लिखा कि कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर माता पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है, स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रंथ आर्याभिविनय में लिखा—अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हो तथा हम लोग पराधीन कभी न हों।

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश का प्रणयन १८७४ में किया। १० अप्रैल १८७५ में बम्बई में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की उनका जन्म १८२४ को हुआ था। इसका अर्थ यह हुआ कि जब वे ५१ वर्ष के थे तब उन्होंने सत्यार्थप्रकाश रचा और तभी आर्यसमाज की उन्होंने स्थापना की।

इस बीच स्वतन्त्रता प्राप्ति का १८५७ का गदर हो चुका था। उस समय वे ३३ वर्ष के थे। ५१ के वर्ष में आकर उन्होंने सत्यार्थप्रकाश रचा, और देश में जगह-जगह आर्यसमाजों की स्थापना में लग गए, इससे पहले की आयु में वे क्या करते रहे?

> जब संवत् १९१४ के वर्ष में तोपों के मारे मन्दिर-मूर्तियां अंग्रेजों ने उड़ा दी थी तब मूर्ति कहाँ गई थी? प्रत्युत बाघेर लोगों ने जितनी वीरता की और लड़े शत्रुओं को मारा, परन्तु मूर्ति एक मक्खी की टाँग भी न तोड़ सकी। जो श्रीकृष्ण के सदृश कोई होता, तो इनके धुर्रे उड़ा देता और वे भागते फिरते। —स्वामी दयानन्द (सत्यार्थप्रकाश)

स्वामी दयानन्द जब ३३ वर्ष के युवा थे तब देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए सन् ५७ की क्रांति हुई। उस क्रांति की झलक सत्यार्थप्रकाश में जो १९५७ में प्रकाशित हुआ पायी जाती है। ग्यारहवें समुल्लास में वे लिखते हैं जब संवत् १९१४ के वर्ष में तोपों की मार से मन्दिर मूर्तियां अंग्रेजों ने उड़ा दी थी तब मूर्ति कहां गई थी? प्रत्युत बाघेर लोगों ने जितनी वीरता की, और लड़े शत्रुओं को मारा परन्तु मूर्ति एक मक्खी की टांग भी न तोड़ सकी। जो श्रीकृष्ण के सदृश कोई होता, तो इनके धुर्रे उड़ा देता, और वे भागते फिरते।

संवत् १९१४ के वर्ष का अर्थ है सन् १८५७, अर्थात् वह वर्ष जब भारतीय स्वतन्त्रता का प्रथम युद्ध हुआ।

१८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम के विषय में यह लिखना कि अगर उस समय कोई श्रीकृष्ण सरीखा होता तो अंग्रेजों के धुर्रे उड़ा देता वे भागते फिरते। अंग्रेजों की छत्रछाया में रहते हुए १८५७ में ऐसा लिखने वाला कोई माई का लाल ही हो सकता था।

ऐसा प्रतीत होता है कि १८५७ अर्थात् अपनी ३३ वर्ष तक की युवावस्था तक स्वामी दयानन्द के सम्मुख सिर्फ राष्ट्रीयता का ही सपना था। पण्डित दीनबंधु शास्त्री ने कलकत्ता में महर्षि के समवर्ती महानुभावों के घरों से सामग्री एकत्रित करके महर्षि की जिस आत्म कथा का संकलन किया है जिसे स्वामी सच्चिदानन्द योगी ने १९७२ में नारायण आश्रम नैनीताल से प्रकाशित किया है उसमें स्पष्ट होता है कि १८५७ तक स्वामी दयानन्द देश की आजादी के लिए ही दिन रात व्यस्त रहते थे। इसी समय उनका द्वितीय बाजीराव पेशवा के दत्तक पुत्र धुन्धु पन्त (नाना साहब) उनके बन्धु अजीमुल्ला खां, नानासाहब के भाई बाला-साहब, तात्याटोपे और जगदीशपुर के जमींदार कुंवरसिंह से परिचय हुआ। इस समय स्वामी दयानन्द ने निश्चय किया कि वे लाखों साधुओं को संगठित करेंगे। इस जीवन कथा में ऋषि दयानन्द कहते हैं कि चारों मठों के साधुओं ने हमारे संगठन को जगत् मिथ्या कहकर टाल दिया।

यह सब कहानी १८५७ की है। ५७ का सशस्त्र क्रांति का विद्रोह विफल हुआ। इस समय स्वामी दयानन्द की विचार धारा ने पलटा खाया। सिपाही विद्रोह के विफल होने के परिणाम स्वरूप जब स्वामी दयानन्द को कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था तब १८६० को अपनी ३६ वर्ष की अवस्था में वे स्वामी विरजानन्द के चरणों में पहुंचे, जो स्वयं तत्कालीन सशस्त्र क्रांति के सूत्रधार थे। उनके सम्पर्क में रहकर स्वामी दयानन्द महर्षि दयानन्द हो गए क्योंकि यद्यपि विरजानन्द स्वयं प्रज्ञाचक्षु थे तथापि दयानन्द की आंखें खोल देने का काम उन्होंने किया।

इस समय दयानन्द को समझ पड़ गया कि किसी भी देश की यथार्थ तथा स्थिर आजादी सामाजिक जागरण के बाद आती है, और सामाजिक जागरण रूढ़िवाद से मुक्ति प्राप्त करने पर ही प्राप्त होता है। महर्षि दयानन्द का असली काम ३६ वर्ष की आयु के बाद से शुरू होता है, जब वे स्वामी विरजानन्द से दीक्षा लेने के बाद रूढ़िवाद पर प्रहार करने के लिए कार्य क्षेत्र में उतर पड़े। इस बीच १८६० से जब वे स्वामी विरजानन्द के पास पहुंचे १८८३ (जब उनकी मृत्यु हुई) तक के बीच के वर्षों में, उन्होंने जो देशव्यापी काम किया उसी के आधार पर आज हम उन्हें स्वामी दयानन्द न कहकर महर्षि दयानन्द कहते हैं। इस बीच उन्होंने राष्ट्रीय चेतना को जगाने के लिए उसकी आधारभूत सामाजिक चेतना को जगाया।

स्वामी विरजानन्द के यहां रहकर स्वामी दयानन्द का दृष्टिकोण बदला। आज तक जिन ग्रन्थों के आधार पर हिन्दू धर्म का ढांचा खड़ा हुआ था, उन ग्रन्थों का अर्थ वह नहीं है जो साधारण पण्डित करते थे यह गुरु मन्त्र ऋषि दयानन्द को स्वामी विरजानन्द से मिला। ऋषि दयानन्द समझते थे कि हिन्दू समाज का ढांचा बिगड़ा हुआ है परन्तु अगर यह ढांचा वेदों उपनिषदों पुराणों के आधार पर खड़ा है तब इसे कैसे बदला जा सकता है? इस देश की जनता सब कुछ छोड़ सकती थी, धर्म-प्राण होने के कारण वेदों को तो नहीं छोड़ सकती थी। स्वामी विरजानन्द ने ऋषि दयानन्द को यह मन्त्र दिया कि वेदों के अर्थ ही वे नहीं हैं जो किए जाते हैं। अगर वेदों के वे अर्थ नहीं थे जो किये जाते थे तब तो ऋषि दयानन्द के हाथ में हिन्दू समाज के ढांचे को बदलने का एक बड़ा शस्त्र हाथ में आ गया था। यही कारण है कि ऋषि दयानन्द ने सब वेदों का नवीन दृष्टिकोण से भाष्य किया, भारतीय संस्कृति को भारतीय संस्कृति रखते हुए उसकी अन्तरात्मा को बचा दिया।

ऋषि दयानन्द का रूढ़िवाद पर प्रहार

वर्तमान युग के भारत के सामाजिक विचारकों में ऋषि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सदियों से परम्परागत रूढ़िवाद पर कठोर प्रहार किया। अब तक के सामाजिक विचारक पीछे की ओर देखते थे। जो कुछ चला आ रहा है वही ठीक है, उसी की हमें रक्षा करनी है। ऋषि दयानन्द पीछे तथा आगे दोनों ओर देखते थे। हमारा जो कदम हमें पीछे के साथ बांधता है, ऐसा बांधता है कि हमें आगे बढ़ने नहीं देता वह गलत है। रूढ़िवाद को तिलांजलि देने का नारा लगाया। यह नारा धर्म, समाज, राजनीति प्रत्येक क्षेत्र में लगाया, इसलिए ऋषि दयानन्द के समक्ष

सरस्वती ने सक्रिय भाग लिया था

से भारत के हर क्षेत्र म हलचल मच गई। पुराने आधार हिल गये, और पीछे को लौटने वाला या एक ही जगह खड़ा-खड़ा भारत सदियो की नीद छोडकर आगे को कदम बढाने लगा।

(क) धार्मिक क्षेत्र मे रूढिवाद पर प्रहार—भारत का धर्म वेदा से बधा हुआ था। जो कुछ है वेदो के आधार पर है। स्त्रियो को नही पढना चाहिए वर्णव्यवस्था जन्म से होनी चाहिए शूद्रो को वेद पढने का अधिकार नही दलित वर्ग को समाज के निम्न स्तर मे ही दासता के रूप में पड रहना चाहिए देवताओ की पूजा करनी चाहिए। यह सब क्यो होना चाहिए क्योकि वेदो मे ऐसा लिखा है। ऋषि दयानन्द ने रूढिवाद पर प्रहार करने के लिए सब से पहला प्रहार वेदो के अर्थ पर किया। उनका कहना था कि वेदों मे यह सब कुछ नही लिखा, पण्डित लोग वेदों के अर्थ ही नहीं समझते वेदो के व जो अर्थ करते हैं वे अर्थ ठीक नही, गलत हैं। हिन्दू धर्म वद को ईश्वरीय ज्ञान मानता है इस-लिए वेदो मे जो कुछ लिखा था उसी को ईश्वरीय ज्ञान मानता था। ऋषि दयानन्द ने वेदो के प्रचलित अर्थो पर प्रहार किया। रूढिवाद के वे इतने शत्रु थे कि वेदो के शब्दो के भी रूढि-अर्थो को मानने से उन्होने इन्कार कर दिया। वे सस्कृत के अगाध पण्डित थे। निरुक्त के आधार पर उन्होने सिद्ध किया कि वेदो म जो शब्द प्रयुक्त हुए हैं उनका कोई रू अर्थ नही है। एक ही शब्द को अनेक अर्थो मे प्रयुक्त किया जाता है। इन्द्र का अर्थ पौराणिक इन्द्र नही इन्द्र की निरुक्ति के अनुसार जो भी एश्वर्यवान हो वह इन्द्र कहलाता है। परमेश्वर भी इन्द्र है, राजा भी इन्द्र है धनी मानी व्यक्ति भी इन्द्र है। अपने पक्ष की पुष्टि मे उन्होने प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थो का सहारा लिया। ऋषि दयानन्द न वदो के रूढिवादी अर्थों पर प्रहार कर सारे दृष्टिकोण को बदल दिया। जिन मन्त्रो से स्त्रियो का पढना निषिद्ध कहा जाता था, उन्ही से उन्होंने सिद्ध किया कि स्त्रियो को सबके समान पढने का अधिकार है जिन मन्त्रो से वर्ण व्यवस्था जन्म परक कही जाती थी उन्ही से उन्होने वर्ण व्यवस्था को कर्म परक सिद्ध कर दिया जिन मन्त्रो से देवी-देवताओ की पूजा की जाती थी उन्ही मन्त्रो से उन्होने देवी देवताओ के स्थान मे एक ईश्वर की उपासना का विधान सिद्ध किया। इस युग मे अन्य जो भी सामाजिक विचारक हुए उन्होने या तो पाश्चात्य सस्कृति के प्रभाव मे आकर भारतीय-सस्कृति को तिलाजलि दे दी या रूढिवाद से अपने को मुक्त न कर सके। ऋषि दयानन्द ही एक एसे विचारक थे जिन्होने भारतीय सस्कृति को छोडा भी नही, पाश्चात्य सस्कृति को लिया और उस मे डूब भी नही।

(ख) सामाजिक क्षेत्र मे रूढिवाद पर प्रहार— ऋषि दयानन्द के विचार का दृष्टिकोण सर्वथा मौलिक दृष्टिकोण था। वे भूत वर्तमान तथा भविष्य को पिछले तथा अगले से मिलाकर चलना चाहते थे। यही कारण है कि सिर्फ भूत के साथ लिपटे रहने वाले रूढिवाद का सामाजिक क्षेत्र मे भी उन्होने बहिष्कार किया। समाज मे वे स्थिरता के पक्ष पाती नही थे गतिशीलता क पक्षपाती थे।

उनके समय का समाज नवीनता से डरता था जो कुछ चला आ रहा था सामाजिक-क्षेत्र मे उसी को चलाना चाहता था। स्त्री शिक्षा का इस देश मे खातमा हो चुका था। बाल विवाह विधवा-विवाह निषध दहेज की प्रथा—ये सब प्रथाए परम्पराए इस देश मे रूढ हो चुकी थी। इनके विरुद्ध बोलने का किसी को साहस नही होता था। ऋषि दयानन्द ने इस सब रूढिवाद को जहा धार्मिक क्षेत्र से उखाड फेंका वहा सामाजिक क्षेत्र मे से भी इसे निकाल बाहर किया। उन्होने एक बिल्कुल नवीन दृष्टिकोण समाज के सम्मुख रखा ऐसा दृष्टिकोण जो पहले से चले आ रहे दृष्टिकोण से सर्वथा भिन्न था उससे उलटा था। इस काल मे जो समाज सुधारक हुए वे धीरे धीरे समाज का सुधार कर रहे थे। ऋषि दयानन्द ने एक ही प्रहार से समाज की सब रूढियो को उखाड फेका। उन्होने समाज के सुधार का नारा नही लगाया, सामाजिक क्रान्ति का नारा लगाया। ऋषि दयानन्द के उद्योग का परिणाम था कि स्त्रियो के प्रति समाज का रुख बदल गया। जहाँ पहले स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम् का राग अलापा जाता था वहा कन्याओ को पढाने के लिए पाठशालाए खोली जाने लगी। ऋषि दया-नन्द तथा अन्य सामाजिक सुधारको मे आधारभूत भेद यह है कि जहा दूसरो ने हिन्दू धर्म को समाप्त करने का प्रयत्न किया वहा ऋषि दयानन्द न हिन्दुओ का हिन्दू रहते हुए उन्हे नवीनता के रग मे रग दिया।

उन्होने हिन्दू धर्म को हिन्दू धर्म रखते हुए उसकी अन्दर से काया पलटने का यत्न किया। यही कारण है कि १९ वी शताब्दी के समकालीन समाज सुधारको मे जितनी सफलता उन्हें मिली उतनी सफलता अन्य किसी को नही मिली। ऋषि दयानन्द ने समाज सुधार की जो रूपरेखा बना दी उसी को लेकर २० वीं शताब्दी के सामाजिक तथा राजनीतिक नताओ ने कार्य किया। महात्मा गाधी के २० वी शताब्दी के आन्दोलन को समझने के लिए ऋषि दया-नन्द के १९ वी शताब्दी के आन्दोलन को समझना आवश्यक है।

(ग) राजनीतिक क्षेत्र मे रूढिवाद पर प्रहार—ऋषि दयानन्द की विचारधारा का आधार रूढिवाद का उन्मूलन करना था। राजनीतिक क्षेत्र मे जिसका राज चला आ रहा हो वही ठीक है—यह रूढिवादी विचार चला आ रहा था। उन्होने धार्मिक तथा सामाजिक नेता होते हुए भी इस विचार पर प्रहार किया। सत्यार्थप्रकाश मे उन्होंने लिखा—'अभाग्योदय से और आर्यो के आलस्य प्रमाद परस्पर के विरोध से अन्य देशो पर राज्य करने की कथा ही क्या कहना किन्तु आर्यावर्त मे भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नही है। जो कुछ है सो भी विदेशियो से पदाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोडे राजा स्वतन्त्र है। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियो को अनेक प्रकार के दुःख भोगने पडते हैं।

अंग्रेजी के प्रसिद्ध वाक्य Good government is no substitute for self governmeat तथा ऋषि दया-नन्द के उक्त सन्दर्भ मे कोई भेद नही है। दादा भाई नारौजी तिलक आदि ने इसी विचार को आगे बढाया। आर्यसमाज से बाहर यह कम लोगो को पता है कि जिस स्वराज्य शब्द का प्रयोग कांग्रेस के मच से दादा भाई नौरोजी ने १९०६ मे किया था उसका प्रयोग ऋषि दया-नन्द ने १८७५ मे किया था। ऋषि दयानन्द १८५७ के गदर के समय ३३ ३४ वर्ष के नवयुवक थे और अगर उस समय उनके वही विचार थे, जो उन्होंने सत्यार्थप्रकाश मे अंकित किए तो कोई सन्देह नही कि वे इस क्रान्ति के समय अपने ढग स क्रियाशील रहे होंगे। जो है वह ठीक है उसके प्रति विद्रोह नही करना—यह भावना रूढिवादी भावना है और इसी रूढिवादी भावना पर ऋषि दयानन्द ने धार्मिक सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्र म सीधी चोट की।

पंजाब समस्या के समाधान के लिए पंजाब के सभी धार्मिक संगठनों तथा राजनीतिक पार्टियों को विश्वास में लेकर ही सरकार निर्णय करे

दिल्ली १२ मार्च। पजाब समस्या के समाधान करन की दिशा मे केन्द्र सर-कार के आदेश पर शिरोमणि अकाली दल एव शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के कतिपय नजरबन्द नेताओ की रिहाई का स्वागत करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रति-निधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने एक वक्तव्य मे कहा कि पजाब समस्या का उचित समाधान करने के लिए पजाब में रहने वाले ४३ प्रतिशत हिन्दुओ को भी विश्वास मे लिया जाना चाहिए।

श्री शालवाले ने कहा कि अकालियो का वर्तमान नेतृत्व विभाजन का उग्र समर्थक है। वस्तुतः पजाब की समस्या सभी गैर अकालियो विशेष रूप स आर्य-समाज सनातन धर्म, जैन, नामधारी, राधास्वामी आदि सभी वर्गों और सभी राजनीतिक पार्टियो को विश्वास मे लेकर हल की जानी चाहिए। अन्यथा अकालियो को सन्तुष्ट करने वाली नीति स उस प्रात तथा देश मे सदैव अशाति की स्थिति बनी रहेगी। रिहा किये गये नेताओं को स्पष्ट रूप से हिंसक कार्रवाइयो की निन्दा एव प्रजातन्त्र मे अपना दृढ विश्वास प्रकट करना जरूरी है।

समाचार पत्र मे प्रकाशित अकाली नेता श्री सुरजिन्दर सिंह द्वारा प्रकट भारतीय सविधान के दायरे मे खालि-स्तान बनाने की मांग पर टिप्पणी करते हुए श्री शालवाले ने सरकार को आगाह किया कि अकालियो की मौजूदा कार वाइयो से धर्मनिरपेक्षता का स्वरूप लग भग समाप्त हो गया है। अकालियो की माँग का समर्थन सिक्खो का केवल एक सीमित वर्ग कर रहा है किन्तु व अपनी माँग को सारे सिक्खो के नाम तथा पजाब मे रहने वाले अन्य वर्गों के नाम पर खडा कर रहे हैं जो सर्वथा असवैधानिक एव अनुचित है। राष्ट्रीय एकता और अखडता के दायरे मे सम्बद्ध पक्षो की आपसी सह मति से ही सरकार पजाब समस्या का हल ढू ढे और अकालियो की किसी भी अनुचित माँग के सामने न झुके।

इस सम्बन्ध मे सभा प्रधान जी ने कहा कि सभी जागरूक वर्गो को अका लियो की देश तथा विदेशो मे चल रही गतिविधियो पर कडी नजर रखनी चाहिए।

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल द्वारा आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्यसमाज मालवीय नगर मे दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल द्वारा आर्यसमाज स्थापना दिवस धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री ललित माकन सासद चौ० सुरेन्द्र सिंह चयरमैन दक्षिण दिल्ली जोन (नगरनिगम) श्री देवन्द्र कुमार सूद सदस्य नगर निगम ने आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के उपकारो को स्मरण किया। आर्यसन्देश के सम्पादक श्री यशपाल सुधाशु, विद्या-रत्न प० मदनमोहन शास्त्री ने अपने ओजस्वी भाषणो से जनता को मन्त्रमुग्ध किया तथा वैदिक धर्म की विशेषताओ से अवगत कराया।

महामन्त्री
रामवल्लभ दास आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती के इतिहास विषयक मन्तव्य और आर्यसमाज

सत्यकेतु विद्यालकार

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थो मे जो अनेक इतिहास विषयक मन्तव्य प्रतिपादित किये है उनमे मुख्य निम्नलिखित हैं—

(१) सृष्टि के प्रारम्भ से पाच सहस्र वष पूव समय पर्यन्त पृथिवी पर आर्यो का सावभोम चक्रवर्ती राज्य रहा। यह दशा स्वायम्भुव मनु से शुरू कर पाण्डव राजा युधिष्ठिर के समय तक रही।

(२) जितनी भी विद्या, सस्कृति, विज्ञान व मत ससार मे फैले व सब आर्यावर्त (भारत) से ही प्रसरित हुए। प्राचीन समय म सवत्र वैदिक धम का प्रचार था, या अन्य देशो के निवासी एसे मतो के अनुयायी थे जिनका प्रादुभाव वैदिक धम से हुआ था।

(३) महाभारत युद्ध व कौरव-पाण्डवो का काल अब से लगभग पाच हजार वष पूव था। स्वायम्भुव मनु स युधिष्ठिर तक जो राजा भारत मे हुए, उनका इतिहास महाभारत आदि ग्रन्था मे लिखा है। युधिष्ठिर के पश्चात् अनेक राजवशो ने भारत के विविध प्रदेशों पर राज्य किया। इनमे दिल्ली, इन्द्रप्रस्थ के राजाओ की वशावली महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश म दी है, जिसके अनुसार बारहवीं सदी के अन्तिम भाग मे दिल्ली का राजा यशपाल था जिसे परास्त कर शहाबुद्दीन गौरी ने भारत मे अपने प्रभुत्व का सूत्रपात किया था।

(४) आधुनिक विद्वानो ने भारतीय इतिहास के जिस तिथि-क्रम का प्रतिपादन किया है वह महर्षि को स्वीकार्य नही था। आधुनिक विद्वान् वदो का रचनाकाल २००० से १२०० इस्वी पूव तक मानते है। पर महर्षि वदो को अपौरुषय मानत थ। आधुनिक इतिहासकार जो महाभारत क काल को १००० ईस्वी पूर्व के लगभग मानत हे और राजा विक्रमादित्य के समय को जो पाचवी सदी इस्वी म मानत हैं, वह महर्षि को स्वीकार नही था।

(५) प्राचीन आर्य सभ्यता की उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुचे हुए थे। मनुष्य की सभ्यता का आदि युग पाषाण युग था, जब कि वह जगली और असभ्य जीवन व्यतीत करता था, धीरे-धीरे मनुष्य सभ्यता के माग पर अग्रसर हुआ, यह मत महर्षि को स्वीकाय नही था। सभ्यता और सस्कृति क क्षेत्र म वे विकासवाद को नही मानत थे।

(६) आर्यो का आदि निवास स्थान त्रिविष्टप (तिब्बत) था, जहा से जाकर वे अन्यत्र बसे। आर्य किसी जाति विशेष का नाम नही है, और न ही उसस किसी नसल का बोध होता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदो की अपौरुषेयता, एकेश्वरवाद षड्दशनो मे अविरोध, क्षत्रधम आदि के सम्बन्ध मे जो मन्तव्य प्रतिपादित किये हैं, उन की पुष्टि के लिए आयसमाज के विद्वानो ने पर्याप्त परिश्रम किया है। पर उनके इतिहास विषयक मन्तव्यो के सत्यासत्य की जाच के लिए या उनक समथन मे अभी तक कोई महत्त्वपूण काय नही किया गया। केवल प० भगवद्दत्त जी बी० ए० रिसर्च-स्कालर तथा आचार्य रामदेव जी ने इस दिशा मे काय किया था। आचाय जी ने भारत का प्राचीन इतिहास तीन खण्डो मे लिखा था जो महर्षि क मन्तव्यो के पूर्णतया अनुरूप था। इस इतिहास के दो खण्डो के लिखन मे मैंने भी आचाय जी को सहयोग दिया था। पर गत पचास वर्षो मे न डा० ए० व० कालिजो ने इस सम्बन्ध मे कोई काय किया, न गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय ने और न ही किसी आय प्रतिनिधि सभा व सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा ने।

भारत के स्कूलो, कालिजो और यूनिवर्सिटियो मे भारत का जो इतिहास पढाया जाता है वह महर्षि के मन्तव्यो क अनुरूप नही है। आयसमाज की शिक्षण सस्थाओ मे भी ऐसा ही इतिहास पढाया जाता है। इसका परिणाम यह है कि केवल उच्च शिक्षा प्राप्त लोगो मे ही नही, अपितु (शिक्षा क व्यापक प्रसार के कारण) सर्वसाधारण जनता मे भी इतिहास विषयक वे धारणाए बद्धमूल होती जाती हैं जो महर्षि के मन्तव्यो के विरुद्ध हैं।

गत वर्षों मे विश्व के विविध देशो मे पुरातत्त्व सम्बन्धी जो खोज हुई है, और प्राचीन साहित्य का जो विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है, उससे बहुत से ऐसे सकेत व प्रमाण उपलब्ध हुए ह। जो महर्षि के इतिहास विषयक मन्तव्यो की पुष्टि करते है। उनसे ज्ञात होता है, कि अत्यन्त प्राचीन काल म ईजिप्ट, एशिया माइनर, मध्य एशिया आदि सवत्र वैदिक धम का प्रभाव विद्यमान था और दक्षिण पूर्वी एशिया के देशो म भी प्राचीन हिन्दू (आय) धम की सत्ता थी। विविध दशो आय राजाओ के शासन के प्रमाण भी प्रकाश मे आये है। पर महर्षि क मन्तव्यो के सत्यासत्य के निणय क लिए अभी बहुत खोज व परिश्रम की आवश्यकता ह। यह काय विद्वानो की एक एसी मण्डली द्वारा किया जाना चाहिए। जो जहा सस्कृत भाषा के पूणतया ज्ञाता तथा प्राचीन भारतीय साहित्य व इतिहास मे पारगत हो, वहा वहा साथ ही जिनमे से अनेक फ्रेञ्च, जमन, रूसी, चीनी व तिब्बती आदि भी जानते हो। और जिन्हे इजिप्ट, ग्रीस चीन एशिया माइनर, ईरान आदि देशो के प्राचीन इतिहास की भी समुचित जानकारी हो। ऐसे विद्वानो द्वारा गम्भीर रूप से शोध के अनन्तर ही महर्षि के इतिहास विषयक मन्तव्यो की पुष्टि कर सकना सम्भव होगा। क्या कोई आय शिक्षण-सस्था इस महत्त्वपूण काय को अपने हाथ मे लेने को उद्यत है। □

आर्यसमाज हजूरीबाग श्रीनगर (कश्मीर) का पुनर्निर्माण

—नेत्रपाल शास्त्री

आप को स्मरण होगा ही कि ७ जून १९८४ को दिन के १०। बजे आततायियो ने आयसमाज हजूरीबाग श्रीनगर को पुलिस के देखते-देखते पेट्रोल छिड़ककर भस्म कर दिया था। परिणाम स्वरूप आर्यसमाज को चालीस पैंतालीस लाख रुपये की क्षति उठानी पडी।

सवत् १९४९ में स्थापित आर्यसमाज का विशाल एव भव्य भवन राख का ढेर बना दिया दिया गया। उक्त भवन मे विगत साठ वर्ष से देवकी आर्य पुत्री पाठशाला (दसवी तक) चल रही है जिसमें छह सौ कन्याएं पढ रही हैं। पाठशाला का भवन पुस्तकालय प्रयोगशालाएं, फर्नीचर आदि सब कुछ भस्म कर दिया।

मैं आर्यसमाज मे पुरोहित पद पर निरन्तर २९ वर्ष से कार्य कर रहा हू। आर्यसमाज मे रहता था। मुझे और मेरे परिवार को जीवित जला देने का योजनाबद्ध षड्यन्त्र रचा गया। पहल बाहर से दरवाजे बन्द कर दिये गये और पेट्रोल छिड़क कर आग लगा दी गई। यदि मेरा छोटा लडका कुल्हाडी स दरवाजा तोडने मे सफल न होता तो मेरा परिवार भस्म हो जाता। दैव योग से उस समय मैं घर से बाहिर था।

अग्नि काण्ड मे जहाँ चालीस हजार रुपये मूल्य का मेरा व्यक्तिगत पुस्तकालय जला। वहा दो कन्याओ के दहेज का सामान, घरेलू सामान जिसका मूल्य लाखो मे है, भस्म कर दिया। बात यही तक सीमित नही रही, जब मैं बच्चों सहित सडक पर आ गया, तो एक सज्जन हम को अपने घर ले गये। उनके यहा रहते हुए दो दिन ही हुए थे कि सरकार की ओर से मेरे आश्रयदाताओं को लिखिततरूप मे चेतावनी पत्र प्रेषित किया। लिखा था नेत्रपाल शास्त्री आर्यसमाजी लीडर है, उसके रहने से आसपास के रहने वाले लोगो को खतरा उत्पन्न हो गया है इसलिए २४ घण्टे के अन्दर उसको अपने घर से निकाल दें अन्यथा आप का घर भी जला दिया जायेगा। मेरे कारण आश्रयदाताओ को कष्ट न पहुँचे, ऐसा विचार कर मैं परिवार के साथ पुन सडक पर आ गया। दूसरे आश्रयदाता के यहा जाने पर भी एसा ही हुआ। तीसरी बार चन्द्रचिनार मन्दिर के महन्त ने बडे ही साहस के साथ अपने मठ मे मुझे आश्रय दिया। अभी हम मठ मे ही रह रहे हैं।

अब तो यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि पजाब और जम्मू कश्मीर मे जो देशघाती उपद्रव हुए उनके पीछे विदेशी शक्तियो का हाथ था। अब भी देशद्रोही तत्त्व सक्रिय हैं। वे भारत को उन्नत होते देखना नही चाहते। आज देश सब ओर से घिर चुका है। देश के भीतर भी जयचन्दो की सेना खडी हो गई है।

आर्यसमाज अपने जन्मकाल से ही देश जाति और धम की रक्षा मे तत्पर रहा है यह निष्काम भाव से राष्ट्र सेवा मे सलग्न है। अनाचारो अत्याचारो के सम्मुख न झुकने वाली यह एक क्रांतिकारी दिव्य शक्ति है। इसलिए यह सदैव देशद्रोहियो की आंखो मे खटकती रही है। वर्तमान मे भी सच्ची बात कहने पर आर्यसमाज को जानमाल की महान् क्षति उठानी पडी है। पड रही है और पडेगी। आर्यसमाज हजूरीबाग, श्रीनगर, कश्मीर को उग्रवादियों द्वारा जलाकर खाक कर देना भी देशघातक षड्यन्त्र का अङ्ग था।

आर्यसमाज का पुनर्निर्माण

"रग लाती है हिना पत्थर पै घिसे जाने के बाद।' इस उक्ति के अनुसार ७ जून (१९८४) को आर्यसमाज हजूरीबाग का सब कुछ भस्म कर देन पर भी आर्यसमाज के अधिकारी लेशमात्र भी हतोत्साहित नही हुए। स्थानीय जनता ने भी जिनके मनोबल को गिराने के लिए और कश्मीर से भाग जाने के लिए ही आयसमाज को जलाया था, आर्यसमाज के पुनर्निर्माण के लिए आग्रह किया, साथ ही पूर्ण सहयोग का आश्वा-

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्य जगतके समाचार

आर्यसमाज नजफगढ का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज नजफगढ (दिल्ली) का ३३ वाँ वार्षिकोत्सव २२ २३ २४ मार्च १९८५ को अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ जिसमे महान् साधु सन्यासी भजनोपदेशक पधारे। आसपास के गावो वालो का इस उत्सव में बडा सहयोग रहा उस उत्सव को सफल बनाने मे आर्य प्रतिनिधि सभा हनुमान् रोड का बडा सहयोग मिला इस समारोह के शुभ अवसर पर एक राष्ट्र जागरण प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था जिसमें लोगो ने बडी रुचि दिखाई।

रघनाथसिंह प्रधान

शुद्धि सस्कार

आयसमाज मन्दिर गोन्गा गोकण नाथ मे दिनाक १७ ३ ८५ रविवार को एक मुस्लिम दम्पती का शुद्धि सस्कार प० गिरधारीलाल जी शर्मा प्रधान आर्य समाज की अध्यक्षता तथा प० केशवदेव जी शर्मा के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। उन्हे सनातन वैदिक धम की दीक्षा देकर उनका नाम श्री भगवान दीन तथा श्रीमती गगादेवी घोषित किया गया।

मन्त्री हरवश लाल
आयसमाज गोकणनाथ

आर्यसमाज स्थापना दिवस एव नव सवत्सर पर्व

आर्यसमाज शिवाजी चौक खडवा जिला पूर्व निमाड (म०प्र०) मे दिनाक २२ ३ ८५ को नव सवत्सर पव एव आर्य समाज स्थापना—दिवस समारोह मनाया गया प्रात साढ पाच बजे से प्रभात फेरी निकाली गई जो नगर के भिन्न भिन्न मोहल्लो से होती हुई समाज मन्दिर मे समाप्त हुई। तत्पश्चात ध्वज व ध्वज गीत के साथ ध्वजारोहण काय सम्पन्न हुआ।

इसी शुभावसर पर प्रात साढ नौ से श्री रामचन्द्र जी आर्य के नाती अविजित कुमार का अन्नप्राशन एव चूडाकर्म (मुण्डन) सस्कार समाज के पुरोहित सुख राम आर्य सि० शास्त्री द्वारा सम्पन्न हुआ।

साय ६ बजे से पव पद्धति अनुसार वृहद यज्ञ सध्या प्रार्थना के पश्चात श्री रामप्रताप जी श्रीमाली मन्त्री आ० स० मलोसगज एव पुरोहित सुखराम आय ने दोनों पर्वों की विशेषता पर सारगर्भित ओजस्वी भाषण दिया प्रसाद वितरण एव शान्ति पाठ के पश्चात कार्यक्रम समाप्त हुआ।

मन्त्री
आर्यसमाज खण्डवा

निर्वाचन

आयसमाज मालवीय नगर का वार्षिक चुनाव २ ३ १९८५ को सव सम्मति से हुआ जिसमे निम्न पदाधिकारी सवसम्मति से चुने गये

प्रधान श्री धर्मवीर मलीन उपप्रधान डा तीर्थराज शास्त्री श्री भूपसिंह गुप्ता श्री नन्दलाल ग्रोवर महामत्री—श्री डी० आर० जुनेजा श्री वेद रत्न श्री एन० आर० बत्रा प्रचारमत्री श्री मूलचन्द आर्य कोषाध्यक्ष श्री चुन्नीलाल वैद्य।

आयसमाज रमेश नगर का वार्षिक चुनाव ३ ३ ८५ को श्री हरिवंश जी की अध्यक्षता मे हुआ जिसमे निम्नपदाधिकारी चुने गये।

१	प्रधान	श्री नन्दलाल
२	उपप्रधान	श्री बलराज
३		श्री भ मसन गुलाटी
४	मन्त्री	श्री सुरेन्द्रपाल महाजन
५	उपम त्री	श्री सतपाल नारग
६	कोषाध्यक्ष	श्री मदनलाल
७	वस्तु भडाराध्यक्ष	श्री हरिचन्द
८	पुस्तकालयाध्यक्ष	श्री किशनचन्द
९	लेखा निरीक्षक	श्री जसवत राय

आयसमाज रमेश नगर
सुरेन्द्र महाजन मत्री

आयसमाज नारायण विहार का साधारण अधिवेशन तिथि १० ३ ८५ को सम्पन्न हुआ और निम्नलिखित पदाधिकारी सवसम्मति से निर्वाचित हुए।

१	प्रधान	श्री भूपेन्द्रनाथ सेतिया
२	मन्त्री	श्री टेकचद सदूजा
३	कोषाध्यक्ष	श्री वशमलाल कल्याल

भवदीय
भूपेन्द्र सेतिया प्रधान

गुरुकुलकागडी विश्वविद्यालय का ८५वा वार्षिकोत्सव

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव गत वर्षों की भाति इस वष भी ६ अप्रैल से १४ अप्रैल १९८५ तक बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वेद शिक्षा राष्ट्रनिर्माण आदि सम्मेलनो के साथ साथ दीक्षान्त समारोह का भी आयोजन किया गया है जिस मे उच्चकोटि के शिक्षा शास्त्री राजनेता पधार रहे हैं। अत आप इसमे सपरिवार सादर आमत्रित हैं।

कैप्टन देवरत्न
सहा० मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगडी हरिद्वार

महाशय धमपाल को आशीष एव शुभकामना देते हुए श्री रामगोपाल शालवाले एव श्री ललित माकन।

महाशय धर्मपाल जी दीर्घायु हों।

आय केन्द्रीय सभा के प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान माता चनन देवी आय नेत्र अस्पताल के अध्यक्ष तथा प्रसिद्ध व्यावसायिक सस्थान एम० डी० एच० के स्वत्वाधिकारी श्री महाशय धमपाल जी के ६१ वें जन्म दिवस पर जनकपुरी स्थित अस्पताल मे आयोजित भव्य समारोह मे सम्पूर्ण दिल्ली से पधारे गण्यमान्य महानुभावो ने उनके दीर्घायु की कामना की।

सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने सामाजिक कल्याण के क्षेत्र मे महाशय धमपाल जी की सवाओ की प्रशसा करते रहने के लिए अपना आशीर्वाद दिया।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूयदेव तथा महामन्त्री डा० धमपाल ने उन्हे अपनी शुभकामनाएँ दी और कहा कि महाशय धमपाल का वरद हस्त आय जगत पर सदैव बना रहे जिससे वे फलती फूलती रहे।

श्री ललित माकन ससद सदस्य श्री धमदास शास्त्री श्री मदनचन्द बरवा तथा अनेक समाज सेवियो ने कहा जन्म दिवस उन्ही के मनाये जाते हैं जो अपने लिए नही दसरो के लिए जीते हैं। महाशय जी ऐसे ही विरल महापुरुषो मे से हैं।

इस अवसर पर आयसमाजो शिक्षण सस्थाओ तथा अन्य समाजसेवी सस्थाओं की ओर से महाशय जी को पुष्पगुच्छ भेट किये गये। इस समारोह का आयोजन एव सयोजन टस्ट के महामन्त्री श्री ओम प्रकाश आर्य ने किया

आयस देश परिवार की ओर से महाशय धमपाल की दीर्घायु के लिए शुभकामनाए

आर्यसमाज नरेला का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आयसमाज नरेला ५५ वा वार्षिकोत्सव ३० एव ३१ मार्च को बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रथम दिन एक शोभा यात्रा भी निकाली गई जिसमें हजारो स्त्री पुरुष शिक्षण सस्थाओं के युवा युवतियां ग्रामीण क्षेत्र से आये अनेक ऋषि भक्तो ने बढ चढकर भाग लिया।

रात्रि को ग्राम सुधार सम्मेलन हुआ जिसमे चौ० भरतसिंह सांसद चौ० हीरासिंह भू०पू० कार्यकारी पार्षद दिल्ली आदि अनेक नेताओं ने ग्राम सुधार के लिए सुझाव तथा ग्राम समस्या को दूर करने के लिए स्वय भी प्रयत्न करने का विश्वास दिलाया।

प० देवेन्द्र नाथ शास्त्री एव दिल्ली सभा के भजनोपदेशक श्री प० चुन्नीलाल के प्रवचन एव भजनोपदेशो ने ग्रामीण जनता को आयसमाज की ओर आकृष्ट किया।

मन्त्री
आनन्द कुमार

आर्यसमाज का वार्षिक निर्वाचन

आयसमाज बहराइच की साधारण सभा दिनाक १७ मार्च ८५ को आय समाज मन्दिर बहराइच मे हुई जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारीगण एव अन्तरग सदस्य निर्वाचित हुए।

१ श्री कृष्ण माधव सरन प्रधान
२ श्री बरतसिंह मन्त्री
३ श्री हरीराम बर्मा कोषाध्यक्ष
४ श्री जगदीश प्रसाद पुस्तकालयाध्यक्ष

(बरतसिंह) मन्त्री
आयसमाज बहराइच

आर्यसन्देश विशेषांक का विमोचन करते हुए दायें श्री एच के एल भगत तथा सभा प्रधान श्री सूर्यदेव।

आर्यसन्देश विशेषांक का विमोचन

३१ मार्च। आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली मे मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जन्मोत्सव पर एक विशेष आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले महामन्त्री श्री ओम प्रकाश त्यागी डा० वाचस्पति उपाध्याय, श्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव तथा ससदीय कार्यमन्त्री श्री एच० के० एल० भगत उपस्थित थे। उपस्थित विद्वान नेताओ ने श्रीरामचन्द्र की जीवन मर्यादाओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर आर्यसन्देश के स्थापना दिवस विशेषाक का श्री एच० के० एल० भगत ने विमोचन किया।

आर्यो! गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार चलो
देहली से स्पेशल बसें चलेंगी

गुरुकुल कागड़ी हरिद्वार का उत्सव १२, १३ १४ अप्रैल १९८५ को हो रहा है। इसमें भाग लेने हेतु आर्य परिवारो की सुविधा के लिए ११-४-८५ रात्रि १०-३० बजे आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, नई देहली व ग्रेटर कैलाश, नई देहली से स्पेशल बसें चलेंगी जो १४-४-८५ रात्रि देहली वापस आयेगी। यात्री ऋषिकेश स्वर्गाश्रम इत्यादि भी देखेंगे। मार्ग व्यय केवल ६५/- रुपय है। निवास एव भोजन की व्यवस्था पहले की भांति गुरुकुल मे होगी। चलने वाले भाई-बहन, सम्पर्क करे।

१ श्री प्राणनाथ बई, DS, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली फोन-६४१९९१४
२ श्री धर्मेन्द्र मालवीय, आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली, फोन ३४३७१८
३ टकारा प्रिन्टिंग प्रैस, गुरुद्वारा रोड, गुड़गाव। फोन—२६०७

विशेष—गुड़गाव जिला के आर्य परिवार सोला-कुआँ से बस मे बैठ सकेंगे।

विनीत
(श्री रामचन्द्र आर्य प्रचारक यात्रा, ४६६ भीमनगर, गुड़गांव)

आभार

मेरे पूज्य भ्राताजी की आकस्मिक मृत्यु पर जिन बन्धुओ तथा सस्थाओ ने मुझे सवेदना के पत्र भेजे है 'आर्यसन्देश' द्वारा मैं उन सब का हार्दिक आभार व्यक्त करता हू।

उत्तम चन्द शरर, पानीपत

आर्यसमाज पलवल का वार्षिकोत्सव

दि० १५, १६, १७ मार्च को समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी जगदीश्वरानन्द, डा० भवानीलाल जी भारतीय, डा० प्रशान्तकुमार वेदालकार, प्रो० रामप्रसाद जी तथा प्रो० रतन सिंह जी के व्याख्यान तथा श्री सोहनलाल पथिक एव श्री गुलाबसिंह राघव के भजन हुए।

पाठकों और ग्राहकों से निवेदन

आर्यसन्देश साप्ताहिक यदि मिलने मे आपको विलम्ब होता है तो कृपया अपना पता चैक करे। यदि आपका पता गलत छपा है या आपका पता बदल गया है तो आप कार्यालय को सूचित करें।

—व्यवस्थापक

आवश्यक सूचना
सार्वदेशिक आर्यवीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर हजारीबाग आर्यसमाज मन्दिर मे १५ मई से ३० मई ८५ तक

सार्वदेशिक आर्यवीर दल बिहार की ओर से १५ दिनो के लिए आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर हजारीबाग आर्यसमाज मे लगाया जा रहा है। इस अवसर पर केन्द्र से माननीय प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हस तथा उप सचालक श्री देवव्रत व्यायामाचार्य एव कई कुशल शिक्षक पधार रहे हैं। शिक्षार्थी उनके अनुशासन मे रह कर आसन, व्यायाम, लाठी तथा अनेक आत्म रक्षार्थ कला कौशल का ज्ञान प्राप्त करेंगे। आर्य वीर दल सदैव शिविरो द्वारा युवको मे चरित्र निर्माण एव अनुशासन का पाठ पढाकर माता पिता का सेवक, आज्ञाकारी एव सच्चे देशभक्त नागरिक तैयार करता है।

अत सभी बन्धुओं से तथा सभी आर्यसमाजो से निवेदन है कि अपने आर्यसमाज से कम से कम ५ युवक अवश्य भेजें।

नियम निर्देश

१. प्रवेश शुल्क २५) रुपये मात्र।
२ भोजनादि शुल्क नि शुल्क रहेगा।
३ ओढने बिछाने के लिए ऋतु अनुकूल दरी, चादर अवश्य लावे। ४ लोटा, थाली कटोरा तथा कान तक की लाठी।
५ खाकी हाफ पैन्ट, सफेद सैनिक कमीज काला कच्छा और सेण्डो गजी सफेद मोजे तथा ब्राउन जूते हरी डोरी सम्बी सीटी, नोट बुक बाल पेन आदि।

द्रष्टव्य—१६ वर्ष के ऊपर आयु के युवक भाग लेंगे।

रामाज्ञा वैरागी
सचालक
सार्वदेशिक आर्यवीर दल, बिहार

प्रिंटिंग प्रैस कारीगरों की आवश्यकता है

हिन्दी-अग्रेजी के कम्पोजीटर और चैन्डर प्रिन्टिंग प्रैस के कारीगरों (मशीन मैन) की शीघ्र आवश्यकता है। अच्छा वेतन व अन्य सुविधाएं।

सम्पर्क करें—

(व्यवस्थापक) युगल किशोर
वैदिक मुद्रणालय, आर्यसमाज पुलबगश नया मौहल्ला, आजाद मार्किट दिल्ली-६
दूरभाष ५१९२४७

आर्य नेताओं का उद्बोधन

(पृष्ठ १ का शेष)

को सबसे अधिक हानि की है। क्या वे पजाब की पानी की समस्या को खून की दरिया बहाकर हल करना चाहते हैं और चण्डीगढ़ शहर का आदमियो की हड्डियों से निर्माण करना चाहते हैं। इसी प्रकार चण्डीगढ़ शहर पजाब ने नही सारे देश ने बनाया है, इसी प्रकार देश का सबसे बड़ा बाघ पजाब के रहने वालो ने नही बल्कि सारे देशवासियो ने बनाया है। अगर आज पजाब को जरूरत हो तो सारा देश उसके लिए अपनी सब नदियां उडेल सकता है, बशर्ते कि पजाब के हमारे इन बहके हुए भाइयों को सद्बुद्धि हो।

श्री प० शिवकुमार शास्त्री ने बताया कि किस प्रकार ऋषि दयानन्द ने सत्य सनातन वैदिक धर्म पर पड़े अज्ञान के आवरण को हटाकर उसका बुद्धि सगत समुज्ज्वल रूप प्रकट किया। दिल्ली विश्व विद्यालय के प्रवक्ता डा० वाचस्पति उपाध्याय ने आर्यसमाज स्थापना-दिवस को समस्त आर्यसमाजियो का जन्म दिवस बताते हुए इसे सामूहिक रूप मैं मनाने का आह्वान किया।

प्रो० बलराज मधोक ने श्री साथी के विचारो का समर्थन करते हुए कहा कि पजाब की असली राजधानी चण्डीगढ नही लाहौर होनी चाहिये और हिन्दुओ और सिखो को इसी माग को लेकर खड़े होना चाहिए। इससे जहा देश मे नव चेतना आयेगी वहाँ पजाब समस्या का समाधान का रास्ता भी निकलेगा।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने कहा कि आज के दिन ही महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी। साथ ही उन्होने आर्यसमाज के गौरवपूर्ण कार्यों पर प्रकाश डालते हुए आर्यजनो से कहा कि आत्महीनता की भावना को छोडकर राष्ट्रनिर्माण के कार्य में तन-मन-धन से जुट जाना चाहिए। यही आर्यसमाज दिवस को मनाने की सार्थकता है। आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने आर्य सस्थाओं से आये हुए सभी आर्यजनो को स्थापना दिवस की शुभकामनाएँ दी तथा शान्ति पाठ के पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

आर्यसमाज हजूरीबाग

(पृष्ठ ८ का शेष)

सन भी दिया।

आर्यसमाज की विशेषता यही है कि वह निर्माण का कार्य तूफानों में तथा संघर्षों में ही करने का आदी है। खण्डहरों में यज्ञ किया तथा परमात्मा से शक्ति प्राप्ति की प्रार्थना की और आर्यसमाज के पुनर्निर्माण का कार्य प्रारम्भ कर दिया।

सार्वदेशिक सभा दिल्ली के प्रधान श्री रामगोपाल जी शाल वाले और उनके साथ मंत्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी व जम्मू कश्मीर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री डा० योगेन्द्र कुमार जी शास्त्री हालात का जायजा लेने के लिए गये थे। तीन दिन रहे। तात्कालिक मुख्य मंत्री की मनोवृत्ति को जानने की भावना से तीनों अधिकारी मिले थे। उनसे मुख्यमंत्री ने कहा था यहां लोग आर्यसमाज को पसन्द नहीं करते। क्या जरूरत है इसके बनाने की। अगर बनाओगे तो फिर जला देंगे। मुख्यमन्त्री के विद्वेषपूर्ण वाक्यों ने सार्वदेशिक सभा और प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों के संचित साहस को सुदृढ़ता प्रदान की। उन्होंने आर्यसमाज के पुनर्निर्माण के लिए प्रेरित किया। उनके वहां आने से स्थानीय कार्यकर्ताओं का उत्साह द्विगुणित हो गया। और जुट गये आर्यसमाज के निर्माण में।

बूंद बूंद से घट भरता है यह उक्ति प्रत्यक्ष अनुभव में आई। उग्रवादियों ने आर्यसमाज को जलाकर भस्म कर दिया है आर्यजगत में इस समाचार को जहां भी जिसने पढ़ा वह ही विह्वल हो उठा और संगठन शक्ति का परिचय सहायता के रूप में धन भेजकर दिया। सहायता के रूप में ढाई लाख रुपये से लेकर एक रुपया तक प्राप्त हुआ है। एक पांच दस सौ रुपयों की राशि से ही तीन चौथाई घट भर चुका है। एक चौथाई शेष रह गया है आर्य जनता उसको पूरा कर देगी ऐसा पूर्ण विश्वास है।

अब तक जो निर्माण कार्य सम्पन्न हो चुका है उसका विवरण इस प्रकार है—पैंतालीस कमरे दो बड़े हाल ६२×२५ और एक छोटा हाल २४×१६ बनकर तैयार हो गया है। आठ शौचालय, चार स्नानागार निर्मित ... स्नानागार शौचालय और यज्ञशाला ३०×१५ बनना शेष रह गया है। इसके लिए दो लाख पिचत्तर हजार रुपयों की आवश्यकता है।

निर्माण कार्य बराबर चल रहा है। इस समय अठतीस हजार रुपये का कर्ज है। कर्ज के चढ़ने उतरने का सिलसिला तो बना ही रहता है। कारण धन के अभाव में निर्माण कार्य को बन्द नहीं करते। कार्य चलता रहता है मजदूरी चढ़ती रहती है। बाहर से धन आ जाता है मजदूरी चुका दी जाती है।

कश्मीर प्राकृतिक सौन्दर्य की दृष्टि से विश्व में अपना विशेष स्थान रखता है। यहां पर देश विदेश से लाखों की संख्या में यात्री प्रति वर्ष आते हैं। उनमें आर्य समाजी यात्रियों की संख्या भी कम नहीं होती। उनकी सुख सुविधा के लिए आधुनिक ढंग की अतिथिशाला बनाने की योजना है इसके लिए धन की आवश्यकता है। यदि प्रत्येक आर्यसमाजी पांच पांच रुपये भी भेजने की कृपा करेंगे तो अति शीघ्र ही आर्यसमाज बनकर तैयार हो जाएगा।

आर्यसमाज के पुनर्निर्माण से स्थानीय हिन्दू जनता का मनोबल बढ़ा है। और उनके मन में आतंक दूर होता जा रहा है। आर्यसमाज के प्रति उनका विश्वास और श्रद्धा बढ़ी है।

आर्य सन्देश साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बनें, और बनाएँ

क्योंकि यह पत्रिका—

(१) वैदिक मान्यताओं को उजागर करती है।

(२) आर्यो (हिन्दुओ) की महान् परम्पराओ को याद दिलाती है।

(३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से आत्म चेतना जागृत करती है।

(४) भारतीय संस्कृति के भूले बिसरे प्रसंगो, महापुरुषो तथा आदर्श संस्कारो को प्रकाश मे लाती है।

(५) ऋषि मुनि तपस्वी आप्तविद्वानों की वाणी का बोध कराती है।

(६) परमेश्वर की पवित्र वाणी वेद का जीवनोपयोगी मधुर सन्देश लाती है।

(७) नये लेखको कवियो, चिन्तको, प्रतिभाशाली विद्वानो साहित्य सेवियो को प्रोत्साहन देती है।

(८) धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक ज्योति से मन मन्दिर को प्रकाशित करती है।

(९) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद, स्मृति, कल्प सूत्र, आरण्यक ब्राह्मणग्रन्थ गीता रामायण नीति, ऐतिहासिक अमूल्य आर्ष ग्रन्थो जिन को अधिकांश लोगो ने पढा तो क्या देखा भी नही समस्त आध्यात्मिक जगत् को जिन ग्रन्थो पर सदा गर्व रहेगा उन के बहुमूल्य ज्ञान मे आपका मार्गदर्शन करती है।

(१०) अतएव देर न कीजिए आज ही अपना वार्षिक चन्दा २० रुपये भेजिये वर्ष मे अनेक विशेषाक तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर प्रकाशित ५० रुपये मूल्य की भव्य मनोहारी स्मारिका नि शुल्क दी जायेगी। स्मारिका और विशेषाक का स्टाक कम है। अत यह सुविधा अप्रैल तक ही है।

सम्पादक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस गली न० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वर्ष ६ अंक २१ | रविवार, १४ अप्रैल, १९८५ | आर्य सवत्सर १९६०८५३०८५ | वैशाख २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१

अकालियों से तब तक कोई बात न की जाये जब तक गैर-अकाली सिख और पंजाब के हिन्दू नेता उनके साथ न हों

श्री रामगोपाल शालवाले ने शिष्टमण्डल के साथ प्रधानमन्त्री को ज्ञापन दिया

८ अप्रल, नई दिल्ली। श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व मे एक शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी से मिला। शिष्टमण्डल ने प्रधानमन्त्री को राष्ट्रीय अखण्डता की रक्षा के लिए किए जा रहे प्रत्येक प्रयत्न मे पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया तथा एक ज्ञापन भी दिया। इस शिष्टमण्डल मे अनेक आर्य सस्थाओ के प्रतिनिधि शामिल थे। सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्दे मातरम्, महामन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी, कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह, श्री प० राज गुरु शर्मा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, महामन्त्री श्री डा० धर्मपाल, श्री महाशय धर्मपाल श्री वेदप्रताप वैदिक', श्री क्षितीश वेदालकार आदि थे।

प्रदत्त ज्ञापन इस प्रकार था—

भारत मे अस्थिरता पदा करने की साजिश से इसको चारो ओर से घेरने और सीमावर्ती विघटनकारी शक्तियो को प्रात्साहन देन की जो प्रवृत्ति चल रही है। उससे राष्ट्र के सामने काफी भयकर सकट पैदा हो गया है। राष्ट्र को एक और अखण्ड रखने के लिए तथा एक राष्ट्रीयता का निर्माण करने के लिए हमारे निम्न सुझाव हैं—

१ भारत के सविधान मे सम्प्रदाय निरपेक्षता को स्वीकार करने के कारण किसी साम्प्रदायिक पार्टी को राजनीतिक मान्यता नही मिलनी चाहिए। न ही किसी वर्ग विशेष के लिए अलग से बिल कोड हो और न ही अनुचित आरक्षण का आश्रय दिया जाये।

२ अकाली दल भी एक साम्प्रदायिक दल है वह सिक्खो का केवल एक सीमित वर्ग का ही प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए उसको राजनीतिक मान्यता देना सविधान की दृष्टि से अनुचित है।

३ राजनीतिक पार्टी के रूप मे उसकी मान्यता रद्द नही की जाती तो तब तक उस दल से कोई बातचीत न की जाय, जब तक वे अकाल तख्त मे स्व० माननीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या की निन्दा न करे, उसके लिए पश्चात्ताप प्रकट न करे और भारत की एकता और अखण्डता के लिए तथा भारतीय सविधान के पालन के लिए प्रतिज्ञा न करे।

४ अकालियो के किसी ऐसे शिष्टमडल से बातचीत न की जाये जिसमे उतनी ही सख्या मे गैर अकालियो के और पजाब हिन्दुओ के भी प्रतिनिधि न हो।

५ आनन्दपुर साहब प्रस्ताव देश के विघटन का दस्तावेज है। उसी के विरोध मे आपने आम जनता से वोट मागे थे और जनता ने आपको अपूर्व बहुमत से जिताया था। उस आनन्दपुर प्रस्ताव पर किसी भी तरह की बात करना जनादेश का उल्लघन होगा।

६ हिन्दू नेताओ को जेलो से बिना रिहा किये केवल अकाली नेताओ को छोडना पक्षपात पूर्ण कार्रवाई है।

७ अकाली नेता श्री लोगोवाल के जेल से छूटने के बाद दिये गये वक्तव्यो से यह स्पष्ट हो गया है कि वे भारत सरकार की सत्ता को स्वीकार नही करते और उससे बातचीत के सदभावना प्रयत्नो को उसकी कमजोरी समझते हैं। गुरुद्वारो मे हथियार रखने पर उन्हे कोई आपत्ति नही है। श्रीमती गाधी की हत्या की निन्दा करने को भी तैयार नही हैं और उनके वक्तव्यो मे से यह भी ध्वनि निकलती है कि आपको इन्दिरा गाधी से बडा दुश्मन समझते हैं और राष्ट्रपति जी को अपशब्द कहने से बाज नही आते हैं।

गुरुद्वारा एक्ट को पजाब के बाहर के गुरुद्वारो पर लागू न किया जाये। और अखिल भारतीय गुरुद्वारा ऐक्ट न बनाया जाये।

९ विदेशो मे जो सिक्ख भारत विरोधी कार्रवाईयो मे लिप्त हैं और खालिस्तान के लिए कार्यरत हैं। एक अध्यादेश बनाकर उनकी भारत मे विद्यमान सारी सम्पत्ति जब्त की जाये।

१० जो उग्रवादी गिरफ्तार किये गये हैं उनके ऊपर पजाब के बाहर विशेष अदालत मे मुकद्दमे चलाये जाये और उनसे कोई रियायत न की जाये।

११ अकाली नेताओ ने छूटने के बाद जो वक्तव्य दिये है उनसे पजाब के हिन्दुओ मे असुरक्षा की भावना पुन व्याप्त हो गयी है। उन्हे लगता है कि फिर जून १९८४ से पूर्व की स्थिति आ रही है। अकाली नेताओ को छोडने की एकपक्षीय कार्रवाई से यह असुरक्षा की भावना और बढ गई है।

१२ अबोहर फाजिल्का हरियाणा को देने की और लिक नहर को बनाने की व्यवस्था तुरन्त की जाये। चूकि ऐसा न करने से जहाँ हरियाणा की जनता मे ज्यादा असन्तोष बढ रहा है, वहा श्रीमती इन्दिरा गाधी के दिये हुए वचन को भी भग किया जा रहा है इससे देश की सीमा पर भी सकट की सभावना बढती है।

१३ विभाजन से पूर्व और उसके बाद भी पजाब के सामाजिक जीवन मे आर्यसमाज का बहुत बडा योगदान रहा है और आर्यसमाज ने आज तक बिना किसी राजनीतिक स्वार्थ के निस्वार्थ भाव से देश सेवा के अपने प्रण को निभाया है। इसलिए पजाब की किसी भी समस्या के समाधान मे आर्य नताओ के परामर्श पर विचार करना जहा सरकार के हित मे होगा वहा राष्ट्रीय हित मे भी होगा। ❑

महात्मा हंसराज दिवस समारोह

२१ अप्रैल, रविवार ९ बजे प्रात से १२ बजे तक

स्थान—तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली

अध्यक्ष—स्वामी सत्यप्रकाशानन्द

मुख्य अतिथि—श्री के० सी० पन्त (केन्द्रीय शिक्षामन्त्री)

वक्ता—ला० रामगोपाल शालवाले (प्रधान सार्वदेशिक सभा)
प० शिवकुमार शास्त्री, प्रो० रत्नसिह
प्रि० कृष्णसिह आर्य श्री क्षितीश वेदालकार

सयोजक श्री रामनाथ सहगल

सभी आर्यसमाजो एव आर्य सस्थाओ से निवेदन है कि भारी सख्या मे पहुचकर कार्यक्रम को सफल बनाय।

निवेदक डा० धर्मपाल
महामन्त्री—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सम्पादक—यशपाल 'सुधांशु' एम० ए० | व्यवस्थापक—डा० [illegible] | प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

सत्संग वाटिका

आदर्श जीवन का वैदिक सन्देश

व्याख्याकार—विन्देश्वरी प्रसाद सिंह

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ॥

★

अथ स्पष्ट है—हम लोग सूर्य और चन्द्रमा की तरह कल्याण के पथ पर सन्मार्ग पर चलें। म चाई अच्छाई याय के पथ पर अग्रिम रहें।

व्याख्या—अब हम जरा विचार कर के देख सूर्य क्या क्या करता है ?

सूर्य एकाकी चरति। (यजुर्वेद)
सूर्य अकेला चलता है।

यहां ई र हमे स देश द रहे है हे मानव धर्म कर्तव्य न्याय परोपकार सत्य मार्ग मे अगर कोई तेरा साथ न भी देता हो तो भी परवाह मत कर अकेला ही अपने स य पथ पर आगे बढते रहो। एकला चलो रे (कवि रवीन्द्र) यही बात ब्राह्मण ग्रन्थ भी कहता है—

चरन् वै मधु विन्दते
चरन् स्वादु उदुम्बरम्।
सूर्यस्य पश्य श्रमाणम्
यो न तन्द्रयते चरन्। चरैवेति चरैवेति।

हे मनुष्यो चलने वाला कार्य करने वाला यानि पुरुषार्थी व्यक्ति ही सफलता पाता है। वही धर्म अर्थ काम और मोक्ष को सिद्ध कर सकता है। आलसी नही। जरा सूर्य की ओर देखो जो चलने से प्रमाद कभी नहीं करता है। अत चलते रहो। प्रयत्नशील रहो। उद्यम करते रहो। कार्यं वा साधयामि शरीर वा पातयामि। अत शास्त्र भी हमे यही सदेश देता है—

उद्यमेन हि सिध्यन्ति
कार्याणि न मनोरथैः।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य
प्रविशन्ति मुखे मृगा ॥

अर्थात प्रयत्न करने से ही हमे कार्यों मे सफलता मिलती है मात्र मनोरथ करने मे कभी नहीं। जैसे मृग सोये सिंह के मुख मे अपने आप प्रवेश नही करते सिंह को पुरुषार्थ करके ही उसे प्राप्त करना पडता है।

दैव दैव आलसी पुकारा।

जैसा कि वाल्मीकीय रामायण मे रामचन्द्र जी ने सीता हरण के पश्चात् कहते है भाग्य ने मुझे यह दारुण दुख दिखाया मैं पुरुषार्थ से भाग्य का बदल दूंगा और उन्होंने बदल भी दिया भाग्य कुछ भी नहीं है। हमारा मन्त्र सिखाता कर्म ही तो है। अत भाग्य के भरोसे आलसी होकर बैठने वाले को इससे अवश्य शिक्षा लेना चाहिए।

महर्षि दयानन्द अपने स्वमन्तव्यामन्तव्य मे घोषणा करते है—मैं पुरुषार्थ को भाग्य से बडा मानता हूं। जिसके सुधारने से सब सुधरता और बिगडने से सब बिगडता है। साथ ही वे कहते हैं। धर्म का फल सर्वत्र इहलोक और परलोक दोनो मे मिलता है

पुन जब हम सूर्य पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि सूर्य नियम से अपना कार्य करता है। आलस्य प्रमाद मे क्षण भर भी समय नष्ट नही करता है। यहा इस मन्त्र से परमेश्वर हमे यह सन्देश दे रहे है— मानव आलस्य प्रमाद मे समय नष्ट मत करो। समय बहुत ही मूल्यवान है।

ईश्वर ने ससार के महान् व्यक्तियों को भी चौबीस घण्टे का समय ही दिया है और हमे भी उतना ही दिया है सैकण्ड भर का भी अन्तर नही है। पर वे उसी समय का सदुपयोग करके ससार मे श्रेष्ठतम बन गये। कालीदास वाल्मीकि आदि ने जब तक अपने समय के मूल्य को नही समझा था ससार मे सबसे पिछली पंक्ति मे ही तो थे पर जैसे ही उन्होने समय का मूल्य समझा ससार के अगली पंक्ति मे आ गये।

जिसने भी समय के मूल्य को समझा वही विद्वान् बन गया धनवान श्रेष्ठ महान् बन गया। जिसने भी समय के मूल्य को नही समझा वही पिछड गया।

अगर मरते समय हमारे पास अरबो की सम्पत्ति हो और हम उसके बदले मे चन्द मिनटो का समय प्राप्त करना भी चाहे तो प्राप्त नही कर सकते हैं—

अत शास्त्र घोषणा करता है—

आयुष्य क्षण एकोऽपि न
लभ्य स्वर्णकोटिभि।
स चेन्निरर्थक नेति
का नो हानिस्ततोऽधिका ॥

यानि अरबो स्वर्ण मुद्राओ मे भी एक क्षण की भी आयु न प्राप्त होने वाली है। उसे जो बेकार कर नष्ट कर देना है उससे बडी और क्या हानि हो सकती है। अत समय का मूल्य समझते हुए इसका पूर्ण सदुपयोग करे

पुन सूर्य के कार्यों की ओर देखते हैं तो हम पाते है कि सूर्य स्वय प्रकाशित होकर सब को प्रकाशित करता है। यहा ईश्वर हमे यह उपदेश कर रहे हैं कि हे मानव तुम सत्सग स्वाध्याय उपासना योगाभ्यास मे तप हवन सन्ध्यादि से स्वय ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होकर सब को ज्ञान दिया करो जिससे मनुष्य अज्ञान के अधेरे मे न भटके। हवन की आहुति का मन्त्र

सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च स्वाहा और अग्निवर्चो ज्योतिर्वर्च स्वाहा मे भी ईश्वर हमे यही उपदेश कर रहे हैं कि जो परमेश्वर हमे अपना ज्ञान देने वाला है। उसकी प्रसन्नता के लिए हम यज्ञ करते हैं आहुति डालते हैं।

यानी हमे स्वय ज्ञानवान होकर अज्ञान अधेर मिटाने मे अवश्य ही लग जाना चाहिए। साथ ही हमे दान अवश्य देते रहना चाहिए और सर्वेषामेव दानाना ब्रह्म दान विशिष्यते। (मनु)

ज्ञान विद्या जब हमारे पास होगी तभी तो हम उसका दान कर सकते हैं। अत पूर्ण ज्ञानवान विद्वान् होकर सर्वे भवन्तु सुखिन की भावना से सदा ज्ञान दान करते हुए ही अपना जीवन बिताना चाहिए।

पुन इस मन्त्र मे ईश्वर यह उपदेश दे रहे हैं कि जैसे सूर्य सब लोकों को नियम मे चलाता आकर्षण से सब को धारण करता वर्षा ताप फसल दिन रात्रि मासादि का कारण होता है वैसे ही हमे भी श्रेष्ठतम बनकर ससार के कार्यो मे निष्काम भाव से योगदान देते रहना चाहिए इत्यादि अनेको उपदेश हमे ईश्वर सूर्य के माध्यम से दे रहे हैं।

पुन जब हम चन्द्रमा की ओर देखते है तो पाते हैं कि चन्द्रमा अपना प्रकाश न होते हुए भी सूर्य के प्रकाश से प्रकाशवान होकर सबको प्रकाश देता रहता है। अत हम भी हर साधन से ज्ञानवान होकर ज्ञान का सतत फैलाना चाहिए।

चन्द्रमा शुक्ल पक्ष मे धीरे धीरे बढना प्रारम्भ करता है और कृष्ण पक्ष मे धीरे धीरे घटना। पहली अवस्था मे वह पूर्ण बन जाता है और दूसरी अवस्था मे उसका नामोनिशान भी मिट जाता है। अत धीरे धीरे अपनी अवस्था सुधार कर हम श्रेष्ठ बन सकते हैं और अगर अपनी अवस्था के प्रति हम लापरवाह रहे और उसे धीरे धीरे विनाश की ओर जाने दिया तो एक दिन हमारा नामो निशान तक मिट जायेगा। अत सावधान यजुर्वेद मे ईश्वर एक जगह हमे उपदेश देते हैं कि एक अवस्था मे इस ससार में कोई भी नही रह सकता है। वह या तो नीचे आयेगा अथवा ऊपर। अगर हमने अपनी अवस्था सुधारने के लिए प्रयत्न न किया तो नाम मात्र के विनाश से भी हम एक दिन सर्वनाश को पहुंच जायेंगे। और अवस्था सुधारने के लिए प्रयत्नशील होकर हम सब कुछ ही प्राप्त कर सकते हैं।

पुन चन्द्रमा पर दृष्टि डालने पर हम पाते हैं कि चन्द्रमा का उतना भाग ही प्रकाशित हो पाता है जितना कि वह प्रकाश के स्रोत के सामने होता है अत हम उतना ही प्रकाशित हो पायेंगे जितना हम प्रकाश ज्ञान के स्रोत के पास रहेंगे। जितना भी हम प्रकाशित हो उतना प्रकाश हमे चन्द्रमा की तरह ही देते रहना चाहिए।

चन्द्र ग्रहण के समय जब सूर्य और चन्द्रमा के बीच पृथिवी आ जाती है तब जितना भाग उस सूर्य प्रकाश से वंचित होता है उतने पर अंधेरा छा जाता है। अत हम भी जब कभी ज्ञान के स्रोत मे अलग हो जायेंगे अज्ञानान्धकार मे उसी अनुपात मे डूबते चले जायेंगे। अत शास्त्र कहता है—स्वाध्यान्मा प्रमद। स्वाध्याय से प्रमाद मत करो।

इसी कारण परम ज्ञानी मनु भगवान् घोषणा करते हैं—

यो द्विजो अनधीत्य
वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वम् आशु
गच्छति सान्वय ॥

यानि वेद ज्ञान से रहित द्विज तुरन्त पुत्र पौत्र सहित शूद्रत्व को प्राप्त हो जाता है। इसी कारण उन्होने द्विज के कर्मों मे हवन सन्ध्या और स्वाध्याय को अनिवार्य स्थान दिया है। नित्य कर्म मे श्वास प्रश्वास की तरह ही कभी भी रुकावट अनध्याय को उन्होंने स्थान नही दिया। इसी कारण मनु ने घोषणा की- वेदमेव अभ्यसेत् नित्यम् यथा कालमतन्द्रित। त हि आहु परमोधर्म उपधर्म अन्यद् उच्यते। यानी निरालस होकर अधिकाधिक वेदाध्ययन ही सब धर्मों से श्रेष्ठतम धर्म है। परम कर्तव्य है। अत महर्षि दयानन्द आर्यसमाज के तीसरे नियम मे घोषणा करते है—वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है।

वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। इसी कारण देव दयानन्द सारा समय वेदादि के अध्ययन प्रचार और योगाभ्यास मे ही लगाते हैं।

चन्द्रमा पर जब पुन हम दृष्टि डालते है तो पाते हैं कि जब चन्द्रमा अमावस को

(शेष पृष्ठ ११ पर)

★ वचन-सन्देश ★

नवीन क्रान्ति का बीजारोपण

"स्वामी दयानन्द युग द्रष्टा, युग निर्माता थे। मेरे सस्कारो पर ऋषि दयानन्द का पर्याप्त प्रभाव है। स्त्रियो को वेदाधिकार दिलाकर महिलाओ मे नवीन क्राति का बीजारोपण किया। नारी की स्थिति मे सुधार की अनवरत चेष्टा करते रहे। नारियो की वेदना देखकर वह कहा करते थे, भाई! इससे अधिक हृदय विदारक दु ख क्या हो सकता है। विधवाओ की दुख भरी आहो से इस देश का सर्वनाश हो रहा है।

दयानन्द ने वेदो की वैज्ञानिक व्याख्याए प्रस्तुत कर, वैदिक अध्ययन प्रणाली मे एक नूतन युग का सूत्रपात किया है। इन्ही सब कार्यो के लिए हम सब उनके ऋणी है।'

—श्रीमती महादेवी वर्मा

दयानन्द और आर्यसमाज

"आर्यसमाज एक जीता जागता सघ है। वह आख खुली रखकर दुनिया की ओर देखने वाली एक सगठित सस्था है। दयानन्द सरस्वती जैसा तेजस्वी ब्रह्मचारी और समाज हितैषी ही निर्भयता से किसी राजा से भी कह सकता था कि 'तू कुत्ता मत बन।"

जिस समाज मे स्वामी दयानन्द से लेकर स्वामी श्रद्धानन्द तक बलिदान देने वाले वीर उत्पन्न हो जाते है, उस समाज का तेज सदा उज्ज्वल ही रहने वाला है।

—काका साहब कालेकर

सम्पादकीय

राष्ट्र की प्रतिष्ठा का सवाल है—पंजाब

पजाब की हरी भरी धरती, वीरता, अदम्य उत्साह और जीवन जागृति का प्रतीक रही है। गीत सगीत, नाच रग की यहा की अपनी एक अलग पहचान है। ढोल तासो की गमक पर उछलते नाचते भगडा करते अलमस्त युवक, ऊची तान छेडते खेतो मे हल चलाते हलवाहे, बागो मे झूले डालकर गाती खुशी मनाती युवतिया, ऊची कद काठी के विशाल सीने वाले दृढ पुरुषो का प्रदेश है पजाब। यहा वीर बहादुर हुए है आक्रोश वीरता के प्रतीक, तो शान्ति सन्तोष के प्रतीक सन्त भी कम नही हुए। विदेशी आक्रान्ता जब पहली बार पजाब के रास्ते भारत मे आये पजाब की हरी भरी धरती को देख उन्होने कहा या खुदा। हम तो जन्नत के ख्वाब ही देखते है। ये लोग तो सचमुच जन्नत मे ही रहते है।

आरम्भ से ही यह प्रदेश भारत का हृदय रहा है। सन्तो भक्तो, वीर विरक्तो के इस प्रदेश का इतिहास त्याग और बलिदान से सजा हुआ है। हसते, गाते, नाचते खुशी मनाते इस पजाब मे अब खून और आसू, आक्रोश और प्रतिशोध का भयावह चित्र दिखाई देता है। दुख तो यह है सन्त कहलाने वाले तथाकथित धार्मिको द्वारा ही यह चित्र बनाया गया है। जिनमे भक्तो, सन्तो, ज्ञानियो का उपदेशामृत मिलना था उन्ही के द्वारा हलाहल जहर बाटा जा रहा है।

जहर उगलते, भडकाते ये सन्त

अब तक श्री लोगोवाल को शान्त और समझौता का समर्थक माना जाता रहा है। लेकिन ये जिस रास्ते पर कदम बढा रहे है उसकी मजिल खालिस्तान है या फिर सर्वनाश। सत करतार गुरुद्वारे मे एक दीवान को सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा—मुझ पर यह कहने के लिए दबाव डाला जा रहा है कि सत भिडरावाले से हमारा कोई वास्ता नही है। उन्होने कहा, हमारे शारीरिक सम्बन्ध टूट सकते है लेकिन धार्मिक सम्बन्ध कभी नही टूट सकते। उन्होने चेतावनी दी—'यदि सरकार पजाब समस्या शीघ्र हल नही करती तो सिख युवको के अन्दर धधकता लावा सब कुछ जलाकर राख कर देगा।"

सीमान्त गाव कलानौर के गुरुद्वारा बन्दा बहादुर मे सन्त लोगोवाल की उपस्थिति मे एक दीवान मे श्रीमती इन्दिरा गाधी के कथित हत्यारे सतवत सिह की मा प्यार कौर को करेंसी नोटो की माला पहनाकर सम्मानित किया गया। वक्ताओ ने अपने भाषण मे सतवन्त सिह को जिन्दा शहीद घोषित किया। हरचन्दसिह लोगोवाल ने भाषण मे कहा—समझौता होने का तब तक सवाल नही उठता जब तक आनन्दपुर प्रस्ताव समेत अकाली दल की मांग स्वीकार नहीं कर ली जाती। बटाला मे उन्होने यहा तक कह दिया—(इन्दिरा गांधी की हत्या के बारे मे) सतवन्त सिह और बेअन्तसिह ने वही काम किया है जो शहीद ऊधम सिह ने जनरल डायर की हत्या करके किया था। दीवान में खालिस्तान जिन्दाबाद, और भिडरावाले जिन्दाबाद के नारे लगाये गये।

फिर टकराव की स्थिति

पजाब के हालात दिन पर दिन बिगडते ही जा रहे हैं। भडकती आग को सरकार जितना शान्त करने के प्रयत्न करती है उतने ही उग्रवादी और अकाली नेता उसे और भडका देते हैं। २३ मार्च को हुसैनी वाला सीमा की यात्रा पर प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी गये। यह उनकी साहसिक यात्रा थी। उन्होने सदभावनामय वातावरण बनाने के लिए पजाब के लोगो के लिए उन्मुक्त हृदय मे कुछ घोषणाएँ की हैं। पजाब मे थीन बांध बनाया जायेगा। जिससे बिजली और पानी की किसानो को किल्लत न हो। दूसरी घोषणा पजाब मे रेल के डिब्बे बनाने का बडा कारखाना लगाया जायेगा जिससे रोजगार की भारी सम्भावनाए बढे और बेरोजगारी हटे। जब कि अन्य प्रान्तो के मुकाबले पजाब मे बेरोजगारी बहुत ही कम है। किसानो की जिन्स की मूल्यवृद्धि तथा गेहू पर बोनस, भारतीय सस्कृतियो का केन्द्र भी पजाब मे स्थापित करने की घोषणाएँ की। इन घोषणाओ से आशा की जा सकती थी कि सम्भवत अकाली नेताओ का रुख कुछ नम्र होगा। परन्तु उनकी दृष्टि तो कही और लगी है वे बिना खालिस्तानी परचम लहराये बैठना नही चाहते। अकाली नेताओ की रिहाई भी इसीलिए की गई थी कि सम्भवत वार्ता की मेज पर बैठकर कुछ समझौते की स्थिति दृढ होगी। किन्तु अकाली दल टकराव के रास्ते पर खुलकर आता दिखाई दे रहा है। उग्रवादी आतकवादियो के हाथ मे पूरी शक्ति आती जा रही है।

सरकार का दायित्व

अजगर की तरह लम्बी होती जा रही इस समस्या का समाधान जल्दी से जल्दी खोजा जाना चाहिए। देशभक्त सिख और हिन्दुओ को विश्वास मे लेकर जनता के हित को ध्यान मे रखकर उन्हें एक्स पार्टी मानकर एकतरफा निर्णय कर देना चाहिए। उग्रवादियो से निपटने के लिए सरकार को अपनी शक्ति का प्रयोग करना चाहिए। जिस प्रकार सिन्ध ब्लोचिस्तान (पाकिस्तान) मे जिया ने अपने दमन चक्र से स्थिति शान्त की है उस तरह का दमन चक्र न भी सम्भव हो परन्तु उग्रवादियो को शान्त करने का रास्ता तो अपना ही होना चाहिए।

विरोधी दलो की भूमिका

राष्ट्र की बिगडती समस्या किसी पार्टी की नाक का सवाल नही है, सचमुच यह देश की नाक इज्जत का सवाल है। इसे हर प्रकार से हल करने के लिए समस्त दलो को मिलकर हल करना चाहिए। अब समय आ गया है कि देश की प्रतिष्ठा दाव पर है, इसके लिए सभी राजनैतिक नेताओ के योगदान का समय आ चुका है हमे अपने समस्त मतभेद भुलाकर भारत मा के फटते आचल को सीना चाहिए, यह समय की पुकार है।

—यशपाल सुधांशु

आनन्द का शाश्वत मार्ग

प० बलजीत शास्त्री एम ए

★

मनुष्यो ! तुम ससार के अन्दर आनन्द और शान्ति से जीवन जीने के लिए आये हो। तुम्हारे मन वचन और कम मे वे शुभ शक्तिया भरी हुई हैं जो ससार भर के लिए कल्याणकारी है। तुम्हारे स्वय के कार्यों की समार सुख शान्ति पर प्रतिक्रिया होती है। यदि तुम्हारे सकल्प अच्छे हैं और काय उत्तम भाव से होते है तो निश्चय ही तुम ससार की सुख समृद्धि मे बढोतरी कर सकोगे।

आज हम अपने लिए जा रहे है दूसरे के दुख न्द म हम कोई वास्ता नही है जो दुख या बुरी बात हम अपने लिए नही चाहते वह दूसरे के लिए करते हुए क्यो नही डरते ? कारण यही है कि हम लार्डमेकाले की शिक्षा पद्धति मे पढकर सस्कारवान् न बनकर एक कम्प्यूटर की तरह से जीवन जी रहे हैं। हमारा अर्जुन के लक्ष्य की तरह एक ही लक्ष्य है धन को प्राप्त करना शायद भर्तृहरि को इस काल का पहले ही आभास हो गया था इसलिए लिखना पडा सर्वे गुणा काञ्चनमाश्रयन्ति हमारी प्राचीन ऋषियो का शिक्षा प्रणाली स्व वलम्बी एव त्याग भावना का विस्तार करने वाला थी कहाँ आज की शिक्षा जो चन्द सिक्को के द्वारा आदमी से कुछ भी करा ल। इन सब विषयो को सोचना है। अगर मुझे सुख चाहिए तो मुझे दूसरे को सुख देना पडेगा अन्यथा सुख की कामना ही छोड द।

ऋषि ने कहा अगर सुख प्राप्त करना है आनन्द प्राप्त करना है तो सत्य वद धर्म चर के वाक्य को जीवन मे उतारना पडेगा। सत्य का प्रयोग वाण से कर्म जीवन मे उतारोगे तो धर्म तुम्हारा अनुगामी बनेगा रक्षा करेगा। तुम्हारा ससार सुनहरा होगा। जीवन मे अभाव नही होगा। जिसने भी सत्य को उतारा वही सितारे की तरह से गगन पर चमका। गाधी जी ने सत्य और अहिंसा को ही अपनाया और राष्ट्रपिता कहलाये। विश्व मे नाम अमर कर गये अपना। हम भी किसी एक राह को अपना कर देखें क्या आनन्द आयेगा जीवन के अन्दर। अपने प्राचीन गौरव को पहचानकर चलना है। सस्कृति की सुरक्षा करनी है तो दूसरो के दुख मे दुखी होना जानो सुख मे सुखी होना सीखो।

तुम समार मे आनन्द पूवक रहना चाहते हो तो दूसरो को आनन्द पूवक रहने दो। तुम यदि समझते हो कि दूसरो को सताने से तुम्हारा कुछ नही बिगडता यह तुम्हारा भ्रम है। वास्तव मे तुम्हारी ठगी धोखेबाजी अत्याचार स्वय तुम्हे ही नष्ट करते हैं। तुम अपनी आत्मा का हनन करते हो। समाज मे कोई भी अलग नही है। सब एक बडे शरीर के अग हैं। पूरा समाज एक विशाल शरीर है। क्या तुम यह पसन्द करोगे कि तुम्हारे शरीर का एक हाथ दूसरे हाथ को काट डाले एक पाव दूसरे पाव को चोट पहुचाये दात खुद तुम्हारी जीभ को काट डाले, हाथ सिर को तोड डाले। नही तुम यह कदापि पसद नही करोगे। इससे समाज का अहित होगा और तुम्हारा अस्तित्व सकट मे पड जायगा।

इस मानव समाज के भिन्न भिन्न व्यक्ति भी इसी प्रकार तुम्हारे सामाजिक शरीर के अग हैं। कोई व्यक्ति हाथ की तरह है कोई आदमी पावो की तरह कोई नत्र है तो कोई कान नाक मुह, हृदय जिगर और फेफडो की जगह है। सब के परस्पर मिलकर चलने से ही समाज विकसित होता है आगे बढता है और फलता फूलता है। तुम किसी व्यक्ति पर हिंसा बलात्कार, झूठ कपट या अत्याचार करते हो तो वास्तव मे स्वयम् अपने आपको ही घायल करते हो। यदि तुम समाज मे या राष्ट मे रहने का अधिकार मागते हो तो दूसरो को स्वतन्त्रता पूवक आनन्द से और निर्भयता से जीने दो। तुम दूसरो को अधिक दिन धोखे मे न रख सकोगे। एक न एक दिन तुम्हारा पाप प्रकट हो जायेगा। फिर तुम्हें अपमान के घूट पीने पडेंगे। उसकी पीडा हजारो बिच्छुओ के डक मारने जैसी होगी। पाप पर अधिक दिन तक पर्दा नही डाला जा सकता।

दुर्योधन समझता था कि भरी सभा मे द्रोपदी की मानहानि करके वह कोई पाप कम नही कर रहा है। कस समझता था देवकी के पुत्रो की हत्या पाप नही है। बाली भाई की सम्पत्ति एव पत्नी छीन कर गर्वित होता था रावण समझता था महासती सीता का अपहरण कर लका ले जाना कुछ बुरा नही है। किन्तु पाप तो सिर पर चढकर बोलता है। पापी को नष्ट कर देता है। दुर्योधन कस रावण बाली आदि सबको पाप ही उन्हें खा गये। सदा के लिए श्मशान म जलकर वे राख हो गए और छोड गये अपने पापो की काली छाया। पाप अथवा दुराचार चाहे कैसा भी क्यो न हो मनुष्य का सपरिवार नाश कर देता है। पाप कभी न कभी, देर सबेर अवश्य प्रकट होता है और सर्वनाश का कारण बनता है।

तुम्हारी ईमानदारी, सज्जनता, सच्चाई निष्पक्षता आदि का बच्चो पर, आने वाली नयी पीढी पर बडा प्रभाव पडता है। जैसे स्वय माता-पिता होते हैं, वैसे ही उनके पुत्र पुत्री आदि होते हैं। पापाचार के वातावरण में पले हुए बच्चे स्वभावत दुष्ट हो जाते हैं। सद्गृहस्थी मे हमारे मनोविकार स्वच्छ होते रहते हैं, उनका विष दूर होता रहता है। बच्चो और धर्मपत्नी के सुखद सम्पर्क मे लोभ, क्रोध ईर्ष्या द्वेष आदि मनोविकारों का शोध होता है। इस लिए ईमानदारी का जीवन ही हर प्रकार से वरणीय है पूरे समाज का हित करने वाला है।

अत्याचार अन्याय हिंसा झूठ कपट छल व्यभिचार तुम्हारी आत्मा के गुण नही हैं। इनसे तुम्हारा कोई सम्बन्ध नही है। इन्द्रिया तुम्हें गुलाम नही बना सकती।

तुम तो निर्विकार सत् चित् आनन्द आत्मा हो। पूर्ण शान्त आत्मा हो। स्वतन्त्र हो। स्वच्छ हो। न्यायकारी हो। मानसिक सतुलन म पूर्ण हो। परमात्मा सर्वव्यापी और न्यायकारी है। आत्मा के रूप म वह तुम्हारे अन्दर विराजमान है। विवेक को सर्वोपरि मानना दिव्य शक्तियो का विकास करना मानवता को ऊचा उठाना—इन सत्प्रवृत्तियो मे ही तुम्हारी महानता है।

आओ मिलकर अपने हृदय मे उस आत्मतत्त्व के रूप मे परमात्मा को खोजें, जाने और प्राप्त करे। वह दिव्य खजाना जो अक्षय है अनमोल है। स्वय को परिवार को समाज को राष्ट्र को समर्पित होकर धर्म एव सस्कृति के प्रति कृतज्ञ बनें। जिनके द्वारा जो हमारा निर्माण होता है उनके कर्ता के रूप मे हम धारण करें और स्वच्छ समाज का निर्माण करें। तभी हम कह सकते हैं—आत्मन प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत्।

आर्यसमाज कालकाजी
नई दिल्ली—१९

महर्षि दयानन्द की देन

मोहनलाल शर्मा 'रश्मि'

जिस समय ऋषि दयानन्द भारत के रगमच पर आये उस समय हमारे देश की बडी दुरवस्था थी। बहुत सी कुरीतियो ने धर्म का स्थान ले रखा था। ऋषि परम्परा लुप्त प्राय सी थी ढोगी व पाखण्डियो का खूब बोलबाला था। सभी जगह मिथ्या व भ्रष्ट ग्रथो का प्रचार था। वैदिक धर्म का उद्धार अभी तक नही हो पाया था। ऐसे समय में ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होने अपने सदज्ञान रूपी तेज से अज्ञान रूपी अधकार को नष्ट भ्रष्ट कर डाला। वे ऋषि दयानन्द ही थे जिन्होने वेद ज्ञान की प्रचण्ड ज्योति से इस आर्य धरा को आलोक प्रदान किया।

महर्षि दयानन्द सच्चे अर्थों मे राष्ट्र, जाति, समाज तथा मानवता के सजग व सच्चे प्रहरी थे। वे जीवन पर्यन्त अन्याय व अत्याचार के सम्मुख सदैव अत्यन्त निर्भीक होकर सिंह की भाति डटे रहे। उनकी विशेषता ये थी कि वे परिस्थितियो से कभी नही घबराये बल्कि परिस्थितियो को उन्होंने अपने अनुरूप बना लिया। ऋषि दयानन्द ने ही हमे बताया कि वेद मानव जाति का सब से पुराना पवित्र व महत्त्वपूर्ण ग्रथ है। यह सब सत्य विद्याओ का आकर है। इसी वेद ज्ञान के ह्रास के कारण ही हमारे देश को जो क्षति पहुची है। उसकी पूर्ति सैकडों वर्षों तक नही की जा सकती। वर्ण व आश्रम व्यवस्था भग होने के कारण समाज आज अनेक जातियो मे बट गया है। कुरीतियो के बढने व आपस मे एकता न होने के कारण ही भूतकाल मे बाहरी शक्तियो के आक्रमण होते रहे।

जिस समय मतो एव सम्प्रदायो तक ही धर्म शब्द का अर्थ सीमित था। तब महर्षि ने वैदिक धर्म की वास्तविकता का सब लोगो को परिचय दिया। धर्म के नाम पर यज्ञो मे पशुओं तथा मनुष्य तक की बलि दिये जाने का ऋषि ने घोर विरोध किया। सती प्रथा, गर्भहत्या, तथा व्यभिचार के खिलाफ उन्होंने अपनी आवाज बुलद की। तभी तो ढोगियों, पाखण्डियों तथा धर्म के ठेकेदारों की पोल खुलने लगी। देवी देवताओं भूतप्रेत और पिशाचों की पूजा एव अन्य पाखण्डों के विरुद्ध ऋषिवर ने प्रबल आन्दोलन छेड दिया। उन्होने अन्य मतो के ग्रथों का भी अध्ययन किया तथा गभीरता से विचार करने के बाद उन्होने सत्य की खोज की तथा वेद मन्तव्य पर मानव मात्र को चलने के लिए प्रेरित किया। धर्म क्षेत्र की व्यापकता पर विशेष बल देकर व जड मूर्तिपूजा जल स्थल तीर्थ मे आस्था आदि अनेक अवैदिक मतो का उन्होंने निराकरण किया। सत्य के ग्रहण करने के लिए उन्होने लोगो से प्रचलित रूढिवाद को तथा अन्य बुराइयो को फैंक देने का घोष लगाया।

स्त्रियो पर हो रहे अत्याचारो को देखकर उन्होंने हमे बताया 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'। नारियों को शिक्षा से वचित नहीं किया जा सकता

(शेष पृष्ठ ९ पर)

❀ ओ३म् ❀

आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव मात्र के विचारो मे क्रान्ति लाने के लिए आर्यसमाज को एक सक्षम माध्यम बनाया। यो तो महर्षि के लेख के अनुसार उनके क्रान्तिकारी विचार ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त के विचार ही हैं जिन का मूल आधार वेद ही हैं। आर्य जाति अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करे और मानव मात्र को जीवन की दिशा मिल सके, यह ऋषि की तीव्र अभिलाषा थी। गत सौ वर्षो के इतिहास में आर्यसमाज ने मानव समाज के हित के लिए चतुर्मुखी विकास योजनाए बनायी उन्हे क्रियान्वित भी किया। इससे बौद्धिक वर्ग विशेष रूप से प्रभावित हुआ। सभी को आगे बढने की प्रेरणा भी प्राप्त हुई। परन्तु जीवन का चतुर्मुखी विकास कार्यक्रम शिथिल न हो जाए आगे चलता रहे। इस दिशा मे विचार करना आज फिर आवश्यक है। इसी विचार से भविष्य मे आर्यसमाज के कार्यक्रमो की रूपरेखा मेरी दृष्टि मे निम्नांकित प्रकार से होनी चाहिए—

१ आर्यसमाज के मन्दिर केवल बाह्य पूजा पद्धति के ही केन्द्र न बनें, अपितु उनमे आने वाला प्रत्येक व्यक्ति आत्मप्रेरणा, धार्मिक भावना और अन्तर्ज्योति को प्राप्त कर सके, ऐसी व्यवस्था हो।

२ आर्य जाति की पूजा पद्धति मे 'यज्ञ' का विशेष स्थान है। वस्तुत यज्ञ मानव जाति के सर्वकल्याण भाव का आदर्श कर्म है। इस की प्रत्येक धार्मिक क्रिया को सत्य, श्रद्धा तथा भक्ति के साथ करने ही पर लाभ की आशा की जा सकती है। यदि थोडा ध्यानपूर्वक इसे किया जाये तो निश्चय ही धार्मिक भावना की वृद्धि होगी। उचित यही है कि केवल बाह्य कर्म न बनाकर जीवन में इसी मूल भावना अर्थात् अनासक्ति—इद न मम की भावना को जीवन में उतारा जाए।

३ वेदोपदेश—वेद ईश्वर की कल्याणी वाणी है जो मानव तथा मानव समाज में जीवन की प्रत्येक अवस्था में विचार देने मे समर्थ है। इसीलिए श्रद्धापूर्वक यज्ञ कर्म के अनन्तर ऋषि ने वेदोपदेश का होना आवश्यक बताया है। उचित तो है कि [illegible] चिन्तन के आधार पर अनुकूल भाषा मे अर्थात् देश की भाषा का ध्यान रखते हुए वेदप्रवचन करे। आर्य जन वेद का स्वाध्याय कर उसके प्रवचन का भी अभ्यास करे। आर्य जनो को यदि यह सुविधा प्राप्त न हो सके, तो पुस्तक से ही वेद प्रवचन पढा जाये अथवा सुयोग्य विद्वानो के कैसेटो का सदुपयोग भी किया जाना लाभकारी हो सकता है। ध्यान रहे कि वेदोपदेश से पूर्व वातावरण को सात्त्विक बनाने के लिए अच्छे स्तर पर धार्मिक सगीत भी आवश्यक है।

४ योग साधना—महर्षि दयानन्द ने यो तो बीज रूप मे सन्ध्या के मन्त्रो मे योग करने का सकेत अथवा जाप का भी सकेत दिया है। उसका परम उद्देश्य जीवन मे अनासक्त होकर अन्तर्मुखी होते हुए आत्मा तथा परमात्मा का दर्शन-लाभ है। योग साधना के लिए प्राणायाम अर्थ सहित जप का अभ्यास और मन्त्रार्थ चिन्तन का अभ्यास आवश्यक है।

५ शिक्षण—प्रत्येक आर्यसमाज को धर्म, सस्कृति, सभ्यता और आत्म-चिन्तन के विचारो का प्रसार करने के लिए शिक्षा को भी उसी दिशा में ढालना चाहिए। शिक्षा ऐसी हो जिसके द्वारा नवयुवक तथा नवयुवतियों को भी भौतिक और आध्यात्मिक जीवन की शिक्षा आर्यसमाज दे सके। शिक्षा एकागी न हो अर्थात् केवल मात्र अक्षर ज्ञान ही शिक्षा का लक्ष्य न हो। जागरण उसका उद्देश्य हो। आर्यसमाज की सभी शिक्षा सस्थाओ मे नैतिक धार्मिक शिक्षा अनिवार्य हो, जिससे वैदिक धर्म का अन्य धर्मो से तुलनात्मक परिचय प्राप्त हो।

६ नवयुवक तथा नवयुवतियों को आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने के लिए वैदिक धर्म के विषय मे सवाद, भाषण और कविताओ आदि का कार्यक्रम देकर प्रोत्साहित करना चाहिए। साथ ही शारीरिक विकास के लिए व्यायाम आदि की रुचि का कार्यक्रम भी होना चाहिए और सभी प्रकार से वे नवयुवक अनुशासनप्रिय होते हुए धर्मप्रिय हों।

७ पिछडे वर्ग मे सेवा—प्रत्येक प्रांत की प्रतिनिधि सभाएँ अपना कर्तव्य जानें कि उनके प्रांत मे कम से कम एक ऐसा "सेवाश्रम" हो जिसमें जाति के उपेक्षित बच्चो को युवा वर्ग को अथवा प्रौढ वर्ग को शिक्षा स्वास्थ्य सेवा और कुटीर उद्योग के माध्यम से सहायता मिले। उनका जीवन स्तर गिरने न पाये अपितु उसमे निरन्तर उन्नति हो।

८ आर्यसमाज के अधिकारियो मे आज सब से बडी कमी यह है कि पुराने लोगो की भाति जनसम्पर्क का कार्यक्रम लुप्त हो गया है, जिस के परिणामस्वरूप आर्य सदस्यो मे सहानुभूति स्नेह और हित की भावना नही रही। आवश्यक है कि इस कार्यक्रम को पुन शुरू किया जाये। कम से कम एक मास मे एक सप्ताह अथवा कुछ दिन जसी भी सुविधा हो सभी सदस्यो के सुख-दुख का पता और सहायता की आवश्यकता को जाना जाय, जिससे सभी आर्य सम्पर्क कार्यक्रम के द्वारा बृहत् परिवार का रूप ले सक।

यदि उपरोक्त विचारो को भावी वर्षो मे सक्रिय रूप से अपनाया जाये, तो मेरे विचार मे निश्चय हो आर्यसमाजो की उन्नति होगी।

ओमप्रकाश त्यागी (मन्त्री)
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दिल्ली

सिंह जाग ! वीर जाग !!

—डा० कृष्णलाल आचार्य
सस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली ११०००७

सिंह जाग सो रहा है तू कहाँ पडा
वीर जाग सो रहा है क्यो यहाँ पडा।
खाल खाल नोचने लगे हैं शत्रु आज
नीद छोड फिर भी हुआ तू नही खडा ॥
तेरी मातृभूमि है यह तेरी जन्मभू
तू यही पला यही का अन्न खा बढा।
उपनिषद का वेद का है ज्ञान जो यहा
राम कृष्ण की कथाओ को भी तू पढा ॥
विवेकानन्द स्वामी दयानन्द के महान्
अमृतोपदेश का किया है तूने पान।
अरविन्द तिलक मालवीय औ पटेल की
प्रेरणाए वन्दे मातरम् का भक्ति गान ॥
पूर्व दिशा देख ले करवट तो एक ले
सूर्य उदय हो रहा उसको तो देख ले।
लालिमा उषा की यह सन्देश दे रही
व्यूह अन्धकार को तू तोड भेन्न ले ॥
चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य औ अशोक की,
मालवेश विक्रमादित्य की भी नीतियाँ।
समुद्रगुप्त दिग्विजय प्रताप शौर्य को
भूलती नही है शिवा जी की नीतिया ॥
हाडा झाँसी रानी चेन्नमा देवियाँ
भगतसिंह बिस्मिल आजाद की पुकार।
सुभाष विनायक सभी वीर थे जिये
मातृभूमि के लिए देह को बिसार ॥
सूर्य बन के जाग मिटा अन्धकार आज
भूल नही भूल नहीं इस शौर्य-त्याग को।
स्वदेश - वेष - भाषा प्रेम की मशाल ले
जला हृदय में धर्म की धधकती आग को ॥
जाग जन कि यज्ञ श्रेष्ठ कर्म है न भूल,
शास्त्र गा रहे एक स्वर से वेद-गान।
कुछ भी कर तू वेद ज्ञान को नहीं भुला,
वही तेरा आधार है औ वही विहान ॥
आदर्श [illegible] न भूलना
मिला के हाथ हाथ से उठा ले भाई को।
माता मेरी भूमि है, इसी का पुत्र तू
पुत्र-पुत्र क्यों लडें रुलायें माई को ॥
सिंह जाग अपने रूप को पहचान ले
इस धरा को, औ गगन-पवन को जान ले।
अपनी अर्चना को, अपनी भाषा को समझ,
श्रेष्ठ तेरी भाषा है, उसी में ज्ञान ले ॥

आध्यात्मिक जगत् को आर्यसमाज की देन

प्रेमचन्द श्रीधर एम० ए०

आध्यात्मिक जगत् को आयसमाज की देन का सीधा सा अथ है, महर्षि दयानन्द की देन। महर्षि दयानन्द ने ही वैदिक धम के सिद्धान्तों मान्यताओ और सस्कृति के प्रचार प्रसार तथा प्रतिपादन के लिए आयसमाज की स्थापना की।

महान् शिक्षा शास्त्री एव कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने महर्षि को श्रद्धाञ्जली अर्पित करते हुए लिखा—

'My reverence to the great teacher Dayanand who e v sion found unit\ and truth in India s spiritual h story whose mind huminiously comprehanded all departments of India s life whose call to Ind a is the call of awakening to truth and purity from inertness of unreason and ignorance of the meaning of our past

देव दयानन्द ने भारतीय जीवन की विविधता को अ यन्त सूक्ष्म दृष्टि से देखा था। उनका आह्व न सत्य और पवित्रता का आह्वान था क्योंकि उस समय तक भारतव स मिथ्या विश्वासो की जडता और अपन गौरव ग ग्रतीत के प्रति अज्ञान के जाल मे फस चुके थे। देव दयानन्द आयसम ज के क्रान्तिकारी आन्दोलन द्वारा भारतवासियो को मिथ्या अन्ध विश्वासो की जडता से मुक्त कराना चाहते थे

आयसमाज ने अध्यात्मिक जगत् मे समग्र क्रान्ति व देवदूत बनकर जिन सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया उन्हे हम अत्यन्त सूक्ष्म रूप मे स त स्वर्णिम सूत्रो का नाम दे सकते है।

(१) धम के वास्तविक स्वरूप का उद्घाटन
(२) वेद का ज्ञान ईश्वरीय है।
(३ वेद ज्ञान का सबको अधिकार है।
(४) एकेश्वरवाद का प्रतिपादन।
(५) त्रैतवाद का सिद्धान्त।
(६) षडदशन समन्वय
(७) मुक्ति से पुनरावृत्ति।

इन सब की अत्यन्त विस्तृत रूप से व्याख्या की जा सकती है परन्तु इस लेख मे अधिक विस्तार से अपनी बात को कहना सम्भव नहा है। इसलिए सक्षिप्त विश्लेषण और विवेचन प्रस्तुत करने का प्रयास होगा।

(पूव अक मे हमने प्रथम तीन सूत्रो की व्याख्या की थी)

४ एकेश्वरवाद का प्रतिपादन

सत्यायप्रकाश मे लिखा है—

प्रश्न— वेद मे ईश्वर अनेक हैं इस बात को तुम मानते हो या नही ?

उत्तर—नही मानते क्यों कि चारो वेदो मे ऐसा कही नही लिखा जिससे अनेक ईश्वर सिद्ध हो। किन्तु यह तो लिखा है कि ईश्वर एक है।

पाश्चात्य सस्कृतज्ञो ने अत्यन्त धृष्टता और दुर्भावना से इस बात का खुलकर प्रचार किया कि वेदो मे बहु देवत वाद है अर्थात् अनक देवो की पूजा उपासना का विधान है। देव दयानन्द ने अपना मत स्पष्ट करते हुए कहा कि ब्रह्म के अतिरिक्त अन्य किसी भी देवी देवता की पूजा उपासना का कोई विधान नही है।

वेदो मे बहुदेवतावाद है या नही इसका निणय इस पर निभर करता है कि वेदो का अथ करने मे कौन सी शैली का अवलम्बन लिया गया है। प्राचीन नैरुक्तिक शैली सायण की कमकाण्ड शैली अथवा पाश्चात्य सस्कृतज्ञो की प्रकृति परक शैली वेद के प्रति सत्य धारणा के लिए निश्चित रूप से नैरुक्तिक शैली को अपनाना ही होगा अन्यथा अथ का अनथ होने की सम्भावना बनी रहेगी।

योरोपीय विद्वान् देव शब्द का अथ ही (God) ईश्वर लेकर चलते हैं जब कि निरुक्त के अनुसार— देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा द्युस्थानो भवतीति वा। अर्थात् दान देने से देव हैं प्रकाश करने से देव हैं उत्पन्न व पालना आदि करने से देव हैं (माता पित) द्युस्थान अर्थात् सूर्यादि लोको का भी जो प्रकाश है वह देव हैं। यहा ये सारे विशेषण परमात्मा मे भी प्रयुक्त होने से वह देवो का भी देव अर्थात् महादेव है। परमात्मा सूय चन्द्र रुद्र और मरुत सब को अपने ही शासन मे रखने वाला है।

इसी प्रकार विष्णु शब्द को लीजिए विष्ल धातु मे नु प्रत्यय लगाकर विष्णु शब्द सिद्ध होता है। विष्लृ-व्याप्तौ सब जगह व्यापक होने से परमात्मा का नाम विष्णु है। स्वामी दयानन्द ने सत्याथप्रकाश मे इसके लिए लिखा है— वेवेष्टि व्याप्नोति चराचर जगत् स विष्णु इस प्रकार विष्णु शब्द से सवव्यापक अथ लेना चाहिए। इस प्रकार उपासनीय ईश्वर एक ही है अन्य देवता व्यावहारिक अवश्य हैं उपास्य नही।

योऽन्यां देवतामुपास्ते न स वेद।
यथा पशुरेव स देवानाम् ॥
—शतपथ ब्राह्मण १४।४।२ कण्डि० १९ २२

जो परमात्मा के अतिरिक्त किसी अन्य की उपासना करता है वह पशु है।

महर्षि दयानन्द ने एकेश्वरवाद का प्रतिपादन करते हुए एक सूत्र दिया है अग्न्यादि नामों से मुख्य अथ परमेश्वर का ही ग्रहण होता है। तथा जहां जहा स्तुति प्राथना उपासना सवज्ञ व्यापक शुद्ध सनातन और सृष्टिकर्ता आदि विशेषण लिखे हैं वही वही इन नामो से परमेश्वर का ग्रहण होता है।

यहा हम केवल दो मन्त्रो को उदाहरण के रूप मे प्रस्तुत कर रहे हैं जिससे स्पष्ट है कि अनेक शब्द एक ईश्वर के लिए आ ए हैं

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमा।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः।

वही ज्ञान स्वरूप होने से अग्नि है सब को ग्रहण करने से वही आदित्य है अनन्त बलवान् होने से वही वायु है आनन्दमय होने से वही चन्द्रमा है शुद्ध भावयुक्त होने से वही शुक्र है महान् होने से वह। ब्रह्म है सवत्र व्यापक होने से आप है और सब का स्वामी होने से वही प्रजापति है।

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो
दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति
अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥
—ऋग १।१६४।४६

विद्वान मेधावी उसी एक सद्रूप परमात्मा का अनेक प्रकार से वणन करते हैं। उसी एक को इन्द्र मित्र वरुण अग्नि और जो वह अलौकिक उत्तम ज्ञान और उत्तम कमवाला गौरवयुक्त है इसी एक को ही यम और मातरिश्वा वायु भी कहते हैं

इस प्रकार चारो वेदो में यत्र तत्र अनेक मन्त्र हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि वैदिक मन्त्र एकेश्वर का प्रतिपादन करते हैं। महर्षि दयानन्द का भाष्य सायण उव्वट महीधर और पश्चिमी सस्कृतज्ञो से अधिक युक्ति-युक्त है क्योंकि उसका आधार नैरुक्त और व्याकरण है।

५ त्रैतवाद

दर्शनों का मुख्य विषय सृष्टि की प्रक्रिया का यथाथ विवेचन करके जिज्ञासु को अध्यात्म में प्रवृत्त करना है। सृष्टि की प्रक्रिया के विषय में विभिन्न विद्वानों ने अपने पक्ष एव मत की पुष्टि के लिए उसे इस प्रकार से उभारा कि वह तथ्य स्पष्ट होने की बजाए और झमेले में पड़ गया। इन सब मतों को संक्षेप में तीन कोटियों में विभाजित किया जा सकता है।

(१) समस्त विश्व का मूल एक मात्र जड़ तत्त्व है।

(२) दूसरा विचार है कि मूल में वास्तविक एक मात्र चेतन तत्त्व है।

(३) तीसरी विचारधारा है जिसके अनुसार जड और चेतन दोनों प्रकार के तत्त्वो का अस्तित्व है और दोनो के सहयोग से सृष्टि आदि जगत् काय का निर्वाह होता है।

अब इन तीनो का पृथक पृथक विश्लेषण प्रस्तुत करगे। वैदिक काल मे आर्य लोगों का ईश्वर के अस्तित्व मे पूर्ण विश्वास था। उस परम पुरुष की उपासना तथा तदनुकूल अपने जीवन के सभी कर्मों का अनुष्ठान उनका आदर्श था। परन्तु उसी काल मे आयजाति मे एक नवयुवक बृहस्पति नाम का हुआ उसने परमात्मा की उपासना को ढकोसला बताया और ईश्वर के अस्तित्व को मानने मे इन्कार कर दिया। उसका विश्वास था कि ब्रह्म नाम का कोई तत्त्व नही है। ऐसा विश्वास केवल मूखता है। यह सम्पूण जगत् मात्र उतना ही है जो कुछ प्रत्यक्ष है इससे परे किसी भी अन्य सत्ता का अस्तित्व नहीं है। वह युवक इतना प्रभावशाली था कि उसकी इस घोषणा का यह परिणाम निकला कि आय लोग दो वर्गों म विभाजित हो गय— देव और असुर। एक वर्ग की निष्ठा अध्यात्म म थी और दूसरे की अधिभूत मे।

इन दोनो वर्गों का जीवन दशन और तदनुरूप कर्मों का अनुष्ठान भी भिन्न भिन्न हो गया। इसी विचारधारा के प्रचारक और प्रसारक के रूप मे चार्वाक का नाम आया है। उनके दशन को चार्वाकदशन तथा बाहस्पत्य दशन के नाम से जाना जाता है। साख्य दशन के अन्तगत भी एक वाषगण्य आचाय की शाखा है जो परमात्मा को स्वीकार नही करते। इसी कारण कुछ विद्वान साख्य दशन को प्रकृतिवादी मानते हैं। कालान्तर मे बौद्ध दशन इसी विचार धारा से ही प्रभावित हुआ।

पाश्चात्य दशन जिसको हेगेल कार्ल मार्क्स जैसे प्रबुद्ध दार्शनिको ने इसी आधिभौतिक विचारधारा के रूप में पुष्पित और पल्लवित किया। इसी विचारधारा का ही एक रूप है जो एकदम प्रकृतिवादी है। इस का कितना दूरगामी परिणाम हुआ। उसे धार्मिक सामाजिक राजनैतिक क्षत्र मे नकारा नहीं जा सकता।

लोकायत दर्शन भी इसी का ही [illegible]

आध्यात्मिक जगत् को आर्यसमाज की देन

उसका आज तक कोई युक्तियुक्त उत्तर नहीं मिला। ये विचार दर्शन में तर्क, बुद्धि और विज्ञान की कसौटी पर टिक नहीं पाते।

दूसरी विचारधारा में केवल नाम परिवर्तन मात्र है। जड के स्थान पर चेतन शब्द का प्रयोग है। बौद्ध मतवादियों का आधार यही है। ईश्वर की सत्ता को कहीं भी स्पष्ट रूप से नकारा नहीं गया। परन्तु ऐसा लगता है कि वैदिक विचारधारा में जो व्यावहारिक त्रुटियां आ गई थीं, बौद्ध धर्म उसकी प्रतिक्रिया मात्र है। कालान्तर में बौद्धधर्म की इस विचारधारा के परिणाम स्वरूप जब पथ भ्रष्ट होने का भय उपस्थित हुआ और आध्यात्मिक जीवन जब पतन की ओर उन्मुख हुआ तो उसकी भी प्रतिक्रिया हुई और यह माना जाने लगा कि चेतन सत्ता का अस्तित्व तो है पर वही ब्रह्म है। शेष सब कुछ भ्रम मूलक है मिथ्या है। ब्रह्म सत्य जगन्मिथ्या का प्रारम्भ यहीं से हुआ। इसी विचारधारा को आचार्य शंकराचार्य ने सम्पुष्ट किया।

आचार्य शंकर वेदान्त के भाष्य में अनेकत्व जगत् को ब्रह्म का परिणाम मानते हैं।

'चेतनमेकं ब्रह्म स्वयं परिणममानं जगत् कारणमिति स्थितम्।'

—शांकर भाष्य २।१।२६

इस प्रकार वह चेतन और किसी अवस्था में जड रूप होकर भी प्रतीत होता है। स्पष्ट है कि चेतन यदि जड हो सकता है तो जड का चेतन होना भी स्वीकार कर लिया जाना चाहिए। अन्तर केवल अनुभूतिमात्र का है। विश्लेषण और विवेचन की कसौटी पर एक बात तो निश्चित है कि जड सदा जड और चेतन सदा चेतन ही रहेगा। दोनों के अस्तित्व को स्वतन्त्र तथा मूल रूप में स्वीकार करना अधिक युक्ति संगत है।

इस प्रकार हमने देखा कि तीन प्रकार की इस दार्शनिक विचारधारा में एक जड अर्थात् प्रकृति तत्त्व को महत्त्व देती है। दूसरी चेतन अर्थात् जीव को महत्त्व प्रदान करती है। तीसरी जड और चेतन दोनों को ही ब्रह्म का रूप स्वीकार करती है। तात्त्विक विवेचन के आधार पर तीनों ही अपने में अपूर्ण असंगत और एकपक्षीय हैं। इनको भी विज्ञान, बुद्धि और तर्क की कसौटी पर युक्ति युक्त स्वीकार नहीं किया जा सकता।

हम यहां इनका जो मूल भेद है उसे अत्यन्त संक्षेप में स्पष्ट कर रहे हैं। परमात्मा भोक्ता नहीं है, जब कि जीवात्मा भोक्ता है। देहेन्द्रियादि के साथ सम्बन्ध अवस्था में जीवात्मा भोक्ता की अपेक्षा है। प्रकृति भोग्य तत्त्व है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया
समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यन-
श्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥

ऋग्वेद १।१६४।२०

वेद का यह अति प्रसिद्ध मन्त्र है। इसमें मूल भूत तीनों तत्त्वों का वर्णन है। जीवात्मा भोक्ता परमात्मा अभोक्ता और भोग्य फल युक्त वृक्ष के रूप में प्रकृति का उल्लेख हुआ है।

श्वेताश्वतर उपनिषद में भी इसी को-

भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा
सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्म एतत्।

इस प्रकार ये तीन अनादि शक्तियां हैं—ईश्वर जीव और प्रकृति।

दार्शनिक जगत् में महर्षि दयानन्द का यही त्रैतवाद का सिद्धांत ही बहुत बड़ी देन है। आर्यसमाज इसी मान्यता का प्रचार और प्रसार करता है। इससे दार्शनिक जगत् की सभी विसंगतियों का स्वयं ही समाधान हो जाता है। यह विचार ही तर्क और बुद्धि की कसौटी पर अपने में पूर्ण है।

६ षड्दर्शन समन्वय

अनेक विद्वानों की धारणा रही है कि षड्दर्शन परस्पर विरोधी हैं। वास्तविकता कुछ और है। साम्प्रदायिक विचारधारा ने स्व स्व पक्ष के [illegible] पूर्वाग्रह की भावना से ऐसा मत बनाया और उसी रूप में उसे प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया है। मूलरूप से शास्त्रकारों की ऐसी भावना बिलकुल नहीं थी। महर्षि दयानन्द ने इस विश्रृंखलता का जो समाधान प्रस्तुत किया है वह अत्यन्त चमत्कार पूर्ण एवं तर्क संगत है। आर्यसमाज की यही मान्यता है। यह दृष्टिकोण समन्वयवादी है।

सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में ऋषि दयानन्द ने लिखा है "जैसा एक विद्या में अनेक विद्या के अवयवों का एक दूसरे से भिन्न प्रतिपादन होता है, वैसे ही सृष्टि विद्या के भिन्न भिन्न छः अवयवों का शास्त्रों में प्रतिपादन करने से इनमें कुछ भी विरोध नहीं है।'

सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास के अनुसार कर्म समय उपादान कारण, विद्या ज्ञान और विचार, तत्त्वों का मेल तथा निमित्त कारण अर्थात् बनाने वाला इन छः अवयवों के अभाव में किसी भी पदार्थ का अस्तित्व में आना असम्भव है। मीमांसा वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदान्तदर्शन इन सब की पृथक्-पृथक् व्याख्या का रूप है। अतः इनमें कहीं भी विरोध नहीं है।

इस प्रकार छः दर्शन एक दूसरे के विरोधी न होकर एक दूसरे के पूरक हैं। सृष्टि रचना की प्रक्रिया का पूर्ण व्याख्यान हैं।

७ मुक्ति से पुनरावृत्ति का सिद्धांत

आध्यात्मिक जगत् में महर्षि ने मुक्ति से पुनरावृत्ति का जो गम्भीर विचार दिया है वह निश्चित रूप से नवीन है यहां सब सम्प्रदायों की मान्यताओं के साथ इस सिद्धांत का तुलनात्मक विवेचन दिया जाए ठीक तो यही है परन्तु लेख के अत्यन्त लम्बे हो जाने के कारण उसे छोड़ रहे हैं। अन्य अनेक आवश्यक केन्द्र बिन्दु महर्षि दयानन्द की आध्यात्मिक जगत् को देन है। जिनका प्रचार आर्य समाज करता है परन्तु स्थानाभाव के भय से उन्हें भी छोड़ना पड़ रहा है। इस अन्तिम सिद्धान्त का संक्षिप्त रूप में विवेचन आवश्यक है।

न्याय दर्शन में तदत्यन्त विमोक्षोऽपवर्ग' और सांख्य दर्शन में अथ त्रिविधदुःखात्यन्त निवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थ कह कर सब प्रकार के दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति को मोक्ष का स्वरूप बताया है। इस अत्यन्त पद का अर्थ आचार्यों ने यह लिया है कि इस प्रकार दुःख की निवृत्ति होने पर जीवात्मा फिर कभी संसार में नहीं आता। महर्षि दयानन्द की मान्यता यह है कि अल्पज्ञ और अल्पशक्ति जीवात्मा में ऐसी सामर्थ्य नहीं कि वह अनन्तकाल तक ही ब्रह्मानन्द का भोग करता रहे। दर्शनों के इस 'अत्यन्त' पद का अर्थ महर्षि ने अनन्त न करके 'आत्यधिक किया है। वह काल ही इतना है कि उसके लिए 'अत्यन्त' पद का प्रयोग अकल्पनीय अथवा असमञ्जस में डालने वाला नहीं है। मोक्ष काल को महर्षि ने परान्त काल कहा है। इस परांत काल की गणना करके अवधि भी बताई है। इस प्रकार ऋषियों ने मुक्ति से पुनरावृत्ति की बात को स्वीकार किया है।

आर्यसमाज ने इस प्रकार वैदिक मान्यताओं का प्रचार प्रसार करके आध्यात्मिक जगत् में जो क्रांति लाने का प्रयास किया है उसका बहुत प्रभाव पड़ा है। अन्ध विश्वासों और पाखण्ड की सभी मान्यताओं के प्रवाह को रोकने में जो भी सफलता मिली है उसका श्रेय आर्य समाज को ही है।

आर्योचित आदर्शों के प्रतीक—राम

डा० भवानीलाल भारतीय

भारतीय आदर्शों का पूर्ण परिपाक हमें मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम में दृष्टिगोचर होता है। मानव जीवन को सम्पूर्ण एवं सर्वांगीण बनाने में जिन गुणों की आवश्यकता होती है उनका समग्र परिपाक राम के जीवन में दिखाई देता है। रामकथा के अमर गायक महर्षि वाल्मीकि ने महर्षि नारद से जिज्ञासा करते हुए एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पूछा था जो अत्यन्त गुणवान् शक्ति सम्पन्न धर्मज्ञ, सत्यवक्ता दृढ़ प्रतिज्ञ, चरित्रवान् प्रियदर्शन, आत्मज्ञानी तथा जितक्रोध हो। इस प्रश्न के उत्तर में देवर्षि नारद ने इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न राम का ही नाम लिया जो उनके विचार में बुद्धिमान्, नीतिज्ञ, धर्म के ज्ञाता, सत्य निष्ठा वाले तथा प्रजाहित में लगे रहते हैं। राम में विद्यमान विभिन्न गुणों का उल्लेख करने के पश्चात् नारद ने उन्हें समुद्र के तुल्य गम्भीर, धैर्य में हिमालय के तुल्य, पराक्रम में विष्णु के समान तथा क्षमाशीलता में पृथ्वी के तुल्य बताया। संक्षेपतः वे आर्य गुणों की समष्टि के रूप में वाल्मीकीय रामायण में उल्लिखित हुए हैं।

रामकथा की लोकप्रियता और व्यापकता का इससे बढ़कर और क्या प्रमाण हो सकता है कि अत्यन्त प्राचीन काल से ही समुद्र पार के दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में रामायण के कथानक तथा पात्र वहाँ के लोकमानस में बसे हुए हैं। इण्डोनेशिया देश में रामकथा अत्यन्त लोकप्रिय रही है। वहाँ के निवासियों का धर्म चाहे इस्लाम है, किन्तु वे रामकथा को अत्यन्त श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं तथा अपने नाम भी रामायण के पात्रों के अनुकरण पर रखने में संकोच नहीं करते। मारिशस में तुलसीदास रचित रामचरितमानस अत्यन्त श्रद्धा से पढ़ा जाता है। लगभग दस वर्ष पूर्व जब मानस की रचना की चतुः शताब्दी मनायी गई तो मारिशस वासियों ने लाखों की संख्या में रामचरित मानस ग्रन्थ भेजने की माँग भारत के पुस्तक प्रकाशकों से की थी।

वस्तुतः राम ने अपने गुण कर्म एवं स्वभाव से मानव की परिपूर्ण छवि हमारे सामने प्रस्तुत की है। लोकरञ्जन के लिए वे बड़े से बड़ा त्याग करने के लिए भी तैयार रहते हैं। अत्याचार और अन्याय का प्रतिकार करने में वे सदा आगे रहते हैं। अत्यन्त सौम्य कोमल एवं मृदु स्वभाव वाले राम अवसर आने पर अत्यन्त कठोर भी बन जाते हैं। उत्तररामचरितकार भवभूति के शब्दों में —

'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि"

वज्र से भी कठोर तथा पुष्प से भी कोमल राम का लोकोत्तर चरित्र समझना सामान्य बुद्धि के व्यक्ति के लिए सम्भव ही नहीं है। जीवन के प्रारम्भिक काल में हम उन्हें माता, पिता, गुरु आदि पूजनीय व्यक्तियों की आज्ञापालन में तत्पर देखते हैं। कर्त्तव्य पालन में उनकी उपमा किसी अन्य से नहीं दी जा सकती। जनकपुर में शिवधनुष भंग के समय उनकी शक्तिमत्ता धैर्य तथा गाम्भीर्य का परिचय मिलता है। माता-पिता की आज्ञा का एकान्त पालन उन्हें अत्यन्त प्रिय है इसलिए वे अपने राज्याभिषेक के आमोदजनक क्षणों की भी उपेक्षा कर वनवास के लिए प्रस्थान करते हैं। कवि के शब्दों में—

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षित कश्चित्
स्वल्पोऽप्याकारविभ्रम ॥

राज्यारोहण के लिए बुलाये जाने पर तथा थोड़ी देर पश्चात् वन के लिए जाने के आदेश मिलने पर भी राम की मुखाकृति में थोड़ा भी विकार नहीं आया। सुख-दुख हानि लाभ तथा निन्दा स्तुति में समत्व बुद्धि रखने वाले ऐसे ही महापुरुषों को स्थितप्रज्ञ कहा जाता है। भारतीय परिवार के आदर्शों को रामायण के पात्रों में जीवन्त रूप में देखा जा सकता है। यहाँ भी राम ही अन्य पात्रों में आदर्श मर्यादा तथा कर्त्तव्य पालन का भाव जागृत करने में दत्तचित्त दिखाई पड़ते हैं। अपने भाइयों के लिए उनका स्नेह और वात्सल्य समय समय पर प्रकट होता है। सीता के प्रति उनका अनन्य प्रेम और अनुराग एक आदर्श पति की मर्यादा स्थापित कर एक पत्नीव्रत की गरिमा प्रतिष्ठित करता है। इसी प्रकार गुरु शिष्य सम्बन्ध, स्वामी सेवक सम्बन्ध, मित्रों का पारस्परिक सौहार्द भाव, यहाँ तक कि शत्रु के प्रति भी न्यायपूर्ण आचरण का दृष्टान्त राम के चरित्र में दृष्टिगोचर होता है। महर्षि वाल्मीकि ने राम के इसी सर्वगुणान्वित चरित्र को ध्यान में रखकर उन्हें धर्म का विग्रहवान् रूप कहा है। □

संस्कृति सत्य

सांस्कृतिक विरासत

सुजीत कुमार ठाकुर

भारतीय संस्कृति विश्व की अन्य प्राचीनतम संस्कृतियों में अपना अद्वितीय स्थान रखती है। विश्व की अनेक प्राचीनतम संस्कृतियों का लोप हो गया है, परन्तु भारतीय संस्कृति का प्रवाह उसी गति से चल रहा है। भारतीय संस्कृति कई संस्कृतियों का अपने में समन्वय करके आज के युग में भी अपना मस्तक ऊंचा किए हुए है। इसके पीछे बहुत से कारण हैं।

भारत धर्म प्रधान देश है। भारतीय संस्कृति धर्म प्रधान है। धर्म से हमारा तात्पर्य कर्त्तव्य से है। हमारी संस्कृति का प्राचीनतम सिद्धान्त यह रहा है कि जो धर्म का नाश करेगा उसका विनाश हो जाएगा। इसकी पुष्टि के लिए इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं। इतिहास साक्षी है कि, जिस किसी ने हमारे धर्म पर आघात किया उसका अस्तित्व ही मिट गया। यही कारण है कि भारतीय जीवन की समस्त बातों में धर्म की भावना प्रधान है। व्यापक अर्थ में धर्म का अर्थ मानव धर्म से है।

हमारी संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। आज से पचास वर्ष पूर्व तक आर्य संस्कृति को ही हमारी प्राचीन संस्कृति माना जाता था परन्तु १९२२ ई० में हुई सिन्धुघाटी की खुदाई से हमारे समक्ष एक नई संस्कृति आयी। इस संस्कृति को हम भारतीय संस्कृति की प्रथम झाँकी कह सकते हैं।

भारतीय संस्कृति में अच्छे विचारों का अपने में समन्वय कर लेने की एक बड़ी प्रबल शक्ति है।

इसने आर्य, यूनानी, सिथियन, शक, हूण, मुसलमान, ईसाई सभी जातियों के अच्छे गुणों का ग्रहण कर लिया। विश्व गुरु विवेकानन्द ने भारतीय संस्कृति की पाचन शक्ति की बड़ी सराहना की है।

प्रत्येक व्यक्ति को अपना देश प्यारा होता है, वह अपने अतीत की उपलब्धियों के प्रति स्वाभाविक गर्व का अनुभव करता है। और भारत तो वह महान् देश है जिसने न सिर्फ दुनिया को बहुत कुछ दिया है वरन् दुनिया के विभिन्न कबीलों से चाहे व आक्रामक बनकर आए अथवा सौदागर उनकी सांस्कृतिक उपलब्धियों को निःसंकोच ग्रहण कर, उन्हें आत्मसात् कर, अपने महान् संस्कृति के सागर में उन्हें विलीन कर हजारों वर्षों पुरानी इस संस्कृति का लगातार विकास किया। इस सांस्कृतिक धरोहर पर गर्व होना स्वाभाविक है।

हमारी महान् संस्कृति की एक महान् धरोहर है सूफियों और संतों का तुकाराम, कबीर तथा चैतन्य का वह युग जिसमें मानव-मानव की समानता को स्वीकार किया गया। पण्डितों की लच्छेदार टिप्पणियों से पूर्ण परन्तु शासक हित में तैयार की गयी, नियमावली को तोड़ चाहे भक्त के रूप में ही क्यों न हो—जात-पांत को तोड़ने वाला नारा अपनाया गया, जात-पांत पूछे नहीं कोई। हरि को भजै से हरि के होई।

इस संस्कृति में सहिष्णुता एवम् उदारता की भावना विशिष्ट रूप में पायी जाती है। विश्व इतिहास पर हमें नजर दौड़ाने से ज्ञात होता है कि यूरोपीय देशों में असहिष्णुता के कारण अनेक युद्ध हुए, जिससे जन और धन की अपार क्षति हुई। लेकिन भारत में इस प्रकार के युद्ध कभी नहीं हुए। अनेकता में एकता हमारी विशेषता रही है। कई धर्मों का एवं सम्प्रदायों का यहाँ पल्लवन हुआ, पर किसी भी प्रकार के अनुदार युद्ध यहाँ नहीं हुए। विभिन्नता में सारभूत एकता हमारी संस्कृति की एक बड़ी विशेषता है। यह है विरासत जिसे हमें अपनाते हुए और आगे बढ़ना है। ●

यह नव वर्ष सभी को सुखद शांति मंगलमय हो

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

यज्ञाग्नि से दिग-दिगन्त हो, सुरभित व्याधि विषय भय क्षय हो
वैदिक विचार धारानुकूल, प्रिय जन-जन का परिपूर्ण हृदय हो

ओम पताका घर-घर फहरे, ऋषिवर दयानन्द की जय हो
सत्पथ प्रेरक अटल व्रत, भावों का ध्रुव सम दृढ़ निश्चय हो

निखिल वेद पराजित हों, वैदिक धर्म की अविचल जय हो
अज्ञान तम का नाश हो, तमसो मा ज्योतिर्गमय हो

[illegible]
[illegible]

दर्शनशास्त्र का आदिगुरु

लेखक—आचार्य रामानन्द शास्त्री उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार पटना

किसी जाति की महत्ता समझने के लिए भौतिक सभ्यता का विकास पर्याप्त ही नहीं है। भूतल की बहुत जातियां जैसे बेबिलोन इजिप्शियन आदि सभ्यता की दृष्टि से बहुत उन्नत थीं किन्तु आज पदा क्रान्त हैं। जाति की महत्ता उसके दर्शन शास्त्र से है। किसी जाति का बड़प्पन जानने के लिए यह जानना परमावश्यक है कि उस जाति की दार्शनिक विचारधारा क्या है। विज्ञान का सम्बन्ध ज्ञान अथवा बुद्धि से है किन्तु दर्शनशास्त्र तो आत्मानुभूति होता है। दर्शन गम्भीर चिन्तन या दिव्य अनुभूति का परिणाम है। इसलिए दर्शन शास्त्र किसी जाति को संस्कृति की आत्मा है। भारतीय प्रजा इस चिन्तन में अग्रणी अथवा यों कहिये विश्वगुरु है। यूरोपीय दार्शनिक थेलिज (Theles) जिसे दर्शन शास्त्र का पिता कहते हैं आज से २५०० सौ वर्ष पूर्व यूनान के आयोनिया नामक ग्राम में उत्पन्न हुआ था। उस ने जल तत्त्व से सृष्टि का विकास माना। उसके पश्चात् और यूनानी दार्शनिकों ने किसी ने अग्नि या वायु तत्त्व से विकास की कल्पना की। यूनानी दार्शनिकों में सिरमौर पाइथागोरस ने संख्यावाद पर ही अधिक बल दिया भारत की दृष्टि में ये सब दार्शनिक अर्वाचीन हैं।

दार्शनिक इतिहास से विदित होता है कि भगवान् गौतम बुद्ध के समय अर्थात आज से २५०० सौ वर्ष पूर्व ये सब सिद्धांत भारत में बिल्कुल प्रचलित हो गए थे। स्वयं बुद्ध ने अपने प्रवचनों में ८७ दार्शनिक सिद्धांतों का खण्डन किया है। गौतम बुद्ध ने घर से निकलकर आराड काल म से सांख्यशास्त्र की शिक्षा प्राप्त की थी।

भारतीय दर्शन शास्त्र की परम्परा वेदों से प्रारम्भ होती है। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में हमें सूक्ष्म दार्शनिक बातों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। यही विचार उपनिषत काल में अधिक विकसित हुए। बृहदारण्यक तथा छान्दोग्य में इन दार्शनिक शास्त्रों का भी उल्लेख मिलता है। मिथिलाधिपति विदेहजनक केकयदेशाधिपति अश्वपति काशीनरेश अजात शत्रु पञ्चालनरेश प्रवाहण जैवालि मुख्य थे। ये राजा राजनीति में निपुण थे। इनकी शासन व्यवस्था अत्युत्तम थी। राजा अश्वपति के लिए कहा जाता है कि उसके राज्य में चोर कृपण शराबी बिना अग्निहोत्र किए कोई पुरुष मूर्ख (निरक्षर) व्यभिचारी तथा व्यभिचारिणी स्त्रियां नहीं थीं।

अजातशत्रु की राजधानी काशी में बालाक श्री दृप्तबालाकि गार्ग्य थे। उन को अपनी विद्या का बड़ा अभिमान था। उन्होंने सारे जनपदों के दार्शनिकों को चैलेञ्ज किया था कोई आकर शास्त्रार्थ कर ले। उपनिषत कहते हैं कि—

> दृप्तबालाकिर्हानूचानो गार्ग्य आस। स होवाच अजातशत्रुं काश्यं ब्रह्म ते ब्रवाणीति। स होवाच अजातशत्रुः सहस्रमेतस्यां वाचि दद्मो जनको जनक इति वै जना धावन्तीति।

इससे स्पष्ट विदित होता है कि दृप्त बालाकि को अपनी विद्या पर कितना अधिक विश्वास था। राजा प्रवाहण दर्शन के विद्यार्थी थे। पश्चात बड़ भारी दार्शनिक हुए उपनिषद् में उनका भी सिद्धांत आदरणीय माना जाता था।

राजा जनक उनमें अग्रणी थे। बृहदारण्यक ने एक शास्त्रार्थ का उल्लेख किया है—

> जनको ह वैदेहो बहुदक्षिणेन यज्ञेन ईजे तत्र ह कुरुपञ्चालानां ब्राह्मणा अभिसमेता बभूवुः। तस्य ह जनकस्य वैदेहस्य विजिज्ञासा बभूव कः स्विदेषां ब्राह्मणानामनूचानतम इति। स गवां सहस्रमवरुरोध दश दश पादा एकैकस्याः शृङ्गयोराबद्धा बभूवुः। तान् होवाच ब्राह्मणा भगवन्तो यो वो ब्रह्मिष्ठः स एता गा उदजतामिति।

अर्थात राजा जनक ने बहुदक्षिण से सम्पन्न एक यज्ञ किया। उसमें कुरुपाञ्चाल के ब्राह्मण उपस्थित थे। उस समय जनक विदेह को यह जानने की इच्छा हुई कि उनमें सर्वश्रेष्ठ विद्वान् कौन है। उन्होंने घोषणा की—ब्राह्मणो! ये एक सहस्र गायें हैं प्रत्येक के शृङ्गों में दश दश पाद सोने मढ़ हुए हैं। जो कोई आप में श्रेष्ठ विद्वान् हो वे उन्हें हांककर ले जावें।

सारी सभा में सन्नाटा छा गया। तब याज्ञवल्क्य ऋषि ने अपने शिष्य सोमश्रवा को आदेश दिया। सोम्य! इन गायों को हांककर आश्रम में ले चलो। बस यहीं से शास्त्रार्थ तुमुल आरम्भ होता है। उसमें भाग लेने वाले जनक के होता श्री अश्वल थे। उनके समाधानार्थ याज्ञवल्क्य ने यज्ञ का वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक रहस्य का दिग्दर्शन कराया। तब जरत्कारव आर्तभाग आए। उन्हें याज्ञवल्क्य ने प्राण का रहस्य समझाया। भुज्युर्लाह्यायनि उषस्तश्चाक्रायण गार्गी वाचक्नवी उद्दालक आरुणि एवं शाकल्य ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। उपनिषद् ने लिखा है जिस प्रकार तीरन्दाज अपने तीरों को धनुष की प्रत्यञ्चा पर रखकर लक्ष्य को निशाना बनाते हैं उसी प्रकार गार्गी ने अपने तर्कों का निशाना याज्ञवल्क्य को बनाया। याज्ञवल्क्य से शिक्षा लेकर गार्गी ब्रह्मवादिनी हो गई।

याज्ञवल्क्य की दो स्त्रियां थीं—कात्यायनी और मैत्रेयी। बेचारी कात्यायनी तो रोटी पकाने आदि गृह कार्यों में ही लगी रहती थी किन्तु मैत्रेयी तो उपनिषद् (परिषद्) में भाग लेती थी। वह परम विदुषी थी। उसने ही याज्ञवल्क्य से पूछा था कि मनुष्य कैसे अमृत होता है।

याज्ञवल्क्य ने उसका बहुत अच्छा समाधान किया। आज के दार्शनिक उस पर स्तब्ध हैं। ऋषि कहते हैं—

> न वा अरे पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति आत्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति।

कोई वस्तु प्रिय नहीं है अपितु आत्मा ही प्रिय है उसी को जानो यही एक उत्तर है जिससे सारा जगत भारत के आगे नत मस्तक है। सारी वस्तुएं आत्मा से सम्बद्ध हैं इसलिए उसका ज्ञान आवश्यक है।

दर्शनशास्त्र का प्रारम्भ यहीं से होता है।

इसी को जानना ही दर्शनशास्त्र का परम लक्ष्य है। भारतीय तर्कशास्त्र की भी आधारशिला यही है। यूरोप में तर्कशास्त्र का सृजन वाणी विलास के लिए हुआ था किन्तु भारत में इसका सृजन आत्मज्ञान के लिए ही हुआ।

यूरोपीय तर्कशास्त्र के पिता अरस्तू कहे जाते हैं जो सिकन्दर महान् के गुरु थे। सिकन्दर के मर जाने पर उन्हें विद्रोही कह कर तिरस्कृत कर दिया गया था। भारतीय तर्कशास्त्र तो राजा जनक के दरबार में उपस्थित सुलभा नामक स्त्री के मुख से सुना गया जिसने ९ तरह की युक्तियों से सारी सभा को मौन कर दिया था। इसीलिए तो महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने कहा है कि यह देश अमद मूल है। भूगोल में जितनी विद्याएं फैली हैं सब यहीं से गई हैं।

मगोलपुरी पुनर्वास कालोनी में वेद प्रचार

मनुष्य को प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है जबकि अन्य जीव कुत्ता बल्ली आदि नैसर्गिक ज्ञान से परिपूर्ण होते हैं। बत्तख को तैरना सिखाने की आवश्यकता नहीं होती है। लाला रामगोपाल जी शालवाले प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने मगोलपुरी में महाशय चुन्नीलाल ट्रस्ट के वेद प्रचार विभाग द्वारा प्रारम्भ किए गए कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए लाला जी ने कहा कि मगोलपुरी के निवासियों के लिए यह स्वर्णिम अवसर है जबकि वे मानवमूल्यों का इन कार्यक्रमों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इस ज्ञान को प्राप्त करना तभी सार्थक है जब हमें इसे अपने जीवन में चरितार्थ कर सकें। उन्होंने बताया कि वेद का सन्देश केवल हिन्दुओं के लिए नहीं है वह सभी के लिए है। मानवमात्र तक सीमित न होकर प्राणीमात्र के लिए है।

इस अवसर पर यज्ञ और भजन के पश्चात महाशय धर्मपाल जी प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा डा० धर्मानन्द प्रकाश उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा प० राजगुरु जी शर्मा प्रधान प्रतिनिधि सभा मध्यभारत ने उपस्थित जनों को सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संयोजन प० मुनीराम जी शर्मा ने किया।

दयानन्द की देन

(पृष्ठ ४ का शेष)

उन्हें केवल पुरुष की इच्छापूर्ति का साधन न समझा जाय। इसी प्रकार महर्षि दयानन्द ने अपनी वैचारिक क्रांति द्वारा नारी जाति को फिर से सम्मान के पद पर आसीन करवाया।

महर्षि दयानन्द ने अपने आत्म संयम त्याग तप तथा निर्भीकता के कारण मानव मात्र को कल्याण के मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा दी। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का सन्देश देकर एकता के सूत्र में बांधने का उद्घोष गुंजाया।

सर्वप्रथम भारत की स्वतन्त्रता का बीजारोपण महर्षि दयानन्द ने ही किया था। धर्म में जागृति लाकर आर्य संस्कृति एवं हिन्दी भाषा का प्रेम उन्होंने ही बढ़ाया। सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। महर्षि का उद्घोष आज भी गूंज रहा है।

महर्षि दयानन्द ने मानव मात्र ही नहीं प्राणी मात्र के कल्याण के लिए जो देन दी है वह आज तक हमें किसी ने नहीं दी।

९०७/ए डी साईट,
फ्रीलेण्डगंज दाहोद
गुजरात-३८९१६०

समाचार-सन्देश

सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो द्वारा जन सेवा के निमित्त नया पग—

अन्तर्जातीय विवाह केन्द्र की स्थापना

आज देश की वतमान स्थिति को देखते हुए दहेज प्रथा को समाप्त करन तथा गुण कम स्वभाव के आधार पर विवाह करने के लिए अन्तर्जातीय विवाह केन्द्र महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली मे अपने विवाह योग्य बच्चो-बच्चियो के नाम पजीकृत कराए। यह कार्य निशुल्क होगा। आप अपने परिचय पत्र में निम्न लिखित बातो का जानकारी देना न भूलें। नाम—पिता का नाम आयु कद शिक्षा वण व्यवसाय (फोटो अवश्य भेज। अपनी इच्छा क्या बाहर भेजने के पक्ष मे हैं परिवार के सदस्यो का परिचय शाकाहारी अथवा क्या कोई रोग तो नही है।

आप सयोजक अन्तर्जातीय विवाह केन्द्र सावदेशिक सभा नई दिल्ली के पते पर भेजें।

भवदीय
चन्द्रप्रकाश सयोजक

'पूर्ण मद्य निषेध' पर पुनर्विचार हो

केन्द्र मे कांग्रस की सुदृढ सरकार बनने और युवा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी द्वारा सावजनिक जीवन मे भ्रष्टाचार समाप्त करने का आह्वान करने से नि सदेह नैतिक मूल्यो मे अभी भी प्रगाढ आस्था रखने वालो को कुछ राहत मिली है। वास्तव मे जब तक हमारी सरकारें शराब बेचकर धनार्जन करती रहेंगी तब तक सावजनिक क्षेत्र से भ्रष्टाचार दूर करने का प्रश्न ही नही पैदा होता। यही कारण था आजादी के पूव वह व्यक्ति कांग्रेस का सदस्य नही बन सकता था जो शराब पीता हो। महात्मा गाधी ने स्वय कहा था कि स्वतत्र भारत की सरकार का पहला काय शराब की सारी दुकानों को बन्द करने का होगा। शराब पीने से मन व मस्तिष्क पूणत दूषित हो जाता है सोचने समझने की शक्ति समाप्त हो जाती है। शराब पीने से राष्ट्र की वर्तमान व भावी पीढी बर्बाद हो रही है। एक जन कल्याणकारी सरकार जिसने भारतीय सविधान मे उल्लिखित नीतिनिदशक सिद्धांतो पर अमल करने की शपथ ली हो यदि शराब को प्रोत्साहित करती है तो इससे बड़ा देश का दुर्भाग्य और क्या होगा? आशा है भारत को इक्कीसवी सदी के स्वर्णिम प्रभात की ओर ले जाने की घोषणा करने वाली श्री राजीव गाधी की सरकार इस दिशा मे सकल्प बद्ध होकर पुनर्विचार करेगी और गाधी जी के स्वप्नो का रामराज्य लाने के लिए समस्त देश मे एक साथ पूण मद्य निषेध की नीति लागू करेगी।

राधेश्याम आर्य

आर्यवीर दल के मुख्य कार्यकर्ताओं का शिविर

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के मुख्य कार्यकर्ताओं एवम् अधिकारियों की एक आवश्यक बैठक ३१ ३-८५ साय चार बजे आर्यसमाज हनुमान् रोड पर सम्पन्न हुई। इस सभा मे सवसम्मति से निर्णय लिया गया कि आर्यवीर दल के कार्यकर्ताओं का एक शिविर २० अप्रैल शनिवार साय चार बजे से रात्री ७ बजे तक आर्यसमाज मन्दिर हनुमान् रोड पर लगाया जायेगा। शिविर के लिए वस्त्र पान एव भोजन की व्यवस्था भी रहेगी। सभी कार्यकर्ताओं से प्रार्थना है कि वह इस प्रस्तावित शिविर में भाग लेकर आर्यवीर दल को सशक्त दल बनाने मे सहयोग करेंगे।

नोट (ग्रीष्मावकाश में आर्यवीर दल के अन्य चार शिविर लगाये जायेंगे। इन शिविरों का विस्तृत कायक्रम शीघ्र ही प्रकाशित करा दिया जायेगा।

प्रियतमदास रखवत — अधिष्ठाता
श्यामसुदर बिरमानी — मन्त्री

शुद्धि

आर्यसमाज नीमचाना जिला बुलन्द शहर (उ०प्र०) मे ता० १७ ३ १९८५ को मुसलमान परिवारों की शुद्धि कराई गई। सभी परिवारो के सदस्यो को यज्ञोपवीत दिया गया और स्वामी स्वरूपानन्द वेदप्रचार अधिष्ठाता—दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा द्वारा नवीन नाम परिवतन किया गया। लालखां लालचन्द बनाये गये उनकी धमपत्नी-शकीला बेगम से श्रीमती सत्यवती बनी और प्रेमखा से प्रेमचन्द बने। प्रेम खा की पत्नी गुलकेश बेगम को श्रीमती गायत्री देवी बनाया गया। दो पुत्र व पुत्री के नाम भी बदले गये। कु० मुन्नी से मनीषी नाम रखा गया। छमी खा का नाम धर्मवीर रखा गया। इस अवसर पर दोनों मुस्लिम परिवारो को उपस्थित स्त्री पुरुषों ने आशीर्वाद दिया। साथ ही लाला जयप्रकाश आय विवेक विहार (दिल्ली) वालो ने दोनो परिवारो की सर्विस लगाने का वचन दिया और वस्त्र व रुपया भी दिये गए और प्रेमचन्द लालचन्द के हाथों से प्रसाद वितरण कराया गया शान्ति पाठ के बाद कायक्रम समाप्त हुआ।

वार्षिकोत्सव

आयसमाज कृष्णनगर का वार्षिकोत्सव २२ अप्रैल से २८ अप्रैल तक समारोह पूर्वक हो रहा है। इस अवसर पर अथववेद पारायण यज्ञ तथा अनेक प्रसिद्ध विद्वानो एव सगीतज्ञों के प्रवचन एव भजनोपदेश होंगे।

मन्त्री—जगदीश नाथ भाटिया

सत्संग भवन का निर्माण

आयसमाज मन्दिर गोविन्दपुरी कालका जी के सत्सग भवन का निर्माण काय प्रारम्भ हो चुका है। समस्त धार्मिक जनो स प्रार्थना है इस पवित्र काय हेतु अधिक से अधिक धन के द्वारा सहयोग कर पुण्य के भागी बनें। मन्त्री

आयसमाज, गोविन्दपुरी
नई दिल्ली—१९

श्री मुख्यतार खान के परिवार द्वारा वैदिक धर्म में प्रवेश

हिन्दू शुद्धि समिति के मन्त्री स्वामी सेवानन्द जी के प्रयत्न से ग्राम कतलूपुर जिला सोनीपत के वासी श्री मुख्यतार खान सुपुत्र श्री भोमा खान ने अपने परिवार सहित गत सप्ताह यज्ञ करने के पश्चात् स्वेच्छा से वैदिक धम मे प्रवेश कर लिया। अब उनका नाम शुद्ध करने के पश्चात मुख्यतार सिंह रखा गया है।

केदार सिंह आर्य
कार्यालयाध्यक्ष

आर्य सन्देश साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बने, और बनाएँ

क्योकि यह पत्रिका—

(१) वैदिक मान्यताओ को उजागर करती है।
(२) आर्यों (हिन्दुओ) की महान् परम्पराओ की याद दिलाती है।
(३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्राति से आत्म चेतना जागृत करती है।
(४) भारतीय सस्कृति के भूले बिसरे प्रसगो, महापुरुषो तथा आदर्श सस्कारो को प्रकाश मे लाती है।
(५) ऋषि मुनि तपस्वी आप्तविद्वानो की वाणी का बोध कराती है।
(६) परमेश्वर की पवित्र वाणी वेद का जीवनोपयोगी मधुर सन्देश लाती है।
(७) नय लेखकों कवियो चिन्तको प्रतिभाशाली विद्वानो साहित्य सेवियो को प्रोत्साहन देती है।
(८) धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक ज्योति से मन-मन्दिर को प्रकाशित करती है।
(९) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद, स्मृति, कल्प सूत्र आरण्यक, ब्राह्मणग्रन्थ गीता रामायण नीति, ऐतिहासिक, अमूल्य आर्य ग्रन्थो जिन को अधिकाश लोगो ने पढ़ा तो क्या देखा भी नही समस्त आध्यात्मिक जगत् को जिन ग्रन्थो पर सदा गर्व रहेगा उन के बहुमूल्य ज्ञान से आपका मार्गदर्शन करती है।
(१०) अतएव देर न कीजिए आज ही अपना वार्षिक चन्दा २० रुपये भेजिये, जब में अनेक विशेषांक तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर प्रकाशित, ५० रुपये मूल्य की भव्य मनोहारी स्मारिका नि शुल्क दी जायेगी। स्मारिका और विशेषाक का स्टाक कम है। अत यह सुविधा अप्रैल तक ही है।

सम्पादक आर्य-सन्देश

आदर्श जीवन

(पृष्ठ २ का शेष)

अपनी निकृष्टतम अवस्था को चला जाता है तब भी वह पुन अपनी अवस्था सुधारने के लिए प्रयत्न करता हुआ एक दिन श्रेष्ठतम अवस्था को प्राप्त कर लेता है। अत हमे कभी निराश नही होना चाहिए और अपनी अवस्था का सुधारते हुए हम परम सफल हो सकते हैं।

पुन जब पूर्णिमा के बाद चन्द्रमा प्रमाद वश ऐसा नही करता तो विनाश प्रारम्भ हो जाता है। अत विवाक और लापरवाही प्रमाद मे प्रयत्न शिथिल कभी नही करना है। इत्यादि अनेको शिक्षाए हमे चन्द्रमा से मिलती है।

पुन जब हम सूय की तरफ देखते हैं तो पाते हैं कि सूय को जब बाधाएँ (बादल) घेर लेता है तो सूय घबडाता नही उससे युद्ध करता है और विजयी होता है। यहा ईश्वर हम यह सन्देश दते है कि बाधाओ से जरा भी विचलित मत होओ। उनम जूझते चल जाओ। ऊचा उठो आगे बढो तुम अव य विजयी होगे। विपत्तिया अवश्यमेव दूर होकर रहेगी।

इस ससार मे विपत्तिया भी हमे श्रेष्ठतम बनाने के लिए ही आती हैं। वह ईश्वर की तरफ से हमारी परीक्षा है। उसमें जूझकर हम विजयी होते हैं। सफल होते हैं निखरते चले जाते हैं। ससार मे विपत्तियो ने भी व्यक्ति को महान् बनाने मे कम योगदान नही दिया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक एक वेद मन्त्र मे कैसे कैसे अद्भुत ज्ञान विज्ञान भरे पड हैं। सब ही वेद मन्त्र एक स एक बढकर श्रेष्ठ हैं। जितना ही उनमे हम अवगाहन करेंगे उतना ही आनन्द और ज्ञान विज्ञान हम प्राप्त करत चल जायेंगे।

इसी लिए वेदो के परम ममज्ञ दव दयानन्द उपदेश मञ्जरी के उपदेश मे बताते हैं कि आग लोग एक एक वेद मत्र को लेकर गहन मनन चिंतन समाधि मे ईश्वर से अथज्ञान प्राप्त करत थे और अद्भुत बातें ससार को देते थ। अत हम भी ऋषिभाष्यानुसार वद मन्त्रो का गहन मनन करत हुए नई-नई बाते ससार को देते रहें जिससे ससार का उत्तरोत्तर हित होता रहे। क्योकि ससार का उपकार करना सबका मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। ओ३म् शम्

विश्वेश्वरी प्रसाद सिंह
अ० सहायक निदेशक
५०२ केन्द्रीय जल आयोग
सेवा भवन रामा कृष्ण पुरम
नई दिल्ली ६६

घरेलू उपयोगी बातें

- ☐ ऊनी कपडो को कीडों और बरसाती हवा से बचाने के लिए उस पर खूब बारीक पिसी हुइ फिटकरी छिडक।
- ☐ घर के अन्दर उन पौधो मे जिन्ह प्रकाश नही मिलता सुहागा मिश्रित पानी डाल। हमेशा ताजे बने रहेंगे।
- ☐ एक सर पानी मे एक चम्मच ग्लिसरीन मिलाकर रेशमी कपड धोयें इससे न तो व सिकुडगे और न ही कडे होगे।
- ☐ नये रेशमी मोजो को पहनने से पहले खूब गरम पानी मे धो लें मोजे ढीले नही होगे।
- ☐ ऊनी व रेशमी कपडो से यदि रग छूटने का डर हो तो उन्हे जरा सा नमक रीठे के पानी मे धोयें रग नही छूटेगा और कपड भी साफ व चमकदार धुलेंगे।
- ☐ नये रगीन सूती कपडो को धोने से पहल यदि उन्हें कुछ देर थोड नमक मिले पानी मे भिगो दिया जाए तो उसका रग बहुत दिनो तक अच्छा बना रहेगा। स्मरण रहे पानी गरम करने की आवश्यकता नही है।
- ☐ रेशमी कपडो मे चमक लाने के लिए धुले हुए कपडो को थोडी सी स्प्रिट मिले साफ पानी में थोडी देर के लिए डुबोये रखें।
- ☐ दो या तीन रग का स्वैटर धोते समय थोडा सा नमक डालने मे कभी भी खराब नही होगा।
- ☐ बचे हुए आटे का खमीरा होन से बचाने के लिए उसे पोलीथिन की थैलियो मे डालकर फ्रिज म रखना चाहिए। जब आटे की आवश्यकता हो तो १५ मिनट पहले ही थैली को पानी मे रख दीजिए आटा १५ दिन भी खराब नही होगा।
- ☐ यदि लकडी का फर्नीचर पुराना सा लगने लगा है तो सरसों के तेल मे पानी मिलाकर साफ करिए फर्नीचर मे पहले जैसी चमक आ जायेगी।
- ☐ नेल पालिश सख जाय तो उसमे कुछ बूदें स्प्रिट डाल दीजिए, उससे पतली हो जाएगी।
- ☐ यदि क्रीम सख जाय तो उसमे थोडी सी ग्लिसरीन डाल दीजिए पहले की तरह मुलायम हो जायेगी।
- ☐ चादी के आभूषण अथवा चीजो को उस पानी मे साफ करिए जिसमे आलू उबाले गये हो या उन पर चूने का लेप कर दें। सूखने पर पुरान कपडे से रगडकर साफ कर दें।

वैवाहिक-विज्ञापन

एक १३७५ रु० मासिक आय वाले विधुर अकाउण्टेण्ट के लिए निःसन्तान, सुन्दर स्वस्थ तथा लम्बा विधवा या परित्यक्ता की आवश्यकता है। सम्पर्क करें—

श्री अमरनाथ खन्ना
मकान न० ३८७ सेक्टर न० १५ ए०
फरीदाबाद (हरियाणा)

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज ग्रीन पार्क मे एक सुयोग्य विद्वान् पुरोहित की आवश्यकता है। उचित वेतन दक्षिणा प्रदान की जाएगी। इच्छुक महानुभाव शीघ्र सम्पर्क कर।

प्रधान, लाला इन्द्र नारायण
ए १६ ग्रीन पार्क नई दिल्ली

श्रद्धेय श्री रामगोपाल शालवाले का अभिनन्दन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्रद्धेय श्री रामगोपाल जी शालवाले के सम्मान मे आगामी १२ जून, १९८५ को दिल्ली मे एक अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया जा रहा है। लाला जी ने अपने जीवन काल मे वैदिक धर्म के प्रचार आर्य जाति के उत्थान, आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ बनान एव राष्ट्रीय धारा के सरक्षण मे गौरवशाली भूमिका निभाई है। उनका जीवन और उनके कार्य अनुकरणीय हैं। इस अवसर उन्हें एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी समर्पित किया जायेगा। प्रमुख आर्य जनों का एक कार्यकारी दल इस आयोजन की सफलता के लिए कार्यरत है। श्रद्धेय लाला जी के सम्बन्ध में आपके प्रेरणादायक सदेश, सस्मरण एव सुझाव हमे लाभकारी होंगे।

कृते डा० आनन्द प्रकाश
उपमन्त्री—सार्वदेशिक सभा, दिल्ली
एव
सयोजक : अभिनन्दन समारोह

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वर्ष ९ अंक २२ | रविवार २१ अप्रैल १९८५ | आर्य संवत्सर १९६०८५३०८५ | वैशाख २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१

सम्पादकीय

महात्मा हंसराज दिवस अंक

मानवता के चमकते ध्रुवतारक महात्मा हंसराज

अनादिकाल से सृष्टि का चक्र अविरत गति से चल रहा है। अगणित जन इस धरती धाम पर जन्मे और मृत्यु को प्राप्त हो गये। अनन्त आकाश मे उभरते चमकते अनेक सितारे दिखते दिखते आंखो से ओझल हो जाते है किन्तु युग-युगो से ध्रुवतारा अपने स्थान पर गतिमान् है। अंधियारो मे भूले भटके पथिको का वह सदा दिग्दर्शक रहा है। ऐसा ही मानवता का मूतरूप ध्रुवतारक है महात्मा हंसराज। पंजाब की धरती का यह लाल अपने समय मे प्रान्त भर मे बी० ए० की परीक्षा मे द्वितीय आया था। चाहता तो उस समय मे अच्छी सरकारी नौकरी प्राप्त कर समृद्धि लक्ष्मी के फूलो से सुवासित पथ पर चल पड़ता। परन्तु उन्होने स्वीकार किया शिक्षा सरस्वती का मार्ग जो कांटो की चुभन से दहक रहा था। यह सहज ही सीधा सरल मार्ग नही था। ऊबड़-खाबड़ कटीली झाड़ियो, हिंसक जानवरो की भयंकर गर्जना के बीच से गुजरने वाला एक लम्बा मार्ग, जिसकी मंजिल बहुत दूर थी। सचमुच त्याग, तपस्या और बलिदान का मार्ग दुस्तर ही होता है। और इसे कोई माई का लाल ही अपनाता है। महर्षि दयानन्द की शिक्षा नीति के प्रसार का महान संकल्प धारण किया, महात्मा हंसराज ने। डी० ए० वी० स्कूल एवं कालिजो के महान् वट वृक्ष के रोपण का कार्य किया इस महामना ने। देश-देशान्तरो प्रदेश, प्रान्तो मे दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल एवं कालिज का फैलाव उस महान् व्यक्तित्व की याद दिलाता है। उन्होने कहा था वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के प्रचार का एक मात्र गुर है उच्च बलिदानी वीर एवं समर्पित त्यागी सेवक। वे इसी एक विचार पर सम्पूर्ण जीवन चलाते रहे। बिना वेतन लिये, भूखे पेट रहकर भारत की गुलाम धरती पर देश के भावी कर्णधार को शिक्षित करते रहे।

महात्मा हंसराज ने यह पग उस समय रखा था जब समस्त भारत के जन-जन को अंग्रेजियत और ईसा मसीह की भेड़ो मे शामिल करने का षड्यन्त्र लार्ड मेकाले की शिक्षा नीति के अनुसार चलाया जा रहा था। शिक्षा नीति एवं पद्धति तब केवल मात्र अंग्रेज शासको के द्वारा अपनी योजना के अनुसार दी जा रही थी। ऐसे विकराल काल की महान् चुनौती बनकर खड़े हुए महात्मा हंसराज। महर्षि दयानन्द के इस धीर वीर शिष्य मे सेवा दया और त्याग का भी महान् गुण था। अगर मैं यह कहूं कि सेवा और त्याग का वह देवता था तो अतिशयोक्ति न होगी।

महर्षि दयानन्द के मिशन के लिए जहां उन्होने अपना जीवन दान दिया, साथ ही अकाल पीड़ित जनता के लिए उनका सेवा कार्य एक देवत्व-पूर्ण कार्य था। उन्होंने १८९५ से १९२१ तक बीकानेर, राजपूताना, सूरत, मध्यप्रदेश बड़ौदा, अवध गढ़वाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ पंजाब आदि के भयंकर अकाल में तथा कांगड़ा के भूकम्प के महाविनाश के समय उनके द्वारा किया गया सेवा कार्य तथा राहत कार्य उस महात्मा के मानवता के चरमोत्कर्ष का परिचालक है। युग-युगो तक मानव मात्रा के लिए महात्मा हंसराज का पवित्र जीवन दिशा प्रदान करता रहेगा। सचमुच आज उस महान् नाविक की स्मृति रूप लहरे रह-रहकर उनके प्रति अगाध श्रद्धा जगा रही हैं—

लहरो से लड लडकर पतवार हाथ मे थामे।
जो वक्ष चीर सागर का उस तूफानी बेला मे॥
जब झंझा के झोंके थे उन्माद भरा था सागर।
मुंह फाडे तकते थे जब लहरो के भूखे अजगर॥
जिसके अदम्य साहस ने डर कर मुंह जरा न मोड़ा।
जिसने अपनी नौका का पल भर भी साथ न छोड़ा॥
उस नाविक को तकती हैं, मेरी यह आज निगाहें।
"ओ" अन्त स्थल से बरबस निकली पड़ती हैं आहें॥

—यशपाल सुधांशु

जीवन यज्ञ है : श्रेष्ठ कार्यों के लिए है

सुरेशचन्द्र वेदालंकार

यज्ञस्य शिवे सतिष्ठस्व । यजुर्वेद २।१९

श्रय यज्ञो भुवनस्य नाभि । ऋक् १।१६४।३५

मनिश्च मे सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् । यजु० १८।११

★

सत्संग वाटिका

(यज्ञस्य) जीवन यज्ञ के (शिवे) शुभ अनुष्ठान में सुसम्पन्न में (सतिष्ठस्व) सुस्थित हो जा लग जा ।

सम्पूर्ण ससार की नाभि यह यज्ञ है ।
मेरी मति और सुमति यज्ञ से सामर्थ्य शाली होवे ।

(यज्ञ शब्द यज धातु से बना है । यज का अर्थ है देव पूजा सगतिकरण और दान । इन मन्तव्यों का एक वाक्य में कहना हो तो यज्ञ का अर्थ है श्रेष्ठ तम या प्रशस्ततम कर्म । सब से श्रेष्ठ, सबसे प्रशस्त या सर्वोपयोगी जो कर्म होता है, वही प्रशस्ततम कर्म कहलाता है । जिस कर्म से श्रेष्ठों का सम्मान सबके साथ अभिन्नता और परोपकार होता है वह प्रशस्ततम कर्म है । इस प्रकार के कर्मों मे अपने आपको समर्पित करने से अपना मन शक्तिशाली और समर्थ होता है । तात्पर्य यह है कि अपने आप को ऐसे कर्मों मे लगाना चाहिए जिससे सबका हित हो सबका कल्याण हो । ऐसा करने से मन की शान्ति बढती है उसमे सामर्थ्य आता है ।

एक बार की बात है कि अपनी किशोरावस्था मे देशबन्धु चितरंजनदास ने अपने पिता से अनुरोध किया पिताजी मुझे कुछ रुपये चाहिए ।'

पिता ने कहा क्यो कल ही तो मैंने तुम्हे पाच रुपये दिये थे पिता कुछ नाराज हुए ।

देशबन्धु ने कहा 'हा पिता जी कल आपने मुझे रुपये अवश्य दिये थे पर वे सबके सब खर्च हो गये ।'

पिता ने उन्हे तीन रुपये दिये और कहा कि रुपये सभाल कर खर्च किया करो । पुत्र जब जाने लगा तो अपने एक विश्वासपात्र नौकर को बुलाकर उन्होने उस लडके के पीछे लगा दिया और कहा कि तुम चुपचाप जाओ और देखो कि वह रुपये का क्या करता है '

नौकर गया । उसने बालक को जाते हुए देखा और यह भी देखा कि रास्ते मे उसे एक लडका मिला । जो देखने मे अत्यन्त गरीब और सामान्य लग रहा था । नौकर ने लौटकर आगे की घटना का इस प्रकार वर्णन किया छोटे मालिक उस लडके के साथ किताब की एक दुकान पर गये । वहा उन्होने उस लडके को किताब खरीद कर दी फिर वे जूतो की दुकान पर गये वहा उसे चप्पल खरीद कर दी दुकान पर जाकर पता लगाया तो मालूम पडा कि वे सभी पुस्तकें कक्षा मे पढाई जाने वाली पुस्तकें थी ।' नौकर से सब सुनकर पिता की आखो मे प्रेम के आंसू आ गये और पुत्र के घर आने पर उन्होने उसे छाती से लगाकर कहा, बेटा ! जीवन मे गरीबो की सहायता इसी तरह करते रहना । यही सच्चा धर्म है ।" पिता की इसी शिक्षा का पालन करते हुए बालक चितरंजनदास देशबन्धु चितरंजनदास के नाम से भारतीय इतिहास में अमर हैं । सहायता के अभिलाषी दीनो, दुखियो की सेवा दीनबन्धु परमेश्वर की भक्ति है । यही यज्ञ है ।

लोकमान्य तिलक के जीवन की एक घटना है । कक्षा मे शिक्षक छात्रो को इतिहास लिखवा रहे थे । छात्र लिख तो रहे थे पर उनका मन बाहर लगा था । एक छात्र बैठा पाठ सुन रहा था लिख नही रहा था । उसके पास न तो कापी थी और न कलम । उसे इस प्रकार बैठा देख कर शिक्षक को क्रोध आ गया और वे बोले बलवन्त यह क्या ? पाठ क्यो नहीं लिख रहे ? गुरु जी आपने जो कुछ भी बताया है मुझे अक्षरश याद हो गया है । फिर क्यो लिखू ?"

शिक्षक क्रुद्ध हुए और बोले 'तो फिर सुनायेगा यदि न सुना पाये तो बेंतो से चमडी उधेड दूंगा । बलवंत ने सारा पाठ सुना दिया ।

एक दिन इन्ही शिक्षक ने कक्षा के फर्श पर मूंगफली के छिलके फर्श पर पडे हुए देख कर क्रोध मे आकर छडी लेकर लडको को पीटना शुरू कर दिया । जब वे बलवंत के पास आये तो उसने कहा 'गुरु जी जब मैंने गलती नही की तब मैं सजा क्यो भुगतू ?' उसकी इस निर्भयता से प्रभावित हुए और उसे दण्ड नही दिया । सत्य और निर्भीकता भी एक यज्ञ ही है । यही बलवंत आगे चलकर लोक मान्य तिलक के नाम से प्रसिद्ध हुए और स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है का ओजपूर्ण नारा देश को दिया ।

स्वामी दयानन्द एक बार जोधपुर जाने लगे तो लोगों ने वहां जाने से रोकना चाहा और कहा कि वहां न जाइये वह गवार देश है वहां के लोग शरारती हैं परन्तु स्वामी जी ने [illegible] अंगुलियो को बत्ती बनाकर जला दें तो भी परवाह नही हम जनता को सच्चा मार्ग बताकर रहेंगे । यदि यह शरीर न भी रहा तो भी चिन्ता नही । "जब स्वामी जी को वहा जाने को तत्पर देखा तो एक भक्त बोला महाराज ! वहां जरा नरमी बरतना वह क्रूर देश है । स्वामी जी मुस्कराये और बोले "मैं असत्य और अधर्म के जगली वृक्षो की जड को काटने के लिये कुल्हाडी से काम लूंगा, न कि नाखूनो की नेहरनी से तराशूंगा । मुझे किसी बात का भय नही है । यह है प्रशस्ततम मार्ग जिस पर यज्ञीय पुरुष चला करते हैं ।

ससार मे नया काम करने के लिए सुधार करने के लिये या क्रान्ति करने के लिए जीवन को यज्ञमय बनाना होता है । ससार मे एक यज्ञ हो रहा है । सूर्य वायु चन्द्र पृथ्वी और आकाश यज्ञ कर रहे हैं । देखते नहीं दीपक की बत्ती अपने को जलाकर भस्म कर देती है और भटकों को मार्ग दिखला जाती है । क्या देखते हो बीज अपने को मिट्टी में मिला देता है और अपने स्थान पर अनेकों को जन्म दे देता है । ग्रीष्म ऋतु मे जब पृथ्वी तवे की तरह गर्म होकर तप रही होती तब यही पानी की नन्ही नन्ही बूंदें एक के बाद दूसरी आत्म बलिदान कर पृथ्वी को शीतल कर देती हैं । यह सब यज्ञ ही तो है । सूर्य को देखा है न ? वह सारे ससार का दुख दूर करता है । परन्तु यदि हम उससे कहें सूर्य देव ! आपका हम पर कितना उपकार है कि आपने ससार का अंधेरा दूर कर दिया है तो सूर्य कहेगा मैंने कहां से अंधेरा दूर किया है ? लाओ मुझे थोडा सा दिखाओ तो ? मैंने तो अंधेरा देखा ही नही है तो दूर कहां से करूगा ? मैं तो केवल प्रकाश करना ही जानता हू । रात दिन जलते रहना ही मुझे ज्ञात है । सूर्य ने अपने जीवन का यज्ञ कुण्ड सतत प्रदीप्त किया है । यही कारण है कि उसकी गर्मी से प्राणि मात्र जीवित रहते हैं फूल फल उत्पन्न होते हैं वनस्पतियाँ बढ़ती हैं । सारे संसार का कार्य चल रहा है इसी लिए तो सूर्य जगत् की आत्मा है । 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।'

महात्मा बुद्ध, शंकर, स्वामी दयानन्द स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हंसराज का जीवन यज्ञ है । यज्ञ ही जीवन है । हमें यज्ञ की सत्कर्म की आदत डालनी चाहिए । सूर्य जलना जानता है । बादल बरसना जानते हैं । हवा बहना जानती है । सन्त दुखियो के आंसू पोछना जानते हैं । जीवन मे सत्कर्म मुख्य वस्तु है । जिन्होंने सत्कर्म करना निश्चित कर लिया वे जीवन मे प्रकाश दे जाते हैं ।

श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का नाम सज्जनता एव दयालुता के लिए सारे भारत मे जाना पहचाना है । उनकी शिक्षा दीक्षा उनकी ख्याति उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा व धन सम्पत्ति आदि सब उनके जीवन मे भिन्न भिन्न मार्गों से आये परन्तु उनके चरित्र की पूर्णता उनकी माता की देन थी । उनकी माता का नाम भगवती देवी था । एक सध्या को भगवती देवी घर के काम मे जुटी थी । पडोस के एक गांव से गरीब स्त्री छाती से अपने छोटे से बच्चे को चिपकाए हुए आयी । वह और उसका बच्चा दोनो सर्दी से काप रहे थे । बर्फीली हवा चल रही थी । उसने भगवती देवी से कहा माताजी अगर कोई फटा पुराना कपडा पडा हो तो दे दो बहुत ठंड पड रही है । बच्चे को ढांप लूंगी । भगवती देवी का हृदय पसीज गया वे घर में गई और अपने बिस्तरे मे से ही एक नई रजाई लाकर बोलीं लो यह फटे पुराने कपडे से अधिक गर्म रहेगी, भगवती देवी के पास केवल वही रजाई थी । उन्होंने अपने कष्ट की जरा भी परवाह न की यह सोचकर कि अभी उस मा और बच्चे को भी तो जाड़े से बचने के लिये कुछ चाहिए था । इसी माता के पुत्र थे ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जिनके यज्ञमय जीवन की कहानिया जहाँ तहाँ सुनाई देती हैं । और जिनको जन्म देकर भारत माता गौरवान्वित हुई है ।

माईकेल मधुसूदन दत्त बगाल के साहित्यिको में बहुत प्रसिद्ध है । वे जितने प्रतिभावान् थे उतने ही उदार भी । ऐसे ही एक अन्य बगाली लेखक थे राजकृष्ण, राजाराय के विषय मे कहा जाता है कि वे कवि थे नाटककार थे, अनुवादक थे, निबन्धकार थे । मतलब यह कि साहित्य के सभी अंगो मे उनकी पहुच थी । कहा जाता है कि एक नाटक मे उन्होने अपनी सारी सम्पत्ति लगा दी । वह असफल हो गया और उनके भूखे मरने के दिन आ गये । वे एक प्रकाशक के पास गये । वह उन्हें रुपये देने को राजी हो गया । उन्होंने रुपया लेकर उसे अभी धन्यवाद भी नहीं नहीं दिया था कि एक सज्जन वहीं उनके पास आ गये । उन्होने कहा कि उनकी पत्नी गांव मे बीमार पडी है और [illegible] [illegible] से [illegible] है । वह उनके पास जाना

(शेष पृष्ठ [illegible] पर)

तनिक और रुक जाते !

डोल रहा था निकट किनारा मिटता जाता था था अंधियारा।
चमक रहा था भाग्य सितारा क्षण भर झपकी पलकें और तुम
छोड़ गए सब नाते ऋषिवर ! तनिक और रुक जाते !
तुम हम को वरदान मिले थे मानव को अभिमान मिले
भारत को भगवान मिले थे मानवता पूजित होता यदि
हम तुम को अपनाते स्वामी तनिक और रुक जाते।
तुमको खोकर जग रोता है पर रोने से अब क्या होना है
जो सोना है वो ही होता है खोई मानवता को जीवन भर,
तुम तो रहे जगाते स्वामी तनिक और रुक जाते।
जग भर को था आर्य बनाना वेद का पावन गीत सुनाना
धर्म ध्वजा को फहराना अंधकार मिट जाता यदि तुम
और अधिक रुक जाते स्वामी तनिक और रुक जाते।

सोमदत्त विद्यालंकार
एच ३११ नया रोड राजेन्द्र नगर दिल्ली ६०

जीवन यज्ञ है

(पृष्ठ २ का शेष)

चाहते हैं पर यात्रा के लिए पैसे नहीं।

इस पर राय बाबू का हाथ तुरन्त जेब में गया और सब धन उनको दे दिया उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि इसी धन से वे अपनी आज की अनिवार्य आवश्यकता पूरी करने वाले थे उस व्यक्ति ने उन्हें धन्यवाद दिया पर वह क्या जानता था कि राय बाबू ने कितना बड़ा त्याग किया है।

यज्ञीय भावना जय या पराजय सिद्धि या असिद्धि यश या अपयश सुख या दुख की ओर ध्यान नहीं देनी। समुद्र में ज्वार आता है और भाटा भी लेकिन उसकी धीर गम्भीर गर्जना कभी नहीं रुकती। यज्ञीय व्यक्ति विजय से उन्मत्त और पराजय से निराश नहीं होता। यज्ञ करने वाले को चाहे फांसी मिले या फूल की माला चाहे यश मिले या अपयश वह तो प्रशस्त कर्म की ओर ही बढ़ता है। है। जीवन में विजय के नगाड़े मत बजाओ और पराजय का रोना मत रोओ। यज्ञ ही महान् धर्म है।

महात्मा हंसराज

(पृष्ठ ५ का शेष)

कर सके।

हरिद्वार मोहन आश्रम में रहने के कारण महात्मा जी का पेट स्थायी रूप से खराब हो गया और यही उनकी मृत्यु का मूल कारण बना। हरिद्वार से लौटने पर महात्मा हंसराज जी सोलन गए। वहां की जलवायु से उनका स्वास्थ्य तो सुधर गया किन्तु पेट का रोग ठीक नहीं हुआ। सितम्बर मास में लाहौर आ गए और कुछ दिन ठीक चलता रहा। परन्तु २५ अक्तूबर १९३८ को उनके पेट में उस समय असह्य दर्द महसूस हुआ और शाम तक तेज बुखार भी हो गया। डा० विश्वनाथ का इलाज शुरू हुआ। हालत चिन्ताजनक होते हुए भी आरोग्य लाभ की सम्भावना व्यक्त की गई।

सारा आर्य जगत् महात्मा जी की बीमारी से चिन्तित हो उठा। हजारों की संख्या में तार पत्र आदि से पूछताछ होती रही। ५ नवम्बर को कुछ हालत सुधरी थी और उन्होंने बातचीत भी की परन्तु ९ नवम्बर को हालत फिर खराब हो गई। पेट की पीड़ा अत्यन्त कष्टदायक हो गई और नब्ज भी अनियमित हो गई। सांस भी उखड़ने लगा १५ नवम्बर के दिन स्वास्थ्य और भी बिगड़ गया। महात्मा जी के सभी सम्बन्धी वहां उपस्थित हो गए रात के ग्यारह बजे उन्होंने अन्तिम सांस लिया।

१६ नवम्बर १९३८ की वह अभागी रात्रि थी जिस में महात्मा जी ने अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।

महात्मा हंसराज जी का देहान्त हो गया मगर एक सन्देश देकर कि वैदिक धर्म का प्रचार त्याग और तपस्या तथा बलिदानों से हो सकता है। यही बात उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन से सिद्ध की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन. ३१०१५० के लिए श्री डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न० १०, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी० (सी०) ७५६

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वर्ष ९ अक २३ | रविवार २८ अप्रैल १९८५ | आर्य सवत्सर १९६०८५३०८५ | वैशाख २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१

महात्मा हंसराज महान् शिक्षाशास्त्री थे

–के० सी० पन्त

महात्मा हसराज ने वैदिक सिद्धांतों के अनुरूप मानव मूल्यो को स्थापित करने वाली शिक्षा पद्धति को अपनाकर देश के शिक्षा जगत् मे एक अभूतपूर्व क्रान्ति का सिंहनाद किया था। इन शब्दो मे आर्य प्रादेशिक सभा द्वारा तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम नई दिल्ली मे आयोजित महात्मा हसराज जन्म दिवस समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा, यदि महात्मा हसराज ने अपना जीवन शिक्षा के लिए समर्पित न किया होता तो भारत देश में आज की अपेक्षा कही अधिक मैकाले के मानसपुत्र होते और इनके प्रभाव को समाप्त करना असम्भव हो गया होता।

आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान प्रो० वेदव्यास ने महात्मा हसराज के पूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया। उन्होने डी०ए०वी० सस्थाओं के इतिहास तथा भावी योजनाओं के स्वरूप पर भी प्रकाश डाला। उन्होने बताया आगामी वर्षो मे डी०ए०वी० शताब्दी के अवसर पर हम केवल भारत में ही नही बल्कि विदेशो मे भी आर्यसमाज के सन्देश भेजने के लिए डी०ए०वी० सस्थाओ को चारो ओर फैलाने का सकल्प लेते हैं। इस अवसर पर डा० भक्तराम पाराशर द्वारा लिखित महात्मा हसराज पुस्तिका का भी विमोचन किया गया। प० शिवकुमार शास्त्री तथा प्रि० कृष्णसिंह आर्य ने भी अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। इस अवसर पर डी०ए०वी० आदोलन के महत्त्व के अनुरूप कार्य करने वाले अध्यापको एव कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित किया गया। ●●

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री को ज्ञापन पत्र दिया

आर्यसमाज का एक प्रतिनिधि मण्डल केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्री के० सी० पन्त से उनके शास्त्री भवन कार्यालय मे मिला और उन्हें पजाब समस्या के सम्बन्ध मे आर्यजनो की भावनाओ से अवगत कराया। आर्यसमाज एक राष्ट्रीय सस्था है तथा राष्ट्र के हितो के कार्य करने के लिए पूर्णत समर्पित है। श्री पन्त ने ला० रामगोपाल शालवाले से कुछ दिन पहले हुई बातचीत का सन्दर्भ देते हुए कहा कि पजाब समस्या का समाधान करते समय अन्य सभी धर्मावलम्बियों की भावनाओ का पूर्णत ध्यान रखा जाएगा।

प्रतिनिधि मडल मे आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महा-महामन्त्री डा० धर्मपाल, महाशय चुन्नीलाल ट्रस्ट के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश आर्य, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के महामन्त्री श्री रामसरणदास आर्य और आर्यसन्देश के प्रतिनिधि श्री सुरेन्द्रकुमार हिन्दी थे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव की ओर से एक ज्ञापन पत्र श्री माननीय शिक्षामन्त्री महोदय को दिया गया। इस ज्ञापन में माग की गयी कि—

(१) भारतीय इतिहास की पुस्तको मे आर्यों को विदेशी आक्रान्ता होने के सन्दर्भ को पूर्णत निकाल देना चाहिए। क्योकि इससे राष्ट्रीय एकता की भावना को ठेस पहुचती है।

(२) सस्कृत भाषा को पाठ्य क्रम मे समुचित और प्रतिष्ठा पूर्ण स्थान दिया जाये।

(३) स्कूली शिक्षा मातृ भाषा मे और विश्वविद्यालयी शिक्षा राष्ट्र भाषा हिन्दी मे दी जाए।

(४) केन्द्रीय विद्यालयो के पाठ्यक्रमों पर आधारित स्कूल अधिक से अधिक खोले जायें और पब्लिक स्कूलों पर प्रतिबन्ध लगाया जाये।

(५) धार्मिक शिक्षा का पूर्ण प्रावधान किया जावे।

(६) अल्पसख्यक समुदाय द्वारा चलाये जा रहे विद्यालयो को मिलने वाली सुविधा सभी को दी जावे।

डा० धर्मपाल ने ज्ञापनपत्र की उन पक्तियो को शिक्षामन्त्री महोदय को पढकर सुनाया जो श्रीमती इन्दिरा गाधी के एक भाषण से उद्धृत की गई हैं तथा जिनमे धार्मिक शिक्षा को आवश्यक बताया गया है। शिक्षामन्त्री ने इन विचारो से सहमति प्रकट की और आश्वासन दिया कि वे इस दिशा मे ठोस कदम उठायेंगे।

महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट राष्ट्रीय विचारधारा के अनुरूप स्कूल और कालेज खोलने के लिए सहर्ष प्रस्तुत है। □□

वह भी क्या जीवन है ?

जिस मे उत्साह उमग नही वह भी क्या कोई जीवन है ?

जो भरा हुआ है रोगो से जर्जर है भौतिक भोगो से
जिसमे न कर्म की शक्ति शेष तप तेज साधना का न लेश
अति शिथिल क्षीण निर्बल तन है वह भी क्या कोई जीवन है ?

जिसमे शुचिता सदभाव नही अनुराग त्याग सुप्रभाव नही
जिसको माया मद-मत्सर है अति दीन हीन पर-निर्भर है
दुर्भाव दम्भदूषित मन है, वह भी क्या कोई जीवन है ?

जिस से होता निज भोग नही परहित में भी उपयोग नही
जो क्रूर कर्म का साधक है, प्रभुता प्रमाद आराधक है
एकत्र किया कुत्सित धन है वह भी क्या कोई जीवन है ?

जिसके तन मन धन शुद्ध नही, जो स्वस्थ पवित्र प्रबुद्ध नहीं,
जो स्वार्थ-स्वाति का चातक है मानवता का अघ पातक है,
पशुता का प्रबल प्रदर्शक है वह भी क्या कोई जीवन है ?

[illegible] 'सुधांशु' एम० ए० | [illegible]—डा० [illegible] | प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

सत्संग वाटिका

सत्य असत्य विवेचन एक कठिन समस्या

सत्य क्या है ?

सोमदत्त विद्यालंकार

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत ।
अत्रा सखाय सख्यानि जानते भद्रैषा लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि ।
ऋ० १०।७१।२

अर्थात् जिस प्रकार छलनी से सत्तू छाने जाते है उसी प्रकार जहा विद्वान् लोग अपनी वाणी को मन से शुद्ध करके बोलते हैं वहा पर लक्ष्मी और मित्रता रहती है

वैदिक धर्म मे सत्य की बहुत ही महिमा है। कहा गया है कि नास्ति सत्यात्परो धर्म नानृतात्पातक परम् ।

इसी प्रकार यजुर्वेद १ । ५ मे भक्त प्रभु से प्रार्थना करता है— अग्ने व्रतपते व्रत चरिष्यामि तच्छकेय तन्मे राध्यताम् । इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि । अर्थात् हे परमेश्वर मैं प्रतिज्ञा करता हू कि अपनी शक्ति भर सत्य का पालन करूगा। अत मैं इस असत्य से निकलकर सत्य मार्ग का अवलम्बन करता हू। इसी प्रकार ऋ० ७।१०४।१२ मे एक मन्त्र आया है—

सुविज्ञान चिकितुषे जनाय सच्चा सच्च वचसी पस्पृधाते । तयोर्यत्सत्य यतरद् ऋजीयस्तदित्सोमो ऽ वति सन्त्या सत् अर्थात् मनुष्य की सुविधा के लिए सत्य और असत्य के विज्ञान को एक दूसरे के विरुद्ध कहा गया है। इन दोनो मे जो सत्य है वह सरल और सीधे स्वभाव से कहा जाता है तथा उससे कोमलता आती है। पर जो असत्य है वह तो हर प्रकार से सत्यानाश ही कर देता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इन सत्य के प्रतिपादन करने वाले मन्त्रो मे सत्य भाषण की समस्त खूबियो का बहुत सुन्दर वर्णन किया है।

परन्तु इसके विपरीत लोक व्यवहार में—असत्य या अनृत भाषण की कई मामलो में छूट दी गई है। एक स्थान पर कहा गया है कि— न नर्मयुक्त वचन हिनस्ति न स्त्रीषु राजन्नविवाहकाले प्राणात्यये सर्वधनापहारे पचानृतान्याहु रपातकानि । अर्थात् इसी मे कहा गया स्त्रियो से मखौल मे विवाह के समय ऐसा हुआ प्राण के सकट में पडने पर तथा सारी सम्पत्ति के अपहरण का भय उपस्थित होने पर इन पाच अवसरों पर बोला हुआ झूठ पाप नहा है। इसी प्रकार एक अन्य श्लोक मे सनत्कुमार कहते हैं कि—

सत्यस्य वचन श्रेय सत्यादपि हित वदेत् ।
यद्भूतहितमत्यन्तम् एतत् सत्य मत मम ॥

अर्थात् सच बोलना कल्याण कारक है पर उसकी अपेक्षा भी हित कारक बात कहना अधिक अच्छा है। जिसके बोलने से प्राणी का बहुत हित हो वही सत्य मुझे मान्य है एक अन्य स्थान पर तो उस धर्म को भी छोड देने को कहा गया है जिसका परिणाम दुख दायक हो। धर्मं धर्माचरण का परिणाम दुख दायक हो तथा जो लोक द्वारा निन्दित हो वह धर्म भी त्याज्य है।

व्यवहार मे भी हम देखते हैं कि छोटे बच्चे को मलेरिया या इस प्रकार के किसी रोग से पीडित होने पर जब उसे कुनीन जैसी कडवी दवाई खिलानी जरूरी समझी जाती है तो माता उसे कहती है— बेटा मुह खोलो दवाई बहुत मीठी है। बच्चे के हित के लिए किया हुआ यह असत्य भाषण भी क्षन्तव्य माना जाता है। ऐसे उदाहरणों मे सत्य का पालन करने की अपेक्षा हितकारक कार्य करने को प्राथमिकता दी जाती है।

पन्ना धायी ने राजकुमार के प्राण बचाने के लिए झूठ का आश्रय लेकर हत्यारे के सामने अपने बालक को राजकुमार बताकर यद्यपि झूठ बोला था तो भी सभी उसकी प्रशसा करते हैं।

इसी प्रकार की एक कथा राजपूत साहित्य में भी आती है। जूनागढ के क्षत्रिय राजा राव महीपाल देव युद्ध में धराशायी हो जाते हैं। शत्रु सेना को अन्त पुर के समीप पहुंचते देख कर राव का इकलौता पुत्र नौघण तथा राजरानी चितातुर हो गए। विश्वास पात्र मत्री को कर्तव्य की पुकार सुनाई पडती है। वह मुख्य मार्ग से बाहर निकलकर गिरनार की भयकर घाटियो को पार करके गिरि के जगल में स्थित छोटे से गाव में रानी व राजकुमार को लेकर पहुंचता है। वहा देवायत नाम का एक अहीर बालक की रक्षा का वचन देता है। मन्त्री के लौटने पर रास्ते मे शत्रु सेना से घिरने पर जब वह राजकुमार का पता नही बतलाता तो वह कत्ल कर दिया जाता है। शत्रु को किसी प्रकार रानी व राजकुमार का अहीर के पास होने का पता चल जाता है। सेना वहाँ पहुँच जाती है। अहीर राजकुमार की उपस्थिति से इन्कार कर देता है। शत्रु अहीर को बाधकर घर के कोने कोने की तलाश मे लगता है। अहीर अपनी पत्नी को बुलाकर आंख के इशारे से उसे उस का कर्तव्य समझाता है और फिर स्पष्ट शब्दों मे यह कहता है कि कुमार नौघण को यहा हाजिर करो।' चतुर अहीरनी अपने कठिन कर्तव्य को [illegible] वस्त्र अपने ११ वर्षीय लडके को पहनाकर पेश करती है। उसके चेहरे पर विषाद की कोई रेखा दिखलाई नही देती। ११ वर्षीय बालक से पूछने पर वह भी अपना नाम नौघण बतलाता है। विदेशी सेनापति उस अहीर बालक को माता-पिता तथा छोटी बहन की आंखों के सामने कत्ल कर देता है। पर किसी की आखो से आंसू की एक बूद भी नही निकलती। सभी के मुख पर शरणागत कुमार की रक्षा हो जाने से प्रसन्नता ही दिखाई देती है।

यद्यपि यह झूठ बोला गया था तो भी आज सभी अहीर की प्रशसा करते हैं। पन्नाधायी अहीर के कार्य को कौन बुरा कह सकता है। सचमुच लोक व्यवहार मे कई मौके ऐसे आ जाते हैं जहा सत्य और असत्य में क्या त्याज्य है और क्या कर्त्तव्य है इसका निर्णय करना कठिन हो जाता है।

महाभारत के युद्ध में धर्म की विजय के लिए कृष्ण द्वारा शाब्दिक सत्य के हनन के अनेक उदाहरण मिलते हैं। द्रोणाचार्य को शस्त्र परित्याग के लिए प्रेरित करने के लिए 'अश्वत्थामा हत' कहकर एक हाथी का नाम अश्वत्थामा रखना क्या असत्य नहीं था? तभी तो सत्यवादी युधिष्ठिर के मुख से अश्वत्थामा हत कहलवा कर उसके 'नरो वा कुजरो वा' कहने के समय बिगुल आदि बजवाकर उसकी नरो वा की बात दबा दी गई।

सत्यवादी की एक और कठिनाई और उसका हल —सत्य भाषण के सम्बन्ध में एक श्लोक बहुत प्रसिद्ध है जो बताता है कि सत्य किस प्रकार सोच विचार कर बोलना चाहिए। श्लोक इस प्रकार है—

सत्य ब्रूयात प्रिय ब्रूयात
न ब्रूयात्सत्यमप्रियम् ।
प्रिय च नानृत ब्रूयात्
एष धर्म सनातन ॥

अर्थात् १ सत्य बोले २ प्रिय सत्य बोले ३ अप्रिय सत्य न बोले ४ प्रिय लगने वाला झूठ भी न बोले यह सनातन धर्म बताया है।

इसमें कहा गया है कि सत्य को बोलना चाहिए पर [illegible] सत्य नहीं बोलना चाहिए। काणे को काणा कहना यद्यपि सत्य है पर वह अप्रिय होने के कारण त्याज्य है। यहां सत्य की अपेक्षा भी प्रिय वचन बोलने को अधिक अच्छा बताया गया। इसका समाधान करने के लिए उसकी शर्त यह रखी है कि प्रिय लगने वाली बात कहो पर वह झूठी नहीं होनी चाहिए।

इस कसौटी से सत्य भाषण इच्छुक प्रेमी मनुष्य के मन में बडी मुश्किल उपस्थित हो जाती है। क्या किया जाए।

एक मनोरजक कहानी इस मुश्किल का हल बताती है। एक राजा की शत्रु के साथ युद्ध करते समय बायीं आंख तीर लगने से जाती रही। और बायीं भुजा शत्रु के प्रहार से जाती रही। सुनते हैं कि राजा ने चतुर चित्रकारों को बुलाकर अपना चित्र बनाकर लाने की आज्ञा दी। एक चित्रकार सत्य ब्रूयात् के अनुसार राजा का ऐसा चित्र बनाकर लाया, जिसमें उसकी एक ही आंख थी और एक ही हाथ था। राजा ने उसे इनाम देना तो दूर रहा उसकी भर्त्सना की कि यदि शत्रु इस चित्र को देखे तो हमारे देश पर चढाई कर देगा कि यहा का राजा एक हाथ तथा एक आख वाला है। दूसरे चित्रकार को पता चला कि पहले चित्रकार की यह दुर्गति हुई है वह राजा का ऐसा चित्र बनाकर लाया जिसमें उसकी दोनों आंखें शत्रु को तरेरती हुई दिखाई तथा एक हाथ में तलवार तथा दूसरे में ढाल पकडी हुई दिखाई। राजा ने चित्र को देखा तो डांटकर कहा यह किस का चित्र है? मेरी तो एक ही आख सही सलामत है और एक ही हाथ है। उसे भी इनाम देना तो दूर रहा डाटकर भगा दिया। तीसरा चित्रकार बहुत समझदार था। वह राजा का ऐसा चित्र बनाकर लाया जो उसकी साइड पोज में था। एक आख शत्रु को क्रोध से देखती हुई थी उसकी नाक की ओट में होने से दिखाई ही नहीं देती थी। एक हाथ में तलवार थी तो दूसरा हाथ शरीर की ओट में होने से दिखाई ही न देता था। कहते हैं कि राजा ने उसी बुद्धिमान् चित्रकार को भरपूर इनाम दिया।

ऊपर बताये श्लोक के अनुसार सत्य भाषण की तीनो शर्तों को पूरा करने का ढग चतुर आदमी को सोचकर बुद्धि से निकालना चाहिए।

शका मन मे पैदा होती है कि यदि कोई भी घातक गाय का वध करने के लिए तलवार लेकर उसके पीछे भागा आ रहा हो और गाय जगल में जाकर कहीं छिप जावे तो घातक के पूछने पर यदि हम सत्यवादी बनकर गाय के छिपने का पता बतलाए तो हमें गोहत्या का पाप लगे और यदि झूठ बोल दें तो असत्य भाषण का पाप लगे। ऐसी दशा में क्या किया जाए, [illegible]

★ वचन-सन्देश ★

मनुष्य कौन है ?

मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यो के सुख दुख और हानि लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नही किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओ—कि चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुणरहित क्यो न हो—उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और (अधर्मी) चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान् और गुणवान् भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहा तक हो सके वहा तक अन्यायकारियो के बल की हानि और न्यायकारियो के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम मे चाहे उसको कितना हो दारुण दुख प्राप्त हो चाहे प्राण भी भले ही जाव परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।

—महर्षि दयानन्द

सम्पादकीय

पंजाब समस्या फिर खतरनाक मोड़ पर

अकालियो की लगभग सभी धार्मिक माग मानी जा चुकी हैं जत्थेदार टोहरा ने भी इसकी स्वीकारोक्ति की है। अकाली नेताओ की रिहाई, आलइण्डिया सिख स्टूडेण्ट फडरेशन मे प्रतिबन्ध हटाना, अकालियो की मागो के सामने सरकार का झुकना, आदि कदम आशा निराशा की विचित्र चित्र को प्रकट कर रहे हैं। देश की अखण्डता को चुनौती देने वाले उग्रवादी विदेशी इशारो पर चल रहे है। उनकी मंजिल है अशान्ति, कहर, खून खराबा देश की अखण्डता और एकता को चोथड–चोथड कर देना। विगत वर्षों मे हमारा देश विकास के माग पर जिस प्रकार से आगे बढ रहा है उसको एक शक्ति के रूप मे देखना अनेक महाशक्तियो को अच्छा नही लग रहा। अनेक विदेशी गुप्तचर एजेन्सी भारत मे अपने खूनी पजे जमाने मे सलग्न हैं। उनके सकता पर अनेक आधिया इस देश को देखनी पड रही है। सरकार को ऐसे अनेक सबूत मिले हैं, जासूसी मे पकडे लोगो से अनेक रहस्य उजागर हुए है। पाकिस्तान मे प्रशिक्षण पा रहे उग्रवादी भारत मे प्रविष्ट होकर योजनाबद्ध ढग से हत्या काण्ड कर जाते हैं। सरकार जब भी शान्ति और भाईचारे के लिए अपना पग बढाती है। अकालियो का समझौते की दिशा मे लाने के लिए सफल होती दिखायी पडती है, तभी एकाएक नेपथ्य से विस्फोट की भयकर गजना हो जाती हैं।

पजाब समस्या के लम्बे होते जाने से उग्रवादियो के हाथ भी मजबूत होते जा रहे है। पजाब इन्दिरा काग्रस के महासचिव श्री रघुनन्दन लाल भाटिया पर किया गया हमला, पजाब के अन्य अनेक स्थानो पर गोला बर्षा और सामूहिक नरसहार आदि घटनाओ से उग्रवादियो क फिर सक्रिय हो जाने के प्रबल प्रमाण हैं।

दूसरी ओर अकाली नेताओ के तीखे वक्तव्य और भडकाने वाले भाषण उग्रवादियो की मदद जसे ही है। श्री टोहरा का यह कहना हम सरकार से वार्ता तभी करगे जब सिखो की सम्पूर्ण माग मान ली जायगी। इन्दिरा गाधी के हत्यारे को शहीद कहना उनके विषाक्त मस्तिष्क का परिचायक है। तथाकथित नरमपन्थी श्री लोगोवाल भिण्डरावाले के गाव जाकर उनके परिवार से मिले। उनसे सहयोग मागा और यह घोषणा की थी कि भिडरावाले से उनके कोई मतभेद नही थे बल्कि दोनो का लक्ष्य एक ही था। उन्होने इन्दिरा गाधी के हत्यारे को शहीद भी बताया और उनक रिश्तेदारो को सम्मानित भी किया। राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह को सिखो का शत्रु नम्बर एक और प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी को शत्रु नम्बर दो भी उन्होने करार दिया है। ऐसे वातावरण मे केवल सरकार का नम्र पडना कायरता का परिचायक है।

उग्रवादियो की तलाश सरकार ने जो स्वर्ण मन्दिर की सरायो मे छापा डाला और तलाशी ली एव कई खतरनाक उग्रवादियो को बन्दूक हथगोलों और पिस्तौलो के साथ गिरफ्तार किया है। इससे जाहिर है अभी भी ये धार्मिक स्थल उग्रवादियों के अड्डे बने हुए हैं। सरकार को चाहिए देश के किसी भी सन्देहास्पद धार्मिक स्थलों में छापे डालकर तलाशिया ल। किसी भी असामाजिक उग्रवादी तत्त्व क पकडे जाने पर कठोर सजा दे। तथा विशेष अभियान चलाकर उग्रवादी तत्त्वो को सख्ती से कुचल दे।

—यशपाल सुधांशु

सम्पादक के नाम पत्र—

धर्मपरिवर्तन का कुचक्र

विगत कुछ वर्षों से हमारे देश मे हरिजनो गिरिजनों पिछडे क्षेत्रो के भोले-भाले लोगो के धर्मान्तरण का अत्यधिक घृणित अभियान चलाया जा रहा है। एक समय था जब आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व सारी धरती पर हिन्दुत्व की विचार धारा का प्रभुत्व छाया हुआ था। जब यवनो ने भारत को पदाक्रान्त किया तब तलवार के बल पर इस्लाम के प्रचार का दुर्भाग्यपूर्ण अभियान चलाया गया था। अग्रेजो का भारत पर आधिपत्य हो जाने के उपरात पादरियो ने सेवा भाव के माध्यम से हिन्दुओ को ईसाइयत मे दीक्षित करना प्रारम्भ किया। ईसाइयो के चगुल मे कुछ सीधे-साधे लोग जो जगलो पहाडो पर रहते थे फसे। देश मे मौलिक अधिकार प्रत्येक नागरिक को मिला। आजादी के बाद सरकार की तुष्टीकरण नीति के अन्तगत विभिन्न प्रकार की अराष्ट्रीय कायवाहियो को बढावा मिला। इसी सदभ मे विगत वर्षो मे तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम व रामनाथपुरम गावो के हरिजनो का और अब उ० प्र० के बहराइच जिले मे लगभग सात सौ नटो का धर्मपरिवर्तन पेट्रोडालर के बल पर किया गया। लोभ धन भ्रम विस्तार के आधार पर धर्म परिवतन कराना भारतीय सविधान के प्रतिकूल है। धर्मान्तरण के इस अराष्ट्रीय काय मे विभिन्न प्रकार की सस्थाए सलग्न है जिन्हें अरब देशो से अकूत धन मिल रहा है। धर्मान्तरण अराष्ट्रीय इसलिए भी है क्योंकि धर्मान्तरित व्यक्ति की निष्ठा अपने राष्ट्र राष्ट्रीय सस्कृति राष्ट्रीविचारधारा के प्रतिकूल होकर पर बोन्मुखी हो जाती है यदि इस अवैध असवैधानिक धर्मान्तरण पर अविलम्ब कठोरता से रोक न लगाई गई, तो भविष्य मे इसके भयकर परिणाम राष्ट्र को भोगने पडेंगे।

—राधेश्याम आर्य

हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति समाचार १५ ४ ८५ समाचार पत्रो मे बहराईच उत्तर प्रदेश मे हिन्दू नटो के सामूहिक धम परिवतन का समाचार सुनकर पढकर हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति के महामन्त्री स्वामी सेवानन्द जी इस इलाके मे जो नेपाल के साथ साथ लगता है हालात जानने के लिए पहुचे जाने पर पता लगा कि यह हिन्दू नटो का सामुहिक इस्लाम मे धम परिवतन कोई आर्थिक तगी व सामाजिक तिरस्कार के कारण सम्भव नही है इसके पीछे पेट्रोडालर और विदेशी षडयन्त्र काम कर रहा है और यह षडयन्त्र १९८१ से चल रहा है और इसी कारण समय समय पर धम परिवतन होता रहा। जिस ओर किसी का विशेष ध्यान नही पहुचा बगला देश की सीमा से लेकर नैपाल की सीमा के साथ साथ बस्ती गोडा और बहराईच आदि जिलो मे धम परिवतन करवाकर मुस्लिम बेल्ट बनाये जाने का षडयन्त्र चल रहा है। इस काम मे अन्य मुस्लिम सगठनों के साथ साथ मिल्ली इमदादी सोसाइटी का बडा हाथ है, जिनके पास करोडो की सम्पत्ति है जिसका धर्म परिवतन मे प्रयोग होता है स्वामी जी ने नटो को समझाया है। वह वीर शिवाजी के वशज हैं वह लोभ या अन्य आकषण से धर्म परिवर्तन कैसे कर सकते हैं। उन्होंने तो हिन्दू धम की रक्षार्थ बडे कष्ट सहे हैं। जिसका उन लोगों पर अच्छा प्रभाव पड रहा है और पुन हिन्दू धम मे लौट रहे हैं। अन्य समिति के सदस्य वहा जायेंगे। स्वामी जी सामान्य स्थिति हो जाने तक वहीं ठहरेंगे।

—ओमप्रकाश प्रधान समिति

तरुणमञ्च

आशा

यशपाल सुधांशु

जीवन आशा और विश्वास का नाम है। जीवन को अगर एक नदिया कहा जाये तो आशा और निराशा दो किनारे हैं। व्यक्ति कभी निराश हताश हो जाता है कभी आशा उत्साह से युक्त। हरी हरी पत्तियों और तीखे शूलों के बीच मुस्काती मदमाती कलियों के होठों पर कल पूर्ण सुमन बनने की आशा होती है। कमल की कोमल पंखुड़ियों में बन्द भौंरे को कल तक जाने का स्वर्णिम अवसर का सहारा आशा ने ही तो दिया है। बसन्त के गीत गाती कोयल के स्वर में जो न श्र र आशा की मधुर तानें भरी हुई हैं लहलहाती प्रकृति के हरित पट म आशा क हरा रग भरा है। ऊंची सुदूर उड़ान के पथिक पक्षियों म जो मस्ती दिखाई पड़ती है उसमे आशा ही बलवती है। निराशा जीवन का बन्धन है दुख है एक जंजीर है।

हम लोगो मे से अधिकाश तो ऐसे हैं जो सांस लेने वाले मुर्दे है। क्योंकि उनमे कोई आशा नही कोई आकांक्षा नही। जीवन वास्तव म एक गति है लाश प्रतीक है जड़ता की गतिहीनता की। जीवन प्रतीक है जागरण का प्रगति का। हमारा अस्तित्व य शरीर नही है। हमारा अस्तित्व हमारी आत्मा है। मैं आत्मा हू इन्द्र हू हम सब इन्द्र हैं। हमारी हस्ती मे सिमटे हैं जीवन के कार्य कलाप उदात्त भावनाए और अपनी परिस्थितियो से ऊपर उठने की कामना। आप इन्द्र हैं राजा हैं अमर आत्मन् हैं तो क्या मौत तुम्हें मार देगी ? परिस्थितिया तुम्हे गला देंगी ? जला देंगी ? डुबा देंगी ? नही बिल्कुल नहीं। जिसने यह विश्वास कर लिया मैं इन्द्र हू किसी से पराजित नही हो सकता उसे यह आत्मविश्वास ही जितायगा।

आप शंकर बनना चाहेगे और अपनी वासनाओं पर विजय प्राप्त करना नही चाहेंगे ? आप दयानन्द बनना चाहेंगे और सत्य के सामने कष्ट भोगने मे आपकी रूह कांप उठगी आप गांधी बनना चाहेगे और सत्य के प्रति आग्रह करने मे झुक जाना पसन्द करगे। मेरे मित्र! जिसमे जीवन की शक्ति अधिक है उस पर बीमारी के कीटाणु भी असर नही करते। जिसमे जीवन की शक्ति अधिक है वह अपनी कमजोरी पर विजय प्राप्त कर लेगा। जिसकी जिन्दगी कमजोर है उस बीमारी खा जायगी। उसका अस्तित्व आंधी मे पड़े पीले पत्त की तरह है जिसे बहाकर परिस्थितिया जहा चाहे ले जा सकती हैं। शक्तिहीन दुर्बल निराशावान् कभी एकनिष्ठ नही हो सकता और न ही वह स्थिर रह सकता है। कभी उसे दुष्ट और उद्दण्ड शक्तिया अपनी ओर खींचेंगी तो कभी वह वैभव की ओर आकर्षित होगा। इसी खींचातानी में उसका अस्तित्व बिखर जायेगा। आशा और स्वप्न मे यही अन्तर है स्वप्न का कोई आधार नही होता और आशा का आधार होता है। आशा विश्वास को जन्म देती है। विश्वास बल के भरोसे पर ही टिका है। निराश का दृष्टिकोण शक्तिहीनता और अस्वस्थता का द्योतक है। जवानी आशा को जन्म देती है क्योंकि उसमें शक्ति है। बुढ़ापा नैराश्य को जन्म देता है क्योंकि उसमे अपने ऊपर भरोसा नही। शक्ति हीन टूटे खण्डहरो मे ही निराशा की खाक उड़ा करती है। वहा सदा मौत की उदास और काली छाया ही मंडराया करती है। निराशा के बवण्डर मे सबल स्थिर पांव भी लड़खड़ाने लगते हैं। पहाड़ो से टक्कर लेने के लिए मचलने वाले दिल भी थक कर बैठ जाते हैं। और जवानी सफेद झण्डे दिखाकर निराशा के आगे घुटने टेक देती है।

आज हर क्षेत्र मे निराशा के भयावह घनघोर बादल छाये हुए । सारा वातावरण आतंक के पंजे में समाया हुआ है। राष्ट्र की सीमाओं की ओर काली छाया बढ़ती आ रही है। अपने ही घर के अन्दर ज्वालामुखी फूट रहे हैं। रक्षक और शासक जनता जनार्दन का विश्वास खो बैठे हैं। हर तरफ से हैवानियत की गंदी चीखें सुनाई पड़ रही हैं। चरित्र का बलात्कार किया गया है। ईमानदारी मुंह छुपाये बैठी है। देशभक्तों और प्रहरियों का उत्साह खो गया है। निराशा की गहरी रात्रि जवान होती जा रही है। तो क्या सूरज अब नही उगेगा ? सूरज जरूर उगेगा और जब उगेगा तो अपने असंख्य तीरो से इस रात्रि रूप दैत्य का सीना चीर देगा। दूर दूर तक कही अन्धेरा नजर नहीं आयेगा।

यदि निराशा ने आपके मन मे घर कर लिया तो जान जाइये कि आपका बुढ़ापा आ गया है आपकी शक्ति आपका साथ छोड़ रही है। अगर आपको जिन्दा रहना है तो उदास अन्धेरी जिन्दगी को आशा की लाठी दिखाइये और फिर देखिये आपकी तरुणाई नृत्य कर उठगी। बिना आशा के जिन्दगी बिना तारो की वीणा जैसी है जिन्दगी के तारो को सजाइये और छेड़िए एक मीठी रागिनी जिससे वातावरण चहक उठ। आसमान के सितारे झूम उठ। सच मानिए आपका सजीव व्यक्तित्व आशा के मनोहारी संगीत पर थिरक उठेगा।

×××

भारतीय समाज के जागरण मे आर्य समाज का योगदान

लेखिका—श्रीमती प्रकाश सूद

आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व भारतीय समाज मे नाना प्रकार की कुरीतियाँ पनप चुकी थी यथा बाल विवाह स्त्री समाज को शिक्षा से वंचित रखना छुआछूत वर्ण व्यवस्था को कर्म से न मानकर जन्म से मानना हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम का अभाव मूर्ति-पूजा व अन्ध विश्वासों के मकड़जाल मे फसना व देश प्रेम का अभाव। इन उपरोक्त बुराइयो का उन्मूलन करने का श्रेय केवल आर्य समाज को ही है। आर्यसमाज ने वसुधैव कुटुम्बकम् का प्राणिमात्र को पाठ पढ़ाया और कहा— मनुभव यह कभी नही कहा कि मुसलमान बन ईसाई बन मुसलमान बन और दूसरों को पीड़ा दे परन्तु सदैव यही कहा है—मानवता सीख इससे बड़ा धर्म और क्या हो सकता है ? आर्यसमाज से पूर्व देश के नवयुवक मातृभाषा हिन्दी को अंग्रेजी की वेदी पर बलिदान कर चुके थे। हिन्दी पुस्तक या समाचार पत्र जो हिन्दी में प्रकाशित होते थे उन्हें पढ़ना फैशन के विरुद्ध समझा जाता था परन्तु स्वामी दयानन्द ने अपने जगत् प्रसिद्ध ग्रन्थो को हिन्दी मे लिखकर हिन्दी को राष्ट्र भाषा का स्थान दिया। आर्य समाज ने नारी जागरण व इसके प्रसार का भरसक प्रयत्न किया। समाज ने नारी को समानाधिकार दिलवाए। नारी के लिए शिक्षा के द्वार खोल दिए। बहुत से डी०ए० वी० विद्यालय व महाविद्यालय खुलवाए। जो लोग नारी को पांव की जूती समझते थे उन्हें बतलाया कि एक नारी के सुशिक्षित होने से पूरा परिवार सुयोग्य व शिक्षित हो सकता है। स्वामी श्रद्धानन्द ने पुत्रैषणा लोकैषणा व वित्तैषणा त्यागकर लोक सेवा की ओर गुरुकुल की स्थापना करके देशभक्ति से ओत प्रोत शिक्षण का प्रारम्भ किया और देशवासियो को स्वराज्य प्राप्ति की प्रेरणा दी। स्वामी श्रद्धानन्द ने २१ ६ १९०८ को सार्वदेशिक आर्यसमाज बनाई जिससे भारत माता की सेवा और अधिक व्यापक रूप से हो सके। १८१८ मे गढ़वाल मे पड़े अकाल में आर्यसमाज ने गढ़वाल मे दुर्भिक्ष पीड़ितो की बहुत सेवा करके असंख्य लोगो को मौत के मुंह से बचाया। १९२३ मे आगरा मे हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की गई जिससे अनेक हिन्दू गैरों के हाथ जाने से बच सके।

आर्य शब्द का अर्थ ही कुलीन व सदाचारी है इसी उद्देश्य से ७ अप्रैल १८७५ को बम्बई मे आर्यसमाज की स्थापना हुई थी इसके संस्थापक का शुभ नाम स्वामी दयानन्द सरस्वती है जो आदित्य ब्रह्मचारी व सत्योपदेशक थे। वेद और शास्त्रों के महान् विद्वान थे। इनके जीवन का मुख्य उद्देश्य संसार को मिथ्या ज्ञान मिथ्या विचार व मिथ्या विश्वास से मुक्त करके सत्य मार्ग पर लाना था। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना करके कई ग्रन्थों की रचना की। जिनमें मुख्य सत्यार्थप्रकाश ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका और संस्कारविधि आदि हैं जिनसे समाज को असली ज्ञान प्राप्त होकर अन्ध विश्वासों से छुटकारा हुआ। मानवमात्र की ओर धार्मिक सेवा करने के लिए इस समाज ने दस नियम बनाए जिससे अधिक से अधिक संख्या में लोगों को जागृति व लाभ प्राप्त हो सके। स्वामी दयानन्द ने कुरान व कुरानरानी का खण्डन किया था ताकि लोग अन्धेरे कूप में न गिर सकें उनकी कोई समाधि न बनाए इसीलिए उन्होंने लिखा था— जो खाक हो मेरी हड्डियो की वह जंगल के खेतो में डाल आना।

आज भी आर्यसमाज अन्याय के प्रति जागरूक है। राजनैतिक अथवा धार्मिक अन्याय के लिए हमेशा आवाज उठाता है लोगो को शुद्ध व सात्त्विक ज्ञान प्रदान करके सार्वभौमिक कल्याण की मंगल कामना करता है और लोगों को तर्की जड़ता से ऊपर उठाकर प्रकाश-स्तम्भ की भांति संसार को प्रकाश दे रहा है।

एच २ ग्रीन पार्क एक्सटेंशन,
नई दिल्ली

सूचना

आर्यसमाज शालीमार बाग मे संस्कार तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए एक सुयोग्य विद्वान् श्री प० ब्रह्मप्रकाश 'वागीश' पुरोहित पद पर आसीन हैं। कथा संस्कार आदि के लिए सम्पर्क करें।

मन्त्री आर्यसमाज शालीमार बाग
(बी० एस० पूर्वी) दिल्ली-११००५२
फोन ७१२७४२१

अनेकान्तवाद दर्शन की दृष्टि में

रामसुमेर मिश्र

भारत में जैन आचार्यों ने एक दृष्टि दी जिसे अनेकान्तवाद कहते हैं। इस दृष्टि की मान्यता है कि प्रत्येक पदार्थ एक संघात है, संघात अपने अंगो के समुदाय का परिणाम है। अत पदार्थ का बोध तभी सम्भव है जब अंगों का बोध प्राप्त कर लिया जाये। अंगो के बोध को मिलाने पर पदार्थ का जो बोध होता है वह संशयात्मक है, निश्चयात्मक नहीं। अत पदार्थ का जो भी बोध प्राप्त होता है, वह सत्य भी हो सकता है, असत्य भी हो सकता है सत्य असत्य मिला हुआ भी हो सकता है और अवर्णनीय भी हो सकता है।

इस दृष्टि को मानने वाले एक उदाहरण देते हैं कि अंधा एक हाथी का बोध करने चला पैर को स्पर्श कर उसे खम्भे का बोध हुआ, पीठ को स्पर्श करने पर तख्त का बोध हुआ, कान को स्पर्श करने पर सूप का बोध हुआ, सूंड को स्पर्श करने पर उसे अजगर का बोध हुआ। इन सब बोधों को मिलाने पर उस अंधे को पदार्थ का जो बोध होगा, वह संशयात्मक है, निश्चयात्मक नहीं। इस प्रकार जैन आचार्यों का मत है कि व्यक्ति पदार्थ का बोध इस प्रक्रिया से प्राप्त करता है और चूंकि उसका ज्ञान निश्चयात्मक नहीं हो सकता अत उसे दृढता से अपने ज्ञान के सत्य होने का गर्व नहीं होना चाहिए।

जैन आचार्यों की यह दृष्टि व्यवहार्य भी नहीं है। जब अंधा पैर को स्पर्श करता है तो उसे निश्चयात्मक बोध होता है और एक लम्बा, खम्भा उस बोध का ज्ञान है। यदि उसे इन्द्रिय स्पर्श द्वारा संशयात्मक, बोध होता तो कोई कर्म या प्रतिक्रिया उत्पन्न न होती। यदि अंधेरे में या कम प्रकाश में रस्सी को देखकर व्यक्ति सांप का बोध करता है तो भय की चपेट में अवश होता है। उस काल में जो भी ज्ञान है वह निश्चयात्मक है। संशय तो न्याय की देन है बोध की देन नहीं। ठहर कर जब व्यक्ति अपने बोध पर न्याय करने लगता है तो उसे भिन्नता के गुणों का भी प्रकाश होता है, और परिणाम में जो बोध वह ग्रहण करता है उस पर निश्चयात्मक वृत्ति रखता है। संशयात्मक वृत्ति से तो व्यक्ति कोई बोध रख ही नहीं सकता। मनुष्य में वृत्ति का उदय यदि संशयात्मक होता तो वह भूखा मर जाता, पेट भरने के लिए कोई पदार्थ भी ग्रहण न कर सकता . इसी संशय में पड़ा रहता कि विष है या अमृत। जैन आचार्यों की यह लालबुझक्कडी थी कि बोध पदार्थ के अंगों का होकर बुद्धि द्वारा समन्वित किया जाता है तब पूर्ण संघात पदार्थ का बोध होता है। दृष्टि में पूर्ण पदार्थ इकाई बनकर आता है। गेस्टाल्ट मनोविज्ञान ने सिद्ध करके दिखलाया है कि दृष्टि में पूर्ण (Whole) आता है अंग अंग (Parts) नहीं आते।

इस लालबुझक्कडी का आधार यह था कि पदार्थ अंगो का संघात है और पदार्थ को अंगो के गुणो और व्यवहारों के बोध से ही जाना जा सकता है। यह मान्यता भी गलत धारणा पर है। पानी आक्सीजन और हाइड्रोजन को मिलाने से बनता है और आक्सीजन और हाइड्रोजन के गुणो से भिन्न गुण प्रकट करता है। हेसनवर्ग ने यह घोषणा की थी कि प्रत्येक संघात के अपने गुण होते हैं वे गुण अंगो के गुणो का समुदाय नहीं हो सकते।

दर्शन मे पदार्थ के गुण धर्म का अवलोकन करके उसके कारण की खोज की जाती है। इन सब से ऐसे सत्य का बोध किया जाता है जो उस पदार्थ के अस्तित्व, सत्य और अर्थ का ज्ञान करा देता है। जैन आचार्यों ने विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई। पदार्थ का विश्लेषण किया। विश्लेषण रूप का किया और अंगो का समुदाय पकड में आया। अब इस कल्पना ने उनको गलत राह दिखा दी कि पदार्थ मे नये गुण अंगों के समुदाय का परिणाम है। कपिल ने सांख्य की रचना मे सही निर्देश दिया है कि गुण अव्यक्त से व्यक्त होते हैं, किसी संघात के कारण पैदा नही होते। प्रत्येक संघात मे जो गुण दर्शन में आते हैं, वे प्रकृति मे अव्यक्त रूप से मौजूद हैं ये अनेकान्त के समुदाय का परिणाम नहीं हैं। सृष्टि नियम शाश्वत सत्य हैं। इन नियमो की खोज विज्ञान करता है। इन नियमों के अस्तित्व और उसके नियन्ता की खोज दर्शन मे होती है। जैन दार्शनिकों को अपनी मान्यता मे स्वयं ही पदार्थ का बोध करते समय संशय हो गया फिर भी वे दर्शन को अज्ञेयवाद का जामा पहना कर चले गये।

वास्तविकता तो यह है कि मनुष्य के ज्ञान में संशय और अज्ञेय को कहीं स्थान नहीं है। मनुष्य जिस देश और काल मे, जो भी ज्ञान की परिधि में लाता है, उसे वह निर्भ्रान्ति और सत्य ही मानता है। कालान्तर में वह ज्ञान असत्य और भ्रमात्मक भासित होता है। इसका कारण यह है कि मनुष्य पदार्थ का ज्ञान किसी दृष्टि (Concept) के प्रकाश में पाता है, कोरा इन्द्रिय सम्पर्क (Percept) कोरी बुद्धि पटल (Tabularasa) पर कोई ज्ञान प्रकाशित करने मे असमर्थ है। जीव बुद्धि की सहायता से ही ज्ञान प्राप्त करता है, बुद्धि प्रकृतिक नियम से कार्य करती है। जब जीव दो ज्ञानो (Corcepts) को विरोधाभास मे पाता है अथवा ज्ञान को अव्यवहार्य अनुभव करता है तब उसे संशय पैदा होता है। यदि पदार्थ ज्ञेय न होता तो संशय को भी स्थान न होता अत अज्ञेयवाद को तो दर्शन मे स्थान ही नहो है। संशय जिज्ञासा की जननी बन दर्शन को दृष्टि खोजने मे सहायक है। सत्य संशयात्मक व अज्ञेय नहीं है। इस क्षेत्र को स्पष्ट करने मे दयानन्द ने दर्शन को यह दृष्टि दी कि जीव अल्पज्ञ है, पूर्ण ज्ञान उसकी सामर्थ्य मे आश्रय से ही प्राप्त होता है, बुद्धि या सर्वज्ञ का आश्रय ही उसका सम्बल है। बुद्धि उसको सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोडने मे तत्पर रहने पर अपनी सामर्थ्य का पूर्ण सहयोग देने मे सहायक है। ईश्वर सर्वज्ञ होकर मनुष्य को उसकी जिज्ञासा की वेदना दूर करने मे सहायक है।

जीव मे जानने का गुण है उसका यह गुण किसी आश्रय से ही प्रकट होता है। अल्पज्ञता जीव की सामर्थ्य का चिह्न है। कम्प्यूटर आदि बनाकर मनुष्य ने अपनी बुद्धि और दर्शन की सीमा बहुत बढा ली है, फिर भी यह पूर्ण सत्य जानने में असमर्थ है। इसका अर्थ यह नही है कि सत्य अज्ञेय है। जो भी ज्ञान मनुष्य पाता है, वह सब ज्ञेय ही है, कुछ भाग अभी ज्ञेय की परिधि मे नही आया, अत शनै शनै प्रगति करता हुआ मनुष्य ज्ञान मे वृद्धि करता चला जाता है। इस क्षेत्र मे बाधा हठ गर्व और मिथ्याभिमान से से पैदा होती है। जो व्यक्ति मनुष्य को किसी विश्वास क खूटे मे बांधकर हठी, गर्वीला प्रगति विरोधी बनाते हैं वे इस समाज के घोर शत्रु हैं। एसी दृष्टियां जो प्रगति और मुक्ति का विरोध कर झूठे शान्ति और आनन्द का प्रलोभन देती है, मानव के विश्वास पर बलि देती हैं। दयानन्द ने दर्शन और धर्म को प्रगति और मुक्ति दिलाई है जो पूर्ण निश्चयात्मक और ज्ञेय है। ●

१२४ बी/६२९ गोविन्दनगर
कानपुर।

॥ ओ३म् ॥

वैदिक धर्म ही श्रेष्ठ है।

लेखक—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

वैदिक धर्म श्रेष्ठ धर्म है। वैदिक धर्म हर प्रकार से उत्तर देकर सत्य मार्ग को दरशाता है। क्योंकि इसका आधार मजहबो की भांति किसी मनुष्य का अल्पज्ञान नही है किन्तु ईश्वरीय ज्ञान है, जो हर प्रकार से पूर्ण और महान् है। इसलिए—

जब तक धर्म वैदिक न अपनायेगा।
सारा जीवन तेरा नष्ट हो जायेगा॥

तुझे पण्डे पुजारी बहकाते रहें।
राम कृष्ण को ही ईश्वर बताते रहें॥

सच्चे ईश्वर का ना भेद तू पायेगा।
सारा जीवन तेरा नष्ट हो जायेगा॥

है निराकार प्रभु को भुलाया हुआ।
सब के घट घट के अन्दर समाया हुआ॥

वेद विद्या से इसका पता पायेगा।
सारा जीवन तेरा नष्ट हो जायेगा॥

तीर्थों मन्दिरों मे लगाया समय।
बोलता ही रहा शेरों वाली की जय॥

ये करना व धरना व्यर्थ हो जायेगा।
सारा जीवन तेरा नष्ट हो जायेगा॥

जो गई सो गई रात ले तू रही।
ओ३म् नाम जप यही मार्ग सही॥

अब न माना तो फिर पीछे पछतायेगा।
सारा जीवन तेरा नष्ट हो जायेगा॥

व्यासपीठ--

उपनिषत् कथा-माला—१

आओ आध्यात्मिक जगत् में चलें !

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

इन दिनो मे मुझ आपके सामने जो चर्चा करनी है उसका तात्पर्य एक बात मे यह होगा कि चाहे वेदो के सिद्धान्तो को लो चाहे उपनिषदो के। जिन नियमो का वे वर्णन करते हैं वे लोक परलोक के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। ईश्वर की प्राप्ति हो चाहे ससार सुख की दोनो के लिए नियम एक ही हैं। आप कहेंगे कि लोक और परलोक एक कैसे हो गये ? इन में तो बड़ा भेद है। भेद है किन्तु केवल देखने मात्र का। जैसे शून्य और ९ की सख्या मे। वास्तव में ये दोनो एक ही हैं। किसी सख्या के आगे शून्य [०] लगा दो ९ बढ जायगे। जैसे १+९ १०। किसी हिन्दसे के आगे से शून्य [०] उठा दो तो ९ घट जायगे। इसलिए ईश्वर प्राप्ति दुनिया मे सुख का एक साधन है। यदि कुछ भेद है तो केवल देखने मात्र का वास्तव म कोई नही ये दोनो साथ साथ चलते हैं। परन्तु मनुष्य इसका विचार नही करना। उपनिषदों मे ईश्वर प्राप्ति और सासारिक सुख को एक ही बताया है जो ईश्वर की प्राप्ति कर लेता है वह ही सासारिक सुख का आनन्द भी पाता है।

वेदो मे लिखा है कि ईश्वर को अपने हृदय में ही देखा जाता है। हृदय में ही ईश्वर का ज्ञान होता है किन्तु एक शर्त है वह यह कि ईश्वर को यति देख सकता है। शर्त यह है तो अब प्रश्न पैदा होता है कि हम तो यति नही परन्तु बन तो सकते हैं। यदि कोई बालक पाठशाला न जाये तो वह ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकता है ? जो चला जाता है ज्ञान तो वही पा सकता है। इसी प्रकार जो मनुष्य यति बनने का प्रयत्न करता है वह यति क्यों न बन सकेगा ?

यति का आशय यह है कि जो मनुष्य इन्द्रियों को सीधे मार्ग पर चलाने का यत्न करता है वही यति है। उसी का नाम नेता है। उसी को लीडर अथवा पथ प्रदर्शक भी कहते हैं।

वह पुरुष जो इन्द्रियों को नियम मे रखे उन्हें सीधे मार्ग पर चलाये उसी को सुख मिलता है। वही ससार मे सुख प्राप्त करता है। जो इन्द्रियो को विषयो की ओर न जाये और उन्हें नियम के अधीन न रखे वह तो सदैव दुखी ही रहेगा।

मनु भगवान् ने बताया है कि

> बर्फ से ढकी चोटियाँ, दूर तक वादियो मे गूजता प्रकृति का मधुर सगीत सारी दुनिया के शोर शराबे से अलग वह पर्वत की गुफा मोह-माया से दूर योगी और मुनियो को पुकारती रही है परम आनन्द की प्राप्ति के लिए तपस्वी जन इस यात्रा पर जाते रहे थे। लेकिन असीम शान्ति परम सन्तोष आनन्द का अमृत क्या योगियो को ही मिल सकता है। नहीं नहीं यदि तुम पाना चाहते हो तो तुम्हें भी अवश्य मिलेगा जगत को छोडकर भागने की आवश्यकता नहीं। इसी जीवन के सग्राम मे तुम यह सब पा सकते हो। इस युग के परम योगी दयानन्द ने यही तो कहा था ससार नहीं वासना छोड़ो जो तुम पाना चाहते हो वह सचमुच तुम्हारे पास है। तुमने उसे खोया नही था न ही उसे तुम खो सकते बस तुम उसे भूल गये थे। उसे याद करने का रास्ता बता रहे हैं वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी। वे महान् योगी तपस्वी मोह माया से दूर थे। उनके प्रवचन हजारो श्रद्धालु मस्त होकर सुनते थे। आर्य सन्देश के माध्यम से हम यह आप तक पहुचा रहे हैं। हर सप्ताह इसे पढना न भूलिये।
>
> —सम्पादक

इन्द्रिया क्या हैं ? ये हर तरफ भागती हैं। आंखें जिधर ले जाओ देखती हैं नाक जहा सम्भव हो सूंघती हैं कान प्रत्येक शब्द को चाहे वह कहीं हो सुनते हैं हाथ जहां भी कोई वस्तु छूनी या पकड़नी हो वही पहुंच जाते हैं। मनु भगवान कहते हैं कि इन इन्द्रियों को सयम से चलाओ अर्थात नियम मे रक्खो जैसे एक घोड़े का सवार घोडा लेकर बाजार में आता है घोडा अड जाता है। सवार उसकी पीठ पर एक चाबुक लगाता है। घोडा जान जाता है कि मेरी पीठ पर कोई सवार बैठा है वह सीधा हो जाता है। यदि सवार निर्बल है अनाड़ी है बाजार मे घोडा लेकर आता है घोडा अड जाता है ऊपर बैठा हुआ सवार भयभीत हो जाता है घोडा समझ जाता है कि सवार दुर्बल है। वह और अधिक अड़ता है और वश मे नही रहता। दुर्बल सवार क्या सवारी करेगा ?

इसी प्रकार हमारी इन्द्रियां भी घोड़े हैं। उनके लिए भी बलवान सवार की आवश्यकता है। मनु भगवान कहते हैं कि यदि कोई मनुष्य नियम के विपरीत अपनी इन्द्रियों को मार्ग से हटाकर उनका उपयोग करता है तो उसमे दोष पैदा हो जाते हैं। नाना प्रकार की दुर्बलताए आ जाती हैं। अन्त में पुरुष इन्द्रियों का दास बन जाता है। इन इन्द्रियों को वश में करके जो पुरुष सीधे मार्ग पर चलता है वही ससार मे सुख पाता है। वही सिद्धि को प्राप्त होता है और जो विषयों के अधीन होकर इन्द्रियो को सीधे मार्ग पर नही चला सकता वह क्या कभी सुख पा सकता है ? एक जितेन्द्रिय पुरुष जिस सिद्धि को प्राप्त करता है। विषयों का दास उसे कैसे पा सकता है ? क्योंकि नहीं !

उपनिषद कहते हैं नियम मे चलो ? प्रश्न यह है कि जब तक दोष दूर न हो नियम मे कैसे चलें दोष क्या हैं ? शास्त्र शास्त्र के आचार्य से पूछो ! वह बतलाएगा ये दोष लोभ मोह राग और द्वेष हैं। ये दोष कहीं बाहर से नही आते बाजार से वे पैसो मे नहीं खरीदे जाते। अन्दर से ही पैदा होते हैं। इन दोषो से ही बुद्धि मलिन हो जाती है इसलिए राग द्वेष और लोभ मोह को जो मनुष्य छोड देता है वही यति है।

जब मनुष्य में राग का दोष बढ जाता है तो उसको छोडने के लिए कितने बल की आवश्यकता पडती है। वास्तव मे बली वही है जिसने सग्राम में राग द्वेष और लोभ मोह को जीत लिया है। दुर्बल मनुष्य उन्हें कैसे जीत सकता है ? इसके लिए शक्ति की आवश्यकता है ये पराक्रम से जीते जाते हैं। परन्तु कैसे ?

बिहार प्रान्त में हरिहर क्षेत्र का मेला लगता है। उसमें हाथी बिकने आते हैं। वे हाथी बहुत शोर मचाते हैं। यदि किसी हाथी को वृक्ष से बांधा जाये तो वह टक्करें मारकर वृक्ष को गिरा देता है। यदि खूंटे से बांधा जाये तो खूंटा उखाड देता है। वे लोग इसका इलाज यह करते हैं कि एक हाथी को दूसरे की टांग से बांध देते हैं। इस प्रकार वे एक-दूसरे के साथ रुक जाते हैं। इसी प्रकार इन्द्रियों को वश में रखने के लिए किसी और शक्ति की आवश्यकता नहीं। राग द्वेष और लोभ-मोह को रोकने के लिए केवल आत्मिक बल की आवश्यकता है। राग ने कितना अन्धेर पैदा कर रक्खा है, द्वेष ने कितने झगड़े फैलाए हैं और मोह ने कितने मनुष्यों को बेचैन बनाया है ?

एक बलवान् मनुष्य को किसी ने गाली दी उसने उसको मारा। एक ने पूछा, भाई ! तुम कितना बोझ उठा सकते हो ? उसने उत्तर दिया, दो ढाई मन।' पहले मनुष्य ने कहा 'तुम तो एक गाली का बोझ भी नहीं सहार सकते, इतना बोझ कैसे उठाओगे ? यही है दोष ! इन दोषों का सुधार करोगे तो अपना सुधार होगा तभी तुम अपने देश और जाति का भी सुधार कर सकोगे। यदि स्वय नहीं सुधरे तो कुछ भी नहीं बन सकेगा। जो आप ही सुधरा हुआ नहीं वह किसी दूसरे का सुधार क्या करेगा ?

इसलिए आप देखें कि जिसने राग द्वेष को जीत लिया उसी ने सब पर विजय पा ली। वह जब चाहे राग को दबा सकता है जिधर चाहे राग को लगा सकता है जब भी चाहे द्वेष और मोह का प्रयोग कर सकता है। यदि उसे आपरेशन कराने की आवश्यकता है तो अपना हाथ आगे कर देगा उसके अन्दर सहनशक्ति होगी। यदि मनुष्य इन्द्रियो को अपने अधीन कर ले तो उसमे शक्ति आ जाती है। यदि वह उनके अधीन हो जावे तो फिर उसमें शक्ति कहां ? अधीन हो जाने पर ये दोष मनुष्य के सब से बड़े शत्रु हो जाते हैं।

अब मैं आप से पूछता हू आपको इन में से क्या अच्छा लगता है ? मुझ से पूछे तो इनमें से कोई भी अच्छा नहीं। आप कहेंगे कैसे ? सुनिये। आपको पूरी बड़ी स्वादु लगती हैं। आप जालन्धर जा रहे हैं। भाई कहता है कि घर मे पूरी तैयार हैं खाते जाओ स्टेशन पर अच्छी पूरी नही मिलेंगी।' किन्तु आप कहते हैं 'गाडी का समय हो गया। आपको पूरी दी जाती हैं आप जल्दी जल्दी खाते हैं। आपको आनन्द नही आता। राग तो स्टेशन की ओर है आनन्द कैसे आये ? उस समय आप राग के अधीन हैं इसलिए सुख नहीं।

आप प्रतिदिन देखते हैं बच्चे हठ करते हैं। जब बच्चा क्रुद्ध होता है तो धरती पर लोट जाता है। जानते हो क्यों? वह खड़ा रहकर भी अपना क्रोध प्रकट कर सकता है। पर नहीं बच्चा बताता है कि जो जातियां रूठी रहती हैं वे लेटी ही रहती हैं। उनमे क्या होता है ? यही कि राग द्वेष और मोह बढ जाता है। ससार मे वही जातियां उन्नति कर सकती हैं जिनको राग द्वेष और मोह पर अधिकार है।

एक बात और समझा दू। भारत की सन्तान दिन-प्रतिदिन क्यों दुर्बल होती जाती है ? माता पिता जानें, चाहे न जानें इसका दोष अधिकतर उन्हीं पर है। इसका कारण यह कि उनकी इन्द्रियों की आसक्ति

नियमानुसार नहीं। इसलिए सन्तान दुर्बल होती जाती है। इसका परिणाम यह है कि साथ ही साथ जाति भी निर्बल होती जाती है।

वेद गृहस्थ मे जाने से नहीं रोकते, किन्तु गृहस्थ में कब जाना चाहिए? सुरक्षित होकर सुडौल होकर। गृहस्थ का अनुभव उनको ही अच्छा होता है जो नियमानुकूल इसमें प्रवेश करें, न कि उनको जो गृहस्थ मे जाने से पहले ही उसके नियम तोड़ दें।

जो मनुष्य अपना काम स्वय अपने हाथ से करे वही तपस्वी है। यदि आप कोई लेख लिख रहे हैं, और नौकर से कहें कि पानी का गिलास लाओ तो कोई हर्ज नही। क्योंकि पानी के लिए उठकर जाने से लेख ठीक नही होगा। किन्तु यदि आप बेकार बैठे हैं, सुराही और गिलास भी पास रखा है और नौकर को बाहर से पुकार कर कहते हैं कि "पानी लाओ।" वह कहता है, "बाबू जी! सुराही और गिलास तो पास धरा है।" बाबू जी कहते हैं, 'अबे तुझे नौकर किस लिए रखा है? ऐसे लोग अपना बल और साहस खो देते हैं।

गृहस्थ मे प्रवेश करने वाले पुरुष के विषय मे वेद कहते हैं कि वह मनुष्य सुरक्षित हो, सुडौल हो। गृहस्थ प्रवेश के समय वह बलवान् हो, दुर्बल कदापि न हो।

मैंने एक कन्या देखी तीन वर्ष की किन्तु वह बडी सुडौल तथा पुष्ट थी, पाच छः वर्ष के बच्चो से भी बलवान् थी। उसको देखकर सब प्रसन्न होते थे। आप एक बच्चा देखते हैं बडा सुडौल बहुत सुन्दर। वह जिसकी ओर जाता है हृदय पवित्र हो जाता है। लोग पूछते हैं बच्चा किसका है? कहते हैं 'बसन्तराम का' बसन्तराम चर होता है, किन्तु उसके बच्चे को देखकर ही लोग उसकी प्रशसा करते हैं। दूसरी ओर एक बच्चा है दुर्बल, कृश। अपने माता-पिता को तो वह भी वैसा ही प्यारा होगा किन्तु जो कोई भी उसे देखेगा घृणा करेगा। कहेगा 'भाई, बच्चा हटा ले।

यदि माता-पिता नियमानुसार गृहस्थ में जायेंगे, तो ८० वर्ष की आयु में भी बलवान् रहेंगे। उनकी शक्ति में कोई अन्तर न पडेगा। आंखो की ज्योति बनी रहेगी। लोग कहेंगे कैसे यति वृद्ध हैं। उनकी जो सन्तान होगी, बलवान होगी, बीमारियो से बची रहेगी। यह नही कि कहीं शीशियां भरी पडी हैं कहीं अमृतधारा की तलाश है। आजकल तो यह होता है कि लड़का कलकत्ते जाता है तो उससे कहते हैं देहली जाकर सूचना देना, लखनऊ से तार भेजना। इतना भी विश्वास नहीं होता कि कलकत्ते पहुचने तक लडके का स्वास्थ्य बना रहेगा।

शरीर को जो चीज सुडौल, कठिन और पुष्ट बनाती है उसका नाम है 'धातु' उसका ही ठीक प्रयोग होना चाहिए, जो मनुष्य सुडौल और बलवान् है, गृहस्थ का सुख भी उसी को प्राप्त होगा, और ससार में भी वही सुख पा सकता है। दुर्बल और विषयों का दास कभी सुख नहीं पा सकता।

इसलिए उपनिषद् कहते हैं कि
[illegible]

न्द्रिय हैं। विषयी लोग ईश्वर की प्राप्ति नहीं कर सकते, यति ईश्वर का दर्शन करता है किन्तु अपने हृदय मे ईश्वर सर्वव्यापक है, सब स्थानों मे विद्यमान है, परन्तु दिखाई हृदय में ही देता है। अतएव हृदय की शुद्धि की आवश्यकता है। यदि अन्त करण मलिन है तब ईश्वर-प्राप्ति कहां? ईश्वर-प्राप्ति उसी को हो सकती है जिसका हृदय शुद्ध हो, जो जितेन्द्रिय हो।

जो यति है वह परमात्मा को अपने हृदय मे देखता है। ससार का कौन सा काम है जो उसके सामने रुक सकेगा? जो मनुष्य समुद्र मे तैर सकता है वह दरिया से क्या डरेगा? जिसका अन्त करण पवित्र हो वह ईश्वर को अपने सामने ऐसे देखता है जैसे दूरबीन मे दूर की वस्तु निकट प्रतीत होती है, वैसे यति परमात्मा को अपने भीतर देखता है वैसे ही बाहर भी देखेगा। जैसे समुद्र का जल चाहे अरब सागर से लो अथवा प्रशान्त सागर से, सब जगह खारा ही होगा, वैसे ही शुद्ध अन्त करण वाला मनुष्य सबको एक जैसा और सब मे परमात्मा को देखता है। हकीम लुकमान का वचन है—

यार बन बार मत बन।

तुम एक दूसरे के यार बनो मददगार बनो सहायक बनो, किन्तु दूसरों के लिए बोझ न बनो, दूसरों का सहारा बनो, उनके लिए भार कभी न बनो। यदि अन्त करण मे अपवित्रता है तो ईश्वर-प्राप्ति कहा? ईश्वर की खोज का क्या प्रयोजन है। इसीलिए तो कहा है—

यार मन मे, ढूंढे बन मे।

जो कहता है कि मेरा मन नहीं लगता वह मन लगा ले। उसे रोकता कौन है? मन को तो लगाने की आवश्यकता है। यह बात तो मानी जा सकती है कि अमुक मनुष्य का मन मेरे वश मे नहीं। किन्तु यह कैसे माना जाये, कि अपना मन भी वश मे न हो? मोटर होती है आप उसका पहिया हिलाते हैं किन्तु रोकना नही आता। परिणाम क्या होता है? मन तो जड पदार्थ है? वह वश में क्यों न हो? जिसका मन ही वश में नही वह क्या करेगा?

मौलाना रूम का कथन है, कि यदि तू महानता की ओर जाना चाहता है तो जिधर तेरा मन कहता है उसके विपरीत चल। फिर उसी सिद्धता हो जायेगी। एक दो दिन मन को रोको! हर काम मन की इच्छा के विरुद्ध करो। वह स्वय सीधा हो जाएगा। कृष्णचन्द्र ने भी गीता में यही कहा है। "जब तक योगिता और

रोका न जायेगा, जब तक भद्र पुरुषों का सत्सग न होगा तब तक कुछ भी न होगा, तब तक कुछ भी न बन सकेगा, मन कदापि स्थिर न होगा, वश में न आयेगा।'

अब इसका साधन भी सुन लो! ईश्वर सत्य से ही मिलता है। ससार के कार्य व्यवहार सचाई से ही चलते हैं, झूठ से नही चलते। आप कहेंगे भारतवर्ष मे व्यवहार झूठ से चलते हैं किन्तु ससार के अन्य देशो मे ही नही यहाँ भी सत्य से चल सकता है। आप आजकल रेल यात्रा करते हैं। टिकट घर पर हजारो लाखो रुपये का व्यवहार होता है। क्या कभी किसी ने कही देखा कि अब टिकट की कीमत गिर गई है? जालन्धर का किराया दो पैसे मन्दा हो गया। सब जानते हैं लेकिन किसी ने कभी नही पूछा।

वास्तव मे ससार का काम सत्य से चलता है और सत्य से ही ईश्वर प्राप्ति होती है। ससार मे उसी समाज का विश्वास होता है जो सत्य पर स्थिर है। झूठ पर किसी को विश्वास नही होता और न झूठ से किसी को कुछ लाभ हो सकता है। कई कहते हैं कि सच पर शक्ति लगती है, मैं कहता हू कि झूठ बोलने के लिए अधिक शक्ति की आवश्यकता है। एक झूठ छिपाने को कई झूठ बोलने पडते है। परन्तु एक सत्य के लिए दो सत्य और बोलने पडें तो उसमे कोई हानि नही। इसलिए सचाई सब से अच्छी है। इसी से ससार मे उन्नति होती है और ईश्वर प्राप्ति का साधन भी यही है।

मान लीजिये मैं सिगरेट पीता हू और आप से कहता हू, कि सिगरेट मत पियो! मेरा मन स्वय मुझ पर धिक्कार करेगा और कहेगा कि जिस बात का तू उपदेश देता है वह स्वय तेरे जीवन मे नही। सत्य पर शक्ति लगती है यह झूठ है। झूठ पर अधिक शक्ति लगती है। एक आदमी के घर कोई जाता है। उसका हृदय शुद्ध है मन पवित्र है, वह गाता हुआ जायेगा उसे भय नही होगा। किन्तु यदि चोरी की इच्छा से जायेगा तो क्या तब भी गाता हुआ जायेगा? नही, वह तो जूता भी उतार देगा। कहीं कुछ शब्द न हो जाये। बुरे काम करने में मनुष्य को सदैव ही भय होता है। सचाई में कोई भय नही रहता।

जो मनुष्य अपना काम स्वय अपने हाथ से करे वही तपस्वी है। यदि आप कोई लेख लिख रहे हैं, और नौकर से कहें कि पानी का गिलास लाओ तो कोई हर्ज नही। क्योंकि पानी के लिए उठकर जाने से लेख ठीक नही होगा। किन्तु यदि आप बेकार बैठ हैं सुराही और गिलास भी पास रखा है और नौकर को बाहर से पुकार कर कहते हैं कि "पानी लाओ।' वह कहता है, 'बाबू जी! सुराही और गिलास तो पास धरा है।" बाबू जी कहते हैं, "अबे तुझे नौकर किस लिए रखा है? ऐसे लोग अपना बल और साहस खो देते

पूजा करता था मैंने पूछा कि ऐसा क्यों किया जाता है तो उत्तर मिला कि "यह इसलिए करते हैं जिससे कभी आवश्यकता पडे तो अपना सामान उठा सकें। यह है एक व्यक्ति का साहस।

पजाब मे तो यह रिवाज है कि जिस बाबू का वेतन दो सौ हो जाये उसके घर की स्त्री निकम्मी हो जाती है। उसे काम काज के लिए नौकर की आवश्यकता पडती है। किन्तु गुजरात देश मे बड-बडे घरो की स्त्रिया अपने हाथ से भोजन बनाती हैं। यह तप है। इसलिए दुख हो या सुख जय हो या पराजय। तुम अपने कर्तव्य का पालन करो! किन्तु तुम्हे तो इसका अभ्यास हो गया है। छोटे-छोटे बच्चों को झूठ सिखाया जाता है। एक बार एक बाबू के घर लडडू आए। उसके लडके ने मागे तो बाबू ने कहा कि स्कूल हो आओ फिर मिल जायेंगे। परन्तु लडके को चैन कहा? वह स्कूल छोडकर आ गया और ज्यों ही लड्डू उतारने लगा टोकरी का सामान गिर गया। बाबू ने पूछा तो कह दिया बिल्ली यहा से गई है उसने गिरा दिया।

इसके आगे एक बात और है वह है ज्ञान। ज्ञान नाम है जानने का। इसके बिना किसी काम की पूर्ति असम्भव है। एक मनुष्य जिसका शरीर अशक्त तथा दुर्बल है, यदि वह आपसे कहे कि 'ब्रह्मचर्य अच्छा है उसका पालन आवश्यक है' तो उसका प्रभाव कुछ न होगा। यदि वही कहे कि मेरी ओर देखो! मैंने ब्रह्मचर्य का पालन नही किया मेरी दशा बिगड गई तो उसका प्रभाव पडेगा। ज्ञान से यह अभिप्राय है कि जिस काम को हाथ में लें उसको भली भांति समझ सकें, जो काम करते हों उसके स्वय अधिकारी हों।

जब तप, सत्य और ज्ञान हो जाता है तब आत्मा का प्रकाश होता है। यह प्रकाश क्या है? जिह्वा उसे वर्णन नही कर सकती।

आजकल यह लहर चली हुई है कि हमारे युवक नास्तिक होते जा रहे है। माना कि आप परमेश्वर को नहीं मानते। न मानें। मेरे अन्दर जो है वह परमात्मा है। उसके नाम नही हो सकते। मान लिया कि आप परमेश्वर को नही मानते, किन्तु क्या सत्य को भी नहीं मानोगे? क्या ज्ञान की पूर्ति भी बुरी है? क्या इसको भी नही मानोगे, कि इन्द्रियो को नियमानुकूल चलाना चाहिए? यदि नही मानोगे तो धक्के खाओगे। इन्हें मान लिया तो आपकी आत्मा को अपने आप ईश्वर के दर्शन हो जायेंगे।

दूसरे देशो के लोग परिश्रमी हैं, साहसी है हम में और जापानियो मे यही भेद है। जापानी अपनी इन्द्रियो के दास नहीं और हिन्दुस्तानी दास हैं। अतएव उनके लिए उक्त साधन लाभकारी हैं, इनसे काम लेन म कोई बुराई नही। ये तो मनुष्य के अन्त करण को शुद्ध करके उसका उद्धार करते हैं और उसे परमात्मा

स्व० श्री लालमन आर्य जयन्ती समारोह

प्रसिद्ध दानवीर स्वतन्त्रता मेनानी कमठ आय पुरुष महर्षि दयानन्द एव वैदिक ।म के अनन्य उपासक श्री स्वर्गीय लालमन आय के ७४ वे जन्म दिवस पर १७ अप्रैल ो एक विशाल समारोह हसराज माडल स्कूल पजाबी बाग मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर ार श्री लालमन आर्य की पुण्य स्मति मे एक सगमर की भव्य यज्ञशाला जिसमें वेद न्त्रों का अकन किया गया है उनके सुपुत्र श्री गज नन्द आय श्री प्रकाशानन्द आय ी सत्यानन्द आय ने यज्ञ याग आदि पवित्र काय हेतु हसराज माडल स्कल को सम पित की। इसका उदघाटन आय सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी ने किया।

श्री लालमन आय आदर्श ईश्वर भक्त एव कवि थे उनके भक्ति रस में डूबे ीतो का एक कैसेट जिसको श्री गुलाबसिंह राघव ने स्वर दिया उसका विमोचन कया गया।

प्रो० वेदव्यास की अध्यक्षता मे एक श्रद्धाञ्जली सभा भी की गई जिसमे सिद्ध आयनेता श्री रामगोपाल शालवाले तथा अन्य आय विद्वानो ने श्री आर्य के ादर्श जीवन पर प्रकाश डाला।

श्री लालमन आय निबन्ध प्रतियोगिता के प्रतियोगियो को भी पुरस्कृत किया गया।

श्री लालमन आर्य निबन्ध प्रतियोगिता के परिणाम

इस प्रतियोगिता में दो विषय थे – महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत' ।था वर्तमान चारित्रिक सकट समस्या और समाधान जिसमे देश भर से २७६ तियोगियो ने भाग लिया। इन निबन्धो का मूल्यांकन आयसमाज के तीन प्रसिद्ध वद्वानों द्वारा किया गया। जिनके नाम इस प्रकार से हैं–

१	श्री क्षितीश कुमार जी वेदालंकार	सम्पादक आय जगत्
२	श्री डा० वाचस्पति जी उपाध्याय	दिल्ली विश्व विद्यालय
३	श्री डा० धर्मपाल जी	प्रधान सम्पादक आयसन्देश

इस निबन्ध प्रतियोगिता मे निम्नलिखित व्यक्तियों को पुरस्कृत किया गया। नके नाम निम्नलिखित हैं—

ाथम पुरस्कार संयुक्त विजेता—

	श्री कृष्णदेव शास्त्री	पाणिनि महाविद्या० बहालगढ सोनीपत	५००/-रु०
।	श्री महेश कुमार कौशिक	८-जीवन भवन देवपुरा आश्रम हरिद्वार	५००/ रु०

द्वतीय पुरस्कार संयुक्त विजेता—

	श्री डा० सूर्यप्रकाश विद्यालंकार	के०एच० १५७ कविनगर गा०बाद	२५०/ रु०
।	श्री मिश्रीलाल मीना	ग्राम मदलेडा वाया विराई जयपुर	२५०/-रु०

तीय पुरस्कार संयुक्त विजेता —

।	श्री विनोद कुमार	क्वाटर न० ७६६/११/१११ टाउनशिप बी०एच०ई०एल० हरिद्वार	१५०/-रु०

स्व० श्री लालमन जी आर्य

एक प्रेरक जीवन

श्री लालमन आय का जन्म राज स्थान के सेरडा गाव मे वि०स० १९६८ की चैत्र शुक्ला द्वितीया को हुआ। बाल्य काल गाव के गरीब किसानों मे बीता लेकिन जीवन के साधना क्षेत्र बने—उत्तरी बगाल तथा कलकत्ता जैसे नगर। सम्पन्नता एव सादगी देशानुराग तथा दान शीलता एव मानवीय मूल्यो के प्रति दृढ आस्था का दीप जलाकर कल्याणमार्ग के पथिक बन गए।

ऋषि दयानन्द एव महात्मा गाधी उनके आदर्श महापुरुष थे। यतिवर दयानन्द के उपदेशो से प्रेरणा ग्रहण कर मृतक श्राद्ध मूर्तिपूजा का प्रबल विरोध किया तथा विधवा विवाह का सशक्त समर्थन किया। स्वदेशी आन्दोलन के प्रति आकृष्ट हुए महात्मा गाधी के कारण। अकाल एव बाढ आदि से पीडितों की तन मन और धन से सहायता की।

प्रसन्नचित्त निरभिमान लालमल जी का मन बाल की तरह कान्तिमान् एव स्फटिक की तरह पारदर्शी था। वि०स० २०४० की ज्येष्ठ शुक्ला दशमी के दिन उनकी इहलीला समाप्त हुई।

स्व० आय जी ने अपने जीवन मे सैकडो कविताएँ गीत भजन आदि लिखे। उन्हीं में से कुछ प्रभुभक्ति एव आत्मोत्थान से सम्बद्ध गीतों का चयन श्री आय की स्मृति में उनके धर्मानुरागी आत्मजों, सर्वश्री बजानन्द जी आय श्री प्रकाशानन्द जी आय एव श्री सत्यानन्द जी आय ने सभद्र जनता की सेवा में समर्पित किया।

श्री लालमन आय जी ने एक कर्मठ योगी की तरह समाज सुधार एव धर्मो-द्धार के क्षेत्र में अनेक कार्य किए। उनका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है—

- ☐ दहेज आडम्बर परदा प्रथा बाल विवाह छुआछूत मृतक भोज आदि कुप्रथाओ का सोदाहरण प्रबल विरोध
- ☐ विधवा विवाह व स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग का सोदाहरण समर्थन
- ☐ सरोवर कुओ औषधालय धर्मशाला आदि का निर्माण
- ☐ बाढ दुर्भिक्ष महामारी जैसी दैविक आपदाओ मे धन सहायता
- ☐ सरपच पद के कायकाल मे ग्राम सुधार व विकास के अनेक काय
- ☐ अपने लिखे हुए सैकडों भजनों व गीतो के माध्यम से आयसमाज का प्रचार व दुर्व्यसनो तथा अन्धविश्वास का खण्डन
- ☐ गरीब विद्यार्थियों विद्वान् व प्रचारकों को आर्थिक सहयोग

उन्होंने भारतीय संस्कृति के आदर्शों के अनुरूप ही सेवा व्रत को ध्येय बनाया अनेक धार्मिक सामाजिक और शैक्षणिक संस्थाओं से घनिष्ठ रूप से सबधित रहे। उनमें से कुछ संस्थाओं का उल्लेख इस प्रकार है—

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

- ☐ दयानन्द कालेज हिसार
- ☐ जगन्नाथ आय कन्या विद्यालय हिसार
- ☐ विरजानन्द वैदिक साधना आश्रम मथुरा
- ☐ विधवा विवाह सहायक सघ
- ☐ गुरुकुल चीरनवास
- ☐ गुरुकुल भावनगर
- ☐ आर्यट्रस्ट आयसमाज बडा बाजार कलकत्ता

प्रतिष्ठान

- ☐ भारत टैक्सटाइल
- ☐ इकोनोमिक ट्रासपोर्ट आर्गेनाइजेशन
- ☐ आय स्टील्स प्रा० लि०

मूल्यांकन के हिसाब से १० प्रतियोगियो को सान्त्वना पुरस्कार दिये गए, जिनके नाम इस प्रकार हैं—

१	श्री राजबीर सिंह मलिक	सूसरौली मेरठ	५०/-रु०
२	श्री शिवपुरी गोस्वामी	रातानाडा जोधपुर	५०/-रु०
३	श्रीमती गार्गी माथुर	हनुमान चौक जोधपुर	५०/-रु०
४	श्री कृष्ण बिहारीलाल	अध्यक्ष जवाहर नगर हाथरस	५०/ रु०
५	डा० भगवत उप्रती शास्त्री	अध्यक्ष सस्कृत विभाग कुमाऊ वि०वि० परिसर अल्मोडा	५०/-रु०
६	श्री कैलाश बिहारी वर्मा	अतिरिक्त जिला एव सत्र न्यायाधीश सिविल कोट (बिहार)	५०/ रु०
७	श्री सुनीता वासवानी,	कोतवाली के पास भोपाल	५०/-रु०
८.	श्री मोहम्मद असलम	११९—रामनगर, मेरठ	५०/-रु०
९	श्री सत्येन्द्र शर्मा,	आर्यनगर, सतना,	५०/-रु०

श्रद्धांजलि

युवा पत्रकार प्रमोदकुमार विनोद

—शिवकुमार गोयल

मेरठ से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक "प्रभात" के सह सम्पादक तथा युवा आर्य समाजी पत्रकार श्री प्रमोदकुमार विनोद का ४२ वर्ष की अल्पायु में ही निधन हो गया। वे वयोवृद्ध स्वाधीनता सेनानी तेजस्वी व निर्भीक पत्रकार तथा आर्य नेता श्री वि०स० विनोद के ज्येष्ठ पुत्र थे।

श्री प्रमोद कुछ समय से भोजन की नली में कैंसर से पीड़ित थे। उनका बम्बई के टाटा कैंसर इंस्टीट्यूट का इलाज चल रहा था कि अचानक तबियत खराब हो गई तथा वे प्रभु को प्यारे हो गये।

मारीशस यात्रा अमिट छाप

श्री प्रमोद पिछले वर्ष अक्टूबर माह में ही भारतीय प्रतिनिधि मण्डल में मेरे साथ मारीशस गये थे। वहां आर्यसमाज की ओर से उनका भव्य स्वागत किया गया था। उन्होंने मारीशस के गवर्नर श्री शिव सागर रामगुलाम तथा राष्ट्रपति श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ से भेंट कर इन्टरव्यू लिया था। वहां वे मारीशस के प्रख्यात हिन्दी साहित्यकार श्री अभिमन्यु अनत के अतिथि थे। अपनी मिलनसारिता तथा मृदु स्वभाव से उन्होंने अनत जी के परिवार को मोह लिया था।

श्री प्रमोद ने मारीशस के भारतवासियों के सामने आने वाली समस्याओं का गहन अध्ययन किया था तथा वहां हिंदुओं के धर्म परिवर्तन में सक्रिय ईसाइयो व लीबिया के मुसलमानो की खतरनाक साजिशों का अपनी लेखनी से भण्डाफोड़ किया था। उन्होंने दैनिक 'प्रभात' में लिखे यात्रा संस्मरण में स्पष्ट कहा था 'आर्यसमाज तथा अन्य धार्मिक संस्थाओं को मारीशस धर्म प्रचारक भेजने चाहिए जो हिन्दू समाज को सगठित व शक्तिशाली बना सकें"।

प्रभात की लोकप्रियता

दैनिक 'प्रभात' की लोकप्रियता बढ़ाने

में जहां श्री गणेशशंकर विद्यार्थी एवं डा० सम्पूर्णानन्द जी से पत्रकारिता की प्रेरणा लेने वाले ८२ वर्षीय श्री वि०स० विनोद जी के निर्भीक सम्पादकीय लेखों का योगदान है वहीं श्री प्रमोद तथा श्री सुबोध इन दोनो भाइयों के लेखन तथा कुशल सयोजन को भी इसका श्रेय देना होगा। श्री प्रमोद प्रेस के हर काम के विशेषज्ञ थे। वे कम्पोज से लेकर छपाई तक के कार्य मे पूरा दखल रखते थे। सामयिक विषयो पर तत्काल सम्पादकीय लिखने में वे माहिर थे। श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या पर उन्होंने जो सम्पादकीय लिखा था उसे पढ़कर मेरी आंखें छलक उठी थीं। प्रमोद अत्यन्त मिलनसार तथा मृदुभाषी थे। मुझे वे अपना अग्रज मानते थे तथा सदैव आदर देते थे।

अल्पायु साधनो के बावजूद श्रद्धेय विनोद जी तथा उनके दोनो पुत्रों प्रमोद व सुबोध ने दैनिक प्रभात का स्तर बनाये रखा। आज प्रभात' पश्चिमी उत्तर प्रदेश के प्रमुख दैनिको मे गिना जाता है। प्रगति पथ की यात्रा के दौरान एक प्रमुख स्तम्भ ढह जाने से निश्चय ही प्रभात को गहरा आघात लगा है। श्रद्धेय विनोद जी का हृदय तो पूरी तरह विदीर्ण ही हो चुका है।

वे सस्कारी थे

श्री प्रमोद को आर्यसमाज के सस्कार अपने आर्यसमाजी पिता श्री वि०स०विनोद तथा मातुश्री श्रीमती सुमित्रा विनोद से प्राप्त हुए थे। वे बचपन से ही आर्यसमाज के सत्सगो में जाया करते थे। उन्होने अपने पिता श्री विनोद जी को गोआ की स्वाधीनता के लिए पुर्तगालियों की गोलियों के सामने छाती तानने की घटना सुनी थी। इस वातावरण ने उन्हें कट्टर राष्ट्रभक्त व वैदिक धर्म का अनन्य प्रेमी बना दिया था।

श्री विनोद अपने पीछे पत्नी सुशीला देवी तीन पुत्रियां व एक पुत्र छोड़ गये हैं। ८२ वर्षीय श्री वि०स० विनोद पर पुत्र वियोग का यह जबर्दस्त आघात लगा है। ईश्वर चि० प्रमोद की आत्मा को शांति तथा पिता श्री विनोद जी तथा अनुज श्री सुबोध कुमार विनोद व परिवार को सहन शक्ति प्रदान करें, यही प्रार्थना है।

—शिवकुमार गोयल
पिलखुवा (उ०प्र०)

साहित्य समीक्षा—

नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती

लेखक—डा० भवानीलाल भारतीय प्रकाशक—वैदिक पुस्तकालय अजमेर मूल्य ४० रु०।

डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा प्रस्तुत "नव जागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती' शीर्षक ग्रन्थ उनके मनोयोग एव सतत अध्यवसाय का परिणाम है। प्रस्तुत ग्रन्थ महर्षि दयानन्द के जीवन चरित के रूप मे है। जीवन चरित लिखने के लिए दो बातें अपेक्षित हैं—चरितनायक की विचार सरणि का सम्यक प्रस्तुतीकरण तथा इस प्रस्तुतीकरण के प्रसग मे सम्बन्धित एव यथार्थ घटनाओं का सन्निवेश। डा० भारतीय ने दोनो बातो का सम्यक निर्वाह किया है। अत इस ग्रथ के द्वारा महर्षि के जीवन चरित की यथार्थ घटनाओं का ही ज्ञान नही होता अपितु उनकी वह विचार सरणि भी स्पष्टता के साथ उभर कर आती हैं जिसमे वे घटनाएं अनुस्यूत हैं। घटनाओं के सन्निवेश मे डा० भारतीय की दृष्टि तथ्यपरक रही है। अत उन्होने महर्षि के जीवन चरित मे उन्ही घटनाओं का सन्निवेश किया है जो इतिहास सम्मत एव प्रमाणपुष्ट हैं। डा० भारतीय ने स्थान-स्थान पर इन प्रमाणों का निर्देश भी किया है। प्रमाणपुष्टता के अभाव मे किंवदतीमात्र पर आश्रित घटनाओं का जीवन चरित से बहिर्भाव करने मे डा० भारतीय सकोच का अनुभव नही करते। विचारसरणि को प्रस्तुत करने मे डा० भारतीय की दृष्टि वस्तुपरक रही है। अत उन्होने उस अन्ध श्रद्धा का विरोध किया है जिसके आधार पर महर्षि का सम्बन्ध ऐसी घटनाओं से जोड़ दिया गया है जो न केवल इतिहास विरुद्ध हैं अपितु उनकी विचारसरणि के भी प्रतिकूल हैं। इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ से यह भी पता चलता है कि उस समय भारतवर्ष की सामाजिक एव धार्मिक स्थिति क्या थी तथा महर्षि दयानन्द ने किस प्रकार उसे प्रभावित करके सही दिशा प्रदान की। इस प्रकार तत्कालीन सामाजिक एव धार्मिक स्थिति के अध्ययन की दृष्टि से भी यह एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।

ग्रन्थ के लिए सामग्री जुटाने हेतु डा० भारतीय ने अनेक स्रोतो का उपयोग किया है। इस सम्बन्ध मे प० लेखराम तथा प० देवेन्द्रनाथ द्वारा पूर्व प्रस्तुत सामग्री ही पर्याप्त नहीं थी। अत डा० भारतीय ने इसके बाद प्राप्त होने वाली समस्त सामग्री का समायोजन किया है व पर्याप्त परीक्षण के बाद इसका अपने ग्रथ में उपयोग किया है। इससे इस ग्रन्थ की परिपूर्णता एव प्रामाणिकता निस्सन्दिग्ध हो गई है। डा० भारतीय इस प्रयास के लिए निस्सन्देह साधुवाद के पात्र हैं।

—डा० ब्रह्मानन्द शर्मा

घरेलू उपयोगी बातें

- ☐ कच्चे केलो को गरमी से बचाने के लिए उन्हें पानी से भरे मटको पर रखें। केले एक सप्ताह तक भी खराब नही होंगे।
- ☐ हरी सब्जी को बिना धोये गीले अखबार मे लपेटकर रख दें अधिक समय तक सुरक्षित रहेगी।
- ☐ कच्चे नारियल का यदि केवल आधा भाग ही प्रयोग में आ सका है तो शेष आधे भाग को उसी समय नमक मिले पानी मे रख दें काफी समय तक खराब नही होगा।
- ☐ हरी मिर्च को सुखाकर थोड़े नमक के साथ कूट लें। वर्ष भर खराब नही होगी।
- ☐ नीबू को सुरक्षित रखने के लिए उन्हें काटकर नमक व हींग लगाकर थोड़े से नीबू के रस में रख दें। कभी कभी धूप दिखाते रहें नीबू खराब नहीं होंगे।
- ☐ मूली को यदि अधिक समय तक रखना हो तो उसे पत्ती से अलग न करें मूली सूखेगी नही।
- ☐ आम काटकर सुखा लें और नमक के साथ मिलाकर डब्बे मे रख दें। जाला नही लगेगा।
- ☐ यदि आपके नाखून कड़े हैं और उन्हें काटने मे तकलीफ होती है तो हाथो को एक दो मिनट तक पानी मे भिगोये रखने के बाद काटिए। नाखून आसानी से कट जायेंगे।
- ☐ किसी स्थान पर लगी काई को छुड़ाना हो तो रात को उस स्थान पर चूना घोलकर डाल दें तथा सुबह कपड़े से रगड़कर साफ कर दें।
- ☐ जैम जैली और टमाटर की चटनी को अधिक दिन सुरक्षित रखने के लिए उन्हें बोतलो मे भरने के बाद ऊपर मोम की एक परत जमाकर ढक्कन लगा दें। इससे जैम, जैली आदि एक दो महीने तक आसानी से रखे जा सकते हैं।
- ☐ पिसी हुई खटाई को जाले और कीड़े से बचाने के लिए थोड़ा सा पिसा हुआ नमक मिलाकर रखें।

समाचार-सन्देश

फ्रांसीसी युवती की शुद्धि एवं विवाह

आर्यसमाज अजमेर द्वारा ३० वर्षीया फ्रांसीसी तथा हाल में पुष्कर प्रवास पर आई हुई मिस क्रिशीत ब्लाजी द्वारा स्वेच्छा से प्रार्थना करने पर शुद्धि कर उसे वैदिक (हिन्दू) धर्म में दीक्षित किया गया। उसने स्वयं बताया कि वह भारतीय वैदिक धर्म के आदर्शों से अत्यन्त प्रभावित हुई है। शुद्धि के पश्चात् उसका नाम कु० मीना रखा गया।

शुद्धि के पश्चात् उसकी प्रार्थना तथा पारस्परिक सहमति के आधार पर पुष्कर के लोटस होटल में सेवारत श्री भगवान दास बाथम के साथ वैदिक रीति से पाणिग्रहण (विवाह) संस्कार भी समाज मन्दिर में सम्पन्न हुआ। शुद्धि एवं विवाह संस्कार श्री आचार्य गोविन्दसिंह ने सम्पन्न कराया।

इस अवसर पर आर्यसमाज के मन्त्री श्री रासासिंह ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए फ्रांसीसी युवती का वैदिक धर्म में दीक्षित होने पर स्वागत करते हुए महर्षि दयानन्द एवं वैदिक धर्म पर अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित साहित्य भेंट किया गया।

(रासासिंह) मन्त्री
आर्यसमाज, अजमेर

गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर-गाजियाबाद (उ०प्र०) वार्षिकोत्सव सम्पन्न

हापुड़ से ३ मील पूर्व गढ़ मार्ग पर स्थित ततारपुर गुरुकुल का वार्षिक महोत्सव १६-१८ मार्च तक बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। यज्ञ एवं विद्वानों के प्रवचनों के अतिरिक्त ब्रह्मचारियों का व्यायाम प्रदर्शन बड़ा प्रभावशाली रहा। परोपकारिणी सभा के अध्यक्ष श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने श्रेष्ठ व मेधावी छात्रों को पुरस्कृत कर आशीर्वाद दिया एवं सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सञ्चालक श्री बालदिवाकर जी हंस ने आर्यवीरों को पुरस्कार देकर उद्बोधन दिया। आचार्य धर्मपाल जी ने सभी को धन्यवाद ज्ञापन देकर गुरुकुल की सहायता हेतु अपील की तो ग्राम के आर्य युवकों ने लगभग ४ हजार रुपये एवं ५० क्विन्टल गेहूं गुरुकुल को दान में दिया। उत्सव प्रभावशाली रहा।

देवेन्द्रकुमार आर्य, मन्त्री

आर्य कुमार परिषद् गुरुकुल म०वि० ततारपुर के निर्वाचित सदस्य

अध्यक्ष ज्ञानेन्द्रकुमार आर्य
मन्त्री देवेन्द्रकुमार आर्य
कोषाध्यक्ष नेकपाल आर्य
शाखानायक सत्यपाल आर्य

देवेन्द्रकुमार आर्य, मन्त्री

पुरोहित तथा सेवक की आवश्यकता

आर्यसमाज सफदर जंग ऐनक्लेव में एक सुयोग्य विद्वान् पुरोहित तथा सेवक की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति शीघ्र सम्पर्क करें।

एम०एस० बेर प्रधान
ए-२/८३ सफदरजंग ऐन्क्लेव
नई दिल्ली-११००२९

आर्यसमाज की स्थापना

११ नवम्बर सन् १९८४ दिन रविवार को ग्राम सबीरपुर (तहसील देवबन्द, जिला सहारनपुर) में आर्यसमाज की स्थापना, आर्यभिक्षु (भूतपूर्व चरणसिंह आर्य) परिवार सदस्य, गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर (गढ़ रोड, निकट हापुड़) द्वारा की गई। ११ सदस्य सहर्ष इस समाज में प्रविष्ट हुए। निम्नांकित महानुभाव अधिकारी चुने गये।

प्रधान—श्री जहानसिंह जी
मन्त्री—फूल सिंह जी
कोषाध्यक्ष, पुस्तकाध्यक्ष } ओमपाल सिंह जी

ग्राम सबीरपुर व निकटवर्ती क्षेत्रों में वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार लगभग ३ सप्ताह तक कराने का आयोजन गुरुकुल की ओर से किया गया। प्रचार कार्य में महाशय मुकन्दसिंह जी का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

आचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर
गाजियाबाद (उ०प्र०)

आर्यसमाज ततारपुर गाजियाबाद (उ०प्र०)

१९८५ युवा वर्ष घोषित होने पर आर्यसमाज का दायित्व भी युवकों पर सौंप दिया गया और सर्वसम्मति से निम्न अधिकारी निर्वाचित किये गये।

अध्यक्ष—प्रतिपालसिंह आर्य
उपाध्यक्ष—महावीरसिंह आर्य
मन्त्री—डा० ओमवीरसिंह आर्य
उपमन्त्री—समरपाल आर्य
कोषाध्यक्ष—जयपालसिंह आर्य
प्रचारमन्त्री—सुखपालसिंह आर्य
लेखानिरीक्षक—प्रो० वेदपाल विद्याभास्कर एम०ए०

(मन्त्री) डा० ओमवीरसिंह

मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि यह यज्ञाग्नि अखंड रहेगी

जालन्धर एवं पंजाब के सुप्रसिद्ध योगी श्री बाबा मोहनदास जी महाराज ने अपने श्री रघुनाथ मन्दिर के प्रांगण में विशाल संगमरमर की १६ खम्भों वाली यज्ञशाला का उद्घाटन अपने गुरुवर राजस्थान के महान् संत शिरोमणि श्री स्वामी भरतदास जी महाराज शतायु के कर कमलों द्वारा सामवेद पारायण यज्ञ के नौ दिवसीय महान् यज्ञ के अनुष्ठान द्वारा दिनांक २२-३-८५ सर्ग प्रतिपदा को किया। उद्घाटन यज्ञ तथा वेदोपदेश आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री पं० राजगुरु जी शर्मा विद्यावाचस्पति के ब्रह्मत्व में सुसम्पन्न हुआ। बाबा के सैकड़ों श्रद्धालु सिक्ख एवं हिन्दू परिवारों ने इस यज्ञ में भाग लिया। नित्यप्रति रात्रि को श्री बाबा मोहनदास जी जो कि जाने माने शास्त्रीय संगीतज्ञ एवं भक्ति संगीत के रचयिता भी हैं, अपने भक्ति संगीत एवं उपदेश द्वारा लोगों को दुर्गुणों के त्याग एवं ईश्वर प्राप्ति हेतु योग एवं भक्ति का अत्यन्त ही मार्मिक एवं मधुर उपदेश भी करते थे।

यज्ञ की पूर्णाहुति का दृश्य अविस्मरणीय एवं दर्शनीय था। समस्त यजमान पीले वस्त्रों में परिवार सहित उपस्थित थे। ४×४ फुट के विशाल यज्ञ कुंड की धधकती हुई लपटों में श्री बाबा मोहन दास जी ने यज्ञ की पूर्णाहुति प्रदान की।

श्री ब्रह्मा जी ने यज्ञ प्रेमियों को शुभाशीर्वाद प्रदान कर श्री बाबा मोहनदासजी को यज्ञ की सफलता पर बधाई देते हुए श्रीफल एवं १०१/= रुपये भेंट किये जिन्हें स्वीकार करते हुए बाबा जी भाव विभोर हो गए तथा अत्यन्त ही मार्मिक दृश्य उपस्थित हो गया। जब बाबा जी की आँखों में प्रेम के आंसुओं की धारा बह निकली। श्री शर्मा जी ने बाबा से यज्ञ की दक्षिणा की याद दिलाई तथा कहा कि यदि मुझे यज्ञ की दक्षिणा में यह वचन दीजिए कि आप इस यज्ञकुण्ड की अग्नि कभी नहीं बुझने देंगे तथा नित्यप्रति यज्ञ करेंगे। बाबा का कंठ अवरुद्ध हो गया था। अतः उन्होंने सजल नेत्रों से हाथ जोड़कर तथास्तु मात्र कहा। यज्ञ मंडप वैदिक धर्म की जय, महर्षि दयानन्द की जय वेद भगवान् की जय, भारत माता की जय, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र महाराज की जय, योगीराज कृष्णचन्द्र महाराज की जय घोष से वातावरण आनन्दित हो उठा। आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों एवं पंचगव्य द्वारा निर्मित सोमरस यज्ञ वेदी पर वितरित किया गया।

इस यज्ञ में गुरुकुल करतारपुर के आचार्य श्री नरेश जी, गुरुकुल के वेदपाठी और ब्रह्मचारी एवं आचार्य धर्मवीर जी पधारे थे।

बाबा जी ने दूसरे दिन गुरुकुल करतारपुर में पधारकर गुरुकुल के समस्त ब्रह्मचारियों तथा गुरुकुल परिवार को पूर्ण वस्त्र प्रदान किए, एक टीन देसी घृत ब्रह्मचारियों के भोजन हेतु तथा ५ हजार रुपये भेंट किये।

इस वैदिक यज्ञ में पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, महामन्त्री बहिन कमलाजी आर्या एवं कई आर्य परिवार सम्मिलित हुए। यज्ञ का आयोजन सुप्रसिद्ध आर्य सेवक सेठ श्री चतुर्भुज जी मित्तल के सौजन्य से सफल हुआ जो अद्भुत एवं प्रशंसनीय था।

काश भारतवर्ष के अन्य महंत एवं साधु महात्मा भी इस प्रकार आयोजन कर सकें। श्री बाबा मोहनदास जी महाराज का अनुसरण कर सकें।

सुखदवाता

आचार्य की आवश्यकता

कन्या गुरुकुल मंढियार त० नारनौल जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) के लिए प्राज्ञ, विशारद शास्त्री परीक्षाओं के लिए योग्यतापूर्वक शिक्षण के लिए एक सुयोग्य आचार्य की आवश्यकता है। अपनी शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभव आदि के उल्लेख पूर्वक निम्नलिखित पते पर आवेदन भेजें अथवा व्यक्तिगत सम्पर्क करें। रु० ५०० मासिक दक्षिणा के अतिरिक्त भोजन, आवास आदि की सब सुविधायें प्रदान की जाती हैं। कलावती आचार्या
कन्या गुरुकुल मंढियार त० नारनौल, जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

शोक प्रस्ताव

दिनांक ७-४-८५ रविवार को आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी के साप्ताहिक अधिवेशन में श्री मेवालाल जी की अध्यक्षता में आर्य जगत् के युवा विद्वान्, संस्कृत विभाग रणञ्जय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमेठी के प्राध्यापक पं० श्री ज्वलन्तकुमार शास्त्री के पूज्य पिता श्री अम्बिकाप्रसाद जी के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित हुआ, ईश्वर से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें। सुखदेव आर्य (व्यवस्थापक), आर्यसमाज लल्लापुरा, वाराणसी

सत्य क्या है ?

(पृष्ठ २ का शेष)

पूछता." वहां वह भी तो कहता है कि "जानन् विद्वान् नापि मरो भवति किल्बिषी' अर्थात् किसी के पूछने पर उसका उत्तर न देने वाला और या उलटी बात बोलने वाला मनुष्य पाप का भागी होता है। तो क्या ऐसे मौके पर दोनों पापों से बचने के लिए अपने प्राणों को संकट में डालकर युद्ध करने के लिए तैयार हो जाए।

पुराण में एक कथा आती है जिसमे एक सत्यवादी मुनि हारिद्रुत गौतम के घर में कुछ डाकू एक धर्मात्मा पुरुष का पीछा करते हुए आते हैं। सत्यवादी मुनि को मालूम है कि वह धर्मात्मा जंगल की किस झाड़ी मे छिपा है। डाकुओं के पूछने पर पहले तो वह मुनि मौन धारण करके डाकुओं को नहीं बताता पर डाकुओं के उसकी प्रशंसा करने पर कि आप तो सदा सत्य बोलते हैं सत्य को कभी नही छिपाते तो वह सत्यवादी प्रशंसा में फूलकर उसके छिपने का पता बता देता है। परिणाम स्वरूप वे डाकू उसे पकड़कर मार देते हैं। पुराण मे लिखा है कि इसी पाप के कारण उस सत्यवादी मुनि को कुछ समय नरक मे रहना पड़ा।

वास्तव मे सत्य और असत्य की पहचान करना, साधारण काम नहीं है। बहुत टेढ़ी खीर है। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने अपने अपूर्व ग्रन्थ गीता-रहस्य' मे इसका बड़ विस्तार से विवेचन किया है। इसमे जरा भी अत्युक्ति नही है कि 'नास्ति सत्यसमो धर्मं न सत्याद्विद्यते परम्। नहि तीव्रतरं किंचिदनृतादिह विद्यते ॥'

'सांच बरोबर तप नहीं झूठ बरोबर पाप

तुलसी का यह वचन सोलह आने सत्य है कि धरम का रास्ता मुश्किल छुरी की तेज धारा है।' जिस प्रकार सोने के खोटे या खरे की जांच करना कठिन है। कसौटी पत्थर ही उसकी जांच कर सकता है। वैसे ही वेदादि सत्य ग्रंथों का अध्ययन तथा शुभ धारणा बनाने पर ही इस दुरूह कार्य को आसान करने मे वह सहायक हो सकती है। इसीलिए गायत्री मन्त्र मे बुद्धि के लिए याचना की गई है। ●

H ३११ न्यू राजेन्द्र नगर
दिल्ली ६०

लुधियाना में आर्ययुवक सभा की स्थापना

आर्यसमाज अग्र नगर लुधियाना मे आज एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें यज्ञ के पश्चात् वेद प्रचार भजन मण्डली ने प्रभु भक्ति एव देशभक्ति के गीतो द्वारा आर्यजनो को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। इसके पश्चात् आर्य युवक सभा पजाब के सयोजक श्री रोशन लाल शर्मा ने विज्ञान और धर्म के सम्बन्ध मे बोलते हुए बताया कि विज्ञान और धर्म मे कोई विरोध नहीं है बल्कि वे एक दूसरे के पूरक हैं। उन्होंने कहा कि आज के नवयुवक भौतिक ऐश्वर्यों में भटक रहे हैं। जिससे उनकी धार्मिक, राष्ट्र एव समाज सेवा के कार्यों मे रुचि कम होती जा रही है। श्री शर्मा जी ने युवकों से अनुरोध किया कि वे रचनात्मक कार्यों में अधिक से अधिक समय लगाए।

इस सुअवसर पर आर्ययुवक सभा की इकाई का गठन किया गया तथा श्री यश जी आर्य को इसका सयोजक बनाया गया तथा उन्हें अधिकार दिए गए कि युवको को सभा के सदस्य बनायें तथा सगठन को मजबूत करें। आर्यसमाज अग्र नगर के प्रधान श्री कपिला जी ने वेद प्रचार भजन मण्डली तथा आर्य नवयुवकों को उनके कार्यक्रमों के लिए बधाई दी तथा समाज की ओर से १०० रु० भजन मण्डली को इनाम दिया। सभी आर्य भाइयो तथा बहनो को श्री सत्यपाल जी अग्रवाल, मन्त्री की ओर से यज्ञशेष वितरित किया गया। जयघोष एव शान्तिपाठ के साथ कार्यवाही समाप्त हुई।

सुधीर भाटिया
उपसयोजक, आर्ययुवक सभा पजाब

निर्वाचन सम्पन्न

नगर आर्यसमाज साहबगंज की साधारण सभा की बैठक श्री देवीलाल आर्य प्रधान की अध्यक्षता मे मियाबाजार स्थित रमेश प्रसाद गुप्त की दुकान पर वार्षिक निर्वाचन हेतु सम्पन्न हुई जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी एव अन्तरग सदस्य निर्वाचित हुए।

(निम्नलिखित पदाधिकारियों के नाम)

१ श्री देवीलाल आर्य प्रधान
२ ,, किशन प्रसाद वर्मा उपप्रधान
३ ,, भगवान देवी आर्या ,,
४ , मोहनी देवी आर्या ,,
५ ,, रमेश प्रसाद गुप्त (महामन्त्री)
६ ,, राधेश्याम गुप्त (उपमन्त्री)
७ ,, हरिद्वार प्रसाद भवर ,,
८ ,, सरस्वती देवी आर्या ,,
९ , सावित्री देवी आर्या ,,
१० श्री यशोदानन्द केशरवानी कोषाध्यक्ष
११ नन्दरानी गोयल सहा०कोषाध्यक्ष
१२ शृंगारवती आर्या (प्रचारमन्त्री)
१३ ,, ठाकुर देवी
१४ विद्यावती आर्या (यज्ञशाला-व्यवस्थापक)
१५ ,, पारसनाथ गुप्त (पुस्तकाध्यक्ष)
१६ , चन्दरजीत बरनवाल (आय व्यय निरीक्षक)
१७ आदित्य प्रसाद जी (प्रतिनिधि न्याय सभा)
१८ , गुणवन्ती आर्या , ,
१९ , चम्पादेवी आर्या , ,
२० , प० द्विजराज शर्मा जी (धर्माधिकारी एव पुरोहित)

इसके अतिरिक्त अन्तरग सभा के लिए ग्यारह व्यक्तियों का गठन किया गया।

निवेदक
रमेश प्रसाद गुप्त (महामन्त्री)
नगर आर्यसमाज गोरखपुर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वर्ष ६ अंक २४ रविवार, ५ मई, १६८५ आर्य संवत्सर १६६०८५३०८५ वैशाख २०४२ दयानन्दाब्द—१६१

आर्यसमाज दीवानहाल का शताब्दी समारोह

वेद-प्रचार, ग्राम-प्रचार (ग्रामोत्थान) तथा गो-संवर्धन एवं मन्दिर निर्माण के लिए

इक्कीस लाख रुपये की अपील

आर्यसमाज दीवान हाल की अंतरग सभा ने निश्चय किया है कि आगामी दिसम्बर १६८५ मे आर्य समाज की शताब्दी मनाई जाये।

वेद प्रचार, ग्राम प्रचार ग्रामोत्थान तथा गो सवर्धन केन्द्र की सहायता के लिए १ लाख रुपये की तीन स्थिरनिधिया स्थापित की जाए।

इस अवसर पर एक विशाल-समारोह का आयोजन किया जायेगा।

आर्यसमाज दीवानहाल के मन्त्री श्री मूलचन्द गुप्त ने एक घोषणा मे कहा–शताब्दी समारोह की तैयारी जोर शोर से प्रारम्भ हो चुकी है। इस अवसर पर कुछ अन्य योजनाए इस प्रकार हैं।

- □ आर्यसमाज दीवान हाल के विगत एक सौ वर्ष का इतिहास प्रकाशन
- □ नैतिक शिक्षा के लिए विद्यालयो मे विशेष प्रचार योजना
- □ सामाजिक कुरीति दहेज उन्मूलन
- □ युवको एव युवतियो मे मादक द्रव्यो के बढते हुए प्रयोग के साहित्य प्रचार से रोकना
- □ वैदिक आर्ष साहित्य प्रकाशन

इस समाज तथा राष्ट्रहित के पुनीत कार्य के साफल्य के लिए श्री गुप्त जी ने आर्य भद्र पुरुषो से तन मन धन मे सहयोग करने की भी अपील की है।

दक्षिण अफ्रीका नैटाल में

१४, १५, १६ दिसम्बर १६८५ को

आर्य सम्मेलन की तैयारी

दिल्ली सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय से प्रसारित एक सूचना के अनुसार दिनाक १४ से १६ दिसम्बर १६८५ को नैटाल दक्षिण अफ्रीका मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की घोषणा की गई है। इस अवसर पर वैदिक सार्वभौम [illegible]ता के महान विद्वानो के विचार सुनने एव गोष्ठियो का आयोजन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त विश्व के विभिन्न देशो मे रहने वाले हिन्दुओ के साथ सास्कृतिक एव धार्मिक सम्बन्धो को प्रगाढ करने की योजनाओ पर वहा विचार किया जायेगा। सार्वदेशिक सभा इस आयोजन मे अपना विशेष सहयोग देकर विश्व के आर्यों के सम्मुख एक ठोस सक्रिय एव व्यावहारिक योजना रखेगी।

राष्ट्र निर्माण में आर्यसमाज का महत्त्वपूर्ण योगदान –श्री शालवाले

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल का वार्षिकोत्सव आर्यसमाज आर० के० पुरम सैक्टर ३ मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ला० रामगोपाल शालवाले, श्री ब्रह्मदत्त स्नातक, श्री सूर्यदेव, आचार्य वेदेश, श्री चौ० प्रियव्रत आचार्य मनुदेव शास्त्री आदि आर्य नेता एवं विद्वानों ने वर्तमान सन्दर्भ में आर्यसमाज के दायित्व पर प्रकाश डाला। श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने कहा —राष्ट्र के निर्माण मे सदा से आर्यसमाज का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। चाहे वह स्वतन्त्रता सग्राम हो, अथवा दलितोद्धार नारी उत्थान, या समाज सुधार। आज भी राष्ट्रीय एकता व अखण्डता की रक्षा के लिए आर्यसमाज पूरी शक्ति के साथ जुटा हुआ है। कार्यक्रम के पश्चात् प्रीतिभोज का आयोजन किया गया।

नये सवेरे की तलाश

आशा थी नया सवेरा नव जीवन देगा
जड़ चेतन सब के मन का अपनापन देगा।
भूखे पेटो को रोटी के दो टूक और
नगे अनाथ तन को दो हाथ कफन देगा।

पर आशा के विपरीत मीत ये प्रात हुआ
मां के सीने पर भीषण वज्रपात हुआ।
धरती की दिव्य विभूति शून्य मे लीन हुई
दुर्भाग देश की आशा पर आघात हुआ।

इन्सान दरिन्दो के हाथो मारा जाये
इतने पर भी हिंसा का पुचकारा जाय।
कैसा वीभत्स भयानक ये उजियारा है
जो द्वार द्वार अधियारो के द्वारा जाय।

कैसा है यह सकल्प अरे! कैसा प्रण है?
या मृग मरीचिका सा मिथ्या आकर्षण है।
सत्ता की छीना झपटी मे ये हत्याएँ
सब महाकाल के ताण्डव को आमन्त्रण है।

सीमाओ पर शका के बादल महराते
काले विषधर अपने घर मे आते जाते।
विश्वासघात हिंसा प्रतिहिंसा दुष्टवाद
आतकवाद, उद्दण्डवाद बढते जाते।

भयभीत सभ्यताएँ निर्वस्त्र लजाती है
चलते चलते बूढी ऋतुएँ थक जाती हैं।
ऐसा वीभत्स विनाश देखकर धरती पर
सूरज की किरणें आने मे सकुचाती हैं।

यदि अधकार से बचना है तो याद रखो,
मानव दानव के मध्य न भेद विवाद रखो।
इन विषधरों को आंगन में न पनपने दो,
सवादो में निर्णयों का अनुवाद रखो।

— कवि [illegible]
बी—११ [illegible]पुरा दिल्ली—११

सत्संग वाटिका

वेद में परमेश्वर को सर्वस्व समर्पण रहस्य

विन्देश्वरी सिह

जातवेदसे सुनवाम सोमम् अरातीयतो निदहाति वेद ।
स न पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुम् दुरितात्यग्नि ॥

★

व्याख्या यह मन्त्र महर्षि स्वामी दयानन्द ने सन्ध्या मे पुन जोडा है। उपस्थान का सर्वप्रथम मन्त्र सस्कार-विधि मे उन्होने इसे ही बनाया है। वास्तव मे इस मन्त्र को छोडने से सन्ध्या अपूर्ण हो रह जाती।

इस मे प्रथम ईश्वर को जातवेदस् और मन्त्र मे अग्नि से सम्बोधित किया है। तीसरे मन्त्र मे पुन 'जातवेदस् आया है—"उदु त्य जातवेदस देव वहन्ति केतव । दृशे विश्वाय सूर्यम्। मन्त्र मे अग्नि शब्द का प्रयोग मनसा परिक्रमा के प्रथम मन्त्र मे प्राची दिग् अग्नि-रधिपति तथा उपस्थान के दूसरे मन्त्र म भी चित्र देवानामुदगादनीक चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने ।' मन्त्र म—

जातवदस—का अर्थ हुआ जाते जाते वेद जातवेदा यानी जो उत्पन्न मात्र वस्तु को जानता हो। सब मे वनमान अनन्त ज्ञान और अनन्त धन वाला तथा वेद वाणी जिसे भली प्रकार न बताती है। इत्यादि अनेक अर्थ 'जातवेदस के बनते हैं।

जब हम ईश्वर को सर्वत्र व्यापक सब कुछ जानने वाला और हम पर नजर रखने वाला जान लेते हैं तो हम सब पाप एव बुराइयो से बचकर पूर्ण निश्चिन्त हो जाते हैं।

जैसा हम देखते हैं सन्ध्या के अन्य मन्त्रो मे भी यही भाव प्रधानता से व्यक्त किया गया है। जैसे—

शन्नो देवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये। शयोरभि स्रवन्तु न । मन्त्र का पाठ सस्कारविधि की सन्ध्या मे चार बार हुआ है। इस मे भी ईश्वर को सर्व-व्यापक बताया है।

पुन ब्रह्म पुनातु सर्वत्र मे भी ईश्वर को आकाशवत् सर्वत्र व्यापक माना है।

पुन अघमर्षण मन्त्र मे तो ईश्वर की सृष्टि रचना का विधान, सब को वश मे नियम मे रखने की बातें आदि तो हैं ही उन के कार्य पूर्ण शाश्वत एव त्रुटि रहित होते ही हैं। आदि।

पुन मनसा परिक्रमा मे छो छहो दिशाओ में ईश्वर की व्यापकता को अनुभव किया गया है। हर ओर उन के सामर्थ्य बोधक विभिन्न नाम आये ही हैं। विष्णु का अर्थ ही सर्वत्र व्यापक ईश्वर है ही। उपस्थान के दूसरे, तीसरे और चौथे मन्त्र में हम 'सूर्य' नाम के परमेश्वर को आराधते हैं। सूर्य यानि चराचर का आत्मा परमेश्वर। सब को नियम मे रखने वाला आत्मा का भी साथी।

अन्तिम मन्त्र—'तच्चक्षुर्देवहित पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम . ." में भी परमेश्वर को सर्वद्रष्टा चेतन (चक्षु) तथा सृष्टि के पूर्व, पश्चात् और मध्य में सत्य स्वरूप से विद्यमान रहने वाला (पुरस्तात्) सब का करने वाला (उच्चरत्) के रूप मे स्मरण किया गया है। तथा प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र एवम् ओम् न म मे तो परमेश्वर को सर्वत्र व्यापक सृष्टिकर्तादि माना ही है।

जब ईश्वर को अपनी एक-एक चेष्टा को जानने वाला समझ गए तो फिर हम पाप करने की कल्पना भी कैसे कर सकते हैं ? फिर सब बुराइयो से बचकर हम सम्पूर्ण अच्छाइयो से युक्त हो जाते हैं।

वेद में अन्यत्र भी ईश्वर की सर्व-व्यापकता का उपदेश प्रचुर मात्रा मे किया गया है। प्रसिद्ध ईशावास्योपनिषद् जो कि यजुर्वेद का ही चालीसवा अध्याय है, का प्रथम मन्त्र ईश्वर की सर्वव्यापकता की घोषणा करता है। ईशावास्यमिद सर्वम् यत्किञ्च जगत्या जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध कस्य स्विद्धनम्।' मे भी इस ससार में जो कुछ भी जगत् है सब परमेश्वर से आच्छादित है, का ही वर्णन है। अत यहा परमेश्वर त्याग पूर्वक भोगो को भोगने का उपदेश दे रहे है। किसी की भी वस्तु मात्र की जरा भी इच्छा (लालच) मत कर, का दिव्य सदेश दे रहे हैं।

इसी प्रकार से "स पर्यगाच्छुक्रम कायम् .. . ' "परीत्य भूतानि परीत्य लोकान्, परीत्य सर्वा प्रदिशो दिशश्च .."

'तद् विष्णो परम पद सदा पश्यन्ति सूरय '

'स नो बन्धुर्जनिता, स विधाता, धामानि वेद भुवनानि विश्वा '

इत्यादि सैकडो मन्त्रों में परमेश्वर की व्यापकता का उपदेश है।"

इस प्रकार अनन्त ज्ञान, अनन्त बल, अनन्त सामर्थ्य वेद के द्वारा वर्णित परमेश्वर जो अहर्निश हमारा सुख करने, रक्षा करने में पूर्ण समर्थ है, को सर्वत्र मौजूद जानकर हम निर्भय, निश्चक, आज्ञाकारी, पूर्ण निष्पाप, बन ही सकते है।

उसी परमेश्वर को हम 'सुनवाम सोमम्' जितने अपने सर्वोत्तम पदार्थ हैं, वह सभी समर्पित कर देते हैं। परमेश्वर के लिए ही सर्वस्व समर्पण करने की नेक सलाह इस मन्त्र में है।

यजुर्वेद के ही 'आयुर्यज्ञेन कल्पताम् श्रोत्रम् यज्ञेन कल्पताम्, वाक् यज्ञेन कल्पताम्, मनो यज्ञेन कल्पताम् आत्मा यज्ञेन कल्पताम् यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्, स्वर देवागन्म प्रजापते प्रजा अभूम..." इत्यादि मन्त्रों मे तथा वेद मे अन्यत्र भी ईश्वर के लिए सर्वस्व समर्पण की नेक सलाह दी गई है।

जब सब जीव हम परमेश्वर के लिए (समर्पण) (ईश्वर प्रणिधान) प्राण आत्मा और मन के प्रेम भाव से आत्मादि सत्य द्रव्यो का कर देते हैं तब हम चिन्ता मुक्त होकर फलासक्ति से रहित होकर कर्म क्षेत्र मे उतरते हैं।

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय—(ईशावास्योपनिषद्) के दूसरे मन्त्र में भी तो "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शत समा । एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।" मे भी "अनासक्ति भाव से करने योग्य कर्म को करते हुए ही हम कर्मासक्ति (बन्धन से मुक्त रह सकते हैं।" यही बताया है।

फिर हमे असफलता कभी दुखी कर ही नही सकती है।

योगदर्शन मे भी आया है—"समाधि-सिद्धिरीश्वरप्रणिधानात् ।' सब जीव ईश्वर को अर्पण करने पर हम समाधि को सुगमता से सिद्ध कर ही लेते है।

पुन 'अभ्यासवैराग्या तन्निरोध ।" चित्त को एकाग्र करने में अभ्यास और वैराग्य प्रबल साधन कहे हैं। अभ्यास में भी हम बिना वैराग्य के कैसे लग सकते हैं। अत जीव साधन में कल्याण एवं मोक्ष के मार्ग में वैराग्य ही एकमात्र प्रबलतम साधन होता है।

क्योंकि संयम (धारणा, ध्यान और समाधि) निर्बीज समाधि का बहिरंग ही है। पर वैराग्य ही [illegible] है। पूर्ण वैराग्य बिना सर्वस्व ईश्वरार्पण कभी हो नहीं सकता है। अतः [illegible] मार्ग में सफलता की कुञ्जी यही है। साथ ही योग दर्शन के साधनपाद में प्रथम सूत्र में ही—तप स्वाध्यायेश्वर-प्रणिधानानि क्रियायोगः ॥१॥ में सर्वस्व सप्रेम ईश्वरार्पण करने को क्रिया मे गिना है। तथा दूसरे सूत्र मे इस का उद्देश्य—"समाधिभावनार्थ क्लेशतनूकरणार्थश्च" ॥२॥

इस के सम्यक अनुष्ठान से समाधि-सिद्धि करता है और अविद्यादि पांचों क्लेशो को उत्तरोत्तर सूक्ष्म करता चलता है।

आसक्ति लोभ मोह शोक ईर्ष्या-द्वेष, विषय तृष्णादि बुराइयो से वह बचता जाता है। परमेश्वर की असीम कृपा से वह व्यवहार और परमार्थ में भी पूर्ण समर्थ हो जाता है। ईश्वर की कृपा और सहाय से क्या नहीं हो सकता ?

इसे नियम मे भी गिना है जिस का फल अशुद्धि क्षय और ज्ञान दीप्ति बताया है। इस से योग के विघ्नादि भी दूर होते हैं।

अत पूर्ण प्रेम भावना से सर्वस्व ईश्वरार्पण करने का दिव्य सदेश यहीं है। जिस से ईश्वर हम पर कृपा करके हमें मोक्ष सुख दे। जैसा कि यजु० ४०। मन्त्र "ओ३म् हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्। योऽसावादित्ये पुरुष सोऽसावहम्। ओ३म् ख ब्रह्म।" मे भी परमेश्वर को सर्वत्र व्यापकादि माना है। इस के भावार्थ मे देव दयानन्द जी लिखते हैं "जो मेरी शरण को प्रीति और सत्याचरण के भावों से प्राप्त होता है, तो मैं उस की अन्तर्यामी रूप से अविद्या को नष्ट करके उस की आत्मा को प्रकाशित करके उस के गुण कर्म-स्वभाव शुद्ध बनाकर, सत्य के स्वरूप का आवरण स्थापित कर योगज शुद्ध विज्ञान देकर सब दुखों से छुड़ाकर मोक्ष सुख को प्रदान करता हू।"

उस के बाद "अरातीयतो निदहाति वेद" भाग आता है। जिस में ईश्वर से "अराती दुष्ट, पापी दुराचारियों के धन ऐश्वर्यादि के नित्य दहन की प्रार्थना है। जिस से वह हमारा कुछ भी नुकसान न कर सकें। वह हमेशा हमारे आधीन रहें।" [illegible] की प्रार्थना है। यही भाव मनसा परिक्रमा के छहों मन्त्रो मे हर बार आया है। "रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्योऽस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि य वय द्विष्मस्त वो जम्भे दध्म ।" का अर्थ करते हुए महर्षि देव दयानन्द लिखते हैं—जो परमेश्वर के सर्वशक्तिमत्त्वादि गुण एवम् उन के रचे हुए पदार्थ हमारी रक्षा करने वाले और पापियों को बाणों के समान पीड़ा देने वाले हैं, उन को हमारा नमस्कार हो। जो हम से द्वेष करते हैं और जिन दुष्ट प्राणियों से हम द्वेष करते हैं उन्हें [illegible] के मुख में [illegible] के समान [illegible] करते हैं। आदि।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

★ वचन-सन्देश ★

आर्य कौन है ?

जो शान्त वैर को उजागर नही करता, गर्व नही करता, हीन भावना से ग्रसित नही होता, मैं सकट मे हू, ऐसा सोचकर अनुचित कार्य नहो करता, श्रेष्ठ आचरण वाला ही आर्य कहलाता है।

'महाभारत

सत्पुरुषो की वाणी

सत्पुरुषो की उत्तम वाणी दूसरो को जगाने के लिए, सत्यासत्य के विवेक के लिए, लोक कल्याण के लिए, जगत् म शान्ति के लिए और जीवन मे वास्तविक तत्त्व के उपदेश के लिए प्रवृत्त हुआ करती है।

"ज्ञानार्णव"

बडे आदमी

ससार को ऐसे व्यक्तियो की आवश्यकता है, जो धन के लिए अपनी आत्मा का घृणित सौदा नही करते जिनके रोम-रोम मे ईमानदारी हो जो सत्य प्रकट करने मे बडी से बडी शक्ति के सामने नही झुकते, कठिन कार्यो को देखकर हिचकते नहो जो अपने नाम का ढिढोरा न पीटकर साहसी कार्य करते जाते है। मेरी दृष्टि मे वही बडे आदमी है। —स्वेट मार्डन

जिसने अपने स्वरूप को नही जान लिया है वह परमात्मा को नही जान सकता। इसलिए परमपुरुष परमात्मा को जानने के लिए पहले अपने को ही निश्चय पूर्वक जानना चाहिए।

' ज्ञानार्णव '

सम्पादकीय

आरक्षण विरोधी आन्दोलन में जलता गुजरात

गुजरात मे दिन प्रतिदिन आरक्षण विरोधी आन्दोलन हिसक होता जा रहा है। गुजरात सरकार ने जब कि अतिरिक्त आरक्षण के निर्णय पर अमल रोक दिया है और हाईकोर्ट ने छात्रो को अपना आन्दोलन समाप्त कर देने के लिए कहा है। इस आन्दोलन ने पहले साम्प्रदायिक मोड लिया तो अब जाति युद्ध मे परिवर्तित होना जा रहा है। हिसा की आग फलती जा रही है और मानवता कराह रही है। हिसा चाहे सम्प्रदाय के नाम पर हो या जाति के नाम पर उसे उचित नही ठहराया जा सकता। आन्दोलनकारियो का कहना है, 'यह आन्दोलन योग्यतावाद और कुशलता प्राप्त करने के अधिकार की रक्षा के लिए अन्तिम लडाई है। उनके अनुसार आरक्षण से सामाजिक और शैक्षणिक तौर पर पिछड वर्गो का ऊपर उठाने और उन्हें मध्यम वर्ग की मुख्यधारा क साथ एकाकार करने का सिद्धान्त बेतुका है।

वास्तविकता ता यह ह कि योग्यता और कुशलता की न कोई जाति होती है और न कोई सम्प्रदाय। आरक्षण को यह लडाई एक लम्बे अरसे से चल रहा है। फरवरी, मार्च, १९८१ को भी गुजराती छात्रो के दिलो दिमाग मे आक्रोश उभरा था। तब गुजरात के चार मेडिकल कालेजा म ३३०० छात्र पढते थे। एम० बी० बी० एस० मे अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए २४ प्रतिशत स्थान आरक्षित थे। १९७८ मे करी फारवड पद्धति लागू की गयी। स्नातकोत्तर कक्षाओ मे शल्य चिकित्सा, प्रसूति विज्ञान, रेडियोलोजी और पथालोजी विभाग मे ६५ स्थान थे, जिनमे से २५ प्रतिशत आरक्षित थे। आरक्षित स्थानो पर ५५ प्रतिशत के बजाय ५० प्रतिशत पर दाखिला देने का प्रावधान किया। इसका परिणाम यह हुआ कि पैथोलोजी और रेडियोलोजी को ५० सीटो पर आरक्षित स्थान प्राप्त छात्रो का कब्जा हो गया और शत प्रतिशत स्थान आरक्षितो के हो गये।

छात्रो ने इस ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट किया और इसके बाद करी फारवर्ड पद्धति वापिस ले ली गयी। लेकिन छात्र उच्च डिग्री मे योग्यता आवश्यक की माग को लेकर अड रहे।

गुजरात की जनसख्या पौने तीन करोड है जिनमे २८ लाख ५० हजार हरिजन, ३९ लाख वनवासी हैं। छोटे ग्रामो मे बसे हरिजन ३२ प्रतिशत खेती के काम मे जुड हैं। महानगर और नगरो मे ३ लाख ४० हजार हरिजनों मे से कुछ आरक्षण पद्धति का लाभ उठा पाये हैं।

१९८१ मे गुजरात सरकार द्वारा नियुक्त बक्शी आयोग की रपट के अतर्गत ४२ पिछडी जातियो के लिए ५ प्रतिशत आरक्षण स्वीकार किया था। इसके बाद फिर आन्दोलन चला और हिसा होती रही। छात्र नैतिकता को छोड उद्दण्ड होते रहे। छात्रो के वग ने माग की, सभी छात्रो को परीक्षाओ मे उत्तीर्ण किया जाये। विश्वविद्यालय ने परीक्षा न लेने की माग स्वीकार कर ली। बाद मे उच्च न्यायालय मे मामला दायर किया गया। न्यायालय ने अपने निर्णय मे बिना परीक्षा उत्तीर्ण करने की कडी आलोचना का। इसके बाद सरकार ने नया आयोग जिसमे न्यायमूर्ति श्री राण के अलावा तीन सदस्य और थे नियुक्त किया। इस आयोग को सिफारिश पर गुजरात सरकार ने उच्च शिक्षा के सभी स्तरो पर आरक्षण की सीटो मे ४९ प्रतिशत बढोत्तरी का निर्णय ले लिया। इसी कारण फिर आग भ क [illegible]। एक के बाद एक अनेक मोड इस आन्दोलन मे आते रहे हिसा का नगा नाच चलता रहा। इसी बीच पुलिस भी निरकुश हुई। कुछ असामाजिक तत्त्वो को भी खुला खेलने का अवसर मिला कानून व्यवस्था के परखचे उडते रहे। छात्रो का उद्दण्ड होना और राज्य सरकार का उपेक्षित व्यवहार दोनो ही निदनीय हैं। आदोलन से समस्या का हल तो नही निकल सकता किन्तु हमारे राष्ट्र के कर्णधारो को बुद्धिजीवियो के विचार इस विषय मे लेने चाहिए। इस विषय को वैचारिक बहस का विषय तो बनाया जाना चाहिए किन्तु आन्दोलन और हिसा का नही। महादेवी वर्मा ने दु खी होकर कहा है 'आस्थाहीन छात्रो के सामने कोई स्वप्न नही है' इसके साथ यह भी दु ख का विषय है कि कुछ तथाकथित राजनेता भी लोकैषणा के लोभ मे ऐसे आन्दोलनो की पीठ थपथपाने लगते हैं।

सरकार को जनमत का ध्यान रखकर शीघ्र उचित कदम उठाने चाहिए अन्यथा देश की सुदृढ दीवारे हिलने लगगी।

योग्यता और कुशलता को प्रश्रय देना वास्तव मे राष्ट्र के हित मे है। जाति या वर्ण की दीवार आरक्षण के नाम पर खडी करना भी उचित नही है। वैदिक वर्ण व्यवस्था ही इसका एकमात्र उचित समाधान है। जिसमे कोई ऊँचा नीचा नही। जो जिस काय के योग्य है उसे वही कार्य दिया जाये। अच्छा हो महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वर्ण व्यवस्था पर हमारे राजनेता और बुद्धिजीवी वर्ग विचार कर जिससे भविष्य मे इस तरह के प्रश्न ही न उठे।

—यशपाल सुधांशु

स्वामी दयानन्द सरस्वती की आध्यात्मिक जगत् को देन

आचार्य धर्मपाल विद्याभास्कर एम० ए०
प्राचार्य—गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर

हर जगह मौजूद है पर
वह नजर आता नहीं।
योग साधन के बिना
कोई उसे पाता नहीं।

आर्यसमाज के उत्सव पर प्राय सभी भजनोपदेशकों से अपने विचार व्यक्त करने से पूर्व मैं यह पद्य वाक्य सुनकर बचपन में यह सोचता था कि वह योग साधन क्या है? जो ईश्वर को साक्षात् देखने का अवसर प्राप्त कर सके। मन में जिज्ञासा बढ़ती चली गई और पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द जी महाराज त्रिवन्दनीय के सामने अपना प्रश्न उपस्थित किया तो उन्होंने कहा कि अभी बालक हो यह विषय आपकी समझ में नहीं आयेगा। अभी प्रारम्भ में सन्ध्या करो व प्रातः मेरे पास आया करो। नियमित रूप से दिनचर्या प्रारम्भ की शौचादि के पश्चात् योगासन स्नान सन्ध्या और स्वाध्याय स्वामी जी कराने लगे। बोले यही योग साधन का प्रथम पाठ है। श्रद्धा और लगन से मैं दैनिक अभ्यास में लग गया। योगी तपस्वी पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के दर्शन हुए। बहुत प्रभावित मेरे ऊपर हुआ। पूर्ण योगी है यह धारणा करके सेवा में लग गया तो प्राणायाम और ब्रह्मचर्य पर उपदेश दिया। तब से लेकर आज तक उसी व्रत और नियम का पालन कर रहा हूं। मैंने आगे भी योग सम्बन्धी साहित्य पढ़ा और तदनुसार अभ्यास करते करते एक दिन सन्ध्या के अन्दर विचित्र अनुभूति और प्रसन्नता हुई और मुझे महर्षि दयानन्द जी महाराज पर अगाध श्रद्धा हो गई कि स्वामी जी महाराज ने हमारे ऊपर कितना बड़ा उपकार किया है? ईश्वर प्राप्त करने के लिए आज समाज में कितना पाखण्ड और सम्प्रदायवाद पर निराधार बुद्धि और धन का अपव्यय किया जा रहा है। मैंने बड़े-बड़े स्वामी साधु महात्मा विद्वान् जो भी मिला कि वह ईश्वर विषय जानता होगा पूछा कि कुछ ईश्वरानुभूति हुई? उत्तर सभी के नकारात्मक ही मिले और विषयान्तर हो गये। आर्य विद्वानों और महात्माओं से भी चर्चा की तो कुछ पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त साधना अनुभूति आदि से सर्वथा अनासक्त उत्तर मिला तो विस्मय होता है कि आई मात्र विश्व में आर्यसमाजी ही ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं और वे इससे सर्वथा अनभिज्ञ है तो फिर कोई भी सम्प्रदायवादी कैसे प्राप्त कर सकता है? कुछ लोग क्या स्वयम् आर्यसमाजी भी यही कहते हैं कि सन्ध्या में मन नहीं लगता। ईश्वरोपासना मन्त्र मन्त्रोच्चारण करके ५ मिनट में अपना कर्त्तव्य पूरा करके समझते हैं कि अब हम पूरे ईश्वर भक्त हो गए हैं एक जन्म नहीं सात जन्मों तक भी आप इस प्रकार सन्ध्या करके ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकते। जबकि स्वामी जी महाराज ने कम से कम १ घण्टा योग प्रतिदिन प्रातः करने का आदेश दिया है। उस समय में बैठ कर कई कई बार मन्त्रोच्चारण करते रहें अथवा कुछ और विधि है। इस पर जब चिन्तन किया गये तब महर्षि की योग्यता एवं अद्भुत विलक्षणता का ज्ञान होता है।

महर्षि की देन—

आध्यात्मिक जगत् में स्वामी जी ने एक नई क्रांति की है जिसका प्रादुर्भाव उनके जीवन के किशोर वय में हुआ था। मूर्तिपूजा से घृणा हुई योगी एवं महात्मा सन्यासियों को पहचानकर अपनी योग साधना की। उसके पश्चात् हमारे कल्याणार्थ सन्ध्या का निर्माण योग दर्शन के आधार पर किया। योग दर्शन में अष्टांग योग को महत्त्व दिया है। इसी प्रकार सन्ध्या का निर्माण किया और यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान से समाधि की स्थिति तक हम सन्ध्या के माध्यम से पहुंच सकते हैं। उसका जीवन में क्रियात्मक रूपेण पालन किया जाये। सन्ध्या में बैठकर प्रत्येक मन्त्र के शब्दों पर गम्भीरता से जीवन का विचार करते हुए आचरण करें। सर्वप्रथम प्राणायाम करके मन को एकाग्रचित्त होने पर शिखा बन्धन करते हुए गायत्री मन्त्र द्वारा बुद्धि का दान ईश्वर से प्राप्त करके मैं सन्ध्या क्यों कर रहा हूं? उद्देश्य सुख की वृष्टि हो दुःख दूर हो और जीवन शान्त होकर कल्याणकारी बने। यहीं से यम का पालन अर्थात् अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह का पालन ओं वाक् वाक् से प्रारम्भ होता है और मार्जन मन्त्र के साथ नियम का पालन प्रारम्भ होता है—शौच सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधान इनका क्रमशः मन्त्र में विनियोग किया है। ओं तप पुनातु पादयोः से आसन की सिद्धि करके पूरे शरीर में अंग प्रत्यंग को पवित्र एवं बलवान् बनाकर प्राणायाम की साधना ओं भूः प्राणायाम मन्त्र से की जाती है। प्रत्याहार की साधना अघमर्षण मन्त्रों के द्वारा करते हुए ईश्वरीय शक्ति से अभिभूत होकर जीवन के कल्मष को साफ किया जाय और मनसा परिक्रमा के मन्त्रों द्वारा धारणा की साधना की जाती है अर्थात् ईश्वर मेरे आगे पीछे दायें बायें नीचे ऊपर चारों ओर है उसमें मैं घिरा हुआ सुरक्षित बैठा हूं। ऐसा निश्चय करके पर उपस्थान मन्त्रों के द्वारा ध्यान केन्द्रित किया जाता है। निर्विषय होकर मन ईश्वर के ध्यान में चिन्तन में मग्न हो जाता है और पुनः समाधि तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। इसी भावना से अपने जीवन का समर्पण ईश्वर के प्रति करते हुए कामना की जाती है कि हे ईश्वर! दयानिधे आपकी कृपा से हम शीघ्र ही धर्म अर्थ काम और मोक्ष को प्राप्त कर लें तब आनन्द में अभिभूत होता हुआ भक्त नमस्कार मन्त्र द्वारा अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है। इस प्रकार हमें सन्ध्या करने का निर्देश स्वामी जी महाराज ने दिया है वह योग के आधार पर है ईश्वर भक्ति। इस प्रकार से महर्षि ने ईश्वर भक्ति को योग से सम्बन्धित किया है क्योंकि योग साधन के बिना उसे कोई पा सकता नहीं। यह एक आध्यात्मिक जगत् को देन है। हमें इसी आधार से सन्ध्या करके ईश्वर प्राप्त करने के लिए प्रयास करना चाहिए। गान्ध पथा विवतेऽर्माय। ★

भारतीय अध्यात्म का विज्ञान से अटूट सम्बन्ध

डा० अर्धेन्दु शेखर चक्रवर्ती

कलकत्ता २१ मार्च वेदों और उपनिषदों के प्रकाश में भारत के प्राचीन ऋषि महर्षियों ने अब से हजारों हजार वर्ष पहले मानवता के समग्र कल्याण हेतु जो सूत्र गठित कर दिये थे आधुनिक विज्ञान तेज रफ्तार से उसी ओर अग्रसर है। आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द आधुनिक काल के उन तीन सर्वश्रेष्ठ मनीषियों में प्रथम स्थान पर रखे जायेंगे जिन्होंने विश्व मानवता को उपलब्ध प्राचीनतम संस्कृत वाङ्मय की दृढ़ भित्ति पर खड़े कर वैदिक ईश्वरवाद और अध्यात्म का विज्ञान के साथ अटूट सम्बन्ध स्थापित कर दिया। दयानन्द के इस दिशा में अवदान के बाद योगी श्री अरविन्द और स्वामी विवेकानन्द की भी सेवाएं स्मरण रखी जायेंगी।' ये उद्गार हैं सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक साहा इंस्टीट्यूट आफ न्यूक्लियर फिजिक्स के डा० अर्धेन्दु शेखर चक्रवर्ती के जो उन्होंने गत रात्रि शहीद मीनार मैदान में आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित एक विराट जनसभा में बोलते हुए व्यक्त किये।

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के तत्त्वावधान में स्थानीय आर्यसमाजों की ओर से यह आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न विद्वानों ने अपने उद्गार व्यक्त कर आर्यसमाज की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। पूर्वांचल में वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० उमाकान्त उपाध्याय ने आज राष्ट्र के समक्ष उपस्थित संकटों का विवेचन करते हुए जनता का आह्वान किया कि वह आर्यसमाज से अपना नाता जोड़ कर स्वयं अपना तथा देश का भी भला करना सीखे। हैदराबाद की डा० सुनीति एम०ए०पी०एच०डी० ने सगर्व पूर्वक घोषित किया कि आर्यसमाज कोई मत पन्थ या सम्प्रदाय न होकर सभी मानवों के कल्याण का एक सर्वांगीण आन्दोलन है।

सभा की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री धर्मानन्द जी आर्य ने की तथा मुख्य अतिथि के आसन से प्रसिद्ध पत्रकार श्री विश्वम्भर नेवर (सम्पादक दैनिक छपते छपते) ने आर्यसमाज के कृतित्व की सराहना कर उसके और अधिक सक्रियता से अग्रसर होने की आवश्यकता बताई। श्री चान्दरतन दम्माणी ने बताया कि भारत एवं भारतीयता के अस्तित्व पर आये खतरे से उबारने की जिम्मेदारी से भी आर्यसमाज पीछे नहीं हट सकता और यह कार्य हमारे बिना राजनीति में भाग लिये राज्य की नीतियों को प्रभावित करने की क्षमता प्राप्त किये बिना असम्भव है। आर्यसमाज को चाहिए कि समस्त राष्ट्रवादियों के एक ऐसे सांझा मंच के तैयार करने में वह पहल करे जो सर्वप्रथम सत्ताधारी दल से राष्ट्रीय हित में समान नागरिक कानून सम्पूर्ण रक्षा अवैध धर्मान्तरणों पर रोक धर्मपीठियों पर कड़ी नजर जैसी कुछ अत्यावश्यक बातों को लागू कराने हेतु कारगर उपाय करे।

अन्य वक्ताओं में प्रमुख थे स्वामी जीवानन्द श्री महेन्द्रपाल आर्य श्री सत्यनारायण शर्मा एवं सभा प्रधान श्री कृष्ण बमन। सभास्थ अन्य महानुभावों में श्री फूलचन्द आर्य श्री रसियाराम गुप्ता व श्री श्रीराम आर्य के नाम उल्लेखनीय हैं और जिनका आयोजन को सफल बनाने में सक्रिय योगदान रहा। आर्यसमाज बड़ा बाजार एवम् आर्यसमाज विधान सरणी आर्यसमाज हावड़ा एवं कोलकाता के अधिकारियों के सहयोग का ही फल था कि कार्यक्रम इतना अधिक सफल रहा। सभा का संयोजन श्री दम्माणी कर रहे थे तथा धन्यवाद ज्ञापन किया विधान सरणी आर्यसमाज के मंत्री श्री राजेन्द्र जायसवाल ने। अन्त में वैदिक शान्ति पाठ और जय घोषों के साथ सभा विसर्जित हुई।

—चान्दरतन दम्माणी
कार्यक्रम संयोजक
आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
के दीक्षान्त समारोह पर
दीक्षान्त-भाषण

द्वारा——प० सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार

ओ३म्

तत्सत्"

'सत्य शिव सुन्दरम् ।"

'सत्य पर धीमहि ।"

कुल पवित्र जननी कृतार्था,
वसुन्धरा पुण्यवती च तेन ।
अपारसवित्सुखसागरेऽस्मिन्,
लीन परे ब्रह्मणि यस्य चेतः ॥

इन शब्दो के साथ, सौम्य स्वभाव नवदीक्षित नवस्नातको ! मेरा स्नेह और सत्कार तुम्हें स्वीकृत हो ।

विश्वविद्यालय गुरुकुल कागडी के अधिकारीगण ने इस वष दीक्षान्त भाषण देने के लिए निमन्त्रित कर मुझे अनुगृहीत किया है, इसके लिए मैं सब का आभारी हू । मुझे अपने गुरुकुलो से विशेष स्नेह है, जो स्वाभाविक है, क्योंकि मैं भी आपकी तरह से ही, गुरुकुलो मे ब्रह्मचारी रहते हुए, इसी कुलभूमि से स्नातक रूप में दीक्षित हुआ था । मेरे मन, बुद्धि और आचार-विचार पर गुरुकुल शिक्षा का अमिट प्रभाव रहा है और उसके द्वारा ससार की सब तरह की भिन्न भिन्न विपदाओ, सकटो और आधि-व्याधियो मे से गुजरते हुए, प्रभु मे अगाध विश्वास रखते हुए किसी भी रूप मे सदा कर्मयोगी नि-श्रेयस् मार्ग का दर्शन करता रहा हू । जीवन यात्रा मे समय-समय पर गुरुकुल बन्धुओ से मिलते हुए सदा ऐसा अनुभव हुआ है जैसे अपने सगे-जैसे गुरु-भाइयों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो । इस मिलन में कितना स्नेह, श्रद्धा, सरलता और पारस्परिक विश्वास प्राप्त होता है, इसके बारे मे तो यही कहूगा—' स्वय तदन्त करणेन गृह्यते ।

अपने इस कुल की आत्मा का स्वरूप कुलपिता श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्व से अनुप्राणित था । वैदिक ज्ञान की विशुद्ध धारा, गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा, शिक्षा दीक्षा की सरस्वती के प्रवाह रूप मे अक्षुण्ण रूप से प्रवाहित हुई थी । परन्तु बीच मे आ गयी बहुत-सी चट्टानो से टकरा गई और भिन्न-भिन्न धाराओ में बहने लगी । मुख्य धारा कुछ विलुप्त-सी प्रतीत होती है—जब से भारत विप्लव या विभाजन की अवस्थाओं मे से गुजर रहा है, भविष्य ने इस सब का निर्णय करना । इसी से यह कहने का साहस करता हूँ कि महर्षि दयानन्द की वैदिक श्रद्धा फिर से किस रूप मे उभरेगी यह अब भविष्य का विषय हो गया है । वर्तमान तो धूमधूसरित या धूमिल है ।

वैदिक वाङ्मय में, "व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षया दक्षिणामाप्नोति दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति,श्रद्धया सत्यमाप्यते ।' इस मन्त्र का सन्देश हमारी सम्पूर्ण शिक्षा का उपसंहार बता रहा है । ब्रह्मचर्य व्रत है जो बड़े-बड़े श्रद्धा की प्राप्ति और ज्ञान [illegible] का [illegible] अनुभव,

यही परमार्थता है जिससे अभ्युदय और नि श्रेयस् का मार्ग प्रशस्त होता है । 'यो बच्छ्रद्ध स एव स ।

इन दिनों मे ससार विशेष रूप मे दो विभागो में बट गया है । दोनों का स्वरूप दक्षिणपक्ष (Right Wing) और वामक या वाम पक्ष (Left Wing) मे है । नि श्रेयस् मार्ग की तरफ सदा दक्षिणपक्षीय आते हैं और क्रांतिमय लौकिक प्रेयमार्गी वामक पक्ष के हैं । ये सत् और असत् की विचारधाराएं हैं । एक तरफ दैवीय प्रवृत्ति उभरती है और दूसरी तरफ आसुरी प्रवृत्ति । परिणाम दैवी सपत् का सचय आसुरी सपत् की प्राप्ति होता है । इस पर गीता के विशेष प्रवचन ध्यान देने योग्य हैं । ससार को इन दो दृष्टियो मे आसानी से समझा जा सकता है । दीक्षा से दक्षिण पथ का अनुसरण करना ही वैदिक वाङ्मय का आदेश है । श्रेय मार्ग अभ्युदय को समुचित रूप से स्वय ही खीच लाता हैं और इसस धर्मसिद्धि प्राप्त हो जाती है— 'यतोऽभ्युदयनि श्रेयससिद्धि स धर्म ।' अत धर्म का सदा ध्यान रखना उचित है— 'धर्मो धारयते प्रजा ।

निराहार रहने मे लोगो ने व्रत-दीक्षा को समझ लिया है । यह आरोग्य का एक साधन है । हमारी महान् शिक्षाएँ इससे बहुत आगे बढ जाती हैं । योग दर्शन मे महर्षि पतञ्जलि ने यम नियमों के विवेचन मे यमो को अर्थात् अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमा , एत। जातिदेशकालसमयानवच्छिन्ना सार्वभौमा. महाव्रतम् , कहकर ससार को सार्वभौम महाव्रत का सन्देश दिया है जिससे समस्त ससार सुख और शान्ति को आसानी से प्राप्त कर सकता है । ससार को सार्वभौम महाव्रत में दीक्षित किया जाना शिक्षा का सार्वभौम मौलिक अग माना है जिससे शिक्षा की पूर्णता होती है । योगिराज पतञ्जलि के यम-नियम (Law and Order) एक शाश्वत सनातन आर्य धर्म हैं । इनके प्रति निरपेक्षता तो आत्महत्या के रूप में ही समझी जानी चाहिए । यही वैदिक धर्म मार्ग है ।

ससार के प्रथम कानूनदाता महर्षि मनु के "वचकं धर्मलक्षणम् ' एव "आचार: प्रथमो धर्म.", "न हि सत्यात् परो धर्म " अथवा ' अमृतात् सत्यमुपैमि' आदि कथन तथा वैदिक धर्म का मानव धर्म सदा ही [illegible] को "सर्वभूतहिते रताः",

' वसुधैव कुटुम्बकम् सर्वजनसुखाय', सर्वजनहिताय ' मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे आदि से मनुष्यो की सार्वभौम विचारधारा की ओर ध्यान खींचता है । हमारे ऋषियो ने या धर्मग्रन्थो ने दैशिक दृष्टि (Nationalist View) को तुच्छ समझते हुए मानव मात्र को भाई बन्धु रूप में ही पहचाना है । ' माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या ', पृथिव्यै शकर नम ' "नमो मात्रे पृथिव्यै ' आदि वैदिक पृथिवी सूक्त के मन्त्रोपदेश और निर्देश हमारी सस्कृति को ससार के उच्चतम शिखर पर ले जाते हैं ।

भौतिक विज्ञान की उपलब्धियो से ससार एक बहुत छोटी इकाई बन गया है । रेडियो टेलीविजन, टेलीफोन कम्प्यूटर आदि के आविष्कार तथा तेज रफ्तार से उडने वाले हवाई जहाजो से दुनिया अब एकदेशीय है । हमारे सब विचार अब सार्वभौम दृष्टि से ही होने चाहिए । ससार को विनष्ट करने वाली प्रवृत्तियो—बडे-बड़े एटम बम मिसाइल्स जगी जहाज, विषैली गैसें कीटाणु बम आदि के हथियारो का सम्बन्ध प्राणिमात्र के जीवनो से है । आवश्यकता है कि जीवनमात्र को नष्ट करने वालों—आसुरी प्रवृत्ति वालो के प्रति विरोध भावना बचपन से ही बच्चो की शिक्षा का अभिन्न अग हो । इससे जहा सदाचार या धर्मसंस्थापना होती है और नैतिकता के धमचक्र का प्रवर्तन होता है मनुष्यो को सुरक्षा पाने में जनता के नैतिक प्रभाव का दल प्राप्त हो जाता है । पृथिवी सूक्त के वैदिक सदेश को एक सार्वभौम शाश्वत धर्म के रूप मे ससार की सब सस्थाओं शिक्षणालयों, धमसस्थानो मे गर्व से रख सकते हैं । कोई भी मतमतान्तर इससे उच्च रूप में नेतृत्व न दे सकेगा । शब्द स्पष्ट हैं—

"सत्य बृहद् ऋतमुग्र दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ पृथिवी धारयन्ति, सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्नी, उरु लोक पृथिवी न कृणोतु ।' "मानो द्विक्षत कश्चन मा नो द्विक्षत कश्चन ।"

नवदीक्षित स्नातको, यहाँ पर दीक्षा' शब्द पर विशेष ध्यान देना । साथ के वाक्य वचनों को भी याद रखना—

माता मे पृथिवी देवी,
पिता देवो महेश्वर ।
बान्धवाः भारत सर्वे,
स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥

इसके बाद मैं आपको वाचिक-दीक्षा की तरफ भी आकर्षित करना चहूगा । हमारी शिक्षा दीक्षा मे यज्ञ की प्रधानता है —' यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म । हमे पञ्च-महायज्ञो पर चिन्तन को समाप्त नही करना चाहिए । राष्ट्रीय दृष्टि से राजसूय तथा राष्ट्रमेध यज्ञो का भी नवीन रूप मे विधान समझना चाहिए । इससे हम चक्रवर्ती राज्य (One World Welfare State) की दिशा को भी दृष्टि मे रख सकते हैं । भिन्न भिन्न अन्तर्राष्ट्रीय सगठन सगतिकरण रूप से यज्ञ रूप मे प्रवृत्त हो रहे हैं । हम भी इस तरफ आगे बढना है । इन यज्ञों मे लौकिकता का विशेष प्रभाव न हो सके परन्तु आध्यात्मिकता पनपती हो, इसे ध्यान मे रखना चाहिए ।

ससार मे आधुनिक वैज्ञानिक युग मे मनुष्य आकाश मे दूर से दूर पहुँच रहा है । चन्द्रमा पर तो वह अपने पैर भी फैला चुका है । धरती के विस्तृत भूखण्डों पर, उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवो के विशाल प्रदेशो पर भी पर्यवलोकन हो रहा है । समुद्रों और धरती की गहराइया भी मापी जा रही है । इन सब बडी बडी दूरियो और गहराइयो को मापते हुए लौकिक पुरुषो ने अपनी बडी स बडी विजयो के झण्डे गाड़ हैं । परन्तु इस धरती पर बसने वाले मानवो के हृदयो मनो और बुद्धि की गहराइयो को मापना अभी तक सीखा नही गया है । मनुष्य के मन और हृदय को अन्दर से जीतने मे और उसमे प्रेम सहानुभूति उत्साह, सहायता तथा धीरता आदि का शान्तिमय सन्देश नहीं दिया सका है । यह मार्ग अभी तक प्रशस्त नही हुआ । यहा पर आकर भौतिक विज्ञान असफल हो गया है । यही से हमे श्रेयमार्ग को प्रशस्त करना है और यह यज्ञमय जीवन से प्रारम्भ होता है । बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे का ध्यान रखत हुए हमे वर्तमान मे द्रव्य यज्ञो के प्रति बढ़ती प्रवृत्ति को अन्ध श्रद्धा की तरफ जाने से रोकना होगा । हमे यज्ञों की विविधता तथा विशालता को भी समझना चाहिए । अयतेन्द्रियता से ये यज्ञ ज्योतिर्मय हो जाते हैं । समझना चाहिए कि—

द्रव्ययज्ञा तपोयज्ञा
योगयज्ञा तथापरे ।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च
यतय. संशितव्रता ॥
श्रेयान् द्रव्यमयात् यज्ञात्
ज्ञानयज्ञ परतप ।
सर्वं कर्माखिल, पार्थ
ज्ञाने परिसमाप्यते ॥
नाय लोकोऽस्त्ययज्ञस्य,
कुतोऽन्य कुरुसत्तम ॥
श्रद्धावान् लभते,
ज्ञान तत्पर संयतेन्द्रिय ।
ज्ञान लब्ध्वा परां शान्ति-
मचिरेणाधिगच्छति ॥
श्रद्धापूर्वक विभिन्न यज्ञों से, यज्ञमय

(क्रमश)

व्यामपीठ--

उपनिषत् कथा-माला--२

सुख का मार्ग—मनुष्यों का कर्त्तव्य और संसार की वास्तविकता

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

वेद के एक मन्त्र में आता है कि संसार क्या वस्तु है और मनुष्य का कर्तव्य क्या है? वेदान्त वालों ने संसार को मिथ्या बताया है।

वेदों में अर्थ क्या है? जो वस्तु आई है उसे किसी न किसी समय नाश भी होना है। बुद्धिमानों ने यही निश्चय किया है। बुद्धिमान् यह भलीभांति जानते है कि वैदिक समय की बोलचाल में और आजकल की बोलचाल में बड़ा अन्तर पड़ गया है। अतएव यह समझना कुछ कठिन हो गया है कि अश्वत्थ शब्द के अर्थ वर्णों ने संसार के किए हैं। प्रचलित भाषा में इसका अर्थ पीपल के हैं। इस संसार को अश्वत्थ इसलिए कहते है कि ज्ञान नहीं कल कोई व्यक्ति विशेष यहां रहेगा कि नहीं। इसलिए इसका नाम अश्वत्थ है। क्या आप बता सकते हैं कि आप जैसे पहले आये थे वैसे ही अब भी हैं? यदि आप कहें कि हम वैसे ही है तो न आप बढ़ सकते हैं न घट सकते हैं।

कल्पना करो! एक मनुष्य रावी के किनारे जा रहा है। एक आदमी उससे पूछता है कहां जाते हो? उसने उत्तर दिया रावी के तट पर [illegible] दरवाजे तक चलकर गया। उससे पूछो क्या तुम थक गए हो? यदि उसे एक पग चलने से थकावट न हो तो वह जहां इच्छा हो चला जाय।

एक आत्मा को प्यास लगी। दूसरे आदमी ने शीतल जल का गिलास लेकर उसकी जिह्वा पर एक बूंद जल टपका दिया। उससे पूछो क्या तुम्हारी प्यास बुझ गई? यदि एक बूंद पानी पिला दो उसकी प्यास नहीं बुझती। सरसों के दाने लो। उसमें से एक दाने को काटे पर रखो। देखो कांटा बताता है या नहीं? इसी प्रकार एक एक मिनट में पदार्थ बदलते रहते है। इसलिए वेदों ने कहा है कि 'यह संसार अश्वत्थ है। प्रत्येक वस्तु में बदलने की प्रकृति विद्यमान है चाहे इसे समझकर लाभ उठा लो चाहे न जानकर हानि।

पौराणिक शब्द अश्वत्थ (पीपल) में यह गुण है कि वायु के आने से उसके पत्ते हिलते हैं। दूसरे किसी वृक्ष के पत्ते इतनी शीघ्रता से नहीं हिलते। इसके पत्ते तनिक सी वायु चलने पर भी तुरन्त हिलने लग जाते हैं।

हम लोगों को मरते हुए भी देखते है और पैदा होते हुए भी। किन्तु विचार कम करते हैं। बुद्धिमानों ने सोचा है कि जब बच्चा पैदा होता है तो हम हंस पड़ते हैं जब मर गया तो रो पड़े। किन्तु बच्चा पैदा होते समय रोता है। परन्तु किसी ने यह कभी नहीं सोचा कि बच्चा रोता क्यों है? हम तो खुशी मनाते हैं वह तो इस लिए रोता है कि उसकी आत्मा को पूरा ज्ञान है किन्तु उसमें बोलने की शक्ति नहीं। उसको ज्ञान है। वह विचारता है कि मैं प्रकाशित स्वरूप को छोड़कर अविद्या के भवन में जा रहा हूं वह समझता है आकाश में उड़ने वाला एक पक्षी पिंजरे में आ गया है और ये लोग पैसे बांटते फिर रहे हैं वह कभी चुप होकर सोता है और सोचता है कि अच्छा अब मैं बढ़ूं! इस प्रकार अज्ञान का परदा आ जाता है।

प्रत्येक मनुष्य की यही अवस्था है जितना हम मरने से डरते हैं मरना उतना बुरा नहीं। यदि मृत्यु न हो तो प्रत्येक प्राणी एक त्रि[illegible] में फंस जाए। यदि मरने के अनन्तर फिर [illegible] तब तो यह बड़ा कठिन है। जेलखाने में एक बन्दी है। उसे कहा जाय कि कल तुम्हें बाहर जाना है। यदि उसे स्वतन्त्र हो जाना है तब तो वह कुछ कठिन नहीं समझता। किन्तु यदि लाहौर के जेलखाने से अमृतसर जेल में जाना है तो कठिन है। ऋषि दयानन्द महात्मा बुद्ध और अन्य बड़े योगी मृत्यु से क्यों नहीं डरते थे? क्योंकि उन्हें ज्ञात था कि हम में और परमात्मा में केवल शरीर का ही भेद है। इसलिए जितनी शीघ्र ही यह शरीर गिरा दिया जाय उतना ही अच्छा है। तुम इस रहस्य को नहीं जानते। जिस बन्दी को कल छूटना है उसको प्रसन्नता है। क्योंकि वह जानता है कि कल मैं स्वतन्त्र हो जाऊंगा। किन्तु हमें इस बात का ज्ञान नहीं इसीलिए हम मरने से इतना डरते है।

कृष्ण जी महाराज ने गीता में आत्मा और शरीर के सम्बन्ध में लिखा है। आत्मा जब शरीर में आता है तो पहले बच्चा होता है फिर कुछ समय पीछे युवा अवस्था को पहुंचता है फिर वृद्ध अवस्था को। यह भेद केवल दस वर्ष में होता है एक बच्चा जब युवा अवस्था में आता है तो उसी में मग्न रहता है। बच्चे की अवस्था में वह स्वतन्त्र था, किन्तु उसने कभी नहीं कहा कि मैं बच्चा बन जाऊं। जवानी गुजरने पर वह बूढ़ा हुआ, अब बुढ़ापे में ही मग्न रहता है। इसके बाद चौथी भी एक अवस्था है अर्थात् यह शरीर छोड़कर दूसरा धारण करना। फिर उस में रोना कैसा? जब बच्चे से जवान और जवान से बूढ़े होते समय आप नहीं रोते तो शरीर छोड़ने पर रोना कैसा? जो धीर पुरुष है वह तो व्याकुल नहीं होगा। शेष सब व्याकुल होंगे। आप यदि धीर गम्भीर बनना चाहें तो कल ही बन सकते हैं। ऋषि दयानन्द महात्मा बुद्ध गुरुनानक देव को बाल अवस्था में कौन जानता था कि ये बड़े होकर महापुरुष हो जायगे। अतएव यह जान लो कि सारी विद्या एक वर्ष के बालक में होती है। जैसे पृथ्वी में सब कुछ विद्यमान है। किन्तु उसके निकालने के लिए बीज डाला जाता है। गेहूं गन्ना चना आदि के बीज धरती में डाले जाते हैं और फिर वे पृथ्वी से उग आते हैं। किन्तु यह कभी नहीं होता कि गेहूं का बीज डाला जाय और चना उग आये। बस यही हाल बच्चों का है उन्हें धीर गम्भीर बनाना आपके अधीन है।

एक लड़का था उसका नाम ऊधो था। उसके दो भाई और पिता थे। किन्तु बड़े दुर्बल। वे तीनों मिलकर बाजार में उसे पीट रहे थे। वह बड़ा घबराया हुआ था। एक आदमी मेरे साथ जा रहा था। उसने कहा अरे तेरी शक्ति को क्या हुआ? देखने में तो तू इतना हट्टा कट्टा है। यह सुनते ही वह उठ खड़ा हुआ और उन्हें परे धकेल दिया। शक्ति तो उसमें विद्यमान थी परन्तु यह बताने की आवश्यकता थी कि उसमें शक्ति है।

महता जैमुनि वकालत करते थे। वकालत छोड़ दी कोयले का व्यापार किया उसमें भी पर्याप्त उन्नति की। उसे भी छोड़ दिया। उपदेशकी की चार पांच वर्ष में ही जापान अमेरिका तक हो आये। इसी प्रकार आप में भी वे सब शक्तियां और विद्याएं विद्यमान हैं परन्तु आप इनसे काम लेना नहीं जानते। इसी लिए कृष्ण महाराज ने अर्जुन से कहा है कि 'धीर पुरुष घबराता नहीं'। अतएव आप सब भी धीर बन सकते हैं।

धीर पुरुष के लक्षण ये नहीं कि वह गरीब या अमीर होता है। धीर पुरुष वही है जो दुःख-सुख आने पर सब अवस्थाओं में एक सा रहता है। जो मृत्यु के भय और जीवन के आनन्द से भरपूर नहीं होता वही पुरुष धीर है। क्योंकि वह समझता है कि जीवात्मा का शरीर को त्याग देना ही मरण है। बुद्धिमान् दोनों अवस्थाओं में एक ही जैसे रहते हैं।

फोर्ट सेण्डेमन में एक ठेकेदार की स्त्री का देहान्त हो गया। वह बड़े शोक में था। बहुत रोता था। पंजाब में तो रोने का ढंग ही निराला और विचित्र है। कोई अच्छा दिन आया नहीं कि माताओं ने इकट्ठी बैठकर शोक मनाने के लिए रोना आरम्भ किया जहां अच्छे दिन यह रोना-धोना भी खूब होते हैं वास्तव में यह रोना नहीं होता केवल दिखावा ही होता है। रोना किस बात का? प्रभु की धरोहर थी उसने वापस ले ली।

अस्तु उस ठेकेदार का एक क्लर्क था। उसने उसे रोते देखकर पूछा बाबू जी रोते क्यों हो? ठेकेदार ने कहा 'मेरी स्त्री का देहान्त हो गया। क्लर्क ने कहा 'इतना न रोओ आप तो पढ़े लिखे हैं।" ठेकेदार बोला कि मेरी तो स्त्री का देहान्त हो गया है और आप कहते हैं कि मैं न रोऊं एक पक्षी भी कोई पालता है, और जब वह उड़ जाता है तो रोना तो आता ही है।'

वह नहीं समझता कि वह तो बकरों का एक रेवड़ है। वे सब के सब कसाई के पास ले जा रहे हैं। अब क्या मालूम कसाई किस बकरे को पहले लेकर हलाल कर डाले। अच्छा आमों से भरा हुआ एक टोकरा किसी ब्राह्मण के आगे रख दो। और उससे कहा कि आम चूस लो। आपको क्या मालूम कि वह कौन सा आम उठाकर चूसेगा जिसको उठायेगा उसे ही चूस डालेगा। इसके लिए रोना नहीं चाहिए। इसीलिए ज्ञानी और बुद्धिमान् रोते नहीं।

आर्यों के काल में बच्चे रोते थे, किन्तु जवान और बूढ़े कभी नहीं रोते थे। यदि कभी रोना आता भी था, तो उन्होंने आबादी से बाहर एक घर बनाया हुआ होता था जिसे रोना आया वह वहां चला गया और रो आया। वे जानते थे कि हम सब को ही मौत आनी है। जैसे आपके शरीर में इन्द्रियां हैं। इन इन्द्रियों का अपना अपना भिन्न भिन्न कार्य है। आंख का काम है देखना तुम कान से कहो तो कभी देख सकता है कान देखने का काम नहीं कर सकता केवल सुनने का काम करता है। यहां कोई किसी पर आक्रमण नहीं करता सबका मार्ग भिन्न-भिन्न है किन्तु सब मिलकर शरीर के लिए काम कर रहे हैं।

नेत्रों ने आम को देखा नाक ने सूंघा और आत्मा तक उसका ज्ञान पहुंचा दिया। अपना काम यह देखना है कि वह रस से भरा हुआ है कि नहीं अंगुलियों के हवाले किया। अब वह खट्टा है या मीठा, यह जिह्वा ने देखा। कार्य सब के भिन्न-

भिन्न हैं परन्तु अन्त में काम सब का एक ही है।

पशुओं की ओर देखो ! प्रकृति ने उन्हें जो पाठ पढ़ाया है उसे वे भूलते नहीं। जब बच्चे देने का समय आता है तब वे घोसला बना लेते हैं। जब बच्चे बड़े हो जाते हैं तब वह घोसलों की कुछ चिन्ता नही करते। शाखाओं पर ही निर्वाह कर लेते हैं। उनमें नर अपनी नारी का कितना ध्यान रखता है? किन्तु मनुष्यो में ऐसा नहीं मनुष्य अपनी स्त्री को देखकर जो भाव प्रकट करता है दूसरी स्त्री को देखकर भी वही करता है।

पशुओ की ओर देखो ! प्रकृति ने उन्हें जो पाठ पढाया है उसे वे भूलते नही। जब बच्चे देने का समय आता है, तब वे घोसला बना लेते हैं। जब बच्चे बडे हो जाते हैं तब वह घोसलो की कुछ चिन्ता नही करते। शाखाओ पर ही निर्वाह कर लेते हैं। उनमे नर अपनी नारी का कितना ध्यान रखता है? किन्तु मनुष्यो मे ऐसा नही, मनुष्य अपनी स्त्री को देखकर जो भाव प्रकट करता है दूसरी स्त्री को देखकर भी वही करता है।

गौ नाम है पृथ्वी का। पृथ्वी में आप एक ही स्थान पर कई बीज डाल दो। जैसे गन्ना मिर्च गेहूं चना जो सब अलग अलग उगते आयेंगे। मिर्च मे कड़वापन (तिरमिरेपन) का भाव आ जाता है गन्ने में मिठास का। यह कभी नहीं होता कि मिर्च मे गन्ने का सा रस आ जाये। इसी प्रकार आप भी ससार मे रहे। ऐसे ही रहने से ईश्वर की प्राप्ति होगी और ऐसे ही मरने से सब झगड़े मिट जायेंगे।

किसी ने कहा था —भाई रोते क्यो हो? शक्ल ही ऐसी है। ऐसा ही ससार का भी हाल है। मोटर को देखो, अगले चक्र (पहिये) नम होते हैं पिछलो मे वायु अधिक होती है। यदि सब पहियो मे वायु समान (एक वायु) हो तो चलना कठिन हो जाये।

आपके शरीर में बीमारी है किन्तु आप सदैव ही रोगी नही रहते। कभी-कभी बीमार होते हैं। एक कवि ने कहा है—

दुःख बराबर सुख नहीं
जो दिन थोड़े होय।

जिस आदमी को दर्द अथवा कष्ट हो, दो तीन दिन ज्वर चढ़ जाये अधिक नही कि वर्ष के वर्ष बीमार पड़ा रहे उसका शरीर हल्का हो जाता है। मन में शान्ति आ जाती है। फिर वह धीरे धीरे स्वस्थ हो जाता है। इसी लिए वेदो मे कहा है उसी को परमेश्वर मिलता है जो मनुष्य यह जान ले कि मैं सदैव ससार में रहने के लिए नहीं आया, तो कोई मनुष्य दूसरे के साथ अन्याय न करे। प्रत्युत सब परस्पर बड़े प्रेम मे दुःख-सुख मे सम्मिलित रहें।

आजकल ससार मे झूठ का राज्य है। एक मुकदमा न्यायालय मे आता है। प्रत्येक पक्ष झूठे झूठे साक्षी एकत्र करता है। जो कम झूठे साक्षी पैदा कर सकता है वही दोषी बन जाता है। किन्तु परमेश्वर के न्याय मे इससे बड़ा अन्तर है। आप कल्पना करते हैं। झूठ—सच बोलकर और अन्याय से धन इकट्ठा करके अपना कुटुम्ब पालते हैं। परन्तु क्या परमेश्वर के सामने इस बात का उत्तरदायी कोई और होगा? नहीं कदापि नही। इसलिए जब मनुष्य को यह ज्ञात हो जाये कि मुझे एक दिन ससार छोड़ जाना है यदि वह इस बात को सच जान और मान ले तो वह कदापि इस प्रकार अपने परिवार की पालना न करे। यह कुछ कठिन नहीं, पुरुषो को घबराना नही चाहिए। कोई कठिनाई एसी नही जो सुगम न हो जाये। ससार के सब काम उतने ही सुगम हैं जितने वे कठिन दिखाई देते हैं। एक कवि ने कहा है—

दुनिया मे रहके सब से
जुदा हो तो जानिये।
राजा कभी बिगड़ के
भिखारी हो तो जानिये॥

कमल जल मे रहता है परन्तु वह जब चाहे पानी को त्याग भी सकता है। इसी प्रकार मुर्गाबी भी पानी मे रहती है वही अण्डे देती है बच्चे निकालती है, किन्तु जब चाहे अलग भी हो सकती है। कमल के पत्ते पर जल डालो कभी नही ठहरेगा। एक कौवे को लो पानी मे डुबकी दो मर जायेगा। कबूतर को लो उसे भी डुबोओ मर जायेगा, क्योंकि कौआ और कबूतर पानी मे नही उड़ सकते परन्तु मुर्गाबी की यह दशा नही। पीपल के पत्ते को पानी मे गिरा दो भीग जायेगा किन्तु कमल का पत्ता नही।

धनवान् पुरुष प्राय अपने बच्चे पालने के लिए आया (नौकर) रख लेते हैं। वे बच्चे को खिलाती हैं पिलाती हैं नहलाती हैं सुलाती हैं ऐसा प्रतीत होता है मानो बच्चे की मा वही है। बच्चा भी अपनी मा को भूला हुआ है। सब काम वही करती है परन्तु यह जानते हुए कि बच्चा मेरा नही। इसी प्रकार बुद्धिमान् पुरुष भी सब काम करते हैं किन्तु यह जानते हुए कि हमें यहा सदैव नही रहना। जो मनुष्य ऐसा करता है वह सदैव सुखी रहता है। ऐसा जानने वाले मनुष्य की बड़ी प्रशसा होती है क्योंकि उसने इसका अभ्यास कर रखा है।

हमारे माता पिता स्वय ही समझ लें कि हमें चाहे कितना भी कष्ट क्यो न हो, किन्तु हमारी सन्तान को कष्ट न हो तो बच्चे के दिल मे भी अपने आप ही यह विचार उत्पन्न हो जायेगा कि 'मैं कोई ऐसा कार्य न करू जिससे मेरे माता पिता का निरादर हो। अध्यापक यह जाने कि यह विद्यार्थी मेरा जीवन है विद्यार्थी को स्वयमेव यह विचार होगा कि मेरे किसी भी काम से मास्टर जी के सम्मान मे त्रुटि न हो। प्राचीन समय मे जब विद्यार्थी गुरुकुल से अपनी शिक्षा पूरी करके निकलता था तो आचार्य यह कहा करते थे कि 'हे शिष्य ! आचार्य के लिए धीर बन और ससार मे यश प्राप्त कर। आजकल तो हमारे सब काम धन देने से होते हैं। कोई शिष्य शिक्षा प्राप्त नही कर सकता जब तक वह अपने प्रोफेसर को कालिज की फीस न दें परन्तु प्राचीन काल मे ऐसा न था। प्रत्युत शिष्य की वृद्धि फलना फूलना तथा उसका यश ही आचार्य के लिए था।

दूसरे का उपकार करना ही अपना उपकार होता है। आजकल के नवयुवक शीतल जल मिलने पर भी बर्फ डालते हैं परन्तु बर्फ वाले जल से प्यास नही बुझती इसीलिए तो यह प्रत्येक मनुष्य वृद्ध दिखाई देता है। कारण उसमे गरमी होती है। अपने पैसे को आप ऐसे पदार्थों पर व्यय न करो वरन् ऐसे भोज्य खाओ जो पुष्टिकारक हो। सोडावाटर पीने से क्या लाभ है। आजकल के नवयुवको को यदि कहा जाये कि भाई रबड़ी मलाई खाया करो तो उत्तर मिलता है कि 'पचती नही।' भाई ! पचे कैसे? सोडावाटर तथा बर्फ ने तो आपके शरीर मे पाचन शक्ति ही नहीं छोड़ा।

एक पुरुष मुझे मुरादाबाद से बरेली ले जाने के लिए आया मार्ग मे उसने सोडावाटर की तीन बोतलें चटकी। मैंने पूछा भाई इसके पीने से क्या लाभ? इसकी जगह यदि तुम रबड़ी खाते तो तुम मे शक्ति आती। उसने कहा कि पचती ही नही। चील को देखो। जब वह धरती से उड़ती है तो दोनो परो को हिलाकर उड़ती है। जब वह आकाश मे पहुंचती है तो इनके पर ठहरे हुए दिखाई देते हैं। जब कभी उनकी समता मे अन्तर पड़ जाता है तो वह फिर अपने परों को हिलाकर उसे पूरा कर लेती है और फिर पर निश्चल हो जाते हैं। इसी प्रकार बच्चे बचपन से ही अभ्यास न करें तो सब ठीक हो जाता है।

इन नियमों पर आप विचार कर सकते हैं। ससार से मेरा सम्बन्ध क्या है? इत्यादि। इससे तुम ठीक मार्ग पर चल सकोगे। जैसे परिश्रमी बालक पास हो जाता है और जनता उसकी बड़ी स्तुति करती है और कहती है कि 'यह बड़ा सयाना तथा परिश्रमी युवक है। परन्तु परिश्रम न करने वाला चाहे फेल भी हो जाये तो सब यही कहते हैं कि उसके भाग में पास होना था ही नहीं तो वह पास कहा से होता। इसी प्रकार यदि इस ससार मे रहते हुए यह अभ्यास कर कि मैं क्या हू? इस ससार तथा शरीर के साथ मेरा क्या सम्बन्ध है? तो उसे मृत्यु से कभी भी भय न होगा।

आये थे जिस बात को
भूल गयी वह बात।
अब क्या ले चलें प्रभू को,
खाली दोनो हाथ॥

प्रयत्न करो सचाई मे प्रेम करो। सीधे मार्ग पर चलो। देखो एक लड़का था उसने दूसरे लड़को से कहा कि मेरे पिता को चाचा कहो कई तो मान गये कई न माने। परन्तु यह ठीक मार्ग नही। यदि वह प्रत्येक बालक के पिता को चाचा कहे तो उसके पिता को सब अपने आप ही चाचा कहने लगेंगे। इसलिए स्वयं करके दिखाओ।

यदि मैं चाहूँ कि और लोग मेरी सहायता करें तो मुझे स्वय औरों की सहायता करनी चाहिए। यही सीधा मार्ग है। फारसी मे एक लोकोक्ति है जिसका भावार्थ यह है यदि तू चाहता है कि मैं तुझे हाजी कहू तो तू मुझे हाजी कह। यही सब से अच्छी विधि है जिससे ससार मे सुखपूर्वक जीवन व्यतीत हो सकता है।

एक लड़का था। उसका पिता प्रति दिन अपने पिता अर्थात् उस बालक के पितामह के साथ बुरा बर्ताव करता था। उसे गन्दे बर्तनो मे भोजन देता था। बच्चे ने अपने पिता से कहा कि आप बाबाजी के साथ ऐसा क्यों करते हो? ये आपके पिता हैं। उसने बालक से कहा कि तू बड़ी बुद्धि वाला है। तुझे इसका ज्ञान नही। दूसरी बार फिर यही बातें हुई। पिता ने उसके दो तीन थप्पड़ भी रसीद कर दिये यह बालक कुछ बुद्धि वाला था। उसने सोचा यह मार्ग उल्टा है। उसने एक कापी बना ली और जब भी उसका पिता उसके पितामह को कोई बुरी बात कहता तभी वह उसे उस कापी मे नोट कर लेता। जब उसके पिता ने कहा कि इस बूढ़े को अच्छे बरतनों मे भोजन न दो। तो उसने झट नोट कर लिया। एक दिन उसके पिता ने कहा कि यह तुम सदैव क्या लिखते रहते हो? लड़के ने उत्तर दिया कि आप बाबा जी को जो कुछ कहते हैं वही मैं लिख लेता हू जिससे कल जब आप बूढ़े होंगे तो मुझे ये सब बातें याद रहें। तब से उसके पिता ने बाबा को बुरा भला कहना छोड़ दिया। सीधा मार्ग यही था।

वेदो के नियम बहुत शुभ हैं किन्तु हमे उन पर सीधी तरह चलना नहीं आता। सोचा समझा तो आप इस मार्ग पर आ जाओगे और सुख के भागी बनोगे।

सरकार ने श्री हरिहरानन्द करपात्री उनके वेदार्थ पारिजात ग्रन्थ पर एक लाख रुपयो का पुरस्कार देना स्वीकृत किया है, जिसे उनके मरणोपरान्त उनसे सम्बद्ध सस्था को दिनाक १५-४-८५ को राजभवन मे आयोजित समारोह मे दिया गया।

सामान्य जनता नही जानती कि उक्त पुस्तक मे कितना विष घोला गया है। इसमे वेदो के सम्बन्ध मे भ्रान्तिपूर्ण वचन और तर्क-विरुद्ध अवैज्ञानिक सिद्धान्तो को मान्यता दी गई है। इस युग म वेदो के उद्धारक ऋषि दयानन्द और उनके अनुयायियो को पदे पदे गालियाँ दी गयी है। पढने वाला उसकी भूमिका पढकर ही समझ जायगा कि इस प्रकार लिखना ईर्ष्या और द्वेष से परिपूर्ण है।

ऐसे ईर्ष्या द्वेष से भरपूर वैरागी को या उसकी सस्था को पुरस्कार देना गरीब जनता के धन का केवल दुरुपयोग है और सरकार द्वारा स्वीकृत नीति के भी विरुद्ध है। निम्न प्रश्न उपस्थित है—

१ क्या उक्त ग्रन्थ की जाँच निष्पक्ष विद्वानो द्वारा की जा चुकी है ?

२ क्या इसमें प्रतिपादित सिद्धान्त न्याय और तर्क तथा विज्ञान के अनुकूल एव बुद्धि-पूर्वक हैं ?

३ क्या यह पुरस्कार पाखण्ड और अन्धविश्वास तथा साम्प्रदायिकता को दूर करने वाला होगा ?

इन तीनो का उत्तर है—नही, नहीं, नही।

वेदार्थपारिजात सम्बन्धी वक्तव्य

वीरेन्द्रमुनि शास्त्री

श्री करपात्री के वक्तव्यों के कुछ नमूने देखिये—

१ (आर्यसमाजी) चोरी करने वाले समय चोर बिल्ली के समान चुपके से घर मे घुसते हैं किन्तु ये आक्रमणकारी धूर्त सबके सामने उजाले मे वेदमाता के केशो को खीचते हैं। (भूमिका पृष्ठ १४)

२ जनता और शास्त्र के साथ भी छल-कपट करने की आर्यसमाजियो तथा अन्य कुछ लोगो की प्रवृत्ति खेद-जनक है। ये लोग सामने ही आँख मे धूल झोकने का काम करते हैं। (पृष्ठ १३)

इत्यादि बातो के कारण इस ग्रन्थ को तो जब्त किया जाना चाहिए था, इसके विपरीत १ लाख का पुरस्कार दिया जा रहा है। आश्चर्यम् !

कुछ अन्य नमूने देखिये—

१ त्रिपुर सुन्दरी से आलिङ्गित परमात्मा शिव को हम प्रणाम करते हैं। (पृष्ठ २)

(क्या परमात्मा का यही काम है कि त्रिपुर सुन्दरी से चिपटा रहे ?)

२ लोकवञ्चनहेतवे वञ्चनाकुशलेन वै। (श्लोक १७, २० पृष्ठ २)

[जनता निर्णय करे कि वचक कौन है, दयानन्द या करपात्री ?]

३ प्रथम भाग के ९०८ पृष्ठो मे से ४२५ मे दयानन्द-मत खण्डन करते हुए उन्हें अनेक गालियाँ दी गई हैं—

(१) दयानन्द का लेख प्रमत्त-प्रलपितम् (पागलकी बकवास) है। ५४१

(२) 'होम का करना आवश्यक है' — यह सब भी गलत है। पृष्ठ ४८१

(३) कुमारिल ने मानो दयानन्द को लक्ष्य करके ही कहा था—मूर्खमर्कटा (बन्दर) पिशाचा आदि। [पृष्ठ ५८५]

(४) स्वामी दयानन्द बाइबिल—कुरान आदि अनार्य ग्रन्थों से प्रभावित होने के कारण ही यह मानने लगे हैं कि ईश्वर के अतिरिक्त अन्य उपास्य नही है। (पृष्ठ २६१)

क्या एकमित् तमु ष्टुहि' (ऋग्वेद ६ ४५ १६), पतिरेक आसीत् (ऋ० १० १२१.१, य० २३, १) न द्वितीयो स एकवृदेक एव (अथर्व वेद १३ ४.१६) आदि वचन वेद मे नही है, जो उपर्युक्त निर्मूल आक्षेप किया गया ? क्या यह वचन बायबिल, कुरान के हैं ? क्या एक ईश्वर की उपासना को छोडकर अनेक जड देवताओ की उपासना बताने वाला और होम का विरोधी ग्रन्थ एक लाख रुपये पुरस्कार का अधिकारी हो सकता है ? (नही हरगिज नही)

पृष्ठ ५६० पर लिखा है— यह सब दयानन्द का मत चार्वाक का उच्छिष्ट ही है'। अब विचारक बतायें कि परम ईश्वर विश्वासी आस्तिक दयानन्द को चार्वाक नास्तिक बताना असत्य है कि नही ? जिन्होने स्व-स्थापित आर्यसमाज के पहले-दूसरे नियम मे ईश्वर को आदि-मूल बताकर उसी की उपासना करनी योग्य बताया, अपने सभी ग्रन्थो और प्रवचनो को जिन्होने ईश्वर-प्रार्थना से आरम्भ किया, अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश मे जिन्होने पहले समुल्लास में ईश्वर के सौ नामो की व्याख्या की तथा आगे सातवें समुल्लास मे ईश्वर को सिद्ध कर चार्वाक मत का खण्डन किया—उन्ही को नास्तिक बताना जनता की आखो मे धूल झोकना और उसे बरगलाना नही है?

जो स्त्रियो और शूद्रो को वेद पढाने का घोर विरोधी था, ऐसे सकीर्ण विचार धारा वाले व्यक्ति को १ लाख रु० इनाम, आश्चर्यम् !

अत जनता को सावधान किया जाता है कि वह ऐसे भ्रष्ट, द्वेषयुक्त ग्रन्थ पर पुरस्कार दिए जाने का घोर विरोध करे और सरकार को जनता का धन ऐसे व्यर्थ अनुपयोगी कार्यों मे खर्च करने स रोकने का प्रयास करे। सरकार से प्रार्थना है कि वह ऐसे साम्प्रदायिक लोगो को पुरस्कार न दे। ससद-विधानसभा मे प्रश्न उठायें जायें।

—श्रीनारायण वाजपेयी, वीरेन्द्र-मुनि शास्त्री (आदर्श प्रेस) लखनऊ
उपाध्यक्ष विश्ववेद परिषद्
डी ८१७ महानगर लखनऊ

शिक्षा नीति में परिवर्तन

शिक्षाविदो की यह राय रही है कि शिक्षा का सर्वोत्तम माध्यम मातृभाषा होती है। किन्तु स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद भारत मे विपरीत लहर चली है और अब धडाधड एसे स्कूल खुल रहे हैं जिनमें शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषा नही, अग्रेजी होती है। इसस नन्हें नन्हें बच्चो पर कितना भार बढ रहा है, इसका कोई अनुमान नही लगाता। कई बच्चो की प्रतिभा अग्रेजी माध्यम के बोझ के कारण कुठित हो जाती है। अन्य देशो मे प्रयत्न यह होता है कि बच्चे सबधित विषय का अच्छा ज्ञान प्राप्त करे, यहाँ इस बात पर जोर दिया जाता है कि बच्चे अग्रेजी की कविताएँ रटें तथा अन्य बातो के लिए अग्रेजी अच्छी प्रकार बोलने मे विशेष समय लगायें, चाहे अन्य विषयों में उनका ज्ञान अधकचरा ही रह जाए।

भारत सरकार शिक्षा नीति मे परिवर्तन करने का विचार कर रही है। सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन यह होना चाहिए कि ... हायर सेकेंडरी तक शिक्षा भारतीय भाषाओ के माध्यम से दी जाए न कि अग्रेजी के माध्यम स। दूसरा सुधार यह होना चाहिए कि पब्लिक स्कूलो की होड बद हो तथा अनुदान प्राप्त शिक्षा सस्थाओ तथा सरकारी स्कूलो मे शिक्षा का स्तर सुधारा जाए। अन्यथा सामाजिक विषमताए बढती रहेंगी और भारत मे समाजवाद का स्वप्न वास्तविक रूप मे पूरा नही हो सकेगा।

शिक्षा माध्यम के परिवर्तन के सबध मे देश की समस्त सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक, राजनीतिक आदि सस्थाओं को भारत के शिक्षा मत्री तथा प्रधान मत्री आदि से अनुरोध करना चाहिए। आशा है सब के सम्मिलित प्रयत्नों से भाषा-नीति मे यथोचित परिवर्तन हो सकेगा।

भवदीय
(हरि बाबू कसल)
महामंत्री, हिन्दी व्यवहार संगठन
डी-३५, साउथ एक्सटेंशन, भाग ...

वैदिक धर्म है मुक्ति दिलाने वाला

वैदिक धर्म दा सानी न जग अन्दर, रसना राहो न गुण बखान होवे।
आधार इसदा वेद है ईश्वर वाणी, मन वचन ते कर्म समान होवे।
एकता न्याय ते समता दा पाठ दसे, भावें हिन्दू ते चाहे मुसलमान होवे।
वर्ण-जाति न जन्म तो मनदा ए, शुभ कम दे नाल कल्याण होवे।

आत्मा अमर न कदे वी मरदी ए, सच्चे ज्ञान दी राह दिखाण वाला।
चहो पासेयो पई आवाज आवे, वैदिक धर्म है मुक्ति दिलान वाला॥

कुरानी कहद ओ तीजे आस्मान रहदा मुस्लिम सतवें आसमान निवास करदे।
कोई मूर्ति मना अवतार मन्ने, मन्दिर, मस्जिद दे विच करे पा लडदे।
गुरुडम ने पाया है जोर डाढा, इक दूजे तो राहो कुराह कर दे।
सर्वव्यापक ओ हरथा वसदा ए, उसदे गुणादा नही जो गान करदे।

वेद ज्ञान जहे जग तों मुख मोडे, चौरासी लखविच चक्कर ओ खान वाला।
चहो पासे वो पई आवाज आवे, वैदिक धर्म है मुक्ति दिलान वाला॥

आवो आपणी विच मस्त अलमस्त होके, बन्दा मुखिया कर्म ते धर्म नू अब।
पार्टी बाजी खुद गर्जी ने घर कीता, बन्दा मुखिया इज्जत ते धर्म नू अब।
इट क्रिक दी मैरी दे खवन वाला, बन्दा मुखिया धर्म दे मरहम नूं अब,
चढदी कला विज्ञान दी देख बन्दा, बन्दा मुखिया ईश्वर दे करम नू अज।

बन्दा बन्दकी बाझ न बचे बन्दा, ऐटम हाइड्रोजन है चाहे बनाण वाला॥
चहों पासेयो पई आवाज आवे, वैदिक धर्म है मुक्ति दिलान वाला॥

—हरबन्स लाल 'बन्स' मलिक
एम-२१ वैस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-११०००८

समीक्षा—

वैज्ञानिक वैदिक चिंतन

(भाग द्वितीय)

लेखक प्रो० प्रताप सिंह, समीक्षक डा० विजय द्विवेदी, प्रकाशक आर्य कुमार सभा (रजि०) किंग्सवे, दिल्ली ९, प्र० तिथि राम नवमी १९८४ पृ० स० ६४, मूल्य रु० २.०० मात्र।

समय-समय पर वैदिक जीवन-पद्धति और चिंतन-मनन पर आरोप लगाए जाते रहे हैं कि यह जीवन न केवल जटिल तथा दुरूह है अपितु अमूर्त असहज और अवैज्ञानिक भी है। इन आरोपों से वेद और वैदिक जीवन की महिमा तो कम नहीं हुई हो भी नहीं सकती क्योंकि यह लिंग जात नहीं परमात्मा प्रदत्त है। इसके विपरीत आरोपकारी अपनी ही अज्ञानता से स्वय विकृत-विनष्ट हो गए। प्राचीन काल के बौद्ध और आज के बुद्धिवादी दोनों ही इसके जीवन्त प्रमाण हैं। आधुनिक युग के अन्यतम दूर द्रष्टा और दिव्यद्रष्टा महर्षि दयानन्द ने गुरु के आदेश से भारत-भूमि से लुप्त होती वेद-वाणी का उद्धार कर भौतिक वादी विश्व को चमत्कृत कर दिया, 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की धूम मचा दी। तब भी दासत्वभार-बोझाक्रान्त विस्मित भारतीय चेतना भौतिक विज्ञान प्रदत्त भोगों के पीछे ही भागती रही और आज भी अपनी आस्था के उत्स अन्यत्र खोज रही है। प्रस्तुत पुस्तिका में प्रो० प्रतापसिंह ने आधुनिक वैज्ञानिक चिंतन के नाम पर चल रही भ्रम की विविध धाराओं से साक्षात्कार करने के बाद बताया है कि आज का जीवन तीन एषणाओं लोक पुत्र, वित्त के चारों ओर चक्कर काट रहा है और यही तीनों एषणाए ससार मे सघर्ष तथा अशान्ति के कारण हैं। (मन काम, कामना पृ० १७)

दूसरे अध्याय धर्म वर्णाश्रम उपासना में लेखक ने बताया है कि 'धर्म' का वैदिक अर्थ सत् और महत् कर्म है। जिन नियमों के आधार पर यह सृष्टि चारण हो रही है तथा जिन नियमों के आधार पर इस ससार का सचालन आदि हो रहा है, उन नियमों को धर्म कहते हैं। (पृ० १८) वैदिक जीवन पूर्णत धर्म पर आधारित जीवन है। इसके चार वर्ण और चार ही आश्रम हैं। यह वैज्ञानिक व्यवस्था है। इसी से मानव जीवन मे अभ्युदय और नि श्रेयस की प्राप्ति हो सकती है तथा इसी से सामाजिक जीवन मे सतुलन बना रह सकता है।

'मृत्यु पुनर्जन्म मोक्ष' तथा शिक्षा-विद्या' एव 'यज्ञ और शान्ति' के अन्तर्गत सम्बद्ध विषयों का बड़ा सूक्ष्म, सरल और बोधगम्य विवेचन प्रस्तुत किया गया है। प्रो० प्रताप सिंह के लेखन की सबसे बड़ी विशेषता जो इस पुस्तक मे सर्वत्र दिख पड़ती है वह है सादगी तथा ताजगी। लेखक ने इसमे अपने ज्ञान का प्रदर्शन न कर उसकी सामाजिक उपयोगिता पर दृष्टि रखी है। इसलिए इस छोटी-सी पुस्तिका के जरिये भी उसने वैदिक साहित्य पर अनधिकारियों द्वारा लगाए जाने वाले आरोपों का विनम्र किंतु बेबाक उत्तर दिया है। इसीलिए यह पुस्तिका पठनीय ही नहीं सग्रहणीय बन गई है। आशा है राष्ट्रवादी भारतीय जनता इनका हार्दिक स्वागत करेगी।

वेद मे परमेश्वर

(पृष्ठ २ का शेष)

चूंकि ईश्वर की पुरुषार्थ करने की आज्ञा है तथा कोई आंख वाले और देखने की इच्छा करने वालों को ही कोई चीज दिखा सकता है। उसी प्रकार दुष्टों को नष्ट करने के लिए प्रयत्नशील ईश्वर प्रार्थी ही चाणक्यादि की तरह सफलता पाता है। जैसा कि ऋग्वेद क मन्त्र इन्द्रो जहि असुरं। अपघ्नन्त अराव्णः। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। म भी विश्व को श्रेष्ठ बनाने हेतु दुष्टों को जीतन दूर करन नष्ट करने का स्पष्ट आदेश है। तभी हम सब को श्रेष्ठ बना सकते हैं। क्योंकि एक स्वतन्त्र दुष्ट पापी अनको को बिगाड़ सकता है अनगिनत व्यक्तियों को दुखी बना सकता है। अत इसको दूर करना, पराजित करने और नष्ट करने मे ससार का अनन्त उपकार होता है। तभी तो देव दयानन्द अपने मन्तव्य मे घोषणा करते हैं, धर्मात्मा चाहे महा अनाथ क्यो न हो उससे सर्वदा डरते रहना और पापी चाहे चक्रवर्ती सम्राट् ही क्यो न हो सर्वदा ही उसका अप्रियाचरण करते रहना।

अब हम मन्त्र के अन्तिम चरण पर आते हैं। 'स न पर्षदति दुर्गाणि वि वा नावेव सिन्धु दुरितात्यग्नि।' पर आते हैं।

वह शीघ्रकारी परमात्मा 'अग्नि' अग्रणी होने से हमे शीघ्र ही निश्चित रूप से सब दुःख कष्ट, रोग, शोक, उलझन पीड़ा, चिंता, विपत्तियों आदि के समुद्र से वैसे ही सफलता पूर्वक पार कर देता है। जैसे कि बड़ी नदी या समुद्र को हम छोटे जहाज या बड़ी नौकाओं से सुगमता से पार कर जाते हैं। साथ ही वह परमेश्वर इस ससार मे और मुक्ति मे ही हमें हमेशा सुख और आनन्द मे रखता है। जैसा कि या वल्क्य ऋषि कहते हैं "उस एक को जानने से ही सारा जाता है। सब का जानने से वह एक नहीं जाना जाता है। उपनिषत् परमेश्वर को जानने वालों को ही सुख शाश्वत एव शान्ति शाश्वती' कहा है नतरेषाम्।

इस प्रकार हम देखते है कि सस्कार विधि के गृहस्थाश्रम प्रकरण में जहाँ सन्ध्या की अद्भुत विधि दी है वहा इस मन्त्र के जुड़ जाने से और भी उसमे चार चाद लग गये हैं। इसके बिना वास्तव मे सन्ध्या कुछ कुछ अपूर्ण ही रह जाती है। अतः ऋषि की अन्तिम इच्छानुसार हमे इस मन्त्र से युक्त सस्कारविधि की सन्ध्या ही अपनानी चाहिए।

विन्ध्येश्वरी सिंह
केन्द्रीय जल आयोग
५०२ CWD सेवा भवन,
रामकृष्ण पुरम नई दिल्ली-६६

पजाब "समस्या समाधान हेतु १९७० का ऐवार्ड लागू किया जाये"

'पजाब केसरी दिल्ली मे छपे १९ अप्रैल १९८५ के अपने लेख की प्रतिलिपि भेजते हुए प्रो० शेरसिंह ने प्रधान मन्त्री रक्षा मन्त्री गृहमन्त्री शिक्षामन्त्री तथा सभी राजनैतिक दलों के नेताओं, चौ० चरणसिंह श्री मोरारजी देसाई, श्री लालकृष्ण अडवानी, श्री मधुदण्डवते श्री शरद पवार, श्री एन०टी० रामाराव श्री इन्द्रजीत गुप्त आदि को पत्र लिखे हैं। सभी नेताओं से अपील की है कि हरियाणा के साथ हो रहे अन्याय को अन्याय माने और अकालियों की नाजायज खुशामद छोड़कर देश की एकता को बचाने के लिए उग्रवादियों और राष्ट्रद्रोहियों से सख्ती से निबटें। साथ ही उन्होंने यह भी कहा है कि राजनीतिक दलों ने पजाब के मामले को अकालियों से सौदेबाजी करके उसे भूत बनाकर खड़ा कर दिया है।

यदि १९७० का फैसला लागू करने का दम राजन तिक दलों में नही है तो वे बीच मे से निकल जाय और सभी इलाकों और गाव के लोगो पर छोड़ दें वहा फैसला करे कि उनको पजाब मे जाना है या हरियाणा मे चण्डीगढ़ और फाजिल्का अबोहर का फैसला भी वहा की जनता स्वय करे।

प्रो० शेरसिंह
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
व हरियाणा रक्षा वाहिनी;

केदारसिंह आर्य
कार्यालयाध्यक्ष
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ, रोहतक

प० भूदेव शास्त्री का निधन

अजमेर स्थित महर्षि दयानन्द निर्माण न्यास के पूर्व मन्त्री भूदेव शास्त्री एम ए एम एड सिद्धान्त शिरोमणि (६९ वर्ष) का हाल ही में हृदय गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। प० भूदेव जी एक प्रखर विद्वान् ओजस्वी वक्ता और मिशनरी कार्यकर्ता थे। उन्होने आर्य सिद्धांतो का विशेष अध्ययन गुरुकुल वृन्दावन मे किया और सन् १९३८ मे वह स्नातक मेरे साथ ही हुए थे। बलवन्त राजपूत कालेज आगरा केन्द्रीय हिन्दी सस्थान आगरा और प० जियालाल ट्रेनिंग कालेज अजमेर में वे प्रोफेसर रहे। उनकी योजना आर्य साहित्य का प्रकाशन और भारत तथा विदेश में प्रचार करने की थी। संस्कृत हिन्दी और अंग्रेजी तीनों भाषाओं मे वे निष्णात् थे। प्रचार और न्यास के कामों से उत्तर भारत के अनेक समाजो मे कथा, यज्ञ लेखों और भाषणों के द्वारा वे अब कार्य कर रहे थे। सक्रिय रूप से वे आर्यसमाज के लिए समर्पित थे। उनके निधन से आर्यसमाज की महती क्षति हुई है।

उनके पीछे उनकी पत्नी व बच्चे है। बच्चे सब योग्य एव कार्यरत हैं केवल एक शिक्षिका एम ए बी एड कन्या का विवाह होना शेष था। भगवान उनकी आत्मा को सद्गति व परिवार को सान्त्वना प्रदान करें।

ब्रह्मदत्त स्नातक
भारतीय सूचना सेवा (रिटायर्ड)
अवै० प्रेस एवं जनसम्पर्क सलाहकार

आर्यसमाज, परमानन्द बस्ती बीकानेर का वार्षिक निर्वाचन

सर्व सम्मति से दिनाक ७-४-८५ को श्री अमरनाथ जी की प्रधानता मे सम्पन्न हुआ। अन्तरग सभा के पदाधिकारी एव सदस्य निम्नलिखित निर्वाचित हुए—

१ प्रधान-श्री अमरनाथ जी २ वरिष्ठ उपप्रधान-श्री डा० रवीन्द्र जी कुलश्रेष्ठ ३ उपप्रधान-डा० शिवनारायण आर्य ४ उप प्रधान श्रीमती सुभाग मुखी ५ मन्त्री धर्मपाल ६ उपमन्त्री-श्री हरभगवान जी ७ उपमन्त्री श्रीमती कैलाश शर्मा ८ कोषाध्यक्ष श्री सेठ छगनलाल जी आर्य ९ लेखा परीक्षक श्री हरबख्श जी बख्शी।

(धर्मपाल) मन्त्री

समाचार-सन्देश

आर्यसमाज गांधीनगर का २१ वां वार्षिकोत्सव शोभा यात्रा का आयोजन

आर्यसमाज गांधीनगर, दिल्ली का २१ वां वार्षिकोत्सव ५ म. से १२ मई रविवार तक बड़े धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर ५ मई रविवार को साय तीन बजे एक शोभायात्रा कैलाशनगर, महावीर वाटिका से प्रारम्भ होकर साय ५ बजे आर्यसमाज कृष्णानगर तक पहुंचेगी। ६ मई से १२ मई तक, वेद पारायण यज्ञ, कथा, आर्य महिला सम्मेलन, मानवता सम्मेलन एवं राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का आयोजन होगा। अंतिम दिन १२ मई को ऋषिलंगर होगा। समस्त कार्यक्रमो मे आर्यों का सहयोग प्रार्थनीय है।

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो से, विशेषकर यमुनापार की समाजो से निवेदन है कि शोभायात्रा मे सम्मिलित होकर आर्यसमाज की शोभा को बढायें।

श्यामसुन्दर विरमानी
मन्त्री

श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गोतमनगर दिल्ली में उद्घाटन समारोह

आपको यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि आपकी प्रिय सस्था श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गौतमनगर मे २१०० वर्ग फुट मे बनी भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आर्य नेता श्रद्धेय श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती द्वारा ५ मई १९८५ रविवार प्रात ८-०० बजे से १२ बजे तक सम्पन्न होगा।

इसी पुनीत अवसर पर श्री लाला त्रिलोकचन्द जी वैश्य द्वारा बनवाये गये १५×१५ फुट मे निर्मित चार कमरो का उद्घाटन भी सम्पन्न होगा। और इसके साथ साथ वेद विद्यालय की ओर से नव प्रकाशित ऋग्वेद का विमोचन भी होगा।

१२ से १ बजे तक ऋषि लगर की व्यवस्था है। अत आप समय पर पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढाये, और अधिक से अधिक अन्न धन का दान देकर पुण्य के भागी बनें।

निवेदक
प्रधान　　सयोजक
चौ० दिलीप सिंह　　रामनाथ सहगल
आचार्य—हरिदेव

प्रतिभावान् छात्रों के लिए सुअवसर २०० रु० मासिक छात्रवृत्ति प्राप्त करें

गुरुकुल सिंहपुरा-रोहतक मे महर्षि दयानन्द के मन्तव्यानुसार आर्ष पाठविधि से अध्ययन करने के इच्छुक छात्रो के लिए विशेष व्यवस्था की गयी है। अध्ययनरत १० छात्रो को २०० रु० प्रति मास छात्रवृत्ति दी जावेगी। प्रवेश के लिए न्यूनतम १० वी कक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है। छात्रो के लिए महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की आर्य विभाग की विशारद, शास्त्री एव आचार्य परीक्षाए देने की भी व्यवस्था रहेगी। छात्रो को नैतिक कर्मकाण्ड तथा आर्य सिद्धान्तो का मर्मज्ञ बनाया जायेगा तथा वक्तृत्व कला एव लेखन की विशेष शिक्षा दी जायेगी। गुरुकुल के अनुशासन एव आचार सहिता का पालन करना छात्रों के लिए अनिवार्य होगा। वैदिक सिद्धान्तो पर निष्ठावान् एव वैराग्यवान् छात्रो को प्राथमिकता दी जायेगी। छात्रो का प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। छात्रवृत्ति के इच्छुक छात्रो का आवेदन-पत्र ३० जून तक आना अनिवार्य है।

आचार्य द्विजराज सस्कृत महाविद्यालय
गुरुकुल सिंहपुरा-सुन्दरपुर
रोहतक हरियाणा

वैशाखी पर विशाल शोभायात्रा

वैशाखी, के पावन पर्व पर हिन्दू विकास परिषद् शकूरबस्ती दिल्ली-३४ के तत्त्वावधान म विशाल शोभायात्रा निकाली गई जिसमे हजारो लोगो ने भाग लिया।

इसमे १५ बस्तियों के हिन्दू मन्दिरो के सगठनो ने राष्ट्रीय व हिन्दू एकता की शपथ ली व जलूस निकाला।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के युवकों तथा महारानी झांसी ब्रिगेड की युवतियो ने इस अवसर पर गतका, तलवार, लाठी जूडोकराते के सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन दिखाये।

चन्द्रमोहन आर्य
मत्रा-प्रदाता, युवा उद्घोष

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय के लिए एक सुयोग्य विद्वान् की आवश्यकता है जो वेद प्रचार की व्यवस्था में सहयोग दे सके। दिल्ली का भौगोलिक ज्ञान रखने वाले महानुभाव को वरीयता दी जायेगी। वेतन योग्यतानुसार शीघ्र सम्पर्क करें।　　महामंत्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

बधाई स्वीकार करें

आदरणीय सम्पादक जी,
सादर नमस्ते।

"आर्यसन्देश' का आर्यसमाज स्थापना दिवस विशेषाक मिला। विशेषाक वास्तव मे सुन्दर एव आकर्षक था। मुखपृष्ठ पर ऋषि दयानन्द का चित्र अत्यन्त सुन्दर एव मन मोहक था। इसमे सभी लेख शिक्षाप्रद एव प्रेरणादायक थे। सम्पादकीय लेख का तो अपना अलग ही महत्त्व रहा।

जब से आपने इस पत्र के सम्पादन का कार्य भार सम्भाला है तभी से पत्र की गति मे जान आई है तथा यह बडी तीव्र गति से अपनी लोकप्रियता की ओर बढ रहा है। आशा है कि यह पत्र शीघ्र ही एक सशक्त एव प्रभावशाली पत्र का रूप लेगा। विशेषाक की सफलता हेतु बधाई।

—रामकुमार आर्य
ग्राम पो० दुल्हायड गोहाना सोनीपत

जब से आपने आर्यसन्देश के सम्पादक का कार्यभार सभाला है, पत्रिका उन्नति की ओर अग्रसर है। महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी स्मारिका आर्यसमाज स्थापना दिवस, महात्मा हसराज दिवस विशेषाक सग्रहणीय व उत्तम लखो से युक्त है। 'आर्यसन्देश' का भविष्य निश्चित ही आपके कुशल सम्पादन मे उज्ज्वल है।

चन्द्रमोहन आर्य
प्रेस सचिव

विद्वद्वर सुधाशु जी,
मैं पिछले अनेक वर्षों से साप्ताहिक 'आर्यसन्देश' का नियमित पाठक हू। इसमे वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रथो तथा यज्ञादि के सम्बन्ध मे दुरूह विषयो को जिस सरल एव सुबोध शैली म लिखकर पाठको तक पहुचाया जाता है वह सर्वथा प्रशसनीय है। यो तो आर्यसन्देश के सभी अक पाठको का ज्ञान वर्धन करते हैं, लेकिन इसका आर्यसमाज स्थापना दिवस विशेषाक विशेष रूप से सग्रहणीय तथा पठनीय है।

एक पत्रकार के नाते मैं यह विश्वास के साथ कह सकता हू कि आर्यसन्देश का सम्पादकीय एव विषयचयन स्तर दिनानुदिन उत्कृष्ट हो रहा है। मुझे आशा और विश्वास है कि आपके सम्पादकत्व मे यह साप्ताहिक पत्र और भी उत्कृष्ट होगा।

मेरा एक सुझाव है। वेदो, उपनिषदो, ब्राह्मण ग्रन्थों आदि से लोकहित की कथाएं भी आर्यसन्देश में प्रकाशित होनी चाहिए।

आचार्य जयवती का
मुख्य उपसम्पादक 'युगीवार्ता'
नई दिल्ली

निर्धन छात्रों की सहायतार्थ पुस्तक संग्रह अभियान

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के निर्धन छात्रो की सहायतार्थ १२ वी कक्षा तक पुस्तकें तथा पुस्तकालय उपयोगी उत्तम साहित्य सग्रह अभियान चलायेगा।

परिषद् के कार्यकर्ता घर घर जाकर शैक्षणिक पुस्तकें एकत्रित करेंगे तथा पिछडे व कमजोर वर्ग के विद्यार्थियो से सम्पर्क करेंगे। युवा वर्ग के उपलक्ष्य मे निर्धन किन्तु प्रतिभाशाली छात्रों को नई पाठ्य पुस्तकें भी उपलब्ध कराई जायेंगी।

आर्य जनता मे अनुरोध है कि अगर इस रचनात्मक कार्य मे सहयोग देना चाहते है तो हमारे नजदीकी कार्यकर्ता से सम्पर्क करें।

पत्र व्यवहार एव सम्पर्क हेतु पता—
चन्द्रमोहन आर्य
७०४८ बेरी वाला बाग, दिल्ली-६

आर्य जनता से अपील
आर्य शिशु मदिर के लिए दिल खोलकर दान दें

आर्य सिद्धान्तों तथा वैदिक विचार धाराओ का बच्चो को ज्ञान कराने के लिए आर्यसमाज रमेश नगर मे "आर्य शिशु मन्दिर" की विधिवत् स्थापना दि० १-५-८५ से की जा रही है। आर्य बहिन भाइयो से अपील है कि इस नव स्थापित की जाने वाली सस्था के लिए दिल खोलकर दान दें।

कृपया आप दान आर्य शिशु मन्दिर के नाम से धनादेश, नकद या बैंक द्वारा आर्यसमाज रमेश नगर, नई दिल्ली के पते पर भेजें।

मन्त्री, आर्यसमाज
रमेश नगर, नई दिल्ली

प्रवेश सूचना

जगद्गुरु ऋषिवर दयानन्द की जन्मस्थली टकारा में 'श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा" द्वारा सचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय के नये सत्र के लिए महान् उद्देश्य वाले विद्यार्थियो का १ जुलाई १९८५ से प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेश की अन्तिम तिथि १५ जुलाई १९८५ है। चार वर्ष के प्रशिक्षण समय मे उपदेशक विद्यार्थियो को ट्रस्ट की तरफ से भोजन, आवास वस्त्र व पुस्तकादि समस्त आवश्यक वस्तुए नि.शुल्क प्रदान की जाती हैं।

प्रवेशार्थी की योग्यता कम से कम हाईस्कूल (मैट्रिक) उत्तीर्ण और १६ से २४ वर्ष की आयु एव स्वस्थ होना अनिवार्य है प्रवेश के इच्छुक अतिशीघ्र नियमावली नि शुल्क मगायें।　　निवेदक
हरीओम् सिद्धान्ताचार्य
उपाचार्य उपदेशक महाविद्यालय
टंकारा राजकोट (सौराष्ट्र)

गुरुकुल किशनगढ़ घसेडा का वार्षिकोत्सव

महेन्द्रगढ़ २० अप्रल (शनिवार) महाशय हीरालाल गुरुकुल किशनगढ़ घसेडा का सातवां वार्षिकोत्सव ४ ५ मई को बड़ी धूम धाम से मनाया जायेगा। गुरुकुल अधिष्ठाता श्री ब्रह्मचारी दयावीर ने बताया कि हरियाणा जिला महेन्द्रगढ़ के पिछड़े क्षेत्र में स्थित इस गुरुकुल मे ब्रह्मचारियों को नि शुल्क शिक्षा सुविधाए दी जाती हैं तथा छात्र वास व्यायामशाला गोशाला यज्ञशाला की भी समुचित व्यवस्था है।

वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य मे गुरुकुल में शिक्षा समाज-सुधार राष्ट्र रक्षा सम्मेलनो का आयोजन किया गया है जिनमे आर्य समाज के उच्चकोटि के सन्यासी विद्वान् भजनोपदेशको के अतिरिक्त केन्द्रीय एव प्रान्तीय मन्त्री व राजनेता भी पधारगे।

चन्द्रमोहन आर्य
सवाददाता युवा उदघोष (पाक्षिक)
आर्यसमाज कबीरबस्ती दिल्ली ७

प० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार से जिज्ञासा

महोदय

आर्यसन्देश के ७ अप्रल के अक मे प० सत्यव्रत जी का लेख विचार सजक है। उनसे निवेदन है कृपया वे प० दीनबन्धु जी द्वारा सकलित स्वामी दयानन्द की अज्ञात जीवनी की प्रामाणिकता के सम्बन्ध मे ठोस तथ्य उपलब्ध करें तथा स्पष्ट कर कि क्या उन्हे इस ग्रन्थ का वह रूप मान्य है जो सार्वदेशिक मे धारावाही प्रकाशित हुआ था अथवा वह जो अथाकार स्वामी सच्चिदानन्द जी द्वारा सम्पादित होकर प्रकाशित किया गया क्योकि अब अज्ञातजीवन के नये परोकर अब इसके वतमान रूप को भी सशोधित करने जा रहे हैं

डा० भवानीलाल भारतीय
चण्डीगढ़

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज तिलकनगर (प०) नई दिल्ली १८ का वार्षिकोत्सव ५ मई १९८५ से १२ मई १९८५ तक हो रहा है जिसमे यज्ञ तथा वेदकथा प० यशपाल सुधांशु जी की होगी।

विशेष समारोह १२ मई रविवार प्रात ७ ३० से १ ०० बजे तक। वक्ता गण—

१ श्री रामगोपाल जी शालवाले प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
२ श्री सूर्यदेव जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
३ महाशय धर्मपाल प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली
४ डा० धर्मपाल जी महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

आर्य कन्या विद्यालय शिक्षा मार्ग भिवानी

प्रवेश सूचना

रत्न एव प्रभाकर का (केवल कन्याओ के लिए) प्रथम जुलाई १९८५ से प्रवेश आरम्भ है। योग्य व अनुभवी अध्यापिकाओ की व्यवस्था है। इच्छुक छात्राए सम्पर्क करें।

मन्त्री
आर्य कन्या विद्यालय (हरियाणा)

घरेलू उपयोगी बात

- जले हुए अंग पर गोले के तेल को दिन मे रोज तीन चार बार मालिश करने पर जलन कम हो जाती है और निशान भी ठीक हो जाता है।
- हाथी दांत की चीज यदि पीली पड़ गई हो तो उसे शीशे के फ्रेम मे रखकर धूप मे रख दें फिर से सफेदी आ जायेगी।
- यदि फर्श पर स्याही के दाग पड़े हो तो थोड़ा सा दूध डालकर रगड़ें स्याही साफ हो जायेगी।
- सब्जी को लाल रंग देने के लिए साबुत लाल मिर्च को बीज निकाल कर एक घंटा पानी में पड़ा रहने दें। अब इस पानी को सब्जी मे डालें सब्जी का रंग बिल्कुल लाल हो जायेगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

मूल्य एक प्रति . ५० पैसे वर्ष ९ अंक २६ रविवार, १२ मई, १९८५ आर्य संवत्सर १९६०८५३०८५ वैशाख २०४२ दयानन्दाब्द—१६१

देश की अखण्डता के लिए आर्यों आगे आओ

—रामगोपाल शालवाले

आर्यसमाज मोतीबाग के वार्षिकोत्सव के अवसर पर भाषण करते हुए श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा इस समय राष्ट्र में अनेक विषम समस्याये मुह बाये खडी हैं। विदेशी ताकते हमे कमजोर करने में तत्पर हैं। देश की अखण्डता को भी चुनौती दी जा रही है। महर्षि दयानन्द के समस्त अनुयाइयों को इस समय और भी कर्मठ शक्ति सम्पन्न होकर आगे बढना होगा। अभी आपने ओम ध्वज लहराया। इस सृष्टि मे परमात्मा का ध्वज सूर्य है, सूर्य आता है सोते प्राणिमात्र को जगाकर अपने कर्त्तव्यों पर चलने की प्रेरणा देता है'। यह ध्वज हमारी सामाजिक चेतना और जागृति का प्रतीक है। आर्यो ! तुम्हारी यश कीर्ति की पताका आकाश को छूती रही है। आज कही हम थककर या आलस्य में बैठ तो नहीं गये हैं हमें वर्ष में एक बार तो कम से कम आत्मा लोचन करना ही चाहिए। इतना आत्म विश्वास हमे होना ही चाहिये कि महर्षि का प्रत्येक शिष्य किसी से किसी तरह भी कमजोर नही है। जैसे आर्यों की परम्परा रही है, हमारा आन्दोलन कभी ठंडा नहीं पडा हमें कभी सामाजिक कुरीतियों के लिए लडना पडा तो कभी देश की स्वतन्त्रता के लिए आज देश की अखण्डता के लिए हमें फिर से आगे आना होगा। इस अवसर पर प० श्यामसुन्दर स्नातक प० यशपाल सुधांशु ने भी अपने ओजस्वी विचार प्रकट किये। ●

भारत की जनता देश को खण्डित नहीं होने देगी

आर्य नेताओं का उद्बोधन

आर्यसमाज करौल बाग नई दिल्ली का विशाल वार्षिक समारोह सम्पन्न हुआ। उत्सव से पूर्व एक सप्ताह पर्यन्त श्री प० यशपाल सुधांशु की वेद कथा हुई। एक सप्ताह तक वृहद यज्ञ का आयोजन भी किया गया। यज्ञ पर स्वामी रामेश्वरानन्द के भक्तिरस में ओत-प्रोत प्रवचन हुए। प्रसिद्ध संगीतज्ञ ओमप्रकाश वर्मा ने अपने मधुर भजननोपदेश से जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया। वार्षिकोत्सव मे अनेक सम्मेलनों का भी आयोजन किया।

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन मे विद्वान नेताओं ने अपने विचार व्यक्त किये। अधिकांश वक्ताओ ने कहा, पंजाब समस्या के हल के लिए प्रधान मन्त्री को शीघ्र कदम उठाने चाहिए। कांग्रेस को भारत की जनता ने राष्ट्र सुरक्षा और एकता के नाम पर वोट दिये। आनन्दपुर प्रस्ताव को न मानने और उग्रवादियों के साथ सख्ती से पेश आने के वक्तव्यों से निर्वाचन के समय जनता का मनोबल दृढ हुआ था। भारत की जनता ने खून से सनी धरती को पाकिस्तान के रूप में बटते देखा था और अब यह और टुकडे होती नहीं देख सकती। जनता के मानस में उठती आक्रोश की लहरों को ताडकर सरकार को चाहिए राष्ट्रद्रोहियों, उग्रवादियों को सख्ती से कुचल दिया जाये। □

भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन

दयानन्द वेद विद्यालय गौतमनगर दिल्ली में स्वामी ओमानन्द सरस्वती द्वारा एक भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी तथा प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल भी उपस्थित थे।

आर्यसमाज अशोक विहार फेज I भी नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन हुआ। इस यज्ञशाला का निर्माण माता पुष्पादेवी के पवित्र दान से किया गया। □

जीवन निर्झर है

यह जीवन क्या है ? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है।
सुख-दुख के दोनों तीरो से, चल रहा राह मनमानी है।

कब फूटा गिरि के अन्तर से, किस अचल से उतरा नीचे ?
किस घाटी से बहकर आया, समतल मे अपने को खींचे ?

निर्झर में गति है, यौवन है, वह आगे बढता जाता है।
धुन एक सिर्फ है चलने की अपनी मस्ती मे गाता है।

बाधा के रोडों से लडता, वन के पेडो से टकराता।
बढता चट्टानो पर चढता, चलता यौवन से मदमाता।

लहरे उठती हैं, गिरती हैं, नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढता है आगे, निर्झर बढता ही जाता है।

निर्झर में गति ही जीवन है, रुक जायेगी यह गति जिस दिन।
उस दिन मर जाएगा मानव, जग-दुर्दिन की घडिया गिन-गिन।

निर्झर कहता है-बढे चलो, तुम पीछे मत देखो मुडकर।
यौवन कहता है-बढे चलो, सोचो मत होगा क्या चलकर।

चलना है-केवल चलना है, जीवन चलता ही रहता है।
मर जाना है रुक जाना ही, निर्झर यह झरझर कहता है।

—आरसीप्रसाद सिंह

सम्पादक—यशपाल 'सुधांशु' एम० ए० व्यवस्थापक—डा० [illegible]

सत्संग वाटिका

प्रभु की प्राप्ति का उपाय

स्वामी वेदानन्द तीर्थ सरस्वती

स्वर्यन्तो नापेक्षन्त आ द्यां रोहन्ति रोदसी।
यज्ञं ये विश्वतोधारं सुविद्वांसो वितेनिरे ॥

—अ० ४।१४।४

★

ये सुविद्वांस —जो उत्तम ज्ञानी विश्वत +धारम् —सब ओर प्रवाह वाले यज्ञम्—यज्ञ —श्रेष्ठतम कर्म्म को वितेनिरे—करते हैं फैलाते हैं स्व +यन्त —मोक्ष को जाते हुए [वे] न अपेक्षन्ते [अन्य किसी पदार्थ की] अपेक्षा नहीं करते।

द्याम्—[वरन्] द्यौ (और) रोदसी—पृथिवी और अन्तरिक्ष पर आ रोहन्ति—पूरी तरह आरूढ होते हैं।

यह बात कभी नही भूलनी चाहिए कि यज्ञ वैदिकधर्म का प्राण है। वेद सारा का सारा यज्ञ का विधान करता है, किन्तु यज्ञ का भाव वह नही, जो हमारे पौराणिक भाइयो या दूसरो के हृदय मे है। यज्ञ तो जीवन पद्धति का नाम है।

स्वयं वेद ने कहा है—

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ॥ [य० ३१।१६]

ध्यानी लोग यज्ञ के द्वारा यज्ञ का यजन करते हैं यही मुख्य धर्म्म है।

धर्म्म का अर्थ है—

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।

जिस से लोकोन्नति एवं मुक्ति की सिद्धि हो वह धर्म है।

भावार्थ यह कि जीवन को ऐसा बनाना जिसमे अभ्युदय=चौमुखी उन्नति हो। जब ऐसा होगा, तो वह यज्ञ बन जायेगा। हां, उस यज्ञ मे भी यज्ञ की भावना बनी रहनी चाहिए। इस भाव को वेद मे इन शब्दों मे कहा है—

यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्।

'यज्ञ यज्ञ से सफल हो।'

अर्थात् धर्म्म करने के लिए अधर्म का अवलम्बन नही करना चाहिए। धर्म्मानुष्ठान के लिए जब अधर्म्म का अवलम्बन किया जायेगा, तो वह अधर्म्म बन जाएगा अधर्म्म का फल धर्म्म या सुख कभी नही हो सकता। अत जीवन को यज्ञमय बनाना चाहिए।

बहुत थोडे लोग इस तत्त्व को जानते है।

एक धनी अपनी बिरादरी वालो की दुर्दशा देखता है। उस दुःखदायिनी अवस्था से उसके चित्त मे चोट लगती है। अपनी उस कसक को मिटाने के लिए वह कोई कारखाना खोल देता है और सावधानता मे इस बात को देखता है कि उसमे उसकी बिरादरी के अतिरिक्त और कोई लाभ उठा न पाए। उसका यह कार्य शुभ है। चूकि उसने धन का दूसरो के लिए त्याग किया है। अत यह यज्ञ भी है। किन्तु यह विश्वतोधार यज्ञ नही वरन् एकतोधार यज्ञ है। इस यज्ञ से, निस्सन्देह एक वर्ग का उपकार होता है, किन्तु इससे विद्वेष उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है, और उससे उस यज्ञ के दूषित होने की सम्भावना भी रहती है। अत ज्ञानी लोग यज्ञ के रहस्य को समझ कर सर्वभूतहित की कामना से प्रवृत्त होकर—

यज्ञं विश्वतोधारं वितेनिरे।

'विश्वाधार यज्ञ का विस्तार करते हैं।

इसका एक कारण है—वेद एवं ब्राह्मण ग्रन्थो मे यज्ञ का एक नाम विष्णु है। विष्णु का अर्थ है व्यापक। व्यापक सर्वदेशी होता है, एकदेशी नही। एकदेशीपन मे संकोच है, सर्वदेशिता मे विस्तार है। तभी से सभी तंग होते हैं। विस्तार से सभी प्यार करते हैं। अत यज्ञ का विश्वतोधार होना स्वाभाविक ही है।

ऐसे ज्ञानियो के मन से अपने पराये का भेद नष्ट हो जाता है। उनका सिद्धांत है—

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।

'यह अपना है, यह पराया है ऐसा विचार क्षुद्रहृदय वालो का होता है।'

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

'उदाराशय महाशय के लिए तो सारा संसार निज परिवार है।

अर्थात् स्व-पर-निरपेक्ष होकर वे सब का हित साधते हैं। पापियो तक का पोषण करना उनका आदर्श है।

कई लोग धूर्तंतावश अपने आपको उदार सिद्ध करने के लिए परायो की तो दानादि के द्वारा सहायता कर देते हैं, किन्तु अपनो की नही करते। वे दम्भी हैं क्योंकि उनके दान देने मे कीर्ति की लालसा छुपी रहती है। आत्मीयो को दानादि देने से कीर्ति की सम्भावना कम होती है। ऐसे लोग याज्ञिक नही है, वे तो पणी हैं, व्यापारी हैं। ऐसा व्यापारी कभी सफल नही होता।

समर्थ होने पर जो कुछ भी नही देता, वह कृपण है।

जिस का यज्ञ सर्वतोधार है उसका सर्वत्र आदर होता है। प्रभु अपने ऐसे अनुरागी के लिए परमसुख-स्वः (मोक्षानन्द) का द्वार खोल देते हैं। निष्काम भाव से विश्वतोधार यज्ञ का विस्तार करने वाले ऐसे महात्मा को मुक्ति-प्राप्ति के लिए अन्य किसी साधन की आवश्यकता नहीं हुआ करती। वह तो अनायास ही शरीराध्यास से ऊपर उठकर अन्तःकरण को देखकर, उससे ऊपर उठकर द्यौ (प्रकाशमय आत्मा) को प्राप्त कर लेता है। इस भाव को मन्त्र के दूसरे चरण में व्यक्त किया है—

आ द्यां रोहन्ति रोदसी।

अथवा यों कह सकते हैं कि उसे मुक्ति प्राप्ति के साधन अनायास प्राप्त हो जाते हैं। वह पृथिवी=कर्म्म विस्तार, अन्तरिक्ष=अन्त करण के प्रसाद तथा द्यौ—आत्मा के साक्षात्कार में सहज से आरूढ रहता है—

आ द्यां रोहन्ति रोदसी।

अथर्ववेद [४।१४।३] में इस पृथिवी आदि पर आरूढ होने की बात स्पष्ट करके कही गई है—

पृष्ठात्पृथिव्या अहमन्तरिक्षमा-
रुहमन्तरिक्षाद् दिवमारुहम्।
दिवो नाकस्य पृष्ठात्स्वर्ज्योतिरगामहम्।

पृथिवी की पीठ से, अर्थात् बहिर्मुख दशा से उठकर मैं अंतरिक्ष (अन्दर की अवस्था) को आरूढ हुआ हूं, अर्थात् मेरी वृत्तियां अंतर्मुख वृत्ति से मैं द्यौ (ज्ञान लोक) को प्राप्त हुआ हूं (द्यौ=ज्ञान की अवस्था=दुःखाभाव की दशा)। देदीप्यमान आनन्द को मैंने प्राप्त किया है।

साधारण साधको को ये सीढियां अवश्य चढनी होती हैं। किन्तु जो सर्वतोधार यज्ञ का विस्तार करते हैं, वे—

स्वर्यन्तो नापेक्षन्ते

'मुक्ति की प्राप्ति के लिए किसी साधन की अपेक्षा नही करते।'

योग साधन

मूर्धानमस्य संसीव्याथर्वा हृदयं च यत्।
मस्तिष्कादूर्ध्वं प्रैरयत्पवमानोऽधि शीर्षतः ॥
तद्वा अथर्वणः शिरो देवकोशः
समुब्जितः।
तत्प्राणो अभिरक्षति शिरो अन्नमथो मनः ॥
[अ० १०।२।२६-२७]

मस्तिष्काद् ऊर्ध्वं—मस्तिष्क से ऊपर रहने वाला

पवमान अथर्वा—पवित्र [अतएव] अचल योगी

अस्य मूर्धानम्—इसके [—अपने] मूर्धा को [मन को=दिमाग को]

च हृदयम्—और हृदय को

संसीव्य—एक रस सीकर=जोड़कर

यत्—यत [प्राण को]

शीर्षतः अधि—सिर के ऊपर को

प्रैरयत्—प्रेरित करता है।

अथर्वणः —निश्चल योगी का

तत् शिरः—वह सिर, शीर्षस्थानीय अभ्यास

समुब्जितः —इकट्ठा किया हुआ

देवकोशः—देव-कोश [दिव्य खजाना] है।

प्राणः—प्राण

तत् शिरः—उस सिर की [शीर्षस्थानीय अभ्यास की]

अभि×रक्षति—सब तरह रक्षा करता है।

अथो अन्नम्—और अन्न भोजन

मनः—[और] मन [की रक्षा करता है।]

इन दोनों मन्त्रों में संक्षेप से योग की विधि का उपदेश है। योग के लिए यहां कई आवश्यक निर्देश दिए गए हैं—

१. मूर्धानमस्य संसीव्याथर्वा हृदयम्—

'दिल और दिमाग को सीकर, अर्थात् हृदय और मन की एकता होनी चाहिए।'

यदि मन कुछ और सोचे और हार्दिक रुचि किसी अन्य ओर हो, तो योग हो ही नहीं सकता।

२. अथर्वा=निश्चय (निश्चलता)।

योग-साधक को चंचलता का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए। अथर्वा का एक भाव-संशय रहित है। योग मार्ग में चलने वाले को इस प्रकार के संशय कि मैं सफल हूंगा या नही, सर्वथा त्याग देने चाहिए। योग के विघ्नों में पतञ्जलि जी ने संशय को भी गिना है। संशय से बहुत हानि होती है। बहुधा सर्वनाश हो जाता है। जैसा कि कहा गया है—

संशयात्मा विनश्यति 'संशयालु नष्ट हो जाता है।'

अथर्वा का एक भाव यह भी है कि साधनकाल मे योगाभ्यासी का शरीर निष्कम्प रहना चाहिए। आसन अडोल होना चाहिए।

३ पवमान =पवित्रता

साधक को अन्तरंग और बहिरंग शौच मे सदा तत्पर रहना चाहिए। बाह्य शुद्धि स्नानादि साधनों से करते रहना चाहिए, और अन्दर की शुद्धि के लिए काम, क्रोधादि को विचार से हटाते रहना चाहिए।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

★ वचन-सन्देश ★

शिक्षा

जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें उसको शिक्षा कहते हैं।

—स्वामी दयानन्द

शिक्षा का मतलब है व्यक्ति का समाजोपयोगी विकास।

—जैनेन्द्र

तमाम शिक्षा का सब से कीमती फल है प्रत्येक कार्य को दक्षता एव कुशलता के साथ कर सकने का सामर्थ्य

—हक्सले

वास्तविक शिक्षा का यह एक आवश्यक अग होना चाहिए कि बालक इस बात का ज्ञान प्राप्त करे कि जीवन सग्राम मे वह प्रेम द्वारा घृणा पर, सत्य द्वारा असत्य पर और सहनशीलता द्वारा बल प्रयोग पर बहुत सहज ही विजय प्राप्त कर सकता है।

शिक्षा का अर्थ है मनुष्य और बच्चो के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा का सर्वांगीण विकास।

—महात्मा गांधी

सम्पादकीय

सावधान ! शिक्षा-नीति में परिवर्तन हो रहा है

भारत सरकार शिक्षा नीति में परिवर्तन करने पर विचार कर रही है। शिक्षा के ढांचे में आमूल चूल परिवर्तन करने को सम्भावनाओं पर विचार किया जा रहा है। इस नीति मे सस्कृति और नैतिक मूल्यों का कोई स्थान न रख भारतीयता की अवमानना की जा रही है। शिक्षा को सस्कृति निरपेक्ष रखने का मतलब खुले रूप में औद्योगिक हितों के दायरे में बन्द कर देना।

ला० लाजपत राय के अनुसार अग्रेजों के भारत आने से पूर्व हमारी शिक्षा शैली एक व्यवस्थित रूप मे प्रचलित थी। ग्राम ग्राम में पाठशालाएँ स्थापित थी। छात्र व्यवस्थित रूप में अनेक शास्त्रों और विद्या का अभ्यास करते थे। ब्रिटिश साम्राज्य को स्थापना के बाद लार्ड मेकाले ने शिक्षा पद्धति में एक योजनाबद्ध षड्यन्त्र रचकर परिवर्तन किया। उसने १९३८ में अपने पिता के नाम एक पत्र लिखा। "जो भी हिन्दू अग्रेजी शिक्षा ग्रहण कर लेता है वह अपने धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा व विश्वास खो बैठता है।" यही शिक्षा पद्धति भारत की भावी पीढ़ी को केवल क्लर्क के व्यक्तित्व तक ही ले गयी। आज हम अग्रेजियत के रग में ऐसे रग गये हैं कि पढा लिखा होने की परिभाषा इगलिश का भाषाज्ञान होना ही मान लिया गया। भारत की शिक्षा पद्धति अभी तक अग्रेजों की पूर्वकालिक योजनानुसार चल रही है। इसमें सुधार के प्रयास न करके, भारतीय शिक्षा शैली को उपेक्षित करके केवल मात्र पाश्चात्य देशों की उधार ली गई तकनीकी को शिक्षा का अग बनाया जा रहा है। हमारी भारतीय पद्धति के अवसर पर जो बेसिक शिक्षा है उसमें फिर भी बच्चे के मस्तिष्क को विकसित करने का, आत्मनिर्भर होने का प्रशिक्षण है। विकसित देशों मे प्रारम्भिक शिक्षा के समय ही बच्चे उपकरणों पर निर्भर हो जाते हैं। थोडा सा सा लेन देन करने का गणित जोडने की भी उनकी क्षमता नहीं रहती। उन्हें कैलकूलेटर का सहारा लेना पडता है। सरकार द्वारा कम्प्यूटर क्रान्ति लाने के प्रयास जारी है। नये युग में प्रवेश करने के अधिकार से हमें वचित भी नहीं होना चाहिए परन्तु देखना यह भी है क्या बच्चों की मौलिक प्रतिभा को उत्कर्ष तक पहुंचाने में ये ससाधन सहायक हो पाएँगे या प्रतिभा को लकवा कर देने में अभिशापक होंगे।

विश्व में अनेक शिक्षाविद हुए जिनमें श्री हरबर्ट, डा० मोरिया माण्टेसरी, श्री हरबर्ट स्पेंसर, श्री रूसो, पेस्टालोजी और लार्ड मेकाले। डा० मेरिया माण्टेसरी ने बच्चों की रुचियों पर ध्यान रखकर प्रोत्साहित करने पर बडा बल दिया। उनके अनुसार बच्चे को दण्ड देकर शारीरिक रूप से संतापित करना अनुचित है। श्री हरबर्ट की विचारधारा थी शिक्षा में नैतिक और चारित्रिक विकास आवश्यक है। लार्ड मैकाले ने भारत में ७ मार्च १८३५ में अपनी रिपोर्ट देकर लार्ड विलियम बेंटिक के द्वारा शिक्षा नीति की घोषणा करा दी जिसका उद्देश्य ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों में यूरोपीय साहित्य और ज्ञान शिक्षा का तथा ईसाई मत का प्रचार करना था। श्री मेकाले को भारत के भविष्य को अधकारमय करने का पूर्ण दोष जाता है। दुर्भाग्य है कि वही दोष अब भी शिक्षातन्त्र में विद्यमान है। भारतीय मनीषा अपने आपे में इतनी धनी है, इसमे उच्चकोटि के शिक्षाविद मोजूद हैं। यदि उनको भारतीय पद्धति को अपनाया जाये। हमारा अपना स्वरूप और भी उज्ज्वल हो सकेगा। यो तो हमारी प्राचीन शिक्षा मे गौतमी शिक्षा, नारदीय शिक्षा, याज्ञवल्क्य शिक्षा, व्यास शिक्षा, पाणिनीय शिक्षा ग्रन्थ विद्यमान हैं। वेद विज्ञान की एक महान् शृखला हमे विरासत में मिली है। ब्रह्मा से लेकर जैमिनी ऋषि और महर्षि दयानन्द पर्यन्त आप्त पुरुषों ने महान् शिक्षा नीति दी है। फिर इस युग के महर्षि दयानन्द की कुछ नीतियां मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ—

१ विद्यार्थियों में शिक्षा के साथ चरित्र निर्माण अति आवश्यक है। इसके लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अपनानी चाहिए।

२ विद्यार्थियों के विकास, आदर्श विद्या और शिक्षा के लिए ऋषियो के ग्रन्थो के द्वारा ही पढाया जाना चाहिए।

३ ईश्वरीय ज्ञान वेद का स्थान शिक्षा मे सर्वोपरि होना चाहिए।

४. शास्त्र के साथ जीवनयापन के लिए प्राविधिक कला कौशल की शिक्षा भी दी जाये। इसमें कला शिल्प, आयुर्वेद, इतिहास, धनुर्वेद, गान्धर्व, योगतन्त्र, नाट्यकला, तथा प्रशासनिक विद्या आदि दी जानी चाहिए।

५ बालक बालिकाओ का सहशिक्षण बन्द कर देना चाहिए।

६ शिक्षा, गरीब अमीर सब के लिए अनिवार्य और सर्वसुलभ, बिना व्यय के कर देनी चाहिए।

७. शिक्षा में स्वदेशप्रेम, स्वसस्कृति गौरव, ईश्वर भक्ति और आत्मनिर्भरता आदि गुण अपेक्षित हैं।

—यशपाल सुधांशु

एक सर्वथा उपेक्षित परन्तु समर्पित जीवन

मुनिवर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एम०ए०

ओमप्रकाश आर्य

महर्षि दयानन्द के वेद प्रतिपादित सत्यज्ञान मूलक मन्तव्यो सिद्धान्तो शिक्षाओ और विचारो को जिस खूबी के साथ मुनिवर गुरुदत्त ने समझा जीवन मे ढाला और प्रचारित किया उस पर विचार करके मनुष्य चकित एव स्तम्भित हो जाता है। जीवन मे केवल एक बार और वह भी इहलीला सवरण करते हुए ईश के सच्चे उपासक योगी यति तपस्वी दयानन्द को उन्होंने देखा था। वार्तालाप करने या शका समाधान करने अथवा महर्षि के समक्ष सम्पर्क मे रहकर उनके सदुपदेशो से लाभ उठाने का तो गुरुदत्त जी को समय ही न मिला परन्तु कमाल यह है कि १९ वर्ष का यह नवयुवक महर्षि के प्राणोत्सर्ग के अद्भुत दृश्य को देखने मात्र से जो कुछ प्राप्त कर पाया वह किसी दूसरे को प्राप्त न हो सका। आर्यसमाज के प्रख्यात विद्वान् श्री पंडित चमूपति जी एम०ए० ने इस चामत्कारिक प्रभाव का निम्न प्रकार से वर्णन किया है—

—नवीन वेदान्त का सिद्धान्त दृष्टि सृष्टि वाद के नाम से प्रसिद्ध है। पंडित गुरुदत्त नये गुरुदत्त की सृष्टि

सचमुच ऋषि की दृष्टिमात्र से ही हुई थी यह सृष्टि असत् नहीं सत् थी। परलोक सिधार रहे ऋषि ने इन्हें एक दृष्टि देख लिया और ये कुछ के कुछ बन गए। अनेक साधु महात्मा ऋषि के शिष्य बन थे परन्तु जो शिक्षा आचार्य के अंतिम कृपा कटाक्ष द्वारा इस सरल विद्यार्थी को मिली वह किसी और के हिस्से नहीं आई। गुरुदत्त ने ऋषि का सन्देश अपने हृदय पटल पर अंकित कर लिया और समझा इसके प्रचार का उत्तरदायित्व मुझ ही पर है। ऋषि का दृष्टि मे भ्रान्तियो का खण्डन था और वैदिक सचाइयो का मण्डन। मन पर धर्म का राज्य था शक्ति पर भक्ति का आधिपत्य था। गुरुदत्त ने इस खण्डन का मण्डन का राज्य का आधिपत्य का मानो चाज सा ले लिया। गुरुदत्त आनुवंशिक सैनिक था। झट दयानन्द की सेना मे भर्ती हो गया और दयानन्द की विजयार्थ अपने तन की मन को धन की बलि दे दी।

पाठक वृन्द! संस्कृत हिन्दी अंग्रेजी फारसी पदार्थ विज्ञान भूगर्भ विद्या रसायन शास्त्र वनस्पति शास्त्र शरीर विज्ञान नक्षत्र विद्या गणित तत्त्व ज्ञान भाषा तत्त्व शास्त्र आदि विविध विद्याओ मे पारगत इस नवयुवक को किस शक्ति ने आर्यसमाज की ओर आकृष्ट किया? पाश्चात्यो की नास्तिकता बढाने वाली निकम्मी शिक्षा और विचारधारा से पृथक कर सच्ची आस्तिकता का पाठ किसने पढाया? संस्कृत भाषा ही पूर्ण एव वैज्ञानिक भाषा है यह ध्रुव सत्य गुरुदत्त को किस की कृपा से ज्ञात हुआ? क्या किसी शास्त्रार्थ में पराजित होकर उसने ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया? या किसी की तर्कणा शक्ति से पराभूत होकर उसे अपना मार्ग बदलना पड़ा? नहीं बिल्कुल नहीं। कारण के बिना कोई कार्य नहीं हुआ करता। गुरुदत्त के जीवन की चिन्तनधारा में परिवर्तन भी बिना कारण कैसे हो सकता था महान् संस्कारी आत्मा गुरुदत्त को एक दूसरी विलक्षण प्रभु भक्ति के रंग मे आमूल रंगी ईश्वर बलधारी दिव्य आत्मा ने बिना कुछ कहे ही अपने समान आस्तिकता के रंग मे रंग डाला। महर्षि दयानन्द के प्राणोत्सर्ग दृश्य ने गुरुदत्त का जीवन चिन्तन दृष्टिकोण सभी कुछ बदल दिया। अब उसे चाव है दयानन्द बन जाने की। धुन है ईश्वर के सच्चे स्वरूप और गुणों के प्रचार की।

एक बार किसी ने उनसे कहा पंडित जी आपको स्वामी जी के योगी होने के बारे मे अनेक बातो का ज्ञान है। आप उनका जीवन चरित्र क्यों नहीं लिखते? अत्यन्त गम्भीर होकर उत्तर दिया कि मैं प्रयास कर रहा हू। प्रश्नकर्ता ने पुन पूछा—जीवन चरित्र कब छप जायेगा? बोले—आप कागज पर लिखा जीवन चरित्र समझ रहे हैं मेरे विचार मे महर्षि का जीवन चरित्र अपनी पूर्ण आयु मे लिखना चाहिए और इसी के लिए मैं प्रयत्न कर रहा हू।

इस सच्चे आस्तिक वेद और महर्षि दयानन्द के अनन्यभक्त प्रतिभाशाली विचारक सत्य और सदाचार की सजीव एव साकार प्रतिमा गुणग्राही गुरुदत्त का जन्म २६ अप्रैल १८६४ ई० को मुलतान निवासी लाला रामकृष्ण सरदाना के घर हुआ था। इनके वंशज विद्या तथा युद्ध दोनो मे पारगत एव ख्याति प्राप्त कर चुके थे।

जन्म, नाम तथा प्रारम्भिक शिक्षा—

श्री गुरुदत्त का राशि के आधार पर नाम मूला रखा गया। कुल गुरु ने वैरागी नाम अधिक उपयुक्त समझा परन्तु १२ वर्ष की आयु में बालक गुरुदत्त जब अपने माता पिता के साथ हरिद्वार गया तब वहा के गोस्वामी राधेलाल ने वैरागी नाम बदलकर गुरादत्ता रख दिया जो बाद मे अपने शुद्ध रूप गुरुदत्त में परिवर्तित होकर यावज्जीवन प्रचलित रहा। गुरुदत्त के पिता लाला रामकृष्ण झग के स्कूल मे अध्यापक थे। अत पहले स्वय बालक को घर पर पढाने के पश्चात् अपने स्कूल में ही प्रविष्ट करा दिया उस समय बालक की आयु ८ वर्ष की थी। अल्प काल मे ही होनहार बालक ने मसनवी मौलाना रूम दीवान हाफिज आदि फारसी की पुस्तकें पढ डाली। डिस्ट्रिक्ट स्कूल झग से मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात आपको मुलतान के हाई स्कूल मे प्रविष्ट करा दिया गया। मुलतान में लाला चेतनानन्द और भक्त रैमलदास आपके घनिष्ठ मित्र थे।

तत्कालीन परिस्थितिया और उनका प्रभाव

श्री सत्यव्रत शर्मा द्विवेदी सम्पादक नवजीवन ने तत्कालीन अवस्था का वर्णन निम्न प्रकार किया है—

अंग्रेजी ज्ञान और स्कूलों मे पढने वाले प्राय समस्त विद्यार्थी धर्मपथ भ्रष्ट एव भ्रम के गम्भीर समुद्र की ओर पतित हो रहे थे। हिन्दू विद्यार्थी अपने वर्तमान धर्म के निर्बल और लचर होने के कारण तथा प्राचीन सनातन धर्म के अप्रचार से प्रत्येक धर्म विरोधी मुसलमान और ईसाई आदि से पद पद पर ठोकरें खा रहे थे। यहा तक कि कोई कोई ईसाई और मुसलमानों के पैगम्बरो से मुक्ति के लिए प्रार्थना करते हुए दृष्टि गत हो रहे थे और हिन्दू समाज के प्राय अनेक सभ्य मस्जिद और गिरजाघरो में सम्म होने के लिए प्रार्थना कर रहे थे कि ऐसे अन्धकार के समय मे भारत के दक्षिण और पश्चिम के कोने से देदीप्यमान अग्नि उत्पन्न हुआ जिसका नाम आर्यसमाज है। इस पवित्र अग्नि ने समस्त विरोधी मतो के नवीन सिद्धान्तों को द्रवीभूत कर फिर से पवित्र सनातन धर्म के प्राकृतिक सिद्धान्तो को जो अज्ञानान्धकार मे प्रच्छन्न हो रहे थे प्रकाशित कर आर्य जाति के होनहार नवयुवकों को धार्मिक अध पतन से सुरक्षित कर दिया।

आर्यसमाज मे

गुरुदत्त जी मे बाल्यकाल मे धर्म के प्रति अतीव रुचि और श्रद्धा थी परन्तु अंग्रेजी शिक्षा तथा पाश्चात्यो के कतिपय ग्रन्थो को पढने के कारण वह अधिक दिनों तक स्थित न रह सकी। धर्म के प्रति अरुचि और नास्तिकता की ओर झुकाव को बल प्रदान करने में लुधियाना के स्वतन्त्र विचारक मुशी कन्हैयालाल अलखधारी के लेख भी थे। मुलतान आर्यसमाज के साथ आपका सम्बन्ध जोडने मे भक्त रैमलदास तथा लाला चेतनानन्द जी का बडा हाथ है। दोनो सुलझे हुए सुयोग्य नवयुवक आर्यसमाज के प्रति पूरे निष्ठावान् थे और बडी लग्न से समाज का कार्य करते थे। गुरुदत्त जी से प्राय विविध विषयो पर इनका प्रेम पूर्वक वाद विवाद भी होता रहता था। अन्तत इन दोनों की विजय हुई और महर्षि का सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के स्वाध्याय ने गुरुदत्त की नास्तिकता को बहाना प्रारम्भ कर दिया तथा २ जून १८८० को यह विलक्षण प्रतिभाशाली युवक आर्यसमाज मुलतान का स्वेच्छा से सभासद बन गया।

लाहौर में आगमन—

नवम्बर १८८० ई० मे इट्रन्स की परीक्षा पास करके जनवरी १८८१ ई० मे गवर्नमेण्ट कालेज लाहौर की फर्स्टईयर कक्षा में प्रविष्ट हो गए। यहा लाला हसराज दीवान नरेन्द्रनाथ लाला शिवनाथ लाला भगतराय लाला चेतनानन्द, लाला रुचिराम तथा लाला लाजपतराय आपके मित्र एव सहपाठी थे।

आस्तिक गुरुदत्त—

कालेज में पढते हुए ही आपने १८८१ के अन्त और १८८२ के प्रारम्भ में फ्री डिबेटिंग क्लब (Free Debating-Club) की स्थापना की तथा स्वय इस क्लब के मन्त्री नियुक्त हुए। इस क्लब में सभी मतों पन्थों और सम्प्रदायों के व्यक्ति सम्मिलित होते तथा प्रेमपूर्वक अपना-अपना पक्ष प्रस्तुत किया करते थे। सन् १८८० ई० तक पंडित गुरुदत्त जी जब कभी ईश्वर के अस्तित्व विषय मे वाद-विवाद करते थे तो आप का पक्ष ईश्वर के अस्तित्व का विरोधी ही हुआ करता था परन्तु सन् ८८२ ई० मे आप पूर्ण

नास्तिक हो गए और अपने सहपाठियों के उस प्रवाह को जो साइंस पढ़ने के कारण नास्तिकता की ओर जा रहा था। एक दम स्तब्ध करके परमपिता जगदीश्वर की भक्ति और विश्वास में लगा दिया। थोड़े ही दिनों में उन विद्यार्थियों को पूर्ण विश्वास हो गया कि वह ईश्वर जिसकी शिक्षा और पूजा का वर्णन आर्यसमाज के दूसरे नियम में किया है। हमारा सबका आश्रयदाता और इस सृष्टि का रचयिता है। वस्तुतः उस समय अपने सहपाठियों का सच्चा आस्तिक, ईश्वर भक्त, वेद और देश का सच्चा श्रद्धालु और प्रेमी बनाना पंडित गुरुदत्त जी की विद्वत्ता पूर्ण ओजस्वी वक्तृता का ही कार्य था। स्वयं श्रीमान् लाला लाजपतराय लिखते हैं कि कदाचित् मैं ही वह प्रथम मनुष्य हूं कि जिसके हृदय में पंडित गुरुदत्त जी की वक्तृता और वार्तालाप ने आर्यसमाज के पवित्र सिद्धान्तों का दृढ़ निश्चय करा दिया और दिसम्बर सन् १८८२ ई० को आर्यसमाज लाहौर के वार्षिकोत्सव पर मैं आर्यसमाज का सभासद हो गया।

गुरुदत्त जी ने १८८३ ई० में एफ० ए०, १८८५ ई० में बी० ए० तथा १८८६ ई० में एम० ए० सर्वप्रथम रहकर पास की। कालेज में पढ़ते हुए ही आपका अधिक समय स्वाध्याय, आत्म-चिन्तन तथा वैदिक धर्म के गूढ़ तत्त्वों को जानने में लगता था। १८८३ अक्तूबर मासान्त में ऋषिवर दयानन्द के शरीर त्याग के दृश्य को देखने के पश्चात् तो आप सर्वात्मना वैदिक धर्म के प्रचारक-प्रसारक ही बन गए थे।

आर्यसमाज का जो साहित्य अंग्रेजी भाषा में मिलता है उसमें मुनिवर गुरुदत्त के ग्रन्थों का निःसन्देह बहुत ही ऊंचा स्थान है। उनके ग्रन्थों, लेखों और व्याख्यानों का संग्रह कर प्रकाशित कराने वाले लाहौर आर्यसमाज के तत्कालीन प्रधान श्री लाला जीवनदास पैन्शनर थे। उनका मत था कि विचार की उच्चता, भावों की श्रेष्ठता, शैली की सुन्दरता और चारुता, दृष्टि की विशालता और व्यापकता तथा अर्थ को शक्ति और हृदय ग्राहकता की दृष्टि से मुनिवर का साहित्य अद्वितीय है।

महर्षि की स्मृति को स्थिर रखने के लिए स्मारक रूप में बनाए गए डी०ए०वी० स्कूल तथा कालेज की उन्नति के लिए अपने स्वास्थ्य की बिल्कुल परवाह न करते हुए जो अथक परिश्रम और प्रचार द्वारा सर्वसाधारण को आन्दोलित कर धन संग्रह तथा उनका सहयोग और सहानुभूति प्राप्त करने का कार्य गुरुदत्त जी ने किया वह कोई और न कर सका। उन दिनों उनके चारु चरित्र, विलक्षण पांडित्य एवं उच्च कोटि की वक्तृताओं की चारों ओर धूम मची हुई थी। उनके एक-एक व्याख्यान पर सैकड़ों ही नहीं कहीं-कहीं तो हजारों रुपयों के मिलने का उल्लेख मिलता

गुरुदत्त जैसे प्रतिभाशाली विद्वान् की परमावश्यकता क्यों ?

यद्यपि महर्षि स्वामी दयानन्द जी के प्रचार से शिक्षित समाज आन्दोलित और प्रभावित हो रहा था परन्तु आवश्यकता एक ऐसे विद्वान् की थी, जो शिक्षित वर्ग को उनकी ही भाषा में वैदिक सिद्धान्तों की सत्यता का बोध कराने के साथ-साथ विदेशी और विधर्मी मतवादों की आपत्तियों का निराकरण करते हुए उनकी वेद विरुद्ध स्वकल्पित मिथ्या धारणाओं और मान्यताओं को निस्सारता प्रमाणित कर सके। मुनिवर गुरुदत्त संस्कृतज्ञ होने के साथ-साथ पाश्चात्य विज्ञान के भी महान् ज्ञाता थे। अतः वह कार्य वे ही उत्तम रीत्या सम्पन्न कर सकते थे और उन्होंने जीवन भर पूरी निष्ठा और निर्भीकता से इस दायित्व का निर्वहन किया। विरोधी चाहे टी विलियम्स रहे हों या मि० पिनकाट अथवा ब्रह्मसमाज आदि के कोई सज्जन श्री पंडित जी सब की शंकाओं का निरन्तर लेख द्वारा सन्तोषजनक ढंग से उत्तर देते रहे। २३ या २४ वर्ष की स्वल्प आयु में विदेशी और स्वदेशी प्रकांड पंडितों और विद्वानों के प्रश्नों का यथोचित उत्तर देना पंडित गुरुदत्त जी के गहन अध्ययन तथा उनके सत्यप्रेम का द्योतक है।

वेद भक्त गुरुदत्त—

वेद की सत्यता पर गुरुदत्त जी मुग्ध थे, जब कभी किसी वैज्ञानिक के कथित नये आविष्कार की कोई उनसे चर्चा करता, तो वे झट से उत्तर देते कि हां भाई वह वैज्ञानिक सच्चाई के निकट आ गया है। सत्यपूर्ण है और प्रभुदत्त वेद ज्ञान तथा सृष्टि नियम द्वारा पूर्व ही प्रकाशित है। जिस वैज्ञानिक को जब जितना बोध होता है। उतना वह असत्य से दूर होकर सत्य के निकट आ जाता है। बस यही आविष्कार है, इससे आगे कुछ नहीं। अपने ऐसे ही पवित्र और सत्यज्ञान मूलक विचारों को दिसम्बर १८८५ ई० में लाहौर आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव पर दिए गए अपने भाषण में पंडित जी ने व्यक्त करते हुए कहा था—

"आधुनिक विज्ञान चाहे उसमें कितने ही गुण क्यों न हो, जीवन की समस्या पर कुछ भी प्रकाश नहीं डालता। वह मनुष्य की आत्मा में आन्दोलन पैदा करने वाले सब से महान् और कठिन प्रश्न मनुष्य जाति के आदि मूल और इसके अन्तिम साध्य के हल करने में कुछ भी सहायता नहीं करता। आधुनिक विज्ञान चाहे प्रत्येक नाड़ी और हड्डी को चीर डाले और लहू की बूंद की अतीव सूक्ष्म दर्शक यन्त्र द्वारा जो सम्भवतः उसे मिल सकता है, बड़ी सूक्ष्म परीक्षा कर ले, पर इस प्रश्न पर उससे कुछ भी बन नहीं पड़ता कि 'यह जीवन के रहस्य को खोल नहीं सकता।' चाहे वैज्ञानिकों तक चीर-फाड़ और परीक्षण करता रहे। जीवन की समस्या वेदों की सहायता के बिना हल नहीं की जा सकती। वही केवल इस अद्‌भुत रहस्य का उद्घाटन कर सकते हैं और उन्हीं की ओर वैज्ञानिक लोगों को अन्त में आना पड़ेगा।"

पाठक वृन्द ! कितनी अगाध श्रद्धा और भक्ति की भावना वेद ज्ञान के प्रति गुरुदत्त के हृदय में विद्यमान थी। यह दृढ़ भावना निरा विश्वास का रूप न होकर वेद को समझने और सत्य प्रमाणित होने के कारण ही थी। अन्धविश्वास तथा गतानुगतिकता की तो कल्पना भी गुरुदत्त जैसे प्रबुद्ध विचारक से नहीं की जा सकती।

इस प्रतिभाशाली वेद मनीषी तपस्वी विद्वान् को पूरे २६ वर्ष की जन सेवा का अवसर न मिल पाया परन्तु इस स्वल्प जीवन में ही उसने अमित यश और कीर्ति का अर्जन कर लिया। स्वर्गीय पंडित चमूपति जी ने ठीक ही लिखा था—

"यदि इनकी आयु कुछ लम्बी होती, तो इनके द्वारा जाने क्या क्या पांडित्य के, विकास के, तर्क के, आध्यात्मिक अनुभूति के अमूल्य रत्न केवल आर्यसमाज ही को नहीं, किन्तु सम्पूर्ण मानव-संसार को हस्तगत होते। इस अपरिपक्व अवस्था में इनके लिखे हुए लघु लेख तथा पुस्तिकाएं ही इनके असीम पांडित्य के बीच ही में रुक गए प्रवाह के अकाट्य प्रमाण हैं। गुरुदत्त केवल पंडित ही न था, वह सच्चा ऋषि पुत्र था। उसे न धन की परवाह थी, न जन की। सच की वेदी पर उसने अपना सुख, सम्पत्ति, नाम और धाम सब स्वाहा कर दिया।

आर्य पत्रिका का लेखांश—

१९ मार्च १८९० ई० को जब गुरुदत्त का शरीरपात हुआ तब आर्य पत्रिका ने हमारी क्षति शीर्षक से एक लम्बा और हृदय विदारक लेख लिखा था जिसका निम्नांश अत्यंत विचारणीय है।

"एक मनुष्य एक असाधारण मनुष्य एक अलौकिक मनुष्य संस्कृत विद्या का एक सच्चा और अद्वितीय पंडित प्राचीन ऋषियों का वंशज इस संसार से उठ गया। आर्यसमाज का भूषण और गौरव सत्य और ज्ञान का आदर करने वाले सभी लोगों के अभिमान पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी अब हमारे पास नहीं हैं। हा वह पुण्यात्मा अब नश्वर शरीर में बन्द नहीं युवा और वृद्ध हम सब उन्हें ढूंढ रहे हैं। सत्य तो यह है कि हमें अभी इस बात का विश्वास नहीं होता कि वे हमें छोड़ गए हैं। हा ! हम फिर उन जैसा मनुष्य कब देखेंगे ? हम फिर ऐसा मनुष्य कब देखेंगे जिसके रोम-रोम में सच्चाई के प्रकाश वैदिक धर्म के सनातन सिद्धान्तों को फैलाने की कामना और परमेश्वर की वाणी तथा उन लोगों को वाणी के द्वारा जिन्होंने उस वाणी को जाना और समझा, संसार के सामने लाने की कामना रम रही हो। हा गुरुदत्त विद्यार्थी। इस समय तेरी क्षति असमाधेय है। अपने विशेष क्षेत्र में तू कोई भी ऐसा मनुष्य पीछे नहीं छोड़ गया जो वह काम कर सके, जिसे तूने करना था।'

आर्य पत्रिका के अतिरिक्त अवध अखबार लखनऊ, रफी के हिन्द अखबार, रावी अखबार, दूरबीन, पैसा अखबार लाहौर अखबार, अमस्वारे हिन्द, पंजाब मिरर रावलपिण्डी, आफताब पंजाब लाहौर, इम्पीरियल पेपर लाहौर, अखबार सरमौर गजट, कोहनूर लाहौर, ताजुल अखबार रावलपिण्डी, सराजुल अखबार जेहलम, सादक अखबार बहावलपुर, अलीगढ़ इन्स्टीट्यूट गजट अखबार आम लाहौर, धर्म जीवन लाहौर भारत सुधार लाहौर, ईसाई पत्र ब्राईट लाहौर, नूर अफशां लुधियाना, राजपूताना गजट अजमेर, सिविल एण्ड मिलिटरी गजट लाहौर, आर्य समाचार मेरठ, आर्य गजट फिरोजपुर, सद्धर्म प्रचारक जालधर तथा ट्रिब्यून लाहौर में श्री पंडित जी के देहान्त पर सम्पादकीय लेख बड़ी भावपूर्ण भाषा में लिखे गए थे।

एक २६ वर्ष का नवयुवक किस प्रकार इतना प्रभाव उत्पन्न कर सका कि अपने तो अपने बेगाने भी उसकी मृत्यु पर आठ आठ आंसू बहाते देखे गए। बाबा अग्निहोत्री और मुन्शी गोपीचन्द जैसे व्यक्तियों ने भी पंडित जी की योग्यता की भरपूर प्रशंसा की थी।

परन्तु आर्य बन्धुओ मुझे तो आपसे कुछ पूछना है कि आपने कभी भूल कर भी ऋषि मिशन के परवाने वेद के सच्चे प्रचारक और वैदिक सिद्धान्तों की सत्यता में विश्वास रखने वाले इस महामानव को स्मरण किया है। १८९० ई० के पश्चात् आज तक क्या कभी किसी आर्यसामाजिक पत्र पत्रिका या सभा ने अपने पत्रों के विशेषांक निकालने का प्रयत्न किया। मुनिवर पं० गुरुदत्त, अमरशहीद पं० लेखराम निःशुल्क शिक्षा को गुरुकुलों के माध्यम से प्रचारित करने वाले तार्किक शिरोमणि स्वामी दर्शनानन्द जी स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक और कन्या महाविद्यालय जालधर के संचालक लाला देवराज जी, मस्ताने प्रचारक बलिदानी चिरंजीलाल जी को आज हमारे नवयुवक तथा बच्चे कहां जानते हैं ?

आर्यबन्धुओ—अपने पूर्वजों को जीवित रखोगे तो स्वयं का जीवन ही लम्बा करोगे तथा साथ ही कृतघ्नता के पाप से बच जाओगे अन्यथा जिस मार्ग का अवलम्बन आज हम कर रहे हैं, वह मार्ग न वेदयानन्द का है और न दयानन्द के दीवानों का। वह मार्ग तो यदि आप बुरा न मानो तो या मैकाले का है या उदासीनों और कर्मद्वेषियों का। आर्यवीरो-भाई और बहिनो—जागो और महर्षि के

(शेष पृष्ठ ११ पर)

व्यासपीठ—— उपनिषत् कथा-माला—३

सुख की प्राप्ति के विभिन्न साधन

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

उपनिषदो का कथन है कि सशय-ज्ञान और विपरीत-ज्ञान मनुष्य समाज के दो बडे शत्रु हैं। इन दोनो मे बडा अन्तर है। जहा कोई ज्ञान सदिग्ध और दुविधा सयुक्त हो उसे 'सशय ज्ञान" कहते हैं। उलटे मार्ग पर चले जाना और जब कोई बताये तो हठ करना इसे 'विपरीत-ज्ञान' कहते हैं।

कल्पना करो आप दीनानगर के रास्ते से भटक गए हैं। आपको यह विचार नही रहा कि मैं किस मार्ग पर जा रहा हूं, किसी ने पूछा "आप कहा जा रहे हैं?' आपने कहा, "दीनानगर" उसने कहा, "दीनानगर का यह मार्ग नही, वह तो आप तीन मील पीछे छोड आये हैं।" आपने हाथ जोडकर कहा, "महाशय कृपया मुझे बतलाइए मैं किस मार्ग से जाऊ"। उसने कहा, "महाशय तीन मील के अन्तर पर एक वृक्ष है। वहा से दायें हाथ को दीनानगर का मार्ग जाता है।" आपने सुनकर उसका धन्यवाद किया लौट पडे, और दीनानगर के मार्ग पर आकर दीनानगर पहुँच गए। बस इस को 'संशयज्ञान' कहते हैं।

परन्तु भारत को विपरीत शक्ति ने घेरा हुआ है। इन्हें जब कहा जाए कि "यह काम न करो यह अच्छा नही।" तो भारतवासी मानने पर ही नही आते। विपरीत शक्ति को भी सुधारा जाता है। पहले यह साबित कर दो कि यह मार्ग ठीक नही उलटा है। जब उसे इस बात का ज्ञान हो जाये और मान जाये तो उसे सीधा मार्ग बता दो।

यहा पर तो प्रतिदिन उपदेश होते हैं। बडे-बडे जोर जोर से कहा जाता है। "भाई! जिस मार्ग पर तुम चल रहे हो वह उल्टा है।' परन्तु इनकी यह यात्रा कभी पूरी नही होती। कितनी ही बार कहा जाये कि जिस बात को तुम सच्चा मानते हो वह ठीक नही' परन्तु ये एक नही सुनते। बस इसी का नाम "विपरीत शक्ति और विपरीत ज्ञान" कहते हैं और इसीलिए यह बहुत हानिकारक है। इसीलिए मेरे भाई! न्यायशतक मे यह सिद्धात बताया है कि 'दुनिया मे अनर्थ उत्पादक अथवा दुख पैदा करने वाले और धर्म का नाश करने वाले सशय-ज्ञान और विपरीत-ज्ञान ही हैं।"

अब उपनिषत् कहते हैं "क्या माता, क्या पिता, क्या पुत्र, क्या और कोई सभी के हृदय में एक गाठ है और वह अविद्या की गाठ है। इसलिए मनु भगवान् और तुलसीदास महाराज ने भी कहा है कि "जीव अपने अज्ञान के कारण अपने अन्तःकरण को पवित्र नही बना सकता। पहले इस अविद्या की गाठ को खोलने की कोशिश करो।" अविद्या ही तो उलटी समझ का कारण है। ऋषियो ने अविद्या के विषय मे कहा है कि 'दुष्ट ज्ञानमविद्या' अर्थात् दोषयुक्त ज्ञान ही अविद्या है।

उपनिषत् कहते हैं—

भिद्यते हृदयग्रन्थि
छिद्यन्ते सर्वसंशया।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि
तस्मिन् दृष्टे परावरे॥

इस अविद्या से छुटकारा कैसे हो? इस प्रश्न के उत्तर मे जिस समय मनुष्य की अन्त करण की ग्रन्थि टूट जाती है तो सशय ज्ञान निर्मूल हो जाता है। जिस प्रकार दाने को भून लेने से उसमे उगने की शक्ति नही रहती, धान का छिलका उतार लो तो उसकी उत्पन्न करने की शक्ति जाती रहती है इसी प्रकार सशय-ज्ञान के भाव पैदा हो जाने पर जब उनका ठीक-ठीक उत्तर मिल जाये तो सब सशय मिट जाते हैं।

जब मनुष्य पैदा होता है तो माता के साथ उसका क्या सम्बन्ध होता है? पिता के साथ उसका क्या सम्बन्ध है? परमपिता परमात्मा के साथ उसका क्या सम्बन्ध है? ये सब बातें उसे विद्या ही तो सिखाती हैं।

भारतवर्ष मे दान की प्रणाली ही निराली है। दान बहुत अच्छा है, कौनसा सुख है जो दान से मनुष्य का नही मिलता? किन्तु क्या भारतवासी दान करते हैं? ये तीर्थों पर जाना, गगा मे स्नान करना, बस इसी को दान-पुण्य समझ बैठे हैं। भाइयो! प्राय दिन कुम्भ होते हैं, हरिद्वार का तथा प्रयाग का कुम्भ आदि। क्या कभी यह सोचा कि इस अवसर पर रेल वालों को तुमने कितना रु० किराये मे दे दिया। अनुमान से ढाई तीन करोड रुपया हर एक कुम्भ में रेलवे को किराये का दिया जाता है। यह किस लिए? इससे क्या लाभ हुआ? गगा मे स्नान किया बस इसी को आप पुण्य समझ बैठे। यह कहा की बुद्धिमत्ता है किन्तु इन्हें तो विपरीत-शक्ति ने घेरा हुआ है।

तनिक देखो तो सही। अमेरिका मे एक महोत्सव होने वाला है। उस पर दस करोड रुपये लागत का अनुमान किया गया है। इसमे उन्हें गंगा यमुना मे स्नान नहीं कराया जायेगा। बल्कि यह बताया जावेगा कि गत शताब्दी मे विज्ञान ने कितनी उन्नति की है? कहा तक पैर फैलाये हैं। परन्तु तुमने यह रुपया किस लिए खर्च किया? गङ्गा-स्नान से तुम्हारा मन कुछ पवित्र हुआ? योरुप अमेरिका और जापान वाले करोड क्या ५० हजार रुपया भी ऐसी दिल्लगी मे खर्च करने वाले नही। उचित तो यह था कि अन्त करण की शान्ति होती। इन्द्रियो को वश मे लाया जाता। इनमे से एक बात भी हो जाये तो बस बेडा पार है। जिस प्रकार तीव्र वेग से वायु चलके वृक्ष को उखाड देती है, इसी प्रकार समाज का भी यदि ज्ञान से सम्बन्ध न हो तो वह ऐसे ही गिर जाता है, जैसे वायु मे वृक्ष। परन्तु यहा तो अपना गुण गाना ही एक महान् कार्य है, किन्तु ये जो कर्म हैं, ये सब जन्म और मरण के देने वाले हैं।

एक बार मैं मुजफ्फरनगर से बरेली जा रहा था, जिस डिब्बे मे मैं सफर कर रहा था उस डिब्बे मे कोई और मनुष्य नही था। रुडकी के स्टेशन पर चार लडके उसमे आ बैठे। वे कालिज के विद्यार्थी जान पडते थे। निकर, कोट आदि पहिने हुए थे। ऐसा प्रतीत होता था कि ये धनी पुरुषो के पुत्र हैं। उन्होने मुझ से पूछा, "बाबा जी! यदि हम गायें तो आप रुष्ट तो न होंगे?" मैंने कहा, "भाई! जो तुम्हारी इच्छा हो सो करो। गाने मे दोष कसा?' उनमे से एक दो गाने लगे। एक मजनू बन गया उसने आखें बन्द कर ली और लगा पुकारने—'हाय लैला! हाय लैला!" फट्टे के साथ जाकर टकराया। उसकी यह दशा देखकर मैंने कहा—

देख मजनूं का जुनून,
तकता है कैसा प्यार सु?
घट में है लैला निहां,
करता है किसकी जुस्तजू?

तब तो उसने आखें खोलीं और अपने साथियों से कहने लगा "यह बाबा तो पढा-लिखा है।" मैंने पूछा, "भाई! यह जिन लैला-मजनू की तुम बातें कर रहे हो, बता सकते हो वे कहा के थे? उन्होंने एक दूसरे को एक बार देखा था या कई बार? इस बात ने उनके जीवन को, दुनिया के सब कार-व्यवहार को ऐसा पलट दिया?" उन्होंने उत्तर दिया, "यह तो ज्ञात नहीं।"

यह है इस देश की दशा। कहां का मजनूं? कहां की लैला? परन्तु उनके स्वांग इस देश के युवको को भ्रष्ट करने के लिए रचे जा रहे हैं।

एक धनी पुरुष था। उसने अपने नौकर से कहा, "मेरा कमरा खाली कर दे!" रात का समय था। नौकर ने दीपक जलाया और कमरे के एक कोने मे रख दिया। कमरे की सब वस्तुएँ पुस्तक आदि निकालकर बाहर रख दी और कमरा खाली कर दिया। मालिक से कहा, "सरकार! कमरा खाली कर दिया गया है।" मालिक ने कहा, 'चलो देखें।' जब वह कमरे मे आया तो उसने देखा कि दीपक कमरे मे रखा है। उसने कहा, 'जिस दीपक से तुमने प्रकाश किया था, उसे तो कमरे ही मे रख गये।" बस यही हमारी हालत है। जिस ज्योति से हमे प्रकाश मिलता है उसे ही हम भूल जाते हैं। भाइयो, उस प्रकाश को पहचानो! इसी से तुम्हारा कल्याण होगा!

जहा के लैला मजनूं हुए हैं वहा की एक कहानी है। दो आदमियो मे एक लाख रुपये के लिए झगडा हो गया। मुकदमा न्यायालय मे गया। कई हजार रुपये लग गए। अन्त मे उन्होने यह निश्चय किया कि इस प्रकार तो कुछ फैसला होता दिखाई नही देता। चलो चलकर मजनू से पूछे। उसे किसी का पक्ष नही होगा। उसकी तो केवल एक ही धुन है। दोनो उसके पास गए। मजनू अपनी शान से बैठा था। उन्होने जाकर उससे सवाल किया कि 'यह रुपया किसे मिलना चाहिए?" पहले तो उसने उस तरफ कुछ ध्यान न दिया। एक दो बार कहने पर उनकी तरफ देखा और कहा, 'लैला को।' उन्होने कहा, 'चलो लैला से पूछे।' जब उससे जाकर पूछा तो उसने कहा, 'मजनू को।' लैला मजनू से यही सबक सीखो। जिस तरह उनके दिल मे एक दूसरे का प्रेम था। तुम ईश्वर से उसी प्रकार प्रेम करके देखो! आपके अन्दर कितना तेज आता है। यह क्यो?

खुल गया राज जिसको पिनहानी।
हेच है उसको ताजे सुलतानी।

इसीलिए उपनिषदों ने कहा है कि हृदय की ग्रन्थि जब टूट जाती है तो सब सशय मिट जाते हैं। व्यवहार को ठीक करने से ये सब भ्रम दूर हो जाते हैं। जैसे मृदंग की रस्सियां जब तक न खेंची जायें उसमें से शब्द ठीक नहीं निकलता। इसी प्रकार अपने हृदय की रस्सियो को खींचो! ग्रन्थि टूट जावेगी और सब संशय दूर हो जावेंगे।

जिन लोगो ने शुभ कार्य करना अपना धर्म मान लिया है और झूठे तथा बुरे कामो का त्याग कर दिया है जिन्होंने उन कार्यों को ग्रहण कर लिया है। जिनसे ईश्वर-प्राप्ति होती है, उनका अन्तःकरण

पवित्र हो जाता है। मनुष्य-प्रकृति की दो अवस्थाएं हैं, एक उठने की और दूसरी गिरने की। उठने की अवस्था में वह परमात्मा में सब को देखता है और गिरने की अवस्था में वह परमेश्वर को सब में देखता है।

बस यही दो नियम दुनिया में काम करते हैं। यदि आपकी भक्ति में यह रूप आ जाये कि परमात्मा सब में विद्यमान है और हम सब परमेश्वर में हैं तो फिर आपसे कोई भी बुरा काम न होगा। परन्तु यहां तो बात ही उलटी है। जो ईश्वर-प्राप्ति का समय होता है, उसमे हम अनेक प्रकार की बुराइयां सोचते रहते है। फिर आप कहते हैं सन्ध्या में दिल नहीं लगता।

जापान को देख लो। क्या उन्होंने सिनेमा नहीं देखे। उन्होंने भी देखे परन्तु थोड़े और उनसे शिक्षा ग्रहण की और फिर अपना मार्ग पकड़ लिये। तुम मन को अपने वश में कर लो, फिर चाहे सिनेमा भी देख लो, परन्तु तुम उनसे कुछ लाभ ही उठाओगे। एक कवि ने ठीक कहा है—

सुधरे अगर नौजवानों की हालत।
तो यह ठीक है उन्नति की दलालत॥
कहीं मुंह में सिगरेट
कहीं चा की प्याली।
कहो मुंह पै कैसे
रहेगी यह लाली॥
हो अब नौजवानों को

भारत में दान की प्रणाली ही निराली है। दान बहुत अच्छा है, कौन-सा सुख है जो दान से मनुष्य को नहीं मिलता ? किन्तु क्या भारतवासी दान करते हैं ? ये तीर्थों पर जाना, गंगा में स्नान करना, बस इसी को दान-पुण्य समझ बैठे हैं। भाइयो ! आये दिन कुम्भ होते हैं, हरिद्वार का तथा प्रयाग का कुम्भ आदि। क्या कभी यह सोचा कि इस अवसर पर रेल वालों को तुम ने कितना रुपया किराये में दे दिया। अनुमान से ढाई-तीन करोड रुपया हर एक कुम्भ में रेलवे को किराये का दिया जाता है। यह किसलिए ? इससे क्या लाभ हुआ ? गंगा मे स्नान किया बस इसी को आप पुण्य समझ बैठे। यह कहां की बुद्धिमत्ता है किन्तु इन्हें तो विपरीत-शक्ति ने घेरा हुआ है।

दिल तो लगता है तुम लगाओ भी ? जिधर भी दिल को लगाओ तुम लगा सकते हो। उसका स्वभाव तो बड़ा सीधा है। अच्छा यह तो बताओ ! आप सिनेमा जाते हैं, वहां भी दिल लगता है या नहीं ? या जब कोई बुरा काम करते हो तो कितनी जल्दी आपका मन उसमें लग जाता है ? उस समय आपका मन कौन लगाता है ? मन को सीधे मार्ग पर ले जाना आपका काम है। पर यहां तो कुपथ्य फैल रहा है। भला कभी कुपथ्य करने वाले रोगी भी अच्छे हुए हैं ? कृष्ण महाराज से भी यही प्रश्न हुआ था कि मन वायु से अधिक चंचल है। वायु को रोकना तो सुगम है, किन्तु मन को रोकना कठिन है। उन्होंने उत्तर दिया, "यह बात नहीं। गुलाब के फूल को मसलना कठिन है, किन्तु मन को सीधे मार्ग पर लगाना सुगम है। केवल अभ्यास को परिपक्व बनाने की आवश्यकता है।" बालक पाठशाला में पढ़ता है, बी० ए० पास करता है। वह मन को न लगाता तो बी० ए० पास कैसे करता ? अच्छा और लो। पहलवान अखाड़े में कुश्ती लड़ता है, उस समय वह मन लगाता है कि नहीं ? बस जिन्होंने मन लगाया उनका ही बेड़ा पार हो जाता है। मेरे भाई ! अभ्यास करने की आवश्यकता है। विद्यार्थी के समान, पहलवान के समान मन लगाओ। कृतकार्य हो जाओगे। मेरे भाई ! मन को लगाना बड़ा सुगम है। तुम जो अपने मन से सलाह करते हो। उस समय मन जो तुमसे कहता है उसका उल्टा करो। यदि वह कहे कि सिनेमा देखो, तो तुम न देखो। योग वालों ने भी इसी प्रकार सिद्धि प्राप्त की है। उन्होंने कहा है कि यदि मन उलटे मार्ग पर चले तो तुम उसके विरुद्ध चलो।

फैशन ने घेरा।
लगे पार किस भांति
भारत का बेड़ा ?

प्रत्येक बात कठिन भी है आसान भी। जब मनुष्य का मन अपने वश में हो तब तो सुगम है, यदि वश से बाहर हो तो कठिन है। इसीलिए कहा है—

खुल गया जिस पै राजे पिनहानी।
हेच हैं उसको ताजे सुलतानी॥

जैसा तुम चाहते हो कि दूसरा आदमी तुम से व्यवहार करे तुम भी दूसरो के साथ वैसा ही व्यवहार करो। उसी कांटे पर तुम भी अपने आपको तोलो, जिस पर दूसरों को तोलना चाहते हो। किसी की निन्दा न करो। सदैव अच्छी बातों का विचार करो। अच्छी पुस्तकों को पढ़ो। विद्या पढने से संशय दूर हो जाते हैं। बुरे विचार जब मन में पैदा होते हैं तो मनुष्य नष्ट हो जाता है। ऐसे मनुष्य को कभी सुख प्राप्त नहीं होता। उसका शरीर दुर्बल हो जाता है। कभी मृत्यु की इच्छा करता है। कभी बेसुध हो जाता है। विद्वानो तथा बुद्धिमानों ने अपने मन को वश में रक्खा, फिर उनको किसी प्रकार का भय न रहा। एक कवि ने कहा है—

अक्ल से कुछ काम ले,
चल लौटकर तू अपने घर।
कब तलक फिरता रहेगा,
मारा मारा दर बदर॥
बा खबर होकर भला तू,
क्यों हुआ है बे खबर ?
रास्ता तेरा इधर है,
जा रहा है तू किधर॥

परन्तु हिन्दू जाति दुर्बल है। इसके मन में बुराई कूट-कूटकर भरी है। यहां तो विषवाओं का झगड़ा ही दम नहीं लेने देता। एक फारसी शायर ने कहा है—

इका ईं इल्लत, शिताबत कर्द दूर।
कि तुरा रजो-अलम साहब रजूर॥

अर्थात् तुझे यह रोग शीघ्र ही दूर करना चाहिए जिससे तेरा दुःख दर्द सब मिट जाये। विधवाओं का दुःख सब जानते हैं, सब समझते हैं कि यह बड़ा भारी दुःख है। परन्तु इसे मिटाने का कोई साहस नहीं करता। आर्यसमाज बनारस की बात है, वहां एक मनुष्य आया। उसके साथ एक बालिका थी। उसने मन्त्री से मिलने को कहा। उससे पूछा, "भाई क्या काम है।" उसने कहा मन्त्री साहब से ही काम है। अस्तु मन्त्री महोदय को बुलाया गया। जब मन्त्री जी आये, तो उसने कहा यदि तुम्हें इस लडकी को सभालना हो तो सभाल लो, नहीं तो जहां इसका जी चाहे चली जाए, चाहे मुसलमान हो जाये या क्रिस्तान। उस बालिका से पूछा गया तो वह बडे जोर से रो पडी। उससे कहा, 'रोओ नहीं।' उसने कहा कि 'मुझे विश्वास कैसे आये कि तुम मेरी सहायता करोगे। जब माता-पिता ही सहायक नहीं हुए, तो तुम कैसे सहायक हो सकते हो।' उस कन्या को धीरज दिया गया तो उसने बताया कि "जब मैं आठ नौ वर्ष की थी तब मेरा विवाह हुआ। इस समय मेरी आयु पन्द्रह सोलह वर्ष की है। यह जो मेरे साथ मुझे यहा छोडने आया है, मेरा चाचा है। इसी ने मेरा सत्यानाश किया। अब इसका विवाह हो रहा है। मैं कहां जाऊ ? मेरा सर्वस्व लुट गया। इस जाति का कल्याण कैसे होगा ? यह ठीक है कि मैं बुरी हू, किन्तु जिसने मुझे बुरा बनाया, इस पाप में फँसाया, वह भी तो बुरा है। पाप तो दोनो ने ही किया है। एक का तो विवाह हो रहा है और दूसरे को घर से बाहर निकाला जा रहा है। दोनों को ही निकाला जाना चाहिए था।"

भाइयो ! ऐसी सैकड़ों घटनाएँ प्रतिदिन होती हैं। जिधर देखो उधर यही दशा है। इस अभागे देश का कब कुछ बनेगा ? यह कैसे उठ सकेगा ? जो देखता है कि आये दिन ऐसी घटनाएँ होती हैं, परन्तु मन वश में नहीं। आर्यसमाज भी दुर्बल है। इसमें अनुभव शक्ति आयेगी तो उठ खड़ा होगा नहीं तो दाना जाल में पड़ा हुआ है। पक्षी आता है दाने को देखता है, लोभ में आ जाता है, नीचे उतर आता है, दाने पर चोंच मारता है, किन्तु अब उड़ नहीं सकता। व्याध ने पकड़ लिया और पिंजरे में डालकर चल दिया। यह हुआ क्यों, उसके मन में दाने का लोभ अधिक था।

भाइयो ! शोक बन्द करो। मन से युद्ध करो। स्वार्थ छोड़ दो। यदि अपने आपको कुछ बनाना चाहते हो तो विद्वानों के पास बैठो। बुद्धिमानों की संगति करो। बुद्धि आ जायेगी, कुबुद्धि दूर हो जावेगी। जिस काम का ज्ञान के साथ सम्बन्ध नहीं होता वह कदापि सिद्ध नहीं होता। जिससे सब संशय दूर हो, उसी विद्या के आगे लोगों ने सिर झुकाया है और उनका बेड़ा पार हो जाता है।

हमला बर खुद में कुनी ऐ सादा मर्द।
हम चूं आं शेरे कि बर खुद हमला कर्द॥

अर्थात् ऐ मूर्ख तू अपने ऊपर स्वयं ही आक्रमण कर रहा है उस सिंह के समान जिसने अपने ऊपर ही आक्रमण किया था। बुद्धिमान् होकर मूर्ख न बनो। सुनो ! एक जंगल में एक सिंह रहता था। जब उसे भूख लगती तो जो पशु उसके सामने आता उसे मार देता। इस प्रकार वह प्राय सात आठ पशु रोज मार डालता था, परन्तु खाता था केवल एक ही। वन के सब वनचर दुःखी हो गए। उन्होंने सोचा कि कोई उपाय निकालना चाहिए। इस प्रकार तो थोड़े ही दिनों में हम सब मार दिये जायेंगे। वे सब एकत्र होकर सिंह के पास गए और कहा, हे वनराज ! तुम आक्रमण करते हो तो सब वनचरों को मार डालते हो किन्तु खाते केवल एक को ही हो। अतएव तुम आक्रमण करने का कष्ट न किया करो हम प्रतिदिन एक पशु दोपहर को तुम्हारे भोजन के लिए भेज दिया करेंगे। सिंह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने कहा, 'बहुत अच्छा'। कुछ दिन तो पशु आते रहे, अन्त में एक दिन सब जानवरों ने एकत्र होकर एक सभा की और कहा 'भाई ! इस प्रकार तो हम सब समाप्त हो जायेंगे।' खरगोश ने कहा, 'अच्छा कल मैं जाऊंगा।' दूसरे दिन दोपहर को गया, १२ बज गये परन्तु कोई पशु सिंह के पास न आया। १ बज गया, २ बज गये परन्तु फिर भी कोई पशु न पहुँचा। सिंह बड़ा घबराया उसे भूख लग रही थी। इतने ही मे खरगोश राम पहुचे। उसे देखकर सिंहराज ने कहा, 'अरे ! एक तो तू समय पर नहीं आया। फिर तुझ से मेरा क्या बनेगा ? मैं सब पशुओं को अभी समाप्त किये देता हू'। खरगोश ने कहा, "मैं यहा तुम्हारे भोजन के लिए तो नहीं आया। मैं तो तुम्हें तुम्हारे वैरी की सूचना देने आया हू। इस जंगल में एक और शेर आ गया है। वह कहता है कि यदि तुम दूसरे सिंह के पास जाओगे, तो मैं तुम सब को मार डालूंगा। मैं तुम्हें इसका समाचार देने आया हू'। यह सुनकर सिंह को बड़ा क्रोध आया। उसने कहा, "अरे चल। बता वह सिंह कहा है ? पहले मैं उसी को मार खाऊँगा।" उसने कहा, 'चलो' ! खरगोश शेर को एक कुए के पास ले आया, जिसकी मुंडेर बहुत ऊँची बनी हुई थी। खरगोश कहने लगा, "सिंह इस कुएँ में था। पता नहीं अब कहां छिप गया ? मैं देखूं इस खोह मे तो नहीं।" खरगोश ने मुंडेर पर चढ़कर देखा। बोला "इसी खड्ड मे है"। शेर भी मुंडेर पर चढ़ गया। उसका प्रतिबिम्ब पानी मे पड़ा। उसने समझा कि सचमुच दूसरा शेर इसी में है। मेरे भय के मारे छिप गया है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

(गताक से आगे)

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के दीक्षान्त समारोह पर

दीक्षान्त-भाषण

द्वारा—पं० सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार

श्रद्धापूर्वक विभिन्न यज्ञो से, यज्ञमय जीवन से, ज्ञान प्राप्त करते हुए शान्ति की प्राप्ति सहज हो जाती है। हमारे भूतकाल में ज्ञानयज्ञ का अनुष्ठान सदा तीव्र रूप मे अग्रसर होता हुआ, सामाजिक जीवनो मे विशुद्ध दृष्टि (Vision) या चिन्तन को प्रदान करता था। ज्ञान की धारा लौकिक और अलौकिक, प्रेय और श्रेय आसुरी तथा दैवी, वामपक्षी या दक्षिणपक्षी आदि द्वन्द्वो मे सघर्षात्मक दृष्टि से आगे बढी थी। दर्शनशास्त्र या आन्वीक्षिकी विद्या का इसमे विशेष भाग है। बडे-बडे ऋषि मुनि और आचार्य जब उपरोक्त असत् और सत् विचारधाराओ पर गम्भीर मन्थन करते थे तो जातियो के जीवन परिवर्तित हो जाते थे। धर्म, सस्कृति, सभ्यता और समाज-रचना के नये-नये स्रोत बह निकलते थे और ससार को नवजीवन प्राप्त होता था। मैं वर्तमान युग मे ज्ञानी पुरुषो मे भारतीय आन्वीक्षिकी विद्या या दर्शनशास्त्र की पूर्ण चर्चा का किया जाना आवश्यक समझता हू। यह विश्वविद्यालयों की पृष्ठभूमि मे ही समुचित रूप से हो सकेगा। जब 'धर्मनिरपेक्ष शब्द बार-बार सुना जाता है तो लौकिक दृष्टि से धर्म शब्द तिरस्कृत हो जाता है। जब वैदिकी ज्ञानधारा "आचार प्रथमो धर्मं', धर्म पर का उद्घोष करती है तो 'Secular शब्द धर्मनिरपेक्षता के अर्थों मे आचारनिरपेक्षता' की तरफ खींच ले जाता है। यही कारण है कि वर्तमान भारतीय समाज मे 'भ्रष्टाचार बुरी तरह से फैलता जा रहा है और नैतिक मूल्य गिर रहे हैं। धर्म सस्थापन या धर्मचक्र-प्रवर्तन एक हंसी-मात्र दिखाई देते हैं। धर्म शब्द महान् है—यह कर्तव्य, पुण्यकार्य कानून तथा व्यवस्था आदि मे मुख्यत प्रयुक्त होता है। धर्मनिरपेक्ष शब्द को सरकारी रूप से तिलाञ्जलि दी जानी चाहिए। भिन्न भिन्न मतो या सम्प्रदायो के साथ धर्म शब्द का व्यवहार हमारी अशिक्षा का परिचायक है। सब सम्प्रदायो के प्रति उदारता का परिचय देना, विभिन्न मत भेदो में भी पारस्परिक आदर भाव रखना मानवमात्र को भाईचारे से बरतना ईश्वर के प्रति श्रद्धा और विश्वास रखना Secular शब्द का अर्थ नहीं है। भारत मे इस विषय मे अर्थ का अनर्थ किया जाना रोकना चाहिए। 'Secular विचारधारा वामपक्षीय लौकिक विचारधारा है जो अनीश्वरवादी नास्तिक विचारो से ओत-प्रोत हो जाती है।

जब वैदिक परम्पराओ मे याज्ञिक हिंसा और दुराचार प्रवृत्त हुए और लौकिक दृष्टि ही प्रमुख हो गयी तो बौद्ध धर्म ने पुरानी सदाचार की धर्म-मर्यादाओ को स्थापित किया था। नये नये विचारों से दृष्टि परिवर्तन भी हुआ। करीबन डेढ़ हजार वर्ष पूर्व से हमारे वैदिक और अवैदिक, सत् और असत्, दार्शनिको का ज्ञानचर्चा-द्वन्द्व अत्यन्त गम्भीरता से चलता रहा है। वैदिक आर्य दर्शनों पर बौद्ध आचार्यों के घात-प्रतिघात थे। इस सघर्ष मे कई सदियाँ बीत गयी। आर्य दर्शनो के ऋषि कपिल कणाद, गौतम, पतञ्जलि व्यास, जैमिनी आदि का सम्पोषण समन्वयात्मक दृष्टि से अग्रसर करने मे वात्स्यायन, उद्योतकाचार्य, शकर, वाचस्पति मिश्र, उदयनाचार्य आदि थे तो दूसरी तरफ असत् विचारधारा मे बौद्ध दार्शनिको ने भी प्रतिघात किए। इनमे नागार्जुन, दिङ्नाग, धर्म, कीर्ति, कल्याणरक्षित, अतिशा, वसुबन्धु, असग आदि प्रौढ विद्वानो द्वारा गम्भीर चिन्तन होता रहा और ज्ञान का चतुर्मुखी प्रवाह बहता रहा। इस तरह से दीर्घ काल के सघर्ष मे अन्त मे वैदिक विचारधारा ने ही 'सत्पक्ष' मे भारत की विजय को स्थापित किया। अब वही विचारधारा आगे सैमेटिक विचारों से टकरा गई है। इसमे महर्षि दयानन्द का प्रकाण्ड साहस, दूरदर्शिता गम्भीर चिंतन तथा सार्वभौम सस्कृति, धर्म, सभ्यता को समन्वय रूप से वैदिक धर्म के मानववाद मे पाना अभी गम्भीर चिंतन का विषय है जिसे भविष्य ने अपनी कसौटी पर रखना है।

भारत की सम्पूर्ण विचारधाराएँ गुरु शिष्य परम्पराओ द्वारा बड-बडे गुरुकुलो या विहारो मे पनपी थी। भगवद्गीता की वैदिक कर्मयोग की राजविद्या भी गुरु-शिष्य परम्परा से ही विकसित हुई थी।

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।
विवस्वान् मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवे ॥

इत्यादि परम्परा प्राप्त ज्ञान है। क्षत्रविद्या के लिए हमे तक्षशिला गुरुकुल के आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य के शिष्य सम्राट् चन्द्रगुप्त को भूलना नहीं चाहिए। इसी तरह से महर्षि पतञ्जलि द्वारा शिक्षित सेनापति पुष्यमित्र को भी भुलाया नहीं जा सकता। नवरत्नविभूषित उज्जयनी के महाराजा विक्रमादित्य को भी सदा याद रखना चाहिए। इन्होंने भूतकाल में आर्य जाति की स्वतन्त्रता को अखण्ड रूप से स्थापित किया था और भारत को शिरोमणि राज्य का स्वप्न दिखाया था। उस समय ब्रह्म और क्षत्र के समन्वय से भारत पुण्यश्लोक बन गया था।

राजधर्म को समझाने में जो कार्य रामायण तथा महाभारत ने किया है एव भारतीय स्मृतिग्रन्थो ने जो ज्ञान भारतीय मनीषियो को समय-समय पर दिया है, उस सब का भी पुन भारतीय दृष्टि से चिन्तन आवश्यक है। वर्तमान सास्कृतिक या राजनैतिक विचारधारायें भारतीय चिन्तन से न आकर विदेशी या पराये रूप मे हम पर लद-सी गयी हैं। यह गम्भीर चिन्तन भारतीय समाजशास्त्रियों का अब विशेष विषय है। हम सब कुछ अपनी ही ऐनक से देखते हैं और जैसा दीखता है उसी मे सत्य का दर्शन समझते हैं। अपनी स्वय की आखों की विशुद्ध दृष्टि ही अन्ततः यथार्थ होगी, इसे जानना चाहिए।

सम्पूर्ण भारत की भौगोलिक एकता को कविकुलगुरु कालिदास ने कुमारसभव के आरम्भ में अत्यन्त मधुरता से दिया है—

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा,
हिमालयो नाम नगाधिराज ।
पूर्वापरौ तोयनिधी विगाह्य,
स्थित पृथिव्या इव मानदण्डः ॥

इसी तरह से रघुवश मे रघु की सेनाओ ने जिस स्वराज्य की स्थापना की थी और जिसके द्वारा सूर्यवंश या रघुवंश ने भारतीय राजतन्त्र में रामराज्य की विचारधारा का सनातन रूप दिया था, वह भी भुलाया नहीं जा सकता। रघुवंश ने भारत के भौगोलिक स्वरूप को स्थायी दृष्टि दी थी। राघव वंश के रामराज्य की दृष्टि से भारत का केन्द्रीकरण सदा ही हमारा उद्देश्य रहना चाहिए।

अयोध्या से निकल कर जब महाराजा रघु ने केन्द्रीकृतार्थ (for integration) महाभारत निर्माण मे जो सेना प्रस्थान किया था वह पहले पूर्व की तरफ बढा था। मगध राज्य और सुह्म राज्यों को परास्त करते हुए बगदेश के अन्तिम किनारे तक रघु के झण्डे गड गए थे। इसी तरह से गगासागर के सब द्वीपों को वश में कर उड़ीसा और कलिंग देश को वशवर्ती किया। पास के सब पहाड़ी प्रदेशों पर भी अपना झण्डा फहराते हुए रघु ने महेन्द्र पर्वत पर अधिकार जमाया। इस तरह से पूर्वीय भाग पर विजय-पताका फहरा कर वे दक्षिण दिशा की तरफ समुद्रतट के साथ-साथ चले। कावेरी नदी के सब भूभागों को—पाण्ड्य राजाओं सहित—वशवर्ती करते हुए केरल प्रदेश को जीतकर वे भारत के सम्पूर्ण पश्चिमी प्रदेश पर छा गए। उधर से स्थल मार्ग से ही पारस देश (पर्शिया) में प्रविष्ट होकर उसके बडे भाग को समेटते हुए सिन्धु नदी के पश्चिमी प्रदेशों में उन्होंने प्रवेश किया, जहाँ अफगानिस्तान के कम्बोज या काबुल के राज्य को अपने साथ मिलाया। इसके बाद हिमालय के महान् प्रदेशों में सब राज्यों को वशवर्ती करते हुए अपने पराक्रम का सिक्का बिठा दिया। हिमालय की लौहित्य नदी को पार कर वे प्राग्ज्योतिष या आसाम में आ पहुँचे थे। इस तरह से महाभारत भूमि की पूरी परिक्रमा विजय द्वारा स्थापित कर उसका स्थायी मानचित्र बना दिया गया था। इस तरह से आर्य साम्राज्य की पूर्ण स्थापना कर वे वापस अयोध्या मे आ गए थे। विकेन्द्रित भारत एक महान् केन्द्रित (integrated) महाभारत में बदल कर रामराज्य में चरमोत्कर्ष पर पहुँचा था जिसका वर्णन महाभारत के शान्तिपर्व मे "रामे राज्य प्रशासति' प्रकरण मे देखा जा सकता है। इन सब विजयों में रघु ने आर्य मर्यादाओ का कभी त्याग नहीं किया। जिस राज्य को जीता उसे ही सम्मान पर लगाकर सुराज्य स्थापना के लिए दे दिया। कोई बदले की भावना न थी। कोई ईर्ष्या या द्वेष न था। रघु ने विशाल स्वराज्य या धर्मराज्य को पैदा किया और राम ने 'सुराज्य रूप में परमावस्था का दर्शन दिया। साम्राज्य स्थापना मे दिग्विजय के बाद रघु ने 'विश्वजित् यज्ञ को किया और 'परोपकाराय सतां विभूतय', 'सर्वभूतहिते रता', 'सर्वजनसुखाय' के वैदिक आर्य उद्देश्यो की पूर्ति के लिए सब कुछ दक्षिणा रूप से दान मे देकर उन सब राजाओ को सम्मानित किया जो रघु से युद्ध मे हार जाने से अपने को लज्जित तथा तिरस्कृत समझते थे। सभी को पूर्ववत् मानमर्यादा देते हुए स्वय एक तपस्वी, निर्धन, वानप्रस्थी बन कर ऋषि आश्रमो मे चले गए, क्योंकि योगेनान्ते तनुत्यजाम् का उद्देश्य जो पूरा करना था।

इस तरह से मैंने भारत की प्राचीन गौरव गाथा आपके सामने रखी है। इससे ससार की महान् शक्तियों को बहुत कुछ सीखने को मिल सकता है। रघुवीर और यदुवीर जैसे आर्यवीर भारत के सदा चमकते सूर्य और चांद की तरह प्रकाश और जीवन देने वाले हैं। महर्षि दयानन्द के सामने भारत की यह गौरवगाथा सदा ज्योति स्तम्भ की तरह भविष्य का पथ-प्रदर्शन करने वाली रही है।

भारत में बहुत से साम्राज्य आए और उजड गए। उनमे भिन्न-भिन्न सस्कृतियाँ या सभ्यताएँ बनी और उजड़ती रहीं। परन्तु धर्मतत्व की महिमा पर और उसके उच्च आदर्शों पर कभी आंच न आ सकी। शरीर मर गया परन्तु

(क्रमशः)

राष्ट्र के सम्मुख चुनौतियाँ और आर्य वीर दल

नरेन्द्र अवस्थी
सचालक आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश

देश आज जिस नाजुक दौर से गुजर रहा है शायद ऐसी विषम परिस्थितिया पहले कभी नही उत्पन्न हुई। सीमावर्ती प्रान्त जम्मू-कश्मीर व पजाब में विघटनकारी तत्वों के राष्ट्रद्रोहिता से ओत प्रोत हिंसक काण्ड, गुजरात में आरक्षण की ओट मे मुस्लिम साम्प्रदायिकता का फन उठाता अजगर, उत्तर प्रदेश, बिहार में उर्दू की वकालत के पीछे बेनकाब होती बदनीयती राष्ट्रवादियो के लिए गम्भीर चुनौतिया हैं। शिक्षा का मात्र अक्षर ज्ञान व व्यावसायिक मापदण्ड मानकर धार्मिक व नैतिक शिक्षा के अभाव से भावी पीढी में पनपती नास्तिकता, किंकर्तव्य विमूढता, उत्तरदायित्व हीनता भविष्य के लिए राष्ट्रवाद के अभाव का परिचायक है। पहले शराब जीवन में खोखलापन व भ्रष्टाचार ला रही थी। अब विदेशो से तस्करी द्वारा आई हेरोइन हशीश, नशीली गोलिया आदि की भारी मात्रा मे आमद देश की हरी-भरी तरुणाई को जर्जरित व मृत्यु के द्वार पर ला खडा करने का कुप्रयास हो रहा है। अश्लील साहित्य व अश्लील फिल्में, कला के नाम पर कैबरे नाच, फैशन के नाम पर भौंडा प्रदर्शन युवा पीढी को बहका रहा है, भटका रहा है। अभाव, अज्ञान शोषण के खिलाफ भी जमकर लोहा लेने की आवश्यकता है। दहेज-दानव, अस्पृश्यता आदि कुरीतियो से भी पिण्ड छूटा नहीं। आर्यसमाज सदैव पाखण्डवाद, राष्ट्रद्रोहिता, भ्रष्टाचार आदि से टकराया है, उसने अभाव, अज्ञान शोषण के खिलाफ भी आन्दोलनात्मक सघर्ष किया है।

आज पुन विघटनकारी तत्वों नशो व अन्य बुराइयों से टकराने के लिए आर्यवीरो को आगे आना होगा। हमे महाराज दशरथ की भाति अपनी सन्तानों को आर्यसमाज रूपी विश्वमित्र को सौंपना होगा। हर आर्यसमाज कम से कम दस आर्यवीर तैयार करे। यज्ञ तो हम प्रतिदिन करते हैं परन्तु जीवन को यज्ञमय बनाने का सकल्प लेने की जरूरत है। दस दस आर्यवीर भी प्रत्येक आर्यसमाज आगे लाए तो आर्यवीरो का एक भव्य संगठन तैयार हो सकता है। युवा वर्ष में इस आह्वान को रचनात्मक रूप देना होगा। आर्यवीरों की यह शक्ति राष्ट की कुरीतियों पृथकतावादी तत्वों के मन्सूबों को चकनाचूर करके महर्षि दयानन्द के सपनों मे भारत का स्वरूप प्रस्तुत करने में प्रयत्नशील होगी। हर आर्यसमाज मन्दिर मे आर्यवीरों को आगे लाने के लिए गम्भीरता मे विचार कर इसे क्रियान्वित करने की आवश्यक्ता है। □

यह अन्याय कब तक चलेगा ?

इतिहास गवाह है कि मोपले मुसलमानों ने अग्रेज शासन के दौरान बगावत की थी। उस बगावत मे मोपले मुसलमानों ने हिन्दुओं के साथ जबरदस्ती की। उनको मुसलमान बनाया। जबरदस्ती उनको अपने धर्म तब्दील करने पर मजबूर किया गया। बच्चो को गुलाम बनाया गया। उनकी नौजवान लडकियो के साथ बलात्कार किया गया और पत्नियों का अपमान किया गया। फिर भारत सरकार उन मोपला मुसलमानों को पैंशन दे रही है। जिन लोगो ने देशद्रोह पूर्ण कार्य किया और देश की आत्मा को ठेस पहुंचाई उन लोगों को सरकार पैंशन दे रही है। जबकि आर्यसमाजी सत्याग्रहो के विरुद्ध भाडी का सा सलूक किया जा रहा है। हजारों लोग अपने मान सम्मान के लिए जेलो में गए और निजाम हैदराबाद सरकार जो कि गलत रास्ते पर चल रही थी, को राह रास्ते पर लाये। और उनको कोई पैंशन नही मिल रही हालाकि वे लोग देश और धर्म के लिए लड थे। परन्तु फिर भी उनको कोई पैंशन नही दी जा रही। यह अन्याय नहीं तो और क्या है। और यह अन्याय कब तक चलता रहेगा।

जयदेव गोयल पत्रकार
जीन्द।

शोक संवेदना

खेद है कि श्री सरदारी लाल वर्मा की भाभी (धर्मपत्नी श्री जगन्नाथ वर्मा) ग्रेटर कैलाश का हृदयगति रुक जाने से बृहस्पतिवार २ मई को देहावसान हो गया। चौथा एव अन्तिम शोक दिवस शनिवार ४ मई को सायकाल ५ बजे सम्पन्न हुआ।

वर्मा परिवार ने इस अवसर पर ११०० रुपये विभिन्न आर्य सस्थाओं को दान दिया। आर्यसन्देश परिवार की ओर से हम वर्मा परिवार से सहानुभूति प्रकट करते हैं।

अब नही तो फिर कभी नही
परोपकारिणी सभा का भविष्य

लेखक—म० म० आचार्य विश्वश्रवा व्यास वेदाचार्य एम०ए०
वेदमन्दिर बरेली

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा अपने जीवन की पावन वेला मे स्थापित महर्षि की उत्तराधिकारिणी सभा परोपकारिणी सभा को सौ वर्ष बीत जाने पर भी आर्य जनता जानती ही न थी। यहा तक वह नगण्य रही कि परोपकारिणी सभा के जो उद्देश्य महर्षि ने निर्धारित किये थे उन को सार्वदेशिक सभा ने अपने उद्देश्यों मे सम्मिलित कर लिया। क्योंकि परोपकारिणी सभा कुछ करती तो थी नही।

महर्षि निर्माण शताब्दी जब पहली बार अजमेर मे मनाई गई जिस मे पाँच लाख देश विदेश के आर्य नर नारी सम्मिलित हुए और अपनी श्रद्धा के फूल लाखों रुपया देकर गए तब परोपकारिणी सभा को ससार के आर्यों ने जाना। यह पहला ही अवसर था।

परोपकारिणी सभा के पास महर्षि का पाच प्रकार का सामान

२—महर्षि का मुद्रित पुस्तकों का विशाल भण्डार। जिसमें उस समय के छपे समस्त वैदिक साहित्य के ग्रन्थ तथा मतमतान्तरो के ग्रन्थ जिनका महर्षि ने खण्डन किया परोपकारिणी सभा के पास हैं।

२—जो ग्रन्थ उस समय मुद्रित नही हुए थे उनके हस्तलेख हैं।

३—महर्षि के अपने ग्रन्थो के कई-कई हस्तलेख।

४—महर्षि के अब तक अमुद्रित हस्तलिखित रखे ग्रन्थ।

५—महर्षि के उपयोग की वस्तुएँ शाल-दुशाले वस्त्र लकडी पात्र आदि।

परोपकारिणी सभा को चाहिए कि जो भी सामान उनके पास है उसकी सूची छापकर आर्य जगत् को दे दे कि हम पर यह सामान महर्षि का है जिस से उसकी सुरक्षा रहे, सार्वदेशिक सभा भी उपेक्षा कर रही है और सूची नही मागती है।

(अनुसन्धान कार्य अजमेर ही सभव है)

आर्यसमाज द्वारा सचालित अनुसधान विभाग परोपकारिणी सभा अजमेर में ही सभव है। क्योकि ऐसा सामान अन्यत्र कही नहीं है।

अजमेर शताब्दी से जो यश प्राप्त हुआ है वह धीरे धीरे कम हो रहा है क्योंकि दो वर्ष बीत रहे हैं कार्य कुछ प्रारम्भ नही हुआ। लोहा जब गर्म हो तब कूट लेना चाहिए। ठडा होने पर फिर कूटने से कोई लाभ नहीं होता।

कुछ भूलें हुई हैं। उन पर कुछ लोग पर्दा डाल रहे हैं। ये पर्देबाज पर्चेबाजो को जन्म देते हैं। यह प्रवृत्ति किसी सस्था के लिए लाभदायक नहीं हो सकती है।

जो भूलें हुई हैं उन्हे आगे न करने का आश्वासन दे भूल स्वीकार करना ही बडप्पन है।

हमारा मत

महर्षि ने परोपकारिणी सभा मे वैदिक साहित्य का कोई उच्च कोटि का भी विद्वान नही रखा यद्यपि महर्षि के शिष्य अद्वितीय विद्वान् पडित भीमसेन शर्मा जीवित थे उन्हें भी नही रखा। क्योंकि पण्डितो का स्वभाव होता है ग्रन्थो मे लौट बदल करने का। इस मे महर्षि सावधान रहते थे। महर्षि ने लिखा कि मै २३ सज्जन पुरुषो की सभा बनाता हू। राजे महाराजे तथा उसी स्तर के व्यक्ति रखे। कोई ऊधमी पार्टीबाज लडाकू व्यक्ति नही रखा।

राजघरानो का राजा खिताब ले लिया गया और राज्य भी। पर उत्तम व्यक्तित्व कही नही चला गया है और न वे गरीब ही हैं। महर्षि ने जिन राजपरिवारो को वैदिक धर्म मे दीक्षित किया तीन पीढी ही चला। चौथी पीढी आर्यसमाज को भूल गई इसमे हमारा अपराध है। जो हमने राज्य चले जाने के ही कारण उन राज परिवारों को भुला दिया। हस को अगर कमल के वन से अलग कर दिया जावे तो क्या दूध पानी अलग करने की योग्यता उसकी नष्ट हो जाती है। परोपकारिणी सभा मे दो व्यक्ति ऐसे हैं जो सस्कृत से अनभिज्ञ है पर अपने को पण्डित समझ बैठे है। वे ऋषि के ग्रथो मे गडबड कर रहे हैं। इससे परोपकारिणी सभा की रक्षा करनी चाहिए। मैं उन बातो को खोलना नही चाहता। शेष सदस्य बुद्धिमान् हैं वे सोचें।

आर्यसमाज मोडबन्द एक्सटैंशन बदरपुर वार्षिक चुनाव

उपरोक्त सस्था का वार्षिक चुनाव दिनाक १३-४ ८५ को प० बुद्धराम शर्मा जी की अध्यक्षता मे निर्विरोध निम्नलिखित हुआ।

सरक्षक—श्री भरतसिंह वर्मा सिविल इञ्जीनियर, प्रधान—डा० आर० एस० आर्य B Sc M B B S H C M S उपप्रधान—मा० कर्मचन्द जी, मन्त्री—श्री नेत्रपाल शास्त्री, उपमन्त्री—श्री किशन चन्द जी कोषाध्यक्ष—श्री ओ३मप्रकाश आर्य, उपकोषाध्यक्ष—श्री लक्ष्मी राम आर्य, प्रचार मन्त्री एव कार्यालय सचिव—श्री भूदेव प्रसाद आर्य।

भूदेव प्रसाद आर्य
(प्रचार सचिव)

समाचार-सन्देश

'राष्ट्र निर्माण सम्मेलन'

हरिद्वार १४ अप्रैल, १९८५। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिक समारोह के अवसर पर राष्ट्र-निर्माण सम्मेलन का आयोजन किया गया।

इस सम्मेलन में निम्नलिखित प्रस्तावों को प्रस्तुत किया—

(१) राष्ट्र की अखण्डता को सुरक्षित रखने के लिए जातिवाद धर्मवाद एवं भाषावाद के नाम पर उत्तेजना फैलाने वालों को कठोर दण्ड देना चाहिए।

(२) राष्ट्र की सुरक्षा वैदिक उदात्त मान्यताओं के अनुसार ही सम्भव है।

(३) हम सभी भारतीयों को देश के प्रत्येक भाग में आने-जाने, भूमि क्रय करने का अधिकार होना चाहिए।

(४) राष्ट्र-निर्माण में संस्कृत की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो सकती है। सभी प्रान्तीय सरकारों से यह गोष्ठी निवेदन करती है कि संस्कृत-भाषा के उत्थान को सर्वाधिक महत्त्व दें।

(डा० जयदेव वेदालंकार) संयोजक
राष्ट्र-निर्माण सम्मेलन

गऊओं की तस्करी का गढ़

नवभारत टाइम्स १८ अप्रैल के प्रकाशित समाचार के आधार पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का एक प्रतिनिधि-मण्डल अलीपुर ब्लाक स्थित हिरणकी गांव के युवकों से मिला। जिन्होंने अपनी जान पर खेलकर सैंकड़ों गायों को मौत के मुंह में जाने से बचाने का प्रयास किया। ये गऊएं दिल्ली के रास्ते उ०प्र० ले जायी जा रही थी। स्थानीय युवकों ने सब को पुलिस के हवाले कर दिया। हिरणकी गांव के युवक मण्डल के सचिव श्री बलबीर सिंह ने बताया कि पुलिस ने इन गऊओं का रखने में असमर्थता व्यक्त की। बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि रात को ही लगभग एक हजार गऊओं को पुलिस की साजिश से यमुना पार करा दिया गया। दिल्ली गायों की तस्करी का गढ़ बन गया है। और बड़े-बड़े नेता तथा पुलिस कर्मी भी इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं। ग्राम प्रधान श्री चन्दूलाल ने बताया कि इस सम्बन्ध में स्थानीय नेताओं ने भी कोई सहयोग नहीं दिया। इस प्रतिनिधि मण्डल में डा० धर्मपाल, डा० रघुवीर वेदालंकार, श्री चन्द्रप्रकाश तथा श्री सक्सैना लोधी रोड और स्वामी स्वरूपानन्द थे। प्रतिनिधि मण्डल ने उन्हें आश्वासन दिया कि वे सम्बन्धित अधिकारियों से गोरक्षा के लिए पत्राचार कार्य करेंगे।

सिन्धी आर्य सम्मेलन

अखिल भारतीय सिंधी आर्य सभा के द्वारा आर्यसमाज पिम्परी कालोनी पूना में १७ १८ १९ मई १९८५ को बड़े समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। सम्मेलन का उद्देश्य (१) आपस में मिलन, (२) एकीकरण, (३) विचारों का आदान प्रदान (४) कुरीतियों से छुटकारा, (५) वैदिक धर्म की जानकारी और पाखण्ड का विनाश आदि है इस सम्मेलन में भारत भर से अनेक नेता ज्ञानी विद्वान् पधार रहे हैं।

मन्त्री
नेभाराम आर्य

आर्यसमाज मंदिर गांधीनगर दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज गांधीनगर का वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से ५ मई से १२ मई तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर अनेक विद्वान् संगीताचार्य आर्य नेता पधार रहे हैं।

१२ मई को "राष्ट्रीय एकता सम्मेलन" होगा जिसकी अध्यक्षता श्री रामगोपाल शालवाले करेंगे।

श्यामसुन्दर बिरमानी

आर्यसमाज राज चैनपुर पलामु का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर इस क्षेत्र के अनेक धार्मिक जन वैदिक धर्म के पावन सन्देश का सुनने इकट्ठे हुए। पं० महेन्द्रपाल आर्य, भू० पू० मौलवी महबूब के भाषण तथा श्री दयानन्द सत्यार्थी के भजनों से लोग अत्यधिक प्रभावित हुए।

मन्त्री—आर्यसमाज
राज चैनपुर, बिहार

निर्वाचन

२४ मार्च १९८५ को आर्यसमाज चेम्बूर का चुनाव हुआ जिसमें निम्न प्रकार से पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ। कृपाकर आप अपने पत्र में प्रकाशित कर अनुगृहीत करें।

पदाधिकारी जिनका निर्वाचन हुआ—प्रधान-श्री जयदेव जी आर्य, उपप्रधान-श्री गुलजारी लाल जी आर्य, मन्त्री देवव्रत शास्त्री, उपमन्त्री-श्री ईश्वरमित्र जी शास्त्री, कोषाध्यक्ष-श्री जयरामदास जी चान्दना, पुस्तकाध्यक्ष-श्री राजेन्द्र चन्द्राणी जी वकील।

मन्त्री
देवव्रत शास्त्री
आर्यसमाज चेम्बूर

सार्वदेशिक आर्य वीर दल समिति का कार्यकर्ता सम्मेलन

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश का कार्यकर्ता सम्मेलन २७-४ ८५ को साय ठीक ५ बजे आर्यसमाज हनुमान् रोड नई दिल्ली में सार्वदेशिक आर्यवीर दल के उपप्रधान संचालक डा० देवव्रत जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ और ठीक ७ बजे समाप्त हुआ। डा० जी तथा दिल्ली दल के संचालक श्री अवस्थी जी के प्रेरणादायक भाषण हुए। १४७ आर्य युवकों ने दल को सक्रिय करने तथा तीन शिविरों को सफल बनाने का संकल्प किया। श्री चन्द्र जी ने सभा का बड़े ही उत्तम ढंग से संचालन किया।

महेशचन्द्र कार्यालय मंत्री

निर्वाचन

आर्यसमाज पंजाबी बाग की अंतरंग सभा की बैठक २८ ४ ८५ को सम्पन्न हुई जिसमें निम्नलिखित अधिकारी १९८५ ८६ के लिए निर्वाचित हुए।

प्रधान श्री गिरधारीलाल गुलाटी
उपप्रधान श्री सत्यानन्द शास्त्री
" श्री ईश्वरचन्द्र आर्य
मन्त्री श्री वेदप्रकाश अग्रवाल
कोषाध्यक्ष श्री धर्मवीर
उपमन्त्री श्री त्रिलोक चन्द सठाना
श्री गिरधारीलाल बजाती
पुस्तकाध्यक्ष श्री शिवनारायण बजाज

धन्यवाद।

वेदप्रकाश अग्रवाल मन्त्री

आर्यसमाज सरस्वती विहार (पंजी) दिल्ली का आठवां वार्षिकोत्सव

अवधि—६ मई सोमवार से रविवार १२ मई ८५ तक

स्थान—आर्यसमाज मन्दिर, बी-ब्लाक, सरस्वती विहार।

कार्यक्रम—प्रात प्रतिदिन यज्ञ ६ बजे से ७ ३० बजे तक पूर्णाहुति १२ मई ८५ को १० बजे प्रात

ब्रह्मा—स्वामी स्वरूपानन्द जी एव स्वामी जगदीश्वरानन्द जी

रात्रि—रोज ८ बजे से ८ ४५ तक भजन। स्वामी स्वरूपानन्द जी एव श्रीमान् आशानन्द जी।

वेदोपदेश—प्रतिदिन रात को ८ ४५ से ९ ३० बजे तक महान् विद्वानों द्वारा।

आर्य स्त्री समाज उत्सव—११ ५ ८५ शनिवार को दोपहर ३ बजे से ६ बजे तक

बाल युवा सम्मेलन—१२ ५ ८५ रविवार को प्रात १० ३० बजे से १२ बजे तक।

प्रीतिभोज—१२ बजे से १ बजे तक रविवार को।

मन्त्री
कुंवर दयानन्द बेदी

आर्यसमाज होली मौहल्ला, करनाल की तदर्थ समिति का गठन

१ प्रधान श्री नरदेव शास्त्री
१०१ दयालसिंह कालोनी, करनाल
२ उपप्रधान चौ० लालसिंह
दिल्ली बाईपास जी०टी० रोड, करनाल
३ मन्त्री वैद्य रत्तीराम
मौहल्ला कोट, करनाल
४ कोषाध्यक्ष श्री शिवनारायण एडवोकेट
बार रूम, करनाल
५ सदस्य श्री हरीश गुलाटी
नवाब खाता, कलन्द्री गेट, करनाल
६ " श्री महाराज कृष्ण चोपड़ा
चोपड़ा ट्रांसपोर्ट, दिल्ली बाईपास, जी० टी० रोड, करनाल
७ " मा० बसन्त सिंह
डी०ए०वी० उच्चतर विद्यालय करनाल
८ " चौ० रतनसिंह
मौहल्ला जाटान, करनाल
९ " मा० सुन्दरसिंह
म०न० ३८४ मौहल्ला जाटान, करनाल

केदारसिंह आर्य (प्रो० शेरसिंह)
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा

सारस्वत मोहन "मनीषी" का अभिनन्दन

गत २ अक्तूबर को अखिल भारतीय तरुण संघ का वार्षिक समारोह होटल सिद्धार्थ देहरादून के सभागार में कविवर ताराचन्द पाल 'बेकल' की अध्यक्षता और डा० योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण' के सान्निध्य में बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डी० ए० वी० कालेज अबोहर के हिन्दी प्राध्यापक, आग के अक्षर, आधा कफन तथा बूंद-बूंद वेदना जैसे सशक्त काव्य संकलनों के रचयिता हिन्दी काव्य मंच के श्रृंगार युवा कवि श्री सारस्वत मोहन "मनीषी" को "तरुण श्री १९८४" की उपाधि से विभूषित करके मानपत्र, स्मृति चिह्न, शाल और नकद पुरस्कार से विधिवत् सम्मानित किया गया। स्थानीय स्कूल के बच्चों को भी पुरस्कृत किया गया। मुख्य अतिथि थे प्रिंसिपल आर०सी० सिक्का।

महेन्द्रप्रताप चांदना
प्रधान "भारत भारती", अबोहर

प्रभु की प्राप्ति

(पृष्ठ २ का शेष)

४ मस्तिष्कादूर्ध्वं = मस्तिष्क के ऊपर, पृथक्

आत्मा के सम्बन्ध में उसे यह दृढ़ धारणा होनी चाहिए कि आत्मा शरीर ही नहीं वरन मन से भी पृथक् है और वह मस्तिष्क से ऊपर है, अर्थात् मस्तिष्क का सचालक है, जब वह मस्तिष्क का सचालक है तब शरीर, ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियो का तो दूसरा स्वामी ही है।

५ प्रैरयत्— पवित्रीर्वत = प्राण और प्राण-वृत्तियों को सिर से ऊपर की ओर प्रेरे।

धारणा-ध्यान के अभ्यास अथवा प्राणायाम के अभ्यास द्वारा प्राणों और प्राणो की वृत्ति को ऊपर ले जाए अर्थात् ब्रह्मरध्र में पहुँचाए।

६ तत्प्राणो अभिरक्षति= उसकी प्राण रक्षा करता है।

अर्थात् ध्यान या प्राणायाम के कारण जब प्राण-वृत्ति रुक जाए तो घबराना नहीं चाहिए। उस दशा में प्राण ही रक्षक होता है।

७ अन्नमथो मन =अन्न और मन रक्षा करते हैं।

अर्थात् योगी और योगाभ्यासी तथा योगाभिलाषी को अपने अन्न के सम्बन्ध में बहुत सावधान रहना चाहिए। खट्टा, मीठा, तीता आदि उत्तेजक पदार्थों के सेवन से बचना चाहिए। मद्यमांस आदि तामस-भोजन बुद्धि का लोप कर देते हैं। कोई भी मासाहारी या शराबी योगाभ्यास नहीं कर सकता।

अन्न का मन पर प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार शुद्ध मन भी रक्षा करता है। यदि मन में अशुभ और पापी विचार हों तो भी योगाभ्यास नही हो सकता। अत योगी को अन्न के लिए रखना और मन पर कड़ा नियन्त्रण रखना चाहिए। मन की पवित्रता का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए।

'अन्न' का एक अर्थ 'अन्नमय कोश' है। अन्नमयकोश स्थूल शरीर मात्र है। उसकी अपेक्षा मनोमयकोश' सूक्ष्म है। अन्नमय तथा मनोमय कोशो का सचालन प्राणमय कोश के द्वारा होता है। वह मनोमय की अपेक्षा सूक्ष्मतर है। मनोमय की अपेक्षा विज्ञानमय और अधिक सूक्ष्म है उसको यहा 'शिर' शब्द से कहा गया है। सिर प्राणों का आधार है। प्राण की गति पर सावधानता से दृष्टि डालो तो प्राण की ठोकर सिर मे लगती प्रतीत होती है, अर्थात् प्राण का एक प्रकार से वह मूल खूटा है। इन चार कोशो का विवेक करने से पाँचवें आनन्दमय कोश का ज्ञान तथा भान होने लगता है। वेद में अनेक स्थानो पर उसे 'मधुकोश' कहा गया है। इस मत्र मे उसे देवकोश' कहा है, और इसे 'अधिशीर्षत कहकर विज्ञानमय कोश से ऊपर बताया गया है। इससे आत्मा पृथक है, उसमें परमात्मा के दर्शन होते हैं यही मुक्ति का साधन है।

इस प्रकार अन्न मन और प्राण से सुसाधित सुरक्षित एव सुसस्कृत—

देवकोश समुब्जित —देवकोश सचित हुआ है।

अर्थात् भगवान् का बोध कराने वाला कोश इकट्ठा हुआ है।

इस प्रकार योग-साधन से परमात्मा की प्राप्ति होती है। □

सुख प्राप्ति के साधन

(पृष्ठ ७ का शेष)

मरता, धड़क मारी। कूप मे से वही शब्द लौटकर उसके कान मे आया। बस फिर क्या था? उसने छलाग मारी और कुएँ मे पड़ा पड़ा ही दो तीन दिन पीछे वही मर गया।

अतएव जब लोग मूर्ख हो जाते हैं तो सब स्वार्थी हो जाते हैं और इस प्रकार अपने आप पर ही आक्रमण कर बैठते हैं। हम भी इस समय ऐसा ही कर रहे हैं। यदि आप अपने आपको बनाना चाहते हो तो परस्पर प्रेम करो और अपनी शक्ति बढ़ाकर दुर्बलो तथा नि शक्तो की सहायता करो उन्हें अपने जैसा बनाओ। जब तक यह न होगा तब तक तुम्हे ससार में सुख न मिलेगा। भूल को छोड़ना ही पड़ेगा तभी सुख मिलेगा।

और भी सुनो। एक मनुष्य के फोड़ा था डाक्टर साहब ने मरहम दिया और कहा कि एक दो फाहे लगाने से ही आराम हो जायेगा। परन्तु उसे आराम न हुआ। दूसरे डाक्टर के पास गया। उससे सब हाल कहा। वह बोला, औषधि तो अच्छी है। परन्तु तुम्हें प्रयोग करने की विधि नही आती क्योंकि घाव में मवाद है वह मरहम को अपना काम नही करने देता। पहले इस मवाद को निकालो। फिर इस मरहम को लगाओ। उसने मवाद निकाल दिया और फिर उस स्थान पर मरहम लगाया। पहला फाहा ही आराम करके उतरा।

हमारे मन मे मवाद है इसलिए महर्षि दयानन्द के उपदेशो का मरहम कुछ काम नही करता। पहले इस मवाद को निकालो। फिर महर्षि के उपदेशो का मरहम लगाने का कुछ फल मिल सकेगा। पहले उस गाठ को काटो मन को पवित्र बनाओ, झूठी बातो को छोडो बस बेडा पार है और आप सासारिक सुख प्राप्त कर लेंगे।

प० गुरुदत्त

(पृष्ठ ५ का शेष)

इस निष्कपट एव अनुरक्त अनुयायी का जन्म दिवस २६ अप्रैल १९८५ शुक्रवार को पूरी श्रद्धा और समारोह से मनाकर यह सिद्ध कर दो कि आप अपने पूर्वजो के सच्चे अनुयायी और श्रद्धालु हैं।

क्या ही अच्छा हो कि महात्मा हसराज और मुनिवर गुरदत्त जी जिनकी आयु में केवल एक सप्ताह का ही अन्तर है। इन दोनो बलिदानी नेताओ के सम्बन्ध मे प्रान्तीय सभाओ द्वारा प्रकाशित पत्र तथा व्यक्तिगत रूप से निकाले जा रहे साप्ताहिक और मासिक पत्र प्रति वर्ष सयुक्त विशेषाक निकालने की प्रथा जारी कर दें। इस से युवा पीढी को भी अपने जीवन दाताओ के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हो सकेगा।

एन० सी० २३६ ओम भवन
कोट किशन चन्द,
जालन्धर शहर-४

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन . ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० डी० सी० (सी०) ७५९

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वर्ष ६ अंक २६ रविवार, १६ मई, १९८५ आर्य संवत्सर १९६०८५३०८५ ज्येष्ठ २०४२ दयानन्दाब्द — १६१

देशद्रोहियों को सख्ती से कुचलना आवश्यक है

—रामगोपाल शालवाले

पंजाब तथा दिल्ली मे हिंसा एव विद्रोह की जो प्रवृति उभर रही है उस पर टिप्पणी करते हुए सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा है- "उचित है कि सरकार इसे दृढतापूर्वक कुचल दे। विदेशी इशारो पर काम करने वाले देशद्रोही लोगो ने हत्या तथा विस्फोट के अपने इरादो को धृष्टतापूर्वक अंजाम दिया है। प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाधी की हत्या के पूर्व पंजाब मे जो स्थिति थी उसे इन्होने फिर से कायम कर दिया है। देश के सम्मुख एक गम्भीर समस्या खडी कर दी है।"

श्री शालवाले ने कहा--'देश की अखण्डता एव एकता को भग करने वाली राजनीति फिर से शुरू कर दी गयी है। श्री रघुनन्दन लाल भाटिया तथा चौधरी बलवीर सिह की हत्याए सन्त्रासवादी क्रियाकलापो की गम्भीरता की ओर इगित करती हैं। श्री शालवाले ने अपना क्रम चालू रखते हुए कहा—"जब से अर्जुनसिह पंजाब के राज्यपाल हुए हैं, तब से सन्त्रासवादी कार्यो मे वृद्धि हुई है। वस्तुत श्री सिह के परामर्श से ही भारत सरकार ने कुछ गलत कदम उठाये अकाली विरोधी पक्ष ने सरकार की अदृढ नीति को भाप लिया और स्थिति को अस्थिर बनाने की साजिश शुरू हो गई। सरकार की तुष्टीकरण नीति ही वर्तमान चरमपथी कार्यो की नींव है।

लोगो से भ्रातृत्व की भावना को कायम रखने की अपील करते हुए श्री शालवाले ने श्री अर्जुनसिह को पंजाब के राज्यपाल के पद से हटा लेने तथा वहाँ कोई सयोग्य प्रशासक भेजने की माँग की। साथ ही यह भी कहा कि चरमपंथियो के घरो की तलाशी लेकर सभी विस्फोटक पदार्थो को सरकार अपने कब्जे मे ले ले।

जनता का आह्वान करते हुए श्री शालवाले ने कहा कि सन्त्रासवादी कार्यों को दृढतापूर्वक दबाने मे सभी लोग सरकार की उसी तरह मदद करें जैसी कि पिछली राष्ट्रीय विपत्ति मे की थी।' श्री शालवाले आर्यसमाज तिलकनगर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर बोल रहे थे। उन्होने आर्यसमाज तिलकनगर के द्वारा संचालित स्कूल तथा धार्मिक सामाजिक कार्यक्रमो की प्रशसा की। तथा आर्य समाज के देश देशान्तरो द्वीप द्वीपान्तर तक फैले प्रभाव का भी मूल्याकन किया।

यह वार्षिकोत्सव ५ मई से १२ मई तक बडे समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर एक वेद कथा हुई जिसमे प० चुन्नीलाल के मधुर प्रेरक भजन हुए और प० यशपाल सुधांशु के वेद प्रवचन हुए कथा मे मन्दिर [illegible] स्थान छोटा पड जाने से मंदिर के प्रागण मे श्रोताओ के बैठने का प्रबन्ध करना पड़ा। इस क्षेत्र के धार्मिक श्रोताओ ने कथा मे अत्यधिक बढ़ चढ़ कर भाग लिया। □

देश के नभ पर समस्याओं के बादल मंडरा रहे हैं

आर्यसमाज गांधीनगर में सभा प्रधान का ओजस्वी भाषण

आर्यसमाज गाधीनगर दिल्ली का वार्षिक उत्सव बडी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। ५ मई से लेकर १२ मई तक के इस समारोह मे शोभायात्रा, यजुर्वेद पारायण यज्ञ, वेदकथा, आर्य महिला सम्मेलन तथा राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का आयोजन किया गया। शोभायात्रा मे यमुनापार की समस्त आर्य सस्थाओ के धार्मिक जनो, बालक-बालिकाओ तथा युवावर्ग ने बडी भारी सख्या मे भाग लिया। इस शोभायात्रा का गाँधीनगर और कृष्णनगर के नागरिको ने भव्य स्वागत किया।

रविवार को राष्ट्रीय एकता सम्मेलन मे श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय, श्री विश्वमित्र मेधावी, तथा दिल्ली प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने अपने भाषण दिये। सभा प्रधान ने कहा आर्यसमाज ने अपने स्थापनाकाल से देश धर्म और समाज में फैली समस्त कुरीतियो को दूर करने के लिए सघर्ष करता रहा है। इस समय राष्ट्र मे चहु ओर समस्याओं के बादल मडराने लगे हैं। विघटनकारी तत्त्व देश के नींव मे पलीता लगाने में अग्रसर है। सरकार इन उग्रवादियो के सामने दब्बूनीति अपना रही है। आर्यसमाज ने सदा राष्ट्र की एकता के लिए कार्य किया है राष्ट्रीय एकता को ध्यान में रखते हुए मैं दिल्ली की समस्त आर्यसस्थाओ की ओर सरकार से निवेदन करता हू इस समय अगर सख्ती से इन खूनी हत्यारों को नही कुचला गया तो देश की एकता खतरे मे पड सकती है। हमारा दृष्टिकोण आलोचनात्मक नहीं है जनहित और राष्ट्रहित के लिए यदि सरकार सशक्त कदम उठाती है तो हम सहयोग को तैयार है। किन्तु साम्प्रदायिक ताकतो के सामने सरकार का झुकने का आर्यसमाज विरोध करता है।

समारोह मे वैदिक धर्म के नारो को गुंजाती जनता ने करतल ध्वनि से उनके वक्तव्य का समर्थन किया। इसका आयोजन प्रधान श्री यदुनन्दन अवस्थी और मन्त्री श्यामसुन्दर विरमानी ने किया। □

सत्संग वाटिका

संसार में चींटी से लेकर हाथी पर्यन्त विविध जीवसृष्टि है। उनके नाना रूप-रंग, पृथक्-पृथक् स्वभाव और भिन्न-भिन्न भोजन हैं। बहुत से जीव अपने जीवन के लिए किसी को न मारते, न सताते, केवल प्रकृति प्रदत्त आहार से काम चलाते हैं। जैसे हाथी, गाय, घोड़ा आदि। अनेक जीवों का दूसरे जीवों के प्राण लिए बिना काम नहीं चल सकता, जैसे—सिंहादि जीव। परन्तु इन जीवों में से चाहे किसी जीव का अस्तित्व किसी जीव को अनपेक्षित हो, चाहे बड़े-बड़े जीव-शास्त्र विचारकों की समझ में भी उनके अस्तित्व की आवश्यकता न आई हो, चाहे विकासवादी इनको केवल ज्ञान रहित विकास ही का परिणाम समझते हों, परन्तु ये सब जीव किसी न किसी रूप में प्रकृति को अभीष्ट हैं। उनका अस्तित्व अनावश्यक नहीं। प्रकृति को उनकी जरूरत है। और ब्रह्मवादियों के विश्वासानुसार तो उन्हें एक बड़े ही विचारक तत्त्व ने निर्माण किया है।

सृष्टि के जीव रूप पुंज इस लोक रूपी मशीन में बड़े ही आवश्यक हैं। एक भी पुर्जे की कमी से मशीन जिस प्रकार खराब हो जाती है, ठीक उसी प्रकार किसी भी प्राणी की कमी से लोक-व्यवस्था बिगड़ सकती है। चींटी क्या है? मछली जल में क्यों बनाई गई है? काल रूप सर्प की क्या उपयोगिता है? इस प्रकार विचार करने और प्रकृति का निरीक्षण करने से सब के अस्तित्व का महत्त्व जाना जा सकता है। छोटे कीड़े मकोड़ों की लाशों को उठाकर चींटियां ही ले जाती हैं। महामारी रोगों के समय जिस प्रकार पड़ी हुई लाशों का अन्त्येष्टि कर सेवा समिति लोक का स्वास्थ्य रक्षा में सहायक होती है, ठीक इसी प्रकार चींटियां हितकारिणी हैं। मछलियां पानी की मलिनता को दूर करने के लिए म्युनिसिपलिटी के भागी समझिये। नाग महाराज भी वायु के विषैले भाग को चूसकर इसी प्रकार लोक कल्याण करते हैं। केंचुआ (बसा) जैसा तुच्छ कीड़ा भी किसानों का परम सहायक है। घास के जड़ों को निकालते व मिट्टी को काफी गहराई तक खोद देता है जिससे कि मिट्टी में उपज की शक्ति बढ़ती है। इसीलिए हिन्दू धर्म का उपदेश है मा हिंस्यात् सर्वभूतानि किसी प्राणी को न मारो। प्रकृति जिस पुर्जे को अनावश्यक समझती है उसे स्वयं नष्ट कर देती और अपेक्षा होने पर नये पुर्जे जोड़ती है। यही कारण है कई जीवों की जाति के लोप हो जाने और कई नए जीवों के उत्पन्न होने का और भिन्न भिन्न परिस्थिति वाले देशों से भिन्न-भिन्न प्राणियों के पाये जाने का। अस्तु, जब सभी का कुछ न कुछ उपयोग है तो सब जीवों में शिरोमणि मनुष्य महाराज का तो स्वार्थ परार्थ कुछ उपयोग होना ही चाहिए। यह प्रकृति कौशल का सब से उत्कृष्ट नमूना मनुष्य केवल इस लिए तो नहीं हो सकता कि उसके लिए कवि को कहना पड़े—

> क्या कहें अहबाब क्या
> कारे नुमाया कर गये।
> बी०ए० किया, नौकर हुए,
> पेन्शन मिली और मर गये ॥"

सबै दिन गए विषय के हेतु'

नहीं नहीं मनुष्य जीवन का अवश्य कोई उद्देश्य है। जिससे यह शरीर सफल हो सकता है बस इस (उपद्रवी) शरीर का पहला उद्देश्य ज्ञान का अर्जन करना है। बाह्य ज्ञान ही नहीं आभ्यन्तर ज्योति को जगाकर आत्म-तत्त्व का साक्षात् करना, अपने स्वरूप का ज्ञान, केवल ज्ञान, ब्रह्मज्ञान, कुछ कहिए, वह तत्त्व कि जिसके लिए श्रुति कहती है—

'तस्मिन् ह विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति'

जिसको जानकर सब जाना जा सकता है, जानना मनुष्य का पहला उद्देश्य है। आत्म ज्ञान, मायाप्रपंच से बचाकर अमृतानन्द को प्राप्त कराने वाला विज्ञान मानव-तन में ही प्राप्त किया जा सकता है। बस यही इस नर-तन का साफल्य है। यह मानव शरीर आत्मा के उत्तरोत्तर ज्ञान के विकास का परिणाम है। और इस प्रकार यदि अभ्यास किया जाय तो ज्ञान विज्ञान का विकास करके जीव प्रज्ञान तक पहुंच सकता है। यहीं ऋतंभरा प्रज्ञा की प्राप्ति होती है। यही है मनुष्य का प्राप्तव्य पद, मंजिल मकसूद। इसी पद पहुंचने की योग्यता रखने के कारण मनुष्य-योनि सब योनियों से श्रेष्ठ है। वह प्रभु की विविध सम्पत्तियों का उपयोग कर सकता है, और यदि मनुष्य ऐसा नहीं करता, उसने इस लक्ष्य को यदि छोड़ दिया, अपने प्राप्तव्य पद की ओर से मुंह फेर लिया तो वह भगवान् की दृष्टि में—

"मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः"

ऊंचे ज्ञान से रहित मनुष्य व्यर्थ अन्न खाता है, प्रकृति के दान को व्यर्थ उजाड़ता है। उसे कमनीय कुसुम और सुमधुर फलों के उपयोग का कोई भी अधिकार नहीं है। जिसने अपने जीवन को प्रकृष्ट ज्ञान की खोज में नहीं लगाया उसे प्रकृति की विभूतियों के भोग का कोई अधिकार नहीं।

'सत्य वदामि वध इत्स तस्य'

सत्य कहता हूँ कि यह उसकी मृत्यु है। वास्तव में उसका जीवन, जीवन नहीं है, वह मुर्दा है।

'नार्यमणं पुष्यति, नो सखायम्'

न तो वह ब्रह्म को पुष्ट करता है अर्थात् अपने आध्यात्मिक ज्ञान को बढ़ाता है और न मित्रों, पड़ोसियों, का उपकार करता है।

'केवलाघो भवति केवलादी'

वह केवल खाता है, खाने के लिए ही जीता है वह केवल पाप है अघ स्वरूप है। वेद ने क्या उत्तम लक्ष्य जीवन का बताया केवल खाने के लिए मत जिओ, किन्तु जीवन के लिए खाओ और जीवन वह जीवन है कि जिस में ब्रह्मभावना को पुष्ट किया जाए। आध्यात्मिक शक्ति को बलवती बनाया जाये और क्योंकि सब ब्रह्मज्ञानी ही नहीं हो सकते और न सबको ब्रह्मज्ञान का अधिकार है। सात्त्विक वृत्ति बिना पाये ब्रह्मज्ञान का अधिकार कहां? अतः यह न सही तो अपने साथियों का हित करो, संसार का उपकार करो, दुखियों का कल्याण करो। नगर, ग्राम, पड़ोसी किसी के काम आओ, विनश्वर काया को जिसका कोई भाग भी मरने पर किसी के काम न आयेगा, किसी के हित में लगाओ, जीवन किसी के लिए उपयोगी बना दो। रोगियों को औषधि, प्यासों को पानी, भूखों को भोजन, शीतार्तों को वस्त्र और भयार्तों को अभयदान देने में तुम्हारे शरीर का उपयोग हो। ब्रह्मज्ञानी अपनी आत्मिक शक्ति से जगत् का हित करता है, उसका एक-एक श्वास-प्रश्वास पंच भूतों पर पवित्र प्रभाव पैदा करता है। उसकी विचार-लहरी से सृष्टि में वह पवित्र लहरें प्रवाहित होती हैं जो जीव मात्र के लिए प्रकृति को कल्याणकारिणी बनाती है। मत समझो कि वह निठल्ला बैठा है वह बैठा ही बैठा सूक्ष्म जगत् में काम करके स्थूल जगत् पर बिना इच्छा के ही प्रभाव डाल रहा है।

'रहे जहां दीपक तहां निश्चय करे उदोत'

ब्रह्मज्ञानी जिस देश में होगा उस देश के जल, वायु, पेड़-पौधे तक को सात्त्विक रंग में रंगेगा, यही उसमें उपकार होता है। अतः वह प्रकृति के दिए फल-फूलों को मनुष्य के दिए हुए भोजन को, किसी प्रकार भी भगवान् के दिये हुए प्रसाद को व्यर्थ नहीं खोता। परन्तु जो एक दो जन्मों के ही करने योग्य दुराराध्य इस ब्रह्माराधन रूप तप को नहीं कर सकता, वह संसार की सेवा करे संसार के प्रति अपने को उत्तरदायी समझे। वह कितना खाता है उसके भोगोपभोग में प्रकृति के कोष का कितना व्यय होता है, और वह जगत् का उपकार कितना करता है यह हिसाब उसे लगाना चाहिए और यदि इसमें उस के काम से उसका व्यय अधिक है तो वह पापी है। और यदि केवल खाता ही है और संसार का किञ्चिन्मात्र भी हित नहीं करता तो महापापी, लुटेरा अघस्वरूप है। आज हम में कितने ऐसे लुटेरे और महापापी, हैं, इसका विचार प्रत्येक मनुष्य अपने लिए स्वयं करे। यदि अपने जीवन का विचार करें तो हम अपना जीवन सफल बना सकते हैं। प्रथम अपने को सम्भालकर तब दूसरों की ओर आंख उठाने का हमारा अधिकार है। वेद ने तत्त्व की शिक्षा दे दी। अब हमारा काम है कि इसे जिस लिये यह जन्म मिला है उस उद्देश्य को सफल बनायें। □

श्रुति-सुधा—

जीवन की सार्थकता

लेखक—पं० बिहारी लाल शास्त्री काव्यतीर्थ

> मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं वदामि वध इत्स तस्य।
> नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ॥
>
> —ऋ० १०।११७।६

★

कुरीतियां

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती—अधिष्ठाता वेद प्रचार

> बढ़ा चाय का प्रचार, धूम्रपान की भरमार,
> क्या गरीब जरदार, साधु बचा न पुजारी है।
> स्वांग–सिनेमा के गाने, लगे लड़कियां नचाने,
> और मांस अण्डे खाने, देखो कैसी मति मारी है।
> रखे देवता अनेक, खाके मस्तिष्क रहे टेक,
> नहीं बुद्धि व विवेक पूजा ईश की बिसारी है।
> तो भी खाता नहीं सब, बनी मुसलमानों की कब्र,
> मरे कबके नहीं खबर अबर पूजा अभी जारी है।

★ वचन-सन्देश ★

दण्ड और शासक

दण्ड विधान ही प्रजा पर शासन करता है दण्ड ही प्रजा का रक्षक है सोते हुओ को जगाने वाला दण्ड ही है। इसीलिए ज्ञानी लोग दण्ड को ही धर्म कहते है। जब दण्ड विचार पूर्वक लागू किया जाए तो प्रजा को आनन्दित कर देता है और जो बिना विचारे दण्ड चलाया जाए तो सब ओर से राजा का विनाश कर देता है। —महर्षि मनु

किसी शासन की श्रेष्ठता जाचने के लिए उसकी न्याय व्यवस्था की निपुणता से बढकर और कोई अच्छी कसौटी नही। —ब्राइस

जिसके कन्धो पर शासन का भार हो, उसे व्यक्तिगत पाप और दोष का विचार त्याग कर, जिस प्रकार भी हो सके सदा प्रजा का हित करना ही चाहिए, यही पुरातन राजधर्म है। —रामायण

ज्यो-ज्यो अपराध बढते जाये, न्याय को उग्र होते जाना चाहिए। —बैन जानसन

पहले अपराध तो उनके है जो उन्हें करते है, दूसरे अपराध उनके हैं जो उन्हें होने देते है। —थामस फुलर

सम्पादकीय

जनता वज्रहस्त को तलाश रही है

दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में एक साथ हुए बम के धमाकों ने सारा उत्तर भारत हिला दिया है। खून और मास के लोथडे मासूम लोगों की फटी लाशें, चीखते चिंघाडते भय से थरथराते नागरिक स्तम्भ आक्रोश मे तनी मानवता की भृकुटिया आतकवाद की दुर्दान्त कहानी कह रही हैं। ४२ जगहों पर विस्फोट हुए और ८० लागों के चीथडे उड। सैकडों लोगों को घायल होना पड़ा है। आतकवादियों ने इन बम विस्फोटों को एक समय में ही अनेक प्रान्तों में विस्फोटित कर भारत सरकार के सामने खुली चुनौती दी है लेकिन उनके इरादे कुछ और भी थे, वे चाहते थे सारा उत्तर भारत हिन्दू सिख गृहयुद्ध की आग में झुलसने लगे। लाखों लोग इधर उधर आने जाने लग जायें भारी तादाद में एकाएक आबादी का तबादला शुरू हो जाये। इस षडयन्त्र में लिप्त विदेशी ताकतें भी इस दिन का बेसब्री से इन्तजार कर रही थीं किन्तु उनके इरादो पर तो पानी फिर ही गया। उग्रवादी अपना हर हमला पहले से और भी अधिक क्रूरता के साथ करते आ रहे हैं। सरकार के सामने दो बाते आकर खडी हो गयी हैं। पहली आवश्यक बात यह है इस समय सिख हिन्दू दगों से बचा जाये, अन्यथा पृथक्तावादियों के मनसूबे अवश्य पूरे हो जायेंगे।

दूसरी—आतकवादियो के साथ क्रूर मुठभेड मोल लेनी ही पडेगी, क्योंकि इसके सिवा कोई चारा है नहीं। पजाब उग्रवाद की खूनी होली में तडफ रहा है परन्तु वहा हिन्दू सिख दगे नहीं हो रहे। न हो सकने की परिस्थितिया हैं। उसका स्पष्ट कारण हिन्दू सिखों के आपसी रिश्ते नाते, यारी दोस्तो, आपस का लेन देन है, जो उन्हें सामाजिक एकसूत्रता में बाधे हुए हैं। इन रिश्तों को परखचे उडाने में लगे हैं उग्रवादी।

लोंगोवाल और बादल के इस्तीफा देने के बाद अकाली दल पर स्पष्टरूप से उग्रवादियों का कब्जा हो गया है। इस समय दो व्यक्ति उग्रवादियों की श्रद्धा के केन्द्र बने हुए हैं। एक भिडरावाले के पिता बाबा जोगिन्दरसिंह और दूसरे भरतपुर जेल में बंठे सिमरनजीत सिंह मान। उग्रवादी विषधर अपने बिल से पूर्णतया बाहर आ चुका है। वे बताना चाहते हैं इन धमाकों से कि अब सिख नेतृत्व हमारे हाथ में है और हम सरकार से बमों के जरिये बात करना पसन्द करेंगे। वे सचमुच सरकार और गुप्तचर विभाग की पोल खोलने में पूर्ण सफल रहे हैं। जबकि सरकार को उग्रवादियों के दिल्ली तथा दूसरे राज्यों में घुस आने की विश्वस्त खबर मिल चुकी थी। आतकवाद के आधुनिकतम तौर तरीकों से निपटने के लिए हमारी पुलिस और गुप्तचर एजेंसियां सक्षम नहीं, इससे स्पष्ट हो ही गया है। इन आतक-वादियों के क्रूर प्रहार से भयखायी जनता उस वज्रहस्त को ढूढ़ रही है जिसका जिक्र छ मई को प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी ने राम-लीला मैदान में किया था। उस गम्भीर गर्जना को सुनना चाहती है जो निर्वाचन के दिनों मे हमारे युवा प्रधान मन्त्री ने गुंजाया था।

देश को अराजकता से बचाने के लिए सरकार को उसी भाषा में बात करनी पडेगी जिसमें उग्रवादी बोलते रहे हैं। वह भाषा बन्दूक की नाल से और बारूद के जबडे से निकलती है। हमारी पुलिस, और सुरक्षावाहिनी की बन्दूके जग खायी हुई नहीं हैं हमारे जवानो में वीरता सो नही गयी है, अभी वीरता बाझ नही हुई है। कमी अगर है तो हमारे नेताओं के पस्त हौसलों की है। चन्द मुट्ठी भर सिरफिरों की आवाज से डर जाने से काम नहीं चल पायेगा। सरकार ने सबक ले ही लिया है। नरम रुख अपनाकर" भी क्या मिल पाया, पजाब समस्या पहले से भी और अधिक खतरनाक हो गयी। वैसे भी लोहे के जब तक दोनों सिरे गर्म न हों उनको जोडा नहीं जा सकता। सरकार का लोह सिरा ठडा रहा और अकालियों का गर्म। ये छड जुडने की बजाय और भी अलग हो गये। पजाब की समस्या में उग आये फोडे का आपरेशन ब्लु स्टार के रूप मे सरकार ने किया। लेकिन सरकार तब भी समझ नही पायी इस फोडे का विष कहा तक फैल गया है। पूरी बांह में और अनेक फोडे फिर मे निकल आये। सरकार केवल मरहम लगाती रह गयी। और अब जब ४२ बम दो दिन मे फूट गये, देश के भीड भरे स्थानों में लाशों का व्यापार हुआ। सुरक्षाकर्मी नेताओं की चौकसी मे लगे रहे आम जनता बारूद निगलती रही। विरोधी नेता श्री वाजपेयी ने सारा इलजाम सरकार पर लगाकर राजनैतिक लाभ उठाने की कोशिश करनी प्रारम्भ कर दी। इस समय तो उन्हें भी चाहिए कि देश व्यक्तिगत दलगत स्वार्थों से कहीं ऊचा है। हमें केवल प्रशासन की मजाक उडाने का हक नहीं है, बल्कि अपनी योग्यता और अनुभव कुशलता से राष्ट्र में उठी भयकर समस्या के निदान में सहयोग देना भी कर्तव्य है। हरियाणा उत्तर प्रदेश, राजस्थान और दिल्ली के इतने स्थानों पर बम फूटने का मतलब है कम से कम पांच सौ आदमी इस षड्यन्त्र में शामिल हैं। जाहिर है वे उत्तर भारत में फैले पडे हैं, उनका कोई न कोई मुख्यालय जरूर रहा होगा जिसके आदेश से उन्होंने १० और ११ मई के दिन चुने। इस अच्छी खासी उग्र-वादियों की शहर शहर में फैली फौज ने भारत की नींव मे जो पलीता लगाने में सलग्न है, जरूर कोई न कोई सुराग छोडे होंगे। जासूसी विभाग को अपनी दक्षता का परिचय देना चाहिए। काल का अश्व दौडता हुआ अब जून के प्रथम सप्ताह की तरफ आ रहा है, उग्र-वादियों को वह वर्ष गांठ अवश्य तडफडाएगी, उनके और क्रूर होने से पूर्व सरकार को विष दन्त तोड देने चाहिए। जो इक्के दुक्के सिर फिरे रहेंगे उनसे निपटना फिर और भी आसान हो जायेगा। इसलिए प्रजा के हित में अब प्रधानमन्त्री को राजदण्ड हाथ में लेना ही होगा, अन्यथा हालत और भी सगीन होती जायेगी।

—यशपाल सुधांशु

"नव जागरण के पुरोधा" पुस्तक पर मेरी आपत्ति

स्वामी रामेश्वरानन्द

श्री डा० भवानीलाल भारतीय ने नव जागरण के पुरोधा ग्रन्थ की बड़ी प्रशंसा की है। प० लेखराम से लेकर जो भी ऋषि के जीवन छपे हैं इसे उन सबसे उत्तम माना है। यह लिखने इस सज्जन को लज्जा नही आयी जब कि यह उन जीवन चरित्रो के आधार पर ही है। इसमे उत्तमता कहाँ से आ गई। अस्तु

(१) इसमे प्रथम न्यूनता तो यह है कि इस पुस्तक का नाम नही लिखा यह है क्या यदि ऋषि का जीवन चरित्र है तो जीवन चरित्र लिखना चाहिए था

( ) इसमे ऋषि का स्व लिखित जीवन चरित्र नही छापा जो कि सब से प्रामाणिक है।

स्वामी जी कहते हैं मैंने पाँच वर्ष मे देवनागरि अक्षर पढने का आरम्भ किया था। और मुझको कुल की रीति की शिक्षा भी माता पिता आदि किया करते थे। बहुत से धर्म शास्त्रादि के श्लोक और सूत्रादि भी कण्ठस्थ कराया करते थे। फिर आठवें वर्ष मे मेरा यज्ञोपवीत कराके गायत्री सन्ध्या और उसकी क्रिया भी सिखा दी गई थी। मुझ को यजुर्वेद की संहिता का आरम्भ कराकर उसमे से प्रथम रुद्र ध्याय पढ़ाया गया था। पिता आदि यह भी कहा करते थे कि तू पार्थिव पूजन किया कर। आगे स्वामी जी लिखते हैं, माता जी और चाचा जी के समझाने से पिता जी शान्त हो गए। फिर निघण्टु निरुक्त पूर्वमीमांसा आदि शास्त्रो के पढने की इच्छा करके आरम्भ करके पढता रहा और कर्मकाण्ड का विषय भी पढता रहा'

और भवानी लाल कहते हैं मूलशंकर ने निघण्टु निरुक्त और पूर्व मीमांसा आदि शास्त्रो की पढने की इच्छा व्यक्त की। पृ० १६। ये स्वामी दयानन्द जी के विपरीत लिखते हैं कि इच्छा व्यक्त की और स्वामी जी कहते हैं कि मैं पढ़ता रहा।

आगे स्वामी जी लिखते है 'उस समय मैंने निश्चय किया कि अब विवाह किए बिना य योग न छोड़ेंगे। न किसी पढने की आज्ञा मिलेगी और न माता पिता मेरे ब्रह्मचारी रहने पर प्रसन्न होगे। तब मैंने मन मे सोच विचार कर यह निश्चय ठाना कि अब यह काम करना जन्म भर के लिए बचू। यह निश्चय मैंने किसी पर प्रकट नही किया एक मास में विवाह की तैयारी भी हो गयी। फिर गुप चुप स० १९०३ के वर्ष मे शौच के बहाने एक धोती साथ मे लकर घर छोड कर शाम के समय भाग उठा। सिपाही से कहला भजा कि एक मित्र के घर गया हूँ। चार कोश पर एक ग्राम था। वहा जाकर रात्री को ठहरकर दूसरे दिन प्रहर रात्री स उठकर १५ कोश चला।

और भवानीलाल जी लिखते हैं कि स्व कथित आत्म वृत्तान्त मे दयानन्द जी लिखते है कि 'चार कोश चल के वे एक ग्राम मे पहुंचे और वहा के हनुमान् मंदिर मे रात्री निवास किया वह ग्राम बडा रामपुर था। इसी ग्राम के मारुति मन्दिर मे निवास आदि की पूर्ण सुविधा है। दूसरे दिन प्रहर रात्री उठकर पन्द्रह कोस चले।

और स्वामी जी कहते हैं, चार कोश पर एक गाव था। वहाँ ठहरा और भवानी लाल जी कहते हैं कि स्वामी जी एक गाव के हनुमान् मन्दिर मे ठहरे और वह गाव बडा रामपुर था। बताओ किस की बात सच माने स्वामी जी की या डा० साहब की।

यह रामपुर नगर टकारा से पन्द्रह-बीस कोश दूर है। स्वामी जी प्रथम दिन ही रामपुर कैसे पहुँचे। जब कि रामपुर टकारा से पन्द्रह बीस कोश दूर है। और अब आपने सार्वदेशिक सभा के निर्णय के विपरीत स्वामी दयानन्द जी की जन्म तिथि क्यो लिखी। इसका तो यही प्रयोजन है कि आर्यों मे परस्पर विरोध खडा हो जाए। और यदि आपके कथनानुसार अगर स्वामी दयानन्द जी की जन्म तिथि भादो मास की मान ली जाये तब स्वामी जी का यह कथन कैसे सत्य होगा कि विवाह की तैयारी हो चुकी थी क्या भादों मे य आश्विन पितृ पक्ष मे विवाह होना, सम्भव था और स्वामी जी घर से किस मास मे निकलते हैं। और सिद्धपुर के कार्तिक के मेले पर कैसे आ सकते हैं। जबकि आश्विन के पश्चात् कार्तिक मास ही आता है। लगभग एक मास स्वामी जी सायले ग्राम मे रहते हैं, और तीन मास कोट कांगडा में रहते हैं। फिर कार्तिक का मेला सिद्धपुर आया, और ये जाडे के दिन मे एक धोती में कैसे काटी। इसके सही १८८ के अन्तिम दिन बनते हैं। महाराज घर से वैशाख के अन्तिम दिनो मे निकलते हैं। एक मास सायले ग्राम में रहते हैं। फिर वर्षा ऋतु के दिनों में कोट कांगडा और अन्त मे सिद्धपुर के कार्तिकी मेले पर चले जाते हैं।

स्वामी दयानन्द जी तो लिखते हैं कि १४ वर्ष की अवस्था के आरम्भ तक सम्पूर्ण यजुर्वेद कुछ-कुछ अन्य वेदो के भाग और शब्द रूपावली आदि व्याकरण के ग्रन्थ पूरे हो गये थे अर्थात् पढ लिये थे। और भारतीय जी कहते हैं कि यजुर्वेद का वही अंश मूलशंकर को पढाया गया। जिसमे कैलाश वासी आशुतोष भगवान् शंकर का वर्णन है। और पिता की प्रकृति अपने पुत्र को सम्प्रदाय निष्ठ धर्म भीरु एक आदर्श ब्राह्मण बनाने की थी। मैं पूछना चाहता हूँ कि यजुर्वेद के किस अध्याय में कैलाश वासी आशुतोष भगवान् शंकर का वर्णन है। क्या आप ये बता सकेंगे और जब स्वामी जी ने सम्पूर्ण यजुर्वेद अन्य वेदो के कुछ भाग और शब्द रूपावली आदि व्याकरण के ग्रन्थ पढ लिए थे। तो आपने क्यो कहा कि वही भाग पढ़ाया गया जिसमें कैलाश वासी आशुतोष भगवान् शंकर का वर्णन है। आजकल कैलाश बहुधा चीनियो के अधिकार मे चला गया है। अब वह आशु तोष भगवान् शंकर कहाँ रहता है। आपको भी तो कुछ पता होगा स्वामी जी को धर्म भीरु कहकर आपने स्वामी जी का क्या अपमान नही किया। तथा पृ० १ पर आपने स्वामी दयानन्द जी को नव जागरण के पुरोधा और शलाका पुरुष कहा है। पुरोधा पुरोहित को कहते हैं। और शलाका सुपारी काटने के सरौता को कहते हैं। ये शब्द क्यो कहे, स्वामी जी तो साक्षात्कृतधर्मा ऋषि थे। उनको पुरोधा और शलाका पुरुष कहना अपमान है। तथा बार बार धर्म प्रवण कहा, प्रवण चौराहे को कहते हैं। और स्वामी दयानन्द जी का महाभिनिष्क्रमण लिखकर य क्यों लिखा कि ढाई हजार वर्ष पूर्व कपिल वस्तु का राजकुमार सिद्धार्थ भी युवती पत्नी यशोधरा तथा दुधमुहे बालक राहुल को छोड दुखों का निदान तलाश करने हेतु राजप्रसाद का त्याग कर, इसी प्रकार साधना पथ का पथिक बन गया था। [illegible] बन्धनों को सहन करने में असमर्थ होकर गृहत्यागी हो गए। हिन्दू पद पादशाही के मन्त्र द्रष्टा तथा शिवा जी के गुरु समर्थ रामदास के लिए तो यह प्रसिद्ध है कि वैवाहिक मण्डप मे सावधान शब्द को सुनकर ही गृहस्थाश्रम के जटिल दायित्वो स मुक्त होने के लिए आतुर हो उठे। और विवाह कृत्य को अधूरा छोडकर वैराग्य-गामी हुए। पृ० २१। कृपया ये बतायें कि इन तीनो का स्वामी दयानन्द जी के जीवन के साथ क्या मेल है। इनका जीवन क्यो लिखा आपने और जब पृ० १६ पर आपने राजकुमार सिद्धार्थ का इतिहास लिख दिया था कि शाक्य वंशोत्पन्न राजकुमार सिद्धार्थ का एक रोगी एक मृतक तथा एक जराजीर्ण व्यक्ति को देखना किस प्रकार उनके राजसी जीवन को त्याग कर वैराग्य धारण का कारण बना था। क्या ढाई हजार वर्ष पूर्व की ये घटना दोहराई नही जा रही है। क्या आपको इतना भी स्मरण नहीं रहता कि जब आप पृ० १७ पर सिद्धार्थ की कहानी लिख बैठे फिर २१ पृ० पर भी क्यो लिखा। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने तो बुद्ध को भयंकर नास्तिक लिखा है। आप उसकी स्वामी दयानन्द जी से उपमा देते हैं। और तुलसीदास की स्त्री ने विषय वासना मे फसे तुलसीदास को फटकार दिया, फिर उसका क्या वैराग्य था। इसी लिए उसने अपनी रामायण में लिखा है—

ढोल गवार शूद्र पशु नारी।
ये सब ताडन के अधिकारी॥

और रामदास को गृहस्थाश्रम नहीं करना था। तो फिर मण्डप में किस लिए बैठा ये सब झूटे पिटे ढोंग थे। इनका उदाहरण आदित्य ब्रह्मचारी के साथ क्या हो सकता है। ऋषि दयानन्द जी जन्म जरा की जटिल जंजीरों के भेदन करने के लिए गृह त्यागी हुए और विद्या पढके तथा योगाभ्यास करके वेद के आधार पर सोते भारत को पुन जगाया और पाखण्ड का खण्डन किया। तुलसीदास और बुद्ध ने बहुत बडे पाखण्ड फैलाये। और आपकी स्मरण शक्ति का एक उदाहरण देता हू। आपने पृ० १ पर लिखा है कि गुजराती के समर्थ साहित्यकार कन्हैयालाल माणिक लाल मुंशी ने लिखा। ' ' [illegible] की रंगभूमि पर ऐसे अनेक व्यक्ति हुए हैं। परशुराम भृगु सुवन, भगवान् श्रीकृष्ण और [illegible] के राजनीतिज्ञ शिरोमणि चाणक्य ' 'युग [illegible] के [illegible] एवं पुरोधा दयानन्द सरस्वती की गणना भी ऐसे शलाका पुरुषों में होती है। इसी पृ० के अन्तिम पंक्तियों में आप फिर लिखते हैं। गुर्जर [illegible] मूर्धन्य कथाकार कन्हैयालाल मुंशी ने लिखा था। गुजरात एक महावृक्ष है, जिसकी जड में परमात्मा श्रीकृष्ण का [illegible] छिपा हुआ है। इसकी शाखाओं पर [illegible] और महात्मा गांधी की [illegible] हुई है।

बालमञ्च—

वीर बालक स्कन्दगुप्त

प्रस्तोता—बलजीत शास्त्री

हूण शकजाति मध्य एशिया की मरु भूमि में रहने वाली बर्बर जातियां हैं जो वहां पांचवीं शताब्दी में थीं। हूण और शक जाति के लोग बड़े लड़ाकू योद्धा और निर्दयी थे। इन लोगों ने यूरोप को अपने आक्रमणों से बहुत बार उजाड़ सा दिया था। रोम को चीन को भी अनेकों बार इन लोगों ने लूटा। जिस देश पर ये लोग सेना लेकर चढ़ आते वहां हाहाकार मच जाता था। एक बार समाचार मिला कि बड़ी भारी हूणों की सेना हिमालय पर्वत के उस पार भारत पर आक्रमण के लिए इकट्ठी हो रही है। उस समय भारत में बड़ा राज्य मगध था। वहां का राजा कुमारगुप्त था। उनका पुत्र युवराज स्कन्दगुप्त उस समय तरुण नहीं हुए थे। हूणों का सेना एकत्र होने का जैसे ही समाचार मिला स्कन्दगुप्त अपने पिता के पास दौड़े गये। सम्राट कुमारगुप्त अपने मन्त्रियों एवं सेनापतियों के साथ मन्त्रणा कर रहे थे हूणों से युद्ध करने की। स्कन्द गुप्त ने पिता से कहा कि मैं भी युद्ध करने जाऊंगा।

महाराजा कुमारगुप्त ने बहुत समझाया कि हूण बहुत पराक्रमी और निर्दयी होते हैं। वे अधम चुपके छिपकर भी लड़ते हैं और उनकी संख्या भी अधिक है। उनसे लड़ना तो मृत्यु से ही लड़ना है। लेकिन युवराज स्कन्दगुप्त ऐसी बातों से डरने वाले नहीं थे। उन्होंने कहा—पिताजी! देश और धर्म की रक्षा के लिए मर जाना तो वीर क्षत्रिय के लिए गौरव की बात है। मैं मृत्यु आ जाये उससे भी लड़ूंगा और अपने देश को शत्रुओं के द्वारा लुटने नहीं दूंगा।

महाराज कुमारगुप्त ने अपने वीर पुत्र को हृदय से लगा लिया। स्कन्दगुप्त को युद्ध में जाने की आज्ञा मिल गयी। उनके साथ मगध के दो लाख वीर सैनिक चल पड़े पटना से चलकर पंजाब को पार करके हिमालय की बर्फ से ढकी सफेद चोटियों पर वे वीर सैनिक चढ़ गये। भयानक सर्दी शीतल हवा और बर्फ के तूफान भी उन्हें आगे बढ़ने से रोक नहीं सके।

हूणों ने सदा दूसरे देशों पर आक्रमण किया था। कोई आगे बढ़कर उन पर भी आक्रमण कर सकता है यह उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था। जब उन्होंने देखा कि हिमालय की चोटी पर से बड़ी भारी सेना उन पर आक्रमण करने उतर रही है तो वे भी लड़ने को तैयार हो गये। उन्हें सब से अधिक आश्चर्य यह हुआ कि उस पर्वत से उतरती सेना के आगे एक छोटी अवस्था का बालक घोड़े पर बैठा नंगी तलवार लिये बढ़ा चला आ रहा है। वह था युवराज स्कन्दगुप्त।

युद्ध आरम्भ हो गया। युवराज स्कन्दगुप्त जिधर भी निकलते थे शत्रुओं को काटकाट कर ढेर कर देते थे। थोड़ी देर के युद्ध में ही हूणों की हिम्मत टूट गई। वे लोग इधर उधर भागने लगे। पूरी हूण सेना भाग खड़ी हुई। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके जब युवराज स्कन्दगुप्त फिर हिमालय को पार करके अपने देश पहुंचे तो उनका स्वागत करने के लिए लाखों मनुष्यों की भीड़ वहां पहले खड़ी थी। मगध में राजधानी से पांच कोस तक का मार्ग सजाया गया था उनके स्वागत के लिए पूरे देश में उस दिन उत्सव मनाया गया। यही युवराज स्कन्दगुप्त आगे चलकर भारत के सम्राट बने। आज के ईरान और अफगानिस्तान तक इन्होंने अपने राज्य का विस्तार किया। इस जैसा पराक्रमी वीर इतिहास में दुर्लभ ही होता है। इन्होंने दिग्विजय करके अश्वमेध यज्ञ किया था। वीर धर्मात्मा दयालु और न्यायप्रिय सम्राट था। बच्चो आओ हम भी इन महान् पुरुषों से शिक्षा लेकर ऐसे ही बनें। □

युवामञ्च—

सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्

युवक दीक्षित हों

स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती

आज मानव समाज की अत्यन्त दुर्दशा है। प्राकृतिक वैभव अपनी परा काष्ठा पर पहुंच चुका है। किन्तु उसका फल विध्वंस ही विध्वंस दीख रहा है। इसका कारण क्या है? प्रकृति के जिन तत्त्वों को मानव ने खोज निकाला है। उनके सदुपयोग के लिए जो सदाचार भ्रातृभाव तथा जितेन्द्रियता अपेक्षित है वह आज मानव समाज में नहीं है। इससे बढ़कर दुःख की बात है कि मानव समाज इसका उपाय ठीक नहीं सोच रहा है। आज समाजवादी तथा साम्यवादी लोग कहते हैं कि यदि भोज्य पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न हो तथा उसका वितरण ठीक हो तो मानव समाज के दुःख दूर हो जायेंगे। यह बात कुछ अंश तक ठीक है। जो लोग भूख और दरिद्रता के कारण बुराइयां करते हैं वह इससे दूर हो जायेगी परन्तु भूख और दरिद्रता से बढ़कर तृष्णा और लोभवाद है। उसकी चिकित्सा तो क्या करनी थी उसको बढ़ाने में लगे हुए हैं।

आज संसार में अन्न और वस्त्र की इतनी कमी नहीं जितनी मनुष्यता की है जो उत्पन्न करने के साधन हैं, ईश्वर प्रेम, भ्रातृ भाव, सच्चाई, जितेन्द्रियता, संयम। यदि हम सबको एक शब्द में कहना हो तो वह है उत्तम शिक्षा। उसकी ओर मानव समाज का ध्यान नहीं जा रहा। हमारी सम्मति में उत्तम शिक्षा मानव समाज की अंतिम शरण है।

परन्तु उत्तम शिक्षा का आधार भी तो कुछ होना चाहिए। यही बात आज हम इस लेख में दिखाना चाहते हैं। आज हम शिक्षा शास्त्र का परम मौलिक परमोपयोगी परमोपेक्षित सिद्धान्त संसार के सामने रखना चाहते हैं। बात नई नहीं है। परन्तु न जाने इसका शिक्षा शास्त्र में उपयोग क्यों नहीं किया जाता। वह सिद्धांत है व्रत अथवा शपथ। हम किसी सैनिक को सेना में भर्ती नहीं करते जब तक उसको झण्डे के सामने खड़ा करके राष्ट्र रक्षा की शपथ नहीं दिला लेते। इसी प्रकार राष्ट्रपति सेनापति राष्ट्र के मंत्रि मण्डल संसद के सदस्य आदि सब लोगों से शपथ ली जाती है। वैदिक गृहस्थ आश्रम इसी शपथ के आधार पर खड़ा है। विवाह क्या है? स्त्री पुरुष के एक दूसरे के सुख-दुःख में जीवन भर साथ देने की शपथ। वह शपथ हवन कुंड के सामने हो चाहे रजिस्ट्रार के दफ्तर में इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता शपथ तो शपथ है। खेद है कि मनुष्य के भावी जीवन के मूलाधार शिक्षणालय में कोई शपथ नहीं।

प्राचीन मर्यादानुसार हर विद्यार्थी को विद्या आरम्भ करने से पहले तीन सार्वजनीन महाशत्रुओं में से एक न एक शत्रु के विनाश की शपथ लेनी होती थी। ये सार्वभौम शत्रु संख्या से तीन हैं (१) अभाव (२) अन्याय (३) अज्ञान। इनके निवारणार्थ जो व्रत लिया जाता था उसे ही उपनयन संस्कार कहा जाता था। इसीलिए प्राचीन काल में विद्यार्थी को व्रती या वर्णी कहते थे। वर्णी इसलिए कि वह इन तीनों में से एक शत्रु के नाश के लिए व्रत करता था अभाव दुःख से लड़ने का व्रती वैश्य अन्याय दुःख से लड़ने का व्रती क्षत्रिय अविद्या दुःख से लड़ने का व्रती ब्राह्मण कहलाता था। जो अयोग्यता के कारण इन तीनों में से कुछ न बन सके वह किसी व्रती के पास रह कर शुश्रूषा द्वारा व्रत पालन का लाभ लेता था वह शूद्र कहलाता था वह चुनाव करता था कि दुष्ट की सजा नहीं करूंगा। किसी न किसी लोक सेवक की ही सेवा करूंगा यह उसका चुनाव था। इसलिए वह भी वर्णी कहलाता था।

आज की शिक्षा में व्रत का कोई स्थान नहीं न कोई व्रत की महिमा की ओर ध्यान देता है। यदि कोई सबल निर्बल पर अन्याय करता हो तो व्रती व्यक्ति अन्याय शत्रु के निवारणार्थ मर मिटेगा किन्तु व्रतहीन कहेगा मुझे क्या गरज पड़ी है जो मैं इसकी मुसीबत में भाग लूं। बस इस पराई मुसीबत में अपने आपको मिटा देने की दीक्षा ने प्राचीन काल में मानव जाति को इतना ऊंचा उठाया था।

ब्राह्मण कहता था कि यदि नगर व ग्राम में एक भी विद्याहीन है तो मुझे धिक्कार है। क्षत्रिय कहता था कि यदि नगर व ग्राम में एक दुर्बल पर भी बलवान् अत्याचार करता है तो मुझे धिक्कार है, मेरे जीने से क्या लाभ वैश्य कहता था कि यदि मेरे नगर व ग्राम में कोई भोजन बिना भूखा मरता है तो मुझे धिक्कार है।

बस हमारी संस्कृति का मूल तत्त्व है—शपथ व्रत दीक्षा जिसका परिणाम था अधिकतम मात्रा में स्वेच्छापूर्वक श्रम और दण्ड का न्यूनतम प्रयोग।

रूस की संस्कृति में अधिकतम दण्ड का प्रयोग है।

पूंजीवादी संसार में पूंजीपति को यथासम्भव अत्याचार की छूट है। लखपति का बेटा कैसा ही दुराचारी हो, उसकी सम्पत्ति उसे मिलकर ही रहेगी।

इस अधिकतम स्वेच्छापूर्वक श्रम की भावना जागृत करने का उपाय है शिक्षा से पहले की दीक्षा। □

व्यासपीठ—

उपनिषत् कथा-माला—४

सच्ची पूजा

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा
एकं रूपं बहुधा यः करोति।
तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरा
स्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् ॥ ५।१२
कठोपनिषद् ।

इस उपनिषद् के मन्त्र में चार बात बताई हैं पहले परमात्मा के विषय को निश्चित कर दिया है। दूसरे जिस समाज को यह वृद्ध प्राप्त होती है मनुष्यों में उसका विश्वास हो जाता है। तीसरे प्रभु की कीर्ति वर्णन की है चौथे यह बताया है कि जो उसको प्राप्त कर लेता है उसकी महिमा क्या होती है ?

अन्य जाति वाले कहते हैं कि आर्यों को परमात्मा का ज्ञान सृष्टि रचना के बहुत पीछे प्राप्त हुआ। इन्हें पहले यह ज्ञान नहीं था कि परमात्मा एक है। परन्तु आप वेदों और उपनिषदों को देखें उपनिषदों में परमात्मा को एक लिखा है। जैसे इस मन्त्र में कहा है एको वशी। अर्थात् परमात्मा एक है वेदों में भी आया है

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते।
न पञ्चमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते।
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते।
य एतं देवमेकवृतं वेद ॥
अथर्ववेद १३।४।१६-१८

अर्थात् परमात्मा एक है अनेक नहीं है। वह न दो है न तीन है चार नहीं पांच नहीं छह सात आठ नौ और दस भी नहीं। अतएव वह केवल एक ही है। यह कहना कि आर्यों को परमात्मा का ज्ञान नहीं था या पीछे से हुआ सर्वथा निर्मूल है।

भाइयो संसार में बड़े आदमी की ही बात मानी जाती है। छोटा आदमी यदि अच्छी बात भी कहे तब भी नहीं मानी जाती। कई छोटे छोटे आदमी अच्छी अच्छी बात कर बैठते हैं परन्तु जिसका मान आपके मन में है जिसके पास धन धान्य अधिक है। उसकी बात आप अधिक मानते हैं। जैसे किसी बाजार में एक सिविल सर्जन है। एक नाई भी उसी बाजार में रहता है। वह भी फोडों का इलाज करता है। एक धनी पुरुष के फोडा हो गया। अब यदि वह धनी पुरुष नाई के पास जाता है और नाई फोडे को अच्छा कर देता है तो वह नाई फोडा सिविलसर्जन से अच्छा कराये तो उसको २०० या ४०० रुपये देने होंगे। यह क्यों ? फोडा तो दोनों के इलाज से ही अच्छा हो जाएगा डाक्टर का मान क्यों अधिक है नाई का मान क्यों कम है ? कारण यह है कि वह बडा है और यह छोटा है डाक्टर अधिक पढा लिखा है और नाई कम पढ लिखे आदमियों की बात अधिक मानी जाती है।

यह विचार कैसे फैला कि आर्यों को ईश्वर का ज्ञान देर से हुआ ? इसका कारण भी सुनिये ! परमात्मा का नाम वेदों और उपनिषदों में कई प्रकार से आया है अग्नि नाम परमेश्वर का है परन्तु जल नाम भी परमेश्वर का है इसी प्रकार पृथ्वी नाम परमेश्वर का वायु नाम परमेश्वर का चन्द्र नाम परमेश्वर का और सूर्य नाम भी परमेश्वर का है। जब लोगों ने देखा कि वेदों में अग्नि जल पृथ्वी वायु चन्द्र सूर्य भी परमेश्वर को कहते हैं तो हिन्दू उनके आगे हाथ जोड जोड कर खडे हो गये परन्तु यह न समझे कि ये सब तो गुणात्मक नाम हैं। परमेश्वर तो एक है परन्तु उसको कई नामों से पुकारा जाता है। जैसे कि उपनिषद् में आया है कि यह सब संसार उस जल की रचना है अब इस जल के कहने से क्या पानी समझ लिया जाय ? नहीं। कदापि नहीं शंकराचार्य जी कहते हैं जिससे सारा संसार उत्पन्न हुआ और जिसमें यह लय हो जाता है उसका नाम जल है। आर्यों का ज्ञान सृष्टि के आदि से चला आता है। ये जो मन्दिरों पर झण्डे होते हैं आर्यों से पूछा गया कि परमात्मा के झण्डे क्या हैं ? तो उन्होंने उत्तर दिया कि सूर्य अग्नि उसके झण्डे हैं। वेदों में कहा है कि हे प्रकृति सूर्य चन्द्रमा जैसा पर्वत बनाने वालों की जिसमें परमात्मा ने रचना की है तू धन्य है अग्नि नाम परमात्मा का है जल नाम भी परमेश्वर का है वेदों में जब ये बातें आई हैं तो अब यह निर्णय कैसे होगा। सुनो मेरे भाई लिखा है हे अग्नि ! प्रकाशस्वरूप ! तू मुझे सीधे मार्ग पर ले चल जब यह अग्नि का सम्बन्ध आ गया तो क्या यह अग्नि जानती है कि आप प्रतिदिन हवन करते हैं ? परन्तु यदि किसी दिन आपका कपडा इसकी लपट में आ जाये तो यह उसे भी जला देती है। यह तो आपके कपडे को भी नहीं बचा सकती तो यह आपको प्रकट है कि यहां अग्नि के अर्थ परमात्मा के हैं न कि भौतिक अग्नि के।

तुम प्रतिदिन दरिया की सैर को जाते हो। दरिया में तनिक कूदो सही गहरे पानी में जाते ही यह तुम्हें डुबो देगा फिर वह जल परमेश्वर कैसे हुआ ? इसी लिए तो उपनिषदों के मन्त्र में कहा है कि परमात्मा एक है और उसको मुनियों ने बहुत से नामों से पुकारा है।

एकोहि मुनयो बहुधा वदन्ति।

यहां गणित के जानने वाले तो बहुत हैं वे जानते हैं कि हर एक संख्या का आरम्भ एक से होता है। प्रत्येक अंक में एक अवश्य विद्यमान है। दो तीन चार पांच इन सब में एक विद्यमान है।

फिर कहा है हे ईश्वर ! न तेरा कोई नीचा भाग है न मध्य भाग और न तेरा कोई ऊपर का ही भाग है। परमेश्वर मैं तेरी क्या व्याख्या करूं ? तू नीचे और ऊपर के विचार से अलग है ? आर्य लोग उस परमेश्वर को भली भांति जानते थे। ये सब दोष इनमें महाभारत से पीछे आये। जब ये सम्प्रदाय हुए तभी से ये भी हुए। महाभारत से पहले कहीं भेद दिखाई नहीं देता है। कोई जाति दृष्टि नहीं आती। न सन्नी थे न मल्होत्रे न कोई और ही जाति थी। प्राचीन समय में सब को चार आश्रमों और चार वर्णों में विभाजित किया जाता था। ब्रह्मचारी गृहस्थी वानप्रस्थी संन्यासी आदि सम्प्रदाय आये और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ये सब यौगिक नाम की जातियां खडी हो गई। पहले न कोई जाति थी न झगडा ये सब सम्प्रदायों के झगडे हैं। लोग कहते हैं कि आर्यसमाज ही यह कहता है और कोई नहीं कहता परन्तु तुलसीदास महाराज ने भी तो यही कहा है। यह साढे तीन सौ वर्ष की ही बात है। उनसे जब मनुष्यों ने पूछा तो उन्होंने भी यही उत्तर दिया था। एक प्रश्न होता है तो क्या उसके चार या दस उत्तर होते हैं ? उन्होंने कहा इसलिए तो सत्य पदार्थ का पता नहीं लगता। वर्षा बडे जोर से हो रही है। चारों ओर घास उग आया घास इतना बढ गया है कि उसने मार्ग ढाप लिया है आने वाले यात्रियों को विदित नहीं होता कि हमारा मार्ग कौन सा है ? इसी प्रकार भले पुरुषों के ग्रन्थों का मार्ग भी जाता रहा पाखण्डियों में

प्राचीन काल में जिस प्रकार लोग परमेश्वर को माना करते थे तुम भी यदि वैसा ही मानना चाहो तो मान सकते हो। परमात्मा तुम्हारी बात निकट से सुनता है। यदि सुनाना चाहते हो तो उसके समीप होकर सुनाओ। निकट से उसकी भक्ति करो। परमेश्वर को जैसा मानते हो वैसा ही अपना आचरण भी कर लो तो तुम उसके निकट हो जाओगे। यदि तुमने माना हो कि परमात्मा सत्य है और भक्ति की भी सचाई की तब तो वह निकट है। परन्तु यदि तुमने दुकान पर बैठकर लोगों को कम तोलकर देना और झूठ बोलना आरम्भ कर दिया तो वह दूर है यह उसकी दूर से भक्ति हुई। मैं कैसे जान सकता हूं कि आपके मन में क्या है ? परन्तु आपसे तो कोई बात भूली हुई नहीं। इसी प्रकार मेरे मन का विचार मुझे ही मालूम है आपको तो पता नहीं परन्तु परमात्मा सबके विचारों को जानता है।

मैं आपको उपदेश दूं परन्तु किसी दिन एक आदमी ने मुझे देख लिया कि भंग पीता हूं और भंग का खण्डन भी करता हूं। मुझे उसने कहा कि बाबा एक स्थान पर तो भंग का खण्डन करते हो और दूसरे स्थान पर आप ही भंग पीते हो। मैंने कहा हां ! पीता हूं अपने पैसों से पीता हूं। मनुष्य कहां तक दण्ड दे सकता है ? परन्तु यदि मैं उससे कहूं कि भाई ? किसी और से न कहना तो क्या बना ? मनुष्य नहीं परन्तु परमात्मा तो दण्ड दे सकता है। पर मनुष्यों से तो हम डरते हैं किन्तु परमात्मा से नहीं डरते। भाई ! दो आंखों वाला क्या देख सकेगा ? वह तो सामने ही देख सकेगा अपनी पीठ की तरफ से तो नहीं देख सकेगा। परन्तु परमात्मा तो सहस्राक्ष हजारों आंखों वाला है। वह तो सूर्य की किरण के समान देखता है। उससे डरना चाहिए था परन्तु आप डरते हैं मनुष्यों से। यदि परमात्मा का भय नहीं तो मनुष्य से क्या डरना ? जिस मनुष्य ने बुरा काम किया परिणाम सामने आ गया। कौन देखता था। भारत वर्ष ने उलटे काम किये जिसके कारण आज यह दशा हुई। कौन देखता था ? ये फल किसने दिये ? दूसरे के घर में जाकर किसी को स्वतन्त्रता नहीं होती। परन्तु तुम तो अपने घर में भी स्वतन्त्र नहीं। यह सब बुरे कर्मों का फल है। वह कौन देखता था ? यह वही देखता था। आप कहेंगे कि वह समझाता क्यों नहीं ? यह उसका स्वभाव नहीं। मैं पूछता हूं कि लैम्प जलता है दो लडके उसके सामने पुस्तक पढने लगे। अब वे दोनों सो गये। क्या लैम्प उनको जगा देगा ? ज्योति देना तो उसका काम है किन्तु जगाना नहीं। इसी प्रकार परमेश्वर का काम भी ज्योति देना है। जब मनुष्य बुरे काम करता है, परमेश्वर की ओर से लज्जा आती है मन की ओर से नहीं। मेरे भाई ! जिन बातों

और जिनको ग्रहण करना चाहिए था वह ग्रहण नही की। फिर दुदशा न हो तो और क्या हो ?

एक पुरुप कहने लगा स्त्री पुरुष की लडाई का बिल पास हो जाना चाहिए कि जब स्त्री पुरुप लड पडे तो आपस मे एक दूसरे को त्याग सकें। मैने कहा सोचो तो सही ! विद्वानो मे कुछ मति होनी चाहिए। तुम मे तो अनपढ ही अच्छे हैं। ससार मे देखो तो एक स्त्री पुरुष का विवाह हो गया। यह विवाह जीवन भर का सम्बन्ध होता है इसके समान और कोई सम्बन्ध नही। परन्तु चलो शिमले की पहाडी पर। वहा आज एक घर म जो स्त्री है कल वही दूसरे के घर है। उनके यहा कोई ऐसा कानून नही, परन्तु तुम चाहते हो कानून बनवाना। तुमसे तो वही अच्छे है। कल कहोगे कानून होना चाहिए कि परदा न हो। तो भाई ! अब भी तो कई स्थानो मे परदा नही। क्या उनके लिए कोई कानून है ? तुम मे से भी कई स्त्रिया परदा नही करती। ये सब बाते न सुनो ? कहा है।

सेवक सदन स्वामी गमन।
मङ्गलमूल अमङ्गल दमन ॥

सेवक के घर जब स्वामी का आगमन होता है तो सब अमगल दमन होकर मगल हो जाते हैं। सुनो एक सेठ अपने मुनीम के घर चला जाता है। मुनीम की खुशी का कोई ठिकाना होता है। थानेदार अर्दली के घर मालिक सेवक के घर जाये तो अर्दली और सेवक की खुशी का ठिकाना नही होता परमात्मा सब का स्वामी है और हम सब उस के सेवक। जब स्वामी परमात्मा सेवक जीवात्मा के घर जाता है उस समय सब अमगल दूर हो जाते हैं और मगल हो जाता है। इसलिए परमात्मा का चिन्तन करो। बुरे कामो को छोड दो

मेरे भाई ! यदि आप अपने आपको संभालना चाहते हैं तो बल ग्रहण करो। बल तो वही से मिलता है जहा बल है और कही से नही मिल सकता। आजकल सब जगह बिजली की शक्ति का सचार हो रहा है, घर घर मे इसका चमत्कार है। जिसका सम्बन्ध बिजली से छूट गया, बस अन्धेरा ही अन्धेरा है। आत्मा को बिजली का चमत्कार परमात्मा से ही मिलता है उसको जानने और मानने से ही उसका कल्याण हो जाता है।

परमात्मा अजन्मा है जन्मा नही, वह जन्म नही लेता। इस सृष्टि की उत्पत्ति और इसका पालन जिसके अधीन है भला वह कैसे जन्मा हो सकता है ? कैसे कोई ऐसी भूल कर सकता है ? जितनी मात्रा मे भूल होगी, उतनी ही हानि होगी। देखो ! अगर इकन्नी खोटी निकल आये तो चार के स्थान पर दो पैसे मिलेगे। इसी इसी प्रकार दुअन्नी, चवन्नी, अठन्नी, रुपये में भी खोटा-खोटा [illegible] होगा। [illegible] हीरा खोटा निकल आये तो सैकडो रु० की हानि हो जाये। यद्यपि भूल की मात्रा मे भेद कुछ अधिक नही होता जैसे आख बडी वस्तु को देखकर बडी नही हो जाती और छोटी वस्तु को देखकर छोटी नही होती इसी प्रकार भूल की मात्रा मे भी भेद नही पडता। परमात्मा तो बहुत बडा है यदि यह भूल जाय तो उसके कार्य-व्यवहार मे बहुत बडी गडबड पड जाय परन्तु ऐसा नही हो सकता है।

हैदराबाद म अग्रजी के एक बड विद्वान थ। विद्वान हो चाहे काई और सतान का दुख सबको बरा रहे। विद्वान् भी सतान का दुख नहीं देख सकता। वहा रिवाज है कि कन्या का विवाह तब हो सकता है, जब उसके पिता क पास चार पाच हजार रुपया दहेज मे देने का हो। वहा अनक कन्याएँ हैं जिनका विवाह नही होता। कारण जब किसी के पास इतना रुपया विवाह मे दन क लिए हो तभी वह विवाह करे। परन्तु वहा क लोग इस रोग को नही हटाते, वे जानते हैं कि यह प्रथा बुरी है किन्तु फिर भी नही हटाते। अब देखो उस विद्वान का एक कन्या मुसलमान हो गई। जब उससे मुसलमान होने का कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया कि मैंने अपने माता पिता को सुख दिया उनके पास पाच हजार रु० नही था। वे आप मेरा विवाह नही कर सकते थ। मैंने मुसलमान से विवाह कर लिया और उन्हें मुझे कुछ भी नही देना पडा।' हम मे पढे लिखे तो बहुत हैं परतु वे अपने ऐसे कूड कर्कट जैसे निकम्मे रिवाजो को बाहर नही कर सकते, यह उनकी भूल है। जब उनकी जाति से कोई चला भी जाये तो वह उसे वापस लाने का प्रयत्न भी नही करते। इसीलिए सस्कृत का एक विद्वान कहता है कि शास्त्रो और वेदो का पढ पढाकर भी कुछ लोग मूख ही रहते हैं। परन्तु कौन ? अक्रियावान् अर्थात् व जो अपन पढे लिखे का अनुकरण नही करत।

अब देखो ! एक रोगी है उसे बड जोर से ज्वर चढा है। ह बे शफा ज्वरा कुश कुनेन मिक्श्चर की शीशी आदि सब कुछ खाट के नीचे रख दो। क्या ये औषधिया खाट के नीचे या उसके पास रखने से उसका ज्वर उतर जायेगा ? कदापि नही। मेरे भाई ! ज्वर तब ही उतरेगा जब उसे कोई औषधि खिलाई जायेगा। वैसे कदापि नही उतरेगा। इसीलिए शास्त्र को निकट होकर पढें। तभी कल्याण हो सकेगा। जिस ससार मे मातृ प्रेम और पितृ स्नेह न हो वही उस ससार मे भी कल्याण हो सकता है ? परमात्मा सब को ही वश मे रखने वाले हैं तनिक सोचकर तो देखो !

ज्ञान और पदार्थ है और क्रिया और। ज्ञान अनुकूल क्रिया के लिए आत्मिक बल होना चाहिए। विद्या मे तो अपना काम करके दूसरे को ज्ञान देना है। जैसे पुलिस एक दोषी को पकडती है परन्तु दण्ड नही दे सकती। दण्ड तो न्यायाधीश (जज) ही देगा। पुलिस का काम पकडना है न्यायाधीश का दण्ड देना। क्या कभी कोई मजिस्टेट भी स्वय पकडकर किसी को दण्ड दे सकता है ? कदापि नही। इसी प्रकार विद्या का काम है बता देना किन्तु उस ज्ञान का अनुकरण करना आत्मिक बल के अधीन है।

वैश्य लोग आजकल बड भीरु और डरपोक होते हैं। मैं बम्बई मे था वहां उन्होंने दुकानो पर पहरेदार नौकर रखे हुए हैं। भाइयो ! धीरज बडी अच्छी चीज है। अचानक यह हवा उड गई कि लडाई हो गई तब फिर क्या था ? लोग अपनी अपनी दुकानें बन्द करके ऊपर चढ गए। यह तो है आजकल के वैश्य लोगो की अवस्था। एक वैश्य के घर चोर आया उसने झट बिजली का लैम्प जला दिया। देखा कि मेरी स्त्री और कन्या सो रही हैं और एक अनजान आदमी पास खडा है। परन्तु पकडना तो लैम्प का काम नही। पकडने के लिए उसे बल दिया गया है। यदि उसमे बल और साहस हो तो कहे—हे स्त्री ! तू भी उठ और साहस कर ! और आप भी साहस करे तब तो वह उस आपरे मनुष्य को बाहर निकाल देगा। परन्तु यदि यह बल उसमे न आये और वह चोर को देखकर फिर रजाई ओढकर सो जाये तो चोर समझ जायगा कि यह कायर है, जागकर भी सो गया है। मेरा कर ही क्या लेगा ? बस निर्भयता से अलमारी तोडेगा और जो कुछ भी उसे मिलेगा ले जायेगा।

प्रकाश ने तो उसे जगा दिया। परन्तु चोर पकडना उसका काम नही उसका काम तो उजाला करना है। आत्मिक बल परमात्मा की उपासना से मिल सकता है। उसे तो हम भूल गय। परमेश्वर की उपासना हमने छोड दी। बात समझ म नही आती।

अच्छा ! इतिहास को पढे तो ज्ञान होता है कि विदेशियो ने इस देश पर आक्रमण क्यो किया। महमूद गजनवी को इस देश मे सहायता देने वाला कोई नही था। वह मार्ग भी नही जानता था। बुद्धि नही मानती किन्तु यह सच्चा है। हमारा आत्मिक बल दुबल हो चुका था। सोमनाथ के मन्दिर पर जब महमूद ने आक्रमण किया पचास हजार नवयुवक इसलिए तैयार बैठे थे कि पुजारी जरा कह दें कि मूर्ति को बचाओ तो फिर चाह मूर्ति की रक्षा मे अपनी जान भी क्यो न देना पडे मूर्ति को अवश्य बचायेगे। किन्तु पुजारी कहते थे कि तुम्हे कुछ करने की आवश्यकता नही परमात्मा स्वय शत्रु पर आग बरसायेगा पत्थर बरसायगा और वह शत्रु को जलाकर भस्म कर देगा। उधर महमूद ने अपनी फौज से कहा, 'वीरो ! नौजवानो ! तुम सात आठ सौ नौजवान हो। खुदा के नाम पर हिम्मत करो। रसूल के नाम पर हिम्मत करो। सिवाय खुदा के दूसरा कोई नही खुदा और रसूल न कहा है कि जाओ ससार मे मेरी ज्योति फैला दो। कायर न बनो। सैनिको ने उत्तर दिया मर जायगे किन्तु खुदा के नाम से नही हटगे। अब उस मन्दिर का पता भी नही। केवल एक छोटी सी जगह म वह मन्दिर बना हुआ है। परन्तु उस समय उस मन्दिर के तीन सौ साठ पुजारी थे यदि वे साहस करते तो क्या महमूद कामयाब हो सकता था ? कदापि नही।

यह सब कुछ परमात्मा के नाम मानते स [illegible]। तुम कहोगे कि परमात्मा को हम भी मानते हैं। कैसे मानते हो पर[illegible] मा मा की पूजा मे न पैसे लगेगे न कुछ जाएगा न कुछ घटेगा। महादेव के पास जाओगे तो लोटा लेकर पानी चढाने के लिए ले जाओगे। महावीर के आगे जाओगे तो एक दो बार तो मत्था टेक आओगे यदि साथ कुछ न ले जाओ तो तीसरी बार पुजारी कह देगा कि मत्था तो टेकने रोज आ जाते। परन्तु कभी यह भी नहीं किया कि हनुमान जी के लिए कुछ प्रसाद ही ले आयें। ठाकुर जी के यहा जाओ तो भोग के लिए कुछ न कुछ ले जाना ही पडेगा। परन्तु परमात्मा के पास ? वहा तो आपको अपने साथ कुछ भी नहीं ले जाना पडेगा। केवल बराबर का दर्जा रखना पडता है। बराबर का नियम तुमने अलजबरे म पढा है। जो हिसाब रुक जाता है उसे अलजबरे के नियम से निकाला जाता है। मलिक परमात्मा के साथ मिलने के लिए बराबर का दर्जा रखना पडता है। दिन भर के कामो मे बराबर का दर्जा नही हो सकता उठ रोटी खाई और सो गए इस प्रकार तो बराबर का दर्जा नहीं हो सकता दाप हर को या गाम का बराबर का दर्जा कभी नहीं हो सकता। रोटी खाओ उसके अनन्तर लेटने का मन चाहेगा। बराबर का दर्जा कहाँ रहा ?

प्रात उठो ! नीद पूरी ले चुके हो। चित मे शान्ति है शौच जाओ स्नान करो दिन भर की थकावट सोने से दूर हो गई अब बराबर का दर्जा है। कुछ देर परमेश्वर का नाम लो। देखो बच्चा जब सोकर उठता है रोता है। माता उसको गोद मे ले लती है बच्चा चुप हो जाता है। माता की गोद म उसे कितना सुख मिलता है ? इसी प्रकार परमात्मा की गोद मे जाकर सब थकावट दूर हो जाती है। न थकान रहती है न भारीपन। उस अवस्था मे यत्न करो अपने मन को एक जगह स्थिर करो और सोचो हे परमात्मा तेरा लीला अनन्त है। तेरी शक्ति का अन्त नही। मनुष्य अपनी बुद्धि और ज्ञान के अनुसार तुझे जानने और मानने का यत्न करता है'। देखो ! अन्धेरा दूर करने की शक्ति किस मे है ? बडी से बडी राजसत्ता मे भी नही। (क्रमश)

रामगोपाल शालवाले और इन्दिरा कांग्रेस

डा० प्रशान्त वेदालंकार का क्या आर्यसमाज को राजनीति मे भाग लेना चाहिए ? लेख दो किश्तो मे पढ़ा। श्री शालवाले जी आर्यसमाज को सदैव राज नीति से ऊपर रखकर हिन्दू समाज के लिए रचनात्मक कार्य कर रहे हैं। क्या धर्मान्तरण क्या साम्प्रदायिक दंगे या क्या अन्य समस्याएं वे सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान के रूप मे ईमानदारी से हिन्दू समाज की सुरक्षा के लिए इनका निराकरण करते रहे हैं। इसी लिए वे करोड़ो आर्यसमाजियो और हिन्दुओ के लिए अभिनन्दनीय हैं।

मेरा सुविचारित मत है कि १९८४ के ससदीय निर्वाचनो मे राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए शालवाले जी ने कांग्रेस (इ) को आर्यसमाज का समर्थन देकर एक महत्त्वपूर्ण सामयिक कार्य किया है। १९६७ मे वे भारतीय जनसघ के चादनी चौक से स्वय प्रत्याशी के रूप मे सांसद निर्वाचित हुए थे। उस समय उन्होंने आर्यसमाज का समर्थन जनसघ और भारतीय क्रान्ति दल को दिलवाया था। १९७७ मे भी श्री शालवाले ने जनता पार्टी का समर्थन किया था।

किन्तु जनता पार्टी और उसके वर्तमान भाजपा घटक ने ३ वर्ष में राष्ट्र विरोधी और मुस्लिम-अकाली ईसाई तुष्टीकरण के जो कार्य किए उससे श्री वाजपेयी का भाजपा दल कांग्रेस (इ) की कार्बन कापी या बी टीम बन गया। क्या अल्पसख्यक आयोग के निर्माण मे श्री वाजपेयी और उनके घटक दल के ९८ सासद उत्तरदायी नही थे ? क्या विदेश-मन्त्री के रूप मे श्री वाजपेयी ३७० वीं धारा के वकील नही बन गए थे ? क्या अलीगढ़ मुस्लिम वि०वि० को अल्पसख्यक स्वरूप दिलाने के लिए जनता सरकार द्वारा विधेयक लोकसभा मे पारित नही किया गया था ? १९७७ मे उ० प्र० मे जनता सरकार में भाजपा घटक के कम से कम १५ मन्त्री या उपमन्त्री थे। फिर श्री वाजपेयी और डा० प्रशान्त जी ने अयोध्या में राम के मन्दिर के ताले क्यों नही खुलवाए ? अपितु विदेश मन्त्री के रूप में वीसा ढीला कर श्री वाजपेयी पाकिस्तान का रास्ता खोल आए, जिससे पाकिस्तानी कमाडो ने घुसपैठ कर भारत मे स्थान-स्थान पर दगे कराये। उस समय १९७८ ७९ ८० मे अलीगढ़ के वाभत्स साम्प्रदायिक दगो मे श्री शालवाले प्रो० मधोक स्व० प्रो० रामसिंह और श्री के० नरेन्द्र ने हिन्दुओ की सभी तरह से सहायता की किन्तु श्री वाजपेयी और भाजपा के नेताओ ने हिन्दुओ के ५०० ५०० व्यक्तियो के प्रतिनिधिमण्डलो से बात तक नहीं की जबकि श्रीमती इन्दिरा गाधी ने हर पहलू पर सतोषप्रद ढग से वार्ता की। इन प्रतिनिधिमण्डलो का नेतृत्व मैंने ही प्राय किया था।

१९८० के निर्वाचनों में विजयी होने के पश्चात् श्रीमती इन्दिरा गाधी को बाध्य होकर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को अल्पसख्यक स्वरूप देना पड़ा तो भाजपा के एक भी सासद ने इसका विरोध नही किया। श्रीमती गाधी से १९७९ में मैंने बातचीत की थी। वे इस विश्वविद्यालय को अल्पसख्यक स्वरूप दिये जाने की घोर विरोधी थी।

श्रीमती गाधी की हत्या से एक माह पूर्व के श्री वाजपेयी या श्री रामचेठ मलानी प्राणनाथ लेखी सिकन्दर बख्त आदि भाजपा के नेताओ के वक्तव्य पाकिस्तान अकाली दल और फारूख अब्दुल्ला के समर्थन मे दिए हुए हैं। श्रीमती इंदिरा गाधी की हत्या के बाद दिल्ली मे सिखो की हत्या होने पर श्री वाजपेयी ने कहा कि २७२० के लगभग सिख दिल्ली में मारे गये हैं। हिन्दुओ तोड़ गये मन्दिरों एव पुजारियो की हत्या के बारे मे कभी आपने न तो रिकार्ड ही बनाया और भाजपा कार्यकर्ता हरबस लाल खन्ना की हत्या से पूर्व मे आपने पजाब जाना ही उचित समझा।

अत भाजपा जैसी हिन्दू विरोधी पार्टी को सबक सिखाने के लिए शालवाले जी द्वारा आर्यसमाज का इका को समर्थन देना सामयिक ही रहा। श्री शालवाले ने प्रो० बलराज मधोक का सदैव की भांति इस बार भी तन-मन-धन से समर्थन किया था किन्तु हिन्दू राष्ट्र एव हिन्दू राज्य के समर्थक इस महान नेता का हिन्दू राष्ट्र का कथित समर्थक भाजपा एस एस ही पूरी शक्ति से विरोध करता है।

—पजाब केसरी से साभार

गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर (गाजियाबाद) उ०प्र० का

विद्यालय भवन ध्वस्त

हापुड से ३ मील पूर्व गढ़ मार्ग पर स्थित गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर का विद्यालय भवन भयङ्कर तूफान आने से नष्ट हो गया है जिस से छात्रो की पढ़ाई में बाधा उत्पन्न हो गई है। बच्चे धूप मे बैठकर ही अब पढाई का काम पूरा कर रहे हैं। परीक्षाए निकट हैं और आगामी सत्र से विधिवत् पढाई प्रारभ हो सके। अत दानी महानुभाव सज्जनो से निवेदन है कि अधिक से अधिक सहयोग देकर गुरुकुल के भवन निर्माण में आर्थिक सहयोग करें। पृथक से भी कमरों का निर्माण व्यक्तिगत अपना पत्थर लगवाकर कर सकते हैं। आशा है आप अवश्य मेव ध्यान देंगे।

पत्रव्यवहार का पता—

धर्मपाल शास्त्री
आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर
बाबूगढ़ (गाजियाबाद) उ०प्र०

(पृष्ठ ४ का शेष)

इत्यादि। ये दो बार एक ही पृष्ठ पर आपने किस लिए लिखा। क्या आपको स्मरण नही रहता। राजा राममोहन राय का आपने सारा इतिहास क्यों लिखा और राजा राममोहन राय को पुनर्जागरण के प्रथम सूत्रधार लिखा है। राजा राममोहन राय का सारे जीवन से लेकर मृत्यु तक का भी इतिहास लिखा है। और ब्रह्म समाज के सस्थापक उनके पीछे देवेन्द्र नाथ को ब्रह्मसमाज के सचालक तथा केशवचन्द्र के हाथ मे ब्रह्मसमाज आया उनके सारे जीवन का वृत्तान्त भी लिखा है। और ब्रह्मसमाज की दो फाड़ हुई, और केशवचन्द्र सेन ने अपनी अल्प वयस्क पुत्री का विवाह कूच बिहार के राजकुमार से कर दिया। इत्यादि केशव चन्द्र की शिक्षा-दीक्षा पाश्चात्य प्रणाली पर हुई थी। और ब्रह्मसमाज के अनुरूप ही प्रार्थना समाज की महाराष्ट्र मे स्थापना हुयी। इनका जीवन भी सम्पूर्ण लिखा है फिर आपने थियोसोफिस्ट सोसायटी का वर्णन किया फिर रामकृष्ण विवेकानन्द की विशेष प्रशसा की य सम्प्रदाय दयानन्द के पूर्ववर्ती समकालीन तथा परवर्ती जो धार्मिक [illegible] आदोलन पर विहगम दृष्टि विचार किया। पर्याप्त प्रशसा की है। रामधारी सिंह दिनकर का उल्लेख किया दिनकर ने स्वामी दयानन्द जी के काम की आलोचना की है। फिर ब्रह्मसमाज के अक्षयकुमार दत्त के सम्पादन मे पत्रिका का वर्णन किया है। राम कृष्ण परमहस विवेकानन्द की आपने भूरि भूरि प्रशसा की है—

रामकृष्ण मिशन तथा उसके सस्थापक स्वामी विवेकानन्द के कार्यों का उल्लेख किया जाना आवश्यक है। वस्तुत परमहस रामकृष्ण ने जिस आध्यात्मिक साधना को अपने अनुभव में लाकर अपने भक्तों म स्फूर्त किया।

वह तर्क एव युक्तिवाद से सर्वथा पृथक आस्तिकता तथा आध्यात्मिकता का एक ऐसा आलौकिक भाव था। जिसे अनुभूति का विषय तो बनाया जा सकता है। परन्तु जिस पर वाद-विवाद नही किया जा सकता, परमहस देव यद्यपि लौकिक दृष्टि से शिक्षित नही थे। किन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से उनकी आत्म चेतना अपने सर्वोच्च सोपान पर सदा ही प्रतिष्ठित रहती थी। उनके सम्पर्क में आकर नास्तिक नरेन्द्रनाथ दत्त ने ईश्वर अनुभूति का साक्षात्कार किया था। तथा यह अनुभव किया कि उनके गुरु धर्म के साक्षात विग्रह हैं। विवेकानन्द के रूप में प्रव्रज्या लेकर नरेन्द्रनाथ दत्त ने दिग-दिगन्त में हिन्दू धर्म और सभ्यता की विजय वैजयन्ती फहरायी इस की कथा ही पृथक् है। पृष्ठ २२, २३ कृपया ये बतायें डा० साहब कि वह क्या चेतना थी जो अपने सर्वोच्च सोपान पर सदा स्थिर रहती थी। विवेकानन्द, परमहस रामकृष्ण के जीवन यदि लिखना है। तो आप अलग पुस्तक लिखें, स्वामी दयानन्द के जीवन के साथ क्या सम्बन्ध इनका। रामकृष्ण परमहस ने आध्यात्मिक चेतना को जीवन में लाकर अपने भक्तों में स्फूर्त किया। उसका कुछ हिस्सा आपको भी तो मिला होगा, कृपया ये बतलावें। क्या थी वह आध्यात्मिकता उस पर वाद-विवाद क्यों नहीं किया जा सकता। और पृ० २१ पर आप लिखते हैं। प्रत्येक धर्म में सत्य का तत्त्व है, क्या मनुष्यों ने जो धर्म रचे क्या वे भी धर्म हैं। इत्यादि अनर्गल पचासों पृष्ठ लिखकर आपने पुस्तक का भार बढ़ाया है। और साथ टिप्पणी लिखकर इस पुस्तक में आपने सैकड़ों पृ० और बढाये हैं। जिसका कोई मतलब ही नही जब आपने इतने पृष्ठ व्यर्थ लिखे। स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र जो सब लेखकों से प्रामाणिक है उसे न लिखना और दुनिया भर के लोगो का जीवन चरित्र लिखना ये कहाँ तक युक्ति युक्त है। जिसका जीवन चरित्र लिखा जा रहा है उसके साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं है।

और यदि यह पुस्तक स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र है। तो इस पुस्तक का मूल्य चालीस रुपये क्यों रखा है। क्योंकि इस पुस्तक का प्रकाशन परोपकारिणी सभा ने किया है। और परोपकारिणी सभा महर्षि दयानन्द की अपनी सम्पत्ति से बनी है। फिर इतना मूल्य क्यों ? ईसाई अपनी बाईबिल को थोड़े से मूल्य पर अथवा निःशुल्क वितरित कर रहे हैं। एव यह पुस्तक भी निःशुल्क या थोड़े से पैसों मे वितरित की जानी चाहिए। और महर्षि दयानन्द के जीवन को इतने मंहगे मूल्य में बेचने वाली सभा क्या परोपकार करती है। शेष फिर—

× × ×

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

के दीक्षान्त समारोह पर

दीक्षान्त-भाषण

द्वारा—प० सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार

(पन्ना के आगे)

आत्मा तथा अपनी अमरता का सन्देश देती रही। ऐसी भावना को ही हमने गुरुकुल संस्थाओं मे फिर से धीमे-धीमे पनपाना है। हमारे शिक्षा केन्द्र या गुरुकुल, शिक्षा की व्यापारी दुकानें न बनें, परन्तु पुण्यभूमियाँ बनें, जहाँ पहुँचते ही मनुष्य को सुख, शांति, साहस, धैर्य और ईश्वरीय जीवन का आनन्द मिलता हो, जहाँ मनुष्य नतमस्तक होकर आता हो और अपनी झोली को 'दैवी सपत्' से भर कर संसार मे यह सपत् बाटता हो या बिखेर देता हो। यही हमारी लक्ष्मी पूजा है, इसी में हमारी सरस्वती वन्दना है और पुण्यभूमि की अर्चना है—"इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुव ।"

इस सब के बाद मुझे आपको वैदिक धर्म, आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द के विषय में भी कुछ कहना है। यद्यपि ये तीनों अलग-अलग हैं परन्तु तीनो में एक समन्वय भी है।

वैदिक धर्म हमारी सभ्यता, संस्कृति दर्शन, आचार, मर्यादाओं आदि का आधार है, जिसके बिना हम खडे नही हो सकते। आर्यसमाज का आर्य राष्ट्र एक समाज-रचना या राष्ट्र-रचना का विशिष्ट विधान है जो सब संसार को, प्राणिमात्र के उपकार के उद्देश्य से, मानव को मानव से भाईचारे में जोड देता है। यहा 'वसुधैव कुटुम्बकम्" का आदर्श सामने आ जाता है। इस दिशा को दिखाने वाला महान् नेता दयानन्द है, जिसने हमे अपने भूत, वर्तमान और भविष्य के लिए उद्बोधित किया है। हम औरों की दृष्टि में बहुत पिछड गए प्रतीत होते हैं। इसी से जागरुक होने की हमारी आवश्यकता है। हमारी वाणी मे, हमारे आर्य नेता जागरूक नहीं, इसी से कहता हू—"वय राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता", "अस्माक वीरा उत्तरे भवन्तु", "देवसेना सूर्यकेतव प्रचेतस अमित्रान् नो जयन्तु', "कृतं (सत्यं) मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहित" इत्यादि, इत्यादि।

निरुक्त में महर्षि यास्क ने, जो एक तपस्वी ऋषि थे, हमे परमात्मा के दो विशेष वैदिक नामों का परिचय दिया है—प्रथम 'राष्ट्री' और द्वितीय 'अर्य'। ब्रह्माण्ड राष्ट्र का राष्ट्रपति राष्ट्री परमात्मा है और 'अर्य' अर्थात् ससार का स्वामी या मालिक। "अर्यस्यापत्य आर्य", अर्थात् ईश्वरपुत्र हम 'अर्य' परमात्मा के पुत्र हैं। इसी से आर्य मानव है। सारा ससार हमारे पिता का राष्ट्र है, इसी से सब संसार हमारा राष्ट्र है। उसके उत्तराधिकारी हम 'राष्ट्रीय आर्य हैं'। इसी से कहता हूँ—

"शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा ।"
"कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।"

कार्यक्षेत्र में अग्रता है, उन्न चारित्र्य से अधिक आवश्यकता है। भौतिक विज्ञान की तरक्की ने लौकिक अभ्युदय मे महान् सिद्धियों को प्राप्त करते हुए अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त किया है, परन्तु आर्यत्व या निःश्रेयस् को नही दिया है। यही अब भारतीय संस्कृति मे पोषित शिक्षणालयो से अपेक्षित है।

इस समय हमने शिक्षा के क्षेत्र मे विशेष उन्नति के मार्ग पर चलना है। हमारे कुछ स्नातको को जर्मनी फ्रांस, इटली आदि प्रदेशो मे मान्यता मिली थी जिससे स्नातक बनने के बाद कुछ स्नातको ने सीधे ही उन प्रदेशो के विश्वविद्यालयो से उच्चतम उपाधिया प्राप्त की थी। अब हमे भारत सरकार से मान्यता प्राप्त होने से दूसरे देशो में भी मान्यता प्राप्त हो रही है। इसमे अधिकारीवर्ग धन्यवाद के पात्र हैं। हमारा उद्देश्य महान् होना चाहिए। हमारा विश्वविद्यालय "सार्वभौम आर्य विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगडी" के रूप में पनपे। ससार के सब देशों के विश्वविद्यालयो से हमारा सम्पर्क बढे, उनसे सहायता प्राप्त करने में कभी सकोच न होना चाहिए। ससार की भिन्न भिन्न राज्य-संस्थाओ और राज्याधिकारियो को भी सम्मानित कर उनसे सब तरह की सहायता लेनी चाहिए। प्रत्येक देश की अपनी विशाल शाखा (Wing) हो, जिसमे उस देश की सर्वोत्कृष्टता को ग्रहण करने मे कभी सकोच न हो। उनकी भाषा, दर्शन, विज्ञान आदि हमें सहज मे प्राप्त होते हो। ससार के बडे परोपकार कृत्यो को करने वाले संस्थानो (Foundations) से सम्पर्क कर उनसे विशिष्ट आर्थिक सहायता भी हमें लेनी चाहिए, क्योंकि हमारे उद्देश्यों में 'सारे ससार का उपकार करना भी हमारा उद्देश्य है। इसमे, सक्षेप से, उन्नतिपथ की तरफ आपका ध्यान खींचता हूं। आशा है, आर्यसमाज तथा गुरुकुल के अधिकारिगण इस पर विशेष ध्यान देंगे।

जब हम गुरुकुल मे पढते थे तो जामिया मिलिया, देवबन्द आदि विद्यालयों के विद्यार्थी हमारे यहां आते थे, हम उनके स्थानों पर जाते थे, आपस में वाग्प्रतियोगितायें होती थीं, कभी कोई झगडा होता था कभी नहीं। कभी कोई वैमनस्य पैदा नही हुआ। क्या यह प्रथा अब अपनी विशालता को पनपा नहीं सकती? हमने समन्वयात्मक धर्म, संस्कृति, सभ्यता आदि को सार्वभौम दृष्टि से पैदा करना है—'एव वैश्विकी उपनिषद् ।"

प्रिय स्नेहपूर्ण नवस्नातको! अन्त मे 'सत्य वद', "धर्मं चर" के ऋषियों के सनातन शिक्षा-आदेश या दीक्षा की तरफ ध्यान दिलाते हुए यह कहकर समाप्त करता हू कि "सत्यस्वरूप परमात्मा के विषय मे प्रवचन करना और चिन्तन करना सत्य के दर्शन से धर्म के स्वरूप को समझते हुए उससे कभी निरपेक्ष न होना, परन्तु सदा उस पर आचरण करते रहना" यही "सत्य शिव सुन्दर" का प्रशस्त मार्ग है। यह तुम्हें सदा प्राप्त होता रहे। अपने प्रेम सद्भावना सहृदयता तथा शिक्षा—संस्थान (गुरुकुल) की उन्नति में सदा अग्रसर रहने में सहायक होगा—यह कहते हुए तुम्हारा बहुत सस्नेह अभिनन्दन करता हूँ। गुरुकुल विश्वविद्यालय के सब अधिकारियों तथा गुरु-जनो के सामने नतमस्तक होकर अपनी श्रद्धा के सुमन उपस्थित करता हू। स्वामी श्रद्धानन्द जी की आत्म ज्योति आपको सदा प्रकाश देती रहे। प्रभु का सब पर सदा वरदहस्त बना रहे।

हिमालय की सुपुत्री पार्वती कहू या गगामाता से कुलमाता को याद करू—कुछ भी हो-अपनी भावभीनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुए कहना चाहूँगा—

जन्म यहीं मृत्यु यहीं
खेलूं यहीं आ-आ कर।
हसना रोना हो यहीं
माता तेरे चरणो मे ॥

समाप्त करने से पूर्व 'कुलमाता की पताका पर ध्यान दिलाता हू। यह सूर्य-ज्योति से उज्वलित है। यही 'ओ३म् की सच्ची ध्वजा है—सूर्यमजस्म ज्योतिरुत्तमम्। इसका सन्देश भी सामने रखो। इसमे श्रद्धा प्राप्त करो सविता या सूर्यदेव के गुरुमन्त्र का भी मनन करो। इसे हम वेदमाता से पुकारते हैं। यही हमारी वन्देमातरम्' है।

'श्रद्धया सत्यमाप्यते।"
'सत्यमेव जयते नानृतम्।'

अन्तर्जातीय विवाह

वर चाहिए

१ २१ वर्ष ५-५" बी एस सी.बी एड (अध्यापिका) ११००) मासिक (मोदीनगर)
२ २३॥ वर्ष ५-२" बी एस सी बी एड (अध्यापिका) १२००), (दिल्ली)
३ २३ ,, ५-५" बी ए योगा ट्रेनिंग (अध्यापिका, १२००) मासिक (दिल्ली)
४ २८ ,, ५-३" बी ए (स्टैनो) सरकारी सेवा १५००) मासिक (दिल्ली)
५ २४ , ५-२' बी ए ईण्टीरियर डेकोरेशन सेवा १८००) मासिक (दिल्ली)
६ २४ ,, ५-२' बी ए नरसरी ट्रेनिंग (अध्यापिका) ६००) माह (दिल्ली)
७ २५ ,, ५-१' बी ए स्टैनो (सेवा डी०जी०पी०टी०) १०००) (दिल्ली)
८ २२ ,, ५-२" बी०ए० (इण्टीरियर डेकोरेशन समाप्त) दिल्ली (चण्डीगढ)

वधु चाहिए

१ २७ वर्ष ५-७' बी ई मैकेनिकल सेवा सीमेंट क० ३१००) दिल्ली
२ २९ ,, ५-७॥ 'एर ए मैनेजर इश्योरेंस (बीमा) ३०००) दिल्ली
३ २८ ,, ५-६ 'बी काम सेवा सिमको २८००) दिल्ली
४ २५ ,, ५ ७ बी काम अपना कार्य टाइपराइटर क० २०००) दिल्ली
५ २८ , ५-६' बी ए अपना कार्य (गिफ्ट शाप) २०००) दिल्ली
६ २६ ,, ५-८" बी काम (सेवा मोसवाल) १६००) दिल्ली
७ ३० ,, ५ ७" एम बी बी एस डाक्टर अपना क्लीनिक ५०००) दिल्ली
८ ३१ , ५-४' बी काम बी ए सेवा बैंक (बैरीन) ३००००) बैहरीन
९ ३० , ५-८' एम बी बी एस डाक्टर सेवा हस्पताल २५००) दिल्ली

सम्पर्क करें—

चन्द्र प्रकाश आर्य
सयोजक अन्तर्जातीय विवाह केन्द्र
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२

आर्यसमाज रघुवरपुरा, दिल्ली-३१ का निर्वाचन

श्री श्यामसुन्दर जी स्नातक की अध्यक्षता मे १२।५।८५ के प्रात १० बजे आर्य समाज रघुवरपुरा, गली न० ५ गांधी नगर, दिल्ली-३१ का वार्षिक निर्वाचन शांतिपूर्वक सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—

प्रधाना—श्रीमती द्रौपदी देवी
मन्त्री—श्री राधाकृष्ण आर्य
उपमन्त्री—, मा० मूलचन्द्र जी
,, , मनोज कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष—,, राजाराम वधोज
लेखा निरीक्षक— धर्मेन्द्र स्वरूप सिंह जी अधिष्ठाता
पुस्तकाध्यक्ष—,, सुन्दरदास जी आर्य

द्विवेदक

समाचार-सन्देश

विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर

अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के उपलक्ष्य मे आर्यसमाज की प्रगतिशील नवयुवक सस्था केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश ने महर्षि कण्व की तपोभूमि तथा हिमालय की सुरम्य घाटियो के बीच स्थित गुरुकुल कण्वाश्रम, कलालघाटी, कोटद्वार जिला पौडी गढवाल में १४ से २३ जून तक एक रोमाचकारी विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी की अध्यक्षता मे किया है।

परिषद् के अध्यक्ष व शिविर सयोजक श्री अनिल कुमार आर्य ने बताया कि युवको को महर्षि दयानन्द की विचारधारा से ओतप्रोत करने, अनुशासित जीवन, उत्तम स्वास्थ्य, चरित्र निर्माण, राष्ट्र के नवनिर्माण, युवा शक्ति को रचनात्मक कार्यों मे दीक्षित करने के उद्देश्य से वर्तमान परिस्थितियो मे ऐसे शिविरो की नितात आवश्यकता है। शिविर मे आसन-प्राणायाम, दण्ड-बैठक, लाठी, जूडो-कराटे व फ्री स्टाइल कुश्तियो के प्रशिक्षण के अतिरिक्त जडी-बूटियो का ज्ञान, प्राकृतिक सौंदर्य स भरपूर ऐतिहासिक धार्मिक पर्यटक स्थलो का भ्रमण तथा युवको को मचान पर बै_ाकर शेर, हाथी, भालू, हिरण, नीलगाय आदि हिंसक-अहिंसक वन्य जीव जतुओ के अवलोकन के रोमाचकारी अवसर मिलेंगे।

आर्यसमाज के नौजवान सन्यासी स्वामी जगदीश्वरानन्द जी महाराज की देख-रेख मे इन्ही दिनों योग साधना शिविर का भी आयोजन किया जा रहा है। जिस मे माँस, अण्डे, शराब, बीडी-सिगरेट व तामसिक पदार्थों के सेवन से मुक्त व्यक्ति ही इसमे भाग ले सकेंगे।

पौडी गढवाल मे आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर का उदघाटन १४ जून शुक्रवार को होगा। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के राजस्व मन्त्री श्री बलदेव सिंह, ससद सदस्य श्री सजय सिंह व आर्य नेताओ की भी सम्मिलित होने की आशा है।

चन्द्रमोहन आर्य

आर्य जनता से प्रार्थना है कि इन उत्साही युवको को प्रोत्साहन दें। आर्यसमाज मे युवको के न आने का एक कारण रचनात्मक कार्यक्रम न अपनाना भी है। अत तन मन धन से सहयोग देकर दयानन्द के मिशन को आगे बढायें।

यशपाल सुधांशु

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ

(गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हारद्वार से सम्बद्ध)

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा सस्थापित इस गुरुकुल मे सस्कृत विषयों के साथ साथ विज्ञान, तकनीकी, मैडिकल, नानमेडिकल, इतिहास, गणित, हिन्दी अग्रेजी आदि विषयो के अध्यापन की समुचित व्यवस्था। छात्रावास मे समाज भोजन आवास की आदर्श व्यवस्था। समस्त खेल, योगासन कलाओ द्वारा व्यक्तित्व का पूर्ण विकास। सैनिको जैसा अनुशासन। श्रमजीवि नागरिक तैयार करना। सदाचार ईश्वर-भक्ति, शालीनता आदि वैदिक सस्कारो से ओत-प्रोत करने हेतु सुबह—शाम वेद मन्त्रो के साथ यज्ञ—हवन, सध्या आदि गतिविधियाँ। कलात्मक प्रतिभा के विकास हेतु भाषण गीत, श्लोकोच्चारण, वाद विवाद का नियमित अभ्यास। ईश्वर भक्ति देश भक्ति, पितृ भक्ति, मातृ भक्ति, गुरु भक्ति, आदि सद्गुणो से सुसज्जित समाज उपयोगी छात्रो का निर्माण—

विद्याधिकारी (दसवी) के पश्चात् विद्यालकार (बी० ए०) कम से कम चतुर्थ श्रेणी उत्तीर्ण, स्वास्थ एव प्रभावशाली छात्रो के लिए सभी कक्षाओं मे प्रवेश प्रारम्भ।

स्थान सीमित है प्रवेशार्थी तुरन्त सम्पर्क करें।

प्रधानाचार्य
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद) हरि०
डाक घर—नई दिल्ली ४४
फोन न०—८२५३१८

प्रस्ताव

गत दिनाक ४-५-८५ को श्री रामचन्द जी आय प्रधान आर्यसमाज खण्डवा की अध्यक्षता में आर्यसमाज की सभा हुई जिसमे मन्त्री कैलाशचन्द पालीवाल ने दयानन्द कालेज अजमेर को जो अनुदान राशि प्राप्त होती थी उसे राजस्थान सरकार के द्वारा बन्द किये जाने पर यह सभा घोर विरोध करती है एव राजस्थान सरकार से अनुरोध करती हैं कि जो वर्षो से अनुदान राशि दी जाती थी उसे बन्द न कर अविलम्ब दी जाये।

मंत्री
आर्यसमाज, खण्डवा

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर, जिला जालंधर (पंजाब) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त, मे नये छात्रो का प्रवेश १४ जून १९८४ से आरम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलो मे पढाये जाने वाले गणित, अग्रेजी विज्ञान आदि सभी विषयों के साथ सस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप मे पढाई जाती है।

नि शुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम, योग्य एव परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, भोजन, दूध, आवास की मात्र ३० रु० (तीस रुपये) मासिक पर समुचित व्यवस्था इस गुरुकुल की अपनी विशेषताएं है। प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा पाच पास होना जरूरी है।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिलें अथवा पत्राचार करें।

विशेष—पजाब विश्वविद्यालय चडीगढ की शास्त्री कक्षा के अध्यापन का भी पूर्ण प्रबन्ध है। इच्छुक छात्र सम्पर्क करें।

आचार्य नरेश कुमार शास्त्री
आचार्य, गुरु विरजानन्द वैदिक
सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर
जिला जालधर, पजाब

श्रद्धेय श्री लाला रामगोपाल शालवाले का अभिनन्दन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्रद्धेय श्री लाला रामगोपाल शालवाले के सम्मान में आगामी १-२ जून, १९८५ को प्रस्तावित अभिनन्द समारोह कतिपय कारणो से स्थगित करना पड रहा है। इस अभिनन्दन समारोह के आयोजन की तैयारिया चल रही हैं और समारोह की भावी तिथियो की निश्चित घोषणा शीघ्र ही की जाएगी।

डा० आनन्द प्रकाश
सयोजक, अभिनन्दन समारोह समिति

श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल का सम्मान

गत २३ तारीख को साहित्यकार अभिनन्दन प्रकाशन समिति मथुरा उ०प्र० की ओर स पत्रकारिता के क्षेत्र मे गौरवमयी सेवाए देने के उपलक्ष्य मे खडवा से प्रकाशित ५२ (बावन) वर्षीय साप्ताहिक अकुश के प्रधान सम्पादक श्री कैलाशचन्द पालीवाल का सम्मान किया गया।

आप नगर की साहित्य, शैक्षणिक, सामाजिक सस्थाओ से भी जुड हुए हैं। आर्यसमाज खडवा के मन्त्री भी हैं।

सुखराम आर्य
पुरोहित, आर्यसमाज खडवा (म०प्र०)

आर्य युवको द्वारा प्रचार

आर्य युवक सभा लुधियाना द्वारा २८-४-१९८५ को आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार मे डा० एस० बी० बांगीवा की अध्यक्षता मे विशेष कार्यक्रम हुआ जिसमें देशभक्ति, समाज सेवा आदि का व्रत लिया गया।

निवेदक—रोशन लाल शर्मा
संयोजक आर्य युवक सभा, पजाब

आर्य युवक सभा लुधियाना द्वारा २८-४-८५ को पारिवारिक सत्सग सम्पन्न हुआ इसमें प्रवचन एवं वैदिक साहित्य भेंट किया और युवकों को समाज सेवा में सक्रिय भाग लेने की प्रेरणा दी।

निवेदक
अवध भारद्वाज महामंत्री

वेदोपदेशक विद्यालय का उद्घाटन

ब्रह्मकुटी वेद मन्दिर ब्रजघाट मे वेदोपदेश विद्यालय का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी द्वारा ३० मार्च १९८५ रामनवमी को किया गया। इस अवसर पर स्थानीय सन्तो तथा विद्वानो के अतिरिक्त डा० सत्यप्रिय जी शास्त्री सस्कृत सस्कृत विभागाध्यक्ष, जगदीश शरण हिंदू डिग्री कालेज अमरोहा तथा वैदिक गुरुकुल पद्धति के प्रबल समर्थक स्वामी व्रतानन्द जी महाराज उपस्थित थे।

सभी विद्वानो ने वर्तमान की विषम परिस्थितियो मे वेद प्रचार की आवश्यकता पर बल दिया यह निश्चय किया गया कि १ जुलाई सन् १९८५ से विधिवत विद्यालय प्रारम्भ किया जाये।

प्रवेश सूचना

ब्रह्म कुटी वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट में १ जुलाई सन् १९८५ से प्रारम्भ किया जा रहा है। कम से कम १०वी पास हिन्दी का ज्ञान हो। सौम्य, शिष्ट, अनुशासनप्रिय तथा आजीवन वैदिक धर्म प्रचार के इच्छुक शीघ्र पत्र व्यवहार करें।
पत्र व्यवहार का पता
आचार्य
ब्रह्मकुटी वेद मन्दिर, ब्रजघाट
जि० गाजियाबाद (उ० प्र०)
पि २४५२०५

प्रोफेसर रामसिंह जी की स्मृति में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन

आर्यसमाज मन्दिर मयाराम दिल्ली में १२ मई को स्वामी विद्यानन्द जी की अध्यक्षता मे राष्ट्ररक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया।

इस अवसर पर श्रीमती राकेश रानी, श्री बनारसी सिंह पत्रकार तथा दयालसिंह बेदी पूर्व पार्षद नगर निगम ने अपने ओजस्वी विचार प्रकट किये। यह आयोजन प्रधान श्री ओमप्रकाश जी कपडे वाले के द्वारा किया गया। निवेदक
शिवकुमार

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी को श्रद्धांजलि

ज्ञानपुर (वाराणसी) विश्व भारती अनुसन्धान परिषद् में एक शोकसभा का आयोजन किया गया जिसमे वयोवृद्ध पत्रकार श्री बनारसी दास चतुर्वेदी के निधन पर शोक प्रकट करते हुए गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) के कुलपति एव सस्था के निदेशक डा० कपिलदेव द्विवेदी ने कहा कि श्री चतुर्वेदी जी ने जो देशसेवा, क्रांतिकारियो का आश्रयदान साहित्य साधना एव पत्रकारिता का जो आदर्श प्रस्तुत किया वह सदा अनुकरणीय रहेगा।

डा० द्विवेदी ने कहा कि उनकी पवित्रता और आदर्शपरता जन जन को सदा प्रेरणा देती रहेगी।

डा० विभु मिश्र डा० भारतेन्दु एव अन्य कई व्यक्तियो ने उन्हे श्रद्धाजलि अर्पित की। अन्त मे दिवगत महान् आत्मा की शान्ति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया।

धर्मेन्द्र आर्य प्रचार मन्त्री
विश्वभारत अनुसधान परिषद
ज्ञानपुर (वाराणसी)

लोकनायक श्रीकृष्ण पर सचित्र ट्रैक्ट

दिल्ली ४ मई (शनिवार) महान राजनीतिज्ञ कर्मयोगी तथा गीता के उपदेष्टा श्री कृष्ण के प्रेरक प्रसगो पर १६ पृष्ठीय सचित्र ट्रैक्ट प्रकाशन का निश्चय लाला रामचन्द अनाजवाले धर्मार्थ ट्रस्ट नया बाजार ने किया है। ट्रस्ट के अध्यक्ष व आर्य नेता श्री प्रमचन्द गोयल ने बताया, सच्ची तथा ऐतिहासिक घटनाओ पर आधारित इस ट्रैक्ट मे व युग पुरुष और लोकनायक होगे। जन्म से मृत्यु पर्यन्त सकलित जीवन झाकियो मे उनको कुशल सगठक युवा नेता क्रांतिकारी सुधारक आदर्श मित्र एक पत्नीव्रत कूटनीतिज्ञ तथा वैदिक सस्कृति का मार्गदर्शक दर्शाया है।

लघु परन्तु प्रभावशाली चित्र पुस्तिका के लेखक एव रचनाकार श्री चन्द्रमोहन आर्य के अनुसार युवा वर्ष के उपलक्ष्य मे देशभर के युवक युवतियो के लिए यह प्रेरणाप्रद होगी। युवा पत्रकार तथा वीर अर्जुन (दैनिक सान्ध्य) के प्रधान सम्पादक श्री अनिल नरेन्द्र शीघ्र ही इसे हजारों की मात्रा मे प्रकाशित कर भावी पीढी को समर्पित करेंगे।

चन्द्रमोहन आर्य
प्रैस सचिव केन्द्रीय आर्य युवक परिषद

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय का कुलपति कौन हो ?

—प्रो० सत्यवीर विद्यालकार

रोहतक १८ अप्रैल (केदारसिंह आर्य) समाचार पत्रो मे प्रतिदिन महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के नए कुलपति के सम्बन्ध मे कई नामों की चर्चा चल रही है। हरयाणा सरकार को हमारा यह सुझाव है कि इस विश्वविद्यालय का कुलपति किसी ऐसे शिक्षा शास्त्री को नियुक्त किया जाये जो कि महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो का ज्ञाता हो जिसमे कि विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य पूर्ण हो सके।

गुरु नानक विश्वविद्यालय अमृतसर का कुलपति गुरुनानक के सिद्धातो का ... तथा अलीगढ़ विश्वविद्यालय का कुलपति इस्लाम के सिद्धान्तो का ज्ञाता बनाया जाता ... विश्वविद्यालय मे भी यह परम्परा ... करना चाहिए।

... प्रतिनिधि सभा हरयाणा ... के ... हरयाणा के ...

...

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वर्ष ९ अंक २७ रविवार, २६ मई, १९८५ आर्य संवत्सर १९६०८५३०८५ ज्येष्ठ २०४२ दयानन्दाब्द—१६१

पंजाब के हिन्दू नेता प्रधानमंत्री श्री गांधी से मिले

श्री शालवाले ने पंजाब की स्थिति पर ज्ञापन प्रस्तुत किया

पंजाब के हिन्दू नेताओं ने आज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से भेंट की और उन्हें पंजाब की परिस्थितियों के संदर्भ में एक ज्ञापन दिया। प्रधान मन्त्री जी ने शिष्टमण्डल के साथ अपनी लम्बी बातचीत में आश्वासन दिया कि पंजाब में समस्या के समाधान में पंजाब के अल्पसंख्यकों के हितों और देश के बहुमत की भावनाओं का पूरा आदर और सम्मान किया जायेगा। उन्होंने यह भी प्रकट किया कि पंजाब में उग्रवादियों के साथ थोड़े से लोग हैं सभी सिक्ख उनके साथ नहीं है।

शिष्टमण्डल ने निम्न ज्ञापन प्रधानमन्त्री जी को प्रस्तुत किया—

१. पंजाब के अकाली नेताओं की रिहाई सिक्ख छात्र फैडरेशन से पाबन्दी हटाने की घोषणा दिल्ली में हुई हिंसक घटनाओं की जांच के आदेश के उपरान्त उग्रवादियों के हौंसले काफी बढ़ हैं। उन्होंने इसे अपनी विजय समझा है जिससे वातावरण खराब हो गया है।

२ श्री अर्जुनसिंह को पंजाब भेजने के उपरान्त उनकी राय के अनुसार जो कुछ हुआ, वह केवल उग्रवादियों और अकालियों को खुश करने मात्र रहा। जिसका परिणाम अन्य समुदायों के लिए हानिकारक सिद्ध हुआ।

३. दिल्ली में हाल ही में उग्रवादियों ने जो हिंसात्मक विस्फोट किए हैं, इसके पीछे किसी विदेशी शक्ति का हाथ हो सकता है। इसके लिए सरकार को विशेष नीति निर्धारित करनी चाहिए।

४ पंजाब में पुलिस तथा प्रशासन में सिक्खों का बहुमत है, इसलिए वहां के हिन्दुओं के साथ कोई न्याय नहीं हो सकता है। इसलिए पंजाब के अन्य समुदाय के लोगों को भी प्रशासन तथा पुलिस में पूरा प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए।

५ लौंगोवाल सहित सभी अकाली नेता प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या की निन्दा करने को भी तैयार नहीं हैं अपितु लोंगोवाल ने सतवन्तसिंह और बेअन्तसिंह के घर आकर उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए शहीदों की संज्ञा दी है।

६ भूतपूर्व विदेश मन्त्री सरदार स्वर्णसिंह ने लन्दन से प्रकाशित एक वक्तव्य में साफ कहा है कि भिंडरावाला बुरा आदमी नहीं था। उसने ५ व्यक्ति मरवाए तो पुलिस ने ९५ मार दिये। उनका यह कहना है कि आनंदपुर प्रस्ताव पृथकतावादी नहीं है तथा प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति में गहरे मतभेद हैं जो राष्ट्र के लिए घातक हैं।

७ चण्डीगढ़ फाजिल्का और अबोहर के विषय में वहां की जनता की राय लेकर निर्णय किया जाये। अकालियों का निर्णय वहां की जनता पर न थोपा जाये।

८ उग्रवादियों के विरुद्ध सख्ती से निपटने के लिए सरकार कोई ठोस कानून बनाये ताकि देश के जन-जीवन और सम्पत्ति की रक्षा हो सके।

९ यदि सरकार ने कमजोर नीति अपनाकर अकालियों को प्रसन्न करने की नीति का परित्याग न किया तो देश का बहुमत सरकार को समर्थन न देगा बल्कि खुलकर विरोध करेगा।

१० वर्तमान नीति में परिवर्तन करके पंजाब के राज्यपाल श्री अर्जुन सिंह के स्थान पर किसी योग्य व्यक्ति को आसीन किया जावे।

११ पंजाब के मामले में जो भी बातचीत हो, उसमें पंजाब के सभी धार्मिक व राजनीतिक समुदायों व संस्थाओं के प्रतिनिधियों को भी सम्मिलित किया जावे।

शिष्टमण्डल के सदस्यों के नाम—

१ श्री रामगोपाल शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

२ श्री गोपीचंद भाटिया, प्रधान दुर्ग्याना मन्दिर, अमृतसर

३ श्री रामलुभाया प्रभाकर, मन्त्री दुर्ग्याना मन्दिर, अमृतसर

४. श्री जगदीश तागड़ी, प्रधान हिन्दू शिवसेना पंजाब

५. श्री सत्यानन्द मुंजाल, उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, लुधियाना

६. श्री किशन कुमार, आर्यसमाज भटिण्डा

७ श्री प्रकाशचन्द्र मेहरा, प्रधान शास्त्री मार्किट अमृतसर

८ श्री भोलानाथ विलावरी, आर्यसमाज शक्तिनगर अमृतसर

९ श्री नन्दकिशोर, मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा अमृतसर

१० श्री एस० के० सभ्रवाल एडवोकेट, जालन्धर

११ श्री तुलसीदास जेठवानी, प्रधान व्यापार मण्डल, लुधियाना

(शेष पृष्ठ १२ पर)

पंजाब के आर्य नेता की दुःखद मृत्यु : शोक संवेदना

आर्यसमाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर के पूर्व प्रधान तेजस्वी आर्य नेता श्री ओमप्रकाश वैद की आकस्मिक मृत्यु पर आर्यसमाज दीवान हाल में यह महती सभा गहरा दुःख और शोक व्यक्त करती है।

श्री ओमप्रकाश जी पंजाब के उन वीर सपूतों में से थे जो बड़े विद्वान् और देश तथा समाज के लिए बड़ा से बड़ा बलिदान करने के लिए तैयार रहा करते थे।

यह सभा पंजाब सरकार से उन की संदिग्ध मृत्यु की अदालती जांच करने की मांग करती है। यह सभा अनुभव करती है कि ओमप्रकाश वैद के दिवंगत होने से जो स्थान खाली हो गया है उसका भरना नितांत असम्भव है।

यह सभा परम-पिता परमात्मा से उनकी आत्मा को शांति तथा दुःखी पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करती है।

मन्त्री
मूलचन्द गुप्त

सत्संग वाटिका

मृत्यु एक मधुर कविता है

सुरेशचन्द्र वेदालकार

विधु दद्राणं समने बहूना, युवान सन्त पलितो जगार ।
देवस्य पश्य काव्य महित्वा, अद्या ममार स ह्य समान ॥
ऋ० १०।५५।५

(समने) बाह्य तथा आन्तरिक सग्राम मे (बहूना दद्राण) बहुतो को भगान वाल (विधुम्) विविध कर्म कुशलतापूर्वक करने वाले (युवानम्) शुभ कर्मों से मेल करने वाल तथा अशुभ कर्मों का त्याग करने वाल को भी (पलित जगार) सब का पालन करन वाला वृद्धकाल अपन गाल मे रख लता ह। (देवस्य) दिव्य चमत्कारी प्रभु क (काव्यम्) इस काव्य का (पश्य) देख, समझ और स ल कर अपन जीवन व्यवहार को बदल । जो व्यक्ति (महित्वा ह्य समान) कल महत्वपूर्ण स्थिति के कारण बडी अकड स जा रहा था, सम्मान प्राप्त कर रहा था (स) वह (अद्या) आज (ममार) मरा पडा ह।

मृत्यु क विषय में अनक विद्वानो न अनेक बातें कही हैं। परन्तु मृत्यु जैसा सार्वभौमिक वस्तु का विश्वात्मा न सभी मनुष्यो के लिए बनाया है—यह निश्चित है। क्या यह मृत्यु मनुष्य के लिए अभिशाप है ? विचार कीजिए तो लगेगा कि यह प्राणी-मात्र के लिए वरदान है, अभिशाप नही।

मृत्यु म एक आनन्द है, परन्तु मनुष्य का इस आनन्द से इसलिए अनभिज्ञ रखा गया है, ताकि वह जीवन का कठिनाइयो को सह सके।

वैदिक सस्कृति मे मृत्यु की भीषणता नही है। मृत्यु तो मानो जीवन वृक्ष मे लगा हुआ सुन्दर फल है। जीवन और मृत्यु दोनो ही अत्यन्त मगल कारक और प्रेरणादायक भाव हैं। रात्रि स ही तो अरुणोदय होता है और अरुणोदय म ही रात्रि छिपी होती है। जीवन मृत्यु रूपी रात्रि का अरुणोदय है।

प्रश्न कभी-कभी मन मे उठता है, यह मृत्यु क्या है ? हम मृत्यु को जानते नही हैं, क्योकि हम मरे नही है ! जो मर चुका है। वह मृत्यु का स्वरूप बतलाने आएगा नही। हा यह मृत्यु प्रत्येक के पास आएगी। आज जिसका जन्म हुआ है, कल वह अवश्य मरेगा। परन्तु कोई नही बताता कि मृत्यु क्या है ?

वैदिक विचारधारा क अनुसार मृत्यु का अस्तित्व है ही नही। मृत्यु क वास्तविक स्वरूप को समझ लेन स यह मिट जाती है। वास्तविक स्वरूप को समझने के लिए हमे यह ध्यान रखना है, कि आत्मा और शरीर दो वस्तुए है। इनमे स शरीर की मृत्यु होती है—आत्मा की नही। वास्तव मे मृत्यु एक निद्रा है हम प्रति दिन सोते हैं रोज रोज सोना छोटी छोटी मृत्यु हैं। डा० सत्यव्रत जी सिद्धातालकार लिखते हैं 'शरीर जब थक जाता है, तब आत्मा हमे सुला देती है ताकि इसमे शक्ति का सचार हो जाय। बैटरी-चार्ज हो जाय। बैटरी जब बिल्कुल काम लायक नही रहती तब आत्मा इसे छोड देती है और वह कारखाने के लिए दूसरी बैटरी ले लेता है।'

कठोपनिषद् मे नचिकेता ने यमराज से पूछा गुरुदेव ! जब आदमी मर जाता है तब कई कहते हैं, यह मर गया और कई कहते हैं, यह नही मरा। तुम तो साक्षात् मृत्यु रूप हो अत तुम बतलाओ कि तुम हो क्या ?

यमराज बोला ससार मे दो तरह के मनुष्य हैं। एक वे जो शरीर को आत्मा मानते हैं और दूसरे वे जो शरीर को आत्मा नही मानते। शरीर को आत्मा मानने वाले सासारिक भोग-विलासो मे लिप्त रहते हैं। वे 'प्रेय मार्ग के पथिक बन जाते हैं। परन्तु शरीर को आत्मा न मानने वाले, वे नित्य की तलाश करते हैं, दुनिया की टीप टाप से उनकी तृप्ति नही, होती, भौतिक भोग-विलासो से उनका जी नही भरता। इनका मार्ग 'श्रेय का होता है। याद रखो, मृत्यु का अर्थ है निर्वाण अर्थात् अनन्त जीवन प्राप्त कर लेना। अपने वैयक्तिक क्षुद्र स्वार्थ, अपनी आसक्ति को भूलना ही सच्ची मृत्यु है। इसलिए सन्त तुकाराम कहा करते थे –

अपनी आखो ही मैंने तो अपनी मृत्यु देख ली है।

अनुपम था मेरा सुख सुहाग।

जो एक बार इस मृत्यु का अनुभव कर लेते हैं उनकी मृत्यु नही होती मृत्यु मानो मा का ममतामय हाथ जो प्रेय मार्ग मे सन जीवन को धोकर स्वच्छ कर दे—

धूलि धूसरित है यह तन मन
निज अमृत कर से धो दे भगवन्।

सुला मुझ चरणो म निशदिन
भगवन् किसे कहू ? अब क्या कहू ?

मनुष्य से आसक्तिमय पसारा छूटता नही। लेकिन ईश्वर मृत्यु के द्वारा उसे उठा देता है। सचमुच मेरा यह मालिन्य, मा ! तेरे बिना कौन धो सकता है ?

अत वैदिक विचारधारा कहती है 'प्राणो वै मृत्यु' मृत्यु प्राण है। मृत्यु का दश काटकर वैदिक विचारधारा ने उसे सुन्दर और मधुर बना दिया है। मृत्यु मानो खेल है। मृत्यु मानो आनन्द है। मृत्यु मानो काव्य है। मृत्यु मानो पुराने वस्त्र बदलना है। जिन्होंने मृत्यु के इस काव्य को समझा है। उन्हें मृत्यु से भय नही लगता। उन्हे मृत्यु मे भी काव्य का सा रस मिलता है।

भगतसिह (१९०७-१९३१) को जब फासी पर चढाने क लिए ल जाया जा रहा था तो उसका चेहरा उज्ज्वल हो उठा उसका वजन बढ गया और 'भारत माता की जय, 'इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा लगाता हुआ फासी पर चढ गया।

रोशनलाल को इलाहाबाद जेल मे फासी होने वाली थी। पहले दिन अग्रेज सुपरिण्टेण्डेंट न कसरत करते देख उससे पूछा कि कल तो तुम्हे फासी होगी, आज क्यो कसरत कर रहे हो ? वह बोला वैदिक धर्म मे मरते समय जो भाव होता है उन्ही के अनुसार दूसरा जन्म होता है। मैं शक्ति प्राप्त करने का विचार लेकर मरूगा तो अगले जन्म मे ब्रिटिश राज्य को उखाड फेकने मे अधिक शक्ति ग्रहण करूगा।

रामप्रसाद बिस्मिल को जब गोरखपुर मे फांसी दी गई तो 'विश्वानि देव' मन्त्रो का पाठ करते हुए उसने फासी की रस्सी को हर्ष से चूम लिया।

१९५७ ई० मे जब अकबर की सेना से युद्ध के समय जयमल और फत्ता ने और उनके वीर सैनिकों ने केसरिया बाना पहनकर अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए बलिदान दिया और स्त्रियो ने जौहर व्रत धारण किया। तब क्या वह अभिशाप था ?

ऋषि दयानन्द (१८२४-१८८३) को विष दिया गया था। विष से रोम-रोम मे आग लगी थी परन्तु मृत्यु के समय चेहरे की कान्ति को देखकर नास्तिक गुरुदत्त (१८६४-१८९०) आस्तिक बन गया।

चादनी चौक मे अग्रेजों की सेना के सामने जब एक निहत्था सन्यासी अपनी छाती खोल कर गोलियो का मुकाबला करने खडा हो गया तो बन्दूके झुक गईं। क्या यह मृत्यु का आनन्द नही ?

इग्लैंड में लैटीमर (१४८५-१५५५) में एक पादरी था। उसके हाथों मे रुई लपेटकर, उसकी मशाल बनाकर उसे आग लगा दी गई। वह यह [illegible] मरा कि उसकी मृत्यु की मशाल सभी दुनिया में अज्ञान के अन्धकार को दूर करेगी।

ब्रूनो (१५४८-१६००) कहता था कि सूर्य पृथ्वी के गिर्द नही घूम रहा, पृथ्वी उसके चारो ओर प्रदक्षिणा कर रही है। उसके विरोधियो ने उस आग मे जला दिया—पर उसने अपना सिद्धात नही छोडा। यह मृत्यु थी या अमरता ?

सुकरात मरते समय अमृतत्व का स्वाद ले रहा था। मरते समय बेटे से कहा 'अधिक प्रकाश, अधिक प्रकाश'। तुकाराम महाराज 'राम, कृष्ण हरि गाते गाते हसते-हसते चल दिए। समर्थ ने कहा 'क्यो रोते हो ? मेरा 'दास बोध' तो है। लोकमान्य यदा यदा हि धर्मस्य' वाला श्लोक बोलते बोलते चल गये। गांधी जी दोनो हाथ जोडे हुए 'हे राम' कहकर ससार से विदा हुए।

इसलिए मृत्यु कविता है। मृत्यु रस है। मृत्यु प्राण है मृत्यु नवजीवन का आरभ है, मृत्यु आनन्द का दर्शन है। मृत्यु मानो परमात्मा जीवात्मा के मिलन का सगीत है। मरकर अपने प्रियतम के पास जाना है। किसी ने कहा है —

करले शृगार चतुर अलबेली !
साजन के घर जाना होगा ॥
माटी ओढावन, माटी बिछावन।
माटी मे मिल जाना होगा ॥
नहा ल, धो ल, सीस गुथा ले।
फिर वहा से नही आना होगा ॥

निर्वाचन

आर्य महिला मडल करौलबाग क्षेत्र का निर्वाचन श्रीमति सुशीला जी आनन्द की अध्यक्षता मे हुआ।

निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुईं।

श्रीमती सुशीला महता प्रधाना
" डा० चन्द्रप्रभा उपप्रधाना
श्रीमती कृष्ण रसवन्त मन्त्रिणी
" प्रकाश बुग्गा उपमन्त्रिणी
श्रीमती सावित्री कपूर कोषाध्यक्ष

मन्त्रि
कृष्ण रसवन्त

शोक सभा

आर्यसमाज रमेशनगर के वरिष्ठ उपप्रधान श्री बोधराज जी कोछड का ५ मई को निधन हो गया। उनकी स्मृति में एक श्रद्धाञ्जलि सभा बी/१२ रमेशनगर मे सम्पन्न हुई। श्री बोधराज कर्मठ समाज सेवी तथा दानवीर थे। उनका स्वभाव सरल एव मधुर था। इस अवसर पर उनके परिवार की ओर से आर्यसमाज रमेशनगर को ३१२५ रुपये का एक एम्प्लीफायर तथा आर्यसमाज शास्त्रापुरी को एक सिलाई मशीन दी। आर्य प्रतिनिधि सभा को भी १०० रुपये दान स्वरूप दिए।

हम दिवंगत आत्मा के प्रति प्रभु से सद्गति एवं शान्ति की प्रार्थना करते हैं।

निवेदक—[illegible]

सिखों के अपमान का कारण अकाली दल

सरदार सत्येन्द्रपाल सिंह

पंजाब के अकाली नेता और लन्दन में रह रहे बड़बोले अखबारी शेर जगजीत सिंह चौहान तो सालों से कहते चले आ रहे थे कि भारत में सिख द्वितीय श्रेणी के नागरिक की हैसियत रखते हैं, किन्तु अब खुशवन्तसिंह जैसे पत्रकार और महीपसिंह जैसे बुद्धिजीवी भी यह प्रश्न कर रहे हैं कि भारत में सिख आत्मसम्मान से कैसे रहें। पर क्या सचमुच सिखों के साथ भेदभाव बरता जा रहा है।

अकाली दल ने मुस्लिम लीग की तरह हमेशा ही धर्म का राजनीतिक पैंतरे के रूप में इस्तेमाल किया है और वह भी पंजाब के राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में। पंजाब के बाहर अकालियों ने न तो कभी झांका, न ही कहीं उनकी जड़ें रही हैं। इसके बावजूद ऐसे अवसर बहुत कम आये, जब वे पंजाब में सत्ता में रह रहे हों। पंजाब में गाँवों का खेतिहर जाट तबका ही अकाली दल से जुड़ा रहा है और दल की बागडोर भी सम्पन्न जाट भूपतियों के हाथ में रही है। शहरी पढ़े-लिखे, गैर जाट सिखों का सहानुभूति अकाली दल नहीं प्राप्त कर सका। पंजाब के बाहर विभिन्न प्रान्तों में बसने वाले सिख आमतौर पर कांग्रेस के समर्थक रहे हैं। शायद यही वजह है कि हरियाणा, हिमाचल के अलावा उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल तक को विधानसभाओं में कांग्रेस टिकट पर चुने गये सिख विधायक दिखाई पड़ जाते हैं। आज भी कई प्रान्तों में सिख मंत्री हैं।

इससे साफ तौर पर जो चीज उभर कर सामने आती है, वह यह है कि अकाली दल कभी सिखों का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था नहीं रही। खासकर पंजाब के बाहर के सिखों ने तो इसे कभी गम्भीरता से नहीं लिया।

स्वर्ण मन्दिर में आपरेशन ब्लू स्टार के पहले तक अकाली नेता साफ तौर पर कहते थे कि वे पंजाब के हकों की लड़ाई लड़ रहे हैं। हाँ पर्दे के पीछे सिख राज्य का मिथक जरूर तैयार किया गया था। पर स्वर्ण मंदिर में सेना के प्रवेश के बाद से अकालियों को यह कहने का सुनहरा अवसर मिल गया कि सिख कौम पर हमला किया गया है, सिख भारत में असुरक्षित हैं, आदि-आदि। एक भावनात्मक उद्वेग सा उठा और वह सिख भी अकालियों की बातों की सचाई को परखने लगा, जिसने अपनी सारी जिन्दगी में कभी स्वर्ण मन्दिर के दर्शन तक नहीं किये। पंजाब का माहौल काफी हद तक अकालियों के पक्ष में हो गया। पंजाब के बाहर भी सिखों में सुगबुगाहट थी। श्रीमती गाँधी की नृशंस हत्या के पश्चात् स्थिति में और फर्क आया।

इस सम्बन्ध में महीपसिंह से एक सवाल पूछा जा सकता है कि मेरे जैसा सिख, जो उत्तर प्रदेश में पैदा हुआ, पढ़ा-लिखा, बड़ा हुआ और जो किसी भी उत्तर प्रदेशवासी से अधिक अच्छी अवधी बोल सकता है, तथा कभी भी पंजाब के किसी भी शहर, कस्बे, गाँव में गया तक नहीं, वह कैसे मान ले कि पंजाब की जमीन पर उसके हित फलफूल रहे हैं? सवाल यह भी है कि जिस धर्म के नाम पर अकाली पंजाब को बन्दूक की नोक पर [illegible] बनाए हुए हैं, वह पंजाब में किस दौर से गुजर रहा है? पंजाब के सिखों में बाल कटाने, नशा करने, गुरुद्वारे न जाने, यहाँ तक कि पंजाब से पलायन कर अन्य प्रदेशों व विदेशों में बसने की प्रवृत्तियाँ तेजी से बढ़ती जा रही हैं। पंजाब में ऐसे सिखों की कमी नहीं जो न तो अपने इतिहास व गुरुओं की शिक्षाओं के बारे में जानते हैं, और न अपनी भाषा लिख-पढ़ सकते हैं। पंजाब के बाहर रहने वाले सिख अकालियों को किस आधार पर समर्थन दें? सिवाय पंजाब आने का आमन्त्रण देने के और क्या कर सकते हैं—पंजाब से बाहर के सिखों का। फिर यदि कभी असम्भव बात सिख राज्य के रूप में सम्भव हो भी गई तो क्या गारन्टी कि पंजाब जाने वाले सिखों का वही हश्र नहीं होगा, जो पाकिस्तान जाने वाले मुसलमानों का हुआ है?

इस बात की वास्तविकता की जांच करना भी जरूर हो गया है कि क्या भारत में सिखों के साथ भेदभाव बरता जाता रहा है। इस देश में सिखों को एक महान् देशभक्त कौम का दर्जा दिया गया था और हर जगह उन्हें सम्मान की निगाह से देखा जाता था। पंजाब के बाहर सिख जहाँ भी जाकर बसे, वहाँ के स्थानीय समाज ने उन्हें हृदयगम कर लिया। इसी वजह से उनके उद्योग और व्यापार भी चल निकले तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी मिली। लोग एक दूसरे के सुख-दुख, अवसरों-त्योहारों में शरीक होने लगे। यदि इन सब बातों को एक तरफ रख दिया जाये तो भी महीपसिंह, स्वामी विवेकानन्द, डा० राधाकृष्णन, हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे अनेक विद्वानों, दार्शनिकों की कही व लिखी बातों को कैसे झुठला सकते हैं, जिनमें सिखों की सच्ची प्रशंसा के झरने फूट पड़ते हैं। स्वयं महीपसिंह ही सोचें कि हिन्दी कथाकार के रूप में उन्हें इतनी प्रतिष्ठा क्या अनायास ही मिल गई।

सिखों की वैयक्तिक व सामाजिक प्रतिष्ठा व मान्यता का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि नियमों व कानूनों का सख्ती से पालन कराने हेतु प्रदेश सरकारें सिख आई ए एस व आई पी एस अधिकारियों को अपने यहाँ बुलाने हेतु लालायित रहती हैं। मुझे याद आ रहा है कि अमेठी में जब पहली बार राजीव गांधी संसदीय उपचुनाव लड़ने आए तो उनके साथ पुलिस के अंगरक्षकों के बजाय पाँच-छह हट्टे-कट्टे सिख, जिनमें कुछ रिटायर्ड फौजी भी थे, साए की तरह लगे हुए थे। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि उन लोगों ने १९७७ में सत्ता से हटने के बाद श्रीमती गांधी को अपनी निःशुल्क स्वैच्छिक सेवाएँ अर्पित की थीं, तथा १९८० तक उनके साथ रहे। अब जब राजीव गांधी राजनीति में आए तो उन्होंने हमें ही साथ रखना पसन्द किया।

राजनीतिक तौर पर भी सिखों को सदैव महत्त्व दिया जाता रहा है। सरदार बलदेव सिंह, सरदार मजीठिया, हुकुमसिंह, उज्ज्वलसिंह, स्वर्णसिंह, गुरुदयाल सिंह ढिल्लों से लेकर ज्ञानी जैलसिंह तक अनेक नाम गिनाए जा सकते हैं। विभिन्न प्रदेशों में भी राज्य स्तर पर अनेक सिख राजनीतिक रूप से सक्रिय व पदासीन हैं। यदि इसे ही सिखों के साथ राजनीतिक स्तर पर अन्याय माना जा सकता है कि अकाली दल कभी उभर कर सामने न आ सका, तो निश्चय ही हमें चुप रहना होगा।

यदि अमृतसर हरमन्दिर साहब में सेना की कार्यवाई को ही सम्पूर्ण सिख कौम का अपमान करने व चुनौती देने वाली घटना मान लिया जाए तो जो अपमान, जो शर्म, आज देश के कोने-कोने में बैठा सिख महसूस कर रहा है, उसके लिए जिम्मेदार कौन है? वह अकालियों और उनकी गलत नीतियों को क्यों न कोसे? वह सिखों की सामाजिक, राजनीतिक व वैयक्तिक स्थिति के इस अवमूल्यन के लिए जिम्मेदार है।

इसी आधार पर आज बहुतेरे सिख आनन्दपुर साहब प्रस्ताव को मूल रूप से अस्वीकार करने में तनिक भी हिचकिचाहट क्यों दिखाएँ, जिसकी शुरुआत ही इस फतवे से होती है कि अकाली दल सिखों की सर्वोच्च प्रतिनिधि संस्था है।

महीपसिंह जैसे बुद्धिजीवियों से मेरा अनुरोध है कि पंजाब समस्या को पंजाब समस्या ही रहने दें, सिख समस्या में न बदलें। पंजाब समस्या भी पंजाब समस्या नहीं, अकाली समस्या है। आन्दोलन अकालियों का, मांगें अकाली राजनीति के अनुरूप, कभी नर्म, कभी गर्म उपलब्धि अनुपलब्धि अकालियों की, संघर्ष सत्ता का। आम सिख को चाहे वह पंजाब में हो या पंजाब से बाहर, इन सब बातों से कोई सरोकार नहीं है।

अकाली नेता आम सिखों के हितों के रक्षक तो कभी भी नहीं रहे, इतना अवश्य हुआ कि वे सिख कौम के अपमान के कारण बन गए। किन्तु धर्म के नाम पर खोली गई उनकी राजनीति की दुकान अधिक दिन तक चलने वाली नहीं।

(नवभारत टाइम्स से साभार)

भारतीय समाज के जागरण में आर्यसमाज का योगदान

महावीर 'नीर' विद्यालकार

उन्नीसवी शती मे महर्षि दयानन्द विरक्त साधु वेश मे समस्त भारत का पैदल भ्रमण कर रहे थे। ब्रह्मचय और तपश्चर्या से उनका शरीर व आत्मा प्रदीप्त था। भारत के सभी वर्गों की दशा को उनकी सूक्ष्म दृष्टि देख रही थी। वेद शुद्ध वैदिक धम के स्थान पर बौद्ध और जैन सम्प्रदायो के अपूण अहिंसावाद तथा नवीन वेदान्त के अकमण्यवाद के गत मे गिरा पडा था। वाममाग का नग्न ताण्डव हो रहा था। समस्त समाज नानाविध कुरीतियो व रूढियो मे फसा पडा था। स्त्री शूद्रो व पशुओ के साथ घोर उपेक्षा बरती जा रही थी। भारत का आर्थिक ढाचा विदेशी कूटनीति के कारण लडखडा रहा था। राजनैतिक दृष्टि से अग्रज सारे भारत पर छाये हुए थे। ऐसी विषम परिस्थितियो मे भी कुछ देशभक्त व महत्त्वाकाक्षी लोगो के हृदयो मे देश-प्रेम की अग्नि ज्वाला धधक रही थी। प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध के महान् नेताओ मे वीर तात्या टोपे, नाना साहब अजीम उल्ला खाँ आदि के साथ ऋषि दयानन्द भी स्वतन्त्रता युद्ध की तैयारी मे जुट गये। ऋषि ने हरिद्वार कुम्भ मेले पर ही देश की अज्ञानता और गिरावट का दृश्य खूब देखा था। अत सवस्वत्याग भारत राष्ट्र के जागरण का स्वप्न सजोकर विरक्त साधुओ की टोली बनाकर हाथो म कमल फूल और रोटी का टुकडा लेकर कश्मीर से कन्याकुमारी तक भ्रमण करते हुए स्वतन्त्रता युद्ध का सन्देश पहुचाते रहे। जनता और सेना के वीरो ने मेरठ छावनी से स्वतन्त्रता के झण्डे को हाथ मे लेकर युद्ध आरम्भ किया किन्तु विद्रोहियो की राजनैतिक भूल के कारण स्वतन्त्रता का प्रथम प्रयास विफल हो गया। तब ऋषि ने नाना साहब तथा अजीम उल्ला खा को सौराष्ट्र चले जाने की सलाह दी और अपना माग बदल कर दूसरा ही काय आरम्भ किया। सन् ५७ की क्रान्ति की असफलता का मुख्य कारण —एक विचारधारा, एक जाति एक सगठन, एक भाषा, एक राष्ट्र का अभाव एव समाज मे फैली विविध कुरीतियो और कुप्रथाओं का प्रभाव था।

अब महर्षि स्वतन्त्रता के प्रेमी आर्ष ग्रन्थो के प्रकाण्ड विद्वान दण्डी स्वामी विरजानन्द क सेवा मे पहुचे। वहा उन्होने वहा आर्ष ग्रन्थो एव व्याकरण का अध्ययन किया वहा भारत की दासता की बेडियों को काटने पर भी चिन्तन व मनन किया। तदनन्तर गुरु से विदाई लेकर ऋषि दयानन्द आन्तरिक व बाह्य तैयारी के साथ भारतीय समाज मे व्याप्त परतन्त्रता के मूल कारणो धर्मान्धता, कायरता अन्धविश्वास एव एकता आदि कुरीतियो का दूर करने का दृढ सकल्प लेकर प्रचार क्षेत्र मे उतर पडे। उन्होने आर्यावत मे फैले सब प्रकार के दुर्गुणो की जाच कर स्थिर और सामयिक उपाय प्रारम्भ किये। स्थान स्थान पर व्याख्यान दिए। सम्प्रदायी मतमतान्तरो से शास्त्राथ किए। वेद और सस्कृत अध्ययन पर बल दिया। राजा रजवाडो व विचारशील विद्वानों एव साधारण जनता को जागृत करने के लिए सत्यार्थप्रकाश ऋग्वेद-भाष्यभूमिका सस्कारविधि गोकरुणा-निधि आर्याभिविनय आर्योद्देश्यरत्न-माला व्यवहारभानु आदि ग्रथ आर्य भाषा (हिन्दी) मे लिखे। जनता तथा राजा रजवाडो से सीधा सम्पक स्थापित किया। राजनैतिक व आर्थिक सुधार के लिए श्याम जी कृष्ण वर्मा को विदेश भेजा। जितनी और जिस प्रकार की भी कुरीतिया बुराइया थी सब पर निभय होकर तक की कठोर कुठार चलाई। और—

अपने द्वारा चालू किये कायक्रमो को आगे बढाने के लिए बम्बई मे आयसमाज रूपी सस्था की नीव डाली। जनता मे जागरण हुआ मतव दी व विरोधी भडके। अनेक बार अनेक उपायो से ऋषि के प्राण हरने की ठानी। अन्त मे इन्ही सुधार कार्यों के कारण दुष्टो ने विष के द्वारा उनके प्राण हर लिये।

ऋषि के निर्वाण के पश्चात् आयसमाज एक बार विमूढ व हतप्रभ सा रह गया। किन्तु कुछ उत्साही व दृढ आय नेताओ ने ऋषि द्वारा प्रतिपादित कायक्रम को आगे बढाया। वेद का अध्ययन आर्ष शिक्षा एव सस्कृत का प्रचार होने लगा। राष्ट्र की एकमात्र भाषा 'आयभाषा हिन्दी तथा देवनागरी लिपि की जड जम गयी। अनेक पाठशालाओ, कालेजो गुरुकुलों व कन्या गुरुकुलों की स्थापना होने लगी। वेदों और अन्य ग्रन्थो का सगति परक अर्थ होने लगा। समाज मे नमस्ते और ओ३म् का व्यापक प्रचार हुआ। स्वदेशी वस्तुओ के प्रति आर्यसमाज ने लगाव पैदा किया। लोगों को नास्तिकता से आस्तिकता की ओर मोडा। जड पूजा से विमुख कर निराकार पर ब्रह्म की उपासना की ओर उन्मुख किया। जाति पाति तोड कर विवाह होने लगे। वर्ण आश्रम का प्रचार हुआ। स्त्री जाति को पढाया जाने लगा एव उनका सम्मान होने लगा। अछूत अस्पृश्य आदि कुरीतियो का निवारण होने लगा। जाति-पाति की दीवारों मे दरार पडने लगी। ज्ञान का खुला प्रकाश चहुं ओर फैलने लगा। आत्मा-भिमान की वृद्धि होकर राष्ट्र प्रेम की चिन्गारी स्फुरण पाने लगी। आर्थिक सुधार हुआ। राजनीति मे भी चैतन्य आया। किन्तु जहा आर्यसमाज ने धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र में सामूहिक कार्य किया वहां राजनीति मे सामूहिक रूप से कोई उपलब्धि प्राप्त नहीं की। फिर भी राज-नीति में आर्यसमाज के ९० प्रतिशत सदस्यों ने भाग लिया। राष्ट्र की स्वतन्त्रता और उसके उत्थान के लिए कष्ट सहे। जेल यातनाए भोगी प्राणों की भेंट चढाई। अण्डमान की कालकोठरी मे रहे। हसते हसते फासी के फन्दों को चूमा। परन्तु इस सब का श्रेय समाज को न मिल सका। वस्तुत भारतीय समाज की सोयी राज-नैतिक मनीषा को जगाने मे ही आर्यसमाज का प्रबल हाथ रहा। समाज में नई जागृति लाने के लिए न जाने कितने स्वामी श्रद्धानन्द पं० लेखराम व महाशय राज-पाल जी जैसे महापुरुष गोली एव खजर का निशाना बनाये गये। यही नहीं अपनी जाति बिरादरी के लोगो से भी ठुकराये गये निकाले गए। हुक्का पानी तक बन्द हुआ। किन्तु जागरण का जो शख ऋषि ने फूका था उसकी ध्वनि सदा सवदा आर्यों के कानो मे गूंजती रही।

आज आयसमाज के बहुमुखी प्रचार व प्रसार से राष्ट का रूप ही बदलने लगा है। अत कुछ लोग कहने लगे हैं कि जितने काय आयसमाज ने प्रारम्भ किए थे। व सब सरकार ने अपने कायक्रमो मे ले लिये हैं। उनके अनुसार स्त्री शूद्रों की कोई समस्या नही रही। अस्पृश्यता प्रबंध कर दी गयी है। जाति पाति के आधार पर ऊच नीच के भाव समाप्त हो गए है। राष्ट्रीयता की भावना बढ गया है। पशुओ पर अत्याचार बन्द हो गए है। शिक्षा सब को उपलब्ध है। नैतिकता का प्रभाव बढ गया है। उपयुक्त बाते कहने सुनने मे कुछ ठीक सी लगती हैं किन्तु है बिल्कुल निर्मूल। क्योंकि भारतीय समाज के जागरण मे आर्यसमाज की जैसी पहले आवश्यकता थी उससे कहीं अधिक आज है।

आज अन्धविश्वास भ्रष्टाचार घूस-खोरी लूटपाट चोरबाजारी, आगजनी हत्या भाई भतीजावाद ऊँच नीच का भाव अज्ञानता कायरता, अराष्ट्रीयता स्वार्थपरता दहेज दानव धर्मान्धता समाज म नैतिक अभाव आदि बुराइया इतने प्रबल रूप मे व्याप्त हैं कि इनसे त्राण पाना बडा कठिन है। आज पढा लिखा व्यक्ति भी बुद्धि पर ताला देकर बैठा है और अपने कर्मों के द्वारा दुखों का निवारण न करके तीर्थों और जडत्व में सुख खोज रहा है। वर्ग वाद और जातिवाद का रोग समाज मे बढ रहा है आर्य समाज के पास इसका उपचार है। सर-कार ने गिरिजन हरिजन, आदिवासी पृथक् वर्ग व जाति खड़ी कर दी है जिसका समाधान गुण कर्मानुसार आर्यसमाज के पास ही है। स्त्री जाति और युवको के उत्थान के लिए आर्यसमाज के पास अनेक कार्यक्रम हैं। युवक और युवती (स्त्री पुरुष) दहेज आदि समाज के कलक का निवारण कर सकते हैं। आर्यसमाज के गुरुकुल व कन्या गुरुकुल इस दिशा में आज भी पहल कर सकते हैं और जाति-पाति, ऊचनीच अमीर-गरीब की दीवारों को समाज से मिटा सकते हैं। पशु हत्या रुकवा कर गो आदि पशुओ का सवर्द्धन कर समाज मे प्रचलित शराब अण्डे चाय आदि व्यापक हानिकारक वस्तुओ का प्रयोग कम होकर अन्न की समस्या का समाधान भी हो सकता है। नैतिक शिक्षा आर्यसमाज की धरोहर है जिसके बिना व्यक्ति व्यक्ति नही। परिवार परिवार नहीं समाज समाज नही और राष्ट्र राष्ट्र नही। आज हिन्दी की ओर उपेक्षा होकर सरकारी व गैर सरकारी कार्यक्रमो में अग्रेजी का प्रभाव बढ रहा है। इस घातक प्रवृत्ति का निवारण भी समाज व राष्ट्र हित मे आवश्यक है। आर्य पुरुषों को व्यक्तिगत रूप से यदि वे राजनीति में स्वच्छता चाहते हैं तो राजनीति में अधिकता से प्रवेश कर नैतिक मूल्यों की पुन स्थापना पर बल देना ही होगा क्योंकि पहले धर्म से नीति और नीति से राज चला करते थे। आज राज से नीति और नीति से धम चल रहा है। स्वामी दयानन्द बुराइयो को हटाने के लिए डट रहे, झुके नही। हम झुकने लगे डट न रहे इसलिए उपलब्धि दूर खडी है।

वास्तव मे आज हमे इस बात पर गम्भीरता से विचार करना होगा कि हम भारतीय समाज के अन्तगत केवल हिन्दू समाज को ही लेते है अथवा इसके अन्तगत—जैन समाज बौद्ध समाज सिन्धी समाज सिख समाज मुसलमान समाज ईसाई समाज आदि विभिन्न समाजो का भी समावेश करते हैं क्योंकि राष्ट्र के ये विविध घटक आज फिर विपरीत दिशाओं मे भागे जा रहे हैं। इसलिए आयसमाज के इस छठे नियम की व्यावहारिकता का पुनर्मूल्याकन समाज के पुनर्जागरण मे कहा तक सही सिद्ध हो सकता है विचारणीय है कि ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

अत उपयुक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि भारतीय समाज के ही नहीं अपितु मानव समाज के जागरण में आर्यसमाज का महान् योगदान रहा है। आज के बदलते परि-वेश म तो उसकी और भी महती आव-श्यकता है आर्यसमाज मानव समाज की जागृति के कार्य मे सदा ही उद्यत रहा है—'मनुर्भव उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत अर्थात् मनुष्य बनो सही रूप मे मनुष्य बनो, पुरुष बनो—उठो, जागो और श्रेष्ठता को प्राप्त करो।' यह उसके भारतीय समाज के लिए दिव्य सन्देश रहे हैं।

किशोरमञ्च—

प्रणवीर बालक प्रताप

प्रस्तोता—बलजीत शास्त्री

महाराणा प्रताप का जन्म सन् १५४० ई० में हुआ था। वे महाराणा उदयसिंह के ज्येष्ठ पुत्र थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा मेवाड़ राजवंश परम्परा के अनुकूल हुई थी। अस्त्र शस्त्र सेना सचालन मृगया तथा राज काज प्रबन्ध की कुशलता उन्होने बाल्यकाल में ही पूर्ण रूप से प्राप्त कर ली थी। राणा उदयसिंह अपने कनिष्ठ पुत्र जगमल को बहुत प्यार करते थे। उन्ही को अपना उत्तराधिकारी घोषित करने का उन्होने निश्चय कर लिया। प्रताप पितृ भक्त थे, उन्होंने पिता के निर्णय का तनिक भी विरोध नहीं किया। प्रताप को बाल्यकाल मे सदा यही बात खटकती रहती थी कि भारत भूमि विदेशियो की दासता की हथकडी और बेडी में पडी हुई है। वे स्वदेश को आजाद कराने की योजना मे चिन्तनशील रहते थे। उनके मामा झालोड के राव अक्षयराज बालक प्रताप की पीठ पर सदा हाथ रखते थे। उन्हें आशका थी कि ऐसा न हो कि प्रताप अन्त पुर के षड्यन्त्रो के शिकार हो जायें। प्रताप बड़े साहसी बालक थे। स्वतन्त्रता और वीरता के भाव उनके रग रग में भरे हुए थे। कभी कभी बालक प्रताप घोडे की पीठ पर से उतरकर बडी श्रद्धा और आदर से महाराणा कुम्भा के विजय स्तम्भ की परिक्रमा कर तथा मेवाड की पवित्र धूलि मस्तक पर लगाकर कहा करते थे कि मैंने वीर क्षत्राणी का दुग्ध पान किया है। मेरे रक्त मे महाराणा साँगा का ओज प्रवाहित है। चित्तौड के विजय स्तम्भ! मैं तुमसे स्वतन्त्रता और मातृ भूमि भक्ति का शपथ लेकर कहता हू विश्वास दिलाता हू कि तुम सदा उन्नत और सिसोदिया गौरव के विजय प्रतीक बने रहोगे। शत्रु तुम्हें अपने स्पर्श से मेरे रहते अपवित्र नही कर सकते। बालक प्रताप के सामने सदा राणा साँगा का आदर्श रहता था। वे प्राय श्रद्धाजलि समर्पित करते समय कहा करते थे कि मैं महाराणा सागा के अधूरे कार्य को अवश्य पूरा करूगा। उनके इस सकल्प के सामने अकबर जैसे सम्राट् को भी झुकना पडा। प्रणवीर प्रताप ने सारा जीवन युद्ध किया पर शत्रु के सामने झुके नही देश के बन्धनमुक्ति का व्रत लिया था। जिसकी मृत्यु पर अकबर जैसा शत्रु भी रोया था। हम ऐसे बहादुरो के वशज हैं। अपनी मातृभूमि के प्रति प्रताप के समान भाव रखगे। हम सब यह व्रत लेते हैं।

तरुणमञ्च—

जवानो, जवानी यूं ही न गंवाना!

प० बुद्धदेव विद्यालकार

मूर्ख और बुद्धिमान मे बडा अन्तर होता है। मूर्ख अच्छी बात को भी बुरा बना लेता है और बुद्धिमान बुरी चीज को भी अच्छा बना लेता है। काजल का अगर सही प्रयोग किया जाये तो आँखो में डाला हुआ सुन्दरता को चार चाँद लगा देता है। मगर गलत ढग से प्रयोग किया हुआ वही काजल इधर उधर लग जाये तो अच्छी सूरत को भी भद्दा बना देता है। एक बुद्धिमान पुरुष ने आग पर चढी हुई देगची को देखा, उसने अनुभव किया कि वो पानी जो पहल चुपचाप था भाप बनकर कितना जबरदस्त बन गया है जिसने ढक्कन को धकेल कर परे फैंक दिया है, बुद्धिमान ने इस शक्ति को सम्भाला और इजिन तैयार कर लिया। मूर्ख ने पानी और आग को इकट्ठा किया और हुक्का बनाकर गुडगुड करता रहा और अपना समय और स्वास्थ्य खराब करता रहा। मनुष्य पर भी एक समय आता है जब उसके सामने अपनी शक्ति सम्भालने का अवसर आता है। जवानी मस्तानी बनकर आती है जब वह चलता है तो कधे मार कर चलता है। पूछो तो कहेगा, देखते नही जवानी आ रही है। स्टीम पैदा हो रही है। समझदार न इसे सम्भाला और लाखों लोगो को पीछे लगा लिया। लेकिन मूर्ख यह कहता रहा।

इस दिल के टुकडे हजार हुए।
कोई यहा गिरा कोई वहां गिरा।

अपनी जवानी का नाश कर लेता है, नौजवानी में ही सभलने का समय होता है लेकिन आज का नौजवान कौन सी ऐसी खराबी है जिसका निमन्त्रण नही देता, मैंने एक जानकार नौजवान को जिसको शराब की लत लग गई थी कहा कि क्यो अपना नाश कर रहे हो। कहने लगा, पण्डित जी! आपने कभी पी ही नही—शेख क्या जाने मय का मजा, पूछो कम्बख्त ने कभी पी है। पा लते तो ऐसा न कहते। मैंन कहा पाने से क्या होता है, कहने लगा सब गम गलत हो जाते हैं। मैंने कहा और होश? तो कहने लगा कि होश रहता ही नही। मैंने कहा कि इससे बढकर और क्या बेवकूफी होगी कि मनुष्य पैसे खर्च कर अपने होश खो दे, अरे मजा तो तब है कि होश कायम हों और फिर नशा चढा रहे।

नाम खुमारी नानका चढी रहे दिन रात।
(लेकिन नानक के पुजारी आज सब से अधिक शराब पीते हैं।)

अभिमन्यु की लाश पडी है, सब रोते हैं। सुभद्रा का बुरा हाल है कृष्ण आते हैं। कहते हैं कि सुभद्रा क्या कर रही हो, सुभद्रा रो पडती है। कहती है कि भाई तुम मुझे यह कह रहे हो कि क्या कर रही हो? मेरा जवान बेटा छिन गया है। मैं अधीर न होऊ तो क्या करू? कृष्ण कहते हैं कि सुभद्रा तू याद कर तू क्षत्रिय की पुत्री है और उस क्षत्रिय वीर की माता है। जो धर्म पर वीर गति को प्राप्त हुआ है। क्षत्रिय का सबसे बडा कर्तव्य धर्म और न्याय की रक्षा के लिए मर मिटना है। तेरा पुत्र तो अमर हो गया है और तू रो रही है। सुभद्रा को होश आ जाता है। उसका चेहरा चमक उठता है। वह है जो खुमारी। पुत्र सामने मरा पडा है और होश कायम रखे जाते हैं। यह हालत तब आती है जब मनुष्य नाम का खुमारी मे रग जाय। ब्रह्मचारी बन। ब्रह्मचारी का मतलब है जो ब्रह्म मे निवास करे अपने सत को वीर्य को सम्भाल कर रखे। यह वीर्य असली रसायन है इससे बढकर और कोई रसायन नही। आज तो लोग असली रसायन को खोकर फिर इन्जेक्शन लगवाने लगते हैं। मुक्ता और भस्म क्या कहोगे। आज सुन्दरता के लिए सुर्खी और लिपस्टिक लगाय जाते हैं। होठो और गालो पर सुर्खी और लाली लगायी जाती है। इस रहस्य को भुला दिया है कि असली खूबसूरती और लाली होठो और गालो पर कैसे आती है। आओ आप को इस बात का रहस्य भी बतला दें। होठ बहुत कोमल हिस्सा होते हैं। वहा खून की लाली उभरती है। शरीर मे खून हो और उसका दौरा ठीक हो तो होटो पर लाली खुद ब खुद आ जाती है। शरीर म खून हो इस तरफ ध्यान नही दिया जाता। नकली रग का बाह्य प्रदर्शन किया जाता है। अच्छा भला आदमी हो कुछ देर पानी मे रहे तो खून का दौरा रुक कर होठ नीले पड जाते हैं। ये खून के करिश्मे हैं, अरे अपने सत को वीर्य को कायम रख कर तो देखो कितना आनन्द आता है? बहाने मे तो क्षणिक मजा और फिर पछतावा लगा रहता है लेकिन इसे कायम रख कर देखो कितना आनन्द आयेगा।

आप कहेंगे पण्डित जी क्यों तरसा रहे हो। इसे कायम रखने के लिए कोई रास्ता तो बताओ। रास्ता सुन लो आप को ब्रह्मचारी बनना होगा और हमेशा प्रभु की याद रखनी होगी, कहा जाता है कि प्रभु भजन और प्रभु भक्ति तो बुढापे की चीज है। याद रखो अगर आपने अभी से आदत न बनाई तो बुढापे मे कुछ न होगा।

सावन का महीना है। आमो का टोकरा सामने पडा है। मनुष्य आम चूस कर गुठलियो को एक थाली में सजा सजा कर रख रहा है। मैंने पूछा ये क्यो सजाई जा रही है? कहने लगा भगवान की भेंट होगी। अरे मीठा रस तो शैतान के लिए और गुठलिया भगवान के लिए। जब शरीर काम का न रहेगा खाक भगवान की याद कराेगे। जवानी बेकार खो दी तो बुढापे में भगवान हाथ न आयेगा। एक यह भी सवाल किया जाता है कि प्रभु भजन क्या कर दिल तो लगता नही, लगेगा पहले भूख पैदा करो। भोजन और भजन का एक ही कानून है। भोजन तब ही अच्छा लगता है जब भूख हो। भूख मे सूखे टुकड भी मजा दते है। परमात्मा के भजन के लिए भी भूख की जरूरत है। गीता ने चार प्रकार के भक्त कहे हैं।

पहला भक्त वह होता है जो दुखी हो। आप कहेंगे क्या हम दुखी हो जायें? हा! आप कहोगे अच्छे उपदेश देने बैठे। माता पिता जीवित है घर मे सब कुछ है किसी चीज की कमी नही खाने को खूब मिलता है डड पेलते हैं। दुखी क्यो हो? इस पर भी दुखी हो जाओ। अपने लिए नही दूसरो के दुख को अपना दुख समझ लो। अगर तुम्हारे पास कोई भूखा आये तो पहले उसे खिलाओ। कोई दुखी है तो उसका दुख दूर करो। परोपकार करो। सब कुछ रखते हुए सेवा का व्रत धारण करो। सब से बडी ईश्वर की भक्ति यही है। किसी के काम आकर तो देखो, कितना आनन्द आता है। दुनिया मे जितने दुख और झगडे हैं उनके तीन कारण हैं इनमे से एक तुम ले लो। आज शिक्षा के रहस्य को लोगो ने भुला दिया है। हमारे ऋषियों ने इसे खूब समझा था। वो विद्यार्थियो को दुनिया के इन तीन प्रकार के दुखो को दूर करने के लिए तैयार करते थे। हमारी वैदिक शिक्षा सच्चे वैश्य सच्चे क्षत्रिय और सच्चे ब्राह्मण पैदा करने के लिए होती थी, जो तीन प्रकार के दुख दूर करने के लिए तैयार किये जाते थे।

पहला दुख अभाव से पैदा होता है।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत

विनोद कुमार

श्री लालमन आर्य निबन्ध प्रतियोगिता में पुरस्कृत निबन्ध

भारत वसुन्धरा शस्य श्यामला भी है और वीर-धीर प्रसविनी भी। जब-जब भारत सन्तान को किसी सकट का सामना करना पडा अज्ञानान्धकार की भयावह और गहन छाया मे भटकना पडा, विदेशी आक्रातामो के अत्याचार की पीडा सहनी पडी अथवा आन्तरिक द्वेष की अग्नि मे झुलसना पडा तभी तभी भारत मा ने ऐसी सन्तान को जन्म दिया जिसका लक्ष्य—"दुष्टो का दमन, धर्म का उत्थान और साधुओं का परित्राण रहा।"

सृष्टि का यह चिर अटल नियम है कि रात जितनी अधकारमय होती है, प्रभात उतना ही प्रकाशमय। पराधीनता एव अज्ञान के भीषणान्धकार से भारतीयो के परित्राणार्थ जो ज्योति पुञ्ज व्यक्तित्व सवत् १८८१ (१२ फरवरी १८२५ ई०) को जगदीश्वर ने भारत के गुजरात प्रान्त मे मौरवी जिले के टकारा ग्राम मे करषन लाल जी त्रिवेदी के घर मे भेजा वह स्वामी दयानन्द था। दयानन्द के बचपन का नाम 'मूलशकर था। भारतीय परम्परा मे शकर' या 'शिव का अर्थ होता है—'कल्याणकारी। जीवन के प्रारम्भ से ही इस महापुरुष का कार्य 'बहुजन-हिताय', 'बहुजनसुखाय हो गया। अत उनका कर्म भी नाम को सार्थक कर गया। वस्तुत दयानन्द का जीवन भवभूति के इस कथन को सार्थक करता है —

वज्रादपि कठोराणि
मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतासि
को विज्ञातुमर्हति ॥

स्वामी दयानन्द का जीवन एक ऐसी बहुप्रतिभा का धनी है, जहा वह वेदो का प्रकाण्ड पडित है, शास्त्रो का उद्गाता है, वहा वह देश की निर्धनता को देखकर रो पडता है। दयानन्द के हृदय मे विश्व-शान्ति के लिए ठोस रचनात्मक पुरोधम की स्पष्ट आभा मिलती है। जैसा कि स्वामी जी ने स्वय कहा है —"सर्वसत्य का प्रचार कर सब को एकमत मे कराके, द्वेष छुडाकर परस्पर में दृढ प्रीतियुक्त कराके, सब को सुख लाभ पहुँचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।" अपने विचारो को साकार रूप देने के लिए स्वामी दयानन्द ने १८७५ मे आर्यसमाज की स्थापना की। स्वामी जी का विचार था —"One God, One religion and One world ' यहा पर एक ईश्वर से तात्पर्य "One distinction and One God" से है। एक धर्म से अभिप्राय एक आचार सहिता' से है। एक विश्व का अर्थ ' एक परिवार" से है।

नवभारत के स्वप्न-द्रष्टा के रूप मे महर्षि दयानन्द ने एक शताब्दी पूर्व ही एक ऐसे भव्य भारत का चित्र उपस्थित किया जो लोकतान्त्रिक होने के साथ-साथ समाज में फैली विभिन्न कुरीतियो से रहित था। उन्होने युग की धारा को बदलने का प्रयत्न किया। स्वामी जी भारत को एक आदर्श देश के रूप मे देखना चाहते थे। उनके भारत मे कुरीतियो का कोई स्थान नही था। सर्वत्र प्रेम, सहयोग और बन्धुत्व था। स्वामी जी के अनुसार—"प्रत्येक व्यक्ति को अपने गुणो के अनुसार ही कार्य करना चाहिए। ऐसा होने से देश उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा और देश का शासन सरलता पूर्वक चलेगा।" स्वामी जी चाहते थे कि भारत विश्व के समक्ष एक नमूना बने, वे भारत को इस रूप का चाहते थे। जैसा कि 'विष्णु पुराण २/३ मे कहा गया है—

गायन्ति देवा किल गीतकानि
धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते
भवन्ति भूय पुरुषा सुरत्वात् ॥
जानाम नैतत् क्व वय विलीने
स्वर्गप्रदे कर्मणि देहबन्धनम्।
प्राप्स्यन्ति धन्या खलु ते मनुष्या
ये भारते नेन्द्रिया विहीना ॥

स्वामी दयानन्द का विश्वास था कि यदि देश मे बढ रही नास्तिकता, अनैतिकता अनुशासनहीनता, व्यक्तियो म परस्पर ईर्ष्या-द्वेष की भावना इत्यादि बुराइया भारतीय समाज से विलीन हो जायें तो भारत एक खुशहाल देश बन सकता है। अपने मिशन की पूर्ति हेतु स्वामी जी ने अनेक धार्मिक पुस्तकें लिखी, जिनमे 'सत्यार्थप्रकाश" सब से महत्त्वपूर्ण है। स्वामी जी ने शिक्षा पर बहुत जोर दिया। स्वामी जी कहा करते थे—"प्रेम, सहयोग और भ्रातृत्व की भावना जब तक हम भारतीयो मे विकसित नही होगी तब तक हम उन्नति के शिखर पर नही पहुच सकते हैं।'

दयानन्द सरस्वती व्यक्ति व्यक्ति के बीच की खाई को देखना नही चाहते थे। उन्होंने सडी गली सामाजिक मान्यताओ के खिलाफ ऐसे समय मे आवाज उठाई जबकि उस समय असम का विद्वत् समुदाय भी विकृत मान्यताओं का समर्थन करता था। जाति वर्ण व्यवस्था ने भारत मे ऐसी फूट का बीजारोपण किया जिससे भारतवासी एक दूसरे को विद्वेष की दृष्टि से देखने लगे। मानव मूल्यो की कसौटी जन्म जाति गत व्यवस्था की सरहद से हटकर विशुद्ध मानवीय स्तर पर ऋषि दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति से उभरकर सामने आयी।

भारतीय समाज मे अछूतो के साथ किए जाने वाले दुर्व्यवहार से ताडित होकर अछूत और शूद्र विधर्मयुक्त होने लगे। यह उस समय की बात है जब धर्म के मामले मे बुद्धजीवी भी तर्क एव औचित्य से अलग हटकर आचरण करते थे। सामाजिक व्यवस्था के इस संकीर्ण दायरे से क्षुब्ध होकर महर्षि दयानन्द ने मर्मान्तिक होकर एक स्थल पर कहा था—

"यह व्यवहार तो आर्यों के लिए मरण व्यवस्था बन गई है। देखें इस डाकिन से इसका कब पीछा छूटता है।"

स्वामी दयानन्द जाति-पाति के भेद से अत्यन्त क्षुब्ध थे। जाति पाति के इस व्याघात को हटाने हेतु अन्तर्जातीय विवाह का चौका देने वाला आदर्श महर्षि दयानन्द ने पराधीन भारत मे रूढिगत भारतीय समाज के सामने उपस्थित किया। आर्यसमाज ने इस ओर क्रियात्मक कदम उठाया लेकिन अभी अपेक्षाकृत परिणाम के लिए और अधिक कर्मठता से काय करने की आवश्यकता है।

दयानन्द सरस्वती ने सन्देश दिया कि शिक्षा मनुष्य की जीवनदायिनी है। जब तक सभी भारत के नर-नारी शिक्षित नही होगे तब तक हम एक खुशहाल भारत का सपना नही देख सकते है। वास्तव मे शिक्षा ही वह गुण है जो किसी देश या राष्ट्र को उत्थान या प्रगति की ओर ले जाता है। स्वामी जी ने नारी शिक्षा पर बहुत जोर दिया। स्वामी जी से पूर्व स्त्री और शूद्रो को शिक्षा नही दी जाती थी। इससे स्वामी जी बहुत दुखी हुए और उन्होने स्त्रियों और शूद्रो को शिक्षा दिये जाने का अभियान चलाया। जहा शकराचार्य ने कन्याओ को शिक्षित करने का विरोध किया, वही दूसरी ओर स्वामी दयानन्द ने स्त्री-शिक्षा का अभियान चलाया।

किसी भी समाज अथवा राष्ट्र के लिए नारी को आधार शिला के रूप में कहा जाए तो अत्युक्ति न होगी, क्योकि नारी ही देश को अयोग्य निकास सर्व सूक्ष्मदर्शी नागरिक प्रदान करती हैं। "परिवार ही मनुष्य की प्राथमिक पाठशाला है।" इस कथन को पूर्ण रूप से उचित मानते हुए कहा जा सकता है कि जिस देश की नारी सुशिक्षित वीराङ्गना तथा स्वतन्त्र विचारों की होगी, उस देश के नागरिक भी सुशिक्षित वीर तथा स्वतन्त्र विचारो वाले होंगे जो शिक्षा बच्चो को माता से प्राप्त होती हैं तथा सस्कार स्थायी रहते हैं। वह शिक्षा एव सस्कारो का स्थायित्व किसी अन्य व्यक्ति द्वारा नही दिया जा सकता अर्थात् माता जो सस्कार अपने पुत्र में लोरी के माध्यम से सक्रमित करती हैं। वे सस्कार अन्य किसी माध्यम से सक्रमित होने पर भी स्थायित्व को प्राप्त नही कर सकते। इस तथ्य की पुष्टि "मदालसा" आख्यान मे अलकादि के कथानक से सभी को हो जाती है।

स्वामी दयानन्द का विश्वास था कि "नारी का स्थान मानव समाज मे अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। यदि उसकी अवस्था उन्नत न हो तो सपूर्ण मानव जाति के अधोगति मे पहुचने का भय है। नारी घर की साम्राज्ञी है तथा घर एक व्यष्टि है। उसकी उन्नति एक समाज तथा प्रत्येक समाज की उन्नति से सपूर्ण देश की उन्नति सभव है। देश का आधार रूपी नारी माता बनकर पुरुष का निर्माण करती हैं। उसके कर्तव्य की पूर्ति आदर्श सन्तान की जननी बनकर सम्पूर्ण सासारिक रहस्यो को समझाकर कर्म क्षेत्र मे सघर्ष करने के लिए तैयार करके बाहर भेजने मे निहित है। मातृ-सुख विहीन बालक प्राय आवारा, निष्कर्मण्य और असफल ही दृष्टिगोचर होते हैं। पत्नी के बिना पुरुष की प्रतिष्ठा नगण्य है। नारी जैसा घर का निर्माण करेगी वैसा ही सम्पूर्ण समाज का ढाचा बदल जायेगा।"

जिस देश मे नारी की शिक्षा का वहा के देशवासियो द्वारा ध्यान नही दिया जाता उस देश का भविष्य अंधकारमय कहा जा सकता है। सम्भवत इसीलिए मनुस्मृतिकार ने कहा, "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।" हमारे पूर्वज वैदिक ऋषि इससे अनभिज्ञ नहीं थे। अत उन्होने वैदिक साहित्य में नारी-शिक्षा के प्रति विशेष बल दिया।

जब स्वामी दयानन्द ने इस तथ्य पर सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया कि 'किसी भी देश की प्रगति का आधार उस देश की नारियों का शिक्षित होना है।" तो स्वामी जी ने नारी शिक्षा का अभियान चलाया। लडकियो के लिए अनेक स्कूल खोले गये। स्वामी जी ने अपने प्रसिद्ध एव मौलिक ग्रन्थ "सत्यार्थप्रकाश' मे कहा है कि—"जन्म से पाचवे वर्ष तक के बालको को माता तथा छ से ८वें वर्ष तक पिता शिक्षा करें और ९वें वर्ष के आरम्भ से द्विज अपने सन्तानों का उपनयन करके जहां पूर्ण विद्वान् तथा पूर्ण विदुषी शिक्षा और विद्यादान करने वाले हों, वहां लडके तथा लडकियों को भेज दें।" शिक्षा। [illegible]

मे बच्चो को ताडन करने के सम्बन्ध में स्वामी जी ने ताडन के पक्ष मे अपने विचार प्रस्तुत किये और कहा—

> सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति
> गुरवो न विषोक्षितैः ।
> लालनाश्रयिणो दोषा-
> स्ताडनाश्रयिणो गुणाः ॥

अर्थात्—'जो माता-पिता और आचार्य सन्तान और शिष्यो को ताडन करते हैं वे मानो अपनी सन्तान और शिष्यो को अपने हाथ से अमृतपान करा रहे हैं। किन्तु जो सन्तानो तथा शिष्यो का लाडन करते है वे अपने सन्तानो तथा शिष्यों को विष पिलाकर नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं क्योंकि लाडन से सन्तान व शिष्य दोषयुक्त तथा ताडन से गुण युक्त होते हैं।

स्वामी दयानन्द का विश्वास था कि चरित्र को मजबूत बनाने हेतु तथा समाज को सर्वगुण सम्पन्न बनाने हेतु सह शिक्षा नहीं होनी चाहिए। वे मानते थे कि सह-शिक्षा से चारित्रिक पतन होता है। उन्होंने "सत्यार्थप्रकाश" के तृतीय समुल्लास" मे कहा है— लडको का लडकों की तथा लडकियो को लडकियो की पाठशाला मे भेज दें। लडके तथा लडकियो की पाठ-शालाएँ एक दूसरे से कम से कम दो कोस की दूरी पर हो।' मनु ने तो यहा तक कहा है कि—

'स्त्रीणा प्रेक्षणालम्भमुपघात परस्य च।'

अत स्वामी जी की दृष्टि मे शिक्षा-काल मे नारी को त्याग और तपस्या की मूर्ति बनकर ही शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए तभी वह एकाग्रचित्त से ज्ञानार्जन कर सकती है और तदनन्तर गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करके समाज व राष्ट्र के लिए सुयोग्य सन्तान प्रदान कर सकती है। सक्षेप मे स्वामी जी शिक्षा के माध्यम से देश को एक चरित्र सम्पन्न अपने कर्तव्यों एव दायित्वो के प्रति जागरूक नारी देने की योजना प्रस्तुत करते हैं। स्त्रीशूद्रौ नाधीयातामिति उक्ति को अप्रामाणिक सिद्ध करते हुए यजुर्वेद तथा अथर्ववेद मे भी नारी शिक्षा के पक्ष मे प्रबल तर्क दिये गये हैं—

> 'यथेमां वाचं कल्याणी-
> मावदानि जनेभ्य ।
> ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय
> च स्वाय चारणाय ॥
> ब्रह्मचर्येण कन्या
> युवान विन्दते पतिम् ।

धर्म के क्षेत्र मे भी स्वामी जी एक महान् क्रान्तिकारी के रूप मे अवतरित हुए। शताब्दियो से परतन्त्रता का बोझ वहन करते हुए भारतीय जनता धर्म का वास्तविक रूप विस्मृत कर बैठी थी। धर्म के नाम पर असख्य अन्धविश्वास प्रचलित थे और पाखड के घने बादलो ने धर्म के वास्तविक स्वरूप को जन दृष्टि से ओझल [illegible]

आन्दोलन प्रारम्भ कर एक नये अध्याय का श्रीगणेश किया। उससे पूर्व हिन्दुओ को लालच और त्रास से ईसाई और मुस्लिम बनाया जा रहा था। हिन्दू अपने तग दायरे मे बद किसी भी अन्य धर्माव-लम्बी को स्वधर्म में समाहित करना पाप समझते थे, परन्तु स्वामी जी ने ईसाइयों और मुसलमानों को हिन्दू धर्म में प्रवेश लेने के लिए प्रोत्साहित कर विदेशी शक्तियो का प्रतीकार किया।

स्वामी जी ने जनसाधारण को सन्देश दिया कि हम सब भारतवासी भाई-भाई हैं। हमे अपने बीच से ईर्ष्या द्वेष को निकाल देना चाहिए। उन्होंने "वसुधैव कुटुम्बकम्' की उक्ति को साकार रूप देने के लिए कहा। 'मैं' के स्थान पर 'हम' की भावना पर जोर दिया। प्रत्येक व्यक्ति मे परोपकार और त्याग की भावना होनी चाहिए। स्वामी दयानन्द के शब्दों मे—

'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सब की उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए।' उन्होने आगे कहा—'सब मनुष्यो को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हित-कारी नियम मे सब स्वतन्त्र रहें।'

सदा से ही शिक्षा का प्रयोजन रहा है 'आत्मा सिद्धि अर्थात् अपने को जानो। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है- 'जीवन मे उत्तम सस्कारो का आरोपण।' शिक्षा का मुख्य प्रयोजन मानव को पशुता के स्तर से ऊपर उठाकर सस्कारी जीव का निर्माण करना है। सभी शिक्षा हृदय की शुद्धता के लिए ही होनी चाहिए। केवल भोगो की समृद्धि या केवल उदर पोषण हेतु पथावलोकन होने से शिक्षा की सार्थकता नही है। परन्तु जब हृदय शुद्ध और निमल हो, तभी जीवनोद्देश्य की पूर्ति होती है। वेद कहते हैं—

तप से ही देवताओ ने मृत्यु पर विजय पाई। हमारी शिक्षा प्रणाली मे आने वाले कष्ट को सहन करना ही तप है तथा इसी तप से शिष्य शारीरिक मानसिक तथा आत्मिक विकास के पथ पर अग्रसर होता है। महर्षि दयानन्द के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य 'शारीरिक मानसिक तथा आत्मिक शक्तियो का विकसित किया जाना है।' वे शिक्षा को राज्य का कर्तव्य मानते हैं। स्वामी जी के अनुसार शिक्षा पद्धति में केवल आध्यात्मिकता का लक्ष्य ही नही है वरन् लौकिक विद्याओ (विज्ञान कला तथा कौशल) मे निष्णात प्रवीणता प्राप्त किये जाने का निर्देश भी है। स्वामी जी का मत है कि शिक्षा सर्वप्रथम स्वदेशी भाषा में ही दी जानी चाहिए।

स्वामी दयानन्द ने विविधताओ से पूर्ण इस देश मे एक राष्ट्र, एक भाषा, एक समाज तथा एक ईश्वर का ऐसा बिगुल बजाया, जिससे भारतीय समाज [illegible]

हो उठा। एक ईश्वर को मानने वाले आर्यसमाज की इस एकत्व की सार्वभौमिक विचारधारा ने भारतीय समाज को ऐसी चुनौती प्रदान की जिससे लडखडाते अन्ध विश्वासो के टीले धराशायी होने लगे। आर्यसमाज के मन्दिर बिना किसी भेदभाव के मानवमात्र के लिए खोले गए। जीवन के आध्यात्मिक सत्य का शाश्वत बोध कराने वाले महर्षि दया-नन्द ने आर्यसमाज के द्वारा सही रूप मे जीवन के प्रति जिस दृष्टिकोण का विमोचन किया वह समग्र जीवन क्रान्ति से सम्बन्धित था।

स्वामी दयानन्द ने यह भी बताया कि राजा मन्त्री, सभासद कौन व्यक्ति होने चाहिए। इस पर भी प्रकाश डाला है। स्वामी जी के अनुसार "राजा को निष्पक्ष, न्यायकर्ता राजकार्य मे निपुण सत्यवादी, बुद्धिमान्, धर्म अर्थ और काम की सिद्धि करने वाला तेजोमय नीतिशास्त्र के अनुसार शासन चलाने वाला होना चाहिए।

मन्त्री मे निम्न गुण होने चाहिए—

> 'मौलान् शास्त्रविद
> शूरॉल्लब्धलक्ष्यान् कुलोद्गतान्।
> सचिवान्सप्त चाष्टौ वा
> प्रकुर्वीत परीक्षितान्॥

अर्थात् स्वदेश मे उत्पन्न, वेदो को जानने वाला, शूरवीर, जिसका लक्ष्य निष्फल न हो कुलीन अच्छे प्रकार सुपरीक्षित सात या आठ, धार्मिक, चतुर सचिव या मन्त्री हो।

नौकर के गुण—

> तेषामर्थे नियुञ्जीत शूरान्
> दक्षान् कुलोद्गतान् ।
> शुचीन् करकर्मान्ते भीरूनन्तर्निवेशने ॥'

दूत के गुण—

> "दूत चैव प्रकुर्वीत
> सर्वशास्त्रविशारदम् ।
> इङ्गिताकारचेष्टज्ञं शुचिं
> दक्ष कुलोद्गतम् ॥
> अनुरक्त शुचिर्दक्ष
> स्मृतिमान् देशकालवित् ।
> वपुष्मान् वीतभीर्वाग्मी
> दूतो राज्ञ प्रशस्यते ॥'

सभापति के गुण—

> 'तैं सार्द्धं चिन्तयेन्नित्य
> सामान्य सन्धिविग्रहम् ।
> स्थान समुदय गुप्ति
> लब्धप्रशमनानि च ॥"

तत्पश्चात् स्वामी दयानन्द ने यह भी बताया कि उनके स्वप्निम भारत मे राजा अमात्य, दूत और सभासदो को क्या अधि-कार देने चाहिए। राजा को सर्वदा राज-कार्य मे सलग्न रहना चाहिए और उसे राजकार्य को बिगडने नहीं देना चाहिए। राजा को प्रजा के साथ सर्वदा सन्तानवत् व्यवहार करना चाहिए।

अमात्य के अधिकार—

> "अमात्ये दण्ड आयत्तो
> नृपतौ कोशराष्ट्रे च
> दूते सन्धिविपर्ययौ ॥

दूत के अधिकार—

> "दूत एव हि सन्धत्ते
> भिनत्त्येव च सहतान्।
> दूतस्तत्कुरुते कर्म
> भिद्यन्ते येन वा न वा॥

राज्य कर के सम्बन्ध मे स्वामी जी ने लिखा है—

> 'यथाल्पाऽल्पमदन्त्याद्य
> वार्योकोवत्सषट्पदा ।
> तथाऽल्पाऽल्पो ग्रहीतव्यो
> राष्ट्राद्राज्ञाब्दिक कर ॥"

इसके साथ-साथ स्वामी जी ने यह भी बताया कि देश का शासन किस प्रकार का होना चाहिए। इस सम्बन्ध मे स्वामी दयानन्द ने यह कहा है कि—

> "ग्रामस्याधिपति कुर्याद्-
> दशग्रामपति तथा ।
> विंशतीश शतेश च सहस्रपतिमेव च ॥
> ग्रामदोषान्समुत्पन्नान्
> ग्रामिक शनकैं स्वयम् ।
> शसेद् ग्रामदशेशाय
> दशेशो विंशतीशिनम् ॥
> विंशतीशस्तु तत्सर्वं शतेशाय निवेदयेत्।
> शसेद् ग्रामशतेशस्तु सहस्रपतये स्वयम् ॥
> तेषा ग्राम्याणि कार्याणि
> पृथक्कार्याणि चैव हि ।
> राज्ञोऽन्य सचिव
> स्निग्धस्तानि पश्येदतन्द्रित ॥
> नगरे नगरे चैक
> कुर्यात् सर्वार्थचिन्तकम् ।
> उच्चै स्थान घोररूप
> नक्षत्राणामिव ग्रहम् ॥

प्रजा से कर लेने का प्रकार—

> 'पञ्चाशद्भाग आदेयो
> राज्ञा पशुहिरण्ययो ।
> धान्यानामष्टमो भाग
> षष्ठो द्वादश एव वा ॥

स्वामी दयानन्द ने देश के कर्मचा-रियो की चुनाव पद्धति का भी तरीका बताया है। राजा बनने का मूल आधार प्रजा का प्रिय होना है। राजा के पद पर सदैव क्षत्रिय वर्ण के व्यक्ति को ही चयन किया जाना चाहिए। ब्राह्मण वैश्य और शूद्र राज्य मे अपने गुणो के अनुसार अन्य कार्य कर सकते हैं। राजा [illegible] का प्रत्याशी होने के लिए आवश्यक है कि वह उस राज्य का निवासी होना चाहिए। राजा का चुनाव या तो देश की सम्पूर्ण जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से होना चाहिए। (अथवा) कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियो के द्वारा राजा का चुनाव किया जाना चाहिए। सर्वश्रेष्ठ स्थान पर चुने जाने पर अग्रगण्य होने पर भी वह जनता का प्रथम सेवक है जनता की सेवा पर ही उसकी स्थिति निर्भर है। वह प्रजा की इच्छाओ के पीछे चलने वाला है। प्रजा की इच्छा के विपरीत उसकी कोई इच्छा नही, प्रजा

व्यासपीठ—

उपनिषत् कथा-माला—४

सच्ची पूजा

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

(गताक से आगे)

सहस्रो मीलो तक अन्धकार छा जाता है। यह किसकी माया है? फिर कौन इस अन्धेरे को दूर कर देता है? रात को हम सब सोये हुए हैं बेसुध पड़ हुए हैं सोते हुए सब का दर्जा बराबर है। क्या धनी क्या निर्धन? सब एक ही समान हैं। यह किसकी महिमा है जो चौबीस घण्टे मे एक बार सबको समान कर देती है? यह क्लोरोफाम किसने सुघाया था? यह किस चतुर डाक्टर का काम है? जब कोई साधारण डाक्टर क्लोरोफार्म सुघाता है तो उसकी खुमारी का प्रभाव तीन दिन तक रहता है किन्तु इसका प्रभाव ऐसा नहीं। आप सोकर उठते ही अपने आपको प्रफुल्लित पाते हैं। यदि सोकर न उठें तो मरने और सोने मे अन्तर ही क्या है? परन्तु अब पाप अधिक हो रहे हैं भविष्य मे ऐसा ही होगा आप सोयगे परन्तु उठ न सकेंगे।

मृत्यु निःसन्देह है परन्तु ज्वर होना आवश्यक नहीं। आप तनिक देखें तो सही। महाराज रामचन्द्र जी हुए हैं। वनवास मे सीता जी और लक्ष्मण उनके साथ थे। चौदह वर्ष वनो मे रहे। सारी रामायण पढ जाइए कहीं एक स्थान पर भी यह नहीं मिलता कि अमुक स्थान पर श्री राम इसलिए ठहरे कि उन्हे ज्वर आ गया था अथवा रोग ने आ दबाया था। पाण्डव भी बारह वर्ष तक वनो मे भटकते रहे। सब काम अनेक कष्ट उठाकर किये। सारा महाभारत पढ जाओ परन्तु यह कहीं नहीं मिलेगा कि अमुक स्थान पर भीमसेन को पेचिश हो गई थी इसलिए उन्हें वहा ठहरना पड़ा। कभी वन मे किसी शीदड़ भेड़िये, जङ्गली गाय आदि को भी बीमार होते सुना है? क्या वन मे कहीं जङ्गली पशुओं के लिए सरकारी हस्पताल खुले है? कहीं नहीं। जङ्गली जानवर उस समय तक नहीं खाते जब तक उनका पेट न मांगे। वे प्रकृति के अधीन होकर रहते हैं। परन्तु तुम तो क्या, तुम्हारे जानवर गाय, भैंस घोड़ आदि भी बीमार हो जाते हैं। क्योंकि उनका मनुष्य के साथ सम्बन्ध हो गया है। आप भी अनियमित हो गये और उन्हें भी अनियमित बना दिया।

प्रकृति ने मनुष्य को रोगी होने के लिए नहीं बनाया। प्रकृति ने पहले अन्य जन्तु बनाये। पशु, वृक्षादि सब पहले बनाए और सब से पीछे मनुष्य को बनाया। प्रकृति का परीक्षण मनुष्य पर जाकर समाप्त हो गया। मनुष्य को प्रकृति ने बड़ा सुन्दर बनाया यह बड़ा ही रूपवान बना था। दूर दूर से चलकर इसके पास आते थे। तपोवन मे महात्मा रहते थे, आनन्द करते थे पास ही हिरण का बच्चा निर्भय होकर पानी पीता था। प्रकृति ने मनुष्य को प्यास बुझाने के लिए जल और भूख मिटाने के लिए चावल गेहू आदि वनस्पति प्रदान की। श्वास लेने के लिए पवन भेजी। ज्वर को तो प्रकृति ने नहीं भेजा। ज्वर को तो तुम स्वय बनाते हो। प्रकृति ने न कुनैन बनाई न ज्वर।

आजकल स्त्रियो का स्वास्थ्य प्राय बिगड़ा रहता है। पहली स्त्रियों को जिन्होने देखा है, वे जानते हैं कि पचास साठ वर्ष की आयु मे भी वे कितने काम करती थीं। परन्तु आजकल की जवान स्त्रिया तनिक सा काम किया नहीं बस बीमार हो गई। एक स्त्री थी शाहदरे से शाहजहापुर जा रही थी। गाड़ी पर सवार थी। स्टेशन पर गूजरो के लड़कों ने देखा। उनका काम था कि गाड़ी में घुसकर यात्रियो को लूट लेते थे। उस गाड़ी में वह अकेली बैठी हुई थी। एक लड़का उसमे चढने लगा। उसने कहा पीछे हट जा। वह न हटा और आगे आ गया। फिर उसने कहा, 'उतर जा'। वह न उतरा। उस स्त्री ने पकड़कर उसे गाड़ी में खींच लिया और दो थप्पड़ लगाये। अगले स्टेशन पर उसे पुलिस के हवाले कर दिया और साथ ही यह भी कह दिया कि मैंने इसे पर्याप्त दण्ड दे दिया है। अब इसे छोड़ दो।

बात तो यह है। माता अच्छी होगी तो सन्तान भी अच्छी होगी। उसे कोई भी बीमारी न होगी। यह क्यों हुआ? क्या सब कुछ भूल से हो गया है? नहीं। यदि आप उन पहली बातों को फिर लाना चाहते हैं तो पहले मानसिक स्वास्थ्य या मन की तन्दुरुस्ती आनी चाहिए। मनुष्यों को चाहिए कि बुरी बातों का चिन्तन न करें। नवयुवक नित्य बुरी-बुरी चिन्ता करते हैं। राज्यक्ष्मा (तपेदिक) के रोग बन जाते हैं। ये क्यों दिन रात चिन्ता मे फसे रहते हैं? नियमपूर्वक न खाते हैं, न पीते हैं। ईश्वर की उपासना भी छोड़ बैठे हैं। फिर रोगी न हों तो क्या हों?

चिन्ता और चिता मे बहुत कम अन्तर है। परन्तु चिन्ता बड़ी ही कठोर है। चिता तो जब मनुष्य मर जाता है तभी उसको जलाती है परन्तु चिन्ता की अग्नि जीते जी ही जला देती है। इसलिए आत्मिक बल उत्पन्न करने के लिए मानसिक शक्ति प्राप्त करने की आवश्यकता है और सिवाय परमात्मा की उपासना के किसी दूसरे उपाय से यह शक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। प्रातःकाल उठकर स्नान आदि से निबटकर प्रभु का ध्यान करो। 'प्रभो तुम्हारी माया अपरम्पार है। अन्धकार को दूर करने के लिए सूर्य के द्वारा प्रकाश किया। बस तुमसे हम तुम्हे ही मागते हैं। यह नहीं कि उपासना के लिए बैठे और मागने लगे धन, दौलत पुत्र आदि। इन झूठे विचारो को अपने मन मे स्थान न दो। यह तो वह आप ही देगा। उसकी उपासना करो और उससे उसी को मांगो। उससे मांगो कि हे प्रभो! मुझे बल दो जिससे मैं जनहित के काय करू। तुम्हारे वियोग से हम दुख पाते हैं। तुम्हारे सयोग मे हम मोक्षपद को प्राप्त करते हैं। अतएव ऐसी कृपा करो कि तुम से हमारा वियोग कभी न हो!

मन्दिरो में घड़ियाल बजते हैं बत्तियां जलती हैं, क्या लाभ? दूसरो ने इन घड़ियालों और बत्तियो से कितने काम लिये? स्टेशनो पर चले जाओ गाड़ी जब चलेगी तब घड़ियाल बजेगा। अन्धेरे मे इञ्जन ड्राइवर को बत्ती दिखाई जाएगी कि चलो। दुनिया तो मेरे भाई! इस प्रकार बुद्धि से काम करती है। परन्तु तुम बुद्धि को तिलांजलि दे बैठे हो।

ज्ञानस्वरूप परमात्मा एक है। एक के सामने झुकने से मनुष्य समाज में एकता आती है। जैसा किया वैसा फल पाया। हमें कोई नहीं सताता, मनुष्य अपनी दुर्बुद्धि से अपने आप ही सताया जाता है। एक मनुष्य था उसके घर के सामने एक आगन था। आंगन में उसकी दुवन्नी गिर गई। वहां अन्धेरा था, कुछ दिखाई नहीं दिया। बाहर सड़क पर लालटेन जल रही थी वहां जाकर ढूंढने लगा। किसी ने पूछा 'भाई क्या ढूंढते हो?' उत्तर दिया "दुवन्नी गिर गई है।' फिर पूछा, कहा गिरी थी?' वह बोला, घर के आगन में। उसने कहा तो वहां जाकर ढूढो।' इसने उत्तर दिया, 'वहां तो अन्धेरा है वहा नहीं मिल सकती। इसीलिए मैं प्रकाश मे ढूढ रहा हू।' तुम भी ऐसे ही भूले हुए हो। पहले अपने मन से इस भूल को निकालो और अपने दिल में दूसरो के लिए दर्द पैदा करो फिर सब कुछ हो जायेगा।

स्वामी दयानन्द जी एक बार कर्णवास गए। वहा आप जहा ठहरे थे रात के १२ बजे उठकर टहलने लगे। एक ब्रह्मचारी ने पूछा स्वामी जी आप ऐसा क्यों कर रहे हैं?' स्वामी ने कहा 'दर्द है'। ब्रह्मचारी बोला पानी मे नमक डाल देता हू, पी लीजिये दर्द अच्छा हो जायेगा। स्वामी जी ने कहा यह दर्द इस प्रकार दूर होने वाला नहीं। मेरे तो दिल में दर्द हो रहा है।' अतएव मेरे भाइयो! दुनिया सो रही है। ज्ञानी का काम तो यह है—

> सामने अपने तसव्वुर
> से समझाता हूँ तुझे
> दूर भी नजदीक दिखलाती
> है इन्सां दूर का ॥

जब तक मेरे भाई! आर्यजाति प्रभु की सच्ची पूजा को भूले हुए है जब तक यह लौटकर फिर परमेश्वर के पास नहीं आती तब तक इसकी यही दुर्गति रहेगी। इसलिए सवेरे उठो और उसके सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना, उपासना करो। यदि तुम्हारे दिल में दर्द पैदा हो जाये और एक परमेश्वर को मानकर उसके आगे सिर झुका दो तो तुम्हारा सब प्रकार कल्याण हो जाय। परमात्मा तुम्हें सुमति प्रदान करें।

□

महर्षि के सपनों का भारत

(पृष्ठ ७ का शेष)

के सुख के अतिरिक्त राजा का कोई अन्य सुख नहीं। स्वामी जी का मत है कि राजा को कभी भी स्वतन्त्र नहीं रहने देना चाहिए। "शतपथ ब्राह्मण" में कहा गया है कि—

'यदि राजा प्रजा से स्वतन्त्र होगा तो वह प्रजा को नष्ट कर देगा, क्योंकि अप्रतिबन्धित राजा प्रजा का नाशक होता है। अतः किसी एक को राज्य में स्वतन्त्र नहीं रखना चाहिए। जैसे मांसाहारी पशु किसी पुष्ट पशु को खा जाते हैं। उसी प्रकार स्वतन्त्र राजा भी प्रजा को खा जाता है।'

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि स्वामी दयानन्द के सपनों के भारत में लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली की स्थापना की गई है। उसमें एक भाषा एक धर्म तथा एक राष्ट्र है। बहुत्व के स्थान पर एकत्व है। स्वामी जी के भारत में रूढ़ियों कुरीतियों तथा अन्धविश्वासों का कोई स्थान नहीं है। सर्वत्र प्रेम, सहयोग एकता और भ्रातृत्व का वातावरण है। परस्पर ईर्ष्या-द्वेष नहीं है। स्वामी जी के भारत में सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति है। स्वामी जी भारत को पूर्ण रामराज्य बनाना चाहते हैं। उनका भारत मानवता-पूर्ण तथा सौहार्दपूर्ण था।

□

गोहाटी (असम) आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

आर्य वीरो, शहीदो और महर्षि दयानन्द को कर्मक्षेत्र मे वीरता और सेवा भाव जगाकर श्रद्धांजलि अर्पित करो —श्री हंस

टेलीविजन से आर्य वीरो के अनेक व्यायामो की छवि सारे असम में दिखाई जाएगी

गोहाटी, १८ अप्रैल। आर्यसमाज गोहाटी के तत्त्वावधान और असम आर्य प्रतिनिधि सभा के सरक्षण मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल गोहाटी प्रशिक्षण शिविर १८ अप्रैल से २८ अप्रैल तक ससमारोह सम्पन्न हुआ। शिविराध्यक्ष का उत्तर दायित्व श्री प० बालदिवाकर हंस प्रधान-सचालक आर्य वीर दल नई दिल्ली ने किया और दीक्षान्त भाषण भी विशिष्ट अतिथि के रूप मे उन्होने किया। समारोह की अध्यक्षता एक यू० पू० एम० पी० ने की। व्यायाम प्रशिक्षण का उत्तरदायित्व श्री ब्र० सत्यव्रत सत्यम् गुरुकुल चित्तौड राजस्थान ने सम्भाला। कन्याओ के शिविर का सरक्षण—सुश्री मधु स्मृति सिंह ने किया।

श्री हंस ने अपने ओजस्वी दीक्षान्त भाषण मे आर्य वीरो का आवाहन करते हुए उन्हें कर्म क्षेत्र मे उतरने की सलाह दी जिससे युवा शक्ति चरित्रोपासक बने। मेरी दृष्टि मे महर्षि दयानन्द और देश के शहीदो को यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आपने आगे कहा आप गौरवपूर्ण इतिहास का निर्माण कर रहे हैं पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक भारत के चप्पे चप्पे पर आप को उत्तरदायित्व सम्भालना है। भगवान राम ने दोनो भुजा उठाकर कहा था निशिचर हीन करौं मही सो आप उन्ही राम के वशज होने के नाते उत्तरदायित्व सम्भालें। असम प्रान्त, हिमालय ब्रह्म पुत्र ने अपने आचल मे शिविरायोजन किया है। डा० नारायण दास ओ३म्प्रकाश आनन्द एव श्री सजय कुमार जी के साथ साथ उनके परम सहयोगी प्यारेलाल आर्य (दम्पती) श्री अरुण [illegible] का अपूर्व सहयोग हम मे आत्मीयता का सृजन कर रहा है। मैं आशा कर सकता हूं कि आर्य वीर दल आर्यसमाज के सरक्षण मे सारे असम मे अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकेगा।

अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए विद्वान भू० पू० एम० पी० ने कहा—आर्यसमाज के महान् सेवको ने सदैव मानवोचित व्यवहार और सस्कारो को जगाने मे महत्त्व पूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। मैं आप लोगो का आभारी हू कि आपने मुझे युवाशक्ति के मध्य मे बुलाकर उनके उत्तम भविष्य हेतु प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया है। यह कार्य महर्षि दयानन्द के मिशन का मानव हित में रचनात्मक है।

आर्य वीरों के प्रशिक्षण काल मे सीखे व्यायामों का हृदयग्राही प्रदर्शन तुमुल हर्ष ध्वनि के साथ सराहा गया। असम सरकार के टैलीवीजन विभाग ने व्यायाम के भिन्न भिन्न कौशलो की फिल्म ली जो साप्ताहिक कार्यक्रमो मे समस्त असम मे दिखाई जाएगी।

श्री हंस की आर्य वीर दल के गौरव पूर्ण इतिहास के सदर्भ मे एक वार्ता टेलीविजन वालो ने ली। सक्षेप मे आर्य वीरों एव आर्य वीरागनाओ के कौशल पूर्ण सम्भाषणा और व्यायाम प्रदर्शनो का सर्वसाधारण पर व्यापक प्रभाव पड़ा। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव मत्री ने निकट भविष्य मे पुन असम के लिए प्रधान सचालक जी से अनुरोध किया और व्यायाम शिक्षक श्री सत्यव्रत सत्यम् सहित केतकी की पुष्पमालाओ के साथ वस्त्रोपहार से आप लोगो का भाव भीना स्वागत किया।

मधु स्मृति
सवाददाता

एक अनूठा और अनुकरणीय सत्प्रयास !
रचनात्मक पद्धति मे महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी

वैदिक मिशनरी निर्माण योजना के क्रम मे

१ आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर—

यह शिविर समायोजन दि० २६ मई से ९ जून तक सोत्साह मनाया जा रहा है। इसमे सामान्यत सभी प्रदेशो और मुख्यत उत्तर प्रदेश, हरियाणा एव राजस्थान के ऐसे ही निष्ठावान् आर्यवीर भाग लेंगे जो प्रशिक्षण प्राप्त करके समय देंगे तथा अपने अपने क्षेत्रो मे आर्यवीर दल का सचालन करेंगे।

शिविरार्थी २५ मई की शाम तक वेदमन्दिर मथुरा पहुंचें। प्रवेशपत्र की पूर्ति करें या आवेदन पत्र दें। अनुशासन का पालन आवश्यक है। शिविर शुल्क नही है। सभी श्रद्धानुसार दान देकर व्यय पूर्ति करे।

इस शिविर मे सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बालदिवाकर जी 'हंस' सहायक सचालक श्री प० देवव्रत जी आचार्य, श्री रामसिंह आर्य, श्री सुरेन्द्र आर्य श्री अनिल आर्य आदि उच्चकोटि के नेता एव शिक्षक भाग ले रहे हैं। शिविर का सचालन श्री जय नारायण जी आर्य करेंगे।

२ आर्य कार्यकर्त्ता-कार्यकर्त्री प्रशिक्षण शिविर—

रचनात्मक पद्धति मे महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी के सन्दर्भ मे यह एक अन्य महत्त्वपूर्ण शिविर है। जिसमे सम्पूर्ण जीवन दानी अथवा आंशिक समय दानी अथवा प्रतिदिन आर्यसमाज के कार्य के लिए कुछ समय निश्चित रूप मे योजनाबद्ध रूप मे देने वाले भाग लेंगे। यह शिविर भी उपर्युक्त तिथियों मे उपर्युक्त स्थान पर ही हो रहा है। डा० सुरेशचन्द्र जी वेदालकार डा० स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, डा० भवानीलाल जी भारतीय आदि उच्चकोटि के विद्वान् प्रशिक्षण देंगे।

३ भव्य एव विराट् समारोह ७ से ९ जून—

उक्त तिथियो मे महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी के साथ ही विरजानन्द वैदिक साधनाश्रम की रजत जयन्ती आर्योप प्रतिनिधि सभा मथुरा का स्वर्ण जयन्ती भी सम्पन्न हो रहा है। दि० ६ जून को श्रद्धा दिवस दि० ८ जून को सकल्प दिवस तथा दि० ९ जून को बलिदान दिवस का आयोजन होगा। वेदमदिर (वैदिक मिशनरी निर्माण केन्द्र) के भवन का उद्घाटन होगा। आर्य युवा जागरण सम्मेलन, आर्य महिला जागरण सम्मेलन, आर्य किसान सम्मेलन, हिन्दू सगठन, शुद्धि सम्मेलन तथा बलिदान सम्मेलन (श्रद्धांजलि समारोह) एव कवि सम्मेलन तथा वेद एव वैदिक साहित्य सगोष्ठी, वैदिक परिवार सगोष्ठी आदि सगोष्ठिया होगी। विद्वद् अभिनन्दन एव बलिदानी वीरों का अभिनन्दन एव पुरस्कार वितरण भी होगा। अनेकों सत, विद्वान् तथा उच्च स्तरीय राजनयिक भाग ले रहे हैं।

समारोह के सयोजक आचार्य प्रेमभिक्षु जी ने १ जून से ६ या ७ जून प्रात तक पदयात्रा सप्ताह की प्रेरणा की है। यह सम्पूर्ण आयोजन ग्राम प्रचार को आधार बनाकर किया जा रहा है। इस अनूठे समारोह को तन मन धन से सफल बनाने के लिए सभी सादर आमन्त्रित हैं।

विनीत
अभयदेव (प्रधान) सुरेशचन्द्र आर्य (मत्री)

समारोह स्थल-वेदमदिर
वृन्दावन मार्ग मथुरा
(चमेलीदेवी गर्ल्स कालेज के सामने, डी०ए०वी० हाईस्कूल के साथ)

नई शिक्षा नीति के संबंध में विद्वानों का सर्वसम्मत सुझाव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान मे निर्मित शिक्षा समिति की बैठक केन्द्र की नई शिक्षा नीति के सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई।

शिक्षा समिति ने शिक्षा पद्धति मे सस्कृत को महत्त्वपूर्ण स्थान देने, नैतिक शिक्षा और राष्ट्रभक्ति को प्रोत्साहन देने का सुझाव सर्वसम्मति से स्वीकार किया है। विद्वानों की समिति ने यह निश्चय किया है कि शीघ्र ही शिक्षा समिति द्वारा निर्धारित सुझावों की पूरी रूपरेखा के साथ शिक्षा मन्त्री [illegible] से मिलकर उनसे विचार विमर्श किया जाये।

शिक्षा समिति ने वर्तमान शिक्षा पद्धति के परिवर्तन के सम्बन्ध मे सुझाव दिया है कि दसवी कक्षा तक त्रिभाषा फार्मूले के अन्तर्गत सस्कृत का शिक्षण अनिवार्य हो तथा ११वी से ऊपर बारहवी तक पाठ्यक्रम मे एक भारतीय भाषा का अध्ययन कराया जावे इसकी व्यवस्था के लिए सरकार ऐसी योग्यता वाले अध्यापको की नियुक्ति करे।

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

जवानी न गंवाना

(पृष्ठ ५ का शेष)

वैश्य का काम है कि वह वस्तुओ का निर्माण करे और सब लोगो को दे लेकिन आज का वैश्य तो ब्लैक मार्किटियो का हो रहा है। वो अपना स्टाक भर लेता है वस्तुएं गायब हो जाती हैं, न मिले तो सब दुखी। अगर वैश्य अपने धर्म पर कायम है तो ब्लैक मार्कीट और अभाव न आयेगा। बांट ठीक हो तो दुख न होगा।

दूसरा दुख का कारण अन्याय है। कुछ गुण्डे उठते हैं और दूसरों की वस्तु छीन कर घर मे डाल लेते हैं। क्षत्रिय का काम है ऐसे लोगो से समाज को बचाये। कोई चोर न हो। कोई किसी पर अन्याय न करे, सब सुखी हो जायें। इस काम के लिए क्षत्रिय तैयार किये जाते थे जो न्याय को कायम रखने के लिए व्रत लेते थे और अन्याय को मिटाने के लिए जान पर भी खेल जाते थे।

तीसरा दुख अविद्या की वजह से होता है। अविद्या और अज्ञान को दूर करने का काम ब्राह्मण करता था। सारा ससार सुखी था। इन तीन प्रकार के दुनिया के दुखों को दूर करने के लिए ही शिक्षा दी जाती थी और यही प्रभु-भक्ति है। जो प्रभु को याद रखता है और पर सेवा और परोपकार भी जिन्दगी व्यतीत करता है वही प्रभु-भक्त है।

ऐसा ब्रह्मचारी ब्रह्म मे विचरता है और मृत्युञ्जय हो जाता है। नौजवानो दुनिया पर और अपने आप पर विजय पानी है तो ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करो। प्रभु-भजन और सेवा का व्रत लो ससार तुम्हें सर पर उठायेगा।

समाचार-सन्देश

देश में गो हत्या कब तक चलेगी

अंग्रेजों के शासनकाल से देश मे गऊ हत्या चल रही है। गऊ हत्या बद करने के बारे मे कई प्रयत्न किए गए। परन्तु गऊ हत्या बन्द होने मे नही आती हालाकि गऊ हत्या से देश को वित्तीय नुक्सान वहन हो रहा है। परन्तु इस ओर बिल्कुल ध्यान नही दिया जाता। जब अग्रेजो के समय मे गऊ हत्या होती थी तो लोगो की आम विचार धारा थी, विशेष कर भारतीय नेताओ का कि गऊ हत्या बद होनी चाहिए। लोगो का विचार था कि अंग्रेजो का शासन समाप्त होते ही गऊ हत्या बद हो जाएगी। हालाकि जिन लोगो ने यह कहा था कि आजादा के मिलते ही पहली कलम से गऊ हत्या बन्द कर दी जाएगी। जब उन लोगो का शासन आया तो उन्होने इस ओर कोई ध्यान नही दिया और गऊ हत्या होती रही। इस विषय मे ऋषि दयानन्द ने लोगो से हस्ताक्षर कराकर मलका विक्टोरिया को विज्ञापन भी दिया और आर० एस० एस० के लोगो ने भी गऊ हत्या बन्द होने के बारे मे एक ज्ञापन हस्ताक्षर कराकर दिया था। इसके अलावा सन १९५० मे गऊ हत्या बन्द कराने के बारे मे आन्दोलन व सत्याग्रह, पर किसी ने भी गऊ हत्या बन्द करने का प्रयत्न नही किया। हालाकि इस दौरान मे जनता पार्टी का शासन भी आ लिया। परन्तु उन लोगो ने भी इस ओर कोई ध्यान नही दिया।

अब लोग हैरान हैं और सोचते हैं कि गऊ हत्या का कलक कब तक इस देश के माथे पर चलता रहेगा।

जयदेव गोयल
पत्रकार जीन्द

बहराइच में विदेशी धन से धर्मान्तरण हुआ आर्यसमाज का आरोप

उन्नाव। आर्यसमाज उन्नाव के ७वे वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्यसमाज व विश्व हिन्दू परिषद के विख्यात नेता श्री देवीदास आर्य ने बताया कि हाल मे बहराइच में हुए धर्मान्तरण के पीछे विदेशीधन (पेट्रोडालर) की करामात है। नेपाल सीमा पार कर अरब लीग कुछ वर्षों स अवैध रूप से बहराईच गोण्डा बस्ती, गोरखपुर जिलो म प्रवेश कर धन के बल पर निर्धन हिन्दू नटो का धर्म खरीद रहे हैं। सरकार मूक दर्शक बना हुई है।

श्री देवीदास आर्य ने सरकार से पूछा कि बहराइच मे ४००० चारहजार, गोण्डा मे ०००तीन हजार बस्ती व गोरखपुर मे दो दो हजार व्यक्ति इस्लामी मदद से और कितने धर्मान्तरित किये गये हैं? सभा की अध्यक्षता डा० रघुवीर सिंह एडवोकेट ने की।

प्रारम्भ मे श्री देवीदास आर्य के महिला उद्धार शुद्धि व समाज सेवा के महान कार्यों की प्रशसा करते हुए भव्य स्वागत किया गया।

रविशकर शर्मा
मन्त्री आर्यसमाज
उन्नाव

नया प्रवेश

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरियाणा) मे नया प्रवेश आरम्भ है। भोजन, निवास, पुस्तक, वस्त्रादि का सारा प्रबन्ध सर्वथा नि शुल्क है। मैट्रिक पास छात्रो का प्रवेश होता है। अत धर्म प्रचार मे रुचि रखने के इच्छुक छात्र जो कि २२/२३ वर्ष से अधिक के न हों, अविवाहित हो, जल्दी ही पत्रव्यवहार करें। प्रवेश २५ जुलाई तक ही होगा स्थान सीमित है, अत प्रवेशार्थी जल्दी ही पत्र-व्यवहार कर अपना स्थान सुरक्षित करा लें।

निवेदक
सत्यप्रिय शास्त्री एम०ए० साहित्याचार्य
आचार्य
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय
हिसार (हरयाणा) १२५००१

समय की आवाज

उत्तर भारत के कई प्रान्तो मे एक साथ बम विस्फोट, कई शीर्षस्थ नेताओ की हत्या के प्रयास आतकवादियों के पुन भयकर रूप से सक्रिय होने का प्रमाण है। उनका यह कुत्सित काय सुनियोजित था। उनकी योजना थी भारत की अखण्डता और एकता को खण्ड-खण्ड करने की। अत आज की आवश्यकता है कि हम सब भारतीय एक जुट होकर चलें और इन समाज विरोधी तत्त्वो का डटकर मुकाबला करें। मैं राष्ट्रीय एकता विचार मच दिल्ली की ओर से सभी वर्गों से तथा धार्मिक राजनैतिक दलो से अपील करता हूँ कि इस समय अपने समस्त मतभेद भुलाकर राष्ट्रहित के लिए एक होकर सहयोग करें।

अशोक कुमार
प्रधान, राष्ट्रीय एकता विचार मच
८।८२, रमेश नगर, नई दिल्ली

अलगाववादी हिंसक तत्त्वों को सख्ती से कुचला जाए

आर्यसमाज केसरगज अजमेर की दिनाक १२-५-८५ की यह सभा अपने साप्ताहिक सत्सग के उपरान्त एक सर्व-सम्मत प्रस्ताव पारित कर उग्रवादी आतक वादियों द्वारा किए गए देश के विभिन्न भागो मे बम विस्फोटो तथा निर्दोष लोगो की हत्याओ की कडी भर्त्सना करते हुए भारत सरकार से इन अलगाववादी हिंसक तत्वो को सख्ती से कुचलने हेतु कठोर कार्यवाही करने की माग करती है। साथ ही देश के समस्त नागरिको विशेषत हिन्दू सिखो से भाईचारे एव साम्प्रदायिक सौहार्दता रखने की अपील करती है।

मन्त्री
आर्यसमाज अजमेर

महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति का चुनाव

आर्य समाज शिवाजी चौक खण्डवा जिला पूव निमाड (म० प्र०) मे दिनाक १२ ५-८५ को श्री भावजी भाई भानूशाली की अध्यक्षता मे महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति का चुनाव सानन्द सम्पन्न हुआ।

सर्वानुमति स निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये —

अध्यक्ष श्री रामचन्द्र जी आर्य
उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीनारायण जी भार्गव
हीरालाल जो आर्य
मत्री श्री कैलाशचन्द जी पालीवाल
उपमत्री श्री छगनलाल जी चौधरी
कोषाध्यक्ष श्री भावजी भाई भानूशाली।

कार्यकारिणी के सदस्य
श्री कृष्णालाल जी आर्य
२ श्री सेठ नारायण दास जी खण्डेलवाल
३ श्री डा० जगदीशचन्द्र बोरे
४ श्री बाबूलाल जी चौधरी
५ श्रीमती शान्तिबाई खण्डेलवाल
६ श्रीमती चन्द्रकान्ता पालीवाल

उक्त समिति के अन्तर्गत नगर में ३ बाल मदिर, २ प्राथमिक शाला, १ माध्यमिक शाला, २ महिला सिलाई स्कूल सचालित है।

सुखराम आर्य
पुरोहित आ० स० खडवा
कृते
मत्री आर्यसमाज खण्डवा

शुद्धि

२४ मार्च १९८५ को श्री हसराज पोस्टमैन के सराहनीय प्रयत्नों द्वारा फतहपुर बेरी डाकखाना महरौली, नई दिल्ली के निवासी रमेशचन्द्र आर्य व उनकी पत्नी लज्जावती तथा उनकी पुत्रियो पूनम तथा सोनिया का आर्य रीति से यज्ञ तथा यज्ञोपवीत द्वारा शुद्धि का कार्य सम्पन्न किया गया।

इस कार्य में श्री हसराज पोस्टमैन का सराहनीय योग रहा।

डी० आर० खुराना, मन्त्री

खन्ना में आर्य नवयुवकों की सभा

१२ ५-८५ रविवार को, आर्यसमाज खन्ना मण्डी (लुधियाना) मे आर्य नव युवको की एक सभा का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री हरिदेव जी चौधरी ने की। यज्ञ के पश्चात् वेद प्रचार भजन मण्डली लुधियाना ने प्रभुभक्ति एव देशभक्ति के गीतो का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस अवसर पर आर्य युवक सभा पजाब के सयोजक श्री रोशनलाल शर्मा ने नवयुवको को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज हमारे सामने देश की एकता और अखण्डता का एक बहुत बडा प्रश्न है क्योकि जिस स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए शहीदे आजम भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु तथा अनेक वीरो ने अपने प्राणों की आहुति दी आज इसी स्वतन्त्रता को कायम रखने की जिम्मेदारी हम सभी पर है। उन्होने देश मे हो रही हिंसक घटनाओ पर गहरी चिंता प्रकट की तथा नवयुवको को आह्वान किया कि उन्हें साम्प्र) दायिक एकता बनाये रखते हुए देश की रक्षा के लिए सदैव तैयार रहें। श्री सुधीर जी भाटिया, श्री विनोद जी बसल तथा श्री यशपाल जी आय ने भी युवको को सम्बोधित किया। श्री चौधरी ने कहा कि आर्यसमाज नवयुवको की यथासम्भव सहायता करेगा। शान्ति पाठ एव जय घोष के साथ कार्यवाही समाप्त हुई।

सुधीर भाटिया उप सयोजक
आर्य युवक सभा पजाब,
७२१ सिविल हस्पताल रोड, लुधियाना

उग्रवादियों से निपटने के लिए भारत सरकार से अपील

आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता एव डी० ए० वी० मैनेजिंग कमेटी की स्थायी समिति होशियारपुर के चेयरमैन चौ० बलबीर सिंह जी की आज सुबह होशियारपुर में हत्या कर दी गई। वह आर्यसमाज एव डी० ए० वी० आन्दोलन के स्तम्भ थे। श्री बलबीरसिंह जी पजाब के राजनीतिज्ञ व पुराने समाजवादी नेता थे। उनका सिख समाज में बहुत सम्मान था। यह समाचार मिलते ही डी० ए० वी० कालेज कमेटी एव प्रादेशिक सभा कार्यालय में शोक सभा की गई और परमात्मा से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई।

इस बैठक मे एक प्रस्ताव पारित किया गया कि भारत सरकार उग्रवादियों से सख्ती से निपटे। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने इस उपलक्ष्य में भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी एव पजाब के गवर्नर श्री अर्जुनसिंह को टेलीग्राम देकर आग्रह किया है कि वह उग्रवादियों से सख्ती से निपटें।

—रामनाथ सहगल (मन्त्री)
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज भोगल का वार्षिक चुनाव

दि० १२-५ ८५ को आर्यसमाज भोगल का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से किया गया।

प्रधान श्री डा० जे० पी० गुप्ता
उपप्रधान श्री चुन्नीलाल वोहरा
उपप्रधाना श्रीमती लाजवन्ती अग्निहोत्री
मंत्री श्री सरदारीलाल चोपड़ा
उपमंत्री भारतेन्दु आर्य
कोषाध्यक्ष राधाकृष्ण विदानी
आडीटर ओमप्रकाश चौधरी
औषधालय व्यक्ष हरिश्चन्द्र अरोड़ा
वस्तु भण्डारी पन्नालाल खुराना

कृते मंत्री

दयानन्द पब्लिक स्कूल का उद्घाटन

आर्यसमाज माडल टाउन दिल्ली के २७वें वार्षिकोत्सव के अन्तिम दिन १२ मई रविवार को ९.३० बजे दयानन्द पब्लिक स्कूल का उद्घाटन लाला राम गोपाल शालवाले (प्रधान सार्वदेशिक सभा) के कर कमलों द्वारा बड़े हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। पश्चात् १ बजे ऋषि लंगर हुआ।

दयानन्द पब्लिक स्कूल
आर्यसमाज रोड माडल टाउन
दिल्ली ११०००९

आर्यसमाज बड़ा बाजार कलकत्ता द्वारा स्वामी दयानन्द की प्रामाणिक जीवनी के लेखक डा० भवानीलाल भारतीय

अध्यक्ष दयानन्द शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय का सम्मान व अभिनन्दन

कलकत्ता। कलकत्ता की बड़ी बाजार आर्यसमाज ने अपने वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्यसमाज के प्रसिद्ध शोध विद्वान् तथा लेखक डा० भवानीलाल भारतीय का गत ४ मई को महाजाति सदन के विशाल सभागार में सार्वजनिक सम्मान तथा अभिनन्दन किया। इस सम्मान समारोह की अध्यक्षता आर्यसमाज कलकत्ता के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री सीताराम आर्य ने की। पूर्वांचल विशेषत बंगाल की सभी प्रमुख आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं ने डा० भारतीय का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया तथा इस अवसर पर उपस्थित महात्मा आर्यभिक्षु जी डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री तथा प्रो० उमाकान्त उपाध्याय आदि विद्वानों ने भारतीय जी की साहित्य सेवाओं की भूरि भूरि प्रशंसा की। आर्यसमाज बड़ा बाजार की ओर से विद्वान के सम्मानार्थ १५०० रु० की एक ऊनी शाल तथा अभिनन्दन पत्र अर्पित किया गया। आर्य समाज बड़ा बाजार के युवा कार्यकर्ता श्री चांदरतन दम्माणी ने अभिनन्दन पत्र वाचन करते हुए साहित्य पत्रकारिता तथा प्रचार में डा० भारतीय जी की सेवाओं का उल्लेख किया। स्वागत के उत्तर में भाषण देते हुए डा० भारतीय जी ने कहा कि साहित्यकार यद्यपि निःस्वार्थ एवं कर्तव्य पूर्ति की भावना से ही अपनी लेखनी चलाता है तथापि यदि समाज उसको प्रोत्साहित करे तो वह अधिकाधिक उत्साह से समाज सेवा में लगा रहेगा। सम्मान समारोह के समय डा० भारतीय की पत्नी श्रीमती शान्ति भारतीय भी उपस्थित थी।

अपने चार दिन के कलकत्ता प्रवास में डा० भारतीय ने आर्यसमाज विधान सरणी कलकत्ता के मंत्री श्री पूनमचन्द जी तथा आर्यसमाज कलकत्ता स्थापना शताब्दी समारोह समिति के संयोजक श्री धीरमल्ल आर्य से समारोहों के आयोजन के सम्बन्ध में उपयोगी परामर्श किया। आर्यसमाज बड़ा बाजार का उत्सव दिनांक २ मई से ५ मई तक मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित राष्ट्ररक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए डा० भारतीय ने आर्यसमाज को राष्ट्र पर आये खतरों के प्रति सावधान किया। कार्यक्रम का संयोजन श्री दम्माणी जी ने किया था। वेद सम्मेलन की अध्यक्षता महात्मा आर्यभिक्षु जी ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में प्रो० विष्णुकान्त शास्त्री उपस्थित थे। प्रो० ज्वलन्त कुमार शास्त्री तथा भवानीलाल भारतीय ने आर्यसमाज का वेद विषयक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उत्सव की सफलता के लिए समाज के प्रधान श्री कन्हैयालाल जी आर्य मंत्री श्री खुशहालचन्द कार्यकर्ता श्री चांदरतन दम्माणी धन्यवाद के पात्र हैं।

—संवाददाता

आर्य वीर दल शिविरों का आयोजन

सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की समिति के निर्णय के अनुसार युवकों के चरित्र विकास राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना जागृत करने हेतु दिल्ली में निम्न प्रकार से शिविरों का आयोजन किया गया है। प्रत्येक आर्यसमाज संस्था के मंत्री/प्रबन्धक महोदय से प्रार्थना है कि अपनी आर्यसमाज/संस्था की ओर से आर्यवीरों के नाम आर्यवीर दल के कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ के पते पर शीघ्र भिजवाने का कष्ट करें।

२१ ५ ८५ १-६ ८५, २-६ ८५
शुक्र शनि तथा रविवार
रतन देवी आर्या पुत्री पाठशाला
कृष्ण नगर दिल्ली—५१
(यमुना पार)

१४ १५ १६ जून १९८५
शुक्र शनि तथा रविवार
आर्यसमाज निमारपुर दिल्ली—७

१ ७ ८५ से ७ ७-८५ तक
सोमवार से रविवार तक
ग्घमल कन्या पाठशाला निकट
मद्रास होटल नई दिल्ली—१

प्रियतम राम रसवन्त
अधिष्ठाता, आर्यवीर दल दिल्ली प्र०

आर्य पुरोहित सभा का निर्वाचन

आर्य पुरोहित सभा दिल्ली का निर्वाचन आर्यसमाज दीवान हाल, चावड़ी चौक, दिल्ली मे १ जून शनिवार को साय ५ बजे होना निश्चित हुआ है। समस्त सदस्यगणों से प्रार्थना है कि अपना वार्षिक शुल्क साथ लेते आये।

मंत्री
वेदकुमार

आर्यसमाज विवेक विहार का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज विवेक विहार का वार्षिकोत्सव बडे धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बृहद यज्ञ तथा वेद प्रचार का विशाल आयोजन किया गया। १९ मई रविवासरीय अंक मे प्रसिद्ध साहित्यकार श्री क्षेमचन्द सुमन तथा सभा प्रधान श्री सूर्यदेव ने अपने विचार प्रकट किये। वक्ताओ ने शिक्षा मे हो रहे परिवर्तन के विषय मे प्रकाश डालते हुए कहा—हमारी शिक्षा मे महापुरुषो का गौरवमय चरित्र तथा नैतिक चारित्रिक शिक्षा का स्थान अवश्य होना चाहिए। आर्यसमाज सदा चरित्र और नैतिकता तथा व्यक्ति और समाज के विकास पर बल देता रहा है। सरकार को चाहिए शिक्षा मे चारित्रिक और नैतिक मूल्यों तथा अपने गौरवमय इतिहास को उचित स्थान दे।

मन्त्री आर्यसमाज
विवेक विहार

पंजाब के हिन्दू नेता प्रधानमंत्री से मिले

(पृष्ठ १ का शेष)

१२ श्री चतुर्भुज मित्तल, प्रधान व्यापार मण्डल, जालन्धर

१३ श्री कैलाश शर्मा प्रधान मंदिर कमेटी, लुधियाना

१४. श्री ओमप्रकाश त्यागी—महामन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

१५ श्री जगन्नाथ मिश्रा, दुर्ग्याना अमृतसर

१६ श्री सोमनाथ मरवाह सीनियर एडवोकेट एवं कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

१७ महाराज कृष्ण खन्ना, जालन्धर

१८ प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, रोहतक

१९ प्रो० वेदव्यास, प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

२०. श्री सूर्यदेव, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

२१ श्री कृष्णकान्त एडवोकेट, लुधियाना

२२ श्री लक्ष्मीचन्द, दिल्ली

—प्रचार विभाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित रजि० नं० डी० (सी०) ७५९

साप्ताहिक

ओ३म्

आर्य सन्देश

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वर्ष ६ अंक २८ | रविवार, २ जून १९८५ | सृष्टि संवत्सर १९६०८५३०८५ | ज्येष्ठ २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१

स्वामी दयानन्द मेरे महान् गुरु

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं। मैंने संसार में केवल उन्हीं को गुरु माना है। वह धर्म के पिता हैं और आर्यसमाज मेरी धर्म की माता है। इन दोनों की गोद में मैंने परवरिश पाई और अपने दिल और दिमाग को ढाला। मुझ को अभिमान इस बात का है कि मेरा गुरु बड़ा आजाद मन का था। उसने हम को आजादी से विचार करना आजादी से बोलना और आजादी से अपने कर्तव्य पालन करना सिखाया। मुझ को इस बात का भी गर्व है कि मेरी धर्म की माता ने मुझ को एक व्यवस्था में बद्ध होकर रहना सिखाया। एक ने आजादी प्रदान की तो दूसरे ने मुझ को डिसिप्लिन का दान दिया। इसके बगैर न तो इन्सान अपना सुधार कर सकता है न किसी और का। आजादी और डिसिप्लिन हर एक भले आदमी की जिन्दगी का आधार है। नवयुवक आजादी चाहते हैं परन्तु नियन्त्रण से घबराते हैं जब तक यह दोनों भाव उनके अन्दर अच्छे अनुपात से शामिल न हो जाएं उनकी जिन्दगी मीठी और उपयोगी नहीं हो सकती। स्वामी जी महाराज ने हम को देश प्रेम का मीठा फल खिलाया। जाति सेवा और जाति भक्ति का बीज हमारे अन्दर बोया। साथ ही हम को यह भी उपदेश किया कि हम अपने हृदय को विशाल और खुला रखें ताकि मनुष्य मात्र इस में समा जाए। हमारी देशभक्ति धर्म के अधीन है। यूरोपीय कौमों की तरह यह तंग और तमस न होनी चाहिए। जब एक जर्मन निवासी यह कहकर पुकारता है कि उसे अपनी जन्म भूमि सब पदार्थों से प्यारी है तो वह कई बार अपने दिल को तंग करके संसार में नाना प्रकार के झगड़ों की नींव रखता है और शिक्षा देता है कि मेरी कौम चाहे गलती पर हो तो भी उसकी भूल मुझे प्रिय है। इसमें यहां तक तो सच्चाई है कि बुराइयों के रहते पर भी हमें अपनी कौम प्रिय होनी चाहिए। जो व्यक्ति जितना अधिक निर्बल हो, कम समझ हो, पापी हो उतनी ही अधिक स्नेह की मात्रा उसमें होनी चाहिए परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि बस्तुतः हमें, भूल, पाप, अथवा अधर्म से भी प्रेम है। जैसे माता पिता को अपने छोटे बच्चे से अधिक प्रेम होता है और शरारत से उनके प्रेम का स्रोत बहता रहता है। इसी तरह हमको अपनी जाति और अपने देश से सच्चा प्रेम करना चाहिये और जाति की बुराइयों [illegible] शरारतों से हमको अपनी [illegible] कोई कमी; नहीं [illegible]।

परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि जाति की भूलों और अधार्मिक कृत्यों को भी हम चाहने लगें। स्वामी जी महाराज ने हम को जाति सेवा का उपदेश दिया। हम चाहते हैं कि हमारा देश और हमारी जाति धर्म के रास्ते में वृद्धि करे। धर्म से भाव यहां उन कुछ सिद्धान्तों से नहीं जिनका नाम मत है। धर्म शब्द उन गहरे और विशाल अर्थों में लिया जाना है जो हमारे शास्त्रकारों ने इसके लिए नियत किए हैं। सिद्धान्तों को मानना और चीज है और धर्मात्मा बनना और चीज है जो केवल धर्म सिद्धान्तों के बोझ के नीचे दब कर अपने सिद्धान्तों के अभिमान पर धर्मात्मा बनने की चेष्टा करता है। वह जरूर ही धर्मात्मा नहीं बन जाता। धर्म का सम्बन्ध बहुत कुछ कर्म और आचरण से है न केवल शुष्क ज्ञान से। धर्मात्मा बनने के लिए एक खास तरह का दिल बनाना होना है जिसमें विशालता, दयालुता, न्याय और भक्ति से मिली हुई हो।

सम्पादक—यशपाल 'सुधांशु' एम० ए० | व्यवस्थापक—डा० गणेशीलाल | प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

सत्संग वाटिका

अन्वय बृहद् सत्य उग्र ऋत दीक्षा तप ब्रह्म यज्ञ (एते सर्वे) पृथिवी धारयन्ति। सा पृथिवी न भूतस्य भव्यस्य पत्नी (अस्ति)। पृथिवी न लोक उरु कृणोतु।

अर्थ पृथिवी को इतनी चीज धारण करती हैं। (बृहद सत्य) बड़ा सच (उग्रम् ऋतम्) तीव्र ऋत दीक्षा तप ब्रह्म और यज्ञ। यह पृथिवी (न) हमारे (भूतस्य) भूत-काल (भव्यस्य) और भविष्यत् काल की (पत्नी) पालन वाली है। यह पृथिवी हमारे (लोक) जीवन को (उरु कृणोतु) ऊंचा बनावे।

व्याख्या—इस मन्त्र मे पृथिवी अर्थात् देश की उन्नति के साधन बताये गये हैं। पृथिवी पर हम लोगो का जन्म होता है इसी पर बढ़ते हैं और इसी पर हमारी अन्त्येष्टि हो जाती है। अत इसकी उन्नति मे हमारी उन्नति और इसके ह्रास मे हमारा ह्रास है। उन्नति मे भौतिक सामाजिक धार्मिक सभी उन्नतियों का समावेश है। पृथिवी या देश के समुन्नत होने के बहुत से भौतिक साधन हैं जिनको देश की सरकारें वैज्ञानिकों की सहायता द्वारा प्रयुक्त किया करती हैं। जैसे भिन्न प्रकार की भूमियों को कृषि के उपयुक्त बनाना ऊसरों को तोड़ना पहाड़ी जमीनो को चौरस करना जहा पानी की कमी हो दूरस्थ नदियो से नहर निकाल कर पानी पहुचाना विद्युत शक्ति को कृषको के लिए सुलभ बनाना इत्यादि।

ये महान गुण

प० गंगाप्रसाद उपाध्याय

सत्य बृहद ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥
(अथर्ववेद काण्ड १२। सूक्त १। मन्त्र १)

परन्तु वेद मन्त्र मे कुछ ऐसे अभौतिक तथा मानसिक गुणो का वर्णन किया गया है जो ऊपर दिये भौतिक साधनो से भी अधिक आवश्यक हैं जिनके सहयोग से ही भौतिक साधन सफल हो सकते हैं और जिनके अभाव मे यह भौतिक साधन सर्वथा विपरीत सिद्ध होते हैं। कृषि आदि भौतिक साधन मनुष्य के कल्याण के लिए हैं न कि मनुष्य उन साधनो के लिए। अत यदि देश मे खाद्य पदार्थ बहुत हो और खाने वाले निकम्मे हो उन पदार्थों का उपयोग नहीं हो सकता। कल्पना कीजिये कि एक धनाढ्य परिवार है। अच्छे मकान खाने के लिए पुष्कल अन्न पहनने के लिए वस्त्र परन्तु परिवार के लोग आलसी स्वार्थी और कलह प्रिय हैं तो घर की शान्ति का सदा भंग होता रहेगा और शनैः शनैः घर की समृद्धि भी चलायमान हो जायगी। राजा दशरथ के चार लड़के थे। राम और उन्ही के सदृश लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न इनमे कुछ मानसिक गुण थे जिनकी सहायता से वह दशरथ के राज्य को विस्तृत और समृद्धिशाली बना सके। शाहजहां के चार पुत्र थे दारा और उसके सदृश सुजा की कमी थी अत सुसमृद्ध मुगल राज्य शीघ्र ही छिन्न भिन्न हो गया।

इन्ही गुणो का वेदमन्त्र मे वर्णन है। एक एक करके देखिये पहला है— सत्य बृहद। अत्यन्त सत्यप्रियता अर्थात् असत्य से घोर अप्रीति। ऋग्वेद मे आया है सत्येनोत्तभिता भूमि (ऋग्वेद १० ८५ १) अर्थात् सत्य भूमि को ऊपर उठाये हुए है उसे गिरने नहीं देता।

यहा सत्य कोई लोहे का खम्भा नहीं है। न शेषनाग का फन है। न कोई अटलस जैसा कोई देव है जो भूमि को कन्धे पर उठाये रखता हो। यहा तो भूमि पर रहने वाले मनुष्यो के मानसिक गुण से अभिप्राय है। सत्यनिष्ठ लोग दरिद्र देश को भी श्री सम्पन्न बना देते हैं और असत्यनिष्ठ लोग सम्पन्न देश की सम्पदा को भी नष्ट कर देते हैं। सत्य का एक विशेषण बृहद् यों तो सभी सत्य को अच्छा समझते हैं परन्तु व्यवहार मे सत्य को कम मान्यता दी जाती है। हर व्यापारी का विश्वास है कि सत्य से व्यापार नष्ट हो जाता है। हर वकील कहता है कि वकालत सत्यता से नहीं चल सकती। हर राजनीतिज्ञ कहता है कि राज करना है तो सत्य को छोड़ो। सत्य ग्रहण करना है तो लंगोटी लगाकर वन को चले जाओ। राजनीति मे सत्य का क्या काम? हा सत्य का ढिंढोरा पीटते रहो। दूसरो को उनके असत्य व्यवहार के लिए बदनाम करते रहो। भारतीय शास्त्रों मे सत्य की महिमा बहुतायत से गाई गई है। परन्तु गाजर बेचने वाले कुंजड़े से लगाकर महा धनाढ्य सेठ साहूकारो तक सभी असत्य को समृद्धि का साधन समझते हैं। इससे भारतवर्ष की उन्नति तो नहीं होगी। वेद कहता है कि पृथिवी का धारण करने वाले गुणो मे से मुख्य गुण बृहद सत्य है नकली सत्य और असली सत्य मे भेद है। क्या यह अचम्भे की बात नहीं है। सत्य की महिमा को स्थापित करने के लिए किसी ने हरिश्चन्द्र नाटक मे अनेक असत्य बातें मिला दी। क्या हरिश्चन्द्र नाटक के लिखने वाले को भी यह विश्वास था कि असत्य का मिश्रण किये बिना नाटक सफल नहीं होगा? असत्य की विफलता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि लाखो करते हैं परन्तु इन नाटकों ने संसार के असत्य व्यवहार मे कमी तो नहीं की। केवल धनो द्वारा धन प्राप्ति ही तो नाटक की सफलता नहीं है। इसी प्रकार वैज्ञानिक उद्योगो के साथ साथ यदि सत्य का प्रचार नहीं होता तो देश के सम्पन्न और कल्याण समृद्ध होने मे सन्देह ही है।

दूसरा गुण है ऋतम् उग्र। ऋत का अर्थ है सृष्टि के नियमों का सहयोग। सृष्टि किसी को अपने नियमो का असहयोग करने नहीं देती। जो ऐसा करता है तुरन्त उसे दण्ड मिलता है। आप रोटी के ग्रास को मुख के बजाय नाक से खाने लगे। तुरन्त ही दण्ड मिलेगा। सिर के बल चलना आरम्भ कीजिये। दिन में सोइये रात में जागिये। यह सब उद्दण्डता के काम हैं और उद्दण्डता के लिए दण्डित होना अवश्यम्भावी है। आजकल साइंस का युग है। ऋत को विस्तारपूर्वक जानने का यत्न किया जाता है। सृष्टि के नियमों की नित्य प्रति खोज हो रही है। परन्तु अपने जीवन मे उसका उपयोग नहीं करते। डाक्टर होकर ऐसे आचरण या आहार व्यवहार करते हैं कि जो विज्ञान के सर्वथा विपरीत है। इससे देश और जाति को हानि होती है। कोई ऋत यह नहीं बताता कि सिगरेट पीना उपयोगी है कोई 'ऋत यह आज्ञा नहीं देता कि स्त्रियां होठों को रंगा करें या कमर को इस प्रकार कसा करें कि उनके पेट की नसें निबल हो जाय या ऊंची एड़ी के जूते पहना करें। विज्ञान-समुन्नत देशों के आचार व्यवहार बताते हैं कि यदि जंगली देशो मे ऋत का पालन नहीं किया तो यह उनके अज्ञान के कारण था। जब मनुष्य मे ज्ञान की वृद्धि हो जाए फिर भी जानबूझकर ऋत से असहयोग किया जाय तो दण्डित होना ही पड़ेगा।

तीसरा गुण है दीक्षा। यजुर्वेद मे कहा है—

> व्रतेन दीक्षामाप्नोति
> दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
> दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति
> श्रद्धया सत्यमाप्यते।
>
> (यजुर्वेद अध्याय १९ मन्त्र ३०)

उत्तम अधिकार किया है। जब मनुष्य शुभ कार्यों के लिए व्रत धारण करता है तो उसको उस काम के करने का अधिकार प्राप्त हो जाता है। जब तक किसी देश मे इस प्रकार के उच्च मनुष्य उत्पन्न नहीं होते जो निःस्वार्थभाव से देश सेवा के लिए दृढ़ संकल्प हो जावें उस समय तक देश की उन्नति संदिग्ध रहती है। यों तो देश मे करोड़ो मनुष्य रहते हैं खाते हैं पीते हैं मौज उड़ाते हैं परन्तु देश या जाति उनके आश्रय नहीं है। जैसे देश मे करोड़ो पशु पक्षी कीट पतंग रहते हैं उसी प्रकार वह भी रहते हैं। कोऊ नृप होय हमें का हानि। धार्मिक लोग रहें या अधार्मिक देश रहे या नष्ट हो जाय मेरे मकान में चिड़ियां घोसला रखती हैं चूहे बिल बनाते हैं मकड़ी जाला पूरती हैं, परन्तु उनमे से किसी को मकान की चिन्ता नहीं। घर गिर जाये तो वे गिरे हुए मकान के खंडहर मे रहेंगे। या अन्यत्र भाग जायेंगे। मकान के धारण करने वाले वह पशु पक्षी नहीं हैं। इसी प्रकार देश की रक्षा का भार भी व्रत हीन और दीक्षा हीन मनुष्यो के ऊपर नहीं है। लोग जब लोकसभाओ या पार्लियामेण्ट के सदस्य चुने जाते हैं तो उनको शपथ लेनी होती है कि हम जो कुछ करेंगे केवल देशहित की दृष्टि से करेंगे अपने व्यक्तित्व परिवार दल या सम्प्रदाय की भावनाओं को बीच मे न आने देंगे। यह व्रत लेना ही उनकी दीक्षा है। व्रत के पश्चात् ही वे पार्लियामेण्ट की सदस्यता के अधिकारी होते हैं। अब यदि उन्होने दीक्षा भी ले ली और अधिकार भी प्राप्त हो गया परन्तु यदि स्वार्थ या अज्ञानवश उन्होंने इसको निबाहा नहीं तो देश शीघ्र ही नष्ट हो जायेगा। क्योंकि व्रत या शपथ का मुंह से लेना अथवा कागज पर हस्ताक्षर कर देना तो आसान है परन्तु जब स्वार्थ और देशहित मे विरोध आता है तो स्थिर रहने के लिए तीन और गुणो की आवश्यकता है तप की ब्रह्म की और यज्ञ की। तप का अर्थ है कर्तव्य पालन करने मे जो कठिनाइयां आवें उनको सह सकना। अपने मन के अनुकूल बात होने पर तो सभी सच बोलते हैं परन्तु जब सच बोलने से अपने स्वार्थ मे बाधा पड़ती हो उस समय सच बोलना कठिन हो जाता है। स्वार्थ होते हुए न्याय तो सभी कर सकते हैं परन्तु शत्रु के साथ न्याय करने मे संकोच न कर वही देश का उद्धार कर सकता है। काम क्रोध लोभ मोह का वशीभूत पुरुष कभी देश या जाति की रक्षा करने मे समर्थ नहीं हो सकता। तप वही कर सकता है जो ब्रह्म अर्थात् अध्यात्म और यज्ञ अर्थात् आत्म-त्याग या आत्म समर्पण मे विश्वास रखता हो। अध्यात्म को भूलकर जो केवल भौतिकवादी हैं वे विषयो मे शीघ्र फंस जाते हैं। मनुस्मृति मे क्षत्रियो के लक्षण गिनाते हुए एक मुख्य लक्षण यह भी दिया है कि विषयों में आसक्ति न हो। राजे का

★ वचन-सन्देश ★

उपासना

उपासना शब्द का अर्थ समीपस्थ होना है। अष्टाङ्ग योग से परमात्मा के समीपस्थ होने और उसको सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी रूप से प्रत्यक्ष करने के लिए जो जो काम करना होता है, वह सब करना चाहिए।

जो उपासना का आरम्भ करना चाहे उसके लिए यही आरम्भ है कि वह किसी से वैर न रक्खे, सर्वदा सबसे प्रीति करे, सत्य बोले, मिथ्या कभी न बोले, चोरी न करे सत्य व्यवहार करे, जितेन्द्रिय हो, लम्पट न हो और निरभिमानी हो, अभिमान कभी न करे।

राग द्वेष छोड़ भीतर और जलादि से बाहर पवित्र रहे, धर्म से पुरुषार्थ करने से लाभ मे न प्रसन्नता और हानि मे न अप्रसन्नता करे, प्रसन्न होकर आलस्य छोड सदा पुरुषार्थ किया करे, सदा दुःख सुखो का सहन और धर्म ही का अनुष्ठान करे अधर्म का नही। सर्वदा सत्य शास्त्रो को पढे पढावे, सत्पुरुषो का सङ्ग करे और ओ३म् इस एक परमात्मा के नाम का अर्थ विचार कर नित्य प्रति जप किया करे। अपने आत्मा को परमेश्वर की आज्ञानुकूल समर्पित कर देवे।

जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नही करता वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है, क्योकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवो को सुख के लिए दे रक्खे है उसका गुण भूल जाना, ईश्वर ही को न मानना कृतघ्नता और मूर्खता है।

—महर्षि दयानन्द

सम्पादकीय

पहले धूंए और धमाकों का इलाज कीजिए

पजाब की धरती के वे गीत जिनमे गाया जाता था कि सोने की धरती है चादी सा पानी, घर-घर मे गूजती है गुरुओ की वाणी। अब वहा आग है, धुआ है, चारो तरफ स्तब्धता है। गीत सो गए हैं, उनके गाने वालो के होठ कड़ुवाहट से तिक्त हैं। हर कोई एक दूसरे को सन्देह की नजर से देखता है। घटनाचक्र बडी तेजी से घूमता है कल के विषय मे सब कोई आशकित और आतकित हैं। जिन्होने धुए और धमाको खून और लाशो का व्यापार विगत कई वर्षो से शुरू किया है, वे खूनी दरिन्दे चाहते हैं चारो तरफ आतक ही आतक हो हिन्दू तडफडाते छटपटाते पजाब से बाहर और बाहर के सिख अपने को असुरक्षित समझ पजाब जाने के लिए एकाएक तयार हो जाय। यह आतकवाद अपनी जड पाताल तक पहुचा चुका है। एक ही समय एक ही दिन अनेक प्रान्तो मे विस्फोट तथा सवेदनशील, महत्त्वपूर्ण स्थानो पर भी बमो का पाया जाना उग्रवादियो के इरादा और उनके होसलो का तथा उनके सशक्त गिरोह का जीता जागता प्रमाण है।

उग्रवादियो पर सैनिक कार्यवाही को एक वर्ष होने जा रहा है, उग्रवादी बौखलाए हुए है उनकी पशाचिक मानसिकता निर्दोष मासूम लोगो के खून की होली खेलना चाहती है। घल्लू घारा करने की उनकी तैयारिया पूर्ण है उनके खतरनाक सकेत भी मिल है। हिन्दुस्तान के एक सवाददाता के अनुसार शून्य एक, शून्य दो और शून्य तीन। ये है कुछ उग्रवादियो के कुछ गुप्त सकेत जिनका प्रयोग उग्रवादी अपनी हिंसात्मक कार्रवाईयो को सचालित करने मे करगे। इनका प्रयोग आसन्न घल्लूघारा सप्ताह के दौरान होगा। चुन हुए इलाको और लक्ष्यो पर सकेत मिलते ही उग्रवादी सक्रिय हो जायगे और खून-खराबा मचायगे। शून्य एक का अर्थ है एक समुदाय के (हिन्दुओ) लोगो की हत्या। शून्य दो का अर्थ है रेल पटरियो पर बम रखना और शून्य तीन का अर्थ है कुओ मे जहर डालना—इन गुप्त सकेतो से उनके अत्यधिक खतरनाक इरादो का अन्दाज लगाया जा सकता है। वे इससे भी कही बढ-चढकर खोवर हैं। आम नागरिक इस हालत को साक्षी भाव से देख रहा है लकिन धीरे-धीरे साधारण नागरिको के मन मे भी लावा बहने लगा है। लोग अपने आपको असुरक्षित समझने लगे हैं। उनकी भृकुटिया तनने लगी हैं और मुट्ठिया कसने लगी हैं। अब समय आ गया है, सरकार इन हत्यारो को इन देश द्रोहियो को कठोर दण्ड देकर आम नागरिक के मन मे सुरक्षा की भावना जगाये अन्यथा देश गृहयुद्ध के कगार पर जा पहुचेगा।

सैनिक कार्रवाई के दौरान जो फौजी जोश मे आकर अपनी छावनियो से निकल पड थे उनमे से ५०० सैनिक पकडे नही जा सके उन प्रशिक्षित सैनिको का खतरा भी कम नही है। उनका पकडा न जाना भी प्रशासन के निकम्मेपन का सबूत है। गृहमन्त्री ने रहस्योद्घाटन किया है कि बहुत बडी सख्या मे ऐसे पाकिस्तानियो को गिरफ्तार किया गया है जो सिखो का भेष धारण कर भारत मे घुस आये थे। सरकार ने सिख छात्र सघ और अकाली दल के सिरफिरे सदस्यो को अच्छी बडी सख्या मे पुन गिरफ्तार कर लिया है और आतक विरोधी कानून भी पारित कर लिया है आशा है इससे उग्रवाद पर काबू पाने मे सफलता मिलेगी। गृहमन्त्री की आशाओ के प्रति हमारी सहानुभूति भी है परन्तु राजदण्ड जैसा कठोर होना चाहिए वह दिखाई नही पड रहा है। श्री चव्हाण कहते हैं हम बातचीत के द्वारा समस्या का समाधान चाहते हैं वास्तविकता तो यह है कि अकालियो की प्रमुख माग मानी जा चुकी हैं लेकिन फिर भी समस्या मु ह बाये ज्यो की त्यो और ज्यादा बढ-चढकर सामने खडी है। यह सुविचारित मत है कि पजाब मे अगर कोई समस्या है तो वह उग्रवादियो के कारण है और आतकवाद से ही पैदा हुई है। इसलिए समस्या है उग्रवाद और गुण्डागर्दी, इसका हल राजनैतिक वार्ता से सम्भव नही है समाज विरोधी तत्त्वो से निपटने के लिए दण्ड की आवश्यकता है। आतकवादी पजाब और निकटवर्ती राज्यो मे व्यापक हिंसा भडका कर देश की एकता और अखण्डता को नष्ट करना चाहते हैं। ऐसे तत्त्वो से बातचीत करने से कोई लाभ नही निकल सकता।

सैनिक कार्रवाई की वर्षगाठ पर उनकी योजना बडी खतरनाक है परन्तु प्रशासन यदि सतर्क रहे तो आतकवादी कुछ भी नही कर पायेगे। अब तक दिल्ली मे जो भी आतकवादी गिरफ्तार हुए हैं वे आम नागरिको की सतर्कता और सराहनीय प्रयत्नो से ही सभव हुआ है। पुलिस तो केवल महत्त्वपूर्ण सुराग हाथ लगे हैं इसी को विज्ञापित करती रही है। ये महत्त्वपूर्ण सुराग पुलिस को छोडकर अन्य सब की समझ के बूते से बाहर हैं। अत सरकार को ध्यान रखना चाहिए कुछ मुट्ठी भर सिरफिरे पूरे समाज को आतकित कर सकते हैं। साम्प्रदायिक विद्वेष की आग भडका सकते हैं। इसलिए उग्रवाद का इलाज पहले करना होगा।

तरुणमञ्च--

आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठो का अनावरण

आर्यवीर की वीरगाथा—१

लेखक प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन, अबोहर

आर्यसन्देश साप्ताहिक के उत्साही विद्वान् सम्पादक जी की प्रेरणा से यह नया स्तम्भ आरम्भ किया जा रहा है। हम इस लेखमाला मे आर्यसमाज के इतिहास की प्रेरण प्रद कहानियो द्वारा आर्य जाति के रक्त को गर्माने का यत्न करेगे। इस लेखमाला मे आर्यसमाज के ज्ञात अज्ञात सेवको के जीवन की घटनाएँ दी जायेगी। इतिहास का सुरक्षित रखने की यह एक उत्तम विधि है। हम इसमे जो कुछ भी लिखेगे सप्रमाण होगा।

प्रसिद्ध काकोरी केस के अभियुक्त प्रणवीर म श्री प० रामप्रसाद जी 'बिस्मिल' के सम्बन्ध मे तो बहुत से भाई जानते है कि वह एक दृढ आर्यसमाजी थे परन्तु उनके सहयोगी ठाकुर रोशनसिंह जी के बारे मे आर्यसमाज के सब लोगो को भी आज यह ज्ञान नही कि वह भी एक सिद्धान्तनिष्ठ ईश्वर भक्त आर्य पुरुष थे। वह काल कोठरी मे ही थे तो उनके पूज्य पिता जी चल बसे। यह समाचार सुनकर उनके नयनो से एक अश्रु भी न गिरा। केवल इतना ही कहा 'तत् सत् तत् सत तत सत।

फासी दण्ड सुन कर भी उन्होने संध्योपासना वा व्यायाम के नियम को पूर्ववत् निभाया। फासी पाने से कुछ समय पूर्व भी सन्ध्या वा स्नान करके उन्हें दण्ड पेलते देखकर जेल अधिकारी दग रह गया।

फासी पाने से लगभग एक सप्ताह पूर्व अपने मित्र को लिखे पत्र मे आपने यह मार्मिक बात लिखी, 'ससार मे जन्म लेकर मरना तो अवश्य है। ससार मे कुकर्म करके मनुष्य अपने आप को अपकीर्ति का भागी न बनाये और मरते समय ईश्वर का ध्यान रखे। यही दो बातें होनी चाहिए। ईश्वर की कृपा से ये दोनो बातें मेरे साथ हैं इसलिए मेरी मृत्यु किसी प्रकार भी शोकजनक नही है। दो वर्ष से बाल बच्चो से पृथक हूँ। इस अवधि मे ईश्वर की उपासना का बहुत अच्छा अवसर मिला।'

यह ऐतिहासिक पत्र तो आजकल की पुस्तको मे मिलता नही। इन वीरों के बलिदान के समय छपी एक पुस्तक मे यह छपा था। वह पुस्तक विदेशी शासन ने जब्त कर ली थी।

वीर रोशनसिंह को प्रयाग मे फासी दी गई। आज उस स्थान पर जवाहर लाल जी की माता के नाम पर मैडीकल कालेज है। इनके शव की शोभा यात्रा तो निकालने की अनुमति न मिली परन्तु यह उसी पुस्तक मे लिखा है कि इनका अंतिम सस्कार आर्य सामाजिक रीति से किया गया।

इनके अन्तिम सस्कार की एक कहानी है। इनका सुपुत्र महाविद्यालय [illegible]

वहा आर्यसमाज चौक प्रयाग मे आया और कहा कि मेरे पिता जी का अन्तिम सस्कार वैदिक रीति से ही होगा। सस्कार कौन करवायेगा ? नगर मे दमनचक्र चल रहा था तथापि श्री विश्वप्रकाश जी (प० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय जी के द्वितीय सुपुत्र) ने कहा, "मैं चलता हूँ। मैं करवाऊगा।'

विश्वप्रकाश जी ने १९७१ ई० मे हमे सगर्व बताया था कि रक्त साक्षी श्री रोशनसिंह का अन्तिम सस्कार मैंने करवाया था।

उसी अलभ्य पुस्तक मे लिखा है कि ठाकुर जी पवित्र ओ३म्' शब्द का उच्चारण करते हुए हसते हसते फासी पर झूल गये।

पाठक वृन्द! जब लोग क्रांतिकारियो के शव के समीप भी नही फटकते थे, उस युग मे क्या कोई साधारण सी बात थी कि दिन जले आर्यवीर बडे जोश से सस्कारविधि हाथ मे लिये उनके अंतिम सस्कार को पहुच जाते थे।

जब राजेन्द्र लाहडी फासी पर चढे — वीर रामप्रसाद वा ठाकुर रोशनसिंह के एक साथी राजेन्द्रनाथ जी लाहडी थे। वह उच्च शिक्षित युवक थे। अन्तिम दिनों मे उन्हे गोडा के जेल मे रखा गया। वह भी बडे ईश्वर विश्वासी थे। फासी दण्ड पाने से पूर्व गीता या उपनिषदो का पाठ करते रहे।

आपने अन्तिम इच्छा व्यक्त की कि उनका दाह कर्म हिन्दू रीति से किया जाय। काकोरी के शहीदों पर छपी उपरोक्त ऐतिहासिक पुस्तक मे यह छपा मिलता है कि गोडा के जो लोग उनके शव के साथ श्मशान भूमि मे गये— 'उनमे अधिकतर आर्यसमाजी सज्जन थे।'

उसी पुस्तक मे लिखा है कि आर्यसमाजी लोग वीर शहीद राजेन्द्र लाहडी की अर्थी के साथ ऊचे स्वर से वेद मन्त्रो का उच्चारण करते हुए 'भारत माता की जय—भारत माता की जय' के जयकारे लगाते हुए श्मशान भूमि मे पहुँचे। इस प्रकार निर्भीक आर्य वीरों ने देश के इस सपूत का अन्तिम सस्कार किया।

आर्यसमाज के इतिहास की ऐसी कितनी ही महत्वपूर्ण घटनाए हैं, जिनकी चर्चा आर्यसमाज से बाहर वाले तो करने से रहे। आर्यसमाज का इतिहास लिखने वालो को भी इनका ज्ञान नही। हम चाहते हैं कि आर्यसमाज की वेदी से जो कुछ कहा जाये सप्रमाण हो। ऐसे तथ्यो की रक्षा करना इतिहास की बहुत बडी सेवा है।

और गाडी उलट गई —अभी कल की बात है आर्यसमाज के उत्सवों वा नगर कीर्तनो में हमे खडतालें बजाते हुए मस्ती से गाने वाले एक सन्यासी को सुनने का सौभाग्य प्राप्त होता था। वह सन्यासी थे ऋषि भक्त स्वामी बेधडक जी। वह हरियाणा के एक छोटे से ग्राम में एक दलित परिवार में जन्मे थे। आर्यसमाजी क्या बने एक अग्रिम पुरुष बन गये। देश धर्म के लिए कोई दस बार जेल गये।

वह हमे बताया करते थे कि प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् वह प्रथम बार गांधी जी की पुकार पर जेल में गये। अबोहर से कोई आठ मील की दूरी पर दोतारां वाली ग्राम मे उन्होंने गिरफ्तारी दी। तब आपने अपना नाम गिरजानन्द रखा हुआ था। इस क्षेत्र में यह प्रथम राजनैतिक गिरफ्तारी थी। पुलिस ऐसा दुर्व्यवहार करती थी कि स्वामी जी को रस्सो से बाध कर पुलिस ने अपनी गाडी के पीछे कस कर बांध लिया। कुछ दूर ही गये थे कि गाडी उलट गई। मुसलमान थानेदार लालू को बहुत चोटें आईं। ईश्वर का विधि विधान देखें कि हमारे स्वामी जी को एक भी चोट न आई। थानेदार ने कर जोड क्षमा मागी कि 'बाबा जी आप की बददुआ से "मुझे चोटें आई हैं।' स्वामी बेधडक जी ने कहा, "मैंने तो तेरे दुर्व्यहार के कारण तेरा बुरा नही मागा। मैं तो इन यातनाओ को देशहित मे हस हस कर सहन कर रहा हू।" आइए! इन आर्य वीरो का स्मरण कर देश मे हिंसकों वा क्रूर लोगों से लोहा लें। (क्रमश)

वह देव भूमि भारत यही है

जहाँ सभ्यता का सर्वप्रथम उदय हुआ था
सभ्यताओ की जननी भारत भूमि यही है
जहा ज्ञान का सब से पहले प्रकाश हुआ था
वह वेदो की भूमि भारत यही है

जहा विद्या का आदिकाल से सम्मान रहा
वाल्मीकि वेदव्यास की भारत भूमि यही है
जहां विज्ञान का प्रारम्भ से प्रचलन रहा
कपिल कणाद ऋषियों की जन्म भूमि यही है

जहा सत्यवादिता की रही सदैव मान्यता
हरिश्चन्द्र, युधिष्ठिर सत्यवादियो की भारत भूमि यही है
जहाँ दानशीलता की सदैव रही प्रतिष्ठा
कर्ण भामाशाह दानियों की भारत भूमि यही है

जहाँ युगपुरुषो का होता रहा सदैव पदार्पण
राम, कृष्ण, दयानन्द की भारत भूमि यही है
जहा जन्म लेने के लिए लालायित रहे देवता
वह देवभूमि भारत यही है।

—शकुनचन्द विशारद, लालगञ्ज, जि० रायबरेली(उ० प्र०)

अमृत-कलश

जो-जो भी कोशिश कर करके हिम्मत की पींग बढाता है।
इस आलम मे सरदार बने, बढ-चढ के शोभा पाता है॥

वह कौन सा उकदा है जो वा हो नही सकता।
हिम्मत करे इन्सान तो क्या हो नहीं सकता॥

गिरे सौ बार भी बिजली अगर किश्ते-तमन्ना पर।
जो हिम्मतदार हैं मायूस कब होते हैं हासिल से॥

सिर जाता हो कटाइये पर दम न मारिये।
मंजिल हजार दूर हो, हिम्मत न हारिये॥

विश्वरत्न

स्वातन्त्र्य-वीर सावरकर

नरेन्द्र अवस्थी—सचालक आर्यवीर दल, दिल्ली प्रदेश

श्री विनायक दामोदर सावरकर का परिचय प्रखर राष्ट्रभक्ति के धधकते ज्वालामुखी, क्रान्तिकारियों के हृदय सम्राट् के रूप में, अण्डमान की काल-कोठरी में नारकीय यातनाए सहते हुए भी साहित्य सृजन मे रत रहने वाले, हिन्दुत्व के मन्त्रद्रष्टा के रूप में तो देशवासियो को ज्ञात ही है पर वीर और स्वातन्त्र्यवीर उपाधि से विभूषित सावरकर जी इस युग के महान साहित्यकार भी थे। हिन्दुत्व, हिन्दु पादशाही १८५७ का भारतीय स्वातन्त्र्य समर, जोसेफ मैजिनो, सिखों का स्फूर्तिदायक इतिहास, माझी जन्मठेप, रान्फुले, गोमान्तक उत्शाप सन्यस्त खड्ग नेपाल मराठी भाषा की शुद्धि, उत्तरक्रिया, काला पानी आदि अन्त-र्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित ग्रन्थों के रचयिता हैं। वीर सावरकर केवल भारत के रत्न ही नही वो तो विश्वरत्न थे।

भारत के ही नही विश्व के इस अनूठे क्रान्तिकारी जिसने अपने महान् त्याग से स्वराज्य एव स्वधर्म को सजीवता प्रदान की भारत के पुनर्जागरण मे ठोस चिन्तन प्रदान करने वाले इस युग पुरुष को जीवन के हर क्षेत्र मे अग्रणी पाते है। (१) वीर सावरकर भारत का पहला छात्र था जिसे देशभक्ति के आरोप मे कालेज स निष्कासित किया गया। (२) वीर सावरकर प्रथम युवक था जिसने सर्वप्रथम विदेशी वस्त्रों की होली जलाने का साहस किया। (३) वीर सावरकर विश्व का पहला बैरिस्टर था जिसे परीक्षा पास होते हुए भी प्रमाण-पत्र नही दिया गया, (४) वीर सावरकर पहला भारतीय युवक था जिस ने लन्दन के अन्दर १८५७ के तथाकथित गदर को भारतीय स्वातन्त्र्य सग्राम का नाम दिया तथा १० मई १९०७ को १८५७ का अर्ध शताब्दि समारोह स्वतन्त्रता दिवस के रूप में मनाया। (५)वीर सावरकर विश्व के प्रथम लेखक हैं जिनकी पुस्तक १८५७ का स्वातन्त्र्य समर' को प्रकाशन स पूर्व ही जब्त कर लिया गया। जिसकी केवल एक प्रति उन दिनो दो सौ रुपये मे ब्राजील के एक पाठक न खरीदी थी और जिसे कालान्तर में क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर, शहीद ए-आजम भगतसिंह व नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने प्रकाशित कर प्रचार किया। (६) वीर सावरकर प्रथम भारतीय हैं जिनका अभियोग हेग के अन्त-र्राष्ट्रीय न्यायालय में चला (७)वीर सावरकर प्रथम क्रान्तिकारी थे जिन्हें दो आजन्म कारावासों (५० वर्ष की जेल) के दण्ड दिये गये (८) वीर सावरकर प्रथम देशभक्त हैं जिन्हें २७ वर्ष पर्यन्त बन्दी जीवन बिताना पडा और जेल मे ही अपना सम्पूर्ण यौवन गवाना पडा। कोल्हू मे बैल की जगह जुतना पडा, चूने की चक्की चलानी पडी राम बास कूटना पडा और कोडो की मार भी सहनी पडी।

(९) वीर सावरकर पहला कैदी था जिसने अण्डमान (कालेपानी) मे जेल की दीवारो पर कील की लेखनी से (कागज कलम के अभाव मे) ही साहित्य सृजन किया। (१०) वीर सावरकर प्रथम मेधावी है जिन्होने काले पानी का मजा काटते हुए, दस सहस्र पक्तिया को कण्ठस्थ करके यह सिद्ध कर दिया कि सृष्टि के आदिकाल मे आर्यों ने वाणी द्वारा वेदो को किस प्रकार जीवित रखा। (११) राष्ट्र के पुर्ननिर्माण मे भारत का उद्योगीकरण राष्ट्र का सैनिकीकरण व राजनीति का हिन्दूकरण' का ठोस कार्यक्रम प्रस्तुत किया। (१२) वीर सावरकर भारत का प्रथम दूरदर्शी राजनीतिज्ञ है जिन्हान १९५७ म शत्रु पक्ष को चेताया और उनकी हर भविष्यवाणी समय की कसौटी पर खरी उतरी।

महान् क्रान्तिकारी की प्रेरक जीवनी, उन द्वारा लिखित अन्य पुस्तकें प्राप्ति हेतु व उनके चिन्तन की गोष्ठियो के माध्यम से ग्रहण करने हेतु मिलें या पत्र व्यवहार करें।

२८ मई १९८५ को क्रान्तिकारियो के प्रेरणास्रोत स्वातन्त्र्यवीर सावरकर का जन्म दिवस था। वीर सावरकर युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द जी के चिन्तन से अत्यधिक प्रभावित थे। मराठा अग्रजी दनिक मे उन्होने महर्षि दयानन्द पर एक लेखमाला भी लिखी। महान क्रान्तिकारी देशभक्त श्याम जी कृष्ण वर्मा के परम शिष्य वीर सावरकर ने १९०६ मे हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बनाने की घोषणा की और उर्दू को मात्र मुसलमानो तक सीमित रखने की बात कही। उन्होने अण्डमान की जेल मे ही बन्दियो को हिन्दी पढाना प्रारम्भ किया। वे बन्दी साथियो को सत्यार्थप्रकाश सुनाते थे। उनका जेल मे हिन्दी प्रचार बहुत सफल रहा। जहा पहले जेल के कार्यालय का काम ९० प्रतिशत उर्दू मे होता था उनके प्रयासो से नागरी लिपि मे होने लगा। उन्होने आजादी के बाद परमाणु बम बनाने की माग रखी। उनके तीन नारे राजनीति का हिन्दूकरण, हिन्दुओ का सैनिकीकरण' व देश का उद्योगीकरण यदि हिन्दू अमल मे लाए होते तो आज राष्ट्र की अखण्डता को चोट न आती भारत तीसरी शक्ति बनकर विश्व के मानचित्र मे उभरता।

किशोरमञ्च—

वीर बालक बादल

उस समय दिल्ली की गद्दी पर अला-उद्दीन खिलजी बादशाह होकर बैठा था। यह बहुत धूर्त तथा निष्ठुर बादशाह था। राजपूताने मे चित्तोड के सिंहासन पर उस समय राणा भीमसिंह विराजमान थे। अलाउद्दीन ने सुना कि राणा की महा-रानी पद्मिनी बहुत ही सुन्दर है। वह पद्मिनी को किसी भी प्रकार पाने के लिए बडी भारी सेना लेकर राजपूताने गया और चित्तोड से थोडी दूरी पर उसने अपनी सेना का पडाव डाला। उस धूर्त ने राणा के पास सदेश भेजा—'मैं पद्मिनी का प्रतिबिम्ब शीशे मे देखकर लौट जाऊगा' महाराणा भीमसिंह ने इतनी बात के लिए व्यर्थ रक्तपात करना अच्छा नही समझा। उनके बुलाने पर अलाउद्दीन दुर्ग मे आया। दर्पण मे रानी पद्मिनी का प्रतिबिम्ब उसे दिखा दिया गया। लौटते समय राणा उस दुर्ग से बाहर तक पहुचाने आये। दुर्ग से बाहर अलाउद्दीन ने पहले से अपने सैनिक छिपा रखे थे। उन्होने राणा पर आक्रमण करके उन्हे पकड लिया और बन्दी बनाकर अपने शिविर मे ले गये।

राणा के बदी हो जाने से चित्तौड के दुर्ग मे हाहाकार मच गया। बादशाह की सेना इतनी बडी थी कि उससे सीधे सग्राम करके विजय पाने की कोई आशा नही थी। अन्त में रानी पद्मिनी के मामा गोरा ने एक योजना बनायी। अलाउद्दीन को सदेश भेजा गया—रानी पद्मिनी बादशाह के पास आने को तैयार है, यदि उनके आ जाने पर बादशाह राणा को छोड दें। रानी के सग सात सौ दासियाँ भी आयेगी। शाही सैनिक उन्हें रोके नही। बादशाह ने इस बात को बडे उत्साह से स्वीकार कर लिया। सायकाल अन्धकार होने पर दुर्ग स सात सौ पालकियाँ निकलीं। बादशाह के सैनिक विजय के उन्माद मे उत्सव मना रहे थे। शाही सेना मे पहुच कर रानी ने पहले राणा से भेंट करनी चाही और यह माग भी स्वीकार हो गयी। आप क्या सोचते हैं कि रानी पद्मिनी पालकी मे बैठकर आयी थी? पालकी मे रानी बना स्त्री वेश मे छिपा अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित रानी का बारह वर्ष का सुन्दर भानजा बालक बादल वहा आया था। दूसरी पालकियो मे भी राज-पूत यो ही बैठे थे और पालकी उठाने वाले कहारो के वेश मे भी राजपूत योद्धा ही थे। राणा को मुक्त करके घोडे पर बैठा कर कुछ सैनिको के साथ दुर्ग का ओर उन्होने भेज दिया और स्वय अलाउद्दीन की सेना पर शस्त्र लेकर टूट पडे। गोरा इस सेना का सेनापतित्व सभाले था। बादल ने इस युद्ध मे अद्भुत वीरता दिखलायी। लेकिन मुट्ठीभर राजपूत समुद्र के समान विशाल शाही सेना से कब तक लडते। गोरा रणभूमि मे खेत रहा। दोनो हाथो से तलवार चलाकर यवन सैनिको को गाजर मूली की भाति काटता हुआ बालक बादल दुर्ग मे पहुँच गया। अलाउद्दीन चाहता था कि इस युद्ध का समाचार दुर्ग मे न पहुचे। अचानक आक्रमण करके वह पद्मिनी को पकडकर दिल्ली ले जाना चाहता था किन्तु उस बारह वर्ष के बालक ने उसकी एक भी चाल चलने नही दी। दुर्ग मे समाचार पहुँचते ही राजपूत वीरों ने केसरिया बाना पहना और निकल पडे धर्म एव मातृभूमि पर मस्तक चढाने। बडी कठि नाई से अलाउद्दीन को विजय प्राप्त हुई। अपनी अधिकाश सेना की बलि देकर जब वह चित्तौड के पवित्र दुर्ग मे घुसा तब वहा बहुत बडी चिता धाँय धाँय करके जल रही थी। राजपूताने की देवियाँ पापी पुरुष के स्पर्श से बचने के लिए अग्नि मे प्रवेश करके स्वर्ग पहुच चुकी थी। अला उद्दीन ने अपना सिर पीट लिया। भारत की वह गौरवमयी दिव्य भूमि सतियों के तेज के साथ वीर बालक बादल की शूरता एव बलिदान से नित्य उज्ज्वल है। बच्चो हमे ऐसे वीरो से शिक्षा लेकर अपनी मातृभूमि एव सस्कृति की रक्षा का व्रत लेकर सुरक्षा करनी है। अपना भविष्य उज्ज्वल बनाना और दुनिया के सामने अपना मस्तक ऊचा रखना है।

—प्रस्तोता बलजीत शास्त्री

यज्ञ - विज्ञान

लेखक श्री प० वीरसेन वेदश्रमी वेद विज्ञानाचार्य

१ वेद विद्या एव विज्ञान का भडार है–

वेद म विविध प्रकार का विज्ञान है। यह विज्ञान यज्ञो के माध्यम से हमारे देश मे प्रचलित था और उसका अवशेष किसी न किसी रूप मे आज भी प्रचलित है। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने स्पष्ट घोषणा की कि वेद मे सब ज्ञान विज्ञान बीज रूप से है और यज्ञ को रूढीवादी गत स निकाल कर विज्ञान के सिहासन पर बैठा दिया। आज के समय मे यज्ञ की वैज्ञानिक उपयोगिता का अनुसधान योरोप और अमरिका म होने लगा है और उसके सुपरिणाम अनेक क्षेत्र मे प्रतीत होने लगे हैं।

२ यज्ञ काय वैज्ञानिक है–

वेद मे यज्ञ को विश्वभिषक कहा है। अर्थात् यज्ञ द्वारा समस्त विश्व को स्वास्थ्य आयु जीवन प्राप्त होता है और समस्त रोग तथा रोगो के कारण तत्वो का प्रदूषणो का निवारण भी होता है। अत किस परिस्थिति म कौन सा यज्ञ किस प्रकार कर इसका विचार करने से ही यज्ञ विज्ञान का विकास करने म सफलता प्राप्त होगी यज्ञ के ३ प्रधान अग हैं १ सकल्प २ मन्त्र और ३ आहुति। सकल्प के बिना यज्ञ नही हो सकता मन्त्र के बिना भी यज्ञ नही हो सकता और अग्नि मे हव्य पदार्थो की आहुति दिये बिना भी यज्ञ नही हो सकता। इन इन तीनो का समन्वित काय यज्ञ है। सकल्प होने पर ही यज्ञ सम्भव है। यही यज्ञ का आधार स्तम्भ है वेद कहता है —आनो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वत। यजुर्वेद २५।१४। अर्थात् कल्याणकारी यज्ञ करने के विचार सब ओर से प्राप्त हो। जब विचारो मे निमग्न चित्त उसे करने के लिए उद्यत हो जाता है तो वह सकल्प हो जाता है।

३ यज्ञ कार्य मे मन्त्र की प्रधानता–

लौकिक व्यवहार म मन्त्र का अर्थ विचार भी है परन्तु यज्ञ की परिभाषा मे इसका अर्थ वेद के ही मन्त्रो से प्रधान रूप से ग्रहण किया जाता है। मन्त्र ध्वन्यात्मक होते हैं। ध्वनि का प्रभाव जड चेतन जगत् पर अवश्य होता है लोक मे प्रत्यक्ष दृष्ट है कि विकृत ध्वनियो के उच्चारण एव प्रसारण से मानसिक विकृतिया उत्पन्न होती है। वीररस की ध्वनियो मे वीरता का सचार प्रेमरस की ध्वनियो से प्रेम शान्त रस की ध्वनियो स शान्ति शोकभावपूर्ण ध्वनियो से शोक का प्रसारण होता है और वह प्राणियो के मन स्तत्त्व पर प्रभाव करता है। मन के प्रभावित होने पर तदनुरूप वृत्तियो की उत्पत्ति होती है और वृत्तियो के अनुरूप ही कर्मो की प्रवृत्तिया उत्पन्न होती हैं। अत शुभ विचार पूर्ण मन्त्रो से शिव कल्याणकारी कर्मो की विश्व मे वृद्धि समृद्धि बाहुल्यता और व्यापकता अवश्यम्भावी है।

४ मन्त्र छन्दोमय है–

वेद का प्रत्येक अक्षर चरण पक्ति व सम्पूर्ण मन्त्र छन्दोमय है। उनमे सर्वशक्तिमान् परमात्मा की गुप्त शक्ति व सामर्थ्य निहित है जो यज्ञ कार्य मे क्रियाशील हो जाती है। छन्द नियत अक्षर या मात्राओ मे निबद्ध होते हैं। नियत अक्षर बद्ध छन्दो के नियत स्वरो के ध्वन्यात्मक आवर्तन से ध्वन्यात्मक मण्डल की उत्पत्ति होती है तथा उस मन्त्र के पुन पुन आवर्तनचक्र या जप से चाहे वह जप मानसिक हो या ध्वन्यात्मक उसका मण्डल उत्तरोत्तर घन वपूर्ण तथा गतिमय होकर विशालता को भी प्राप्त होता है जिससे प्राणियो मे उससे स्वाभावत वृत्तियो एव कर्ममय प्रवृत्तियो का प्रवाह चलने लगता है अत यज्ञ मे सकल्प एव तदनुकूल मन्त्रो का पुन पुन आवृत्ति से मन्त्र का प्रभाव तेज होता जाता है और छन्दात्मक मण्डलो की सृष्टि होने लगती है।

५ छन्दात्मक मण्डलो का निर्माण–

छन्द यद्यपि प्रधान रूप से ७ हैं परन्तु इन सातो छन्दो को भी प्रमुखता से तीन विभागो मे विभक्त किया है। ये तीन विभाग ही भू भुव स्व हैं। छन्द परिभाषा मे ये गायत्र मण्डल त्रिष्टुप मण्डल और जागत मण्डल हैं। इन्ही मण्डलात्मक प्रभावो की वृद्धि के लिए गायत्र छन्दमारोह त्रैष्टुभ छन्दमारोह जागत छन्दमारोह अथवा गायत्रेण त्वा छन्दसा सादयामि जागतेन त्वा छन्दसा सादयामि अथवा गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा मन्थामि, जागतेन त्वा छन्दसा मन्थामि—की प्रक्रिया का यजुर्वेद मे अनेक स्थानो पर उपदेश है। इस प्रक्रिया के द्वारा पृथ्वी अन्तरिक्ष और द्युलोक म अपने मनोवाछित विचारो की व्याप्ति की जाती है।

६ मण्डलो, देवतत्त्वो एव प्राणो का क्रियाशील एव शक्ति सम्पन्न करना–

इन मण्डलो के अग्नि वायु एव सूर्य देवतत्त्व हैं। इनको भी सतेज करने के लिए अग्नि का दूत बना कर अग्नि दूत पुरोदधे। यजुर्वेद २२ १७। यथार्थ अग्नि की स्थापना अपने सम्मुख भूर्भुव स्व मन्त्र से त्रिलोकी को प्रभावित करने के लिए करनी पडती है। पुन उक्त प्रवृद्ध यज्ञाग्नि मे तीनो महाव्याहृतियों से उनके दैवत तत्त्वो के साथ उनसे सबधित प्राण अपान और व्यान रूपी विश्व प्राणो के लिए आहुतिया दी जाती हैं। अर्थात् यज्ञ द्वारा समस्त ब्रह्माण्ड या त्रिलोकी के प्राणो को क्रियाशील शुद्ध एव पुष्ट किया जाता है। इसलिए वेद ने यज्ञ को विश्वधा असि। यजुर्वेद १।२। कहा है अर्थात् यज्ञ ससार का धारण पोषणकर्ता है। यही यज्ञ का प्रधान लक्ष्य है। जिस यज्ञ मे महाव्याहृतियो उनके दैवत तत्त्वों और उनके विश्व प्राणो के लिए आहुति नही वह यज्ञ अपूर्ण ही है।

७ यज्ञ का त्रिलोकी म गमन–

यज्ञ की यह प्रत्यक्ष एवम् अत्यन्त गूढ स्थिति है कि वह दृष्ट अदृष्ट एवम् अनुमान अर्थात् सूक्ष्म अतिसूक्ष्म एव व्यापक रूप से समस्त विश्व मे व्याप्त हो जाता है। यजुर्वेद अध्याय ५ के १५ वे मन्त्र मे यज्ञ की इस स्थिति को प्रकट किया गया है। वहा कहा गया है कि—इद विष्णु विचक्रमे—अर्थात् यज्ञ प्रारम्भ होने पर वह यज्ञ क्रमश उत्तरोत्तर गति करता हुआ। त्रेधा निदधे पदम्—पृथ्वी अन्तरिक्ष और द्युलोक अपने स्थान को प्राप्त करता है अर्थात् स्थिति को प्राप्त होता है। —समूढमस्य पासुरे—अर्थात् यज्ञ की यह स्थिति गायत्र मण्डल त्रिष्टुप मडल जागत मण्डलो मे या भू भुव स्व लोको मे अत्यन्त गूढ गुप्त एवम् अनुमानगम्य है। विज्ञानगम्य है। तात्पर्य यह है कि यज्ञ को केवल धूम की ऊचाई स नही मापा जा सकता। वायु की ऊचाई से भी नहीं जाना जा सकता। उसकी व्यापकता विद्युत् सूर्य रश्मि और प्रकाश के समान व्यापक स्थिति को समझकर जाना जा सकता है।

८ यज्ञ से सुख की प्राप्ति–

यज्ञ किये जाने पर यद्यपि वह तीनो लोकों मे व्याप्त हो जाता है परन्तु वह उन स्थानो स पुन शक्तिशाली होकर हमे सुख प्रदान करता है। ऐसा वेद मे स्पष्ट बताया है। जैसा कि—यज्ञो देवाना प्रत्येति सुम्नम्। यजुर्वेद अध्याय ८ मन्त्र ४। अर्थात् विद्वानो द्वारा आयोजित यज्ञ सुख को लाता है आ र आदित्या सो भवता मृडयन्त —अर्थात् वह सूर्यादिलोक एव सूर्यप्रकाश मे स्थित होकर हम सब को सुख प्रदान करता है। इसी प्रकार—पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। यजु० ३।४९। अर्थात् यज्ञ में भरकर आहुति देने से वह और अधिक पूर्ण होकर प्राप्त हो जाती है। किस प्रकार से प्राप्त हो जाती है उसके लिए मन्त्र के द्वितीय चरण में उदाहरण यह प्रस्तुत किया है कि जैसे बाजार मे खरीदते हैं वैसे ही यज्ञ के द्वारा भी सुखों को खरीदते हैं। अर्थात् यज्ञ से सुखो की प्राप्ति प्रत्यक्ष क्षेत्र में होती है। अत प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में यज्ञ का अनुष्ठान अवश्य करना चाहिए।

९ यज्ञ का महान् फल विश्व मे माधुर्यता का प्रसार–

यजुर्वेद अध्याय १३ के २७ से २९वें मन्त्रो मे बताया है कि यज्ञ के सम्पन्न होने से माधुर्य गुणयुक्त अर्थात् अनुकूल वायुओ का प्रवाह चलने लगता है। नदियो मे झरनो मे मधुर रस का सचार होता है और अन्न वृक्ष वनस्पति वनादि विष रहित रोग रहित होकर सब मधुयुक्त जीवनदायी हो जाते हैं। यज्ञ करने से रात्रि और दिन सुन्दर उषा ये सब सुखकारी हो जाते हैं। पृथ्वी के कण कण मे धूलि मे मधुरता उत्पन्न होती है मधुरता उत्पन्न होने धूल में जो विशृखलता है वह नष्ट होकर परस्पर आकर्षण से रेगिस्तान भाग उर्वर भूमि मे परिवर्तित होने लगता है और रेगिस्तान स्थिति नष्ट होने लगती है तथा द्युलोक जो अपने अतिताप से पार्थिव शक्ति का ह्रास करता है। वह भी माधुर्य गुणयुक्त प्रिय एव अनुकूल शक्तियो से पिता तुल्य अर्थात् पालक और जनक शक्ति युक्त बन जाता है। इस प्रकार विश्व की वनस्पतिया अन्न वृक्ष फल मूल कन्द एव वन तथा समस्त पर्यावरण मधुर बन जाता है। सौर शक्तिया भी माधुर्य गुणयुक्त अनुकूल हो जाती हैं और गौ आदि पशु भी माधुर्य गुणयुक्त अमृतमय दिव्य दूध के देने वाली हो जाती हैं। अत यज्ञ से समस्त पर्यावरण अपने अनुकूल बन जाता है ऐसा सुन्दर यज्ञ का सुगम विज्ञान है।

१० यज्ञ से फल प्राप्ति का एक अद्भुत प्रकार–

यजुर्वेद अध्याय २। मन्त्र २५ मे बताया है कि जगती छन्द के मन्त्रो से यज्ञ करने पर यज्ञ द्युलोक मे पहुचता है। त्रिष्टुप छन्द के मन्त्रो से यज्ञ अन्तरिक्ष मे पहुचता है और गायत्री छन्द के मन्त्रो से यज्ञ पृथ्वी मे फैलता है। पुन इन्ही स्थानो स वह और सूक्ष्म एव विभक्त होकर सब को फल प्रदान करता है। जगती छन्द के मन्त्रो स किया यज्ञ द्युलोक पर सूर्यप्रकाश को प्राप्त होकर जगत को तृप्त करता है। अन्तरिक्ष मे पहुचकर वहा से जल विभाग को प्राप्त होता है तो वायु और वर्षा जल की शुद्धि करता है और पृथ्वी पर पहुच यज्ञ विविध प्रकार के सुख की वृद्धि करता है। अर्थात् यज्ञ जब पृथ्वी पर किया जाता है तो उत्तरोत्तर आरोहण क्रम से सूक्ष्म भी हो जाता

यज्ञ-विज्ञान

है, परन्तु इन तीनों स्थानों से और भी सूक्ष्म एवं सामर्थ्यवान् होकर एक नये पर्यावरण का, जीवनीय पर्यावरण का निर्माण करता है। इसी को प्रकारान्तर से यजुर्वेद अध्याय ८, मन्त्र ६० में निम्न प्रकार से कहा है—कि यज्ञ द्युलोक में पहुंचकर दिव्य भोगों को प्रदान कराता है। उससे हमें द्रविण, धन, सुख, ऋत्वनुकूल भोग प्राप्त होवें। यह यज्ञ अन्तरिक्ष मण्डल और मनुष्यों को प्राप्त होकर उक्त फल प्रदान करता है। पृथ्वी और ऋतुओं को प्राप्त होकर यज्ञ उक्त सुख प्राप्त कराता है—अत यज्ञ जहां कहीं भी किसी लोक मे पहुँचता है वहां से हमारा कल्याण ही होता । अर्थात् यज्ञ करने से पदार्थ नष्ट नहीं होते और न क्रिया ही निष्फल होती है—अपितु सब प्रकार से कल्याण ही होता है।

११ आहुति शक्ति—

अग्नि हव्य वाहक है। अत इच्छित फलों की प्राप्ति के लिए हव्य पदार्थों का ज्ञान आवश्यक है। राग, प्रदूषण, विकार आदि निवारक कार्यों मे किन हव्य द्रव्यों से लाभ होता है। वायु मण्डल की पुष्टि किन द्रव्यों से होती है, अतिवृष्टि, अनावृष्टि किन द्रव्यों से दूर होती है, इत्यादि हव्य पदार्थ विज्ञान का ज्ञान आवश्यक है। तभी यज्ञ कार्य मन्त्र सामर्थ्य से विशेष फलदायक होता है। यज्ञ का विज्ञान यज्ञ पद्धति इष्ट कार्यानुकूल कर्मकाण्ड तथा हव्य पदार्थों के ज्ञान पर आश्रित है। बिना इस ज्ञान के यज्ञ करने मात्र से इष्ट फलप्राप्ति सम्भव नहीं। प्राचीन ऋषि महर्षि वेदों से अनेक प्रकार के यज्ञ करते थे और उनसे फलप्राप्ति होती थी। इसलिए उन्होंने कहा—सर्वेभ्यो हि कामेभ्यो यज्ञ प्रयुज्यते—अर्थात् यज्ञ की सब कामों के लिए उपयोगिता है और प्रधानता है।

१२. यज्ञों का विभाजन—

यज्ञों का विभाजन निम्न प्रकार है—

१—कालकृत विभाग से सबधित, २—व्यक्ति सबधित ३—राष्ट्र सबधित, ४—सामयिक आवश्यकतानुसार। किसी यज्ञ से किसी भी फल की प्राप्ति मान लेना यज्ञ विज्ञान का तिरस्कार करना है। विविध प्रकार के यज्ञों में सामान्य प्रणाली तो आधारभूत एक हो सकती है परन्तु प्रधान याग में तो मन्त्र भेद, द्रव्य भेद एव क्रिया भेद तो पृथक् होते हैं।

कालकृत विभाग से सबधित यज्ञों में दैनिक अग्निहोत्र याग, प्रात और काल सधियों में, पक्ष यज्ञ अमावस्या और पूर्णिमाओं में, चातुर्मास्य याग, आग्रयण, सांवत्सरिक याग, पर्वयाग, नवसस्येष्टि ये सब कालकृत सधियों से सबधित यज्ञ हैं। इनसे प्राकृतिक पदार्थों में शक्ति की वृद्धि एव अपनी आध्यात्मिक शक्तियों की वृद्धि होती है।

व्यक्ति राष्ट्र या कामना सबधित यज्ञ—

इन यज्ञों का आयोजन व्यक्ति विशेष के आयु से सबधित होता है। जैसे विवाह सस्कार, यज्ञोपवीत वेदारम्भ गर्भाधानादि षोडश सस्कारों यज्ञ होते हैं। ये व्यक्तियों से सबधित हैं तथा राष्ट्र सबधित यज्ञ राजसूय अश्वमेधादि हैं। व्यक्तिगत कामना एव सामूहिक कामनाओं की पूर्ति के लिये किये जाने वाले यज्ञ काम्य यज्ञ हैं। व्यक्ति कामना राग कष्ट निवारण बल ऐश्वर्य प्राप्ति निमित्त काम्य यज्ञ होते हैं और सामूहिक कामना जैसे वृष्टि कराने, अतिवृष्टि निवारणार्थ आंधी तूफान आदि की शान्त्यर्थ, सामान्य एव विशिष्ट स्थानों में प्रवृद्ध प्रदूषण निवारणार्थ, सर्वसौख्यप्रद यज्ञ आवश्यकतानुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के यज्ञ कल्प पद्धति से होते हैं तभी उनका लाभ होता है। अर्थात् श्रौतयागों का फल अलग है। स्मार्तयागों का फल अलग है और काम्य यज्ञों का फल अलग है। यह स्पष्ट समझना चाहिए। प्राकृतिक प्रदूषण, वैचारिक प्रदूषण तथा वैज्ञानिक, औद्योगिक रासायनिक प्रदूषण इन सभी की शान्ति यद्यपि यज्ञ से ही सम्भव है तथापि उनका आयोजन यज्ञ विज्ञान पद्धति से ही कल्पना पूर्वक होगा तभी सफलता होगी।

यज्ञ का प्रधान हव्य द्रव्य-घृत—

यज्ञ के हविर्द्रव्यों में घृत ही प्रधान है। यदि घृत गौ का हो तो सर्वाधिक श्रेष्ठ है और प्रभावकारी है। घृत का नाम आज्य है। आज्य का अर्थ है—आ समन्तात् लोकान् जयति अनेन—अर्थात इसके द्वारा लोक लोकान्तरों के प्रदूषण रूपी असुर तत्त्वों पर आंधी, तूफानों पर विजय प्राप्त होती है। इसलिये घृत की आहुतियों से समस्त पर्यावरण का शोधन होता है। घृत नाम इसका इसलिए है कि यज्ञ में इसकी आहुतियां विशेष प्रमाण में देने से वर्षा तथा कामनाओं की पूर्ति करता है। इससे दीप्ति होती है और वैद्युतिक नभोमण्डल में व्याप्त विद्युत् शक्ति को प्रदीप्त करता है। घृत का नाम सर्पि भी है। जब यह यज्ञ में प्रयुक्त होकर अन्तरिक्ष में गति करता है तो इसकी गति सर्प की गति के सदृश तीव्र होती है और अपने साथ हव्य द्रव्य के अश को भी विविध लोकों में ले जाता है। तेल आदि या भैंस, बकरी आदि के घृत में तीनों लोकों में फैलने की शक्ति नहीं है। केवल वायव मण्डल तक ही व्याप्ति की सामर्थ्य गौ के अतिरिक्त घृत एव तेलों में है।

अन्य हवि द्रव्य—

वेद में घृत के अतिरिक्त हव्य का प्रयोग भी करने का आदेश है। जैसे सुगन्धित पदार्थ रोगनाशक पदार्थ, पुष्टि प्रदाता, माधुर्य प्रसारक द्रव्य जीवन प्रदाता द्रव्यों की हवि प्रदान करनी चाहिए। अथर्ववेद में लिखा है कि जिन औषधि, वनस्पतियों का सेवन गौएँ करती हैं वराह और नकुल अर्थात् नेवला करता है उन सब को यज्ञ में प्रयुक्त करने से रोग की असाध्य स्थिति नष्ट होती है और जीवन तथा आयु प्राप्त होती है।

कौन कमी है अपने हिन्दुस्तान मे

अन्तर दिखता नहीं बाग श्मशान मे, तनातनी है पूजा और अजान मे।
झगड़ा होता गीता और कुरान मे, कौन कमी है अपने हिन्दुस्तान मे।

नेता की नारों से रिश्तेदारी है होठों पर वादे मन मे मक्कारी है।
रोम रोम पर दुख की पहरेदारी है, देशभक्ति के चोले मे गद्दारी है।
सविधान के पन्ने फाड़ जाते हैं खालिस्तानी झण्डा गाड़ जाते हैं।
निरपराध हत्याओं का सिलसिला चले, कभी असम गुजरात कभी पजाब जले।

दूध नहीं बच पाया तेज उफान मे चूहे घुसे हुए अपने खलिहान मे।
क्या सुख मिल पायेगा खालिस्तान मे कौन कमी है अपने हिन्दुस्तान मे।

हिन्दी की बिन्दी माथे पर लगी नहीं, ऐसा लगता है अभी गुलामी भगी नहीं।
कुटिया मे अब तक दीवाली मनी नहीं, भारतमाता अभी सुहागिन बनी नहीं।
देवनागरी का वर्चस्व अधूरा है। अभी उपेक्षित तुलसी, कबिरा, सूरा है।
हिन्दी हिन्दुस्तान नहीं अपनायेगा, तो क्या अरब उसे सिर पर बिठलायेगा।

बन्दी हम सब जलते हुए मकान मे, मुर्दे जिन्दा होने लगे मकान मे।
अमृत ढूढ रहे विष की दूकान मे कौन कमी है अपने हिन्दुस्तान मे।

कुर्सी ने भोलापन कसकर पकड़ लिया, कम्बल ने तैराको को फिर जकड़ लिया।
अपनी अपनी आज सभी को पड़ी हुई कुर्सी बनी चिराग जादुई छड़ी हुई।
जो कुछ मांगो कुर्सी से मिल जायेगा, सूखा हुआ फूल फिर से खिल जायगा।
जनता भेड़-बकरियों का पर्याय बनी, बने कसाई नेता जनता गाय बनी।

कितने हैं पैबन्द आज ईमान मे, छेद बहुत हैं अपने इस जलयान मे।
इन्सानों की बात नहीं इन्सान मे, कौन कमी है अपने हिन्दुस्तान मे।

धर्म और कानून हो गया अधा है, बिना कफन अर्थी है टूटा कन्धा है।
ऊपर से हर कोई रजनीगधा है। बना कत्ल करना सभी का धधा है।
बड़ी नहीं है बेटी कुर्सी मेज से, सहमी हुई दुल्हन है दुष्ट दहेज से।
रोगी रहता नहीं तनिक परहेज से, लपटें उठती हैं सुहाग की सेज से

सुद को छपा रहे हैं झूठी शान मे, पड़ हुए हैं ताले तेज जबान मे।
छुपी हुई बैठी है मौत मचान मे, कौन कमी है अपने हिन्दुस्तान मे।—

रोज-रोज अब जलने लगा तिरगा है, मानो या मत मानो यह सच नगा है।
लेकर आड़ धर्म की होता दगा है, धो धो पाप थकी बेचारी गगा है।
पिघल रही आहों से कचन अगा है, ढग आज हो गया बहुत बेढगा है।
कदम कदम पर कितने बिल्ले रगे हैं साधु-सन्त, नेता हो गये लफगे हैं।

बहुत बेसुरापन है अपनी तान मे, कटे पख सहयोगी नहीं उड़ान मे।
जाते नहीं शब्द बहरों के कान मे, कौन कमी है अपने हिन्दुस्तान मे।

प्राध्यापक सारस्वत मोहन मनीषी
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
डी० ए० वी० कालेज, अबोहर (हरियाणा)

व्यासपीठ—

उपनिषत् कथा-माला—५

ईश्वर दर्शन

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

ओ३म् विश्वानि देव सविनर्दुरितानि परासुव । यद्भद्र तन्न आसुव ॥

—यजुर्वेद

उपनिषद् में परमात्मा की इस व्याख्या को ध्यान में लाकर कहा है । 'एक वशी' अर्थात वह परमात्मा है एक जो वशी सब को वश में रखने वाला है । इस मन्त्र की व्याख्या मैं कल भी कर चुका हूं । इस में पहला शब्द 'एक' आया है । यह एक का शब्द बतलाता है कि परमात्मा न तो अपने स्वरूप में विकृत होता है न परिणाम में जाता है । इसलिए वह एक है । उसमें आप सदैव एक ही अवस्था देखेंगे ।

बुद्धिमानों के खेलों का भी कुछ न कुछ अर्थ होता है । इन सिनेमाओं को यदि कोई बुद्धिमान् मनुष्य देखे तो उनमें भी कोई न कोई शिक्षा निकाल सकता है । उपनिषदों ने परमात्मा को बतलाने के लिए यह सिद्ध किया है कि वह एक है । गणित में जो दो की संख्या होती है, उसमें भी एक सम्मिलित है इसी प्रकार तीन में भी, चार में भी एक मिला है । एक का अंक परिमित है किन्तु दो का एक परिमित नहीं । कागज पर एक लिखो । यहां संख्या और साम्य दोनों में एक ही है । अतएव परमात्मा एक ही है ।

क्या भारतीय, क्या जापानी, क्या अमरीकन सारांश जो भी कोई हैं सब मिलकर एक ही परमात्मा की उपासना करते हैं । कोई दो की या तीन की तो नहीं करते । कोई उसे ही 'गौड' (God) कहता है, कोई "परमात्मा', कोई "खुदा' । किन्तु वह है तो एक ही ।

अब देखो ! सभी कहते हैं कि बच्चों को माता पिता की आज्ञा पालन करनी चाहिए । बच्चे सोचें कि कहीं माता तथा पिता के कानों में मेरा कोई ऐसा शब्द न जाये जिससे वे दुःखित हों ।' इसी प्रकार माता पिता भी अपने बच्चों का विचार रक्खें । सेवक स्वामी की आज्ञा-पालन करता है तो स्वामी भी सेवक की बात मानता है । राजा प्रजा की तथा प्रजा राजा की बात सुनती और मानती है । इसी प्रकार इस भाव को अपने मन में स्थान देकर कि परमात्मा हमारा कल्याण करता है हमें भी केवल परमात्मा के सामने ही अपना मस्तक झुकाना चाहिए । वही "वशी' अर्थात् वश में करने वाला है ? आप क्या वशी बन सकते हैं ? जब आप वशी हो जायेंगे तब प्रकृति का आक्रमण आप पर न होगा । जब जीव निर्माण हो जाता है जब यह स्थिर हो जाता है, जब यह प्रकृति के प्रभाव में नहीं रहता, तो यह एक नियम है कि तभी उस पर प्रभु की कृपा होती है तब ही जाकर वह वशी बन सकता है अर्थात् मुक्त हो सकता है । परन्तु यह कब होता है जब वह उस प्रभु की भक्ति करे ।

अब प्रश्न यह उत्पन्न हुआ कि हम सुखी कब होंगे 'पुरुषार्थ करो ! सुख प्राप्त होगा । आलसी मनुष्य ही संसार में सदैव दुःख उठाता है । हिन्दुस्तान सुखी क्यों नहीं ? क्योंकि यह पुरुषार्थी नहीं, जब पुरुषार्थी होगा तब ही सुखी हो जायेगा । भाई ! संसार सुख के लिए है ।

इससे भी बढ़कर परमेश्वर की प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ होना चाहिए । ईश्वर तो सब का पिता है । एक पुरुष के दो लड़के हैं पिता से वे दोनों रुपये मांगते हैं । पिता कहता है "भाई सुनो ! अब तुम जवान हो यह सब कुछ तुम्हारा ही है परन्तु अभी मांगना ठीक नहीं । कार व्यवहार करो, कमाओ और खाओ । एक लड़का बसन्त बड़ा निपुण है पर दूसरा हेमन्त निर्बुद्धि है । बसन्त ने सोचा, 'पिताजी की आज्ञा है कि कमाना चाहिए । दुकान के नियमों पर ध्यान देने लगा । प्रातःकाल दुकान पर आता दुकान को सावधानी से ठीक और साफ रखता । सब प्रकार सावधान रहता । ग्राहकों से प्रेम-पूर्वक बोलता बाजार का भाव ठीक-ठीक बताता । यह नहीं कि जो भाव मिला लगा लिया । एक भाव पर बाजार के साथ चलता । लाभ कम रखता, सन्ध्या-समय लेखा करके घर जाता । सब ग्राहक कहते, "चलो भाई ! बसन्त की दुकान पर चलें' । ग्राहक उसके पास आकर बड़ी प्रसन्नता से बैठते । साल भर में खर्च कम किया, दुकान से कमाया खूब । माल भी आगे से अधिक भर लिया, पांच सात सौ रुपये भी जमा कर लिये । लोग भी बड़े प्रसन्न, पिता भी महा आनन्दित और आप भी परम सुखी ।

अब दूसरे लड़के हेमन्त की सुनो । उसने विचारा, "पिता ने रुपया दिया है खूब मौज करो" । उसकी बेसमझी देखकर बुरे लोग पास आने लगे । भंग, शराब, पीनी आरम्भ कर दी ! प्रतिदिन सिनेमा जाता, दुकान पर ग्राहक आते, उनसे भली प्रकार ध्यानपूर्वक बात भी नहीं करता । बैठा ताश खेलता रहता । उसी में मग्न था ग्राहक दूसरी दुकान पर चला जाता । एक वर्ष में ही सारा रुपया बरबाद हो गया । अब सोचो ! पिता के दोनों पुत्र हैं । एक पर पिता की प्रसन्नता है दूसरे पर अप्रसन्नता । इसी प्रकार परमात्मा हम सब का पिता है और हम सब संसार में रहने वाले उसके पुत्र हैं । जो उसकी आज्ञा पर चला उस पर तो परमात्मा की कृपा दिखाई देती है जिसने उसकी आज्ञा का भंग किया उसी पर उसका कोप है ।

यह तुम्हारा कार्य है लोहे को तो तुमने नहीं बनाया परन्तु इञ्जन को तो तुमने ही बनाया है । इसी प्रकार परमात्मा ने सब को लोहा दे दिया है, उसको ठीक बनाना और काम में लाना या न लाना तो तुम्हारे अपने अधिकार में है । यदि मोक्ष की प्राप्ति करना चाहते हो, तो वह जो वशी परमात्मा है, उसकी प्रार्थना करो । पहलवान बनना चाहते हो तो किसी पहलवान के शिष्य बनो । यदि अंग्रेजी सीखनी है तो किसी प्रोफेसर से ही सीखनी पड़ेगी, गाना सीखना है तो किसी रागी के पास ही जाना होगा । आप में सब गुण विद्यमान हैं, पहलवानी भी है, अंग्रेजी भी, राग भी । परन्तु इनके लिए किसी की सहायता की आवश्यकता है । यदि तुम वशी बनना चाहते हो, तो परमात्मा की उपासना करो ।

अब प्रश्न होता है, कैसे करें ? सर्वभूत आत्मा परमात्मा तुम्हारे अन्दर है । प्रभु को बाहर कहां ढूंढते हो ? न वह आकाश पर है, न हिमालय पर, न समुद्र में, वह तो तुम्हारे अन्दर है । परमात्मा कहता है 'न मैं आसमान पर हूं, न समुद्र में, बाहर कहीं नहीं हूं । केवल ऋषियों के मनों में ही मेरा स्थान है" ऋषि कहते हैं योगी को, सच्चे त्यागी को । सच्चा त्याग जिस मनुष्य के पास है वह अवश्यमेव मुक्ति की ओर जाता है । आजकल तो स्थान-स्थान पर रहट लगे हुए हैं । पहले कुओं पर चरस होते थे । कुएं से पानी खींचने वाला जब चरस ऊपर आ जाता था, तो उसे पांव मारता था, इसलिए कि चरस ऊपर कुएं की मुंडेर के साथ टक्कर न खाये और आ जाये । इसी प्रकार जो त्याग करते हैं वे कहते हैं 'हटाओ ! हटाओ ! सब हटाओ !

एक सच्चा साधु था । बनावट और दिखावट का उस पर कोई प्रभाव न था । वह एक गृहस्थी के घर गया, वहां एक दिन रहा । दूसरे दिन वहां से चल पड़ा । उसने कहा, 'महात्मा जी ! आप दरिया के पार जाना चाहते हैं परन्तु घाट वाले पैसे लिये बिना पार न जाने देंगे ।" साधु ने कहा, "भाई ! हम कह देंगे कि हम साधु हैं । हम फकीरों के पास पैसे कहां ?" उसने कहा, "वे न मानेंगे ।' उसने बहुतेरा कहा परन्तु साधु ने उससे एक पैसा न लिया । उस आदमी ने चुपके से अठन्नी साधु के पल्ले में बांध दी । महात्मा को ज्ञान भी न हुआ और वह दरिया की ओर चल पड़ा । वह पुरुष भी पीछे-पीछे हो लिया । साधु दरिया पर पहुंचा । मल्लाह से कहा, पार कर दो । उसने कहा कि 'पैसे निकालो । साधु ने कहा हम फकीर हैं, हमारे पास पैसे कहां ?" उसने कहा कि बैठ जाओ । कोई धनी पुरुष आएगा तो उनसे मांगकर दे देना हम तो पैसे लिये बिना न जाने देंगे ।" साधु ने कहा, "तभी सही और बैठ गया । अकस्मात् मल्लाह की दृष्टि कपड़े पर गई । उसने कहा कि 'बाबा तुम तो कहते हो मेरे पास कुछ नहीं । परन्तु यह क्या बंधा है ?' उसने कहा, 'भाई ! जो है तुम ही खोल लो । मल्लाह ने खोला तो अठन्नी निकली । उसने कहा 'बाबा तुम झूठ बोलते थे । 'साधु ने कहा, मैंने झूठ नहीं बोला ।' जब मल्लाह किश्ती पर चढ़ाकर पार करने लगा उधर से वह गृहस्थी भी आ गया । उसने कहा—"महाराज ! देखा यह अठन्नी जो मैंने बांध दी थी, उसी ने पार किया । यह न होती तो आप पार कैसे जाते ?" साधु ने कहा, "बाबा ! यह कमबख्त जब तक बंधी थी, तभी तक मैं पार नहीं जा सका, जब खुल गई तो पार हो गया ।

इसीलिए "ऋषि सच्चे त्यागी को" कहते हैं । संसार में बनावट के काम सब बिगड़ जाते हैं । परन्तु परमात्मा के काम तो नहीं बिगड़ते । उसकी ओर सच्चे भाव से बढ़ो । जैसा कहा है कि "परमात्मा ऋषि के मन में है ।" तुम ऋषि बन जाओ ! वह स्वयं तुम्हारे मन में आ जायेगा । एक मनुष्य घर में बैठा हुआ भी त्याग करके ऋषि बन सकता है । कारण, परमात्मा सर्वव्यापक है । सभी जगह है, कहीं तनिक-सी जगह भी उससे खाली नहीं । उसे प्राप्त करने का स्थान तुम्हारा अन्तःकरण है । उस स्थान को तो तुमने कभी स्वच्छ ही नहीं किया । जब तक अन्तःकरण स्वच्छ न हो तब तक परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती । मन को पवित्र बनाओ । मन की पवित्रता में ही तो वह है । परमेश्वर को पाना सुगम है । (क्रमशः)

समीक्षा—

सफल जीवन

लेखक प० सुरेशचन्द्र वेदालंकार, समीक्षक डा० विजय द्विवेदी, प्रकाशक आर्य कुमार सभा(रजि०), किंग्जवे दिल्ली ९ प्रकाशन तिथि लेखराम बलिदान दिवस १९८५ पृ० सं० ७० मूल्य रु० २ ०० मात्र।

प्रस्तुत पुस्तक में प० सुरेशचन्द्र वेदालंकार लिखित सत्रह लेख संकलित हैं। इन लेखो में बताया गया है कि वेद के मन्त्रों द्वारा किस तरह धर्म और जीवन के वास्तविक स्वरूप की जानकारी हो सकती है तथा मानव जीवन को सफल बनाया जा सकता है। विद्वान् लेखक ने बड़ी सरल भाषा में बताया है कि मानव जीवन केवल भौतिकता का समाहार नही है। यह परमात्मा की देन है। जीवन की सफलता का यह मतलब कदापि नही है कि मनुष्य रोग देने वाले भोगो के पीछे भागते हुए अपनी आयु के बहुमूल्य क्षण नष्ट कर दे। इसके विपरीत जीवन को सफलता, जीवन को प्रभु के चरणो मे अर्पण कर देने मे निहित है। इसका कारण यह है कि मानव प्रभु के जितना निकट रहता है उतनी ही उसकी शक्तिया बढती हैं, उतना ही उसमे नया उत्साह और उल्लास आता है। जीवन की सफलता का दूसरा रहस्य बलवान् बनने में है। व्यक्ति के बलवान् बनने से ही राष्ट्र बलवान् बनता है। इस कथन का समर्थन प्रभु की वाणी वेद से लेकर सभी आधुनिक सन्तो और महात्माओ ने किया है। अनेक यथोचित उदाहरणो के द्वारा पण्डित जी ने इस बात को बडी अच्छी तरह से समझाया है। इसी तरह 'मृत्यु एक मधुर कविता है' मे बताया गया है कि अज्ञानता वश मानव मृत्यु को कठोर और निर्मम मानता है। जबकि वास्तविकता यह है कि मृत्यु मनुष्य के लिए एक वरदान है अभिशाप नही। वैदिक संस्कृति में मृत्यु की भीषणता नही है। मृत्यु तो मानो जीवन वृक्ष मे लगा हुआ सुन्दर फल है। (पृ०१७)।

'मनुर्भव (मनुष्य बनो) लेख मे प० जी ने बताया है कि देवता बनने की अपेक्षा मनुष्य बनना अधिक कठिन है। मनुष्य बनने के लिए धर्मानुसार आचरण करना पड़ता है। धर्म ही मनुष्य और मानवेतर प्राणियो के बीच विभाजक रेखा खीचता है। धर्म से हीन मनुष्य और पशु मे कोई अन्तर नही होता (धर्मेण हीना पशुभि समाना)। अत धर्म से हीन होना मानवता का अपमान करना है। इसी तरह मांसाहार करना प्रभु का स्मरण न करना, जीवन को यज्ञमय न बनाना आत्म ज्ञान से रहित होना आदि ऐसे कर्म हैं जिनसे मानवता तो कलंकित होती ही है, जीवन का प्रशस्त पथ भी संकीर्ण हो जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक में श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार ने अपने कथन को देश-विदेश मे घटित घटनाओ तथा वेदों से उदाहरण देकर पुष्ट किया है। उद्धृत घटनाएँ सटीक होने के साथ ही मार्मिक भी हैं। इनका अच्छा प्रभाव पाठको पर पडेगा, इसमे कोई सन्देह नही है। वैसे यह पुस्तक किशोरों के लिए लिखी गयी है, परन्तु इससे सभी तरह के लोग लाभान्वित हो सकते हैं। सत्सगो और उपदेशकों के लिए इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है। ऐसी उपयोगी पुस्तक के प्रकाशन के लिए आर्य कुमार सभा, किंग्जवे दिल्ली-९ के पदाधिकारी नि सदेह बधाई के पात्र हैं। ●

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की वर्तमान स्थिति के संबंध में निरीक्षण आख्या का संक्षिप्त विवरण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजीकृत) की वर्तमान स्थिति एव उसके कार्यों की प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने करने की दृष्टि से मैंने गत ८ व ९ मार्च १९८५ को इसका निरीक्षण किया। सभा के अन्तर्गत प्रमुख विभाग कार्यालय वेद प्रचार, आर्य विद्या परिषद साहित्य प्रकाशन एव विद्वत परिषद है। निरीक्षण आख्या का संक्षिप्त विवरण तथा इस सभा द्वारा किए जा रहे विशेष उल्लेखनीय कार्यों का विवरण यहा दिया जा रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की स्थापना १४ सितम्बर १९७५ को की गई थी और वर्तमान समय मे इससे सम्बद्ध १५० आर्यसमाज व ८ शिक्षण संस्थाएं हैं। शिक्षण सस्थाओ की प्रबन्ध समितियो का निर्माण प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित आर्य विद्या परिषद करती है। शिक्षण सस्थाओ मे नैतिक शिक्षा व्यवस्था की गई है और नैतिक शिक्षा की परीक्षाए भी आयोजित की जाती हैं। नैतिक शिक्षा की पुस्तकें भाग १ से भाग १० तक सभा द्वारा प्रकाशित की गई हैं। वेद प्रचार विभाग मे ४७ उपदेशक (जिनमे से २ वैतनिक हैं) और ३ भजनोपदेशक वैतनिक रूप मे कार्यरत हैं। आर्यसमाजो के साप्ताहिक सत्सगो मे नियमित रूप से उपदेशक भेजने के अतिरिक्त ४ टोलियो मे प्रचार कार्य व्यापक रूप से किया जाता है। इस विभाग के अधिष्ठाता श्री स्वरूपानन्द जी अपना पूर्ण समय देकर सुचारु रूप से इसका कार्य सचालन करते हैं। सभा के पास एक मेटाडोर बस भी है, जिसका उपयोग प्रचारक भेजने मे किया जाता है। इस सभा ने पिछले ३ वर्षो मे उल्लेखनीय कार्य किए।

१ आर्य महासम्मेलन (दिल्ली के ३ विभिन्न क्षेत्रो मे)

२ प्रचार वाहन का क्रय

३ महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी (तालकटोरा स्टेडियम दिल्ली मे)

४ साहित्य प्रकाशन विभाग का आरम्भ।

५ साहित्य प्रकाशन निधियो की स्थापना।

६ पुरानी स्थिर निधियो का ब्याज सहित पुनर्नवीकरण।

७ दूरदर्शन तथा आकाशवाणी पर वेद प्रचार एव महर्षि दयानन्द पर एक परिचर्चा।

८ प्रमुख समाचार पत्रो से सैद्धान्तिक विषयो पर लेखो का प्रकाशन।

सभा की ओर से एक साप्ताहिक पत्र आर्यसन्देश २०० की सख्या मे नियमित रूप से प्रकाशित होता है। पत्र के सपादक श्री यशपाल सुधांशु ने योग्यता पूर्वक इसके कलेवर को सवारा है। इस पत्रिका का स्तर उन्नत होता जा रहा है। सभा की ओर से सेवा प्रकल्प के रूप मे दीवानचंद हस्पताल का सचालन भी किया जा रहा है। इसके साथ ही अनेक आर्यसमाजो ने अपने चिकित्सालय भी खोले हुए हैं। पिछले वर्ष सभा ने कार्यालय पर ९४४२४), वेद प्रचार पर, ७९०४०), आर्यसंदेश पत्रिका पर ६३,७९१) आर्य विद्या परिषद् पर ४१४१) और दीवानचन्द चिकित्सालय पर ६६१७०) रुपये व्यय किए।

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की चतुर्मुखी प्रगति सर्वथा सराहनीय है। सगठन और प्रचार के सभी पक्षो पर ध्यान दिया जा रहा है जो अनुकरणीय है। कार्यालय की व्यवस्था व्यवस्थित है। अधिकारियो मे परस्पर तालमेल है और कार्य के प्रति उत्साह है। सभा के वर्तमान प्रधान श्री सूर्यदेव, मत्री डा० धर्मपाल आर्य तथा कोषाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश सुनेजा हैं। सभी सभा के कार्यों मे पर्याप्त समय देते हैं। उनके कुशल नेतृत्व मे सभा का कार्य प्रगति पर है।

डा० आनन्दप्रकाश
निरीक्षक एवम् उपमत्री
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

निर्वाचन

आर्यसमाज कोटा का ८७वा वार्षिक चुनाव दिनांक १९-५-८५ को सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारीगण चुने गये—

प्रधान—श्री सोमेश्वर जी भूखियान
मंत्री—बनवारीलाल सिंहल
कोषाध्यक्ष—श्री कल्याणमल मित्तल
पुस्तकाध्यक्ष—श्री बृजनन्दन
बिक्री पुस्तकाध्यक्ष—श्री प्रभुदयालजी शर्मा
अधिष्ठाता आर्य
वीर दल—श्री रामदयाल आर्य
लेखा परीक्षक—श्री शिवनारायण बाहेती
उपप्रधान—श्री श्रीकृष्ण जी सावक,
श्री विरधीचन्द जी बाहेती
श्रीमती रुक्मणीदेवी जी आर्या
उपमंत्री—श्री भगवतीप्रसाद शर्मा
श्री चांदकरण जी बाहेती

भवदीय
बनवारीलाल सिंहल मंत्री

स्त्री आर्यसमाज माडल टाउन दिल्ली का वार्षिकोत्सव

११ मई १९८५ शनिवार को दोपहर १ बजे से ५॥ बजे तक बडे हर्षोल्लास के साथ महिला सम्मेलन के रूप मे सम्पन्न हुआ। जिसमे अनेक विदुषी महिलाओ द्वारा सगीत एव प्रेरणादायक उपदेश हुए।

इस कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि नई पीढी को आर्यसमाज के कार्यक्रम में सक्रिय करने के लिए बच्चो को सम्मानित कर आशीर्वाद दिया गया।

शकुन्तला दीक्षित, मन्त्रिणी

आरक्षण आर्थिक आधार पर हो

सरकारी सेवाओ तथा सार्वजनिक प्रतिष्ठानो मे जातीय आधार पर आरक्षण की व्यवस्था से जातिवाद, वर्गवाद को कुत्सित प्रोत्साहन मिल रहा है साथ ही अयोग्य व अक्षम व्यक्तियों के कारण प्रशासन तत्र पगु बनता जा रहा है आरक्षण-व्यवस्था के कारण सुयोग्य उम्मीदवारों का चयन नहीं हो पाता है, और अयोग्य उम्मीदवार सरकारी पदों पर आसीन हो जाते हैं। आरक्षण के अन्तर्गत नियुक्ति या प्रोन्नत व्यक्ति के मन मे एक हीन भावना व्याप्त रहती है, जिसका कुप्रभाव उसकी कार्यक्षमता पर भी अवश्यम्भावी रूप से पडता है। आरक्षण का आधार जातीय होने के कारण वैमनस्य विद्वेष मनोमालिन्य बढता है और वर्ग सघर्ष का रूप ग्रहण कर लेता है, जैसा कि इस समय गुजरात मे हो रहा है। इस व्यवस्था के कारण वे युवक जो सुयोग्य तथा मेधावी हैं, सेवा का अवसर नही पाते और देश तथा समाज को भी उनकी प्रतिभा से वचित रहना पडता है। यदि आरक्षण की व्यवस्था जातिगत के स्थान पर अर्थगत आधार पर की जाय तो समाज का अधिक हित इसमे निहित है।

राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ प्र)

समाचार-सन्देश

आर्यसमाज जनकपुरी का वार्षिकोत्सव एवं समाज भवन का उद्घाटन समारोह

आयसमाज पत्रारोर सी लाक जनकपुरी का वार्षिकोत्सव दि० ५ स १२ मई १९८५ तक समारोहपूवक मनाया गया। इस उत्सव पर ५ स १२ मई १९८५ तक अथववेद के मत्रो से बृहद यज्ञ हुआ—जिसके ब्रह्मा—वैद्य रामकिशोर जी महोपदेशक थे। रात्रि मे प्रवचन कर्ताओ मे प्रमुख रूप मे वैद्य रामकिशोर जी आचाय डा० वाचस्पति उपाध्याय आचाय शिवका त उपाध्याय थे। इसके साथ ही प० पन्नालाल जी पीयूष सगीता चाय के भजन—उपदेशपूव होते रहे इन प्रवचनो द्वारा आय जनता को आध्या त्मिक सामाजिक बहुमूल्य विचार सुनने को मिले।

श्राले प्रधान सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने का। इस सम्मेलन के प्रमुख वक्ता ओ में श्री रामचन्द्र विकल-सासद, आचाय वाचस्पति उपाध्याय प० सच्चिदान द शास्त्री तथा श्री सूयदेव जी प्रधान दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रध्यक्ष जी ने कहा आयसमाज जन्म से कोई जाति पाति की व्यवस्था को नहीं मानता है परन्तु गुण कम के आधार पर वण व्यवस्था को स्वीकार करता है—आय समाज समस्त राष्ट्रीय एकात्मक आदर्शों को स्वीकार करता है परन्तु वह वैदिक सस्कृति के आधार पर हो। भारत सरकार को आयसमाज समय समय पर सहयोग देता रहा है और देता रहेगा अथवा

उद्घाटनकर्ता—श्री वीरसन जी राज्यमन्त्री भारत सरकार। बायें से डा० एस० पी० शुक्ला व्यासदेव मेहता मेजर र मप्रकाश आम बालक मानवेन्द्र विद्यासागर मदान

५ मई १९८५ को नवनिर्मित आय समाज भवन पर ओ३म् ध्वजारोहण आयरत्न डा० सत्यदेव भारद्वाज द्वारा किया गया। तत्पश्चात् उनका अभिनन्दन भी किया गया। ११ मई को महिला सम्मेलन श्री शकुन्तला आया की अध्यक्षता मे सपन्न हुआ जिसमे कुरीति निवारण मे महिलाओ का योगदान विषय पर ये विचार प्रस्तुत किये गय।

१२ मई १९८५ रविवार को आय समाज भवन उदघाटन श्री वीरसेन जी केन्द्रीय राज्य मत्री ने किया। उदघाटन समारोह की अध्यक्षता श्री सरदारीलाल वर्मा ने की। मत्री जी का परिचय श्री सोम पाल जी (सुपुत्र श्री रघुवीरसिंह शास्त्री—भूतपूव मत्री सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा व्यवस्थापक मयूर प्रेस) ने दिया। मत्री जी ने उपस्थित जनसमूह को अपने नाम मे जाति सूचक शब्द निकाल देने की प्राथना की। उद्घाटन समारोह के पश्चात राष्ट्रीय एकता सम्मेलन सपन्न हुआ—जिसकी अध्यक्षता श्री रामगोपाल शाल

यदि विघटनकारी ताकतो को सरकार ने राजनैतिक लाभ की दृष्टि से छूट दी फिर तो आयसमाज मूक रूप से मौन नहीं बैठा रहेगा। आयसमाज के सिद्धान्त सावभौमिक है और वेद की वाणी यथेमा वाच कल्याणी मानवमात्र के लिए है। अन्य वक्ताओ मे विकल जी ने आयसमाज के कार्यों की सराहना की और इस प्रकार के सम्मलनों को समय समय पर आयोजित करन के लिए आयसमाज का धन्यवाद किया। आचाय उपाध्याय जी ने वैदिक उद्धरणो से उपस्थित जन समुदाय को आयसमाज के राष्ट्रीय महत्त्व को बताया। श्री शास्त्री जी ने और सूयदेव जी ने सामयिक परिस्थितियों में आय समाज को सजग रहने की प्रेरणा दी। अन्त मे धन्यवाद समाज प्रधान मेजर रामप्रकाश आम ने किया। शान्ति पाठ के बाद समस्त उपस्थित जनों ने प्रीति भोज में भाग लिया।

भवदीय,

वीरांगना प्रशिक्षण शिविर तपोवनाश्रम, नालापानी, देहरादून

१० जून १९८५ से २५ जून १९८५ तक तपोवनाश्रम नालापानी देहरादून मे आश्रम के सचालक श्री दयानन्द वानप्रस्थी जी की प्रेरणा व मागदशन में एक वीरांगना प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है। जिसमें हरियाणा पजाब हिमाचल व उत्तर प्रदेश से केवल ४० बहिन भाग लेंगी। यह शिविर निशुल्क होगा। आने जाने का किराया सब का अपना अपना होगा।

इस शिविर मे निम्नलिखित महानुभाव प्रशिक्षक एव प्रबन्धक होंगे

१ स्वामी सत्यपति जी महाराज

२ श्री दयानन्द जी वानप्रस्थी सचालक तपोवनाश्रम देहरादून।

३ प्रिन्सिपल कुमारी विमला छाबडा आय महिला कालेज बरनाला

४ कुमारी पुष्पा मेहता भूतपूर्व मुख्याध्यापिका ग्राम गर्ल्ज हाई स्कूल, कर्तारपुर।

उक्त शिविर के सचालक श्री दयानन्द जी वानप्रस्थी तथा प्रशिक्षण संयोजिका प्रिन्सिपल कुमारी विमला छाबडा होंगी।

इस शिविर में भाग लेने के लिए बहिनो को सप्रेम निमन्त्रण है। इसमें शिक्षिका बहिनो को प्राथमिकता दी जाएगी। अत जो बहिनें इसमे भाग लेना चाहें वे कृपया ३० मई १९८५ तक अपने प्राथना पत्र सचालक महोदय को भेजकर स्वीकृति प्राप्त करने का कष्ट करें।

प्रिन्सिपल कुमारी विमला छाबडा
सयोजिका

युवा जागृति के लिए देश भ्रमण

दिल्ली २९ अप्रैल (स मवार गोवा गुजरात महाराष्ट्र राजस्थान हरियाणा के १५० विद्यालयो ग्रामो नगरो उपनगरो मे केन्द्रीय आय युवक परिषद् के नेता ब्रह्मचारी आय नरेश ने विभिन्न सावजनिक सभाओ गोष्ठियो में अपने प्रवचनो के दौरान हजारो नौजवानो को मास भक्षण—मद्यपान त्यागने बिना दहेज विवाह करने सिनेमा क्लबो का बहिष्कार करने देश व समाज सुधार के कार्यों मे महत्त्वपूण भूमिका निभाने की प्रतिज्ञाए दिलाई।

गत १९ दिसम्बर से अन्तर्राष्ट्रीय युवा वष के दौरान युवा जागृति अभियान के अन्तगत देशभर में युवाओ मे राष्ट्रीयता तथा देश के टुकड़े करने वाली ताकतो के विरुद्ध ब्रह्मचारी आर्यनरेश जनमत तैयार कर रहे हैं।

आयसमाज अशोक विहार मे एक भेटवार्ता मे उन्होंने बताया कि वे देश के अन्य भागो पिछड़ तथा उपेक्षित क्षेत्रो में भी दौरा करेंगे। वे अपने वेद प्रचार वाहन के माध्यम से सुन्दर भजनो के कैसेट बजाते हैं तथा सत्याथ प्रकाश व वैदिक साहित्य का प्रचार करते हैं।

चन्द्रमोहन आय
सवाददाता
युवा उद्घोष (पाक्षिक)

निर्वाचन

गत रविवार को आयसमाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना का १९८५ १९८६ के लिए साधारण सभा का अधिवेशन डा० रामस्वरूप जी की प्रधानता मे हुआ।

सवसम्मति से डा० रामस्वरूप को प्रधान चुना गया और अधिकारियों अन्तरग सदस्यों के गठन का अधिकार भी प्रधान जी को दिया गया। प्रधान जी ने इस प्रकार घोषणा की —

सरक्षक—श्री राधाराम सरीन
श्री ओ० पी० पासी

प्रधान—डा० रामस्वरूप

वरिष्ठ उपप्रधान—श्री यशपाल बागिया

उपप्रधान—प्रि ओ पी टण्डन
श्री सत्यपाल आनन्द श्री अमरनाथ शर्मा

महामन्त्री—डा एस बी बागिया

मन्त्री—श्री धर्मपाल नसीन श्री धनपत रा

कोषाध्यक्ष—श्री रामधन जी

उपकोषाध्यक्ष—मास्टर मुरारीलाल जी

पुस्तकाध्यक्ष—श्री हसराज आय

उपपुस्तकाध्यक्ष—श्री देवशरण सैनी

स्टोर कीपर मा० ओमप्रकाश टण्डन

उप स्टोरकीपर—श्री विजय कुमार मक्कड़

धनपतराय मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के अधिकारी एव पदाधिकारी—

प्रधान प्रो० शेरसिंह पूर्व रक्षा राज्य मंत्री

उपप्रधान भरतसिंह वानप्रस्थी
दयानन्द मठ, रोहतक
बहिन सुभाषिणी देवी
कन्या गुरुकुल खानपुर, जि० सोनीपत
श्री कन्हैयालाल जी महता
फरीदाबाद

मन्त्री श्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री
डालावास जिला भिवानी

हरिसिंह कालोनी रोहतक अध्यक्ष सस्कृत विभाग राजकीय महाविद्यालय नलवा जि० हिसार)

उपमन्त्री प्रो० सत्यवीर विद्यालकार
तिहाड जि० सोनीपत (छाजूराम किसान कालेज हिसार

कोषाध्यक्ष मा० रामकिशन
प्रधान कार्यालय बहादुरगढ मण्डी
जि०—रोहतक

पुस्तकाध्यक्ष आचार्य यज्ञपाल आर्य
हिन्दी महाविद्यालय नरवी हाउसी

ये महान गुण

(पृष्ठ २ का शेष)

शासक लोग शक्ति और अधिकार पाकर लोलुप और विषयी हो जाते हैं। इसीलिए वर्णाश्रम धर्म नष्ट होकर देश और जाति की अधोगति हो जाती है। देशो के इतिहासों पर सूक्ष्म दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि जब जब बृहत सत्य उग्र ऋत दीक्षा तप आदि गुणो का अभाव हो गया तो समुन्नत देश भी रसातल को चला गया। शासन का कोई रूप क्यो न हो एक विपत्य हो प्रजातन्त्र हो गणतन्त्र हो कोई शासन पद्धति सफल नही हो सकती जब तक कि देश के मनुष्यो की उच्च कक्षा के लोग इन गुणो से युक्त न हो। यह ठीक है कि देश के सभी व्यक्ति गुणी नहीं हो सकते। परन्तु यदि देश मे इन गुणों का सर्वथा अभाव हो जाय तो अराजकता फैल ही जायेगी। इसलिए वेद मन्त्र में उपदेश दिया है कि देश या पृथ्वी को धारण करने वाले मुख्यत यह गुण हैं इनके होते हुए अन्य ऋद्धिया और सिद्धिया तो स्वय ही आ जाती हैं। पृथ्वी रत्न गर्भा है परन्तु उन्ही के लिए जो रत्नो के अधिकारी हैं। अफ्रीका के दक्षिणी विभाग पर दृष्टि डालिये। सैकडो वर्षों से जगली जातिया रहती थी। नितात जगली। एक दूसरे से लडने वाली किसी प्रकार की उन्नति के चिह्न न थे। जब बाहर से कुछ ज्ञान और श्रम से सम्पन्न लोग आ गये तो उस देश की वही पुरानी मिट्टी अगूर नारगी सेब आदि रत्न उगलने लग गई। अन्य देशो का भी यही हाल है भौतिक सम्पत्ति की उत्पत्ति भी बिना सत्य आदि गुणों के नहीं होती। और यदि उत्पत्ति हो भी जाय तो मनुष्य का कल्याण तो हो ही नहीं सकता जब तक कि उत्पन्न वस्तु की रक्षा का उपाय न हो। खेती करना मात्र ही पर्याप्त नही है। उपज को चोरो से बचाने का भी तो प्रश्न है। जब तक कि देशवासियो मे यज्ञ अर्थात् आत्म समर्पण का भाव उत्पन्न नही होता उस समय तक सामाजिक न्याय की स्थापना नही होती सामाजिक न्याय की भावना के न रहने से हिंसा असत्य और स्तेय का आधिक्य हो जाता है पृथ्वी का धारण करने वाली दैव शक्तियां नो हैं हा जैसे सूर्य की ज्योति वर्षा पृथ्वी की आकर्षण शक्ति इत्यादि। परन्तु जब तक इन शक्तियों के साथ मन्त्र कथित मानव गुणो का सहयोग न हो निरर्थक है। असभ्य और असस्कृत देशो में भूमि उतनी ही उर्वरा होती है धातुए सोना चादी आदि बहुत रहती हैं सूर्य के प्रकाश की कमी नही वर्षा पुष्कल मात्रा मे होती है। परन्तु मानव गुण विहीन असभ्य देश उस समय तक उन्नति नही कर सकते जब तक मनुष्य समाज अपना भाग प्रदान नही करता। भारत भूमि मे परमात्मा ने बहुत कुछ दिया है परन्तु जब जब इस देश के मनुष्य धर्म च्युत असत्य प्रिय स्वार्थी और तप शून्य हो गये देश परतन्त्र हो गया। भारत ही क्या समस्त देशो का यही हाल है। वेद की शिक्षा सभी के लिए है।

जब देश मे ऊपर दिये गुणो का आधिक्य होता है तो पृथ्वी मनुष्य के भूत और भविष्य दोनो की पत्नी अर्थात पालिका हो जाती है। भविष्य तो भूत का अनुगामी ही होता है। जिसने बोया नही वह काटेगा कैसे ? जिस देश का पुरानी पीढिया गुणहीन रहेगी उनकी नई पीढियो मे गुण कहां से आवेंगे ? पितृ वर्ग हो तो सन्तान के भविष्य का उत्तरदाता होता है। वेद मन्त्र मे प्रार्थना है कि ऐसी पृथ्वी हम को उरु लोक या मोक्ष देने वाली हो। मोक्ष की वर्षा अचानक ऊपर से नही होती। मोक्ष परम पद है उसके लिए भौतिक और अभौतिक दोनो साधनो की आवश्यकता है। इन साधनो के लिए बृहत सत्य उग्र ऋत दीक्षा तप ब्रह्म और यज्ञ अनिवार्य है। अत प्रत्येक मनुष्य को यह गुण अपने आप धारण करने चाहिए और समाज मे उनका सचार करना चाहिए।

गम सहकर भी मुस्कर आ दुनिया मे।
यहा बुजदिलो की गुजर नही होती॥
हसना भी जरूर है जीने के लिए।
रो रो कर जिन्दगी बसर नही होती॥
वो चमन खाक मे मिल जाया करते है।
जहा बागबा की पाक नजर नही होती॥
अब भी वक्त है सम्हल नौजवा।
जवानी उम्र भर नही होती।
उनकी महफिल मे कब न जाते है राणा।
जहा वफा की कदर नही होती॥

सग्रहकर्ता
रणजीतसिह राणा
[illegible]

लाला रामगोपाल शालवाले अभिनन्दन समिति

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

श्रद्धेय श्री लाला रामगोपाल शालवाले के अभिनन्दन समारोह के आयोजन हेतु निम्नलिखित प्रमुख आर्य जनों का एक कार्यकारी दल बनाया है :—

१	श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट	अध्यक्ष
२	महाशय धर्मपाल जी	उपाध्यक्ष
३	श्रीयुत लाला इन्द्रनारायण जी	कोषाध्यक्ष
४	डा० आनन्दप्रकाश	संयोजक व मन्त्री
५	श्री जगदीशप्रसाद वैदिक	उपसंयोजक

सदस्य

६	श्री ओमप्रकाश त्यागी	मन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली।
७	प० सच्चिदानन्द शास्त्री	उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा दिल्ली।
८	श्री जयनारायण अरुण	उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा दिल्ली।
९	श्री सूर्यदेव	प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली।
१०	डा० धर्मपाल	मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली।
११	प्रो० वेदव्यास जी	प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा।
१२	श्री रामनाथ सहगल	मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा।
१३	प्रो० शेरसिंह जी	प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा
१४	श्री इन्द्रराज जी	प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश।
१५	राजगुरु शर्मा	प्रधान मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा।

सभी आर्य बंधुओ का सहयोग इस कार्य मे अपेक्षित एव प्रार्थनीय है।

(डा० आनन्द प्रकाश)
सयोजक एव मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित रजि० नं० डी० (सी०) ७५९

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वर्ष ९ अंक २१ | रविवार ९ जून १९८५ | आर्य संवत्सर १९६०८५३०८५ | ज्येष्ठ २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१

कल्याणमार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानन्द

प्रसिद्ध साहित्यकार काका कालेलकर

स्वामी श्रद्धानन्द जी मे आर्य जाति का मनोन्नत स्वभाव पूर्णतया प्रतिबिम्बित था। वे अपने जमाने के सर्वाङ्गीण प्रतिनिधि थे। सामान्य परिस्थिति मे रहते हुए भी आर्य पुरुष अपने पुरुषार्थ से कैसे उच्च और असामान्य कोटि तक पहुंच सकता है इसका उदाहरण स्वामी जी के सफल जीवन मे हम पाते हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जो चैतन्य देश मे प्रकट किया उसका ग्रहण अधिक से किसी ने किया था तो वे स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। धर्म प्रचार शिक्षा प्रचार और लोकसेवा तीनो बातों में अपना जीवन व्यतीत करके उन्होने बलिदान के जल में जीवन यज्ञ का अदभुत स्नान किया। गुरु और शिष्य दोनो पुरुषसिंहो ने अपने निर्भय जीवन से मृत्यु को परास्त किया।

अभार्य हत्यारे का बदला न लेकर उनके असंख्य अनुयायियो ने अपना आर्यत्व ही सिद्ध किया है। निर्भय पुरुष का रक्त सांस्कृतिक क्षेत्र का उत्तम खाद है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जीवन भर अपने पसीने से सेवा की और अन्त मे अपने खून से। इसलिए वे अमरपद प्राप्त कर सके।

संस्था खोलना और चलाना आजकल सामान्य सी चीज हो गई है क्योंकि जनता देख चुकी है कि लोक जीवन मे सुव्यवस्थित संस्थाओ का महत्व कितना है। लेकिन जब ऋषि दयानन्द सरस्वती ने आर्य संस्कृति के आत्मा को जागृत करने के लिए सत्यार्थप्रकाश मे नई शिक्षा प्रणाली का आदर्श पेश किया तब भारतवर्ष में स्वदेशी संस्थाए बहुत कम थी। ऐसे समय पर सर्वस्व त्याग कर अपने पुत्रो को साथ लेकर गंगा के तट पर जंगल में जाकर बसना केवल श्रद्धाधन पुरुष का ही काम था। मानो वह एक का विश्वजित यज्ञ ही था। मुंशीराम जी चाहते तो वे किसी भी क्षेत्र मे अपनी कार्य शक्ति का परिचय दे सकते थे। फौज में दाखिल होते तो नामांकित सेनानी हो जाते। किसी रियासत की सेवा मे प्रवेश करते तो प्रजाहितैषी प्रधान बन जाते। राजनैतिक क्षेत्र मे प्रवेश करते तो महासभा की धुरा का वहन करते। केवल धर्मोपदेशक बन बैठते तो हजारों अनुयायी हासिल करते। साहित्य सेवा का पेशा पसन्द करते तो साहित्य सम्राटो से कर भार वसूल करने की योग्यता प्राप्त करते। परन्तु उन्होने सब छोड कर शिक्षा का ही कार्य अपना जीवन कार्य बनाया इसीलिए मेरा सिर उनके सामने झुकता है शिक्षा का क्षेत्र जगत मे अभी उतना प्रतिष्ठित नही है कि जितना उसका अधिकार है। तो भी मनुष्य जाति की उत्तम सेवा शिक्षा द्वारा ही होने को है
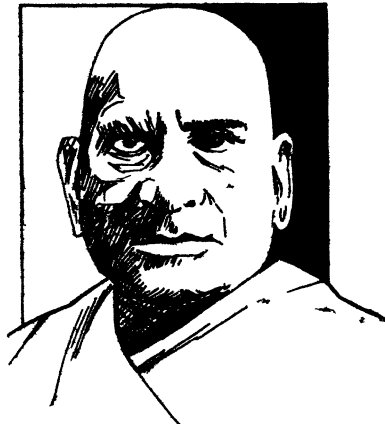
शारीरिक शक्ति, द्रव्यशक्ति राजशक्ति संघशक्ति इत्यादि सब शक्तियाँ शिक्षा शक्ति के मुकाबले मे गौण हैं। धार्मिकता सेवा ज्ञानोपासना और बलिदान यही जीवन का सर्वस्व है। और इन जीवन तत्वों का पोषण केवल शिक्षाप्रसार से ही हो सकता है। दीर्घदर्शी समाज पुरुष ही इस बात को समझ कर शिक्षा के क्षेत्र मे अपना प्रदान कर सकता है। वे सच्चे ब्राह्मण थे और ब्राह्मण होने के कारण ही वे हरिजन सेवा की विशेष जिम्मेदारी अपने सिर पर है ऐसा समझते थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी को इसीलिए मैं जातिगुरु कहता हूं।

कल्याण मार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानन्द जी की सेवा अपनी दृष्टि से अपूर्व है। राष्ट्रीय शिक्षण धर्म जागृति समाज सेवा आदि अनेक क्षेत्रो मे उन्होने भारतवर्ष को एक नया ही रास्ता दिखाया है। श्रद्धा के बल से ही वे यह तप कर सके। जिस दिन उन्होंने अपने प्रिय पुत्रो को लेकर गुरुकुल की स्थापना के संकल्प से गंगा के तट पर निवास किया वह दिन भारतवर्ष के वर्तमान इतिहास मे महत्त्वपूर्ण का था उस दिन उन्होने हिन्दू जाति के उद्धार की नीव डाला ऐसा कहा जा सकता है। जिस दिन उन्होने अन्त्यज बालको को अपनाया उसी दिन हिन्दू जाति को उन्होने संगठित किया। और जिस समय उन्होने पत्थर गोली और खञ्जर की तरफ तुच्छता की नजर से देखा उसी दिन भारतवर्ष को उन्होने निर्भय किया अपनी अतुलनीय श्रद्धा से उन्होने अपना दीक्षा नाम कृतार्थ किया। सचमुच श्रद्धानन्द राष्ट्रमूर्ति थे। ऐसा समय जरूर आयेगा कि जब उनके दूषी और

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सत्सग वाटिका

बुड्ढा जवान को निगल गया

लेखक—प० शिवकुमार शास्त्री

विध दद्राण समने बहूना युवान सन्त पलितो जगार।
देवस्य पश्य काव्य महित्वाऽद्या ममार स ह्य समान ॥
ऋग्० १०।५५।५

★

ऋषि बृहदुक्थो वामदेव्य ।
देवता इन्द्र । छन्द निचृत्त्रिष्टुप ॥

अन्वय —युवान सन्त विधु समने बहूना दद्राण पलित जगार। देवस्य महित्वा काव्य पश्य ह्य समान स अद्य ममार।

शब्दार्थ—(युवान सन्तम्) एक ऐसे नवयुवक को (विधुम्) विविध कामना करने वाले को (समन) युद्ध मे (बहूनाम्) बहुतो को (दद्राणम्) मार भगाने वाला है (उसे) (पलित) एक वृद्ध (जगार) निगल जाता है । (देवस्य) प्रभु के (महित्वा) बड महत्त्व वाले (काव्यम्) काव्य को (पश्य) देखो (कि) (ह्य सम् ग्रान) जो कल जी रहा था (स) वह (अद्य) आज (ममार) मरा पडा है ।

व्याख्या—इस मन्त्र मे बड काव्यमय ढग स ससार की क्षणभगुरता दिखाकर परोक्षरूप म यह प्रेरणा की गयी है कि इस ससार के सुख दुख, भय-शोकादि द्वन्द्व की चक्की मे पिसने से तू उसी की शरण मे आकर त्राण पा सकता है ।

ससार में बड बड विद्वान् हुए जिन्होने सम्पूर्ण वैदिक और लौकिक वाङमय छान मारा । जिन्हें अपनी बहुज्ञता पर बडा अभिमान था । वे असहाय और विवश इस ससार स चले गये राम के वैदुष्य का वर्णन करते हुए वाल्मीकि महर्षि ने लिखा—

सर्वविद्याव्रतस्नातो यथावत् साङ्गवेदवित् ।
इष्वस्त्रे च पितु श्रेष्ठो बभूव भरताग्रज ॥
वा० रा० अयो० १।२०

राम सब विद्याओ को पढकर तथा पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत समाप्त कर विधिवत स्नातक हुए । षडङ्ग सहित वेद को भी पढा । बाण और अस्त्र शस्त्र सचालन मे अर्थात धनुर्वेद मे अपने पिता से भी बढ कर हो गये ।

धर्मकामार्थतत्त्वज्ञ स्मृतिमान्
प्रतिभानवान् ।
लौकिके समयाचारे कृतकल्पो विशारद ॥

राम ने धर्म अर्थ और काम के रहस्यो को समझ लिया । उनकी अद्भुत स्मरण-शक्ति थी । शास्त्रीय गूढ तत्त्वो को और दूसरो के विचारो को वे बहुत शीघ्र समझ लेते थे । लौकिक धर्म तथा समयोचित आचार-व्यवहार को वे भली प्रकार जानते थे और मर्यादानुसार अपने आचरण में लाते थे । राम की वीरता लोकोत्तर उदारता व्यक्ति के स्वभाव और व्यवहार को परखने की आश्चर्यजनक क्षमता और सत्यवादिता को देखकर उस समय यह प्रसिद्ध था कि—

द्वि शरं नाभिसन्धत्ते
द्वि स्थापयति नाश्रितान् ।
द्विर्ददाति न चार्थिभ्यो
रामो द्विर्नाभिभाषते ॥

राम शत्रु का सहार करने के लिए दो बाण नही चढाते अर्थात एक बाण से ही अपने शत्रु को समाप्त कर देते हैं । राम अपनी शरण मे आये की योग्यता को देखकर एक बार ही उचित स्थान पर उसकी नियुक्ति कर देते हैं । अर्थात व्यक्तियो को परखने को उनमे अद्भुत क्षमता है । राम याचक को एक बार मे निहाल कर देते हैं । वह फिर भिखमगा नही रहता और राम जो एक बार कह देते हैं उसमे परिवर्तन नही होता ।

राम इतने प्रतापी थे कि उन्हें लोगो ने भगवान तक बना दिया । किन्तु वेद कहता है उस नियन्ता के नियम को देखो यहा सब विवश और नतमस्तक हैं । अद्या ममार स ह्य समान कल तक जो जीवित जागृत था जिसकी योग्यता और परिश्रम का सिक्का उस समय का ससार मानता था आज वह मरा पडा है । बुड्ढा सफेद बालो वाला कालरूपी परमात्मा जवानो को निगले जा रहा है ।

लक्ष्मण जैसा स्वाभिमानी साक्षात वीररस जो किसी प्रतिद्वन्द्वी को कुछ समझता ही न था । कहा गया—सीता स्वयवर के धनुष को देखकर और हसकर लक्ष्मण ने राम को कहा—यह भी कोई पराक्रम की कसौटी है—

देव श्री रघुनाथ किं बहुतया दासोऽस्मि लक्ष्मणो—
मेर्वादीनपि भूधरान् चलये लील किमेक शिवात् ।
तस्मादाविश पश्य पश्य च बल
मुत्थाप्य तद् कौतुकम्
श्रोत्रुम् प्रतिमानयितुं प्रचलितुं भ्रमितुं
निहन्तु क्षम ॥

हे राम ! मैं अकिचन आप का सेवक हू । अधिक बढा के तो बात क्या कहू । मैं मेरु आदि पर्वतों को भी कुछ नहीं समझता, फिर इस पुराने जीर्ण-शीर्ण धनुष की बात ही क्या है । मैं इसे उठा सकता हूँ, झुका सकता हू लेकर घूम फिर सकता हू और इसके टुकडे टुकडे कर सकता हूँ ।

राम ने बालि के मरने पर किष्किन्धा का राज्य पाकर सीता की खोज मे सुग्रीव का प्रमाद देखा तो लक्ष्मण को सुग्रीव की भर्त्सना करने को भेजा । लक्ष्मण तो ऐसे अवसरो के लिए तैयार बैठा रहता था । जाते ही एक घुडकी मे सुग्रीव को प्रकम्पित कर दिया—

न स सकुचित पन्था येन वालि हतो गत सुग्रीव ! जिस मार्ग से कुछ ही समय पहले हमने बालि को भेजा है, वह मार्ग अब बन्द नही हो गया है । ऐसे वीरो को भी वही बूढा कालकवलित कर गया ।

कृष्ण जैसे प्रतापी प्रत्युत्पन्न मति महापुरुष—जिसने नितान्त बिखरे भारत के चित्र को काट-छाँटकर मर्यादित किया । अन्त में जगल में लेटे हुए एक बहेलिये के तीर से घायल होकर अपनी जीवनलीला समाप्त की ।

सार यह निकला कि ससार से सबको जाना है । समय का एक एक क्षण बहुत मूल्यवान् है उसका सदुपयोग करो और प्रस्थान के आदेश पर प्रसन्नता से उसे क्रियान्वित करो ।

वेद में विज्ञान

धर्मवीर विद्यालकार

१ ओषजन और उदजन से जल की उत्पत्ति—

उतासि मैत्रावरुणो वसिष्ठ,
उर्वश्या ब्रह्मन् मनसो अधिजात ।
द्रप्स स्कन्न ब्रह्मणा दैव्येन
विश्वे देवा पुष्करे त्वा ददन्त ॥
ऋग ७ ३३ ११

अर्थ—

वसिष्ठ उत मैत्रावरुण असि=हे वसिष्ठ ! तू मित्र और वरुण का लडका है ।

ब्रह्मन् उर्वश्या मनस अधिजात = हे ब्रह्मन् तू उर्वशी की मनाकामना से उत्पन्न हुआ है ।

दैव्यन ब्रह्मणा दिव्य नियम के अनुसार ।

द्रप्स स्कन्न त्वा=बूद के रूप मे गिरे हुए तुझको

विश्व देवा पुष्करे अददन्त=सब देवो ने पुष्कर (तालाब) मे पहुचा दिया ।

भावार्थ—

विद्युत् की उपस्थिति में मित्र और वरुण ओषजन और उदजन) के मिलाप से प्राकृतिक नियमों के अनुसार बूद-बूद रूप में जल बना । उस जल को देवो ने पुष्कर में एकत्रित किया ।

२ वायुमण्डल मे जल-कणो को उपस्थिति ।

सत्रे ह जाताविषिता नमोभि,
कुम्भे रेत सिषिचतु समानम् ।
ततो ह मान उदियाय मध्यात्,
ततो जातमृषिमाहुर्वसिष्ठ ॥
ऋ० ७ ३३ १३

अर्थ—

सत्रे ह जातौ=आकाश मे पैदा हुए

नमोभि इषितौ—ईश्वरीय नियमो से प्रेरित किये हुए (मित्र और वरुण वायुओ) ने

समानम्=एक साथ मिलकर, अथवा समान रूप से

कुम्भे रेत सिषिचतु=भूतरूपी कुम्भ मे बारम्बार जल को सीचा अर्थात् भूमि पर बहुत जल बरसाया ।

तत मध्यात् मान =उस बरसे हुए जल में से कुछ परिमाण

उदियाय=वाष्प बनकर आकाश मे चला गया

तत वसिष्ठम् ऋषि जातम् आहु= उससे वसिष्ठ ऋषि (समस्त प्राणियों के जीवन का आधार) बने ऐसा कहा जाता है ।

भावार्थ—

आकाश मे विद्यमान ओषजन और उदजन वायुओ के मिलने पर प्राकृतिक नियमों के अनुसार जल बना । वह जल पृथिवी म अत्यधिक मात्रा मे इकट्ठा हुआ । उसमे मे कुछ आकाश में चला गया । अर्थात् वायुमण्डल मे जलकण विद्यमान रहने लगे । क्योकि वह जल वनस्पति ओषधि,पशु पक्षी और प्राणियों के जीवन का आधार है ।

३ विभिन्न माध्यमो से गुजरती प्रकाश की किरणे टेढी हो जाती हैं—

(शेष पृष्ठ १२ पर)

भ्रष्टाचार और उसकी चिकित्सा

प० बुद्धदेव विद्यालंकार

आजकल चारों ओर भ्रष्टाचार के दमन के लिए आंदोलन मचा हुआ है। जिधर देखो यही हायहाय सुनाई देती है। रेल मे, बस मे, नाव मे हवाई जहाज मे, जहा बैठिये यही चर्चा है, एक बात मे सब एकमत हैं। दुनिया डण्डे के बिना सीधी नही होती। इन रिश्वतखोरों को चौराहे मे फांसी दे दी जाय तो फिर देखो कौन भ्रष्टाचारी बनता है। लोग मनु की दुहाई देकर कहते हैं—

यत्र श्यामो लोहिताक्षो
दण्डश्चरति पापहा।
प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति
नेता चेत् साधु पश्यति ॥

जहा कृष्णवर्ण रक्तनेत्र भयंकर पुरुष के समान पापों का नाश करने हारा दण्ड विचरता है, वहां प्रजा मोह को प्राप्त न होके आनन्दित होती है। परन्तु यदि दण्ड का चलाने वाला पक्षपात रहित विद्वान् हो तभी। १ मनु० ७ २५।

भाई दण्ड की महिमा तो सब गाते हो परन्तु अन्त की पंक्ति तो देखो।

नेता चेत् साधु पश्यति।'

'परन्तु जो दण्ड का चलाने वाला पक्षपात रहित विद्वान् हो तो। यह 'तो' कैसे पूरी होगी। डण्डा तो ठीक है परन्तु कहीं डण्डे वाले भी हैं। जब सारा गांव ही चोरों का है तो डण्डा किस के हाथ मे होवे ?

युग की भूख

इस प्रकार स्पष्ट है कि युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। पक्षपात रहित काम को चलाने वाले पुरुष, क्या यह कहीं आकाश से बरसेंगे ? नहीं वह न होंगे, हमें स्वयम् बनाने होंगे।

कैसे बनेंगे

आओ इस युग की इस सब से बड़ी समस्या पर विचार करें। संसार मे कोई भी पदार्थ कैसे बनता है ? सांचे से या ढांचे से, या तो पदार्थ सांचे मे ढाल लिये जाते हैं, या ढांचा पहले बनाकर घड़ जाते हैं। एक का नाम निघण्टु प्रक्रिया है, एक का नाम निपातन।

जो गर्भाधान द्वारा ठीक सांचे मे ढाले जाते हैं वे निपातन का परिणाम हैं।

इस युग की सब से बड़ी मांग है वे पुरुष जिनकी अन्त स्थिति मे सत्य बसा है और जो कठिन से कठिन परिस्थिति मे भी ईमानदारी छोड़ना नहीं चाहते।

जो सत्सङ्ग द्वारा तपस्यापूर्वक घड़े जाते हैं वे निघण्टु प्रक्रिया का परिणाम हैं।

परन्तु थोड़ा गहराई मे उतर कर सोचें तो सांचा भी तो घड़कर बनाना पड़ता है। इसलिए निघण्टु प्रक्रिया ही मुख्य है। आओ सांचों का ढांचा घड़कर बना लें।

मत भूलिये

घड़ना है मनुष्य को, मिट्टी को नहीं।

इसलिए सब से पहला काम है कि ठीक मसाला ढूंढो, 'अदितेऽनुमन्यस्व।' अदिति देवी से कहो कि ठीक मसाला दे। फिर जड़ पदार्थ को तो ठोक पीट कर ठीक कर सकते हैं परन्तु मनुष्य को घड़ने के लिए अनुमति चाहिए। नहीं तो माल को कारीगर क्या घड़ेगा, माल ही कारीगर को घड़ डालेगा। एक बार मथुरा मे विरजानन्द नाम के कारीगर को दयानन्द नाम का मसाला मिल गया था। पूरी अनुमति थी, लोग कहते थे कि जड़ पदार्थ थोड़ ही है ठोको पीटो, किन्तु वह ठोकने वाले के हाथ मे लाठी देकर बोला इस से ठोकिये मैं बढ़िया कारीगर के हाथों बढ़िया माल बनना चाहता हूं। यह है 'अनुमतेऽनुमन्यस्व।'

कारीगर

कारीगर बढ़िया था, परन्तु माल भी बढ़िया था, कारीगर के पास सरस्वती थी पर माल के पास सरस्वती को पहचानने वाली आंखें भी तो थीं, वह भी तो दयानन्द सरस्वती था। बस देखो क्या बढ़िया माल तैयार हुआ, यह है सरस्वत्यनुमन्यस्व।'

दिव्य गन्धर्व

सरस्वती को सरस्वती का लाभ क्यों न होता। उसने सविता के दरबार मे क्या थोड़ी खाक छानी थी। घर छोड़ा, बार छोड़ा, परिवार छोड़ा, अगला बनने वाला परिवार छोड़ा। परिवार बनाया जंगलों का, झाड़ियों का, कांटों का, पहाड़ों को, नदियों को, बरफीली नुकीली चट्टानों को, सब जगह चिल्लाता फिरा सरस्वती दे। अन्त को सविता पिघल और सरस्वती को सरस्वती का लाभ हुआ। दिव्य गन्धर्व की कृपा से आदित्य ब्रह्मचारी का रोम-रोम गा उठा, गात्र सब के हैं परन्तु उसके गात्र तो सचमुच वाद्य (Musical Instruments) थे। अब मैं पूछता हूं, इसे कौन डण्डा लेकर मारने आया था। बस डण्डे बहुत हैं, डण्डे वाले चाहिएं।

परिस्थिति

लोग कहते हैं परिस्थिति हो तो डण्डे वाले आप बन जाते हैं। भले लोगो परिस्थिति तो भरत मनुष्यों के लिए वही थी। क्यों अपने आप को धोखा देते हो। परिस्थितियां नहीं अन्त स्थिति वाले चाहियें। वह अन्त स्थिति वाला था, परिस्थितियों से उलझ पड़ा और जीत कर छोड़ा, सुनो शिवलिङ्ग पर घूमने वाला चूहा क्या कहता है—

इक आज मिला सुनने वाला।
मैं रोज पते की बात कहूं।

सवन

चाहे ढांचा बनाओ चाहे सांचा, इसे वैदिक भाषा मे सवन कहते हैं। सवन करने वाला तथा सवन से तैयार माल दोनों का नाम है सोम।

क्योंकि जिस उपादान कारण से माल तैयार हो और जो माल तैयार हो वह दोनों द्रव्य तो एक ही हैं सोने का भूषण सोना तो है ही।

अब देखिये शतपथ ब्राह्मण क्या कहता है—

सोम कस्मिन् प्रतिष्ठित इति, दीक्षायामिति
(शत० १४ ६ २ २४)

प्रश्न—सोम किस में खड़ा है ?
उत्तर—दीक्षा मे।
कस्मिन्नुदीक्षा प्रतिष्ठिता सत्य इति।
प्रश्न दीक्षा किस पर खड़ी है ?
उत्तर—सत्य पर।

ऋषि सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास मे लिखते है (मोह आदि दोषों के छोड़ने और सत्याचार के ग्रहण करने की शिक्षा करे। क्योंकि जिस पुरुष ने जिसके सामने एक बार चोरी जारी मिथ्या भाषणादि कर्म किया, उसकी प्रतिष्ठा उसके सामने मृत्यु पर्यन्त नहीं होती। जैसी हानि प्रतिज्ञा मिथ्या करने वाले की होती है वैसी अन्य किसी की नहीं, इस से जिसके साथ जैसी प्रतिज्ञा करनी उसके साथ वैसी ही पूरी करनी चाहिए अर्थात् जैसे किसी ने कहा कि मैं तुम को या तू मुझ से मिलेगा वा मिलना अथवा अमुक वस्तु अमुक समय मे तुझको दूंगा इसका वैसी ही पूरी करे नहीं तो उसकी प्रतीति कोई न करेगा। इस लिए सदा सत्यभाषण युक्त और सत्य प्रतिज्ञा युक्त सब को होना चाहिए।

यही बात तुलसीदास जी ने इन शब्दों में कही है।

रघुकुल रीत सदा चली आई।
प्राण जाहिं पर बचन न जाई।

भेद केवल इतना है कि जो बात तुलसीदास जी ने रघुकुल के लिए कही है उसे ऋषि ने बालक मात्र की शिक्षा का आधार कहा है।

दीक्षा के बिना शिक्षा निष्फल है परन्तु सत्य के बिना दीक्षा निराधार है। यदि आप चाहते हैं कि मानव समाज का फिर से ठीक निर्माण हो तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य यह सांचे या ढांचे तैयार करने होंगे।

परन्तु सब से बड़ा ढांचों और सांचों का मसाला है सत्य। इसलिए इस युग की सबसे बड़ी मांग है वे पुरुष जिनकी अन्तः स्थिति मे सत्य बसा है और जो कठिन से कठिन परिस्थिति मे भी ईमानदारी छोड़ना नहीं चाहते।

सब से बड़ा भ्रष्टाचारी कौन है ? कहते हैं कि एक मौलवी साहब भगवान् से रोज प्रार्थना करते थे कि हे भगवान् एक बार मुझे शैतान से मिला दे तो मैं उसकी दाढ़ी नोच लूं। एक दिन भगवान् ने स्वप्न मे शैतान को उसके सामने ला खड़ा किया। शैतान की बड़ी लम्बी दाढ़ी थी। मौलवी साहब ने तुरन्त दाढ़ी पकड़ के झटका दिया कि एक ही झटके मे दाढ़ी उखड़ जावे तुरन्त मौलवी साहब की आंख खुल गई। देखा तो खुद अपनी दाढ़ी उनके हाथ में थी और सारा मुंह झटके के मारे दर्द कर रहा था। बस आज भ्रष्टाचार की चिल्लाहट सुनकर यही कथा याद आती है।

देहाती कहता है कि सरपंच बेईमान है। उससे कहते हैं कि तहसीलदार से शिकायत करो वह कहता है तहसीलदार भी भ्रष्टाचारी है। तब कहते हैं कि जिलाधीश से शिकायत करो उत्तर मिलता है वह भी भ्रष्टाचारी है तब कहते हैं कि अपने विधानसभा के सदस्य से कहो उत्तर मिलता है, वह भी भ्रष्टाचारी है। फिर कहते हैं कि राज्य के मुख्यमन्त्री से कहो तो उत्तर मिलता है सारी कांग्रेस पार्टी ही बेईमान है। तब मैं पूछता हूं कि हे वोटरो यदि यह सच है कि कांग्रेस पार्टी बेईमान है तो तुमने उन्हें वोट क्यों दिया ? उत्तर मिलता है कि देना तो नहीं चाहते थे लेकिन बस, यह लेकिन ही सारे भ्रष्टाचार की जननी है। इसे घर मे मत बसने दो, मैं नहीं कहता कि तुम वोट किसे दो। परन्तु इतना अवश्य कहता हूं कि उसे दो जिसमे तुम्हें लेकिन न लगाना पड़े। तुम्हें कांग्रेस के विचार पसन्द है तो कांग्रेस को दो, जनसंघ के पसन्द हैं तो जनसंघ को दो, कम्युनिस्ट के पसन्द हैं तो कम्युनिस्ट को दो परन्तु यह न करो कि देना तो कम्युनिस्ट को चाहते थे। लेकिन

(शेष पृष्ठ ९ पर)

आर्य साहित्यकार का परिचय

स्वामी दयानन्द के जीवन चरित लेखक पं० घासीराम जी एम.-ए. एल.-एल.-बी०

लेखक डा० भवानीलाल भारतीय

स्व० देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय द्वारा संगृहीत स्वामी दयानन्द के जीवन चरित के विभिन्न सूत्रों को संग्रथित कर उन्हें व्यवस्थित चरित्र का रूप प्रदान करने का श्रेय प्रमुख साहित्यकार पं० घासीराम जी का जन्म मेरठ नगर मे लाला द्वारिकादास के यहां कार्तिक पूर्णिमा सं० १९२९ वि० को हुआ था। लाला द्वारिकादास स्वामी दयानन्द के सम्पर्क मे आये थे और व मूर्ति पूजा का परित्याग कर आर्यसमाज के सभासद बने। पं० घासीराम की प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू व फारसी में हुई। तदनन्तर वे अंग्रेजी पढ़ने के हेतु हाई स्कूल मे प्रविष्ट कराये गए। यहां उनका परिचय पं० गंगाप्रसाद (रिटायर्ड जज) से हुआ। दोनों में घनिष्ठ प्रेम एवं मैत्री हो गई। १८९० ई० में गंगा प्रसाद और घासीराम ने मिलकर आर्य डिबेटिंग क्लब की स्थापना की। इसमें आर्यसमाज विषयक भाषण होते थे। १८९० में घासीराम जी ने मैट्रिक पास की तथा आगे पढ़ने के लिए आगरा चले गए परन्तु इनके द्वारा स्थापित क्लब यथावत् चलता रहा। आगरा मे भी घासीराम जी को पं० गंगाप्रसाद तथा श्री ज्वालाप्रसाद आदि आर्यसमाजी छात्रों का सहयोग मिला। अब वे आर्यमित्र सभा चलाने लगे। १८९४ में उन्होंने विश्वविद्यालय मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके उपलक्ष्य मे उन्हें स्वर्णपदक भी प्राप्त हुआ। छात्रवृत्ति तो प्रति वर्ष मिलती ही रही। १८९६ ई० मे दुहरा पाठ्यक्रम लेकर उन्होंने एम० ए० और एल० एल० बी० की परीक्षायें उत्तीर्ण की। शिक्षा समाप्त कर वे जोधपुर के जसवन्त कालेज मे दर्शन एवं तर्कशास्त्र के प्राध्यापक बने जहां उन्होंने पांच वर्ष तक कार्य किया। परन्तु १९०१ मे जोधपुर मे विषूचिका फैलने के कारण व पिता के आदेश से त्यागपत्र देकर मेरठ चले आये।

मेरठ आकर घासीराम जी ने वकालत करना आरम्भ किया। इस क्षेत्र में भी उन्हें पर्याप्त सफलता मिली परन्तु वे अधिक द्रव्योपार्जन नहीं कर सके। इसके दो कारण थे— वकालत के व्यवसाय में वाचाल व्यक्ति अधिक सफल हो सकता है जबकि घासीराम जी मितभाषी थे। उनमे वाकपटुता का अभाव था। द्वितीय वे मुकदमा लड़ने वालों को पारम्परिक सद्भाव से काम लेकर अपना मामला निपटा लेने का ही परामर्श देते थे। १९२९ तक घासीराम जी इस व्यवसाय में रहे। इसी वर्ष वे मेरठ नगर पालिका के सदस्य भी चुने गए और चार वर्ष तक इस पद पर रहे। इस बीच वे नगरपालिका शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष भी रहे।

आर्यसमाज की प्रवृत्तियों में घासीराम जी की प्रारम्भ से ही रुचि थी। वे मेरठ आर्यसमाज के वर्षों तक प्रधान रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त (वर्तमान उत्तरप्रदेश) के कई वर्षों तक उपप्रधान एवं प्रधान रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिमोत्तर प्रदेश (उत्तर प्रदेश का प्राचीन नाम) मे साहित्य प्रकाशन का कार्य १८९५ ई० में ही प्रारम्भ हो चुका था। पं० घासीराम जी के निर्देशन मे भी साहित्य लेखन एवं प्रकाशन का यह कार्यक्रम निरन्तर चलता रहा। और उनके निधन के पश्चात् यह साहित्य विभाग उनकी स्मृति मे पं० घासीराम साहित्य विभाग के नाम से ही अभिहित किया जाने लगा। पं० घासीराम अद्भुत लेखन प्रतिभा के धनी थे। उन्हें हिन्दी संस्कृत, उर्दू, फारसी, बंगला तथा अंग्रेजी का प्रौढ़ ज्ञान था। अनुवाद कार्य मे उनकी विशेष रुचि थी। २० नवम्बर १९३४ को आर्यसमाज के इस साहित्य महारथी का निधन हो गया। उनके द्वारा रचित तथा अनूदित ग्रन्थो का विवरण इस प्रकार है—

१ सम्पूर्ण गीता का पद्यानुवाद।

२ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का अंग्रेजी अनुवाद। प्रथम यह अनुवाद गुरुकुल कांगड़ी की अंग्रेजी मुख पत्रिका वैदिक मैगजीन मे धारावाही प्रकाशित हुआ। पुनः आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त ने पुस्तकाकार प्रकाशित किया। इसमें भूमिका के संस्कृत भाग का ही अनुवाद किया गया है। इसका द्वितीय संस्करण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा ने १९५८ मे प्रकाशित किया। जनज्ञान प्रकाशन दिल्ली ने १९७३ मे इसका तृतीय संस्करण प्रकाशित किया।

३ महात्मा नारायण स्वामी लिखित ईशोपनिषद भाष्य का अंग्रेजी अनुवाद— प्रथम संस्करण इलाहाबाद के श्री विद्याधर बी० ए० द्वारा प्रकाशित हुआ। द्वितीय परिवर्द्धित एवं संशोधित संस्करण आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रांत द्वारा १९२९ मे प्रकाशित हुआ।

४ घासीराम का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य स्वामी दयानन्द के यशस्वी बंगला जीवनी लेखक पं० देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय लिखित लघु जीवन चरित तथा बृहत् जीवन चरित्र के प्रारम्भिक लिखित अंश का हिन्दी अनुवाद करना तथा उनके द्वारा संगृहीत सामग्री के आधार पर अवशिष्ट ग्रन्थ को पूरा करना है। देवेन्द्र बाबू ने १८९४ मे दयानन्द चरित शीर्षक जीवनी बंगला भाषा मे लिखी थी। इसे अनूदित कर पं० घासीराम ने श्री रघुवीर शरण दुबलिश के भास्कर प्रेस मेरठ द्वारा १९१२ मे प्रथम बार प्रकाशित कराया। गोविन्दराम हासानन्द कलकत्ता ने इसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया। आर्योदय साप्ताहिक ने इसी को अपने विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया।

५ महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित—देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय स्वामी दयानन्द के बृहत् जीवन चरित की उपादान भूत सामग्री का संचय कर चुके थे। काशी मे बैठकर इस सामग्री के आधार पर उन्होंने बृहत् जीवन चरित का लिखना आरम्भ ही किया था कि दुर्योगवश उनका अर्द्धांग रोग से १९१६ मे देहान्त हो गया। उनकी लेखनी से इस जीवनी की महत्त्वपूर्ण भूमिका तथा चार अध्याय ही लिखे गये। पं० घासीराम ने १९१७-१८ मे काशी के तत्कालीन डिप्टी कलैक्टर श्री ज्वालाप्रसाद की सहायता से देवेन्द्रनाथ द्वारा संकलित सामग्री अधिकृत की। श्री ज्वालाप्रसाद निष्ठावान् आर्यसमाजी थे तथा पं० घासीराम के सहपाठी रह चुके थे। इसलिए इस कार्य में उनका सहायक होना स्वाभाविक ही था। देवेन्द्र बाबू द्वारा संचित यह सामग्री अत्यंत अस्तव्यस्त दशा में थी। कागजों के सैकड़ों छोटे बड़े टकड़े और उन पर अंकित किए गए नोट, नोट बुकों पत्र पोस्टकार्ड समाचार पत्रों की कतरनें इस समस्त सामग्री को पढ़ना, उसे हिन्दी मे अनूदित कर व्यवस्थित रूप देना तथा ग्रन्थ में यथाप्रसंग इसका उपयोग करना अत्यन्त परिश्रम साध्य कार्य था। परन्तु घासीराम जी ने अपने परिश्रम एवं अध्यवसाय से इस सम्पूर्ण सामग्री का व्यवस्थित सम्पादन एवं उपयोग कर स्वामी दयानन्द के जीवन चरित को पूर्णता प्रदान की। पं० घासीराम रचित यही जीवनी स्वामी जी का सर्वाधिक प्रामाणिक जीवन चरित माना जाता है। इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का दयानन्द निर्वाण अर्द्धशताब्दी के अवसर पर १९३३ में आर्य साहित्य मण्डल अजमेर ने दो भागों मे प्रकाशित किया। अब तक इसके चार संस्करण निकल चुके हैं।

६ दण्डी विरजानन्द का जीवन चरित— देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय ने दण्डी विरजानन्द की एक शोधपूर्ण जीवनी बंगला भाषा मे निबद्ध की थी। यह अप्रकाशित रही। पं० घासीराम जी ने इसका हिंदी अनुवाद किया, जो आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रांत द्वारा प्रथम बार १९१९ में तथा द्वितीय बार २०११ वि० में प्रकाशित हुआ।

७ वेदसुधा —ईश्वर स्तुति प्रार्थना विषयक १०० वेद मन्त्रों का भावार्थ पं० घासीराम ने तैयार किया जिसे संयुक्त प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के ट्रैक्ट विभाग के अधिष्ठाता रूप मे स्वयं उन्होंने १९०१ में प्रकाशित किया।

८ भक्ति सोपान —आर्य पुस्तकालय, मेरठ।

शुद्धि

आचार्य देव प्रकाश धर्म प्रचार समिति, केन्द्रीय आर्यसभा अमृतसर का एक उपविभाग है, के द्वारा मल्ली मुसलमानों की शुद्धि— पूरा विवरण नीचे दिया जा रहा है।

ग्राम तम्बड़ी कुमन (जिला अमृतसर) दिनांक १७-४-८५

१	सिलामत	आयु ६० वर्ष	शुद्ध नाम	सन्तराम	कुलसंख्या	७
२	युगिन्द	२६		योगिन्द्र पाल	,,	४
३	देस	२४		देसराज	,	५
४	बिचनडू	२२		अविन्द्र कुमार	,,	२
५	खुरशैद	७०		खुसीराम	,,	७
६	गुरमीत	२६		गुरमीत लाल	,,	४
७	मजीदा	५५		मोहन लाल	,,	८
८	जगा	५०		जगतराम	,	८
९	मेहन्दी	६५		ज्ञान देवी	,,	५

कुल—५०

(भोलानाथ दिलावरी)
प्रधान

(नन्द किशोर आर्य) एम० ए०
महामन्त्री केन्द्रीय आर्यसभा अमृतसर।

तरुणमञ्च—

आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठो का अनावरण

आर्यवीर की वीरगाथा—२

लेखक प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन, अबोहर

"देख लो छाती पर घाव हैं"

आज कुछ स्वार्थी लोगों ने यह निराधार और मिथ्या प्रचार कर रखा है कि आर्यसमाज के संस्थापक के खण्डन मण्डन के कारण सिखों में पृथक्ता का भाव आया। यह एक काला झूठ है। इन लोगों को यह पता ही नहीं कि ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व वा विचारों से प्रभावित होकर अनेको छोटे बडे सिख आर्यसमाज में आए। ऋषि के बाद भी सिख आर्यसमाज से दूर न हुए। हिन्दुओं से सिखों को पृथक् करने की कुटिल कुचाल अंग्रेजो की सफल हो गई। इस प्रसग को कभी फिर लेंगे।

आज हम एक आर्यवीरकी कुछ चर्चा करने लगे हैं। यह थे सरदार चुन्नासिंह जी। आप बटाला जिला लुधियाना के निवासी थे। बड देशभक्त और सिद्धान्त प्रेमी आय थे। आप आयसमाज के लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के बाल सखा थे। स्वामी जी भी तो पहले सिख ही थे। सरदार चुन्नासिंह जी ने वैदिक धर्म की सेवा के लिए दिन रात एक कर दिया। इससे कुछ लोग चिढ गय। विरोधी तर्क से बुद्धि से तो आपके प्रचार का प्रवाह न रोक सके।

आप पर प्राणघातक आक्रमण किया गया। आप लहूलुहान हो गये। यह दुखद समाचार सुनकर लोग आपके घायल शरीर के पास पहुचे तो इस आर्य वीर ने आचार्य दयानन्द वा प० लेखराम के बलिदान का स्मरण करते हुए अपने एक मित्र से कहा

देख लो मैंने पीठ नही दिखाई आततायी के सामने छाती खोली है। मेरी छाती से लहू बह रहा है। पीठ पर वार नही हुआ '

सरदार जी गाया करत थे -

मुझे धम वेद से है पिता,
सदा इस तरह का प्यार दे।
कि न मोडूं मुख कभी इस से मैं
कोई चाहे सिर भी उतार दे॥

इस भजन को अपने जीवन मे उतार कर आपने आयसमाज के स्वर्णिम इतिहास मे एक और अध्याय जोडा।

यह कार्य केवल चिरञ्जीवलाल ही कर सकता है —

१८७७ ई० मे ऋषि जी लुधियाना पधारे। वहा एक १६ वर्षीय अल्पशिक्षित युवक ने ऋषि की अमृतवाणी सुनी। यह युवक पढा लिखा तो कम था परन्तु सूझ समझ बहुत थी। पौराणिक अध विश्वासो मे पले इस युवक को काया ही पलट गई। कहा तो इसकी मा २से हरदम भूतप्रेत और कबरो के मुर्दो से डराती थी और कहा अब ऋषि की कृपा स ऐसा अटल ईश्वर विश्वासी बन गया कि डर इससे डर कर कोसों दूर भागता था।

इस व्यापारी कुल मे जन्मे युवक का शरीर बडा बलवान् था। अब यह चरित्र का धनी बन गया। वैदिक मिशनरी बन गया। घर से खाकर ऋषि का काम करता था। कुरीतियो को जड मूल से उखाडना इसका लक्ष्य बन गया। इसी आर्य पुरुष के कुशल नेतृत्व मे आय समाज ने 'नारी रक्षा' का अपना प्रथम आन्दोलन लुधियाना म चलाया और विजय ''ाई। यह आन्दोलन क्या था। वहा देविया दरिया ''र नगी नहाया करती थी। विधर्मी बदमा''न उनका निरादर करते थे और कई बार आर्यो न इस कुरीति को ही मिटा दिया। नारी रक्षा का यह आयसमाज का प्रथम प्रबल आन्दोलन था।

एक बार लुधियाना मे एक ५५ वष के पोती पोतो वाले सेठ ने एक १४ १५ वर्ष की कन्या से विवाह रचाया। ऋषि के विचार लुधियाना वालो ने सुने थे। कुछ लोग इसे बुरा समझते थ पर सेठ को कौन रोके। सब समझते थे कि यह काम ऋषि का चला चिरञ्जीवलाल आय ही कर सकता है। वीर न उस समझाया उसने एक भी न सुनी। आर्य वीर थाना प''चा। थाने वालो को इस पाप को रोकने के लिए कहा। उन्होने कहा हम दखल नहीं दे सकते।

"तुम दखल कहा देते हो? यह वीर का प्रश्न था।

उन्होंने कहा जहां झगडा दगा हो। यह सुनकर पहलवान चिरञ्जीव लाल फिर सेठ के घर गया। उसे समझाया। वह न माना तो उसे कहा, "डूब मरो तुम्हारी बेटी पोती जैसी यह कन्या है जिससे तुम शादी रचा रहे हो। इस पर वहा बैठे उसके घर के लोग उस पर टूट पडे। वीर चिरञ्जीव पहलवान था। उनकी पिटाई कर सकता था। चिरञ्जीव ने वहा पिट क'' एक विचित्र बात की। अपने दो दात स्वय उख ड लिए। हाथ मे दात पकड कर झोली आगे करके थान क ओर भाग पडा।

सारा लहू ''सकी झोली वा वस्त्रों पर पडता ''या। वहा जाकर कहा देखो मेरे सारे वस्त्र लहू मे रगे हैं मुझे मारा गया है। मर ''''त दबो ''ा निकाल गये हैं। अब तो दखल ''ो। पुलिस व ''लो को अब वहा जाना ही पडा। ''िस किस न मारा है? चिरञ्जव ''ाल न दुल्हे सेठ का नाम सब स पहले लिखवाया। उसके कई रिश्तेदार जो बाराती बनने वाले थे उनकी ओर भी अगुली करके कहा, यह भी मारने वाले थे। पुलिस ने सब धर दबोचे। वे लोग सेठ समेत हाथ जोडते रह गये परन्तु चिरञ्जीव ने उनको बदी बनवा दिया। विवाह क्या होना था। कन्या बच गई। क्या किसी देवी की रक्षा के लिए किसी ने ऐसा बलिदान दिया है। यही चिरञ्जीव लाल ऋषि के बाद आर्य समाज का दूसरा शहीद है।

किशोरमञ्च—

चित्तौड़ का वीर गायक

यह महाराणा प्रताप की बात नही है। यह तो चित्तौड के एक साधारण राजपूत बालक की बात है। उसका नाम प्रताप था। उसे सगीत से प्रेम था। वह गीत गाकर लोगो को मन्त्र मुग्ध कर देता था। उसके माता पिता और मित्र उससे प्रसन्न नही रहते थे। सब लोग उसे डाटते और चिढाते थे कि राजपूत के लडके होकर तुम तलवार नही सीखते हो। देश पर जब सकट आयेगा, तब तुम अपने कर्तव्य का कैसे पालन करोगे? देश की सेवा न करे, देश पर मर मिटने को तैयार न हो, ऐसा राजपूत किस काम का है?

प्रताप उन लोगो से कहा करता था— देश की सेवा केवल तलवार से ही नहीं होती। सगीत से भी देश की सेवा हो सकती है। काम पडने पर मैं बता दूगा कि देश के लिए मर मिटने मे मैं किसी से पीछे नही हूं।

किसी को प्रताप की बात ठीक नही लगती थी। लोग समझते थे कि वह सुकुमार तो है ही डीग हाकने वाला भी है। प्रताप भी अपनी धुन का पक्का था। वह किसी की बात पर ध्यान ही नहीं देता था।

दिल्ली मे उन दिनो मुगल शासक थे। मुगलो की बडी भारी सेना ने चित्तौड पर चढाई कर दी। लेकिन चित्तौड का किला इतना दृढ था कि मुगल-सेना उस पर विजय नही पा सकती थी। किले की दीवार या फाटक टूटते ही नही थे। बार-बार मुगल सेना को किले के भीतर के राजपूत वीरो के बाणो की बौछार की मार खाकर पीछे लौटना पडता था।

चित्तौड मे जो शूरवीर राजपूत थे वे महाराणा की सेना में भरती हो गये थे। लेकिन प्रताप एक ओर तो बालक था और दूसरे उसे अस्त्र शस्त्र चलाना आता भी नही था। वह सेना में भर्ती नही हुआ। पर उसने दूसरा काम चुन लिया। वह राजपूतो की सेना मे घूम घूम कर वीरता से गीत गाता और उन्हें उत्साह दिलाता था। वह चित्तौड मे और उसके आस-पास की बस्तियो मे अकेला चला जाता और वहा अपनी वीरता के गीत सुनाकर युवको और तरुणो को सेना मे सम्मिलित होने को प्रोत्साहित करता था। उसके गीतो का यह प्रभाव हुआ कि महाराणा की सेना दुगुनी हो गयी।

एक दिन जब प्रताप किसी पास की बस्ती मे सितार बजाकर गीत सुना रहा था एक मुगल सैनिक ने छिपकर उसका गीत सुन लिया। जब प्रत प लौटने लगा तब उस सैनिक ने प्रताप को पकड लिया और सेनापति के पास ल आया। मुगल सेनापति प्रताप को देखकर बडा प्रसन्न हुआ। उसने कहा—लडके! तुम्हे हमारे लिए गीत सुनाना होगा।

प्रताप ने कहा—'मेरा काम ही गीत सुनाना है। आप कहें मैं गाने को तैयार हूं।' मुगल सेनापति ने रात को सेना सजायी। चित्तौड के किले के पास वह सेना क साथ आया। किले के दरवाजे पर प्रताप को खडा करके उसन कहा— अब तुम अपने गीत गाओ।'

मुगल सेनापति ने सोचा था कि प्रताप के गीत सुनकर किले के भीतर के लोग समझेगे कि उनकी सहायता के लिए कोई दूसरी राजपूत सेना आयी है। इस धोखे मे वे किले का फाटक खोल देंगे।

प्रताप मुगल सेनापति की चालाकी

(शेष पृष्ठ १२ पर)

वर्तमान चारित्रिक संकट, समस्या और समाधान

मोहम्मद असलम

प्रस्तावना —

जब ईश्वर ने इस ससार का निर्माण किया था उसी समय से इस पृथ्वी पर भलाई बुराई सज्जन और दुर्जन के बीच झगड़ा प्रारम्भ हो गया था और ससार मे उसी समय से ऐसे महापुरुष पैदा होते रहे हैं, जिन्होने समाज की प्रत्येक बुराई को समाप्त करने के हर समय प्रयत्न किए हैं। वो व्यक्ति जो समाज की बुराइयो से हर समय लडते रहे है वो ही व्यक्ति चरित्रवान् कहलाए और उन्ही के कारण आज ये ससार टिका हुआ है और निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है, यदि ऐसे चरित्रवान् महापुरुष इस पृथ्वी पर अवतरित न हुए होते तो यह वर्तमान ससार भूतकाल मे ही कभी का समाप्त हो जाता।

चरित्र क्या है—

चरित्र शब्द बोलने और समझने मे केवल ३ अक्षरो का ही शब्द है, परन्तु चरित्र बडा व्यापक शब्द है। इसके विभिन्न अर्थ लगाये जाते हैं। विद्वान् श्री जे०एम० मिल ने इच्छा शक्ति के अभ्यास को ही चरित्र कहा है। श्री काट महोदय भी पुरुष को आत्मनिर्मित प्राणी मानते हैं। इसलिए इच्छा शक्ति का विकास ही चरित्र के लिए आवश्यक है अर्थात् इन विद्वानों के कथनानुसार इसका तात्पर्य है कि मनुष्य आत्मा द्वारा निर्मित प्राणी है, इसलिए उसका चरित्र इसी बात पर डिपेण्ड करता है कि उसकी इच्छा शक्ति क्या है? यदि व्यक्ति की इच्छा शक्ति दूसरो के प्रति भलाई की है तो वही व्यक्ति या प्राणी चरित्रवान् है।

श्री मैकडूगल महोदय स्थानीय भाव के सगठन को चरित्र कहते हैं। भारतीय साक्ष्य अधिनियम की धारा ५५ के अनुसार "चरित्रशब्द के अन्तर्गत ख्याति तथा स्वभाव दोनो आते हैं। ख्याति से हमारा अभिप्राय दूसरो के द्वारा किसी व्यक्ति के बारे मे सोची समझी जाने वाली धारणा है, और वह सार्वजनिक धारणा द्वारा बनती है अर्थात् किसी अमुक व्यक्ति के विषय मे अन्य लोगो की क्या धारणा है। जबकि स्वभाव का अभिप्राय किसी व्यक्ति के चरित्र के बारे मे साक्षी की अपनी निजी धारणा है।

प्राय चरित्र मे दो बातों पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है।

१ मनुष्यों का दूसरों के प्रति आचरण—

अर्थात् किसी भी व्यक्ति का समाज के अन्य व्यक्तियो के प्रति किस प्रकार का व्यवहार है, यदि उसका व्यवहार समाज सम्मत है तो वह व्यक्ति चरित्रवान् है।

२ मनुष्य के सिद्धान्त—

अर्थात् किसी व्यक्ति के अपने जीवन के क्या-क्या सिद्धान्त हैं। कुछ व्यक्ति अपने जीवन के सिद्धान्त समाज सम्मत नही बनाते तो उनको चरित्रवान् नही कहा जा सकता। जैसे चोर डकैत आदि। इनके जीवन के सिद्धान्त समाज सम्मत नही हैं इसलिए ये चरित्रवान् नही हैं। भले ही ये चोरी डकैती के बाद गरीबो की सेवा ही क्यो न करते हो।

उपर्युक्त दो बातो से हमारा ये निष्कर्ष निकलता है कि वो ही व्यक्ति चरित्रवान् हैं जो समाज के अन्य व्यक्तियो के साथ अच्छा व्यवहार करते हो और उनके सिद्धान्त समाज सम्मत हो।

वर्तमान चारित्रिक सकट-समस्या का कारण—

प्राय देखा जाता है कि इस ससार मे कुछ ऐसे व्यक्ति भी जन्म लेते हैं जो स्वार्थी होते हैं और ये स्वार्थी व्यक्ति अपने स्वार्थ वश समाज की कोई भी परवाह नही करते। ऐसे स्वार्थी व्यक्ति चरित्रहीन कहलाते हैं, और ये चरित्रहीन व्यक्ति इस ससार मे तो कभी आदरणीय नही हो पाते, परन्तु समाज के भले व्यक्ति जब इन चरित्रहीन व्यक्तियों के पापो के सम्मुख परास्त हो जाते हैं तो ये समाज का सर्वनाश कर देते हैं। वर्तमान समाज मे चारित्रिक सकट उत्पन्न होने के कारण निम्न प्रकार हैं—

सामाजिक कारण—

वर्तमान समाज के आज चारो ओर चारित्रिक दुर्बलता छा गई है। आज का समाज प्रगतिशील समाज होने का दावा करता है परन्तु इस समाज में प्रगति की आड मे सामाजिक मूल्यो आदर्शों सस्कृति एव सभ्यता की तनिक भी परवाह नही की जाती है। आज सर्वत्र लूट खसोट भ्रष्टाचार दहेज हत्याएँ, बलात्कार डकैती कत्ल आदि हो रहे हैं। इन सब को करने वालो का सामना करने के लिए हमारे समाज मे दम नही है, बल्कि अपराधी का साथ देते हैं। उसे सजा से मुक्त करा देते हैं और किसी शरीफ व्यक्ति को झूठा फसाकर सजा देते हैं। क्या यही आदर्श है हमारे समाज का? विद्वान् अरस्तु महोदय का कथन है कि Man is a social animal अर्थात् मनुष्य को जीवित रहने के लिए समाज के अन्य व्यक्तियो पर निर्भर रहना पडता है, और रूसो महोदय लिखते है कि "बच्चा जब उत्पन्न होता है तो वह अच्छा होता है और समाज की खराब व्यवस्था के कारण बिगड जाता है। ऐसा क्यो है? इसका कारण है, जिस समाज का हम सहारा लेते हैं, जब उस समाज का ही चारित्रिक पतन हो गया है, जब उसी मे चोर डकैत, बलात्कारी, दहेज हत्या करने वाले, कपटी व्यक्ति पहले ही विद्यमान हैं तो उनका असर हम पर पडे बिना नही रहेगा। उस समाज के साथ हम भी उसी प्रकार आचरण करेंगे और चरित्रहीन हो जाएगे। एक अग्रेज विद्वान् ने लिखा है कि मुझे व्यक्ति की सगति बता दो और मैं उसका चरित्र बता दूगा। सत्य ही है, A man is Knoning the Company he Keeps

इसी प्रकार अब्दुल रहीम खानखाना ने लिखा है।

जैसी सगति बैठिये, तैसोई फल दीन।
कदली सीप, भुजग मुख
स्वाति एक, गुण तीन॥
रहिमन नीचन सग बसि,
लगत कलक न काहि।
दूध कलारिन हाथ लखि,
मद समुझहि सब ताहि॥

इस पर भी कुछ व्यक्ति तर्क देते हैं कि हम पर बुरी सगति का असर पडने वाला नही है इस पर एक विद्वान् ने लिखा है कि—

आग के पास मत बैठो जाकर।
एक दिन उठोगे दामन जलाकर।
ये माना कि तुम दामन बचाते रहोगे।
पर आग की सेक तो खाते रहोगे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि चारित्रिक पतन मे समाज का बहुत बडा हाथ है क्योंकि जो समाज सामाजिक आदर्शों से गिर जाएगा उस समाज मे आने वाली सन्तानें भी चरित्रहीन होंगी।

समाधान—

हमे अपने समाज की बुराइयो को दूर करने के लिए सामाजिक आंदोलन करने होंगे। भ्रष्टाचार, चोरी डकैती, आदि के विरुद्ध एक होकर आवाज उठानी होगी। हमें अपने सामाजिक आदर्शों, मूल्यो को जिन्दा करना होगा अपनी सस्कृति और सभ्यता को समझना होगा और उसी के अनुसार आचरण करना होगा। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को सदाचार, आज्ञापालन, मधुर भाषण, नम्रता, साहस, निर्भीकता और अनुशासनप्रियता का संकल्प लेना होगा। समाज के जितने भी गलत अपराधी, दुराचारी, भ्रष्टाचारी स्वार्थी कपटी, हिंसक और व्यसनी व्यक्ति हैं उनका साथ छोडना होगा। सज्जन और आदर्श व्यक्ति का साथ देना व उसके सम्पर्क मे रहना होगा क्योंकि सज्जन व्यक्ति के सम्पर्क में रहने से ही मनुष्य चरित्रवान् बनता है। क्योकि गुलाब के पौधे के आसपास की मिट्टी भी सुवासित हो जाती है। बुरा व्यक्ति यदि विद्यादि से भी विभूषित है तो छोडने योग्य है क्योंकि मणियुक्त सर्प भी तो भयानक होता है। हमें अपने पूर्वज महापुरुषो की जीवन कथाओ से शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। हमे स्थान स्थान से अच्छाइयो को ग्रहण करना चाहिए। सत्सगति अपनानी चाहिए। तभी हम मे मधुरता, व्यवहार कुशलता, नम्रता, साहस, निर्भीकता उत्पन्न हो सकती है और हम चरित्रवान् बन सकते हैं। जैसे मधुमक्खिया मकरन्द सग्रह करने के लिए कोसो चक्कर लगाती हैं और अच्छे अच्छे फूलो पर बैठकर उनके रस लेती हैं तभी तो उनके मधु की संसार मे सर्वश्रेष्ठ मधुरता है। सत्सगति मे रहकर बाल्मीकि जैसा दुराचरण ससार मे सम्मानित हुआ। हमे अपनी आंखो को अपने कानों को तथा दूसरी ज्ञानेन्द्रियों को खुला रखना चाहिए। ससार के सम्बन्ध मे जितना जान सकते हो जानो, ज्ञान को बढाओ, जो ज्ञान इन्द्रियाँ तुम्हें देती हैं उनका प्रयोग करो। योग्यता के साथ बुद्धि ही चरित्र का निर्माण करती है और चरित्र सब का सब से बडा हथियार है। जो व्यक्ति उत्तम चरित्र के होते हैं इस ससार मे उनका कोई कुछ नही बिगाड सकता।" जैसे रहीम दास जी ने कहा है कि—

"जो रहीम उत्तम प्रकृति
का करि सकत कुसग।
चन्दन विष व्यापत नही,
लपटे रहत भुजग।"

आर्थिक कारण—

वर्तमान चारित्रिक सकट के कारणो मे आर्थिक कारण भी एक है। आज हमारे सामने बेरोजगारी की समस्या सर उठाये खडी है ऐसा क्यों? ऐसा इस लिए है कि हम पैसे का सही मूल्यांकन नही करते, उसका बटवारा सही प्रकार नही है। एक तरफ तो एक मजदूर जो सुबह सूर्य देवता के दर्शन होते ही मेहनत करने लग जाता है और सूर्य देवता के अस्त होने पर अपने घर को लौटता है उसे हम मजदूरी में ४-६ रुपया देते हैं तो दूसरी ओर कुछ ऐसे

वर्तमान चारित्रिक संकट, समस्या और समाधान

भी हैं जो ४ ६ हजार रुपया मासिक लेते हैं और उनका कार्य सिर्फ कुर्सी पर बैठना है। आज नौकरी मे भाई भतीजावाद पनप रहा है। रोजगार के लिए गरीब तथा रोटी के लिए तरसते व्यक्तियो को लात मारकर धनी तथा अवांछनीय व्यक्तियो को नौकरी का अवसर दिया जाता है। ऐसी परिस्थितियों में व्यक्ति का हिंसक चोर, डकैत अनैतिक व्यसनी एव अत्याचारी बनना स्वाभाविक है क्योकि जब एक व्यक्ति २०, २५०००/=रु० देकर किसी पद को प्राप्त करेगा तो उसका लक्ष्य सब से पहले पद पर बैठकर उन रिश्वत के पैसों को जनता से वसूल करना होगा और वह वसूल सिर्फ न०२ से अर्थात् रिश्वत से ही करेगा। समाज मे जीवित रहने के लिए प्रत्येक व्यक्ति की कुछ आवश्यकताएँ होती हैं। जैसे रोटी कपडा, मकान और ये सब आवश्यकताएं पैसे से ही पूरी होती हैं। परन्तु जरा विचारिये कि वह व्यक्ति बेरोजगार है ? क्योंकि रोजगार पाने के लिए उसमे योग्यता भी है, परन्तु समाज के ठेकेदारो ने उसको अवहेलना करके भाई भतीजावाद या रिश्वत का सिद्धान्त अपनाकर उसे रोजगार नही दिया, तो उस व्यक्ति के हृदय पर क्या बीतेगी ? वह सारे आदर्श व मूल्यों को छोड देगा और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनैतिक मार्ग की ओर अग्रसर होगा और वही से उसका चारित्रिक पतन आरम्भ हो जायेगा। इस प्रकार आर्थिक दशा चरित्रहीन संकट के लिए जिम्मेदार है।

समाधान—

चारित्रिक पतन को रोकने के लिए हमे पैसे का उचित बटवारा करना होगा, भाई भतीजावाद व रिश्वत के सिद्धान्त को भूलकर जो व्यक्ति जिस पद के योग्य होगा, उसे उसी पद पर सुशोभित होने के अवसर प्रदान करने होंगे। हमे मजदूरो की मजदूरी बढ़ानी होगी। समाज मे व्याप्त भ्रष्टाचार को मिटाना होगा और जब एक बेरोजगार व्यक्ति को उचित रोजगार मिल जाएगा तभी वह आदर्शों व संस्कृति की ओर अग्रसर हो सकेगा, क्योंकि बुजुर्ग कहते हैं 'कि भूखे पेट से पूजा भी नही होती है।' इस प्रकार समाज का चारित्रिक पतन रोकने के लिए प्रत्येक व्यक्ति की आर्थिक स्थिति को सुधारना होगा।

राजनैतिक कारण—

चारित्रिक सकट के कारणो मे राजनैतिक कारणों को भी नही भुलाया जा सकता, आज साधारण व्यक्तियों से लेकर मन्त्रियो पर भी चरित्रहीनता का आरोप लगाया जाता है। यह सत्य है कि "यथा राजा तथा प्रजा अर्थात् जैसा राजा का आदर्श या दुराचरण होगा वैसा ही प्रजा पर उसका असर पडेगा। आज हमारे मन्त्री व बड बडे राजनेता सरकारी धन का दुरुपयोग करते हैं। भ्रष्टाचार फैलाते हैं रिश्वत लेते हैं। आज जब चुनाव होते हैं तो प्रत्येक नेता बड लम्बे चौडे भाषण देता है जनता को झूठे आश्वासन देता है और बात बात मे कहता है कि 'देखो भाई हम तो गरीब के साथी हैं' गरीबो की सेवा करना हमारा धर्म है। परन्तु जब वो चुन कर चले जाते हैं तो गरीबो को अपनी शक्ल भी दिखानी गवारा नही करते। अभी आम चुनाव हुए हैं जनता के सामने प्रत्येक स्तर के नेता ने अपने अपने स्तर के लम्बे चौड भाषण, आश्वासन दिये हैं परन्तु जिस दिन से वो जीतकर गये हैं अपने क्षेत्रो को लौटकर नही देखा है। दिल्ली और अपने प्रदेशों के चक्कर लगा रहे हैं। जो बेचारे नेता हार गये हैं वो अपने नसीब को रो रहे हैं और जनता से कहते हैं कि तुमने हमे वोट नही दी, हम तुम्हारे काम नही करेंगे। ये सब हमारे नेताओं की चरित्रहीनता ही तो है ये सब अपने भाषणों मे गरीब के मसीहा, गरीब के साथी गरीब के जाने क्या क्या बनते हैं, और फोम के गद्दों पर बैठकर, विदेशी पोशाक व विदेशी साज सामान से सुसज्जित, विदेशी स्टाइलों से बनी कोठी में बैठकर गरीब की सेवा कैसी करते हैं ? ये सब जग जाहिर है, बताने की तनिक भी जरूरत नही है। इन नेताओं ने गरीब का साथ देकर उन बेचारों से जो कुछ उनके पास था वो भी ले लिया और धनी बन गये कभी-कभी ऐसा महसूस होता है कि जैसे गरीबी समाप्त करने का सिद्धान्त ये है कि 'गरीब को ही खत्म कर दो। गरीबी समाप्त' अर्थात् 'न रहेगा बास न बजेगी बासुरी', वाली उक्ति चरितार्थ सी हुई लगती है। वर्तमान समय मे प्रत्येक राजनैतिक दल के दोष जनता के सम्मुख आ चुके हैं। विरोधी राजनैतिक दल, सत्ता प्राप्त सरकार को हटाकर खुद तो कुर्सी हथियाना चाहते हैं, परन्तु गरीब की सेवा कोई नही करना चाहता, आज भ्रष्टाचारी अपराधी भी राजनीति मे आ जाते हैं और जनता को मोहकर चुनाव जीत कर जनता पर अत्याचार शुरू कर देते हैं ये सब क्या है ? ये सब चारित्रिक कमी तो है अभी पिछले दिनो चर्चित जासूसी काण्ड जिसमे चांदी के चद टुकडो के कारण हमारे देश की गुप्त व महत्त्वपूर्ण दस्तावेजें हमारे देश के कर्णधारो ने दूसरे देशों को दे दी, ये इनकी चरित्रहीनता ही तो है इन सबका आने वाले युग मे भावी सन्तान पर क्या असर पडेगा ? कभी सोचा इन भ्रष्ट और हराम खाने वाले नेता और अधिकारीगण ने। ये सब वतमान समाज का चारित्रिक पतन ही तो है, इस लिए इस समाज पर चारित्रिक सकट आना स्वाभाविक है।

समाधान—

आज के समय में प्रत्येक देशवासी को जागरूक होना चाहिए उसे चरित्रवान् नेताओ को ही चुनाव मे चुनकर भेजना चाहिए। उसे जाति धर्म आदि का भेद-भाव भूलकर वोट देना चाहिए। क्योकि समाज का अस्तित्व आदर्श एव उज्ज्वल चरित्र के व्यक्तियो पर ही निर्भर करता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन है 'कि व्यसनो मे पडने वाले व्यक्तियो का आकर्षण समाज की अच्छी बातो की ओर नही हो पाता सचमुच ही ऐसे व्यक्ति समाज की चारित्रिक गिरावट के जिम्मेदार होते हैं। इसलिए हमे अपने नेताओ का चुनाव करने मे बडी सतर्कता रखनी चाहिए। हमे भ्रष्टाचारी और व्यसनी नेताओ को तो अपने पास आने ही नहीं देना चाहिए उन्हे पकडकर उनकी हरकतो को उनके झूठ वायदो को उनके मुह पर कहकर भगा देना चाहिए।

नैतिक कारण—

वर्तमान समाज मे चारित्रिक सकट और समस्या उपस्थित करने मे नैतिकता का भी कम रोल नहीं है। आज हम अपने नैतिक मूल्यो को भुला चुके हैं, हमारा मन चचल है। दुर्बल है। हम अपना मान सम्मान आदि भूलकर स्वार्थवश होकर, दूसरो को तनिक भी परवाह नही करते हैं। आलस्य एव स्वार्थपरता दो ऐसे अवगुण हैं जिनके बीच पड कर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को दूषित बना लेता है। वह इन कारणो से दुविधा मे पड जाता है और कुमार्ग की ओर अग्रसर होता है और उसका चरित्र घृणा के योग्य बन जाता है। एक विद्वान् ने कहा है कि—

When wealth is lost,
Nothing is lost
When health is lost,
something is lost
But when Character is lost,
every thing is lost

इस प्रकार हमे कोई भी ऐसा कार्य नही करना चाहिए जिससे हमारा चरित्र कलंकित हो परन्तु हम अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए अन्य व्यक्तियो का अहित करने मे जरा भी सकोच नही करते, गुरु नानक का मत है—कि 'दूसरो को नीचा दिखाए बिना अथवा दूसरों का अहित किए बिना अपनी उन्नति करनी चाहिए।" परन्तु हम आज अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं। सत्य मार्ग को छोडकर कुमार्ग की ओर चलते हैं। अवैधानिक कार्य करके, दूसरो पर दोष मढते हैं, ऐसा हम क्यो करते हैं ? ऐसा हम केवल अपनी झूठी शान शौकत, दूसरो को नीचा दिखाने, अपनी स्वार्थ-परता अकर्मण्यता छुपाने ससार मे झूठी ख्याति पाने के लिए करते हैं और इन के करने से हमारा चरित्रिक पतन होना आवश्यक है।

समाधान—

हमे नैतिकता की ओर ध्यान देना चाहिए कोई भी ऐसा काय नही करें जिसस अन्य व्यक्ति हमे चरित्रहीन समझे। हमे स्वावलम्बी बनना होगा। मिथ्या शान शौकत व ख्याति से छुटकारा पाना होगा। अपने चरित्र की रक्षा के लिए प्रत्येक प्रयत्न करने पड़ेंगे चाहे चरित्र की रक्षा करने मे जान ही क्यो न चली जाए। हमारी पवित्र पुस्तक महाभारत में एक स्थान पर वर्णन आया है कि—

यद् अस्माभि सदा चरित्रस्य रक्षा कार्या धन तु आयाति याति च। चरित्र यदि नष्ट स्यात् तर्हि सर्वं विनष्ट भवति॥

वृत्त यत्नेन सरक्षेत् वित्तमेति च याति च।
अक्षीणो वित्तत क्षीणो
वृत्ततस्तु हतो हत ॥

उपसहार—

वर्तमान चारित्रिक सकट, समस्या का समाधान तभी सम्भव है जब हम अपने सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और नैतिक आदर्शों, मूल्यो को समझें और अपनाएँ। अपनी मिथ्या ख्याति प्राप्त करने का मोह छोडें। अपने समाज मे अच्छी शिक्षा लागू करें। अच्छा साहित्य पढ़ें उपरोक्त सभी बातों कारणों का निवारण हम खुद करें, खुद को सुधारे। जो हमारा आज का नवयुवक दिशाहीन हो गया है, व्यसनी अत्याचारी कपटी, अकर्मण्य, भाग्यवादी हिप्पी हो गया है। उसे सन्मार्ग दिखाएँ। हम अपनी शिक्षा प्रणाली को बदलें क्योंकि हरबार्ट और रेमान्ट महोदय ने चरित्र को शिक्षा का उद्देश्य बताया है। भारत और यूनान मे इसी उद्देश्य पर अधिक जोर दिया जाता था क्योंकि जब तक हमारी शिक्षा हमारी संस्कृति आदर्श मूल्य, संस्कार आचरण आदि का ज्ञान नही कराएगी तब तक हम सन्मार्ग पर कैसे चलेंगे और चरित्रवान् कहलायेंगे। हमें अपनी चिकित्सा खुद करनी होगी। वर्तमान समाज मे व्याप्त बलात्कार घूस खोरी भाई भतीजावाद पक्षपात, अपहरण आदि कुकृतो के विरुद्ध अभियान छेडना होगा। तभी चारित्रिक सकट व समस्या का समाधान सम्भव है और "सत्यमेव जयते की उक्ति चरितार्थ हो सकती है।

मोहम्मद असलम C/o यग हेयर ड्रेसर
१९६, रामनगर, निकट हापुड बस स्टैण्ड
मेरठ २५०००२

व्यामपीठ——

उपनिषत् कथा माला—५

ईश्वर दर्शन

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदान र महाराज

(गतांक से आगे)

परमेश्वर का पाना सुगम है, परन्तु पहले काम पूरा कर लो अर्थात् इसके लिए यह आवश्यक है कि पहले परिश्रम करो फिर मजदूरी मिलेगी। अतएव परमात्मा का पाने के लिए अर्थात् ऋषि बनने के लिए पहले मन को पवित्र बनाओ। मनुष्य पहाड़ पर चढ़ता है, परन्तु ऊपर चढ़ने में जितना समय लगता है, उतरने में उतना नहीं लगता। कसौली जाने में जितना समय लगता वहां से आने में नहीं। उतरना सुगम है, उतरने में थकावट दूर हो जाती है। अतएव पहला काम अर्थात् मन को पवित्र बनाना कठिन है, परमात्मा को पाना सुगम है। इसके लिए भगवे वस्त्रों की आवश्यकता नहीं। गृहस्थ में रहकर भी आप परमात्मा को पा सकते हैं। गेरु तो खाज को मिटाता है, रक्त रोग को दूर करता है। गेरुए कपड़े मैले कम होते हैं, इसीलिए सन्यासी पहनते थे। गेरुए कपड़े परमात्मा को नहीं मिला देते। इसके लिए तो मनुष्य को अपना मन स्वच्छ बनाना चाहिए। महात्मा वह है कि जो संकल्प मन में करता है, वही जिह्वा से कहता है, और वही पूरा कर दिखाता है। तब जाकर कहीं महात्मा होता है। जिसके मन में कुछ है, जिह्वा पर कुछ और, क्रिया में कुछ और, वह महात्मा नहीं। इसीलिए कहा है कि परमात्मा सबके अन्तःकरण में है मन चंगा तो कठौती में गङ्गा।

> दर्शन होत नारायण के,
> न पापी मन बचारे से।
> ज्योति से ज्योति मिलती है
> जग में मन को मारे से॥

देखा! मन को मारे से कैसे परमेश्वर प्राप्त होता है? इसके तीन नियम हैं—

पहला बुद्धि की तराजू पर पूरा तोलकर रखो। मत्र युवक सिनेमा देखते हैं, अच्छे भी और बुरे भी। यदि मन में खरे खोटे की पहचान है तो नेक युवक तो देखकर पीछे हट जाता है, परन्तु बुरा आगे बढ़ता है। जो बढ़ता है, वह प्राकृतिक रूप में बढ़ता ही है। तात्पर्य यह कि भारतवासियों को सत्संग नहीं मिलता, कुसंग की मात्रा बढ़ गई है, अतएव सत्संग होना आवश्यक।

दूसरे जहां तुम उपन्यास पढ़ते रहते शास्त्र की पुस्तक पढ़ो। अपने विद्यार्थी-जीवन को पवित्र बनाओ। यदि मन नहीं मानता तो उपन्यास के साथ साथ दर्शन की बातें भी पढ़ो। ऋषि दयानन्द का जीवन-चरित्र पढ़ लो सत्यार्थप्रकाश पढ़ लो हितोपदेश पढ़ लो, जिससे तराजू के दोनों पलड़े समान रहें।

तीसरे अपना अन्तःकरण पवित्र करो। दिन रात में चौबीस घण्टे होते हैं। सवा तेईस घण्टे और कामकाज में लगाओ पौन घण्टा बैठकर सब काम व्यवहार से अलग होकर, उससे किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध न रखकर, परम पिता परमात्मा के चरणों में मन लगाओ। भोजन का सम्बन्ध छः घण्टे है, वस्त्र का सम्बन्ध छः महीने या वर्ष भर, किसी वस्तु का सम्बन्ध अन्तकाल तक नहीं, केवल परमात्मा का सम्बन्ध अन्तकाल तक है। जब जीवात्मा निकलता है तब भी परमात्मा उसके साथ रहता है। अतएव इस समय को नहीं खोना चाहिए, मन लगाकर परमात्मा का ध्यान करो। उस समय दूसरों से बात न करो। ऐसा न हो कि इधर आप सन्ध्या कर रहे हैं, उधर बच्चे से बातें भी हो रही हैं। इन पैंतालीस मिनट में तो न संसार तुम्हारे लिए हो, न तुम संसार के लिए। यह ठीक है, कि मन तो चंचल अवश्य है, परन्तु तुमने देखा है कि मनुष्य कठिन से कठिन काम भी कर लेता है। एक समय आता है कि मनुष्य आत्म-हत्या तक भी कर लेता है। कितना कठिन काम है? परन्तु इसके लिए भी मन तैयार हो जाता है। इसी लिए कहा है कि—

> मन के जीते जीत है
> मन के हारे हार।

वेदान्ती कहते हैं कि वह एक रूप वाला है और अनेक रूप वाला हो जाता है। परन्तु आर्यसमाज का यह सिद्धान्त है कि परमात्मा अनेक रूप का नहीं होता। जो एक है वह एक ही रूप का रहता है। जैसे लोहे से लुहार अनेक पदार्थ बना लेता है परन्तु लोहा लुहार नहीं बना सकता। इसी प्रकार मिट्टी और कुम्हार की बात समझ लो, जब परमात्मा ने प्रकृति को लेकर संसार बना दिया तो प्रकृति परमात्मा कैसे बन सकती है? मिट्टी से घड़ा बनता है, इसके लिए चिकनी मिट्टी चाहिए, यह चिकनी मिट्टी किसी वकील के लड़के को दो और कहो कि नहीं। फिर कहो 'भाई! पढ़े-लिखे हो, इस मिट्टी से बना लो!' परन्तु वह नहीं बना सकेगा। घड़ा मिट्टी में तो विद्यमान है, परन्तु उसके मस्तिष्क में नहीं। अब कुम्हार के पास रेत ले जाओ और उससे कहो कि 'घड़ा बना दे!' वह कहेगा कि 'घड़ा रेत से नहीं बनता अर्थात् घड़ा रेत में नहीं, मिट्टी में है। इसी प्रकार संसार प्रकृति में और परमात्मा के ज्ञान में विद्यमान है। जिसके ज्ञान अथवा मस्तिष्क में कोई वस्तु हो वही उसे बना भी सकता है। कोट का कपड़ा आपने लिया है मैं उसे फाड़ दूं, तो आप लड़ेंगे। मैं कहूं लड़ते क्यों हो? दरजी भी तो इसे फाड़ ही डालता। आप कहेंगे, 'मूर्ख फाड़ता तो सही किन्तु किसी रीति से किसी नियम से!' उसके हाथ में कैंची और सुई हैं और उसके मस्तिष्क में कोट है। बस यही तो नियम है। एक वह वस्तु जो बनानी है दूसरे वह पदार्थ जिससे वह बनानी है, तीसरे वह मस्तिष्क जिससे वह बनानी है जब तक ये सब चीजें न हों कोई पदार्थ नहीं बन सकता। इसीलिए तो परमात्मा को प्रजापति कहा है।

आजकल रुई की गांठें बांधने की कल प्रायः एक लाख रुपये में आती है। पांच मन रुई की गांठ गज सवा गज लम्बी चौड़ी बांध दी जाती है। क्या उसका वजन कम कर दिया? नहीं। वजन तो कम नहीं हुआ, केवल दबा और सिकोड़ दी गई। परन्तु परमात्मा का शिकंजा तो देखो! बड़ का वृक्ष कितना बड़ा है और उसका बीज कितना छोटा है? जब उसी बीज से बड़ उपज आता है, तो वह कितना बड़ा हो जाता है।

एक बार मैं पुरी गया, मन्दिरों को तो मैं मानता ही नहीं। परन्तु मैं चल दिया कि चलो रौनक ही देखें। मन्दिर में गया तो क्या देखा? एक आदमी पूछता है कि "मूर्ति कहां है? मुझे तो दृष्टिगोचर नहीं होती। उससे पूछा, "अरे! और भी कुछ दिखाई देता है!" उसने कहा, 'हां और तो सब कुछ दिखाई देता है। फिर उन्होंने कहा कि "यह अन्धा कैसे हो गया?' उससे पूछा, अरे तूने कोई पाप तो नहीं किया?' वह बोला, "जब मैं मन्दिर की ओर चला था, तो यह विचार तो अवश्य आया था कि यह मूर्ति क्या है?' तो उसने झट कह दिया, "बस यह इसी का परिणाम है।" मैं भी मान ही बातों को मानता ही नहीं फिर मुझे क्यों नजर आती है? मैं तो मूर्ति को साक्षात् देख रहा हूं।' वास्तव में पुजारियों ने ऐसे मनुष्य रखे हुए हैं, जो यूं ही झूठ-मूठ कह देते हैं। यदि वे ऐसा न करें, तो मनुष्यों के मनों में उस मूर्ति के लिए श्रद्धा कैसे हो? रामेश्वर जाओ, भोले-भाले मनुष्य भटकते फिरते हैं। अब तो नहीं परन्तु पहले जब कोई विलायत जाना चाहता था, तो यही लोग कहा करते थे कि "विलायत न जाओ, धर्म भ्रष्ट हो जायेगा।' देश विदेश जाने को इस प्रकार रोक दिया। धर्म को भी एकादशी का व्रत समझ रखा था, कि चावल मुख में डाला और टूट गया। धर्म तो प्रत्येक स्थान में रक्षा करने से रह सकता है। यदि भ्रष्ट करना चाहो तो यहीं भ्रष्ट हो सकता है। जिधर से उन्नति होती देखी, उधर से ही रोक दिया और कहा, जाओ, रामेश्वर जाओ। बस इन्हीं लोगों ने भारत को गारत किया है।

धीर पुरुष उस परमात्मा को देखते हैं। मुझे आपको वह दिखाई नहीं देता, यद्यपि वह अन्दर ही विराजमान है। धीर पुरुष पहलवान को नहीं कहते जो पहलवान होता है लंगर कसा हुआ, छाती चौड़ी गर्दन मोटी मुख प्रसन्न, चाल में मस्ती, बुद्धि मोटी, शरीर बलिष्ठ। जब कोई बलवान् आया तो उसको 'जी' कह कर बुलाया कहा 'भाई! तुम तो बड़े अच्छे आदमी हो।' दुर्बल आया तो बिचारे को मारने लगे। ये पहलवान के लक्षण हैं। वह धीर नहीं। भर्तृहरि जी महाराज कहते हैं— अरे! लक्ष्मी आये चाहे रहे, आज ही मरना हो चाहे युग युगान्तर तक जीते रहें, कोई मान करे चाहे अपमान, धीर पुरुष नीति और धर्म के मार्ग से एक पग भी विचलित नहीं होते।' ये भर्तृहरि कौन थे? चक्रवर्ती महाराज विक्रमादित्य के बड़े भाई। राज पाट इन्हीं का था, परन्तु अपने छोटे भाई विक्रमादित्य को देकर वन को चले गए। भर्तृहरि जी ने राज से मुख मोड़ लिया और कहा, प्रभो! मुझे राज की इच्छा नहीं।

> गङ्गातीरे हिमगिरिशिला
> बद्धपद्मासनस्य,
> ब्रह्मध्यानाभ्यसनविधिना
> योगनिद्रां गतस्य।
> किन्तैर्भाव्यं मम सुदिवसै-
> र्यत्र ते निर्विशङ्काः,
> कण्डूयन्ते जरठहरिणाः
> स्वाङ्गमङ्गे मदीये।

मुझे तो यह इच्छा है कि वह दिन कब आएगा, जब मैं गंगा के किनारे बर्फ से ढकी हुई हिमालय की किसी चट्टान पर बैठा हुआ हूंगा जल की तरंगें आयेंगी और मेरे ऊपर से गुजर जायेंगी परन्तु मेरा मन फिर भी तेरी भक्ति से भरपूर रहेगा।

योगी लोग ध्यान में ही परम सिद्ध होते

ईश्वर दर्शन

जीव जन्तु भी उन्हें कुछ हानि नही पहुंचाते। फिर वे कहते हैं, 'हे प्रभो ! हिरन आकर मुझे पर्वत का एक खण्ड समझें और मुझसे टक्कर मारें।" ये हैं उन महात्माओं के मन की उमगें। ससार के लोग जब अपनी स्तुति सुनते हैं तो फूलकर कुप्पा हो जाते हैं और जब कोई उनकी निन्दा करता है तब उनका मुख ऐसा हो जाता है जैसे बीच मे से गूदा निकाल देने पर फोक रह गई हो ससारी मनुष्यो को जब कोई काम नही रहता तो वे किसी की प्रशसा करने लगते हैं और किसी की निन्दा यह बडी बुरी बात है। योगी और धीर पुरुष तो निन्दा स्तुति से सदैव निर्लेप रहते हैं।

प्राय तीस साल हुए, मैं काशीपुर गया था। एक दिन प्राय ग्यारह बजे मैं एक चौतरे पर बैठा लोगो से धर्म सम्बन्धी साधारण बातचीत कर रहा था कि 'भाई ! मूर्ति पूजा करने से परमात्मा प्रसन्न नही होता।' इतने मे एक पुजारी ने कहा, 'महाराज ! भोजन का समय है। कुछ भोजन करोगे ?' मैंने समझा यह मेरी बातो से प्रसन्न हुआ है, इसलिए भोजन कराना चाहता है। बातचीत समाप्त होने पर मैं उसके साथ-साथ चल दिया। वह मुझे एक मन्दिर मे ले गया और उसने वहा बिठा दिया जहा लोगो को चरणामृत दिया जाता है। वह कहने लगा 'महाराज ! यहा की बर्फी बडी प्रसिद्ध है।" मैंने कहा, "ले आओ।" वह मिठाई ले आया फिर उसने कहा 'महाराज ! मूर्ति की निन्दा क्यो करते हो ? आप नही मानते तो न मानें।" तीन-चार घण्टे पहले मैं निन्दा कर रहा था परन्तु अब मेरा मन बदल गया। मैंने कहा 'हा तुम ठीक कहते हो हम तो सन्यासी हैं, हम नही मानते तो न मानें। यदि कोई गृहस्थी मान ले तो हम उसे बुरा न कहेंगे। परन्तु यह हमारी भूल थी, धीर पुरुष तो वह है जो किसी लोभ मे न फसे।

एक कजूस बैठा था, एक रागी आया, उसने राग सुनाया। गाना सुनने के बाद उस कजूस ने कहा, "तुम कल आना, तुम्हें पांच रुपये देंगे। रागी बडा प्रसन्न हुआ। अगले दिन फिर आया पूछा कैसे आये ?' उसने कहा कि "कल आपने कहा था कल आना पाच रुपये देंगे"। कजूस ने हसकर कहा, 'रागी ही हो ना ! बुद्धि तो है ही नहीं। तुमने मुझे क्या दिया था ? केवल गाकर ही प्रसन्न किया था ना ? मैंने भी बात बनाकर तुम्हें प्रसन्न कर दिया।' सुनो मेरे भाई ! लाखो का धन आने पर जिसे आनन्द न हो और यदि चला जाए तो दुख न हो, उसी को धीर-पुरुष' कहते है।

उपनिषदो मे कहा है कि धीर-पुरुष ही अपनी आत्मा मे परमात्मा का देखता है।" मेरे भाई ! बात यह है कि किसी समय एक स्थान मे राज्य–प्रबन्धकनाओ का नियम यह था कि किसी निपुण मनुष्य को पकडकर पाच वर्ष के लिए राजा बना देते थे और उसमे यह कह देते थे कि पाच वर्ष तक तुम राज कर लो, छठे वर्ष तुम्हे एक जगल मे छोड दिया जायेगा। वह सोचता था कि पाच वर्ष तो बहुत होते हैं इतने दिन तो राज सुख भोग लूं। परिणाम यह होता था कि वह राज-सुख मे फंसकर सब कुछ भूल जाता था। जब समय आता और वे कहते, "चलो ! तुम्हे वन मे छोड आयें," तब वह बहुत रोता चिल्लाता, परन्तु वे उसकी एक न सुनते। ऐसे ही कई मनुष्य आये और चले गये। परन्तु किसी को यह बुद्धि न आई कि राज्य पर अधिकार जमाना चाहिए। एक बार एक चतुर मनुष्य राजा बना। उसे भी यही कहा गया। वह बुद्धिमान था। उसने प्रजा का खूब प्रबन्ध किया। नगरो की गलियां स्वच्छ कराईं। दो वर्ष इसी प्रकार प्रबन्ध करता रहा। लोग बड़े प्रसन्न हुए तीसरा वर्ष लगते ही आज्ञा की कि यह जगल साफ कर दो। वहाँ सडकें बनवा दी। जगल मे मगल हो गया। ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो कोई उस जंगल मे जाकर रहेगा उसे मुफ्त मकान मिलेगा। बहुत से लोग वहा जाकर आबाद हो गये। जब समय आया तो उसने प्रबन्धकर्ताओ से कहा, 'चलो भाई ! मुझे जगल मे छोड आओ।' उन्होने कहा, 'महाराज ! अब वन ही नही रहा जहा चाहो इच्छा पूर्वक रहो।'

इसलिए भाई ! बुद्धि से काम लो तो कल्याण ही कल्याण है। एक परमात्मा की भक्ति करो अपने अन्त करण की शुद्धि करो बुद्धि स्वयमेव आ जायेगी और ईश्वर के दर्शन हो जायेंगे। ★

"संस्कृत में निर्णय का औचित्य"

विगत १८ मई ८५ को समाचार-पत्रों के माध्यम से जब इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री बनवारी लाल यादव द्वारा दिए गए सस्कृत भाषा मे निर्णय का समाचार ज्ञात हुआ तो अनेक सस्कृत प्रेमी सज्जनो तथा सस्थाओ ने इसका स्वागत किया। यद्यपि कुछ लोगो ने सस्कृत भाषा की महत्ता को स्वीकार किया तथापि निर्णय की अव्यावहारिकता के कारण औचित्य के माध्यम से समालोचना भी की।

इस सम्बन्ध मे मेरा अपना विचार है कि सस्कृत भाषा के अन्दर ही भारतीय सस्कृति की झलक मिलती है। जैसा कि कहा भी गया है – भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे, सस्कृत सस्कृतिश्च'। लार्ड मैकाले की शिक्षा से आज भारतीयो की मानसिक दासता का परिचय सर्वविदित हो गया है और शिक्षा प्रणाली की व्यावहारिकता की दृष्टि मे रखते हुए हमारी सरकार नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाने मे जुटी हुई है।

पाश्चात्य सस्कृति व सभ्यता के अन्धानुकरण का स्पष्ट प्रभाव चारित्रिक पतन के रूप मे दृष्टिगोचर हो रहा है। मेरे विचार से गुरुकुल शिक्षा प्रणाली व सस्कृत भाषा के माध्यम से पढने वाला शायद ही ऐसा कोई छात्र होगा जिसने चोरी, बलात्कार, राहजनी, अपहरण आदि कृत्य किये हो, जबकि समाचार-पत्रो मे वर्तमान विद्यालयो/विश्वविद्यालयो के छात्रो के नाम पढने को मिलते हैं।

इस सत्य से कोई पराङ्मुख नही हो सकता कि मानव जीवन निर्माण के जन्म से मृत्यु पर्यन्त तक के सोलह सस्कार रूपी साधन सस्कृत भाषा मे ही वर्णित हैं। ऋषि-मुनियो द्वारा प्रवर्तित आध्यात्मिक ज्ञान की ज्योति आत्म शान्ति के साधन का मार्ग इसी भाषा मे अपौरुषेय ग्रन्थ वेद मे समाहित है जिसका अन्वेषण कर आज विदेशी विद्वान् वैज्ञानिक जगत् मे आविष्कार कर रहे हैं।

संस्कृत भाषा को मृतभाषा कहना स्वय अपनी हीनता प्रदर्शित करना है। जिस भाषा को समस्त भाषाओ की जननी के रूप मे जाना जाता हो, जिस भाषा के महर्षि पाणिनि जैसे वैयाकरण के बारे मे 'न भूतो न भविष्यति' कह दिया गया हो, जिस भाषा को लगभग सारी दुनिया मे पढा जाता हो, जिस भाषा मे ससार का प्राचीनतम ग्रन्थ वेद मानव मात्र के लिए ज्ञान विज्ञान के समुच्चय के रूप मे उपलब्ध हो तथा जिस भाषा मे आर्य (हिन्दू) जाति के समस्त कर्मकाण्ड सम्पन्न होते हो वह मृत कैसे ?

हा ! जब यह राज्याश्रय थी तो मध्यकाल के विद्वानो ने प्रतिस्पर्धा मे इसे दुरूह अवश्य बना दिया जिसका भय आज भी जन साधारण मे व्याप्त है। एक समय ऐसा भी रहा जब यह मात्र ब्राह्मण जाति विशेष की भाषा तक सीमित रह गई तभी से यह व्यावहारिकता से दूर हो गई। परन्तु आज यह सभी वर्ग जाति धर्म के लोगो के लिए उपलब्ध है। जहा आज से लगभग १० वर्ष पूर्व इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे इस भाषा मे छात्र-छात्राओ की सख्या नगण्य थी वहीं आज छात्रायें विशेषकर इस विषय के प्रति आकर्षित हैं और बिना किसी भेदभाव के सैकडो की सख्या मे अध्ययन कर रही हैं।

आज इस भाषा के सरलतम विधि से अध्ययन व व्यावहारिक ज्ञान की दृष्टि से अनेक सस्थाये कार्यशील हैं। शासन द्वारा भी इस भाषा के माध्यम से उपाधि प्राप्त करने वालो को मान्यता दी जा रही है। परन्तु जब हम अपने सविधान के अनुरूप स्वतन्त्रता प्राप्ति के ३७ वर्षो के पश्चात् भी राष्ट्रभाषा हिन्दी को पूर्णरूपेण नही अपना सके हैं तो सस्कृत भाषा दूर रहेगी ही। अत आज आवश्यकता है कि हम अपनी सस्कृति व सभ्यता के प्रति अटूट निष्ठा व्यक्त करते हुए सस्कृत का अध्ययन कर व्यावहारिकता मे परिवर्तन करें। न्यायमूर्ति श्री यादव जी ने हिन्दी अंग्रेजी मे अनुवाद करके ऐतिहासिक निर्णय की गौरवशाली परम्परा सस्कृत भाषा मे निर्णय देकर किया है। आशा है भारतीय जनमानस अपने पूर्वजो की इस थाती' को सम्यक रीति से सुरक्षित रखते हुए इसकी श्रीवृद्धि मे योगदान देंगे। इससे जहा एक ओर भाषायी विवाद का अन्त होगा वही दूसरी ओर राष्ट्रीय एकता भी सुदृढ होगी।

सुरेशचन्द्र "शास्त्री"
प्रचार मन्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

कल्याण मार्ग के पथिक

विरोधी भी स्वीकार करेंगे कि यह भारतवर्ष का आधुनिक सन्यासी मित्र की नजर से ही सभी की तरफ देखता था। कायरों के जमाने मे इस पुरुष-सिंह की निर्भयता बहुत लोग न समझे होंगे और सशय की नजर से उनकी तरफ देखा होगा तो वह स्वामी जी का दोष नही था। वैदिक आर्यों का [illegible] हम श्रद्धानन्द जी में देख पाते हैं।

(पृष्ठ ३ का शेष)

भ्रष्टाचार और

देना तो जनसंघ को चाहते थे लेकिन।

लेकिन क्या ?

लेकिन यह कि हमने अपना ईमान बेच दिया तब स्पष्ट है कि भारत ही सब से बडा भ्रष्टाचारी है। भारत का वोटर, ए वोटर ! तूने शैतान के दर्शन नही किये तो अब कर ले।

सब से बडा भ्रष्टाचारी सब से बडा शैतान तू है। दे दाढी को झटका अब आंख खुलेगी तू देखेगा कि तेरी ही दाढी तेरे हाथ में है।

भ्रष्टाचार की चिकित्सा धार्मिक शिक्षा

आखिर भ्रष्टाचार रोकने वाले न तो किसी पेड पर लगे मिलते हैं न आसमान से टपकते हैं, वह वहाँ ही मिल सकते हैं जहाँ मनुष्य बनाए जाते है अर्थात् शिक्षणालयो मे और वहा भी तब मिल सकते हैं जब वहा इस का प्रबन्ध हो।

पिछले दिनो सयुक्त सदाचार समिति की ओर से एक गोष्ठी बुलाई गई। गोष्ठी ने जो सिफारिशें की उनमे से दो मुख्य सिफारिशें इस प्रकार हैं।

१ शिक्षा सम्बन्ध मे नैतिक तथा आचार सम्बन्धी शिक्षा दी जाय।

२ रेडियो और फिल्मो मे अश्लील [illegible]

यदि इसमे यह स्पष्ट कह दिया जाय कि शिक्षालयो मे धार्मिक शिक्षा प्रारम्भ कर दी जाय तो सफलता के मिलने की सम्भावना बन जाएगी। क्योंकि जब कोई बात कही जाती है तो उसकी प्रभावोत्पादन शक्ति जहा युक्ति युक्तता पर निर्भर है वहा इस बात से भी इन्कार नही किया जा सकता कि प्रभावोत्पादकता का एक बहुत बडा आधार वक्ता का व्यक्तित्व भी है मनुष्य को सत्य के लिए मर मिटना चाहिए यह कह तो सब सकते है। परन्तु सुनने वाले यह भी देखते हैं कि कह कौन रहा है। जब इसी वाक्य को लोग महात्मा गाधी के मुख से सुनते थे तो महात्मा का सारा जीवन इस वाक्य के समर्थन मे बोलता था इसलिए धर्म शिक्षा को शिक्षा

समाचार-सन्देश

आर्य वीर दल, दिल्ली का शिविर सम्पन्न

सभा प्रधान श्री सूर्यदेव जी द्वारा बच्चो को पुरस्कार

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश का ग्रीष्मकालीन शिविर ३१ मई से २ जून ८५ तक रत्नदेवी पुत्री पाठशाला कृष्ण नगर म आयोजित किया गया। जिसमे यमुना पार की समाजो से १९ नवयुवको ने उत्साहपूर्ण भाग लिया। शिविरार्थियो हेतु खान पीने एवम् ठहरने की नि शुल्क व्यवस्था की गई।

रविवार २ जून को समापन समारोह के अवसर पर आर्य वीरो ने व्यायाम, प्राणायाम एवम् लाठी चलाने का सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत कर उपस्थित दर्शको का मन मोह लिया। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज की विषम परिस्थितियो मे देश एवम् समाज को निष्ठ वान आर्यवीरो की परम आवश्यकता है। युवको मे अथाह एवम् असीमित शक्ति को एक नियन्त्रित कार्य पद्धति मे परिणत कर आर्य वीर दल ने सराहनीय कार्य किया है। उन्होने एक बार फिर आश्वस्त किया कि आर्य वीरो को उत्साहित एवम् प्रोत्साहित करने हेतु सभा कभी पीछे नही रहेगी।

इस शिविर मे आये सर्वश्रेष्ठ शिवरार्थी को पुरस्कार २० ०० रुपये नकद एक मैडल एव पुस्तिका आय युवक सजय कुमार को दी गई। —श्यामसुन्दर विरमानी

महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी

मथुरा। आर्योप प्रतिनिधि सभा, मथुरा का स्वर्ण जयन्ती मुख्य समारोह ७ जून से ९ जून तक हो रहा है। इसका उद्घाटन श्री रामगोपाल शालवाले करेंगे। इस अवसर पर वेद मन्दिर का उद्घाटन, हिन्दू जागरण सम्मेलन राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, महिला जागरण सम्मेलन, आर्य किसान सम्मेलन तथा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया है। समारोह मे श्री बलराम जाखड, स्वामी सत्यप्रकाश, महात्मा दयानन्द, डा० कर्णसिंह, प्रो० बलराज मधोक, आचार्य प्रेम भिक्षु आदि महानुभाव अपने ओजस्वी विचार प्रकट करेंगे।

निवेदक
डा० द्वारिका प्रस द आर्य

निर्वाचन

आर्यसमाज आशा पार्क, जेलरोड, नई दिल्ली-१८ का सर्वसम्मत चुनाव २८ अप्रैल १९८५ को निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्री शान्तिप्रकाश नारग
उपप्रधान—श्री दासचन्द जी आर्य
मन्त्री—श्री निरजन देव जी सचदवा
उपमन्त्री—श्री दिनेशचन्द जी बन्सल
कोषाध्यक्ष—श्री कुलभूषण जी गोयल
लेखानिरीक्षक—श्री राकेश कुमार चौहान

आर्यसमाज आशा पार्क १३-८-८३ को स्थापित हुई थी और पारिवारिक सत्सगो द्वारा ही वेदप्रचार का कार्य अच्छी प्रकार मे कर रही है।

२८-४-८५ की साधारण सभा के निश्चय अनुसार आर्यसमाज आशा पार्क का सम्बन्ध 'आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली' से जोडा जा रहा है।

शान्तिप्रकाश नारग

निर्वाचन

आर्यसमाज, अनाज मण्डी, शाहदरा दिल्ली का वार्षिक साधारण अधिवेशन २९-५-८५ को सम्पन्न हुआ, जिसमे वर्ष १९८५-८६ के लिये निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—

प्रधान — श्री बनवारी लाल
उपप्रधान — सर्वश्री निरञ्जन लाल गौतम, मेघाकर आर्य, रतन लाल मय
मन्त्री — श्री ब्रह्मानन्द
उपमन्त्री — श्री ज्ञानप्रकाश
कोषाध्यक्ष — श्री हरपालसिंह
प्रचारमन्त्री — श्री निष्ठाकर आर्य
पुस्तकाध्यक्ष — श्री योगेश्वर

आवश्यकता

२७ वर्षीया (एम० ए०, शार्ट हैण्ड हिन्दी अग्रजी पास) गृह काय दक्ष, सुशील, गोरवर्ण, कद ५ फुट १ इच, आर्यसमाजी शाकाहारी परिवार की सरकारी सेवारत ११००/- रुपये वेतन पान वाली कन्या के लिए सरकारी सेवारत ब्राह्मण या वैश्य परिवार के वर की आवश्यकता है। सम्पर्क करें—श्री प० यशपाल जी सुधाशु आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली ६

आवश्यकता

गौर वर्ण ३५ वर्षीय सुशील कन्या कद ५/३ शाकाहारी परिवार सरकारी सेवारत वेतन ११०० रु० पाने वाली (अरोड़ा) कर्नौबशीय कन्या के लिए सरकारी सेवारत ४० वर्ष से कम आयु वाले वर की आवश्यकता है। विधुर या तलाकशुदा वर पर भी कोई आपत्ति नही है।

सम्पर्क करें या पत्र लिखें—
प्रबन्धक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड
नई दिल्ली-१

हरियाणा में आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर धूमधाम से प्रारम्भ

आर्यवीर दल हरियाणा के तत्त्वावधान मे हरियाणा भर के विभिन्न जिलो मे आर्यवीर दल के ग्रीष्मकालीन शिविर बडी धूमधाम से प्रारम्भ हो गए हैं। आर्यसमाज माण्ढ्या (भिवानी) मे श्री धर्मपाल "वीर" शास्त्री जी के सरक्षण मे २४।५ से १।६ तक, आर्य हायर सेकेण्डरी विद्यालय नरवाना (जीन्द) मे श्री रामकुमार जी आर्य के सरक्षण मे २६।५ से २।६ तक, डी० ए० वी० हायर सैकण्डरी विद्यालय, करनाल मे श्री जगदीश चन्द्र मधोक मण्डलपति की देखरेख मे २७।५ से २।६ तक शिविर प्रारम्भ हो रहे हैं।

आर्यसमाज कुंजपुरा, करनाल मे भी एक सप्ताह का आर्य वीरागना दल का प्रशिक्षण शिविर कु० सन्तोष आर्या के नेतृत्व मे लग रहा है।

इसी प्रकार हिसार मे १४।६ से २१।६ तक श्री सजय कुमार जी आर्य के सहयोग से, गुरुकुल झज्जर (रोहतक) मे १४।६ से २३।६ तक आचार्य देवव्रत जी व्यायामाचार्य के नेतृत्व मे, दयानन्द उच्च विद्यालय सैक्टर-१६ फरीदाबाद मे १६।६ से २३।६ तक श्री कन्हैयालाल जी मेहता के सौजन्य से तथा पलवल मे श्री सत्यपाल आर्य के सहयोग से २३।६ से ३०।६ तक लगेंगे।

इन प्रशिक्षण शिविरो मे युवको को राष्ट्रवादी विचारधारा, धूम्रपान, मद्यपान एव अभक्ष्य पदार्थों के सेवन से दूर रहने की प्रेरणा दी जायेगी। दहेज प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियो से सावधान किया जाएगा।

व्यायाम, प्राणायाम, आसन, जूडो-कराटे तथा आत्मरक्षार्थ लाठी प्रशिक्षण भी सिखाया जायेगा। उन्हें आत्मिक, शारीरिक तथा सामाजिक उन्नति के साधन बताये जायेंगे। समाज मे व्याप्त अज्ञान अन्याय, अभाव को दूर करने की प्रेरणा दी जायेगी।

शिविरो मे १५ से २५ वर्ष तक के युवक भाग ले सकते है। निवास तथा भोजन की व्यवस्था नि शुल्क है।

अजीत कुमार आर्य (मन्त्री)
आर्यवीर दल हरियाणा

श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रवेश आरम्भ

देश का प्रसिद्ध शिक्षणालय आपका चिर परिचित श्री गुरुकुल चित्तौडगढ अरावली की सुन्दर पहाडियो मे गभीरी नदी के तट पर एकान्त स्थल पर अवस्थित है, शिक्षा यहा सर्वथा नि शुल्क दी जाती है सभी प्रान्तो के बालक बिना किसी भेदभाव के यहा शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, आश्रम प्रणाली यहा की एक उल्लेखनीय एव अनुपम विशेषता लिए हुए है। यहा सुयोग्य एव विद्वान् गुरुओ की देखरेख मे बालको का सर्वांगीण विकास मुखरित होता है। वेद, वेदाग, सस्कृत साहित्य, व्याकरण, दर्शन, उपनिषद् आदि की पढाई को प्रमुखता दी जाती है। पहली से आठवी तक यहा सस्कृत विशेष के साथ अर्वाचीन सभी विषय पाठ्यक्रम मे है। सस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी से आर्य पद्धति पर आधारित प्राचीन व्याकरण व वेद निरुक्त प्रक्रिया से मध्यमा, शास्त्री व आचार्य कक्षा तक की परीक्षा का समावेश है। विगत वर्षो से यहा की परीक्षाओं का परिणाम अत्युत्तम रहा है। मध्यमा, शास्त्री व आचार्य कक्षा के छात्रो के लिए छात्रवृत्ति का भी प्रावधान है। पढाई १ जुलाई से आरम्भ होती है। नवीन बालकों का प्रवेश १५ जून से आरम्भ होता है। प्रवेश सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए मुख्याधिष्ठाता श्री गुरुकुल चित्तौडगढ राजस्थान ३१२००१ इस पते से पत्र व्यवहार

बम्बई में आर्य बाल शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न

आर्यसमाज भाण्डुप की ओर से २८ ४-८५ से १२-५-८५ तक १५ दिन के लिए आर्य बाल शिविर लगाया गया था जो कि राम आश्रम पवाई के प्रागन मे बड ही सुचारु रूप से चलता रहा। इस मे लगभग ३० बच्चों ने भाग लिया। जिनको गायत्री, सध्या, हवन मत्र तथा प्रार्थना आदि बड ही अच्छे ढग से सिखाए गये। अन्त मे १२-५ ८५ को तो मानो आर्यजनों का मेला जुडा हुआ था। प्रथम पुरस्कार विजेता श्री सुरजीतसिंह उप्पल रहे इनको १०१/- रोकडा दिय। दूसरे व तीसरे भाण्डुप के बच्चे रहे। सभी बच्चो को खान-पान, नाश्ता, दूध आदि ठीक समय पर मिलता रहा। जिसकी देखरेख आर्यसमाज के मन्त्री ज्ञानचन्द गोयल कर रहे थे। बच्चो मे वैदिक धर्म को आस्था लाना इस शिविर का मुख्य उद्देश्य था।

ज्ञानचन्द गोयल मन्त्री

शुभ विवाह

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार मन्त्री श्री राजेन्द्र दुर्गा की बहिन सौ० यशबाला का शुभ विवाह चि० भारतभूषण कोषाध्यक्ष नगर आर्यसमाज शाहदरा दिल्ली के साथ १६ मई को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री सूर्यदेव, महामन्त्री श्री डा० धर्मपाल, वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी आदि अनेक गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

आवश्यकता

एक प्रौढ़ अथवा सक्षम सेवानिवृत्त व्यक्ति जिसे शैक्षणिक व प्रशासनिक अनुभव हो चित्तौड़गढ़ गुरुकुल आश्रम बालकों की परिचर्या हेतु व्यवस्थापक पद के लिए अपेक्षित है। स्नातक व प्रशासनिक अनुभवी को प्राथमिकता। वेतन वेतन योग्यता अनुसार प्र वेदन पत्र १० जून तक भेजें, सम्पर्क करें अथवा स्वयं मिलें—

मुख्याधिष्ठाता—श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़
राजस्थान ३१२००१

निर्वाचन

आर्यसमाज कृष्णनगर दिल्ली ५१ (जमुनापार) का वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्नलिखित अधिकारियों का चयन हुआ—

प्रधान—श्री राजकुमार मेहरा
मन्त्री—श्री अशोक पठानिया
कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश बुधवार

भवदीय

पुरोहित आर्यसमाज

निर्वाचन

आर्यसमाज मुजफ्फरपुर (बिहार) का ९२वां वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ। आगामी वर्ष के लिए सर्वसम्मति से निम्नलिखित अधिकारी निर्वाचित किए गए।

१ श्री पन्नालाल आर्य—प्रधान
२ श्री कुलभूषण वोहरा—मन्त्री
३ श्री रामकृष्ण विजराजका—कोषाध्यक्ष।

सभा की अध्यक्षता समाज के वयोवृद्ध कार्यकर्ता श्री पूर्णचन्द्र विजराजका ने की। चुनाव में लगभग १२५ सदस्य उपस्थित थे। प्रीतिभोज के साथ निर्वाचन कार्य सम्पन्न हुआ।

मन्त्री
आर्यसमाज

निर्वाचन

आर्यसमाज सिलीगुड़ी के निम्नलिखित अधिकारी १९८५-८६ के लिए चुने गये हैं। आशा है प्रिय पत्र में प्रकाशित कर अनुगृहीत करेंगे।

१ श्री जवाहरलाल आर्य—प्रधान
२ श्री हर भजराम अग्रवाल—उपप्रधान
३ श्री वीरबहादुर प्रधान—उपप्रधान
४ श्री सर्वेश्वर झा—मन्त्री
५ श्री धर्मदेव प्र० मौर्य—उपमन्त्री
६ सुभाषचन्द्र बकीपुरिया—कोषाध्यक्ष
७ श्री राजेन्द्र प्रसाद—पुस्तकाध्यक्ष

धन्यवाद।

सर्वेश्वर झा (मन्त्री)
आर्यसमाज सिलीगुड़ी

यज्ञशाला का उद्घाटन

आर्यसमाज अशोक विहार फेज I दिल्ली के विशाल प्रांगण में नव निर्मित यज्ञशाला का विधिवत् रूप से उद्घाटन ६ मई १९८५ प्रातः वेद की शुभ ऋचाओं में वेदमन्त्रों के उच्चारण में श्रीमती पुष्पा जी सचदेवा के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री जैमिनी जी शास्त्री ने ब्रह्मा के रूप में की।

यज्ञशाला के निर्माण हेतु श्रीमती सचदेवा ने २५,००० रुपये की राशि अपने स्व० पति श्री तिलक राज सचदेवा की पुण्य स्मृति में दान रूप में दी। इस यज्ञशाला के निर्माण का संकल्प लगभग १ वर्ष पूर्व सचदेव परिवार ने किया था और वह स्वप्न अब साकार हुआ है।

संगमरमर पर अंकित वेद सूक्तियों से सुशोभित यह यज्ञशाला देश विदेश की सभी आधुनिक यज्ञशालाओं में उच्चकोटि की बनी है। इसका श्रेय आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं का श्रम करवा को जाता है। नये प्रधान श्री के० बी० राय श्री हरप्रकाश आन्लूवालिया तथा भूतपूर्व प्रधान श्री चमनलाल के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस समाज का १३ वां वार्षिकोत्सव यज्ञशाला के उद्घाटन से प्रारम्भ किया गया। एक सप्ताह के उत्सव में यज्ञ प्रेमी जनता ने बहु-कुण्डीय यज्ञ किया। रात्रि का कार्यक्रम B Block के पार्क में आयोजित किया गया। प० जैमिनी शास्त्री की कथा से पूर्व युवा मन्त्री श्री विजय भूषण आर्य और श्री गुलाबसिंह राघव के मनोहर भजन हुए। १० मई को महिला सम्मेलन एवं ११ मई को बच्चों की गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

१२ मई ८५ को पूर्णाहुति के पश्चात् आचार्य पृथ्वीसिंह एवं आचार्या [illegible] जी के प्रवचन हुए। बाद में ऋषि लंगर का आयोजन श्री अविनाश जी कपूर की तरफ से हुआ। श्री इन्द्रभान जी कालड़ा द्वारा यज्ञ का सारा खर्च दिया गया।

विजय भूषण आर्य मन्त्री

आर्य समाज हनुमान रोड का सर्वसम्मत निर्वाचन

आर्य समाज हनुमान् रोड के वार्षिक साधारण अधिवेशन में सर्वसम्मति से श्री राममूर्ति जी कैंसा को प्रधान चुना गया और शेष निर्वाचन करने का अधिकार भी उन्हें ही दिया गया। श्री प्रधान जी ने निम्न प्रकार से अधिकारियों के नामों की घोषणा की—

१ प्रधान—श्री राममूर्ति कैंसा
२ उपप्रधान—श्री सरदारीलाल वर्मा
३ उपप्रधान—श्री रतनलाल सहदेव
४ उपप्रधान—श्री हंसराज चोपड़ा
५ मन्त्री—श्री खैरायती लाल भाटिया
६ उपमन्त्री—श्री त्रिलोकी नारायण मिश्र
७ उपमन्त्री—श्री रघुवर दयाल जी
८ उपमन्त्री—श्री जातिबन्धु भाटिया
९ उपमन्त्री—श्री वीरेश बुग्गा
१० कोषाध्यक्ष—श्री बुद्धराम गुप्त
११ पुस्तकाध्यक्ष—श्री हुक्मराम मवानी
१२ अधिष्ठाता आर्यवीरदल श्री राजीव भाटिया

खैरायती लाल भाटिया (मन्त्री)

(पृष्ठ २ का शेष)

वद मे विज्ञान

उदु त्य जातवेदस देव वहन्ति केतव ।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥

अर्थ—

त्य जातवेदस देव सूर्यम्=उस संसार को प्रकाशित करने वाले देव सूर्य को

दृशे विश्वाय=विश्व के समस्त प्राणियो को दिखाने की दृष्टि से

केतव उद् वहन्ति=सूय की किरणें उस सूय को ऊपर उठाती है।

भावार्थ—

प्रात काल सूय के जब प्रथम दर्शन होते हैं तब सूय भूमि के पीछे होता है, जो सूय की सीधी किरणो से दिखाई नहीं दे सकता। उस समय आकाश मे ऊपर के विरल वायु मण्डल से आती हुई किरणें, जब पृथिवी की ओर के घने माध्यम के पास स गुजरती हैं तो नीचे की ओर झुक (मुड जाता है। परिणामत सूर्य—जो उस समय पृथिवी की ओट मे होता है—दिखाई देता है। ऐसा प्रतीत होना स्वाभाविक है कि मानो सूय रश्मियो ने उसे ऊपर उठा दिया है, ताकि पृथिवी के समस्त प्राणी उसे देख सकें। जब सूय की सीधी किरणे पृथिवी पर पडती हैं, उस समय सूय को देखा नहीं जा सकता। परन्तु इन तिरछी किरणो के कारण सूय का प्रबल प्रकाश भूमि पर नहीं पहुंचता। उस समय सूर्य-दर्शन सम्भव होता है।

धर्मवीर [illegible]
३, अशोक नगर, पीलीभीत (२६२-००१)

(पृष्ठ १ का शेष)

वीर गायक

चमक गया। उसने ऐसा गीत गाना आरम्भ किया कि उसे सुनकर किले के राजपूत सावधान हो गये। उन्होंने मुगल सेना पर पत्थरो और तीरों की वर्षा आरम्भ कर दी। मुगल के [illegible] गये। मुगल सेनापति ने डांटते हुए प्रताप से पूछा—लडके! तू क्या गा रहा है?

प्रताप ने बडी निर्भयता से कहा—मैं गीत मे अपने वीरों से कह रहा हूँ कि शत्रु द्वार पर खडा है। सोओ मत। धोखे मे मत आओ। किला मत खोओ। पत्थर मारो पत्थर। शत्रु को चकनाचूर कर निकाल दो।

मुगल सेनापति ने प्रताप के सिर को एक झटके म काट दिया किन्तु राजपूत सावधान हो गये थे, मुगल सेना को निराश होकर लौट जाना पडा। दूसरे दिन राजपूतों को प्रताप की लाश मिली। देश पर प्राण देने वाले उस वीर बालक की देह को स्वय महाराणा ने अपने हाथों चिता पर रखा। आओ हम भी ऐसे वीरों के जीवन से प्रेरणा [illegible]

—प्रस्तोता [illegible] शास्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए [illegible] द्वारा [illegible] मुद्रित [illegible]
[illegible] १७, [illegible]

मूल्य एक प्रति १० पैसे | वर्ष ६ अंक ३० | रविवार, १६ जून १९८५ | आर्य संवत्सर १९६०८५३०८५ | ज्येष्ठ २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१

अमर बलिदानी पं० लेखराम

धर्म पर बलिदान होने वाले वीर योद्धा पं० लेखराम का स्मरण आते ही एक दिव्य आकृति मानसपटल पर उभरती है। एक ऐसे मांझी की याद आती है जो उफनती नदी के प्रबल वेग को विपरीत धारा में अपनी नाव खेता चलता है और कभी थकता नहीं निराश भी नहीं होता। संसार ऐसे लोगों को उन्मत्त कहा करता है। धर्म की धुन के धनी पं० लेखराम का जीवन महर्षि दयानन्द और वैदिक धर्म के प्रति पूर्ण समर्पित था। वे अपनी धर्म-प्रचार यात्रा में कभी थके नहीं, रुके नहीं। विदेशी षड्यन्त्रों के जाल में भारतीय संस्कृति विगत शताब्दियों से जकड़ी चली आ रही है। इस देश के भोले भाले वाशिन्दों का छल बल से धर्म-परिवर्तन किया जाता रहा है। १९वीं सदी में हिन्दू धर्म उस कच्चे आटे के दीपक की तरह हो गया था जिसे घर में रखें तो चूहे खा जावें और बाहर रखते हैं तो कौए उठा ले जाए। किसी के छूने मात्र से ही धर्म से पतित जाति से अलग कर दिया जाता था। ऐसे कच्चे धागे जैसे धर्म को तोड़ने के लिए अनेक मतावलम्बी ईसाई और मुसलमान हिन्दुओं को अपने जाल में जकड़ते चले जा रहे थे। उस काल में महर्षि दयानन्द द्वारा दिया शुद्धि सुदर्शन चक्र पं० लेखराम ने अपने हाथ में उठा लिया। और उसका ऐसा कुशलता के साथ संचालन किया कि अनेक बिछुड़े भाई फिर हिन्दू होकर अपने पुराने घर में लौट आये। उनके जीवन की इस घटना से तो शरीर रोमांचित हो जाता है। जब उन्हें पता चला अमुक स्थान में कुछ लोग मुसलमान होने जा रहे हैं। वे उस समय घर बैठे भोजन करने ही जा रहे थे कि पत्र द्वारा उन्हें सूचना मिली, उसी अवस्था में उठकर वे रेलगाड़ी द्वारा उस स्थान के लिए चल पड़े। उस गांव में कोई रेलवे स्टेशन नहीं था उन्होंने चलती गाड़ी से छलांग लगा दी। रेल से गिरने से उन्हें चोट भी लगी खून से रंगे वस्त्रों से ही वे उस स्थल पर पहुंचे जहां कुछ हिन्दू भड़कावे में आकर अपना धर्म परित्याग करने जा रहे थे। जैसे ही उन्होंने पं० लेखराम को और उनके त्याग को देखा वे भाव विभोर हो गये। उन्होंने यह कहकर धर्म परिवर्तन से अपना निश्चय बदल लिया कि जिस धर्म में ऐसे हमारे रक्षक भाई हैं जो अपनी जान पर खेलकर हमको बचाने आते हैं, हम उस धर्म को कदापि नहीं त्याग सकते।

पं० लेखराम ने अपने जीवनकाल में अनेक पुस्तकें लिखी जो लगभग ३१ हैं। वे सभी पुस्तकें विधर्मियों के प्रश्नों के उत्तर में लिखी गयी। महर्षि दयानन्द के प्रामाणिक जीवन चरित्र को लिखने का श्रेय भी धर्मवीर लेखराम को ही जाता है। देश के कोने कोने में जाकर उन्होंने अलभ्य तथ्य एकत्रित किए। हिन्दू देवी देवता और संस्कृति पर कीचड़ उछालने वाले अनेक मुल्ला मौलवी विधर्मियों से उन्होंने अनेक शास्त्रार्थ भी किये। उनकी विद्वता से, तर्क प्रहारों से विधर्मी जनों में आतंक फैल गया। उन पर मिर्जापुर, प्रयाग लाहौर मेरठ दिल्ली बम्बई की अदालतों में मुकदमे भी डाले गए परन्तु अदालत द्वारा उनके लेखों भाषणों में कोई भी आक्षेप की बात न पाकर मुकदमे खारिज कर दिए गए। चारों ओर से लोहा लेने से मुसलमान मतान्ध क्रुद्ध हो गए। ऐसे ही एक नीच हत्यारे की वे बलि चढ़ गये।

उन्होंने आर्यसमाज के भव्य भवन को बनाने में नींव का कार्य किया है। ऐसा उपदेशक, ऐसा लेखक ऐसा अमर सेवक ऐसा क्रांतिकारी पाकर आर्यसमाज गर्वित है। उनके बलिदान के पश्चात् उनकी पत्नी का त्याग भी स्तुत्य है। उनके [illegible] ५००० रुपये मिले। वे उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी में दान कर दिये [illegible] वृत्ति के लिए। [illegible] पं० बुद्धदेव विद्यालंकार जैसा ओजस्वी विद्वान् आर्यसमाज को मिला है। धन्य है वीर लेखराम धन्य है उनकी पत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी। धन्य है महर्षि दयानन्द जिन्हें ऐसे बलिदानी शिष्य मिले।

आर्यसमाज का अतीत बलिदानियों से शोभित है परन्तु आज हम उन वीर बलिदानी शहीदों की शौर्य कथाओं को भूलते जा रहे हैं। स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हंसराज को तो फिर भी स्मरण किया जाता रहा है। शहीद लेखराम कुछ उपेक्षित हो रहे हैं। यदि वीरता को न पूजा न सराहा तो वीरता की जननी बांझ हो जायेगी। क्योंकि—

> प्रेरणा शहीदों से यदि हम न लेंगे
> आजादी ढलती हुई सांझ हो जाएगी।
> यदि वीरों की पूजा हम नहीं करेंगे
> तो सच मानो वीरता बांझ हो जाएगी।

—यशपाल सुधांशु

सम्पादक—यशपाल 'सुधांशु' एम० ए० | व्यवस्थापक—डा० गणेशीलाल | प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

(पृष्ठ ८ का शेष)

भाग मे ईसा, मोहम्मद, बुद्ध, महावीर, कन्फ्यूशियस आदि महात्माओ की सार्वभौमिक शिक्षाएँ रखी जायें।

४ उच्च माध्यमिक (११-१२ कक्षा) शिक्षा उद्योग परक और ऐच्छिक विषयो के साथ होनी चाहिए। हिन्दी, संस्कृत, प्रादेशिक भाषाएँ उच्च साहित्य व व्याकरण सहित अनिवार्य रहें और अंग्रेजी का सामान्य ज्ञान, रचना, बोलचाल का अभ्यास तथा तकनीकी शब्दावली का ज्ञान प्रायोगिक पाठो के साथ रहे।

ऐच्छिक विषयों के समूह—

(१) विज्ञान तीनो शाखाएँ व गणित

(२) वाणिज्य गणित भी,

(३) समाज विज्ञान—राजनीति, समाजशास्त्र, इतिहास-भूगोल (विश्व) और अर्थव्यवस्था

(४) भाषा वर्ग—कोई दो विदेशी भाषाएँ व्याकरण सहित या कोई दो भारतीय भाषाएँ।

पर्यावरण नैतिक शिक्षा के पाठ अनिवार्य विषयो मे सम्मिलित रहें।

भवदीय—नवप्रसाद शर्मा

(पृष्ठ ६ का शेष)

समाज धर्म, आदि अनेक विद्याओ का समाहित होने पर ही प्रतिपादन करता है। इन समस्त चर्चाओं के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वेद मे समस्त ज्ञान विज्ञान बीज रूप मे निहित है तथा बाद के वैदिक ग्रन्थों मे ऋषि महर्षियो ने उसी का विकास किया।

स्वामी दयानन्द के इस महान् वैदिक प्रयास के फलस्वरूप वेद जो अब तक सायण के हाथ में केवल कर्मकाण्ड की पुस्तक थी तथा पाश्चात्य विद्वानो के मत मे इनमे (जिनमे) प्रकृति की शक्तियों की पूजा और आर्य जाति के आदि विकास का वृत्तान्त एव गडरियों के गीत थे। अब एक आध्यात्मिक तथा ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक हो जाती है। इसमे एक वैज्ञानिक धर्म है जो मनुष्यमात्र के लिए है जिसमे मनुष्य मात्र की आध्यात्मिक एव सासारिक उन्नति का सही मार्ग बतलाया गया है। ☐

★ वचन-सन्देश ★

सत्यार्थप्रकाश एक महान् सन्देश

यदि सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति का मूल्य एक हजार रुपया होता तो भी उसे सारी सम्पत्ति बेचकर खरीदता ।

—गुरुदत्त विद्यार्थी एम०ए०

मैंने सत्यार्थप्रकाश पढा । इससे तख्ता पलट गया । सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन ने मेरे जीवन के इतिहास मे एक नवीन पृष्ठ जोड दिया ।

—रामप्रसाद बिस्मिल

सत्यार्थप्रकाश ने न जाने कितने असंख्य व्यक्तियो की काया पलट की होगी ।'

—स्वामी श्रद्धानन्द

'युग निर्माण तथा चतुर्मुखी प्रगति की भावना से प्रेरित यह दिव्य ग्रन्थ (सत्यार्थप्रकाश) एक महान् प्रकाश-स्तम्भ है जिसका निर्माण महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम सम्पूर्ण मानव समाज की उन्नति के लिए किया ।

—डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी

सम्पादकीय

साइचिन पर पाकिस्तान की गिद्ध दृष्टि ।

लद्दाख मे भारत पाक सीमा रेखा पर साइचिन ग्लेशियर घाटी पर इन दिनो लघु युद्ध छिडा हुआ है । मई १९८४ मे प्रथम बार पाकिस्तानी फौजो ने अचानक साइचिन ग्लेशियर पर स्थित भारतीय चौकी पर जबरदस्त हमला कर दिया था जो भारतीय सैनिको ने बडी कुशलता के साथ विफल कर दिया था । तब से लेकर अब तक कितने ही पाक तथा भारतीय सैनिको को अपनी जान से हाथ धोना पडा है । यह स्थान १८ हजार फुट की ऊचाई पर स्थित है । यह स्थान विश्व का सब से ठडा क्षेत्र है । यहा की जलवायु आर्कटिक की तरह माइनस ४० डिग्री रहती है । घोर गर्मियो मे भी जमा देने वाली बर्फीली हवाएं चलती हैं । यहा पर सदा ही हड्डियो को तोड देने वाली ठडक रहती है । हवा अत्यधिक हल्की और आक्सीजन इतनी कम होती है कि कुछ भी काम नही किया जा सकता । ग्लेशियर १८ हजार फुट ऊचा है और चारो तरफ बर्फ से ढके पहाड २२ हजार फुट तक ऊचे हैं । साइचिन ग्लेशियर युद्ध क्षेत्र के लिए असम्भव जैसा है । हथियार पर नगी उगली रखते ही वह अकड जाती है और चमडा उखड जाती है इतनी ऊचाई पर मशीन और मनुष्य २५ प्रतिशत क्षमता तक ही कार्य कर सकते हैं । यही कारण है १९४९ के युद्ध विराम समझौते मे १९७३ के शिमला समझौते मे इस क्षेत्र का रेखाकन नही किया गया था । अब पाकिस्तान इसी का लाभ उठाना चाहता है । अमरीकी व चीनी नक्शो मे साइचिन को पाकिस्तान का हिस्सा बताया जा रहा है । बी० बी० सी० ने भी कहा है यह क्षेत्र कभी सीमाकित नहीं रहा । इस साजिश के प्रति भारत ने कडा प्रतिरोध किया है । एक समाचार के अनुसार अमरीकी जासूसी उपग्रहो से बहुत समय से साइचिन ग्लेशियर बेल्ट पर निरन्तर जासूसी नजर रखी जा रही थी । इससे प्राप्त आकडो के आधार पर ही गत वर्ष २३ जून १९८५ को अचानक पाकिस्तान ने आक्रमण किया था । ३ भारतीय सैनिको ने अपनी ओर आते हुए अनेक जत्थो को देखा । पहले वे समझे कि पर्वतारोही हैं पर फिर देखा कि वे सभी सशस्त्र हैं व पाक लाइट इन्फैंट्री या स्पेशल सर्विस ग्रुप के लोग लगते हैं । उन्होने फोन से भारतीय दस्ते को खबर करने की कोशिश की परन्तु फोन डैड था तब वे अपने साथियो को सूचना देने के लिए स्कीइग के लिए बढे कि पाक सेना ने गोली वर्षा शुरू कर दी । एक सैनिक मर गया दूसरा घायल हुआ । तीसरे ने किसी तरह पहुच कर भारतीय चौकी पर सूचना दी । भारतीय जत्थे तत्काल आये व लम्बी लडाई के बाद पाक सेना पीछे हट गयी । इस वर्ष २९ मई को पाकिस्तानी वायुसेना के ६ जेट लडाकू विमान खुल्लमखुल्ला भारतीय सीमाओ पर घुस आये जिन्हे खदेड दिया गया । फिर जोरदार आक्रमण किया पर भारतीय सेना ने उसे फिर विफल कर दिया । भारत सरकार ने पाकिस्तान सरकार से इस सब पर बडा प्रतिरोध किया है । राजनतिक पर्यवेक्षको का कहना है आज जब सम्बन्धो के सामान्यीकरण के लिए प्रयत्न किये जा रहे हैं पाकिस्तान का शत्रुतापूर्ण कार्यवाहियो मे लिप्त रहना अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है । भारत सरकार ने प्रस्तुत आक्रमण के पूर्ण विवरण अभी सार्वजनिक नही किये हैं पर साइचिन घाटी के छीनने के लिए किए गये पाक आक्रमणो के बारे मे भारत की उत्तरी कमान के जनरल एम०एल० छिब्बर के अनुसार एक साल के आक्रमणो मे १००० से अधिक पाक सैनिक मारे गये और हजारो घायल हुए । इन कारवाईयो मे केवल तीन भारतीय सैनिक मारे गये जब कि २७ हिमखण्डो के खिसकने से दबकर मर गये । सभी पाक हमलावर बर्फीली इलाका मे लडने मे प्रशिक्षण प्राप्त छापामार व कमाडो सैनिक थे जो आधुनिक हथियारो से लैस थे और उन्होने दोनों ओर से एक साथ हमला बोला था ।

५० मील लम्बे इस ग्लेशियर पर जो कि काश्मीर काराकोरम के बिल्कुल पास तथा रूस अफगानिस्तान और चीन की सीमाओ के काफी करीब है । सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । इसलिए पाकिस्तान चीन के हाथ धरने पर इस क्षेत्र पर अपना कब्जा जमाने की हरसम्भव कोशिश कर रहा है । पिछले दिनो इस ग्लेशियर पर कब्जा जमाने के लिए पाकिस्तान ने बी ५७ बमवर्षक लडाकू हवाई जहाजो का भी इस्तेमाल भी किया । फिलहाल यह ग्लेशियर भारत के कब्जे मे है । १८ हजार फीट ऊचाई पर स्थित भारतीय सैनिक चौकी का कार्य अत्यन्त दुरूह है । इतनी ऊचाई पर चौकी का होना एक विश्व रिकार्ड है भूमि से किसी भी सप्लाई का ० से ५० दिन लगते हैं । भारत व पाकिस्तान दोनो अपनी सप्लाई हवाई जहाजो मे करते है । पाकिस्तान की इस बारे मे बेहतर स्थिति है । क्योकि फ्रास के पूमा ३१५ वी हैलीकाप्टर उसके पास है भारत भी समय और मुकाबले के हैलीकाप्टर प्राप्त करने की कोशिश कर रहा है । भारत यहा पाक मसूबे नाकाम करने मे पूर्ण दृढसकल्प है ।

पाकिस्तान के पास काश्मीर का भारतीय ७९००० किलोमीटर क्षेत्र है जो उसने कब्जा रखा है जबकि चीन ने लद्दाक मे अक्साईचिन का ३८००० वर्ग किलोमीटर क्षेत्र छीन रखा है । साथ ही पाक ने चीन को भारत की काश्मीर अधिकृत भूमि म से ४५०० किलोमीटर क्षेत्र और दे दिया है । इस क्षेत्र मे चीन-पाक सयुक्त रूप से बनी व १८ जून १९७९ से खुली ५०० मील लम्बी काराकोरम सडक ने ही साइचिन मे पाकिस्तानी हमले की सुविधा प्रदान की है । यह सडक इस्लामाबाद को चीन के सिक्याग प्रान्त से जोडती है ।

पाकिस्तान ने भारत की सीमा के साथ साथ १८ डिवीजन सेना रखी हुई है और इस बात मे कोई सन्देह नही रहा कि पाकिस्तान पजाब मे गडबड कराने के लिए आतकवादियो को विध्वसक कारवाइयो के लिए प्रशिक्षण दे रहा है । शायद जनरल जिया सिंध सीमा प्रान्त और बलूचिस्तान मे बिगडती हुई स्थिति पर से जनता का ध्यान हटाने के लिए सैनिक कारवाई का खेल खेलना चाहते है । लेकिन उन्हें यह निश्चित समझ लेना चाहिए भारत किसी से किसी रूप मे कमजोर नही है । हर रूप मे मुह तोड जवाब देने मे हमारे सैनिक सक्षम हैं ।

—यशपाल सुधांशु

नवजागरण के पुरोधा विषयक आपत्तियों का उत्तर

लेखक डा० भवानीलाल भारतीय

स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने मेरी पुस्तक नवजागरण के पुरोधा पर कुछ आपत्तियां प्रस्तुत करते हुए एक लेख 'भारतीय जी की भूल' शीर्षक से आर्यमार्तण्ड में दो किश्तों में छपाया था। अब उसे ही एक भिन्न शीर्षक देकर आर्यसन्देश के १६ मई के अंक में प्रकाशित किया है। इस सम्बन्ध में मेरा वक्तव्य निम्न प्रकार है—

स्वामी जी कहते हैं कि भारतीय जी ने अपनी पुस्तक की बड़ी प्रशंसा की है और ऐसा करते समय उन्हें लज्जा नहीं आई कि उनकी यह पुस्तक अन्य जीवन चरित्रों के आधार पर ही लिखी गई है।' निवेदन है कि अपनी कृति की प्रशंसा करना कोई पाप नहीं है।

निज कवित्त केहि लाग न नीका।
सरस होउ अथवा अति फीका॥

आक्षेपकर्ता को यह सोचना चाहिए कि जीवन चरित को अन्य पूर्व लिखित जीवन चरित्रों के आधार पर ही लिखा जायगा और पूर्व लेखकों से सहायता लेने में अनुचित भी क्या है? मैंने तो ग्रन्थ के समर्पण में ही पं० लेखराम पं० देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय आदि उन सभी जीवनीकारों को सादर स्मरण किया है जिन्होंने स्वामी दयानन्द के जीवन लेखन में भरपूर परिश्रम किया।

स्वामी रामेश्वरानन्द जी द्वारा उठाई गई बहुत सी आपत्तियों का निराकरण तो एक वाक्य लिखकर ही किया जा सकता है कि प्रत्येक लेखक क्या लिखे कैसे लिखे क्या नहीं लिखे इसके लिये पूर्ण स्वतन्त्र होता है। वह अपना ग्रन्थ लिखने से पहले किसी से राय लेने नहीं जाता कि वह कैसे और क्या लिखेगा। अब उनकी अन्य आपत्तियों का उत्तर—मैंने स्वामी जी के शैशव और प्रारम्भिक शिक्षा का वर्णन करने में महाराज की आत्मकथा का ही अधिकांश में उपयोग किया है मैंने आत्मकथा के जिस संस्करण का उपयोग किया है। वह परोपकारिणी सभा से प्रकाशित तथा मेरे ही द्वारा सम्पादित है जिसकी मूल पाण्डुलिपि हमें मुन्शी समर्थदान के कागजों में मिली थी। इसके साथ ही देवेन्द्रनाथ लिखित जीवन चरित्र के प्रारम्भिक अध्यायों का भी उपयोग किया गया है। यदि इन आधारभूत ग्रन्थों को समन्वित कर पाठक पढ़ेंगे तो उन्हें इस अध्याय में वर्णित बातों में कोई असंगति नजर नहीं आयगी। श्री महाराज के जीवन लेखन में मेरी तो प्रतिज्ञा ही है—

नामूलं लिख्यते किञ्चित्।

इधर मेरे मित्र टंकारा निवासी श्री दयाल जी भाई आर्य ने टंकारा के समीपवर्ती गांव रामपुर आदि के सम्बन्ध में कुछ नवीन जानकारी दी है। उनके एतद् विषयक लेखों को शीघ्र ही प्रकाशित किया जायेगा। इस सामग्री से स्वामी जी के टंकारा से निष्क्रमण तथा आगे के मार्ग आदि के सम्बन्ध में कुछ नवीन तथ्य सामने आयेंगे। पाठक इन लेखों की प्रतीक्षा करें।

स्वामी रामेश्वरानन्द जी लिखते हैं कि मैंने सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्धारित महाराज की जन्म तिथि के विपरीत एक अन्य तिथि क्यों लिखी? आक्षेपकर्ता को क्या यह भी बताना होगा कि इतिहासकार का काम तो किसी विषय के सम्बन्ध में सभी पक्षों और मतों का प्रस्तुत करना होता है। मैंने ऐसा ही किया है। जन्म तिथि के सम्बन्ध में कोटा के स्व० भीमसेन शास्त्री के मत को तो रखा ही है जिसे सार्वदेशिक सभा की मान्यता प्राप्त है। साथ ही ऋषि के जीवन विषयक गवेषक स्व० मामराजसिंह का इस विषय का मत भी प्रस्तुत किया है। इसमें कोई अनर्थ जैसी बात नहीं है। स्व० मामराजसिंह ने भाद्रपद वाली तिथि अपनी कल्पना से नहीं लिखी किन्तु आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ के पुस्तक भण्डार में रखी हुई हस्तलिखित जीवनी (स्व० केशवराम विष्णुलाल पण्ड्या द्वारा लिखित) में उद्धृत तिथि को ही लिखा है। जीवन तिथि के सम्बन्ध में सभी मतों को देना मेरा काम था। इससे आर्यों में परस्पर विरोध कैसे खड़ा हो जाता है?

मेरे ग्रन्थ के आलोचक ने इसे किस दृष्टि से पढ़ा है, यह इस बात से ज्ञात होता है कि वह लेखक के अभिप्राय को सर्वांश में भी समझने में असमर्थ रहा है। जब मैंने लिखा था कि "स्वामी दयानन्द के पिता ने अपने पुत्र मूलशंकर को यजुर्वेद के वे अंश पढ़ाये जो उनके मतानुसार कैलाशवासी आशुतोष भगवान शंकर का वर्णन करते हैं तो स्वामी रामेश्वरानन्द मुझ से पूछते हैं कि यजुर्वेद में कैलासवासी शंकर का वर्णन कहां है? अजी महाराज यह कथन तो मूलशंकर के शैव पिता का है न कि मेरा। लेखक के अभिप्रेत को न समझ कर ही ऐसी आलोचना की जाती है।

अब आक्षेपकर्ता, पुरोधा शलाका पुरुष तथा प्रवण आदि शब्दों के प्रयोग की आलोचना करता है। क्या किसी बुद्धिमान् पुरुष को भी यह समझाना पड़ेगा कि शब्दों के अनेक अर्थ होते हैं। पुरोधा यदि पुरोहित का वाचक है तो यह लिंगलीव कैसे हो गया? क्या ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र में परमात्मा को भी पुरोहित नहीं कहा गया है? वस्तुतः बात यह है कि साहित्यिक शैली से अनभिज्ञ व्यक्ति ही ऐसा आक्षेप कर सकता है। इसीलिए स्वामी रामेश्वरानन्द को 'प्रवण' का अर्थ 'चौराहा' तो नजर आया किन्तु उन्होंने वामन शिवराम आप्टे का संस्कृत हिन्दी कोष देखने का भी कष्ट नहीं किया जिसमें प्रवण के अर्थ—भक्त अनुरक्त, प्रवृत्त, संलग्न आदि दिये हैं। इन अर्थों के आधार पर धर्म प्रवण का अर्थ होगा धर्म में। अनुरक्त, धर्म में प्रवृत्त, धर्म में संलग्न आदि। क्या स्वामी जी को 'धर्म प्रवण' कहना अनुचित है। 'शलाका का अर्थ रामेश्वरानन्द जी सुपारी काटने का सरोता करते हैं। यह अर्थ आप्टे के कोष में तो नहीं मिलता। किन्तु शलाका के कई सुन्दर प्रयोग संस्कृत साहित्य में मिलते हैं। शिक्षा ग्रन्थ में लिखा है—

अज्ञानान्धस्य लोकस्य
ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन
तस्मै पाणिनये नमः॥

जिस पाणिनि ऋषि ने अज्ञान के अन्धकार से आच्छन्न लोगों के नेत्रों को ज्ञान रूपी अञ्जन की शलाका से खोल दिया वे हमारे प्रणम्य हैं। अफसोस है कि साहित्यिक प्रयोगों के सौन्दर्य को न समझ कर ही इस प्रकार के व्यर्थ आक्षेप किये जाते हैं।

आक्षेपकर्ता की अगली आपत्तियां हैं—

१ स्वामी दयानन्द के महाभिनिष्क्रमण के प्रसंग में सिद्धार्थ के गृहत्याग, तुलसीदास के गृहत्याग तथा समर्थ रामदास के वैराग्य ग्रहण आदि के दृष्टान्त क्यों दिये गये।

२ स्वामी दयानन्द के जीवन प्रसंग में राम मोहन राय रामकृष्ण परमहंस तथा विवेकानन्द की चर्चा क्यों की गई? विवेकानन्द आदि की प्रशंसा के वाक्य क्यों लिखे गये?

३ इस ग्रन्थ में प्रत्येक अध्याय में सैकड़ों पाद टिप्पणियां क्यों दी गई? आदि।

वस्तुतः इन आक्षेपों में थोड़ा भी सार नहीं है। जैसा कि मैं पहले भी लिख चुका हूं, लेखक को इतनी स्वतन्त्रता प्राप्त होती है कि वह अपने ग्रन्थ में क्या लिखे, कितना लिखे और कैसा लिखे? यह तो सम्भव है कि स्वामी रामेश्वरानन्द को उपर्युक्त प्रकरण प्रासंगिक ज्ञात न पड़े हों, किन्तु अन्य पाठकों को भी वे पसन्द नहीं आयेंगे, इसका ठेका लेने वाले वे कौन होते हैं। राम मोहन राय के कार्यों की प्रशंसा स्वयं स्वामी दयानन्द ने पूना प्रवचनों में की। कलकत्ता प्रवास के समय वे स्वयं रामकृष्ण परमहंस से मिले थे। सबसे बड़ी बात तो यह है कि स्वामी दयानन्द के आविर्भाव काल की परिस्थितियों की चर्चा के प्रसंग में नवजागरण के आन्दोलनों तथा उनके नेताओं का उल्लेख तो अवश्यम्भावी ही है।

स्वामी रामेश्वरानन्द जी का अन्तिम आक्षेप तो अत्यन्त विचित्र तथा हास्यास्पद है। उन्हें पादटिप्पणियों पर आपत्ति है। वे इन्हें व्यर्थ अनावश्यक तथा पुस्तक का भार बढ़ाने वाली मानते हैं किन्तु वैज्ञानिक शोध प्रक्रिया के जानकारों का कहना है कि पाद टिप्पणियों के बिना शोध ग्रन्थ का कोई महत्त्व नहीं होता। हां, उन लोगों की बात दूसरी है जो शोध प्रक्रिया को न तो जानते हैं और न उसके महत्त्व को ही अनुभव करते हैं। आक्षेपकर्ता स्वामी जी अन्त में लिखते हैं कि यदि यह ग्रन्थ स्वामी जी का जीवन चरित है तो इसका मूल्य बावीस रुपये क्यों रखा गया? यदि उनकी राय ली जाए तो स्वामी जी का जीवन चरित तो मुफ्त में दिया जाना चाहिए। आक्षेपकर्ता यह नहीं सोचता कि ६६० पृष्ठों के ग्रन्थ को मुफ्त में कैसे बांटा जाएगा? इसके प्रकाशक ने इस पर लाखों रुपये व्यय किये हैं। उनका यह तर्क तो और हास्यास्पद है कि परोपकारिणी सभा को इस पुस्तक को बाइबिल के तुल्य निःशुल्क बांटना चाहिए। यदि स्वामी दयानन्द स्वयं परोपकारिणी सभा को यह आज्ञा दे जाते कि उनके ग्रन्थ बिना मूल्य ही बांटे जायें तो शायद सभा भी यही करती। अब परोपकारिणी सभा को कोसने से तो कोई लाभ नहीं। जो व्यक्ति आज के समय में पुस्तकों के मूल्यों से परिचित हैं, उसे तो श्री महाराज का यह जीवन चरित कौड़ियों के मोल से भी सस्ता लगेगा। बाइबिल को मुफ्त में बांटने वालों से हमारा कोई मतलब नहीं। निष्कर्ष यही कहना पर्याप्त है कि किसी ग्रन्थों की आलोचना की पात्रता भी सभी में नहीं होती।

किशोरमञ्च—

वीर बालक पृथ्वीसिंह

दिल्ली के मुगल बादशाह औरंगजेब के यहां उसके शिकारी जंगल से पकड़कर एक बड़ा भारी शेर लाये थे। शेर लोहे के पिंजरे में बन्द था और बार बार दहाड़ रहा था। बादशाह कहता था— इससे बड़ा और भयानक शेर दूसरा नहीं मिल सकता।

बादशाह के दरबारियों ने उसकी हां में हां मिलायी लेकिन महाराज यशवन्त सिंह जी ने कहा—इससे भी अधिक शक्तिशाली शेर मेरे पास है। बादशाह को बहुत क्रोध आया। उसने कहा—तुम अपने शेर को इससे लड़ने के लिए छोड़ो। यदि तुम्हारा शेर हार गया तो तुम्हारा सिर काट लिया जायगा। यशवन्तसिंह ने बादशाह की यह बात स्वीकार कर ली।

दूसरे दिन दिल्ली के किले के सामने के मैदान में लोहे के मोटे छड़ों का बड़ा भारी पिंजरा दो शेरों की लड़ाई के लिए रखा गया। शेरों का युद्ध देखने वहां बड़ी भारी भीड़ इकट्ठी हो गयी। औरंगजेब बादशाह भी ठीक समय पर आकर अपने सिंहासन पर बैठ गया। राजा यशवन्त सिंह अपने दश वर्ष के पुत्र पृथ्वीसिंह के साथ आये। उन्हें देखकर बादशाह ने पूछा—आप का शेर कहां है?

यशवन्तसिंह बोले— मैं अपना शेर अपने साथ लाया हूं। आप लड़ाई आरम्भ होने की आज्ञा दीजिये।

बादशाह की आज्ञा से वह जंगली शेर अपने पिंजरे से लड़ाई के पिंजरे में छोड़ दिया गया। यशवन्तसिंह ने अपने पुत्र को उस पिंजरे में घुस जाने को कहा। बादशाह और वहां के सब लोग हक्के बक्के रह गये। किन्तु दश वर्ष का बालक पृथ्वीसिंह पिता को प्रणाम करके हंसते हंसते शेर के पिंजरे में घुस गया।

शेर ने पृथ्वीसिंह की ओर देखा। उस तेजस्वी बालक के नेत्रों को देखते ही एक बार वह पूंछ दबाकर पीछे हट गया लेकिन शिकारियों ने बाहर से भाले की नोक से ठेलकर के उसे उकसाया। वह शेर क्रोध में आकर के पृथ्वीसिंह के ऊपर कूद पड़ा। बालक पृथ्वीसिंह झट से एक ओर हट गया और उसने अपनी तलवार खिंच ली।

पुत्र को तलवार निकालते देखकर यशवन्तसिंह ने पुकारा बेटा! तू यह क्या करता है? शेर के पास तो तलवार है नहीं फिर तू उस पर क्या तलवार चलायेगा? यह तो धर्म युद्ध नहीं है।

पिता की बात सुनकर पृथ्वीसिंह ने तलवार फेंक दी और वह शेर पर टूट पड़ा। उस छोटे बालक ने शेर का जबड़ा पकड़कर फाड़ दिया और फिर शेर के पूरे शरीर के दो टुकड़े करके फेंक दिया।

वहां की सारी भीड़ पृथ्वीसिंह की जय जयकार करने लगी। शेर के खून से सना पृथ्वीसिंह जब पिंजरे से निकला तो यशवन्तसिंह ने उसे छाती से लगा लिया।

"वाह री पाण्डित्य परम्परा"

प्रज्ञा देवी

२६ अप्रैल १९८५ के माण्डीव में 'सोते थे माँ की गोद में और फेरे लग गये' शीर्षक को देखकर तथा इस समाचार को पढ़कर कि राजस्थान में एक बार पुनः शारदा एक्ट की धज्जियां उड़ाई गई' मुझे बड़ा आश्चर्यावह दुःख हुआ और कुछ बातें ध्यान में आयी कि ४० हजार दुधमुंहे बच्चों के विवाह कर शारदा एक्ट की धज्जियां प्राय उन्हीं ग्रामीण अञ्चलों में बसने वाले अपठित निरक्षर लोगों द्वारा उड़ायी गई हैं। जिन्हें शारदा एक्ट या किसी सरकारी कानून आदि का पता ही नहीं है किन्तु इस युग में ऐसे लोगों के लिए क्या कहा जाना चाहिए जो पूर्ण सुपठित भी हैं और शारदा एक्ट का विरोध करना सामाजिक कल्याण के लिए उचित भी मानते हैं।

सन् १९८३ में विश्वविद्यालयीय प्रकाशन वाराणसी द्वारा प्रकाशित 'काशी की पाण्डित्य परम्परा' नामक एक ऐसी ही अद्भुत पुस्तक है जिसके लेखक द्वारा काशी के पण्डितों की महत्ता एवं उनकी सामाजिकता निम्न उदाहरणों द्वारा दर्शायी गई है—

१ यह कि बंगाल का ब्रह्मसमाज, महाराष्ट्र का प्रार्थनासमाज, पंजाब तथा उत्तरप्रदेश का आर्यसमाज जिस समय विधवा विवाह का हिन्दू समाज के कल्याण हेतु समर्थन कर रहा था उस समय उस युग के महान् धर्मशास्त्रियों ने विधवा विवाह के विपक्ष में अपना सम्मति एवं व्यवस्था देकर समाज को धार्मिक संकट से उबारा। काशीस्थ पण्डितों का यह श्लाघनीय प्रयास नितान्त प्रशंसनीय था।

पृ० १३८ १३९

सहृदय महानुभाव! लेखक काशी के पण्डितों की सामाजिकता विषयक इस उक्ति पर स्वयं विचार कर लेवें कि जिस समय बंगाल की बाल विधवाओं के करुण क्रन्दन से धरती फटी जा रही थी एवं अनाचार बढ़ रहे थे तब समाज सुधारकों ने विधवा विवाह का न्यायोचित पक्ष लेकर इसे प्रचारित कर हिन्दू समाज का कल्याण किया था या विरोध करने वाले तथाकथित सामाजिक पण्डितों ने?

२ यह कि १९२९ में शारदा एक्ट के पास होने पर काशी के पण्डितों ने इसे अशास्त्रीय घोषित करके इसका प्रचण्ड विरोध किया था। काशी की पण्डित मण्डली द्वारा हिन्दू समाज के कल्याण के लिए किए गये एतादृश कार्यों के रहते उनको कौन भारतीय समाज से उदासीन बताने का साहस कर सकता है।'

पृ० १४१ १४२

काशी के पण्डितों की सामाजिकता की यह दूसरी उक्ति मैं समझती हूं प्रत्येक जन को अवश्य कचोट जायेगी। भला बाल विवाहादि का समर्थन ही नहीं उसे अपनी सामाजिकता का हेतु बताना क्या देश को मध्यकालीन अंधेरे युग में ही धकेल देना नहीं है! किस प्रकार मध्य युग में भी रचे गये मनगढ़न्त कपोलकल्पित वचनों को प्रमाण मान पण्डित वर्ग भी समाज के एक वर्ग के रुदन का परवाह न करते हुए आज भी दकियानूसी बातों का समर्थन करता है यह इस बात का उदाहरण है। इसी पुस्तक में पृ० ५७२ ५७३ में लेखक ने महात्मा गांधी एवं श्री श्रीप्रकाश जी के नाम उद्धृत करते हुए उनके हरिजनोद्धार (हरिजनों के मन्दिर प्रवेश अधिकार आदि) सम्बन्धी कार्यों की चर्चा के प्रसंग में बड़ी चतुरता से प० देवनायकाचार्य जी की वाग्मिता एवं उनके उन शास्त्रीय मतों की (जिनसे हरिजनों को मन्दिर प्रवेश का अधिकार नहीं है का समर्थन होता है।) प्रशंसा की है जो आज के युग के लिए आश्चर्यावह है।

इस पुस्तक के १४२ वें पृ० में अंग्रेजी सरकार द्वारा पण्डितों का सत्कार शीर्षक देकर प्रकारान्तर से ब्रिटिश शासन की स्तुति भी की गई है। पुस्तक में अनेकों स्थलों में अतिशयोक्ति पुनरुक्ति अयथार्थोक्ति का आश्रयण किया गया है जो विस्तार से पृथक लेख में ही चर्चित हो सकता है। इतना अवश्य है कि इस समूची पुस्तक को पढ़ जाने पर किसी भी पाठक के मन में यह भाव अवश्य अंकित हो जायेंगे कि इस पुस्तक का लेखन किन्हीं सम्प्रदायगत विचारों के आग्रह से आबद्ध होकर ही किया गया है तथा पुस्तक गत पण्डित नामावली भी इसी आधार पर चुनी गई है।

हिन्दू समाज को रूढ़िवाद एवं अन्धविश्वासों जिनमें विशेष रूप से नारी जाति पिस रही थी से राहत दिलाने के लिए देश के गण्यमान्य नेताओं एवं मुंशी प्रेमचन्द्र तथा शरत्चन्द्र जैसे श्रेष्ठ साहित्यकारों द्वारा जो प्रबल प्रयास किये जा रहे थे उन्हीं का असमर्थन एक चेतनशील राष्ट्र के लिए कितना उचित है यह विचार योग्य बात है। वेद से प्रमाणित होने पर ही अन्य धर्मशास्त्रों के प्रमाण प्रमाणकोटि में आते हैं यदि ऐसा नहीं तो पराशरी सती प्रथा के लिए भी—

मृते भर्तरि या नारी
समारोहेद्धुताशनम् ।
सारुन्धती समाचारा
स्वर्गलोके महीयते ॥

जैसे संस्कृत के स्वकल्पित प्रमाण हैं तो क्या हम प्रथा को भी इस युग में स्वीकार कीजियेगा।

आज के युग में ऐसी विडम्बनाएं सहन नहीं की जा सकती अतः हमें इससे ऊपर उठकर ही विचार करना होगा।

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में प्रवेश

१ जुलाई ८५ से प्रारम्भ निःशुल्क बी ए स्तर तक शिक्षा सादा भोजन नियमित दिनचर्या उत्तम देखभाल के लिए प्रारम्भिक भोजन शुल्क ६०/ मात्र में ७ से १२ वर्ष तक के बालकों का प्रवेश गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में दिलाये। साइन्स सम्कृत बायलोजी सहित इण्टर उत्तीर्ण परीक्षा छात्र आयुर्वेद महाविद्यालय में प्रवेश ले सकते हैं।

(स्वामी कर्मानन्द)
मुख्य अधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

जगत् प्रभु करुणा के धाम
अविरल अविचल अगम अकाम
घट घट वासी पूरण एक
रखिए निज भक्तन की टेक
भक्ति भाव भरपूर कहाए
निशिवासर तेरे गुण गायें
ज्ञान भानु का होवे प्रकाश,
केवल स्वामी तुम्हीं से आश।
स्वामी केवलानन्द

वेदभाष्य की पृष्ठभूमि पर सिंहावलोकन

धर्मेन्द्रपाल शास्त्री

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

आर्यों के जीवन मे वेदो का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्राचीनकाल से ही वेद ईश्वरीय ज्ञान के रूप मे श्रद्धा व आदर की भावना से स्वीकार किये जाते रहे हैं। परन्तु वेद मन्त्र अत्यन्त गूढ रहस्यमय है। इनकी एक विशिष्ट छन्द रचना है जो सनातन ज्ञान को अपने मे सजोय रहती है। वेद मन्त्रो की इसी गम्भीरता तथा विशिष्ट छन्द रचना के कारण साधारण तो क्या संस्कृत भाषा मे पारङ्गत विद्वानो के मस्तिष्क भी इनके रहस्यो को नही समझ पाते हैं। इसी कारण प्राचीनकाल से ही वेदो के भाष्य करने की पद्धति पायी जाती है। परम्परा के अनुसार रावण हमारे सामने वेदो के सर्वप्रथम भाष्यकार के रूप मे आते हैं परन्तु इनका वेद भाष्य पूर्णरूप से प्राप्त नही होता है।

पश्चात्वर्ती भाष्यकारो मे स्कन्द स्वामी उद्गीथ वररुचि भट्ट भास्कर, महीधर उव्वट व सायण प्रसिद्ध भाष्यकार हैं। इन भाष्यकारो मे सायण का भाष्य सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इन्होने चारो वेदो का भाष्य किया है। सायण के भाष्य का प्रभाव उनके पश्चात् होने वाले भाष्यकारो पर स्पष्ट रूप मे देखने को मिलता है। परन्तु सायण भाष्य के बाद भाष्य मे वेद की आत्मा व विचारधारा का सही सही विकास नही हुआ। इनका भाष्य कर्मकाण्ड परक है। ये वेद मन्त्रो के कर्मकाण्डात्मक भाष्य की धुन मे मन्त्रो के यथार्थ अभिप्राय— जो मूल रूप मे सनातन ज्ञान विज्ञान का परिचायक है। को भूल जाते हैं। फलस्वरूप सायण का वेद भाष्य ऐसा भाष्य है जिसमे मन्त्रो के यथार्थ अभिप्राय को अत्यन्त संकुचित बना दिया गया है। जो वेद की महान् प्रतिष्ठा व उसके ज्ञान को एकदम बुद्धि विरुद्ध कर देता है। सायण के वेद भाष्य के आधार पर ही यारोपीय विद्वानो ने १९वी शताब्दी मे वेद के विषय मे एक नवीन विकासवादी मत का प्रतिपादन किया। उसके अनुसार वेद आर्य जाति का प्रारम्भिक अवस्था से विकास का घटना है। इन्होने व्याख्या प्रकृति परक की जो कि सायण भाष्य मे प्राप्त होने वाले प्रकृतिवादी विचारो से ली है। यद्यपि ये प्रतिभाशाली साहसी और कल्पना की उड़ान मे स्वच्छन्द थे फिर भी वेद की गंभीर पहेलियो को सुलझाने मे इनकी प्रतिभा एव कल्पना शक्ति असमर्थ रही। इसका मुख्य कारण वे वेद की भाषा छन्द रचना व अमर काव्य को नही समझ पाये। उन्होने अपने भाष्यो मे वेदो में वर्णित रूपको का ब्राह्मणों उपनिषद्, पुराणो में प्राप्त गाथाओ व ऐतिहासिक तत्त्वो से सम्बन्ध बताकर वैदिक गाथा शास्त्र वैदिक सभ्यता का नवीन मत खड़ा कर दिया। इस निष्कर्ष पर पहुचने के तीन कारण थे—

(१) उन्हे वैदिक परम्परा व साहित्य का ठीक ठीक ज्ञान नही था तथा उन्होने प्राचीन ऋषियो की नैरुक्तिक प्रणाली को छोड दिया था।

(२) सायण का भाष्य इन का मार्ग दर्शक था।

(३) पश्चिमी विद्वानो की वेद से कोई सहानुभूति नही थी।

उपरिलिखित चर्चाओ का मूल्यांकन करने पर पता चलता है कि आचार्य सायण के मतानुसार वेद केवल कर्मकाण्ड की एक ऐसी पुस्तक है जिसके मन्त्रों मे कोई पारस्परिक संगति नही है। पाश्चात्य विद्वानो के मतानुसार वेद आर्य जाति के आदिम काल से उपनिषत् काल तक की मानसिक स्थिति या अवस्था का लेखा जोखा है। जिसे वैदिक कवियों ने छन्द बद्ध कर दिया इसमे कही ऊंचे विचार नही हैं और ये तो असभ्य गडरिये के गीत मात्र हैं। वेद रचने वाले प्रकृति की शक्तियो की पूजा करते और उनके प्रकोप से बचने के लिए यज्ञ किया करते थे। वैदिक ऋषि मूर्ख परन्तु श्रद्धालु उपासक थे। वेद गाथा शास्त्र है वेदो मे मास भक्षण है यज्ञ मे पशु बलि का विधान है जुआ और सोम के रूप मे सुरा है।

महर्षि दयानन्द के आविर्भाव तक वेदो के सम्बन्ध मे इन सभी विचारधाराओं का समुचित विकास हो चुका था। स्वामी दयानन्द ने देखा कि वेद के सम्बन्ध मे अनेक (भ्रान्तियां) भ्रान्त अर्थों का प्रचार किया जा रहा है। तो प्रतिक्रिया फलस्वरूप उन्नीसवी शताब्दी के महान् सुधारक सामाजिक क्रांति के अग्रदूत एव वैदिक वाङमय के मन्थन एव योग साधन की भट्ठी मे तपे कुन्दन सदृश महर्षि दयानन्द ने वैदिक सत्य निर्भ्रान्त सार्वभौम एव प्राणिमात्र के उपकार की भावना से अमूल्य सन्देश मानव को दिये। वेद के विषय मे एक तीसरी विचारधारा का सृजन किया। वे वेद को न तो केवल कर्मकाड की पुस्तक मानते थे, न आर्य जाति के गीत। वेद के विषय मे प्रमुख रूप से दो मान्यताएं दी—(१) वेदो के ज्ञान का प्रकाश ईश्वर ने सृष्टि के प्रारम्भ मे अग्नि वायु आदित्य अङ्गिरा नामक चार ऋषियो के अन्त करणों मे मानव जाति के ज्ञान व कल्याण के लिए किया।

सनातन सर्वज्ञ परमात्मा का ज्ञान होने से वेद मे सारा ज्ञान विज्ञान बीजरूप मे वर्तमान है इसी से वेद स्वत प्रमाण हैं। उनकी ये मान्यताएँ वैदिक साहित्य के गम्भीर अध्ययन पर आधारित हैं।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है। दयानन्द की इस मान्यता का विवेचन हम दो प्रकार से करते हैं —(१) वैदिक साहित्य ब्राह्मण, उपनिषद् दर्शनो (दर्शन ग्रन्थ) मे प्राप्त प्रमाणो के आधार पर। (२) तर्क की कसौटी पर। वैदिक साहित्य का जहां तक प्रश्न है सारा वैदिक साहित्य दयानन्द की या इस मन्तव्य की पुष्टि करता है। वेद का प्रकाश ईश्वर ने सृष्टि के आदि में ऋषियो के शुद्ध अन्त करणों मे किया। शतपथ ब्राह्मण कहता है—'तेभ्यस्तप्तेभ्यस्त्रयो वेदा अजायन्ताग्नेर्ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेद सूर्यात्सामवेद। ११४२३ अर्थात् ऋग्वेद का प्रकाश अग्नि पर यजुर्वेद का वायु पर सामवेद का सूर्य नामक ऋषि पर हुआ। इसी प्रकार अन्य उपनिषद् दर्शन मनुस्मृति आदि सभी एक स्वर में वेदो को ईश्वर से उत्पन्न हुआ मानते हैं। इसी से वेद को स्वत प्रमाण मानते हैं।

महर्षि दयानन्द का वेद के सम्बन्ध मे दूसरा दावा है कि वेदो मे समस्त ज्ञान विज्ञान है। इसी सन्दर्भ मे स्वामी जी का कथन है कि सर्वप्रथम वेद ईश्वरीय या ईश्वर का ज्ञान होने से अपने आप मे पूर्ण हैं। और ईश्वर ने यह ज्ञान मनुष्यो के ज्ञान व कल्याण के लिए दिया। अत उसमे मनुष्योपयोगी समस्त ज्ञान विज्ञान होना चाहिए। स्वामी जी ने वेद मे निहित ज्ञान राशि को प्रमुख रूप से चार विषयो मे विभक्त किया है —(१) विज्ञान अर्थात्— सब पदार्थों को यथार्थ जानना। (२) उपासना (३) कर्म (४) ज्ञान।

महर्षि दयानन्द का विज्ञान से तात्पर्य ज्ञान की उस प्रणाली से है, जिसमे ज्ञान, कर्म, उपासना इन तीनों के समुचित उपयोग से लेकर तृण-पर्यन्त समस्त पदार्थों का साक्षात् बोध होता है और मानव जाति के अभ्युदय नि श्रेयस की प्राप्ति मे यथावत् उनका उपयोग होता हो। स्वामी जी ने विज्ञान को भी दो रूप में मान्यता दी है —(१) ईश्वर का यथावत् ज्ञान व उसकी आज्ञाओ का पालन। (२) पदार्थ विद्या का ज्ञान अर्थात् पदार्थों के गुणो व उपयोग को जानना।

उपासना—अर्थात् परमेश्वर की प्राप्ति के उपाय करना।

कर्म=कर्म मे कर्मकाण्ड को लेते हैं जिससे जीवन मे परमार्थ व लोक व्यवहार की सिद्धि होती है। स्वामी जी का कर्मकाण्ड से तात्पर्य केवल यज्ञ याग से नही वरन् उसमे जीवन की समस्त क्रियाओ को सम्मिलित कर लेते हैं।

ज्ञान—ज्ञान का अर्थ पृथ्वी से लेकर तृण से प्रकृति पर्यन्त पदार्थों के गुणो के ज्ञान से ठीक ठीक कार्य सिद्ध करना। इसे हम आधुनिक विज्ञान के रूप मे प्रयुक्त कर सकते हैं। वेद की भाषा मे विज्ञान=विशेष ज्ञान ईश्वर आत्मा आदि के ज्ञान को जबकि ज्ञान प्राकृतिक विज्ञानो के अर्थ मे प्रयुक्त होता है। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका)

वेद मे पदार्थ विद्याएं हैं या नही? यह गम्भीर और अनुसन्धान का विषय है। अभी तक वेदो मे से वैज्ञानिक सूत्रों की खोज का नियम पूर्वक गम्भीर प्रयास नहीं हुआ। अत हमारे सामने कोई ठोस प्रमाण नही है। वर्तमान मे कुछ प्रयास किया जा रहा है। तथापि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका मे वैदिक मन्त्रो से विद्युत्, तार विद्या, विमान विद्या नौका विद्या, भूगोल विद्या आदि का प्रतिपादन किया। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य मे यूरोप में भी इनमें से अनेक विद्याओ का विकास नहीं हुआ था। ऐसी अवस्था मे स्वामी दयानन्द-सरस्वती का अपनी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका मे विमान विद्याओ का प्रतिपादन करना इस बात का स्पष्ट संकेत करता है कि वेदो में पदार्थ विद्याएँ बीज रूप मे निहित हैं। परन्तु प्रारम्भ रूप को विकसित करने के लिए गम्भीर अन्वेषण की आवश्यकता है। वर्तमान युग के महान् विद्वान् महर्षि अरविन्द तो स्वामी जी के दावे को हल्का बताते हुए कहते हैं कि मैं तो यहा तक कहूगा कि वेदो मे कुछ वैज्ञानिक सत्य ऐसे है जिन्हें आधुनिक विज्ञान जानता तक नही। यहा अरविन्द का संकेत मनोविज्ञान से है। वैदिक मनोविज्ञान वास्तव मे अपने आप मे अनुपम है तथा भविष्य में विकसित योगविद्या का बीज है।

वेद वास्तव मे अपने आप मे पदार्थ विद्या ही नही अपितु नीति धर्म राजधर्म,

(शेष पृष्ठ १२ पर)

व्यासपीठ—

उपनिषत् कथा माला—६

गायत्री मन्त्र की महिमा

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

१, ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।

ओ३म्' परमात्मा का निज नाम है, जो प्राणों का भी प्राण है उसे 'भू' कहते हैं और भुवः सब दुःखों के हरने वाले को कहते हैं स्वः 'स्वर सुख स्वरूप है और अपने उपासकों को सब सुखों की प्राप्ति कराने वाला है। ऐसा परमात्मा । "सवितु अर्थात् समस्त जगत् को उत्पन्न करने वाला सूर्य आदि प्रकाशक पदार्थों को प्रकाशित करने वाला और सब ऐश्वर्य का दाता है। देवस्य उस चाहने योग्य जीत कराने वाले देवता परमात्मा को जो "वरेण्यम् सबसे बड़ा और ध्यान करने योग्य है भर्गो सब दुःखों को दूर करने वाल पवित्र और तेज स्वरूप है तत् उसी परमात्मा के स्वरूप को धीमहि हम अपने मन में धारण करें। यो न वही हमारी धिय बुद्धियों को उत्तम गुण, कर्म और स्वभाव में प्रचोदयात् प्रेरणा करे।

इस आशा को अपने मन में रखकर हमें इस मन्त्र से सदैव जगदीश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए। मनुष्य का जीवन अनेक प्रकार से घिरा हुआ है। मनुष्य चाहता है कि इष्ट के साथ सयोग हो और अनिष्ट के साथ वियोग परन्तु ससार में ये दोनों साथ ही साथ रहते हैं। किसी के पास थोडा अथवा अधिक धन है, मान भी है परन्तु परिणाम प्राय यह होगा कि एक समय ये सब ही पदार्थ उसे तुच्छ ज्ञात होंगे और उसे कुछ और प्राप्त करने की इच्छा होगी।

मृत्यु से कोई भी नही बच सकता। वृद्ध अवस्था का सकट मनुष्य के सामने विद्यमान ही रहता है। ये सभी साथ साथ रहते हैं चाहे दुःख वाला जीवन हो या सुख का दोनों ही इसके अधीन हैं। सब को इसी मार्ग से गुजरना पडता है। मनुष्य को चाहे सासारिक सुख प्राप्त हो चाहे परमेश्वर की प्राप्ति का सुख, ये दोनों ही पुरुषार्थ के फल हैं। पुरुषार्थ किये बिना आलस्य बढकर उसके साथ वही कुछ करेगा, जो एक शत्रु शत्रु के साथ किया करता है। कभी यह आलस्य किसी जाति में प्रवेश कर जाता है, कभी देश में घुस जाता है। इसकी मात्रा जितनी भी बढ जाये उतना ही दुःख है हमारा भारतवर्ष भी इस समय इसी खेंचातानी में है।

उद्योगिन पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोष ॥
हितोपदेश

अर्थात् उद्यम से ही सिंह समान पुरुष लक्ष्मी को प्राप्त होते हैं। ससार के समस्त ऐश्वर्य तथा गौरव उद्यम से ही प्राप्त होते हैं। यह ससार सब ऐश्वर्य का ही है कहने को तो हम यह कहते हैं किन्तु करते इसके विपरीत हैं। जितना धन चाहते हैं दरिद्रता बढती जाती है। विद्या चाहते हैं परन्तु प्राप्त नही होती। हमें याद रखना चाहिए कि ससार का जितना ऐश्वर्य है उद्योगी को ही प्राप्त होता है। उद्योगी पुरुष अपना उद्देश्य स्थिर करता है। उसमें डटता है धीरे-धीरे सब रुकावटों को अपने मार्ग से परे हटाकर आगे बढता जाता है। साहसी पुरुष जिसमें शारीरिक शक्ति और विचारशक्ति काम करती है वही धन और विद्या को प्राप्त होता है। विचारशीलता और सम्पत्ति जब दोनों ही मिल जाती हैं, तो लक्ष्मी उनके पांव चूमती है। ऐसा नही कि दीवाली पर लक्ष्मी का स्तोत्र पढ लिया पूजन कर लिया और लक्ष्मी वश में आ गई। यदि लक्ष्मी पर विजय पाने की यह रीति होती तो आज सब ही करोड़पति बन जाते। इसका सच्चा मार्ग क्या था मेरे भाई! सुनो।

हिन्दू जाति आज सीधे मार्ग से भ्रष्ट हो गई है। उसका अन्तरात्मा बहुत दुर्बल हो चुका है। कहते हैं कि यह दशा छः सात हजार वर्ष से बिगडी हुई है। अशोक को तो केवल दो हजार वर्ष ही गुजरे हैं। यदि उस समय ही सुधर जाती तो क्या बिगडा था। जिस समय मनुष्य जाति जागकर सभल जाये उसी समय उसका उसका बेडा पार हो जाए। तुम यदि अब भी उद्यमी और पुरुषार्थी बन जाओ तो आज ही बेडा पार हो जाये। देखो! एक मनुष्य है उसने एक मकान बनाया द्वार बन्द कर दिया, और कहीं चला गया। बारह वर्ष तक वहाँ सूर्य का प्रकाश नही पहुँचा और अन्धकार का राज्य रहा। बारह वर्ष पीछे वह वहां आया और उसने वहां पर दीपक जलाया अन्धकार दूर हो गया। क्या अन्धकार ने यह कहा कि मैं तो बारह वर्ष से यहां हूं इतने शीघ्र नहीं जाता? इसी प्रकार तुम भी अपने अन्तःकरण से अन्धेरे को दूर कर दो। जिन जातियों ने विद्या और प्रकाश का प्रचार किया उन्होंने ही अन्धेरा दूर कर दिया।

यूरुप भी दो सौ वर्ष पहले कुछ बहुत धनी न था। उसने अपने अवगुणों को हटा दिया तो वह धनी और ऐश्वर्यवान् बन गया। जापान ने सत्तर अस्सी वर्ष में ही कितनी उन्नति कर ली। उसने विचारा जिन बातों के करने से व्यर्थ दुःख तथा सकट बढता है उन्हें छोड दो। तुरन्त छोड दिया। मार्ग तो सीधा यह है। परन्तु आप दुर्बल हैं आपके अन्दर बल नहीं। पहले बन्दर पकडने की रीति यह थी। आजकल तो कई कई प्रकार से पकडते हैं परन्तु पहले छोटे छोटे मुह वाले पात्र धरती में गाड देते थे और उनमें दाने डाल देते थे। इन पात्रों के आस पास भी धरती पर कुछ दाने बखेर देते थे। बन्दर आया, उसने धरती पर से दाना उठाया साथ ही देखा कि पात्र में बहुत से दाने पडे हैं, पात्र में हाथ डाला और दानों की मुट्ठी भर ली। अब उस पात्र का मुंह तङ्ग है, मुट्ठी बाहर कैसे निकले? बहुत निकालना चाहता है हाथ निकलता ही नहीं। बस पकडने वाला आकर पकड लेता है। यदि उसे ज्ञान हो कि मुट्ठी तो मैंने ही बांध रखी है इसे खोल दू छूट जाऊंगा तो छूट जाए, परन्तु उसे यह ज्ञान ही तो नहीं। इसी प्रकार जितने भी बुरे रिवाज हैं ये तुम ने ही तो चलाये हैं परन्तु तुमसे छूटते नहीं। जब तक ये बुरी रस्में न छूटें तुम में बल नहीं आ सकता। प्रभु की लीला है जैसी उसकी इच्छा होगी वैसा ही वह करेगा यह तो कायर पुरुषों का कथन है। इसलिए मेरे भाई! आत्मिक बल के लिए पुरुषार्थ करो युवा अवस्था आने से पहले ही कन्या का विवाह हो जाता है। अब सोचो! हमारे गृहस्थ के भी आजकल अद्भुत नियम हैं। यदि उसका पति मर जाए तो घर के बाहर के इधर के उधर के सब यही कहेंगे कि तेरा नसीब फूट गया भाग्य में ऐसा ही लिखा था तू बडी दुर्भागी घर आई। अब हमारे भाग्य में दुःख ही दुःख है। हमारी मान मर्यादा रखेगी या भाई धर्म कर्म से रहियो'। सभी उसको शिक्षा देते हैं। परन्तु यदि कहीं पुरुष की स्त्री मर जाये तो उसे जलाकर नहीं आने पाते कि विवाह के लिए पहले ही तैयारी हो जाती हैं। शगुन आने लगते हैं। यह भेद क्यों है? जो जाति अपने लडके और लडकी में इतना भेद समझती हो उसके लिए उन्नति का मार्ग कहां? वह जाति तो सृष्टिक्रम का विरोध कर रही है, उसे तो ससार छोडना ही पडेगा।

उमगें जवानी की होतीं निराली।
सभी जानते कौन इनसे है खाली॥
कानून कुदरत ने जब जोर पाया।
नहीं हटता हमला है उसका हटाया॥

जिसे तुम हिन्दू जाति कहते हो उसी में से प्राय एक सौ तीस लडके या लडकियां प्रतिदिन निकलकर दूसरी जातियों में मिल रहे हैं। परन्तु यह अभागी जाति सोई पडी है।

है नजर गर दूरबीं
आगाज में अजाम देख!
सुबह के आईनए
रोशन में अकसे शाम देख!
छीन ली जाती है जिससे
दोस्तो दुश्मन की तमीज!
सुफये हस्ती से मिट जाती
हैं वह अकवाम देख!

जिस जाति को हानि और लाभ का कोई ज्ञान नही वह क्या भला कहीं बच सकती है?

रेल में एक स्त्री यात्रा कर रही है उसने अपना सोने का कडा उतारकर बच्चे के हाथ में दे दिया। बच्चे ने उसे खिडकी से बाहर फेंक दिया। उसे क्या पता था कि यह भी किसी काम की चीज है? अब वह चिल्लाती है रोती है। बच्चे को तो हानि लाभ का ज्ञान न था परन्तु क्या उसकी मां भी यह न जानती थी?

अच्छा अछूतों को और गरीबों को तुम क्यों सता रहे हो? उनका बुरा भला क्यों कह रहे हो? उनको समीप क्यों नहीं आने देते? और फिर कहते हो प्रभो! तेरी कृपा हो गरीबों की सुन उधर गरीबों को सताते हो इधर प्रभु के सामने सच्चे बनते हो। भला तुम्हारा भला कैसे हो? नहीं जानते—

नहीं बुद्धि नहीं बाहु बल
नहीं खरचन को दाम
तुलसीदास गरीब की
पत राखे भगवान॥

सांप को यदि अपनी बांबी में जाना हो तो टेढा चलना छोड देना चाहिए उसे सीधा ही जाना पडता है। टेढा चले तो बांबी में घुस ही नहीं सकता। इसलिए तुम भी और मत कुछ छोडकर उद्योग करो। इसके बिना कभी बेडा पार न होगा। हमारा अन्तःकरण तो शुद्ध होता नहीं रोज पन्डे से अच्छा उपदेश सुनते हैं परन्तु उसका कुछ प्रभाव नहीं पडता।

समीक्षा

महान् शिक्षा शास्त्री महात्मा हंसराज

डा० भवनराम पाराशर ने विवेच्य पुस्तक मे डी० ए० वी० आदोलन के प्राण महात्मा हंसराज के व्यक्तित्व और कृतित्व को सफलतापूर्वक आकने जाचने और परखने का श्रमसाध्य प्रयत्न किया है। पूरी पुस्तक को आठ अध्यायो मे बाटा गया है। पुस्तक । पारम्परिक ढर्रे पर न लिखा जाकर समग्र मथिक शोध अनुसधान और वैज्ञानिकता से युक्त अधुनातन उपकरणो और साहित्य दृष्टि का प्राजल प्रसाद है।

प्रथम अध्याय प्राचीन भारत की शिक्षा परम्परा और शिक्षक हमे हमारे स्वर्णिम अतीत का याद दिलाने वाला है। नाटय कला का आर्यसमाज म जिक्र करना एव धृष्टता समझी जाती है परन्तु नाटक को नकार कर हम कितने बड सत्य से आख मूद लेते है शायद यह नही जानते। विद्वान् लेखक ने प्राचीन शिक्षा आज भी पथभ्रष्ट पीढी को दिशा सूचक कम्पास की तरह रास्ता दिखा सकती है इस बात को बलपूर्वक जोरदार शब्दो मे कहा है। द्वितीय अध्याय वैदिक शिक्षा का स्वरूप' मे इस धारणा को पुष्ट किया गया है कि शिक्षा का उद्देश्य हमे डिग्री देकर रोजगार कार्यालयो के चक्कर लगाना पगु और परमुखापेक्षी बनाना नही अपितु हमारे व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करके हमे स्वावलम्बी बनाना है। तीसरा अध्याय 'भारतीय शिक्षा का प्रारम्भ हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली को किस तरह तहस नहस किया गया इस का एक ज्वलन्त दस्तावेज है। चौथा अध्याय "उन्नीसवी शताब्दी शिक्षा का स्वरूप' मैकाले के मलिन इरादो की झाकी प्रस्तुत करता है। क्लर्क बनाने वाली शिक्षा आज भी हमे दी जा रही है। मैकाले ने भारतीय सर्वेक्षण के आधार पर भेजी अपनी एक रिपोर्ट मे यह लिखा था कि मैं काले भारतीयो को गोरा तो नही बना सकता परन्तु मेरी शिक्षा नीति एक दिन यह चमत्कार जरूर दिखायेगी कि मैं भारतवासियो को दिल और दिमाग से काला अग्रेज बना दूगा। पाराशर जी ने अपनी पुस्तक में ठीक ही लिखा है "स्पष्टत यह शिक्षा पद्धति भारतीय जन मानस की भावनाओ के अनुकूल नही थी"। पाचवे अध्याय आर्यसमाज और शिक्षा मे आर्यसमाज की शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी के बारे मे क्या मान्यताएँ हैं, इसका विवेचन किया गया है। छठा अध्याय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का स्व-" रूप स्पष्ट करता है। लेखक ने एक स्थान पर इस अध्याय में लिखा है गुरुकुल शिक्षा प्रणाली मानव-निर्माण की अति उपयोगी एव श्रेष्ठ पद्धति है। यह ही ऐसी पद्धति है जिसने समाज के लिए कई श्रेष्ठ रत्न तैयार किये थे।

सातवें अध्याय देश-विदेश के शिक्षा शास्त्री मे लेखक का विस्तृत अध्ययन तथा श्रम सकल्प स्वेद का स्वाद स्पष्ट झलकता है। हमारे यहा ही नही देश विदेश मे कौन कितना गहरा है इस बात को जाँच करने के लिए तुलनात्मक पद्धति भी प्रचलित है। हालाकि लेखक ने किसी को उठाने किसी को गिराने की गरज से ऐसा कुछ नही किया है, न ही किसी शिक्षा शास्त्री के बारे मे ऐसे शब्दो का प्रयोग ही किया है। फिर भी विभिन्न शिक्षा शास्त्रियो का एक स्थान पर रखने से सुधी पाठक यह अनुमान तो अवश्य ही लगा सकते हैं कि कौन साधना मे अधिक तपा है और किसकी सिद्धिया सबसे ज्यादा हैं।

आठवा अध्याय महान् शिक्षा शास्त्री महात्मा हंसराज के जीवन और कार्यों का लेखा जोखा है या यो कहें कि शब्द-चित्र प्रस्तुत करता है। इस अध्याय मे महात्मा जी की शिक्षा विषयक मान्यताएँ सादा जीवन उच्च विचार, दूसरों को बदल देने वाला चुम्बकीय व्यक्तित्व, महात्मा हंसराज के विशिष्ट तथा दुर्लभ गुणो का चित्रण है। लेखक ने अछूतोद्धार का प्रवर्तक महात्मा जी को सिद्ध करने का सफल प्रयास किया है। अनेक घटनाएँ इस तथ्य के समर्थन मे प्रस्तुत की गयी हैं।

देश विदेश के शिक्षा-शास्त्रियो के बीच बैठे महात्मा जी माला मे सुमेरु के समान, नदियो मे गगा के समान, छन्दो मे कवित्त के समान, धातुओ में स्वर्ण के समान, ग्रन्थों मे वेद के समान, कृत्यो मे यज्ञ के समान और गृहस्थो मे जनक के समान अलग और सबसे ऊचे दीख पडते हैं। ज्ञान के मन्दिर मे जले दीपको मे महात्मा जी द्वारा प्रज्वलित दीपक सबसे अधिक निष्कम्प और प्रकाशवान् है। ऊबड खाबड पगडडियो को राजमार्ग मे बदलने और उसे जनपथ बनाने का कार्य महात्मा जी के अतिरिक्त और कौन कर सकता था।

पूरी पुस्तक सरल, सुबोध शैली मे लिखी बालको और प्रौढो, बहुपठित और अल्पपठितो आर्यसमाजियो और गैर आर्यसमाजियों के लिए समान रूप से उपयोगी है। डी० ए० वी० आन्दोलन के शताब्दी वर्ष पर प्रकाशित इस पुस्तक का मूल्य और उपयोगिता अधिक सार्थक और प्राणवान् हो उठी है।

प्रो० सारस्वत मोहन 'मनीषी'
डी०ए०वी० कालेज, अबोहर (पजाब)

शिक्षा नीति

१२ ५-८५ का सम्पादकीय 'शिक्षा नीति मे परिवर्तन' पर अच्छा लगा। इस विषय मे आर्य समाज को उचित है कि विस्तृत बहस और विद्वत् सभाओ के द्वार सरकार पर दबाव डालकर भारतीय शिक्षा पद्धति लागू करवाने का प्रयास करे। इस कार्य हेतु सार्वदेशिक सभा को आगे आकर विद्वानो को एकत्रित व एकराय करने का बीडा उठाना चाहिए। अन्य विद्वानो व शिक्षाविदो को भी प्रमुख दैनिक पत्रो मे अपनी राय प्रकट करनी चाहिए। कुछ विचारणीय सुझाव प्रस्तुत हैं—

१ विधि चाहे 'माण्टेसरी' चालू रखें पर प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा और आधार गाधी जी की बुनियादी शिक्षा ही रखी जावे। नन्हो मुन्नो पर कागजी बोझ हटाया जावे। सामान्य ज्ञान व सामाजिक ज्ञान आदि कक्षा ३ तक तो मौखिक ही रखे जाये। भाषा ज्ञान की पुस्तकें मातृभाषा व हिन्दी की दो एव सामान्य गणित व व्यवहार गणित की एक (बस कुल तीन) रखी जायें। ज्ञान को क्रिया से सम्बन्धित किया जाये। सहायता के लिए चित्रकला व पहाड़ की पुस्तकें रखी जा सकती हैं। इस स्तर पर सुलेख, याद करने श्रुतलेख वर्तनी और मौखिक उत्तर देने की क्षमता व देखकर काम करने की क्षमता विकसित की जाये, कापिया भरवाना बन्द किया जाये। मौखिक प्रश्नोत्तर प्रणाली आगे भी लाभदायक रहेगी। परतु ४-५ कक्षाओ मे ही पाठवार लिखित प्रश्नोत्तर शुरू करवाये जायें। इन कक्षाओ में इतिहास मे रामायण के अश व उपनिषद् कथाए हों तथा भूगोल, समाज, विज्ञान, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्त सामान्य ज्ञान लिखित और पाठ्य से दिया जा सकता है। परतु इनका माध्यम मातृभाषा हो रहे। मातृभाषा हिन्दी के व्याकरण तथा सस्कृत की वर्णोच्चारण व शब्दोच्चारण शिक्षा का प्रारम्भिक स्वरूप लागू रहे। प्रत्येक भाषा शिक्षण (अनिवार्य) में ४थी से दसवीं तक साहित्य व व्याकरण की अलग-अलग परीक्षा होती रहे। शिष्टाचार व नैतिक शिक्षा मौखिक दी जावे।

२ उच्च प्राथमिक (६ से ८ कक्षा) उपरोक्त के अलावा सस्कृत का प्रारम्भिक रचना स्वरूप अनिवार्य रूप से पढाया जाये। शिष्टाचार नीति व वैदिक धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रहें। पड़ौसी प्रदेश की मातृभाषा भी देवनागरी में प्रारम्भिक रचना व बोलचाल के रूप में पढ़ाई जाये इतिहास में केवल महाभारत तक की कथाए हों। समाज विज्ञान में नागरिकता के पाठ रखे जावें। विज्ञान, स्वास्थ्य, भूगोल, गणित आदि में प्रायोगिकता को महत्त्व दिया जाये। ८वी मे केवल प्राचीन इतिहास (महाभारत के बाद मुस्लिम आक्रमण से पूर्व तक) पढाया जाये। प्रारम्भिक सिद्धान्त उस काल का सक्षिप्त विश्व इतिहास भी पढाया जावे। विज्ञान तीनो शाखाएँ।

३ हाई स्कूल माध्यमिक स्तर पर ऐच्छिक विषयो की प्रणाली समाप्त की जाये। क्रियात्मकता के साथ साथ ये सभी विषय अनिवार्य रहे —

(१) मातृभाषा हिन्दी, सस्कृत के साहित्य व्याकरण सहित

(२) पड़ौसी प्रदेश की भाषा, लिपि, बोलचाल व सामान्य रचना के स्तर तक साहित्यिक रचना अभ्यास नागरी लिपि मे करायें।

(३) इतिहास—भारत का विशेष एक पड़ौसी देश का गौण रूप मे। भारतीय इतिहास आधुनिक पुरातात्त्विक व अभिलेखीय खोजो पर आधारित हो।

भूगोल—भारत का विशेष व पृथ्वी का गौण रूप से

गणित—तीनो शाखाएँ। समाज विज्ञान व नागरिकशास्त्र—मनुस्मृति सहित

स्वास्थ्य विज्ञान—निजी, सार्वजनिक व पर्यावरण

वाणिज्य—व्यापारिक सगठन, विधिया, उपकरण, बहीखाता व अन्तिम लेखे, औद्योगिक विकास व समस्याए, मुद्रा और बैंक।

विज्ञान—भौतिक, रासायनिक, जैविक।

कृषि—ग्रामीण अर्थ व्यवस्था व कृषि उद्योग, भूमि का अध्ययन खेती बागबानी व नाप जोख, कृषि यन्त्र, विधिया, रासायनिक प्रयोग

नैतिक (धर्म) शिक्षा अनिवार्य रूप से इस प्रकार सम्मिलित की जाती है इससे अलग परीक्षा का बोझ नही पड़ेगा—

(१) सस्कृत साहित्य मे, काव्यो, नाटकों, गद्यो के अशो से पूर्व कुछ पाठ वेदो के स्तुति मन्त्रो के व सक्ष्मी सगठन, पुरुष सूक्त, उपनिषदो के अश भाष्य सहित दिये जायें।

(२) हिंदी—क्षेत्रीय भाषा साहित्य मे, शिष्टाचार व सदाचरण के पाठ और शिक्षाप्रद जीवनियाँ, घटनाए, उपनिषदों की कथाएँ दी जायें।

(३) समाज विज्ञान मे, नागरिक, धर्म, पारिवारिक व विद्यार्थी धर्म सबंधी मनुस्मृति के अश दिये जावें। राजनीति सम्बन्धी अश भी। अन्तिम

(शेष पृष्ठ ११ पर)

पंजाब की स्थिति सुधारनेके लिए ठोस उपाय किये जायें

आर्यसन्देश के १९ मई १९८५ के अंक मे 'देशद्रोहियों को सख्ती से कुचलना आवश्यक है' शीर्षक से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री रामगोपाल शालवाले का आह्वान उचित, धार्मिक एव देशभक्ति की भावना से प्रेरित है।

नि सन्देह इस समय पजाब के अकाली जिस प्रकार केन्द्र के विरुद्ध टकराव की नीति अपनाकर राष्ट्रविरोधी मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं। भिण्डरावाले के पिता पिचासी वर्षीय जोगेन्द्रसिह की हां मे हां मिलाकर उग्रवाद को बढावा दे रहे है। स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी के हत्यारे को सम्मानित कर रहे हैं। उग्रवादियों द्वारा उत्तरी भारत क विभिन्न नगरो मे ट्राजिस्टर बमो का विस्फोट कर अनेक लोगो को मौत के मुह मे ढकेल दिया गया तथा अनको को घायल कर दिया गया। उग्रवादियो द्वारा स्वर्णमदिर मे शस्त्र सग्रह को उचित ठहराया जा रहा है। उनके द्वारा अनेक लोगो की ह याओ का कार्यक्रम जोर पकड रहा है, अनेक लोगों को धमकी के पत्र फिर मिलने लगे हैं तथा हर ओर पृथकतावाद एव राष्ट्रद्रोहिता को बढावा दिया जा रहा है, स्पष्ट है कि पजाब की स्थिति विस्फोटक एव चिन्तनीय है ऐसी परिस्थिति मे उचित है कि केन्द्रीय सरकार वहा समझौते व तुष्टीकरण की नीति को त्याग कर कठोर व यथार्थवादी नीति अपनाये ताकि देशद्रोहियों का दमन होकर राष्ट्रवादियों को बढावा मिल सके। इस सबध मे निम्न सुझाव प्रेषित हैं—

१ सरकार उग्रवादियो तथा आतकवादियो के विरुद्ध कठोर से कठोर कार्यवाही कर उन्हें निर्दयतापूर्वक कुचल दे ताकि वे भविष्य मे फिर सिर न उठा सकें। इस सम्बन्ध मे उसे स्वर्गीय सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रभावी नीति का अनुकरण करना चाहिए।

२ उसे वर्तमान पजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश चण्डीगढ तथा जम्मू क्षेत्र को मिलाकर पश्चिम प्रदेश की स्थापना करनी चाहिए। जिसकी राजधानी चण्डीगढ होगी। नि सन्देह ऐसे प्रदेश मे राष्ट्रवादी शक्तिया प्रबल हो जायेंगी तथा उग्रवादी कमजोर हो जायेंगे।

३ हिन्दू अल्पसख्यको को हथियारो के लाइसेन्स प्रचुर मात्रा मे दिये जावें ताकि वे आतकवादियो का सामना सफलतापूर्वक कर सके।

४ वहा की पुलिस तथा प्रशासनिक सेवाओं मे हिन्दुओ को आधे स्थान अथवा उनकी ४८ प्रतिशत जनसख्या के अनुपात में स्थान दिये जायें ताकि अल्पसख्यक वर्ग सिखो के प्रशासनिक दबाव से मुक्त हो सके।

५ धर्म के आधार पर स्थापित सभी शिक्षा सस्थाओ को समाप्त कर सभी लोगो के लिए एक सी शिक्षापद्धति लागू की जाये। सभी छात्रो के लिए नैतिक-शिक्षा छोटे बच्चो के लिए स्काउटिंग तथा बडो के लिए एन सी सी अनिवार्य की जाये।

उपरोक्त उपाय नि सन्देह पजाब की स्थिति सुधारने मे सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

शकुनचन्द्र गुप्त विद्यावाचस्पति
लालगज जि० रायबरेली, उ०प्र०

मनोहर वेद कथा

आर्यसमाज मालवीय नगर नई दिल्ली के तत्वावधान मे आचार्य जैमिनी शास्त्री के प्रवचन एव प० सत्यदेव स्नातक के भजन हुए। यह कार्यक्रम १० जून से १५ जून तक सम्पन्न हुआ इस क्षेत्र के लोगो पर माननीय आचार्य जी के प्रवचनो एव भजनोपदेश का अत्यधिक असर पड़ा।

देशराज जुनेजा मन्त्री

दिल्ली से ३०० नौजवान भाग लेंगे

नई दिल्ली, २५ मई (शनिवार) ग्रीष्मकालीन अवकाश मे १४ जून से २३ जून तक गुरुकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार जिला पौड़ी गढवाल मे विशाल पैमाने पर आयोजित केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के दस दिवसीय आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर मे ३०० नौजवान भाग लेंगे।

शिविर सयोजक श्री अनिल कुमार आर्य ने बताया कि युवकों में अनुशासन, चरित्र निर्माण, राष्ट्र-भक्ति की भावना, वैदिक सिद्धान्तो की जानकारी, तथा शारीरिक शिक्षण मे योगासन, दण्ड बैठक, जूडो-कराटे की स्टाईल कुश्तियो का योग्य व्यायाम शिक्षको द्वारा कुशल प्रशिक्षण देकर उनकी विभिन्न प्रतिभाओं को विकसित किया जायेगा। इसके साथ योग-साधना शिविर का भी आयोजन किया जायेगा। श्री आर्य ने बताया यह गुरुकुल हिमालय की सुरम्य घाटियो के बीच मालती नदी के तट पर महर्षि कण्व की तपोभूमि पर स्थित है।

आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर के शिविराध्यक्ष ब्रह्मचारी आर्य नरेश होंगे तथा प्र यं सन्यासी स्वामी जगदीश्वरानन्द युवको को शिविर मे बौद्धिक शिक्षण देंगे।

शिविर मे भाग लेने के इच्छुक युवक कार्यालय आर्यसमाज कबीर बस्ती पुरानी सब्जी मंडी, दिल्ली-७ के पते पर रात्रि ६ से ८-३० बजे तक दैनिक सम्पर्क करें।

चन्द्रमोहन आर्य
प्रेस सचिव

स० स्वर्णसिंह, स० खुशवन्तसिंह के वक्तव्य निन्दनीय एव "राष्ट्रविरोधी"

सरदार स्वर्णसिंह जैसे पुराने और अनुभवी तथा राष्ट्रवादी कहे जाने वाले लोग भी आतकवादियों द्वारा की गई हत्याओं के बारे में कहें कि ५ प्रतिशत आतकवादियो और ९५% पुलिस द्वारा की गई तो आश्चर्य भी होता है और दुख भी। उन्होने भिण्डरावाला की प्रशसा और सरदार दरबारासिह की निन्दा की है। खालिस्तान क बारे मे यह कहकर कि मतसग्रह पर सिखो का बहुमत साबित कर सकता है कि वह उसके विरुद्ध है मतसग्रह का शोशा छेडने का प्रयास किया गया है। क्या देश का विभाजन केवल एक सम्प्रदाय द्वारा अपने बहुमत से किया जा सकता है? परोक्ष रूप से स० स्वर्णसिंह सिख एक अलग कौम है जैसे खतरनाक नारे को समर्थन दे रहे है। सम्प्रदाय निरपेक्ष राज्य मे ऐसी कल्पना करना भी सविधान की मान्यताओ और राष्ट्र के विरुद्ध है।

स खुशवन्तसिंह भी दोनो तरह की बोलिया बोलते रहते है। उग्रवाद तथा राष्ट्रद्रोह की निन्दा भी और दूसरे ही क्षण उसका प्रोत्साहन भी। अमृतसर मे ब्लू स्टार के पश्चात् सेना से हथियार और वाहन लेकर भागने वाले सैनिको को आजाद हिन्द फौज के सैनिको के समकक्ष बताकर क्या वे साम्प्रदायिक विद्रोहियो को स्वतन्त्रता सेनानी घोषित नही कर रहे हैं? साम्प्रदायिकता और विद्रोह को राष्ट्रभक्ति मानने लगें फिर तो साम्प्रदायिक भावनाओ मे बहकर तथा देश को तोडने वाले तत्वों द्वारा भडकाये जाने पर जो लोग सेना से विद्रोह कर जावें वे आजादी के परवाने कहे जायेंगे। क्या स० खुशवन्तसिह जी चाहते हैं कि ऐसे विद्रोहियों को आजाद हिन्द फौज के सेनानियो की तरह सम्मानित किया जाये? साम्प्रदायिकता अच्छे भले बुद्धिजीवी लोगो को भी कितना अन्धा बना देती है यह इसका जीता जागता उदाहरण है।

अकाली नेतृत्व के लिए जो सघर्ष चल रहा है उसमे किसी ढग से भी तर्कसगत और नरम रवैये की अपेक्षा करना गलत होगा। उनके वक्तव्यो की भाषा मे अन्तर हो सकता है। परन्तु उनकी साम्प्रदायिकता और पृथकतावादिता तो एक जैसी ही है। उनके बीच की लकीर तग ही नही होती जा रही, बल्कि समाप्त होती जा रही है। पजाब के बाहर बसे हुए सिखो को पजाब मे लाने की दावत देकर सन्त लोगोवाल ने खालिस्तानी विचार की पुष्टि की है। स० जोगिन्दरसिंह और लोगोवाल सभी हत्याओ का दोष सरकार पर डाल रहे हैं। उनमे से किसी से भी बात करना आतकवाद को बढावा देना है। उनसे बात तभी करनी चाहिए जब वे एक होकर आयें और सविधान की परिधि मे तर्कसगत और न्यायपूर्ण हक के लिए कहें और निर्णय होने पर उसको तुरन्त अमल मे लाने के लिए खुला सहयोग का वचन दें।

केदारसिंह आर्य

प्रचार वाहन द्वारा वेदप्रचार

आर्यसमाज गांधीनगर के वार्षिक उत्सव के अवसर पर ५ मई १९८५ को दोपहर २ बजे से एक शोभायात्रा का आयोजन किया गया। जिसमे सभा के भजनोपदेशक प० सत्यदेव स्नातक प० आशाराम प्रेमी श्याम वीर राघव प० वेदव्यास आर्य, प० चुन्नीलाल जी आर्य की भजन मडलियो के गीतो व भजनो का शोभा यात्रा मे विशेष आकर्षण रहा।

१७ १८ १९ मई को आर्यसमाज बीस सैक्टर नौएडा म प्रचार कार्य की धूम रही। जिसमे स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती वेद प्रचार अधिष्ठाता प्रचार वाहन द्वारा उपस्थित होते रहे। साथ मे प० गुलाबसिंह राघव प० आशाराम प्रेमी श्यामवीर राघव के मनोहर भजन होते रहे। प० शिवकुमार शास्त्री का वेद प्रवचन एव आचार्य यशपाल सुधाशु जी के द्वारा यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमे हजारों की सख्या मे माता बहिनो भाइयो ने सत्सग से धर्म लाभ उठाया।

इसके अतिरिक्त प्रचार वाहन द्वारा दोपहर को १ बजे से ४ बजे तक बोट, क्लब, रेल भवन, आई०टी० ओ० आर० के० पुरम इत्यादि स्थानो पर प्रचार कार्य होता रहता है। यह समस्त कार्यक्रम स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती वेद प्रचार अधिष्ठाता की देखरेख में सुचारु रूप से चल रहे हैं।

सचित्र श्री कृष्ण ट्रैक्ट का विमोचन

नई दिल्ली २७ मई (सोमवार) श्री कृष्ण महान् योगी, विद्वान् तथा ईश्वर के परम भक्त थे। रुक्मणी उनकी एकमात्र धर्मपत्नी थी और राधा या १६००० रानियो से इनका कोई सम्बन्ध न था। यह उद्गार शास्त्रार्थ महारथी व आर्य सन्यासी महात्मा अमर स्वामी जी महाराज ने आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, अनारकली म लोकनायक श्री कृष्ण पुस्तिका का विमोचन करते हुए कहे।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश व लाला रामचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट नया बाजार ने युवा पीढी के चरित्र-निर्माण के लिए महापुरुषो की सचित्र जीवनियां प्रकाशित करने की योजना बनाई है।

चन्द्रमोहन आर्य
सचिव केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

समाचार-सन्देश

नवीन आर्यसमाज की स्थापना

विशेष सवाददाता

हिरनकी ग्राम दिल्ली ११००३६ मे १ जून ८५ को स्वामी स्वरूपानन्द वेद प्रचार अधिष्ठाता, प० आशाराम प्रेमी, श्यामवीर राघव हिरनकी ग्राम पधारे वहा रात्री को भजनोपदेश रखा गया। ग्राम के सभी नर नारी भारी सख्या मे उपस्थित रहे और करीब रात्रि के १ बजे तक प्रचार कार्य चलता रहा। प्रात काल एक विशेष यज्ञ का कायक्रम रखा गया। जिसमे श्रीमती राकेश रानी अध्यक्ष वेदमन्दिर, डा० धर्मपाल आर्य महामन्त्री दि०आ० प्र० सभा एव यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी स्वरूपानन्द जी द्वारा कायक्रम सम्पन्न हुआ। ग्राम के सभी श्रद्धालु माता बहिनो महानुभावो ने यज्ञ मे आहुतिया दी और अपने अपने घरों से घी व मिष्टान्न लेकर श्रद्धा के साथ देव पूजन किया। बाद मे प० श्यामवीर राघव व आशाराम प्रेमी द्वारा यज्ञ प्रार्थना गायन व ईश्वर भक्ति के मधुर भजन हुए। श्रीमती राकेश रानी, डा० धर्मपाल आर्य जी ने आर्यसमाज की गतिविधियो पर प्रकाश डाला। स्वामी स्वरूपानन्द जी ने आर्यसमाज के १० नियम व आर्यसमाज के स्थापक ऋषि दयानन्द के विषय में जानकारी कराई। ओ३म् ध्वज फहराया गया और आयसमाज के पदाधिकारी व सद यो का चुनाव कराया गया। यहाँ के सभी महानुभावो ने श्रद्धा सहित स्वागत सत्कार किया और उत्साह के साथ प्रसाद वितरण कराया। शान्तिपाठ के बाद कायक्रम समाप्त हुआ।

आवश्यक सूचना

आर्यसमाजों के अधिकारियों से नम्र निवेदन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसमाजो के साप्ताहिक सत्सग, कथाओ वार्षिकोत्सवों मे प्रचारार्थ उपदेशक भजनोपदेशको की व्यवस्था की जाती है। सभा से आने वाले वैतनिक उपदेशकों का वेतन तथा मार्गव्यय आदि सभा वहन करती है। अत आप उनको जो भी धन दें, चाहे वह किसी मद का हो उसकी सभा की रसीद ले लें। आपकी समाज द्वारा दी जाने वाली राशि का वेद प्रचार तथा अन्य कार्यों मे सही प्रयोग हो सके।

सभा के उपदेशको तथा भजनोपदेशको आदि से भी हमारा नम्र निवेदन है कि आप किसी भी प्रकार का धन चाहे वह जिस मद का हो, चाहे दशांश, वेद-प्रचार तथा मार्ग व्यय सम्बन्धी हो, पूर्ण विवरण सहित सभा की रसीद काटें। इसकी अवहेलना बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। कृपया सभी उपदेशक महानुभाव अपने पास अंकित करने और सभा के नियमो का पालन करे।

डा० धर्मपाल आर्य
मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज नयाबांस में विशेष व्याख्यानमाला

२३ जून से ३० जून तक आर्यसमाज मन्दिर नयाबास, दिल्ली म प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु के विशेष व्याख्यान होगे। समय रात्रि ८-४५ बजे से ९-४५ बजे तक सभी धर्मप्रेमी बन्धुओ मे प्रार्थना है इस अवसर पर पधार कर धर्मलाभ उठावें। मंत्री

शिवकुमार

अत्यावश्यक नम्र निवेदन

जैसा कि आप को विदित ही है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत दिल्ली प्रदेश मे सार्वदेशिक सभा के सरक्षण में आर्यवीर दल जोर शोरो से कार्य कर रहा है। आर्यवीर दल के सगठन को सुदृढ करने युवकों के चरित्र निर्माण तथा राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के लिए भारत की राजधानी दिल्ली मे आगामी जून एव जोलाई मास मे कृष्णनगर, तिमारपुर तथा मद्रास होटल के समीप तथा रघुमल आर्य कन्या पाठशाला मे एक एक सप्ताह के आर्यवीर दल शिविर लगाने का निश्चय किया गया है। इससे पूर्व परिपत्र दिनांक ९-५-८५ मे आप से निवेदन किया गया था कि आप अपनी आर्यसमाज सस्था की ओर से कम से कम ५ आर्यवीर इन शिविरो मे भाग लेने के लिए अवश्य भिजवायें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा समस्त आर्यसमाजो से यह अनुरोध करती है कि आप अपनी आर्यसमाज के निर्वाचन के समय अधिकारियो के साथ-साथ आर्यवीर दल के लिए एक अधिष्ठाता का भी चयन कर ले, यदि आप की समाज का निर्वाचन कार्य सपन्न हो चुका हो तो आप अपनी समाज की अन्तरग सभा की बैठक बुलाकर इस कार्य को अविलम्ब करा लें। कृपया चुने गये, मनोनीत किये गये अधिष्ठाता का नाम, उनके निवास के पते तथा दूरभाष नम्बर आदि पूरे विवरण सहित सभा कार्यालय को यथा शीघ्र भिजवा दें ताकि युवकों मे नई चेतना जागृत हो और वे आर्यसमाज के सम्पर्क मे आयें।

सूर्यदेव
सभा प्रधान

श्रद्धेय लाला रामगोपाल शालवाले के सम्मान राशि में श्री लाला इन्द्रनारायण जी ने ११ हजार रुपये का दान दिया

दिल्ली आर्य जनता को यह जानकर हर्ष होगा कि श्रद्धेय लाला रामगोपाल शालवाले के अभिनन्दन समारोह के अवसर पर भेंट की जाने वाली सम्मान राशि मे प्रथम सहयोग ११ हजार रुपये के सात्विक दान रूप मे अभिनन्दन समिति के कोषाध्यक्ष श्री लाला इन्द्रनारायण जी से प्राप्त हुआ है।

माननीय लाला इन्द्रनारायण जी ने लाला जी के शतायु होने की कामना करते हुए आर्य जनता से पुन अपील की है कि सम्मान राशि के ११ लाख रुपये के लक्ष्य को पूरा करने के लिए उत्साह पूर्वक धन सग्रह करके सार्वदेशिक सभा दिल्ली को भेजें।

ज्ञातव्य है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरग सभा ने मेरठ मे १९ मई को सम्पन्न बैठक मे यह निर्णय किया है कि उत्तर प्रदेश की ओर से कम से कम एक लाख रुपये की राशि सगृहीत करेंगे।

डा० आनन्दप्रकाश
सयोजक अभिनन्दन समिति

प्रतिक्रिया

आर्य सन्देश नियमित मिल रहा है। इसकी ज्ञानवर्द्धक एव रोचक सामग्री व पिछले दो विशेषाङ्क इसे अन्य सभाओ के मुखपत्रो से विशिष्ट बना देते है। वैसे दिल्ली सभा के दोनों पत्र मुझे पसन्द हैं। कुछेक विचार। सुझाव प्रस्तुत हैं—

१ पृष्ठ २ पर सत्सग वाटिका मे स्वामी वेदानन्द (तीर्थ) सरस्वती का व्याख्यान उत्तम है। इसे जारी रखे, इस बहाने उनकी "वेदोपदेश' पाठको के सामने धारावाहिक रूप से प्रस्तुत करें तो बड़ा लाभकारी होगा।

२ इसी प्रकार इस शताब्दी के पूर्वार्द्ध के कुछ मनीषियों के विचारोत्तेजक और शिक्षाप्रद ग्रन्थो से सक्षिप्तीकृत लेखों को भी धारावाहिक प्रस्तुत करके नई पीढी को उनसे परिचित करवाना अत्यन्त लाभप्रद होगा। यथा सर्वश्री—गगाप्रसाद उपाध्याय, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी समर्पणानन्द, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द, म० हंसराज, गुरुदत्त, लेखराम आदि। उचित यह होगा कि इनकी जयन्ती के समय इनके प्रभावशाली साहित्य को पुन प्रस्तुत किया जावे। सक्षेपत सस्मरण तो ठीक हैं पर भाषणों के केवल (जयन्तियों पर वर्तमान नेताओ के विस्तृत भाषण) सारगर्भित अश ही देना पर्याप्त होगा। मुझे विश्वास है कि हर महत्त्वपूर्ण जयन्ती पर विशेषाङ्क निकालने का अतिरिक्त व्यय पाठक वहन करेगे। यदि यह उद्देश्य सदैव के लिए निर्धारित किया जाता है तो हम इस पत्रिका का दुगुना चन्दा भी सहर्ष देंगे।

३ मेरा अभिप्राय है कि 'आर्य सन्देश" साहित्यिक पत्रिका भले न बने पर हमारे महापुरुषो और इतिहास को पुन प्रकाशित अवश्य करें। इसी से इसका नाम सार्थक होगा।

४ कुछ पर्व वा जयन्तिया जब पास पास पड़ते हो तो सयुक्त विशेषाको और सप्ताहों को मनाने की परम्परा डालनी चाहिए। सार्व० सभा को सुझाया जावे।

५. इस पत्र में शिक्षा का प्रचार अभियान और शुद्धि अभियान को स्थान दिया जावे।

नवप्रसाद शर्मा
११०, गांधी कालोनी,
पाल रोड, जोधपुर

'आर्यसन्देश' का नया रूप रग देख कर मेरा मन गद्गद हो जाता है। आपने तो आर्यसन्देश को इतना आकर्षक व पठनीय बना दिया है कि अब इसका अगला अक देखने वा पढने की ललक लगी रहती है। इसे सर्वांगीण पत्रिका बनाने का श्रेय निश्चय ही आपको दिया जावेगा। वेद पर, दर्शन पर इतिहास पर, युवकोपयोगी, बालोपयोगी, नारी जगत् सब प्रकार के स्तम्भ आप दे रहे हैं।

किन शब्दों मे बधाई दूं ? आर्य समाज ने प० लेखराम के लहू से रचा उनका सन्देश भुला दिया। हमारा प्रेस निष्प्राण हो गया। इसी कारण समाज मे जड़ता सी आ गई। आप स्वय गम्भीर स्वाध्याय करें। आप की लेखनी मे जान है। धर्मवीर प० लेखराम के पथ के पथिक बनकर आर्य जाति मे जीवन का सञ्चार कीजिए।

प० चमूपति, प० गगाप्रसाद उपाध्याय का समाज नये नये पत्रकारो को जन्म देता रहेगा। ऐसी आशा अब बध गई है अपने जैसे दस बीस और उदीयमान सिद्धान्तनिष्ठ ओजस्वी आर्यवीरो को कुशल पत्रकार बना दे। इसके बिना हम जी नहीं सकते।

आर्यसन्देश देखकर लगता है कि हम एक जीवित समाज के अग हैं। आर्यसमाज के प्रेस को और सुदृढ बनाने में आप समर्पण भाव से लगे रहें। स्व० बलीरचन्द जी विद्यार्थी के समान आर्य समाज में पत्रकारिता के लिए जीवन जुटा दें।

आप का अपना
राजेन्द्र जिज्ञासु

आर्यसमाज तिमारपुर का वार्षिक चुनाव संपन्न

आर्यसमाज तिमारपुर दिल्ली-७ के १९ मई ८५ को हुए वार्षिक चुनाव में निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए —

प्रधान चौ० बीर्मसिंह
उप प्रधान— श्री जगदीशलाल दुग्गल
—श्री ताराचन्द आर्य
मंत्री—श्री कृष्ण देव
उप मंत्री—श्री विमल कान्त शर्मा
—श्री उदयसिंह
कोषाध्यक्ष—श्री देव ऋषि
पुस्तकाध्यक्ष—श्री जगत नारायण दीक्षित

(विमल कान्त शर्मा)
उपमंत्री

सात वर

(पृष्ठ २ का शेष)

सोपान है। ब्रह्मविद् ब्रह्म एव भवति।' ब्रह्मवेत्ता होना ही निःश्रेयस् साध्य है, इसी का नाम मोक्ष है इसी का 'परा-गति'। अभ्युदय निःश्रेयस के लिये ही होता है। अभ्युदय यात्रा है। और निःश्रेयस साध्य है। साध्य न हो तो साधन बेकार है। भौतिक जीवन तो यात्रा का पड़ाव मात्र है एक पड़ाव जाता है दूसरा आता है। यह क्रम बराबर जारी रहता है जब तक कि अंतिम स्थान न आ जाय, जहां पहुंचना हमारा ध्येय था। इसलिये 'ब्रह्मवर्चस' सब से उत्कृष्ट ध्येय है।

चौथी बात मंत्र में यह बताई गई कि हे विद्वानो ब्रह्मलोक की प्राप्ति से पहले तुम मेरे लिये इन सात वरों की प्राप्ति के साधन जुटाओ अन्यथा तुम को ब्रह्मलोक की प्राप्ति न होगी। सब से बड़ा वह नहीं है जो मोक्ष पाना चाहता है। अपितु वह है जो दूसरों को मोक्ष दिलाना चाहता है। मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्। मेरा भाग मुझे देकर ब्रह्म लोक को जाइये। कहते हैं कि स्वामी दयानन्द को किसी ने कहा था कि व्यर्थ वेद प्रचार के पचड़े में पड़े हो, योग करो और मोक्ष हो जायगी। स्वामी दयानन्द ने उत्तर दिया कि जब संसार अविद्या की दासता में पड़ा सड़ रहा है तो मुझे मोक्ष कैसे मिल सकता है। महात्मा गांधी के लिये यह कठिन न था कि वे अंग्रेजी शासन की दासता से स्वयं मुक्त हो जाते। इंग्लैण्ड का नाग-रिक बन जाने से यह ध्येय पूरा हो सकता था। परन्तु इससे भारतीय लोगों के दासत्व का अन्त तो न हो सकता था। अतः महात्मा गांधी ने समझा कि जब तक देशवासी गुलाम हैं मेरी स्वतन्त्रता का कोई अर्थ नहीं। जनता पुकार कर कहती है कि मेरा ऋण चुकाकर ही तुम ब्रह्म लोक को जा सकते हो अन्यथा नहीं। जिसने रेल का भाड़ा नहीं चुकाया वह तो रेल से उतर कर घर नहीं जा सकता। आप के सात वरों में एक यह भी है कि जनता द्वारा इन सात वरों की प्राप्ति के जो साधन आप जुटा सकते हैं। उनमें आप कमी न करें। कर भला, ईश्वर तेरा भला करेगा। □

श्री हरबंस सिंह खेर प्रधान, श्री रामसरण दास आर्य महामंत्री सर्वसम्मति से निर्वाचित

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल का वार्षिक चुनाव २६-५-८५ को आर्यसमाज मालवीय नगर में हुआ। जिसमें निम्न-लिखित अधिकारी चुने गए।

प्रधान	श्री हरबंस सिंह खेर
उपप्रधान	श्री हरबंस लाल कोहली
„ „	श्री कृष्ण लाल सूरी
„ „	श्रीमती सरला पाल
महामन्त्री	श्री रामसरण दास आर्य
मंत्री	श्री ओम प्रकाश भावक
मंत्री	श्री चन्द्र प्रकाश
कोषाध्यक्ष	श्री शालिग राम गौतम
लेखा निरीक्षक	श्री देसराज जुनेजा

रामसरणदास आर्य
महामंत्री

सत्संग वाटिका

सात वर

लेखक—पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजानाम् ।
आयु प्राण प्रजा पशु कीर्ति द्रविण ब्रह्मवर्चसम् ।
मह्य दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ।
(अथर्व वेद काण्ड १९ । सूक्त ७१ । मन्त्र १)

★

अर्थ—(मया) मेरे द्वारा (वरदा) वरों को देने वाली (वेद माता) वेद-माता (स्तुता) स्तुति की गई । अर्थात् मैंने वेद रूपी माता की गोद में बैठ कर ज्ञान के रस का पान कर लिया है । (द्विजाना) विद्वान् ब्राह्मणो द्वारा गाई हुई (पावमानी) पावमानी नाम की ऋचाएं जीवन को पवित्र करने वाली (प्रचोदयन्ता) हम सब शुभ कर्मों के लिए प्रेरित हुआ करें । हे विद्वानो (मह्य) मुझ को (दत्त्वा) इन सात वरों को देकर (ब्रह्म लोक) मोक्ष को (व्रजत) प्राप्त कीजिये । वह सात वर यह हैं । (आयु) पूर्ण जीवन, (प्राण) जीवन शक्ति (प्रजा) सन्तान (पशु) गाय बैल, घोडा आदि पशु (कीर्ति) यश, (द्रविण) धन धान्य (ब्रह्मवर्चसम्) आध्यात्मिक तेज ।

व्याख्या—इस वेद मन्त्र मे चार बातों का वर्णन है —(१) वेद माता है माता निर्माता भवति ।' माता पुत्र के शारीरिक मानसिक तथा सामाजिक जीवन का निर्माण करती है । इसी प्रकार वेद विद्या द्वारा ही मानव समाज का निर्माण हुआ है । मनुष्य ने भूमण्डल पर जितना सांस्कृतिक विकास किया है वह सब मूल मे वेद विद्या के द्वारा ही प्रारम्भ हुआ था । वेद ने मनुष्य को बोलना सिखाया । समस्त मानव-भाषाओं का निकास वैदिक भाषा से है । भाषा विज्ञान विशारदो ने सभी भाषाओ के पारस्परिक सादृश्य की खोज की है । संस्कृत का 'पितृ फारसी का पिदर लैटिन का "पेटर पुर्तगाली भाषा का 'पादरी अंग्रेजी का फादर यह मिलते-जुलते शब्द हैं । संस्कृत का 'आप' या 'आप्य', दक्षिणी भाषाओ का आप्पा, या अप्पा' उर्दू का अब्बा', अरबी का अब या 'अबू यह भी मिलते जुलते हैं । परन्तु संस्कृत सब से पुरानी भाषा है । और संस्कृत मे ध्वन्यात्मक सादृश्य के साथ साथ धात्वर्थ भी मिल जाते हैं । जैसे 'पितृ शब्द मे पा रक्षणे धातु का अर्थ विद्यमान है । अंग्रेजी के फादर या फारसी के पिदर का अर्थ उन भाषाओ के धातुओ से ज्ञात नही होता । इससे पता चलता है कि जब संस्कृत के शब्दों ने अपने आदि मूल देश को छोड़ और विकृत होकर दूसरी भाषाओ के रूप मे विलीन हो गये तो यह शब्द अपन ध्वनि को तो साथ ले गये परन्तु धात्वर्थों को पीछे छोड गये । संस्कृत मे धात्वर्थ का मिल जाना और दूसरी भाषाओ मे न मिल सकना इस बात का प्रमाण है कि वेदो की भाषा से ही दूसरी भाषायें निकली हैं । यदि आप को दो देशो मे दो फूल की सुन्दर मालायें मिलें परन्तु एक देश मे फूलो के साथ उनके वृक्षो का मूल भी मिल जाये और दूसरे मे केवल फूल हो और मूल न मिले तो अनुमान करेगा कि उन फूलों का जन्म-क्षेत्र वही था जहा मूल भी मिलता है । संस्कृत का 'कर्म' और पाली का 'कम्म' दोनो मिलते जुलते हैं इनमे ध्वनि-सादृश्य है । प्रश्न यह है कि 'कम्म पहले था या 'कर्म' कर्म का अपभ्रंश कम्म है या कम्म का अपभ्रंश कर्म ? ऊपर की कसौटी लगाइये । इन दोनो का भाव कृ' (करना) धातु से निकला है । परन्तु कर्म में कृ' अधिक विद्यमान है । 'कम्म' मे 'कृ' का ऋकार या रकार सर्वथा लुप्त हो गया है । धात्वर्थ का पता नहीं लगता । यह बात प्रकट करती है कि पहले 'कर्म' था फिर उसी का विकृत रूप 'कम्म है । इसी प्रकार धर्म और धम्म मे ध्वन्यात्मक सादृश्य होते हुए भी धर्म मे धृ (धारण करने) का भाव विद्यमान है । 'धम्म' मे उसका लोप हो गया । ऊपर का छिलका शेष है । भीतर की गिरी लुप्त हो गई । इसलिए जब हम कहते हैं कि वेद माता ने मानव जाति को बोलना सिखाया, तो इस मे कोई अत्युक्ति नही है । इसी प्रकार विचारो की बात है । भूमण्डल के समस्त धर्मों, सम्प्रदायो और संस्कृतियो मे जो अच्छी अच्छी बातें पाई जाती हैं, वे सब उन संस्कृतियों के जन्म से सहस्रों वर्ष पूर्व वेदों में उपस्थित थी । काशी के गंगाजल और गंगोत्तरी के गंगाजल में बहुत कुछ सादृश्य है । परन्तु कोई यह नही कह सकता कि गंगोत्तरी का गंगाजल काशी से गया है । क्योंकि काशी पीछे का चीज है और गंगोत्तरी पहले थी । इसलाम के जन्म से हजारो वर्ष पूर्व वेदो मे एक ईश्वरवाद था । ईसाई बाइबिल से हजारो वर्ष पूर्व वेद मे ईश्वर के लिए पिता शब्द आ चुका था । अत वेदमाता भाषा भी सिखाने वाली है और आचार भी सिखाने वाली वेद ने भोग और अपवर्ग दोनो की शिक्षा दी है ।

(२) दूसरी बात यह है कि विद्वान ब्राह्मणो द्वारा की गई पावमानी स्तुतिया मनुष्यमात्र को धर्म पर चलने की प्रेरणा करती हैं । ऋग्वेद के ९ वे मण्डल के ६७ वें सूक्त की ७ ऋचाएँ (मन्त्र २१-२७) पावमानी ऋचाएँ कही जाती है —

यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह ।
पवमान वितज्जहि ॥

(ऋग्वेद ९ ६७ २१)

(यत्) जो (अन्ति) समीप में (आरात् दूरके) और जो दूर (भय) भय (इह) इस संसार मे (मा) मुझ को (विन्दति) प्राप्त होवे । उसे (हे पवमान) पवित्र करने वाले ईश्वर (तत् जहि) उसे दूर कर दीजिए ।

पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः ।
यः पोता स पुनातु नः ॥

(ऋग्वेद ९-६७-२२)

(स विचर्षणि पवमान) वह सर्व-द्रष्टा पवित्र करने वाला ईश्वर (पवित्रेण) पाप-शोधक तेज से (अद्य नः) आज हम को पवित्र करे । (यः पोता स पुनातु नः) ईश्वर हम सब का (पोता) संशोधक है । वह हम को पवित्र करे ।

यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा ।
ब्रह्म तेन पुनीहि नः ॥

(ऋ० ९-६७-२३)

(अग्ने) हे अग्नि (हे अर्चिषि) तेरे संशोधक सामर्थ्य में (यत् पवित्र) जो शुद्ध करने वाली योग्यता (अन्तरा विततम्) भीतर विद्यमान है (तेन) उस सामर्थ्य द्वारा (नः ब्रह्म) हमारे आध्यात्मिक तेज को (पुनीहि) पवित्र कीजिये ।

यत्ते पवित्रमर्चिवदग्ने तेन पुनीहि नः ।
ब्रह्मसवैः पुनीहि नः ।

(ऋ० ९-६७-२४)

(अर्चिवत् अग्ने) हे प्रकाश स्वरूप अग्नि (यत्ते पवित्र तेन) जो तेरा पवित्र करने वाला सामर्थ्य है उस से (नः पुनीहि) हम को पवित्र कीजिये । (ब्रह्म-सवैः) आध्यात्मिक स्तुतियों द्वारा हम को पवित्र कीजिये ।

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च ।
मां पुनीहि विश्वतः ॥

(ऋ० ९-६७-२५)

हे सविता या प्रेरक ईश्वर पवित्र और सव दोनो से अर्थात् मल-नष्ट करने वाली क्रियाओ तथा आध्यात्मिक तेज धारण कराने वाली प्रवृत्तियो द्वारा हमको पवित्र कीजिये ।

त्रिभिष्ट्वं देव सवितर्वर्षिष्ठैः सोम धामभिः ।
अग्ने दक्षैः पुनीहि नः ॥

(ऋ० ९-६७-२६)

हे सविता देव सोम, (त्वं) तू (त्रिभिः) तीन (वर्षिष्ठैः) वृद्धतम (दक्षैः) योग्य (धामभिः) धामो द्वारा हम को पवित्र कीजिये ।

पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु वसवो धिया ।
विश्वेदेवाः पुनीत मा जातवेदः पुनीहि मा ॥

(ऋ० ९ ६७-२७)

देवजन मुझे पवित्र करें । वसुजन बुद्धि द्वारा मुझे पवित्र करें । सब देव मुझे पवित्र करें । ज्ञानस्वरूप ईश्वर मुझे पवित्र करे ।

इन ऋचाओ को ऋषियों ने पावमानी ऋचाएं कहा है । यों तो समस्त वेद ही 'पावमान' अर्थात् मनुष्य के जीवन को पवित्र करने वाला है । परन्तु इन सात पावमानी ऋचाओ के पाठ जप तथा विचार से मनुष्य को धार्मिक जीवन व्यतीत करने में प्रेरणा मिलती है ।

(३) तीसरी बात है सात वरो की । आयु, प्राण प्रजा, पशु कीर्ति, द्रविण और ब्रह्मवर्चस । भौतिक या अलौकिक जितनी चीजो की मनुष्य इच्छा कर सकता है उन सब का इन सातो मे समावेश हो जाता है । यह सात वर इतने स्पष्ट हैं कि इनकी विस्तृत व्याख्या की आवश्यकता नहीं । प्रत्येक प्राणी का यह अनुभव है । और ज्यों-ज्यो मनुष्य उन्नति के सोपान पर चढता जाता है, उसे इन वरों की उत्तरोत्तर महत्ता की अनुभूति होती जाती है । दीर्घजीवी होना पहला वर है । कोई मरना नही चाहता । परन्तु जीवन प्राण हीन हो तो दुःखदायी है । उसको अनुप्राणित करने के लिए कुछ भावनायें होनी चाहिएं । निराशामय जीवन से दुःखी होकर ही लोग आत्मघात करते हैं । अतः जीवन से आगे बढ़कर प्राण का मूल्य है । इन दो वरो के मिलने पर 'प्रजा' की इच्छा प्रबल होती है । 'एकोऽहं बहु-स्याम्" । मैं अकेला हू बहुत हो जाऊं । पुत्र, पौत्र हों । इसके पश्चात् इन तीन की कमी को पूरा करने के लिये पशु चाहियें । घोडा गाय, कुत्ता आदि मानवी जीवन के पूरक हैं । वर्तमान वैज्ञानिक युग का सब से बड़ा दोष है पशुओं की अवहेलना । यन्त्रो के आविष्कार ने पशुओ के लिए कोई स्थान नही छोड़ा । वैदिक गृहस्थ मे पशु एक विशेष धन समझे जाते थे । ★ इन चार चीजो के होते हुए भी कीर्ति (यश) न हो तो जीवन किस काम का । कीर्ति क्या है ? आप के शुभ कर्मों के विषय मे समाज का प्रमाण पत्र (सार्टी-फिकेट) । जब हम समाज सेवा करते हैं तो हर मनुष्य के हृदय से आवाज उठती है कि यह मनुष्य हमारा हितैषी है । जिस दिन महात्मा गांधी की हत्या हुई, एक भंगी का लड़का एक दुकान पर खड़ा कह रहा था, 'महात्मा जी हमारे थे । अब हमारी सुध कौन लेगा ?' 'द्रविण' मे सभी सांसारिक इच्छाओ का समावेश है । द्रविण पर्याय है अभ्युदय का (द्रविण=Pros-perity or Prosperous Life) 'अभ्युदय' किसी एक कामना की पूर्ति का नाम नही है । यह एक व्यापक शब्द है । पूर्ण जीवन ही 'द्रविण' है । इनके बाद नम्बर है ब्रह्मवर्चस् का । यह परि-

(शेष पृष्ठ ११ पर)

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वर्ष ९ अंक ३१ | रविवार २३ जून १९ ५ | आय सवत्सर १९६०८५३०८५ | आषाढ २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१

अलौकिक प्रतिभा के धनी गुरु विरजानन्द दण्डी

ज्ञान के प्रखर सूर्य परम तपस्वी, त्याग के उच्च आदर्श महानयोगी प्रज्ञाचक्षु गुरुवर्य स्वामी विरजानन्द की शिक्षा का ही चमत्कार था कि युगपुरुष महर्षि दयानन्द भारत को मिल पाया। स्वामी विरजानन्द का जन्म १७७९ ईस्वी मे पजाब करतार पुर उपनगर के समीप गगापुर ग्राम मे हुआ था। चेचक रोग के कारण पाच वष से भो अल्प आयु मे वे नेत्रविहोन हो गए। वे भारद्वाज गोत्र शारदशाखी, सारस्वत ब्राह्मण थे। अत बाल्यकाल मे ही यज्ञोपवीत आ द सस्कार के साथ वेदाध्ययन के लिए व्याकरण आदि को उनको शिक्षा दोक्षा प्रारम्भ कर दी गई थी। नेत्रो को शरीर का दूसरा प्राण कहा जाता है उनके नेत्र चले गये यह दुख कम नही था कि स्नेह के सागर माता पिता भी बच पन मे ही असार ससार से उठ गये। इधर बड भाई भाभो ने विरजानन्द को लाड प्यार न देकर सताना दुत्का-रना शुरू कर दिया। इस प्रकार की दु खद स्थिति मे अन्ध बालपन को लेकर वे केवल १२ वष की आयु मे घर से निकल पड। तीन वर्ष तक भटकते हुए ऋषीकेश पहुचे। यहाँ पर उन्होने जगल मे गगा के तीर पर एक कुटिया बना ली। गायत्री उपा-सना मे रत रहते हुए कण्ठ तक गगा के जल मे खड होकर साधना करते रहे। उनकी स्मरण शक्ति अतितीव्र हो गई। १८ वर्ष की आयु मे इन्होने कनखल हरिद्वार मे दण्डी स्वामी पूर्णानन्द से (जिनसे स्वामी दयानन्द ने भी सन्यास लिया था। सन्यास ग्रहण किया। इनसे ही शिक्षा व्याक-रण आदि को भो विद्या प्राप्त को। इसके पश्चात वे काशो पहुचे काशी मे उन्होने पढा भो और पढाया भी। काशी से गया गये। वहाँ से कलकत्ता इस प्रकार पुन लौटकर एटा जिला के गगातीर स्थित सोगे नगर आ गये। यहाँ पर अल्पकाल मे ही उनकी यश कोर्ति चहु ओर फैलने लगी।

एक दिन जब वे गगा मे खड मत्र पाठ कर रहे थे। अलवर नरेश महा राज विनयसिह ने इस प्रज्ञाचक्षु विद्वान को शुद्ध मधुर शैली मे पाठ करते देखा वे मुग्ध हुए बिना न रह सके। उनका योग साधना और त्याग से वे ऐसे प्रभावित हुए कि उनकी कुटिया मे पहुच कर उनसे अपने राज्य अलवर चलने की प्रार्थना करने लगे। स्वामी जो ने कहा हम वैरागी तुम रागरग की दुनिया के अलमस्त रागी। हमारा तुम्हारा सग कैसे सभव है? राजा ने जब बहुत अनुनय विनय की तो वे एक शर्त पर साथ जाने के लिए तैयार हुए। यदि तुम प्रतिदिन हम से कुछ ही काल तक सही पढना स्वीकार कर लो तो हम अवश्य साथ चल सकगे। राजा ने उनकी शर्त स्वोकार कर ली लेकिन साथ ही उन्होने यह भी कह दिया यदि एक दिन भी पढने मे व्यवधान हुआ तो हम वापस लौटकर आ जायेंगे। अलवर पहुचकर उन्होने राजा को पढाना शुरू कर दिया। महाराज विनयसिह के हृदय मे दण्डी जी के लिए दिन-प्रतिदिन भक्तिभाव बढता गया। किन्तु एक दिन राजा नाच-रग में व्यस्त हो गया और पढने नहो पहुच पाया; राजा के प्रतिज्ञा भग करने पर स्वामी जी राजनगरी का परित्याग कर चल पड। कहा तो उस समय के ज्ञानी ध्यानी सत जो मोक्षानन्द की प्राप्ति से भी अधिक राजदरबार मे प्रवेश के लिए उत्सुक रहते थे और कहाँ ये नेत्रविहीन साधु जो राजसभा राजगुरु के सम्मानित पद पर ठोकर मारकर चल पड।

इसके पश्चात वे पुन सोगे आये यहा पर भरतपुर के राजा महाराज बलवन्तसिह ने उन्हें भरतपुर पधारने को प्राथना की किन्तु उन्होने जाने से साफ इन्कार कर दिया। वे मथुरा चले गये और यही पर उन्होने अपनी पाठशाला प्रारम्भ कर दी। इसका व्यय भार अलवर नरेश भरतपुर के महाराजा तथा जयपुर के अधिपति वहन करते थे। स्वामी जी इन राजाओ को तथा अपने छात्रो को उस समय देश को गुलामी को सहन न करने के लिए तथा देशहित मे तन मन धन अर्पण करने की सदा प्रेरणा देते रहे। १८६० मथुरा मे ही उन्हे स्वामी दयानन्द जैसा सुयोग्य शिष्य मिला। शिष्य को पढाने मे उन्होने चमत्कार जैसा काय किया। स्वामी विरजानन्द पढाने मे कठोर थे। उन्होने दयानन्द को अनार्षग्रन्थ त्याग करने का प्रथम आदेश दिया।

महर्षिकृत ग्रन्थो को पढने की घुट्टी दी। जिसके कारण स्वामी दयानन्द का जीवन ही बदल गया। वैसे तो स्वामी विरजानन्द की पाठ शाला से हजारो विद्यार्थी ज्ञानार्जन कर निकले, किन्तु स्वामी दयानन्द जैसा अद्वितीय शिष्य एकमात्र ही था। आर्षग्रन्थों को पढने वाले उस समय के विरजानन्द के शिष्य गोपाल ब्रह्मचारी युगलकिशोर सोहनलाल, नन्दनजी चौबे पाण्डय श्यामलाल, गरुडध्वज दीनब धु वनमाली चौबे और उदयप्रकाश आदि भी प्रसिद्ध रहे।

स्वामी विरजानन्द ने उद्भट विद्वानो से अनेक शास्त्राथ किये। वे आर्षग्रन्थो का प्रतिपादन और अनार्ष-ग्रन्थो का खण्डन बडी कठोरता से किया करते थे यही पारम्परिक गुण स्वामी दयानन्द मे भी अवतरित हुआ। समावतन (विद्यासमाप्ति) के समय जब दयानन्द अपने गुरु से विदा लेने लगे एक थाली लौग भरकर सन्यासी शिष्य ने गुरु चरणो मे अर्पित करनी चाही किन्तु विरजा नन्द बोले—दयानन्द! हम मनचाही दक्षिणा चाहिए। इतिहास मे इसी प्रकार महर्षि वरतन्तु ने अपने शिष्य कौत्स से चौदह करोड स्वर्णमुद्रा मागी थी। किन्तु दयानन्द ने इससे भी बढकर दक्षिणा अपना जीवन ही गुरु के चरणो मे दक्षिणा स्वरूप अर्पित कर दिया। गुरु ने आदेश दिया जीवन भर आर्षग्रन्थो का प्रचार और अनार्षग्रन्थो के तिमिर का खण्डन करो। जीवन भर दया-नन्द ने इस आदेश का पालन किया, एक बार जब स्वामी दयानन्द मेरठ मे थे गुरु का सन्देश मिला— दया नन्द अभी तक तुम्हारी धवल कीर्ति हमारे कानो तक नही पहुची। वे चाहते थे मेरे शिष्य की कीर्ति दिग् दिगन्त मे व्याप जाये। सोमवार १८६८ सितम्बर मे इस महामुनि का निधन हुआ। उनके मृत्यु समाचार को सुनकर स्वामी दयानन्द ने कहा था—

आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।'

—यशपाल सुधांशु

सम्पादक—यशपाल सुधांशु | व्यवस्थापक—डा० [illegible] | प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

सत्संग वाटिका

जिसे बचावें वरुण, मित्र और अर्यमा उसे मारे कौन ?

लेखक—प० शिवकुमार शास्त्री

य रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
न कि स दम्यते जन ॥ साम० १८५

★

शब्दार्थ—(हे इन्द्र) परमात्मन् अथवा राजन् ! (यम्) जिस मनुष्य की (प्रचेतस) महाज्ञानी (वरुण) वरणीय (मित्र) सुहृद (अर्यमा) न्यायकारी (रक्षन्ति) रक्षा करते है। (स) वह (जन) मनुष्य (न कि.) नही (दम्यन) मारा जाता।

व्याख्या—इस मन्त्र मे एक व्यक्ति की सफलता का रहस्य बताते हुए कहा है कि वह मनुष्य जिसके वरुण मित्र और अर्यमा रक्षक हैं, कभी मारा नही जा सकता अर्थात् आन्तरिक और बाह्य शत्रु उसे असफल नही कर सकते, दबा नही सकते। दूसरे शब्दो मे भाव यह हुआ कि मनुष्य को अपना आचरण ऐसा बनाना चाहिए कि ससार के वरणीय श्रेष्ठ पुरुष उसके उदात्त चरित्र से प्रभावित होकर उसकी रक्षा करे। प्रेमी और मित्र भी सन्मार्ग मे चलने की प्रेरणा करके रक्षा ही करने वाले हो। न्यायप्रिय न्यायाधीश भी मर्यादा-पालन करने वाले ऐसे व्यक्ति के रक्षक बने।

अब एक एक बात पर थोडा विस्तार से विचार कीजिये। ससार के श्रेष्ठ पुरुषो की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि देश, भाई, बन्धु आदि की सामान्य सीमाओ को छोडकर श्रेष्ठ व्यक्ति का हित साधते और सकट के समय उन्ही का सहयोग करते हैं। अधर्माचरण करने वाले उनके निकट के सम्बन्धी ही क्यो न हो उनका साथ वे कदापि नही देते।

रामायण मे, राम और सुग्रीव राम तथा विभीषण, महाभारत मे विदुर भीष्म द्रोणाचार्य और कृपाचार्य आदि के उदाहरण विस्मयकारक तथा अद्भुत हैं। जहा ये लोग शारीरिक दृष्टि से दुर्योधन के पक्ष मे थे वहाँ हृदय मे पाण्डव-पक्ष की ही हित कामना करते थे।

सुग्रीव को दिये वचनानुसार जब राम ने बाण मारकर बाली को घायल कर दिया तो बाली ने रोष प्रकट करते हुए राम से कहा—

इति मे बुद्धिरुत्पन्ना
बभूवादर्शने तव।
न त्वा विनिहतात्मान
धर्मध्वजमधार्मिकम ॥
जाने पापसमाचार
तृणैः कूपमिवावृतम।
सता वेषधर पाप
प्रच्छन्नमिव पावकम् ॥

हे राम तुम मेरी दृष्टि मे एक आत्मघाती और धर्म की कोरी डींग हाकने वाले पापाचारी और तिनको से ढके हुए कूप के समान खोखले हो। सत्पुरुषों का वेष ओढे पापरूप ढकी हुई आग के समान दाहक हो।

हत्वा बाणेन काकुत्स्थ
मामिहानपराधिनम् ।
कि वक्ष्यसि सतां मध्ये
कर्म कृत्वा जुगुप्सितम् ॥
वा० रामा० ४ १७, २०, ३४

हे राम बिना अपराध के ही बाण के प्रहार से मुझे मारने जैसे निन्दनीय कर्म को करके तुम सत्पुरुषो के बीच मे क्या उत्तर दोगे ?

सुग्रीवोऽपि क्षम कर्तुं
यत् कार्यं तव राघव।
किमह न क्षम: कस्माद-
पराध विना हतः ॥

हे राघव ! तुम्हारी सहायता का जो काम सुग्रीव कर सकता है क्या वह मैं नही कर सकता था ? फिर तुमने निष्कारण मुझे क्यो मारा ?

राक्षसञ्च दुरात्मान
तव भार्यापहारिणम् ।
कण्ठे बद्ध्वा प्रदद्यान्ते
ऽनिहत रावण रणे ॥४६॥

तुम्हारी पत्नी का अपहरण करने वाले उस दुष्ट रावण को युद्ध मे न मारकर और उसकी मुश्कें बाधकर तुम्हारे सामने उपस्थित न कर सका, इसका मुझे बडा खेद रहेगा।

बाली का यह कथन कितना युक्तियुक्त और नीतिनैपुण्ययुक्त है। राम ने बाली के प्रश्नो का निम्न उत्तर दिया—

तदेतत् कारण पश्य
यदर्थ त्व मया हत ।
भ्रातुर्वर्तसि भार्याया
त्यक्त्वा धर्म सनातनम ॥

—देखा मैंने तुम्हे जिस कारण से मारा है वह यह है कि तुमने मर्यादा का उल्लघन करके अपने छोटे भाई की पत्नी को अपने अधिकार मे किया हुआ है।

अस्य त्व धरमाणस्य
सुग्रीवस्य महात्मन ।
रुमायां वर्तसे कामात्-
स्नुषायां पापकर्मकृत् ॥ ४।१८।१९

इस महात्मा सुग्रीव की पत्नी को बल पूर्वक अपने अधिकार में करके कामातुर होकर तू इस प्रकार पापकर्म कर रहा है जो अपनी पुत्रवधू के साथ दुराचारण के समान है। इस उद्धरण से स्पष्ट है कि बाली के पथभ्रष्ट होने के कारण राम उसके शत्रु बने। सुग्रीव के ऊपर राम के अतिशय प्रेम का कारण सुग्रीव के शोषित पीडित होने के साथ-साथ उसकी सदाशयता भी है। राम का सुग्रीव पर कितना अनुराग था उसके लिए लङ्का के युद्ध के समय का एक उदाहरण देखिये—

सेतु से वानर सेना के समुद्र पार उतरने पर सुग्रीव लका को देखने की इच्छा से सुवेल पर्वत पर चढ गया। वहा सुवेल के एक शिखर से लका मे घूमते हुए रावण को देखा। रावण को देखते हुए सुग्रीव आगबबूला हो गया और अपने आपको सभाल न सका। वह छलाग लगा कर रावण के पास पहुच गया और उसके साथ कुछ देर तक युद्ध करके और अपनी वीरता की धाक जमाकर वापस आ गया।

राम चिन्तित होकर इस सारे दृश्य को देखते रहे और सुग्रीव के वापस आने पर भावावेश मे कहने लगे—

असम्मन्त्र्य मया सार्ध
तदिद साहर्स कृतम् ।
एव साहसकर्माणि
न कुर्वन्ति जनेश्वरा ॥ ६।४१।२

मेरे साथ बिना परामर्श किए ही यह जो तुमने साहसिक कार्य किया, इस प्रकार का साहस राजा लोगों को नही करना चाहिए।

इदानीं मा कृथा वीर
एव विधमचिन्तितम् ।
त्वयि किञ्चित् समापन्ने
कि कार्यं सीतया मम ॥४॥

हे वीर इस प्रकार बिना विचार किए आगे से दु साहस मत करना। यदि तुम्हें कुछ हो जाता तो फिर सीता से मुझे क्या मतलब था।

भरतेन महाबाहो
लक्ष्मणेन यवीयसा।
शत्रुघ्नेन च शत्रुघ्न
स्वशरीरेण वा पुन ॥५॥

हे महाबाहु सुग्रीव ! फिर भरत से, फिर लक्ष्मण से और छोटे भाई शत्रुघ्न से और अपने शरीर से भी क्या प्रयोजन रह जाता।

त्वयि चानागते पूर्वमिति
मे निश्चिता मति. ।
जानतश्चापि ते वीर्यं
महेन्द्रवरुणोपमम् ॥६॥

मैंने यह निश्चय कर लिया था कि तुम सकुशल वापस न आ सके तो—यद्यपि महेन्द्र और वरुण के समान मैं तुम्हारे पराक्रम से परिचित हूँ, फिर भी—

हत्वाह रावण
युद्धे सपुत्रबलवाहनम् ।
अभिषिच्य च लङ्कायां
विभीषणमथापि च ॥
भरते राज्यमावेश्य
त्यक्ष्ये देह महाबल ॥ ७, ८ ॥

मैंने निश्चय किया था कि सेना और पुत्रो सहित रावण को युद्ध में मारकर और लका मे विभीषण का राजतिलक करके तथा अयोध्या का राज्य भरत को देकर मैं अपने शरीर का परित्याग कर दूगा।

ये राम के उद्गार कितने स्नेह से सराबोर हैं। जिस व्यक्ति के आचरण से प्रभावित होकर उसे ऐसे सहयोगी मिल जावें वह दूसरो से मार कैसे खा सकता है ?

राम विभीषण के पक्षधर भी उसके सात्त्विक गुणो के कारण ही बने। रावण से अपमानित होकर जब विभीषण राम के दल में राम से मिलने आया तो राम को छोडकर शेष सब की सम्मति यह थी कि यह शत्रु का भाई है, अधिक सम्भावना यह है—कि यह हमारे छिद्र जानने आया होगा। किन्तु राम इन विचारों से सहमत नहीं हैं। वह कहते हैं कि बिना मिले यह कैसे जाना जा सकता है कि उसके मन में क्या बात है ? जब साथियों ने इस पर भी प्रश्न किया कि मिलकर भी मन के अन्दर की बात कैसे जानी जा सकती है ऊपर-ऊपर से चिकनी चुपडी बातें करता रहेगा, और मन मे घात बनाये रखेगा, तब राम ने जो उत्तर दिया वह उस महापुरुष की योग्यता को बताता है कि वे मनुष्य के कितने पारखी थे। राम ने कहा—

आकारश्छाद्यमानोऽपि न
शक्यो विनिगूहितुम् ।
बलाद्धि विवृणोत्येव
भावमन्तर्गत नृणाम् ॥
६।१७।६४

मनुष्य अपने आकार को छिपाने की कोशिश करने पर भी नही छिपा सकता क्योकि अन्दर के विचार बलपूर्वक आकर आकृति पर प्रकट होते रहते हैं। यह मनोवैज्ञानिक बात उर्दू के शायर जिगर ने भी कही है —

जिगर मैंने छिपाया लाख
अपना दर्दे ग़म लेकिन ।
बयां करदी मेरी सूरत ने
सब कैफ़ियतें दिल की ॥

(शेष पृष्ठ ११ पर)

★ वचन-सन्देश ★

सफलता का चमत्कार

गाजी मुस्तफा कमालपाशा जिस समय तुर्की से भागे थे उस समय केवल इक्कीस युवक उनके साथ थे। कोई साजो-सामान न था मौत का वारण्ट पीछे-पीछे घूम रहा था। पर समय ने ऐसा पलटा खाया कि उसी कमाल ने अपने कमाल से संसार को आश्चर्यान्वित कर दिया। वही कातिल कमालपाशा टर्को का भाग्य निर्माता बन गया। महामना लेनिन को एक दिन शराब के पीपो मे छिपकर भागना पड़ा था, नही तो मृत्यु मे कुछ देर न थी। वही महात्मा लेनिन रूस के भाग्य विधाता बने। श्री शिवाजी डाकू और लुटेरे समझे जाते थे, पर समय आया जब कि हिन्दू जाति ने उन्हें अपना सिरमौर बनाया, गौ ब्राह्मण-रक्षक छत्रपति शिवाजी बना दिया। भारत सरकार को भी अपने स्वार्थ के लिए छत्रपति के स्मारक निर्माण कराने पड़े। क्लाइव एक उद्दण्ड विद्यार्थी था, जो अपने जीवन से निराश हो चुका था। समय के फेर ने उसी उद्दण्ड विद्यार्थी को अंग्रेज जाति का राज्य स्थापन कर्त्ता लार्ड क्लाइव बना दिया। श्री सुनयात सेन चीन के अराजकवादी पलायक (भागे हुए) थे। समय ने ही उसी पलायक को चीनी प्रजातन्त्र का सभापति बना दिया। सफलता ही मनुष्य के भाग्य का निर्माण करती है। असफल होने पर उसी को बबर, डाकू, अराजक राजद्रोही तथा हत्यारे के नामो से विभूषित किया जाता है। सफलता उन्हीं सब नामो को बदलकर दयालु प्रजापालक, न्यायकारी, प्रजातन्त्रवादी तथा महात्मा बना देती है।

—अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल

सम्पादकीय

अकाल के पंजे में तड़फता इथोयोपिया

आज का मानव विज्ञान और तकनीकि से चाद सितारो की ऊंचाई तक पहुच चुका है। धरती का भार सागर की गहराई ऊंची से ऊंचो पर्वत की चोटी तक, हवा के वेग से लेकर सूरज के २ करोड गुने ताप तक को मनुष्य ने जान लिया है। समस्त विश्व को कुछ पलो मे समाप्त कर सकने की सामग्री मनुष्य ने ईजाद कर ली है। लेकिन इसके साथ मनुष्य से लेकर क्षुद्रप्राणियो तक के भयावह रोगो तक की चिकित्सा का भी अविष्कार निरन्तर चल रहा है। फसल वनफल की उपज का आश्चर्यजनक वृद्धि कर सकने की विद्या मनुष्य जान चुका है। किन्तु ज्ञान विज्ञान के चरम को छूने के बाद भी मनुष्य मे मानवता का ह्रास होता जा रहा है। मनुष्य में विज्ञान के साथ राक्षस प्रवृत्ति भी बढ़ती जा रहा है। प्रीतिभोज तथा उत्सव भोज मे लाखो मन अनाज तो उच्छिष्ट के रूप मे कूड़े मे फेंक दिया जाता है। दूसरी ओर इस समय मनुष्यता के नाम कलक बनकर अकाल करोड़ो मनुष्यो को निगल रहा है। इथियोपिया तथा २५ अफ्रीका देश इस समय अकाल ग्रस्त है। इथियोपिया की आबादी ४ करोड २० लाख के लगभग है। तीन साल से यह देश अकाल के जबड़े मे फसा है। अनुमान है तीस लाख लोग भूख और बीमारियो से मर चुके है। पूरे अफ्रीका मे सिर्फ १९८४ मे १ करोड ६० लाख लोग मरे है। साथ ही १५ करोड लोग प्रभावित हुए है। इस तरह के आकड़ो का कोई अन्त नही है।

वैज्ञानिक कहते है इसका कारण अधाधुंध जगलो का काटा जाना, कई जगहो पर १० वर्षों से वर्षा का न होना पानी का दुरुपयोग नगरो का विकास करते जाना, खेती कृषि की उपेक्षा आदि कारणो से सहारा के रेगिस्तान का फलाव तेज हो गया है। इसी कारण १० लाख वर्ग किलोमीटर खेती लायक जमीन सहारा मे समा गयी और अगर तुरन्त कदम नही उठाये गये तो अगले ५० वर्षो मे अफ्रीका का ४५% हिस्सा रेगिस्तान मे समा जाने का खतरा है। पिछले २० वर्षों में पशुओ का चरागाह का तीन चौथाई सहारा का हिस्सा बन गया।

अफ्रीका मे जनसख्या वृद्धि दर दुनिया मे सबसे ज्यादा है। २० वर्ष पहले अफ्रीका अनाज मे आत्म निर्भर था और अनाज उत्पादन की दर जनसख्या वृद्धि की दर के बराबर थी। और अब वह २ ३% से घटकर १-३ प्रतिशत रह गई है। विदेशी मल्टी नेशनल और अफ्रीकी कम्पनियो मे तो जगल काटने की होड शुरू कर दी है। जिससे जलवायु मे बहुत परिवर्तन हो गया है सहारा का फलाव तेज हो गया है। लेकिन सब से बडा कारण सामाजिक आर्थिक राजनैतिक है। कई देशो मे विदेशी गुलामी से विरासत मे मिला औपनिवेशिक ढाचा अब भी बरकरार है। वह आज भी एक वस्तु के उत्पादन पर आधारित है। वे कोको काफी केले आदि बेचकर अनाज खरीदते हैं। मल्टीनेशनल संस्थाओ ने बड़े पैमाने पर पूंजी लगा रखी है। १५० अरब डालर का कर्ज अब तक उन पर लद चुका है।

इस दुर्भिक्ष का सबसे बडा शिकार इथियोपिया है। इस देश की लगभग ७० लाख जनता इससे प्रभावित है। पिछड़ापन भी यहा इतना है कि गावो से जगलो से सड़क तक पहुचने मे दो या तीन दिन तक लग जाते हैं। सारे देश मे लगभग ६ हजार ट्रक हैं जो राहत कार्यों मे जुटे हैं। इस समय पश्चिमी देशो की जनता ने आर्थिक मदद देनी शुरू की है इसका श्रेय बी०बी०सी० को जाता है। क्योंकि इस अकाल पर उसने अपनी १० मिनट की एक फिल्म प्रसारित की और अकाल के छाया चित्र से जब लोगो का आमना सामना कराया तो सचमुच लोगो की आंख खुल गयी। देखते ही देखते लाखो पौण्ड जमा हो गए। फिल्म मे दिखाया गया था। मृत बच्चो के ढेर मक्खियो और कीडो से भरे शव इन दृश्यो ने लोगो के दिलो को दहला दिया।

मार्च मे अफ्रीका मे वर्षा हुई थी जो बहुत थोडी था। लेकिन वह भी अधिकाश मध्य दक्षिणी अफ्रीका मे। जुलाई अगस्त वर्षा की कोई आशा नही। अकाल क्षेत्रो के लोगो को नये क्षेत्रो मे बसाया जा रहा हैं। १ लाख लोग बसाये जा चुके हैं ५ लाख लोग और बसाये जायगे। अभी भी इथियोपिया मे लाखो टन अनाज और भोजन की आवश्यकता है। अमेरिका के एक नेता टोनीहाल ने अकाल ग्रस्त क्षेत्र से लौट कर कहा था कि बड़े शर्म की बात है कि एक तरफ अकाल और भूख से लोग मर रहे हैं जबकि हमारे भंडारगृहो मे अनाज के पहाड जमा हैं।

अतः मनुष्यता के नाते प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है प्रत्येक देश भूखण्ड वासी का फर्ज है अकालपीडितो की सहायता के लिए तन मन धन, वस्त्र, अन्न, दवाई आदि से सहयोग करें।

—यशपाल सुधांशु

सामयिक प्रश्न

आरक्षण नीति पर पुनर्विचार जरूरी है

—प्रो० बलराज मधोक

गुजरात और मध्यप्रदेश मे विधान सभा चुनावों के समय आरक्षण की परिधि में अनुसूचित जातियो और जन जातियों के अतिरिक्त हिन्दू समाज की अन्य बहुत सी उपजातियो को लाने की नीति के विरोध मे शुरू हुआ आन्दोलन गुजरात मे विकराल रूप धारण कर चुका है वहा इसे हिंसक और साम्प्रदायिक रूप भी दे दिया गया है और उसके कारण सैंकडो लोग हताहत हुए है तथा करोडो की सम्पत्ति नष्ट हो चुकी है पर इसके कारण सारे देश का ध्यान इस समस्या की ओर खिंच गया है और आरक्षण नीति पर राजनैतिक विवाद शुरू हो गया है अब आरक्षण नीति पर गत ३५ वर्षों के अनुभव के आधार पर पुनर्विचार की आवश्यकता सब ओर महसूस की जाने लगी है।

भारत के संविधान मे हिन्दू समाज के कुछ अति पिछड़े वर्ग के लोगो के लिए जिन्हे गाधी जी ने हरिजन नाम दिया था दस वर्ष के लिए विधान सभाओ ससद और नौकरी इत्यादि मे आरक्षण की व्यवस्था की गई थी। इसका उद्देश्य इन वर्गों को आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से ऊपर उठाने के लिए विशेष सुविधाए देना था। स्वतन्त्र भारत के पहले विधि मंत्री और संविधान सभा की प्रारूप (ड्राफ्टिंग) कमेटी के अध्यक्ष के नाते डा० भीमराव अम्बेडकर का भी इस नीति के बनाने मे *हाथ था। डा० अम्बेडकर स्वयं हरिजन* और भुक्त भोगी थे। उनके हृदय मे हरिजनो के लिए विशेष तडप और सवेदना थी। वे आजीवन हरिजन बन्धुओ के सामाजिक आर्थिक और शैक्षणिक उत्थान मे कार्यरत रहे। इसलिए इस सम्बन्ध मे उनका चिन्तन विशेष महत्त्व रखता है।

मुझे डा० अम्बेडकर को बहुत निकट से जानने का सौभाग्य मिला था। हमारी आपस मे घनिष्ठ बौद्धिक मित्रता थी। उन्होंने मुझे स्पष्ट कहा था कि उनके मत मे हरिजन बन्धु जब तक आरक्षण की बैसाखी पर निर्भर रहेंगे तब तक वे अपने पाव पर खडे नही हो सकेंगे इसलिए वे आरक्षण को हरिजन उत्थान का कारगर उपाय नही मानते थे। इसीलिए उन्होंने अपने द्वारा स्थापित रिपब्लिकन पार्टी आफ इण्डिया के घोषणा पत्र मे आरक्षण खत्म करने की बात स्पष्ट रूप मे लिखी थी।

गत वर्षों के अनुभव ने डा० अम्बेडकर के मत को सत्य सिद्ध किया है। आरक्षण के कारण हरिजन वर्ग के कुछ परिवारो को अवश्य लाभ हुआ है। वे आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से ऊंचे उठ गए हैं अब आरक्षण का लाभ मुख्यत उन्ही की सन्तानो को मिल रहा है क्योकि शिक्षा दीक्षा के मामले मे अन्य हरिजनो के से आगे निकल चुके हैं। स्वाभाविक रूप मे उनका आरक्षण नीति के बने रहने मे निहित स्वार्थ उत्पन्न हो गया है।

कुछ राजनैतिक दलो विशेष रूप मे सत्तारूढ कांग्रेस दल का भी आरक्षण नीति मे निहित स्वार्थ पैदा हो चुका है। इसके नेता भाप गए हैं कि आरक्षण के बल पर वे हरिजन मतदाताओ को अपना सुरक्षित वोट बैंक बना पाए है और
रखना उनके सत्ता मे बने रहने के लिए आवश्यक है। इस प्रकार हरिजनो मे से आरक्षण नीति से लाभान्वित हुए मुखर लोगो और सत्तारूढ काग्रेस दल के निहित स्वार्थों का मेल हो गया है। इसके कारण आरक्षण की अवधि १९६१ १९७१ और १९८१ मे दस दस वर्ष के लिए बढाई जाती रही।

आरक्षण नीति द्वारा वोट बैंक बनने के अनुभव से कुछ राजनैतिक नेताओं के मन में इस प्रकार के वोट बैंकों के बढाने का विचार पैदा हुआ। उन्होने हिन्दूसमाज की कुछ अन्य उपजातियो को भी पिछडेपन के नाम पर आरक्षण की परिधि मे लाने की माग उठानी शुरू की। ऐसी मागो को राजनैतिक समर्थन मिलने के कारण विभिन्न प्रदेशों मे अनेक उपजातियो को पिछडी जातियाँ घोषित करके उनके लिए आरक्षण की व्यवस्था की जाने लगी। कई प्रदेशो मे तो उनकी जनसख्या का अधिकाश भाग पिछडेपन के नाम पर आरक्षण की परिधि मे आ गया है। फलस्वरूप योग्यता के आधार पर नौकरी और शिक्षण सस्थाओ मे प्रवेश के अवसर लगातार सीमित हो रहे हैं। इसके कारण तथाकथित उच्चवर्गों के लोग अपने आप को वंचित और उपेक्षित महसूस करने लगे हैं।

आरक्षण की परिधि के लगातार विस्तार का सब से अधिक प्रभाव तथा कथित ऊची जातियो के युवको पर पड रहा है। वे इसे अपने प्रति भेदभाव और अपनी योग्यता पर आघात मानने लगे हैं। सम्भवत इसीलिए गुजरात का वर्तमान आरक्षण विरोधी आन्दोलन विद्यार्थियो और उनके अभिभावकों ने शुरू किया था।

गुजरात के बाहर भी इस आन्दोलन की प्रति[illegible] [illegible]गी है। एक भारतीय [illegible]गोष्ठी सोच हो चुका [illegible]गठन इस विचार [illegible]क राष्ट्री[illegible] लन का आयोजन कर रहा है उच्च न्यायाल[illegible] सम्बन्ध याचिका [illegible] की है अ[illegible] कोर्ट [illegible] इस वि[illegible] अपने वि[illegible] कर चुका

आरक्षण के दो मुख्य पहलू हैं। जहा तक हरिजनो अथवा अनुसूचित जातियो के लिए आरक्षण का प्रश्न है उसके तुरन्त समाप्त करने का प्रश्न नहीं उठता। उस [illegible] १९८१ मे नव आरक्षण की वर्तमान १० वर्षों की अवधि समाप्त होगी आरोपा [illegible] मांग कि [illegible]जनो के लिए आरक्षण केवल नौकरियो के प्रवेश मे हो और पदोन्नति के मामले मे केवल वरीयता और योग्यता का ही ध्यान रखा जाना चाहिए और 'रोस्टर प्रणाली खत्म होनी चाहिए दबायी नही जा सकती। इसका विरोध करना भी कठिन है इस माग पर तुरन्त विचार होना चाहिए।

अनुभव से यह भी स्पष्ट हो चुका है कि हरिजनो में भी आरक्षण का लाभ केवल कुछ उपजातियों और उनमे भी कुछ परिवारो को मिला है। अधिकाश निर्धन और पिछडे हरिजन बन्धु भी इसके लाभ से वंचित रहे हैं क्योकि इसका लाभ मुख्यत उन चुने हुए परिवारो की सन्तानों को ही मिल रहा है। इसलिए हरिजनों में भी बहुजन के हित मे हरिजनों सबधी आरक्षण नीति पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता महसूस हो रहा है। पिछडे हरिजनो के हित में आरक्षण के बल पर आगे बढ चुके परिवारो को इनकी परिधि से निकालने की कुछ व्यवस्था करनी होगी। जन्म के साथ आरक्षण के लिए आर्थिक आधार भी जोडना इसका एक उपाय है।

जहा तक हरिजनों के अतिरिक्त तथाकथित अन्य पिछडी जातियों को आरक्षण की परिधि मे लाने का प्रश्न है उसके विषय मे अभी तक कोई आम सहमति नहीं है। जन्म के आधार पर किसी पूरी जाति या उपजाति को पिछड़ा घोषित करना न तर्क सगत है और न सवैधानिक। इस मांग का आधार केवल वोट की राजनीति है। इससे समाज विघटित होगा और पिछडेपन को कायम रखने मे निहित स्वार्थ पैदा होंगे। इसलिए इस मामले में तुरन्त पुनर्विचार होना चाहिए। भारत सरकार ने भी यह स्वीकार किया है कि इस विषय पर अभी तक कोई आम सहमति नहा है और उसने प्रदेश सरकारो को सलाह भी दी है कि वे मनमाने ढग से पिछडी जातियो की परिधि को न बढाये।

आरक्षण नीति एक अस्थायी नीति है। सविधान ने इसे केवल दस वर्ष के लिए स्वीकार किया था इसे लगातार आगे बढाते जाने का कोई औचित्य नही है।

समय आ गया है कि आरक्षण नीति के सभी पहलुओ की वस्तुपरक समीक्षा की जाय। समाज के पिछडे लोगों को उठाने का दायित्व समाज का भी है और सरकार का भी। इस दिशा मे सोच समझ कर पग उठाये जाने चाहिए। परन्तु कोई पूरी जाति सारी की सारी पिछडी नही मानी सकती। वास्तविकता तो यह है कि हर परिवार मे भी कुछ भाई आगे बढ जाते हैं और कुछ पिछड जाते हैं। जो किसी भी कारण से पिछड गए हो उन्हें उठाना शेष परिवार का नैतिक कर्तव्य माना जाता है। यही बात जाति या उपजाति रूपी बडे परिवारो पर भी लागू होती है। उनमें जो समृद्ध और बढें हुए हैं उन्हें किसी प्रकार के आरक्षण की बैसाखी का आवश्यकता नहीं। जो पिछडे हुए हैं वे सदा के लिए पिछडे न रहे इसका उपाय करने की आवश्यकता है। यही कारण है कि यह विचार जोर पकड रहा है कि यदि आरक्षण नीति जारी रखनी है तो उसका आधार गरीबी और आर्थिक पिछडपन होना चाहिए केवल जन्म और जाति नही।

अब इस प्रश्न को टाला नही जा सकता। बेहतर तो यह होगा कि सरकार स्वयं पहल करके सरकारिया आयोग की तरह का एक उच्च स्तरीय आयोग गत पैंतीस वर्षों के अनुभव के आधार पर आरक्षण नीति के सभी पहलुओ पर विचार करने के लिए गठित करे और सभी पक्षो से अपील करें कि वे अपना-अपना पक्ष इस आयोग के सामने रखें और उसकी रपट आने तक अपने आन्दोलन बन्द कर दें। यह एक व्यावहारिक सुझाव है। जिस पर ठडे दिल से विचार होना चाहिए।

(लघु सेवा)

अपनी स्वर्ग सदृश मातृभूमि के प्रति हमारा कर्त्तव्य

लेखक म म न्न विद्यालकार

ऋगवेद १ १०११ तथा १० १०१२ मे आये दो मत्रो द्वारा हमे अपनी मातृभूमि के प्रति कतव्य का बोध कराया गया है। मत्र इस प्रकार हैं—

१ उदबुध्यध्व समनस सखाय सम ग्निमि न्ध्व बहव सनीळा दधिक्रामग्नि मुषस च देवीमि न्द्रावतोऽवसे निह्वये व ॥ १ -१०१

२ मन्द्रा कृणुध्व धिय आ तनुध्व नावमरित्रपरणी कृणुध्वम्। इष्कृणुध्व मायुधार कृणुध्व प्राञ्च यज्ञ प्र णयता सखाय ॥ १० १०१२

१ भगवान् हमे कहते हैं कि — (इन्द्रावत) एश्वय की कामना करने वाले आप लोगो को (अवसे) रक्षा के लिए मैं (निह्वये) उपदेश करता हू कि हे (सनीडा) एक ही देश के निवासियो (बहव सखाय समनस) बहुत आबादी वाले समान विचार युक्त तथा परस्पर मित्र भाव धारण करते हुए। सब एक विचार से युक्त होकर परस्पर सहयोग स (उद बुध्यध्व) होश मे आओ—जागो। (अग्नि समिन्ध्व) अपने अग्रणी नता को प्रदीप्त करो। (दधिक्राम् अग्नि) धारण शक्ति के साथ प्रगति के करने वाले (उषस देवी च) और चौकसी की सूचक दिव्य शक्ति को प्रदीप्त करो।

२ (मन्द्रा कृणुध्व) हष और म ह प्रदर्शित करने वाले जयघ वन्दे मातरम् जयहि न्द आदि नार लगाओ। (धिय आतनुध्व होश ज्ञान पुरुषाथ साक्षरता प्रसार आदि का विस्तार करो। (नावम् अरित्र रणी कृणुध्व) न रक्षा करने वाली नौकाओ क ग करो। (इष्कृणुध्व) अधिक न्न उग जाओ (Grow more fcca) (आयु धार कृणुध्व) शस्त्र और अस्त्रो का प्रचुर मात्रा म निर्माण करो (सखाय) पर स्पर मित्र भाव को धारण करते हुए (प्राञ्च यज्ञ प्र णयत) देश की प्रगति रूप यज्ञ का सम्पादन करो।

इस प्रकार वेद मे इन दो मत्रो द्वारा मातृ भूमि के निवासियो अनुयायियो तथा नेताओ के क्या कतव्य हैं इन्हें बडी सुन्दरता से प्रतिपादित किया है।

देश की जनता का कर्तव्य

१ परस्पर भेद भाव भुलाकर एक साथ मिलकर कधे से कधा मिलाकर देश की दलदल मे फसी हुई गाडी को निका लने का यत्न करो। और इसके लिये अपने देश के नेताओं की आज्ञा का पालन कर उनकी शक्ति को बढ़ाओ उन्हें सह योग प्रदान करो।

देश की सरकार का कर्तव्य

१ जनता मे उत्साह और जोश की वृद्धि करे।

२ जनता मे विद्या बुद्धि का प्रसार एव जोश के साथ होश भी कायम रह ऐसा प्रयत्न करे

३ जनता मे ज्ञान का विस्तार एव विज्ञान की उन्नति करे।

४ देश की रमाय जलयान वायु यान आदि का निर्माण करे।

५ प्रचुर मात्रा म अन्न का उत्पा दन करे।

६ शस्त्रास्त्र का प्रभूत मात्रा मे निर्माण करे। इस प्रकार जनता को साथ लेकर देश की प्रगति रूप यज्ञ का सम्पा दन करे

उद बुध्यध्व समनस सखाय।

इस वेद मत्र का कविता म अनुवाद

उठो बधुवर निद्रा त्यागो
मात भूमि का ध्यान करो।
इसको उन्नत करने के हित
तन मन धन बलिदान करो॥
तुम सब मिलकर एक भाव से
एक साथ उद्योग करो।
नौका के जो कणधार हैं
उन से तुम सहयोग करो॥
मातृ भूमि पर सकट आयें
उन्हें शीघ्र तुम दूर करो।
पुन इसे धनधान्य युक्त कर
वैभव से भरपूर करो॥
नव जीवन सचार करो तुम
फिर जनता में जोश भरो।
क्रांति अमर हो जय भारत की
जग भर मे जयघोष करो॥
पाकर तुम से दिव्य प्ररणा
जनता मे उत्साह बढ़ें।
ज्ञान बढ विज्ञान बढ
धनधान्य बढ सम्मान बढ॥
विघ्न और बाधाओ के अब
हम समुद्र को पार करें।
हम जल थल अरु नभ मे
चलने वाल यानो का निर्माण करें॥
रिपु का दप दलन करने को
अस्त्र शस्त्र तय्यार करें।
मित्रो उन्नति पथ मे
आगे बढने का मभार करें॥
निश्चय मन मे धरो सफलता
चरण हमारे चूमेगी।
फिर भारत की अखिल विश्व
मे विजय दुंदुभी गूंजेगी॥

एच० ३११ यू राजेन्द्र नगर

किशोरमञ्च—

वीर बालक रामसिंह

राठौर वीर अमरसिंह अपनी तेज स्विता के लिए प्रसिद्ध हैं। वे शाहजहा बादशाह के दरबार मे एक ऊचे पद पर थे। एक दिन बादशाह के साले सलावत खा ने उनका अपमान कर दिया। भरे दरबार मे अमरसिंह ने सलावत खा का सिर काट फका। किसी की हिम्मत नही हुई कि अमरसिंह को रोके या उनसे कुछ कह सके। मुसलमान दरबारी जान लेकर इधर उधर भागने लगे। अमरसिंह अपने घर लौट आया।

भरे दरबार मे इस तरह बादशाह के साले का सिर काट देना मुगल दरबार की भारी तौहीन थी। क्रुद्ध होकर बदला लेने के लिए अमरसिंह के लोभी और नीच स्वभाव के साले अर्जुन गौड को बाद शाह ने लोभ दिया अमरसिंह का सिर काटने के लिए। उसने अमरसिंह को समझा बुझाकर मुगल दरबार मे आने को राजी कर लिया। धोखा देकर बाद शाह के महल मे ल गया। वहाँ जब अमरसिंह एक छोटे दरवाजे मे होकर भीतर जा रहे थे अर्जुन गौड ने पीछे से वार किया और अमरसिंह का सिर काट दिया। बादशाह शाहजहां इस समाचार से बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अमरसिंह की लाश को किले की बुर्ज पर डलवा दिया। एक विख्यात वीर की लाश इस प्रकार चील कौवे को खाने के लिए डाल दिया गया। अमरसिंह की रानी ने समाचार सुना तो उसने अपने पति की लाश मगा उसका अन्तिम सस्कार कराने की बात ठानी पर लाश लाय कैसे? महल मे जो थोड बहुत राजपूत सैनिक थे उनको उसने अपने पति की लाश लने भेजा किन्तु बाद शाह की सेना के आगे वे थोड से वीर क्या कर सकते थे। रानी ने बहुत से सर दारो मे प्रार्थना की परन्तु कोई भी बाद शाह से शत्रुता लेने का साहस नही कर सकता था। अन्त में रानी ने तलवार मगाई और स्वय अपने पति का शव लाने को तैयार हो गयी।

इसी समय अमरसिंह का भतीजा रामसिंह नगी तलवार लिये वहाँ आया। उसने कहा चाची तुम अभी रुको। मैं जाता हू या तो चाचा की लाश ले आऊगा या मेरी लाश भी वही गिरेगी

रामसिंह अमरसिंह के बड़े भाई जस वन्त सिंह का पुत्र था। वह अभी नवयुवक ही था। सती रानी ने उसे आशीर्वाद दिया। पन्द्रह वष का वह राजपूत वीर घोड़ पर सवार हुआ और घोडा दौडाता सीधे बादशाह के महल मे पहुच गया। महल का फाटक खुला था। द्वारपाल रामसिंह को पहचान भी नही पाये कि वह भीतर चला गया लेकिन बुर्ज के नीचे पहुचते पहुचते सैकडो मुसलमान सैनिको ने उसे घर लिया। रामसिंह को अपने मरने जीने की चिन्ता नही थी। उसन मुख मे घोड की लगाम पकड रक्खी थी। दोनो हाथो से तलवार चला रहा था। उसका पूरा शरीर रक्त मे लथपथ हो रहा था। सैकडो नहीं हजारो मुसलमान सैनिक थे। उनकी लाशें गिरती थी और और उन लाशो पर से रामसिंह आगे बढता जा रहा था वह मुर्दो को छाती पर होता बुर्ज पर चढ गया। अमरसिंह की लाश उठाकर उसने कधे पर रखा और एक हाथ स तलवार चलाता नीचे उतर आया। घोड पर लाश का रखकर बैठ गया। बुर्ज के नीचे मुगलो की सेना आने स पहले रामसिंह का घोडा किले के फाटक से बाहर पहुच चुका था।

रानी अपने भतीजे का रास्ता देख रही थी। पति की लाश पाकर उसका अतिम सस्कार कराया और स्वय भी पति की लाश के साथ चिता पर बैठ गई। रामसिंह को आशीर्वाद दिया—बेटा गौ ब्राह्मण धर्म और स्त्री की रक्षा करना तेरा नाम ससार मे अमर रहेगा। ऐसे नर एव नारी श्रेष्ठो से हमे प्ररणा मिलती है। देश जाति धर्म के स्वाभिमान की रक्षा का तो हम भी ऐसे ही बनगे क्योकि आज भी आवश्यकता हे वीर बेटे और बेटियो की जिसे हम पूरी करने का सकल्प लवे।

प्रस्तोता—प० बलजीत शास्त्री

व्यासपीठ –

उपनिषत् कथा माला–६

गायत्री मन्त्र की महिमा

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

एक बार मैं नागपुर गया, उस समय शहजादा वेल्ज का आगमन था। गवनमेंट आदमियों को पकड-पकडकर लाती थी। उधर के प्रेमी रोकते थे और कहते थे कि उधर न जाओ। मेरे साथ नत्थासिंह भजनीक भी था। हमे उधर न आते देखकर कांग्रेसी कहने लगे, 'उधर कहा गये थे ? भगवे कपडे पहिने हुए इन साधुओं ही ने तो हमारी जाति का बेडा गर्क कर रखा है।" और भी बहुत कुछ कहते रहे। नत्थासिंह ने बहुतेरा कहा कि "हम तो प्रात-भ्रमण करके आ रहे है।" परन्तु वे कब मानते थे। कुछ समझते ही न थे।

मैं जहा भी जाता हू आर्यसमाज ही मे ठहरता हूं। परदेश में मेरा घर आर्यसमाज ही है। अट्ठाईस वर्ष पहले का वर्णन है, मैं एक नगर मे गया। समाज में दो आदमी बैठे हवन कर रहे थे। मैं बाहर तख्त पर बैठ गया, कमण्डल और सोटी मेरे हाथ मे थी। मैंने पूछा, यह क्या हो रहा है ? एक युवक ने कहा, "तू कुछ पढा हुआ भी है ?' दूसरे ने कहा, "पढा हुआ होता तो पूछता ही क्यों ? ऐसे ही साधुओं ने तो जाति का नाश कर दिया है। जा ! यहा रोटी बोटी कुछ नहीं मिलेगी।" कुछ देर पीछे एक भद्र पुरुष आ गया। उसने कहा, 'महात्मा जी ! रोटी खाओगे ?" मैंने कहा, "हां खाऊगा।" वह रोटी ले आया, दाल भी साथ थी। मैं वहीं बैठकर खाने लगा। फिर वे युवक बोले, "बस ? अब तो प्रसन्न हो ? तुम तो इसीलिए आये थे। पेटू हो ! पेटू।" इतने ही मे स्वामी दर्शनानन्द जी आ पहुचे। बडी प्रसन्नता से मिले। तब तो उनकी आंखे खुली। कहने लगे "स्वामी जी ! हम से बडी भूल हुई। कथा सुनाओ।" मैंने कहा, भाई तुम मे और कुछ नही होता तो आने-जाने वाले का वचन से आदर सत्कार कर लिया करो।

आओ ! बैठो ! पीयो पानी !
तीनों बातें मोल न लानी ॥

वचन मे खराबी खडी कर लेनी यह बहुत बुरी बात है। यही दोष है जो हमारे तन्तुओं को ढीला कर रहा है, इसलिए मेरे भाई ! जो बातें खराबी की हैं उन्हें छोड दो।

मनुष्य का धर्म है कि परमात्मा के नाम का सिमरण करता रहे। यदि नही करता तो उस दिन का अपराध उसके सिर चढ जाता है। यदि एक दिन रोटी न खाओ तो दुर्बलता आ जाती है। ऐसे ही प्रभु का नाम न लेने से मनुष्य का आत्मिक बल क्षीण पड जाता है। आत्मिक शक्ति दुर्बल हो जाती है। अतएव मनुष्य मात्र का धर्म है कि उपासना करे। यदि उपासना कर ली तो एक परम कर्त्तव्य कर लिया, नही की तो अपने सिर पाप चढ़ा लिया।

बटाले में एक मुसलमान लडका था। वह एफ० ए० का विद्यार्थी था। एक हौज मे नहा रहा था। मैं भी वहा पहुंच गया। नहाकर उसने कपडे पहन लिये और फिर बैठकर पांव धोने लगा। मैं जान तो गया कि यह पांव धो रहा है, नमाज पढेगा। परन्तु मैंने पूछा, "मित्र। तुम नहा तो चुके हो, फिर हाथ पांव क्यों धोते हो ?" उसने कहा, "स्वामी साहब ! यह तो वजू है। नहाना तो शरीर की सफाई के लिए है, और यह नमाज के लिए।" मैंने कहा, "जब तुम नमाज पढते हो, तो तुम्हारा मन तो इधर-उधर नहीं जाता ?" उसने कहा "यह दिल जाने, मैं क्या करूं ? यदि हम नमाज न पढ़े तो आज के गुनहगार हो जायेंगे। सिर्फ इस गुनाह से बचने के लिए नमाज पढते हैं।" इसी प्रकार मेरे भाइयो ! तुम्हारा भी फर्ज है कि ईश्वर का ध्यान करो। परन्तु तुम हो कि किसी प्रकार मानने में नही आते।

सृष्टि के आदि से लेकर आज तक आर्यों ने, दर्शनों के जानने वाले लोगों ने वेदों के जानने वाले लोगो ने, ईश्वर की उपासना किस रूप में की ? मन्दिरो मे नही बल्कि इसी प्रकार गायत्री मन्त्र के उच्चारण से –

ओ३म् भू, ओ३म् भुव, ओ३म् स्व। ओं तत् सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न प्रचोदयात् ॥ ओ३म्। गायत्री मन्त्र का अर्थ मैं पहले कह चुका हूं। इसका भावार्थ यह है कि वह परमेश्वर जिसका निज नाम 'ओ३म्' है, जो प्राणों का भी प्राण है, सब दुखों से छुडाने वाला है, स्वय सुखस्वरूप होने के कारण अपने उपासकों को भी सब सुखों की प्राप्ति कराता है, उस सब जगत् की उत्पत्ति करने वाले तथा सूर्य आदि प्रकाशक पदार्थों के भी प्रकाशक, सब प्रकार के ऐश्वर्य के दाता, चाहने योग्य विजय कराने वाले, सब से उत्तम, ध्यान करने योग्य सब दुखों को दूर करने वाले, परम पवित्र तेज स्वरूप परमात्मा का ही हम लोग अपने मन में ध्यान करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धियों को उत्तम गुण और स्वभाव की ओर प्रेरणा करे और हमें बुरे कामों से बचाए।

संस्कृत भाषा सीखने पर कोई अधिक रुपया खर्च नही करना होता। यह तो बडी सरल तथा मधुर भाषा है। जो इस मन्त्र का प्रेम के साथ गायन करता है, यह गायत्री मन्त्र उसके अन्त करण को शुद्ध कर देता है और इस शद्धि के द्वारा यह भव-सागर से पार हो जाता है। यह गायत्री मन्त्र तो ईश्वर प्राप्ति के लिए एक तीर के समान है। इसका आशय है कि मनुष्य समाज में एकता प्रकट हो। ईश्वर के पूजन में कोई एक मन्त्र और कोई दूसरा मन्त्र न बतावे। हर एक इस गायत्री मन्त्र से ही ईश्वर का पूजन करे और सब में एकता बनी रहे। गायत्री मन्त्र को आनन्द के साथ उच्चारण करो। एक सौ मन्त्र का जाप करने में ज्यादा से ज्यादा २५ मिनट लग जाते हैं। न इसमें कुछ बनावट है न दिखावट।

कन्या का जब विवाह होता है। वह बरात के साथ विदा होती है। स्त्रियां भजन गाती हैं। सब के अश्रु आ जाते हैं। इसी प्रकार ईश्वर के प्रेम में मग्न हो जाओ। सदा प्रार्थना में यह शब्द कहो कि 'हम तेरे वियोग मे ही जन्म-मरण के बन्धनों में पडे हैं। इसलिए तुझसे तेरा ही स्वरूप चाहते हैं।' यह समझकर कि यह समझ और किसी काम के लिए लाभकर नहीं सदा परमात्मा से उसी की प्रार्थना किया करो।

यह मन्त्र छोटा सा है, यह समझकर इसे तुच्छ न समझो। इसका महत्त्व बहुत बडा है। क्योंकि इसमें परमात्मा से शुद्ध बुद्धि की प्रार्थना की गई है। हीरा छोटा सा ही होता है। परन्तु मूल्य में बहुत होता है। इसलिए इस छोटे से मन्त्र का सौ बार प्रतिदिन उच्चारण करो। यह तुम्हारे जीवन को पवित्रता की ओर ले जायेगा।

देखो "ओ३म्" शब्द तीन अक्षरों से मिलकर बनता है। 'अ+उ+म्' एक अकार, दूसरा उकार और तीसरा मकार। अकार से विराट्, अग्नि और विश्व, परमात्मा के तीन नामों की आराधना होती है। जिसमें सब जग प्रवेश कर रहा है और जो सब में प्रविष्ट है, उकार से हिरण्यगर्भ जिसके गर्भ में प्रकाश करने वाले सूर्य आदि, सब लोक हैं। जो सूर्य आदि प्रकाश करने वाले सब लोकों का उत्पन्न करने वाला है। जो अनन्त बल वाला है और सब जगत् का कर्ता है।

राम-कृष्ण आदि नाम परमात्मा के लिए कहीं भी वेदों में नही आये। वेदों में हिरण्यगर्भ, अग्नि आदि सब गौणिक नाम आये हैं। आदित्य नाम सूर्य का भी है। परमात्मा का नाम यह क्यो हुआ ? कारण, उसी से तो समस्त संसार में प्रकाश फैलता है। इसीलिए परमात्मा का नाम सूर्य भी है क्योंकि परमात्मा समग्र जगत् में उजाला फैलाता है। इस प्रकार एक ओ३म् नाम का उच्चारण करने से परमात्मा के ९ नाम उसमें आ जाते हैं। एक बार गायत्री का उच्चारण करने से उसमें ५ बार ओ३म् आ जाता है, मानो ४५ बार परमात्मा का नाम लिया गया। यदि इस प्रकार ४५ मिनट तक बडे प्रेम से गायत्री मन्त्र का जप करो, तो सौ बार अथवा इससे अधिक बार इस मन्त्र का उच्चारण कर सकोगे। ४५ मिनट के अनन्तर तुम संसार के और सब काम कर सकते हो।

केवल "ओ३म्" "ओ३म्" जपना भी है तो अच्छा परन्तु महात्मा लोगों का कथन है कि गायत्री के साथ ही 'ओ३म्' का उच्चारण करना चाहिए। यह उससे बहुत अच्छा है। "ओ३म् भू" कहने से इसके अर्थ हो जाते हैं कि वह "ओ३म्" प्राणों का भी प्राण है। "ओ३म् भुव" के अर्थ हैं कि वह "ओ३म्" सब दुखों से छुडाने वाला है। "ओ३म् स्व" के अर्थ हैं कि वह 'ओ३म्' स्वयं सुखस्वरूप है और सबको सुख की प्राप्ति कराने वाला है। "तत्" अर्थात् वह ओ३म् 'सवितुर्' अर्थात् सब जगत् की उत्पत्ति करने वाला और सूर्यादि प्रकाशकों का भी प्रकाशक है। वही सब का ऐश्वर्यदाता है, 'वरेण्यम्' अर्थात् वही सबसे बढ़िया तथा ध्यान करने योग्य है। 'भर्गो' वही सब दुखों के दूर करने वाला तथा परम पवित्र है। "देवस्य" वही कामना करने योग्य है। "धीमहि" उसी परमात्मा का हम ध्यान करते हैं। "यो न" वही हमारी 'धियो' बुद्धियों को उत्तम गुण, कर्म तथा स्वभाव की ओर 'प्रचोदयात्' प्रेरणा करे।

सारांश यह है यह गायत्री मन्त्र हमें यह बतलाता है कि सब से उत्तम और सबसे पवित्र प्रार्थना क्या है ? और किस मतलब के लिए हमें परमात्मा की प्रार्थना तथा स्तुति करनी चाहिए। वही परमात्मा मङ्गलस्वरूप तथा मगलकारी है। मेरा और आप सब का जीवन अमगल से घिरा हुआ है। हमें उस मगलमय परमात्मा के ध्यान से ही मगल प्राप्त हो सकता है। इसीलिए हमें उससे सदैव शुद्ध तथा मगलकारी बुद्धि के लिए गायत्री

गायत्री मंत्र की महिमा

मन्त्र द्वारा प्रार्थना करनी चाहिए

संयुक्तप्रान्त में एक लड़का था। उसका नाम था प्राणनाथ। वह बड़ा सुन्दर तथा रूपवान् लड़का था। प्रायः १९ वर्ष की आयु अच्छा वक्ता बी०ए० पास उसे अचानक ज्वर आने लगा। धीरे धीरे ज्वर पुराना पड़ गया। तीन चार मास में ही वह बहुत दुर्बल हो गया उसे हिमालय पर्वत पर ले गये। मैं भी भ्रमण करता हुआ वहां जा पहुंचा। वहां बड़ी सफाई थी। सफाई तो हम इतनी रखते हैं परन्तु खुदा अर्थात् ईश्वर पूजा का नाम नहीं। चाहिए यह कि—

अव्वल खुदाई बजाए दोयम सफाई।

अर्थात् प्रथम ईश्वर पूजा का ध्यान मन में हो फिर सफाई सुथराई का। उस युवक ने मुझे पहचान लिया परन्तु मैं उसे नहीं पहचान सका। उसने मुझे नमस्ते की। मैंने उसका नाम पूछा। उसने कहा प्राणनाथ मैं चकित रह गया। मैंने कहा भाई! तुम तो बड़े प्रसन्न रहा करते थे। अब बताओ क्या हाल है? कहने लगा संसार में सर्वत्र दुःख ही दुःख है। पहले तो मैं साहस हार बैठा था परन्तु यहां चला आया तो कुछ दिन के उपरान्त अच्छा हो गया।

एक फारसी कवि का कथन है कि "मूर्ख नर शिक्षा ग्रहण करने वाली आँखें खोल और राजाओं महाराजाओं की दशा देख। तू तो किस गिनती में है। इस घूमने वाले आकाश चक्र में फसकर कौन खराब नहीं हुआ? कैसर (रोम के सम्राट) के महलों में तो मकड़ियों ने जाले तान तान कर परदे डाल दिये हैं और ईरान के राजा अफरासियाब के गुम्बज पर उल्लू नक्कारे बजा रहे हैं।

किसी का समय सर्वदा एक सा नहीं रहता। पिता अभिमान करता है कि मेरा प्राणपुत्र ऐसा होगा वैसा होगा। वह यह नहीं जानता कि मैं परमात्मा से होड़ और हठ कर रहा हूं। उसने बड़े बड़ों की हठ तोड़ दी अभिमान चूर-चूर कर दिया। कैसर रोम का एक बहुत बड़ा सम्राट था। अपने समय में उसके महलों में बड़ी धूम धाम रहा करती थी किन्तु अब उल्लू बोल रहे हैं। अतएव जो पुरुष बुद्धिमान् हैं वे अभिमान से रहित होते हैं।

एक और फारसी कवि कहता है कि मुझे अपने शत्रु की मृत्यु से प्रसन्न होने का कोई कारण दिखाई नहीं देता क्योंकि मेरा अपना जीवन भी तो स्थायी नहीं।

सुनो! दो धनी पुरुष थे। इनकी परस्पर बड़ी लगती थी। सर्वदा लड़ते झगड़ते रहते थे। खाने पीने वाले यार दोस्त उनके पास आते। एक दूसरे की बड़ी निन्दा करते। धनी लोगों के पीछे ऐसे लोग बहुत लग जाया करते हैं जो उन्हें लड़ा लड़ाकर ही अपना उल्लू सीधा करते हैं। एक दिन उनमें से एक धनी मर गया। यार लोग बड़े प्रसन्न हुए। खुश खुश दूसरे के पास पहुंचे और कहने लगे कुछ खिलाइए। आज बड़ा सुन्दर समाचार सुनायेंगे। उसने कहा पहले तुम बात तो करो। फिर खा भी लेना। वे बोले आपका अमुक शत्रु मर गया है। वह धनी निरा बुद्धू ही नहीं था। संसार गति को जानता था रुष्ट होकर कहने लगा अरे मूर्खो! इसमें प्रसन्नता की बात क्या है? मुझे कहते हो कि तुम्हारा शत्रु मर गया परन्तु तुम कभी नहीं मरोगे।

इसलिए हे भाइयो! तुम यह मनुष्य जीवन पाकर कुछ शुभ काम कर जाओ। सबसे मुख्य कार्य प्रभु की उपासना करना है। परमेश्वर मंगलस्वरूप है जिसमें अमंगल का लेश भी नहीं। उसी का ध्यान करो तुम्हें सब सुख प्राप्त हो जायेंगे।

एक था साधु। उससे किसी ने पूछा महाराज! कुछ खाने की इच्छा है उसने कहा खीर खायेंगे। थाली में खीर आ गई। बड़े प्रसन्न होकर खाने लगे। भूख तो मिट गई परन्तु नीयत नहीं भरी। उसने पूछा और लोगे? उत्तर दिया ले आओ। दूसरी बार तीसरी बार पूछा तब भी ना नहीं की। फिर कहने लगा अब कुछ नमकीन ले आओ। नमकीन आया वह भी खूब खाया। फिर अजीर्ण हो गया। हाय! हाय! करने लगा। यह भी कोई आनन्द है? घण्टे भर खुश फिर अमंगल। दुनिया के सब कार्य ऐसे ही अमंगल मूल हैं। मंगल रूप तो परमात्मा ही है दुनिया के झगड़ों को मिटाओ परमात्मा से एकता पैदा करो। जब एक ईश्वर को मानोगे तो बेड़ा पार हो जायेगा।

मन्दिरों में देखो। एक दूसरे से लोग कहते हैं मेरे मन्दिर का परमेश्वर अच्छा है। तेरे मन्दिर का ईश्वर अच्छा नहीं। मूर्खो! परमेश्वर तो एक है। हम तो एक हैं। आंखों से सब ही देखते हैं। सूंघने का काम सब ही नाक से लेते हो। खाना मुख से खाते हो। इन सबका साधन तो एक है फिर धर्म अलग अलग कैसे? सब का धर्म भी एक ही है। जिसमें भेद आ गया वही अपधर्म हो गया धर्म नहीं रहा। चौबे जमुना जी जायेंगे जमुना जी की जय कहेंगे।' 'गंगा जी जाए गंगा जी की जय कहेंगे। कोई कहता है 'नर्मदा अच्छी है' कोई कहता है गोमती। बस लड़ाई ही लड़ाई है। कोई कहेगा मंगल का व्रत अच्छा है' कोई कहेगा, शुक्र का व्रत अच्छा है। कोई कहेगा शनिवार का व्रत अच्छा है या एकादशी अच्छी है।

ऊंट की गर्दन टेढ़ी होती है। किसी ने ऊंट से पूछा भाई! तुम्हारी गरदन टेढ़ी क्यों है? ऊंट ने उत्तर दिया तो कौन सा अंग मेरा सीधा है? टांगें सीधी हैं अथवा पीठ सभी कुछ तो टेढ़ा है। इसी प्रकार तुम्हारा भी सभी कुछ टेढ़ा ही है। इस सभी टेढ़ेपन का उतार फेंको। तुम तो मनुष्य हो ऊंट तो नहीं हो।

केला लो। उसका छिलका उतार दो अन्दर से गूदा निकल आयेगा। पोस्त लो। ऊपर का छिलका उतार दो। पोस्त के दाने निकल आयेंगे। परन्तु प्याज (गंठ) में से क्या निकलता है? उसमें तो छिलके ही छिलके हैं। तुम अपने टेढ़ेपन के छिलके दूर कर दो और मनुष्य बन जाओ।

डाक्टर अम्बेडकर ने जो अछूतों के एक प्रसिद्ध नेता हैं विलायत में कहा था महाराज बल्वान भी उस समय वहीं थे कि जब तक यह वर्ण व्यवस्था बनी हुई है तब तक हम ऊपर नहीं उठ सकते। परन्तु मैं कहता हूँ वर्ण-व्यवस्था है कहां? आप में तो जातियों का भेद इतना है जिसकी कोई गिनती ही नहीं। कोई खन्ना है कोई मल्होत्रा है कोई चड्ढा है तो कोई सूरी इत्यादि। बस इन्हें मिटाओ कर्म से वर्ण व्यवस्था स्थापित करो। सब कष्ट दूर हो जायेंगे।

तुम लोग छूत अछूत का शोर मचा रहे हो। एक मुसलमान किसी गांव में चला गया। वहां एक घर में ब्रह्मभोज था मुसलमान से किसी आदमी ने कहा घर में चले जाओ ब्राह्मण भोजन कर रहे हैं दो घड़ी के लिए ब्राह्मण बन जाओ यदि कोई पूछे तो कह देना कि मैं निकट के ही ग्राम का ब्राह्मण हूं फिर यदि पूछें कि कौन ब्राह्मण तो कह देना गौड़। वह ब्राह्मणों में जा बैठा। हाथ धुलाने के समय उससे पूछा गया तुम कौन हो? उसने कहा मैं भूखा ब्राह्मण हूं। इस गांव में आया था। किसी ने कहा ब्राह्मणों का भोजन है यहां चला आया। उसने पूछा कौन ब्राह्मण हो? इसने जवाब दिया गौड़। उसने पूछा कौन गौड़ तो यह कहने लगा या खुदा गौड़ों में भी और?

यूरोप में ही देख लो यदि किसी से कभी तुम पूछो कि तुम कौन हो? तो उत्तर मिलेगा सौदागर क्लर्क या कोई और। परन्तु तुम्हारी यह शृंखला तो समाप्त ही नहीं होती। यह तो उसी दिन खत्म होगी जब तुम्हारा अन्त हो जायेगा। परन्तु परमात्मा पर विश्वास रखो तो एकता पैदा हो जायेगी।

आजकल के पढ़ लिखे कहते हैं कि 'धर्म को और ईश्वर को छोड़ दो।' मैंने कहा भला अच्छा छोड़ देते हैं अब कौन सा मार्ग पकड़ें? क्या धर्म को छोड़ कर अधर्म का मार्ग पकड़ें? उसने कहा नहीं। तो मैंने कहा धर्म को भी छोड़ दें अधर्म को भी छोड़ दें तो क्या करें? मेरे भाई कोई अक्ल की बात तो करो।

तत्सवितुः जिस परमात्मा का तुम स्मरण करते हो वह सारे संसार का उत्पादक है। यह बना हुआ संसार अपने बनाने वाले की तस्वीर दिखाता है। एक उर्दू कवि का कथन है—

चेहरए तस्वीर से
शक्ले मुसव्विर देखना।

परमात्मा ने कैसा संसार बनाया? जगत का चित्र तो देखो कितना अद्भुत है? अतएव अद्भुत संसार को बनाने वाला स्वामी भी अद्भुत ही है।

वरेण्यम् परमात्मा का उपदेश है कि धन को ग्रहण करो परन्तु उसको ग्रहण करने की बुद्धि होनी चाहिए। बाहु बल से उसकी रक्षा करो शुभ कार्य में उसे लगाने की बुद्धि होना चाहिए मरते समय सब कुछ यहीं छोड़ जाना पड़ेगा। सिकन्दर के पास मरते समय कितनी दौलत थी यूरोप वाले यूनान को अपना गुरु मानते हैं। उन्होंने उससे बहुत कुछ सीखा। सिकन्दर जब मरने लगा तो उसने आज्ञा दी मेरे मरने के बाद एक काम करना। जितनी दौलत हाथी घोड़े इत्यादि हैं सब मेरी अरथी के साथ चलें। एक ओर धन दौलत रहे और दूसरी ओर हाथी घोड़े। मेरे खाली हाथ कफन से बाहर रहें। उसका आशय था कि सब यह शिक्षा ग्रहण करें कि सब कुछ यहीं रह जाता है मरते समय कुछ भी साथ नहीं जाता।

एक उर्दू कवि ने कहा है कि

बेज़री का गिला न कर गाफिल।
रख तसल्ली कि यूं मुकद्दर था॥
इतने में इस जहां से गुज़रे
वक्ते रहलत किसी कने जर था।
ले गया साथ कुछ न सिकन्दर
हाथ खाली कफन से बाहर था॥

अर्थात् हे मूर्ख! धन से निर्धन होने की शिकायत न कर यह सोचकर शान्ति कर ले कि मेरे भाग्य में यही बदा था। देख संसार में कितने धनपति हो चुके हैं। उनमें से किसी के पास भी उनके अन्त समय कुछ धन सम्पत्ति देखी है। सिकन्दर जैसा प्रभावशाली महाराजा भी अपने साथ कुछ नहीं ले गया। जब वह मरा तो उसके हाथ कफन से बाहर निकले थे और खाली थे।

सुन्दर मकान बनाओ धन सम्पत्ति जमा करो किन्तु यदि तुम उन्हें अपने साथ भी ले जाओ तो नहीं ले जा सकते।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

समीक्षा

आर्यसमाज का इतिहास

(द्वितीय भाग)

लेखक — डाक्टर सत्यकेतु जी व उनके सहयोगी
समीक्षक प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु' वेद सदन अबोहर

मैं अब किसी पुस्तक की समालोचना करने से सकोच अनुभव करता हूँ। कई मित्र यदा कदा अपनी कृतियो की समीक्षा करने के लिए प्रेरित करते हैं परतु मैं प्राय असमर्थता प्रकट कर देता हू। अभी कुछ दिन पूर्व डा० विश्वबधु जी ने डा० सत्यकेतु जो लिखित आर्य समाज का इतिहास का द्वितीय खण्ड दिखलाया तो मैं इसे पढने का लोभ सवरण न कर सका। मैंने यह पुस्तक सारी तो नही पढी परन्तु इसे विहगम दृष्टि मे अवश्य देखा है।

ग्रथ उपयोगी है। स्थान स्थान पर बडी मूल्यवान् जानकारी दी गई है परन्तु इस ग्रथ के रचने के लिए सारी उपलब्ध प्रकाशित वा सम्बन्धित सामग्री का भी लेखक महानुभावो ने उपयोग प्रयोग नही किया। यह बडे खेद की बात है। कही कही तो बहुत अधूरी जानकारी दी गई है। कुछ भूले भयकर हैं जो अखरती है।

कुछ एक भूले हम यहा देते है

१ महर्षि दयानन्द जी के बलिदान के समय स्थापित आयसमाजो की जो सख्या दी गई है। वह अप्रामाणिक है। निश्चय ही तब इससे अधिक समाजे स्थापित हो चुकी थी।

२ आर्यसमाज के प्रचार का इतिहास लिखते हुए आयसमाज के भजनोपदेशको की चर्चा नाममात्र की आई है। कई भजनोपदेशको ने ऐतिहासिक महत्त्व का काय किया उनका नाम तक भी नही दिया। श्री महाशय लाभचन्द जी का नाम मैं उदाहरण के रूप मे देता हू। हरियाणा, पजाब के कई वृद्ध भजनोपदेशक जिन्हें मैने स्वय देखा—उनका नाम न पाकर दुख होता है। आय प्रादेशिक सभा पजाब वा आय प्रतिनिधि सभा पजाब के भजनोपदेशको से अतिरिक्त उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश वा निजाम राज्य ने भी कई नामी भजनोपदेशक पैदा किय। स्वामी बेधडक जी, महाशय राजपाल, मदन मोहन श्री सन्तराम पुरी श्री हसराज (अभी भी जीवित हैं) श्री ज्ञानचन्द, प० मेहरचन्द, कर्मचन्द, प० आर्यभानु जी धारूर, श्री तेजभानु, श्री जसवन्तसिह वर्मा आदि की चर्चा ही नही। कई भजनोपदेशक आज कीर्ति के शिखर पर हैं परन्तु १९४७ ई० से पूर्व ही कार्य क्षेत्र म थे, उनका नाम आना चाहिए था। यथा प० ओम्प्रकाश वर्मा, प० बेगराज प० नरदेव जी स्नेही, प० प्रेमचन्द जी (निजाम राज्य) अपनी सेवाओ के कारण प्रख्यात हो चुके थे।

३ अछूत शब्द का प्रयोग न किया जाता तो ठीक था। दलित शब्द का ही हम आर्यों को प्रयोग करना जचता है।

४ स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी गृहत्याग से पूर्व ही आर्य विचारो के हो चुके थे। इस ग्रथ मे लिखा गया है कि प्रथम विदेश यात्रा से लौट कर आर्य विचार के बने, यह ठीक नहीं। स्वामी जी को आर्य बनाने वाले महन्त विष्णुदास जी का नाम न देना भी भूल है। प० विष्णुदास जी का स्वामी वेदानन्द जी, महाशय कृष्ण, प० चमूपति जी आदि सब सम्मान करते थ। स्वामी सर्वदानन्द जी भी उनसे बैठक पढते र।

५ बीसवी शताब्दी के आरम्भिक वर्षों के पजाब के प्रचारको मे वीर सोमराज मास्टर बख्शीश राम, महाशय चिरञ्जी लाल जी प्रेम वा अमृतसर के प० जगन्नाथ जी के दोनो भाइयो का नाम नही।

६ वीर तुलसीराम का बलिदान १९०३ ई० मे नही हुआ। उन्होने सन् १९०४ मे वीर गति पाई।

७ प० रामशरण जी चम्बा की चर्चा तो है। उन्होने दलितो के लिए स्त्रियो के लिए जो अविस्मरणीय कार्य किया और जो यातनाए सही उनका वर्णन होना चाहिए था। वह सन्यासी बन गये थे यह भी लिखना चाहिए था।

८ पृ० १६३ पर प० रलाराम जी की प्लेग मे सेवा का वर्णन है। वहा जिस ईसाई पादरी का वाक्य दिया है। उस पादरी का नाम नही दिया और वाक्य भी ठीक नही दिया। वह ईसाई पादरी वे स्टोक्स जो स्वामी सत्यानन्द बन गये। प० रलाराम जी ने देहली रावलपिण्डी आदि मे भी प्लेग पीडितो की सेवा की थी। इसका वर्णन मुझे इस ग्रथ मे मिला नही।

९ पृ० १३० पर श्री देवीदास जी का नाम है। उनका पूरा परिचय नही कि वह कुशल लेखक विद्वान् थे। और उनके भाई दीनानाथ जी भी वैसे ही आर्य मिशनरी थे।

१० पृ० ७३२ पर अमरीका जाने वाले आर्य वीर का नाम अशुद्ध दिया है। उनका नाम जैंदाराम था। उन्हें झण्डाराम भी कहा जाता था।

११. स्यालकोट की दलितोद्धार सेवाओ मे वीर लाभचन्द का नाम तक नही दिया। वही तो दलितोद्धार के प्रथम कर्णधार थे।

१२ पजाब में दो दल मूलराज के अग्रेजी भाषण के अगले वर्ष बने। यह तथ्य इतिहासकारो को नोट करना चाहिए। मूलराज सरकार का जासूस था, यह बात लिखने से ये इतिहास लेखक क्यों भयभीत हैं, यह मेरी समझ से बाहर है। प्रादेशिक सभा बनने पर भी प्रादेशिक सभा वाले भी लोगो से मास भक्षण छुडाते थे यह भी इसमे नही दिया। आय गजट मे मास के विरुद्ध जोरदार लिखा जाता था।

१३ इतिहास तो १९४७ तक का दिया है परन्तु विदेश प्रचार मे उपर्बुद्ध जी वा ओम्प्रकाश जी त्यागी की भी चर्चा है। यदि ऐसा ही करना था तो प्रि० रामसहाय जी की भी चर्चा कर देते। वह त्रिदाद मे प्रचार करते हुए, वही चल बसे।

१४ राजस्थान के प्रचारको की चर्चा मे भी कई महत्त्वपूर्ण नाम छूटे हैं। यथा मास्टर रुद्रसेन जी शाहपुरा, हकीम सन्तराम जी प० विष्णुदत्त जी, श्री बखोरचद जी विद्यार्थी, महता जैमिनि जी जैसे यशस्वी आर्य पुरुषो ने राजस्थान मे वेद प्रचार के लिए अमूल्य समय देकर कीर्ति पाई।

१५ फीरोजपुर के आर्य अनाथालय का स्थापना वर्ष ठीक नही दिया। उसके सस्थापक मथुरादास जी का नाम ही नही दिया। ऋषि के आशीर्वाद से उन्होने यह महान् कार्य हाथ मे लिया।

१६ पृष्ठ १३६ पर 'मालेमहे' ग्राम मे शुद्धि वा दलितोद्धार के अद्भुत कार्यों की चर्चा है। इस ग्राम का नाम मालोमहे था। यह मालोमहेर भी कहलाता था। इस ग्राम के बारे मे आचार्य चमूपति जी ने लिखा है कि आर्यसमाज की स्थापना के पश्चात् यहा ऐसा कार्य हुआ है कि यहा छूतछात का किसी को भी पता नहीं। यह तथ्य दिया जाता तो अच्छा होता। आचार्य चमूपति जी का लिखा सर्वथा यथार्थ है। मुझे ११-१२ वर्ष की आयु तक पता ही नही था कि हिन्दुओ मे कोई अस्पृश्य भी समझा जाता है। अछूत क्या बला होती है, यह मेरी कल्पना से बाहर की बात थी। मेरा जन्म इसी ग्राम में हुआ।

१७ पृ० २३५ पर मुरादाबाद की चर्चा में श्री पं० क्षेमकरण दास त्रिवेदी का नाम न देना भूल है।

१८ पृ० २८० पर उपाध्याय जी की एक पुस्तक का नाम वैदिकस्मृति दिया है। यह ठीक नहीं। पुस्तक का नाम आर्यस्मृति था।

वहीं पर लिखा है कि आपने डी० ए० वी० स्कूल की तीस वर्ष सेवा की। यह ठीक नही। उपाध्याय जी २६ जुलाई १९१८ ई० से लेकर ११ जुलाई १९३९ तक इस स्कूल की सेवा मे रहे। बीच मे एक वर्ष कोल्हापुर भी लगा आए और हैदराबाद सत्याग्रह मे भी समय दिया। इस प्रकार वह बीस वर्ष से भी थोडा समय इस स्कूल मे रहे।

१९ कोल्हापुर के प्रसग मे प० महेन्द्र प्रताप जी वा उपाध्याय जी का नाम ही नही।

२० शोलापुर के उपदेशक विद्यालय का वर्णन कही नही मिला।

२१ प० आय मुनि जी प्रादेशिक सभा के साथ भी काम करते रहे। यह चर्चा नही। वही पजाब आय प्रतिनिधि सभा के प्रथम उपदेशक थे।

२२ आर्यसमाज के दूसरे शहीद वीर चिरञ्जीलाल जी की चर्चा तक नही। वह ऋषि के बलिदान के दस वर्ष बाद शहीद हुए। मेरे द्वारा लिखा उनका जीवन चरित्र मिल ही सकता था। प० चमूपति जी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने भी उन पर जो कुछ लिखा है वह मिलता है।

२३ मोपला विद्रोह के समय दुखियो की सेवा के लिए महता जैमिनि भी गये थे। उनका नाम नही दिया। महता जैमिनि सन्यासी बन गये। यह कही नही लिखा। वह अग्रेजी भी जानते थे, यह कई बार लिखा है। इसकी आवश्यकता ही न थी। यही लिखना पर्याप्त था कि वह बी० ए० करके वकील बने। वर्षों वकालत करते रहे।

२४ केरल मे वैदिक धर्म प्रचार की चर्चा ही नही। श्री विश्वनाथ त्यागी मुरादाबाद वीरवर काहनचन्द वर्मा, नारायणदत्त जी जैसे विद्वानो ने वहा वर्षों कार्य किया। हमे आज ही सूचना मिली है कि प० नारायण दत्त जी सिद्धात भूषण चल बसे हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के वायकूम सत्याग्रह की चर्चा मुझे दिखाई नही दी। इसमे केरल के महान् नेता मन्नत पद्मनाभन ने भी भाग लिया। स्वर्गीय मन्नम केरल के Uncrowned King जाने जाते थे। उन्होंने स्वय मुझे यह बताया था। तब स्वामी श्रद्धानन्द जी की केरल के महान् सुधारक महात्मा नारायण स्वामी जी से भी भेंट हुई थी। यह नारायण स्वामी जी की अग्रजी की एक जीवनी मे आता है। नारायण स्वामी जी महाराज श्रद्धानन्द जी से बडे प्रभावित हुए। उपाध्याय जी, पं० मदनमोहन विद्यासागर, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज (चार बार केरल गये) स्वामी ध्रुवानन्द जी भी केरल मे प्रचारार्थ गये। कही चर्चा नही मिली।

२४ प० चमूपति जी की पुस्तक का नाम योगेश्वर कृष्ण था। गुरुकुल कांगडी से ही छपी थी और खेद है कि गुरुकुल के इतिहासकारों ने ही ऐसी अनूठी

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सिख अकालियों से सावधान रहें

आर्यसन्देश के २६ मई १९८५ के अंक में सरदार सत्येन्द्रपालसिंह द्वारा लिखित सिखों के अपमान का कारण अकालीदल लेख में व्यक्त विचार तथ्यपूर्ण एवं महत्वपूर्ण हैं।

निश्चय ही अकाली दल ने अपने जन्म से पंजाब में सदियों से चले आ रहे प्रगाढ़ हिन्दू सिख सम्बन्धों में दरार डाल दी है। सन् १९४६ में क्रिप्स मिशन के सामने पृथक सिख राज्य की मांग की फिर पंजाबी सूबे का निर्माण कर पंजाब को और छोटा कर दिया। १९८० से पंजाब में चल रही आतंकवादी गतिविधियों का स्पष्ट विरोध न कर उनका मूक समर्थन किया फिर आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव पर जोर देकर पंजाब में शांति स्थापित होने की आशाओं पर पानी फेर दिया और अब राष्ट्र विरोधी वक्तव्य दे तथा श्रीमती गांधी के हत्यारों को सम्मानित कर आतंकवादियों को बढ़ावा दे रहा है। स्पष्ट है कि उसकी नीति सिखों तथा देश दोनों के लिए हानिप्रद है यदि उनकी पृथकतावादी नीति के कारण उत्पन्न गलतफहमी के शिकार सिख युवकों ने श्रीमती गांधी की हत्या न की होती तो निश्चय ही पंजाब के बाहर सम्पूर्ण देश में बसने वाले सिखों को न तो तबाही का सामना करना पड़ता और न अपमानित होना पड़ता।

दुख का विषय तो यह है कि उसका उपरोक्त राष्ट्र विरोधी गतिविधियां निरंतर बढ़ती जा रही हैं जिनका ही परिणाम है कि उत्तरी भारत के कई नगरों में आतंकवादियों ने ट्रांजिस्टर बमों को रखकर सैकड़ों लोगों को मौत के मुंह में धकेल दिया तथा पंजाब में अनेक लोगों की हत्याओं का नया दौर प्रारम्भ हो चुका है। उनकी उपरोक्त कारगुजारियां यदि भविष्य में पुनः सिख कौम पर मुसीबत लायें तो आश्चर्य नहीं होगा।

आवश्यकता है कि देश के सिख इतिहास प्रसिद्ध महाराजा रणजीतसिंह तथा महान् शहीद वीर भगतसिंह की महान् परम्पराओं का अनुकरण करें तथा अकालियों से सावधान रहें।

लेखक

शकुनचन्द गुप्त विद्यावाचस्पति

लालगंज जि०—रायबरेली

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

१८ मई सायं ७ बजे आर्यसमाज हडसन लाइन में आर्य कुमार सभा किंग्जवे का वार्षिक उत्सव श्री सरदारी लाल वर्मा भूतपूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में मनाया गया। अध्यक्ष महोदय ने आर्य कुमार सभा के संगठन को और दृढ़ करने पर जोर दिया और सभा के सस्ते वैदिक साहित्य की प्रशंसा की श्री खरैतीलाल भाटिया मंत्री आर्य समाज हनुमान् रोड ने आत्मा के विकास पर ही मानव की उन्नति निर्भर है पर अपने विचार प्रकट किए।

श्री देवेन्द्र गुप्ता (स्वागताध्यक्ष) ने सभा की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी इसके पश्चात् श्री० सतीशचन्द्र पसीजा को उनकी कार्य कुशलता के लिए सम्मानित किया गया डा० साहिब के कर कमलों से पारितोषिक बांटे गये। डा० साहिब ने कहा कि शिक्षा संस्थानों को शिक्षा के साथ साथ लघु उद्योगों की शिक्षा भी देनी चाहिए। इसमे पूर्व २४ अप्रैल को सभा के स्थापना दिवस पर सभा के प्रधान श्री परीक्षित सहगल द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इसके पश्चात् श्री धर्मपाल मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा ने 'अनुभव' पर भाषण दिया और कहा कि आर्य कुमार सभा का प्रकाशन विभाग अति उत्तम है। २५ अप्रैल से १७ मई तक २४ दिन भिन्न भिन्न स्थानों पर वेद प्रचार होता रहा और प० सत्य काम वेदालंकार के प्रवचन होते रहे।

उमेश कुमार बत्तरा (मन्त्री)

गायत्री मन्त्र की महिमा

(पृष्ठ ७ का शेष)

धनपति मृत्यु काल तक धन का ख्याल ही रखता है उधर मर रहा है इधर कह रहा है कि मेरे धन का अधिक व्यय न करना। ओ मूर्ख तू तो मर रहा है ईश्वर के चरणों में ध्यान लगा। परन्तु क्या करे? माया ममता उसे नहीं छोड़ती।

बाजार में आपका एक मित्र मिल गया वह एक दुकान पर बैठा था दुकानदार का भी मित्र था। आपने उसे अपने साथ ले जाना चाहा। परन्तु दुकानदार ने उसे रोकना चाहा। उसका एक हाथ आपने पकड़ा दूसरा हाथ दुकानदार ने। खेंचातानी आरम्भ हुई। वह कहता है भाई! मुझे तकलीफ होती है परन्तु आप में से कोई भी नहीं मानता यह सब बेसमझी की बात है।

यहां तो रोते आये थे क्या जाओगे भी रोते ही। चाहिए तो यह था कि रोते आये हो हंसते हुए जाओ इसलिए मेरे भाई! संसार के सब काम करते जाओ परन्तु मरते समय उनकी तरफ ध्यान न रखो। संसार में जीव सदैव रहने के लिए नहीं आते। संसार को तो एक न एक दिन छोड़ना ही है अतएव परमात्मा को ग्रहण करो वही ग्रहण करने योग्य है। अपने विचारों को पवित्र बनाओ। परमात्मा के निकट होते जाओ। जब तक मन पवित्र नहीं होता तब तक उसकी प्राप्ति नहीं होगी। धन को दुर्बल आदमी नहीं संभाल सकता। मनुष्य का हृदय महादेव का मन्दिर है यही क्यों उसका मन्दिर तो सारा संसार है। सीधे मार्ग पर चले चलो उसकी उपासना करो बुद्धि को सुमार्ग पर लगाओ बस इसी में तुम्हारा कल्याण होगा। यही गायत्री मन्त्र का उपदेश है और यही उसकी महिमा है।

आर्यसमाज का इतिहास

(पृष्ठ ८ का शेष)

पुस्तक का नाम अशुद्ध दिया है। रंगीला रसूल की चर्चा Anglo American विचारधारा के इतिहास लेखक प्रायः करते हैं इस इतिहास में भी उसकी चर्चा है। खेद है कि हमारे इन मान्य महानुभावों ने यह नहीं लिखा कि रंगीला रसूल क्यों लिखा गया। न ही यह लिखा गया कि जब तक गांधी जी ने रंगीला रसूल पर आपत्ति नहीं की थी तब तक कहीं भी मुसलमानों ने इस पर आपत्ति नहीं की थी। यह भी लिख देते तो इतिहास पूरा होता कि गांधी बाबा ने उन्नीसवीं सदी का महर्षि आदि अश्लील घटिया निराधार पुस्तक के विरोध में एक भी शब्द न कहा।

२१ एक बात और लिखकर समाप्त कर दूं कि गोपीनाथ ने महात्मा मुन्शीराम वा वजीरचन्द जी पर अभियोग चलाया। स्वयं गोपीनाथ पिट गया। इस अभियोग के समय आर्यसमाज के दोनों पक्ष डटकर मुन्शीराम जी के पीछे थे। दोनों पक्षों के आर्य वकीलों का मुन्शीराम जी का समर्थन प्राप्त था। दलबन्दी के उस युग में भी सिद्धान्त का प्रश्न पर चोट लगते ही दल दो होते हुए भी आर्यों का दिल एक होता था। इस अभियोग का वर्णन कहीं मिला नहीं।

न ही १८८८ ई० में धर्म के लिए सब से पहले जेल यात्रा करने वाले आर्य सुधारक चिरञ्जी लाल जी के अभियोग का वर्णन है।

कोई भी लेखक अपनी पुस्तक में सब कुछ तो दे नहीं सकता फिर भी जो भूलें थीं और जो बहुत महत्वपूर्ण कमियां पुस्तक में रहीं मैंने वे सुझा दी हैं।

आशा है इतिहास प्रेमी मेरी इस समीक्षा का ध्यान में रखेंगे।

प्रतिक्रिया

बन्धुवर

हर व्यक्ति के अपने तेवर होते हैं। अपना चिन्तन मनन और उसकी अभिव्यक्ति होती है। शब्द तो हम लोग शब्दकोश में ही लेते हैं पर उनका संयोजन हम अपने अपने ढंग से करते हैं। यही शैली कहलाती है। आप के शब्द चयन और उनका संयोजन अपना निराली व्यवस्था रखता है। इसमें ओज भी है प्रसाद भी और माधुर्य गुण भी। अभी आप को इस पत्र को और आगे पहुंचाना है आप से बहुत सी अपेक्षाएं जुड़ी हुई हैं।

श्रम सीकर से धूल फूल हो जाती है।
बनें आलसी तो बहार खो जाती है।

शुभाकांक्षी

सारस्वत मोहन मनीषी

शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकता

श्री आर्य गुरुकुल चित्तौड़गढ़ की माध्यमिक कक्षाओं के लिए प्रशिक्षण प्राप्त व्याकरणाचार्य (प्राचीन) तथा अंग्रेजी गणित विज्ञान भूगोल संस्कृत एवं हिन्दी के लिए प्रशिक्षित स्नातक स्नातकोत्तर अध्यापकों के आवेदन पत्र उनकी योग्यता विवरण सहित ३० जून तक आमन्त्रित हैं। आयु सीमा २३ से २४ तक वेतन होकर योग्यतानुसार इच्छुक महानुभाव आवेदन करें—

मुख्याधिष्ठाता

श्री आर्य गुरुकुल चित्तौड़गढ़,
राजस्थान ३१२००१

निर्वाचन

आर्यसमाज महरौली का वार्षिक चुनाव १९८५ का सम्पन्न हुआ जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए—

प्रधान — श्री बनवारीलाल जी गुप्ता
उपप्रधान — श्री आर आर आर्य
सुभाष जा कुमार
सोहनलाल जी सब्बरवाल
मन्त्री — श्री मदनलाल जी
उपमन्त्री — श्री इन्द्रकुमार तनेजा
रमेशचन्द्र जी
कोषाध्यक्ष — श्री वीरेन्द्रकुमार आर्य

मदनलाल
मन्त्री

आर्यसमाज दीवान हाल शताब्दी
एक निवेदन

आपको यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि आर्य जगत् की विख्यात संस्था आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली सन् १९८४–८५ में अपनी शताब्दी बड़े समारोह पूर्वक मनाने जा रही है। शताब्दी के अवसर पर एक अत्युत्तम बृहत् स्मारिका के प्रकाशन का निश्चय किया गया है—जिसमें आर्यसमाज दीवान हाल के सौ वर्षों का विस्तृत इतिहास तथा वैदिक धर्म के सम्बन्ध में संग्रहणीय सामग्री होगी। भावी युवा पीढ़ी के लिए प्रकाश स्तम्भ का कार्य कर सकती है।

अपने स्थापना काल से ही यह आर्यसमाज आर्य जगत् की मुख्य गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रही है। तथा इस समाज में आर्य जगत् के अधिकांश मूर्धन्य संन्यासियों विद्वानों नेताओं तथा कार्यकर्ताओं का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। आपका तथा आपके परिवार का इस समाज से विशेष सम्बन्ध रहा है। आशा है इस समाज की अनेकों ऐतिहासिक घटनाएं जो स्मारिका के लिए आवश्यक हो सकती हैं आपके अनुभव में आयी होंगी। अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि अपने बहुमूल्य संस्मरणों को लिपिबद्ध कर शीघ्रातिशीघ्र भिजवाकर कृतार्थ करें।

मूलचन्द्र गुप्त
मन्त्री

समाचार-सन्देश

स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती प्रधानमन्त्री श्री राजीव द्वारा सम्मानित

आय विद्वत परिषत् के सयोजक श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को उनकी तत्वमसि पुस्तक पर उत्तर प्रदेश सस्कृत अकादमी की ओर से प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी द्वारा ५०००/ रुपये का विशेष पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। यह समारोह ७ मई १९८५ को तीनमूर्ति भवन मे उत्तर प्रदेश के राज्यपाल की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ व मुख्यमन्त्री श्री नारायण दत्त तिवारी ने सभी विद्वानो का माल्यार्पण द्वारा सम्मान किया। पूज्यवर स्वामी जी का सरकार द्वारा सम्मानित तथा पुरस्कृत किया जाना आर्यसमाज तथा वेदप्रेमियो के लिए गर्व का विषय है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली की आर्यसमाजो आर्य शिक्षण सस्थाओ की ओर से हम उन्हे हार्दिक बधाई देते हैं तथा उनके दीर्घायु की प्रभु से कामना करते हैं।

डा० धर्मपाल आर्य
सभा महामन्त्री

महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह सम्पन्न

खण्डवा, दिनाक ३१-५-८५ आर्य समाज मन्दर मे श्री गगाचरण जी मिश्र पूर्व विधायक की अध्यक्षता मे महाराणा प्रताप जयन्ती का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि श्री राजनारायणसिंह विधायक ने सारगर्भित शब्दो म कहा कि महाराणा प्रताप क जावन स प्ररणा लेकर वतमान राष्ट्रीय समस्या हल की जा सकती है। श्री एन० एन० वमा प्राध्यापक न कहा कि इस समय देश म महाराणा प्रताप जैसे उदात्त चरित्र की परम आवश्यकता है। ठा० बृजेन्द्रसिंह न कहा महाराणा प्रताप म हिन्दू एव अपनी मातृभूमि के प्रति अपार नेह था। श्री रामचन्द्रराव मण्डलाई न कहा कि महाराणा प्रताप ने जो ताज पहना था, वह काटो का था। मेवाड़ ही ऐसा राज्य था, जो अकबर क सामन नहीं झुका। डा० जगदीशचन्द्र चौरे न कहा कि ऐस आयोजन स महाराणा प्रताप क चरित्र का सन्देश फैलाया जा सकता है। श्री गहाराम न प्रस्ताव रखा कि मध्यप्रदेश शासन माध्यमिक स्तर का पाठ्य पुस्तको म महाराणा प्रताप विवेकानन्द, शिवाजी जैस महापुरुषो क पाठ जोड़। इसका समथन भी हीरालाल आय न किया।

अतिथियो का स्वागत पण्डित रामचन्द्र आय ने किया। सस्था को गतिविधियो की जानकारी भी कैलाशचन्द्र पालीवाल न दी। आभार प्रदशन श्री नृजकिशोर सकरगाय न किया।

निर्वाचन

आयसमाज लल्लापुरा वाराणसी का वार्षिक निर्वाचन २६-५-८५ को श्री मेवालाल आर्य की अध्यक्षता मे आगामी वर्ष के लिये नीचे लिखे अनुसार हुआ—

श्री मेवालाल आर्य	प्रधान
श्री प्रेमचन्द्र आर्य	उपप्रधान
श्री कमलाकान्त जी	,,
श्री लक्ष्मीनारायण आर्य	मन्त्री
श्री कन्हैयालाल आर्य	उपमन्त्री
श्री राजेन्द प्रसाद जी आर्य	,,
श्री बुद्धदेव आर्य	कोषाध्यक्ष
श्री रामगोपाल जी आर्य	प्रचार मन्त्री
श्री मदनलाल आर्य	उपप्रचार मन्त्री
श्री सत्यप्रकाश आर्य	पुस्तकाध्यक्ष
श्री नरेन्द्रनाथ आर्य	अधिष्ठा आर्य वीर दल
श्री रामकृष्ण आर्य	आय-व्यय निरीक्षक

बुद्धदेव आर्य
व्यवस्थापक

ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ जिला रोहतक म २४ जून स ३० जून तक ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर यौगिक क्रियाओ का सिखान तथा प्रवचन के लिए उच्चकोटि क विद्वान् सन्यासी महात्मा पधार रहे है। इच्छुक महानुभाव जो १४ वर्ष की आयु स ऊपर हो अपने ओढन के बिस्तर तथा ऋतु अनुकूल वस्त्र आदि लेकर पहुंचें। भोजन व्यवस्था नि शुल्क है।

—स्वामी धर्ममुनि

संवेदना

निवेदन है कि आर्यसमाज के वयोवृद्ध विद्वान् गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पुराने स्नातक ९२ वर्षीय आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार गत लगभग २ मास से रोग पीड़ित होने से आर्यसमाज की सेवा करने मे असमर्थ हैं। भगवान् उन्हें शीघ्र स्वस्थ करे ऐसी हम सब आर्यबन्धुओं की प्रार्थना है।

हरिकृष्ण लाल सुनेजा, मन्त्री

पुरानी पीढ़ी के गायक पं० श्यामलाल आर्य का देहावसान

आर्यसमाज की पुरानी पीढ़ी के मधुर गायक एव उपदेशक प० श्यामलाल आर्य का १८ मई को निधन हो गया। इस समय उनकी आयु ८५ वर्ष की थी लगभग तीन वर्षो से वे अस्वस्थ चल रहे थे।

श्री पण्डित श्यामलाल की गायन शैली पारम्परिक धुनो एव लोक धुनो पर आधारित रहती थी। इसी कारण उनके गायन के समय श्रोता भी उनके साथ साथ गुनगुनाने और गाने लगते थे। वे सदा ईश्वर भक्ति राष्ट्रभक्ति और महर्षि दयानन्द के गुण स्तवन के सरल किन्तु ओजस्वी गीत गाया करते थे। उनके भजन प्राचीन कवियो और गीतकारों की रचनाएं हुआ करती थी। पण्डित जी आर्यसमाज के उत्सवों और कथाओ के माध्यम से वेदप्रचार १९२६ से अविरत करते रहे हैं। लगभग १७ वर्षों से वे आर्यसमाज दीवान हाल के साप्ताहिक सत्सगो में भजनोपदेश के लिए आते रहे हैं। आर्यसमाज दीवान हाल उनके सेवाओं के लिए उनका सदा ऋणी रहेगा।

आर्यसमाज दीवान हाल उनकी रुग्णावस्था में उनकी प्रचुर आर्थिक सहायता करता रहा है। उनके परिवार मे उनकी पत्नी तथा दो सन्तान एक सुपुत्र और एक सुपुत्री हैं। उनके सुपुत्र श्री घनाराम ने उनकी स्मृति मे आर्यसमाज दीवान हाल और आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली को पाच पाच सौ रुपए दान दिए हैं। प्रभु से प्रार्थना है उनके गुण कर्मो के अनुसार उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

मूलचन्द गुप्त
मन्त्री आर्यसमाज
दीवान हाल दिल्ली

दिल्ली आर्य पुरोहित सभा का निर्वाचन

दिल्ली आर्य पुरोहित सभा का निर्वाचन आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली मे १ जून १९८५ को श्री आचार्य हरिदत्त की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। सर्वसम्मति से प० यशपाल सुधांशु आर्य पुरोहित सभा के प्रधान तथा श्री प० मेघश्याम महामन्त्री निर्वाचित हुए। उपप्रधान श्री ठा० विक्रमसिंह श्री हरिदत्त शास्त्री, उप मन्त्री श्री बलजीत शास्त्री प्रचार मन्त्री श्री वेदपाल कोषाध्यक्ष हरिदत्त शास्त्री लेखा निरीक्षक श्री नरेन्द्र अवस्थी। प्रतिष्ठित सदस्य—स्वामी दयानन्द श्री, चौ० शिवकुमार शास्त्री डा० धर्मपाल।

निवेदक
उपमन्त्री
बलजीत शास्त्री

निर्वाचन

आर्यसमाज माडल टाउन का वार्षिक चुनाव २६ मई रविवार को हुआ जिसमे निम्नलिखित अधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित किए गए—

प्रधान	श्री महावीरप्रसाद अग्रोल
उपप्रधान	श्री बद्रीनाथ महाजन
,,	श्री देशराज भ्रम
महामन्त्री	श्री श्रीकृष्णचन्द्र शर्मा
स० मन्त्री	श्री श्रीनिवास गुप्त
उपमन्त्री	श्री ओमप्रकाश धीर
प्रचार मन्त्री	श्री धर्मपाल अरोरा
मन्त्री स्वास्थ्य सेवाएं	श्री जगदीशचन्द्र पुरी
मन्त्री निर्माण	श्री शादीलाल साभरवाल
कोषाध्यक्ष	श्री ओमप्रकाश गोयल
पुस्तकालयाध्यक्ष	श्री सतीश धीर
कस्टोडियन	श्री शिवप्रकाश गुप्ता

इस वर्ष दयानन्द पब्लिक स्कूल का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के प्रधान प्रातःस्मरणीय लाला रामगोपाल जी शालवाले द्वारा १२, मई १९८५ को हुआ। नर्सरी से के०जी० तथा प्रथम कक्षा के छात्रो को आशीर्वाद देते हुए उन्होने माडलटाउन आर्यसमाज के कार्यकलापो की सराहना की। सैकड़ो रोगियो को प्रतिदिन दो अलग लेडी डाक्टरो द्वारा चिकित्सा प्रदान करना, आखो के एक विशेषज्ञ का अलग प्रबन्ध, ३ बैचों मे योगाभ्यास की कक्षाएं चलाकर इस समाज न जन जन को राहत प्रदान की है। अब वैदिक पृष्ठभूमि म छात्रों को आधुनिक शिक्षा देकर ऋषि दयानन्द के विचारो को युवक युवतियों तक पहुचाने के लिए विद्यालय को माध्यम चुना है। समाज के प्रत्येक सदस्य सदस्याओं व कार्यकर्ताओ ने सगठित रूप में प्रयास करने का सकल्प लिया है।

श्रीकृष्णचन्द्र शर्मा
मन्त्री

आर्यसमाज अमर कालोनी का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से निम्न प्रकार हुआ—

सरक्षक—प० ज्ञानचन्द जी
प्रधान—श्री मलकराज जी डाबर
उपप्रधान—डा० तीर्थराज जी गुप्ता
श्री रामलाल जी मलिक
श्री गुलशराज मेहरा
मन्त्री—श्री जोगेन्द्रनाथ उप्पल
उपमन्त्री—श्री जितेन्द्रनाथ डावर
श्री ओमप्रकाश छाबड़ा
कोषाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्रनाथ जी सहगल
लेखानिरीक्षक—श्री कृष्णलाल जी कक्कड़
भडारी—श्री प० कवरजीत जी आर्य

मन्त्री
जोगेन्द्रनाथ

जिसे बचावे, वरुण, मित्र और अर्यमा उसे मारे कौन ?

(पृष्ठ २ का शेष)

राम विभीषण से मिले। अभिवादन के पश्चात् हाथ पकड़कर कहा—आओ लंकेश ! बैठो। जब साथियों ने कहा कि ये लंकेश नहीं उसके भाई हैं तो राम ने उत्तर दिया—मैंने सोच समझकर ही लंकेश सम्बोधन का प्रयोग किया है। अमर्यादित और चरित्रहीन व्यक्ति को राज्य करने का कोई अधिकार नहीं होता, अत आज से हमारी दृष्टि में लंका के सिंहासन का अधिकारी रावण नहीं, बल्कि विभीषण है।

राम का यह कथनमात्र सौजन्य का प्रकाश नहीं था अपितु नीति का एक कुशल प्रयोग था राम विभीषण पर अपने कथन की प्रतिक्रिया देखना चाहते थे और इसी पर उसकी वास्तविक भावना जानी जा सकती थी। विभीषण के ऊपर उस नीति प्रयोग का प्रभाव हुआ और कहने लगा कि मैं अपने भाई रावण के दुराचरणों से तंग आ गया हूं। उसे किसी भले काम का परामर्श रुचिकर नहीं होता। अतः इस अनाचार से प्रजा को बचाने के लिए और रावण के विनाश के लिए मैं आपके सहयोग में पूरी शक्ति और योग्यता व्यय कर दूंगा।

राम इस प्रतिक्रिया से बहुत सन्तुष्ट हुए और दोनों ओर से ही वचनों का पालन बड़ी ईमानदारी से किया गया।

युद्ध में लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम ने दुखी होकर जो उदगार व्यक्त किए उनमें विभीषण का राजतिलक भी सम्मिलित था।

रावण के मरने पर विभीषण जब दुखी हुआ तब भी राम ने बड़ी सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहा—

> मरणान्तानि वैराणि
> निवृत्त नः प्रयोजनम्।
> क्रियतामस्य संस्कारो
> ममाप्येष यथा तव॥
> रामा० ६।११२।२६

हे आर्य विभीषण ! मृत्यु के साथ वैर का अन्त हो जाता है। हमारा उद्देश्य भी पूरा हो गया। आओ अब मिलकर इसका अन्तिम संस्कार करें। यह जैसा तुम्हारा भाई है वैसा मेरा भी है।

राज्य शक्ति और सेना शक्ति से सम्पन्न होते हुए भी कौरवों की पराजय और हीन अवस्था होते हुए पाण्डवों की विजय तथा सफलता का रहस्य भी पाण्डवों की धार्मिकता और सदाचार ही है।

महाप्राज्ञ विदुर रहते थे कौरवों के साथ। रात दिन धृतराष्ट्र उनसे मंत्रणा-पच्ची करते रहते थे। किन्तु जब भी दुर्योधन कर्ण और पाण्डवों का प्रसंग आता था तो सर्वथा खरी खरी सुना देते थे और पाण्डवों का पक्ष लेते थे। दुर्योधन के विषय में इससे अधिक और कटु सत्य क्या हो सकता है कि—

> एष दुर्योधनो राजा
> मधुपिंगललोचनः।
> न केवल कुलस्यान्त
> क्षत्रियान्तं करिष्यति॥

अर्थात् यह कंजी आंखों वाला राजा दुर्योधन अपने कुलक्षणों से केवल अपने परिवार को ही नहीं क्षत्रियों का भी नाश कर देगा। इसी प्रकार भीष्म भी पाण्डवों के गुणों पर मुग्ध थे। कुरुक्षेत्र में जब युधिष्ठिर अपने सब शस्त्रास्त्र छोड़ कर कौरवों के प्रथम सेनापति के रूप में युद्ध के लिए उद्यत भीष्म के पास जाकर नतमस्तक होकर बोले—

'हम अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए उद्यत हो रहे हैं आप हमारे पूज्य पितामह हैं अत आपकी अनुमति और आशीर्वाद के लिए मैं आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूं।'

भीष्म इस शिष्ट और विनीत व्यवहार को देखकर गद्गद हो गये और पुलकित होकर कहने लगे —

> प्रीतोऽस्मि पुत्र युध्यस्व
> जयमाप्नुहि पाण्डव।
> महा० ६।४१।७४

हे युधिष्ठिर मैं तुम्हारे इस व्यवहार से बहुत प्रसन्न हूं। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं। ईश्वर तुम्हें विजयी बनावे।

फिर अपनी दुर्बलता की भी सफाई देते हुए बोले—

> अर्थस्य पुरुषो दासो
> दासस्त्वर्थो न कस्यचित्।
> इति सत्यं महाराज
> बद्धोऽस्म्यर्थेन कौरवैः॥
> महा० ६।४१।३६

—हे युधिष्ठिर ! मनुष्य अर्थ का दास है अर्थ किसी का दास नहीं। इसलिए तुम्हें ठीक समझते हुए भी मैं दुर्योधन का पक्ष लेकर लड़ रहा हूँ क्योंकि मुझे मेरी सब आवश्यकताएं पूरी करके कौरवों ने अर्थ से बांध लिया है। अतः इस शरीर पर दुर्योधन का अधिकार है, किन्तु आत्मपक्ष सत्य और न्याय की ओर है इसलिए मैं तुम्हारी विजय की कामना करता हूं।

इसके बाद युधिष्ठिर द्रोणाचार्य के पास गये। उन्होंने भी हृदय खोलकर विजय का आशीर्वाद दिया। फिर कृपाचार्य के पास गये। उन्होंने वही आशीर्वाद दिया।

पाण्डवों को दिये वे आशीर्वचन फले और वे विजयी बने।

इसीलिए मन्त्र में कहा गया कि जिस व्यक्ति के उदात्त चरित्र से प्रभावित होकर प्रबुद्धज्ञानी वरणीय मित्र मण्डल और न्याय प्रिय समाज के प्रमुख कर्णधार रक्षक ढाल बनकर उसको आपत्ति से बचाते हैं, उसे कभी कोई क्षति नहीं पहुंचा सकता।

(श्रुति सौरभ से साभार)

यू १३९/८५ दिनाक ७ ६ ८५ लाइसेंस टु पोस्ट विदाउट प्रीपेमेण्ट

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के प्रधान तथा महामंत्री

परोपकारी समाजसेवी प्रसिद्ध उद्योग पति तथा वैलफेयर एसोसिएशन सफदर जग एवक्लेव के अध्यक्ष श्री हरबन्स सिंह रवेर दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के प्रधान पुन निर्वाचित हुए। हार्दिक शुभ कामना।

रामशरण दास शर्मा आर्य कर्मठ कार्यकर्ता अनथक समाजसेवी महर्षि दयानन्द के अनन्य अनुयायी श्री रामशरण दास १५ वर्षों से दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार, मण्डल के महामन्त्री है। इस मण्डल में ४५ आयसमाज शामिल हैं। इसके महामन्त्री सर्वसम्मति से निर्वाचित होने पर श्री आय को हार्दिक बधाई। इस वर्ष दक्षिण दिल्ली मे ६० सम्मेलन हुए जिनमे श्री आय की भूमिका प्रशंसनीय है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस गली नं० १० [illegible] दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५९

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वर्ष ६ अंक ३२ | रविवार, ३० जून, १९८५ | आर्य संवत्सर १९६०८५३०८५ | आषाढ २०४२ | दयानन्दाब्द – १६१

विरोधी भी मोहित मतिमान

तार्किक शिरोमणि श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी

—प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

आर्यसमाज के इतिहास मे पूज्य प० रामचन्द्र जी देहलवी का नाम वा कार्य सदा स्वर्ण अक्षरो मे लिखा जायेगा। प० जी एक संस्कारी जीव थे। उनकी अलौकिक प्रतिभा, विद्या, पाण्डित्य उनकी एक जन्म की साधना का फल नही था। वह एक ऐसी पुण्य आत्मा थे जो जन्म जन्मान्तरो के शुभ संस्कार लेकर जन्मे थे। महर्षि दयानन्द की जीवनदायिनी विचारधारा को पाकर व आर्यसमाज के सत्संग से उनके पूर्व जन्मो के सुप्त संस्कार जाग उठे।

वह बाल्यकाल से ही बड़े मेधावी थे। वह स्वयं अपने बाल्यकाल की एक घटना सुनाया करते थे। उनके पिता जी पहले-पहले आर्यसमाज के सत्संगो मे भी जाया करते थे और घर पर गणेश जी की पूजा किया करते थे। उन दिनो बाजार से एक आना के या एक पैसा के दो गणेश मिला करते थे। एक दिन जब प० जी के पिता जी गणेश पूजा करने बैठे तो प० जी को अलमारी से गणेश जी की प्रतिमा लाने को कहा। प० जी से वह प्रतिमा गिर गयी। मिट्टी की वह प्रतिमा टूट गई। पिता जी ने पुत्र पर रोष प्रकट किया तो सूझ-बूझ वाला बालक झट से बोला, कि क्या हुआ दो पैसे का गणेश बाजार से और ले आयेंगे। साथ ही कहा, "पिता जी आप आर्यसमाज मे भी जाते हैं और घर पर गणेश पूजा करते हैं।' शिथिल विचार के पिता जी ने कहा, यदि तो मूर्ति पूजा से कुछ मिलता है तो मुझे भी मिल जावेगा अन्यथा आर्यसमाज मे तो मैं जाता ही हूं।'

इस घटना से पता चलता है कि प० जी आरम्भ से प्रत्युत्पन्न मति वाले और ऊहापोह करने वाले मनीषी थे।

प० जी बहुत सुलेख लिखा करते थे। अपने सुन्दर हैंडराईटिंग के कारण वह किसी भी सरकारी कार्यालय मे ऊंचे से ऊंचे पद को पा सकते थे परन्तु ईश्वर की वाणी वेद के प्रचार के अरमानो ने उन्हें चैन न लेने दिया और वह सुख सुविधा पर लात मारकर कण्टकाकीर्ण मार्ग के पथिक बन गये। उन्होने १९५३ ई० में इन पंक्तियो के लेखक को यह लिखकर दिया कि प० लेखराम को आदर्श मानकर वह जाति-रक्षा व धर्म-प्रचार मे उतरे।

आर्यसमाज के इतिहास मे वह एक ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिन्होने लगातार १६ वर्ष तक Street Preaching गली कूचो मे प्रचार वा फव्वारा पर व्याख्यान व शास्त्रार्थ करके वैदिक सिद्धान्तो की सच्चाई की धूम मचा दी।

कैसे-कैसे कष्ट सहे, इसका एक उदाहरण प० जी ने स्वयं एक बार हमे सुनाया। कही शास्त्रार्थ के लिए उन्हें बुलाया गया। वह रेल पर गये। रेल उस छोटे से गांव तक न जाती थी। वह स्थान था रेलवे लाईन पर। शास्त्रार्थ का समय नियत था। प० जी उस स्थान के पास वाले स्टेशन पर उतरे। वही पता चला कि वहां शास्त्रार्थ सुनने के लिए भारी भीड़ जमा है। मौलवियो के दल पहुंच चुके हैं। इधर से अकेले देहलवी जी को बोलना था। प० जी ने जूता उतारा। रेलवे लाईन के साथ-साथ दौड़ लगाते उस स्थान पर पहुंच गये और आर्यसमाज का डंका बजा दिया।

पठानकोट मे एक शास्त्रार्थ मे मौलवी सन्ना उल्ला साहब ने कहा, "प० जी सब जानते हैं कि हार आपके गले मे पड़ चुकी है।' इकदम प० जी बोले, 'सब देख रहे हैं कि मेरे सामने खड़े होते ही हार आपके गले मे पड़ गई।" तथ्य यही था कि जब मौलाना मञ्च पर खड़े हुए तो उनके मुसलमान भाइयो ने उनके गले मे हार डाल दिये थे। जो मौलाना ने गले मे रहने दिये। प० जी के इस वाक्य पर करतल ध्वनि से पण्डाल गूंज उठा।

उनका हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी फारसी, अरबी का उच्चारण अति उत्तम था। मुसलमान भी उनकी तलावते कुरान पर मुग्ध थे।

उनकी हाजर जवाबी पर मौलाना सनाउल्ला साहब जैसे मौलवी वा बड़े बड़ पादरी भी मुग्ध थे। एक घटना देकर इस लेख को हम विराम देते हैं। हैदराबाद मे एक मौलाना ने पूछा यदि वेद ईश्वर की वाणी है तो बताएं कि यह किस रात को नाजिल हुआ? प० जी ने कहा, जानते हो रात को कौन आता है? सभा मे से एक व्यक्ति बोला 'चोर"। लोग ठहाका मारकर हंस पड़े। परन्तु प० जी ने कहा, नही रात को आर्यसमाज का उपदेशक भी आ सकता है। प० जी ने आगे कहा रात को चांद निकलता है। वेद तो ज्ञान का सूर्य है अत रात को नाजिल होने का प्रश्न ही नही उठता।

उस महान् मनीषी उस अद्वितीय वक्ता देशभक्त की स्मृति सदा ताजा रहेगी।

●

इस अंक मे

सत्संग वाटिका	२
सम्पादकीय	३
आर्यसमाज का इतिहास और उसके उपादान	४
परोपकार, किशोरमञ्च	५
सत्य की महिमा	६
गरीबी व बेकारी कैसे दूर हो	८

तथा अन्य रोचक सामग्री।

सम्पादक—यशपाल सुधांशु | व्यवस्थापक—डा० [illegible] | प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

सत्संग वाटिका

ऋषि अहोमु वामदेव्य । देवता विश्वेदेवा छन्द उपरिष्टाद बृहती ॥

अन्वय —सजोषस देवाम यम् अर्यमा मित्र वरुण द्विष अतिनयति तम् अह न अंह न दुरितम्।

शब्दार्थ — (सजोषस) प्रेम से सेवा मे तत्पर (देवास) विद्वान् (यम्) जिस प्रजा को (अर्यमा) न्यायकारी (मित्र) सबहितकारी (वरुण) श्रेष्ठ गुणो वाला राजा (द्विष) शत्रुओ का (अतिनयति) दमन करके शासन करता है। (तम्) उस जन को (अंह) पाप (न अष्ट) नहा घरता (न दुरितम्) न पापजनित दुःख ही सताते है।

व्याख्या—मन्त्र मे उत्तम शासन के लिए तीन बात आवश्यक बतायी गयी है। पहली बात यह कि—शासन मे न्याय ठीक ठीक और समय पर हो। दूसरी बात यह कि राजा अथवा शासक वग सारी प्रजा को निज सन्तान समझकर प्रेम से व्यवहार करने वाला हो। तीसरी बात यह कि—शत्रुओ से राष्ट्र की रक्षा करने वाला हो। ये तीन बात जिस शासन मे होगी उसमे अंह दुरितम् न अष्ट पाप दुर्गति और अशान्ति कभी नही होगी।

भारत की स्वाधीनता से पूर्व हम अपने स्वराज्य के बड़े रंगीन सपने संजोया करते थे। सोचते थे स्वाधीन भारत एक बार फिर सारे संसार का पथप्रदर्शक बनेगा। वह पथभ्रष्ट संसार को फिर सुख और शान्ति से जीने का पाठ सिखायेगा। भारत के ऋषियो की प्रतिभा पर विश्व अब तक भी समस्त संसार को विश्वास की दृष्टि से देखता रहा है। यूरोप के एक विश्वशान्तिसम्मेलन के अध्यक्ष पद से बोलते हुए मिस अल्स्क ने प्रतिनिधियो को कहा था—

'O you assembled scholors of earth if you desire to keep the atmosphere of the world quiet andcalm go to the [illegible] in the c[illegible] s fores[illegible] of [illegible] [illegible] feet [illegible] d[illegible]v[illegible] wsdom fr[illegible] and than pro[illegible] yourup and Am[illegible]

[illegible]

हमारे [illegible] उनके [illegible] और [illegible] उनका प्रचार और प्रसार योरुप और अमेरिका मे करो तब संसार मे शान्ति हो सकती है आपके

राष्ट्र की दुरित, दुर्गति से बचाने का उपाय

लेखक—प० शिवकुमार शास्त्री

> न तमहो न दुरित देवासो अष्ट मर्त्यम् ।
> सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयति वरुणो अति द्विष ॥
> साम० ४२६

★

विचारो से वह सम्भव नही है।

वस्तुत प्राचीन भारत के सुसंस्कृत प्राय लोगो ने अपने उदात्त आचार और व्यवहार से समस्त समाज का जीवन ही धर्ममय बना दिया था। उस पावन समय की झाकी जब हम अपने अतीत के इतिहास और धार्मिक ग्रन्थो मे पाते हैं तो आश्चर्य होता है।

छान्दोग्य उपनिषद मे उल्लेख है कि एक बार एक गम्भीर विषय की चर्चा छिड़ने पर आश्रमवासी ऋषियो को परस्पर के विचार विनिमय से सन्तोष न हुआ तो महात्मा उद्दालक के नेतृत्व मे उस समय के विख्यात विचारक और विद्वान् केकय देश के अधिपति राजा अश्वपति के पास आत्मा विज्ञान के ज्ञान करने के लिए गये। राजा ने अतिथियो का स्वागत किया और उसके पश्चात् गोष्ठी प्रारम्भ हुई विचार होते होते जब भोजन का समय हो गया तो राजा ने महात्माओ से अनुरोध किया कि अब भोजन का समय हो गया है पहले आप भोजन कर ले और फिर विषय पर उसके बाद विचार करेगे।

राजा के भोजन के इस प्रस्ताव को सुनकर एक महात्मा ने कहा कि राजा का अन्न तो एक साधक के लिए अग्राह्य होता है। न जाने किस किस प्रकार से राजकोष का संग्रह होता है। उस प्रकार का अन्न मन पर दूषित प्रभाव डालता। महात्मा की यह आशका अनुचित नही थी। किस किस का अन्न अग्राह्य होता है? इस पर मनु ने व्यवस्था दी है और उसका उल्लेख ऋषि दयानन्द ने भी सत्यार्थ प्रकाश मे किया है यह श्लोक निम्न है

> दशसूनासम चक्रं दशचक्रसमो ध्वज ।
> दश ध्वज समो वेशो दशवेशसमो नृप ॥
> मनु अ० ४ श्लो० ८५

जो दस कसाइयो के हत्या से जीविका कमाने है जैसे कसाई वधिक आदि इनका अन्न अग्राह्य है जो तेल निकालने का व्यवसाय करते है अर्थात् जिनके कर्म मे जीवहिंसा का बहुत हाता है और प्राणियो का पालन और रक्षण नही होता उनके अन्न को खाने वाले के मन पर दशहत्या करने के बराबर दूषित प्रभाव

पड़ता है। जो शराब निकालकर बेचने वाले तथा धोबी का अन्न ग्रहण करते हैं उनके मन पर चक्र वाले अन्न की अपेक्षा से दस गुना और अधिक अर्थात् मोह या करने के बराबर मन पर दुष्प्रभाव होता है। जो लोग शहर के दिखावे और वेश भूषा आडम्बर और ढोग से जीविकोपार्जन करते हैं उनका अन्न पहने से दस गुना अधिक अर्थात् एक हजार जीवहत्या करने के तुल्य मन को दूषित करता है। इसी प्रकार शासन व्यवस्था मे सावधानी से मर्यादा की रक्षा न करने वाले राजा का अन्न पहले की अपेक्षा और दसगुना अधिक अर्थात् दश हजार हत्या करने के समान मन को सदोष करता है। अभिप्राय यह है कि मनुष्य की जीविका इस प्रकार की हो कि जिसमे न्यून से न्यून प्राणियों को कष्ट पहुंचे और अधिक से अधिक का संरक्षण और पालन हो वह जीविका उत्तम और उनका अन्न ही मन को शुद्ध रख सकता है क्योंकि अन्न का सूक्ष्म भाग ही तो मन का आधार है। यो तो कृषक के काम मे भी हल चलाने सिंचाई करने फसल की गुड़ाई कटाई और अन्न निकालते समय भी बहुत जीव हिंसा होती है। किंतु कृषक के अन्नादि मे प्राणियों का पालन कही अधिक मात्रा मे होता है अत कृषक का अन्न पवित्र माना गया है।

तो महात्मा की इस बात को सुनकर अपनी शासन व्यवस्था के सम्बन्ध मे राजा अश्वपति ने जो बात कही वह समस्त संसार के इतिहास मे बेजोड है। राजा ने कहा—

> न मे स्तेनो जनपदे
> न कदर्यो न च मद्यप ।
> न नाहिताग्निर्नाविद्वान्
> न स्वैरी स्वैरिणी कुत ॥

मेरे सारे राज्य मे कोई चोर नही है, कोई कंजूस और अदानी नही है कोई शराबी नही है यज्ञ न करने वाला कोई नही है मूर्ख कोई नही है कोई दुराचारी पुरुष नही है। जब पुरुष ही चरित्रहीन नही है तो स्त्री के तो दुराचारी होने का प्रश्न ही नही उठता। आज के युग में बड़े माने जानेवाले देशो मे अमरीका और रूस भी प्रजा की इस आचारशुचिता का

कोई दावा नही कर सकता। वहा भी सभी प्रकार के जघन्य अपराध होते हैं। इसीलिए वहा के लोग भारत के सुख और आदर्श की आशा रखते थे। किन्तु स्वाधीनता के पश्चात् भारतीयो का जो चारित्रिक पतन हुआ है वह आश्चर्यजनक है। भारत की स्वाधीनता के लिए त्याग और तप करने वाले यद्यपि बहुत बड़ी संख्या में कालकवलित हो गये किन्तु अब भी हजारों हैं और उनकी अन्तर्वेदना इस बात करते ही फूट निकलती है। जालन्धर पजाब से प्रकाशित होने वाले ७ अगस्त सन् ८१ के 'पंजाब केसरी' पत्र में एक पुराने स्वतन्त्रता सनानी श्री बलवन्तराय [illegible] का [illegible] नामक पत्रकार के साथ हुए साक्षात्कार का विवरण छपा है। इसकी प्रारम्भिक पंक्तियां इस प्रकार हैं —

ये भी एक स्वतन्त्रता सेनानी हैं जिन्होने अपने यौवन का खासा हिस्सा स्वतन्त्रता आन्दोलन मे झोंक दिया था— इस निश्चय के साथ कि जिस देश की आजादी के लिए आज लड रहे हैं कल वह हम सब का अपना देश होगा। जिसमे सभी को समानता मिलेगी सभी को गुल्ली कुल्ली और जुल्ली मिलेगी। प्रशासन साफ सुथरा होगा। सभी को न्याय मिलेगा सभी प्रसन्न होंगे सभी को भरपेट रोटी मिलेगी। किन्तु ३६ वर्ष बीत जाने के बाद भी देश की परिस्थितियों को देखकर निराशा होती है। क्योंकि आज देश मे वे सभी वस्तुएं अलभ्य हैं जिनकी कि स्वतंत्र भारत मे कल्पना की गयी थी। आज न्याय कही है ही नही। एक आम नागरिक को कोई पूछता नही। गरीब की कही सुनवायी नही। पहुंच और दबदबे वाले दनदना रहे हैं। कानून का डर नही। बहू बेटियो का सम्मान सुरक्षित नहीं। क्या यह वही देश है जिसकी आजादी के लिए बलिदानियो ने अपने जीवन की भेंट चढाई थी आज हमे फिर उसी प्रकार के इन्कलाब को लाने की जरूरत है, जिस प्रकार का हम सन् ४७ मे लाये थे?' आज भारत का प्रबुद्ध वर्ग इसी प्रकार की कुंठा से व्यथित है।

> जगे आजादी लड़ी तब
> अपने सपने और थे।
> हाल अपना आज जो है
> वो कभी सोचा न था॥

प्रश्न यह है कि हम देश की इस परिस्थिति मे कैसे परिवर्तन ला सकते हैं। निराश होकर बैठने से तो हानि ही हानि है।

> हल करने से हल
> होते हैं पेचीदा मसायल।
> वर्ना तो कोई काम
> भी आसान नहीं होता॥

वेद के इस मन्त्र मे भारत के मानसिक नभोमण्डल मे छायी इन निराशा की काली बदलियो को छांटने के ही महत्वपूर्ण उपाय हैं। इनमे पहला उपाय

(शेष पृष्ठ ६ पर)

★ वचन-सन्देश ★

आत्मविश्वास

मनुष्य को आत्मा मे एक अपूर्व अलौकिक शक्ति भरी हुई है जिसका वह विवेचन नही कर सकता, किन्तु समय-समय पर वह उसका अनुभव अवश्य करता है। उस शक्ति मे अद्भुत बल है। वह शक्ति मनुष्य को आगे बढने का प्रोत्साहन देती है। वह शक्ति मनुष्य को बडो से बडी कठिनाइयो मे सफलता प्राप्त कराती है। वह शक्ति है आत्मविश्वास। हमारे प्रत्येक कार्य की नीव आत्मविश्वास पर ही जमी हुई है। आत्मविश्वास के बिना किसी भी कार्य मे सफलता पाना आकाश के ज्योतिष्मान् नक्षत्र को तोडने के समान है।

आत्मविश्वास का दूसरा नाम है इच्छाशक्ति। आपका भविष्य कब चमकेगा ? आपका भाग कब जागेगा ? इन प्रश्नो के समाधान की खोज मे कभी आप दैवज्ञो की शरण मे जाते हैं, हस्तरेखा विशेषज्ञो के पास बैठते हैं परन्तु यह नही जानते कि इन प्रश्नो का निराकरण आपके ही पास छिपा हुआ है। यह सब आपके आत्मविश्वास या दृढ इच्छा-शक्ति पर निर्भर करता है। यह एक ऐसा वैज्ञानिक तथ्य है जो आपके मुर्दा जीवन मे अमृत की वर्षा कर सकता है, जो आपकी निराशा को आशा मे परिवर्तित कर सकता है, जो आपको विपत्तियो के बादलो को तिरोहित कर सकता है, जो आपके हृदयरूपी मरुस्थल मे आशा और उत्साह की लहलहाती खेती उत्पन्न कर सकता है। इसके लिए बस आप अपने हृदय मे दृढ विश्वास पैदा कीजिए। जब आप अपनी आत्मशक्ति पर विश्वास करेंगे तभी आपकी उन्नति का मार्ग स्पष्ट होता जाएगा।

सम्पादकीय

पाकिस्तान के जुल्मों से अहमदियों में बढ़ता हुआ आक्रोश

—वार्ता—

पजाब के जिला गुरुदासपुर का छोटा सा कस्बा कादिया इन दिनो आक्रोश से छटपटा रहा है। कादिया दुनियाभर के दो करोड से अधिक आदमियो का आध्यात्मिक केन्द्र है और इस आक्रोश की वजह है पाकिस्तान मे रहने वाले अहमदियो पर जुल्म का ढाया जाना।

कादिया मे अहमदिया फिरके के अमीर मिर्जावासिम अहमद का कहना है कि यह उत्पीडन राजनैतिक है न कि धार्मिक। अहमद साहिब जनाब मिर्जा गुलाम अहमद के पोते हैं जिन्होने १८८९ मे अहमदिया आन्दोलन की शुरुआत यह कहकर की थी कि जिस मसीहा ने इन्सान को रजो गम से निजात दिलाने की बात कही है, वह मसीहा मैं ही हूं।

मिर्जा वासिम साहिब का कहना है कि हमने इस जुल्म के बारे मे मानवाधिकार आयोग को भी लिखा लेकिन तेल के धनी अरब देशो के प्रभावहीन होने के कारण वह हमारा मददगार नही बन सका। हम ने प्रधानमन्त्री राजीव गाधी को भी इस बाबत लिखा है लेकिन सरकार का कहना है कि यह पाकिस्तान का अदरूनी मामला है लेकिन वे अपनी तरह से उनकी मदद करेंगे। उन्होने पाकिस्तान सरकार को भी कई पत्र लिखे लेकिन अभी तक कोई जवाब नहीं मिला है।

मिर्जा वासिम का कहना है कि पाकिस्तान मे पिछले तीन महीनो मे पाच अहमदियो की हत्या कर दी गई। इनमे से एक जनाब वासिम के चचेरे भाई ६० साल के आखो के डाक्टर अकुल बिन अब्दुल कादिर थे। इस मामले मे अभी तक कोई गिरफ्तारी नही हो पाई है। मिर्जा वासिम का कहना है कि पाकिस्तान मे जब भी किसी सरकार को अपना तख्ता डगमगाता नजर आता है तो वह अहमदियो के खिलाफ नफरत फलाने का अभियान छेड देती है। १९५३ मे यही हुआ व १९७३ तथा १९८४ मे भी यही कहानी दोहरायी गई। १९८४ मे इन लोगो का गैर मुस्लिम अल्पसंख्यक घोषित कर दिया गया। इसलिए उत्पीडन की वजह राजनीतिक है न कि धार्मिक। उन्होने बताया कि उत्पीडन का नया दौर १९८३ मे शुरू हुआ जबकि लोकतन्त्र बहाली के लिए सिविल नाफरमानी आन्दोलन शुरू किया गया।

उस समय पाकिस्तान मे एक अफवाह यह उडी कि जिया साहिब खुद कादियानी थे। बस फिर क्या था जरनल जिया तिलमिला उठे। उन्होने ऐलान कर दिया कि उनकी नजर मे अहमदिया काफिरो से भी गये गुजरे हैं। अप्रैल १९८४ मे उन्होने एक अध्यादेश जारी किया जिसमे अहमदियो पर अजान देने अपने धर्मस्थलो को मस्जिद कहने या मुसलमानो की तरह से व्यवहार करने पर प्रतिबंध लगा प्रावधान रखा गया। मिर्जा वासिम ने बताया कि अहमदिया धर्म गुरु मिर्जा ताहिर अहमद को इस अध्यादेश के जारी होने के एक दिन बाद ही लदन भागना पडा। क्योकि सैनिक सरकार ने उन्हें भी गिरफ्तार करने की ठान ली थी।

पाकिस्तान के कटटर मुल्ला चाहते हैं कि अहमदियो की जमीन जायदाद जब्त कर ली जाये तथा उन्हें सरकारी नौकरियो से हटा दिया जाए। कादियो मे अहमदियो के आधिकारिक पत्र बदर के अनुसार पाकिस्तान मे मुल्लाओ ने अहमदियो को सताने का एक नया तरीका खोजा है। कोई एक मुल्ला एकाएक गायब हो जाता है और अहमदियो पर उसके गायब होने का इल्जाम मढकर जनता को उन्मादी बना दिया जाता है। ऐसे ही एक मौलाना असलम कुरैशी इन दिनो गायब है और अब मुल्ला लोग यह माग कर रहे है कि इस मामले की तहकीकात करने के लिए मिर्जा ताहिर को लदन से यहा लाया जाए।

'बदर' के सम्पादक खुर्शीद अहमद अनवर का कहना है कि उत्पीडन के इस नये दौर मे हजारो नही तो सैकडो अहमदिया लोग हर पाकिस्तान मे भाग गए है। लेकिन इसका एक फायदा यह भी हुआ कि पाकिस्तान मे अहमदिया धर्म प्रसार मे बहुत वृद्धि हुई है।

पाकिस्तान मे इस समय ५० लाख अहमदिया हैं। पश्चिम अफ्रीका मे ३५ लाख भारत मे एक लाख। इनमे से १५०० कादिया मे रहते हैं। अहमदिया अपने धार्मिक साहित्य के अलावा सिख समुदाय के लिए भी धार्मिक साहित्य छापते हैं। अहमदिया गुरुमुखी विद्वान अपने नाम के आगे ज्ञानी खिताब लगाते हैं। कादिया मे अहमदिया फिरके के लिए सब से पवित्र स्थान मिर्जा गुलाम अहमद की कब्र है। १० एकड मे फैला यह कब्रिस्तान बहिश्ती माकबरा कहलाता है। लेकिन यहा उन्ही मुर्दो को मिट्टी दी जाती है जो कि अपनी वसीयत के एक तिहाई हिस्से से एक दसवें हिस्से को जमानत के नाम करते हैं।

बहिश्ती मा ओबारा तकरीबन पूरा भर चुका है। बदर के सम्पादक का कहना है कि जब पाकिस्तान मे हालात ठीक हो जायगे तो वहा हाल मे मारे गये अहमदियो की लाशो को यहा लाकर दफनाया जाएगा। सम्पादक द्वारा यू ही हल्के अन्दाज मे कही गई यह बात चौकाने वाली है। लेकिन हकीकत यह है कि हर अहमदिया आखिरी मिट्टी यही पाना चाहता है। कादिया मे अहमदिया नेता खालिस्तान आन्दोलन को मदद देने के आरोपो से साफ इन्कार करते है। उनका कहना है हम पूरी तरह से मजहबी लोग हैं सियासत से हमारा कोई सरोकार नही है।

आर्यसमाज का इतिहास और उसके उपादान

लेखक डा० भवानीलाल भारतीय

इतिहास का अपना दर्शन होता है। केवल घटनाओं और व्यक्तियों के विवरण का नाम ही इतिहास नहीं है और न सन् और संवतों की तालिकाएँ प्रस्तुत करना ही इतिहास का लक्ष्य होता है। इतिहास लेखन से पूर्व लेखक को अपनी विचार-धारा और दृष्टि को सुस्थिर करना पड़ता है तभी वह इतिहास प्रणयन के कार्य को दायित्वपूर्ण ढंग से निभा सकता है। विभिन्न देशों की ही भांति संस्थाओं और आन्दोलनों के भी इतिहास लिखे जाते हैं। आर्यसमाज के पूर्ववर्ती नवजागरण के महान् आंदोलन ब्रह्मसमाज का इतिहास पं० शिवनाथ शास्त्री की यशस्वी लेखनी से लिखा गया। राजा राममोहन राय द्वारा प्रवर्तित उस धार्मिक सुधार आंदोलन का यह अधिकृत एवं प्रामाणिक दस्तावेज माना जाता है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का विस्तृत इतिहास स्व० डा० पट्टाभि सीतारामैया ने लिखा था जो इस देश के स्वाधीनता आंदोलन का तथ्याश्रित इतिवृत्त प्रस्तुत करता है।

आर्यसमाज की स्थापना का एक शताब्दी बीत गई। ऊपर से एक दशाब्द भी व्यतीत होने जा रहा है। अतः यह आवश्यक है कि आर्यसमाज के इतिहास के लेखन विषयक प्रयत्नों का लेखाजोखा लिया जाय। हमारी जानकारी के अनुसार १९०३ ई० में महता राधाकृष्ण लिखित उर्दू ग्रंथ 'तारीखे आर्यसमाज' इस विषय का प्रथम ग्रन्थ है। महता जी स्वामी दयानन्द के समकालीन तो थे ही उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना और उसके प्रारम्भिक विकास को प्रत्यक्षदर्शी के रूप में देखा था। निश्चय ही वे अपने इस ग्रंथ में विगत शताब्दी के अन्त तक का ही इतिवृत्त प्रस्तुत कर सके। मुख्यतया पंजाब के आर्यसमाज का इतिहास ही उनकी विवेचना का विषय बना।

तत्पश्चात् लाला लाजपतराय ने आर्यसमाज तथा उसके प्रवर्तक का ऐतिहासिक वृत्तान्त प्रस्तुत करने का महत्त्वपूर्ण प्रयत्न किया। उनका ग्रन्थ 'दि आर्यसमाज' १९१५ ई० में लांगमैन्स ग्रीन एण्ड कम्पनी लन्दन से अंग्रेजी भाषा में प्रथम बार प्रकाशित हुआ। लाला जी आर्यसमाज के उस धड़े से सम्बन्ध रखते थे जो कालेज दल अथवा कल्चर्ड पार्टी के नाम से जाना जाता था। फलतः उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना उसके सिद्धान्तों तथा उसकी प्रवृत्तियों का मूल्यांकन उसी दृष्टिकोण से किया है जो उन्हें तथा उनके दल के कार्यकर्ताओं को स्वीकार्य था। कालान्तर में इसका एक अन्य संस्करण उत्तरचंद कपूर एण्ड सन्स लाहौर ने प्रकाशित किया। १९६७ ई० में प्रिंसिपल श्रीराम शर्मा ने इस ग्रन्थ का सम्पादन कर 'हिस्ट्री आफ दि आर्यसमाज' शीर्षक से इसे पुनः प्रकाशित कराया। सम्पादक ने मूल ग्रन्थ में अनेक समयोचित परिवर्तन किये हैं तथा कुछ स्वरचित परिशिष्ट भी जोड़े हैं। यद्यपि लाला लाजपत राय ने इस ग्रन्थ को लगभग ७० वर्ष पूर्व लिखा था किन्तु ग्रन्थ की प्रभावशाली भाषा, भावाभिव्यक्ति की सशक्तता, सर्वोपरि लेखक के इस आंदोलन से सर्वात्मना जुड़े रहने एवं विषय विवेचन की वस्तुनिष्ठता के कारण आज भी यह ग्रन्थ आर्यसमाज का परिचय प्राप्त करने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इन पंक्तियों के लेखक ने इस ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद किया है जो आर्यसमाज अजमेर द्वारा १९८२ ई० में प्रकाशित हो चुका है।

अंग्रेजी भाषा से अनभिज्ञ जनता के लिए चाहे लाला लाजपतराय की उपर्युक्त पुस्तक उपयोगी रही हो, किन्तु आवश्यकता तो इस बात की थी कि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी में आर्यसमाज का प्रामाणिक इतिहास निबद्ध किया जाता।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के भूतपूर्व मुख्याधिष्ठाता और आचार्य पं० नरदेव शास्त्री ने एतद् विषयक प्रयत्न किया। उन्होंने दो खण्डों में आर्यसमाज का इतिहास लिखा जो क्रमशः १९१८ तथा १९१९ ई० में छपा। वस्तुतः नरदेव शास्त्री लिखित यह 'इतिहास' तो इतिहास का विद्रूप मात्र ही था। प्रथम भाग में आर्यसमाज के प्रवर्तक का परिचय इस संस्था के सिद्धान्तों का निरूपण तथा आर्यसमाज की अन्य मत पन्थों से तुलना विषयक कुछ अध्याय थे जिनमें इतिहास के तत्त्व तो अत्यल्प मात्रा में ही थे। इन अध्यायों में कुछ का लेखन तो ऐसे लोगों ने किया था जिनका आर्यसमाज से दूर का भी सम्बन्ध नहीं था। द्वितीय भाग में आर्यसमाज की प्रमुख संस्थाओं व्यक्तियों समाचार पत्रों आदि का विवरण संग्रह करने में किञ्चित् परिश्रम तो किया गया था किन्तु दोनों ही भागों में न तो इतिहासकार का सूक्ष्म पर्यवेक्षण ही दिखाई देता था और न इस संस्था के प्रभावशाली तथा लोकप्रिय रूप की ही कोई झांकी उभरती थी। इसके विपरीत लेखक ने इस ग्रन्थ में कुछ ऐसे विवादास्पद मुद्दों को उठाया जिनके कारण आगे चलकर आर्यसमाज में लेखक और उसकी इस कृति को तीव्र आलोचना का शिकार बनना पड़ा। लेखक ने स्वामी दयानन्द के वेदभाष्य को लेकर कुछ आलोचनात्मक टिप्पणियां इस ग्रन्थ में समाविष्ट की। स्वामी जी के आद्य शिष्य किन्तु कालान्तर में आर्यसमाज को छोड़ कर पौराणिक शिविर में प्रविष्ट हो जाने वाले पं० भीमसेन शर्मा का जो जीवन इस ग्रन्थ में संकलित किया गया वह शर्मा जी के पुत्र पं० ब्रह्मदेव मिश्र द्वारा लिखा गया था। इसमें अनेक भ्रान्तिजनक स्थल थे। जहां स्वामी जी की अपेक्षा पं० भीमसेन को अधिक शास्त्रज्ञ सिद्ध किया गया था। अस्तु पं० नरदेव शास्त्री रचित यह ग्रन्थ आर्यसमाजियों का कोपभाजन ही बन सका।

आर्यसमाज के महान् नेता स्वामी श्रद्धानन्द ने आर्यसमाज के उपयुक्त इतिहास लेखन की आवश्यकता तथा इस कार्य की गुरुता को भलीभांति अनुभव किया था। वे स्वयं भी तो आर्यसमाज के इतिहास निर्माताओं में थे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि वे स्वयं यह कार्य करें। उन्होंने आर्यसमाज के इतिहास की उपादान भूत प्रचुर सामग्री का संग्रह भी कर रक्खा था किन्तु अपनी बहुमुखी प्रवृत्तियों तथा व्यस्त कार्यक्रम के कारण वे इसे पूरा नहीं कर सके। तथापि उन्होंने आर्यसमाज के इतिहास लेखन का यह गुरुतर कार्य अपने योग्य पुत्र पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति के सुपुर्द किया। अपने पिता की आज्ञा को शिरोधार्य कर इन्द्र जी इतिहास लेखन के कार्य में जुट गये। वे स्वयं ही इतिहास के गहन अध्येता तथा सिद्धहस्त लेखक थे। फलतः १९८१ वि० में उनके द्वारा लिखा हुआ आर्यसमाज के इतिहास का प्रथम खण्ड प्रकाश में आया। कतिपय कारणों से इन्द्र जी इस इतिहास का द्वितीय खण्ड उस समय प्रकाशित नहीं कर पाये किन्तु पर्याप्त समय पश्चात् उन्होंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को आर्यसमाज के इतिहास को प्रकाशित कराने का दायित्व बोध कराया और दो खण्डों में 'आर्यसमाज का इतिहास' लिख कर उक्त संस्था से प्रकाशित करा सके। २०१३ वि० में प्रकाशित इस ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में स्वामी दयानन्द के प्रादुर्भाव से पूर्व का इतिहास, स्वामी जी के युग की परिस्थितियों का दिग्दर्शन तथा उनका जीवन वृत्त दिया गया है। साथ ही आर्यसमाज के प्रारम्भिक काल की विभिन्न प्रवृत्तियों का सिंहावलोकन भी किया गया है। द्वितीय भाग में आर्यसमाज के इतिहास की उन घटनाओं का विवेचन प्रस्तुत किया गया है जो इस शताब्दी में घटी। हैदराबाद दक्षिण के सत्याग्रह पर्यन्त घटनाचक्र का विवरण देने के पश्चात् लेखक ने ग्रन्थान्त में कुछ उपयोगी परिशिष्ट जोड़े हैं जिनमें स्वामी दयानन्द की जन्मतिथि, आर्यसमाज की स्थापना तिथि, स्वामी दयानन्द की मृत्यु का कारण—विषदान तथा थियोसोफिकल सोसाइटी एवम् आर्यसमाज के सम्बन्धों की विवेचना जैसे प्रसंगों की विवेचना हुई है। इस इतिहास की तृतीय कड़ी को भी पं० इन्द्र जी लिखना चाहते थे किन्तु उनके दुर्बल स्वास्थ्य एवं कालान्तर में दिवंगत हो जाने के कारण यह पूरा नहीं हो सका।

पं० इन्द्र जी रचित इतिहास यद्यपि विवरण प्रधान ही अधिक था तथापि एरण्डद्रुम न्याय से उसे संतोषजनक कहा जा सकता है। उन्होंने आर्यसमाजों के विभिन्न संगठनों आर्यसमाजों की शिरोमणि सभाओं तथा पुरानी पत्र पत्रिकाओं में उपलब्ध वृत्तान्तों के आधार पर ही इस इतिहास का लेखन किया था तथापि इतिहासकार की सूक्ष्म विवेचना तथा वैज्ञानिक लेखन शैली का इसमें बहुत कुछ अभाव ही दृष्टिगोचर होता है। उधर भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की परीक्षाओं में आर्यसमाज के इतिहास को पाठ्यक्रम के रूप में स्थान मिल चुका था। फलतः एक ऐसे इतिहास की आवश्यकता थी जो छात्रोपयोगी हो, सुबोध शैली में लिखा गया हो तथा संक्षिप्त भी हो। पं० हरिश्चन्द्र विद्यालंकार ने इसी दृष्टिकोण से आर्यसमाज के संक्षिप्त व सुबोध इतिहास की रचना की जो वर्षों तक परिषद् के पाठ्यक्रम में लगा रहा। आर्य कुमार परिषद् और उसकी परीक्षाओं के समाप्त हो जाने पर इस उपयोगी ग्रन्थ की पुनर् आवृत्ति भी नहीं हो सकी।

१९७१ ई० के अन्त में सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने आर्यसमाज के इतिहास लेखन व प्रकाशन की एक महत्त्वपूर्ण योजना बनाई। इस योजना के अन्तर्गत ७ खण्डों में आर्यसमाज के समग्र इतिहास को प्रकाशित किया जाना है। अब तक इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थमाला के तीन खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। प्रथम खण्ड के अन्तर्गत भारतीय इतिहास का विस्तृत ऊहापोह करने के पश्चात् नवजागरण के आन्दोलनों की पृष्ठभूमि तथा उनके आविर्भाव की परिस्थितियों का विशद मूल्यांकन किया गया है। तदनन्तर स्वामी दयानन्द के जीवन-वृत्त को किञ्चित् विस्तार से प्रस्तुत करने के पश्चात् उनके निधन काल तक की आर्यसामाजिक गतिविधियों का सम्यक् विचार किया गया है। इस इतिहास का तृतीय खण्ड १९८३ ई० में प्रकाशित हुआ, जिसमें आर्यसमाज के शिक्षा विषयक अवदान का विस्तृत विवेचन किया गया है। ग्रन्थारम्भ में भारत

(शेष पृष्ठ ११ पर)

परोपकार

अमित प्रताप नारायण सिंह

वृक्ष कबहु नहीं फल भखै,
नदी न सचै नीर।
परमारथ के कारने
साधुन धरा सरीर॥

पिबन्ति नद्य स्वयमेव नाम्भ
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षा।
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहा
परोपकाराय सतां विभूतय॥

यह सत्य है, वृक्ष कभी फल नही खाते, यद्यपि फल उन्ही मे लगते हैं, नदिया जल नही पीती मेघ की महत्ता भी अन्न की हरियाली के हेतु है, पर वह अन्न नही खाता। ठीक इसी प्रकार सज्जन पुरुषों का जीवन परमार्थ या परोपकार के लिए होता है। युगो से मानव परोपकार के विषय में यहा सोचता तथा करता आया है। परोपकारियो ने कभी भी यह नही सोचा है कि परोपकार के पश्चात् उन्हें किस फल की प्राप्ति होगी। वे तो निष्काम भाव स लोक हित मे लगे रहते हैं। अठारहो पुराणो मे महाभारतकार महाकवि व्यास के दो ही तो सार वचन हैं—परोपकार से पुण्य होता है और परपीडन स पाप।

परोपकार पुण्याय पापाय परपीडनम्'

सचमुच, उनके ये वचन बड ही मूल्यवान् और विलक्षण है। परोपकार अर्थात् दूसरो के दुख से द्रवित होकर उनकी सहायता करना। यही तो परोपकार है। यदि हम आँख खोलकर देखें तो प्रकृति के स्वर्ण पत्रो पर परोपकार की अनगिनत आकर्षक कहानिया अकित पायेंगे।

परोपकार वह धर्म है, जो धर्मों का धर्म कहलाता है। अन्य धर्म अफीम हो सकते हैं जिसकी पीक मे भले-बुरे का ज्ञान होना सम्भव नही, किन्तु परोपकार धर्म अमृत है, जो जीव मात्र को सुख सतोष तथा आनन्द शक्ति से ओत-प्रोत कर देता है। परोपकारी व्यक्ति स्वय स्वार्थ हीन होता है। किन्तु उसका परोपकार ही उसकी अमर निधि बन जाती हैं। जैसे मेंहदी बाटने वाले के हाथों में मेंहदी स्वय लग जाती है। विजेता तथा बुद्धिमान् को जो सम्मान विश्व में नहीं मिलता वह परोपकारी को मिलता है क्योंकि विजेता को भय की दृष्टि से देखा व सम्मान किया जाता है। बुद्धिमान् व्यक्ति हमारी सम्मान की भावना पर छा जाता है। किन्तु केवल परोपकारी ही उसे (हमारे स्नेह को) जीत पाता है। हरि अनन्त, हरि कथा अनता' की भांति परोपकार की कथा भी अनन्त होती है। वह द्रौपदी का चीर है जिसका कोई अन्त नहीं।

महर्षि दयानन्द का जीवन परोपकारी जीवन रहा। उनकी एक घटना सुनिये—

एक बार की बात है कि स्वामी जी सुनसान जगह मे ठहरे हुए थे। वे शौच जा रहे थे। एक बैलगाडी एक नाले मे फसी हुई थी। गाडीवान बैलो को पीट रहा था। स्वामी जी ये देखकर वहा पर पहुचे और गाडीवान से बैलो को गाडी से खोलकर अलग करने को कहा और स्वय गाडी को कधे लगाकर बाहर निकाल दिया। स्वामी जी के परोपकार के साथ साथ उनकी शक्ति का भी परिचय मिलता है। हमारे देश मे अनेक परोपकारी हुए हैं—जैसे शिवि राजा। उन्होने एक पक्षी की रक्षार्थ अपना मास ही नही शरीर तक दान दिया। दधीचि के विषय मे नही जानता जिन्होंने जीते जी परहित मे अस्थिदान कर दिया। इन महान् परोपकारियो की गाथा कवियो की वाणी में सदा अमर रही है, केवल परोपकार के कारण—

रहिमन पर उपकार के,
करत न पारे बीच।
मांस दियो शिवि भूप ने,
दीन्हयो हाड दधीचि॥

निराला जी का जीवन परोपकार का एक अनूठा उदाहरण है—

एक समय की बात है कि निराला जी पूर्णत नया शाल ओढ कर इलाहाबाद में घूम रहे थे। उस समय सर्दी का मौसम था। एक भिखारी सर्दी से ठिठुर रहा था। निराला जी न उसके दुख से द्रवित होकर उस अपना नया शाल उतार कर उसे ओढा दिया। यही तो परोपकार है। ऐसी घटना निराला जी के जीवन में कई बार घटी है। महात्मा गाधी जी का सम्पूर्ण जीवन परोपकार का ही उदाहरण है। उन्होने हरिजन बस्तियो मे घूम घूम कर दलित हरिजनो को स्नेह तथा परोपकार किया। कुष्ठ के रोगियो की सेवा कर उन्हें ढाढस दिया। परोपकार की महत्ता का क्या कहना! यह वह जादू की छडी है जिसके स्पर्शमात्र स कलह, राग स्वार्थ हिसा भय लालच घृणा ईर्ष्या आदि सभी वृत्तियो का अत हो जाता है। परोपकार से पूर्ण साधारण से साधारण भावना भी गौरवपूर्ण हो जाती है। तुलसीदास जी न कहा है—

परहित सरिस धर्म नही भाई
पर पीडा सम नही अधमाई॥

ये पक्तिया हैं गोस्वामी तुलसीदास जी के रामचरित मानस की। वास्तव मे परोपकार स बढकर इस ससार मे कोई धर्म नही है। ससार मे सत-असत, भले-बुरे दोनो रहते हैं। एक व्यक्ति दूसरे की भलाई के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देता है। और दूसरा अवसर की ताक मे रहता है कि कब मौका मिले कि दूसरे के सामने की परसी हुई थाली पर हाथ साफ कर ले। ऐसे लोग दूसरे की भलाई करने को कौन कहे, दूसरो की प्रशसा सुनने तक को भी तैयार नहीं होते।

महावीर जी मानव शरीर की सार्थकता परोपकार में ही बतलाते हैं—

परोपकाराय फलन्ति वृक्षा,
परोपकाराय वहन्ति नद्य।
परोपकाराय दुहन्ति गाव
परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥

वास्तव मे मानवता का अस्तित्व ही परोपकार की आधारशिला पर टिका हुआ है। आज तक इस ससार मे जो भी अमर हुआ है परोपकार के ही कारण हुआ है। परोपकारी व्यक्ति जन-जन के हृदय को बिना किसी प्रयास से जीत लेता है। लोक तत्र के इस युग मे जनता जनार्दन को प्रसन्न और वश मे करके स्वत जनता जनार्दन बन सकता है। वह कभी कभी काल के चपेट मे नही आ सकता। अपनी कीर्ति से वह अजर अमर हो जाता है। परोपकारी व्यक्ति किसी देश और सीमा के अन्तर्गत बाधा नही जा सकता है। वह दूसरो को सुखी बनाकर स्वत भी सुखी होता है परोपकार के इसी महत्त्व को स्वीकार करते हुए राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने ठीक ही कहा है—वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

अत प्रत्येक मानव का कर्तव्य है कि वह परोपकार के लिए सर्वस्व न्योछावर कर दे। हो सकता है इसके लिए काटो की राह पर चलना पडे किन्तु घबराने की आवश्यकता नही है। हम यदि यश-प्रतिष्ठा धन वैभव और सुख शाति प्राप्त करना चाहते हैं तो परोपकार के मार्ग पर चलना अपना परम धर्म समझें। कहा है—

परोपकरणं येषां जागर्ति हृदये सताम्।
नश्यन्ति विपदस्तेषा सम्पदस्तु पदे पदे॥

अर्थात्—जिन सज्जनो के हृदय मे परोपकार निवास करता है। उनकी विपत्तिया नष्ट होती हैं तथा पग पग पर सम्पत्तियाँ आती हैं।

ग्रा० हाटा, पो० नदौली देवरिया

किशोरमञ्च—

वीर बालक पुत्त

एक बार दिल्ली का मुगल बादशाह अकबर बहुत बडी सेना लेकर चित्तौड जीतने आया। चित्तौड के राणा उदय सिंह यह देखकर डर के मारे चित्तौड छोडकर दूसरी जगह भाग गये और उनका सेनापति जयमल शहर की रक्षा करने लगा। पर एक रात को दूर से अकबर शाह ने उसे गोली से मार डाला। चित्तौड निवासी सब एकदम घबरा उठे, पर इतने में ही एक चित्तौड का बहादुर लडका स्वदेश की रक्षा के लिए मैदान मे आ गया।

उस वीर बालक का नाम था पुत्त। उसकी उम्र केवल सोलह वर्ष की थी। पुत्त था तो बालक पर बडे-बडे बहादुर आदमियों के समान वह बडा साहसी और बलवान् था। उसकी माता और बहिन और स्त्री ने युद्ध मे जाने के लिए उसे खुशी से आज्ञा दे दी। यही नही वे भी उस समय घर मे न बैठकर हथियार लेकर अपने देश की रक्षा करने के लिए बडे उत्साह के साथ युद्ध भूमि में आ पहुँची।

अकबर की सेना दो भागों में बँटी थी। एक भाग पुत्त के सामने लडता था और दूसरा भाग दूसरी ओर पुत्त को रोकने के लिए आ रहा था। वह दूसरे भाग की सेना पुत्त की मा, पत्नी और बहिन का पराक्रम देखकर चकित हो गयी। दोपहर के दो बजते-बजते पुत्त उनके पास पहुँचा, देखता क्या है कि बहिन लडाई में मर चुकी है, माता और स्त्री बदूक की गोली खाकर जमीन पर तडफडा रही हैं। पुत्त को पास देखकर माता ने कहा—बेटा हम स्वर्ग जा रहे है तू लडाई करने जा। लडकर जन्म भूमि की रक्षा कर या मरकर स्वर्ग मे जाकर हम से मिलना। इतना कहकर पुत्त की माता ने प्राण छोड दिये। पुत्त की पत्नी ने भी स्वामी की ओर धीर भाव से देखते हुए प्राण त्याग किया। पुत्त अब विशेष उत्साह और वीरता स फिर शत्रु सेना का मुकाबला करने लगा। माता की मरते समय की आज्ञा पालन करने मे उसने तनिक भी पैर पीछे नही किया और जन्म भूमि के लिए लडते-लडते प्राण त्याग दिये। इस प्रकार इस एक ही घर के चार चार नर नारी स्वर्ग पधारे और उसकी कीर्ति सदा के लिए इस ससार मे कायम रह गयी।

व्यासपीठ –

उपनिषत् कथा माला—७

सत्य की महिमा

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

वेदों अथवा उपनिषदों के समय में इन्हीं के पठन पाठन का विधान था। आचार्य शिष्यों को यही पढ़ाते थे। सर्व साधारण इन्हीं का उपदेश सुनते थे। इसमें सत्य की बड़ी महिमा गायन की गई है।

सत्यमेव विजयते नानृतम्।

अर्थात् सचाई सदैव विजयी होती है और झूठ सदा पराजित होता है। मध्यकाल में झूठ बलवान हो जाय ऐसा हो सकता है, परन्तु अन्त में सत्य ही की विजय होती है। जिस देश में सत्य का गुण-गान होता है उसकी अवस्था अच्छी होती जाती है। अब सोचिए! सत्य क्या है? एक मनुष्य को बोलने में तो देर लगानी चाहिए क्योंकि बात सदा तोलकर बोलनी चाहिए। आप कहें, "साधु जी! भोजन हमारे घर खाना।" यदि मेरी इच्छा हो तो "हाँ" कर देना चाहिए। यदि इच्छा नहीं तो 'ना'। सत्य का अभिप्राय यही है कि सत्य बोला भी जाये और उसका पालन भी किया जाये। यह कोई कम काम नहीं। महाराजा रामचन्द्र जी जिनके आप गुण गान करते हैं जिन्हें आप मर्यादा पुरुषोत्तम कहते हैं, और रामायण में जिनका गुण-गान करते हैं जिन्हें आप ईश्वर का अवतार मानते हैं यद्यपि वेद ऐसा नहीं मानता और शास्त्रों का सिद्धान्त भी ऐसा नहीं तथा आर्यसमाज भी ऐसा नहीं कहता। उन्हीं राम में जहां अनेक गुण थे, वहाँ एक बड़ा भारी गुण यह भी था कि वे सत्यवादी थे और सत्य के सिवा कुछ नहीं बोलते थे।

सत्य के प्रभाव से आज आर्यसमाज स्थिर होता जाता है। मनुष्य का गौरव बढ़ता है। परन्तु कब? जब वह सत्य बोलता है और सत्य का पालन भी करता है। ये सब बातें साथ ले और फिर देखें कि उपनिषदों के सिद्धान्त का तात्पर्य क्या है?

सत्य का एक लक्षण और भी है, जो तीनों कालों में एक जैसा रहे वही सत्य है। सत्य वह है जिसका आदि है न अन्त। जो पदार्थ विभिन्न समय पर बदल जाय उसको 'अनृत' कहते हैं। परमात्मा सदैव एक जैसा रहने वाला है। देखिये एक मनुष्य सत्य बोलता है और सत्य का पालन भी करता है। परन्तु वह मूर्ति-पूजा भी करता है। अज्ञान और अविद्या ने उसे पतित कर दिया है। वेदों में लिखा है 'सत्य की पूर्ति क्रिया और ज्ञान के बिना नहीं हो सकती'। परन्तु आजकल सत्य क्या है? बस यही कि झूठ बोलो परन्तु उसे झूठ सिद्ध न होने दो। न्यायालय में क्या होता है? गवाह गवाहियां देते हैं परन्तु उसमें कितना सत्य होता है और कितना झूठ? जज जिस बात को अधिक सम्भव समझता है उसी पर अपना निर्णय स्थापित कर देता है। इसीलिए कहा है कि 'सत्य-भाषण में ही मनुष्य का गौरव है।'

परमात्मा तीनों काल में सत्य है परन्तु प्रकृति नहीं। प्रकृति, जिसे कारण-भूत" कहते हैं, उसका नाश तो नहीं होता परन्तु वह बदलती रहती है। कभी संसार के रूप में आ जाती है और कभी फिर प्रकृति बन जाती है। यह सत्य ही परमात्मा का विशेष लक्षण है।

प्रकृति भी सत्य है परन्तु उसका परिणाम होता है। पहले गुण नष्ट हो जाने और दूसरे गुण प्रकट हो जाने को ही परिणाम कहते हैं। जब प्रकृति में ही परिणाम है तो उसकी बनी हुई हर एक वस्तु में भी परिणाम अवश्य होगा। देखो एक छोटा सा बच्चा है उसमें दोष नहीं, क्योंकि वह झूठ नहीं बोलता। परन्तु जब वह युवा-अवस्था में आ गया तो उसके बालपन का परिणाम हुआ, फिर बुढ़ापे में आया तो युवा अवस्था का परिणाम हुआ। इसलिए तुम प्रकृति से काम ले सकते हो परन्तु स्थिर न होने के कारण से ही वह तीन कालों में सत्य भी नहीं।

कुछ ही सौ साल ही बीते हैं। यहाँ चीन से यात्री आये थे। उन्होंने अपनी भारतवर्ष की यात्रा का इतिहास लिखा है। उस समय जिनके घर जा कर पानी मांगते थे, दूध मिलता था। सब भारतीय अतिथि सेवा किया करते थे। कोई अपने घर में ताला नहीं लगाता था। यदि वह यात्री लेखक मैगस्थनीज आज यहां आये तो कहे कि जिस भारत की यात्रा का इतिहास मैंने लिखा था, वह निश्चय कोई और ही था। अब तो यहां दिन दहाड़े चोरियां होती हैं। स्टेशनों पर चपड़ासी चिल्लाते फिरते हैं कि अपना सामान सम्भाल कर रखना। मनु जी ने भी जिस देश का इतिहास लिखा था, वह भी शायद कोई और ही है।

कारण क्या है? हमारे उच्चकोटि के सब गुण नाश को प्राप्त हो गए हैं। अब मानो यदि मैं मूर्ति पूजा करता हूं, ईश्वर के अतिरिक्त किसी और के सामने हाथ जोड़ता हूं तो मैं उच्चकोटि के सत्य से गिर जाता हूं। क्या जीवात्मा सत्य है? निश्चय वह सत्य है, किन्तु उसमें 'अध्यास' आ जाता है। वह शरीर से विकसित होकर शरीर के दुःख को अपना दुःख समझ लेता है। यदि मैं रस्सी को सांप समझ लूं तो क्या उसमें काटने की शक्ति आ जायेगी? नहीं परन्तु फिर भी मनुष्य रस्सी को सांप समझ कर भयभीत हो जाता है। अध्यास में यही दोष है, इसलिए वह सत्य नहीं है। प्रकृति में परिणाम है और जीवात्मा में अध्यास, इसलिए दोनों ही सत्य नहीं।

एक कवि कहता है—

खुदा को जिसने सिजदा किया,
मिल गया उसको खुदा।

परमेश्वर के सिवा किसी और के आगे सिर झुकाना खुदी है। इसलिए ईश्वर का ही पूजन करो। ईश्वर पूजन से दूर होते ही इसके साथ साथ सत्य-भाषण का अभ्यास भी जाता रहता है। चाहे कोई धनी हो या निर्धन स्त्री हो या पुरुष, सब का एक ही परमात्मा है। वही एकरस रहने वाली वस्तु है। परन्तु भारतवर्ष ने उसे भुला दिया। जो भूल जाये उसे भटकना ही पड़ता है। इसीलिए भाइयो! एक सत्य को मानो। सारे झगड़े आज ही मिट जाते हैं।

उपनिषद् कहते हैं कि ऋषि सत्य के द्रष्टा होते हैं। ऋषि नाम किसका है? आजकल बी०ए०, एम०ए०, एम०एस सी आदि की डिग्रियां मिलती हैं। पहले विद्वानों को ऋषि, मुनि की डिग्रियां मिलती थीं। ऋषि वह था जिसकी आत्मा के साथ सच्चाई का सम्बन्ध हो जाता था। जो सचाई को समझता था और उसे ऐसे देख सकता था जैसे मैं तुम्हें देख रहा हूं। पहलवानों का एक दंगल होता है। आप उसमें जायें तो रोक दिये जायेंगे। आपको दर्शकों के स्थान में ही जगह मिल सकती है। परन्तु यदि कोई पहलवान वहां जाये तो उसे कोई न रोकेगा। कारण यह कि वह उनका समानशील है। परमात्मा सत्य है, उसके साथ उसी का मेल होगा जो सत्यवादी, सत्यमानी तथा सत्यकारी हो। सत्यमानी अर्थात् सत्य के मानने वाले तो आप भी होंगे परन्तु सत्यकारी होना कठिन है। जब ये तीनों बातें मिल जायें तभी ज्ञान की पूर्ति होती है।

उपनिषदों में यह भी लिखा है कि 'ऋषि वह है जो वेद और शास्त्रों का ज्ञानी हो, जो दूसरों को सीधे मार्ग पर चलाने वाला हो, जो स्वयं ज्ञानी हो और ज्ञान का अनुकरण करता हो ज्ञान पर आचरण रखता हो।' मैं पूछता हूं विद्वान् कौन है? आप उत्तर देंगे जो पढ़ा-लिखा हो और धन उपार्जन कर सके। परन्तु ऐसे अनपढ़ भी बहुत मिल सकते हैं जो धन खूब कमाते हैं वे तो विद्वान् नहीं कहला सकते। इसलिए कहा है कि—

विद्या ददाति विनयम्।'

विद्या से विनय प्राप्त होता है। जिसने अपने कर्त्तव्य का पालन किया है, वही मनुष्य विनीत है। 'विनय" उसको कहते हैं कि यदि मनुष्य किसी को दुःखी देखे तो उसके दुःख में आप भी दुःखी हो जाये। जब दुःखी होगा तो उसका दुःख दूर करने का यत्न भी अवश्य करेगा। एक बिल्लौरी शीशे का गोला लो। उसके पास गुलाब का फूल रख दो। वह उस फूल का प्रतिबिम्ब ले लेगा, परन्तु क्या मिट्टी का ढेला भी यह प्रतिबिम्ब ले सकता है? कदापि नहीं। इसलिए विनयशील पुरुष बिल्लौरी गोले के समान है और अन्य सब मनुष्य मिट्टी के ढेले के समान। विनयशील ही सच्चा विद्वान् भी है, बातें बनाने वाला विद्वान् नहीं।

महात्मा बुद्ध वन में थे। एक शिकारी ने पक्षी को बाण मारा। वह गिर गया, महात्मा बुद्ध ने उसे दौड़कर उठा लिया और उसका बाण निकाल दिया। शिकारी ने कहा, 'पक्षी मेरा है। यह मेरे तीर से गिरा है।' महात्मा बुद्ध ने कहा, 'यह मेरा है, मैंने इसे बचाया है।' अन्तिम निर्णय यह हुआ कि मारने वाले से बचाने वाले का अधिकार अधिक है।

यदि आपका अन्तःकरण पवित्र हो तो क्या ये अछूत अछूत ही रह जायें? मैंने संयुक्तप्रान्त में देखा। बहुत लोग कहते थे कि यह महात्मा गांधी का वचन है। वे अछूतों के दुःख से दुःखी हैं। उनकी आज्ञा है कि उनके लिए मन्दिर खोल दो। मन्दिर खोल भी दिये गये। परन्तु ज्यों ही अछूत मन्दिरों से निकले, वहां गङ्गा-जल छिड़क कर उन्हें शुद्ध किया गया। अरे भाइयो! यह तो सोचो। जो गङ्गाजल मन्दिरों को शुद्ध कर सकता है क्या वह इन अछूतों को शुद्ध नहीं कर सकता? उसे ही इन अछूतों पर छिड़क दो। सारा झगड़ा ही मिट जायेगा। कितना अच्छा उपाय है? पर कोई समझे तब ना।

आर्यसमाज में दुर्बलता है। इसमें

सत्य की महिमा

अभी बल नहीं आया। परन्तु जो समाज मनुष्यों का उपकार करे वह दुर्बल नहीं रह सकता। इसलिए धीरे धीरे इसकी दुर्बलता अवश्य दूर होगी। मैं बरेली गया वहां अछूतोद्धार पर व्याख्यान हुए। एक सज्जन ने प्रश्न किया 'महाराज! अछूत पैर की जूती हैं उन्हें सिर के साथ कैसे मिला लिया जाये? सिर पर तो पगड़ी ही रहेगी। मैंने उत्तर दिया भाई! कभी कभी ऐसा समय भी आ जाता है कि पगड़ी पैरों पर गिरती है और जूते सिर पर पड़ती है।

यह बड़ाई का घमण्ड झूठा है। बड़ा वह है जो बड़ाई का काम करे और अपने मुख से बड़ाई न करे। बड़े से बड़ा मनुष्य भी जब अपनी बड़ाई आप करने लगता है तो छोटा हो जाता है सेवा से ही प्रशंसा होती है सच्ची प्रशंसा वह है जिसमे जाति की महिमा है मनुष्य समाज की बड़ाई है। आप मोटरें रखते है बड़े आदमी हैं परन्तु जब यह कहा जाता है कि आपका देश दासता की शृंखलाओं में बंधा है तो सबमें मनों की निन्दा होती है। आपकी भी। आप उस निन्दा से बच तो नहीं सकते।

ऋषि सब को एक समान मानता है ऋषि की दृष्टि में सब लोग समानता रखते हैं। इस स्थान पर सब ही एक हो जाते हैं परन्तु यह देश भाग्यहीन है। बड़े बड़े लोग ऊंचे मार्ग दिखाते हैं परन्तु यह उनके पीछे नहीं चलता। समस्त देश सम्प्रदायों में बंट गया है। रुपये का ठीक प्रयोग नहीं होता। यूरोप और अमरीका में ऐसा नहीं वहां जितना रुपया है जाति के उपकार पर व्यय किया जाता है। परन्तु इस देश में सम्प्रदायी बढ़ गये हैं और देश बट गया है। इसीलिए काम नहीं चलता।

संयुक्तप्रान्त में मुसलमान भी हिन्दी जानते हैं। जिला सागर में एक मुसलमान इन्स्पेक्टर थे उसने वृद्ध का विवाह नाम की एक बड़ा अच्छी हिन्दी कविता लिखी है। एक ब्राह्मण ने रुपया लेकर सेठ की शादी कराई। इसमें उसी की दुर्दशा का वर्णन है। यदि सभी मुसलमान हिन्दी से द्वेष त्याग दें तो कितना वैमनस्य घट सकता है और एक मातृ भाषा होकर देश का कितना उपकार हो? परन्तु वही सम्प्रदाय का झगड़ा यहां भी है।

इस देश के विद्वान् संसार को शिक्षा दिया करते थे। इतिहास के नेत्र पांच हजार वर्ष से पीछे नहीं जाते। परन्तु इस देश का बिगड़े साढ़े पांच हजार से भी अधिक वर्ष हो गये हैं। यह देश महाभारत से एक हजार साल पहले से ही बिगड़ने लगा था। अर्जुन के पूछने पर श्री कृष्ण जी ने कहा है कि कुछ समय से लोग वेदों का पूर्णतया अनुसरण नहीं करते इसीलिए दुःख पा रहे हैं।

उपनिषदों के समय में सचाई की प्रशंसा हुआ करती थी। उपनिषद् पांच हजार वर्ष से पहले के हैं। दर्शन इनसे भी अधिक पुराने हैं। इनमें कोई सम्प्रदाय नहीं सारस्वत गौड़ कोई हो सब एक समान हैं।

क्रिया से ही कर्म का विभाग है। न तो ब्राह्मण ही अच्छा है और न शूद्र ही बुरा है। जब से यह सम्प्रदायों का झगड़ा उठा है इसने भारतवर्ष को कुचलकर रख दिया आर्यसमाज को इसे संभालकर सन्मार्ग पर लाना था परन्तु आर्यसमाज स्वयमेव न संभल सका। इसमें संभलने की शक्ति अवश्य है। यदि यह संभल जाये तो बेड़ा पार है। संसार बातों को बातों के ही रूप में मानता है। काम सदैव आचरण से चलना है क्योंकि सदा सत्य की जय होनी है और असत्य की पराजय।

आप कहेंगे कि शरीर मल मूत्र का स्थान है इसमें सचाई कहां? ईश्वर सत्य है वही निर्मल है। परन्तु यदि यत्न किया जाय तो क्या प्राप्त नहीं हो सकता? देखो बाल विवाह झूठ है। पहले लोग बाल विवाह किया करते थे। इसकी प्रशंसा भी होती थी। परन्तु जब यत्न किया गया तो रंग ही बदल गया। अब यही पाप समझा जाता है। हमने अपना कर्तव्य छोड़ दिया तो दूसरे देशों ने आक्रमण किया। शहाबुद्दीन मुहम्मदगोरी ने भारतवर्ष पर आक्रमण करने से पहले यहां दो आदमी भेजे कि हिन्दुस्तान का हाल मालूम करें। वे दो वर्ष तक यहां रहे यहां दान था परन्तु सचाई से फिसला हुआ। दो वर्ष तक उन्होंने यहां का हाल देखा और अन्त में यह पत्र लिखा कि हर कोई दूसरों के हाथों रोता है परन्तु हिन्दुओं को हिन्दू ही बरबाद कर रहे हैं। यह सात आठ सौ साल पहले का दृश्य है। जो समझदार है उन्होंने अर्थों को सचाई से जाना है। उसी सचाई का सहारा लेकर संसार में सुख पा गये और सत्य स्वरूप परमात्मा से मिल गये।

भाइयो! याद रखो झूठ बीमारी है और सचाई तन्दुरुस्ती। सचाई से ही मनुष्य की बात बनती है। जो सत्यमानी सत्यवादी और सत्यकारी है उसकी शक्ति और कर्म को कोई भी नहीं रोक सकता। इस बात को सत्य मान लो और सब अंधेरा दूर हो जायेगा। सब काम सचाई से चलते हैं। परमात्मा को ज्योतिषां ज्योति कहा गया है। जिसके मन में वह है उसी के मन में सचाई है। परन्तु हम तो अपनी पूजा और प्रार्थना में भी छल करते हैं। ईश्वर को न भोग लगता है। न उसके लिए पैसे ही चाहिएँ। मूर्ति को हम उस चीज का भोग लगाते हैं जो हमें आप खानी हो। यदि मूर्ति ईश्वर का रूप हो तो उसके पुजारी दयावान् हों। परन्तु यहां क्या है? बाबू लोग कहते हैं मनुष्य से घृणा नहीं करनी चाहिए। गांव वाले भी यही कहते हैं। परन्तु जो नाम मात्र ईश्वर का पूजन करने वाले हैं वही कठोर हैं वही मनुष्य को अछूत समझ कर उससे घृणा करते हैं।

बौद्धों का राज्य था। शंकराचार्य भगवान् उज्जैन पहुंचे वहां ईश्वर का प्रचार किया। कई आदमियों ने रोका न माने। अन्तत दरबार में पहुंचे वहां फांसी की आज्ञा हुई यह नियम था कि फांसी देने से पहले अन्तिम इच्छा पूछी जाती थी। भगवन् शंकर ने कहा जिसने मुझे फांसी की आज्ञा दी है उससे मिलना चाहता हूं। तेजस्वी शंकर राजा के सामने पेश हुए और कहा कि हे राजन्! मैं ईश्वर को मानता हूँ। यदि वह न भी हो तो कोई हर्ज नहीं परन्तु यदि मेरा ईश्वर हुआ तो तुम्हारा क्या दशा होगी? राजा की समझ में यह बात आ गई और वे छोड़ दिये गये।

ऋषि दयानन्द ईश्वर को मानने वाले थे आप कष्ट उठाकर संसार को सत्य मार्ग दिखला गये। यदि तुम भी यह चाहते हो कि परमात्मा तुम पर दया करे तो परमात्मा की सृष्टि से प्रेम करो। यही सचाई है यही धर्म है।

भगवान धर्म वेद का प्रचार किए जा।
है खून शहीदों का सरोकार किए जा॥

मनुष्य हो है टेक एक देख भाल ले।
मानव की मति का ही सिंगार किए जा।

महिमा अपार पार नहीं पा सका कोई।
संसार सार सार का विचार किए जा।

हिम्मत न हार बार पार हो के रहेगी।
भगवान् भरोसे पै तू सुधार किए जा॥

बलिदान शहीदों का रंग ला के रहेगा।
चर्चा ये द्वार द्वार बार बार किए जा॥

सब कह रहे हैं आज अन्धकार छा रहा।
उजियार दीप ज्ञान जगा क्षार किए जा॥

हरेक कोई अपने कारोबार में लगा।
उपकारियों के कार्यों से प्यार किए जा॥

आकार निराकार का पता तो लगे तब।
अभ्यास अष्ट अङ्ग योग धार किए जा॥

कैसा अमोघ अस्त्र वेद शास्त्र सूत्र मन्त्र।
ऋषियों की सम्पन्न का चमत्कार किए जा॥

औरों को नहीं देख तो अपनी ही तरफ देख।
भगवान को ही एक तरफदार किए जा॥

धर्म पन्थी रूप इल्म का जिसे नहीं नशा।
व्याकुल कुमार भर के धुआंधार किए जा॥

रचयिता—प्रकाशवीर व्याकुल

अमृतकलश

खुद चूम लेती है कदम आपके मञ्जिल।
अगर चलने वाला हिम्मत न हारे॥

पड़ा रह आप अपनी पस्तीये हिम्मत से पस्ती में।
रसाई तो तेरी ए खाक के पुतले खुदा तक है।

कुतुब अगर जगह से टले तो टल जाय।
हिमालय बाद की टोकर से भी फिसल जाये॥

अगर च मिहर भी गगन की दूप से जल जाय।
और आफ्ताब भी कजन तरूब ढल जाये॥

कभी न साहिब हिम्मत का हौसला टूटे।
कभी न भूल से उसका जबीं पै बल आये॥

उत्साही बलवानार्य नास्त्युत्साहात्परं बलम्।
सोत्साहस्य हि लोकेषु न किञ्चिदपि दुर्लभम्।

गरीबी व बेकारी कैसे दूर होगी ?

—ओमप्रकाश त्यागी

भारत सरकार ने स्वतन्त्रता के पश्चात् अनेको जन हित की घोषणाएं की हैं जिनमे से सबसे सुन्दर धारा यह है कि सरकार देश से गरीबी और बेकारी को दूर करेगी ताकि सभी लोग सम्मानपूर्वक अपने जीवन को व्यतीत कर सकें। इसी के लिए सरकार ने पाकिस्तान की नकल न कर भारत को हिन्दू राष्ट्र न बनाकर इसे मिश्रित देश घोषित किया ताकि भारत के सभी निवासी इसे अपना देश मानें और सम्मान के साथ पूजा पाठ करें तथा नमाज आदि पढ़े। सरकार ने अपनी घोषणा के अनुसार गरीबी बेकारी को दूर करने का अच्छा प्रयत्न किया। लाखो लोगो की गरीबी मिटी तथा लाखो को नौकरी मिली परन्तु दुर्भाग्यवश समस्या ज्यो की त्यो बनी है।

सरकार को अपने प्रयास मे सफलता मिली परन्तु देश मे गरीबी और बेकारी पहले से अधिक है। इसका मुख्य कारण यह है कि भारत की जनता सरकार की घोषणाओ की चिन्ता किए बिना लगातार बढ रही है। मुख्य रूप से गरीब और बेकारी की सख्या अधिक बढा है। जनसख्या की वृद्धि के साथ शिक्षा सस्थाओ की सहायता से ग्रेजुएटो की सख्या भी बढ गई है। इसके अतिरिक्त गाव के नवयुवक भी अब गाव मे न रहकर शहर मे रहना चाहते हैं। जो गाव मे भी रहना चाहते हैं तो जमीन का थोडा सा हिस्सा जो उन्हें मिल रहा है उसमे उनका निर्वाह भी नही हो सकता है। बस शहरो मे आकर लोग नौकरी चाहते हैं। नौकरी न मिले तो वे लोग समाज विरोधी कार्य करते हैं। डकैती मे व पढे जन नहीं पढे लिखे लोग ही यह कार्य करते हैं।

गरीबी और बेकारी को बढाने वाली जन वृद्धि को सरकार ने फैमिली प्लानिंग के कार्यक्रम से रोकना चाहा। परन्तु खेद इस बात का है कि सरकार मुसलमानों से डर गई और देश की जनता के लिए एक फैमिली प्लानिंग बना। मुसलमानों ने मन गढ़न्त रूप से कह दिया कि यह उनके धर्म के विरुद्ध है। सरकार के किसी व्यक्ति ने यह जानने का प्रयत्न नही किया कि मुसलमान धर्म की किस धारा का वह विरोध करती है। वैदिक धर्म इस बात को ठीक नही समझता कि मनुष्य के जन्म को रोका जाय परन्तु देश की समस्या का ध्यान कर उन्होने भी इसे स्वीकार किया है।

जब पाकिस्तान, बगला देश तथा इण्डोनेशिया अपने यहा फैमिली प्लानिंग सभी धर्मों और सम्प्रदाय के लोगो पर समान रूप से लागू करते हैं। परन्तु हमारी सरकार ने ऐसा नही किया। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि फैमिली प्लानिंग केवल हिन्दुओ पर लागू हुआ और हिन्दुओं के सभी पढ लिखे लोगो ने इसे स्वीकार कर लिया। गरीब लोग धन के लोभ में आ गए।

सौभाग्यवश स्व० सजयगाधी ने इस तथ्य का स्वीकार किया और सरकार के लोगो को आदेश दिए कि सब की फैमिली प्लानिंग हो। उसके विरोध स्वरूप चुनाव मे इन्दिरा गाधी की भारी पराजय हुई क्योकि मुसलमानों का मत सरकार के विरोध मे गया।

फैमिली प्लानिंग के द्वारा हिन्दुओ के विनाश की लीला को देख लोगो ने इसका विरोध किया। आर्यसमाज जैसी सस्थाओ ने इसका विरोध किया जब आर्य नेताओ से कारण जाना तो उन्होंने कहा कि फैमिली प्लानिंग अच्छी वस्तु है परन्तु देश के सभी लोगो पर लागू होनी चाहिए। वर्तमान समय मे जिस प्रकार यह मात्र हिन्दुओ पर प्रभावी है इससे भारत का हिन्दू समुदाय जल्दी ही समाप्त हो जाएगा। अत सरकार को चाहिए कि सबके लिए एक सा कानून बनाए। आर्यसमाज इसका प्रबल समर्थन करेगा।

सरकार फैमिली प्लानिंग की अच्छाइयो को अपने टी० वी० आदि के कार्यक्रम से प्रचार कर रही है। सरकार का एक विभाग इसी काम मे लगा हुआ है। वह सब हिन्दुओं को फसाते हैं। अन्य को नही। यही कारण है फैमिली प्लानिंग फेल हो गया है और परिणाम कल्पना से दूर है। कारण यह है कि जनसख्या की वृद्धि का यह सामना नहीं कर सकता है। परिणाम यही है कि देश मे गरीबी और बेकारी बढ़ी है। कम नही हुई।

गरीबी और बेकारी के बढ जाने पर देश में एक नही अनेको समस्याए पैदा होगी और जनता की दृष्टि मे सरकार असफल सिद्ध होगी। सरकार को विदित होना चाहिए कि गरीबी और बेकारी को हल करने के लिए चीन सरकार ने एक बच्चे से दूसरे की अनुमति नही दी। उनका यह नियम चीन की समस्त जनता पर लागू हो रहा है। परिणाम यह हुआ कि चीन की जनता की वृद्धि पर सरकार का नियत्रण हो गया है। गरीबी तथा बेकारी को दूर करने के लिए सरकार को एक कानून फैमिली प्लानिंग का बनाना ही होगा। उसे वह आज बनाये या कल ? बनाना ही होगा। वर्तमान रूप मे वह हिन्दुओं को समाप्त कर देगी अन्य कुछ नही। यदि यह खेल चलता रहा तो दो हजार शताब्दी मे खेल कुछ और ही होगा। सरकार की अदूरदर्शिता का ध्यान करते हुए हमे इस कथन मे सत्यता मालूम पडती है कि—भारत के मुस्लिम ससद सदस्य हज की सभाओ मे कहते हैं कि वह शीघ्र ही भारत मे मुस्लिम सरकार बनायेंगे। यदि ऐसा हुआ तो फिर सरकार को पछताना पडेगा और उस समय चाहते हुए भी कुछ नही हो सकेगा। इसलिए सरकार को तुरन्त ही अपनी भूल सुधार कर फैमिली प्लानिंग का एक कानून बनाना चाहिए और जो इसका विरोध करे उसे देशद्रोही घोषित करके उसके साथ किसी प्रकार का समझौता नही होना चाहिए।

सरकार ने समय पर यदि इस दिशा मे कानून नही बनाया तो कुछ समय के पश्चात् इसे पछताना पडेगा।

●

लाला रामगोपाल शालवाले अभिनन्दन समिति

श्रद्धेय लाला रामगोपाल शालवाले के अभिनन्दन के अवसर पर ११ लाख रुपये की सम्मान राशि सकलित करने के सम्बन्ध मे निवेदन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्रद्धेय लाला रामगोपाल शालवाले के अभिनन्दन के अवसर पर उन्हें ११ लाख रुपये की सम्मान राशि भेंट करने का निश्चय किया गया है। सम्मान राशि कोष के लिए धन सग्रह करने का कार्य आरम्भ हो चुका है। इस सन्दर्भ मे निम्नलिखित बाते ज्ञातव्य हैं।

(१) अभिनन्दन समारोह के साथ सम्मान राशि भेंट करने के पीछे यह भावना है कि अभिनन्दन समारोह की स्मृति में एक स्थायी कोष की स्थापना की जाये, जिसके सूद से सहायता कार्य (विशेषकर आर्यसमाज के प्रचारकों, वृद्ध उपदेशको विधवाओ एव निराश्रित महिलाओ तथा सुयोग्य विद्यार्थियों की सहायता) गोरक्षा प्रकृत्य एव माननीय लाला जी के प्रिय कार्यों को प्रोत्साहन दिया जा सके। इस स्थायी कोष का निर्माण सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत होगा और एतदर्थ इस सभा मे अभिनन्दन समिति का खाता खोल दिया गया है।

(२) सम्मान राशि के लिए धन सग्रह सार्वदेशिक सभा की रसीद बुको पर किया जायेगा ताकि दाताओ को आयकर से छूट का लाभ प्राप्त हो सके। जो धन सार्वदेशिक सभा मे सीधा प्राप्त होगा, उसके लिए यहा से सीधे रसीद भी भेज दी जाएगी। सार्वदेशिक सभा मे चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा ही धन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर इसके मुख्यालय—महर्षि दयानन्द भवन ५/३ आसफअली रोड, नई दिल्ली ११०००२ के पते पर भेजा जाये। चैक अथवा ड्राफ्ट—क्रास्ड होने चाहिए।

(३) आर्यसमाजो तथा अन्य सस्थाओं (विशेषकर शिक्षण सस्थाओ) को चाहिए कि वे धनराशि एकत्रित कर उसे चैक या बैंक ड्राफ्ट द्वारा सार्वदेशिक सभा को भेजें।

(४) आर्य प्रतिनिधि सभाएं अपनी रसीद बुकों पर धन सग्रह कर सकती हैं। यदि मिल जायेगा। अन्यथा जिन दाताओ को आवश्यकता होगी, उन्हें आयकर से मुक्ति का प्रमाण पत्र बाद मे सार्वदेशिक सभा की ओर से भेज दिया जायेगा।

(५) धन सग्रह अभियान मे उन सस्थाओ के सचालको एव महानुभावो का सहयोग प्राप्त करना चाहिए जिनकी माननीय लाला जी के प्रति श्रद्धा है और जो उनके प्रिय कार्यों के समर्थक एव सहयोगी रहे हैं।

(६) ज्ञातव्य है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने १९ मई ८५ को मेरठ मे सम्पन्न अपनी अन्तरग बैठक में यह निश्चय किया है कि सम्मान राशि के रूप में कम से कम एक लाख रुपये का सहयोग प्रदान करेंगे। अन्य आर्य प्रतिनिधि सभाओ से भी प्रार्थना है कि वे अपनी अन्तरग बैठक मे इस आशय का निर्णय अति शीघ्र करें। सम्मान राशि का लक्ष्य पूर्ण करने के लिए हमें उत्साह पूर्वक धन सग्रह करना है।

(७) स्थान-स्थान पर इस कार्य के लिए स्थानीय और क्षेत्रीय समितिया भी गठित की जा सकती हैं, परन्तु ऐसी किसी भी समिति को धन सग्रह से पूर्व हम से अथवा उस प्रान्त की प्रतिनिधि सभा से अनुमति प्राप्त करना अनिवार्य है।

(८) धन सग्रह के लिए अभिनन्दन समिति ने भी कच्ची रसीदें छपाई हैं। इन रसीदों पर प्राप्त धन के लिए सार्वदेशिक सभा की पक्की रसीदें बाद में धन प्राप्त हो जाने के उपरान्त भेजी जायेंगी। यह पक्की रसीद दाताओ को अथवा धन सग्रहीत करने वाली सस्थाओं को भेजी जायेगी। इच्छुक व्यक्ति अथवा सस्थाएं अभिनन्दन समिति को पत्र लिखकर कच्ची रसीदें मगवा सकते हैं।

(९) धन सग्रह के लिए अपील का भी प्रकाशन किया जा सकता है।

(१०) दान-दाताओं के नाम सार्वदेशिक एव आर्यसमाज की अन्य प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित किए जाते रहेंगे।

(११) इस विषय में अन्य स्पष्टीकरण अथवा अन्य जानकारियां अभिनन्दन समिति से प्राप्त की जा सकती हैं।

भवदीय

सोमनाथ मरवाह | इन्द्र नारायण | डा० [illegible] | ओमप्रकाश त्यागी

राष्ट्र को दुरित, दुर्गति से बचाने का उपाय

(पृष्ठ २ का शेष)

है—देश के वायुमण्डल को शुद्ध करने के लिए न्यायप्रणाली पक्षपात रहित और शीघ्र निर्णय करने वाली होनी चाहिए। आज देश मे अपराधो की बाढ सी आ रही है। डाके, बलात्कार, हत्या और चोरी के समाचारों से अखबार भरे पड़े रहते हैं डाकुओ मे अशिक्षित और गरीबी से पीडित लोग नही हैं। बी०ए० और एम०ए० हैं। नई दिल्ली मे बैंक खजाने को लूटने वाले सम्पन्न घरो के और उच्चशिक्षा प्राप्त युवक ही थे। उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश के बहुत बड़े डाकुओ की समस्या वहा की सरकारो के लिए बहुत बडा सरदर्द है। इन बुराइयो के बढने मे कतिपय अन्य कारणो के साथ सबसे मुख्य कारण न्याय-प्रणाली की शिथिलता, न्याय की अति-व्ययसाध्यता, अपराधियो को मुक्त कराने के लिए राजनीतिक नेताओ के दबाव आदि कुछ ऐसे कारण हैं कि जिनसे अप-राधियो को दण्ड का भय नही रहा।

हमे जो अग्रेजो का ढाचा उत्तराधि-कार में मिला है चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र है और चाहे न्यायालय है हम उन्हें उसी प्रकार घसीटे ले जा रहे हैं। इससे कितनी हानि हो रही है यह विचारने और करने का किसी के पास समय नही है। प्रधान मन्त्री और मुख्यमत्री जब पहली बार पद सम्भालते हैं, बडी बडी योजनाएँ जनता के सम्मुख रखते हैं। किन्तु कुछ ही समय पश्चात् कही पार्टी के असन्तुष्ट तत्त्वो को अनुकूल बनाने मे, कही विरोधी पार्टियो की योजनाएँ ध्वस्त करने मे सक्षेप से कहा जाये तो सारा समय और शक्ति अपने अधिकार की रक्षा मे ही निकल जाता है। सामाजिक जीवन के परिष्कार के लिए कुछ रचनात्मक काम नही हो पाते।

हमारी न्याय पद्धति ईसाइयो की भावना से प्रभावित है। जिसके चिन्तन का मुख्य केन्द्र बिन्दु यह है कि पाप के फल दुःख से ससार को छुडाने के लिए मसीह शूली पर चढ गये। किसी के मन को दुःख नही होना चाहिए। किसी उर्दू शायर के शब्दो मे उनकी भावना को इस प्रकार प्रकट किया जा सकता है—

> जब गुनहगारों पै देखी
> रहमते परवरदिगार।
> बेगुनाहो ने पुकारा
> हम गुनहगारो मे हैं॥

जब अपराधियो पर प्रभु का विशेष कृपाभाव देखा तो शुद्धपवित्र व्यक्ति सोचने लगे कि हमसे तो ये ही अच्छे रहे और वे निर्दोष होते हुए भी प्रभु के कृपा-पात्र बनने के लिए चिल्लाने लगे। हम भी पापी हैं, हमारा भी उद्धार कीजिये।

चौथी और पाचवीं लोकसभा की सदस्यता के दस वर्षों मे मेरे निर्वाचन क्षेत्र में १५ से कुछ अधिक कत्ल के केस हुए। मैं उन केसो का सावधानी से अध्ययन करता रहा। कई-कई वर्ष तक हाईकोर्ट तक केस लड गये। किन्तु परिणाम यह निकला कि किसी भी केस मे किसी को मृत्युदण्ड नही मिला। हां, दो अभियोगो में कुछ को आजीवन कारावास अवश्य हुआ। आजीवन कारावास शब्द सुनने मे ही भयकर लगता है, उसकी अवधि बीस वर्ष है और वह कट-छटकर १२ या १५ वर्ष ही रह जाते हैं। जहा केस मे थोडी सी भी सदिग्ध स्थिति आती है कि बस न्याया-धीश सब छोडकर उसे दोषमुक्त कर देते हैं।

होना यह चाहिए कि आज के कानून मे कुछ अपनी प्राचीन दण्डप्रक्रिया के उपादेय अशो का समावेश करके इसका स्वरूप तेजस्वी बनना चाहिए जिससे अपराधी आतकित हो। उदाहरण के लिए मैं चाणक्य के कौटिल्य अर्थशास्त्र की एक बात का उल्लेख यहा करता हू।

चाणक्य ने लिखा है कि यदि चोरी की घटना कही घट जाये तो उस क्षेत्र के पुलिस अधिकारी का आदेश होना चाहिए कि तीन मास के अन्दर चोरी का पता लगाकर गये हुए माल को उसके मालिक को दिलवाये और अपराधी को उचित दण्ड की व्यवस्था कराये। यदि पुलिस अधिकारी नियत अवधि मे चोरी का पता न लगा सके तो चोरी गये हुए माल की क्षति-पूर्ति उस अधिकारी के वेतन से करानी चाहिए। यह बात कितनी उत्तम है। इस नियम का पहला लाभ तो यह होगा कि पुलिस जनता के जानमाल की पूरी चौकसी से रक्षा करेगी और यदि कही दुर्घटना होगी तो पूरी सतर्कता से माल का पता लगायेगी और दोषी को दण्ड दिलवायेगी। दूसरा लाभ यह होगा कि जनता का सरकार मे विश्वास बढेगा और वह अपने को सुरक्षित कर पूरे उत्साह से उद्योग धन्धे चलायेगी।

इस समय भारत मे अन्धेर मचा हुआ है। अधिकाश अपराधी अपनी कमाई मे पुलिस को भागीदार बनाकर निर्भयता से दुष्कर्म करते हैं। उन्हें पता है थाने मे पहले तो रिपोर्ट ही दर्ज नही होगी। यदि ले देकर रिपोर्ट लिखी भी गई तो उस पर कार्यवाही कुछ नही होगी। पुलिस की इस अवस्था पर पजाब के एक आर्य प्रचारक बडी मनोरजक कहानी सुनाया करते थे - "एक मीरासी के घर मे चोरी होने पर उसने थाने मे रिपोर्ट दर्ज करा दी और वहा से तफतीश के लिए पुलिस आयी। मीरासी हुक्का पी रहा था। पुलिस के अधिकारी ने मौके का मुआयना किया और मीरासी से पूछताछ करते हुए चोरी मे गये सामान का ब्यौरा नोट करना प्रारम्भ किया। लकडी, बर्तन-भाण्डे, कपडे लिखा दिये। पुलिस आफिसर ने पूछा और कोई चीज तो लिखनी शेष नही रही। मीरासी ने कहा सब लिस्ट मुझे एक बार सुना दीजिये। पुलिस वाले ने सब चीजें पढ दी। मीरासी ने कहा इनमे एक हुक्का और नोट कर दीजिये। पुलिस वाले ने आश्चर्य से मीरासी को देखते हुए कहा हुक्का तो तुम पी रहे हो यह कहा गया है? मीरासी ने कहा इसे बेचकर आपकी भेंट पूजा करूगा मेरी ओर से तो गया ही। इस बात मे कोई अतिशयोक्ति नही है। थाने मे रिपोर्ट तब लिखी जाती है जब कुछ चढावा चढा दिया जाता है। लेन देन और परिचय प्रभाव का क्रम कही-कही तो हाईकोर्ट तक भी पीछा नही छोडता।

देश की आपराधिक वृत्ति मे सुधार के लिए इसमे परिवर्तन करना होगा। दुखियो को यह विश्वास होना चाहिए कि हम राजकीय व्यवस्था मे सुरक्षित है।

तो मन्त्र मे पहली बात यह कही गई कि न्याय शीघ्र सुलभ और निष्पक्ष होना चाहिए।

मन्त्र की दूसरी बात है कि शासक वर्ग प्रजा को अपनी सन्तान के समान प्रिय समझे। जैसा कि कालिदास ने रघु के राज्य का वर्णन करते हुए लिखा है 'स पिता पितरस्तासा केवल जन्महेतव।' समस्त प्रजा का वास्तविक पिता रघु ही था उनके माता पिता तो केवल जन्म देने वाले थे। ऐसे आत्मीयता के वाता-वरण मे प्रजाजन राष्ट्र की रक्षा के लिए बड़े से बडा त्याग करने को उद्यत हो जाते हैं।

रामायण और महाभारत मे हम पढते हैं कि जब राम और पाण्डव वन को चले तो पीछे पीछे प्रजा के लोग भी साथ चल दिये। यह आत्मीयता का सम्बन्ध शासकों के सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार का ही परिणाम था। तो मन्त्र मे परामर्श दिया कि शासक वर्ग परिवार के समान आत्मीयता से जनता के साथ वरतें।

मन्त्र की तीसरी बात है शासक आक्रान्ता और शत्रुओ से राष्ट्र की रक्षा करने वाला हो। राष्ट्रीय सेना दक्ष और शक्ति सम्पन्न हो जो शत्रु को मुँहतोड उत्तर दे सके। यह शक्ति तभी आयेगी जब सयमी और वीरपुरुष राष्ट्र की रक्षा-शक्ति को सम्भालेंगे विलासी और अय्याश राष्ट्र की रक्षा नही कर सकते। मुगलो के शासन के अन्तिम दिनो मे इसी तरह के दुर्गुणो से राष्ट्र दुर्बल हो गया और विदेशी आक्रान्ता यहा की प्रजा को अपमानित करके यहा की अपार सम्पत्ति कोहिनूर और तख्तताऊस तक को यहाँ से ले गये थे। तो इस प्रकार के दुर्बल राष्ट्र मे अन्यान्य दोष भी आ जाते हैं। अब देश के प्रहरी सयमी देशभक्त और वीर हो तो ऐसे राष्ट्र मे पाप और अशान्ति नही होती।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के तत्त्वावधान मे गाँव उत्तरौला

गौण्डा में ११ मुसलमान राजपूत शुद्ध हुए

दिनाक १६ ६ ८५ को १२ बजे आर्यसमाज उत्तरौला मे शुद्धि कार्य सम्पन्न हुआ। उसमे ११ मुसलमानो ने स्वेच्छा से यज्ञोपवीत धारण किया और सपरिवार वैदिक धर्म की दीक्षा ली। स्वामी सेवानन्द महामन्त्री हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति हरियाणा और ससारमणि आर्य जिसका भूतपूर्व नाम अब्दुल्ला था के प्रयत्नों से सफल हुई। इस कार्य मे आर्यसमाज उत्तरौला के प्रधान श्री ज्ञानेश्वर प्रसाद और मन्त्री श्री जगदीश प्रसाद जी उपाध्यक्ष डा० धर्मपाल आर्य, कोषाध्यक्ष श्री योगीप्रसाद महाशय छेदी-लाल जी उपस्थित हुए।

	पुराना नाम	नया नाम	पिता का नाम
१	लाल मोहम्मद	चन्द्र बहादुर सिंह	वारिस अली
		राम सवारी	पति—चन्द्र बहादुरसिंह
		रूपरानी	पुत्री— ,,
		चम्पा	,, ,, ,,
		पता	,, ,, ,,
		केतकी	,, ,, ,,
७	नूर मोहम्मद	अशोक विक्रम थापा	झलक शमशेर थापा
८	नूरजहा	सरोज देवी	पत्नी अशोक विक्रम थापा
९	हसीना	कु० आशा	पुत्री अशोक विक्रम थापा
१०	फरीदा	कु० शारदा	पुत्री ,, ,, ,,
११	सरोज देवी को एक बच्चा दो तीन दिन मे होने वाला है।		

प्रधान आर्यसमाज उत्तरौला (गोण्डा) मन्त्री आर्यसमाज उत्तरौला (गोण्डा)

हे आर्य! उत्साह ही बलवान् होता है, उत्साह से बढकर दूसरा कोई बल नही है। उत्साही मनुष्य के लिए ससार मे कोई भी वस्तु दुर्लभ नही है।

> निरुत्साह निरानन्द निर्वीर्यमरिनन्दनम्।
> मा स्म सीमन्तिनी काचित् जनयेत्पुत्रमीदृशम्॥

कोई भी माता ऐसे पुत्र को जन्म न दे जो उत्साह तथा आनन्द से हीन हो, जो निर्बल एवं शत्रुओ को प्रसन्न करने वाला हो।

ससार मे सबसे खराब दिवालिया वह है जिसने अपना उत्साह खो दिया है।

समाचार-सन्देश

समाधान कब और कैसे ??

असम और पंजाब समस्या का विकराल रूप देखकर कुछ दिनों के लिए लोगों के दिल में एक दहशत बैठ गई थी। परन्तु इनके शीघ्र टल जाने का कोई मार्ग न देख कर मजबूरन लोगों ने इनके साथ समझौता करके इन्हें अपने घर का सदस्य मान अपने आपको सामान्य करने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया।

अभी लोग अपने आपको परिस्थिति के अनुकूल ढालने का प्रयास ही कर रहे थे कि गुजरात के 'आरक्षण विरोधी आन्दोलन' ने अपना सर उठा लिया।

यहाँ प्रश्न इस आन्दोलन के औचित्य या अनौचित्य का नहीं है, बल्कि प्रश्न है लोगों की शान्ति का, सुख चैन का, जीवन और सुरक्षा का, आये दिन ये समस्या अपना नया ही रूप प्रस्तुत करती दिखाई देती है। 'आज यहाँ इतने मरे, आज वहाँ इतनी जानें गईं, आज छुरा घोंप कर दो की हत्या कर दी, आज से इतने घर बरबाद हो गये" आदि आदि। इस पर आकाशवाणी से प्रसारित समाचारों में भी एक अनूठापन होता है। हमेशा यही सुनाई देता है—"अहमदाबाद में हुई हिंसक घटनाओं में आज सात व्यक्तियों की मृत्यु हो गई और १८ घायल हो गये। इसके अतिरिक्त किसी अप्रिय घटना का कोई भी समाचार नहीं मिला। कुल मिला कर स्थिति शान्ति पूर्ण है।" आखिर ये शान्ति पूर्ण स्थिति कब तक बनी रहेगी?

आये दिन बढ़ती इन वारदातों ने सामाजिकों का जीवन पूर्णतया असुरक्षित कर दिया है। क्या सरकार के पास कोई भी ऐसा ठोस कार्यक्रम नहीं है जिसके तहत इस समस्या का कोई औचित्य पूर्ण हल निकाला जा सके? यों तो हमारी सरकार प्रतिदिन विश्वशान्ति की बात करती है, परन्तु क्या अपने घर को महाभारत बनाकर विश्व शान्ति की कल्पना की जा सकती है? क्या सरकार पर जन सामान्य के जीवन की सुरक्षा का कोई दायित्व नहीं है? यदि है तो आखिर उसका निर्वाह कब और कैसे किया जायेगा ??

प्रेषक—
गिरीशचन्द्र शास्त्री
४१२३ आर्य पुरा
सब्जी मण्डी दिल्ली—७

सम्पादक के नाम पत्र

तिरुनलवेली (तमिलनाडु) से छकर नकोइल तहसील के कदयालुरुती गांव का यह समाचार प्रकाशित हुआ है कि वहां ईसाई मिशनरी द्वारा संचालित प्राइमरी स्कूल में हिन्दू विद्यार्थियों को स्कूल में आने से इसलिए मनाही कर दी गई कि वे अपने मस्तक पर तिलक लगाये हुए थे। ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दू बच्चों को तिलक पोंछने के लिए मजबूर करने की यह घटना अत्यन्त सोचनीय है।

भारत में ईसाइयों के पोप की यात्रा अभी होनी है और ईसाइयों ने हिन्दुओं के रीति-रिवाज तथा मान्य धार्मिक परम्पराओं में बाधा पहुंचाने के रंग ढंग में तेजी शुरू कर दी है। ईसाइयों की ये हरकतें जारी रहीं तो आश्चर्य नहीं कि वे हिन्दू विद्यार्थियों को नाम बदलने के लिए भी मजबूर करें। ईसाई पंथ में असहिष्णुता बहुत पुरानी बात है। हिन्दू धर्म के प्रति वे घृणा भी फैलाते हैं। पोप के आगमन के अवसर पर बढ़ रही यह असहिष्णुता और घृणा उनके भारत दौरे से और अधिक मजबूत होने वाली है।

इसी का उदाहरण यह भी है कि केरल में निलाक्कल शिव मन्दिर के क्षेत्र में चर्च की स्थापना की गैरकानूनी मांग को फिर से उठाया जा रहा है। इसके लिए ईसाई चर्चों की ओर से २ करोड़ रुपये एकत्रित करने की मंशा घोषित हो चुकी है। ईसाइयों की इन हरकतों से सम्पूर्ण देश में असन्तोष व्याप्त है।

इसलिए हमारी सरकार को गम्भीरतापूर्वक यह सोचना चाहिए कि इस पवित्र देश में विदेशी ईसाई पोप की यात्रा की अनुमति देना कहां तक योग्य है? भारत स्वयं महान् धार्मिक देश है। हमारे यहां मानव कल्याण के लिए बड़े-बड़े साधु-सन्त हुए हैं। भारत में उपदेश देने के लिए हम विदेशी प्रचारकों की कोई आवश्यकता नहीं है।

(स्वामी बोधानन्द)
सनातनधर्म मन्दिर,
लक्ष्मीबाई नगर, नई दिल्ली

कविराज बनवारी लाल शांदा का देहावसान

आर्य जनता को यह जानकर दुःख होगा कि आर्यसमाज के उपदेशक एवं कवि डा० बनवारी लाल शादा का हृदय गति बन्द हो जाने से देहावसान हो गया। शादा जी आर्यसमाज माडल बस्ती के वर्षों मन्त्री एवं प्रधान रहे और प्रति रविवार को आर्यसमाजों में भजनोपदेश के लिये जाते थे। अन्तिम शोक दिवस बुधवार २६।६।८५ को सायंकाल ४ बजे आर्यसमाज मोडल बस्ती (सीदीपुरा) में हुआ।

गुरुकुल करतारपुर में अब टाईपिंग की शिक्षा भी

आर्यसमाज ने जन-जन तक हिन्दी पहुंचाने का जो सराहनीय कार्य किया, भारतीयता को जीवित रखने में उसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। उसी का परिणाम है कि हिन्दी भाषा आज राष्ट्रभाषा के पद को प्राप्त है। यह हम सब के लिए गौरव का विषय है परन्तु अंग्रेजी के प्रभुत्व के कारण हिन्दी अभी हमारे कार्यालयों में स्थान नहीं ले पायी। ट्रस्ट की अन्तरंग सभा की सत्प्रेरणा तथा सहयोग से श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय ने अक्तूबर १९८४ से छात्रों के लिए टंकण कला (टाइप) का निःशुल्क व्यवस्था कर प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय पग उठाया है। इतना ही नहीं अपितु हमें यह भी विश्वास दिलाया गया कि हमारे गुरुकुल से विद्याधिकारी वा शास्त्री कक्षा उत्तीर्ण छात्रों को जो कि पत्रलेखन कला तथा गणित में विशेष गति रखते हों, उन्हें अपने औद्योगिक कार्यालयों में स्नातक के समान वेतन तथा सुविधा पर कार्य प्राप्त कराने में सहयोग दिया जायेगा। हमें पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी और संस्कृत प्रेमी उद्योगपति हमारे विद्यार्थियों को अपने कार्यालयों में स्थान देकर ट्रस्ट के इस महान कार्य में अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

हर्ष का विषय है कि जुलाई १९८५ से छात्रों को बुककीपिंग तथा अकाउण्टेंसी सिखाने की भी व्यवस्था की जा रही है। इन सभी कार्यक्रमों से जहां छात्रों का भविष्य उज्ज्वल एवं समुन्नत होगा वहाँ राष्ट्र की भी महान् सेवा होगी।

संस्कृत धर्मशिक्षा तथा स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले विज्ञान, गणित, अंग्रेजी आदि सभी विषयों के साथ साथ उक्त कोर्सों का छात्रों को बहुत लाभ होगा। इस प्रकार इस विद्यालय के छात्र अब स्कूलों में शिक्षक के रूप में, कर्मकाण्ड कराने में पुरोहित के रूप में धार्मिक संस्थाओं में प्रचारक के रूप में, तो कार्य कर ही सकेंगे इसके अतिरिक्त सरकारी कार्यालयों में बैंकों में, औद्योगिक संस्थानों में टाईपिस्ट, के रूप में तथा अकाउण्टेण्ट के रूप में भी कार्य कर सकेंगे।

इच्छुक अभिभावक अपने बच्चों को दाखिल कराने के लिए नीचे लिखे पते पर तुरन्त सम्पर्क करें। नया प्रवेश १५ जून १९८५ से आरम्भ है। छात्रों का हिन्दी माध्यम से कक्षा ५ पास होना जरूरी है।

प्राचार्य
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत
महाविद्यालय, करतारपुर, १४४८०१
जिला जालन्धर (पंजाब)

लुधियाना में विशाल वैदिक सत्संग सम्पन्न

बच्चों के चरित्र निर्माण धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा के लिए प्रेम माडल हाई स्कूल लुधियाना में आर्य युवक सभा की ओर से शनिवार १५.६.१९८५ को एक वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। सत्संग का आरम्भ एक यज्ञ से हुआ जो कि प्रसिद्ध विद्वान् पं० रामकुमार, जी आर्य ने सम्पन्न कराया। श्री प्रेम जी वर्मा सपरिवार यजमान बने। इस अवसर पर श्री रोशनलाल जी शर्मा, संयोजक आर्य युवक सभा पंजाब के नेतृत्व में वेद प्रचार भजन मण्डली ने प्रभुभक्ति, मानवता तथा देश प्रेम के गीतों एवं भजनों पर आधारित विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्री कैलाश जी शर्मा प्रधान श्री मन्दिर कमेटी ने सभा की ओर से श्री प्रेम जी वर्मा को वैदिक साहित्य भेंट किया। श्री शर्मा जी ने नवयुवकों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आर्य युवक सभा ने वैदिक धर्म की जो ज्योति जलाई है, इससे जनता को एक नया रास्ता मिलेगा। श्री प्रेम जी वर्मा ने सभी महानुभावों का धन्यवाद करते हुए कहा कि उनका स्कूल बच्चों की प्रत्येक प्रकार की उन्नति के लिए अर्थात् शारीरिक मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए कटिबद्ध है। बच्चों की आध्यात्मिक उन्नति के लिए भविष्य में भी इस प्रकार के आयोजन किए जाएंगे। इस सत्संग में बच्चों के अभिभावकों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। आर्य युवक सभा द्वारा सड़क पर तथा गली में ओ३म् के झण्डे लगाए गए, प्रबन्ध अति उत्तम था।

अरुण भारद्वाज, महामन्त्री
आर्य युवक सभा, लुधियाना
७५१, सिविल हस्पताल रोड
लुधियाना, (पंजाब)

निर्वाचन

आर्यसमाज चूनामण्डी पहाड़गंज नई दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन ९.६.८५ रविवार को प्रातः ९-३० बजे श्री आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री प्रियतमदासजी रसवन्त
उपप्रधान—श्री बन्सीलाल जी पाहूजा
उपप्रधान—श्री गणेशदास जी
उपप्रधान—श्री प्रेमप्रकाश जी चोपड़ा
उपप्रधान—श्री सुरेन्द्र जी पाहूजा
मंत्री—श्री श्यामदास जी सचदेवा
उपमंत्री—श्री सतीश जी भाटिया
उपमंत्री—श्री विजय जी पाहूजा
प्रचार मंत्री—श्री देवराज जी राजपाल
कोषाध्यक्ष—श्री चिरंजीत लाल जी दुआ
पुस्तकाध्यक्ष—श्री चन्द्रप्रकाश कपूर
लेखा निरीक्षक—श्री अजयकुमार कपूर
अधिष्ठाता आर्य वीरदल—सतीश जी भाटिया
सहायक—श्री विजयकुमार पाहूजा

श्यामदास जी सचदेवा
मंत्री

"आर्य सन्देश"

वैदिक संस्कृति के अमृतमय उपदेश को,
पहुंचा रहा है अपनी रफ्तार तेज कर।
वैदिक-सिद्धान्त प्रतिपादित पुनीत प्रिय,
विद्वानों की लेखनी, सुशोभित हर लेख पर ॥
तर्क का कुठार लिये ऋषि का चुकाता कर्ज,
देता है सद्गुणों को हृदय में रेख कर।
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का है मुख पत्र,
शीघ्र ग्राहक बनिये सिर्फ बीस रु० भेजकर ॥

लेखक
—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
(अधिष्ठाता वेदप्रचार)

वेद प्रवचन

आर्यसमाज सुदर्शन पार्क के तत्वावधान मे सामवेद पारायण यज्ञ(पारिवारिक)२८ मई ८५ से प्रारम्भ हुआ जिसकी पूर्णाहुति ३० जून को सम्पन्न होगी। प्रख्यात विद्वान् विद्यानन्द जी सरस्वती भी पधारेंगे। आर्य जगत् के और भी गण-मान्य विद्वान् नेता पधारेंगे।

कार्यक्रम प्रात ८०० स ११-३० बजे तक रहेगा यज्ञ पुरोहित विद्वान् श्री भारत मित्र ज शास्त्री हैं। सभी धर्म-प्रेमी सज्जनो से प्रार्थना है कि समय से पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढाएं एव धर्म-लाभ करें।

धन्यवाद।

निवेदक
सुदेश चन्द ढींगरा, मन्त्री

प्रवेश आरम्भ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से संबद्ध मातृ मंदिर कन्या गुरुकुल डी ४१/१२८, रई बस्ती, रामापुरा वाराणसी मे शिशु से आचार्य तक मे प्रवेश आरम्भ है। वैदिक शोध छात्राओं को प्राथमिकता। उग्रपथी-पीड़ित परिवार तथा हरिजनों की पुत्रियो को नि शुल्कता मे वरीयता।

सम्पर्क सूत्र

डा० धर्मपाल आर्य	सूर्यदेव
मन्त्री	प्रधान

डा० पुष्पावती
मुख्याधिष्ठात्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन . ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वर्ष ६ अक ३३ रविवार, ७ जुलाई, १९८५ आर्य सवत्सर १९६०८५३०८५ आषाढ २०४२ दयानन्दाब्द—१६१

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

ले०-सोमदेव आर्य, रिसर्च स्कालर

जो जाति या समाज अपने पूर्वजो एव महापुरुषो को भुला देती है वह धर्म पथ से च्युत हो जाती है। कारण यह है कि मनुष्य अनुकरणीय प्राणी है। दूसरो के शुभ कर्म देख या किसी की प्रशसा सुनकर उसे भी सुकर्म करके मान एव गौरव प्राप्त करने की अभिलाषा होती है। जिन लोगो के हृदय पटल पर अपने महाधनो के सुकृत्यो की स्मृतियां अकित रहती हैं वे उत्तरोत्तर उन्नति पथ पर अग्रसर रहते है। पर जिन लोगो के सामने बडो का उत्तम आदर्श नही होता उनकी समाज एव जाति का इतिहास नष्ट हो जाता है।

आर्यसमाज ने जाति और देश को जागृत करके जगत् मे प्राचीन आर्य सस्कृति को पुनर्जीवित करने का शुभ कार्य किया है। ऋषि दयानन्द जी ने आर्य जाति को तप, त्याग, धर्म, सत्य, न्याय और परोपकार की दीक्षा का मार्ग दिखलाया।

रात्रि का काला कलुषित घोर अन्धकार प्रतिदिन प्रकाश के हाथो पराजित होकर भी भुवन भास्कर को ढक लेने का कुप्रयास करने का धृष्टता से बाज नही आता। ऋषि दयानन्द सूर्य को अनेक बार रूढिवाद के बादलो ने ढकना चाहा।

जब स्वार्थी दम्भी एव दुष्ट जन ऋषि का सामना न कर सके तो प्राण लेने पर उतारू हो गये। कितनी बार दीप बुझाना चाहा पर बचाने वाला बचाता रहा।

पण्डित गुरुदत्त जी का जन्म २६ अप्रेल १८६४ तदनुसार ६ वैशाख १९२१ को मुलतान मे हुआ था [आपके पिता का नाम रामकृष्ण था। लाला रामकृष्ण फारसी के योग्य विद्वान् तथा पजाब शिक्षा विभाग मे अध्यापक थे। गुरुदत्त जी से पूर्व रामकृष्ण जी की गृहस्थ-वाटिका मे कई पुष्प खिले परन्तु वे सभी थोडे-थोडे समय के पश्चात् मुरझा गये।

प्रारम्भिक शिक्षा घर पर होने के पश्चात जब आप ८ वर्ष के थे तब लाला रामकृष्ण जी ने आपको डिस्ट्रिक्ट स्कूल झग मे प्रवेश करा दिया।

जब आप दशम कक्षा मे थे आप के साथ लाला चेतनानन्द व भक्त रैमल जी भी पढते थे। ये दोनो युवक आर्यसमाज के सदस्य थे। इन्ही की प्रेरणा से आपकी रुचि आर्य साहित्य व आर्यसमाज मे लगी। परिणाम स्वरूप २० जून १८८० के शुभ दिन गुरुदत्त जी ने आर्यसमाज की सदस्यता का फार्म भर दिया और विधिवत् आर्यसमाज के सदस्य बन गये।

उन दिनो हिन्दुओ मे बाल-विवाह की प्रथा थी। गुरुदत्त जी अभी स्कूल मे पढ ही रहे थे कि उनका विवाह सेवीबाई के साथ कर दिया।

१८८१ मे गुरुदत्त जी का स्कूल जीवन समाप्त हुआ और पजाब विश्वविद्यालय लाहौर मे एम० ए० प्रथम वर्ष मे प्रविष्ट हुए। पढने में आप तेज थे। अध्यापक व इन्स्पेक्टर इस होनहार युवक को देखकर आश्चर्यचकित हो जाते थे।

गुरुदत्त जी के विद्यार्थी जीवन के साथ और कई अशो मे उनके शिष्यो मे से कुछ नाम पजाब के सार्वजनिक जीवन मे ख्याति पा चुके है। लाला हसराज दीवान नरेन्द्रनाथ, लाला भगतराम लाला लाजपतराय ये लोग पडित जी के केवल कालिज मित्र ही न थे, वे उनके धार्मिक ऊहापोह के भी कई अशो मे साथी थे।

गुरुदत्त जी ने १८८२ मे एक स्वतन्त्र वाद विवाद सभा' की स्थापना की। सर्वसम्मति से गुरुदत्त जी को मन्त्री बना दिया गया। लाजपतराय सरीखे तथा उनके सभी प्रमुख मित्र सदस्य बन गये। सब की आयु लगभग २० वर्ष की थी।

१८८३ मे ऋषि दयानन्द जी को दूध मे काच व विष मिलाकर पिलाया गया। फलस्वरूप उनकी स्थिति चिन्ताजनक हो गयी। चिकित्सा की गई पर सब व्यर्थ। शीघ्र ही यह समाचार सर्वत्र फैल गया। सब स्थानो से श्रद्धालु ऋषिराज की सेवा के लिए राजस्थान की ओर चल पड। लाहौर आर्यसमाज की अतरग सभा ने जीवनदास व गुरुदत्त को सेवा के लिए भेजने का निश्चय किया। सन १८७८ मे देव दयानन्द मुलतान आये पर बालक गुरुदत्त उस समय झग मे बैठा था तब गगा घर आई पर प्यास न बुझा पाया। अब प्यासा स्वय गगा के पास जा रहा है। २६ अक्टूबर साय को दोनो अजमेर पहुच गये।

आगरा गेट के बाहर भिनाय हाउस मे महाराज विराजमान थ सारे शरीर पर फफोले थ। हिचकियां आ रही थी। डा० लक्ष्मणदास की औषधिया चल रही थी। गुरुदत्त जो ऋषिवर की भयकर बीमारी के कारण उनसे कोई वार्तालाप भी न कर पाये। केवल दर्शन हुए। पर जो चीज डार्विन और स्पेन्सर, न्यूटन और बेकन से न मिल सकी वह मिल गई। दर्शनमात्र से जीवन मे शाति प्राप्त हो गई। जन्म मगलवार को हुआ था और पुनर्जन्म भी मगलवार को हो गया।

घर आकर दो कपडो पर आर्यसमाज के पाँच पाँच नियम लिखवा लिये। प्रात काल जलपान किया। फिर एक कपडा आगे लटका लिया, दूसरा पीठ से बाँध लिया और चलने लगे ऋषि सन्देश सुनाने के लिए। देवी ने देखा तो विस्मित हो गई। हाथ पकडकर बोली—'पतिदेव, यह क्या हाल बनाया है ? क्या कहेंगे लोग ? 'उत्तर मिला' भोली तू नही जानती। यह जीवन मेरा नही रहा। मैं इसे ऋषि के चरणो मे अर्पित कर आया हू। अब रोम-रोम उनकी धरोहर है देवी। कोई क्या कहेगा कोई क्या कहेगा—इसकी चिन्ता कैसी ?

पडित गुरुदत्त जी ने ऋषिवर को समझ लिया। वे जानते थे कि लोग अभी उस दिव्य देवता को समझ नही पाये। समझ लेगे तो इनका भी यही हाल हो जायेगा। इसलिए आर्यसमाज अमृतसर के उत्सव पर भाषण देते हुए उन्होने कहा था। ऋषि के महत्त्व का लोगो को समय बीतने पर पता लगेगा, और वह भी जब विद्वान् पक्ष त्याग कर उनके ग्रन्थो पर विचार करेंगे। स्वामी जी के ग्रन्थो को पढने मे उनकी विशेष रुचि थी। इसलिए वे कहा करते थे कि मैने १८ बार सत्यार्थप्रकाश पढा। पर मैने जब-जब पढा तब तब नई से नई शिक्षा और जानकारी प्राप्त हुई।

१ जून १८८६ का दिन डी० ए० वी० स्कूल की स्थापना के लिए निश्चित किया गया। अत ३१ मई

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सत्संग वाटिका

ऋषि वसिष्ठ । देवता वरुण छन्द त्रिष्टुप्।

अन्वय —य आग चक्रुष चित मृ ययानि वरुण वयम अनागा स्याम अदिते व्रतानि ऋधन्त यूयम स्वस्तिभि सदा न पात ॥

शब्दार्थ — (य) जो प्रभु (आग) अपराध (चक्रुष) करने वाले के प्रति (चित) भी (मृळयाति) अपना दयाभाव हो रखता है। (वरुण) उस चुनने योग्य प्रभु के सम्मुख (वयम) हम (अनागा) निष्पाप (स्याम) रहें। (अदिते) उस अखण्ड देव के (व्रतानि) मर्यादाओं को (ऋधन्त) जानकर आचरण करते हुए विद्वज्जन (यूयम) आप सब (स्वस्तिभि) अपने कल्याणप्रद उपदेशों और परामर्शों से (सदा) सब समयों में (न) हमारी (पात) रक्षा कीजिये।

व्याख्या मन्त्र में मुख्यरूप से दो बात कही गयी है। पहली यह कि प्रभु की दया और वात्सल्य का हाथ तो सदा ही जीव पर रहता है किन्तु मानव जीवन की सफलता इसमें है कि वह मर्यादा का पालन करता हुआ निष्पाप और पवित्र रहकर प्रभु की आज्ञा में उपस्थित रहे। दूसरी यह कि विद्वानों का यह कर्तव्य है कि वे उस अखण्डव्रती प्रभु के न्याय नियमों को अपनी सूक्ष्म बुद्धि से जानकर सामान्यजनों का हितकारक उपदेश से पवित्राचरण का सदा परामर्श देते रहें। अब मन्त्र के प्रत्येक भाग पर क्रमश विचार कीजिए।

मन्त्र के प्रथम भाग में कहा गया है कि प्रभु अपराध करने वाले पर भी दया भाव रखता है यह बात ठीक समझनी है। इसका यह अभिप्राय नहीं कि प्रभु दुष्कर्म करने वाले को दण्ड न देकर छोड़ देता है और उनको दण्ड न मिलकर क्षमा मिल जाती है। शास्त्र यह बताते हैं कि अशुभ और शुभ कर्मों का फल दुःख और सुख के रूप में अवश्य भोगना पड़ेगा। न्याय का अर्थ भी यही है कि दुष्कर्म का जो फल बनता है वह समय पर उसके सम्मुख आता है उसमें वह छूट नहीं है। अपने किए कर्म का फल है अतः प्राण मुक्त होने तक भी शुभ अशुभ कर्म करके उनका फल भोगना पड़ेगा। इस बात को कहने का तात्पर्य यह है कि अपराधी पर भी दया का भाव रखने का अर्थ उसे क्षमा करना नहीं है किन्तु उसके कल्याण की भावना है। अपराधियों के प्रति भी प्रभु की यह भावना है कि वे अपने कुछ अनाथ और विपदाओं की सहायता करते हैं। वे अपने मन में यह धारणा बनाते हैं कि हानि तो एक का पहचान और लाभ पचास को पहुँचाकर उनकी शुभ कामनाएँ प्राप्त की तो अपना तो पुण्य ही बढ़ रहा

प्रभु अपराधी पर भी कृपाभाव रखते हैं

लेखक—पं० शिवकुमार शास्त्री

> यो मृळयाति चक्रुषे चिदागो वयं स्याम वरुणे अनागाः ।
> अनुव्रतान्यदितेर्ऋधन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
>
> ऋ० ७।८७।७॥

★

है। इसी भ्रम में वे इस पाप में लगे रहते हैं।

किन्तु वैदिक सिद्धान्त यह है और बुद्धि भी इस ही स्वीकार करता है कि हठ को सृष्टि के पाप का फल कर्ता को किसी न किसी कष्ट के रूप में चाहे वह कष्ट शारीरिक मानसिक रूप में हो या किसी और रूप में सहना पड़ेगा। साथ ही पचास व्यक्तियों को जो लाभ पहुंचाया उसका फल भी सुख अथवा लाभ के रूप में उस प्राप्त होगा। प्रभु कर्मफल की व्यवस्था पक्की है अतः पूरी नापतोल से फल अवश्य मिलेगा। वेद और संस्कृत साहित्य में अर्य शब्द स्वामी परमात्मा और दुकानदार का वाचक है। इन तीनों में एक ही नियम काम करता है कि ये कर्मफल हिसाब से देते हैं और धाधुन्ध नहीं। किसी मित्र अथवा सम्बन्धी के घर आप भोजन करने जाएं और खाने के लिए गुलगुले और कलाकन्द मिठाइयां और पकवान तैयार किये गये और सब कुछ करने पर भी प्रेम और नम्रता प्रकट करने के लिए कहेगा कि अमुक अमुक कारण से भोजन बढ़िया तो नहीं बन सका फिर भी रूखा सूखा जैसा है स्वीकार कीजिये। अब आप देखिये कितना तैयार करने पर भी यह कहा जा रहा है कि कुछ नहीं बन सका

इसके विपरीत वणिक की दुकान का दृश्य सर्वथा विपरीत होगा। पाव या छटांक के लिए भी ग्राम मिलाकर देने के लिए पाना गहलवे से कहा तराजू के पलड़े में ग्राम डालने के बाद में ही तराजू का कांटा पर दृष्टि जमा देगा और अपना घर भरता हुआ कहेगा कुछ ही ढीला होने पर कहेगा—लीजिये। आप यदि उसको कुछ कम दबकर यह कहें कि आपने इसको सीधा कहा है कुछ और दो तो वह तुनककर उत्तर देगा कि यह सारे ग्राम पर सारा माल चाहे दुकान का ३५० ग्राम नाप तोल पर रखी है। स्वामी भी भृत्य को परिश्रम के अनुसार ही वेतन देता है। ठीक इसी प्रकार प्रभु भी कर्मानुसार ही फल देता है हां प्रभु के दण्ड विधान में भी हित उसी प्रकार समाविष्ट रहता है जैसे अपराध करने पर माता बच्चे को

चपत लगाती हुई मन में उसके सुधार की भावना ही रखती है और दण्ड देते हुए भी उसका हृदय द्रवित रहता है। इसे एक उदाहरण से समझिये।

प्रभु ने हमें दस ज्ञानेन्द्रियां अपने कर्म सम्पादन के लिए दी हैं। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह पहले बुद्धिपूर्वक ठीक ज्ञान प्राप्त करे और फिर ज्ञानानुसार उसका फल प्राप्त करने के लिए कर्म करे। उचित प्रकार से देखने सुनने की मर्यादा वेद ने बतायी— भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। हम कानों से ऐसी बात सुनें जो मस्तिष्क और हृदय में सद्विचार उत्पन्न करें और आंखों से ऐसे दृश्य देखें जो प्रभु की महिमा को हृदय पटल पर अंकित करें। वन उपवन के नाना आकार प्रकार रूप रंग गन्ध में सुशोभित पौधे लता और पुष्प प्रभु की कारीगरी पर मुग्ध करने वाला हो या किसी स्वस्थ सुन्दर युवक और युवती का रूप सुधा एक सात्विक आह्लाद मन में उत्पन्न करे और प्रभु के कौशल पर मुग्ध होकर हमारे मुख से सहसा निकल पड़े —

> वो खुद कैसा है जिसने इन
> हसीनों को बनाया है।
> इन्हें जब देखते हैं हम तो
> उसकी याद आती है।

इस प्रकार के सद्विचार हमें उदात्त आचार के लिए प्रेरणा देंगे और हमारी इन्द्रियां वास्तव में इन्द्र (आत्मा) के हित सम्पादन में सहायक होंगी। इसके विपरीत रजोगुण और तमोगुण का चश्मा चढ़ने पर दुनिया बदल जायगी और उसके अनुसार विचार भी व्यक्ति और समाज को गिराने वाले होंगे। इस स्थिति का किसी उर्दू के शायर ने अच्छा चित्र खींचा है—

> दिल के दुश्मन हैं
> उनके शौक में रहती हैं आंखें।
> जान का मालिक जो है
> उससे नजर मिलती नहीं॥

जब व्यक्ति एक बार पथभ्रष्ट हो जाता है तो फिर उसे मार्ग पर लाना दुःसाध्य होता है और परिणामस्वरूप हमें प्रभु की न्याय व्यवस्था के अनुसार दण्ड भोगना पड़ता है।

हम सांसारिक न्याय व्यवस्था में देखते हैं कि यदि प्राप्त शक्ति और साधन का कोई व्यक्ति दुरुपयोग करता है तो उसे उस वस्तु का अनधिकारी घोषित कर के वह वस्तु उससे छीन ली जाती है ताकि उससे वह अपना और समाज का अधिक अहित न करे। जैसे कोई व्यक्ति अपने जीवन और सम्पत्ति की दुष्टों से रक्षा करने के निमित्त एक बन्दूक अथवा रिवाल्वर रखने की अनुमति प्राप्त करने के लिए सरकार को प्रार्थना पत्र दे। सरकार के अधिकारी विहित प्रक्रिया को अपनाकर यह जांच करें कि जिस उद्देश्य के लिए शस्त्र रखने का अधिकार मांगा गया है, वह कहां तक ठीक है? प्रार्थना उचित प्रतीत होने पर उसे शस्त्र रखने का प्रमाणपत्र लाइसेंस दे दिया जाता है और वह उसका शिष्ट मर्यादा में उपयोग करता है। उस शस्त्र से वह न केवल अपने जीवन और धन की रक्षा करता है अपितु पास पड़ोस में संकट उत्पन्न होने पर उनको शरण देता है। इस आचरण से उसका चित्त भी प्रसन्न होता है और समाज भी उसका यशोगान करता है। इस प्रकार वह चाहे जब तक उस अधिकार का प्रयोग कर सकता है।

अब इसके दुरुपयोग के उदाहरण पर भी विचार कीजिये। सरकार से शस्त्र का लाइसेन्स तो लिया अपने जीवन और धन की रक्षा के लिए किन्तु शस्त्र के आते ही विचार बदल गये और उस शस्त्र के द्वारा दूसरों के धन का अपहरण करने लगे। नैतिकता में दुष्कर्म की भी चर्चा लोगों में होने लगी और एक ने साहस करके सरकार में रिपोर्ट भी कर दी। सरकार ने छानबीन करने पर शिकायत ठीक पायी तो आज्ञा देकर उसका लाइसेंस रद्द कर दिया और शस्त्र छीनकर शस्त्रागार में जमा कर लिया।

ठीक यही प्रक्रिया हम प्रभु की व्यवस्था में भी देखते हैं अपितु ऐसा प्रतीत होता है कि मनीषियों ने लोक में मर्यादा को बनाए रखने के लिए प्रभु की व्यवस्था के अनुसार ही अपना कानून बनाया और तदनुसार आचरण किया। अब इसी उदाहरण को अपनी इन्द्रियों पर घटाइए। जैसे पूर्व वर्णित उदाहरण में आंख का उल्लेख हुआ है आंख के द्वारा दृष्टि की शक्ति का दुरुपयोग हुआ और इसने द्रष्टा के वासनामय संस्कारों को भड़काया। सद्विचार कभी कभी ग्लानि और पश्चात्ताप की भावना को उभारते हैं किन्तु वे वासना की आंधी में उड़ जाते हैं। इस स्थिति में मनोदशा का चित्रण कवि बिहारी ने बड़े स्वाभाविक रूप में किया है—

> लाज लगाम न मानहीं
> नैना मो बस नाहिं।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

★ वचन-सन्देश ★

राजनीति और धर्म

मेरी सत्यनिष्ठा मुझे राजनीति के मैदान मे खीच लाई है : और मैं जरा भी सकोच किये बिना और फिर भी पूरी नम्रता के साथ कह सकता हूँ कि जो लोग यह कहते हैं कि राजनीति मे धर्म का कोई वास्ता नही, वे नहीं जानते कि धर्म का अर्थ क्या है ?

आत्मकथा (अग्रेजी) १९४८, पृष्ठ ६१५

मेरे लिए धर्म रहित राजनीति बिल्कुल गन्दी चीज है, जिससे हमेशा दूर रहना चाहिए। राजनीति का राष्ट्रो के हित से सम्बन्ध है। और जिस चीज का सम्बन्ध राष्ट्रो के हित से है, उसके साथ उस मनुष्य का सम्बन्ध होना ही चाहिए, जिसकी धार्मिक वृत्ति हो या दूसरे शब्दो मे जो ईश्वर और सत्य का शोधक हो। मेरे लिए ईश्वर और सत्य समानार्थक शब्द है। और अगर कोई मुझ से कहे कि ईश्वर असत्य या अत्याचार का ईश्वर है, तो मै उसको पूजा करने से इन्कार कर दूंगा। इसलिए राजनीति मे भी हमे स्वर्ग का राज्य स्थापित करना होगा।

—महात्मा गाधी यगइडिया, १८-६-२५

सम्पादकीय

मौसम पर वनों का प्रकोप

प्राचीन काल से ही भारतवर्ष अपनी ज्ञान विद्या की समृद्धि, धन वैभव की समृद्धि के कारण विख्यात रहा है। यहा की बर्फ से ढकी पर्वत की चोटिया, उनकी कोख से फूटते झरने, अठखेलिया करती नदिया, मीलो दूर तक फैले ऊचे ऊचे पेडो से भरे जगल, फसलो फलो से लदे सागर तक फैले भू भाग विदेशियों तक को आकर्षित करते रहे हैं। गाव गाव, शहर-शहर, गली-गली, फलदार पेडो के कारण सब कुछ हरितिमा से भरा-भरा दृष्टिगोचर होता था किन्तु जैसे-जैसे वनो की पेडो की अन्धाधुंध कटाई होने लगी धरती नग्न होती रुष्ट होती चली गयी। बादल रूठने लगे और रेगिस्तान के जबडे फैलने लगे। रेगिस्तान के बढते काले साये से बचने के लिए सरकार पेडो को लगाने में व्यस्त है। किन्तु जितनी तेजी से जगलो की कटाई हो रही है उससे भारतीय मौसम पर भी काफी असर पडा है। १८६४ से लेकर अब तक हुए अनुसन्धान से पता चलता है जगलों के कम होने से किसी भी क्षत्र की वर्षा निश्चित रूप से कम हो जाती है। और जगलो के बढने से छ प्रतिशत तक की बढ़ोतरी होती है। १९०९ मे मौसम वैज्ञानिक डा० ब्लाड ने यह बताया था कि वर्षा जगलो के कारण १० प्रतिशत अधिक होती है। भारत में प्राचीन काल से यह माना जाता है कि वनो पर ही वर्षा निर्भर है। इम्प्रूवमेन्ट आफ इडियन एग्रीकलचर नामक रिपोर्ट में डा० विलकर ने नीलगिरि की पहाडियो मे ऊटकमड तथा उसके आसपास के क्षेत्रो मे आंकडे एकत्र कर लगभग सिद्ध कर दिया है कि जगलों से वर्षा का सीधा सम्बन्ध है। नीलगिरि की पहाडिया १८७० के पहले वृक्षविहीन थी। जून जौलाई तथा अगस्त के वर्षा के महीनो को छोडकर यह आंका गया कि १८७० से ७४ तक वर्षा के दिनों की सख्या ३७४ थी। इसके बाद यहा वृक्ष लगाये गये और जगल फैलने लगे। १८८६ से ९० तक जब काफी जगल फैल गये थे उस समय वर्षा के दिनो की सख्या ४१६ आकी गया। कहने का अभिप्राय यह है ज्यों-ज्यों जगल फैलते गये वर्षा के दिन भी बढते चले गये। छोटा नागपुर का उदाहरण देकर मौसम वैज्ञानिक डा० रगनाथन ने इस बात की पुष्टि की है जगलों का होना वर्षा के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा आज से ५० या ६० वर्ष पूर्व छोटा नागपुर मे जब काफी जगल थे उस समय यहा गर्म मौसम मे भी दोपहर के बाद बौछार आ जाया करती थी। इस कारण यहा का मौसम इतना ठडा रहता था कि यहा चाय की खेती आसानी से हो जाया करती थी। जैसे-जैसे जगल कटने लगे वर्षा की बौछारों का आना बन्द हो गया मौसम और वातावरण पर प्रतिकूल असर पडने से चाय की खेती भी बन्द हो गयी।

जगलों से वर्षा के सम्बन्ध का अध्ययन इडियन इन्स्टीटयूट आफ साइन्स बेंगलूर की डा० सुलोचना गाडगिल ने किया तो उन्होंने कहा—जगलों के कारण वायु का तापमान घट जाता है तथा पत्तियों से वाष्पोत्सर्जन के कारण वाष्प घनत्व बढ जाता है जिससे वर्षा होती है। वृक्षो का भूमि पर घनत्व तथा पत्तियों को धारण करने की अवधि भी वर्षा के वितरण तथा मात्रा को नियन्त्रित करती है। उन्होने यह भी देखा कि पतझड वाले वृक्षों की प्रजातियां सदाबहार वाली प्रजातियों की तुलना में कम आर्द्रता बनाए रखती है। अत यदि सदाबहार वनो की जगह पतझड वाली प्रजातिया लगाई जाये तो वर्षा कम हो जाती है। लखनऊ के पोलयो बोटेनिक्स रिसर्च इन्स्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने राजस्थान की खारे पानी की झीलो के नीचे दबे जीवाश्मो का अध्ययन कर यह पाया है कि पहले इस क्षेत्र मे सघन जगल थे। धीरे-धीरे जगल कटते गये वर्षा कम होती गयी और रेगिस्तान फैलने लगा। अण्डमान निकोबार द्वीपसमूह, बिहार के रांची क्षेत्र, आसाम के डिब्रूगढ तथा बम्बई के सान्ताक्रूज क्षेत्र मे भी वर्षा की कमी का कारण जगलो और पेडो का घटना ही बताया गया है। इथोपिया मे तथा अफ्रीका के २५ देशो मे अकाल के प्रकोप के कारणो मे एक बात यह भी कही जाती है कि वर्षा के न होने मे जगलो की कटाई का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

अत इस विषय पर मनुष्यमात्र को विचारना चाहिए तथा नगरो शहरों मे फैलते सीमेन्ट के जगलो मे पेडो की हरियाली भी बसायी जानी चाहिए।

—यशपाल सुधांशु

चुनौतियाँ और उत्तर

डा० पुष्पावती आचार्या
मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी

आर्यसमाज के सम्मुख जोरदार चुनौतियां हैं। हां व चुनौतियां कि जिनका उत्तर देना ही होगा यदि न दिया तो इसकी समाप्ति निश्चित है। यह कटु है पर है सत्य। कटु औषधि की तरह इसे पीना ही चाहिए अन्यथा । कोई भी समाज जब तक अपने घटकों को अपने में समेट कर रख सकता है तब तक वह सजीव शक्ति से आप्लावित रहता है और जब उसके घटक विशेषकर निष्ठावान् घटक अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति एवं सुरक्षा के लिए दूसरे समुदायों का मुंह ताकने लगते हैं या दूसरे समुदायों का अंग बनते हैं तब समझना चाहिए कि उस समाज में रोग लग रहा है उसकी पाचन शक्ति कुंठित हो रही है और वह दुर्बल होता जा रहा है। जब चेतावनी देने पर भी उसके मुखिया या कर्णधार न चेतें तो समझना चाहिए कि रोग असाध्य है।

आर्यसमाज ने राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए तो अपने सदस्यों को दूसरे दलों में जाने की खुली छूट दे ही रखी थी पर अब संस्कृति रक्षा, राष्ट्र रक्षा — राष्ट्रीय संकट के समय भी उसके सक्रिय घटक आर्यसमाज में कार्यक्षेत्र न पाकर निराश होकर दूसरे संगठन की ओर जा रहे हैं तो आर्यसमाज की स्थिति क्या है इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

अतीत में भी आर्य जाति के पतन व विघटन का कारण यही था पावन शक्ति की कमी, तब तो अविवेक के कारण रूढ़िग्रस्त समाज ने अपना विनाश किया था। अब तो ऋषि दयानन्द ने विवेक रूप का दीपक देकर पौरुष ओज व तेज का सम्बल थमा दिया है पर ये सम्बल हमारे नेतृत्व वर्ग में कुण्ठित हो रहे हैं। नेतृत्व प्रधान लोगों का यह अनिवार्य कर्तव्य व उत्तरदायित्व होता है कि वे समाज में नये शक्तिस्रोतों का अन्वेषण करें नई-नई प्रतिभाओं से इसे युक्त करें अग्रगामी पीढ़ी के लिए नये प्रकाशस्तंभ तैयार करें।

दूसरे शब्दों में जीवनधारा के प्रवाह को सर्वदा अविरल रखें।

पर यहां उल्टी बात हो रही है। जो भी नया शक्ति-स्रोत नूतन प्रतिभा मार्ग खोजती है, उसे निरुत्साहित करके या तो दबा दिया जाता है, या पीछे धकेल दिया जाता है अथवा उसके लिए कोई भूलभुलैया का जाल रच दिया जाता है जिसमें उलझ कर या तो वह कार्यक्षेत्र से पीछे हट जाता है या अन्य समुदायों में जा मिलता है।

सशक्त अथवा जागृत नेतृत्व में चुम्बकीय शक्ति होती है। उसमें उदारता, विचारशीलता एवं समन्वयकारिता का गुण होता है। यथायोग्य व्यवहार का अर्थ यही है कि जो जिस काम की क्षमता रखता है उसको उसी कार्य में लगा देना। प्रारम्भिक काल में आर्यसमाज के नेताओं में य गुण थे वे खोज-खोज कर व्यक्तियों को लाते थे। उन्हें प्रोत्साहित करते थे और कार्यक्षेत्र में लगते थे। स्वामी श्रद्धानन्द, म० हंसराज लेखराम, भगतसिंह आदि व्यक्ति आर्यसमाज को इसी गुण के कारण मिल सके थे।

वर्तमान नेतृत्व कुर्सी व धन को मुख्यता देकर चल रहा है। कहीं उन से आगे बढ़कर कोई उनका पद न हड़प ले। इसलिए वे नई शक्तियों से भयभीत होकर उन्हें आगे आने ही नहीं देते हैं। स्वयं तो वे क्या खोजेंगे? यदि कोई प्रतिभाशाली व कर्मठ व्यक्ति स्वतः नेतृत्व वर्ग से सहयोग की मांग करे, तो अनेक बहाने लगा कर टाल दिया जाता है। यदि आर्यसमाज के कर्णधार आत्म-लघुता (Inferiority Complex) से ऊपर उठकर समन्वय भावना की समन्वयकारी प्रवृत्ति को हृदयंगम करके व्यवहार क्षेत्र में आएं और प्रत्येक विचारशील कर्म एवं प्रतिभाशाली व्यक्ति को उसकी रुचि व क्षमता के अनुसार कार्य में लगा दें, तो उनके पास अपार शक्ति समूह संचय हो जाए और उनकी दस गुनी, सौगुनी प्रतिष्ठा बढ़ जाए।

इसके साथ ही आर्यसमाज की गौरव वृद्धि होकर चतुर्दिक् इसका यशोगान फैल जाए।

आज राष्ट्र की संस्कृति को, जातीय जीवन को सब ओर से भयंकर चुनौतियां हैं। सब लोग त्राहि-त्राहि मचा रहे हैं। क्या आर्यों को सामान्य व्यक्तियों की तरह डरना या उपेक्षाशील होकर अपनी रोजी रोटी की ही चिन्ता करना शोभा देता है। क्या यह आर्यसमाज के शानदार ओजस्वी व्यक्तित्व के अनुरूप है। इस समय तो सभी प्रान्तों के आर्यों को तन कर मैदान में डट जाना चाहिए था। कन्या कुमारी से काश्मीर तक ब्रह्मपुत्र से सिन्धु नदी तक एक पुकार उठनी चाहिए थी कि दस्यु (आतंकवादी) लोग एक कदम नहीं बढ़ सकते। यह देश आर्यों का देश है। अनार्यों के दुःस्वप्न यहां नहीं पनप सकते।

क्या तमाशा है आज हमारे देश की प्रिय प्रधानमन्त्री के हत्यारों का यहां सार्वजनिक अभिनन्दन होता है। देश को विखण्डित करने वालों की यहां पूजा होती है और देश की जनता व सरकार टुकर टुकर देख रही है। और आर्यसमाज रूपी शेर की गर्जना भी मौन है।

पर आर्यसमाज को सर्वस्व समर्पित करने वाले इसे सच्चे दिल से प्यार करने वाले, मूक रूप से ऋषि कार्य की पूर्ति में अपने को होम देने वाले आज मर्माहत होकर पूछ रहे हैं कि आर्यसमाज मौन क्यों है? उनका हृदय चीत्कार कर रहा है।

भूल गया आर्यसमाज अपने अतीत को उस अतीत को जिसमें वह मस्ती भरे केसरी की तरह प्रत्येक संकट में, विपदा में भारत मां की चरण वन्दना करता हुआ आततायियों से जूझता था। वह सदा अन्याय दमन अनाचार व अत्याचार का प्रतिरोध करता रहा है। आज देश की सरकार भी ओजस्वी व्यक्तियों की खोज में है। आर्यसमाज तो ओज का पुंज ही है। ओजस्वी तेजस्वी व्यक्तियों का सही संगठन है। फिर यह मौन हो केवल मूक दर्शक क्यों बन बैठा है।

रूढ़िवादिता ने सर्वदा समाज को पंगु बनाया है। आज आर्यसमाज भी रूढ़िग्रस्त होता जा रहा है। कुछ घिसी पिटाई, पिटी पिटाई बातों को लेकर उपदेश करा देना, मनोरंजक भजन गवा देना ही प्रचार नहीं होता। कहीं कहीं शास्त्रार्थ, की चुटकियां भी ली जाती हैं पर इस उथल पुथलमयी वेला में जब कि राष्ट्रीय व सामाजिक जीवन संकट में फंसा है, केवल इस वाक् प्रचार से काम नहीं चलेगा। आर्यसमाज वर्ण व्यवस्था को मानता है तो वह आज क्षात्र शक्ति का तेज दिखाए। केवल पण्डिताई भरी कोरी बातों से जीवन नहीं चलने वाला। यह वैसी ही बात है जैसा कि कृष्ण ने अर्जुन को उद्बोधन वेला में कहा था कि तुम पण्डिताई की बातें कर रहे हो जो कि कर्तव्य क्षेत्र से भागने का बहाना मात्र है। आज आर्यसमाज को कृष्ण बनकर आगे आना था, पर वह अर्जुन की तरह विषण्ण एवं कुंठित बुद्धि हो गया है। अर्जुन को परिजनों का मोह सता रहा था और आर्यसमाज को कुर्सी का मोह अपने प्राणों का मोह एवं सुख सुविधामय जीवन का मोह प्रतिबद्ध कर रहा है।

आर्य जनता फिर भी सरल हृदय है त्याग तप से पीछे हटने वाली नहीं। वह रणक्षेत्र में जूझ सकेगी पर नेतृत्व उसको सही दिशा दिखाए तभी न वह आगे आएगी। क्या आर्य नेतृत्व जागेगा। □

सुख नहीं मिलता कभी विषयों के झमेलों में

नीम की निबोली में है अंगूर का स्वाद कहां,
इत्र की खुशबू कहां चोवों के तबेलों में।
माटी के ढेलों में है मिश्री का मिठास कहां,
शुद्ध घी का स्वाद कहां वनस्पती तेलों में ॥
दुर्जनों के संग होता प्राप्त सद्ज्ञान कहां,
बुद्धि का विकास कहां ताश जुआ खेलों में।
सच्चा सुख "स्वरूपानन्द है ब्रह्मचर्य पालन में,
सुख नहीं मिलता कभी विषयों के झमेलों में ॥

ले०—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
(अधिष्ठाता वेद प्रचार)

दो कुण्डली

● शर्मसार थे शर्म से स्वयं शर्म के मित्र।
तभी ऋषि दयानन्द का नहीं लगाया चित्र॥
नहीं लगाया चित्र मचाई कन्या क्वारी।
ये सत्यार्थ प्रकाश सुशिक्षा अच्छी बारी॥
इसलिए फैशन डी०ए०वी० कैसे खुमार थे।
ऋषि दयानन्द के अनुयायी शर्मसार थे॥

● ताल कटोरा में बजी अजी धर्म की ताल।
जिसे देखने को गए कितने बूढ़े बाल॥
कितने बूढ़े बाल शिक्षिका व अध्यापक।
पाश्चात्य का रूप प्रकट नस नस में व्यापक॥
कमी रह गई एक बात की, कूके मोरा।
'व्याकुल' ऋषि वर का सपना था ताल कटोरा?।

रचयिता—प्रकाशवीर शर्मा 'व्याकुल'

नरशामञ्च—

आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठों का अनावरण

आर्यों की वीरगाथा—३

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

आप आर्यसमाज के प्रधान हैं— बात बीस तीस वर्ष पुरानी होगी। धारूर (महाराष्ट्र) मे कस्बा के दो गुटो मे कोई विवाद बढ गया। इस झगडे की रिपोर्ट शासन के पास गई। दोनो पक्ष अपने आप को निर्दोष बताते थे और दूसरे पक्ष को दोषी ठहराते थे। सरकार ने इस विवाद की गुप्त जाच के लिए एक उच्च अधिकारी को धारूर भेजा।

वह अधिकारी यहा पहुचा। धारूर के अधिकाश लोग उसे जानते थे कि यह एक उच्च अधिकारी है परन्तु वह किस उद्देश्य से यहा आया है, यह उन्हे ज्ञात न था। उस सज्जन ने अपनी जाच पूरी कर ली विवाद की जाच पडताल करके उसे पता चल गया कि इस झगडे मे किस किस का कितना दोष है। दोषी दोनो दल थे।

जाच का कार्य पूरा करके वह अधिकारी वहा के आर्यसमाज के प्रधान प० आर्यभानु जी के घर गया। उन्हे कहा आपको पता है कि मैं यहा क्यो आया हू? उन्होने कहा कि आप कहिए कैसे आना हुआ है। तब उस उच्च राज्याधिकारी ने कहा, मैं आप के नगर के दो पक्षो के बीच मे चल रहे लम्बे विवाद की गुप्त जाच के लिए यहा भेजा गया हू। मैंने अपना कार्य कर लिया है।

आप आर्यसमाज के प्रधान हैं। आप भी एक पक्ष के साथ यहा जुड़े हुए हैं। मैं भी आर्यसमाज का एक सेवक हू। आप आर्यसमाज के पुराने उपदेशक हैं। आप के भजनोपदेश सुनकर मैं सदा प्रेरणा लेता रहा हू। अब आप कहिए कि एक आर्य के रूप में मुझे इस विवाद के बारे में कैसी रिपोर्ट सरकार को देनी चाहिए? मैं सत्य सत्य सूचना शासन को दू अथवा झूठी रिपोर्ट भेज दू?

आर्यसमाज के प्रधान श्री प० आर्यभानु जी यह सुनकर कुछ चौक पडे परन्तु प्रसन्न भी हुए। आर्यसमाज की गौरव गरिमा, आर्यसमाज के प्रधान पद की प्रतिष्ठा का अपनी समाज सेवा का उन्हें ध्यान आया। आपने उस राज्य-अधिकारी से कहा कि एक आर्य को सत्य ही कहना चाहिए और सत्य यही है कि हमारे पक्ष का भी कुछ दोष है। आप मेरे कारण पक्षपात न कीजिए।

प्रधान जी की यह आर्योचित बात सुनकर आपने उन्हें कहा, अच्छा यही है कि मिलकर यह विवाद अभी निपटा लें ताकि मैं ऐसी रिपोर्ट भेज सकू। धारूर का यह विवाद निपट गया। कलह मिट गई। प्रेम से दोनो पक्ष रहने लगे। आप जानना चाहेंगे कि यह उच्च अधिकारी कौन था? यह आर्य पुरुष थे आर्यसमाज के जाने माने मिशनरी अद्भुत व्याख्याता निष्कलक जीवन वाले श्रीमान् बापू साहब बाघमारे जी। आप अब इस ससार मे नही रहे। जून मास म आप चल बसे। आप पूज्य शेषराव जी बाघमारे के छोटे भ्राता थे। ●

जब प० बुद्धदेव जी खूब पिटे

बडी पुरानी बात है कि उत्तर प्रदेश के जिला मथुरा का नोगाव वैदिक धर्म ग्रहण करने वाला था। राजपूतों के इस गाव मे श्री प० बुद्धदेव जी विद्यालकार बुलाए गये। आसपास के मौलवियो ने पूरा जोर लगा दिया कि ये राजपूत आर्य न बनें। राजपूतो के कुछ लोगो को आर्यों के विरुद्ध उकसाया गया। वे मुसलमान रहने को तैयार हो गये। निश्चय हुआ कि जब कोई आर्य पडित आए तो उसकी भरपेट पिटाई की जावे। अधिकाश राजपूत शुद्ध होने को तैयार बैठे थे।

श्री प० बुद्धदेव उस गाव को जा रहे थे। गाव के पास एक युवक हूल खा ने उन्हे घर दबोचा। खब पीटा और पीट पीटकर पूछा 'बता तुम्हे कहा पहुचाऊ?' ऋषि का दीवाना बुद्धदेव बोला, "चाहे जान से मार दे परन्तु एक बार मुझे मेरे इन राजपूत भाइयो के पास पहुचा दे।'

यह उत्तर सुनकर हूल खा की रगो मे महाराणा प्रताप का जमा हुआ रक्त गर्म हो गया। उसे यह विचार आया कि इस हम से इतना प्रेम है। वह प० जी के पाव पडा और उन्हे गाव ले गया। वह शुद्ध हुआ। उसे हरिसिंह नाम दिया गया।

वहीं आर्यसमाज मन्दिर बना। सब राजपूत आर्य बन गये। आर्यसमाज मंदिर की नींव उसी हरिसिंह ने रखी। पूज्य प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु इस अवसर पर वहा पधारे। हरिसिंह फूट फूट कर रोया कि इन हाथो से उसने प० बुद्धदेव जी की ठुकाई पिटाई की थी। प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु और श्री प० हरिदत्त जी (अब प्रादेशिक सभा देहली मे हैं) ने उसे कहा कि तेरा प्रायश्चित्त हो गया। इन्हीं हाथों से आपने आर्यसमाज के मन्दिर की नींव रख दी है। हरिसिंह के कुल का एक व्यक्ति आर्यसमाज का पूज्य सन्यासी बनकर आर्य धर्म का सन्देश देता रहा। आज यह कुल राजपूतो मे आर्यसमाजियो मे बडा प्रतिष्ठित परिवार माना जाता है। यह घटना हमे श्री प० हरिदत्त जी ने सुनाई। □

किशोरमञ्च—

वीर बालक शिवा जी

जिसे हिन्दू धर्म का छत्रपति कहा जाता था वही बालक आज हमारा आदर्श है। कठिनाइयो ने उसका जीवन निर्मित किया था। शिवा जी का बाल्यकाल बहुत बडी कठिनाइयो मे बीता। शिवनेर के किले मे सन् १६३० ई० मे उनका जन्म हुआ था। उनके पिता शाह जी बीजापुर दरबार मे नौकर थे। बीजापुर के नवाब की ओर से, जब कि शाह जी अहमदनगर की लडाई मे फसे थे, मालदार खान ने दिल्ली के बादशाह को प्रसन्न करने के लिए बालक शिवा जी तथा उसकी माता जीजाबाई को सिंहगढ के किले मे बन्दी करने का प्रयत्न किया, लेकिन उसका यह दुष्ट प्रयत्न सफल नही हो सका। शिवा जी के बचपन के तीन वर्ष अपने जन्म स्थान शिवनेर के किले ही मे बीते। इसके बाद जीजाबाई का शत्रुओ के भय से अपने बालक के साथ एक किले से दूसरे किले मे भागते रहना पडा किन्तु इस कठिन परिस्थिति मे भी उस वीर माता ने अपने पुत्र की सैनिक शिक्षा में त्रुटि नही आने दी।

माता जीजा बाई शिवा जी को रामायण महाभारत तथा पुराणो की वीर गाथाएँ सुनाया करती थी। नारो, त्रीमील, हनुमन्त तथा गामा जी नामक शिवा जी के शिक्षक थे और संरक्षक थे। प्रचण्ड वीर दादा जी कोडदेव। इस शिक्षा का परिणाम यह हुआ कि बालक शिवा जी बहुत छोटी अवस्था मे ही निर्भीक एव अदम्य हो गये। जन्म जात शूरमावली बालको की टोली बनाकर वे उनका नेतृत्व करते थे और युद्ध के खेल खेला करते थे। उन्होने बचपन मे ही विधर्मियो से हिन्दू धर्म देव मन्दिर तथा गौओ की रक्षा करने का दृढ सकल्प कर लिया।

शाह जी चाहते थे कि उनका पुत्र भी बीजापुर दरबार का कृपापात्र बने। शिवा जी जब आठ वर्ष के थे तभी उनके पिता उनको शाही दरबार मे ले गये। पिता ने सोचा था कि दरबार की साज-सज्जा, रोब-दाब हाथी-घोडे आदि देख कर बालक रोब मे आ जायेगा और दरबार की ओर आकर्षित होगा किन्तु शिवा जी तो बिना किसी ओर देखे बिना किसी ओर ध्यान दिये पिता के साथ ऐसे चलते गये जैसे किसी साधारण मार्ग पर जा रहे हो। नवाब के सामने आकर पिता ने शिवा जी की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा—'बेटा! बादशाह को सलाम करो।

बालक ने मुडकर पिता जी की ओर देखा और बोला— बादशाह मेरे राजा नही हैं। मैं इनके आगे सिर नही झुका सकता।'

दरबार मे सनसनी फैल गयी। नवाब बालक की ओर घूर कर देखने लगा। किन्तु शिवा जी ने नेत्र नही झुकाये। शाह जी ने सहमते हुए प्रार्थना की— शहनशाह! क्षमा करें। यह अभी बहुत नादान है।' पुत्र को उसने घर जाने की आज्ञा दे दी। बालक ने पीठ फेरी और निर्भीकता पूर्वक दरबार से चला आया। घर लौटकर शाह जी ने पुत्र को उसकी धृष्टता के लिए बहुत डांटा तब पुत्र ने उत्तर दिया— पिता जी! आप मुझे वहा क्यो ले गये थे। आप तो जानते ही हैं कि मेरा मस्तक तुलजा भवानी और आप को छोडकर और किसी के सामने झुक नही सकता।' शाह जी चुप हो गये।

इस घटना के चार वर्ष पीछे की एक घटना है। उस समय शिवा जी की अवस्था बारह वर्ष की थी। एक दिन शिवा जी बीजापुर के मुख्य मार्ग पर घूम रहे थे। उन्होने देखा की एक कसाई एक गाय को रस्सी से बान्धे लिये जा रहा है। गाय आगे जाना नही चाहती, डकराती है और इधर-उधर कातर नेत्रो से देखती है। कसाई उसे डण्डे से बार बार पीट रहा है। इधर उधर दुकानो पर जो हिन्दू हैं। वे मस्तक झुकाये यह सब देख रहे हैं। उनमे इतना साहस नही कि कुछ कह सके। मुसलमानी राज्य मे रहकर वे कुछ बोलें तो पता नही क्या हो। लेकिन लोगो की दृष्टि आश्चर्य से खुली की खुली रह गई। बालक शिवा जी की तलवार म्यान से निकल कर चमकी व कूदकर कसाई के पास पहुँचे और गाय की रस्सी उन्होने काट दी। गाय भाग गयी एक ओर। कसाई कुछ बोले—इससे पहले उसका सिर धड से कटकर भूमि पर लुढकने लगा था।

समाचार दरबार मे पहुचा। नवाब ने क्रोध से लाल होकर कहा— तुम्हारा पुत्र बडा उपद्रवी जान पडता है शाह जी! तुम उसे बीजापुर से बाहर कहीं भेज दो।'

शाह जी ने आज्ञा स्वीकार कर ली। शिवा जी अपनी माता के पास भेज दिये गये, लेकिन अन्त मे एक दिन वह भी आया कि बीजापुर-नवाब ने स्वतन्त्र हिन्दू सम्राट के नाते शिवा जी को अपने राज्य मे आमन्त्रित किया और जब शिवा जी हाथी पर सवार होकर बीजापुर के मार्गों से होते हुए दरबार मे पहुचे, तब नवाब ने आगे आकर उनका स्वागत किया और उनके सामने मस्तक झुकाया।

व्याख्यानपीठ –

उपनिषत् कथा माला—८

महत्त्व की प्राप्ति

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

उपनिषदों के मन्त्रों में परमात्मा का महत्त्व वर्णन किया गया है और यह बतलाया है कि सब लोग उसी की उपासना करते हैं परन्तु फिर भी प्राप्त क्या नही होता?

महत्त्व का अर्थ है बड़ाई सब से बड़ा होना। इस में एक भेद है जैसे यहां पचास साठ मनुष्य बैठे हैं। उनमें एक पहलवान भी है। हम कहते है कि वह सब से अधिक बलवान् है। परन्तु यदि पचास आदमी मिलकर उससे लड़ें तो वह उन पचासों के सामने निर्बल हो जाएगा। परमात्मा को सब से बड़ा इस लिए बताया है कि चाहे ससार की सब शक्तियां मिलकर भी उसका सामना करें तो भी वह सब से बड़ा ही रहेगा। वह सारे ब्रह्माण्ड से भी बड़ा है। सारी सृष्टि भी मिल जाये तब भी वह सबसे बड़ा है। उस से कोई बड़ा नही हो सकता।

मनुष्य में यह महत्त्व कब आता है? जब वह उस महान् की पूजा करे। मनुष्य यदि छोटे से बड़ा बनना चाहता है तो उसकी शरण लेता है जो उससे बड़ा हो। यही ससार में दृष्टिगोचर होता है। तुम्हें अंग्रेजी पढ़ने के लिए किसी मास्टर की शरण लेनी पड़ेगी। छोटे पहलवान को बड़े पहलवान के पास जाना होगा। सिवाय इस मार्ग के दूसरा मार्ग और कोई भी नही। यदि तुम जन्म और मरण के बन्धन से छूटना चाहते हो तो तुम्हें उस परमेश्वर की उपासना करनी होगी जो स्वयं जन्म और मरण के बन्धन से परे है।

ससार के पदार्थों को देखो कोई छोटा है कोई बड़ा। जब आप छोटे-छोटे जीवों को देखते हैं तो उनकी अपेक्षा दूसरे जन्तु बड़े दिखाई देते हैं। जानवरों से वृक्ष बड़े हैं वृक्षों से पर्वत पर्वतों में हिमालय, हिमालय से भूमि। भूमण्डल को देखा तो सूर्य उस से बड़ा दिखाई दिया। सूरज को देखा तो दृष्टि आकाश पर गई सूर्य से आकाश बड़ा है। आकाश में प्रकृति बड़ी है जो सब में व्याप्त है। प्रकृति से बड़ा है परमेश्वर। इसीलिए योगी शुद्ध चित्त होकर एकान्त में उसी महान् से महान् परमेश्वर की पूजा करते हैं।

ऋषि याज्ञवल्क्य ने अपनी स्त्री मैत्रेयी से कहा कि मैं इस ससार के सब सम्बन्ध तोड़ने लगा हूं तुम्हारे लिए सब पदार्थ विद्यमान हैं जो चाहे ले लो। तब मैत्रेयी पूछने लगी— आप ससार को छोड़ते हैं क्या आप यह बता सकते हैं कि इस ससार को छोड़कर कहां जायेंगे? बताइये आप इस देश को, इस घर को, इस परिवार को क्यों छोड़ते हैं। उन्होंने उत्तर दिया अमृत प्राप्ति के लिए' मैत्रेयी बोली आप अमृत प्राप्ति के लिए इन बन्धनों को छोड़ जाते हैं फिर मुझे इन बन्धनों में क्यों फसाते हैं? आप यदि मुझे सब कुछ दे जायें तो क्या मैं उस पद को प्राप्त हो जाऊंगी? उन्होंने कहा जैसा धनी पुरुषों को जीवन का सुख होता है उसी प्रकार तुझे भी हो सकता है परन्तु धन से उस अमृत पद की प्राप्ति नही होती। मैत्रेयी बोली तो मुझे इस धन की आवश्यकता नही।'

भाइयो! त्याग से ही अमृत पद प्राप्त होता है यह धन से नही मिलता। जो सच्चा त्यागी होता है वही सब कुछ छोड़ कर समाधि में बैठता है। एकचित्त होकर उस परमात्मा का ध्यान लगाता है। फिर जब वह उठता है तो उसकी दशा का किसी कवि ने यों वर्णन किया है—

> समाधि से उठकर यह योगी पुकारा,
> परमाणु मे देखा है ससार सारा।
> परमाणु मे ससार सारा समाया
> है घूमा उधर ही जिधर को घुमाया॥

उसे यह सब आकाश सूई के छिद्र के समान दिखाई देता है।

ससार में छोटों को सुख देकर ही बड़े बनते हैं। एक आदमी बूढ़ा है। घर के सब लोग उसका मान करते हैं क्योंकि वह बाजार से उनके लिए चीजें लाता है। पहले बच्चों को खिलाता है फिर आप खाता है। यदि कोई बड़ा बूढ़ा बाहर से आप ही खा आये बच्चों के लिए न लाये या बच्चों को न दे और उनके सामने बैठकर आप ही खा ले तो क्या उसका मान होगा।

प्रभु ने तो हमें इतना कुछ सुख और मान दे दिया परन्तु हम हैं जो उसका ध्यान भी नही करते। सोचो तो सही यदि मेरी आंखों में थोड़ा सा फर्क आ जाये तो मैं बाजार से ऐनक लेकर लगाता हूँ। यदि वह टूट जाये तो दूसरी ले ली। परन्तु सब मनुष्यों के एक जैसे नेत्र हैं इन्हें किस ने बनाया? यह तो सब प्रभु की ही कृपा का फल है। जिधर भी आप देखें उस प्रभु की ही दया दिखाई देती है। समस्त ससार में उसी का प्रबन्ध है।

तनिक जिह्वा को देखो। एक तो यह रस को अनुभव करती है। दूसरा काम इसका इससे भी भारी है। जब आप कुछ भोजन करते हैं तो उसमें जो पदार्थ दलने और कुचलने योग्य होता है उसे यह जिह्वा अलग करती है और दाढ़ों में पहुँचाती है। शब्द भी यही है। यद्यपि शब्द अन्दर से निकलता है परन्तु जिह्वा ही वायु को नियम पूर्वक निकालकर शब्द का रूप देती है। हारमोनियम को ही लो! उसके पर्दे को हवा देकर दबाओ, उसमें से 'आ' का शब्द निकलेगा। इस शब्द को तुम्हारी उंगली ने ही बनाया है। जिह्वा में तनिक-सा विकार आ जाये तो सारा ही काम रुक जाये।

ये हाथ भी परमात्मा ने दिये हैं। इन हाथों से कितने काम होते हैं। लकड़ी चीरने के लिए हाथ में कुल्हाड़ी लेते हैं। शहतीर से तख्ते बनाने के लिए आरा और लकड़ी साफ करने के लिए रंदा उसमें छेद करने के लिए बरमा। कुल्हाड़े के साथ मिलकर यही हाथ कुल्हाड़ा बन जाते हैं और आरे के साथ मिलकर आरा, रंदे से मिलकर रंदे का काम देते हैं और बरमे से मिलकर बरमे का। प्रभु ने तुम्हें एक औजार दिया है तुम्हारे बनाये हुए औजार तो बदल जाते हैं परन्तु वह नही बदला जाता। प्रभु की महिमा तो बात-बात में दिखाई देती है। इसलिए उपनिषदों ने कहा है कि उस प्रभु की पूजा करने में ही महत्ता प्राप्त होती है।

सदा सीधे मार्ग पर चलो स्वयमेव निर्भय हो जाओगे। परन्तु आपने तो परमात्मा से मुख मोड़कर वृक्षों नदियों पूर्णिमा आदि को पूजना आरम्भ कर दिया है। इनकी पूजा से तुम्हारा दुख दरिद्र बढ़ता ही गया है और बढ़ता ही जायेगा।

जहां बलवान होंगे वहां निर्बल भी अवश्य होंगे। ससार में सब एक ही जैसे बलवान अथवा धनवान् कैसे हो सकते हैं? परन्तु यह कदापि नही होना चाहिए कि जिस को छोटा अथवा दुर्बल समझा उसे ही मारने लगे। जब बड़ों के विचार छोटे हो जाते हैं तो वह छोटों को मारने और बड़ों तथा बलवानों के अन्याय और अत्याचारों के सामने भी गर्दन झुकाने लगते हैं। यह दशा क्यों हुई? मेरे भाई! यह सब परमेश्वर को भूलने का फल है। इसी से यह दुर्दशा हुई है।

देखो! पुत्र का अपने पिता के लिए क्या कर्तव्य है? अपने पिता का सम्मान करना। पिता जो आज्ञा दे उसका पालन करना। भोजन बने तो पहले पिता को खिलाए, पीछे से आप खाए। आजकल तो धनी पुरुषों के नौकर ही सब कुछ हैं। न पुत्र ही को पता लगता है और न माता पिता ही को, कि किसने भोजन किया है और किसने नही? मैंने एक युवक को देखा। वह बी० ए० पास था दुकान करता था एक बार उसका पिता उसके पास आया, उसने जल मांगा। लड़का कुछ लिख रहा था तुरन्त उठा सब काम छोड़कर घड़े से पानी लाया और पिता जी को पिलाया। रात को घर जाकर पिता के चरण धोये, उन्हें भोजन कराया। मैंने कहा नौकर तो हैं उनसे काम क्यों नही करवाते?' वह बोला, नौकर पानी तो अवश्य ला देंगे परन्तु पिता जी के चरणों को धोकर जो आनन्द मुझे होता है उसे मैं ही जानता हूं। वह आनन्द मुझे नौकरों से काम करा के कैसे प्राप्त होगा? पिता जी की आज्ञा पालन करना मेरा कर्तव्य है। उनकी आज्ञा पालन करने में ही मेरा कल्याण है।

एक दूसरा युवक था। उसने माला ले रखी थी। पिता पिता का नाम रटता रहता था। जब पिता ने पानी मांगा तो कह दिया कि 'घड़े में भरा हुआ है पी लो।' वह अपने पिता की आज्ञा का पालन नहीं करता था। पिता का नाम तो जपता था परन्तु पिता की बात कोई भी नही मानता था। भाइयो! पिता की प्रसन्नता उसी पर होती है जो उसकी आज्ञा का पालन करता है। इसी प्रकार परमात्मा भी उसी पर प्रसन्न होता है जो उसकी आज्ञा का पालन करता है। परमात्मा सब के सकल्पों को सब की भावनाओं को जानता है, परन्तु किसी को कुछ कहता नही। यदि बताता भी है तो उस समय जब वह कोई बुरा काम करने लगता है जैसे मैं तुम्हारे पैसे निकालना चाहता हूं। तुमने तनिक दूसरी ओर देखा और मैंने हाथ बढ़ाया। परमात्मा ने तुम्हें तो सचेत नही किया। उसने मेरे मन में कहा, कि ऐसा मत कर यह काम बुरा है। बस मेरे भाई! नेकी कर दरिया में डाल। यह सब से उत्तम नियम है। अपना स्वभाव ऐसा बना लो कि तुम परमात्मा की आवाज सुनकर उसका अनुकरण कर सको। याद रखो! ससार में जो किसी के दुर्गुण छिपाता है, वह अच्छा है और जो किसी के दुर्गुण प्रकट करता है वह बुरा है। अवगुण रहित तो ससार में कोई भी नही। यदि तुम किसी का सुधार करना चाहते हो तो उसे एकान्त में समझाओ। उसके अवगुणों का ढिंढोरा न पीटो।

पृथ्वी के लिए सूर्य सहारा है, परन्तु सूर्य को किसका सहारा है? उस परमात्मा का, जिसने उसे बनाया है। इसी प्रकार

प्रश्न होता है कि परमेश्वर किसके आधार पर है ? उपनिषद उत्तर देते हैं "वह अपनी महत्ता मे अपना आधार आप ही है। तुम भी अपने जीवन से दूसरो को सहारा दो, पर परमात्मा के सिवाय और किसी का सहारा न ढूढो। परन्तु तुम हो कि सिनेमा गये तो छह आने खर्च कर दिये, पर कभी किसी भिखारी को चार पैसे भी नही दिये जाते। जो गिर जाये, उसका कोई ठिकाना है। वह तो दिन प्रतिदिन रसातल को ही चला जाता है। परमात्मा ही उठाये तो उठे। इस प्रकार काम नही बनता। तुम अपनी ओर से सब को सहारा दो, साथ ही परमात्मा से उन के लिए प्रार्थना भी करो।

तुम हिन्दू हो, अछूतो से घृणा क्यों करते हो ? तुम्ही ने तो उन्हें अछूत बनाया है। क्या कभी किसी मुसलमान ने भी घृणा की है ? एप्रिल के महीने मे पूना मे एक उत्सव था। हम लोगो ने वहा देखा गणेश और पार्वती की छप्पन हजार मूर्तिया थीं। उस मन्दिर मे अछूत भी दर्शन करने गये। वहा पचास हजार ब्राह्मण थे। क्या हुआ उन्होने सब अछूतो को धक्के देकर बाहर निकाल दिया। क्या उनके दर्शन कर लेने मे मन्दिर अपवित्र हो जाता या उन्हें देखकर पतित पावन प्रभु पतित हो जाते ? दूसरे दिन मूर्तियां चुरा ली गयी। मैंने कहा कि यह क्या हुआ। भगवान् को भी कोई चुरा ले गया ?

एक दिन हम महादेव को देखने के लिए गये। एक पुरुष ने पूछा—"आप हाथ क्यों नही जोडते ?" मैंने कहा, "हाथ क्यो जोडू ? मनुष्यो को देखो। पति और पत्नी दोनों जा रहे हो, यदि कोई पुरुष उसकी पत्नी को इशारा भी कर दे तो मरने मारने को तैयार हो जाये। यदि हाथ से स्पर्श कर दे तब तो उसे मार ही दे। परन्तु इन महादेव जी की पत्नी तथा पुत्र दोनो को ही चोर उठाकर ले गये और ये महादेव जी बोले भी नही। इनकी पूजा क्या आपको करनी चाहिए ?' इस प्रकार जब आप भी सोचेंगे तो ससार मे परमेश्वर के गुणो को मानकर उनका ही अनुकरण आपको करना होगा और उन्हें ही पूजा करने के योग्य मानना पडेगा। उनके सिवाय और किसी को भी नही।

देखो, अछूतों को जब तुम सताते हो तो अन्य मतावलम्बी उनसे कहते हैं कि हमारी ओर आ जाओ। बुद्धिमान् देख रहे हैं कि ऐसी अवस्था मे उनके दूसरे मतावलम्बियो मे जा मिलना कुछ कठिन नही। इसलिए वे तुमसे कहते हैं कि अछूतो के साथ न्याय करो। प्रेम करो। क्योंकि दुनिया तो प्रेम को देखती है। कभी तुमने अपनी इस दुर्बलता को देखा है ?

एक फारसी कवि ने कहा कि "अपनी बडाई में ही मत भूल जा, अपनी बुराई को भी देख और उसे दूर करने का प्रयत्न कर।" ... नही छोडा, इसीलिए बडाई भी हमें छोड-कर चली गई, क्योंकि बुराई और बडाई दोनो एक जगह नहीं रह सकती। अब बुद्धिमत्ता तो इसमे है कि मनुष्य अपनी बुराइया देखे और दूसरो की बडाई देखे। अपनी बुराई छोडे और दूसरो की बडाई ग्रहण करके अपने आप को बडा बनाये। तुम्हारे साथ रहते हुए उन्हे कोई अछूत कहे ही क्यो ? परन्तु यहाँ तो आर्यसमाज वाले भी कहेंगे तो यही कहेंगे कि "आज दलितोद्धार की मीटिंग है।" जब वह मुसलमान या ईसाई हो जाता है तो क्या अछूत रह जाता है परन्तु तुममे रहते हुए तो यह अछूत शब्द भी उसका पीछा कभी नही छोडता।

एक मनुष्य बन मे बैठा रो रहा था, एक साधु वहाँ आ निकला। साधु ने पूछा, "भाई ! रोते क्यो हो ?' उसने कहा, दरिद्र हूँ विचार तो बडे-बडे हैं। धन है नही। आपको साधु समझ कर रोया हूँ कोई विधि बता दो तो रसायन पाकर आनन्द करूँ।" साधु ने कहा, यह वृक्ष है इस बिल्व (बल) कहते हैं। ताम्बा लेकर उसे खूब गरम करो। जब वह गरम हो जाये, तो इस वृक्ष के पत्ते उससे लगा दो, वह सोना हो जायेगा। परन्तु उस समय बन्दर का विचार मन मे न आये, यदि बन्दर का विचार मन मे आ गया तो सोना नही बनेगा। अब वह सोना बनाता है तो नही बनता, झट बन्दर का विचार मन मे आ जाता है। इसीलिए तो तुम आगे नही बढ सकते क्योकि तुम्हारे मन मे दूसरो को अछूत समझने का विचार घुसा हुआ है। वह तुम्हें उनमे प्रेम नही करने देता। फिर तुम्हारी उन्नति हो भी तो कैसे ?

ईश्वर के मानने वाले के पास यदि पैसा न भी रहे तो उसे सन्तोष रहेगा। उसके हृदय मे व्याकुलता नही आयेगी। कारण, वह दूसरे के अवगुणो को छिपाता और उन्हें दूर करने मे सहायता देता है ? जहाँ तक उसकी शक्ति है दूसरों का बेडा पार करता है।

उसी का नाम पवित्र ब्रह्म है। जैसे एक सुन्दर बालक को देखकर सबके हृदय मे प्रेम उमड आता है। आप जल के किनारे-किनारे चल रहे हैं, जल बडा निर्मल और शुद्ध है। आपका मन स्वय वहाँ बैठ जाने को करेगा। एक वृक्ष बडा ही सुन्दर है। दूर-दूर तक उसकी शाखाएँ फैली हुई हैं। आपका मन उसे देखकर बडा आनन्दित होगा। ऐसे ही परमात्मा का पवित्र नाम भी जिह्वा पर आने से जिह्वा पवित्र हो जानी चाहिए और मन मे उनका ध्यान आते ही मन गद्गद हो जाना चाहिए।

भाइयो ! याद रखो। जो पदार्थ पवित्र है, वह मन को पवित्र करता है। परमात्मा पवित्र है, उसके ध्यान से, उसके चिन्तन के संग मे पवित्रता आती है। नित्य प्रति अपने मन को उसके ध्यान से ... दर्शन होने लगेंगे क्योकि वह पवित्र मन में आता है, मैले मन मे नही आता।

आप शौच के लिए जाते हैं, लोटा ले जाते हैं, फिर उसे मिट्टी से माजते हैं। कपडा मैला हो जाए तो साबुन से धोते हैं। शीशा मैला हो जाए तो खडिया मिट्टी से साफ करते हैं। सोने के आभूषण को अग्नि मे तपाते हैं, खटाई लगाते हैं। प्रत्येक वस्तु के पवित्र करने के लिए कोई न कोई साधन बरता जाता है। परन्तु जब मन मैला हो जाय, तो उसके सिर पर झूठ बोलने, पर स्त्री को देखने का भूत सवार है, तो क्या करोगे ? मैं बताऊ, इन बातो को छोड दोगे तो मन स्वयमेव पवित्र हो जायेगा। परन्तु छोड कौन ?

उपनिषदो मे लिखा है कि जल चढाने से मन शुद्ध नही होता केवल शरीर शुद्ध होता है। यदि हमारी दुर्दशा हो रही है तो इसका कारण हम अपने आप ही हैं। किसी ने हमे दुखी नही किया, हम अपने हाथो आप ही दुखी हो रहे हैं।

वाणी से परमात्मा के गुण वर्णन नही हो सकते। मन से उसका सकल्प करो। उपनिषदो ने कहा है कि आँख पैर आदि वाणी का काम नही कर सकते। कारण, कोई भी कार्य जिसे तुम वाणी से कर सकते हो, आख से नही किया जा सकता, पैर से अथवा और भी किसी अग से नही किया जा सकता। नीबू का स्वाद यदि कोई तुमसे पूछे कि 'कैसा होता है ?" तो तुम पूछोगे कभी खटाई खाई है ? वह कहे 'हा, अम्बी तो खाई है, इमली भी खाई है परन्तु नीबू नही खाया।' तुम कहोगे, 'नही वैसा नही।' "आवला भी खाया है। तुम फिर कहोगे, वैसा भी नही। नीबू तो नीबू ही है उसका स्वाद किसी से नही मिलता।' इस प्रकार जब परमात्मा के बनाये हुए पदार्थ ही ठीक ठीक चित्त में नही आ सकते तो वह आप कैसे आ सकता है ? जब तुम चिन्ता को छोड दोगे तभी उसका ज्ञान हो जायेगा। आप कहेंगे, 'चिन्ता को छोड देंगे', परन्तु आपको मन की शक्ति का ज्ञान नही। उसका पता तो तभी चलेगा जब तुम उसे रोकने का प्रयत्न करोगे। अभी तो तुम मन के पीछे पीछे जाते हो। शाम को तनिक मन को ठहराने के लिए सन्ध्या करो। उस समय कहोगे कि मन नही लगता। बुरे विचार पैदा करने हो तो झट मन लग जाता है। परन्तु उसे रोकने लगोगे तब मन की शक्ति का पता लगेगा जब उसे रोकने के लिए बैठोगे, तब जानोगे कि मन को रोकने की विधि तो कोसो दूर है।

मन रोकने की ठीक विधि का अनुकरण करो। उठते, बैठते, सोते सदैव अपने कार्य व्यवहार मे परमात्मा का ध्यान करो। परन्तु जब परमात्मा की उपासना करो तो अपने कार्य व्यवहार से अलग हो जाओ। उस कमरे मे कोई अन्य ... एक आसन। हाथ मुह धोकर स्वच्छ होकर, अपने जीवन के ४५ मिनट का यह समय जब तुम पूरे प्रेम और पवित्रता के साथ परमात्मा के पास बैठकर बिताओगे तब आपका मन अपने आप ठहरेगा और धीरे धीरे आपके वश मे आता जायेगा। जिस काम मे पवित्रता और प्रेम नही होता वह कभी सफल नही होता। जो समय इसके लिए सबसे अच्छा है, उसे तो तुम व्यर्थ खो देते हो। एक नियत समय हो जाने पर सन्ध्या का समय होते ही, समय स्वय तुम्हे बुलाने लगे। तब समझो कि तुमने पहली मजिल पूरी कर ली। तुम नदी के तट पर सैर करने के लिए जाते हो। पानी मे पैर नही डालते और फिर तुम कहते हो कि मुझे तो जल कुछ नही कहता। जल तो तब कुछ कहे, जब तुम उसके अन्दर प्रवेश करो।

साँप भी जब अपनी बाँबी मे जाने लगता है तो सीधा हो जाता है। इसी प्रकार मनुष्य जब अपने परमात्मा के सामने जाता है उसके चरणो में मन लगाता है तो उसे शुद्ध और पवित्र होकर जाना चाहिए।

जब बालक अपने घर मे माता पिता को "जी" कहकर सम्बोधन करता है तब बाहर जाकर भी वैसे ही 'जी' कहेगा। अस्वाभाविक बात भला पहले ही दिन वह कैसे कहे ? दिल को कभी लगाया नही और कहते हो, 'दिल नही लगता।" युवावस्था मे कहते हो, 'बूढे होंगे तब सन्ध्या करेंगे। परन्तु एक उर्दू कवि कहता है कि —

है तकवा वही,
जो कि जवानी में आया हो।
है जोश वही
जिसका कि पीरी मे बयाँ हो॥

अर्थात् पवित्रता वही है जो युवावस्था मे प्रकट हो और आवेश वही है जो वृद्धावस्था मे भी छिपा न रहे। हे भाई ! परमात्मा है दूर से दूर परन्तु अज्ञानो के लिए। जो बुद्धिमान् हैं, उसे नियमपूर्वक ढूढते हैं उनके तो वह निकट ही है।

एक माता एक सरोवर मे स्नान करने गई। वहा एक वृक्ष था। माता ने अपना आभूषण उतारकर वृक्ष के साथ लटका दिया और स्नान करके घर चली गई अपना आभूषण वहा से उतारना भूल गई। एक युवक आया, उसने सरोवर में देखा कि एक आभूषण जल मे पडा है। वह जल मे डुबकी लगाता है परन्तु आभूषण उसके हाथ नही आता। फिर बाहर आता है फिर जल मे देखता है, फिर डुबकी लगाता है। कबीर साहब का उधर से गुजर हुआ उन्होने पूछा, 'भाई ! तुम इस प्रकार बार बार क्यो डुबकी लगाते हो ?" उसने उत्तर दिया, 'हार ढूंढता हू महाराज !" उन्होने कहा, तुझे छाया और वस्तु का ज्ञान नही। जिसकी ओर तू

'कुरान' कानून और प्रतिबन्ध

डा० रामप्रसाद मिश्र
एम० ए०, पी० एच० डी०, डी० लिट

अनेक पुस्तको से लेखक डा० रामप्रसाद मिश्र सप्रति डी० ए० वी० कालेज मे हिन्दी के विभागाध्यक्ष हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय मे स्नातकोत्तर कक्षाओ को भी पढाते हैं। देश के प्राय सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओ मे आप के लेख छपते हैं। समस्याओ के गहन अध्ययन और विश्लेषण के लिए चर्चित डा० मिश्र ने इस लेख मे कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने सम्बन्धी याचिका पर देश भर मे चली बहस के सम्बन्ध मे एक दिशापरक चितन प्रस्तुत किया है। —सपादक।

पिछले दिनो चाय की प्याली मे एक तूफान उठा था जो सौभाग्य से कुछ बैठ गया है। यह तूफान था कलकत्ता हाईकोर्ट मे कुरान पर प्रतिबध लगाने की याचिका के सम्बन्ध मे। कश्मीर घाटी जहाँ मुसलमान अधिक है और बगला देश जो अब इस्लामी देश बन चुका है, मैं इस तूफान ने हिंसक रूप भी धारण किया और कई लोग मारे भी गए।

इस्लाम और प्रतिबधो का गहरा सबध है। ससार के लगभग सभी इस्लामी देशो मे मूर्ति पूजा पर, मन्दिर बनाने पर, पुराने मन्दिरो की मरम्मत पर और खुले रूप मे कथा-कीर्तन करने पर प्रतिबध है। बहुत से इस्लामी देशो मे दाह सस्कार पर भी प्रतिबन्ध है। इनमे अनेक ऐसे देश है। जिनमे गीता, उपनिषद् आदि धार्मिक पुस्तक ले जाने पर भी प्रतिबध है। तुर्की और ईरान ने गीता और उपनिषद् पर भी प्रतिबध लगाया था। दाते की डिवाइन कामेडी जिसमे हजरत मुहम्मद और हजरत अली को नरक मे रोता हुआ दिखाया गया है, पर भी सभी इस्लामी देशो मे प्रतिबन्ध है।

कालिन और लपियर का हाल मे प्रकाशित पुस्तक 'फ्रीडम एट मिडनाइट' जिसमे जिन्नाह के सुअर का मास खाने का उल्लेख है, पर पाकिस्तान मे प्रतिबध है। मजे की बात यह है कि हिन्दुस्तान जैसे धर्मनिरपेक्ष राज्य मे भी मुसलमानो के दबाव के कारण श्री ए० घोष की अमरीका मे प्रकाशित पुस्तक 'कुरान एण्ड द काफिर', श्री विशनस्वरूप गोयल की दिल्ली से प्रकाशित पुस्तिका 'काश याघा जी ने कुरान पढा होता।' और डा रमेश आर्य की पुस्तिका 'मैंने इस्लाम क्यो छोडा'' पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है। जिस मजहब के अनुयायी प्रतिबन्ध के इतने शैदायी हैं, वह कुरान पर प्रतिबध लगाने सम्बन्धी याचिका से इतने उद्विग्न हो गये, यह आश्चर्य की बात है।

याचिका की कहानी भी बडी रोचक है। श्री सी० एम० चोपडा नामक एक सज्जन जो कई फर्मों के कानूनी सलाहकार हैं, ने अप्रैल १९८५ मे कलकत्ता हाईकोर्ट मे एक याचिका पेश की जिसमे माग की गई थी कि अरबी मे लिखे कुरान और उसके अनुवादो पर प्रतिबध लगाया जाय क्योंकि उसमे बहुत सी ऐसी बातें लिखी हुई हैं जो कि भारतीय सविधान की धारा १५३ ए का स्पष्ट उल्लघन करती हैं और गैर मुसलमानो के प्रति विद्वेष और हिंसा का प्रतिपादन करती हैं। याचिका मे कुरान के ऐसे सभी उद्धरण भी दिये गये थे। न्यायमूर्ति श्रीमती पद्मा खास्तगीर ने इसे विचारार्थ स्वीकार कर लिया और पश्चिमी बगाल की सरकार को नोटिस दिया कि वे इस सबन्ध मे अपना पक्ष रखे और याचिका पर विचार करने के लिए २७ मई की तिथि तय कर दी।

इस बीच मुस्लिम वकीलो और सस्थाओ के विरोध के कारण यह याचिका किसी अन्य जज को देने की बात कही गई। मुख्य न्यायाधीश ने इसे न्यायमूर्ति बासक को दे दिया। न्यायमूर्ति बासक ने सुनवाई की तिथि २७ मई के स्थान पर १३ मई कर दी। श्री चोपडा को इस बदल की सूचना १२ तारीख रात को दी गई तो भी वे १३ मई को अदालत मे पेश हुए और उन्होने याचिका के पक्ष मे बडा तर्कसगत और तथ्यपूर्ण वक्तव्य दिया। न्यायमूर्ति बासक ने उनके किसी तर्क का खडन किये बिना केवल यह कहकर याचिका रद्द कर दी कि कुरान एक पवित्र पुस्तक है इसलिए वह कानून और न्यायपालिका के दायरे मे नही आती। समाचार पत्रो मे छपी रिपोर्टो के अनुसार केन्द्रीय विधि मत्री श्री ए० के० सेन और अटार्नी जनरल भी उस दिन कलकत्ता मे थे और सम्भवत उन्ही के कहने पर पहले तिथि बदली गई और याचिका को उसके गुण-दोषो पर विचार किये बिना रद्द कर दिया गया।

इस प्रकार सचाई की परख किये बिना उसे दबा दिया गया। भारत मे सत्य को इस प्रकार दबाया जाना जिसका ध्येय वाक्य 'सत्यमेव जयते' है, हर दृष्टि से निन्दनीय है।

परन्तु इस याचिका के पेश होने से एक लाभ अवश्य हुआ है। बहुत से लोगो को पहली बार पता लगा कि कुरान मे कुछ ऐसी बातें लिखी हैं जो कानून और मान्यता सगत नही हैं। इस्लाम के प्रवक्ता भी बचाव मे पड गये हैं। वे याचिका मे उठाई गई बातो का न खडन कर पाये हैं और न मण्डन कर सकते हैं। भारत के तथाकथित प्रगतिवादी और धर्मनिरपेक्ष लेखको और बुद्धिजीवियो की भी इससे बडी हेठी हुई है। उनमे से बहुतो ने कुरान को पढा नही है, इसलिए वे तथ्यो के आधार पर तो इस याचिका का विरोध कर नही सकते थे। परन्तु उन्होंने इस याचिका के विरोध मे लिखकर जिस मनोवृत्ति का परिचय दिया है, वह न प्रगतिवाद की परिचायक है और न 'सेकुलरवाद' की।

ससार का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस्लाम और कुरान के नाम पर गत १४,०० वर्षों मे बहुत मारकाट हुई है। हिन्दुस्तान को भी गत हजार वर्षों से इसका कटु अनुभव है। आवश्यकता है कि हिन्दुस्तान के लेखक और विचारक इस मारकाट की प्रेरणा देने वाले मूल कारणो को समझने के लिए खुले दिल से कुरान का अध्ययन करें और स्याह को स्याह कहने की हिम्मत करें। हिन्दुस्तान और हिन्दुओ की परम्परा विचार स्वतन्त्रता की परम्परा है। यहा हर प्रकार की पूजा, विचार और मतभिन्नता की पूरी छूट रही है और है। हिन्दू चिन्तको का विश्वास रहा है कि सत्य छिप नही सकता। इसलिए उन्होने हर विषय पर खुले दिल से विचार और खुली बहस का प्रतिपादन किया है। इस दृष्टि से कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने की माग हिन्दू परम्परा के प्रतिकूल है। परन्तु कुरान मे क्या लिखा गया है और इसमे कौन सी बातें कानून और मान्यता विरुद्ध हैं, उनको जानना और उसके सम्बन्ध मे सही तथ्यो को पेश करना एक स्वस्थ लोकतान्त्रिक परम्परा है। ●

जे ३९४, शकर रोड
नई दिल्ली-११००६०

निर्वाचन

आर्यसमाज पश्चिम विहार नई दिल्ली ६३ का वर्ष १९८५-८६ के लिए निर्वाचन इस प्रकार हुआ है—

प्रधान श्री बी० एन० चौधरी
उपप्रधान श्री राजभरत मिनोचा
उपप्रधान श्रीमती पद्मा भण्डारी
मन्त्री धर्मवीर शास्त्री
उपमन्त्री श्री विजय आर्य
प्रचारमन्त्री श्री रामबन्धु शास्त्री
सगठनमन्त्री श्री मनोहरलाल मदान
कोषाध्यक्ष श्री हरिश्चन्द्र जयरथ
अध्यक्ष, पुस्तकालय
व भण्डार श्री ओ३म्प्रकाश सेतिया

भवदीय धर्मवीर शास्त्री, मन्त्री

आर्यसमाज सोहनगज का वार्षिक चुनाव दिनांक १६ मई ८५ को समाप्त हुआ। और सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान—श्री शिवप्रसाद गुप्त
उपप्रधान—श्री सुशील कुमारजी भाटिया
श्री हेमसिंह जी
मन्त्री—श्री प्रेमसागरजी गुप्त
उपमन्त्री—श्री माताप्रसाद जी आर्य
श्री नारायणदास जी मित्तल
कोषाध्यक्ष—श्री नृपति राय
पुस्तकाध्यक्ष—श्री कैलाश कुमार

शिवप्रसाद गुप्त
प्रधान

शोक-प्रस्ताव

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी एव कर्मचारी आर्यसमाज माडल बस्ती के मन्त्री तथा सभा के अन्तरग सदस्य श्री बनवारी लाल शादी जी के अकस्मात देहावसान पर गहरा दुख एव शोक व्यक्त करते हैं तथा परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि वह दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा उनके वियोग मे सतप्त दुखी परिवार को इस महान् दुख को सहने की सामर्थ्य प्रदान करे।

डा० धर्मपाल आर्य
महामन्त्री

(पृष्ठ ७ का शेष)

झुकता है वह तो छाया है, प्रतिबिम्ब है। वास्तविक पदार्थ नही। वास्तविक पदार्थ तो ऊपर वृक्ष पर है उधर देख।'

इसी प्रकार बेसमझ मनुष्य भूल में फसकर परमात्मा प्राप्ति के उलटे साधनो का प्रयोग करता है और उसको नही पाता, परन्तु ज्ञानी एक ही जन्म में अपना काम बना लेता है।

खुल गये जब ज्ञान चक्षु
फिर कहाँ दूरी रही।
दूरी के मुख से कहो की
बात जो पूरी रही॥

जन्म था मुद्दत से पुष्पा
वह अचानक खिल गया।
जिसकी खातिर मैं भटकता
था वह मुझ को मिल गया॥

अरे नादान! वह तो
बारीक से बारीक है
पर तू नहीं बारीक बीं।
जो है देखता तुझ को सदा
तू देखता उसको नहीं॥

वह परमात्मा पवित्र मन मे ही आ सकता है अपवित्र मन मे नहीं। परमात्मा-प्राप्ति की परीक्षा पास करने से ससार बिगडता नही, बनता है। इसलिए ईश्वर उपासना से बेडा पार होगा इसी का सहारा लो। ●

अपराधी पर कृपा

(पृष्ठ २ का शेष)

ये मुहजोर तुरगों
ऐंचतुह चले जाहि ॥

आंखो के व्यसन से तग आकर कवि कहता है कि मैं इन आंखो को ससार की मर्यादाओं को समझाकर बहुतेरा रोकता हू किन्तु मेरा वश नही चलता। होता यह है कि जैसे मुहजोर घोडा जितना लगाम को खींचें उतने हठ से अपनी गति को तीव्र करता चला जाता है और सवार को अक्षम बना देता है ठीक यही दशा आंखो ने मेरी भी कर दी है।

इस स्थिति से उबरने का एक ही प्रकार है कि दुर्व्यसन के साधन उस आंख को ही छीन लिया जावे। आंख न रहने से उस दुर्व्यसन को क्रियात्मक रूप देने का अवसर ही न रहेगा और लम्बे समय तक उसकी आवृत्ति न होने के कारण उन दुसस्कारो का ही परिमार्जन हो जायगा। इधर आंखो के अभाव मे जो कष्ट उठाने पडे उनसे दण्ड भी भुगता गया और पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त से सात्त्विक सस्कारो का उदय भी हुआ। लेखाजोखा पूरा होने पर अगले जन्म मे आंखें फिर मिल गयी और नया जीवन प्रारम्भ हुआ। यदि आप सदुपयोग करेगा तो दृष्टिलाभ के आनन्द का अधिकारी रहेगा।

यही है प्रभु की दया कि उसका दण्ड भी मनुष्य के कल्याण का कारण बनता है। अत मन्त्र मे पहली बात कही गयी कि वह प्रभु यो मृडयाति चकुषे चिदाग अपराध करने वाले का भी कल्याण ही करता है।

इससे आगे मन्त्र मे उससे भी महत्त्व पूर्ण बात कही गयी कि वय वरुणे अनागा स्याम मानवजीवन के स्तर के अनुरूप तो स्थिति यही है कि हम वरणीय प्रभु के दरबार मे निष्पाप और पवित्र रहें। यह मानव जीवन हमे विचारपूर्वक अपनी पाशवी प्रवृत्तियों को निर्मूल करने के लिए ही मिला है। न्यूनाधिक पशुता तो मनुष्य के साथ लगी ही रहती है पर विवेक द्वारा उसे परिमार्जित करना ही मानव-जीवन का लक्ष्य है। किसी उर्दू के शायर ने बहुत उत्तम कहा है—

> बजाहिर सब हैं इन्सा
> लेक बातिन की खुदा जाने।
> कि हैं इन्सान इनमें कितने
> और हैवान कितने हैं ॥

चारो वेदों मे निम्न मन्त्र आता है उसमे भी बहुत काव्यमय ढग से इस महत्त्व पूर्ण उद्देश्य की ओर ध्यान खीचा गया है।

> सप्तास्यासन परिधयस्त्रि
> सप्तसमिध कृता।
> देवा यद्यज्ञ तन्वाना
> अबध्नन पुरुष पशुम ॥
>
> ऋग् १०।९०।१५

अर्थात् एक ऐसा भवन अथवा एक ऐसी यज्ञशाला है जिसकी सात परिधिया चारदीवारी (Boundery walls) हैं और उनमे तीन स्थानों पर सात सात समिधाए रखी है। प्रभु ने इस यज्ञ का विस्तार करने के लिए जीवरूपी पशु को इसमे बांधा है। रूपक अलकार के माध्यम से यह मानव शरीर और इसमे जीवात्मा के आने के उद्देश्य का वर्णन है। समस्त कर्मकाण्ड मे सात परकोटेवाली यज्ञशाला का वर्णन कही नही है। चार बारह और इससे भी अधिक स्तम्भोवाली यज्ञशाला का विधान तो है किन्तु सात परिधियोवाली का नही यह सात परिधि की यज्ञशाला मानव शरीर ही है। आयुर्वेद के ग्रन्थ अष्टाङ्गहृदय मे मानवदेह की त्वचा की सात परतें गिनाई हैं— सप्त त्वचो भवन्ति ये ही सात चारदीवारिया हैं। तीन स्थानो पर सात सात समिधाओ का विधान किसी यज्ञ म नही है। ये तीन स्थानो पर सात सात समिधाए सात धातुए रस रक्त मज्जा आदि सात हैं। ये २१ समिधाए प्रदीप्त होकर इस यज्ञ को चलाती हैं। अर्थात् इन समिधाओ से ही यह यज्ञ क्रियाशील रहता है। इस यज्ञ का लक्ष्य यह है कि इस मानव शरीर रूपी यज्ञशाला मे बंधा हुआ जीवरूपी पशु पशुत्व की आहुति दे दे। अर्थात् विवेकपूर्वक कर्म करके काम क्रोधादि पर विजय प्राप्त करे। विवेक रहित मानव और बच्चे को पशु नाम से वेद मे अभिहित किया गया है। ब्रह्मचर्यव्रतपूर्वक गुरुकुल मे विद्यार्जन से यह पशुता टूटती है और इसी का एक नाम पशुयाग भी है।

अत मानव जीवन की सफलता ज्ञान पूर्वक धर्माचरण में है। यद्यपि विषयो के बन्धन बहुत जटिल हैं किन्तु विचार में इतनी बडी शक्ति है कि दुरूह मार्ग पर भी उसके सहारे सफलता प्राप्त की जा सकती है। जिगर मुरादाबादी ने इस सम्बन्ध मे बड पते की बात कही है।

> हुस्न की हर अदा पे
> जानो दिल सदके मगर।
> लुत्फ कुछ दामन बचाकर
> ही गुजर जाने मे है ॥

यद्यपि ससार के विषयो में बांधने की बहुत बडी शक्ति है। विषय शब्द सस्कृत व्याकरण की षिञ् बन्धने धातु से बना है। निष्पन्न शब्द से पूर्व विशेषार्थ वाचक वि उपसर्ग और जुडा हुआ है इस प्रकार विषय शब्द का अर्थ हुआ जिसमे जकडने की बहुत क्षमता हो। किन्तु विवेक और विचार मे भी वह क्षमता है कि उसके समक्ष यह विषय की लौह शृखला सूत के कच्चे धागे के समान तुच्छ है। विवेकी महापुरुषो ने काम क्रोध लोभ मोह मद और मात्सर्य को तृण तुल्य सार हीन बनाकर मार्ग म तोड मरोडकर फेंक दिया और दृढता से गन्तव्य पथ पर दनदनाते चले गये।

अत मनुष्यता की सार्थकता निष्पाप जीवन जीने मे है।

मन्त्र के उत्तरार्ध मे निष्पाप जीवन मे चलने और दृढ रहने के लिए उपाय बताया गया है कि आत्मोत्थान के व्रतो पर चलने वाले तपस्वी विद्वानो के जीवन व्यवहार को देखकर उनसे प्रेरणा लो कि इस दुनिया के फिसलनभरे मार्ग पर वे अपने पैरो को कैसे टिका पायें? एक जिज्ञासु यात्री के लिए इस प्रकार के पथ प्रदर्शक का मिलना बहुत बडा सहारा है। शिक्षा की समाप्ति पर आचार्य अपने स्नातको को अन्तिम बात गाठ बांधकर ले जाने के लिए यही कहता है—

अथ यदि ते कर्म विचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात् ये तत्र ब्राह्मणा सर्मशिनो युक्ता अयुक्ता अलूक्षा धर्मकामा स्यु यथा ते तत्र वर्तरन् तथा तत्र वर्तेथा। (स०वि० समावर्तन)

यदि ससार मे तुझ किसी कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य के विषय मे सशय उत्पन्न हो तो जो विचार शील अनुभवी सहृदय और सच्चरित्र विद्वान् हो उनसे विचार विनिमय करके कर्म के औचित्य का निश्चय करो और उस प्रकार की परिस्थिति और कामो मे वे जैसा आचरण करते हो वैसा ही करते चले जाओ। यही धर्माचरण है यह अपने मन मे निश्चय रखो। वयोवृद्ध होने के साथ यदि इस प्रकार का सदाचारी व्यक्ति विद्यावृद्ध भी हो तो कहना ही क्या है? नही तो आचारवान् वयोवृद्ध के परामर्श को भी नीतिकारो ने महत्त्वपूर्ण माना है।

> प्रवृद्धवयस पुसो धिय
> पाक प्रजायते।
> जीर्णस्य चन्दनतरो
> आमोद उपजायते ॥

परिपक्व आयु के मनुष्य की बुद्धि भी अनेक प्रकार के और लम्बे अनुभवो के कारण पक जाती है—जिस प्रकार पुराने चन्दन के पेड मे सुगन्ध उत्पन्न हो जाती है। इसके साथ ही मन्त्र मे एक महत्त्व पूर्ण परामर्श उन वृद्धो को भी दिया कि यूय पात स्वस्तिभि सदा न।' वृद्धो का भी यह पवित्र कर्त्तव्य है कि वे पूरी शक्ति से पवित्र मार्ग पर चलने के लिए युवको को प्रेरित करते रहें। समाज की इससे उत्तम कोई दूसरी सेवा नही है और प्रकारान्तर से आत्मिक उत्थान के लिए इससे अधिक आराधना भी दूसरी नही है। इस विषय मे किसी उर्दू शायर ने कितना उत्तम कहा है—

> काम आ सके खुदा के
> कि खुदा के नजदीक।
> इससे बेहतर न हुई है
> न इबादत होगी ॥

आज लोग ईश्वरभक्ति का अर्थ केवल अपना कल्याण और शान्ति समझते हैं। किन्तु तत्त्वदर्शी सामाजिक उत्थान के साथ साथ जिससे शान्ति मिले उसी मार्ग को श्रेष्ठ मानते हैं। ऋषि दयानन्द से एक महन्त ने जब यह कहा कि दयानन्द तुम क्या समाज सुधार के पचडे मे पड गये यदि तुम अविकल भाव से आत्मसाधना मे लगते तो इसी जन्म में तुम्हारी मुक्ति हो जाती। इस प्रश्न का ऋषि दयानन्द ने जो उत्तर दिया वह स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य है। ऋषि ने कहा महात्मन्! पतन के गर्त म गिरे देशवासियो की उपेक्षा करके मैं अपने अकेले की मुक्ति नही चाहता इन दीन-दुखियो का कष्ट निवारण करते करते मेरी मुक्ति भी स्वत हो जाएगी।

आज समाज के वृद्ध समुदाय मे यह भावना जग जाय तो देश की कायापलट हो जाए। हमारे घर स्वर्ग बन जावें।

कार्य निवृत्त वृद्ध और वृद्धाए घर मे झगडते रहेंगे। समवयस्को मे बैठकर राजनीतिक लीडरो की आलोचना करते रहेंगे। मनोरञ्जन के लिए ताश शतरज और चौपड खेलते रहेंगे और साय प्रात चार मन्त्रो का पाठ करके झमते हुए शान्तिपाठ का मन्त्र बोल देंगे और अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेंगे। यदि ये लोग गली मुहल्ले बाटकर समाज मे फैली हुई बुराइयो को दूर करने के लिए बच्चो और युवको को वार्तालाप मे सदविचार दें तो देश का उद्धार कर दें। आज एक दूसरे के बिगडे हुए बच्चो को देखकर और एक दूसरे की आलोचना करके सतुष्ट हो लेते हैं। किन्तु ये नही सोचते कि बच्चे समाज और देश की सम्पत्ति हैं। इनके पथभ्रष्ट होने से देश दुर्बल होकर पतनोन्मुख होता है। इसके अतिरिक्त बिगडे युवक अपने परिवारवालो के लिए उतने हानिप्रद नही हैं जितने कि दूसरों के लिए अत सार यह निकला कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज मे होने वाले सदगुण दुर्गुण के परिणाम भी सुख और दुख के रूप मे उसे अवश्य सहने पडेंगे।

> बशर पहलू में दिल
> रखता है जब तक।
> उसे दुनिया का
> गम खाना पडेगा ॥

इसलिए शान्तिपाठ का मन्त्र इस तथ्य को समझाता है कि भक्त! जिस शान्ति को तू माग रहा है वह तब मिलेगी जब द्युलोक से भूतल तक अणु अणु और कण कण मे वह समा जायेगी। ●

समाचार-सन्देश

ला० रामगोपाल शालवाले द्वारा आर्यवीर दल प्रशिक्षण व्यायामशाला का शिलान्यास

गुरुकुल झज्जर मे १३-६-८५ से चल रहे आर्यवीरदल के दीक्षान्त समारोह मे भाग लेने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले व उनके मन्त्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी ने आर्यवीरो के व्यायाम लाठी चलाना, शस्त्र-अस्त्र चलाने के प्रशिक्षण को बड़ ही रुचिपूर्वक ढग से देखा तथा उसे देखकर वे अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होने यह फैसला किया कि आर्यवीर दल का मुख्य केन्द्र गुरुकुल झज्जर मे ही होना चाहिए। इसी कार्य की पूर्ति हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले तथा इनके मन्त्री व आर्यवीर दल के सस्थापक श्री ओमप्रकाश जी त्यागी एव बालदिवाकर हस इत्यादि नेताओ ने यह फैसला किया कि आर्य वीरो के नियमपूर्वक प्रशिक्षणार्थ व्यायामशाला का होना अनिवार्य है। अत्यन्त विचार विमर्श के पश्चात् इन विद्वानो ने फैसला किया कि आर्यवीर दल प्रशिक्षण व्यायामशाला की स्थापना यहा गुरुकुल झज्जर मे ही की जाए तथा इसके शीघ्र निर्माण की कामना करते हुए ला० रामगोपाल जी एव श्री ओमप्रकाश जी ने इस व्यायामशाला का शिलान्यास किया।

केदारसिंह आर्य
कार्यालयाध्यक्ष
आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन डर्बन (दक्षिण अफ्रीका) संबंधी सूचनाएं

वेद निकेतन डर्बन के प्रधान प० नरदेव विद्यालकार ने दक्षिण अफ्रीका मे होने वाले अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के सम्बन्ध मे निम्न सूचनाएँ हमे प्रकाशनार्थ भेजी हैं। तदनुसार वहा पहुचने वाले दर्शको के लिए ३० दिन की बजाय ६० दिन ठहरने की अनुमति भारत सरकार को देने की दिशा म सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यवाही करेगी। वैसे विदेश जाने वालो को पासपोर्ट मे सामान्यत दक्षिण अफ्रीका जाने की अनुमति नही दी जाती। फिर भी सरकार से पत्र व्यवहार हो रहा है।

२— वीसा के प्रार्थना पत्र का फार्म ठीक तरह से भरने पर, उनके कथनानुसार विशेष कठिनाई की सभावना नही है। (आवेदन पत्र के इच्छुक वीसा फार्म की कापी इस सभा से प्राप्त कर सकते है।) प्रतिनिधि सभाएं इस सम्बन्ध मे अपने प्रदेश क्षेत्र म भाषा य सूचनाए प्रकाशित करा दे।

३— (१) वीसा फार्म के साथ पासपोर्ट के पहले चार पृष्ठो की फोटो स्टेट कापी जिसमे पासपोर्ट नम्बर व्यक्ति की पहचान सार्वदेशिक सभा मे प्रवेश करने का अनुमति आदि हो, वह भेजना जरूरी है। पासपोर्ट भेजने की आवश्यकता नही है। हर एक व्यक्ति के दो फोटोग्राफ होने चाहिए जिसके पीछे उसके हस्ताक्षर स्पष्ट अक्षरो मे (अग्रेजी मे पूरा नाम तथा जन्म तारीख लिखी हो।)

(२) ट्रेवल एजेन्ट से जाँच करके एलो फीवर तथा कौलैरा के टैस्ट सर्टिफिकेट वीसा के फार्म के साथ जरूरी भेजे जायें।

(४) पास पोर्ट मे प्रवास के देशो मे साउथ अफ्रीका प्रवेश पर निषेध लिखा रहता है। इसको रद्द करवाना आवेदक के लिए जरूरी है। प्रवासी के लिए अगर वहा पहुचने पर पासपोर्ट फीस भरनी होगी तो उनकी ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा साउथ अफ्रीका इस फीस को भर देगी।

ज्ञात हुआ है कि बम्बई और गुजरात से दर्शको का एक अच्छा समूह इस अवसर पर वहा पहुचेगा।

भारत सरकार से दक्षिण अफ्रीका मे प्रवेश की अनुमति दिलाने मे सभावित विलम्ब को देखकर श्री नरदेव जी का सुझाव है कि पासपोर्ट के पहले चार पृष्ठो की फोटो कापी एव वीसा फार्म पहले भेज देना चाहिए। दक्षिण अफ्रीकी सरकार वीसा फार्म पर यह मानकर स्वीकृति दे देती है कि वहाँ उपस्थित रहने के समय तक भारत सरकार की अनुमति पास पोर्ट पर मिल जायेगी।

(ओमप्रकाश त्यागी)
मन्त्री

निर्वाचन

आर्यसमाज पश्चिमपुरी नई दिल्ली का नया निर्वाचन १६-५-८५ को हुआ जिसमे निम्न प्रतिनिधि मुख्य रूप से चुने गए हैं—

प्रधान—श्री राजभरत मिनोचा
मन्त्री—श्री सतीश आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री ज्ञानचन्द

सतीश आर्य
मन्त्री

आर्यसमाज राजौरी गार्डन का निर्वाचन

प्रधान—श्री हरिबाबू गुप्त
उपप्रधान—सर्वश्री गनपत राय वर्मा, बख्तावर मल, नागपाल व देशराज सेठी
मन्त्री—श्री नन्दकिशोर भाटिया
उपमन्त्री—सर्वश्री तिलकराज पुरी, कृष्ण लाल आर्य व विनीत कुमार सिंगल
कोषाध्यक्ष—श्री केवलकृष्ण कोहली
पुस्तकाध्यक्ष—श्री इन्द्रकुमार कपूर
लेखानिरीक्षक—श्री मोहनलाल बब्बर

सुरेन्द्र हिन्दी

आर्यसमाज (रामस्वरूप हाल) आर्यपुरा सब्जी मण्डी, दिल्ली का ८२ वाँ वार्षिकोत्सव एव साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन २३ जून १९८५ रविवार को प्रात ६-०० बजे सम्पन्न हुआ। जिसमे नवीन सत्र के लिए निम्न पदाधिकारियो का निर्वाचन हुआ।

सर्वश्री सन्तोषवीर	प्रधान
,, राजेन्द्रप्रसाद	उपप्रधान
,, ओमप्रकाश वर्मा	,, ,,
,, पुरुषोत्तमदास	,, ,,
,, रणवीरसिंह	मन्त्री
,, श्यामबहादुर सैनी	उपमन्त्री
श्रीमती राजकुमारी	उपमन्त्राणी
श्री पुष्पराज	कोषाध्यक्ष
,, वीरसैन	पुस्तकालयाध्यक्ष
,, ओमप्रकाश शर्मा	लेखानिरीक्षक

प्रधान
आर्यसमाज आर्यपुरा
सब्जी मण्डी, दिल्ली-७

'आर्यसमाज बाजार सीताराम दिल्ली के वार्षिक साधारण अधिवेशन मे निम्नलिखित पदाधिकारी व अन्तरग सदस्य सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए—

प्रधान—श्री राजाराम जी शास्त्री
उपप्रधान—श्री सुर्जनसिंह जी एव श्री वैद्य धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री
मन्त्री—श्री बाबूराम आर्य
उपमन्त्री—श्री किशनलाल जी तारवाले, श्री राजीव खडेलवाल जी
कोषाध्यक्ष—श्री नरेन्द्रनाथ गुप्ता
पुस्तकाध्यक्ष—श्री कमल मालवीय जी
लेखानिरीक्षक—श्री राजारामसिंह जी

अन्तरग सदस्य—लाला न्यादरमल गुप्त, श्री दीवानचन्द पसटा श्री सूरज भान बसल, श्री सत्यप्रकाश महेश्वरी, श्री मदनलाल गुप्ता, श्री राकेशकुमार, श्री किशनलाल हुक्कवाले, श्री रामचन्द्र मिस्त्री, श्री रामधन, श्री प्रकाशचन्द्र शास्त्री, श्री रामशरण दास, श्रीमती सीता माहेश्वरी, श्रीमती कृपादेवी, श्री चन्द्रप्रकाश, श्री गोपीनाथ गोटेवाले, श्री बुद्धिप्रकाश।

विशेष आमन्त्रित—श्रीमती शान्ता बसल, श्री दयानन्द खुराना, श्री जगदीश चन्द्र गुप्ता, श्री सुशील कुमारी।

बाबूराम आर्य, मन्त्री

सम्पादक के नाम पत्र—

हार्दिक बधाई

मैं व्यक्तिगत रूप से आपको 'आर्य सन्देश' साप्ताहिक पत्र के सम्पादक होने की बहुत बहुत मुबारक देता हू। आपके सम्पादक होने से मुझे ऐसा आभास होता है कि वास्तव मे अब यह पत्र स्वामी दयानन्द के आदर्शो को पूर्ण रूप से प्रसारित कर रहा है। अब इस पत्र को पढ कर ऐसा लगता है कि इस पत्र का सचालन किसी योग्य तथा पूर्ण विद्वान् के हाथो मे है। मैं पुन आपको बधाई देता हू।

हसराज मदान
आर्यसमाज अशोक विहार तृतीय

भारतीय जागरण में आर्यसमाज का योगदान

महोदय,

श्री महावीर विद्यालकार लिखित उपर्युक्त शीर्षक लेख २६ मई के अक मे प्रकाशित हुआ है। क्या लेखक महोदय अपने इस कथन की पुष्टि इतिहास के आधार पर करेंगे कि स्वामी दयानन्द ने साधुओ की टोली बनाई और हाथो मे कमल का फूल और रोटी का टुकडा लेकर कश्मीर से कन्याकुमारी तक भ्रमण किया और स्वतन्त्रता युद्ध का सन्देश पहुचाया। शायद ही कभी किसी साधु टोली ने दयानन्द का साथ दिया। वे तो अपने जीवन के प्रारम्भिक भाग मे एकाकी ही विचरण करते रहे। ऋषि ने भी महावीर जी के अनुसार नाना साहब और अजीमुल्ला खा को सौराष्ट्र जाने की सलाह दी थी। परन्तु इतिहास इस सम्बन्ध मे कुछ नही कहता।

डा० भवानीलाल भारतीय
पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ

प्रवेश प्रारम्भ

अनुभवी शिक्षाविदो के नेतृत्व एव विशुद्ध नवीन प्रशासनिक व्यवस्था मे सुसचालित आपके प्रिय आर्य महाविद्यालय किरठल (मेरठ) मे एक जोलाई से छात्रों का नवीन प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। यहा सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी की प्रथमा से आचार्य पर्यन्त कक्षाओ के अध्यापन की पूर्ण व्यवस्था है। शिक्षा एव आवास की व्यवस्था नि शुल्क है। शास्त्री एव आचार्य के छात्रो की भोजन व्यवस्था भी नि शुल्क है। अत अपने बच्चो के बहुमुखी विकास के लिए विद्यालय मे प्रवेश कराये। प्रवेश हेतु तुरन्त सम्पर्क करें।

मार्ग-निर्देश—देहली से सहारनपुर जाने वाले बस मार्ग के रमाला स्टैंड से टाण्डा जाने वाले बस मार्ग मे किरठल है।

आचार्य
समरभानु आचार्य

गुरुदत्त विद्यार्थी

(पृष्ठ १ का शेष)

को आर्यसमाज मन्दिर लाहौर मे गुरुदत्त ने एक सभा बुलाई, जिसमे स्कूल की आवश्यकता और उद्देश्यो पर प्रकाश डाला गया। तथा जनता मे इस पवित्र काय के लिए उत्साह भरा। आखिर प्रतीक्षा की घडियाँ समाप्त हुइ और १ जून को आय समाज मन्दिर गली बच्छो वाली मे एक सार्वजनिक सभा करके डी० ए० वी० स्कूल की स्थापना कर दी।

पडित जी ने १८८८ मे इतना काय किया जितना साधारण व्यक्ति एक वर्ष मे भी नही कर सकता। वे कृण्वन्तो विश्वमार्यम की धुन के दीवाने हो गये। जो व्यक्ति सम्पर्क मे आ जाता उसे भी आय बनाने के लिए जुट जाते। न जाने कितने व्यक्तियो को इस प्रकार नव जीवन मिला।

जुलाई १८८९ मे वदिक मगजीन के नाम मे आग्ल भाषा मे एक मासिक पत्रिका का सपादन आरम्भ किया। पडित जी इस पत्रिका मे वैदिक सिद्धान्तो पर खोजपूर्ण लेख लिखा करते थ। लेख इतने विद्वत्ता पूर्ण होते थ कि देश विदेश मे सवत्र पत्रिका का मान हुआ। पत्रिका चलती फिरती आर्यसमाज थी।

ईश्वरीय नियम अपना बदला लिए बिना नही छोडते। जो बरसात समय से पहले आ जाता है वह शीघ्र ही समाप्त हो जाती है। पडित गुरुदत्त जी मे प्रतिभा समय से पूर्व ही बरस पडी थी। जिस उम्र मे हमारे बच्चे गिल्ली डण्डा खेलते हैं उसमे गुरुदत्त जी ने प्राणायाम करना आरम्भ कर दिया था। १९ वर्ष की अवस्था का विद्यार्थी पजाब की आय समाज का प्रतिनिधि बनाकर अजमेर भेजा गया। २४ वा वर्ष पूरा होता कि नौजवान एम० ए० को पढाने के लिए गवनमेंट कालेज से साइस का बडा अध्यापक नियुक्त कर दिया गया।

फिर पडित जी ने नियमो को तोडने मे कसर न छोडी। जिस काम मे लगे उसके सिवा सब कुछ भुला दिया। जिन लोगो को उस ज्ञानी आत्मा के सहवास का अवसर मिला है वे कहा करते थ कि जब वे वदिक मगजीन को लिखन बैठते थ तब कई दिनो तक घर से बाहर नहीं निकलते थ। जब पढने लगते तब ... घण्टे तक एक मिनट भर भी विद लिए बिना पढ चले जाते थ। जब सोने की धुन सवार होती थी तब २४ घण्टे की एकरसी समाधि लगती थी।

इस प्रकार के अतिक्रमणो से लोहे का शरीर भी अस्त व्यस्त हो सकता है। जवानी मे पडित जी का शरीर सडौल व मजबूत था। परन्तु ईश्वरीय नियमो के उल्लघन ने उसे शिथिल कर दिया। प्रतीत होता है कि गुरु के बिना प्राणायाम के परिश्रम ने भी शरीर पर कुछ बुरा प्रभाव उत्पन्न कर दिया। इन कारणो से आयसमाज की आशाओ के केन्द्र उस होनहार नवयुवक को क्षय रोग ने आ घेरा। फलस्वरूप १९ मार्च को प्रभात के ७ बजे स्वामी दयानन्द के सच्चे शिष्य ने २६ वर्ष की अल्पायु मे ही इस लोक से प्रयाण कर दिया।

पडित गुरुदत्त विद्यार्थी जी उस कली की भाति थ जो खिलने से पूर्व हो मुरझा गयी। यह ठीक है कि प० जी के पश्चात आयसमाज की गोदी मे अनेक रत्न खिले जिन्होने आर्य समाज का गौरव बढाया। पर कोई गुरुदत्त फिर न मिल सका। उनका अभाव तो अखरता रहेगा। उनके बिना वह शोभा ही नही हो भी कैसे।

> जिसे रौनक तेरे कदमो ने
> देकर छीन ली रौनक
> वह लाख आबाद हो
> उस घर की वीरानी नही जाती।

प्रभु करे हम पडित जी के चरण चिह्नो पर चलकर विश्व मे वैदिक मान्यताओ का प्रचार कर सके। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

शोक प्रस्ताव

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की यह शोक सभा एटलाटिक समुद्र के एयर इण्डिया जबाजट वायुयान दुघटना मे ३२९ यात्रियो के मारे जाने पर गहरा शोक प्रकट करती है। विश्वविद्यालय यह अनुभव करता है कि यह भीषण एव हृदय विदारक दुघटना एक राष्टीय क्षति के रूप मे हम सब के सम्मुख है। दुघटना मे मारे गए इन यात्रियो मे पूरे राष्ट को एक गम्भीर क्षति हुइ है। शोक के इस सतप्त वातावरण मे विश्वविद्यालय की यह सभा ईश्वर से प्राथना करती है कि मृत व्यक्तियो के परिवारो को इस गहन दुख को सहन करने की क्षमता प्रदान करे। यह सभा सरकार से माग करती है कि इस भीषण दुघटना के कारणो की सूक्ष्मता से जाच की जाए तथा यह सुनिश्चित किया जाय कि कही दुघटना मे विघटनकारी शक्तियो का तो हाथ नही है।

—विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारी एव कमचारी

ग्राम प्रचार श्रृंखला

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा द्वारा वेद प्रचार व्यवस्था का कायक्रम बडे उत्साह पूवक चल रहा है। सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द के द्वारा एक सप्ताह तक न्यू लिचडीपुर कालोनी मे श्री ला० दामोदर प्रसाद जी आय के निवास स्थान पर २२ जून को बृहद्यज्ञ व समारोह पूवक सम्पन्न हुआ। इस अवसर यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी स्वरूपानन्द ने पच यज्ञो के महत्व व धर्म राष्ट और समाज के प्रति हमारे क्या कत्तव्य है विषयो पर प्रकाश डाला सभा के भजनोपदेशक श्री आशाराम प्रमी और श्री श्याम वीर के भक्ति रस मे ओतप्रोत भजनो ने सैकडो नर नारियो को भावविभोर कर दिया।

सवाददाता आयसन्देश

खिचड़ीपुर क्षेत्र में ग्राम-प्रचार

ला० दामोदर प्रसाद आर्य द्वारा खिचड़ीपुर क्षेत्र मे ग्राम प्रचार रखा गया। जिसमे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती प्रचार वाहन लकर साथ सगीत कलाकार पण्डित आसाराम प्रेमी व श्याम राघव जी द्वारा वैदिक धर्म का प्रसार हुआ। १७ ६ ८५ को ला० दामोदरप्रसाद आर्य के निवास स्थान पर रात्रि ६ बजे से ११ बजे तक प्रचार कार्य रहा। ग्राम निवासियो ने भारी सख्या मे पधार कर धर्म लाभ लिया। १८-६ ८५ की रात्री को खिचडीपुर न० ३ में प्रोग्राम रखा गया, जिसमे सैकडो नरनारी एकत्र रहे। १२ बजे तक कार्यक्रम चलता रहा। दूसरे दिन के लिए इसी स्थान पर कार्यक्रम रखने का निवेदन किया गया। १६-६ ८५ को भी इसी स्थान पर हर्ष व उल्लास के साथ प्रोग्राम सम्पन्न हुआ। २०-६-८५ को आर्यसमाज मन्दिर खिचडीपुर के सामने कार्यक्रम रखा गया। यहा अधिक सख्या मे ग्राम निवासियो न भाग लिया। रात्रि १२ बजे तक प्रोग्राम चलाया गया। सगीत कलाकारो ने अपने भजनोपदेश से जनता को उत्साह दिया। स्वामी स्वरूपानन्द जी ने महर्षि दयानन्द की विशेषता और आर्यसमाज की गतिविधियो पर प्रभावशाली उपदेश और हास्य कविताओ द्वारा सभी को उत्साहित किया—श्रोतागणों मे एक हर्ष की लहर रही—और सभी ने माग की कि यहा पर १ सप्ताह तक प्रचार कार्य रखा रखा जाये। यहा ग्रामीण जनता मे बौद्ध धर्म का प्रचार अधिक है। हम चाहते है कि यहां वैदिक भावनाओ की पवित्र गगा बहती रहे ताकि हम सभी कालोनी के निवासियो को वेदामृत पान का प्रसाद मिलता रहे। जनता की माग पर यह प्रचार कार्य १७ से २२ जून तक का बढा दिया गया।

ग्राम प्रचार के लिए बहुत परिश्रम करना पडता है जबकि १० बजे तक कार्यक्रम चलना चाहिए ग्राम मे रात्रि १० बजे शुरू होता है और १२ व १ बजे तक प्रोग्राम चलाया जाता है। हम सभी को वैदिक धर्म प्रचार प्रसार मे पूर्ण सहयोग देने का ध्यान रखना है ताकि हम सभी सगठित होकर वैदिक धर्म प्रचार मे अग्रसर होते रहे। तब एक स्वर मे कहेगे कि कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। जो बोले सो अभय—वैदिक धर्म की जय।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस गली न० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ मे मुद्रित। रजि० न० डी० (सी०) ७५६

आर्य सन्देश

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वष ९ अक ३४ | रविवार, १४ जुलाई, १९८५ | आर्य सवत्सर १९६०८५३०८६ | आषाढ २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१

महान् साहित्यकार, शास्त्रार्थ महारथी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

—डा० भवानीलाल भारतीय

आर्यसमाज के अद्वितीय विद्वान् लेखक शास्त्रार्थ महारथी और वक्ता स्वामी दर्शनानन्द का जन्म माघ कृष्णा दशमी १९१८ वि० को लुधियाना जिले के जगरावा नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम प० रामप्रताप शर्मा था जो मौदगल्य गोत्र के सारस्वत ब्राह्मण थे। माता का नाम हीरा देवी था। पुरानी प्रथा के अनुसार इनका नाम नेतराम रखा गया किन्तु शीघ्र ही इसे बदल कर इन्हे कृपाराम के नाम से पुकारा जाने लगा। कृपाराम की प्रारम्भिक शिक्षा पिता के निकट ही हुई तथा उन्होने फारसी ग्रन्थ गुलिस्तां तथा बोस्तां पढे। साथ ही सस्कृत व्याकरण के ज्ञान के लिए सिद्धान्त कौमुदी पढना आरम्भ किया। तत्कालीन प्रथा के अनुसार इन का विवाह वैशाख कृष्णा पचमी १९२९ वि० को मात्र ११ वर्ष की आयु में पार्वती देवी नामक कन्या से कर दिया गया।

कृपाराम के पिता अपने ग्राम के एक अच्छे व्यवसायी और धनाढ्य व्यक्ति थे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि कृपाराम भी एक निपुण व्यापारी बन कर धनोपार्जन करे परन्तु कृपाराम को व्यापार व्यवसाय से सहज विरक्ति थी। स्वतन्त्र प्रकृति के होने के कारण एक दिन अचानक वे गृहत्याग कर सन्यासी बन गये। सन्यासी बन कर वे पजाब के विभिन्न नगरो मे घूमते रहे। इसी अवधि में उन्हें स्वामी दयानन्द के ३७ व्याख्यान सुनने का अवसर मिला। अब तक उन पर नवीन वेदान्त की विचारधारा का प्रबल प्रभाव था। इस समय उन्होने बंदे आजादी नामक २८ पृष्ठों की एक पुस्तक लिखी जो उर्दू पद्य मे थी। जब बीना नगर (पजाब) मे वे एक पादरी से बहस कर रहे थे, उनके चाचा जयराम ने उन्हे जा पकडा और घर चलने के लिए विवश किया। कृपाराम घर चलन के लिए तैयार तो हुए, परन्तु तीन शर्तों के साथ—(१) गेरुवे वस्त्र नही उतारेंगे। (२) घर मे न रह कर बैठकखाने मे रहेगे। (३) स्वामी दयानन्द के समस्त ग्रन्थ क्रय करेंगे। शर्ते स्वीकार होने पर वे पुन घर लौट आये।

प० कृपाराम के पिता प० दौलतराम अपने जीवन के अन्तिम भाग मे काशी रहने लगे थे। यहा उन्होने एक क्षेत्र चलाया जिसके माध्यम से सस्कृत पढने के इच्छुक छात्रो के भोजन आदि की व्यवस्था होती थी। पितामह के दिवगत होने पर प० कृपाराम को काशी रह कर उनकी सम्पत्ति आदि की व्यवस्था करने के लिए कहा गया। यहा उन्होंने तिमिर नाशक प्रेस की स्थापना १० दिसम्बर १८८९ को की तथा इस प्रेस के माध्यम से वे सस्कृत शास्त्र ग्रथों का प्रकाशन कर उन्हें सस्ते मूल्य पर छात्रो को देने लगे। यहा रह कर ही उन्होंने स्वामी मनीषानन्द नामक विख्यात विद्वान् का शिष्यत्व ग्रहण किया तथा उनसे दर्शन शास्त्र का निगढ अध्ययन किया। अब वे दृढ आर्यसमाजी विचारों के बन चुके थे। काशी में रह कर विद्याध्ययन करने वाले आर्यसमाजी छात्रों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पडता था। प० कृपाराम ने इसे अनुभव किया और उन्होने एक पाठशाला स्थापित की जिसमे आर्यसमाजी विचारधारा के छात्रों के पढने की सुचारु व्यवस्था थी। प० काशीनाथ शास्त्री इस पाठशाला के अध्यापक थे तथा प० गगादत्त शास्त्री एव प० भीमसेन शर्मा (आगरा) आदि उन दिनो विद्यार्थी थे।

धीरे धीरे प० कृपाराम का क्षेत्र अधिक व्यापक होता गया। अब वे वैदिक धर्म के प्रचारक बनकर पजाब तथा सयुक्त प्रान्त मे भ्रमण करने लगे। १८९३ से १८९६ तक का काल उक्त दोनो प्रान्तों मे व्यतीत किया। १८९७ से १९०० तक मेरठ मुरादाबाद, दिल्ली आगरा आदि नगरो मे रहे। नियमित रूप से शास्त्रार्थ करना व्याख्यान देना एक ट्रैक्ट रोज लिखना शका समाधान करना आदि कार्य—उनकी दिनचर्या के अग थे। स० १९०१ मे प० कृपाराम ने सन्यास की दीक्षा स्वामी अनुभवानन्द से ली और दर्शनानन्द नाम स्वीकार किया। अब वे सवतन्त्र स्वतन्त्र परिव्राजक होकर निर्द्वन्द्व भाव से विचरण करने लगे। स्वामी दर्शनानन्द की प्रवृत्तिया निम्न प्रकार से वर्णित की जा सकती है—

१ प्रतिद्वन्द्वी धर्मावलम्बियो से शास्त्रार्थ—उन्होंने पौराणिक जैन, ईसाई तथा इस्लाम मतो के आचार्यों से सैकडो शास्त्रार्थ किये।

२ गुरुकुलो की स्थापना—सिकन्दराबाद (उत्तर प्रदेश) बदायू तथा ज्वालापुर मे गुरुकुलो की स्थापना का श्रेय उन्हें ही है।

३ विभिन्न पत्र पत्रिकाओ का सपादन एव प्रकाशन—अपने जीवन काल में उन्होने कोई एक दर्जन पत्र प्रकाशित किये।

४ लेखन कार्य—स्वामी जी ने १८९६ से एक ट्रैक्ट प्रतिदिन लिखने का नियम बना लिया था। इस प्रकार उनकी लेखनी से सैकडो ट्रैक्ट निकले। उन्होने अनेक दर्शनों का भाष्य किया, उपनिषदों पर टीका लिखी। कथा कहानियो के माध्यम से धार्मिक सिद्धातो का विवेचन करना उनके साहित्य लेखन की एक अन्य विशिष्ट विधा थी। ११ मई १९१३ को हाथरस मे उनका निधन हुआ।

स्वामी दर्शनानन्द का साहित्य मूलत उर्दू मे लिखा गया है। कालान्तर मे उसका हिन्दी अनुवाद भी हुआ। यहा उनके द्वारा लिखित एव प्रकाशित सभी कृतियो का यथोपलब्ध विवरण दिया जा रहा है--

अपने काशी निवासकाल मे प० कृपाराम ने जिन शास्त्र ग्रथो को स्वव्यय मे प्रकाशित किया उनका विवरण इस प्रकार है—

१ सामवेद सहिता—विक्टोरिया यत्रालय काशी मे मुद्रित।

२ अष्टाध्यायी काशिका वृत्ति

३ अष्टाध्यायी महाभाष्य। उनके समस्त ग्रन्थो की सख्या सैकडो तक पहुँच चुकी है।

□

सत्संग वाटिका

महर्षि दयानन्द का सर्वाधिक प्रिय वेद मन्त्र—एक मनन

आचार्य वेदभूषण
अधिष्ठाता, अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद

विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परासुव ।
यद्भद्र तन्न आसुव ॥ यजु० ३० । ३ ।

★

प्रभु की इस सृष्टि का कौन सा ऐसा कोना है जो आश्चर्य से परिपूर्ण या अद्भुत नही है। इस सृष्टि मे दृश्यमान कौन सी ऐसी प्रक्रिया है जो ज्ञान से युक्त नही है।

वास्तव में आत्मा को ज्ञान से परिचित कराने का माध्यम ही यह जड जगत् है। ससार के समस्त पदार्थ मनुष्य की ज्ञान चेतना को जागृत करने के उद्देश्य से ही रचे गये हैं। ज्ञान का व्यावहारिक स्वरूप ही सृष्टि है।

स्रष्टा द्वारा सर्जित यह ससार वास्तव मे एक विश्वविद्यालय है। जहा जन्म लेकर हमारी आत्मा चेतनायुक्त होती है। चिति सज्ञाने धातु से ही चेतन शब्द बनता है। स्वरूप से आत्मा चेतन होते हुए भी सज्ञा शून्य ही होती है। इसमे चेतना का स्फुरण भी उस अद्वितीय सत्ता द्वारा ही होता है जो इस समग्र सृष्टि का नियामक या कर्ता है।

कार्य से ही कर्ता के अस्तित्व का बोध होता है। सृष्टि से स्रष्टा का बोध होता है। जीवात्मा की चेतना केवल ज्ञान ग्रहण करने के सामर्थ्य तक ही सीमित है। यह सामर्थ्य ही उसको जड जगत् से या तत्त्व से भिन्न करता है। जड प्रकृति से आत्मा की भिन्नता या उसका अपना पृथक् अस्तित्व ज्ञान ग्रहण की मूल चेतना से युक्त होना ही है।

ज्ञान को प्रस्तुत करने और ज्ञान को ग्रहण करने के लिए जड जगत् की अनिवार्य आवश्यकता है। ज्ञान के क्रियान्वयन के लिए ही वह अद्वितीय सत्ता जड जगत् से आबद्ध है हिरण्यगर्भ है। ज्ञान को ग्रहण करने व ग्रहण करने की प्रक्रिया के प्रारम्भ के लिए ही आत्मा को जड जगत् के पिण्ड से आबद्ध किया जाता है।

इस प्रकार हमारे जीवन की जन्म-मरण की प्रक्रिया या बन्ध मोक्ष की प्रक्रिया का मूल कारण ज्ञान ही है। ज्ञान प्राप्ति के लिए ही हमे जड शरीर से आवेष्टित किया जाता है। क्योंकि हमारी चेतना जड जगत् के बिना जागृत नही हो सकती। साथ ही ज्ञान की पूर्णता भी बिना जड जगत् से मुक्ति पाये नहीं हो सकती।

इस प्रकार आत्मा की जीवन यात्रा ज्ञान यात्रा ही है। ज्ञान ही जीवात्मा का लक्ष्य है। जो जितना अधिक ज्ञानार्जन करता है उसका जीवन उतना ही अधिक सफल होता है।

इस परिप्रेक्ष्य मे हमे इस लक्ष्य को अगीकार करना होगा कि कार्य मे पहल उसके उपादान कारण का होना अनिवार्य है। जिस प्रकार एक कुम्हार के घडा बनाने के लिए घड का उपादान कारण मिट्टी पहले होना जरूरी है। क्योंकि घडे का निर्माण ही मिट्टी से होता है। सृष्टि की समस्त रचना ज्ञान पूर्वक है अत सृष्टि रचना से पूर्व ज्ञान का होना आवश्यक है। ज्ञान एक क्षमता या सामर्थ्य है उसका अपना कोई भिन्न अस्तित्व नही है। बिना ज्ञानी के ज्ञान रह नहीं सकता। क्योकि ज्ञान ज्ञानी का गुण या सामर्थ्य ही है।

इस सिद्धान्त को समझ लेने या जान लेने पर हमे यह स्वीकार करना होगा कि ज्ञान सृष्टि के सर्जन से पूर्व ही स्रष्टा के सामर्थ्य मे निहित होता है। यह कल्पना कि सृष्टि के बाद ज्ञान बना यह बात हास्यास्पद होगी।

इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि कार्य से पूर्व कार्य का ज्ञान कर्ता के पास होता है। सृष्टि के सर्जन और अस्तित्व बोध के लिए जो ज्ञान आवश्यक है उसी का नाम वेद है। वेद शब्द का अर्थ है ज्ञान। ज्ञान ज्ञानी का गुण है। इसीलिए ज्ञान को ईश्वरीय माना जाता है। क्यो कि वही समग्र विश्व का कर्ता है।

जिस प्रकार वस्तु के निर्माण के लिए उससे सम्बन्धित ज्ञान की अनिवार्यता होती है वैसे ही वस्तु के प्रयोग या उपयोग के लिए भी ज्ञान एक अपरिहार्य "आवश्यकता" है।

जैसे किसी ने किसी रोग की एक औषधि का निर्माण किया। औषधि का निर्माण करने से पूर्व उसे औषधि निर्माण का ज्ञान आवश्यक है। ज्ञान से उसने औषधि बनाई। अब जो व्यक्ति उस औषधि का सेवन करेगा उसके लिए सेवन विधि के ज्ञान की आवश्यकता होती है तभी सेवनकर्ता उसके लाभ से लाभान्वित हो सकेगा। इसलिए सेवन विधि भी औषधि के साथ घोषित की जाती है।

स्रष्टा का ज्ञान अनन्त है किन्तु आत्मा के लिए जितने ज्ञान की ससार मे आवश्यकता होती है उतना ज्ञान स्रष्टा मनुष्य को देता है इसी ज्ञान को हम वेद या ज्ञान कहते हैं। वेदो मे मन्त्र हैं। मन्त्र शब्द का अर्थ है फार्मूला या ज्ञान का बीज।

जिस प्रकार बड वृक्ष का सामर्थ्य छोटे से बीज मे अन्तर्निहित होता है वैसे ही वेद के मन्त्रो की स्थिति है। मन्त्र उसे इसलिए कहा जाता है कि उस पर हमें मनन करना होता है, मनन के करने से मन्त्र अकुरित पुष्पित व फलित होता है।

यह सिद्धान्त अपने आप मे कितना स्पष्ट और सरल है पर हमने अनेक उपाधिधारी विद्वानों के मुख से सुना है कि—वेद ईश्वरीय ज्ञान है वह ऋषियों की वाणी से प्रकट हुए आदि बातों पर वे विश्वास नही कर पाते। इसका एकमात्र कारण चिन्तन मे सूक्ष्मता का न होना ही है।

महर्षि स्वामी दयानन्द ने आधुनिक युग मे इस सत्य को समझाया और सत्य का प्रकाश किया।

आज जब हम एक विश्व को देखते हैं और वेदो के मन्त्रो पर मनन करते हैं तो हमें स्फटिक मणी के समान वेद के सिद्धान्त अत्यन्त सत्य और सटीक प्रतीक होते हैं। जिस प्रकार ससार के किसी भी पदार्थ को हम अच्छा या बुरा नही कह सकते क्योंकि अच्छा या बुरा सापेक्ष होता है। जैसे किसी पदार्थ को छोटा या बडा किसी अन्य की अपेक्षा से या मुकाबले मे कहा जाता है अन्यथा छोटा बडा या अच्छे बुरे का प्रश्न ही पैदा नही होता।

यही बात वेद मन्त्रो की भी है। वेद को कोई मन्त्र महत्त्वपूर्ण या महत्त्वरहित नही होता। हमारी अपनी अपेक्षा से ही हम किसी को सारगर्भित कह सकते हैं या कह देते हैं।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने वेदभाष्य मे प्रत्येक अध्याय के प्रारभ मे विश्वानि देव सवितर० इस मन्त्र का प्रयोग किया है। इस हेतु से हम कह सकते हैं कि महर्षि को उक्त मन्त्र सर्वाधिक प्रिय था।

वास्तव मे इस छोटे से मन्त्र मे जो सार निहित है वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। सारे विश्व मे हमे इस मन्त्र का विस्तार दृष्टिगोचर होता है। आइए हम इस मन्त्र पर सक्षेप मे विचार करेंगे।

यह मन्त्र यजुर्वेद के तीसरे अध्याय का तीसरा मन्त्र है। जो इस प्रकार है।

विश्वानि देव सवितर् दुरितानि
परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।
यजु० ३०-३

इस अध्याय का प्रथम मन्त्र है—देव सवित प्रसुव यज्ञ प्रसुव यज्ञपति०—। दूसरा मन्त्र है—तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य०। गायत्री मन्त्र है और तीसरा मन्त्र है विश्वानि देव०। इन तीनों मन्त्रों के ऋषि नारायण और देवता सविता हैं।

"सविता शब्द का मुख्य अर्थ है "उत्पादिनी शक्ति"

उत्पादक तत्त्व ही सशोधक होता है। सशोधन की प्रक्रिया ही यज्ञ प्रक्रिया कहाती है। इस प्रकार यजुर्वेद के तीसरे अध्याय के ये तीनों मन्त्र शुद्धि की प्रेरणा देते हैं। 'केतपू' केत न पुनातु" मे शुद्ध करने की भावना स्पष्ट है। गायत्री मन्त्र में भी भर्ग धीमहि अर्थात् उस दिव्यगुणों से युक्त देव के उत्तम गुण कर्म स्वभाव को धारण कर हम भी भर्ग शुद्ध स्वरूप हो जाएँ। यही भावना इस तीसरे मन्त्र में है कि – दुरितानि परासुव "यद्भद्र तन्न आसुव" अपवित्रता को दूर करें और उत्तमता को धारण करें।

यदि हम गम्भीरता से विचार करें तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि समस्त ससार मे जड और चेतन मे एक प्रक्रिया निरन्तर जारी है और यह सबसे पहली प्रक्रिया है वह प्रक्रिया है शोधन की। पवित्रता की।

जड और चेतन दोनो मे समान रूप से निरन्तर यह शोधन की प्रक्रिया चलती रहती है। हम जितना विकृति से दूर रहेंगे उतने ही दीर्घजीवी और सुखी रहेंगे।

पवित्रता दीर्घ जीवन और सुखप्राप्ति की पहली और महत्त्वपूर्ण शर्त है। दुरित के अपहार के बिना भद्र की स्थापना संभव नही है। इसी मौलिक सिद्धान्त को प्रस्तुत मन्त्र उजागर करता है।

मानव समाज में धर्म के जितने नियम अथवा सिद्धान्त हैं उनका मूल आधार भी सशोधन है तथा भद्र की स्थापना है। जो धर्म दुरित के त्याग के नियमो की उपेक्षा कर भद्र स्थापना की बात करता है वह धर्म नहीं किन्तु सम्प्रदाय कहाता है।

सम्प्रदाय मानव जाति मे भद्रता उत्पन्न नही कर सकता। जैसे मलिन पात्र में हम कितना ही उत्तम भोजन रखें वह उत्तम भोजन भी अपवित्र और हानिप्रद हो जाता है वैसे ही दुरितों के त्यागे बिना हम चाहे जितने सद्गुणी बन जाएँ हमारे वे सद्गुण भी हमारे लिए सुखदायी नहीं हो पाते।

आजकल बहुत से तथाकथित धर्माचार्य और धर्मगुरु अपने चेले चेलियों को भ्रमजाल में फंसाते हैं कि—आप कुछ भी खाइये पीजिए जो मर्जी आए सो कीजिये बस अमुक बात को धारण कर लीजिए आपका कल्याण हो जायेगा यह सिद्धान्त भ्रमपूर्ण है इससे कभी भी लक्ष्य की प्राप्ति नही होती।

दुरित को दूर करने का उपाय है खण्डन, चोट, आघात। अर्थात् जब तक हम बुराई को दृढ सकल्प व बलपूर्वक प्रताड़ना या भर्त्सना से नही निकालते तब तक वह दूर नहीं होगी।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

★ वचन-सन्देश ★

जिह्वाया अग्रे मधु मे
जिह्वामूले मधूलकम्।
ममेदह क्रतावसो,
मम चित्तमुपायसि ॥१/३४/२॥
मधुमन्मे निष्क्रमणं
मधुमन्मे परायणं।
वाचा वदामि मधुमद्
भूयासं मधु सन्दृशः ॥३॥
मधोरस्मि मधुतरो
मदुघान्मधुमत्तरः ॥४॥ (अथर्ववेद)

मधु-पूरित हो मेरी वाणी!
मधु-पूरित हो अग्र भाग मेरी जिह्वा का
और मूल भी इसका हो मधुरिम कल्याणी
मधु पूरित हो मेरी वाणी॥

मधु पूरित हो यात्रा मेरी
निकट-पूर्व का गमन-आगमन!
सब को प्रसन्नता पहुंचाकर
खुशियों से भर दूं सब का मन!

मैं सबका प्रियवर बन जाऊं
मधुरिम प्रवृत्तियों का उद्‌गम!
मैं मधु से भी अधिक मधुर हो
बन मधुरतर और मधुरतम!
जग के हर पदार्थ से मीठी हो मेरी वाणी कल्याणी।
मधु-पूरित हो मेरी वाणी॥

कवि बशीर अहमद मयूख

सम्पादकीय—

सिख आतंकवाद का भयंकर जाल

विश्व भर इस समय आतंकवाद की चपेट में है और यह आतंकवाद बढ़ता ही जा रहा है। भारत में यह और भी अधिक विकराल रूप से अपने जबड़े खोले हुए है। आतंकवाद का यह खतरा केवल खालिस्तानियों से ही नहीं है बल्कि काश्मीर मुक्ति मोर्चा, मिजो संगठन त्रिपुरा वालंटियर्स तथा नागा मुक्ति मोर्चे जैसे अनेक उग्रपंथी संगठनों से है। इस आतंकवाद का सामना करना आसान काम नहीं। विदेशों में उग्रपंथियों की संख्या कम नहीं और न ही साधनों की कमी। साथ ही इनकी पीठ थपथपाने वाली ताकत भी कम नहीं है। इस समय खालिस्तानी उग्रवादियों के क्रूर कारनामों से सारा विश्व दहल उठा है। भारत से बाहर सिख भारी संख्या में है। यूरोप और पश्चिमी देशों में यह सब जगह पहुंचे हुए है। सब से अधिक यह अमेरिका और कनाडा में आबाद है। ब्रिटेन में भी इनकी संख्या काफी है किन्तु इनमें उग्रवादी सिख बहुत कम हैं। अधिकांश सिख तटस्थ अपने व्यापार पेशे में संलग्न है। यह भी स्पष्ट है अनेक व्यापारी सिखों का इन उग्रवादियों को बढ़ चढ़कर सहयोग मिल रहा है। अमेरिका में कई ऐसे स्कूल चल रहे है जहाँ दुनिया भर की सरकारों के विद्रोहियों को आतंकवाद का प्रशिक्षण दिया जाता है। 'न्यूयार्क पोस्ट' ने अलबामा के एक स्कूल का ब्यौरा देते हुए बताया है कि एयर इण्डिया के जिस बोइंग विमान की दुर्घटना हुई है उसके लिए जिन दो व्यक्तियों अमन्द सिंह और लालसिंह पर सन्देह किया जा रहा है वे इसी स्कूल में प्रशिक्षित किए गए थे। संस्था के डायरेक्टर फ्रैंक कैंपर के अनुसार उन्हें किसी अन्तर्राष्ट्रीय सिख सक्रिय संगठन ने दस लाख डालर दिये थे। इसमें छः सिख आतंकवादियों को प्रशिक्षित किया गया था। इस प्रशिक्षण में विस्फोटक बनाने पानी में जहर मिलाने तथा उच्च सुरक्षा के रहते हुए किसी उच्च व्यक्ति तक पहुंच पाना आदि का प्रशिक्षण भी शामिल था। विदेशों में भारतीय सम्पत्ति को हानि पहुंचाकर आतंक मचाने की योजना भी इसके अन्तर्गत थी। इस योजना को बनाने वाले स्कूल के निदेशक और अमरीकी गुप्तचर संस्था एफ० बी० आई० के छिपे जासूस है। कहते हे इस तरह के अमेरिका में दो दर्जन स्कूल हैं। सेना या गुप्तचर सेवा से अवकाश प्राप्त अधिकारियों को भाड़े के सैनिक सप्लाई करने से लेकर आतंकवादियों का प्रशिक्षण देने तक की दुकान पश्चिम के अन्य लोकतन्त्रीय देशों में भी है परन्तु अमरीका और अन्य देशों का ध्यान इस तरफ नहीं जाता। कह दिया जाता है कि लोकतन्त्र की कुछ मजबूरियां हैं। प्रत्येक पश्चिमी सरकार सिखों की गतिविधियों को नजर अन्दाज करती रही है। यही हाल कनाडा का भी है।

कनाडा में बसे ढाई लाख भारतीयों में ४० प्रतिशत सिख है। खालिस्तानी समर्थक तो इससे भी कम है परन्तु इन लोगों को कनाडा सरकार का निरन्तर समर्थन मिलता रहा है। इससे वहां हिन्दू सिखों में सदा दरार चौड़ी होती जा रही है। कहा जाता है कनाडा सरकार गुप्त रूप से उग्रवादियों को आर्थिक सहायता भी देती रही है। ब्रिटेन में भी उग्रवादी बढ़ चढ़कर अपना काम करते रहे हैं। वहां की सरकार ने उन्हें रोकने के बजाय प्रोत्साहन दिया। साउथल में जगजीत सिंह चौहान अपना आफिस बनाने में सफल हो गया। उसने खुले आम बी० बी० सी० से यह घोषणा की कि जो कोई भी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी या उनके परिवार के किसी सदस्य की हत्या करेगा उसे लाखों पौण्ड का इनाम मिलेगा। जगजीतसिंह चौहान को कई संस्थाओं से आर्थिक सहायता भी मिलती रही है। जिन्होंने खुले आम भारतीयों के प्रति हिंसक व्यवहार किया उनके विरुद्ध भी कोई कारवाई नहीं की गयी।

अमेरिका, ब्रिटेन कनाडा के बाद नार्वे भी सिख आतंकवादियों का केन्द्र बन गया। इससे वहां गैर सिख भारतीय परेशान हो उठे है। इस तरह की गतिविधियों के सरगना वहाँ हरिन्दर सिंह थे। यह वो व्यक्ति है जिसने पंजाब में सैनिक कार्रवाई के विरुद्ध विरोध प्रकट करते हुए ओसलो के भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव के पद से त्यागपत्र दिया था और इसी देश में उन्होंने राजनैतिक शरण प्राप्त करने का प्रयास किया था। शरण मिल जाने के बाद वे यहां के उग्रवादियों के नेता बन गये। अनेक प्रवासी भारतीयों के शिष्टमण्डलों ने नार्वे सरकार से अपील की कि इस व्यक्ति की राजनैतिक शरण वापस ले ली जाये परन्तु नार्वे सरकार ने एक नहीं सुनी और उसे 'रेसीडेंस परमिट' देकर अपने देश में रहने दिया।

पिछले दिनों भारत सरकार ने पाकिस्तान से लगी भारत की सीमा को सील कर दिया तो सिख उग्रवादी पाकिस्तान में जाकर शरण लेने में तनिक खतरा महसूस करने लग गए। उन्होंने अपना रुख नेपाल की तरफ कर लिया। वे नेपाल को अपना केन्द्र बनाने के प्रयास में लग गए। नेपाल और भारत की सीमा १५०० किलोमीटर तक लम्बी है। भारत ने इस लम्बी सीमा पर अपनी २०० चेक पोस्ट स्थापित की हैं। लोग वैध तरीकों से भी नेपाल आ जा सकते है मगर यह सारी सीमा खुली है। कई एक ऐसे स्थान है जहां से लोग नेपाल आते जाते है। नेपाल में सरदार प्रीतमसिंह उग्रवादियों का संरक्षक बना हुआ है। कहते है पहले लगभग ३० वर्ष पूर्व यह साधारण मकेनिक बनकर नेपाल आया था और अब वह समृद्ध हो चुका है कि नेपाल में परिवहन सेवा की ७० प्रतिशत गाड़ियां उसकी है। नेपाल के अधिकांश पेट्रोल पम्प भी उसी के है। उसने अपने विशाल घर को गुरुद्वारा बना दिया है। उसमें अनेक आधुनिकतम यन्त्र स्थापित किए जिन से पलभर में अमेरिका कनाडा और ब्रिटेन से सन्देश आ जा सकते है। गत वर्ष जगजीतसिंह चौहान भी उसके पास कुछ दिन गुजार कर गया था। कुछ समय पूर्व एक आतंकवादी पंजाब पुलिस का भूतपूर्व डी० आई० जी० एस० एस० मान अपने कुछ साथियों के साथ जोगबनी के रास्ते नेपाल जाता हुआ गिरफ्तार कर लिया गया था। समझा जाता है यह इसी प्रीतमसिंह के पास शरण लेने जा रहा था। भारत सरकार के दबाव डालने पर यह प्रीतमसिंह आजकल कहीं जा चुका है। कहा जाता है उसके इस महल में आज भी हजारों उग्रवादी जो कनाडा और अमेरिका से आए हुए है शरण लिए हुए है। इस प्रीतम सिंह के राज परिवार के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण पुलिस भी हाथ डालने में सकोच करती है।

विदेशों में सिखों को गुमराह करने के लिए प्रचार भी कम नहीं किया जा रहा। इसलिए आवश्यकता है इस समय अपनी गुप्तचर एजेंसियों को मजबूत करने की। साथ ही इन उग्रवादी तत्वों से निपटने के लिए हर हथियार को धार देने की आवश्यकता है। इस आतंकवादी विकराल जंगल को साफ करने की हर सम्भव कोशिश करनी होगी।

—यशपाल आर्य

भारत के रष्ट्रीय संगठन में धार्मिक उन्माद सबसे बड़ी बाधा है

महावीर 'नीर' विद्यालकार, गुरुकुल कागडी

जब हम अपने प्यारे भारत राष्ट्र के इतिहास पर दृष्टिपात करत हैं ता उसके सस्कृति और सभ्यना पर भी हमारी दृष्टि अनायास ही चली जाती है। प्राचीन काल से ही यहां का निवासी धम भावना से ओत-प्रोत रहा है। गगा, गौ गायत्री उसक व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय जीवन के आधार रहे हैं। प्राचीन भारत का ढाचा ही धम मूलक था। राजा और प्रजा धार्मिक प्रवृत्तियो मे ओत-प्रोत रहते थे। धर्म के लक्षणो को वे अपने जीवन की आधार सहिता मानते थे। ईश्वरीय शक्ति को मानते हुए समस्त प्राणियो का पालन करना राजा और अधिकारी गण अपना कतव्य समझते थे। किन्तु मुस्लिम और आग्ल प्रभाव मे आने के पश्चात् हिन्दुस्तान का समस्त ढाचा ही बदल गया है। आज आजादी के बाद के भारत को हम केवल हिन्दुओ का हिन्दुस्तान नही कह सकते। आज विभिन्न मतो सम्प्रदाया, फिरको को मानने वाले विभिन्न जातियो के लोग यहा निवास करत है। इसलिए सविधान मे इस राष्ट्र को धर्म सापेक्ष न मानकर 'धर्म निरपेक्ष' माना गया है। यदि हम इस बात को यो कह दे कि राष्ट्रीय स्तर पर हमारा कोई धम नही है तो इस मे कुछ भी गलत बात न होगी किन्तु दूसरी ओर राष्ट्र के आवरण मे लिपटी प्रजा विविध धार्मिक भावनाओ को व्यक्तिगत पारिवारिक सामाजिक व जातिगत आधार बनाये बैठी है। इसलिए आये दिन धार्मिक विवाद, राष्ट्रीय विवाद बनकर हमारे मानस को झिझोडते रहते हैं और जब राजनीति निपुण नेताओ से ये प्रभावित होते हैं तो दूसरा ही गुल खिला देते हैं इसलिए जब हम साम्प्रदायिक सद्भाव या सौहाद की बात करते है तो हमे धार्मिक कट्टरपने के पिशाच को नजर-अन्दाज नही करना होगा। देखा जाए तो धर्म का सीधा सम्बन्ध एक ईश्वर, खुदा या गाड की प्रार्थना या इबादत से है। इबादत कही कर लो कुछ फर्क नही पडता। वस्तुत झगडा उसकी इबादत का प्रार्थना करने अथवा न करने का नही है। अपितु इसके मूल मे दूसरे ही कारण हैं जो भाई को भाई से और मानव को मानव से अलग करते है।

स्पष्ट रूप से देखा जाए तो वर्तमान भारत के राष्ट्रीय सगठन मे धार्मिक उन्माद सब से बडी बाधा है। सलिए समस्त भारतवासियो को इसका हल खोजना ही होगा। अन्यथा बड-बड बलिदानो से प्राप्त यह स्वतन्त्रता बिखर जाएगी। टूट जाएगी। याद आ जाते हैं प्रसिद्ध दार्शनिक फ्रैंकालिन के ये शब्द कि 'यदि मनुष्य धर्म की उपस्थिति मे इतने दुष्ट हैं तो धर्म की अनुपस्थिति मे उनकी क्या दशा होगी।'

भारत का ही नही अपितु ससार का इतिहास भी हमे पुकार-पुकार कर कह रहा है कि धर्म के ढकोसलेबाजो और धार्मिक उन्मादियो ने अपनी महत्त्वाकांक्षाओ की पूर्ति के लिए क्या नही किया। एक खुदा या ईश्वर का बन्दा होने पर भी इन्सान धर्म की दीवारो मे बटकर लडता और झगडता रहा है। अपने धार्मिक विवेक को खोकर धर्मान्धता की सडान्ध से मानव इतिहास को कलकित करता रहा है। यदि आप जानना ही चाहते हैं तो जाकर पूछो उन यूरोपियनो से जिनके रक्त से रजित इतिहास के पन्ने आज भी धर्मान्धता की गवाही दे रहे हैं। फ्रास मे फ्रासिस प्रथम ने १५४५ ई० मे अपनी मृत्यु से पूव आल्पस पर्वत माला के तीन हजार निरीह कृषको के कत्लेआम की आज्ञा देकर शाति प्रदान की। उन कृषको का एकमात्र अपराध यह था कि वे ईसाई मत के मूल सिद्धान्तों मे विश्वास रखते हुए पोप तथा पादरियो की प्रभुता नही मानत थे। आज भी अनेक राष्ट्र धार्मिक कठमुल्लाओ से तग हैं। धार्मिक ढकोसलेबाजो के घिनौने रूप को यदि देखना चाहत हो तो याद करो १९४७ का वह दुर्दिन जब लाहौर दिल्ली और पजाब की गलियो मे एक धर्म के मानने वालो ने दूसरे धर्म के मानने वालो पर भयकर अत्याचार किए। कितनी माँ बहिनो के सतीत्व लुटे, कितने भाई बहिनो से बिलग हो गए। कितने स्तन पान करते बच्चे अपनी मा से छीन लिए गए। कितनी तरुणिया विधवाए बन गईं। कितने घर उजड गए, जिनके आसू पौंछने वाला भी कोई न रहा। वस्तुत धार्मिक उन्माद की परिणति विनाश मे ही होती है। यह उन्माद मानव जाति को गहरे गर्त मे डुबाकर मार डालता है। इसलिए इसका उपचार आवश्यक है।

सच है आज से ३७ वष पूर्व हम लम्बे लम्बे स्वप्न सजोया करते थे। कल्पना के मन चाहे चित्र खीचा करते थे। जेल के सीकचो मे बन्द रहकर और फासी का झूला झूलकर भी हम चातक की भाति स्वातन्त्य सुधा रस का पान करने की आशा लगाया करते थे। समय पलटा, गुलामी की निशा का अन्त हुआ, स्वप्न फूले, आकाक्षाए फली, कल्पनाए साकार हो उठी। आजादी का मगल प्रभात झूमता हुआ आ पहुँचा। आज वह ३७ वर्ष पुराना हो चुका है किन्तु आजादी के इस पावन काल मे भी आज भारत का मानव जहा वैज्ञानिक चकाचौंध से त्रस्त है, टी० वी०, विडियो आदि भौतिक साधनो की उपलब्धियो से जीवन मे आनन्द जुटाने मे लगा है। वही भूखा है नगा है, असहाय है। धर्म के जजाल मे भटका है। आपसी वैर व वैमनस्य मे जकडा शकित और भयभीत है। काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और राजस्थान से लकर बगाल की खाडी तक फैले इस देश मे हिन्दू मुसलमान, पारसी आदि सभी जातिया व धर्मो के लोग निवास करते हैं। सब के अपने-अपन विशाल मन्दिर हैं। गुम्बदाकार मस्जिदे है। क्रास के चिह्न मे अकित गिरजाघर हैं। सत्श्री अकाल के उद्घोष से अकित गुरुद्वारे है। यहा सब के अपने मजहब है, फिरके हैं। रहने सहने व खाने पीने के ढग है—ऐस मे क्या यह आशा की जा सकती है कि राष्ट्र के सगठन मे धर्म साधक होगा?

हमारा विचार है कि यदि ये मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे गिरजाघर आदि न हो और प्रत्यक मनुष्य अपने खुदा को, ईश्वर को सत्श्री अकाल को, यिशु को मन के अन्दर ही पूजे तो य धर्मान्धता के झगडे बहुत कुछ समाप्त हो सकते है। वस्तुत इन पूजाघरो का उपयोग मानव जाति को सदाचार, सगठन, प्रेम, भाईचारे आदि के लिए होता था किन्तु अब प्राय इन पूजाघरो मे राजनैतिक अखाडेबाजी ने घर कर लिया है। इसलिए केवल सहिष्णुता की बातें कहकर इन तथ्यों को नकारा नही जा सकता।

सत्य तो यह है कि जब जब इस राष्ट्र के अन्दर एक मजबूत शक्तिशाली केन्द्रीय शासन रहा। तब-तब किसी भी धर्मान्ध की हिम्मत यहा के सगठन को भग करने की नहीं हुई। आज भी पजाब जल रहा है असम जल रहा है, काश्मीर जल रहा है और अब गुजरात व महाराष्ट्र मे नया ही गुल खिल रहा है—क्यों? धर्मान्धता और सकीर्ण मनोवृत्ति के कारण। राजनीति की जिमीमी मिलावट के कारण तथा एक मजबून राष्ट्रीय सकल्प के न होने के कारण।

कहा जाता है कि धर्म अपने आप मे सत्य का रूप है। ईश्वर का रूप है। धर्मो रक्षति रक्षित। यतो धर्मस्ततो जय। यह सिद्धान्त रूप मे ठीक है। आर्यावर्त मे ऐसा ही होता था। तब धर्म से नीति और नीति से राज चला करते थे, अब बिल्कुल विपरीत है। अब राज से नीति और नीति से धर्म चल रहा है। इसलिए सब गडबड है। साधारण लोग धर्म के असली मर्म को न समझकर उसकी मजहबी बाह्य बातो पर अमल करते हैं। धर्म के नाम पर खडे ईंटो के महल, मानारे चोटी, जनेऊ, सुन्नत, तुर्की टोपी यिशु क्रास। आदमी को आदमी से राष्ट्र को राष्ट्र से तोडते हैं। ये ही भावनाए राष्ट्र के अदर कभी पाकिस्तान कभी खालिस्तान कभी पावरी लैण्ड, आदि की मांग कर देश मे पुनर्विभाजन के साज सजाने को तैयार रहती हैं।

कहने को तो कहा जाता है कि मजहब नही सिखाता आपस मे बैर रखना' किन्तु समय आने पर ये सभी लोग अलग-अलग खेमो मे बटकर, अपने अपने धर्म की दुहाई देकर अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग अलापने लगते हैं। अत इस समय धर्म से राष्ट्र के उद्धार या सगठन की बात करना व्यथ गाल बजाना है। यह भी कहा जाता है कि राष्ट्र धर्म से ही धारित रहा करते है किन्तु मनु महाराज के अनुसार धर्म क्या है, यह बात विचारणीय एव अनुकरणीय है। मनु जी के अनुसार धर्म के १० लक्षण है। जैसे—

धृति क्षमा, दमोऽस्तेय

शौचमिन्द्रियनिग्रह।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो

दशक धर्म लक्षणम्॥

अर्थात्—राष्ट्र के प्रत्येक निवासी मे (धृति) धैर्य हो (क्षमा) क्षमा की शक्ति हो, (दम) अपने पर नियन्त्रण करने की शक्ति हो, (अस्तेय) चोरी की भावना न हो, (इन्द्रिय निग्रह) इन्द्रियों पर नियन्त्रण की शक्ति हो। (इससे परिवार-नियोजन को भी बल प्राप्त होगा) (धी) बुद्धि हो (अच्छे और बुरे को विचारने की शक्ति हो), (विद्या) राष्ट्र निवासियों में ज्ञान-विज्ञान की शक्ति हो, (सत्यम्) राष्ट्रवासियों में सत्याचरण की शक्ति हो। (सत्यमेव जयते, केवल दीवार की शोभा न हो), (अक्रोध) अकारण क्रोध न करना क्योंकि क्रोध समस्त विनाश की जड है। यह है राष्ट्र निवासियों का अपने लिए और राष्ट्र के लिए सार्वभौम धर्म। वास्तव में देखा जाए तो यह किसी भी राष्ट्र के निवासियों की आधार संहिता है। इस पर चलने पर ही राष्ट्र संगठित रहते हैं। धर्म की साधारण परिभाषा है 'आत्मन प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।" अर्थात् जो बात अपनी आत्मा के प्रतिकूल हो वह दूसरो के साथ भी न करें। किन्तु आज ठीक इसके विपरीत हो रहा है। मनुष्य अपने स्वार्थ के वशीभूत बुरे से बुरा कार्य करने मे भी नहीं चूकता। राष्ट्र के अन्दर चोर-बजारी, घूसखोरी, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचारी,

(शेष पृष्ठ ९ पर)

क्रोध मत कीजिए

राजेश प्रताप सिंह

क्रोध मनुष्य का एक बहुत ही भयंकर रोग है। क्रोध का सम्बन्ध हिंसा से है। जो मनुष्य क्रोध करते हैं, वे स्वयं ही अपनी बुद्धि को नष्ट कर देते हैं। क्रोध मनुष्य के शरीर में एक बहुत भारी अवगुण है। क्रोध सौन्दर्य को नष्ट कर देता है। बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है। शरीर को बूढ़ा बना देता है तथा मनुष्य को दूसरों की दृष्टि में गिरा देता है। इस भयंकर रोग से मनुष्य की शारीरिक, मानसिक, आत्मिक हर प्रकार से अवनति होती है। क्रोध के विषय में किसी संस्कृत के कवि ने कहा है—

क्रोधो नाशयते धैर्यम्,
क्रोधो नाशयते श्रुतम्।
क्रोधो नाशयते सर्वम्,
नास्ति क्रोधसमो रिपु ॥

क्रोध, धैर्य, विद्या और शास्त्रज्ञान सबको नष्ट कर डालता है, क्रोध के समान दूसरा शत्रु नहीं है।

क्रोध किसी भी कारण से क्यों न पैदा हो—कारण कितना भी बड़ा क्यों न हो, आप जितनी बार क्रोधित होते हैं, उतनी बार अपनी हानि करते हैं। क्रोध शरीर में हल्के ज्वर का काम करता है। इसे महाचाण्डाल कहा गया है।

किसी समय की बात है। एक ब्राह्मण तालाब के किनारे अपनी कुटिया बनाकर रहता था। वह नित्य स्नान कर अपनी धोती तालाब के किनारे पसारता था। वहीं पर एक चाण्डाल आकर तालाब में स्नान करने लगा, जिसके कारण ब्राह्मण की धोती पर पानी का छींटा पड़ गया। उसने तुरन्त अपनी कुटी से निकलकर चाण्डाल को पीटना शुरू कर दिया। जिससे चाण्डाल का शरीर पसीने से लथपथ हो गया वह गर्मी से परेशान होकर नदी में स्नान कर रहा था। संयोगवश ब्राह्मण भी नदी के किनारे पहुँच गया। ब्राह्मण को दया आ गई। तब उसने चाण्डाल से पूछा "तुम इतनी गर्मी में क्यों स्नान कर रहे हो?" तुम्हें बुखार हो जायेगा। चाण्डाल ने कहा—आपने क्यों स्नान किया है? ब्राह्मण ने कहा, मुझे चाण्डाल ने छू दिया। इसलिए मैंने स्नान किया है। इस पर चाण्डाल ने कहा कि मुझे तो महाचाण्डाल (क्रोध) ने छू दिया। इसलिए मैं स्नान कर रहा हूँ।

क्रोध से स्वभाव दूषित हो जाता है। वृत्ति शिथिल पड़ जाती है और आकृति क्रूर हो जाती है। क्रोध से स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है और स्वास्थ्य-सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। समाज में क्रुद्ध मनुष्य सदा मुंह की खाता है और स्थिर तथा शान्त मनुष्य की सदा विजय होती है। दूसरा क्रोध में हो और आप यदि शान्त हैं तो आप अवश्य बाजी मार ले जायेंगे।

"अक्रोधेन जयेत् क्रोधम्।
अक्रोध से क्रोध को जीतो ॥

क्रोध एक ऐसा मनोभाव है जिसमें मनुष्य थोड़ी देर के लिए अपने को भूल जाता है और अकार्य भी करने लग पड़ता है। क्रोध उद्वेग है और उद्वेग अन्धा होता है। सब उद्वेग अन्धे होते हैं। क्रोध के उत्पन्न होने का तरीका गीता में बताया गया है—

ध्यायतो विषयान्पुंस,
सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्सञ्जायते कामः
कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥
क्रोधाद्भवति सम्मोहः
सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो
बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

मन सहित इन्द्रियों को वश में करके मन के द्वारा विषयों का चिन्तन होता है और विषयों को चिन्तन करने वाले पुरुषों की उन विषयों में आसक्ति हो जाती है और आसक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध उत्पन्न होता है।

और क्रोध से अविवेक अर्थात् मूढ़भाव उत्पन्न होता है और अविवेक से स्मरणशक्ति भ्रमित हो जाती है और स्मृति के भ्रमित हो जाने में बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्ति का नाश हो जाता है और बुद्धि के नाश होने से वह यह पुरुष अपने श्रेयसाधन से गिर जाता है।

यूनान के महापुरुष सुकरात की स्त्री बड़ी कलहकारिणी थी। एक दिन उसने क्रोध में भरकर पति पर जूठे पानी का डोल उड़ेल दिया। इस पर सुकरात ने ठंडे मिजाज से हँसकर कहा, गरजने के बाद पानी बरसा ही करता है।' एक दिन बहुत से बन्धु-बान्धवों के सामने उसने सुकरात के मुंह पर तमाचा मार दिया। बन्धु-बान्धवों ने स्त्री को दण्ड देने के लिए सुकरात को बहुत उकसाया, परन्तु उनको क्रोध नहीं आया और उन्होंने कहा—मैं तुम लोगों के सामने तमाशा नहीं करना चाहता कि तुम लोग दूर खड़े देखते रहो और गलियों के कुत्तों को लड़ते देखकर जैसे बच्चे ताली पीटा करते हैं, वैसे ही तालियाँ पीटो।

क्रोध एक बहुत बड़ा अभिशाप है। यह अभिशाप ही नहीं बल्कि मनुष्य की उम्र को भी कम कर देता है। उससे मनुष्य को हर प्रकार से हानि उठानी पड़ती है। क्रोध करने से शरीर का विकास रुक जाता है। क्रोध मनुष्य का एक स्वाभाविक गुण है। क्रोध के कारण ही मनुष्य एक दूसरे से झगड़ा कर अपने तथा दूसरे के जीवन को नष्ट कर देता है। बहुत से लोग तो किसी भी बात की परेशानी के कारण अपने घर वालों पर क्रोधित होकर खाना पीना छोड़ देते हैं। इस भयंकर रोग से मनुष्य कहीं भी आदर नहीं होता है और मनुष्य सबकी दृष्टियों में गिर जाता है। क्रोधी स्वभाव का व्यक्ति कभी सज्जन व्यक्ति से प्रेम नहीं कर सकता है। वह अपना जीवन क्रोध में ही व्यतीत कर देता है। क्रोधी व्यक्ति के चेहरे पर कभी मुस्कान ही नहीं रहती है। क्रोध जीवन को नष्ट कर डालता है। यह मनुष्य के जीवन का महाचाण्डाल शत्रु है। जो मनुष्य इस शत्रु के अधीन हो जाता है तो उसको न सुख मिलता है, न शान्ति। वह अपने जीवन में आनन्द की प्राप्ति नहीं कर सकता है। उसका तो जीवन दुःखमय हो जाता है। वह अपने को असहाय अनुभव करता है, और अपने जीवन को नष्ट कर देता है। इसलिए क्रोध को महाविनाशकारी कहा गया है। इसकी कोई आकृति नहीं होती है। यह केवल अन्धा होता है। क्रोध को कोई देख नहीं सकता, लेकिन मनुष्य के अन्दर यह मनोभाव विद्यमान रहता है, तथा अपनी परिस्थिति के अनुसार जागृत हो जाता है। अगर कोई व्यक्ति इसके अधीन हो गया, तो आप समझिये कि उसका जीवन शून्य है। वह अपने जीवनकाल में कोई उन्नति नहीं कर सकता, बल्कि वह अपने को बर्बाद कर देता है। इसलिए हमें क्रोध नहीं करना चाहिए।

किशोरमञ्च—

वीर बालक छत्रसाल

पन्ना नरेश महाराज चम्पतराय बड़े ही धर्मनिष्ठ एवं स्वाभिमानी थे। उन्हीं के यहां ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया वि०सं० १७०६ को बालक छत्रसाल का मोर पहाड़ी के जंगल में जन्म हुआ। मुगल सम्राट् शाहजहाँ की सेना घेरा डालने के प्रयत्न में थी। छिपे रहना आवश्यक समझकर पुत्र के जन्म पर भी महाराज ने कोई उत्सव नहीं मनाया था। एक बार तो शत्रु इतने निकट आ गये कि रानी को प्राण बचाने के लिए इधर-उधर छिपने के लिए भागना पड़ा। इस भाग दौड़ में शिशु छत्रसाल अकेले ही मैदान में छूट गये। किन्तु—

जाको राखै साइयां
मार सके नहिं कोय।
बाल न बांका करि सकै
जो जग बैरी होय ॥

बालक छत्रसाल पर शत्रुओं की दृष्टि नहीं पड़ी। भगवान ने शिशु की रक्षा कर ली। चार वर्ष की अवस्था तक इन्हें ननिहाल में रहना पड़ा और फिर केवल सात वर्ष की अवस्था तक पिता के साथ रह सके। पाँच वर्ष की अवस्था में ही राम जी के मन्दिर में इन्होंने भगवान राम (कृष्ण की) लक्ष्मण की मूर्तियों को अपने जैसा बालक समझकर उनके साथ खेलना चाहा और कहते हैं भगवान सचमुच इनके साथ खेले। पिता जी की मृत्यु के पश्चात् तेरह वर्ष की अवस्था तक छत्रसाल को ननिहाल में रहना पड़ा। इसके बाद वे पन्ना चले आये और चाचा सुजान राय ने इन्हें बड़ी सावधानी से उन्हें सैनिक शिक्षा दी। अपने पिता का शौर्य छत्रसाल को पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हुआ था। अपने जीवन में उन्होंने पिता के संकल्पों को पूर्ण किया। पन्ना राज्य छत्रसाल को पाकर धन्य हुआ।

देहली के सिंहासन पर औरंगजेब बैठ चुका था। उसके अन्याय का दौर सारे देश को आतंकित कर रहा था। छत्रसाल की अवस्था उस समय लगभग १३-१४ वर्ष की थी। विन्ध्यवासिनी देवी के मंदिर में मेला था, चारों ओर चहल पहल थी। दूर-दूर से लोग भगवती के दर्शन करने आ रहे थे। महाराज सुजानराय बुन्देले सरदारों के साथ वार्तालाप करने में लगे थे। युवराज छत्रसाल ने जूते उतारे, हाथ पैर धोये और एक डलिया लेकर देवी की पूजा करने के लिए पुष्प चुनने वे वाटिका में पहुंचे। उनके साथ उसी अवस्था के दूसरे राजपूत बालक भी थे। पुष्प चुनते हुए वे कुछ दूर निकल गये। इतने में कुछ मुसलमान सैनिक वहाँ घोड़ों पर चढ़े हुए आये। पास आकर वे घोड़ से उतर पड़े और पूछने लगे विन्ध्यवासिनी देवी का मन्दिर किधर है?

छत्रसाल ने पूछा क्यों तुम्हें भी क्या देवी की पूजा करनी है?

मुसलमान सरदार ने कहा—'छि। हम तो मन्दिर को तोड़ने आए हैं।

छत्रसाल न फूलों की डलिया दूसरे बालक को पकड़ायी और गर्ज उठे मुंह सम्भाल कर बोल। फिर ऐसी बात कही तो जीभ खींच लूंगा।'

सरदार हंसा और बोला—तू भला क्या कर सकता है। तेरी देवी भी ।'

लेकिन बेचारे का वाक्य पूरा नहीं हुआ। छत्रसाल की तलवार उसकी छाती में होकर पीछे तक निकल गई। एक युद्ध छिड़ गया उस पुष्प वाटिका में। जिन बालकों के पास तलवार नहीं थी वे तलवारें लेने दौड़ पड़े।

मन्दिर में इस युद्ध का समाचार पहुंचा। राजपूतों ने कवच पहने और तलवार सम्भाली, किन्तु उन्होंने देखा कि युवराज छत्रसाल के हाथ में रक्त से भीगी तलवार तथा दूसरे में फूलों की डलिया लिये हंसते चले आ रहे हैं। उनके वस्त्र रक्त से लाल हो रहे है। अकेले युवराज न शत्रु सैनिकों को भूमि पर सुला दिया था। महाराज सुजानराय ने छत्रसाल को हृदय से लगा लिया। भगवती विन्ध्यवासिनी अपने सच्चे पुजारी के हाथ के शौर्य-पुष्प पाकर प्रसन्न हो गई। □

व्यासपीठ—

उपनिषत् कथा माला—६

धर्म क्या है ?

लेखक—महेन्द्रदेव शास्त्री विद्याभूषण

मजहब, सम्प्रदाय, मत, पन्थ, मार्ग इन सभी को लोगों ने धर्म समझ लिया है किन्तु ये धर्म नही हैं । इन सब को बनाने वाले और चलाने वाले मनुष्य हैं, और ये सभी किन्ही विशिष्ट व्यक्तियो की मान्यताओ के साथ कुछ जनसमूह द्वारा अपनाए गए हैं, और प्राय उन सभी के पहले उन-उन सम्प्रदायो के संचालकों के नाम जुडे हुए हैं । जैसे कबीर पन्थी, दादू पन्थी, नानक पन्थी, वैष्णव सम्प्रदाय, रामानुज सम्प्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय जैनमत, बौद्ध मत, राधा स्वामी, मुहम्मदी मजहब, ईसाई मजहब, आनन्द मार्गी आदि । धर्म तो वह है जिसकी आवश्यकता समान रूप से समस्त मानव जाति को है । इसीलिए सबसे अच्छा और वास्तविक धर्म का लक्षण ।

"यतोऽभ्युदयनिश्रेयससिद्धि स धर्म ।"

ऐसा कहा है । अर्थात् जिससे किसी खास तबके का नही अपितु समस्त मानव जाति का अभ्युदय हो, उन्नति हो तथा जिसके द्वारा सारी मनुष्य जाति के दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति हो जावे, यानी मुक्ति (मोक्ष) हो जावे वही धर्म है । इन दोनो बातों की चाह सृष्टि के समस्त मानव समाज को बनी रहती है यदि इस धर्म के लक्षण को सभी समझ लें और मान लें तो ससार के सारे झगडे ही दूर हो जावें और धर्म ही झगड़े कराता है, यह भावना मनुष्यों के हृदय से निकल जाए । वास्तव में धर्म तो झगडों को नष्ट करने वाला है । धर्म शब्द का अर्थ भी 'धारणाद् धर्म इत्याहु' सारा संसार जिसकी वजह से कायम रहता है वही धर्म है । उदाहरण के तौर पर सत्य एक धर्म का अङ्ग है । बिना सत्य के ससार का कोई कार्य सुचारु रूप से नही चल सकता । सारे राज्य सत्य के सहारे ही चलते हैं, असत्य भी सत्य का सहारा लेकर चलता है । सत्य वही है जिसको आत्मा सत्य समझता है । केवल वाणी से कहा सत्य सत्य नही माना जा सकता ।

दूध मे मिला पानी सत्य रूप का आश्रय लेकर के ही दूध की जगह बिक जाता है । झूठा मनुष्य भी सत्य की कसम खाकर ही असत्य को सत्य बनाने की कोशिश करता है । जहाँ व्यक्तियो मे से, जातियो मे से, देश से और राष्ट्र से सत्य उठ जाता है, वे व्यक्ति, जाति, देश और नष्ट ही हो जाते हैं । इस ही लिए कहा—

"नहि सत्यात्परो धर्म
नाऽनृतात्पातक परम् ।"

सत्य से बढकर कोई धर्म नही और झूंठ से बढकर ससार मे कोई पाप नही है । झूंठ का आश्रय लेकर यद्यपि लोग फलते फूलते नजर आते हैं, और ससार मे बडे ठाट-बाट के साथ रहते दिखाई भी देते हैं, किन्तु यह बहार थोडे समय ही रहती है । मनु कहते हैं—

अधर्मेणैधते तावत्ततो
भद्राणि पश्यति ।
तत सपत्नान् जयति
समूलस्तु विनश्यति ॥

अधर्म करने वाला आदमी पहले खूब बढता है फिर उस सम्पत्ति से अनेक प्रकार के भोगो को भोगता है । उसके बाद धन की शक्ति से अपने शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त कर लेता है, किन्तु फिर समूल नष्ट हो जाता है ।

ससार मे इस प्रकार के बहुत उदाहरण हैं जिन्होने झूठ बोलकर, बेईमानी से, बडा धन कमाया, लोगो को मार करके भी धनी बन गये किन्तु फिर वे ससार से ऐसे मिटे कि उन्हें कोई पानी देने वाला भी न रहा, वश के वश समाप्त हो गये ।

'अन्यायोपार्जित वित्त
दशवर्षाणि तिष्ठति ।'

पाप और अन्याय से कमाया हुआ धन दस वर्ष ही टिकता है । कुछ इससे अधिक भी टिक जाता हो तो आश्चर्य नहीं किन्तु इसका अन्त मे परिणाम कभी अच्छा नही निकलता । अन्त मे तो—

'सत्यमेव जयते नाऽनृतम् ।'

सत्य की ही जय होती है । इस समय भारतीय प्रजा में असत्य का बडा बोलबाला है, हजारो व्यक्तियों मे भी आपको कोई कोई ही सत्यवादी नजर आयेगा झूंठ के बाद बेईमानी का नम्बर आ जाता है । बेईमानी करने के लिए ही आदमी झूंठ का आश्रय लेता है । बाजार मे आपको चीजों मे प्राय मिलावट मिलेगी । स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकर वस्तुएँ भी खाद्य पदार्थों में मिला दी जाती हैं । दूध, घी, तेल आदि शुद्ध मिलने बडे कठिन हो गये हैं, उसका ही परिणाम यह हुआ है कि लोगों में अनेक प्रकार की बीमारियाँ फूट निकली हैं और स्पष्ट दीख रही हैं । जीवन भी लोगों के कष्टमय होकर औषधों के सहारे ही चल रहे हैं । यह सारा प्रताप असत्य का ही है । महात्मा गाधी ने सत्य का और अहिंसा का ही सहारा लेकर देश आजाद कराया । भगवान् महावीर तथा भगवान् बुद्ध ने भी अहिंसा को ही अपनाकर लोगों को अहिंसक वृत्तियो से चलने का उपदेश दिया और 'अहिंसा परमो धर्म ' के द्वारा अहिंसा को परम धर्म बताया जो अष्टाङ्ग योग के प्रथम अङ्ग यम का प्रथम शब्द ही है ।

'अहिंसा सत्यास्तेय-
ब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमा ।'

वास्तव मे जिससे अपना तथा दूसरों का कल्याण हो वही धर्म है और धर्म पर चलना ही कल्याण का मार्ग है ।

ब्रह्मचर्य

इसके महत्त्व को लोगों ने बिल्कुल ही भुला दिया है । ईश्वर के अतिरिक्त ब्रह्म शब्द का अर्थ वेद भी है और वेदाऽध्ययन के लिए व्रत को भी ब्रह्म कहा है । "ब्रह्म वेदस्तदध्ययनार्थं व्रतमपि ब्रह्म' उसका पूर्ण रूप से पालन करना ही ब्रह्मचर्य है । वास्तव में ब्रह्मचर्य से मनुष्य को महाशक्ति प्राप्त होती है । शरीर, मन, बुद्धि तथा आत्मा सभी निर्मल तथा अत्यन्त शक्ति सम्पन्न हो जाते हैं ।

"ब्रह्मचर्येण तपसा
देवा मृत्युमपाघ्नत ।"

ब्रह्मचर्य के प्रताप से ही देवों ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की । समस्त व्यसन ब्रह्मचर्य के घोर विरोधी हैं अत ब्रह्मचारी को व्यसनों से दूर ही रहना पडता है । सहशिक्षा—अर्थात् स्कूलों मे, कालेजों में लडके लड़कियों का एक साथ पढना अत्यन्त हानिकर है । लडके लडकियों के पारस्परिक सपर्क से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कभी नही हो सकता । पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली को अपनाकर हमारा देश उसकी ही नकल कर रहा है, जिससे लडके लड़कियो के जीवन नष्ट हो रहे हैं । यौवनावस्था मे मनोवेग को सम्हालना अत्यन्त कठिन हो जाता है । ऐसी स्थिति में आग फूस को साथ रखकर हम चाहें कि आग न लगे तो यह कैसे संभव है । अत ब्रह्मचर्य का पूर्णरूपेण सरक्षण ही कल्याण का मार्ग है । निर्व्यसन बनाने के लिए अध्ययन के साथ छात्र छात्राओ को पृथक् पृथक् स्कूल तथा कालेजों के छात्रावासो मे ही बड़े कडे नियन्त्रण के साथ बस्तियों से दूर एकान्त शान्त स्थानों में रखना ही परमावश्यक है । गवर्नमेण्ट को भी प्रारम्भ से अन्त तक समस्त छात्र तथा छात्राओं को नि शुल्क शिक्षा देने का पूर्ण प्रबन्ध करना चाहिए । इस स्थिति मे स्नातक होने वाले समस्त छात्र छात्राओं को १ वर्ष के लिए बिना वेतन के कालेजों में अध्यापन कराने का नियम भी होना चाहिए । इससे छात्र छात्राओं को ट्रेनिंग की शिक्षा मिल जायेगी तथा स्कूलों, कालेजो के खर्च भी घट जाएगे । जब उन्होने मुफ्त शिक्षा प्राप्त की है, तो उनको साधारण सा त्याग तो करना ही चाहिए । केवल भोजन वस्त्रों के और साधारण निवास स्थान के ही वे अधिकारी हों यही कल्याण का मार्ग है ।

तप

जीवन मनुष्य को उन्नति करने के लिए मिला है । पशु पक्षियो की भांति वह केवल खान पान कर जीवन को समाप्त करने वाला प्राणी नहीं है । अच्छा जीवन तपश्चर्या द्वारा ही बनाया जा सकता है । प्रथम तो जीवन के प्रत्येक प्रकार मे सादगी का होना जरूरी है । हमारा खान पान और लिबास तथा रहन सहन सभी सादगी के साथ- पवित्रता से भरे होने चाहिए, जिसे सादा जीवन उच्च विचार के नाम से पुकारा जाता है । इस समय हमारे देश में इन सभी बातों का सर्वथा अभाव है, और हमने केवल आडम्बरों को अपना लिया है । हम अण्डे, मांस, मछलियां शौक से सेवन करते हैं किन्तु हम यह समझने की कोशिश ही नहीं करते कि ये चीजें कितनी गन्दी हैं, तथा शरीर मन, बुद्धि, आत्मा पर इनके सेवन से क्या प्रभाव पड़ते हैं । जिन निरपराध जीवों को सताकर और मारकर हम इन्हें प्राप्त करते हैं, यदि हमारे साथ भी कोई ऐसा ही व्यवहार करे तो हमें कैसा महसूस होगा । बिचारे पशु पक्षी बे जुबान हैं, और कमजोर हैं, इसीलिए मनुष्य अपनी दुर्बुद्धि का प्रयोग कर खांडे और बन्दूकों से इनके प्राण लेता है । परमात्मा की दी हुई अच्छी बुद्धि को भी, हम शराब पीकर और अनेक प्रकार के नशे, जैसे सुल्फा, भांग चरस, अफीम—चण्डू मदक, कोकीन आदि को अपना कर और इनके व्यसन में लिप्त होकर नष्ट कर डालते हैं । सिगरेट, बीड़ी, तम्बाकू, हुक्का आदि तो फिर जीवन मे इस्तेमाल की जाने वाली साधारण चीजें हैं । इस ही लिए मनुष्य बुद्धि खोकर ऊँची बातों को समझने की क्षमता खो बैठा है । पशु हमारी और देश की सम्पत्ति हैं । इनकी रक्षा करने से दूध

घी मक्खन मलाई आदि पौष्टिक पदार्थ जो हमारे जीवन के लिए परम उपयोगी हैं, आसानी से मिल सकते हैं। देश की खाद्य समस्या भी किसी हद तक आसानी से समाप्त हो सकती है, किन्तु पशुओं से इन पदार्थों को न लेकर हम उनके मांस को ही अधिक पसन्द करते हैं। जिससे देश दुर्गति को प्राप्त हो गया है और इनकी हिंसा का पाप हम अपने ऊपर लेकर अनेक प्रकार के रोगों और कष्टों में उलझ गए हैं। इसलिए कल्याण का मार्ग यही है कि हम हिंसा के कलंक से बचकर अपने कल्याण की भावना को जाग्रत करें। ऋषि दयानन्द ने इन समस्त बातों पर गहराई से प्रकाश डाला है। वे भारत मे सबसे बड़े सुधारक हुए हैं। कल्याण को चाहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को उनका लिखा अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' अवश्य पढ़ना चाहिए।

कल्याण मार्ग का पथिक बनने से पहले हमें यह जानना आवश्यक है कि किन साधनों से हम कल्याण के मार्ग पर चल सकते हैं। कल्याण का मार्ग बड़ा पवित्र है और किसी भी पवित्र वस्तु की प्राप्ति के लिए पवित्र साधनों की ही आवश्यकता है। अपवित्र साधनों से हम किसी भी पवित्र साध्य को प्राप्त नहीं कर सकते। यदि हमने बिना पूरी जानकारी हासिल किये अकल्याण के मार्ग को ही कल्याण का मार्ग समझकर अपना लिया तो हमारा अनिष्ट ही होगा और भयानक दुःख भी उठाने होंगे। विद्वान् शास्त्रज्ञ कहते हैं कि धर्म ही सुखों का मूल है। ऋषि चाणक्य अपने कौटिलीय अर्थशास्त्र मे सब से पहला सूत्र लिखते हैं— 'सुखस्य मूलं धर्मः' किन्तु इससे पहले तो हमें यह जानना है कि हम किस साधन से धर्म करें? और सर्वप्रथम उस साधन को ही ऐसा पवित्र बनावें जिससे उनके द्वारा हम सदैव शुभ कार्य ही करते रहें। सब से पहला मुख्य साधन हमारा शरीर ही है। 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'। इसके द्वारा ही पवित्र धार्मिक कार्य करते हुए जीवन में कल्याण होता है। वास्तव में तो शरीर एक ढांचा है और जड़ है, यह स्वयं जड़ होने के कारण कुछ नहीं कर सकता। इसके अन्दर इन्द्रियों का और अन्तःकरण का निवास है, ये सभी जड़ हैं। इसके अतिरिक्त शरीर में एक चेतन आत्मा भी है जिसके अधीन ये सारे यन्त्र हैं और कर्म फलों के उपभोग तथा कर्म करने के लिए ही आत्मा को दिए गए हैं। ये सभी शरीर द्वारा ही शक्ति सम्पन्न होते हैं यदि शरीर मे तामस पदार्थों का प्रवेश होगा तो हमारी ये सारी शक्तियां तामसी हो जायेंगी। सात्त्विक पदार्थों के सेवन से सात्त्विक बनेंगी। तभी हम निर्दोष सात्त्विक कार्य भी कर सकेंगे। बहुत से विद्वानों ने शरीर की बड़ी निन्दा की है और इसको त्याज्य बताया है। उनका कहना है—

अस्थिस्थूणं स्नायुयुतं,
मांसशोणितलेपनम्
चर्मावनद्धं दुर्गन्धिपूर्णं मूत्रपुरीषयोः।
जराशोकसमाविष्टं
रोगायतनमातुरम्
रजस्वलमनित्यं च
भूतावासमिमं त्यजेत्॥

अर्थात इस शरीर मे हड्डियों का ढांचा बना हुआ है, जैसे मकान बनाने के लिए पहले लोहे के गर्डरों का ढांचा खड़ा करना पड़ता है। फिर यह शरीर नसों से जकड़ा हुआ है जैसे लोहे के ढांचे को पतले-पतले तारों से बांध दिया जाता है। फिर मांस और खून से इस पर लिप्पी की गई है, जैसे मकान पर सीमेंट, रेता और सतने के पानी से की जाती है। ऊपर से यह चाम से ढका हुआ है। जैसे मकान को व्हाइट वाश और रंग रोगन से सजा दिया जाता है। पेशाब और पाखाने से परिपूर्ण है। बुढ़ापा और शोक इसको लगे हुए हैं। रोगों का यह मन्दिर है भूख और प्यास से सदा व्याकुल रहता है। जैसे रजस्वला स्त्री रजो धर्म से अपवित्र रहती है, उस ही प्रकार यह भी दूषित रजोगुणी पदार्थों से भरा हुआ है। पृथ्वी, जल, अग्नि वायु, आकाश इन पांच महाभूतों से यह बना है और यह अनित्य है। इसलिए ऐसे गन्दे शरीर को छोड़ देना चाहिए। किन्तु हम कहते हैं कि जो स्थिति शरीर के ऊपर बताई है, वह ठीक है। किन्तु इस ही शरीर रूपी खोल मे हमारी अमूल्यनिधि इन्द्रियां, मन बुद्धि और आत्मा भी तो स्थित हैं जिनकी यह रक्षा करता है। जैसे खाद बड़ा अपवित्र दुर्गन्धयुक्त होता है किन्तु वृक्षों मे उसके प्रयोग के बाद, कितने कोमल सुगन्धित पुष्प गुलाब चम्पा चमेली केवड़ा रात की रानी आदि विकसित हो जाते हैं। अनेक वृक्षों के सुन्दर स्वादिष्ठ फल देने वाले फल भी पैदा होते हैं। रज एवं वीर्य भी एक प्रकार का शरीर का मल ही तो है और अपवित्र भी है किन्तु इस से ही सांसारिक समस्त प्राणियों के सुन्दर और सुन्दरतम शरीरों की भी रचना हुई है। इसलिए शरीर को निन्दा के योग्य नहीं समझना चाहिए, अपितु यह कोशिश करनी चाहिए कि हमारा शरीर पूर्ण सुखोपभोग तथा आनन्द प्राप्ति (मोक्ष) का भी साधन बने। इसको अधिक से अधिक पवित्र रखकर इसके द्वारा ही हम बाहर के यन्त्र (बाह्य करण) और अन्दर के यन्त्र (अन्तःकरण) आदि को भी निर्मल तथा निर्दोष बनावें। हमारे शरीर मे मन, प्राण और वाणी शक्तियां अमूल्य हैं इनके बलिष्ठ और दोष रहित किये बिना हम कभी अच्छे कार्य नहीं कर सकते और संसार मे सुखी जीवन भी नहीं बिता सकते। मन तो सारी बुराइयों और भलाइयों की जड़ है, अर्थात् मन की पवित्रता से ही संसार मे पवित्र कार्य होते हैं, उसके अपवित्र होने से संसार के समस्त कार्य अपवित्र हो जाते हैं क्योंकि "मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।" अर्थात् शरीरों को बन्धन में डालने वाला और आत्मा को मुक्ति दिलाने वाला मन ही तो है। अब सोचना यह है कि मन जैसा शक्ति सम्पन्न द्रव्य अपवित्र और पवित्र कैसे हो जाता है? इसका उत्तर यह है कि हमारा मन प्राकृतिक पदार्थों से ही बना है। उपनिषदों मे इसका वर्णन इस प्रकार है— अन्नमशितं त्रेधा विधीयते, तस्य यः स्थविष्ठो धातुस्तत्पुरीषं भवति यो मध्यमस्तन्मांसं योऽणिष्ठस्तन्मनः।

अर्थात् हम जो कुछ खाते हैं उसके तीन भाग हो जाते हैं। खाये हुए पदार्थों का सब से मोटा भाग विष्ठा के रूप मे शरीर के बाहर निकल जाता है, जो मध्यम भाग है उससे मांस बन जाता है और जो अन्न का अत्यन्त सूक्ष्म भाग है उससे मन बनता है। इस ही लिए लोकोक्ति है कि जैसा खाओगे अन्न, वैसा बनेगा मन। इससे यह बात स्पष्ट हो गई कि हम तामसी पदार्थों का सेवन करेंगे तो हमारा मन भी तामसी ही होगा जिसके द्वारा हम कभी शुभ कार्य नहीं कर सकते, इसलिए जो कुछ हम खाते हैं उस पर हम को बड़ा ध्यान रखना चाहिए। खाई जाने वाली चीजों मे तीन बातें आवश्यक हैं—पहली बात हमारा खाद्य अत्यन्त पवित्र हो, यानी वह पवित्र वस्तुओं से ही बना हो। दूसरी बात वह बलिष्ठ हो यानी उसमें ताकत देने की शक्ति हो। तीसरी बात यह है कि हमारे खाने की सभी वस्तुएं सात्त्विक हों। सात्त्विक वस्तुएं वे कहलाती हैं जिनके इस्तेमाल के बाद बुद्धि मे किसी प्रकार का विकार नहीं पैदा होता। बुद्धि हमेशा सही सोचेगी आपको कभी गलत रास्ते पर नहीं जाने देगी और उस पवित्र बुद्धि से कार्य करते हुए आप परमात्मा को भी प्राप्त कर लेंगे। मनुष्य जब इन बातों का विवेक छोड़ देता है तो वह अण्डे, मांस मछली नशे की चीजें खाने लगता है, उसे यह ज्ञान ही नहीं होता कि इनमें कितनी गन्दगी भरी हुई है, और ये वस्तुएं हमारे शरीर मे कैसे-कैसे विकार पैदा कर देती हैं, पहले तो हमारे शरीर पर ही इनका बड़ा बुरा असर पड़ता है, अनेक प्रकार के बुरे से बुरे रोग इन अपवित्र वस्तुओं के खाने से हो जाते हैं। आजकल हजारों आदमी श्वेत कुष्ठ से पीड़ित चितकबरे नजर आते हैं अखाद्य वस्तुओं के सेवन से ही भिन्न भिन्न प्रकार की बीमारियां भी भारत मे फैल गई हैं आयु भी अनेक रोगों के कारण घट जाती हैं और कष्टमय ही व्यतीत होती है। भारत मे पिछले ३० वर्षों मे मांस भक्षण का बड़ा प्रचार हुआ है चूंकि संसार के अन्य देशों मे मांस का बड़ा प्रचार है इसलिए भारत भी उन देशों की ही नकल कर रहा है जो भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रतिकूल है। हमारे ऋषियों की और मुनियों की आयु बड़ी लम्बी होती थी और वे नीरोग भी रहते थे और पवित्र बुद्धि से युक्त भी होते थे, क्योंकि कन्द, मूल फलों का वे अधिक सेवन करते थे। आश्रम में हजारों की संख्या में गौएं भी रहती थीं जिनका अमृत समान पवित्र दूध भी प्राप्त होता था। उस ही दूध से मक्खन मलाई, दही तथा घृत भी प्राप्त होते थे। ऐसी पवित्र वस्तुओं के सेवन करते हुए रोग और बुद्धि एवं मन के विकार पैदा हो नहीं हो सकते थे। इसलिए सात्त्विक भोजन के द्वारा सात्त्विक मन को बनाना ही कल्याण का मार्ग है।

दूसरा नम्बर हमारी प्राण शक्ति का है। इस शक्ति से ही हमारा शरीर चलता है। जीवन शक्ति को विकसित करने के लिए सब से बड़ी महत्ता प्राणों की ही है। पीने की जितनी चीजें हम पीते हैं उनमें चाहे जल हो दूध हो फलों का रस हो, शर्बत हो अथवा कोई भी पिये जाने वाली चीज हो उसके भी ३ भाग हो जाते हैं। सब से मोटा भाग मूत्र रूप मे शरीर से बाहर निकल जाता है मध्यम भाग से खून बन जाता है और सब से सूक्ष्म अर्थात् सूक्ष्मतम हिस्से से प्राण शक्ति बन जाती है। इसलिए हम यदि पूर्ण नीरोग रहना चाहते हैं अपनी आयु बढ़ाना चाहते हैं और अपने अन्तःकरण की वृत्तियों को पवित्र रखकर पवित्र कार्य करना चाहते हैं तो हमें पिये जाने वाले पदार्थों पर काफी ध्यान देना होगा। हम जैसा भी जल हो, शुद्ध हो या अशुद्ध एक दूसरे का झूठा तक पीने मे परहेज नहीं करते। माता पिता अपने बच्चों को अपना झूठा जल पिलाते हैं उनका झूठा जल स्वयं भी पीते हैं वे नहीं समझते हैं कि इससे जल के अन्दर प्रविष्ट अनेक प्रकार के कीटाणु भी दूसरों के अच्छे शरीर में जाकर अनेक प्रकार के रोग और विकार पैदा कर देते हैं। मनु जी ने कहा है— नोच्छिष्टं कस्यचिद् दद्यात्, भारत मे थूक का भी बड़ा प्रयोग होता है जो अत्यन्त हानिकारक है। जल की पवित्रता नष्ट होने पर प्राण शक्ति भी कमजोर और अपवित्र हो जाती है। इसलिए अत्यन्त सावधान रहने की जरूरत है। हमारे देश मे शराब का इस समय बड़ा प्रचार है। इस पवित्र देश मे कभी लोग मदिरा पान से बड़ी घृणा करते थे किन्तु इस समय समस्त राज्य सरकार शराब के बड़े से बड़े ठेके देती हैं और देश से अधिक से अधिक रुपया बटोरने की कोशिश करती हैं किन्तु देश के शासकों का जरा भी ध्यान नहीं होता कि इससे लोगों के शरीर मन बुद्धि पर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है। यही दशा रही तो भारत कंगालों का तथा दुखियों का देश बन कर रह जायगा। शराबियों मे कोई गुण किसी को प्राप्त नहीं हो सकते। शराबी सारी सम्पत्ति को शराब में ही फूंक देता है और उसकी स्त्री और सन्तानें बड़े दुःखों और निर्धनता का जीवन व्यतीत करने पर मजबूर हो जाती हैं।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

कोई चिराग जलाओ बहुत अन्धेरा है

उत्तमचन्द्र शरर

आर्यसमाज के सौ वर्ष तक कार्य करने पर भी देश के विभिन्न भागो मे अभी अन्धकार का पूरा साम्राज्य है। इस का अहसास मुझे तब हुआ जब मध्यप्रदेश के एक ग्राम बारीगढ मे जाने का अवसर प्राप्त हुआ ? बारीगढ जाने का सौभाग्य, कैसे मिला यह भी एक दिलचस्प घटना है। मैं आर्यसमाज पत्थरी (हमीरपुर) के उत्सव पर गया हुआ था। एक प्रात को उठते ही एक सन्यासी ने सौ रुपये का नोट मेरे सम्मुख बढाया। पूछने पर पता चला कि युवा सन्यासी शिवोऽहम् का उपासक था। अभी-अभी आर्यसमाज के विचारो से परिचित हुआ है और काफी हद तक प्रभावित हुआ है। उसकी इच्छा थी कि उसके आश्रमस्थल बारीगढ मे आर्यसमाज की विचारधारा एक यज्ञ के माध्यम से दी जाए। इसके लिए उस ने मुझे उपयुक्त समझा। मैं असमजस मे पड गया सुना था पिसी दवाई तथा घुटे साधु का क्या विश्वास एकदम इन्कार कर दिया और कहा कि इतनी दूर मैं न आ सकूंगा। साधु ने फिर भी साहस न छोडा और एक आर्य भजनोपदेशक के द्वारा मुझे प्रेरित किया। अपने साथी की बात मुझे माननी पडी और ४ जून को मैं कानपुर महोबा और फिर बारीगढ के ऊजड ग्राम मे जा पहुंचा। जब सुना यह आल्हा और ऊदल की विक्रम स्थली है तो मुझे यह ग्राम प्यारा लगने लगा। दोपहर का प्रखर सूर्य धूली-धूसरित मार्ग और यज्ञ-स्थल का अपरिचय हृदय में क्षोभ उत्पन्न करते रहे। सोचता रहा मेरा ऋषि भी क्या इस से अधिक रेगिस्तानो और बीहड वनो में घूमा होगा और फिर उसका भी कोई एक भी साथी नही था, हां विरोधी पग पग पर थे। उस साहस के पुतले ने किस धैर्य से पग बढाया होगा ? मन ही मन मे ऋषि के साहस को नमस्कार कहता, यज्ञ स्थली पर पहुंच ही गया।

एक वीरान सी यज्ञशाला, स्कूल के प्रागण मे मूक भाव से जनता की उदासीनता का परिचय दे रही था। मुझे तलाश थी कि यहाँ कोई परिचित व्यक्ति मिले, वह साधु भी तो नही था। कुछ काल पश्चात् कुंवर महीपाल (भजनोपदेशक) के दर्शन हुए मन शान्त हुआ कि कोई परिचित तो मिला। इतने मे एक मस्त सन्त स्वामी सत्यानन्द की ओ३म् शम् की ध्वनि सुनाई दी बस फिर तो मैं अपने साथियो मे ही था।

पता चला ग्राम मे ठाकुरो का आतक फैला हुआ है। हरिजनो को यज्ञ करने, यज्ञोपवीत लेने का अधिकार तो क्या, इच्छा भी दण्डनीय है, ठाकुर साहब के सम्मुख हरिजन बन्धु चारपाई पर नही बैठ सकता, और वह उद्दण्ड समुदाय यज्ञ का विरोध कर रहा है। हरिजन बन्धु यदि यज्ञ में सम्मिलित हुए तो न केवल वे पीट दिए जाएगे, अपितु यज्ञ करने वाले भी न बच सकेंगे, और इस बलि के लिए हम तो आ ही गये थे।

रात्री का प्रचार कार्य प्रारम्भ हुआ, स्वा० सत्यानन्द जी के भाषण मे एक उद्दण्ड व्यक्ति शराब के नशे मे धुत्त तथा अनापशनाप बकने मैं उसे समझाने को उठा तो कुछ साथियो ने रोका, इधर स्वामी जी ने हवा का रुख देखकर 'राम-धुन प्रारम्भ कर दी। (उन्हे यह अन्दाज भी आता था।) सभा शान्त हो गई, भाषण भी राम की महिमा पर हो गया और इस प्रकार स्वामी जी विरोधाग्नि का शमन कर पाये। भजन ठा० महीपाल के थे, वे तो ठाकुर थे। अत क्षत्रियोचित शब्दावली का प्रयोग करते हुए, ठाकुर बन्धुओ के स्वाभिमान को ललकारते रहे। जातीय बन्धुओ के कारण, उन्हें किसी ने नही रोका। अब मेरी बारी थी मैं हिन्दुओ की दुरवस्था से दुखी तो था ही, जाति के पतन के कारणो पर प्रकाश डालने लगा। आपस के मतभेद, विरोधियो के षड्यन्त्रो पर बोला जिससे जनता मेरे समीप आ सके। सभा समाप्त हुई, हम भोजन को चले, हरिजन बन्धु क्या और कैसे भोजन करते हैं यह उस रात्री को अनुभव हुआ। काश ! हरिजनों के उद्धार तथा वोटो के ठेकेदार कभी इसका अनुभव कर पाते।

दूसरे दिन प्रात यज्ञ हुआ, सब नर-नारियो को आहुति [illegible] का अधिकार दे दिया गया। कुछ यज्ञोपवीत भी दिये गये, और हमने सोचा कि मैदान मार लिया, परन्तु यह हमारी कोरी कल्पना थी। दोपहर को ज्ञात हुआ कि हरिजनो को दिये यज्ञोपवीत ठाकुरो ने तोड दिये हैं कुछ की पिटाई भी हुई है, और कल के यज्ञ को 'राक्षसवत्' विध्वंस करके रहेगा। रात्री का प्रचार काम शान्ति से चल गया क्योकि हम श्री कृष्ण जी की महिमा गाते रहे। बीच बीच मे दयानन्द और उस की विचारधारा का पुट भी दे जाते, परन्तु इस अन्दाज से कि घोड़ा सवार से बिदक न जाए।

अगले दिन के यज्ञ मे केवल यजमान को ही आहुति का अधिकार दिया गया। मैंने कहा भी कि ऐसा क्यों ? परन्तु स्वामी जी ने अनिष्ट कल्पना के भय से मुझे चुप करा दिया। यज्ञ हमारी नीति अथवा भीरुता से निर्विघ्न समाप्त हुआ। रात्री के प्रवचन भी हुए। आज अन्तिम रात्री थी अत आर्यसमाज की विचारधारा का खुलकर प्रचार हुआ सौभाग्य से ग्राम के कमेटी के चैयरमैन प्राय विचारो के निकले उन के आगमन से उग्रवादी कुछ दब गये। पूर्णाहुति के दिन यजमान ने (जो ठाकुर था) आग्रह किया कि किसी अन्य से आहुति न दिलाई जाए। हम ने उसे तसल्ली दी उस यज्ञ सम्पन्न करने के पश्चात् उस के स्थान पर चैयरमैन साहब को बिठा कर सारे ग्रामवासियो से आहुति दिलाई गई। इस कशमकश मे आ०स० सुमेरपुर के उत्साही कार्यकर्ता पूरा साथ दे पाये, श्री मन्माधीन तो यज्ञकार्य के प्राण ही थे। यज्ञ समाप्त हुआ और हम वापस लौटे। महोबा मे पता चला कि हमारे आने के पश्चात् वह साधु पिटाई के डर से ग्राम से भाग गया है। भण्डारा नहीं होने दिया गया। थाना सर्वथा मौन भाव से दर्शक रहा और दो साधुओ की पिटाई की गई।

पाठक अनुमान लगायें कि आज भी कितना अन्धकार है और इन परिस्थितियो मे हिन्दू जाति के जीने के कितने दिन शेष हैं ? धन्यवाद है ऋषि दयानन्द का जिसके सद्प्रयास से आर्यसमाज रूपी दीपक इस अन्धकार को दूर करने का प्रयास कर रहा है परन्तु क्या यह छोटा सा दीपक इतने बड अन्धकार को चीर सकेगा ? यह प्रश्न है जो हर ऋषिभक्त को विह्वल कर देता है।

☐

लाला रामगोपाल शालवाले अभिनन्दन समारोह समिति

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्रद्धेय श्री रामगोपाल शालवाल का सार्वजनिक अभिनन्दन करने तथा इस अवसर पर उन्हे ११ लाख रु० की सम्मान राशि भेंट करने सम्बन्धी कार्यक्रम की तैयारी निरन्तर प्रगति पर है। इस विषय मे आर्य प्रतिनिधि सभाओ के अधिकारियो के नाम अनेक पत्र भेजे जा चुके हैं। विशेष कर ८ अप्रैल ८५ तथा ५ जून ८५ को भेजे गये परिपत्रो मे हमने अभिनन्दन समिति के निश्चयो एव सम्मान राशि हेतु धन सग्रह से सबधित विशेष जानकारी से आपको अवगत किया था। यह बात दुहराने की आवश्यकता नही कि सम्मान राशि के लक्ष्य को पूरा करने मे आर्य प्रतिनिधि सभाओं से विशेष सहयोग सस्थाओ के सचालको एव महानुभावो का भी सहयोग प्राप्त करना चाहिए जिनकी माननीय लाला जी के प्रति श्रद्धा है और जो इनके प्रिय कार्यों के समर्थक एव सहयोगी रह है। उपरोक्त दूसरे परिपत्र का प्रकाशन सार्वदेशिक पत्र के ६ जून के अक मे मुख पृष्ठ पर भी हुआ है। अब आपसे प्रार्थना है कि शीघ्रातिशीघ्र अपनी प्रतिनिधि सभा में निश्चय कर सम्मान राशि के लिए धन सग्रह करने का कार्य प्रारम्भ करने की कृपा करें।

इस अभिनन्दन समारोह की तैयारी के लिए प्रमुख आर्य जनो का एक १५ सदस्यीय कार्यकारी दल पिछले ६ मास से कार्य कर रहा है। इस कार्यकारी दल के सदस्य गण अब तक अनेक बार दिल्ली में सग्रह उपसमिति का भी गठन किया गया है जिसके सयोजक माननीय श्री सोमनाथ मरवाह हैं। साथ ही एक परामर्शदात्री एव कार्यक्रम उपसमिति का भी निर्माण हो रहा है जिसके सयोजक माननीय श्री रामचन्द्रराव वन्दे मातरम् हैं। समारोह के लिए मुख्य समिति अर्थात् अभिनन्दन समिति का गठन किया जा रहा है, जिसमें सार्वदेशिक सभा के अधिकारी गण समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओ के प्रधान, देश विदेश के प्रमुख आर्य जन एव श्रद्धेय लाला जी के कार्यों से सबधित अनेक गण्य मान्य व्यक्ति होंगे। इस अभिनन्दन समिति की सदस्यता स्वीकार करने के सम्बन्ध में पत्र व्यवहार किया जा रहा है।

आप से साग्रह प्रार्थना है कि अभिनन्दन समिति की सदस्यता के लिए आर्प अपने प्रान्त के कुछ महानुभावों के स्वी- नाम के साथ ही उनका पूरा पता और जिस प्रमुख सस्था से उनका मुख्य रूप से सम्बन्ध रहा है उस सस्था का नाम भी लिखने की कृपा करें। इस अभिनन्दन समिति का गठन राष्ट्रीय स्तर पर किया जा रहा है। अत देश के सभी प्रान्तों एव श्रद्धेय लाला जी के प्रिय सामाजिक क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व इस समिति मे हो सके, इसका ध्यान रखना उचित होगा।

आदर सहित।

भवदीय

डा० आनन्दप्रकाश
सयोजक एव मन्त्री
अभिनन्दन समिति

:यानन्द का प्रिय वेद मन्त्र

(पृष्ठ २ का शेष)

महर्षि दयानन्द ने इसी हितभाव से अपने ग्रन्थो मे असत्य का दृढता से खण्डन किया और सत्य का मण्डन। अन्धकार और प्रकाश एक साथ नही रह सकते। ठीक ऐसे ही अपवित्रता मे पवित्रता नही उभर सकती जैसे मूर्खता और बुद्धिमत्ता या अज्ञान और ज्ञान युगपत् नही रह सकते वैसे ही दुरित और भद्र भी एक साथ नही पनप सकते। भद्र की स्थापना के लिए दुरित का अपहार अनिवार्य है।

ससार मे हम देखते है कि गतिशील पदार्थ मे निरतर बाहर का प्रभाव पडता है उससे बचाव व सुरक्षा के लिए घोर श्रम करना होता है। पवित्रता ही जीवन है और अपवित्रता ही मृत्यु है। इस सिद्धात को हमे अगीकार करना ही होगा क्योकि यह वेद का आदेश है। यह वह प्राकृतिक ज्ञान अथवा स्वाभाविक नियम है जिसकी अवहेलना मे सिद्धि सभव नही है।

जब मनुष्य किसी भी मन्त्र को विचार को नियम या सिद्धात को जीवन मे धारण कर लेता है तभी वह मन्त्र सिद्ध होता है इसी का नाम है सिद्धि। मत्र के अनुसार आचरण करने से मत्र सिद्धि होती है।

आज मनुष्य के मस्तिष्क मे धर्म न म से एक ऐसी भ्रात धारणा उभरती है कि धर्म कोई अलौकिक वस्तु है। सासारिक व्यवहारो में धर्म की आवश्यकता नही। जब कि सत्य तो यह है कि हमारे लौकिक व्यवहारो मे हमारा सहायता करने वाला नियम ही धर्म है

स्मरण रखिये कि—भौतिक जगत और आध्यात्मिक जगत दो भिन्न धाराए नहीं हैं। भौतिक जीवन भी आध्यात्मिक जीवन की प्रारभिक सोपान है। भौतिक पदार्थ आध्यात्मिक सुख प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

जब तक इस सत्य को हम जान नही लेंगे तब तक हम अपने पथ को स्पष्ट रूप से समझ नही पायेंगे।

वेद ज्ञान हमें इसी सत्य भाव की प्रेरणा देते हैं। ससार का सारा क्रम ज्ञान के इसी सत्य आधार पर ही चल रहा है। जहां हम इन नियमो का उल्लघन करते हैं वही हम मार्ग भटक जाते हैं और दुःख पाते हैं।

प्रस्तुत मन्त्र का विस्तार भी अनन्त है।

दुरितानि परासुव। यद्भद्र तन्न आसुव॥ की क्रियान्विति हमे पग पग पर देखने को मिलती है।

प्रात उठते ही मल त्याग करने जाना स्नान दन्त धावन करना इसी दुरितानि परासुव के आदेश का पालन है। चाहे दुकान हो या मकान चाहे आयन हो चाहे मार्ग पहले इसे स्वच्छ किया ही जाता है। यही बात दुरितानि परासुव में कही गई है। अब इससे आगे बढिए—सुनार लुहार बढई या जुलाहा या किसी भी उद्योग मे सब से पहला क्रिया दुरितानि परासुव की जाती है। सोने को तपाना लकडी का छीलना कपास का धुनना क्या है? पहले वस्तु के दोष को दूर किया जाता है तभी उसमे भद्रता आती है।

ये सारे क्रिया कलाप भौतिक स्तर पर किए जाते हैं। यही काय हमे आध्यात्मिक मत्र मे आत्मा के स्तर पर करना होता है। प्रथम आत्मा की मलीनता को दूर कर तब उसमे भद्रता आएगी। भद्रता का आधान होगा।

एक ही नियम एक ही सिद्धात घर आगन बाजार मे चलता है और वही नियम और सिद्धात आध्यात्मिक जगत् मे वैसे ही लागू होते हैं जैसे भौतिक व्यवहार मे। केवल स्तर का अतर मात्र है।

इस मन्त्र मे एक शब्द ध्यान देने योग्य है विश्वानि विश्वानि दुरितानि परासुव सपूर्ण दुरितो का दूर करना। रच मात्र भी दुरित शेष न रहने पाए स्मरण रखिए कि इस नियम मे जितने प्रतिशत की कमर रहेगी ठीक उतने ही प्रतिशत की कमी भद्रता मे आ जाएगी।

सारा जीवन गणित के आधार पर चलता है इसमे किसी प्रकार का सुविधा घट बढ की कल्पना कल्पनामात्र ही है।

महर्षि ने इसीलिए इस मन्त्र को सर्वप्रथम रक्खा है। यह क्रम सृष्टि का एक सिद्धात रूप ही है।

अपने वेद भाष्य मे इसे बार बार लिखने का अभिप्राय यही है कि ज्ञान मे कहा दोष न आने पाए क्योकि व्यवहार का मूल आधार ज्ञान ही तो है। ज्ञान की विकृति ही व्यवहार की विकृति बन जाती है।

धन्य है महर्षि दयानन्द और धन्य है वेद ज्ञान और धन्य हैं प्रभु जिन्होने ज्ञान दिया

प्रत्येक मनुष्य को इस मन्त्र को जीवन मे चरितार्थ कर सिद्धि प्राप्त करनी चाहिए प्रभु कृपा करें कि—

हे सविता देव आप हमारे सपूर्ण दुरितों को दूर करने मे हमारी सहायता कीजिए और भद्र की धारणा हम मे होती रहे ऐसी प्रेरणा व ऐसा सामर्थ्य हमें प्राप्त कराइए।

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्र तन्न आसुव। □

धर्म क्या है

(पृष्ठ ७ का शेष)

मास मदिरा जुआ और व्यभिचार ये चार बड दोष ससार मे दोष माने जाते हैं। भारत मे ये चारो ही वृद्धि पर हैं इस लिए देश भयानक पतन की तरफ जा रहा है। ऋषि मुनियो ने तथा ऋषि दयानन्द ने इन समस्त बातो पर सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ मे पूर्ण प्रकाश डाला है प्रत्येक व्यक्ति को वह ग्रन्थ पढना चाहिए। □

राष्ट्रीय-सगठन म धार्मिक उन्माद बाधा

(पृष्ठ ४ का शेष

मारकाट सब इस फिरकापरस्ती की देन है धार्मिक मतान्धता ने ही इस राष्ट्र के बड बड नेताओ की हत्या तक करवा डाली है।

सचमुच यदि देखा जाए तो यहा के लोग स्वार्थवश भयवश अथवा शक्ति के कारण ही सगठित हुए या एक हुए हैं होते हैं और होते रहेंगे।

ये धार्मिक उन्माद की भावनाए ही अछूतपन या अस्पृश्यता को बढावा देती हैं। मन्दिरो और देवालयो पर पुष्प चढाने को मना करती हैं। इससे समाज मे विघटन ही पैदा होता है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था मैं उस धर्म को धर्म नही मानता जो भूखे को रोटी नही दे सकता स्वामी दयानन्द ने भूखी और नगी भारत जनता को देखकर ब्रह्मानन्द और समाधि का विचार छोड समाज को जगाने का जीवन भर प्रयत्न किया आज हमारे राष्ट्र का एक चौथाई से भी अधिक हिस्सा इसी भूख या गरीबी से तग आकर धर्म परिवर्तन का शिकार होता है और जब धर्म परिवर्तन हो जाता है तो नेताओं की आख खुलने लगती है क्योकि वह गरीब भूखा नगा इन्सान यह सोचने को मजबूर हो जाता है कि इस धर्म मे क्या रखा है जो भूखे को रोटी नही दे सकता इस लाचारी का लाभ उठाते है विदेशी और देशी धर्म के एजेण्ट जो भारत राष्ट्र के सगठन को जर्जर करने मे लगे रहते हैं अत भू और ख (धरती और आकाश) के मध्य रहने वाले इस भूखे मानव की समस्या का समाधान राष्ट्र के कर्णधारो को करना ही होगा अन्यथा समाज का ढाचा चरमाराकर राष्ट्र टक टक हो जाएगा।

इसी सन्दर्भ मे यदि हम इस राष्ट्र मे मनाये जाने वाले त्योहारो या पर्वो की चर्चा करें तो वहा भी हमे गडबड नजर आती है। मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपनी धार्मिक रूढिता को छोडने मे बडा कष्ट का अनुभव करता है। त्योहार भी राष्ट्र के नागरिक जीवन का अभिन्न अग है। त्योहार या पर्व किसी भी राष्ट्र की सस्कृति व सभ्यता के प्रतीक हुआ करते हैं। जागरूक जनता के प्रेम और भाईचारे के प्रतीक हुआ करते है। राष्ट्र को एकता और सगठन के सूत्र मे पिरोने वाले हुआ करते हैं किन्तु इस सदर्भ मे भी हम जब गहनता से विचार करते हैं तो हमारा मन और मस्तिष्क झन झना उठता है। हृदय वेदना से भर जाता है। इस राष्ट्र के अन्दर जब त्योहार मनाने का समय आता है तब बड बड नगरो मे धारा १४४ लगानी पडती है। पी० ए० सी० और पुलिस का इन्तजाम करना पडता है। यह सब क्यो करना पडता है? इस क्यो का उत्तर एक ही है—हम शकित हो उठते हैं कि कही झगडा न हो जाए। साम्प्रदायिक उपद्रव न हो जाए। इस लिए धार्मिक त्योहार भी हमारे राष्ट्रीय सगठन मे एक बडी बाधा बनकर हमारा अट्टहास कर रहे हैं।

वस्तुत मे भारत राष्ट्र के सगठन मे धार्मिक-उन्माद एक बडी बाधा ही नही अपितु राष्ट्र के लिए चुनौती भी है। जिसे जिसे समय रहते हमे स्वीकार करना ही होगा। राष्ट्र और धर्म दोनो मे आज समन्वय नही है। एकरूपता नही है। कट्टर धर्मवादी आज भी इस राष्ट्र की राष्ट्रीयता को स्वीकार करने को तैयार नही अपने को अलग कौम बताकर नया गुल खिलाने को तैयार हैं। धर्म निरपेक्षता की आड मे आज देशद्रोही पथभ्रष्ट उग्रवादी आतकवादी व्यक्ति से व्यक्ति के परिवार के राष्ट्र के टकडे टकडे करने को कटिबद्ध हैं। यह उन्मादी आग ऐसी आग है जब धधक जाती है तो न गरीब का झोपडा देखती है न अमीर की अट्टालिका अत हमे इस धार्मिक उन्माद का जिससे साम्प्रदायिक विद्वेष की भावना पनपती है समूल विनष्ट करना ही होगा। परस्पर प्रेम व सौहार्द का बढाना है हमारा राष्ट्र विभाजन के कगार पर खडा है आओ एक जुट होकर इन सबल सूत्रो में बधने का सकल्प ले

श्री ला हसराज गुप्त का निधन सभा द्वारा शोक सवदना

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो की ओर से उनकी शिरोमणि सभा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी एव कार्यकर्ता दिल्ली के भूतपूर्व महापौर प्रसिद्ध उद्योगपति दानवीर समाजसेवी आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री लाला हसराज जी गुप्ता के अकस्मात् देहावसान पर गहरा दुख एव शोक व्यक्त करते है। आपने अपना अधिकाश जीवन आर्यसमाज तथा अन्य सामाजिक सस्थाओ की सेवा मे लगा दिया आपके चले जाने से आर्यसमाज को जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति होना असम्भव है परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करे उनके दुखी परिवार को इस महान् दुख को सहन की शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करे

(सूर्य देव)

समाचार-सन्देश

पं० युधिष्ठिर मीमांसक का अभिनन्दन एक सराहनीय प्रयत्न

वैदिक वाङमय के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् मानवता के पुजारी आर्यविद्या के तपस्वी प्रचारक प० युधिष्ठिर मीमासक का आर्यसमाज सान्ताक्रूज बम्बई मे भव्य अभिनन्दन किया गया। टनो फूलो के हार से द्वार तथा मच सजाया गया था। विशिष्ट गण्यमान्य व्यक्तियो आर्यवीरदल के सैनिको के सादर अभिवादन के साथ आचार्य मीमासक जी को मच पर ले जाया गया। मच पर मुख्य पक्ति मे श्री प० युधिष्ठिर मीमासक श्री बलराम जाखड एव श्री प्रा० वेद व्यास थे। मच पर उपस्थित थे आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात महाराष्ट्र और बम्बई के प्रधान क्रमश श्री मगलसैन चोपडा श्री दौलतराम चड्ढा और श्री ओकार नाथ आर्य आचार्य सोमदेव जी शास्त्री आदि महानुभाव थे। आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान श्री देवेन्द्र कपूर ने श्री बलराम जाखड की अध्यक्षता मे अभिनन्दन समारोह के प्रारम्भ होने की घोषणा की। इस समाज के यशस्वी महामत्री कैप्टन देवरत्न आर्य ने जनसमुदाय का आर्य समाज के द्वारा किये जा रहे कार्यो का तथा गतिविधियो का परिचय दिया। उन्होने श्री बलराम जाखड की प्रस्तुति मे कहा हमारे लोक सभा अध्यक्ष ने भारत का सस्कृति और सभ्यता की जननी देव भाषा सस्कृत के महान पुजारी है एस आदर्श व्यक्ति द्वारा इस समारोह की अध्यक्षता करना गौरव का विषय है। आचार्य सोमदेव ने श्री प० युधिष्ठिर मीमासक की तपस्या प्रकाण्ड पाण्डित्य का धाराप्रवाह भाषण मे जब परिचय दिया सभागार रोमाचित होकर करतल ध्वनि कर उठा। श्री बलराम जाखड ने पूज्य पण्डित जी को अभिनन्दन पत्र भेंट किया। इस अवसर पर एक स्वर्णिम ट्राफी भी पण्डित जी को भेंट की गयी। इस पर लिखा था—

जीवन पर्यन्त वैदिक अनुसन्धान और आर्य जगत् की सेवार्थ समर्पित जीवन के प्रति कृतज्ञता के प्रतीक स्वरूप पण्डित युधिष्ठिर मीमासक को उनके अभिनन्दन समारोह पर ५/५००० रुपये की थैली सहित सादर भेंट—१६ ५ ८५।'

७५००० रुपये की थैली भेंट करने के पश्चात् पूज्य पण्डित जी की धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा को भी शाल एव पुष्पमालाओ से सम्मानित किया गया।

श्री बलराम जाखड ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा—श्री कैप्टिन आर्य ने मेरा परिचय देते हुए मुझे सस्कृत का पुजारी कहा। सस्कृत तो हर भारतीय की मा है। मा का पुजारी होना हमारी सस्कृति है जो अपनी मा की सेवा नही करता वह कृतघ्न है। मैं सस्कृत की सेवा नही कर रहा अपनी मा की सेवा करता हू। उन्होने आगे कहा मैने प्रधानमत्री श्री राजीव गाधी को लिखा है—कि इस देश की अखण्डता को बनाये रखने के लिए सस्कृत भाषा के पठन को समस्त भारतीय विद्यार्थियो के लिए अनिवार्य घोषित कर दिया जाए। यदि अनिवार्य न किया जा सके तो सस्कृत पढने वाले विद्यार्थियो को उच्च शिक्षा मे अध्ययन के लिए प्रवेश हेतु १० अक अतिरिक्त दिये जाएं। श्री जाखड ने आर्यसमाज सान्ताक्रूज के अधिकारियो का इस प्रकार का समारोह आयोजित करने पर तथा सस्कृत के प्रचारक तपस्वियो के सम्मान करने की मुक्तकठ से प्रशसा की।

सम्पादक आर्यसन्देश

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का निर्वाचन १८ अगस्त १९८५ को

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की अन्तरग सभा की एक बैठक शनिवार ६ जुलाई को सभा कार्यालय हनुमान रोड मे हुई। इस बैठक मे निर्णय लिया गया कि आगामी वर्ष १९८५-८६ के लिए सहयुक्त सदस्यो का निर्वाचन २८ जुलाई १९८५ को तथा वार्षिक अधिवेशन एव निर्वाचन १८ अगस्त १९८५ को किया जाये। दिल्ली की सभी सम्बन्धित आर्यसमाजो के अधिकारियो से निवेदन है कि वे सम्बद्धता शुल्क ३० रुपये तथा दो प्रतिनिधियो का सदस्यता शुल्क सभा कार्यालय में प्रतिनिधियों के नाम सहित शीघ्र भिजवाये।

भवदीय
सूर्यदेव
महामंत्री

भजनोपदेशक संगीत प्रशिक्षण शिविर १४ से २८ जुलाई, १९८५ तक

आर्यजगत् के सुविख्यात सगीताचार्य प० पन्नालाल जी पीयूष' तथा प० अभिविनय जी भारती' द्वारा एक 'भजनोपदेशक सगीत प्रशिक्षण शिविर" का आयोजन हो रहा है। इसमे शास्त्रीय सगीत के साथ स्वर्गत प० बस्तीराम जी, चौ० तेजसिंह जी कुवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर एव कविरत्न प० प्रकाशचन्द्र जी की शैलियो व आधुनिक सरल सगीतो का भी प्रशिक्षण दिया जायेगा। निवास व भोजन नि शुल्क रहेगा।

ऐसा आयोजन प्रथम बार दिल्ली मे हो रहा है। आर्यसमाज के भजनोपदेशक तथा धर्मप्रचार मे रुचि रखने वाले सम्पर्क करें। सम्पर्क व पत्रव्यवहार का पता श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय १२६ गौतमनगर नई दिल्ली-४९

दानी सज्जनो व समाजो से निवेदन है, कि आर्थिक सहयोग तथा खाद्य सामग्री (आटा चावल, दाल, दूध, घी आदि प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

निवेदक
स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती
आचार्य हरिदेव
स्थान श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय,
गौतमनगर-नई दिल्ली।

आर्यसमाज सान्ताक्रूज द्वारा चिकित्सा कैम्प का आयोजन

ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। महर्षि दयानन्द के इस आदेश का पालन करने के लिए आर्य समाज सान्ताक्रूज ने रविवार दिनाक २८ अप्रैल १९८५ आर्य मेडिकल रिलीफ मिशन के तत्त्वावधान मे नि शुल्क नेत्र चिकित्सा एव आप्रेशन कैम्प का आयोजन किया।

शिविर का उद्घाटन महाराष्ट्र के स्वास्थ्य एव परिवार कल्याण राज्य मत्री डा० अनिल वरहाडे ने किया। आर्य समाज के योग केन्द्र को वातानुकूलित आप्रेशन थियेटर मे परिवर्तित किया जिसका उद्घाटन भी मत्री महोदय ने किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री गजानन्द जी आर्य मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री सत्यप्रकाश जी आर्य ने अपने व्यवसायिक प्रतिष्ठान इकनामिक ट्रान्सपार्ट आर्गेनाइजेशन की ओर से आर्य मेडिकल रिलीफ मिशन को लगभग पौने दो लाख की एक नवीन रुग्णवाहिका दान स्वरूप भेंट की।

राज्य मत्री श्री डा० अनिल वरहाडे ने रुग्णवाहिका का फीता काटकर जूते उतारे और रिलीफ मिशन के सस्थापक स्वामी रामानन्द जी शास्त्री के चरण छूकर उसकी चाबी उन्हें सौंपी।

इस कैम्प मे लगभग ४०० रोगियो के नेत्रो का परीक्षण किया गया एवं लगभग ५० रोगियो की आखो का आप्रेशन किया गया। एस गरीब व्यक्तियो की आखों का आप्रेशन हुआ जो इलाज का व्यय तो दूर दो समय अपना पेट भी नही भर सकते थे।

आप्रेशन के पश्चात् रोगी एक सप्ताह आर्यसमाज भवन में ही रहे, वहीं उनकी देखभाल की गई। उनके भोजन व दवाई की व्यवस्था एव स्वस्थ होने पर उन्हें चश्मा आदि का वितरण नि शुल्क किया गया। डा० वरहाडे ने कहा मैं आर्यसमाज के इस कार्य से बहुत प्रभावित हू। आर्य समाज यदि इस प्रकार के परोपकार का कार्य जन साधारण के लिए करता है तो मैं सरकार की ओर से पूर्ण सहायता करने को तैयार हू। श्री सत्यप्रकाश जी के आग्रह पर उन्होने कहा मैं अस्पताल खोलने के लिए बम्बई उपनगर मे सरकार की ओर से जमीन भी देने को तैयार हूं।

मुख्य अतिथि श्री गजानन्द जी आर्य ने कहा इस शिविर को देखकर मुझे आर्य समाज के प्रारम्भिक इतिहास की याद आ रही है। जब हमने जन साधारण की नि स्वार्थ भावना से सेवा कर आर्य समाज को विकसित किया था। आर्यसमाज सान्ताक्रूज ने हमे आज नवीन दिशा का बोध कराया है।

श्री सत्यप्रकाश जी आर्य ने कहा यदि सरकार हमे जमीन देती है तो हम दो करोड की लागत से अस्पताल के निर्माण हेतु बिलकुल तैयार हैं।

आर्य मैडिकल रिलीफ मिशन के सस्थापक स्वामी रामानन्द जी ने अपने वक्तव्य मे कहा कैप्टन देवरत्न आर्य के अथक प्रयास से इस मिशन की स्थापना हुई और और हमने पिछले एक वर्ष मे पूरे महाराष्ट्र मे लगभग ५०० आपरेशन और ३० ००० रोगियो का नि शुल्क परीक्षण किया।

समारोह का सयोजन महामत्री कैप्टिन देवरत्न आर्य ने किया। प्रधान श्री देवेन्द्र जी कपूर ने डाक्टरो एव नर्सों जिनकी नि शुल्क सेवा प्राप्त हुई एवं कार्यकर्ताओ का, अतिथियो का धन्यवाद किया।

भवदीय
देवरत्न आर्य महामत्री

आर्यसमाज हनुमान् रोड द्वारा वेदप्रवचन

आर्यसमाज हनुमान् रोड नई दिल्ली द्वारा १ जौलाई से ६ जौलाई तक श्री प० श्यामसुन्दर स्नातक की वेदकथा सम्पन्न हुई। इस अवसर पर श्री प० गुलाबसिंह राघव के मधुर भजन भी हुए। यह आयोजन बाबा खडकसिंह रोड पर खुले स्थान पर जन साधारण को वैदिक सन्देश देने के लिए किया गया था, जो सफल रहा।

मन्त्री, वैजनाथ माटिया

ग्राम प्रचार

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती अधिष्ठाता वेद प्रचार द्वारा १६ जून रविवार को साय ५ बजे से १० बजे तक ग्राम मसीमढ (रामगढ़) मे श्री कन्हैयालाल आर्य के निवास स्थान पर यज्ञ रखा गया यज्ञ के पश्चात् प० आशाराम प्रेमी और श्यामवीर राघव द्वारा भजनोपदेश रहा। जिसमें ग्राम के नर-नारियों ने भारी सख्या में भाग लिया। और निवेदन किया कि हमारे यहां कम से कम एक सप्ताह का कार्यक्रम रखने का कष्ट करें। हमारे यहां पर ईसाइयों का अधिक प्रचार रहा है जो कि पैसों के प्रलोभन देकर ईसाईमत का प्रचार करते रहते हैं। और धर्म परिवर्तन कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि हमारे घर-घर मे यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार जारी रहे। इस कार्यक्रम के बनाने के लिए श्री रामप्रताप जी का प्रयत्न रहा। श्री रामप्रताप जी अपने साथ हवन कुण्ड, सामिग्री, दरी, घी इत्यादि साथ रख कर ले जाते हैं और हरिजन बस्तियों में कार्यक्रम निश्चित करके सभा का पूर्ण सहयोग चाहते हैं। श्री रामप्रताप जी का यह सराहनीय कार्य है। ईश्वर इनका प्रत्येक दृष्टि से कल्याण करें ताकि सफलता प्राप्त करते रहें।
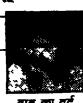
स्वरूपानन्द

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रवेश सूचना

निम्न विभागो मे जुलाई १९८५ से प्रवेश प्रारम्भ हैं—

(१) विद्याविनोद (इण्टरमीडिएट)

प्रवेशार्थ योग्यता—

१ विद्याधिकारी (गुरुकुल कांगड़ी) २ हाईस्कूल सस्कृत सहित ३ पूर्व मध्यमा अग्रेजी सहित (वाराणसी) ४ विशारद (पजाब यूनिवर्सिटी) अग्रेजी मे मैंट्रिक सहित ५ विद्यारत्न (गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर)।

(२) अलकार (बी०ए०)

प्रवेशार्थ योग्यता—

१ विद्याविनोद (गुरुकुल कांगड़ी) २ इण्टरमीडिएट संस्कृत सहित ३ उत्तर मध्यमा अग्रेजी सहित वाराणसी) ४ विशारद (पजाब यूनीवर्सिटी) अग्रेजी में इण्टरमीडिएट सहित।

(३) बी०एस–सी० (प्रथम एव द्वितीय वर्ष)

ग्रुप १ कैमिस्ट्री, बौटनी, जूलोजी।

ग्रुप २ कैमिस्ट्री, फिजिक्स, गणित।

प्रवेशार्थ योग्यता—

इन्टरमीडिएट या समकक्ष विज्ञान सहित।

(४) एम० ए०

१ वैदिक साहित्य २ सस्कृत साहित्य ३ दर्शन शास्त्र ४ प्राचीन भारतीय इतिहास सस्कृति तथा पुरातत्त्व ५ हिन्दी साहित्य ६ मनोविज्ञान ७ अग्रेजी ८. गणित।

प्रवेशार्थ योग्यता—

१ अलकार (गुरुकुल कांगड़ी) २. बी०एस-सी० ३ बी०ए० ४ बी० काम० ५ विद्याभास्कर ६ शास्त्री ७ आचार्य ८ साहित्यरत्न।

नोट—गणित तथा मनोविज्ञान विषय मे बी०एस–सी० परीक्षा उत्तीर्ण छात्रों को एम०एस०सी० की उपाधि प्रदान की जाती है।

(५) एम० एस-सी० (माइक्रोबायलोजी)

प्रवेशार्थ योग्यता—

बी०एस-सी० बायलोजी ग्रुप (बी० एस-सी० में न्यूनतम ५० प्रतिशत अक में उत्तीर्ण)।

(६) पी० एच० डी०

वेद, सस्कृत, हिन्दी, प्राचीन भारतीय इतिहास सस्कृति तथा पुरातत्व, भारतीय दर्शन, मनोविज्ञान एव अग्रेजी विषयो मे पी-एच०डी० की व्यवस्था है। रजिस्ट्रेशन फीस ५० रुपये है। प्रवेश फार्म तथा नियमावली शुल्क डाक व्यय सहित ६ रुपये है।

अन्य विशेषताएं—

१ सुयोग्य शिक्षक तथा सुसज्जित प्रयोगशालाए पुस्तकालय, एन सी०सी०, एन०एस०एम०, क्रीडा आदि का उत्तम प्रबन्ध।

(२) निर्धन एव योग्य छात्रो को शुल्क मुक्ति तथा छात्रवृत्ति भी दी जाती है।

टिप्पणी—

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की धारा ३ के अन्तर्गत गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय भारत सरकार से मान्यता प्राप्त है तथा उपाधियां सरकार के प्राय सभी विश्वविद्यालयो द्वारा मान्य है।

प्रवेश पत्र तथा पाठविधि कार्यालय से प्राप्त करे। प्रवेश की अन्तिम तिथि ७-८-१९८५ है।

(रामप्रसाद वेदालंकार)

(सुरेशचन्द्र त्यागी)

लाइसेंस टु पोस्ट विदाउट प्रीपेमेण्ट यू १३६/८५ दिनाक ७-६-८५

आर्यसमाज दीवान हाल के शताब्दी समारोह वर्ष पर विशेष आयोजन

मानसिक तथा शारीरिक लाभ उठाइये

हृदय रोग रक्तचाप (ब्लड प्रेशर), मानसिक तनाव दमा, घुटने, पिंडली, कमर, गर्दन आदि के दर्द से छुटकारे हेतु

योग साधना शिविर

दिनाक—१० ७-८५ से २१-७ ८५

योगीराज स्वामी शक्तीश्वरानन्द सरस्वती

द्वारा

स्थान—आर्यसमाज दीवान हाल

समय प्रात ५ बजकर २५ मिनट पर (समय का विशेष ध्यान रखें)
(लगभग एक घण्टा)

निवेदक

प्रधान
सूर्य देव

मन्त्री
मूलचन्द गुप्ता

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली ६

शोक-प्रस्ताव

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी एव कर्मचारी आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के गए श्री नवाबसिंह जी के अकस्मात देहावसान पर गहरा दुख एव शोक व्यक्त करते हैं। श्री नवाबसिंह जी ने सभा को जो सहयोग और सेवाएँ अपनी दीं वह कभी भुलाई नही जा सकती। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके वियोग मे सतप्त दुखी परिवार को इस महान् दुख एव वियोग को सहने की सामर्थ्य एव शक्ति प्रदान करे।

डा० धर्मपाल आर्य
महामन्त्री

निर्वाचन

आर्यसमाज हौज खास नई दिल्ली-१६ का चुनाव नवीन वर्ष(१९८५, १९८६) के लिए इस प्रकार हुआ है।

प्रधान—श्री बनवारी लाल गुप्ता
उपप्रधान—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति
„ „—लाजपतराय मदान
मन्त्रिणी—श्रीमती सीता देवी
उपमन्त्रिणी—शशि गुप्ता
„ —राज तनेजा
कोषाध्यक्ष—श्री धर्मवीर जी

सीता देवी
मन्त्रिणी, आर्यसमाज हौज खास

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ फो ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ म मुद्रित। रजि० न० डी० (सी०) ७५६

मूल्य एक प्रति २० पैसे | वर्ष ९ अंक ३५ | रविवार, २१ जुलाई १९८५ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८६ | श्रावण २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१

त्यागमूर्ति आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ

—सच्चिदानन्द शास्त्री

सीधे सादे, मोटे कुर्ता धोती मे, पैरों में चप्पल, नंगे सिर से जीवन-यापन करने वाले व्यक्तित्व को देख कर कोई यह नही जान सकता था कि यह कोई विद्वान् व्यक्ति है। परन्तु ऊपरी आवरण के नीचे विशाल पाण्डित्य भरा हुआ था। दर्शन, साहित्य, महाभारत मस्तिष्क पर छाये हुए थे।

महाराष्ट्रियन ब्राह्मण बचपन मे माता पिता की छत्रछाया से दूर पंजाब के लाहौर मे संस्कृत का गहन अध्ययन कर शास्त्री परीक्षा पास की, अंग्रेजी मे भी वे निष्णात थे।

आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द का व्यापक प्रभाव उनके मन मस्तिष्क पर छा चुका था। अत लाहौर से शिक्षा पाकर उत्तर भारत हरिद्वार आ गये। आर्यसमाज की विद्वन्मण्डली हरिद्वार क्षेत्र मे जम चुकी थी। आप भी उसी मे सम्मिलित हो गए। स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगडी की स्थापना गंगा के पार कांगडी मे की यह सब विद्वान् भी वही पहुंचे।

परन्तु कुछ सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक मतभेदो के कारण स्वामी दर्शनानन्द जी के साथ आचार्य जी भी आ गये और ज्वालापुर मे गुरुकुल की स्थापना की गई। पं० नरदेव शास्त्री भी म० वि० आ गये और जीवन पर्यन्त गुरुकुल ज्वालापुर महाविद्यालय की निशुल्क सेवा की। परिणामत गुरुकुल के आचार्य जी पर्याय [illegible] ये थे। पं० जवाहरलाल नेहरू आपके व्यक्तित्व से [illegible] प्रभावित थे कि नाम सुनकर ही स्वर्ण जयन्ती पर महाविद्यालय पधारे।

त्यागमूर्ति—अपने पास कुछ भी है वह सब दूसरो का है। एक बार एक किसान जाड मे ठिठरता आया। आपने रजाई, गद्दा सभी कुछ दे दिया। अपने आप आग तापकर रात काटते थे। कोई व्यक्ति कुटिया पर से खाली हाथ तो जा ही नही सकता था।

सामाजिक जीवन मे आर्यसमाज से बध हुए थे। लेख लिखने के धनी थे। सकडो लेख आर्यमित्र व विभिन्न पत्रिकाओ मे सुरक्षित हैं।

गीता - विमर्श आत्मालोचन, शुद्धबोध तीर्थ आदि अनेक पुस्तकें भी लिखी। लेकिन [illegible] वास गुरुकुल ही रहता था। सैकडो विद्यार्थी सदा ही उनसे प्रेरणा पाता रहा उनमे एक मैं लेखक भी हू। जीवन मे न जाने कितनी घटनाए [illegible]ती हैं पर कुछ स्मरणीय होती है हैदराबाद का आर्य सत्याग्रह [illegible] रहा था। अच्छे अच्छे कांग्रेसी कांग्रेस से त्याग-पत्र देकर सत्याग्रह मे भाग ले रहे थे। कांग्रेस से निकाले जायेंगे इसकी उन्हें चिन्ता न थी। [illegible] जी भी सत्याग्रह मे जाना तो [illegible]ते थे पर कांग्रेस की अनुमति पर। अत आपने म० गाधी को स्वीकृति के लिए पत्र भेजा। यह सूचना जब समाचार पत्रो मे छपी तो बडी ले दे मची। परन्तु आपने इसकी परवाह नही की। बाद मे आप हैदराबाद की जेलो का निरीक्षण करने गये।

राजनीति के परिप्रेक्ष्य मे

आचार्य जी का राजनैतिक जीवन देहरादून क्षेत्र ही रहा। वहीं से सदा कारा के बन्दी बनते रहे। देहरादून मे वनस्पति भवन के श्रद्धेय स्व० पं० अमरनाथ वैद्य का सान्निध्य दोनो में अन्तसमय तक प्रगाढ रहा।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद विशिष्ट जनो ने आचार्य जी को उ० प्र० विधानसभा के लिए प्रत्याशी बनाया और वे विधायक हो भी गये। पर विधायक निवास मे न रहकर आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० भवन के एक कक्ष मे पांच वर्ष बिता दिये। साथ ही भोजन आदि का प्रबन्ध उनके शिष्य पं० गोपालदत्त जी शास्त्री सम्पादक आर्यमित्र के ही यहाँ रहता था। जो पैसा मिला उसे जिसने उनके लिए व्यय किया था उसे वापस कर दिया। लोग हैरान थे।

एक बार गो रक्षा पर एक भाषण छापकर सभा मे वितरित कर दिया बडी कानाफूसी हुई। परन्तु राजर्षि टण्डन तथा पं० पन्त की सूझ बूझ ने सब को शान्त करके कोई जवाब तलब नही किया। यह उनके व्यक्तित्व की निशानी थी। गलत कार्य के लिए या किसी काम के लिए कभी भी किसी अधिकारी के पास कभी नही गये।

अगले चुनाव के समय पुन आप से पं० महावीर त्यागी आदि ने खडे होने हेतु प्रार्थना की। आपने स्पष्ट कह दिया। क्या मुझे कलक्टर से कानून गो बनाते हैं। अब मैं ऊचे पर बैठकर सब को डांटता हू। तब सब मुझे डांटते हैं। बस अब बाज आया और वह प्रत्याशी नही बने।

साधारण सा व्यक्ति पत्र लिखे, उसका उत्तर अवश्य मिलेगा। एक बार बीमार हो गये। अखबार में छप गया कि वह भूख हडताल पर हैं। बडा सरकारी स्तर पर हल्ला मचा। दिल्ली से मन्त्रीगण भी महाविद्यालय पहुचे। जब वस्तु स्थिति का ज्ञान हुआ कि भूख हडताल नहीं दस्त पेचिश से बीमार हैं तब वातावरण शान्त हुआ।

इस प्रकार दक्षिण के ब्राह्मण ने उत्तर भारत को कार्य क्षेत्र बनाकर जीवन का पटाक्षेप किया।

वृद्धावस्था आई शरीर को चिंता हुई। एक दिन वह अपने आत्मीय पं० नन्दकिशोर शास्त्री से बोले—देखो स्वामी आनन्द प्रकाश की प्रयाण वेला पर एक बैण्ड बाजा था। मेरी विदाई वेला पर दो बैण्ड करना। आखिर वह समय भी आया। सारे जीवन का निर्मोही त्यागी तपस्वी सन्त भी चलने को तयार। जैसे ही पूरे पचपुरी मे खबर हुई स्कूल कालिज बन्द कर प्रिय आचार्य को चले अन्तिम विदा देने चिता की लपटो मे पार्थिव शरीर को अर्पित कर प्रणाम किया। □ □

योगेश्वर श्रीकृष्ण विशेषांक

श्रावणी पर्व पर ८ सितम्बर को आर्यसन्देश का शोधपूर्ण नवीन सामग्री से भरपूर एक आकर्षक विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। जिसमे श्रीकृष्ण के जीवन दर्शन मन्तव्यो पर विशिष्ट सामग्री लेखक महानुभावो से अपेक्षित हैं। विद्वान लेखक कृपया अपने लेख निम्न पते पर शीघ्र भिजवायें।

सम्पादक
१५ हनुमान् रोड

सत्संग वाटिका

परम पद की प्राप्ति

वेदाचार्या सावित्री देवी शर्मा

स न बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।।

उपरिलिखित वेदमन्त्र मे परमपिता परमेश्वर के दिव्य गुण कार्य तथा प्रभु-भक्तो की परमपद-प्राप्ति के विषय मे वर्णन है।

स नो बन्धु —जड चेतन ससार का एकमात्र अधिपति हम सबो का सर्वप्रथम बन्धु है। 'स सस्कृत भाषा का एकवचनान्त पुल्लिङ्ग सर्वनाम-पद है, जिससे स्पष्ट है कि ईश्वर एक ही है। 'न पद बहुवचनान्त है, जो जीवात्माओ के लिए यहा प्रयुक्त है अर्थात् उस एक सर्वाधार पिता की हम अनेक अमृत सन्तानें है। "हम सब एक पिता के पूत' यह भव्य मङ्गलभावना प्रथम पदत्रयी मे कितने कौशल से अभिव्यक्त की गई है। पारस्परिक राग-द्वेषाग्नि मे जलता हुआ यह मानव-समुदाय यदि इस सार्वभौम धर्म के मर्म को समझ पाता तो क्या गृहकलह, पर राष्ट्र-कौटिल्य एव विश्व-सघर्ष की अभिशापिनी विभीषिका हमे सत्रस्त कर पाती ? सभवत कदापि नही ?

महाभारतीय कौरव पाण्डको की भीषण समर-रात्रि मे जब एक दिन एकान्त में माता कुन्ती ने अपने अतुल पराक्रमी अरिसूदन पुत्र कर्ण को यह गुप्त रहस्य सुनाया कि महाबली पाण्डव तथा अङ्गराज कर्ण एक ही माता के पुत्र हैं तो उस पाण्डवद्रोही, कौरवपक्षपाती महावीर कर्ण का हृदय सहसा परिवर्तित हो गया। पूव प्रतिज्ञा के कारण दुर्योधन के पक्ष मे युद्ध करता हुआ भी वह पाण्डवो का वास्तविक अहित न कर सका। यही व्यापक सन्देश 'स नो बन्धु" समस्त ससार के लिए देता है।

बन्धुः—द्वितीय अत्यन्त मर्मस्पर्शी भाव इस मन्त्र-भाग मे निहित है कि वह जगत् पिता सब से पहल हमारे समक्ष अपना कल्याणमय बन्धु स्वरूप ही प्रकट करता है, जिससे हम उस गम्भीर प्रेम-सागर मे सानन्द अवगाहन कर उस मञ्जु-मूर्ति के निरातक हो दर्शन कर सकें। कोई भी दुबल जन अपने प्रेमास्पद से कभी भयभीत नही होता। अत निर्भयता के लिए प्रीति-भाव का प्रदर्शन अत्यन्त आवश्यक है। ससृति के कण-कण मे उसकी स्निग्ध वात्सल्यमयी छाया प्रतिबिम्बित हो रही है। भक्त नही अपितु भगवान् अपना स्नह-सौरभ लुटाने के लिए व्याकुल से दीख पडते हैं। जन्म-जन्म की चिरन्तन प्र म-पिपासा के शान्त्यर्थ वह स्वाति का घनश्याम अमृतवर्षिणी अविरल धाराएँ बहा रहा है। चेतन ही नही, जड प्रकृति भी उसके ही अनन्त प्यार से आज विविध मोहक रूपो मे अलकृत होती हुई सजीव सी प्रतीत हो रही है। उसका प्रथम सुन्दर स्वरूप है निश्छल बन्धुता की अहेतुकी कृपा।

प्रभु के उपासको मे भी भक्ति के फलस्वरूप विश्वप्रेम के रूप मे (यही गुण) प्रकट होता है। सन्तो का मातृहृदय चेतन मानव-सीमाओ का अतिक्रमण कर भाव-विह्वल हो पुकार उठता है-'मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।' 'रघुवश के पञ्चम सर्ग मे कवि-कुल-कमल-दिवाकर विश्वकवि कालिदास ने महाराज रघु के भावप्रवण हृदय मे विश्वबन्धुत्व का कैसा अनुपम दर्शन किया है। ब्रह्मचारी कौत्स महर्षि वरतन्तु के आश्रम से भूपति रघु की राजधानी साकेत मे पधारे। समुचित सत्कार के अनन्तर रघुराज ने आश्रमवासियो की कुशल पूछी। 'सानन्दा गुरुप्रवरा सकुशला आश्रमवासिन वन्य-पशुषु आश्रमवासिषु किञ्चित् सङ्कटस्तु नैवापतित पत्रलतातरवश्च विम्बावास्तु न, आश्रमस्य जलाशय तु वतते वारिपूर्ण ?' समस्त ससार के प्रति ऐसा लोकोत्तर उदारभाव जागृत होना ही प्रभु-आश्रित भक्तो का प्रथम लक्षण है।

'जनिता" वह प्यारा प्रभु अकारण बन्धु अतिशयकरुणा-प्रेम से प्रेरित होकर इस सृष्टि का 'जनिता ह अर्थात् उत्पादक या रचयिता के रूप मे प्रकट होता है। स्पष्ट है कि किसी भी रचनात्मक कार्य तथा व्यवहार के लिए प्रीतिपुरस्सरता प्रथमत अपेक्षित है। यदि बन्धुता हुए बिना भी कोई 'जनिता' होने का निष्फल प्रयास करेगा तो ध्वस-कार्य मे ही निपुण हो सकेगा, सुन्दर निर्माण मे नही। उसमे उसका किसी प्रकार का सहयोग न होगा। हमारे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सातवें नियम में लौकिक व्यवहारों का ज्ञान करते हुए लिखा—"सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए।"

कोई भी निर्माता सहृदयतापूर्ण एव विश्वकल्याण भावनाओ से प्रेरित हुए बिना जीवन क्षेत्र मे सफल न हो सकेगा।

ससार मे 'जनिता' रूप मे सर्वोत्कृष्ट उदाहरण ममतामयी मातृशक्ति का है जो निष्काम भाव से अलौकिक वात्सल्य हृदय मे धारण करती हुई आजीवन संतति का निर्माण ही अपना लक्ष्य समझती है। शिष्यवत्सल गुरु एव आचार्यजन ही वशिष्ठ एव सान्दीपिनि की भाँति राम-कृष्ण जैसे युगनायक जितेन्द्रिय धार्मिक महामानवो के 'जनिता या निर्माता बन सकते हैं। एक व्यथित व्याधि-ग्रसित रोगी की सफल चिकित्सा करुणानिधान लोक-बन्धु वैद्य ही कर सकता है—अर्थ पर प्रथम दृष्टि रखने वाले लोभी अकरुण हृदय चिकित्सक नही।

जहाँ ऐसी निष्काम विश्वप्रीति न होगी, वहाँ उत्तम सतति, सदाचारी, तेजस्वी छात्र, चरित्रवान् नागरिको का निर्माण न हो सकेगा। ऐसा समाज चरित्र सम्पत्ति से हीन होकर विनाश को प्राप्त होगा जैसा कि आज अर्थोन्मुखी राज-व्यवस्था के भयकर परिणामो से स्पष्ट है। अत वैदिक मर्यादा यही है कि प्रभु के सत्य आदर्श पथ पर चलते हुए हम "वसुधैव कुटुम्बकम्' का उदात्तभाव प्रथमत धारण करें, पश्चात् यथाशक्ति 'जनिता' बनकर इस लोक का निर्माण करें।

'विधाता' सर्वहितकारी प्रभु जगद्-बन्धु होकर अपनी जनित्री शक्ति प्रकट करता है, फिर स्वरचित पदार्थों का यथा-योग्य विधान करने से हमारा 'विधाता' कहलाता है। समुचित विधान ही प्रत्येक वस्तु को मर्यादित करता है। अन्यथा अव्यवस्था एव अनौचित्य पदार्थ का विनाश कर देता है। कितना वैज्ञानिक वर्णन है। जो जनिता है वही योग्य विधाता हो सकता है। अत जनिता (निर्माता) को विधान हेतु पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिए क्योकि यदि बालको के जनिता माता-पिता हो तथा नियम विधाता प्रतिवासी (पड़ोसी) हो तो परिस्थिति सभाले नही सभलेगी। छात्रो के 'जनिता' या ज्ञान-जन्मदाता आचार्य हो और उनके अध्ययन, दिनचर्या, आचार आदि की सहिता बनाने वाले 'विधाता' कोई दूरस्थ शिक्षा विभागीय अधिकारी हो तो फिर वर्तमान दुर्गतिपूर्ण अव्यवस्था आप से छिपी नही है। विशेष विस्तार की आवश्यकता नही है। सभी विभागो मे जनिता विधाता की भेदपूर्ण नीति के दुष्परिणाम दर्शनीय हैं देखने मे 'जनिता स विधाता' कितनी छोटी बात प्रतीत होती है किन्तु इसके प्रतिकूल आचरण ने हमारी गतिविधियों को आमूल परिवर्तन कर घोर अशान्ति उत्पन्न कर दी है।

"धामानि वेद भुवनानि विश्वा"—वह कृपालु परमेश सकल पदार्थ-विज्ञानो का जनिता या विधाता है अत (विश्वा) समस्त (धामानि) तेजोमय (भुवनानि) भुवनो को (वेद) भली प्रकार जानता है। इस मन्त्रभाग से तीन अर्थ विशेष रूप से ध्वनित होते हैं—१ वह ईश्वर सर्वज्ञ है, २ उसकी सृष्टि ज्ञान-विज्ञान मे परिपूर्ण है, तेजस्वी विधाता के तेजोमय असख्य भुवन हैं, ३ अगणित लोक-लोकान्तरो का सर्वज्ञाता होने से वही हमारा ऐहिक-पारलौकिक पथो का सच्चा निर्देशक हो सकता है, अत उसी की उपासना करनी चाहिए।

'यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये
धामन्नध्यैरयन्त।"

(यत्र) जहाँ (देवा) दिव्य गुण-सम्पन्न जितेन्द्रिय योगीजन (अमृतम्-अनाशाना) लौकिक आवागमन से मुक्त हो अमृतत्व को भोगते हुए (तृतीये धामन् अध्यैरयन्त) मोक्ष पद मे रमण करते हैं।

स्पष्ट है कि दुर्लभ मानव-जीवन को प्राप्त कर जो मनुष्य दिव्य गुणो का सचय करते हैं, मनसा वाचा कर्मणा सत्य-व्रत-पालन एव ब्रह्मचर्यादि के सेवन से परमेश्वरोपासना की योग्यता को धारण करते हैं वे ही जन्म-मरण के दु खद पाशों से मुक्त हो अमृत-पद के अधिकारी होते हैं। इसीलिए अध्यात्म विद्या को क्रान्तिदर्शी महनीय ऋषियो ने 'दुर्गमपथस्तत् कवयो वदन्ति" दुर्गम पथ कहा है। प्रभु-पद-प्राप्ति का पथ छुरे की तीक्ष्ण धारा के समान बताया है अत असुर, मानव तथा देव-कोटियों मे से यह पद देवो से ही प्राप्य है।

ऐसे देवगण जीवनमुक्त होकर शरीर त्याग के अनन्तर उस दिव्य लोक मे रमण करते हैं, जिसे वेद की भाषा मे मुक्ति-पद कहा गया है।

यद्यपि विविध मत-मतान्तरो में मृत्यु के पश्चात् प्राप्य लोको का अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है किन्तु उनके वर्णित लोक लौकिक भोगो से ही परिपूर्ण हैं, अत उनमे कोई विशेषता प्रतीत नहीं होगी। धर्मार्थ-काम को यावज्जीवेन सुचारु रूप सिद्ध करने के बाद मोक्ष पद की प्राप्ति वेदो द्वारा प्रतिपादित है। यही हृदयग्राह्य वैज्ञानिक पद्धति है।

सम्पादकीय—

पाकिस्तान का परमाणु बम—भारत चिंतित

जुल्फिकार अली भुट्टो ने १९६५ मे कहा था अगर भारत न्यूक्लीय बम बनाता है तो हम घास खाकर, भूखे रहकर भी अपना बम बनायगे।' भारत ने तो परमाणु बम बनाया नही और न ही इस प्रकार का दृष्टिकोण हो रखा किन्तु पाकिस्तान तभी से परमाणु ऊर्जा के विध्वसक उपयोग मे निरन्तर आगे बढा है। इस बात को सारी दुनिया जान चुका है। विशेषज्ञ इस सभावना से इन्कार नही करते कि पाकिस्तान परमाणु बम बनाने की तकनीक जान चुका है और शायद बम भी बना चुका है। गत वर्ष अमेरिकी अधिकारियो ने पाक व्यापारी को टेक्सास से इसलिए रवाना किया था कि वह अवैध रूप से ५० इलैक्ट्रोनिक खटके [या घोड] पाकिस्तान भिजवाने के प्रयत्न मे सलग्न था। सम्प्रति ये खटके किसी भी प्रकार से पाकिस्तान को प्राप्त हो गये हैं जो परमाणु बम के विस्फोट मे प्रयोग किये जाते हैं। सारा विश्व हैरान है कि यह खटके अमेरिका से पाकिस्तान कैसे पहुच गये ? जब कि अमेरिका पाकिस्तान के मसूबो से वाकिफ है और यह लापरवाही कितना बडा कहर ढा सकती है। ये सहज ही अनुमानगम्य है। इन इलैक्ट्रोनिक खटको के सफल परोक्षण कर लेने से यह भी स्पष्ट है कि पाकिस्तान बिना विस्फोट के बम बना रहा है हर चीज का अलग-अलग परीक्षण कर बम बनाना इस साजिश को भी उजागर करता है कि पाक बिना धमाके शोर के दुनिया को पता न चल सके और काम हो जाये।

अमेरिकी राजनीतिज्ञ जो ग्लोन ने कहा था—'मैं किसी को झूठा तो नही कहूगा पर पाकिस्तान जो कह रहा है उससे कही ज्यादा उसके काम बोल रहे हैं। अमेरिकी प्रतिरक्षा न्युक्लीय अभिकरण को प्रस्तुत की गई विशेषज्ञो की रिपोर्ट के अनुसार अनुमान है कि पाकिस्तान इस दशक के उत्तरार्ध मे प्रतिवर्ष छः न्यूक्लीय बम बनाने की क्षमता प्राप्त कर चुका है और १९९० तक तीस यूरेनियम बम बना चुकेगा। भूखे रहकर और घास खाकर बम बनाने की योजना श्री भुट्टो ने १९७२ के युद्ध हार जाने के बाद प्रारम्भ कर दी थी। राष्ट्रपति के तुरन्त बाद इन्होने अपने वैज्ञानिक बुलाकर प्रोजेक्ट ७०६ का कार्य प्रारम्भ कर दिया था। इस प्रोजेक्ट के अन्तगत १९७३ तक पाकिस्तान ने प्राकृतिक यूरेनियम के इधनवाला व्यावसायिक इधनवाला न्यूक्लीय रियेक्टर स्थापित कर लिया था इसम कनाडा का भो सहायता ली गई थी भुट्टो ने फ्रास से भी सौदा किया एक ऐसे प्लुटोनियम पुन ससाधन सयत्र का जिसमे प्रतिवर्ष ३०० पोड प्लुटोनियम सशोधित हो सकता था। इतने प्लुटोनियम से ३० परमाणु बम तयार हो सकते हैं। १९७६ के समझौते के बाद फ्रास ने इस सयत्र का काम बन्द कर दिया था परन्तु कुछ फ्रांसीसी कम्पनिया गुपचुप इस कार्यक्रम को सहयोग देती रही। पाकिस्तान ने इस सयत्र के ९५ प्रतिशत का नक्शा बहुत ही गोपनीनता से प्राप्त कर लिया। इसी काल मे पाकिस्तानी बम के निर्माण करने मे जी जान से जुटे डा० अब्दुल कदीर खा हालेड की फिजिकल डायनेमिक्स रिसर्च लेबोरेटरी से न्यूक्लीय रियेक्टरो के उपयुक्त यूरेनियम को तैयार करने का जानकारी लेकर पाकिस्तान लौट चुके थे। पाकिस्तान मे डा० अब्दुल को इस चोरी की महानता की उपाधि दी गयी और इस सम्मान को और अधिक चिरस्थायी बनाने के लिए काहूटा परिशोधन सयत्र का नाम बदल कर डा० अब्दुल कदीर खाँ रिसर्च लेबोरेट्रीज रख दिया गया। डा० अब्दुल कदीर ने ऐसी १०८ यूरोपीय, कनाडियन और अमेरिकी फर्मों की सूची भी प्राप्त कर ली थी। ये फर्में पाकिस्तान को आवश्यक उपकरण उपलब्ध करा सकती थी। नकली धन्धो की आड मे पाकिस्तान ने उपकरण प्राप्त भी किये।

१९७८ मे लीबिया की सहायता से पाकिस्तान ने नाइजर से ४०० टन यूरेनियम अक्साइड लिया। फरवरी १९८४ मे डा० कदीर खा ने घोषणा कर दी कि पाकिस्तान नें यूरेनियम सवर्धन प्रक्रिया की तकनीक प्राप्त कर ली है। परन्तु पाकिस्तानी राजनेता हमेशा इस बात का खण्डन करते रहे। भुट्टो ने अपनी सस्मरणो मे लिखा था—'हम जानते है कि इस्राइल और दक्षिण अफ्रीका के पास पूरी न्युक्लीय क्षमता है। ईसाई यहूदी और हिन्दू सभ्यताओ के पास भी यह क्षमता है। साम्यवादी ताकतो के पास भी है परन्तु इस्लामी ताकत ही इससे वचित हैं। परन्तु शीघ्र ही यह स्थिति बदलने वाली है। राष्ट्रपति जियाउल हक ने भी इसी बात को दोहराया चीन भारत रूस और इस्राइल के पास परमाणु हथियार हैं अगर पाकिस्तान के पास भी ऐसा हथियार हो सकता है तो इससे इस्लाम की ताकत बढ सकती है।

अमेरिकी सीनेटर एलन क्रस्टन ने पिछले साल जून मे सीनेट मे प्रस्तुत एक रिपोर्ट मे पाकिस्तान द्वारा परमाणु बनाने की दिशा मे की गयी प्रगति के खतरो से आगाह करते हुए कहा था कि इस बात के बहुत से सुबूत हैं कि पाकिस्तान ने परमाणु बम बनाने की पूर्ण क्षमता विकसित कर ली है। एलन क्रस्टन ने पाच मुद्दे अपनी रिपोर्ट मे उठाये थे।

१ पाकिस्तान के पास काफी न्यूक्लीय वैज्ञानिक हैं और न्यूक्लीय बम बनाने में पाकिस्तान ने सभी उपकरण जुटा लिये हैं। खुले बाजार मे उपकरण खरीदने के अलावा हालैण्ड से वह गोपनीय सामग्री चुराने मे सफल हो गया है। पश्चिम जर्मनी और फ्रांस की कम्पनियो का माल तुर्की के जरिए चोरी छिपे पाकिस्तान पहुचाया जा रहा है।

२ पाकिस्तान अरबो डालर न्यूक्लीय क्षमता पर खर्च कर चुका है। लीबिया और सऊदी अरब ने भी पाकिस्तान को आर्थिक मदद दी है। १९८१ से अब तक अमेरिका भी ३ २ अरब डालर की पाकिस्तान को मदद दे चुका है।

३ हालैण्ड से चुराये गये नक्शो के आधार पर काहुटा मे स्थापित परमाणु सयन्त्र जिसकी वर्तमान क्षमता २००० से ३००० ऐनरेटिव वर्क युनिटस है। इसका मतलब तीन न्युक्लीय बम बनाने की क्षमता।

४ पाकिस्तान को चीन की मदद मिलने से बलुचिस्तान के पहाडी क्षेत्र मे न्युक्लीय परीक्षण स्थल विकसित कर लिया है।

५ पाकिस्तान को अमेरिका से एफ १६ लडाकू बमवर्षक मिल चुके हैं।

साथ ही यह भी कहा गया कि हम तीसरी दुनिया की न्युक्लीय शस्त्रो की ऊची होड के कगार पर खडे हैं। जो दुनिया के विनाश मे सहायक है निर्माण मे नही।

जनरल जिया ने लन्दन से प्रकाशित एक अरबी पत्रिका के साथ साक्षात्कार मे कहा— पाकिस्तान को परमाणु बम बनाने का अधिकार है और इस बारे मे कोई देश उस पर दबाब नही डाल सकता। उन्होने कहा पाकिस्तान अमेरिका के इस दबाब के सामने घुटने नही टेकेगा कि वह परमाणु बम न बनाए। हम इस बारे मे अमेरिकी आग्रह मानने के लिए इसलिए भी बाध्य नही हैं क्योकि अमेरिका ने परमाणु प्रसार परिसीमन सधि पर हस्ताक्षर करने के लिए भारत इस्राइल और दक्षिण अफ्रीका पर दबाब नही डाला।

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी ने अपनी चिंता प्रकट करते हुए कहा है, 'पाकिस्तान द्वारा परमाणु बम के बनाने प्रयत्नो से भारत बहुत चिंतित इसलिए है क्योकि पाकिस्तान भारत पर कई बार हमले कर चुका है। अत इससे स्पष्ट है कि पाकिस्तान का बम किसके खिलाफ इस्तेमाल होगा। भारत को पाकिस्तान पर शीघ्रातिशीघ्र अधिक स अधिक अन्तर्राष्ट्रीय दबाव डलवाना चाहिए और पाकिस्तान को हतोत्साहित करने की हरसभव कोशिश करनी चाहिए। समस्त प्रयत्नो के निष्फल होने पर यदि विवेक आज्ञा दे तो मैं कहूगा, इस्राइल ने जैसे इराक को रोकने के लिए जबरदस्त कार्य किया था वह प्रयोग भी आजमाना गलत नही होगा क्योकि परमाणु आतक की अन्धी दौड को पहले ही रोक देना मनुष्यता पर उपकार होगा।

—यशपाल सुधाशु

श्री लालमन आर्य निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त—

वर्तमान चारित्रिक संकट : समस्या और समाधान

—महेश कुमार कौशिक
द जीवन भवन देवपुरा आश्रम हरिद्वार

यह नश्वर संसार एक ऐसी धर्मशाला के समान है जिस मे नित्यप्रति हजारो की सख्या मे नये-नये मनुष्यो का आना जाना लगा रहता है। जाने वाले इन असंख्य मनुष्यों मे दो एक ही ऐसे होते हैं जिनका स्मरण दीर्घकाल तक बना रहता है। गुणा पूजास्थान गुणिषु न लिङ्ग न च वय के अनुसार इन स्मरणीय व्यक्तियो का उनके त्याग तप सयम परोपकार दृढ सकल्प सच्चरित्रता आदि विशिष्ट गुणो के आधार पर ही मह त्व दिया जाता है। वास्तव मे मनुष्यो की श्रेष्ठता का आधार न उन का शारीरिक सौन्दर्य है न धन वैभव है और न उनकी भौतिक साधन सम्पन्नता ही है क्योकि सभी प्रकार से सम्पन्न होकर भी यदि कोई व्यक्ति चरित्रवान् नही है तो उस का जीवन व्यर्थ है। उसे कभी भी आन्तरिक शान्ति नही मिलेगा। मनुष्य की प्रतिष्ठा का महत्त्वपूर्ण साधन उसका चरित्र है। सच्चरित्र व्यक्ति अपनी तथा अपने समाज की वास्तविक उन्नति का मूल होता है। चरित्रवान व्यक्ति का जीवन ही सर्वांगपूर्ण तथा लौकिक और अलौकिक उन्नतियो का जनक होता है। अत मानव जीवन को उन्नत बनाने के लिए व्यक्ति का चारित्रिक विकास परम आवश्यक है। प्राय हमारे सभी ग्रन्थो मे चरित्र सरक्षण की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है। वेद व्यास जी कहते है—

> वृत्त यत्नेन सरक्षेद
> वित्तमेति च याति च।
> अक्षीणो वित्तत क्षीणो
> वृत्ततस्तु हतो हत।
> [महाभारत उद्योग पर्व ३६ ३]

मनुष्य को परिश्रमपूर्वक अपने आचरण की रक्षा करनी चाहिए। आचरण की तुलना मे धन का विशेष महत्त्व नहीं है। धन आने जाने वाली वस्तु है। अत उस से हीन होने पर भी व्यक्ति क्षीण नही होता किन्तु आचरण के नष्ट हो जाने पर व्यक्ति का सर्वथा विनाश हो जाता है। इसी प्रकार अग्रेजी मे भी कहावत है

'Wealth lost
nothing is lost,
Health lost
something is lost
Character lost
everything is lost

अर्थात धन के नष्ट हो जाने से कोई विशेष हानि नही होती। स्वास्थ्य के नष्ट हो जाने का अर्थ है व्यक्ति की कुछ हानि हो जाना किन्तु दुर्भाग्य से यदि चरित्र नष्ट हो जाता है तो फिर तो व्यक्ति का सर्वनाश हो जाता है।

प्रश्न यह उठता है कि यह मूल्यवान वस्तु जिसे हम चरित्र के नाम से सम्बोधित कर रहे है इसका स्वरूप क्या है? चर धातु से इत्र प्रत्यय के योग से चरित्र शब्द निष्पन्न होता है। इसका व्युत्पत्तिपरक अर्थ है कर्म का प्रदर्शन। इसी को सकल्प शक्ति इच्छा शक्ति अथवा Will Power के नाम से भी जाना जाता है। आचरण या वृत्त मनुष्य का ऐच्छिक कर्म होता है। तभी तो विद्वानो ने इसकी रक्षा के लिए उपदेश किये हैं। व्यास के वचन 'वृत्त यत्नेन सरक्षेत' का यही भाव है।

चरित्र तथा आचरण

दैनिक व्यवहार मे चरित्र तथा आचरण दोनो को प्राय एक ही अर्थ मे ग्रहण कर लिया जाता है जब कि चरित्र व्यक्ति के चिन्तन मनन का आभ्यन्तर पक्ष होता है और आचरण उसके बाह्य पक्ष की सज्ञा है। आचरण के भी चरित्र के समान ही सदाचरण तथा दुराचरण नाम से दो प्रकार हैं। हमारे आचार्यों तथा सतो ने सदाचार पर भी पर्याप्त बल दिया है। व्यक्ति के नित्य प्रति के जीवन मे हम उसके आचरण को देखकर टीका टिप्पणी किया करते हैं। मनुस्मृति मे आचार परमो धर्म तथा महाभारत मे आचार लक्षणो धर्म से इसकी महत्ता का प्रतिपादन होता है। आचरण चरित्र से भिन्न न होकर उसकी मापक एक इकाई का काय करता है। सदाचारी व्यक्ति ही चरित्रवान हो सकता है।

चरित्र तथा व्यक्तित्व

चरित्र शब्द का प्रयोग मनुष्य के व्यक्तित्व की आन्तरिक बनावट के अर्थ मे होता है। चरित्र के अन्तगत व्यक्तिगत चरित्र सामाजिक चरित्र राजनैतिक चरित्र व्यक्ति की धर्म भावना आदि सभी पर विचार किया जाता है। हम प्राय चरित्र तथा व्यक्तित्व को समानार्थक मान लेते हैं जब कि इन दोनो मे पर्याप्त अन्तर है। चरित्र के अन्तगत मनुष्य की स्वाभाविक तथा ऐच्छिक क्रियाओ का योग रहता है। दूसरी ओर व्यक्तित्व मे ऐच्छिक अनैच्छिक सभी प्रकार की क्रियाए मनुष्य की भावनाए उसकी बोल चाल ज्ञान अध्ययन तथा शरीर की बनावट आदि सभी का समावेश हो जाता है।

व्यक्तित्व के निर्माण में मनुष्य के वशानुक्रम तथा उसके परिवेश का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। व्यक्तित्व एक प्रकार से कार्य कारण के नियम से बधा होता है जब कि चरित्र के निर्माण में व्यक्ति को पूर्ण स्वतन्त्रता होती है। व्यक्तित्व मनोविज्ञान का विषय होता है तथा चरित्र का सम्बन्ध नीतिशास्त्र से रहता है। जिन व्यक्तियो में इच्छाशक्ति अभाव होता है उनका कोई भी चरित्र नही होता जबकि व्यक्तित्व ऐसे व्यक्तियो मे भी अपना काम करता है। इच्छाशक्ति के धनी व्यक्ति अपने सभी कर्मों को सुविचारित रूप से सम्पन्न करते हैं। सतकोटि के ऐसे महान व्यक्ति यद्यपि व्यक्तित्व की उपेक्षा करते हैं तथापि उनके लिए चरित्र की प्रधानता रहती है। हम व्यक्तित्व का साक्षात्कार कर सकते हैं किन्तु चरित्र का केवल अध्ययन ही किया जा सकता है।

हमारा वर्तमान चारित्रिक सकट

चरित्र जिसके सम्बन्ध मे हमारे सभी आचार्यों सतों तथा विद्वानो ने इतना बल दिया है आज दुर्भाग्य से सभी क्षेत्रों मे उसका पतन हो रहा है। चरित्र निर्माण का साधक एक तत्त्व भी समाज मे कठिनाई से दिखाई पड़ता है दूसरी ओर उसका हनन करने वाले हजारो प्रकार के प्रभाव व्यक्ति को पथभ्रष्ट करने को उद्यत रहते हैं। भारत आज अपनी सुसम्पन्न चारित्रिक परम्परा की उपेक्षा करके रूस अमेरिका इग्लैंड तथा जर्मनी की सभ्यताओ का अन्धानुसरण करने मे लगा है। हम मार्क्स आदि के द्वारा दिये गये समाजवाद के नारो पर लुभा रहे हैं। रूस के साम्यवाद की प्रशसा करता हुआ भारतीय श्रीमद्भागवत के इस श्लोक को क्यो भूल जाता है—

> यावद् भ्रियेत जठर
> तावत स्वत्व हि देहिनाम्।
> अधिक योऽभिमन्येत
> स स्तेनो दण्डमर्हति॥

'शरीरधारियो को अपने उदर की पूर्ति तक ही पदार्थों को ग्रहण करने का अधिकार है जो इससे अधिक का सग्रह करता है वह चोर है तथा दण्ड का अधिकारी है।

भारत का इतिहास बहुत ही गौरवपूर्ण चरित्रों से अनुस्यूत है। पूरे ससार को प्रकाश देने वाले जगद्गुरु भारत का आज अध पतन हो रहा है। इस अवनति का मूल कारण है यहा के नागरिको का चारित्रिक पतन। आज सभी ओर रिश्वत चोरी चोर बाजारी लूट खसोट, उद्दण्डता तथा उच्छृखलता का दूषित वातावरण बना हुआ है। स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्या सर्वमानवा की स्थिति बदलकर आज ऐसा वातावरण बना हुआ है कि हम दूसरो को तो चरित्र की शिक्षा क्या देंगे इस देश के चरित्रवान व्यक्तियो को भी यहाँ के वातावरण मे श्वास लेना भारी पड रहा है। हमारे धर्म शास्त्रो ने जीवन की नश्वरता का सकेत करके प्राणियो को परलोक का भय दिखाकर सन्मार्ग पर लगाने का जो प्रयास किया था, वह आज निरर्थक प्रतीत हो रहा है। भौतिक सुखो की दौड मे हमारी अध्यात्म की पूँजी बिखर रही है। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित है —

१ भ्रष्ट राजनीति

हमारे चारित्रिक पतन का सब से प्रमुख कारण आज की भ्रष्ट राजनीति है। जिस देश में कभी राम राज्य का उच्च आदर्श था वहाँ आज पतन की चरम पराकाष्ठा है। राम राज्य की प्रसिद्ध घटना है कि एक धोबी के द्वारा सीता के चरित्र को लाछित कर देने मात्र से राम ने सीता जी का परित्याग कर दिया था। समष्टि सीता जी के पक्ष मे थी। हनुमान जैसे प्रत्यक्षदर्शी सच्चरित्र सेवक सीता के निष्कलक जीवन की घोषणा कर रहे थे। अनेक वानर जो सीता की अग्नि परीक्षा के समय उपस्थित थे रो रोकर उस देवी की पवित्रता की दुहाई दे रहे थे किन्तु राम ने व्यष्टि की आलोचना के सामने भी समष्टि को परवाह नही की। भले ही पूरा समाज सीता की प्रशसा कर रहा था लेकिन समाज का एक अग उसकी एक छोटी सी इकाई सामान्य सा धोबी भी यदि सीता के आचरण पर आक्षेप करता है तो राम उसकी उपेक्षा नही कर सकते थे। आज स्थिति सर्वथा विपरीत है। व्यष्टि की बात छोडिये आज समष्टि का ही कोई ठिकाना नही है।

राम के चरित्र विषयक इस महान् उदाहरण के समक्ष जब हम आज के शासकों की चरित्रहीनता को देखते हैं तो देश के अध पतन का कारण स्पष्ट हो जाता है। प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधि, इस समाज के नेता अपने सकुचित स्वार्थों के लिए सत्ता हथियाने की होड में, कुर्सी पाने की दौड मे सब नैतिक सिद्धान्तो को डके की चोट पर तिलाञ्जलि दे रहे हैं। श्री राजीव गांधी द्वारा दल-बदल विरोधी कानून लाने से पूर्व हमारे

(शेष पृष्ठ ८ पर)

तरुणमञ्च–

आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठो का अनावरण

आर्यों की वीरगाथा–४

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

पहले प्रचार करवाओ–

श्रीमान् बापूराव जी बाग्मारे अब हमारे मध्य नही रहे। १९६४ ई० मे वह किसी सरकारी काम के लिए शोलापुर पधारे। मुझे मिलने के लिए नगर से बाहर डी०ए० वी० कालेज पधारे। दोपहर का समय था। मैंने भोजन करने के लिए प्रार्थना की। बापूराव जी ने कहा, पहले मेरा व्याख्यान करवाये फिर भोजन करूंगा। मैंने बहुत कहा कि भोजन का समय है आप पहले भोजन तो करें परन्तु वह न माने। मेरी पत्नी ने भी बहुत कहा पर आपने एक न सुनी।

तब हारकर मैंने कालेज मे आर्य युवक समाज के एक दो युवको को लिया और कालेज मे एक दो प्राध्यापको के सहयोग से एक सभा की। मराठवाडा के छात्र उन्हे जानते थे। उन्होने आर्य-सिद्धान्तो पर एक बडा युक्तियुक्त वा रोचक व्याख्यान दिया। वह एक प्रभावशाली वक्ता थे। बोलने की शैली अनूठी थी। प्रचार करके फिर आपने भोजन किया। वह एक बार अबोहर पधारे। यहा भी यही कुछ किया। सरकारी काम करके फिर वैदिक धर्म प्रचार वा आर्यसमाज की सेवा करके खाने व पीने की सोचने वाले ऐसे धर्मवीरो पर यह समाज जितना भी गर्व करे थोडा है।

भूलो मत ! भूलो मत !

आर्यसमाज बाजार सीताराम मे १९५२ ई० मे श्रावणी पर्व पर चार व्याख्यान देते हुए श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी ने एक घटना सुनाई थी। आर्य केन्द्रीय सभा देहली ने ऋषि बोध पर्व मनाया। भारत के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश श्री पातञ्जलि शास्त्री जी को आमन्त्रित किया गया उन्होने अपने व्याख्यान मे कहा ऋषि दयानन्द की सब बाते ठीक व हितकर हैं परन्तु एक बात उनकी ठीक नही। ऋषि दयानन्द ने मूर्तिपूजा का खण्डन किया है। जब मूर्ति मे भी भगवान् है तो मूर्ति पूजा मे क्या दोष है। इस विषय मे स्वामी विवेकानन्द का मत ठीक है।

यह बात सब ने सुनी। आर्यसमाज के सिद्धान्त प्रेमी सज्जनो को यह अप्रामाणिक बात चुभी। श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी मञ्च पर विराजमान थे। आप उठे और अपनी सुन्दर शैली मे बोले—ईश्वर सब व्यापक है। यह ठीक है। वह मूर्ति मे भी है, यह सत्य है परन्तु परमात्मा का आत्मा से मूर्ति मे मिलाप असम्भव है। कारण परमात्मा तो वहा है, आत्मा मेरा या आपका तो मूर्ति मे घुस नही सकता, अत मूर्ति पूजा निरर्थक है। जहा आत्मा व परमात्मा दोनो हैं वही दोनो का मिलाप होगा, और वह स्थान है हृदय मन्दिर। प० जी की इस निर्भीकता व सिद्धान्त रक्षा का सब पर अच्छा प्रभाव पडा। आर्यसमाज का यश फैलाने के लिए हमे ऐसे विद्वानो का अनुकरण करना होगा। राजनेताओ की चाटुकारिता से तो हम डूबेंगे, उभरेंगे नही।

कर्त्तव्य की पुकार विवाह पर तार

शास्त्रार्थ महारथी श्री प० शान्तिप्रकाश का विवाह था। श्री प० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार विवाह सस्कार के लिए गए। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को विवाह के सारे कार्यक्रम का पता था।

विवाह सस्कार हो रहा था कि श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का तार पहुँच गया। श्री प० बुद्धदेव जी ने तार खोलकर पढा व सुनाया। तार मे लिखा था कि लाहौर मे शास्त्रार्थ है शीघ्र पहुचें। प० शान्तिप्रकाश जी पत्नी को घर पहुचा कर वहा तनिक न रुके। एक दम लाहौर को प्रस्थान किया। आकर वहाँ शास्त्रार्थ करके वैदिक धर्म की विजय का डका बजाया।

पाठकवृन्द ! क्या इस घटना पर किसी टिप्पणी की आवश्यकता है। आज के भोगवादी युग मे Honey moon (विलासयात्रा)के फैशन मे हम इस घटना का मूल्याङ्कन करें। आर्यसमाज का यशोगान ऐसे तपोनिष्ठ सपूतो के कारण हुआ और आगे भी होगा।

"मैं बिकाऊ माल नही"–

महर्षि दयानन्द जी के व्यक्तित्व व आध्यात्मिक प्रभाव से राजस्थान के एक तपस्वी महात्मा कालूराम जी योगी आर्यसमाजी बने। आप ने आर्यसमाज की जो सेवाएँ की हैं वह सदा अविस्मरणीय रहेगी। जोधपुर के महाराजा सर प्रताप सिह ब– अग्रेज भक्त थे। अग्रेज की उन पर ऐसी कृपा दृष्टि थी कि गोरो ने जितने Titles (खिताब) इन्हे दिये, उतने किसी भी और राजा, महाराजा, नवाब व निजाम को न दिये। इसका रहस्य ता प्रतापसिह का गुणगान करने वाल जानने ही होगे। यही महाराजा सर प्रतापसिह अपने को आर्यसमाजी भी कहत थे।

इन महाराजा साहब क प्रेमी भक्त थे स्वामी प्रकाशानन्द जी। उन्होने महाराजा साहब की ओर से महात्मा कालूराम जी को एक पत्र लिखा कि आप जोधपुर महाराजा साहब के साथ जुड जावें, आपको बहुत आर्थिक सहायता दी जावेगी। प्रतिमास ५० ६० रुपये मिला करेंगे। महात्मा कालूराम जी ने अविलम्ब उत्तर दिया कि मैं बिकाऊ माल नही। मुझे धन और ऐश्वर्य नही चाहिए। मुझे तो वेद का, प्रभु का और ऋषि [illegible] रना है। दुख सुख सहकर आजीवन आर्यसमाज की सेवा करने वाले, प्रलोभनो को ठुकराने वाले सुख-साज पर लात मारने वाले पूज्य महात्मा कालूराम जी का यह उदाहरण आर्यसमाज के प्रत्येक सेवक को कर्त्तव्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता रहेगा। ईश्वर करे कि हम तुच्छ स्वार्थों के लिए वेद मार्ग से च्युत न हो। अर्थ के दास न बने का– से न घबरायें। वेद पथ पर कुछ कष्ट सहन करना भी पड तो विचलित न हो। यह घटना तत्कालीन पत्रो मे छपी थी। महात्मा जी का यह पत्र हमारे रिकार्ड मे है।

●

किशोरमञ्च–

वीर बालक दुर्गादास राठौर

जोधपुर नरेश महाराज यशवत सिह जी के पास उनकी साँडिनियो (ऊटनियो) के रक्षकों ने यह सूचना पहुचाई कि एक साधारण किसान के लडके ने एक साडिनी को मार डाला है। महाराज ने उस किसान को पकडकर लाने को कहा। किसान का नाम था आसकिरण, वह राठौर राजपूत था। महाराज के सामने आने पर उसने अपने बालक को आगे करके कहा— श्रीमान् का अपराधी यही है।

महाराज ने क्रोध से डाँटकर पूछा—'तुमने साडिनी मारी ?' बालक ने निर्भयता पूर्वक स्वीकार कर लिया। पूछने पर पर उसने कहा–'मैं अपने खेत की रक्षा कर रहा था। साडिनियो को आते देखकर मैंने आगे दौडकर चरवाहे को मना किया, परन्तु उसने मेरी बात पर ध्यान ही नही दिया। हमारी फसल नष्ट हो जायेगी तो हम खायेंगे क्या ? जब इस साडिनी ने मेरे खेत मे मुख डाला, तब मैंने उसे मार दिया। दूसरी साडिनियाँ और चरवाहा भी भाग गये।'

एक छोटा सा बालक एक मजबूत ऊट को मार सकता है, यह बात मन मे जमती नही थी। महाराज ने पूछा–'तुमने साडिनी मारी कैसे ?'

बालक ने इधर-उधर देखा। एक पचासिया ऊँट सामने से आ रहा था। वह उस ऊट के पास गया और कमर से तलवार खींचकर उसने एसा हाथ मारा कि ऊट की गर्दन उड गई। उसका सिर गिर पडा। महाराज उस बालक की वीरता पर बहुत प्रसन्न हुए। उसे उन्होने अपने पास रख लिया। यही बालक इतिहास प्रसिद्ध वीर दुर्गादास हुए। औरगजेब जैसे क्रूर बादशाह से इन्होने यशवतसिह की रानी तथा राजकुमार अजीतसिह की रक्षा की। मारवाड राज्य का यवनो के पजे से इन्होने ही उद्धार किया।

—प्रस्तोता बलजीत शास्त्री

अमृत कलश

उपकार

यों रहीम सुख होत हैं उपकारी के अङ्ग।
बाँटन वारे के लगैं ज्यो मेहदी का रङ्ग ॥

सीख लो जलधर से उपकार बन्धुओ।
जो समुद्र से लिया हम पै ही बरसा गया ॥

तुलसी या ससार मे, पाच रतन हैं सार।
सत्सङ्गति और हरि भजन, दया, धर्म उपकार ॥

मिला जन्म उत्तम तुझे, कर ले कुछ उपकार।
समय न यह फिर मिल सके, जीता दाव न हार ॥

अधिकारपद प्राप्य नोपकार करोति य।
अकारो लोपमात्रेण ककारद्वित्वता व्रजेत् ॥

जो अधिकार पद को प्राप्त करके भी उपकार नहीं करता उसके जीवन को धिक्कार है।

व्यासपीठ--

उपनिषत् कथा माला–१०

परमात्मा विचार

लेखक—स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

इस अद्भुत अपार ससार को देख कर परमा मा की महान महिमा का ज्ञान मन मे स्वय उत्पन्न होता है। वह इस सब ससार का आधार है। उसके ही प्रभाव से हर एक वस्तु मे प्यार है और उसको भूलकर मनुष्य हर प्रकार से दु खी होता है। जीवन क लिए सामग्री की जरूरत थी। उसने अपनी कृपा से हर एक को उसका दान दिया और साथ ही यह भी बता दिया कि मुझ को भूलकर अपने जीवन को न बिताना। भक्ति वह शुभ कर्म है कि ससार का कोई भी काम इसकी बराबरी नही कर सकता। सासारिक वस्तुओ के सेवन से जो फल प्राप्त होता है उसका सम्बन्ध ससार के साथ ही है। वह ज्यादा देर तक नही रहता, वह नाशवान है और जो परमात्मा की याद से फल निकलता है वह सदैव स्थिर है और उसके बराबर का कोई नही है, परन्तु मनुष्य उसको भूल जाता है। परमेश्वर की याद मनुष्य को प्रसन्न कर देती है और इसको शुभ कर्म करने के लिए आगे बढाती और बुरे कर्म से पीछा छुडाती है। उपकार भुला देने वाले का ससार मे नाम नही होता, वह इससे स्वय सताया जाता है और अन्त मे पश्चात्ताप करता है। परन्तु फिर भी कुछ बन नही पाता है। कोई मनुष्य किसी का उपकार करता है और कोई किसी के साथ सहानुभूति करता है कोई किसी को जरूरत के समय आराम पहुंचाता है और कोई गिरते हुए को हाथ का सहारा देकर उठाता है। किसी ने किसी को धन से सहायता दी और किसी ने दूसरे को नेक राय दी। ऐसा देखने मे आता है और ससार का कार्यक्रम इसी से अच्छा चलता है। कोई एक मनुष्य न सब से सहायता ले ही सकता है और न कोई सब को सहायता दे ही सकता है। यह बात कठिन है और न सब मिलकर सब से सहायता ले सकते है और न दे ही सकते हैं। परस्पर सहायता से ससार चल रहा है।

पर तु एक परमात्मा सबका अन्त रात्मा प्र णी मात्र का सहारा स मे व्यापक और स से न्यारा है। कोई भी चीज एसी न   है जो ि ना इसकी सहा यता व अपनी हस्ती (व्यक्तित्व) को स्थिर रख सके फिर ऐसे द ता के दान को भूल जाना और प्रभु को ध्यान मे न लाना स्वय ही अपने को प्रमाद मे फसाना है। यह बुद्धिमानो का काम नही, यह विद्वानो का सन्देश नही। यह काम तो सहज था पर गलती से अपने विचार को इधर से हटा लिया, जिससे शुभ काम मे सुस्ती और बुरे काम मे चुस्ती होना जरूरी था। समय हाथ से जाता रहा और इस प्रकार मित्रो को उठाकर बैरियो को बुलाता रहा।

सत्य है भूल से जो कार्य किया जाता है उसका फल कब सामने आता है यह मनुष्य नही जानता। यह भी सत्य है कि सासारिक लोभ सब को इस ससाररूपी जाल मे फसाता है। अपनी चतुरता से सब को सत्य पथ से हटाकर कुमार्ग पर ले जाता है। यह सासारिक लोभ हर समय मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करते रहते हैं। मनुष्य जानता हुआ भी इनके फेर मे पड़ा रहता है। यह लोभ हर समय मनुष्य को धोखा देते हैं यह मनुष्य के लिए मित्र के भेष मे शत्रु हैं। जब पहले पहल मनुष्य इनके चक्कर मे फँसता है तो आस्तिकता को छोडकर नास्तिकता की ओर बढता है पाप पुण्य मे भेद नही कर सकता। तृष्णा देखने मे अमृत, परन्तु असल मे विष से भी बुरी है।

विद्वान पुरुष सच बोलते हैं। उनको सत्य से प्रेम होता है। प्रभु को सत्य से प्रेम है इसलिए वे परमात्मा के समीप होते हैं। उनका कथन है कि जब सासारिक लोभो की वासना जाती रहती है, तो मनुष्य के भीतर ज्ञान की वृद्धि हो जाती है। फिर उसको हर वस्तु अपने वास्तविक रूप मे दृष्टिगोचर होती है, अन्तरात्मा की शुद्धता आत्मा को परमात्मा से जा मिलाती है। मनुष्य का वास्तविक रूप यही था। यहा पर ही मनुष्य का कार्य समाप्त हो जाता है। परन्तु इस कार्य के लिए जितना परिश्रम करना चाहिए यह इसका इतना प्रेमी नही। जितनी चाह से इस ओर बढना चाहिए। यह इसके लिए तैयार नही। इस समस्या को हल करने के लिए केवल आ त्मा की शुद्धि चाहिए, इसके ि न हर परिश्रम निष्फल है। यह मूल्य की वस्तु नही यह बडी योजना नही यह तो मनुष्य के अन्तरात्मा का आवाज है जो सबो व्यापक बना देती है। ईश्वर भक्ति तको वे ि ा न तो वहाँ से आ ना है और न नास्तिको से परे हट कर कही जाता है। वह तो सर्वव्यापक है, हर स्थान पर हर समय उपस्थित है। मनुष्य! तू उसको पाने के लिए कहाँ ढूंढ रहा है? वास्तव मे वह तो तेरे भीतर ही है, परन्तु तू उससे असावधान है, वह तो तेरे घर मे है परन्तु तू उसे ढूंढने के लिए बाहर घूम रहा है, वह तो हर समय चेतन है परन्तु तू उससे अचेत है, तू ससार मे छिपा है परन्तु वह विद्या मे प्रकट है। वह परमपिता परमात्मा हर समय एक रस मे ही रहता है। परन्तु तू अपने झूठे विचारो के कारण उसको नही पा सकता।

वह सब भूमण्डल उसी से उत्पन्न और उसी मे समाप्त हो जाता है परन्तु वह इन दोनों अवस्थाओं से विरक्त है। वह एक है क्योकि दूसरा कोई उस जैसा नही है। वह दूर से दूर और समीप से समीप है। वह बड से बडा और छोटे से छोटा है। यही कारण है कि जो सूक्ष्म दृष्टि वाले हैं वे उसको देख सकते हैं परन्तु जो स्थूल दृष्टि वाले हैं इनसे वह दूर भागता है। जो इसका इच्छुक है, वह साहस वाला है, क्योंकि आलस परमात्मा को नापसन्द है। विद्या, सन्तोष और नम्रता साहस को बढाते हैं। ईर्ष्या, द्वेष आदि साहस को घटाते हैं। इसलिए मनुष्य को शुभकर्मों में मन लगाना और दुष्कर्मों से मन हटाना चाहिए। मनुष्य को ऐश्वर्य धन सुख सम्पत्ति भोगते हुए परमात्मा को धन्यवाद देना चाहिए और दु खित अवस्था मे भी सतोष को कभी हाथ से नही छोडना चाहिए। इस प्रकार रहने से हृदय दर्पण शुद्ध और मन साफ रहता है। अहकारी और लोभी पुरुष यह सुनते ही डरता है। लोभ एक प्रकार का व्यसन है, जिससे भला चगा मनुष्य भी व्यसनी होकर उल्टे मार्ग पर चल पडता है। व्यसनी पुरुष की तृष्णा बहुत बढ त है। वह दूसरो को सुख मे देखकर ईर्ष्यावश होकर घबराता है। जैसे भिखारी का पात्र कभी नही भरता, वैसे ही लोभी पुरुष को कभी सतोष नहीं होता। ऐसी अवस्था में परमात्मा का मिलाप कहा? तृष्णा, लोभ एक प्रकार का फन्दा है, जिसमे एक बार फँसकर फिर उससे छुटकारा असम्भव है। सतोषी पुरुष को इसका ज्ञान है। प्रभु भक्तो के लिए वह हर स्थान पर है। वह एकदेशी नही परन्तु हर देश व हर वस्तु में हर समय रम रहा है। परमात्मा सत्य है, वह प्रेम है, तुम भी इससे प्रेम करो। समझने का समय है सबको और अपना उद्धार करो। वह एक रस रहने वाला है, कभी नहीं बदलता। इधर-उधर जिधर चाहो ढूंढो, परन्तु जब तक अन्तरात्मा की शुद्धि नही होती तब तक उससे मिलाप नही हो सकता। जो जिज्ञासु उसको पवित्र तन तथा सच्चे मन से चाहता है, जिसका हृदय शुद्ध तथा मन अन्तरात्मा इन सासारिक प्रलोभनो से दूर हैं जो मनुष्य उसके प्रेम मे हर समय मग्न है, वह उस को अपने अन्तरात्मा के भीतर ही देख लेता है।

ऐसा शक्तिशाली व्यक्ति जो हर प्रकार से सम्पूर्ण है, जिसमे कोई त्रुटि नहीं—उस का पता सब से पहले हमे वेदो ने दिया। वेदो ने हमे बताया कि यही इष्ट है, यही पूज्य है इसी की ही उपासना करना हमारा अभिप्राय है, इसी को पाने का यत्न करो। वह एक है, वह सांसारिक तथा जाति आदि के बन्धनो से स्वतन्त्र है। ईश्वर की सामर्थ्य मे यह बात मामूली है कि उसने सर्व ससार को रचा परन्तु स्वय रचना मे न आया उसका एक सर्वश्रेष्ठ नियम है। सृष्टि उत्पत्ति के साथ भले बुरे का ज्ञान कराना और बाद में कर्मानुसार जैसा किसी का कर्म है, न्याय पूर्वक दण्ड या फल देना, उस का ही कर्तव्य है। वह अपने श्रेष्ठ गुणो के कारण सदा श्रेष्ठ है। परन्तु मनुष्य को भूल सताती है और पथभ्रष्ट कर देती है। परमेश्वर के असली स्वरूप को न जानने के कारण प्रकृति तथा जड पदार्थों की पूजा आरम्भ हुई। जो मनुष्य असली तत्त्व न जानते हुए गुणो को ही अपना उपास्य देव मानना अपना कर्तव्य समझते हैं वे बार-बार इसी ससार मे चक्कर लगाते रहते हैं। सत्य है जो मनुष्य सत्य मार्ग को छोडकर कुमार्ग को अपनाता है, उसको कभी भी निर्दिष्ट पथ प्राप्त नही होता, जो मनुष्य सत्य और असत्य के भेद को जानकर सत्य को अपनाता है उस से कभी दुष्कर्म नही होने पाता क्योंकि उसको ज्ञान है कि भला कार्य प्रकृति के नियम के अनुसार है और दुष्कर्म प्रकृति के नियम के विपरीत है। इस लिए ज्ञान प्रकाश मनुष्य को ऊपर उठाता और अज्ञान रूपी अन्धकार मनुष्य को नीचे गिराता है।

दृढता, साहस तथा स्फूर्ति ज्ञान का परिणाम हैं। दुष्कर्म, कायरता और आलस अज्ञान से उत्पन्न होते हैं। इसी कारण ज्ञान से प्रेम और अज्ञान से घृणा पैदा होती है।

भारतवर्ष वेदो का ज्ञान रखता हुआ भी सत्य मार्ग को ऐसा भूला कि अज्ञान मैं जो कुछ भी सूझा उसी को पूरा करना ही कर्तव्य समझ बैठा इसस ध रे धीरे भेद बढने लगा। किसी ने एक प्रकार की मूर्ति बनाई तो दूसरे ने उसको दूसरे ही ढग से बना लिया। इस अन्ध परम्परा ने बढ़कर देश को ब त ह हानि पहुंचाई, देश

परमात्मा विचार

को हर प्रकार के कष्टों में भर दिया। कोई शिवपूजन में कल्याण मानता है तो कोई विष्णु के दर्शन से मोक्ष मानता है एक गणेश के आगे शीश झुकाता है तो दूसरा देवी की चौखट पर मस्तक रगड़ता है, कोई हनुमान को अपना इष्ट मानता है तो दूसरा गङ्गा स्नान में ही मुक्ति ढूँढता है। भारतवर्ष की इस बेढबी चाल का कोई पता नहीं चलता कुछ तो सतोष होता यदि देश भर में एक प्रकार की मूर्ति का ही निर्माण होता एक ही प्रकार से पूजन होता तो भी कुछ अंश में एकता बनी रहती। आर्यसमाज तो मूर्ति पूजन के विरुद्ध है। इसकी दृष्टि में यह असत्य है, भारत के मनुष्यों ने करोड़ो रुपये के व्यय से मन्दिरों को बनाया फिर आपस में द्वेष बढने के अतिरिक्त हाथ कुछ न आया। यह सब ज्ञात है कि इस समय देश की क्या अवस्था है न धन है न बल और न बुद्धि। अधिक कहने की आवश्यकता नहीं, दुर्बलता के कारण अब इसका सभालना कठिन है। वह अपने यथार्थ स्थान पर कैसे आ सकता है जब कि कुछ ही समय के पश्चात् कोई न कोई सम्प्रदाय खड़ा हो जाता है और सहस्रो नर नारी बिना सोचे समझे उसके पीछे लग जाते हैं। ईश्वर प्राप्ति और इस ससार से छुटकारा पाना ही सब की इच्छा होती है। अज्ञानी होने के कारण न तो कोई पूछता है और न इस पर विचार ही करता है कि यदि जिस पथ को उसने अब अपनाया है सत्य है तो वह पहले गलत पथ का ही परित्याग कर दे परन्तु ऐसा नहीं होता। वह पहले पथ का भी परित्याग नहीं करता और नवीन से भी चिपटा रहता है। इस देश में यह एक अद्भुत बखेड़ा है, जिसका निर्णय होना कठिन है।

विचारने से पता चलता है कि जिस प्रकार घुड दौड में जब घोड़े को खाइया अथवा टट्टी पार करनी होती हैं, उस समय घोड़ा अपने पूर्ण बल और वेग को लगाता है। ठीक इसी प्रकार से चिरकाल से आर्यजाति के साथ अज्ञान लगा हुआ है। इस अज्ञान के हाथ अब समय आया है और समय को पाकर अपना सब बल इस जाति को नष्ट करने में लगा रहा है। आप विचार करके देखें कि हिन्दू आर्य जाति के नामलवा दिन प्रतिदिन कैसे दुर्बल होते जा रहे हैं?

हे मित्र! यदि इस अज्ञान से आप अपना छुटकारा चाहते हैं तो एक ईश्वर के पुजारी बनो वह दुखहर्ता और कष्टमोचक है।

अपने भक्तों के कष्टों को शीघ्र दूर कर देता है, यदि भक्त बनावटी नहीं। यह वेदों का उपदेश बड़ा हितकारी है। अज्ञान का इस देश या हिन्दू जाति में वह कितना जड़ा हुआ है, आप विचार दृष्टि से देखे।

(१) जो सब ब्रह्माण्ड का स्वामी और सब को अपने वश में रखता है, उसका नाम गणेश या गणपति है। यह तो ठीक है परन्तु जब पूछा जाय कि मन्दिर में एक मूर्ति दिखाकर यह कहना कि बस, यह मूर्ति ही अनन्त शक्ति है इसी की पूजा करने से कल्याण होता है। यह एक ऐसी कल्पना है जिसे कोई भी बुद्धिमान् पुरुष मानने से इन्कार करेगा।

(२) शिव या महादेव उसे कहते हैं जो कल्याण का स्वरूप हो और व्यापक हो जिसका स्मरण मङ्गल करण और अमङ्गल हरण है। उस विषय में वेद शास्त्रों की तो यही सम्मति है। पर, आजकल लोग एक पाषाण-पिण्ड को मन्दिर में धरकर उसे ही महादेव कहकर पूजते हैं। देखिए कैसा उल्टा ज्ञान है?

(३) विष्णु सर्वव्यापक परमात्मा का नाम है। वह सर्वजगत् का आधार, निराकार और निर्विकार है। उसका ध्यान करना मनुष्य के लिए कल्याणकारी है यह सब बिल्कुल सत्य है। परन्तु एक मन्दिर में सुन्दर चतुर्भुज मूर्ति को विष्णु बनाकर पूजना कैसी मूर्खता है? इसी प्रकार और भी कई बातों में आजकल उल्टी गंगा बह रही है।

तीर्थ स्थानों की भी ऐसी ही अवस्था है। वहा अन्ध विश्वास ने राज्य जमाया हुआ है। लोग दूर दूर से बड़ी श्रद्धा से सैकड़ों कोस चलकर, धन खर्च कर तीर्थों पर पुण्य सिञ्चन करने जाते हैं परन्तु उन्हें बुरी तरह निराशा होती है। पुराणों की मिथ्या बातें सुनने से वैदिक ज्ञान भी उनके हाथों से जाता रहता है। इसी का दुष्परिणाम आज हम देख रहे हैं। पहले का समय आर्य जाति के लिए कितना सुखमय था, अब तो उसका ध्यान में आना ही दूर की बात है। आर्यों की उन्नति के निम्नलिखित कारण थे—

(१) सब ससार का रचयिता, सर्व प्रकाशक, सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ, सर्व व्यापक परमेश्वर ही आर्यों का उपास्य देव था। उनका यह अटल विश्वास था कि ईश्वर शरीर-रहित और अद्वितीय है। ससार की उत्पत्ति स्थापना और नाश उसी के हाथ में है। न्यायपूर्वक सब प्राणियों को कर्मानुसार फल देना उसका स्वभाव है। इसीलिए उसकी आज्ञा का पालन करना मनुष्य मात्र के लिए कल्याणकारी है। इसी कारण उस प्रभु की प्राप्ति के लिए यत्न करना वे कर्तव्य मानते थे और उन पाप कर्मों से दूर ही रहते थे। जो प्रभु-प्राप्ति के मार्ग में बाधक सिद्ध हो—

स एव एक वृदेक एव ॥
अ० १३।४।१२॥

यह मन्त्र भी उपरोक्त नाम का सूचक है।

(२) आर्य सत्यवादी और सत्यकारी थे। राग द्वेष से भी झूठ बोलना इनका स्वभाव न था। इसी कारण प्रतिज्ञा पालन करना उन्हें प्राणों से भी अधिक प्रिय था। निम्नलिखित मंत्र इसी बात का बोधक है—

इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि ॥ य० १।५ ।

(३) कर्त्तव्य पालन तो उनके लिए नित्य का स्वभाव हो गया था। ससार की कोई भी वस्तु उन्हें नहीं हटा सकती थी। इस का कारण यह था कि वे कार्य करने से पहले उसके परिणाम को अवश्य ध्यान में रख लेते थे और उस वचन को मुह से निकालते ही न थे जिसे पूरा करने में वे समर्थ न हो। निम्न मन्त्र इसी बात का ज्ञापक है—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि ॥ य० ४०।२॥

(४) मनुष्य समाज में रहकर किसी को अन्याय से कष्ट न पहुचे, सदा उन्हें इसी बात का विचार रहता था। उनके अन्त करण पवित्र थे, उनकी भावना उच्च थी। वे परोपकार को कर्त्तव्य और उपकार न करने को पाप समझते थे। कहा भी है—

आयुर्यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ य० ९।२१ ॥

(५) वे स्वय न्याय का अनुसरण करते थे और अन्यों को कराते थे। उनका यह अटल विश्वास था कि जहा न्याय का प्रकाश है वहीं प्रभु का निवास है। इसलिए अन्यायमूलक पक्षपात से दूर रहना, मनुष्य जीवन का फल मानते थे।

अग्ने नय सुपथा। य०। ४०।७।।

(६) दुराचार के दूर करने और सदाचार के बढाने में आलस्य को त्याग कर यत्न करना स्वभाव था। उनका यह विश्वास था कि दुराचार में पड़कर मनुष्य समाज पराधीन हो जाता है और सदाचार से उत्थान की ओर निरन्तर बढ़कर स्वाधीन हो जाता है। अत सदाचार से जिस प्रकार उन्हें प्यार था उसी तरह दुराचार से वैर था—

तन्मे मन शिवसङ्कल्पमस्तु। य० ३४।१॥

(७) आर्यों ने निरन्तर वेदादि शास्त्रों के अभ्यास में स्वास्थ्य के सर्वोत्तम नियमों पर आचरण करना अपना धर्म मान रखा था। और इसीलिये वे नीरोग, सुन्दर और सुडौल बने रहते थे और कभी बीमार हो जाते पर साधारण दवाई अथवा थोड़े परहेज से ही उनकी तबीयत ठीक हो जाया करती थी। उनका यह पूर्ण विश्वास था कि दुर्बलता ही सब दुखों और पापों का कारण है। इसीलिए स्वास्थ्य को बिगाड़ने वाली बातों का कभी साथ नहीं देते थे। इसका प्रमाण यह है—

बलमसि बलं मयि धेहि ॥ य० १९।९॥

(८) उदारता आर्यों के स्वभाव में उनके नियमों से प्रकट होती है। कोई भी पुरुष अपने पुरुषार्थ से जैसा गुण कर्म, स्वभाव बना लेता था समाज में उसे वैसा ही स्थान दिया जाता था। इस प्रकार हर एक को उन्नति करने का अधिकार था, और वर्णव्यवस्था की मर्यादा का मार्ग बड़ा ही सरल था। यदि भूल अथवा प्रमाद से उनमें कोई दोष आ भी जाता था तो वे बड़ी सावधानी से अपना पीछा छुडा लेते थे।

(९) आर्य पुरुष कभी भी प्रभु उपासना में किसी सासारिक वस्तु की याचना नहीं करते थे। उन्हें निश्चय था कि जो वस्तु अपने पुरुषार्थ से प्राप्त हो सकती है उसे परमेश्वर से माँगना भूल है। अत प्रात साय वे ऐसे वचन मुख से निकालते थे कि हे प्रभु! आप का वियोग हमें बारम्बार ससार चक्र में फसाता है और आप का सयोग मोक्ष में ले जाकर सदा हसाता है। इसीलिए हमें आपके दर्शनों की बड़ी अभिलाषा है।

यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति ॥
ऋ० १।१६४।३९॥

(१०) आर्यों ने वैदिक ज्ञान से आश्रमों के नियमों को इतना सरल बना दिया था कि जिनके पालन करने से धर्म, अर्थ काम मोक्ष की प्राप्ति में सब को प्रेम था। इसीलिए ससार में सुख और शान्ति प्रिय थे। मृत्यु व पुत्र हानि सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो शरीर त्यागना अपना शोभा य समझते थे और वे सांसारिक मोह में पड़ कर रहते न शरीर त्यागना बन्धन का कारण जानते थे। संन्यास आश्रम में नियम का प्रकाशक है—

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति ॥ अ० १९।४३।८॥

मसल दे
मत्सर अग अपकार को
कुचल दे
पातक प्रिय दुष्ट को,
उठा ले,
पाखड खडिनी बढ तू,
जगा दे,
जगती के उत्कर्ष को ॥

विभव साधन से हो रीता चल
कष्ट की कड़ वाहट पीता चल
लक्ष्य पर न्योछावर होते हो,
अमृत प्रिय! सन्तत जीता चल ॥

—भैरवदत्त शुक्ल

पृष्ठ ४ से आगे

वर्तमान चारित्रिक संकट : समस्या और समाधान

विधायक तथा सासद एक ही सत्र मे लाखो लाखो रुपयों मे कई कई बार बिकते रहते थे। तामसी लौह बुद्धि के ये नेता सत्तारूपी चुम्बक से खिचे हुए अपने उन सिद्धान्तो को जिनके आधार पर उन्होने जनादेश प्राप्त किया था निर्लेप-भाव से ठुकरा रहे थे।

आज के हमारे अनेक नेता असामाजिक तत्त्वो को सरक्षण दे रहे हैं। चुनाव की राजनीति मे गुण्डो का समथन आवश्यक हो गया है। कुछ नेताओ के चुनाव मे तो कभी कभी डाकू लोग भी अच्छी भूमिका निभाते सुने गये हैं। आज की न्याय व्यवस्था भी अस्त व्यस्त है। अनेक व्यक्ति अपने पद अथवा पैसे के प्रभाव से न्याय को खरीद कर राष्ट्रीय चरित्र का हनन कर रहे हैं। कहाँ तो राम के राज्य मे एक बिगडी हुई इकाई को भी महत्त्व देते हुए राम ने सीता का परित्याग कर दिया था और कहाँ आज की बीभत्स स्थिति है, जिसमे सामूहिक रूप से चरित्र का पतन देखा जा सकता है। आज कठिनाई स ही कोई व्यक्ति सच्चरित्रता का आदर्श प्रस्तुत कर पाता है। जब हमारे शासको, नेताओ तथा कर्णधारो की ही स्थिति बिगडी हुई है तब सामान्य नागरिक की तो बात ही क्या है। कहा है—

'राज्ञि धर्मिणि धर्मिष्टा
पाप पापपरा सदा।
राजानमनुवर्तन्त
यथा राजा तथा प्रजा ॥

'प्रजा अपने शासको का अनुसरण करती है। यदि राजा धर्मात्मा है ता प्रजा मे धम बुद्धि का विकास होता है। जब राजा पापकार्यरत होता है तो उसकी प्रजा का भी पाप कार्यों म सलग्न होना स्वाभाविक है। आज दुर्भाग्य से हम दूसरी स्थिति के वातावरण मे जी रहे हैं, जिसके परिणाम स्वरूप समाज का सामूहिक रूप से चारित्रिक पतन हो रहा है।

२ आयकरादि की चोरी

प्राचीन काल मे प्रजा अपनी आय का छठा अश राजा को सहर्ष प्रदान करती थी। इस लेन देन मे राजा-प्रजा के सम्बन्ध बहुत मधुर रहते थे। प्रजाजन इस प्रतीक्षा मे रहते थे कि राजकमचारी आकर उनसे राज्य का अश ग्रहण करने की कृपा करे। सभी लोग जानते थे कि यह पैसा प्रजा के हित के लिए ही खर्च होगा। जैसा कि कालीदास ने रघुवशी सम्राटो के विषय मे लिखा है—

'प्रजानामेव भूत्यर्थं
स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टु
मादत्ते हि रस रवि ॥

अर्थात रघुवशी सम्राट प्रजा के कल्याण के लिए ही आय के छठे भाग के रूप मे उनसे कर ग्रहण किया करते थे। इन राजाओ का यह काय भगव न् सूर्य के समान ही होता था, क्योकि सूर्यदेव भी पृथ्वी से वाष्प क रूप मे जितना जल ग्रहण करते हैं उसस कही अधिक अन्य स्रोतो समुद्र, झील आदि से प्राप्त करके वह सारा का सारा जल पृथ्वा क कल्याण के लिए बिखरा देते हैं। रघुवशी सम्राट् भी इसी प्रकार से अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति को भी प्रजा के हित मे लगा देते थे। महामारी आदि फैसन अथवा अकाल की स्थिति आ जाने पर वे प्रजा को करमुक्त करके राजकोश से उसकी सहायता किया करते थे।

आज स्थिति बदल चुकी है। नताGण अपनी चुनाव की विजय को पाच वष तक मोज उडाने, यथा तथा अपना तथा अपने कुटुम्बियो का पेट मोटा करने तथा मनमानी करने का आज्ञापत्र मान लेत हैं। दूसरो ओर प्रजा की स्थिति भी एसी है कि लोग अपनी आय को छिपाने के लिए दोहरे बही खाते बनाते हैं तथा अनेक प्रकार के काल धन्धे करते हैं। आयकर विभाग के समक्ष उलटे साधे आकड प्रस्तुत करक सरकार को आखो मे धूल झौंकी जाती है। यही स्थित आयकर अधिकारियो की भा है। व कुछ चालाक लोगो को करनो क आधार पर दूसरे सच्च-सीधे व्यक्तियो को भा शका की दृष्टि स देखते हैं और अनेक प्रकार स उन्ह उत्पीडित करत है। कुछ लोग जा दने-लन को कला म निपुण होते ह व सरलता स ही इन अधिकारियो से मुक्ति पा जात है। परिणामस्वरूप समाज मे भ्रष्टाचार पनप रहा है। तुलसा के अनुसार—

' सोइ सयान जो परधन हारा।
जो कर दभ सो बड आचारी॥
जो कह झूठ मसखरी जाना।
कलिजुग सोइ गुनवत बखाना॥"
[मानस ७।९७।३]

की स्थिति बनी हुई है, हमारे चारित्रिक पतन का मुख्य कारण है।

३. खाद्य सामग्रियो तथा औषधियो मे मिलावट

आज का व्यापारी इतना चालाक है कि पैसे के अतिरिक्त उसे कुछ सूझता ही नही। उनकी उल्टी-सीधी करतूतो से देशवासियो का कितना अहित होगा, इस बात की इन व्यापारियों को कोई चिन्ता नही है। औषधि के रूप मे काम आने वाली कालीमिर्चों में पपीते के बीज, वनस्पति घी में चर्बी, चाय की पत्तियों में लकडी का बुरादा, चावल, चीनी तथा दालो मे लगभग उसी आकार प्रकार के पत्थर के छोटे छोटे टुकडो की मिलावट की जा रही है। इस प्रकार के कुकर्मों के परिणाम स्वरूप व्यापारियो को जितना धन बचता है उससे हजारो लाखों गुणा जन-स्वास्थ्य की हानि हो जाती है। अनेक प्रकार के ऐसे रोगो का जन्म हो रहा है, जिन्हें हमारे चिकित्सकगण कोई सज्ञा देने मे भी असमथ है। कैंसर, कुष्ठ, मधुमेह आदि भयानक बीमारियाँ व्यापारियो की इस धनलिप्सा का प्रतिफलन रहती हैं। इनसे छुटकारा दिलाने वाली औषधियाँ भी इस मिश्रण के रोग से अछूती नही हैं—विटामिन बी के कैप्सूल मे हल्दी मिलाना, च्यवनप्राश म आवले की पिष्टि के स्थान पर उबले हुए आलू या शकरकद मिलाना, च्यवनप्राश तथा विविध अवलेहो मे मूल्यवान् पदार्थों को न मिलाना, ये सब ऐस ही काय है। मिलावट को लेकर हमारे समाज का जो आज चारित्रिक पतन दिखाई पड रहा है, उसकी बीभत्सता को लेकर सैकडो पृष्ठो को रगा जा सकता है।

४. शिक्षा तथा चिकित्सा मे भ्रष्टाचार

शिक्षा तथा चिकित्सा के क्षेत्रो मे भी बड भयानक ढग से हमारा चारित्रिक पतन हो रहा है। शिक्षक जिन्हे आज भी नई पीढी का निर्माता तथा समाज का गुरु कहकर पुकारा जाता है, उनमे से अब अनेक गुरुघण्टाल बन चुके हैं। एक भी घण्टा न पढ़ाना उनकी दादागिरी तथा प्रतिष्ठा का सूचक होता है। शिक्षक का व्यवसाय अब से कुछ वष पूर्व तक बहुत ही पवित्र तथा ईमानदारी से भरा हुआ माना जाता था। शिक्षक की आय अपने परिश्रम की तथा बहुत ही शुद्ध होती थी। आज नये प्रकार के शिक्षको ने इस क्षेत्र मे प्रवेश करके इसे भी दूषित बना दिया है। ट्यूशन के नाम पर छात्रो की अन्धाधुंध लुटाई की जाती है। ट्यूशन पढाने वाले अध्यापक भूखे भेडियो की तरह से अपने छात्रो को देखते हैं और उन्हें शीघ्रातिशीघ्र अपना शिकार बनाने के लिए विविध प्रकार के हथकण्डे अपनाते हैं। प्रयोगात्मक परीक्षा में अच्छे अक पाने का यह ट्यूशन एक अमोघमत्र है।

आज की परीक्षा पद्धति भी ऐसी विकृत हो चुकी है कि उसमे इन नये प्रकार के शिक्षको को अपनी मनमानी करने के खुले अवसर मिल जाते हैं। परीक्षा में कहाँ सीट लगेगी, छात्र को केवल पास होना है या द्वितीय अथवा प्रथम श्रेणी की अभिलाषा है, इन सबके अलग-अलग भाव रहते हैं। हजारों रुपये देने में समर्थ परीक्षार्थी विशेष परीक्षा-कक्ष मे बैठने का अधिकारी होगा। उसकी सेवा में विभिन्न विषयों के अध्यापक अवसरानुकूल उपस्थित रहेंगे।

कभी कभी प्रश्न पत्रो को समय से पूर्व वितरित करके भी प्रचुर मात्रा मे धन कमा लिया जाता है। 'अवध विश्वविद्यालय द्वारा सचालित १९८४ ई० की सी० पी० एम० टी० की परीक्षा दो बार हुई थी तथा फिर भी वैसी ही पुनरावृत्ति होने पर किन्ही कारणो से उसे तीसरी बार आयोजित करने की माग को नकार दिया गया था। १९८४ ई० मे इसी प्रकार दिल्ली विश्वविद्यालय' की पी० एम० टी० की परीक्षा में भी अनेक घोटाले पाये गये थे, किन्तु वहाँ के कुशल खिलाडियो ने यथा-तथा दूसरी बार परीक्षा होने की स्थिति को बचा लिया था। जब विश्वविद्यालयो की ऐसी स्थिति है तो विभिन्न बोर्ड जो उनके छुटभय्या हैं, उनकी करतूतो पर प्रकाश डालने मे तो सम्भवत वेद व्यास जी भी समर्थ न हो सकें।

शिक्षा मन्दिर, जो कभी चरित्र निर्माण के मुख्य केन्द्र होते थे, वहा चरित्र हनन का एक इस से भी कुरूप तथा बीभत्स रूप देखने मे आ रहा है। सहशिक्षा के नाम पर अनेक सस्थाओ में इतना भ्रष्टाचार चल रहा है कि प्रतिवर्ष लडकियो के विवाद को लेकर दो-चार हत्याएँ अथवा आत्महत्याएँ हो जाती हैं। जिस देश मे महर्षि दयानन्द जैसे तपस्वी हुए हैं जिनके जीवन मे सयम ही सब से बडा धन रहा है वहा उनकी भावनाओ के विपरीत प्राय सभी सस्थाओ मे सहशिक्षा चल रही है। स्वामी जी एक बार गगा में स्नान करके उसके तट पर ध्यानमग्न बैठे थे। उनके सन्यासी वेश तथा तेज से प्रभावित होकर स्नान करने के पश्चात् किसी नारी ने अपन मस्तक से उनके चरणो का स्पर्श कर दिया। स्वामी जी हडबडा कर उठे, मा माँ कहकर उस युवती की इस चेष्टा पर आपत्ति की और प्रायश्चित्त स्वरूप तीन दिन भोजन ग्रहण नही किया था। उस महापुरुष के देश मे विद्या की अर्थी उठाने वाले तथा शिक्षा का दिवाला निकालने वाले छात्रों की सख्या आज दिनो दिन बढ रही है। इस बीभत्स प्रसग मे इस से अधिक कुछ लिखने मे मुझे सकोच होता है।

अब एक दृष्टि अपने देश के चिकित्सालयो पर भी डाल रहा हूँ। जीवन दान देने वाली, जनता के दुख दर्द को कम करने वाली इन सस्थाओं में भी अनेक प्रकार का भ्रष्टाचार पनप रहा है। नित्यप्रति समाचारपत्रों मे चिकित्सको द्वारा किये गए दुर्व्यवहार की चर्चा होती रहती है। अनेक राजकीय चिकित्सालयों में केवल सम्पन्न व्यक्तियो को ही सुविधाएँ मिलती हैं। गरीब आदमी धक्के खाकर, डाक्टरों तथा नर्सों द्वारा प्रताडित होकर प्राय, निराश ही लौट जाता है। आरोग्यप्रद मूल्यवान् औषधियां इन अस्पतालों में नदारद रहती हैं। मरीजों की लम्बी लाइनों को निपटाने के लिए डाक्टरों के

व्यास केवल ६ बजे से ११ बजे तक का समय होता है। यदि कोई रोगी अपनी सतुष्टि के लिए चिकित्सक से कुछ प्रश्न करता है, तो हमारे ये योग्य चिकित्सक उसे परामर्श देते हैं कि प्रश्नोत्तर का उनके पास समय नही है। यदि पूर्ण सतुष्टि चाहते हो तो किसी प्राईवेट चिकित्सक से मिलो। औषधियो की मिलावट की चर्चा मैं ऊपर कर ही चुका हूँ। नर्सो तथा डाक्टरो का यह रूक्ष व्यवहार उसमे असन्तोष रूपी स्फोट बन जाता है।

५ रिश्वतखोरी तथा भ्रष्टाचार

प्राय सभी राजकीय कार्यालयो की आज ऐसी स्थिति है कि 'बिन रिश्वत या बिना सिफारिश, बनता कोई काम नही' है किसी भी कार्य के लिए आवदन कर्ता अपने प्रार्थना पत्र के साथ कुछ भेंट पूजा अवश्य करना चाहता है। हमारी मानसिकता इतनी गिर चुकी है कि यदि कोई व्यक्ति अपने सिद्धातो के आधार पर या किसी अन्य कारण से रिश्वत नही लेता, तो आवेदक को ऐसा प्रतीत होता है कि वह काम होगा ही नही। इस प्रकार की मानसिकता के पर्याप्त कारण हैं। अनेक प्रार्थना पत्र दफ्तरों की फाइलो में रखे-रखे ही गल जाते हैं। भेंट-पूजा के बिना कोई फाइल एक मेज से दूसरी मेज पहुँचनी सभव नही होती। सभी दफ्तरो अदालतो तथा मंत्रालयो मे आज सुविधा शुल्क लगी है। यह सब हमारे सामूहिक चारित्रिक पतन का कारण है, जिसका श्रेय हमारे शासको को जाता है। इस कुरूप का भी मैं सकेतमात्र कर देना ही पर्याप्त समझता हू। हमारे गृहमत्रालय विदेश मत्रालय तथा प्रधानमत्री के कार्यालय तक बिछा हुआ गुप्तचरो का जाल हमारे इस चारित्रिक पतन का ज्वलत उदाहरण है। आज के हमारे नागरिक को अपने सकुचित स्वार्थ के लिए समाज क्या पूरे राष्ट्र के विनाश की भी कोई चिन्ता नही है।

चारित्रिक सकट की समस्याओ का समाधान

सम्प्रति हमारे देश मे पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव तथा हमारे दुर्भाग्य से ऐसी स्थिति बनी हुई है कि अशिक्षितों का आचरण कुछ अर्थो मे शिक्षितो से अच्छा है। चरित्रहीन व्यक्ति आज समाज मे अपना मस्तक ऊँचा उठाकर गर्व से चलता है। मनुष्य पैसे के पीछे पागल हो रहा है और समाज के पथद्रष्टा हमारे नेतागण ही पथभ्रष्ट हो रहे हैं। अत चारित्रिक सुधार भी तभी सभव है जब नेताओ के चरित्र का प्रथम सुधार होगा। हमारे शासक तथा विधायक गण देश की भलाई के लिए पहले चरित्र की रक्षा को सर्वोपरि महत्त्व दे। ये नेतागण भगवान् को साक्षी करके संविधान की रक्षा का जो सकल्प लेते है तथा मत्रिमण्डल मे प्रवेश पाने से पूर्व जो कुछ प्रतिज्ञाएं दुहराते हैं, उन्हे पूर्ण करना अपना नैतिक दायित्व समझें। ऊपर से प्रकाश मिलने पर प्रजा का चरित्र बल स्वत ही बढगा।

हमारे उद्योगपति तथा व्यापारियो की साठ गाठ भी ऊपर तक रहती है। चुनाव के नाम पर लाखो रुपय देने वाले उद्योग पति ही अपने व्यवसाय मे खुलकर मनमानी करते है। यदि इस क्रम से हमारे नेताओ का चरित्र सुधर जावे तो इन उद्योगपतियो की बुद्धि ठीक होने मे फिर अधिक समय नही लगेगा। करो की चोरी का बहुत कुछ सम्बन्ध आयकर, सम्पत्तिकर, बिक्रीकर आदि के अधिकारियो से होना है। सार्वजनिक निर्माण मे हमारी सडको तथा पुलो के शीघ्र नष्ट होने का विशेष उत्तरदायित्व उन अभियन्ताओ का होता है, जो अपना सुविधा शुल्क लकर बिना निरीक्षण परीक्षण के ही ठेकेदारो के बिलो का भुगतान करा देते हैं। जिस दिन अभियन्ता गण तथा दूसरे उच्च अधिकारी अपना सुविधा शुल्क समाप्त कर देंगे ठेकेदारो की बुद्धि स्वत ठीक हो जायगी।

जहा तक हमारे शिक्षालयो के दूषित वातावरण का प्रश्न है शिक्षा पद्धति तथा परीक्षा पद्धति मे आमूल-चूल परिवर्तन करने की चर्चा इन दिनो सभी ओर है। सभी विश्व विद्यालयो के कुलपति, हमारा शिक्षाविभाग, शिक्षामत्रालय तथा देश के प्रधानमत्री तक इस विषय मे चिन्तन शील हैं। परमात्मा उनके परिश्रम को सफल करे। इस सम्बन्ध मे मैं यह भी अवश्य कहना चाहूगा कि सहशिक्षा कम से कम माध्यमिक स्तर पर किसी भी रूप मे स्वीकार नही की जानी चाहिए। इसनाम धन्य महर्षि दयानन्द जी ने हमारे जीवन के उत्थान के निमित्त अनेक उपदेश दिए हैं उनमे स्वामी जी ने सर्वाधिक बल इस बात पर दिया है कि नारी शिक्षा की पूर्णतः पृथक् व्यवस्था हो। भावी पीढी के चरित्र-निर्माण के लिए यह बहुत आवश्यक है। हमारे अनेक नवयुवको का पतन यही सोचत सोचते हो जाता है— 'क्यो क्यो अनचाहत को सग'? अनेक किशोर सूर के इस पद को दुहरा ते हुए— 'बा रस की प्रीत कहो प्रालि कैसे छूटे' समाज के सामने चरित्रहीनता के कुत्सित प्रदर्शन करते हैं तथा अनेक बार आत्म हत्या करने पर भी विवश हो जाते हैं। सहशिक्षा ही इस कुरूपता का मूल है। उसको समाप्त कर देना नितान्त आवश्यक है।

शिक्षा मे नैतिक शिक्षा तथा धार्मिक शिक्षा का भी उचित समावेश होना आवश्यक है। हमारी शिक्षा भारतीय परम्परा के अनुकूल हो और पाठ्यक्रम मे चारित्रिक गुणों पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है। कितना अच्छा हो यदि हमारे बालक 'डैडी-मम्मी' की परम्परा भुलाकर अपने घरो मे विशुद्ध भारतीय परम्परा को ग्रहण करे और शिक्षालयो का वातावरण प्राचीन गुरुकुलो के आदर्शो पर आधृत हो। अर्थोपार्जन के निमित्त आज हमारे समाज मे अग्रेजी शिक्षा का लालच बना हुआ है। हमे इस कुत्सित भावना को भी नष्ट करने के लिए हिन्दी के विकास की ओर ध्यान देना होगा। जिस दिन हम सस्कृत भाषा तथा अपनी सस्कृति का आदर करना सीखेगे वह निश्चय ही हमारे देश के इतिहास मे शुभ दिन होगा और चरित्र निर्माण की दिशा मे बढने के अवसर भी हमारे लिए तभी प्रशस्त बनेंगे। स्थूलरूप से चरित्र निर्माण के अनेक साधन हो सकते है। यथा—

१ विश्व कल्याण की भावना अपने मन मे रखना।

२ आत्मबल तथा आत्मज्ञान के चिन्तन पर ध्यान देना।

३ काम, क्रोध मद लोभ मोह के विकारो से दूर रहकर विषय वासनाओ का परित्याग करने की चेष्टा करना। विकारो से बचने का एक सरल उपाय यह है कि जब भी मनुष्य के मन मे बुरे विचार उत्पन्न होने लगें, वह अन्यमनस्क होने का प्रयास करे तथा ईश्वर-चिंतन, मत्रजाप सत्सग आदि के द्वारा उन बुरे विचारो के क्रम को तोड दे।

४ शुभसकल्पी बनें —शास्त्रो मे कहा है— क्रतुमयोऽय पुरुष अर्थात् मनुष्य जैसा सकल्प करने लगता है, वैसा ही उसका आचरण हो जाता है और जैसा वह आचरण करता है, धीरे-धीरे वैसा ही बन जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि अपने चरित्र का बनाना-बिगाडना हमारे हाथ है। कहा भी है—

> 'यादशैः सन्निविशते
> यादशाश्चोपसेवते ।
> यादगिच्छेच्च भवितु
> तादग् भवति पुरुष ॥

५ भगवद्भक्ति मे लीन रहना— ईश्वर को मानने वाला व्यक्ति, जो यह समझता है कि भगवान् उसके प्रत्येक कर्म बुरे कार्य को देखता है, हमेशा पाप से बचने का प्रयास करेगा। कहा भी है— मनुष्य हर समय भगवान् और मौत को याद रखे। इस प्रकार के चिन्तन से वह पापकर्म से निश्चय ही दूर रहता है।

६ व्यक्तिगत सदाचारमय जीवन— ससार के अनेक कुकर्म प्राय क्रिया-प्रतिक्रिया का प्रतिफल होते हैं। जो व्यक्ति शुद्ध सकल्प के साथ किसी भी स्थिति मे दूसरो का अहित न करने का सकल्प लेता है, वह अनेक लोगो को सच्चरित्रता का पाठ पढा देता है।

७ बुद्धि पर नियत्रण रखना—एक प्रसिद्ध कहावत है - बुद्धि से विचार, विचार से क्रिया, क्रिया से प्रवृत्ति, प्रवृत्ति से गुण तथा गुणो से व्यक्ति के चरित्र का निर्माण होता है। अत व्यक्ति के लिए अपनी बुद्धि पर नियत्रण रखना नितान्त आवश्यक है।

८ अपने जीवन को मधुर बनाना— प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन अधिक से अधिक मधुर बनाने का प्रयास करना चाहिए। यदि वह अपने स्वभाव को उदार, दयालु सहिष्णु तथा नम्र बना ले तो उसका स्वय का तथा दूसरे अनेक मनुष्यो का जीवन सुखमय बन सकता है।

९ शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान— मानव शरीर ईश्वर का मन्दिर भी है और यही व्याधि मन्दिर भी है। स्वास्थ्य के नियमो का पालन करने वाला नागरिक स्वय प्रसन्न रहता है तथा अपने परिवार समाज और पूरे वातावरण को प्रसन्न रखता है। स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मस्तिष्क सम्भव होता है तथा उसी से व्यक्ति मे सच्चरित्रता की भावना आती है।

इसके अतिरिक्त विशुद्ध प्रेम तथा मधुर वाणी का प्रयोग भी सच्चरित्रता का लक्षण है। चरित्रवान् व्यक्ति दुर्गुणों का निवारण करके अपने अन्दर उत्तम गुणो का विकास करता है। चरित्र एक हीरा है। प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है कि वह इसे यथ शक्ति उज्ज्वल बनाये। यदि व्यक्ति काल के पृष्ठ पर अपना कुछ विशेष चिह्न छोडना चाहता है तो सच्चरित्रता उसकी प्रथम आवश्यकता है।

आज अनेक मनुष्य शका करने है कि यह कलियुग है और इस युग मे चरित्रवान् बनकर रहना तथा धर्म का पालन करना सभव नही है। वास्तव मे यह घोर निराशा की बात है और चरित्र हनन के लिए इस प्रकार के विचार सब से घातक सिद्ध होते हैं। यदि हम ऐसा सकल्प करें कि चरित्रहीनता का मार्ग व्यक्ति तथा समाज के लिए कल्याणकर नही है और स्वधर्म निधन श्रेय का सकल्प लकर दृढता से उपयुक्त सिद्धा तो पर आचरण करें तो प्रारम्भ मे कठिनाइयाँ भले ही रहें किन्तु बाद मे इतना सुख तथा सुयश मिलेगा कि हम उन प्रारम्भिक कठिनाइयों को बिल्कुल भूल जायेंगे। आज हमारे लिए परमावश्यक है कि हम सभी दृढ सकल्प लें– 'चरित्र ही जीवन है।'

निर्वाचन

आर्यसमाज शादी खामपुर का वार्षिक निर्वाचन १२.५.८५ को श्री प० हरदेव जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री किशनदत्त जी
उपप्रधान—श्री खेमचन्द
मन्त्री—कलाराम
उपमन्त्री—खुशीराम जी
कोषाध्यक्ष—श्रीमती प्रकाश देवी
पुस्तकाध्यक्ष ओमप्रकाश

कलाराम जी (मन्त्री)
आर्यसमाज शादी ख

समाचार-सन्देश

सार्वदेशिक आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर मथुरा उत्साह पूर्ण वातावरण में सानन्द सम्पन्न

गुरुवर विरजानन्द साधना आश्रम (वेदमन्दिर) वृन्दावन मार्ग मथुरा के विशाल प्रांगण में सार्वदेशिक आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर डा० देवव्रत व्यायामाचार्य उपप्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल की देख रेख में सवश्री कृष्ण पाल सिंह, सत्यव्रत सत्यम्, श्री ऋषिपाल आदि शिक्षकों द्वारा सानन्द सम्पन्न हुआ। इस शिविर के भोजनादि के समस्त उत्तरदायित्व महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह समिति ने सभाले हुए थे। शिविर में अस्सी युवकों ने अन्त तक भाग लिया। बौद्धिक शिक्षण श्री महात्मा प्रेम भिक्षु जी महात्मा आर्य भिक्षु जी, अध्यक्ष वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर, श्री बालकृष्ण विन्दकी श्री रामाज्ञा वैरागी [मुजफ्फरपुर] बिहार श्री जयनारायण आर्य (अलीगढ) आदि महानुभावों ने किया।

दीक्षान्त समारोह बड़ा ही आकर्षक था। अस्सी वीरों ने यज्ञोपवीत धारण करके सार्वदेशिक आर्यवीर दल का अनुशासन स्वीकारते हुए राष्ट्रीयता के प्रति सर्वथ कर्तव्य परायण रहने की शपथ ली। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बालदिवाकर हंस ने दीक्षान्त भाषण करते हुए कहा—देश के सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। मत मजहबों को धर्म की संज्ञा देना एक खतरनाक बात है। इस दिशा में आर्य वीरों को सजग रहकर युवा पीढ़ी का वेद को माध्यम मानकर मार्ग दर्शन करना है अन्यथा देश रसातल को चला जावेगा। आपने महात्मा प्रेम भिक्षु के सत्प्रयासों की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए उन्हें आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने हेतु साधु वाद कहा और प्रत्येक आर्यवीर तथा आर्यों को उत्साह परिश्रम, अनुशासन आत्मा से स्वीकार कर कर्म पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। अनेक नेताओं ने भी आर्य वीरों को अपने भाषण से प्रोत्साहित किया।

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली

आर्यवीर दल शिविर का उत्साह

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित आर्यवीर दल के शिविर के समापन समारोह को देखने सुनने का शुभ अवसर मिला। मुझे प्रसन्नता है इस बात की कि इस समय दिल्ली के युवक इस ओर आकर्षित हो रहे हैं। विशेष बात यह थी कि ये युवक और किशोर गुरुकुल और अनाथालय से इकट्ठे नहीं किये थे जैसे कि गत वर्षों में देखने में आता था। मैं सभा प्रधान को एवं संयोजक को बधाई देता हूं और प्रार्थना करता हूँ कि इसी प्रकार से उत्साहित होकर कार्य करते रहें और महर्षि मिशन को आगे बढ़ाते रहें।

सुरेशचन्द्र
एफ बी-३९ कैलाश कालोनी, नई दिल्ली

ऋग्वेद का अंग्रेजी अनुवाद एक निवेदन

समस्त आर्य जनता को ज्ञात होगा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेद के अंग्रेजी अनुवाद का प्रकाशन कार्य गत दो वर्ष से कर रही है। अब तक ऋग्वेद की अंग्रेजी की तीसरी जिल्द तैयार होकर बिक्री के लिए कार्यालय में उपस्थित है। चौथी जिल्द तैयार हो रही है और आशा है दीपावलि तक यह तैयार हो जायेगी।

इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए महर्षिकृत ऋग्वेद के मंडल ५, ६, और ७ के संस्कृत और भाषा भाष्य (प्रकाशक वैदिक यन्त्रालय, अजमेर) की आवश्यकता है। सभा के कार्यालय से ये मंडल कोई व्यक्ति ले गये है।

आर्य बन्धुओ, आर्यसमाजो, आर्य प्रतिनिधि सभाओ से प्रार्थना है जिनके पास संस्कृत और भाषाभाष्य के मंडल ५ से ७ तक हों वे सभा को सूचित करने की कृपा करें। सभा अपनी जिम्मेवारी पर काम होने के बाद सुरक्षित रूप से उन्हें अवश्य लौटा देगी। उपरोक्त मंडल न होने से कार्य में बाधा आ रही है।

कार्यालय सचिव
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान
नई दिल्ली ११०००२

'धर्मेन्दु जी सम्मानित'

परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली के संरक्षक आर्य अनाथालय के मंत्री तथा आर्य युवक परिषत् के प्रधान वयोवृद्ध आर्य नेता श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु को "बाल हितैषी संघ (रजि०) दिल्ली" द्वारा दिल्ली नगर निगम रंगशाला के सुसज्जित मंच पर भारी जनसमूह के बीच उनकी साठ वर्षीय समाज सेवा के कार्यों में रात दिन संलग्न रहने पर समाज सेवी उपाधि से समावृत सम्मानित किया गया।

कमल किशोर आर्य
प्रचार मन्त्री
आर्य युवक परिषद् (रजि०) दिल्ली

सार्वदेशिक आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह पर भव्य आयोजन

सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के रघुमल आर्य कन्या विद्यालय, राजा बाजार में आयोजित प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह पर यज्ञ के उपरान्त सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक श्री बाल दिवाकर हंस जी ने सभी प्रशिक्षित आर्यवीरों व कार्यकर्ताओं को शपथ दिलाई और आर्यवीर दल को सशक्त बनाने व प्रत्येक आर्यसमाज में इसकी शाखा खोलने का आह्वान किया। इसके बाद लगभग ८० प्रशिक्षित आर्य वीरों ने तलवार चलाने, लाठी चलाने, आग के गोले में से कूदने व योगासनों का एक घण्टे तक भव्य प्रदर्शन करके दर्शकों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। उनके अभ्यास के विभिन्न प्रदर्शनों का बार-बार करतल ध्वनि से स्वागत किया गया। दिल्ली प्रदेश के अधिष्ठाता श्री प्रियतम दास रसवन्त जी ने ग्रीष्मकाल में आयोजित इस दूसरे शिविर की उपलब्धियों व आर्य वीर दल की सक्रियता व भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने प्रत्येक आर्यसमाज में अधिष्ठाता की नियुक्ति व सभा की ओर से हर प्रकार के सहयोग देने का आश्वासन दिया। सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल आर्य ने दिल्ली में आर्यवीर दल हेतु एक शिक्षक की नियुक्ति करने की घोषणा की एवं शिविर में दिये गये प्रशिक्षण की सराहना की। श्रीमती प्रकाश आर्या, मन्त्राणी प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली प्रदेश ने कार्यक्रम की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए महिला सभा की ओर से यथोचित सहयोग देने का आश्वासन दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी (भू०पू० सांसद) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में झज्जर में स्थायी रूप से स्थापित किए जा रहे आर्य वीर दल प्रशिक्षण केन्द्र का उल्लेख करते हुए आर्य वीर दल के लिए स्थायी कोष बनाने पर विचार प्रकट किया। उन्होंने देश की वर्तमान परिस्थितियों में जबकि सामाजिक मूल्यों का ह्रास व अलगाववादी तत्वों का आतंक बढ़ रहा है, राष्ट्र रक्षा हेतु आर्यवीर दल की महत्ता पर प्रकाश डाला। श्री त्यागी जी ने आर्यवीर दल की गतिविधियों में सक्रियता लाने के लिए कई महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए तथा प्रत्येक आर्यसमाज में एक अधिष्ठाता की नियुक्ति पर बल दिया। अध्यक्ष महोदय के करकमलों द्वारा आर्य वीरों को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार वितरित किये गये। सभा में सर्वश्री लाला इन्द्र नारायण जी हाथी दांत वाले, आचार्य देवव्रत जी, रणवीर सिंह जी राणा आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। शिविर में प्रथम पुरस्कार विजेता आर्यसमाज चना मण्डी, पहाड़ गंज के श्री सतीश कुमार, द्वितीय पुरस्कार विजेता आर्यसमाज नारायण विहार के श्री मायासिंह जी यादव, तृतीय पुरस्कार विजेता आर्यसमाज मण्डावली के श्री अतुल कुमार रहे। अनुशासन में प्रथम पुरस्कार विजेता आर्यसमाज कृष्णनगर (यमुनापार) श्री कृष्णमित्र कौशल रहे। कार्यक्रम में आर्यसमाज के कई शीर्षस्थ नेता, उपदेशक आर्यसमाज के पदाधिकारी, कार्यकर्ता व पत्रकार आदि भी उपस्थित थे। समारोह के समापन के पश्चात् ऋषि लंगर का आयोजन भी किया गया।

श्यामसुन्दर विरमानी
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्यवीर दल, दिल्ली प्रदेश

वोट क्लब पर वेदप्रचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में वोट क्लब पर अविरल वेदप्रचार का कार्यक्रम चल रहा है। इन दिनों प० धर्मवीर शास्त्री के द्वारा प्रवचन का कार्यक्रम दिनों दिन प्रगति पर है। भारी संख्या में श्रद्धालु जन वेद उपनिषद्, गीता, सत्यार्थप्रकाश आदि धार्मिक ग्रन्थों से उपदेश को श्रवण कर रहे हैं।

संवाददाता आर्यसन्देश

आर्यसमाज बांकनेर, दिल्ली ४० का वर्ष ११८५-८६ का निर्वाचन

प्रधान—श्री आनेराम आर्य,
एम ए बी एड
उपप्रधान—श्री ओमप्रकाश गुप्त बी. ए.
मन्त्री—श्री मेहरलाल पवार
एम ए बी ए
उपमन्त्री—श्री रामकरण एम ए बी एड
कोषाध्यक्ष—श्री हवासिंह शर्मा बी ए
पुस्तकाध्यक्ष—श्री जिलेसिंह आर्य
एम ए बी एड.
लेखानिरीक्षक—श्री गुरुवचन सिंह
बी ए बी पी एड

निवेदक
मेहरलाल पवार
समाज मन्त्री

आर्य महिला समाज, सोहन गंज, दिल्ली का वार्षिक चुनाव १६-६-८५ को निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान　श्रीमती सुनीति गुप्ता
उपप्रधान　कु० सुमित्रा
मंत्री　श्रीमती प्रेमकुमारी
उपमन्त्री　श्रीमती रजनी
कोषाध्यक्ष　श्रीमती कमलेश नागिया

निवेदिका—प्रेमकुमार
मन्त्री

दिल्ली की आर्यसमाज मन्दिरो के लिए एक आवश्यक निवेदन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत चल रही आर्यसमाजो में कभी कभी आपसी विवाद विकट रूप धारण कर लेते है। इन विवादो का कोई विशेष ठोस आधार भी नही होता। आर्यसमाजो के अधिकारी पहले ही निर्णय लेते है और बाद मे समस्या न सुलझने पर सभा के अधिकारियो से आग्रह करते है कि वे इन विवादो का तुरन्त समाधान कर दें। आवश्यकता इस बात की है कि छोटी-छोटी बातो की ओर ध्यान न दिया जाये और आर्यसमाज के जो मूल उद्देश्य है उनकी ओर ध्यान रखा जाये। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। किसी भी विवाद को गहरा होने से पहले, आप सभा के अधिकारियो से तथा आर्यविद्वानो से विचार विमर्श कर लें तथा विवाद प्रारम्भ मे ही समाप्त कर दें। आपसी सहयोग, सद्भाव और भाईचारे को बनाये रखना परमावश्यक है। छोटी छोटी बातो को प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाये और ऊंचे आदर्शों की प्राप्ति के लिए अपने आग्रह को छोडने के लिए सदा तत्पर रहे। हम 'संगच्छध्वं, संवदध्वं' की भावना से कार्य करें। ऐसा भी पता चला है कि आपसी मतभेद के कारण कुछ ऐसे व्यक्ति जिनकी आर्यसमाज मे निष्ठा नही है आर्यसमाज मे घुसपैठ करके संगठन को खराब कर रहे हैं। आप ऐसे लोगो से सावधान रहें।

हमने आपसे पत्र दिनांक २५ २ १९८५ और २४ ५ १९८५ के अनुसार प्रार्थना की है कि आप अपनी आर्यसमाज का वार्षिक विवरण सदस्यता शुल्क का दशांश वेदप्रचार तथा आर्यसन्देश का शुल्क सदस्यता सूची प्रतिनिधियो के नाम व पते आदि सभा कार्यालय में भेज दें। बहुत सी समाजो की ओर से अभी तक इन औपचारिकताओ को पूरा नही किया गया है। आपका ध्यान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नियम संख्या–५ की ओर आकर्षित करते हुए आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप समय पर उपरोक्त औपचारिकताओ को पूरा करके सक्रिय सहयोग देने की कृपा करें। यदि समय पर यह औपचारिकताएँ पूरी नही होती तो वार्षिक अधिवेशन मे विलम्ब होना अवश्यम्भावी है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्य पत्र आर्य सन्देश मे निश्चय ही आप कुछ परिवर्तन अनुभव कर रहे होंगे। आप इसको स्थायी आधार दिलाने मे भी हमारा सहयोग करने की कृपा करें। इसके लिए आप अधिक से अधिक ग्राहक आजीवन तथा वार्षिक बनवाये तथा व्यापारिक संस्थानो के विज्ञापन दिलवाने मे सहयोग देने की कृपा करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्यवीर दल भी सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। इस वर्ष तीन प्रशिक्षण शिविर भी आयोजित किये गये हैं। आप इस कार्य के लिए आर्थिक सहयोग भी देने की कृपा करें तथा सभा प्रधान जी के पूर्व पत्र में सभी आर्यसमाजो को निर्देश दिया गया था कि वह अपनी समाज मे आर्यवीर दल के लिए एक अधिष्ठाता का चयन कर लें और उसका नाम निवास का पता तथा दूरभाष सभा कार्यालय को भिजवा दें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित जिन आर्यसमाजो मे आर्य शिक्षण संस्थाएँ चल रही हैं उनका आर्य विद्या परिषद दिल्ली से विधिवत् सम्बन्धित होना अनिवार्य है। सभा प्रत्येक विद्यालय मे नैतिक शिक्षा की पुस्तकें भिजवाती है, तथा वर्ष पश्चात् उनकी परीक्षा भी लिया करती है। आप अपने विद्यालय के सम्बन्ध आर्य विद्या परिषद् से अवश्य करा लें।

मुझे आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि आपका सक्रिय सहयोग सभा की प्रगति के लिए अवश्य मिलेगा।

भवदीय
(धर्मपाल आर्य)
महामन्त्री
कार्यालय १५ हनुमान रोड,
नई दिल्ली ११० ००१

"आर्यसमाज सान्ताक्रुज वेद वेदांग पुरस्कार"

आर्यसमाज सान्ताक्रुज की साधारण सभा दिनांक १६ ६-८५ ने कैप्टिन देवरत्न आर्य के इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित किया कि आर्यसमाज सान्ताक्रुज एक स्थायी पुरस्कार की घोषणा करे जिसके अन्तर्गत प्रतिवर्ष आर्य जगत् के एक विशिष्ट विद्वान् को उनकी वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के प्रति की गई सेवाओ के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेतु "आर्यसमाज सान्ताक्रुज वेद वेदांग पुरस्कार" दिया जाए। इस अवसर पर पुरस्कृत विद्वान को २१०००/ रुपयो की थैली, अभिनन्दन पत्र रजत ट्राफी व शाल से सम्मानित किया जाए। विद्वान् का चयन एक समिति करेगी जिसमे आर्यसमाज के प्रधान एवं महामंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा आर्यसमाज सान्ताक्रुज की अन्तरंग सभा द्वारा मनोनीत तीन सदस्य होगे। इस अवसर पर सन १९८५-८६ हेतु वार्षिक निर्वाचन बड़े सौहार्दपूर्ण वातावरण मे सर्वसम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ –

श्री देवेन्द्रकुमार कपूर	प्रधान
श्री ओकारनाथ आर्य	उपप्रधान
श्री चन्द्रभान मल्होत्रा	,,
कैप्टिन देवरत्न आर्य	महामन्त्री
श्री विश्वभूषण आर्य	मन्त्री
श्री नरेन्द्रकुमार पटेल	,,
श्री कस्तूरीलाल मदान	कोषाध्यक्ष

निवेदक
(कैप्टिन देवरत्न आर्य)
महामन्त्री

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल का उद्घाटन

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कल का उद्घाटन आयसमाज मन्दिर राजौरी गाडन मे १७ जौलाई को श्री राम गोपाल शालवाले के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महाशय धमपाल श्री सूयदेव श्री डा० धर्मपाल श्री सुभाष आय श्री वधवा जी आदि महानुभाव उपस्थित थे। बच्चो के ऋषि दयानन्द महिमा तथा प्रभु भक्ति राष्ट्रभक्ति के गीतो से जनसमूह झूम उठा। श्री शालवाले ने वैदिक मन्तव्यो और ऋषि दयानन्द की शिक्षा प्रणाली को अपनाने की भी प्रेरणा दी। उन्होने कहा हमे अग्रेजी भाषा की गुलामी से बचना चाहिए और हिन्दी भाषा के उत्थान मे सहयोग करना चाहिए। उन्होने उदाहरण देते हुए कहा—जब विजय लक्ष्मी पडित मास्को प्रवास के लिए गयी उन्होने स्तालिन को अपने परिचय पत्र दिखाये जो अग्रजी मे थे स्तालिन ने कहा या तो हिन्दी मे लिखाओ या रूस की भाषा मे। उन्होने फिर भारत मे हिन्दी म अपने परिपत्र लिखाये।

—सवाददाता

श्री जागेराम की हत्या का हार्दिक शोक

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के महामन्त्री श्री रामसरूप दास आ ने श्री जागेराम आय की हत्या पर गहरा दुख व्यक्त किया है। मास्टर जागेराम ने गुरुकुल गौतम नगर मे लगभग ४० हजार रुपये दान किये थे। और आर्यसमाज मालवीय नगर और साकेत के भवन निर्माण काय के लिए हजारो रुपय का दान किया था। वे वेदप्रचार के कार्यों मे सदा सहयोग करते रहते थे। वेदप्रचार मण्डल ने दिवगत आत्मा के प्रति एक शोक प्रस्ताव द्वारा श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है।

—सवाददाता

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न० १७, कैलाशनगर, दिल्ली ३१ म मुद्रित। रजि० न० डी० (सी०) ७५६

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वर्ष ९ अंक ३६ | रविवार २८ जुलाई १९८५ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८६ | श्रावण २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१

क्रान्तिदूत स्वामी अभेदानन्द जी महाराज

—आचार्य देवेन्द्रदत्त द्विवेदी

करुणा की जीवित प्रतिमा लोक-कल्याण के निमित्त निरन्तर चिन्ताशील त्यागमूर्ति अपूर्व अपरिग्रही, तपोधन एवं अतिशय अनासक्त तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के दिवंगत प्रधान स्वा० अभेदानन्द जी सरस्वती के जीवन से सम्बद्ध अनेक प्रसंग विस्मृति के गह्वर में क्रमश लीन होते जा रहे हैं। उनके विषय में बहुत सी बातें मूल्य हैं। उन पर यथावत प्रकाश डालना आज नितांत अपेक्षित है। उनका वास्तविक जीवन वस्त आर्यसमाज के इतिहास की अनेक विच्छिन्न कडियो को जो ने मे समर्थ होगा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधानो मे शायद ही किसी प्रधान का नये एव पुराने क्रान्तिकारियो से इतना घनिष्ठ सपर्क रहा हो।

मैं स्वामी जी के जीवन की कतिपय उन घटनाओं को लिपिबद्ध करने जा रहा हू जो मेरी उपस्थिति मे घटीं।

विचित्र दानशीलता—

एक बार मैं पटना आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रागण मे बैठा स्वामी जी से बात कर रहा था। स्वामी जी पजाब से लौटे थे। वे अपने साथ 'बाबू गोशा' और चिन्नी ले गये थे। उस समय प्रतिनिधि सभा के सभी उपदेशक बाहर गये थे। थोड से लोग उपस्थित थे। अत स्वामी जी को चिन्ता थी कि वे जो सौगात पजाब से लेकर आये हैं उनका क्या किया जाये। उनमें मे मुझे भी कुछ मिला और बा दूसरे लोग जो वहाँ उपस्थित थे उन्हें भी स्वामी जी ने दिया। स्वामी जी के लिए यह आवश्यक नही था कि उनसे कुछ पाने वाले लोग परिचित ही हो। उनके दरबार में सभी तरह के लोग उपस्थित रहते थे।

इसी बीच पटना कालेज का एक विद्यार्थी आया। उसने स्वामी जी के चरण स्पर्श किये। स्वामी जी ने उस से पूछा— किधर चले हो? उसने आखों मे आसू भरके कहा — मुझे एम०ए० की परीक्षा देनी है। मेरे पास रुपये नहीं हैं कि परीक्षा शुल्क दू। मे सदैव प्रथम श्रेणी मे ही उत्तीर्ण होता हा हू। पिछले वर्ष मेरी मा ससार से चली गयी। और इसी वर्ष चार महीने पहले मेरे पिता जी । वाक्य पूरा करने के पूर्व ही वह फूट फूटकर रो पडा। स्वामी जी की भी आखें भर आयीं और उन्होंने अपनी जेब मे हाथ डाला—जो कुछ था दे दिया गिना नहीं। रुपये देते समय स्वामी जी ने उसकी ओर मे मुह फेर लिया था। इसी बीच टेलीफोन की घटी बजी स्वामी जी सुनने चले गये। बाहर से दफ्तर मे आये लोगो से बातो में उलझ गये। मैं ने उस विद्यार्थी से कहा गिनो स्वामी जी ने तुम्हें कितने रुपये दिये।' वह डरता हुआ गिनने लगा वह इसलिए डरता था कि कहीं अधिक रुपये होने पर मैं लौटाने के लिए न कह दू। उसे मालूम नहीं था कि यदि मैं ऐसा कहता तो स्वामी जी की दृष्टि मे मुझ से बुरा कोई आदमी नहीं होता। स्वामी जी ने उसे पन्द्रह सौ रुपये दिये थे। उस लडके का नाम मैं लेना नहीं चाहता। वह आज एक बहुत बडे सरकारी पद पर है। स्वामी जी दफ्तर से बाहर आये। उसे कहा — 'भोजन करके जाना।' उस लडके के जाने के बाद मैंने पूछा 'उसे रु० देते समय आपने मुंह क्यो मोड लिया?' उत्तर मिला यदि मैं उसकी ओर देखता तो उसमे हीनता की भावना आती और मुझ मे मिथ्याभिमान की। वह लडका जब भोजन करके जाने लगा तो मैंने उस से जानना चाहा कि वह स्वामी जी से कब से परिचित था। उसने कहा मैं स्वामी जी को नही जानता था मुझे पटना विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० ईश्वरदत्त ने इनके विषय मे मुझ से कहा कि बिना किसी की सिफारिश के स्वामी जी से मिलो। वह या तो स्वय सहायता कर दगे या किसी से करा दगे।'

स्वामी जी अपने फटे कपडे पहने रहते थे। उनके फटे कम्बल होते थे। पर नये कपडे नये शाल नये कम्बल दूसरों को दे देते थे। उनके पास रु० तथा सामान आये नहीं कि बाटने की उनमें बेचैनी पैदा हो जाती थी।

राजनैतिक जीवन—

काग्रेस के आन्दोलनो में स्वामी जी अनेक बार जेल गये। वह उनका वानप्रस्थी जीवन था। उस समय उनका नाम वेदव्रत था। भारत के प्रथम राष्ट्पति देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने स्वामी जी से अनेक बार बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यों से विरत होकर बिहार प्रदेश काग्रस कमेटी के कार्यों मे रुचि लेने के लिए कहा था। दो बार तो बिहार के आर्यसमाजियो मे यह चर्चा चली कि स्वामी जी का बिहार काग्रस का अध्यक्ष होन निश्चित है। पर तुरन्त ही यह बात सामन आई कि स्वामी जी न राजेन्द्र बाबू के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। यदि स्वामी जी चाहते तो अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी तथा बिहार प्रदेश के मंत्रि-मण्डल के सदस्य सरलता पूर्वक तैयार हो जाते उनकी दृष्टि मे आर्यसमाज उनकी मॉ थी। वे उसे छोड नही सकते थे।

क्रान्तिकारियो से स्वामी जी के सम्बन्ध—

स्वामी जी बडी छोटी उम्र से पुराने एव नये क्रान्तिकारियों सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी तथा बगाल के 'अनुशीलन दल' सब के सम्पर्क मे आ चुके थे। सर्वश्री इश्फाक उल्ला खान रामप्रसाद बिस्मिल चन्द्र शेखर आजाद म नवेन्द्र नाथ राय, सूर्यसेन लोकनाथ बल योगेश चटर्जी वैकुण्ठ शुक्ल कमलनाथ तिवारी, केदार मणि शुक्ल आदि सभी स्वामी जी को किसी न किसी रूप मे जानते थे। इस विशाल परिचय का रहस्य क्या था, यह अभी तक अज्ञात है।

दो अविस्मरणीय घटनाएं—

१९४६ की बात है। उस समय मैं भारत के सर्वश्रेष्ठ हिन्दी दैनिक विश्वमित्र का सपादक था। उस साल बड़े दिन की छुट्टियो मे कलकत्ता आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव हो रहा था। स्वामी जी निमन्त्रित थे। वे कलकत्ता मे सेठ आनन्दी प्रसाद पोद्दार की सटल एवेन्यू वाली कोठी मे ठहरे थे। उनके साथ प० रामानन्द शास्त्री सार्वदेशिक सभा के भू० पू० धर्माध्यक्ष भी थे। शास्त्री जी अभी अभी जवान हो रहे थे मुझे स्वामी जी तथा शास्त्री जी के साथ भोजन करना था। भोजनोपरान्त कालेज स्ट्रीट मे काफी हाउस के

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सत्संग वाटिका

यज्ञ और शान्ति

—प्रो० प्रतापसिंह

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ।।

समस्त वैदिक पर्व, त्योहार उत्सव, संस्कार आदि कर्म यज्ञ से ही प्रारम्भ किए जाते हैं । और उनकी समाप्ति पर 'शान्ति पाठ' किया जाता है कि परमात्मा को धन्यवाद है कि सब कार्य विघ्न बाधा रहित शान्ति से सम्पूर्ण हुए हैं । इसी प्रथा तथा पद्धति को दृष्टि मे रख दोनो का समन्वय कर उपसंहार के रूप से यहा पर रखा है । वैदिक जीवन दर्शन मे यज्ञ ही मूलाधार है । शतपथ ब्राह्मण कहता है यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म । यज्ञ सब से श्रेष्ठ कर्म है । संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद का शुभारम्भ ही यज्ञ शब्द से होता है । प्रथम मन्त्र कहता है—अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ।

यज्ञ शब्द यज धातु से बना है जिसका अर्थ देवपूजासंगतिकरणदानेषु व्याकरण कहता है । जिसकी व्याख्या साधारण रूप मे (१) देवपूजा अर्थात् विद्वानो का यथायोग्य सत्कार (२) संगतिकरण का अर्थ सामाजिक एकीकरण सहअस्तित्व, संगठन, संतुलन समन्वय आदि है । (३) दान की व्याख्या अपनी शक्ति के अनुसार यथायोग्य समय शक्ति धन आदि का मनसा, वाचा कर्मणा दान देना । देव शब्द दिवु धातु से बना है जिसका संक्षिप्त अर्थ दिव्य गुण युक्त, जो सदा बिना मांगे सब को समान रूप से दे तथा बिना मूल्य देता रहे । अत यज्ञ के इन अर्थों के अनुसार अपने जीवन को यज्ञमय बनाता रहे । यही वैदिक आदेश तथा आदर्श है । अत यज्ञ मानव को अपने जीवन के दिव्य भाग का बोध कराता है । यज्ञ के यही तीनो भाव दार्शनिक दृष्टि से मानव समाज मे तीन रूप ले लेते है । (१) समन्वय (२) संगठन (३) संतुलन । सृष्टि मे सब जड चेतन पदार्थ एक दूसरे से सम्बन्धित है । एक दूसरे पर सतत, यथोचित तथा पूर्ण रूप से निर्भर है । न कोई पूर्ण रूप से स्वतन्त्र (Independent) है, न कोई पूर्ण रूप से दूसरे पर आश्रित (Dependent) है परन्तु सापेक्षरूप से परस्पर एक दूसरे पर निर्भर (Dependent) है । सब मे समन्वय संतुलन व संगठन है । उदाहरण रूप, सूर्य व चन्द्रमा दोनो अपना अपनी प्रकृति तथा गुण धर्म व कार्य की दृष्टि से प्रतिकूल प्रभाव प्रत्येक जड चेतन पर कर रहे है । सूर्य प्रचण्ड ताप ऊष्मा तथा प्रकाश का स्रोत है । इसके प्रतिकूल चन्द्रमा शीतल-ताप रहित शान्तिदायक चांदनी छिटकाता है । परन्तु दोनो ही अपनी अपनी कक्षा मे परिभ्रमण करते हैं, कोई किसी के कक्ष का अतिक्रमण नहीं करता है । कितना संगतिकरण, सहअस्तित्व, सामंजस्य आदि चलता रहता है । मानव हेतु सृष्टि कितना उच्च आदर्श उपस्थित कर रही है ।

यही सहयोग संगठन समन्वय आदि मानव को अपने शरीर विज्ञान द्वारा अंगों मे मिलता है । मुंह भोजन को चबाकर उदर की ओर 'इदं न मम' कहकर सरका देता है । इसी प्रकार सब अंग अपना अपना कर्म कर भोजन से सार ग्रहण कर पूर्ण शरीर को पहुंचाते है । पेड पौधे वनस्पति औषधि विज्ञान भी यही आदर्श मानव को दे रहे है । सृष्टि अपना प्राकृतिक संतुलन सदा बनाए रखती है । जीव सांस द्वारा वायु से ओषजन लेकर कार्बन डाई आक्साइड छोडता है । वनस्पति इसे ग्रहण कर ओषजन निकालती हैं । वायु मे गैसो का अनुपात तथा संतुलन सदा चलता रहता है । परन्तु इस कलयुग—मशीन-युग मे नाना प्रकार से वायु, जल, भूमि आदि मे प्रदूषण मानव द्वारा हो रहे हैं । जंगलो को बिना विचारे काटा जा रहा है, शिकारी जन्तुओं को नष्ट कर रहे हैं तथा खा रहे हैं । जब यह असंतुलन मानवकृत अति कर लेता है तो संसार मे रोग युद्ध सूखा अतिवृष्टि आदि का दैवीय प्रकोप के रूप मे मानव को भोगना पडता है ।

दानदाता को यह ध्यान रखना आवश्यक है कि दान सुपात्र अथवा कुपात्र को जाता है । उस सदुपयोग तथा दुरुपयोग का विचार रखना है कि दान का उपयोग समाज विरोधी कार्यों मे तो नहीं होता है । यज्ञ मे यह श्रेष्ठता है कि पात्रता का प्रश्न ही नहीं उठता है । यज्ञ से उठी सुगन्धित वायु सब दिशाओ मे सूक्ष्म रूप से प्रसारित हो समान रूप से मित्र, शत्रु, ऊंच-नीच आदि सब को पहुंचती है । क्योंकि अग्नि मे जो आहुति दी जाती है उसके दो रूप हो जाते हैं । आहुति की सामग्री घी, समिधा आदि का सूक्ष्म रूप होकर समस्त वायु मण्डल मे फैलकर शुद्ध तथा सुगन्धित कर देता है । दूसरा लाभ यज्ञ करने वालो तथा आहुति देने वालो के मन व हृदय पटल पर सूक्ष्म प्रभाव पडता है जो शुद्ध मन, श्रद्धा, भक्ति, तन्मयता से मन के कलुषित दूषित विचार नष्ट कर पुनीत पवित्र भावनाएं उभारते हैं । यह आहुतियां यज्ञकर्ता के संस्कार बन धर्म का रूप धारण कर लेते हैं । और सूक्ष्म शरीर का अंग बन जाते हैं । मृत्यु पर यही संस्कार आत्मा के साथ पुनर्जन्म मे साथ देते हैं । जैसा मनु जी ने 'धर्मस्तमनुगच्छति' कहा है कि अन्तकाल मे धर्म ही साथ देता है । यज्ञ मे कर्मकाण्ड तथा उपासनाकाण्ड दोनो का समन्वय है । इस यज्ञ मे परमार्थ तथा लोक व्यवहार दोनो एक साथ प्राप्त होते हैं । वैदिक जीवन दर्शन मे जन्म से मृत्यु तक सोलह संस्कार हैं जिन सब का प्रारम्भ यज्ञ से होता है । जीवन मे पांच महान् यज्ञों का विधान है । जो ब्रह्म यज्ञ देव यज्ञ, अतिथि यज्ञ, पितृ यज्ञ बलि वैश्व देव यज्ञ सत्र मे उपासना तथा कर्म दोनो का समन्वय है ।

यज्ञ मे चार प्रकार की सामग्री का विधान है । सुगन्धियुक्त, मिष्टान्नयुक्त, पुष्टिकारक तथा रोगनाशक । इनसे वायु शुद्ध होती है तथा आकाश मे वृष्टि जल मे पुष्टिकारक तत्त्व मिलते हैं । इस वर्षा जल से औषधियां व वनस्पतियां शुद्ध पवित्र तथा पुष्टिकारक होती हैं । जो जीव हितकारी होती है । मानव के शरीर से मल, मूत्र, पसीना आदि निकलने से वायु, जल तथा भूमि भी दूषित तथा दुर्गन्धयुक्त होती है अत जो इन तथा अन्य प्रकार के प्रदूषणो को यज्ञ से दूर करने का प्रयत्न व प्रयास नहीं करते वह अधर्मी तथा पापी हैं । महर्षि दयानन्द ने इसी प्रकरण मे सभी शंकाओ का बडी युक्तिपूर्वक तथा सतर्क समाधान किया है, जैसे हाथ से होम करते हैं, आंख से देखते और त्वचा से स्पर्श करते हैं, वैसे वाणी से वेद मन्त्रो को भी पढते हैं । क्योंकि उनके पढने से वेदो की रक्षा, ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना होती है । तथा होम से जो जो फल होते हैं उनका स्मरण भी होता है । वेद मन्त्रो का बारम्बार पाठ करने से वे कंठस्थ भी रहते हैं । और ईश्वर का होना भी विदित होता है कि कोई नास्तिक न हो जाए, क्योंकि ईश्वर की प्रार्थनापूर्वक ही सब कर्मों का आरम्भ करना होता है । सो वेद मन्त्रों के उच्चारण से यह यज्ञ मे तो उसकी प्रार्थना सम्पन्न होती है । इस लिए सब उत्तम कर्म वेद मन्त्रो से ही करना उचित है ।" गीता मे भी यज्ञ को 'कामधेनु' कहा है ।

महाभारत काल तक यज्ञो की महिमा महान् थी । तथा सब सत्कर्मों के लिए किए जाते थे और कहावत बन गई थी कि "स्वर्गकामो यजेत्" जो सुख चाहता है वह यज्ञ करे । राजा दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ से चार पुत्र रत्न प्राप्त किए थे । इसी प्रकार राजसूय, वाजपेय, अग्निष्टोम, अश्वमेध, अग्निहोत्र, अन्वाधान, चातुर्मास्य आदि यज्ञों का विधान है । इनका अर्थ न समझकर यज्ञो का रूप विकृत हो गया । पशु आदि काटकर उनके अंगों से यज्ञ होने लगे, तथा नरबलि भी होने लगी । अत वाममार्गियो के कुप्रभाव से यज्ञशाला वधशाला तथा कसाई खाना बन गई । तभी बौद्ध, जैन तथा शंकराचार्य ने इस कर्मकाण्ड की हीनता बताकर उपासनाकाण्ड पर अत्यधिक बल दिया तथा फलस्वरूप यज्ञ संस्था विकृत होकर पतन को प्राप्त हुई । महर्षि दयानन्द के पुण्य प्रताप तथा प्रयास से यज्ञ के अनुष्ठान का कर्मकाण्ड मे प्रमुख स्थान हो गया । उन्होंने यज्ञ को महान् निष्काम कर्म सिद्ध किया जो मुक्ति का मार्ग प्रदर्शित करता है । उन्होंने कहा 'जब तक होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखो से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही जायगा ।'

प्रात काल एक दिन जब सन्त कबीर अपने पुत्र कमाल के साथ भ्रमण को जा रहे थे तो मार्ग मे देखा कि उस सुहावने वातावरण मे कहीं से चक्की चलने की घरघराहट आ रही है तो उनकी 'अटपटी' वाणी फूट पडी—

चलती चाकी देखकर,
दीन कबीरा रोय ।
दो पाटन के बीच मे,
साबित बचा न कोय ।।

इस संसार मे जन्म मृत्यु सुख-दुख रूपी द्वन्द्व के चक्कर मे मानव पिसता रहता है । तेल, नोन लकडी की चिन्ता मे परेशान रहता है । जर, जमीन तथा जन के झगड़े मे फंसा रहता है । कंचन व कामिनी की फिक्र मे दुबला होता जाता है । इस प्रकार संसार मे विषय वासनाओ पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा के चक्कर मे रात दिन व्याकुल फिरता है । परन्तु सुपुत्र कमाल ने सरल समाधान किया कि जो दाने कीली के पास रहते हैं वह इस चक्कर मे नहीं आते, न पिसते हैं परन्तु कीली के पास सुरक्षित रहते हैं । इस साधारण उद्गार मे एक महान् आध्यात्मिक सन्देश छिपा है । वह सत्य है कि जो व्यक्ति संसार के विषयभोग मे लिप्त रहता है, वह जन्म-मृत्यु के चक्कर मे पडा दुख दर्द मे फंसा रहता है । जो परमात्मा के पास है वह जन्म मृत्यु के चक्कर से मुक्त हो जाता है । जब दानो को नहीं मालूम है कि वह कीली के पास होने से दोनों पाटों के बीच मे आकर पिसने से बच जाते हैं । परन्तु अथर्ववेद का मन्त्र 'अन्ति सन्तं न जहाति' सचेत करता है कि जो उस परमात्मा रूपी कीली के पास हैं उन्हें परमात्मा नहीं छोडता है तो वह

(शेष पृष्ठ ७ पर)

धर्म-प्रचार के नाम पर राजनीतिक षड्यन्त्र

लेखक—रामगोपाल शालवाले

वेद प्रतिपादित आर्य धर्म एक अरब सत्तानवें करोड़ उनतीस लाख उनचास हजार पिचासी वर्ष पुराना है। कुरान के अनुसार इस्लाम मत की आयु लगभग तेरह सौ नब्बे वर्ष की है। ईसाई मत ईसा के सन् के अनुसार १९८४ वर्ष का है।

आज हमें विचार करना है कि आर्य धर्म जो संसार में सब से पुराना है, जिसका चक्रवर्ती साम्राज्य पुरातन काल में समूचे संसार पर शासन करता था, जिसके विद्वान् विदेशों में जाकर प्राणिमात्र को धर्म की दीक्षा दिया करते थे, जिसका वैभव भगवान् मनु ने निम्नलिखित शब्दों में वर्णन किया है—

> एतद्देशप्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मन ।
> स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्या सर्वमानवा ॥

कभी ऐसा स्वर्णिम समय था, जब अपनी-अपनी रुचि के अनुसार विदेशी लोग इस पवित्र भारतभूमि पर हर प्रकार की विद्या पढ़ने के लिए आया करते थे।

समय बदल गया। राज्यसत्ता छिन जाने से सारा ढांचा उलट गया। अंग्रेजी राज्य के प्रभाव से भारतीय विद्यार्थियों को बड़ी-बड़ी डिग्रियां लेने के लिए इंग्लैंड का दरवाजा देखना पड़ता है।

पुरातन काल में हमारे गुरुजन विदेशों में जाकर धर्म और नीति का प्रचार किया करते थे। महाराज दशरथ ने पुत्रेष्टियज्ञ के निमित्त गुरु वशिष्ठ से पूछा कि इस महान् यज्ञ का ब्रह्मा किसे बनाया जाय? उत्तर मिला—बाल ब्रह्मचारी ऋषिशृंग ही इस महत्त्वपूर्ण यज्ञ का सम्पादन कर सकते हैं। महाराज ने पाताल देश [अमरीका] के महर्षि शृंगी को पुत्रेष्टि यज्ञ सम्पन्न करने के लिए निमन्त्रित किया।

इस प्रकार वैदिक विचारधारा का प्रभाव भारत ही नहीं, समूचे संसार पर फैला हुआ था। हमारे विद्वान् प्रचारक विदेश में वैदिक संस्कृति के प्रसार में संलग्न थे। सारे संसार में आनन्द ही आनन्द था। मानवता फल फूल रही थी।

समय ने पलटा खाया। महाभारत के युद्ध में भाई ने भाई का गला काटा, गृह कलह का प्रारम्भ हुआ। परमार्थ का स्थान स्वार्थ ने लिया। विदेशों में प्रचार एवं राज्य करने की बात तो दूर रहा, अपना देश ही विदेशियों के पादाक्रान्त हो गया। सातवीं शताब्दी में अरब के १८ वर्षीय युवा मुहम्मद बिन कासिम ने इस्लामी साम्राज्य के लोभ से सिन्ध पर आक्रमण किया और लगभग ३-४ हजार अरबी मुसलमानों ने भारत-भूमि पर पैर रखे। हमारे देश पर यवनों का यह पहला आक्रमण था, तत्पश्चात् दर्रा खैबर के सीमान्त के रास्ते इस प्रकार के इस्लामी आक्रमण होते ही रहे और सारे भारत पर इस्लामी साम्राज्य छा गया। राज्य सत्ता के बल पर इस्लाम का प्रचार किया गया। तलवारों की छाया में कलमे पढ़ाए गए और आर्य धर्म की पुरानी मर्यादाओं को नष्ट भ्रष्ट किया गया। महाविनाश और पराजय के महान्धकार-मय वातावरण में छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप बन्दा वीर वैरागी और कितने ही हिन्दू वीरों ने आगे बढ़कर अनेक प्रकार की यातनाएँ और दुःख सहकर राष्ट्रीय मर्यादा और धर्म की रक्षा की। औरंगजेब की धर्मान्धता से देश की हिन्दू प्रजा विक्षुब्ध हो उठी थी। छत्रपति शिवा जी की वीरता और नीति से इस्लामी साम्राज्य पैर सुकेड़ने लगा, किन्तु अपनी ही आन्तरिक फूट और स्वार्थपरायणता से ईस्ट इण्डिया कम्पनी के रूप में व्यापारी बन कर अंग्रेज ने भारत में पैर जमाए और देखते-देखते सारे देश पर यूनियन जैक फहराने लगा। अंग्रेजी राज्य के साथ ईसाई मिशनरी भी गरीबों की सेवा और धर्म का बहाना बनाकर भारत में कार्य करने लगे। इससे पूर्व सन् १२९१ ईस्वी में पोप निकोलस (चतुर्थ) ने जोहन कार्निवो नामक ईसाई मिशनरी को चीन देश में भेजा था। चीन जाते हुए वह भारत में ठहरा और यहां १३ मास तक रहा। भारतभूमि पर पांव धरने वाला यही पहला ईसाई मिशनरी था। अपने निवास-काल में इसने भिन्न भिन्न स्थानों पर लगभग १०० व्यक्तियों को ईसाई बनाया।

इसके पश्चात् फ्रेंच मिशनरी आया। वह सन् १३२३ में बम्बई के तट पर उतरा, परन्तु चौदहवीं शती के समाप्त होने से पूर्व ही यूरोप के अनेक ईसाई मिशनरियों ने बम्बई और ट्रावनकोर के मध्य के पश्चिमी घाट पर कई ईसाई उपनिवेश स्थापित कर लिये थे। पुर्तगाल का क्रूर लुटेरा वास्कोडिगामा जब १५०२ ई० में दूसरी बार भारत में आया तो उसे भारत के पश्चिमी तट पर ईसाईयों की बस्तियां देखकर आश्चर्य हुआ। इस ईसाई वर्ग ने अपने राजा और अपने प्रदेश से विश्वासघात करके ईसाई लुटेरे की अधीनता स्वीकार कर ली।

भारत में पुर्तगाल साम्राज्य के संस्थापक अलफैन्सो अलबुकर ने १५१० से लेकर १५१५ तक गोवा और लंका के मध्यवर्ती समस्त समुद्री तट पर शासन किया, उसने तलवार और आग के बल पर ईसाइयत की जड़ जमाई, उसने पश्चिमी तट के मुसलमानों को अपने प्रतिशोध का लक्ष्य बनाया।

पुर्तगाल के राजा को गोवा से भेजे गए अपने एक पत्र में वह गोवा के आक्रमण का वर्णन इस प्रकार करता है—

'तब मैंने नगर को जला दिया और जो सामने आया उसी को मौत के घाट उतार दिया। आपके लोगों ने लगातार कई दिन तक खून बहाने का कार्य चालू रखा। जो भी सामने आया और जहां कहीं पकड़ा गया, वहीं पर मार डाला गया। मुसलमान तो शायद ही कोई बचा हो। उन की मस्जिदों में आग लगाकर उन्हें नष्ट भ्रष्ट किया गया। हमारी गणना के अनुसार ६००० व्यक्ति मार डाले गए बहुत से मुस्लिम पुरुष स्त्रियाँ नहीं धनुधर मरे।

मेरे स्वामी! यह कार्य महान् था जो अच्छी तरह हाथ में लिया और पूरा किया गया। मैं मुसलमानों को किसी दरवाजे या कब्र पर यहां नहीं रहने देना। जो जीवित बन्दी बनाए गये मैंने उन्हें आग में भूनने की आज्ञा दे दी है।'

(श्रीयुत मणिलाल सी० पारिख कृत भारत में ईसाइयों द्वारा धर्म परिवर्तन पृष्ठ ३६ ३७, १९४७ का संस्करण)

(क्रमश)

श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक महमन्त्रादक सार्वदेशिक को श्रद्धाञ्जलियां

आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली में श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक की श्रद्धाञ्जलि सभा आयोजित की गयी। इस अवसर पर श्री रामगोपाल शालवाले श्री ओमप्रकाश त्यागी, श्री सोमनाथ मरवाह श्री सूर्यदेव श्री मूलचन्द्र गुप्त आदि महानुभाव उपस्थित थे। सार्वदेशिक आ० प्र० सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा वे अनोखे विद्वान् लेखनी के धनी और आर्यसमाज के दीवाने थे। आर्यसमाज के इतिहास का उन्हें अनोखा ज्ञान और स्मृति थी। वृद्ध हो जाने पर भी वे अन्तिम समय तक कर्मशील बने रहे।

श्री ओमप्रकाश त्यागी ने कहा श्री पाठक जी के साथ एक युग की अनेक स्मृतियाँ जुड़ी हुई हैं। वे सुयोग्य पत्रकार तो थे ही कुशल कार्यकर्ता भी थे। उनके सान्निध्य और सहयोग में सभा के प्रमुख पत्र का कार्य प्रगति पर रहा। श्री सोमनाथ मरवाह और श्री सूर्यदेव, श्री मूलचन्द्र गुप्त ने भी अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक की स्मृति को चिरस्थायी करने के लिए सार्वदेशिक सभा में पाठक जी के नाम पर पाठक स्मृति निधि स्थापित की गई। इस निधि में अनेक लोगों ने श्री रामगोपाल शालवाले श्री सूर्यनारायण शर्मा, श्री केशवचन्द पाठक, श्री राधाकृष्ण शर्मा श्री ब्रह्मदत्त स्नातक श्री कमलेश कुमार, श्री वासुदेव वशिष्ठ श्री कुलचन्द्र जी आदि ने एक हजार से लेकर एक सौ एक तक की दान राशि प्रदान की।

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति

नई दिल्ली १८ जोलाई। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति पद पर श्री डा० सत्यकेतु विद्यालंकार नियुक्त हुए। श्री डा० सत्यकेतु इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान्, अनेक ग्रन्थों के लेखक गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व कुलपति, जर्मनी से डी० लिट की उपाधि प्राप्त हैं। उनके कुलाधिपति नियुक्त किये जाने पर आर्यजगत् में हर्ष की लहर फैल गयी।

—संवाददाता

श्री लालमन आर्य निबन्ध प्रतियोगिता मे द्वितीय पुरस्कार प्राप्त—

"महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत"

—डा० सूर्यप्रकाश विद्यालकार
के० एच० १५७ कविनगर, गाजियाबाद

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ' के स्वर को निनादित करने वाले महर्षि दयानन्द एक युग-द्रष्टा थे। उन्होने युग-बोध की स्वीकृति अपने जीवन द्वारा प्रदान की है। उनका जीवन ज्योति पंज रहा है तथा वह न जाने कितनी जीवन-ज्योतियों को अद्यनन ज्योतित करता रहा है। उनके जीवन का ध्येय व्यक्तिगत नही, अपितु समष्टिगत है। उन्होने स्व को नही अपितु पदार्थ को ही साधन एव साध्य बनाया। ऋषि न जीवन को एक सजग प्रहरी के रूप मे देखा। वे निद्रा एव सपनो से दूर भागते रहे है। दयानन्द सपनो पर नही अपितु सतत कर्म पर विश्वास करने वाला एक सजग योद्धा था। कर्मठ का एक आदर्श होना है सपना नही। अत हम यह भी कह सकते हैं कि महर्षि दयानन्द के आदर्शो का भारत।

विश्व को आर्य बनाने का सकल्प ऋषि दयानन्द का था। आर्य से तात्पर्य हां किसी एक वर्ग से नही अपितु श्रेष्ठ मानव के निर्माण से था। मानवोत्तर सस्कृति की सरचना ही आदर्श था। मानवोत्तर सस्कृति का निर्माण मानव को श्रेष्ठतर बनाने से ही सम्भव था। मानव जीवन मे मानवीय मूल्यो की स्थापना युग की महती आवश्यकता थी। मानवीय मूल्यो का ह्रास होता जा रहा था, जो भारत की गरिमा को नष्ट कर रहा था। ऋषि का जीवन, चिन्तन दर्शन एव व्यवहार भारत की मृतप्राय आत्मा के लिए सञ्जीवनी सिद्ध हुआ। विभिन्न प्रकार के वाद विवाद एव मत मतान्तर मे उलझा भारत का भविष्य अधकारमय था। उस अधकार मे ज्योति रूप दयानन्द का उदय आशा की किरण के रूप मे प्रस्फुटित हुआ।

मनसा, वाचा कर्मणा ऐक्य की स्थिति ही पुरुष को महापुरुष बना देती है। ऋषि दयानन्द मन वचन एव कर्म से एक रूप थे। कही भी उनके जीवन मे बदलाव व बिखराव नही रहा। मन से एक दृढ सकल्पवान् अजेय, वाणी से ओजस्वी व तेजस्वी तथा कर्म से अटल ध्रुव योगी ऋषि दयानन्द थे। "तमसो मा ज्योतिर्गमय" के व्यवहार साधक "असतो मा सद्गमय" की प्रतिमूर्ति बन गये। "तन्मे मन शिवसकल्पमस्तु" की कल्याणी भावना से युक्त 'सर्वे भवन्तु सुखिन' का साकार रूप प्रतिष्ठित करने वाले ऋषि दयानन्द ही थे। ऋषि दयानन्द ने उद्बोधन का कार्य किया। उन्होने एक नये आदर्श का सन्मार्ग प्रशस्त किया। वस्तुत दयानन्द दयानिधान था। वही उसका आनन्द तथा वही उसका मूल था। वह जो चाहता था वही करता था तथा उसकी ही उसको अपेक्षा थी।

[illegible] के प्रति सजगता के भाव का [illegible] ऋषि दयानन्द मे ही होता है। उन्होने स्पष्ट रूप से सर्वप्रथम उद्घोषित किया कि भारत की स्वतन्त्रता अति आवश्यक है। उनका यह कथन बीज मन्त्र सिद्ध हुआ कि विदेशी राज्य अच्छे से अच्छा तथा स्वदेशी राज्य बुरे से बुरा क्यो न हो? परन्तु स्वदेशी राज्य ही श्रेष्ठ है। देश प्रेम का उच्चतम भाव दयानन्द के द्वारा प्रचारित किया गया। स्वतन्त्र भारत का सपना ही दयानन्द का महत्वपूर्ण सपना था।

जननी व जन्म भूमि के प्रति गौरव-भाव पैदा करने वाले दयानन्द ने विदेशी भाषा का पूर्ण रूप से बहिष्कार किया है। वे राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रेमी थे। उन्होने अपने ग्रन्थो का प्रणयन सस्कृत अथवा हिन्दी मे ही किया है। वे इस सदर्भ मे 'सत्यार्थप्रकाश' की भूमिका मे लिखते हैं, "जिस समय मैंने यह सत्यार्थप्रकाश बनाया था उस समय उससे पूर्व सस्कृत भाषण करने पठन पाठन मे सस्कृत ही बोलने और जन्मभूमि की भाषा गुजराती होने के कारण मुझ को इस भाषा का विशेष परिज्ञान न था। अब भाषा लिखने और बोलने का अभ्यास हो गया है"

ऋषि दयानन्द की अपेक्षा भारत को उज्ज्वल एव प्रशस्त रूप मे देखने की थी। वह भारतीयो के उज्ज्वल चरित्र के द्वारा ही सभव थी। चरित्र निर्माण ही ऋषि का उद्देश्य था। चरित्र का पतन निम्नतम [illegible] तक उस समय पहुच गया था। 'सत्यार्थप्रकाश' की रचना द्वारा ऋषि ने [illegible] आदर्श भारतीय चरित्र की स्थापना [illegible]। उन्होने भारतीयो के चारित्रिक [illegible] के लिए सत्य एव ज्ञान को परम [illegible] माना।

[illegible] प्रतिष्ठा का प्रयत्न स्वामी जी के [illegible] ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' से स्वत हो जाता है "सत्यमेव जयते न नृतम् सत्येन पन्था विततो देवयान" अर्थात् सर्वदा सत्य की विजय तथा असत्य की पराजय होती है तथा सत्य से विद्वानो का मार्ग प्रशस्त होता है। इस दृढ सकल्प की भावना को ग्रहण कर के सत्यमार्ग सभवत पहले विष सदृश सा लगे, परन्तु परिणाम उसका सदैव अमृतोपम रहा है— 'यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्' भारतीय आदर्श वाक्य "सत्यमेव जयते" ऋषि दयानन्द से प्रेरित तथा उनके आदर्शो का ही मूर्तीकरण है।

ज्ञान एव निष्ठा से जीवन एक आदर्श को प्राप्त करता है। उसी आदर्श की स्थापना के हित ऋषि ने जीवन को प्रारभ से ही सवारने का प्रयास किया। ज्ञान के क्षेत्र मे दयानन्द के इस विचार ने क्रान्तिकारी परिवर्तन किया कि "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है।" वेद जो गडरियों के गीत बताये गये वे ज्ञान की ही नही, अपितु सद्ज्ञान का भी आदि स्रोत बन गये। वे ज्ञान-विज्ञान के अक्षय भण्डार बन गये। वेदो की अजस्र कीर्ति की धारा को पुन प्रवाहित किया गया। वेदो की मदाकिनी कल-कल निनादिनी बनकर जिज्ञासुओ के जीवन को सगीतमय बनाने लगी। वेदो की पुन स्थापना ही ऋषि दयानन्द का आदर्श था।

महर्षि दयानन्द वेदों के परिप्रेक्ष्य मे आदर्श मानव एव चरित्रवान् भारतीय की सृष्टि करना चाहते थे। भारत मे ज्ञान एव शिक्षा के क्षेत्र मे पाश्चात्य अन्धानुकरण था इस अन्धानुकरण की भावना का ऋषि दयानन्द ने प्रबल विरोध किया। उन्होने भारतीयो को अपने ही दर्पण मे देखने का सुझाव दिया। दूसरो के रगीन चश्मो से जहा सत्य असत्य हो जाता था वहा असत्य सत्य प्रतिभासित होता था। सत्य का गोपन ही असत्य हनन है। इससे बड़ा कोई अपराध सभव नही है। सत्य का यथातथ्य प्रस्तुतीकरण ही दयानन्द के जीवन का ध्येय था। इसी आदर्श पर भारत का पुनर्निर्माण करने का प्रयास ऋषि दयानन्द ने किया। सदैव ही उनके विचार कर्म तथा सकल्प इसकी पुष्टि करते रहे हैं। भारत के पुनर्निर्माण के लिए उन्होने वेदानुसार वर्णाश्रम व्यवस्था को स्वीकार किया।

वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था की स्वीकृति वैयक्तिक एव सामाजिक जीवन को श्रेयपूर्ण बनाना था। वर्ण जहा व्यक्ति का सामाजिक प्रतिष्ठापन है वहा आश्रम उसके समाज का वैयक्तिकरण है। वर्ण विभाजित कर्मानसार हो, यह ऋषि का सपना था। यही वैदिक व्यवस्था है। ज्ञान का अधिष्ठाता ब्राह्मण, पौरुष प्रधान क्षत्रिय, कर्मठ वैश्य एव सेवा-भाव को स्वीकार करने वाला शूद्र था। मध्ययुग में यहा वर्गीकरण जन्म से ग्रहण किया जाने लगा। ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण ही रहा, चाहे वह कर्म से शूद्र हो। ऐसी विचित्र परिस्थितियों में ऋषि दयानन्द ने वर्गहीन समाज की स्वीकृति दी। उन्होने जातिगत मनोवृत्ति का नाश करके सभी को आर्यजाति मे ही समाहित किया। उनकी दृष्टि में ऊच नीच का कोई भेद नही था। उन्होने स्पष्टत वैदिक उदघोषणा के स्वर को ही साकार रूप दिया। "आत्मन प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत्' तथा "आत्मवत् सर्वभूतेषु" के द्वारा समस्त प्राणि मात्र के प्रति दया का भाव दयानन्द ने उत्पन्न किया।

जीवन को चार सोपानो, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एव सन्यास आश्रम मे विभाजित किया गया। ब्रह्मचर्य आश्रम ज्ञान एव निर्माण का आश्रम है। गृहस्थ आश्रम कर्म का आश्रम है। वानप्रस्थ सामाजिक कल्याण का आश्रम है तो सन्यास उपासना एव आनन्द का आश्रम है। जन्म लेते ही शिशु ब्रह्मचर्य आश्रम मे प्रविष्ट हो जाता है। माता पिता एव आचार्य उसके क्रमश गुरु हैं जो उसकी ज्ञानार्जन मे सहायता करते हैं— 'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद।' आचार्य का स्थान माता-पिता के अनन्तर है। आचार्य का तात्पर्य श्रेष्ठ आचरण वाला है। आचार्य के पास गुरुकुल मे बालक ५ वर्ष के लगभग पहुँच जाये। वही वह उच्च शिक्षा एव दीक्षा को प्राप्त करे। शिक्षा जहा पथ का विस्तार करती है वहा दीक्षा उसको सस्कार देती है। आज शिक्षा का तो व्यापक प्रचार है परन्तु दीक्षा का नही। बिना दीक्षा के शिक्षा जीवन का व्यावहारिक अग नही बन सकती। शिक्षा मे जहा ग्रहण करने की भावना है वहा दीक्षा मे त्याग एव समर्पण की भावना है। आज दीक्षा प्रारम्भ किये बिना ही दीक्षान्त समारोह आयोजित हो जाते हैं। कितनी बडी विडम्बना है यह दीक्षा की भावना को पूर्ण रूप से ग्रहण करना ही पूर्ण शिक्षा है।

ऋषि दयानन्द गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति के समर्थक थे। गुरुकुल मे आचार्य के पूर्ण सरक्षण मे शिष्य का निर्माण होता है। उस कठोर अनुशासन मे रहकर जीवन का निर्माण करना होता है। शिष्य जहा गुरु को अपनी सेवा एव भक्ति से जीतता है, वहा गुरु शिष्य का पालन पोषण अपनी सतान की तरह करता है। वेद में गुरु शिष्य का पालन पोषण अपनी सन्तान के समान करता है। वेद मे गुरु शिष्य के सम्बन्ध को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार माता-पुत्र को गर्भ मे धारण कर पालन पोषण करता है, उसी प्रकार गुरु शिष्य का पालन पोषण करे। पालन पोषण [illegible] अनुशासन के

(शेष पृष्ठ ८ पर)

तरुणमञ्च—

आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठो का अनावरण

आर्यों की वीरगाथा—५

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना

२३ दिसम्बर का दिन हम आर्यों के लिए बड़ा ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। यह वह दिन है जब आर्यसमाज के एक तपोनिष्ठ बलिदानी सन्यासी नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी ने वीर गति पाई थी। इस घटना के ठीक चार वर्ष पश्चात् इसी दिन लाहौर में एक आर्य वीर ने अपनी शूरता से अंग्रेजी राज को कम्पा कर रख दिया।

२३ दिसम्बर १९३० को पजाब विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह था। डा० राधाकृष्णन ने दीक्षान्त भाषण देना था और पजाब के तत्कालीन गवर्नर Sir GEOFFREYDE -- MONTMORENCY सर गोफरे इस समारोह के अध्यक्ष थे। समारोह एक हाल में रखा गया। सुरक्षा के कड़े प्रबध किए गये। फिर भी पुलिस वा गुप्तचरों से बचकर एक क्रान्ति वीर स्नातक के वेश में शब्दकोष में पिस्तोल छिपाकर अन्दर चला गया। इस क्रान्ति वीर का नाम था हरिकिशन। यह कुर्सी पर उठा और गवर्नर पर निशाना लगाया। गवर्नर घायल हुआ। उसके साथ उस का बचाव करने वाले पुलिस कर्मचारी भी हरिकिशन की गोलियों का निशाना बने।

गवर्नर बच गया क्योंकि उसके साथ डा० राधाकृष्णन थे। क्रान्तिकारी डा० साहब को बचाना चाहता था। डा० राधा कृष्णन ने स्वय १९६९ में कहा था कि मुझे बचाने के लिए उस विद्रोही वीर युवक ने सावधानी बरती। इसलिए गवर्नर घायल तो हुआ परन्तु बच गया।

इस घटना का अत्यन्त गौरवपूर्ण पहलु यह है कि वीर हरिकिशन को उसके पिता ला० गुरदास मल जी ने स्वय सुदक्ष निशानेबाज बनाया था। ला० गुरदास मल ने १९ दिसम्बर १९३० को प्रिय पुत्र को लाहौर के लिए स्वय विदा किया। वह नौशहरा तक उसे छोडने स्वय आए और सूझ बूझ या दक्षता से कार्यसिद्धि की प्रेरणा देते हुए यहा तक कहा कि यदि कार्य में सफल न हुए तो घर मत आना। मैं तुम्हें गोली से मार दूगा। पुत्र ने पिता को आश्वस्त किया। पिता जानता था कि पुत्र मृत्यु के जबड़ों में जा रहा है तथापि वीर पुत्र को इस प्रकार विदा करने का दूसरा उदाहरण मिलना इस युग में अति कठिन है।

जब हरिकिशन जी को नौ जून १९३१ ईस्वी को मियावाली जेल में फांसी दण्ड दिया गया। उसके २७ दिन पश्चात् श्री गुरदासमल जी भी अंग्रेजी शासन से जूझते हुए मैदान में चल बसे। सात जलाई १९३१ ई० को वह अंग्रेज द्वारा चलाए गये अभियोगों के लिए मर्दान गये थे। ला० गुरदासमल जी ने अपने बच्चों को देशभक्त, वीर, शिष्ट व आर्य बनाने के लिए सदा यत्न किया। वह सीमा प्रान्त में रहते थे परन्तु बच्चों को आर्य सस्कार देने के लिए फीरोजपुर के एक आर्य स्कूल में भेजा।

वह रहमत खा कौन था ?

प्रतिवर्ष नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के जन्म दिन पर छपने वाले लेखों में एक व्यक्ति रहमत खां की चर्चा होती है। यह वह व्यक्ति था जिसने नेता जी को एक मुसलमान पठान के वेश मे देश से विदेश पहुँचाया। दुर्गम पथ, पैदल कष्टप्रद यात्रा। स्थान स्थान पर पकडे जाने का भय परन्तु नेता जी को इस साहसी रहमत खां ने सकुशल विदेश पहुचा दिया। अंग्रेजी शासन देखता ही रह गया।

यह रहमत खा कौन था ? यह वीर हरिकिशन के सगे भ्राता श्री भगतराम जी थे। आप भी फीरोजपुर में आर्य कुमार सभा के मन्त्री भी रहे। इन प्रण-वीरों की शौर्य गाथा पर किस देशभक्त को अभिमान न होगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि धन की लोलुपता को तज कर आर्य सन्तान अपने क्षात्र तेज को जगाए।

और वह भी बन्दी बन गया—

इन्ही हरिकिशन के एक और भ्राता श्री ईश्वर दास भी अभी किशोर अवस्था में थे कि अंग्रेज की जेलो मे वहा बन्दी बनाए गये। आप एक दिन आर्यसामाजिक कार्य के लिए मेरे गृह पर पधारे तो एक घटना सुनाई। आपने कहा कि एक बार मुझे ग्रीष्म ऋतु मे जेल की कोठरी मे बन्द किया गया। रात्रि के समय मैं मूज की चटाई पर सोया हुआ था कि मुझे ऐसा लगा कि मेरे सिर के नीचे कोई जन्तु सर सर कर चल रहा है। मैं उठा और अपनी कोठरी के बाहर सलाखो के पास खड़े सन्तरी से कहा, मुझे अपनी टार्च दो, यहाँ कोई जन्तु है। उसने मुझे टार्च दिया। मैंने देखा कि मेरी चटाई पर एक मोटा बिच्छू था। मैं इसे जूते से मारने लगा तो उसने मुझे अपनी सगीन दे दी। मैंने उससे कहा, रहने दो। प्रात यदि इसका पता लगा कि तुमने हरिकिशन क्रातिकारी के राजद्रोही भाई को कोठरी में सगीन उतार कर दी तो तुम्हारी नौकरी भी जावेगी।

परन्तु वह सन्तरी भावुक होकर बोला, क्या पता मैं कब तुम्हारे साथ आ जाऊ। बिच्छू मारा गया। थोडे ही दिन में वह सन्तरी नौकरी छोड कर राजद्रोही बन गया और वही ईश्वरदास के पास जेल में पहुँचाया गया। तब युवा वर्ग वीरों वा देशभक्तों से प्रेरणा पाता था। आज भोगवाद के कारण किसी युवक पर तिलक, लाजपत, सावरकर, सुभाष, पटेल वा रामप्रसाद आदि वीरों के जीवन का प्रभाव पड़ता ही नही। यह प्रवृत्ति बदलनी होगी।

यह थे चन्द्रदेवसिंह सिद्धान्त शिरोमणि

'आर्यमित्र' मे मैंने एक लेख में रक्त साक्षी वीर रोशनसिंह की अन्त्येष्टि की चर्चा की थी। उसमें विश्वप्रकाश से हुई अपनी बातचीत के आधार पर लिखा था कि ठाकुर रोशनसिंह जी के पुत्र महाविद्यालय ज्वालापुर से प्रयाग मे अन्तिम सस्कार के लिए आए थे।

माननीय श्री ब्रह्मदत्त जी स्नातक ने सार्वदेशिक सभा से मुझे लिखा है कि वीर रोशनसिंह के सुपुत्र का नाम चन्द्रदेवसिंह सिद्धान्त शिरोमणि था। वह गुरुकुल वृन्दावन मे स्नातक जी के सहपाठी थे और गुरुकुल वृन्दावन मे तब शोक सभा भी हुई और शहीद की अन्त्येष्टि का प्रयाग मे लिया चित्र शहीद के पौत्र जगदीशसिंह के पास स्नातक जी ने देखा। श्री विश्वप्रकाश जी को भी तब पक्का याद न था कि शहीद के पुत्र किस गुरुकुल में पढ़ते थे। मैं पुराने आर्यों से शहीद के पुत्र का नाम वा उनके गुरुकुल का पता करता रहा। अच्छा हुआ जो मान्य स्नातक जी ने सारी प्रामाणिक जानकारी दे दी।

वीर लेखराम का चरणानुरागी

छोटे व्यक्ति भी कई बार बड़ा अद्भुत कार्य कर दिखाते हैं। श्री प० भगतराम जी हरियाणा के एक सरल प्रकृति के भजनोपदेशक थे। वह प्राय प० बस्तीराम जी के भजन गाया करते थे। उनके एक पुत्र का निधन हो गया। अन्त्येष्टि करते ही पानीपत आर्यसमाज के नगर कीर्तन मे भाग लेने चले गये। उन्हें रोका गया तो वह बोले जो होना था सो हो गया। अब मुझे चलना चाहिए। आर्यसमाज का उत्सव नही बिगड़ना चाहिए, अत मैं चलता हू। हम कितने ऋणी हैं, इन पूज्य पुरुषो के। ●

किशोरमञ्च—

याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी

प्रस्तोता बलजीत शास्त्री

याज्ञवल्क्य एक ऋषि थे। वे बड़े विद्वान् थे। उन्होंने अच्छी तरह से विद्या प्राप्त की थी। अपने समय मे वे बड़े प्रसिद्ध थे। राजा जनक के दरबार में भी गये। वहां पर भी उनका बड़ा आदर हुआ था। उनकी दो स्त्रियां थी। एक का नाम कात्यायनी था और दूसरी का मैत्रेयी। कात्यायनी सबके साथ व्यवहार करने में चतुर थी। ऋषि उसे बहुत चाहते थे। मैत्रेयी का मन ससार के कामों में नहीं लगता था। वह आत्मा की उन्नति के बारे में सोचा करती थी।

याज्ञवल्क्य जी ने बहुत से यज्ञ करवाये थे। उन्होंने बहुत से पण्डितों को हराया था। बहुत से राजा महाराजा उन्हें गुरु मानते थे। उन्होंने बहुत धन कमाया था।

कुछ समय के बाद उनका मन ससार से हट गया। उन्होंने तपस्या करने का विचार किया। कात्यायनी और मैत्रेयी दोनों को बुलाकर उन्होने कहा, 'अब मैं सन्यास लेना चाहता हू। घर का सामान तुम दोनो बाँट लो।' कत्यायनी ने घर का सामान ले लिया, परन्तु मैत्रेयी को उस सामान के लेने की इच्छा नही हुई। उसने कहा—'मैं यह जानना चाहती हू कि आप—इन चीजों को क्यों छोडे जा रहे हो। याज्ञवल्क्य ने कहा कि इन वस्तुओं से सच्चा सुख नही मिल सकता। मैं सच्चा सुख चाहता हू। सच्चा सुख त्याग मे मे मिलता है। हमें सन्यास लेने के लिए सब चीजों से मोह छोड देना चाहिए। जब तक हम धन दौलत से प्रेम करते है, तब तक तपस्या नही कर सकते।' मैत्रयी ने कहा—'यदि आप इस धन दौलत मे सुखी नही बन सकते तो मैं कैसे बन सकती हू। मैं भी ये सब चीजें नही लूंगी और तपस्या करूगी।

याज्ञवल्क्य जी यह सुनकर बडे प्रसन्न हुए। उन्होने कहा—'तुम ठीक कहती हो। संसार की चीजों से आत्मा की उन्नति करना चाहती हो तो सब चीजो का मोह

(शेष पृष्ठ ८ पर)

व्यासपीठ--

उपनिषत् कथा माला–११

निर्लोभता

लेखक—स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

वेदों मे मनुष्य जीवन के सुधार के लिए अनेकों प्रकार के आदेश किए हुए हैं। कारण यह है कि यदि मनुष्य-जीवन सुधर जाय तो ससार के समस्त प्राणियो को आराम पहुचता है। यदि मनुष्य का जीवन विकृत हो जाए तो उसके जीवन का प्रभाव प्राणिमात्र पर बुरा पडता है। अक्लमन्द मनुष्यों ने एक साथ मिलकर, साथ में बैठकर हानि और लाभ का विचार कर रक्खा है। जैसे देखो—

एक मनुष्य ने अच्छा मकान बनवाया। उसके दिल में खयाल आया कि इसके कमरों मे हरिण के सीगों की खूटियें लगवाए। इस तरह का मूजी खयाल उसके दिल मे आ गया। अब यदि वह शिकारी है और उसके पास बन्दूक है तो जगल में जाकर हरिणो को मारना शुरू कर देगा। यदि खुद शिकार नही कर सकता है तो दूसरे शिकारी लोगों से कहेगा कि तुम मुझे यदि हरिण के सीग लाकर दोगे तो तुम को एक-एक सीग का एक-एक रुपया दूंगा। अब आप ही विचार कीजिये सीगो के लिए निरपराधी हरिण यों ही मारे जावेंगे। कमरे में खूंटियें तो चन्दन की भी लगाई जा सकती थी, जिनके अन्दर से खुशबू आती है अथवा किसी दूसरी लकड़ी या किसी धातु विशेष की खूटियों से भी उसके कमरे की शान बढ सकती थी क्योंकि उसको खूंटियों पर कपडे ही तो टांगने थे, लेकिन उसके दिल मे यह खयाल पैदा हो गया कि नही कमरे की सजावट तो हरिण के सीगो से ही हो सकती है। उसके दिल में ऐसी भावना पैदा हुई, पर बेचारे जानवरों के ऊपर मुसीबत आ गई। मनुष्य की भावना का कैसा बुरा प्रभाव पडा? आजकल तो मनुष्य का जीवन बहुत ही कटु हो रहा है, उसकी कटुता का बुरा प्रभाव मनुष्य पर भी है और बेचारे दूसरे पशुओ पर भी। अगर उसको सीगो की जरूरत होती है तो वह सीग उखाड लेता है। अगर उसको चमड़े की जरूरत है तो वह फौरन चमड़ा खिचवा लेता है और अगर उसको मांस खाने की आदत है तो वह बेचारे निरपराध हजारों पशुओं को मार डालता है। अब आप देख लीजिये कि यह सृष्टि परमेश्वर की है। उसने मनुष्य और पशुओ को बनाया है। पशुओं पर मनुष्य कितने अत्याचार कर रहे हैं। पशुओं ने कोई जमीन नहीं बांटनी। उनको और किसी बात की जरूरत नही। उनके लिए तो जगल के अन्दर खाना मौजूद है, परन्तु बांटना है तो मनुष्यों को, धन की इच्छा है तो मनुष्य को। यदि कभी लड़ाई होती है तो मनुष्यों मनुष्यो में आपस में होती है, परन्तु उनकी लड़ाई में बेचारे निरपराध पशु ही मारे जाते हैं। मनुष्यों ने ही दूसरों के धन के हरण करने की इच्छा से बैम, तोपे, बन्दूकें, बम आदि बनाये हैं। इनकी आपस की लड़ाई से हजारों निरपराध पशु मारे जाते हैं। इसीलिए वेदों में उपदेश दिया गया है और आज भी उपदेश का सिलसिला जारी है, तो इस उपदेश का मतलब यही है कि किसी भी तरह से मनुष्यों की भावनाओं में सुधार हो। मनुष्यों की भावनाओ के सुधार में समस्त विश्व के प्राणियों का कल्याण है और उसके बिगाड में प्राणिमात्र को कष्ट ही कष्ट है। यह दुःख इतने क्यों होते हैं? आज दुनिया में स्वार्थ का बाजार बहुत गर्म है। स्वार्थ दुनिया में बहुत ही बढा हुआ है। स्वार्थ ने बढ़ करके इन्सान की विचार शक्ति को मलिन और विकृत कर दिया है। हर एक इन्सान को लोभ और लालच ने इतना नीचा गिरा दिया है कि कहने की कोई बात ही नहीं। यह कम्बख्त लोभ की भावना कब तक बढ़ती जायेगी? आज हर एक मनुष्य में वैश्यवृत्ति काम करने लग गई है। लोग कहते हैं कि यह ब्राह्मण है पर वह ब्राह्मण कहां! वह कभी ब्राह्मण नहीं हो सकता जिस के अन्दर वैश्यवृत्ति हो, जो धन के लालच मे पड़ा हुआ है। लोग कहते हैं कि यह राजपूत है, परन्तु वह राजपूत है कहां! वह कभी राजपूत नहीं हो सकता जिसके अन्दर वैश्यवृत्ति काम कर रही है। ब्राह्मण में वैश्यवृत्ति क्षत्रिय में भी वैश्य-वृत्ति हो गई है। वैश्य में तो वैश्यवृत्ति चाहिये ही थी। धन में लोभ होना ही वैश्यवृत्ति है, वैश्य का तो काम ही धन कमाना है परन्तु आजकल तो शूद्रों में भी वैश्यवृत्ति हो गई है। अब अगर खयाल करके देखो तो धन कोई बुरी चीज नहीं है, लेकिन अच्छी चीज होने पर भी यह तीसरे दर्जे की चीज है। यह तीसरे दर्जे पर ही अच्छी लगती है, पहले दूसरे या चौथे दर्जे पर नही। जैसे—

एक बालक है, उसका काम है विद्या पढ़ना और शारीरिक शक्ति बढाना। जब शारीरिक शक्ति खूब बढ़ जावे और बालक जवान हो जाय तब उसकी शादी की जाती है। शादी कुछ बुरी चीज नहीं है, परन्तु वह जवानी में अच्छी रहती है। अगर जवानी आने से पहले बालकपन में ही शादी कर दी जावे तो वह बहुत नुकसान देने वाली है। पीछे की चीज को पहले और पहले की चीज को पीछे करने से ही बुराइयां और तकलीफें होती हैं।

एक लड़का है, उसे पाठशाला में चार चीजें पढाई जाती हैं। पहले जमा और फिर तकसीम। लड़के को पहले जमा सिखाने के बाद मे ही तकसीम सिखलाई जा सकती है। अगर जमा के पहले ही बालक को तकसीम सिखायेंगे तो वह सकट में पड़ जायेगा। कायदे के मुताबिक पहले लड़के को जमा का कायदा ही सिखाते हैं अर्थात् पहले उसे गिनती सिखाते हैं १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ तक। संख्या तो एक ही है। उसी से ९ तक बनी है। परमात्मा भी एक है। वेद मन्त्रों में भी यही बताया है।

न द्वितीयो न तृतीयो न चतुर्थो न पंचम इत्यादि।

जमा सिखाने में पहले एक से सिखाना पड़ता है। सौ के आदि मे भी एक है मध्य में भी एक है और अन्त में भी एक है। परमात्मा भी एक है। असल संख्या तो एक ही है। एक सब में मौजूद है, तीन मे दो मौजूद है लेकिन २ मे ३ मौजूद नहीं है। ऐसी कोई भी संख्या नही है, जिसके अन्दर एक न हो। तीन, चार और नौ इन सब में एक-एक मौजूद है। यह समझ लीजिए कि एक और एक दो होंगे। वास्तव में तो एक ही एक है, अब देखें कि आगे चलकर संख्या ९ तक ही है। आप पूछेंगे क्यों? तो इसका उत्तर है जो संख्या है वह पूर्ण संख्या है। एक जो संख्या है यह सर्वतन्त्र स्वतन्त्र संख्या है, क्योंकि यह ८ में, ९ में, ७ में, ६ में, सब में ही पाई जाती है क्योंकि ८-९ वगैरह संख्याओं की व्यावहारिक सत्ता है, परमार्थ में तो एक ही एक नजर आता है। एक बात तो यह हुई, अब दूसरी बात यह है कि यह सर्वतन्त्र और स्वतन्त्र क्यों है? जो संख्या आदि, अन्त और मध्य में तथा सब जगह रहेगी वह सर्वतन्त्र और स्वतन्त्र कही जायेगी। ९ को पूर्ण संख्या क्यों कहते हैं? पूर्ण संख्या वही है जो अपने में न्यूनता न आने देवे। अफ्रीकी लोग, जो सीमा पर रहते हैं उनके एक बच्चे से किसी ने पूछा कि—

तुम यह बताओ कि तुम अपनी कौम में कभी अपने स्वार्थ के लिए हानि करते हो या नहीं? तो उस बच्चे ने जवाब दिया कि हमारी कौम अगर सौ वर्ष तक किसी की गुलामी में रह जायेगी तभी हम में ऐसे खयाल पैदा होंगे। जो स्वतन्त्र आदमी है क्या वह कभी परतन्त्र हो सकता है? वह हर तरह से अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करेगा।

हम लोग वेद को मानने वाले हैं। हम अपने को ऋषि मुनियों की सन्तान कहते हैं। ओ३म् का जप करते हैं परन्तु जब तक हमारा व्यवहार न सुधरेगा, ओम् हम को ऊचा नहीं उठा सकता। अगर हमारा व्यवहार ऊंचा उठ जायेगा तो हम भी ऊचे उठ जायेंगे। अगर हमारा व्यवहार नीचे गिर जायेगा तो हम भी नीचे गिर जायेंगे। आप कहेंगे कि व्यवहार तो सैकड़ों प्रकार के हैं। हम किन किन को शुद्ध करें? तो मैं आप लोगों से कहता हूं कि आप तीन बातों को शुद्ध कर लें तो आप के सब व्यवहार सही हो जायेंगे। जो छोटे अर्थात् बच्चे हैं उन पर आप दया रक्खें और जो जवान आदमी अर्थात् बराबर वाले हैं उनसे प्रेम रक्खें और जो बुड्ढे लोग हैं उनकी इज्जत करें। इन तीनों बातों पर अब आप अच्छी तरह अमल करेंगे तब फिर आप देखिये कि कौन सा बुरा काम कर सकते हैं? अब जो आप से बडे होंगे उनकी तो आप इज्जत करेंगे इसलिए उनके साथ कोई भी बुराई नहीं कर सकते। और जो आपकी बराबरी के हैं उनके साथ आप प्रेम करते हैं। इसलिए उनके साथ भी आप छल कपट नही कर सकते, क्योंकि मोहब्बत के साथ कपट कैसा, और आप मे जो छोटे हैं उन पर आप दया रक्खेगे। कोई भी चीज आपके पास आई तो आप उसे पहले बच्चे को दिये बिना नही खा सकते। इन तीन नियमों पर चलें तो संसार बच सकता है। और काम, क्रोध और लोभ इन तीनों को त्याग देवें तो संसार बन सकता है।

काम क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्

श्रीकृष्ण जी ने गीता में कह दिया है कि काम, क्रोध और लोभ इन व्यसनों को त्याग देने से मनुष्य सुखी हो सकता है, परन्तु आज हर एक इन्सान में लोभ बढ़ गया है। पैसा होगा तो मोटर ले लूंगा, सिनेमा देख आऊंगा, आनन्द से रहूंगा, मौज करूंगा आदि-आदि। आज पैसे की इतनी कदर बढ़ गई है। इसी से इतने दुःख बढ़े हुए हैं और परमेश्वर को ससार पीछे डाल रहा है, इसलिए ज्ञान ही का सब से पहला दर्जा है। पैसा दुनिया के लिए अच्छी चीज है। पैसा लेन-देन के व्यवहार के लिए बना है। आप मेरे पास से ले लें,

निर्लोभता

मैं आप के पास से ले लूं, मगर पैसा है— वह ज्ञान के साथ आता है। मनुष्य को अगर ज्ञान पैदा होगा तो पैसा अपने आप आ जायेगा, फिर वह किसी के रोकने से नहीं रुक सकता।

अगर ज्ञान नहीं, तब वह ईश्वर को नहीं देख सकता। देखो! एक सेठ है उसके दो मुनीम हैं। एक की आयु करीब २४-२५ वर्ष की है और दूसरे की करीब २०-२१ वर्ष की। दोनो ही होशियार हैं, लेकिन सेठ एक को ४५) रु० और दूसरे को २५) रु० मासिक देता है। एक दिन २५) पाने वाले मुनीम ने कहा—सेठ साहब! मुझे २५) देते है और उसको ४५) रु० इसका क्या मतलब! देखो? हम दोनो बराबर हैं। दस्तखत देख लीजिए दोनो के बराबर हैं। जितनी देर यह काम करता है उतनी देर मैं भी काम करता हूं। हम दोनो ही आपके नौकर है। जैसा यह शरीर से पुष्ट है वैसा ही मैं भी हूं तब यह भेद क्यों? सेठ ने कहा—इसके पास जो चीज है वह तेरे पास नही है। उसने कहा—क्या? सेठ ने उत्तर दिया, यह तेरे से बुद्धिमान् ज्यादा है। मुनीम ने कहा— आप इस बात का इम्तहान कर लीजिये। सेठ ने कहा—अच्छा फिर नाराज तो नहीं होगे? नहीं, तो ठीक है मौका आने पर कर लेंगे। थोड़े दिन बाद जायफल लदे ऊंट आये। सेठ ने उसको कहा कि जाकर पूछो कि ऊंट पर क्या चीज आई है और बेचना है या नहीं? मुनीम उसके पास गया और बोला—तुम्हारे पास क्या है? उसने कहा, जायफल है। बेचेगा? हां, बेच लेंगे। बस इतना पूछकर वह चला आया और सेठ से बोला—जायफल है और वह बेचने को कहता है। दूसरे को कहा—अब तुम जाकर पूछो। दूसरा उठा और भाव बाजार में पूछता गया कि जायफल क्या भाव है? एक ने कहा १॥) सेर क्या तुम जायफल डेढ़ सेर के भाव से मोल ले लोगे? उन्होंने कहा—नहीं। आखिर छटांक ऊपर १।) सेर पर तय हुआ। पचास रु० का जायफल उस व्यापारी का नोट किया। फिर दूसरे को पूछा तीसरे को पूछा, इस प्रकार सब का भाव लिख लिया। तब मुनीम ने उसको जाकर पूछा—क्या जायफल है। उसने कहा, है। बेचेगा? हां। किस भाव बेचेगा? जैसा भाव बन जायेगा, बेच देंगे। अच्छा दो सेर दोगे? नहीं इतना नहीं देंगे। अन्त में एक छटांक कम दो सेर तय हुआ। अब वह उन सब दुकानदारों को बुला लाया और सबों को जितना जितना कहा था, तोल दिया और उनके पास से रुपये लेकर उस ऊंट वाले को दे दिये। छः छः छटांक का उसे नफा रहा और उसको लेकर उसने बेच दिया। तो इस तरह दो सौ रुपये का नफा उसे हुआ। वह दो सौ रुपये दुकान पर लाकर रख दिये। अब सेठ ने पूछा— यह कैसे रुपये? उसने कहा कि मैं जब गया तो सब दुकानदारों से भाव पूछ लिया और पूछ करके इसका व्यापार किया जिसमें छः छः छटांक का नफा रहा, उसको बेचकर यह रुपया लाया हूं। तब उसने दूसरे मुनीम से कहा कि सुनो, तुम भी गये थे और यह भी गया, परन्तु इसने भाव पूछ लिया, बेच भी दिया और बाहर ही रुपया भी चुका दिया और उल्टा दो सौ रुपया नफा का ज्यादा लेकर आया। यही कारण है, जिससे इसको ४५) रु० मिलते हैं। वह शरमिन्दा हो गया। यह तो एक मामूली बात मैंने आपको बताई। ज्ञान जिस वक्त विमल हो जायेगा आपको हर एक चीज असलियत में नजर आवेगी। व्यवहार में आपका ज्ञान अन्धा है। वह ज्ञान अन्धा है। वह ज्ञान जिस दृष्टि से निकलता है परमात्मा को नहीं देख सकता। जब हम रोज पढ़ते हैं कि भाई-भाई को प्रेम के साथ रहना चाहिए पर दिन भर प्रेम करे और शाम को रोज हमेशा लड़ लेवे, इसका तो कोई ठिकाना नहीं। उपदेश लाभकारी तो सिद्ध है मगर जब उस पर अमल किया जावे तो तुम्हारा जीवन परमेश्वरमय बन जावे। क्या लड़ना अच्छा है? ज्ञान से सोचो। प्राय समाज आज काम कर रहा है उसका काम कुछ बढ़ा, वह मुश्किल में पड़ा और उसका सामना भी किया। परन्तु यह तो इतना ही है जैसे एक आदमी को सचेत करके कह दिया, यह मंजिल नहीं है इस मंजिल से जाओ। अब तुम ठीक मंजिल के सामने खड़े हो पर मंजिल तय करना बाकी है। अगर आप भी यह समझ लो कि यह उपदेश हमारे हित के लिए कर रहे हैं। उस पर चलने लग जाओ तो कितना लाभ हो जावे, लेकिन जो बोले सो कुण्डा खोले, जो कहे सो करे, हम से तो नहीं होता। भाई! यह बात नहीं बनती। सुनो, ज्ञान का तकाजा है जिस दिन तुम ज्ञान-मय उपदेश पर चलने में कामयाब हो जावोगे तो तुम्हारी ताकत नहीं रुक सकती।

मुक्ति मुक्ति मागूं नहीं
भक्ति दान दे मोही।
और कोई याचूं नहीं,
निश दिन याचूं तोही॥
आ गया तेरी शरण जब,
तो मुझे अब भय कहाँ।
मैं मेरा, किश्ती तेरी,
साहल तेरा दरया तेरा॥
तेरे दर को छोड़कर
जायें कहां हम बेनिगा।
या बना दे अपने जैसा
और कर दे दर हमें॥

(पृष्ठ २ से आगे)

यज्ञ और शान्ति

संसार के जन्म मृत्यु रूपी चक्कर से छूट जाते हैं, तथा परमानन्द मे रहते हैं। मन्त्र आगे चेतावनी देता है कि 'अन्ति सन्न न पश्यति' जो वस्तु हमारे अत्यन्त समीप सम्पर्क मे होती है उसका ध्यान नहीं रहता है। मानव शरीर के 'हिरण्यमय देश हृदय गुहा पुरीतत' में आत्मा परमात्मा का मिलन साक्षात्कार होता है, इस अति समीपता को मानव नहीं जानता है। इसलिए संसार के चक्कर में उसे ढूंढता फिरता है। जैसा कहा है—

मैं सरे अर्शवरी ढूंढ रहा था तुझको।
तेरे कदमों में थी जन्नत,
मुझे मालूम न था॥

यजुर्वेद इसी आध्यात्मिक रहस्य को स्पष्ट करता है—

'हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहित मुखम्।' इस सत्य स्वरूप परमात्मा का द्वार अर्थात मोक्ष का द्वार संसार के सुवर्ण आदि चमक दमक विषयभोग धन सम्पत्ति से छिपा रहता है। मानव इस सृष्टि की कीली रूप परमात्मा को नहीं देख पाता है। मान्यताओं, मर्यादाओं सीमाओं आदि रूपी बने बनाए चौखटों में बंधा रहता है। यह चौखटे प्राय तीन मुख्य रूप में पाये जाते हैं—पूंजीवाद, साम्यवाद तथा समाजवाद। तीनों अपने अपने ढंग उपाय तरीके से समाज में संतुलन समानता सुख शान्ति लाने का प्रयास व प्रयत्न करते हैं तथा इसके हामी हैं। एक पार्टी दूसरी को हराने का प्रयास इसी आधार पर करती है कि वही समाज मे सुख शान्ति ला सकती है। वही मानव का सही मार्गदर्शन कर सकती है। मैंने वर्णाश्रम के विवेचन में इनका कुछ तुलनात्मक विश्लेषण कर प्रतिपादित किया है कि वैदिक समाजवाद ही इन समस्याओं का उचित समाधान करता है। जो व्यक्तिगत विभिन्नता, समानता स्वतन्त्रता सहअस्तित्व विश्वबन्धुत्व विश्वशान्ति का आधार है।

चक्की की कीली सदा स्थिर रहती है जिस पर पाट घूमता है। संसार में ऐसी कोई मशीन नहीं है जो बिना कीली के घूमती हो यद्यपि वह कीली प्रत्यक्ष व परोक्ष हो। इसी प्रकार सृष्टि के सूक्ष्मतम इलैक्टोन से लेकर सूर्य, चांद पृथ्वी, निहारिकाओं आदि आकाशीय पिण्डों की स्थिति है। प्रत्येक पिण्ड दूसरे के सापेक्ष से घूमता है। यही सृष्टि का नियम है कि प्रत्येक अस्थायी गतिशील पिण्ड छोटा या बड़ा किसी स्थायी आधार के बिना टिक नहीं सकता है। विज्ञान गति की परिभाषा करता है कि जब कोई वस्तु अपने पर्यावरण की अन्य वस्तुओं के सापेक्ष से स्थान परिवर्तन करती है तो उसे गति कहते हैं। वैज्ञानिक परिभाषा के समानान्तर उपनिषद् की भाषा में भी सृष्टि का यह मूल रहस्य छिपा है कि सृष्टि की गतिशीलता मे कोई गति रहित आधार है। अत सापेक्षवाद मे सदा कोई निरपेक्ष छिपा रहता है। इसी निरपेक्ष आधार को वैदिकदर्शन 'परमात्मा' कहता है। यही वेदान्तदर्शन कहता है 'जन्माद्यस्य यतः' वही ब्रह्म इस सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय करता है। अत इस विविध सृष्टि मे उसी आधार पर परमात्मा के दर्शन होते हैं। देखने वाले को आंख चाहिए।

मानव समाजरूपी वृत्त मे व्यक्ति एक केन्द्र-बिन्दु के समान है। यही समाज रूपी वृत्त मानव को अपने बने बनाये चौखटों मे बांधना चाहता है। इसी संकुचित तथा संकीर्ण परिधि को मानव अपने व्यवहार, आचरण से विशाल तथा विस्तृत करना चाहता है अत उसकी आत्मा का विकास होता जाता है। तब वह 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' अपने समान सब जीवों को समझ तथा अपने चारों तरफ सब दिशाओं मे अपने मित्रों को समझता है तभी सर्वे भवन्तु सुखिनः सब के सुख शान्ति की भावना करता है। इसी ध्येय व लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु वैदिक जीवन दर्शन ने तीनों पुत्रैषणा, वित्तैषणा तथा लोकैषणा का ऊर्ध्वीकरण कर मानव को मानव बनाने का उद्देश्य दिया है। अत वैदिक समारोह उत्सव त्यौहार आदि की समाप्ति पर शांतिपाठ 'ओ३म् द्यौः शान्ति अन्तरिक्षं शान्तिः सर्वम् शान्तिः।" का पाठ होता है कि सब जड़ चेतन शान्तिदायक कल्याणकारी हो।

विश्व के सभी राष्ट्र शान्ति के समर्थक हैं परन्तु उसकी प्राप्ति हेतु अशान्ति तथा हिंसा उत्पन्न करने वाले अस्त्र शस्त्र अणुबम आदि के निर्माण हेतु दिन-रात लिप्त हैं बमों के विस्फोटों की रोशनी की चकाचौंध मे अन्धे हो रहे हैं। विद्युत् प्रकाश के कुमकुमों की रोशनी चमचमा रही है परन्तु एक दूसरे के मन भय अन्धविश्वास, घृणा आदि से भर रहे हैं। दुनिया विनाश, अन्धकार की तरफ जा रही है। किसी ने सुन्दर कहा है—

बाहर रोशनी खूब हो रही है,
दिल हो रहे हैं मैले।
अंधेरा आ जायगा जहां मे,
भर यही रोशनी रही॥

अत इन साधनों की होड़ में गोल मेज कांफ्रेंसें भी विश्व शान्ति स्थापित करने मे समर्थ नहीं हो सकती। संसार का नियम है कि साधारण व्यवहार मे भी गले मिलने मे भी दोनों को झुकना पड़ता है। इसी प्रकार एक राष्ट्र को दूसरे का समान अधिकार सहअस्तित्व समानता आदि का आधार मानना होगा। यही आदर्श महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दसवें नियम 'सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतंत्र रहें।' तभी विश्व

(शेष पृष्ठ ८ पर)

(पृष्ठ ४ से आगे

महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत

सम्भव नही है। अनुशासन बिना दण्ड के सुचारु रूपेण स्थापित नही हो सकता। दण्ड के लिए वेद मे व्यवस्था की गई है। इसे एक रूपक द्वारा स्पष्ट किया गया है। जिस प्रकार एक कुम्हार घड का निर्माण करते समय कच्चे घडे को थपकी मारकर मजबूत बनाता है। साथ ही वह थपकी मारते समय इस बात का पूर्ण ध्यान रखता है कि कही घडा टूट न जाये। इसी प्रकार दण्ड देते समय गुरु भी शिष्य के निर्माण मे स्नेह का पूर्ण ध्यान रखे।

अनुशासन मे विकसित बालक, जब युवावस्था को प्राप्त करता है तो वह आत्म अनुशासन स प्रेरित होता है। उसमे सोचने समझने की मेधा उत्पन्न हो जाती है। वह सत् असत् का निणय करने की क्षमता को प्राप्त कर लता है। वह हम के ममान नीर क्षीर विवकी बन मुक्ता को प्राप्त कर लेता है। गुरुकुल मे रहकर अध्ययन करन वाले बालक मे आत्मनिभ रता का भ व उत्पन्न होता है। जो उस जीवन म सदैव उच्चता भी ओर ले जाता है। आत्मनिभरता के कारण ही उसे कभी जीवन मे पराङ्मुखी नही होना पडता है। साथ ही वह कर्मशील हो ध्येय की प्राप्ति मे अग्रसर होता है। ऋषि दयानन्द के अनुसार गुरुमात्र गुरु नही अपितु वह आचार्य प्रथम होता है। आचरण की प्रतिष्ठा को अपने से अग्र मानते हुए वह गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त कर विदा होत हुए शिष्य से कहता है— यान्यस्माक सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि। अर्थात् हे शिष्य! जो भा मेरे अच्छ गुण हैं उन्हें ही तुम ग्रहण करना तथा अन्यथा नही। इससे महान् गुरु का आदर्श दूसरा कोई नही हो सकता। गुरु त्याग की भावना से ज्ञान प्रदान करता है तथा शिष्य सेवा एव समर्पण की भावना से उसे ग्रहण करता है। यही मूल तत्त्व गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को है। इसी को ही स्वामी दयानन्द ने आर्ष पद्धति स्वीकार किया है। शिक्षा के लिए गुरुकुलो के विकास पर ऋषि दयानन्द ने बल दिया। इनकी दृष्टि में भारत के अन्तर्गत इसी शिक्षा प्रणाली का प्रयोग होना चाहिए ताकि भारत की सन्तान आचरणवान हो सके।

ऋषि दयानन्द सह शिक्षा के पक्षधर नही थे। इनकी दृष्टि मे बालक एव बालिकाओ के लिए पृथक् पृथक् गुरुकुलो की व्यवस्था होनी चाहिए। सह-शिक्षा नैतिकता पर सर्वप्रथम कुठाराघात है। बालक के निर्माण की जब अवस्था होती है उस समय कही वह बाह्य आकर्षण में खोकर अपने जीवन को भ्रष्ट भ्रष्ट न कर दे। इसकी आशका कही अधिक थी। सयम एवं अनुशासन से ही निर्माण सभव है। भोग तो जीवन का ह्रासकारी पग है भोग की भावना चाहे मानसिक ही क्यो न हो? उसको पतन की ओर ही अग्रसर करती है। भोग भोगने से शान्त नही अपितु अग्नि मे घृत के समान और अधिक प्रज्वलित हो जाते हैं। वस्तुत "Prevention is better than cure अर्थात् उपचार से तो रोग को पहले ही रोकथाम बेहतर है। जीवन के उच्चतर विकास के लिए सह-शिक्षा विशेष रूप से किशोरवय के युवक-युवतियो के लिए मृग मरीचिका ही है। जिसमे प्राप्त तो कुछ नही होता अपितु जो कुछ अपना होता है उसे भी वह गँवा बैठता है।

गृहस्थ आश्रम ब्रह्मचय आश्रम के उपरान्त आता है। ब्रह्मचर्य की नीव पर ही गृहस्थ का प्रासाद आधारित होता है। गृहस्थ आश्रम कम प्रधान आश्रम होने के कारण श्रेष्ठ आश्रम है। गृहस्थ अपने कम के द्वारा शेष सभी आश्रमो का पालन पोषण करता है। इसमे 'विवाह द्वारा विशेष भार का वहन करना ही अभिप्रेत है। विवाह उसी आयु मे होना चाहिए जिसमे वह भार वहन करने का सामथ्य हो। ऋषि दयानन्द ने बाल विवाह का सवत्र जहा विरोध किया वहा पुरुष के लिए न्यूनतम विवाह की आयु २५ वर्ष तथा स्त्री के लिए १६ वष रखी है। साथ ही इसे आयु की दृष्टि से निकृष्ट कोटि का विवाह माना है। मध्यम श्रेणी का विवाह ३६ वर्ष के पुरुष तथा २० वर्ष की स्त्री तथा उच्च श्रेणी का विवाह ४८ वष पुरुष तथा २४ वर्ष की स्त्री का स्वीकार किया गया है। यदि ऋषि के प्रस्ताव को व्यवहारिक रूप दे दिया जाता तो भारत का परिवार नियोजन कार्यक्रम स्वत ही पूर्ण हो जाता। भारत की आबादी सुरसा के मुह के समान विकराल एव भयकर रूप ही धारण नही कर पाती।

ऋषि दयानन्द स्पष्ट रूप से उद्घोषणा करते हैं कि यदि विवाह के बाद भी कई वर्षों तक ब्रह्मचर्य का पालन कर सन्तान को प्राप्त किया जाये तो वह निरोगी, स्वस्थ, पुष्ट एव गुणी होती है। श्री कृष्ण ने विवाह के बाद बारह वर्ष तक अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन कर सन्तान को प्राप्त किया। मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र भी सन्तान को विवाह के १४-१५ वर्ष बाद प्राप्त करते हैं। दयानन्द के आदश एव सपनो का भारत नि सन्देह एक सुदृढ भारत होता। जहा बाह्य साधनों पर कम आस्था रखकर आत्मसयम पर अधिक बल दिया जाता। तभी वैदिक माता की सिंह गर्जना चरितार्थ होती कि "मम पुत्रा शत्रुहणो अथो मे दुहिता विराड्" अर्थात् मेरे पुत्र तेजस्वी वर्चस्वी बनकर शत्रुओं का हनन कर सकें एव मेरी पुत्रियां भी मेरे समान विराट् गुणवती हों।

वानप्रस्थ तथा सन्यास की स्थिति गृहस्थ आश्रम के अनन्तर है। औसत घटती उम्र के कारण मनुष्य की आयु को १०० वर्ष तक स्वीकार नही किया जा सकता। केवल 'जीवेम शरद शतम्" की प्रार्थना ही की जा सकती है। सामान्यत यह समझना चाहिए कि सेवा-निवृत्त होने के अनन्तर अपने जीवन को अपनी गृहस्थी मे ही नही समाना चाहिए अपितु उसका विस्तार लोक कल्याण मे करना चाहिए। "वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का विस्तार ही इन आश्रमो का मूल उद्देश्य है। अर्थात् स्व को पृथक् कर पर उपकार की भावना से गृहीत ही जीवन-यापन करना है।

ऋषि के अनुसार वानप्रस्थ की स्थिति ५० वर्ष की आयु के पूर्ण होने पर है। ऐसी स्थिति मे यदि व्यक्ति अपने को लोक कल्याण मे लगाता है तो इससे देश का भी कल्याण होगा। सेवा निवृत्ति की आयु यदि ५८-६० वष कम से कम करके ५० वष कर दी जाये तो इसमे देश मे काय क्षमता का विकास होगा। साथ ही नवयुवको को रोजगार के अधिक एव सुलभ साधन उपलब्ध होगे। परिणामत जीवन के अन्तिम क्षण तक भोग की वितृष्णा से मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर सकेगा।

आज जनरेशन गैप का नारा दिया जाता है। पिता-पुत्र मे सघर्ष की भयावह स्थिति पैदा होती है। सास-बहू के झगड सामाजिक बनते जा रहे हैं। वृद्ध माता-पिता जहा घर मे अनादर के पात्र बनते हैं वहा वे समाज मे लोक-कल्याण की भावना से महती प्रतिष्ठा के पात्र बन सकते हैं। पौत्र होने पर व्यक्ति अपने को घर के सकीर्ण दायरे से निकालकर समाज के विस्तृत दायरे मे ले जाये। ऋषि दयानन्द का यह कथन आज के युग मे बढ़ते हुए भयावह पारिवारिक सकट का समुचित निदान है। वानप्रस्थ मे तो लोककल्याण के साथ साथ अपनी सन्तान को यदा कदा उचित परामर्श एव निर्देश देते रहें परन्तु सन्यास तो मानवीय जीवन की उत्तरोत्तर चरम अनासक्ति की परम श्रेष्ठ स्थिति है।

महर्षि दयानन्द ने राजनैतिक दृष्टि को भी सामाजिक दृष्टि के समान ही सर्वजन-हित-अर्थ रखा। राजा एव प्रजा के सम्बन्ध को पिता-पुत्र के रूप में स्वीकार किया गया है। महर्षि जनतान्त्रिक राज प्रणाली के समर्थक थे। वे राजा पर पूर्ण अकुश के पक्षपाती थे। वे शतपथ ब्राह्मण के इस कथन से पूर्णतया सहमत थे कि जो राजा स्वतन्त्र एव स्वाधीन होता है, वह प्रजा का नाशक होता है। वह उन्मत्त होकर प्रजा को पीडित करता है। जैसे सिंह आदि अन्य पशु को मार कर खा जाते हैं, उसी प्रकार स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है।

कर व्यवस्था के विषय मे स्वामी जी का यह मत है कि जो भी कर राजा के द्वारा ग्रहण किया जाये, उसका उपयोग पूर्ण रूप से जन कल्याण मे ही हो। जिस प्रकार सूर्य पृथ्वी से जल ग्रहण करता है, परन्तु उसे पुन पृथ्वी पर समान रूप से अमृत-वर्षण करके प्रत्यावर्तित कर देता है। उसी प्रकार राजा को भी कर का सदुपयोग करना चाहिए। अति लोभ से वह दूसरो के सुख को नष्ट करने का उपाय न करे। इससे राजा प्रजा के प्रेम एव सम्मान को खो देता है।

राजा के लिए दण्ड व्यवस्था समुचित विचार पूवक ग्रहण करनी चाहिए। क्योकि दण्ड ही समस्त प्रजा का पालन एव उसकी रक्षा करता है 'दण्ड शास्ति प्रजा सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।" परिणामत राजा को परम दण्डाधिकारी की सज्ञा दी गई है। दण्ड-व्यवस्था से ही सज्जनो की रक्षा एव दुष्टो का विनाश हो सकता है। इस सदर्भ मे राजा का शक्तिशाली होना परम आवश्यक है।

ऋषि दयानन्द एक युग स्रष्टा थे। उन्होन भारत का निर्माण आर्यावर्त के रूप मे करने का प्रयास किया। भारत को एक सूत्र मे बांधने का उन्होने अनवरत प्रयास किया। चरित्र को सर्वप्रथम महत्त्व देकर चरित्रवान् को ही "आर्य' ऋषि ने माना। आर्य संस्कृति का निर्माण करने वाले दयानन्द भारत को सामाजिक राजनैतिक एव सास्कृतिक दृष्टि से एक विराट् सदर्भ मे देखना चाहता था। भारत मे आदश की उच्चतम मनोभूमिका का निर्माण ही दयानन्द का आदर्श अथवा सपना था। ●

(पृष्ठ ५ का शेष)

छोड दो। इससे आत्मा पवित्र बनती है और उसकी उन्नति होती है। तभी मनुष्य सुखी होता है। मैत्रेयी को ये बातें बडी अच्छी लगी। उसने सारी धन सपत्ति कात्यायनी को दे दी। उसने कहा—'मुझे सासारिक सुख नही चाहिए। मैं आपके साथ रहकर तपस्या करूंगी। मैं ऐसा ज्ञान चाहती हूं जिससे आत्मा की उन्नति हो। याज्ञवल्क्य जी मैत्रेयी से बडे प्रसन्न हुए। उन्होने मैत्रेयी को अच्छी-अच्छी ज्ञान की बातें बतायी। उसे अपने साथ रखा। दोनों ने यथार्थ मे सुखी जीवन बिताया। तो आओ हम भी ज्ञानी बनकर सुखी जीवन बिता सकें ऐसा प्रयास करेंगे। □

(पृष्ठ ७ का शेष)

शान्ति, विश्वबन्धुत्व, विश्व एकता, एक मानव समाज, एक मानव राष्ट्र का स्वप्न पूरा होगा तभी 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा सफल होगा। तभी मानव को आधिभौतिक, आधि दैविक तथा आध्यात्मिक शान्ति मिल सकेगी।

ओं शान्ति. शान्ति शान्ति।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष संगोष्ठी

राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष सघ के तत्वावधान मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार मे पाचवी राष्ट्रस्तरीय पुस्तकालय सगोष्ठी का शुभारम्भ २३ मई १९८५ को हुआ। सम्मेलन मे देश के विभिन्न पुस्तकालयो म लगभग ६० पुस्तकालयाध्यक्षों ने भाग लिया। गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलपति, श्री बलभद्र कुमार हूजा ने सम्मेलन मे आए प्रतिनिधियो का स्वागत करते हुए कहा कि "आज गुरुकुल को देश के अनेक भागो से आए हुए पुस्तकालयाध्यक्षो के सम्मेलन के आतिथ्य का गौरव प्राप्त हो रहा है। श्री हूजा जी ने याद दिलाया कि स्वामी दयानन्द सरस्वती इस युग के सर्वप्रथम जननायक थे जिन्होने राष्ट्रीय जीवनधारा में पुस्तकालय के महत्त्व को समझा तथा आर्यसमाज के सविधान मे उन्होंने जिन कुछ पदो का गठन किया उनमे एक पद पुस्तकालयाध्यक्ष का भी था। स्वामी जी की मान्यताओ के अनुरूप एक आदर्श समाज के लिए पुस्तकालय का उतना ही महत्त्व है जितना कि जीने के लिये अच्छे वातावरण की आवश्यकता होती है। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय एक ऐसा ऐतिहासिक स्थान है जिसके संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी ने लोगो मे स्वाध्याय को जागृत किया तथा उन्होने गुरुकुल के द्वारा स्वाध्याय की परम्परा को जारी रखने के लिए पुस्तकालय की महत्ता को सर्वोपरि रखा। जिसके परिणाम स्वरूप गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय पुस्तकालय का भारत के पाच विश्वविद्यालय पुस्तकालयो मे से एक प्रमुख स्थान है। श्री हूजा जी ने उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि मुझे आज भी अपने कालेज के पुस्तकालयाध्यक्ष की याद है, जिनके दर्शन होने पर उनके पैर छूने मे मुझे कुछ भी सकोच नही होगा। एक अच्छा पुस्तकालयाध्यक्ष विश्वविद्यालय के आधार को सुदृढ करता है। किसी विश्वविद्यालय के स्तर की जानकारी आप उस विश्वविद्यालय के पुस्तकालय से आसानी से लगा सकते हैं।

राष्ट्रीय पुस्तकालय सम्मेलन के इस अवसर पर गुरुकुल कागडी मे इस पुस्तकालय के अतिथि प्राध्यापक श्री डी० आर० कालिया को भारत सरकार पुस्तकालयाध्यक्ष सघ की ओर से एक मानपत्र भी भेंट किया गया। इनको यह मान पत्र जीवन पर्यन्त पुस्तकालय की सेवाओ के सदर्भ मे दिया गया।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री डी० पी० गुप्ता कुलपति रुड़की विश्वविद्यालय ने कहा 'पुस्तकालय ज्ञान का एक ऐसा आगार है जहां शोध एव शिक्षा का उन्नयन निरंतर होता रहता है। एक अच्छा पुस्तकालय शोध एव शिक्षा को जारी रखने मे सब से अधिक योगदान देता है। पुस्तकालय की भूमिका पूरे शैक्षणिक वातावरण मे शरीर मे रक्त के समान महत्त्वपूर्ण होती है।

इस सम्मेलन का उद्घाटन श्री टी० आर० चन्द्रशेखरन महाप्रबन्धक, भेल रानीपुर, हरिद्वार द्वारा किया गया। उन्होने प्रतिनिधियो को सबोधित करते हुए कहा, कि 'पुस्तकालय की भूमिका जीवन के हर क्षेत्र मे व्यक्ति समाज एव राष्ट्र को उचित निर्णय लेने मे सहायता करती है। ज्ञान सम्पदा के इस वातावरण से हर व्यक्ति समाज एव राष्ट्र को निर्णय सामग्री प्राप्त होती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि पुस्तकालय वैज्ञानिक शोध कार्यरत लाखो वैज्ञानिको को उनके विषय से सम्बन्धित नवीनतम सूचना सामग्री उनके प्रयोगशाला तक पहुँचाए।

भारत सरकार पुस्तकालयाध्यक्ष सघ के अध्यक्ष श्री एम०के०जैन ने प्रतिनिधियो को कहा कि अब धीरे-धीरे शैक्षणिक वातावरण मे तो पुस्तकालय वैज्ञानिको की उपयोगिता महसूस की जाने लगी है। ज्ञान का विस्तार इतनी तेजी से हो रहा है कि पुस्तकालयो पर उसे विश्लेषित करने की जिम्मेदारी आ गई है। पुस्तकालय राष्ट्रीय ज्ञान सम्पदा के प्रतीक हैं। आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्रीय ज्ञान सम्पदा को पुस्तकालय सदर्भ सेवा के मानदण्ड मे एकीकृत करके राष्ट्रीय सूचना सेवाओ की सुनियोजित प्रणाली अपनाई जाए। पुस्तकालयाध्यक्ष का प्रारम्भिक दायित्व पुस्तकालय वैज्ञानिको द्वारा सम्पादित साहित्य की सुलभ जानकारी सम्बन्धित व्यक्तियो तक पहुचाने का हो गया है।

इस समारोह के उद्घाटन के अवसर पर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जगदीश विद्यालकार ने विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा जी को यह विश्वास दिलाया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुस्तकालयो के महत्त्व को सर्वोपरि करने का जो जनमत बनाया था उस भावना को कायम रखा जाएगा।

उक्त सम्मेलन मे अनेक गोष्ठियां हुईं। जिनकी अध्यक्षता, श्री टी० एस० राजगोपालन निर्देशक राष्ट्रीय विज्ञान प्रलेखन सस्थान, श्री एस० एस० मूर्ति निदेशक राष्ट्रीय रक्षा प्रलेखन सस्थान एव श्री पी० पी० मगला डीन कला सकाय दिल्ली विश्वविद्यालय ने किया।

सम्मेलन मे सब से अधिक जोर इस बात पर दिया गया कि विश्वविद्यालय एव शोध सस्थानो मे पुस्तकालय की बढती भूमिकाओ को स्वीकार किया जाना चाहिए। पुस्तकालय वैज्ञानिकों की सेवाएं शोध प्रयोगशाला मे कार्यरत वैज्ञानिको को उनके विषय से सम्बन्धित सूचनाएँ पहुंचाने की है। इसीलिए प्रत्येक शोध सस्थानो मे कम्प्यूटरो द्वारा सूचना सेवाओ को प्रारम्भ किया जाना चाहिए।

सम्पादक के नाम पत्र

सादर नमस्ते! मैं १० मई स १६ जून तक बाहर गया था। मेरी अनुपस्थिति मे आये 'आर्यसदेश' के अक मिले। इस साप्ताहिक का रूप निखर रहा है और सामयिक तथा उपयोगी सामग्री पाठको तक पहुच रही है। २३ जून के ताजे अक मे अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल' के उदगार पढकर बडी प्रसन्नता हुयी। प्रो० बलराज मधोक का लेख आरक्षण नीति पर पुनर्विचार जरूरी ' सामयिक एव राष्ट्रीय समस्या पर सभी को पुनर्विचार करने की प्रेरणा देता है। आरक्षण की नीति घटिया राजनेताओ की चाल की के कारण ही हमारे देश मे जारी है। नौकरी मे इस नीति के कारण योग्यता और वरिष्ठता कुण्ठाग्रस्त हो रही हैं। कर्मचारियो मे इस कारण आपसी मनमुटाव और वैमनस्य देखे जा रहे हैं जो किसी भी प्रगतिशील देश के लिए खतरनाक कहे जा सकते हैं। केवल राष्ट्रीय अखण्डता और एकता का नारा लगा देने मात्र से कोई देश सुरक्षित नही हो जाता। राजनेताओ को समय रहते गलत नीतियो के फलस्वरूप गुजरात मे हो रहे हत्याकाड के खतरे को समझ लेना चाहिए और पूरे देश मे फैलने से पहले इस आग को बुझाने की चेष्टा करनी चाहिए। राष्ट्र के हित मे भूल सुधार के लिए किसी भी सकोच की आवश्यकता नही होती, तभी तो, बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय का उद्देश्य पूरा हो सकता है।

—ब्रजभूषण दुबे
३ कोराचद रोड कलकत्ता ७०००१४

आपके कुशल व श्रेष्ठ सम्पादन मे आर्यसन्देश का रग रूप दिनो दिन निखरता जा रहा है। पत्रिका की छपाई व सफाई अपने सुन्दर कलेवर के साथ बेजोड है। आप जैसे विद्वान् सम्पादक की कर्मठता एव सच्ची लगन का ही प्रतिफल है जो आर्यसन्देश की गूज दूर दूर तक फैलती जा रही है। जिसके लिए आप बधाई के पात्र हैं।

मैं वर्षों से अन्य आर्य पत्र पत्रिकाओ के साथ आर्यसन्देश' भी मगाता रहा हूँ पर अन्यो के अलावा इसकी शान ही कुछ और है। हर अक की प्रतीक्षा बनी रहती है।

भवदीय
मोहनलाल शर्मा रश्मि

आपके द्वारा प्रकाशित 'आर्यसन्देश का वर्ष ९ अक ३२ मेरे सामने है। वस्तुत यह पत्रिका मानव जीवन को नया आलोक देने मे प्रकाशपुञ्ज के समान है। इस पत्रिका मे उपनिषद् कथा माला ७ "सत्य की महिमा' एव गरीबी व बेकारी कैसे दूर होगी? श्री ओमप्रकाश त्यागी द्वारा लिखित लेख बहुत ही अच्छे लगे।

आप जिस सूझबूझ, लगन, कौशल व मेहनत से इस पत्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं उसके लिए मैं आपको हृदय से बधाई देता हूं। आर्यसन्देश पत्रिका राष्ट्र विकास को गतिशील बनाने मे अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रहे। इसके उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक मगलकामनाएं स्वीकार कीजियेगा।

भवदीय
श्यामसुन्दर शर्मा
(सम्पादक—पालिका समाचार)

आजकल नई शिक्षा नीति बनाने की चर्चा चल रहा है। आर्यसन्देश मे भी पत्रो एव सम्पादकीय द्वारा इस विषय पर विचार प्रकट किये गए हैं। एक उचित [illegible] महत्त्वपूर्ण स्थान है। आर्यसमाज के पास शिक्षा का पर्याप्त अनुभव है और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाने मे वह महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकता है। अत सार्वदेशिक सभा अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एक विचार गोष्ठी का आयोजन करे जिसमे शिक्षा नीति के सभी पहलुओ पर विचार विनिमय करके एक सम्पूर्ण शिक्षा नीति का मसौदा सरकार को दिया जाय और उसे अपनाने का अनुरोध किया जाये। आर्यसन्देश' भी इस विषय पर लेख आमन्त्रित करके एक विशेषाक की योजना बनाये तो उचित होगा। इस समय सही शिक्षा नीति के निर्धारण करने से राष्ट्र की कई समस्याओ का समाधान होगा और राष्ट्र इक्कीसवी शताब्दी मे अधिक आत्मविश्वास एव आत्म गौरव लेकर प्रवेश करेगा।

गोष्ठी मे शिक्षा नीति से सम्बन्धित निम्न बातो पर विचार किया जा सकता है—

१ शिक्षा का मूल उद्देश्य।
२ शिक्षा का विभाग एव प्रत्येक विभाग की अवधि।
३ शिक्षा का माध्यम।
४ पाठ्य क्रम।
५ शिक्षण सस्थाओ का स्वरूप।
६ अध्यापको का चयन।
७ अध्यापको को तैयार करने की योजना।

स्थानाभाव के कारण यहां विस्तृत रूप से उपरोक्त विषयो पर विचार प्रकट करना सम्भव नही है अत सक्षेप मे अपने विचार दे रहा हूं।

शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र का निर्माण एव ज्ञानवर्धन होना चाहिए। शिक्षा का प्रथम चरण जिसे मूल शिक्षा कह सकते हैं, चरित्र निर्माण के

समाचार-सन्देश

दिल्ली—आर्यसमाजों के साप्ताहिक कार्यक्रम

२८ जुलाई ८५ रविवार

आर्यसमाज प्रतापनगर—प० हरिश्चन्द्र आर्य। अमरकालोनी—पण्डित वेदव्यास संगीत कलाकार। किंग्जवेकैम्प—महात्मा देवेश भिक्षु। किशनगंज मिल एरिया—मा० मोहन साथी। गीता कालोनी—प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री। गुडमण्डी—स्वामी यज्ञानन्द सरस्वती। गोविन्द भवन—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री। तिमारपुर—प० बलवीर शास्त्री। तिलकनगर डा०—रघुनन्दन सिंह। देवनगर—पण्डित मुनिदेव जी भजनीक। दरियागंज—प० अमरनाथ कान्त। नगर शाहदरा—प वेदप्रकाश शास्त्री। नारायण विहार—डा० वेद प्रकाश महेश्वरी। प्रीतमपुरा—प० विद्व प्रकाश शास्त्री। पंजाबी बाग—प० रमेश चन्द्र वेदाचार्य। पंजाबी बाग एक्स टेन्शन—प० वीरेन्द्र बहादुर। भोगल—प० सोमदेव शास्त्री। महरौली—प० आशाराम प्रेमी। मौडलबस्ती—प० नेत्रपाल आर्य। मोती बाग—प० तुलसीराम आर्य। राजौरी गार्डन—महात्मा मुनिशंकर वानप्रस्थी। रमेश नगर—प० भीष्म शास्त्री। लड्डू घाटी—प० अमीचन्द मतवाला। विनय नगर—प० कामेश्वर शास्त्री। साकेत—प० जय भगवान मण्डली। सोहन गंज—आचार्य श्यामलाल व्याकरणाचार्य। शालीमार पार्क—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती। सदर बाजार—महात्मा राम किशोर वैद्य। हौजखास—प० चुन्नीलाल आर्य। त्रि नगर—आर्यवीर रणजीत राणा। रघुबरपुरा—प० सत्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार। चूना मण्डी—प० अशोक विद्यालंकार।

व्यवस्थापक
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेद प्रचार

निर्वाचन

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत का वार्षिक निर्वाचन वर्ष १९८५–८६ के लिए रविवार दिनांक ७-७-८५ को आर्य समाज मन्दिर में सम्पन्न हुआ।

सभी अधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

प्रधान—श्री रामानन्द शिंगला
उपप्रधान—श्री बाबूराम जी मित्तल
मन्त्री—श्री ठाकुरदास जी बत्रा
उपमन्त्री—श्री मदनमोहन ना
कोषाध्यक्ष—श्री कुलभूषण जी
पुस्तकाध्यक्ष—श्री दारचन्द निर्मोही

अन्य अंतरंग सदस्यों को चुनने का अधिकार उपरोक्त अधिकारियों को दिया गया। इस चुनाव को सर्वसम्मति से कराने के लिए भूतपूर्व प्रधान श्री दलीप सिंह जी आर्य जिन की अध्यक्षता में चुनाव सम्पन्न हुआ की भूरि भूरि सराहना की गई।

ठाकुरदास बत्रा
मन्त्री

आर्य समाज गांधी नगर का वार्षिक चुनाव १४ जुलाई ८५ रविवार को सत्संग के पश्चात् श्री हरिदेव जी शास्त्री, सभा प्रेक्षक की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित अधिकारी चुने गये।

प्रधान—श्री यदुनन्दन जी अवस्थी
उपप्रधान—श्री महेन्द्रपाल वर्मा
　　श्री रामलाल मेहदीरत्ता
मन्त्री—श्री श्यामसुन्दर विरमानी
उपमन्त्री—श्री शिवशंकर गुप्ता
　　श्री ओमप्रकाश गुप्ता
प्रचार मन्त्री—श्री रामभज
लेखा निरीक्षक—श्री हरबसलाल
पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामचन्द्र गुलाटी
आर्यवीर दल अधिष्ठाता—श्री प्रमोदकुमार

श्यामसुन्दर विरमानी

नवीन आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली ५१ का वार्षिक चुनाव दिनांक १६ ६ ८५ को सर्वसम्मति से हो चुका है। जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये है—

१ प्रधान—श्री नेतराम शर्मा
२ उपप्रधान—श्री गिरधारी लाल
३ मन्त्री—श्री दीनानाथ खन्ना
४ कोषाध्यक्ष—श्री सत्यप्रकाश अग्रवाल
५ लेखानिरीक्षक—श्री नारायणदत्त बहल

भवदीय
दीनानाथ खन्ना (मन्त्री)

"कवियों से"

परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली के सरंक्षक आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् नेता श्री प० देवव्रत जी 'धर्मेन्दु' के साठ वर्षीय सामाजिक जीवन की एक हल्की सी झलक से जनसामान्य को प्रेरित एवं उत्साहित करने हेतु उपरिलिखित समिति द्वारा 'कवि की कविता' नामक संग्रह शीघ्र ही प्रकाशित किया जा रहा है। आर्य जगत् की शोभा एवं राष्ट्र के सजग प्रहरी कवियों से नम्र निवेदन है कि वयोवृद्ध आर्य नेता के जीवन से सम्बन्धित अपनी रचना भेज कर कर्तव्य का पालन करें। धन्यवाद!

भवदीय
कमलकिशोर आर्य

श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक का निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भू०पू० कार्यालयाध्यक्ष तथा सार्वदेशिक पत्र के सह संपादक माननीय श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक का ८५ वर्ष की आयु में १६ जुलाई, १९८५ को शाहदरा (दिल्ली) में निधन हो गया है। उनके निधन का समाचार सुनकर आर्य जगत् को एक गहरा आघात पहुंचा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में एक शोक सभा में दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले ने श्री पाठक जी के निधन को सार्वदेशिक सभा के इतिहास में एक अपूरणीय क्षति बताया। उन्होंने बताया कि श्री पाठक जी १९२५ में महात्मा नारायण स्वामी की प्रेरणा से सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में आए और तब से अब तक लगातार ६० वर्ष तक उन्होंने सार्वदेशिक सभा के कार्यालय का सफलता पूर्वक संचालन किया है। किसी भी धार्मिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में इतने लम्बे समय तक एक महत्त्वपूर्ण पदों पर कोई दूसरा सफलता पूर्वक काम करता रहा हो, यह असम्भव है। श्री पाठक जी स्वयं सार्वदेशिक सभा थे, सार्वदेशिक सभा का पाठक जी से अलग करके सोचा भी नहीं जा सकता था। यद्यपि पाठक जी को सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने उपमन्त्री नियुक्त किया था, परन्तु उन्होंने इस पद का अपने नाम के साथ कभी प्रयोग भी नहीं किया। उन्हें श्री महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जैसे प्रभृति उच्चतम कोटि के नेताओं का सान्निध्य एवं मार्गदर्शन व शुभ आशीर्वाद प्राप्त था।

सार्वदेशिक साप्ताहिक भी सन् १९२७ में मासिक रूप में निकलना शुरू हुआ था, तब से ही यह कार्य पाठक जी के हाथ में रहा था और १९६५ से यह साप्ताहिक निकलना शुरू हुआ। इसके अतिरिक्त सभा के अंग्रेजी वैदिक लाइट के संपादन में उनका मूल्यवान् सहयोग प्राप्त रहा। श्री पाठक जी सिद्धहस्त लेखक, और कुशल प्रशासक भी थे। हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू तथा संस्कृत पर उनका पूरा नियन्त्रण था। उन्होंने कई उपयोगी पुस्तकें भी लिखी। सार्वदेशिक सभा के लिए भी उन्होंने कई अमूल्य रचनाएँ प्रकाशित की थी। उनकी रचनाएं तथा लेख भारत के समस्त हिन्दी व अंग्रेजी दैनिक व साप्ताहिकों में भी प्रकाशित होते रहते थे।

श्री पाठक जी के निधन से सार्वदेशिक सभा अपने को अनाथ समझती है। यह सभा स्व० पाठक जी की अमूल्य सेवाओं के लिए सदैव ऋणी रहेगी।

अन्त में शोक प्रस्ताव पारित करके दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की गई और शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की गई।

इसके उपरान्त सार्वदेशिक सभा का कार्यालय बन्द कर दिया गया।

सच्चिदानन्द शास्त्री (उपमन्त्री)

ऋषि भक्तों के नाम एक अपील

आशा पार्क, फतह नगर के साथ लगती एक नई कालोनी है, जहां पर सिख भाई भी पर्याप्त संख्या में रहते है। फतेहनगर देश के बंटवारे के बाद बसा था। इस नगर में गुरुद्वारा और सनातन धर्म मन्दिर तो आरम्भ से ही बन गये थे परन्तु आर्यसमाज मन्दिर अभी तक नहीं बन सका। यहां के चन्द आर्य परिवार आर्य समाज अशोक नगर में जाते हैं और इस समाज के ही सदस्य है। आशा पार्क कालोनी बनने से कुछ आर्य परिवार और यहां पर बस गये हैं जिनके यत्नों से १३-८-८३ को एक नई आर्यसमाज की स्थापना की गई है, जो पारिवारिक सत्संगों द्वारा ही प्रचार कार्य कर रही है। हमारी प्रबल इच्छा है कि इन दो कालोनियों का एक सांझा आर्यसमाज मन्दिर बन जाये जिससे कि वैदिक धर्म का प्रचार इस क्षेत्र में हो सके। यहां की आबादी निम्न आय वर्ग के लोगों की है और धन की कमी के कारण आर्यसमाज मन्दिर बनाने में कठिनाई अनुभव की जा रही है। वैसे साथ लगते डी०डी०ए० के और दिल्ली कारपोरेशन के खाली प्लाट पड़े हैं उन को ऐलाट कराने का यत्न कर रहे हैं। साथ लगते डी०डी०ए० फ्लैट हरिनगर के आर्य सज्जन भी हमारे सदस्य बन रहे हैं।

आर्य जगत् के दानी भाइयों से प्रार्थना है कि इस शुभ कार्य में यहां के आर्य भाइयों की धन से सहायता करके पुण्य के भागी बनें।

शान्तिप्रकाश नारंग
प्रधान आर्यसमाज बी-१६ आशापार्क
जेल रोड नई दिल्ली-१८

सरकार अकाली दल से समझौते के लिए गिड़गिड़ाये नहीं

कानपुर। आर्यसमाज के तत्त्वावधान में एक आम सभा प्रधान जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कानपुर के श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में आर्यसमाज गोविन्द नगर में हुई, जिसमें प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार से मांग की गयी कि वह अपनी गरिमा को कायम रखते हुए देश की एकता व अखण्डता के विघटनकारी करने वाले अकाली दल से समझौता करने के लिए गिड़गिड़ाना छोड़ दे। अकाली दल के नेता जब स्वयं बात करने की प्रार्थना करें तब उनसे पंजाब के हिन्दू प्रतिनिधियों के साथ बैठ कर एक साथ बात करे। सभा में अकाली नेता श्री हरचन्द सिंह लोंगोवाल के कानपुर आने पर विरोध करने का निश्चय किया।

मन्त्री आर्यसमाज
गोविन्दनगर, कानपुर

(पृष्ठ ६ से आगे)

सम्पादक के नाम पत्र

लिए ही होनी चाहिए। बालको-बालिकाओ मे निम्न श्लोको का भाव उनके चरित्र का अग बन जाय—

(१) अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते स
भ्रातरो वावृधु सौभगाय।

(२) अय निज परो वेति
गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानान्तु
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

(३) ईशा वास्यमिद सर्व
यत्किच जगत्या जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा
गृध कस्य स्विद्धनम् ॥

(४) निन्दन्तु नीतिनिपुणा
यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मी समाविशतु
गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु
युगान्तरे वा
न्याय्यात्पथ प्रविचलन्ति
पद न धीरा ॥

शिक्षा का दूसरा भाग जिसे ट्रेनिंग की सज्ञा दी जा सकती है आजीविका अर्जन से सम्बन्ध रक्खें। पाच वर्ष की आयु से पन्द्रह वर्ष की आयु तक सामान्य शिक्षा (मूल शिक्षा) दी जाये जिसके अन्तर्गत चरित्र निर्माण पर बल देते हुए भाषाओ का ज्ञान गणित, इतिहास, भूगोल, धर्म के मूल सिद्धान्त, प्रारम्भिक विज्ञान इत्यादि की शिक्षा का प्रबन्ध हो तथा परीक्षा का परीक्षा व्यावहारिक हो न कि पुस्तक ज्ञान। इसके पश्चात् इक्कीस वर्ष की आयु तक एक विशेष व्यवस्था की शिक्षा दी जाये और स्वाध्याय मे रुचि उत्पन्न की जाये। इक्कीस वर्ष की आयु के पश्चात् किसी विषय मे विशेष योग्यता प्राप्त करने का प्रबन्ध हो। बालको को आसन एव प्राणायाम तथा ब्रह्मचर्य की शिक्षा अनिवार्य हो। भिन्न भिन्न प्रवृत्तियो के लिए ऐसा पाठ्य-क्रम निर्धारित किया जाये जिसमे बच्चो को बोझ न मालूम हो। शिक्षण सस्थाएं शहरो से दूर होनी चाहिए एव उनमे विद्यार्थियो के रहने का प्रबन्ध हो। अध्यापको के चयन मे उनके चरित्र पर विशेष बल देना चाहिए तथा आयु की कोई सीमा नही होनी चाहिए।

नई शिक्षा नीति को सफल बनाने का दायित्व अध्यापको का होगा। अत सच्चरित्र एव योग्य अध्यापक तैयार करने के लिए भी एक योजना की आवश्यकता है। नही तो शिक्षा नीति बनाने का कोई लाभ नही होगा।

भवदीय
हर्षदेव सिन्हा
मन्त्री, आर्यसमाज
डी-ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-५८

(पृष्ठ १ से आगे)

क्रान्तिदूत स्वामी अभेदानन्द

ऊपरी तल्ले पर स्थित रेडिकल डेमाक्रेटिक पार्टी के दफ्तर मे गया। पार्टी के काला पानी से लौटे चटगाव शस्त्रागार-लूट काण्ड के अभियुक्त श्री लोकनाथ बल के स्वागत का आयोजन था। द्वितीय महायुद्ध के बाद अण्डमन मे काला पानी की सजा भाग रहे अनेक अभियुक्तो को मुक्त कर दिया गया था। अपने समाचार पत्र की ओर से श्री बल से साक्षात्कार के निमित्त मैं आ गया था। जब मैं रेडिकल पार्टी के दफ्तर मे पहुचा तो वहा मुझे पुराने क्रांतिकारी सर्व श्री नलिनी सेन, रजनी मुखर्जी, श्रमिक नेत्री तथा नेता मणिबेन कारा एव डॉ० बी० कार्णिक, अधिवक्ता डॉ० एम० तारकुंडे बैठे मिल थे। श्री मानवेन्द्र नाथ भी उपस्थित थे जो अलग किसी से बातें कर रहे थे। श्री नलिनी सेन आदि के मध्य में ही एक गोरा एव गठीले बदन का व्यक्ति बैठा था। मैंने श्री सेन से कहा, 'आमी श्री बलेर सगे साक्षात्कार चाई।' गोरा व्यक्ति बोल उठा— आमो बल। फिर श्री बल ने मुझ से परिचय पूछा। मेरे जन्म स्थान के बारे मे जानना चाहा। मैंने अपने को बिहारवासी बतलाया। तत्काल श्री बल ने स्वामी अभेदानन्द जी के विषय मे पूछा। मैंने, स्वामी जी के कलकत्ता निवास के विषय मे बतलाया। तथा श्री बल से स्वामी जी के पास साथ चलने के लिए आग्रह किया। वह तैयार हो गय। रास्ते मे मैंने श्री बल से पूछा-- 'आप से जब स्वामी जी का परिचय पहली बार हुआ होगा, उस समय तो वह "राम समुद्र पाण्डेय थे। लेकिन, आपने स्वा० अभेदानन्द जी को कब से जाना ? उत्तर मिला – 'आमादेर निरतर सम्पर्क छिलो।' मैं अवाक् रह गया। मैं स्वगत तर्क करने लगा, "अंग्रेजो के शासन मे अडमन से निरन्तर सम्पर्क कैसे सभव हुआ ?" यह रहस्य आज भी बना हुआ है। जब श्री बल पोद्दार भवन पहुंचे तो राम भरत मिलाप का दृश्य उपस्थित हो गया। दोनो की आखो मे आनन्द के आंसू थे।

श्री मानवेन्द्र नाथ राय १९४८ के फरवरी मे पटना आये थे। मैं पत्रकारो के बीच श्री राय की 'राष्ट्रीय आर्थिक योजना' (National Planning) तथा 'राष्ट्रीय सविधान निर्माण' (Formulation of National Constitution) का मुखर समर्थक था। अत श्री राय से मेरा घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित हो गया था। श्री राय पटना के बुद्धिवादी वर्ग से मिलना चाहते थे। उसी दिन उनका ह्वीलर सिनेट हाल मे आर्थिक-योजना एव सविधान-निर्माण पर भाषण होने वाला था। उसके पूर्व वह पटना के बुद्धिवादी समुदाय से मिलने वाले थे। निमत्रण मिला और मैं स्वामीजी तथा श्री रामानन्द शास्त्री के साथ श्री राय की गोष्ठी मे शामिल होने गया। स्वामी जी को देखते ही श्री राय ने उन्हे अपने पास बिठा लिया। और चाय की चुस्की लेते हुए स्वामी जी से पूछा— आप रामसमुद्र पाण्डेय तो नही हैं ? स्वामी जी ने कहा— हां मैं सोचता रहा, जो आदमी आधुनिक रूस के पिता लेनिन का कभी दाहिना हाथ था, उससे स्वामी जी का पुराना परिचय कैसे ? स्वामी जी से पूछने पर पता चला कि गार्डेनरिच डकैती काड के बाद किशोर वयस्क नरेन्द्र भट्टाचार्य (श्री मानवेन्द्र नाथ का पहला नाम) जब पटना मे एक प्रेस कम्पोजीटर के रूप मे गुप्त जीवन बिता रहे थे, तो स्वामी जी का काम उन दिनो क्रान्तिकारियो के गुप्त पत्रो को विभिन्न केन्द्रों मे पहुंचाना या पहुंचवाना था। यूनाइटेड प्रेस (यू०प्र०) नाम की सस्था जो अब नही है, की पटना शाखा के प्रभारी दिवंगत श्री फणीबाबू श्री राय के साथ उक्त प्रेस मे प्रूफ रीडर का काम करते थे। फणीबाबू के माध्यम से स्वामी जी का श्री नरेन्द्र भट्टाचार्य से परिचय हुआ था।

अजीब दरबार—

स्वामी जी के दरबार मे विभिन्न राजनैतिक, सामाजिक, एव धार्मिक

(शेष पृष्ठ १२ पर)

(पृष्ठ ११ से आगे)

विचारों के लोग उपस्थित रहते थे। स्वामी जी की सबके प्रति समदृष्टि रहती थी। वह कहा करते थे, देश का कल्याण अनेक विधियों से किया जा सकता है। मेरी दृष्टि में कोई मार्ग हेय नहीं है न श्रेष्ठ है। कांग्रेसी सोशलिस्ट कम्युनिस्ट सभी स्वामी जी के सान्निध्य में जाकर उनका अनुग्रह प्राप्त करते थे। कालापानी या कारागृह की सजा पाने वाले अनेक परिवारों की आर्थिक सहायता स्वामी जी करते थे। क्रान्तिकारी बैकुण्ठ शुक्ल जिन्हें फांसी की सजा मिली थी की विधवा पत्नी की सहायता स्वामी जी किया करते थे। यह मैंने अपनी आंखों से देखा था। स्वामी जी का समता का व्यवहार यह कहने के लिए बाध्य करता है कि वह सचमुच अभेदानन्द थे।

विहार को आर्यसमाज–

विहार में अधिकांश आर्यसमाजों की स्थापना का श्रेय दो मित्रों एवं सहकर्मियों को प्राप्त है। उन दोनों मित्रों के नाम थे श्री वेदव्रत और श्री सत्यव्रत। दोनों ही करीब करीब समवयस्क थे। पीछे चलकर दोनों साथी श्री स्वा० अभेदानन्द तथा श्री स्वा० ईश्वरानन्द बने। दोनों ही व्यक्ति समान रूप से उदार अपरिग्रही तथा कर्त्तव्यनिष्ठ थे। स्वामी जी अपने विषय में बहुत कम बतलाया करते थे। बहुत बाध्य करने पर कुछ कह दिया करते थे। यही कारण है कि उनके विषय में बहुत सी बातें अभी भी अज्ञात हैं।

सच्चा सन्यासी–

स्वामी जी सच्चे अर्थ में सन्यासी थे। यों तो वानप्रस्थी जीवन बिताते समय ही वह पूर्ण सन्यासी का आचरण करने लगे थे। वह नहीं चाहते थे कि उनके एकमात्र पुत्र 'कृष्ण जी' भी उनसे मिलें। धन, भौतिक गरिमा लोक ख्याति आदि किसी के प्रति उनकी उदासीन प्रवृत्ति थी। मौरिशस जाते समय उनसे उनके किसी प्रियतम व्यक्ति ने भी यदि यह कहा कि आपकी शारीरिक अवस्था विदेश यात्रा के अनुकूल नहीं है तो उन्होंने यह कह कर टाल दिया कि सन्यासी भारत में मरे या बाहर इसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। मौरिशस जाते समय वह अनेक सांघातिक रोगों से ग्रस्त थे। वहीं गये इहलीला समाप्त कर दी। ऐसे थे स्वा० अभेदानन्द जी।

(अभी इतना ही' फिर कभी)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस गली नं० १७ कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

साप्ताहिक

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ९ अंक ३७ | रविवार, ४ अगस्त १९८५ | सृष्टि सवत् १९७२९४९०८६ | श्रावण २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २० रुपये | आजीवन २०० रुपय | विदेश मे ५० डालर ३० पौंड

प्रभात की प्रतीक्षा में पंजाब की धरती

४ जौलाई को सम्पूर्ण देश मे पजाव के समझौते के समाचार से हर्ष की लहर फैल गयी। चार मास के बाद पजाब मे पौ फूटी है। हिन्दू और सिखो के बीच उगती कटीली झाडिया सूखती दिखायी दी। पजाब समस्या के समाधान के लिए ऊची राजनयिकता और बड साहसिक कदम की जरूरत थी युवा प्रधान-मन्त्री श्री राजीव गाधी ने निजी प्रशासनिक और राजनैतिक बाधाओ को एक छलाग मे पार कर सफलता प्राप्त की है। विघटन और अलगाव के कगार पर पहुचे देश को थामने मे एक कारगर कदम उठाया है। प्रधान-मन्त्री श्री राजीव गाधी बधाई के पात्र है।

समझौते के खास मुद्दे इस प्रकार है—

☐ सशस्त्र सेनाओ को विशेष अधिकार देने वाला कानून रद्द।

☐ चण्डीगढ पजाब को २६ जनवरी १९८६ को दिया जायेगा।

☐ आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के केन्द्र राज्य सम्बन्धो के बारे मे सरकारिया आयोग विचार करगा।

☐ चण्डीगढ के बदले हिन्दी इलाके हरियाणा को ३१ दिसम्बर १९८५ तक।

☐ नदी जल विवाद सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश की अध्यक्षता मे गठित एक न्यायाधिकरण को सोपा जायेगा।

☐ दिल्ली मे हुए नवम्बर के दगे की जाच करने वाले रगनाथ आयोग बोकारो और कानपुर दगो की भी जाच करेगा।

☐ अखिल भारतीय गुरुद्वारा कानून बनाया जायेगा।

☐ फौज मे भर्ती योग्यता के आधार पर।

☐ फौजी मुकदमो मे कोई हस्तक्षेप नही बर्खास्त लोगो को बसाया जायेगा।

विशेष सामग्री प्रतिक्रिया तथा वस्तुस्थिति पर एक दृष्टि सम्पादकीय लेख देखिये।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति

प्रसिद्ध इतिहासकार डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

हिन्दी लेखको मे डा० सत्यकेतु विद्यालकार का अपना विशिष्ट स्थान है। १९ सितम्बर १९०३ को जिला सहारनपुर मे जन्मे और १९१० मे गुरुकुल कागडी मे प्रवेश और १९२४ मे स्नातक हुए।

उच्च शिक्षा के लिए आप योरुप गये और पेरिस यूनिवर्सिटी से इतिहास विषय मे डी० लिट की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त की।

१३ वर्ष तक गुरुकुल मे इतिहास के प्रोफसर भी रहे। जीवन का अधिकाश समय साहित्य लेखन मे व्यतीत किया और भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयो मे व्याख्यान देने हेतु बुलाये जाते रहे।

अनेक राजनैतिक धार्मिक सास्कृतिक साहित्यिक सस्थाओ के साथ सम्बन्ध रहा। १९६२ उ०प्र० विधान परिषद के रुहेलखण्ड स्नातक क्षत्र से सदस्य बन। नागरी प्रचारिणी सभा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग गुरुकुल वि०वि० की सीनियर के सदस्य भी हैं।

विदेश भ्रमण मे चीन इटली स्विटजरलैण्ड फ्रान्स ग्रेट ब्रिटेन आदि देशो की यात्रा भी कर चुके हैं।

डा० सत्यकेतु जी का कार्यक्षेत्र साहित्य सृजन ही है।

महत्त्वपूर्ण ग्रन्थो मे

१ प्राचीन भारतीय इतिहास पर अनेको ग्रन्थ लिखे हैं।

२ आधुनिक इतिहास पर भी आपने अनेको ग्रन्थ लिखे हैं।

३ राजनीतिशास्त्र पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ग्रन्थ रचे हैं।

४ उपन्यास यह आप की एक पृथक विधा है इसमे आपने अनेको पुस्तकें लिखी हैं।

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले की प्रार्थना पर आपने आर्यसमाज का आदि से अब तक का इतिहास लिखा है। जिसके चार भाग हजार हजार पृष्ठो के लगभग छपकर जनता के हाथो मे पहुच चुके हैं और आगे कार्य लेखन प्रगति पर है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—यशपाल सुधांशु' एम० ए० | व्यवस्थापक—डा० गणेशीलाल | प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

सत्संग वाटिका

उठो ! जागो और ! जानो !

सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम ए एल टी

उदबुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिन्ध्वं बहवः सनीडाः ।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे निह्वये वः ॥
ऋ० १०-१०१-१

हे (समनसः) एक विचार से युक्त और (सखायः) एक प्रकार के ज्ञान से युक्त लोगो ! (उदबुध्यध्वम्) उठो ! जागो और जानो ! (सनीडाः) एक घर में रहने वाले (बहवः) सब लोग मिलकर (अग्नि) ईश्वर को ज्ञानी को अथवा ज्ञान को (इन्ध्वम्) उत्तम रीति से प्रदीप्त करो। (दधिक्रा) धारण शक्ति के साथ प्रगति करने वाले (अग्नि) तेजस्वी और (उषस देवी) चौकसी की सूचक दिव्य शक्ति इन को (इन्द्रावत) प्रभुत्व चाहने वाले (वः) आप सबको (अवसे) रक्षा के लिए (निह्वये) आह्वान करता हूं।

बड़ा ही प्रेरणादायक मन्त्र है। भाव यह है कि उठो जागो हे भाइयो ! मनोबल से अनुप्राणित हो जाओ। एक राष्ट्र के वासी तुम सब अपने अन्दर उत्साह की अग्नि को प्रदीप्त करो। तुम्हारी रक्षा में उस अग्नि का आह्वान करता हूं जिसे धारण करते ही मनुष्य क्रियाशील हो उठता है तुम्हारी रक्षा में प्रकाश से जगमगाती हुई उस उषा का आह्वान करता हूं जिसमें जीवन ज्योतिर्मय हो उठते हैं। अपने जीवनों को अग्निमय बनाओ अपने जीवनों को ज्योतिर्मय बनाओ।

इस मन्त्र में धारणा शक्ति के साथ प्रगति तेजस्विता सचेतनता और प्रभुत्व शक्ति इन गुणों में सब का रक्षण होता है यह बतलाया गया है। सभी मनुष्यों को राष्ट्र समाज और आत्मोन्नति के लिए एक साथ मिलकर उपासनादि का निर्देश दिया गया है। एक घर में रहने वाले सभी मिलकर उपासना करें। हिन्दू जाति ईश्वर भक्त है आस्तिक है धार्मिक कार्यों के प्रति अभिरुचि बहुत अधिक रखती है पर इसमें एकता नहीं। मिलकर पूजा करने का विधान नहीं। इसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दू जाति एक साथ मिलकर कोई कार्य नहीं कर पाती। धर्म के नाम पर भी एकत्र नहीं हो पाती इसमें छोटे और बड़े का ऊंच और नीच का भेद बना रहता है। हम यह नहीं कहते हैं कि मुसलमानों में यह भेद नहीं है पर वे अवश्य कहते हैं कि हम सभी अपेक्षा उनमें कहीं अधिक एकता। एक साथ मिलकर कार्य करने की भावना चुनाव आदि में एक साथ मिलकर वोट देने का प्रभाव विदित ही है। क्यों? क्योंकि वे प्रतिदिन पांच बार एक साथ मिलकर नमाज पढ़ते हैं ईश्वर की प्रार्थना करते हैं। इसलिए वे उन्नत हैं उनके अधिकारों का हनन नहीं किया जा सकता इसका मनोवैज्ञानिक कारण यह है कि ईश्वर के नाम पर एकत्र होने वाले उन लोगों में आत्मशक्ति का उदबोधन हो ... [illegible]

हो जाती है। अतः वेद कहता है 'एक घर में रहने वाले सब लोग मिलकर ईश्वर को ज्ञानी को या ज्ञान को उत्तम रीति से प्रदीप्त करो और आत्म शक्ति को उस प्रकाश में देखो। ऐ नानाविध भयों से त्रसित शिथिल बने हुए मानव ! तू क्यों हर समय क्षण क्षण में अनिष्टाशंका से संकुचित हुआ करता है एक बार उठकर क्यों नहीं देख लेता है कि सब अपना ही अपना है यहाँ कोई पराया नहीं सभी उसी प्रभु की सन्तानें हैं जिसकी उपासना को हम सबके साथ एकत्र हुए हैं। यहाँ भय कैसा ? यहाँ त्रिकाल में भी किसी का अकल्याण कैसे हो सकता है ? फिर तू इस परमकल्याणमय शासन में क्यों नहीं निर्भय होकर घूमता है

वेद मन्त्र कहता है जागो और अग्नि को प्रदीप्त करो। अग्नि कौन है ? अग्नि नाम परमेश्वर का है वेद ने स्वयं कहा है तदेवाग्निस्तदा दित्य (यजु० ३२ १) अग्नि का अर्थ करते हुए यास्काचार्य लिखते हैं (अग्नि कस्मात् अग्रणी भवति निरुक्त ७ १४) परमात्मा अग्नि है क्योंकि वह अग्रणी है। सबसे आगे रहने से और सब के आगे चलने से परमात्मा का नाम अग्नि है। परमात्मा परम अग्नि है। वह अग्रणियों में अग्रणी है।

अग्नि से यज्ञ होता है। मानव के शरीर के अंग अंग में यज्ञ हो रहा है। आंख यज्ञ कर रही है कान यज्ञ कर रहे हैं प्राण यज्ञ कर रहे हैं श्वास प्रश्वास यज्ञ में लगे हैं। और इस यज्ञ का होता प्रज्वलित करता अग्निदेव है। अग्नि द्वारा पुकारे गए देव यजमान बनकर अपनी अपनी आहुति यज्ञ अग्नि में छोड़ रहे हैं। इस अग्नि को प्रदीप्त करना ही मानव का लक्ष्य है। इसलिए भक्त अग्नि को प्रदीप्त करने की प्रार्थना करता हुआ कहता है हे मेरे हृदय के तिनके से उठी यज्ञ की आग ! प्रदीप्त हो ! प्रदीप्त हो मेरे दिव्य ज्वालामुखी अपनी उज्ज्वल ज्वालाओं के मुख से मेरे रोम रोम में यज्ञ का संदेश पहुंचा दे। अपनी दिव्य पुकार से मेरे रोम रोम को यज्ञ की आग का तिनका बना दे। ये सूखे तिनके तेरे अलौकिक स्पर्श से यज्ञ वेदी की चमकती हुई चिनगारियां बन जायें।

आओ यज्ञ की आग आओ मेरा आतिथ्य स्वीकार करो। मैं एक जीभ से नहीं हजारों जीभसे तुम्हारा अभिनन्दन करता हूं। केवल एक मुख की जीभ से नहीं अंग अंग की नस नस की नाड़ी नाड़ी की जीभ से तुम्हारा अभिनन्दन करता हूँ। आज जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रभुत्व की प्राप्ति के लिए तुम्हारा स्वागत करता हूँ। मेरा स्वागत स्वीकार करो। स्वीकार करो इस स्वीकृति से तुम्हारी कमी और शोभा बढ़ेगी।

यह मन्त्र आगे बढ़ने की कामना के लिए जहाँ अग्निदेव को पुकारता है वहाँ चौकसी की सूचक दिव्य शक्ति ऊषा का भी आह्वान करता है। दिन के उदय होते ही ऊषा का आगमन होता है। उस समय एक अत्यन्त मनोरम अरुणाई चारों ओर छा जाती हैं। वृक्षों के हरे हरे पत्ते लाल लाल प्रभय से घिर जाते हैं। पानी के तल पर एक चमकीली लाल चादर सी बिछ जाती है। आकाश में मंडराती श्वेत और श्याम सभी बदलियाँ एक हल्का सा गुलाबी आंचल ओढ़ लेती हैं। और उस समय चौकसी करने वाली ऊषा देवी हल्की हल्की झाँकी दे जाती है इसी ऊषा की गोद में सविता का महान् प्रदीप्त अंधकार को दूर कर चारों ओर घरों को जगाने उत्पन्न होता सूर्य जन्म लेता है। उसका अरुण वर्ण दिग्दिगन्त में प्रतिभासित होकर हम को जागृत रहकर कर्म करने की प्रेरणा देता है। इस पुण्य प्रभात में उदय हुई प्रजाओं का प्रकाश के राजा का यह सन्देश है यो ऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम् उस की आत्मा मैं हूं—यह ही प्रभु का सन्देश। यह सूर्य यह प्रभु कह रहा है —

ऐ आलस्य से जड़ित अंगों के भार से व्याकुल मनुष्य उठ। जाग और अपने उस सर्वरक्षक सर्वचिन्तक सर्वधारक के कर्मों पर उन्हें परमश्रद्धा से अर्पित कर निश्चिन्त क्यों नहीं हो जाता। इसलिए वेदमन्त्र कहता है —

हे कर्मवीर ! उठो ! जागो ! तुम्हारे लिए संसार का कार्यक्षेत्र खुला पड़ा है। तुम जिस भी कर्म को हाथ में लोगे तुम्हारे स्पर्श से बड़ी महत्त्वपूर्ण बन जाएगा। तुम मानव सेवा के लिए आए हो। तुम में महान् शक्ति निहित है। तुम अपनी शक्ति को पहचानो। उठो ! आज विश्व को तुम्हारी आवश्यकता है। समस्त संसार तुमसे ज्योति प्राप्त करने की प्रतीक्षा में है। तुम संसार का कल्याण करो।

इस प्रकार यह वेद मन्त्र कहता है उठो ! जागो ! और अग्नि को अपने हृदय में जागृत कर समाज को जागृत करो। राष्ट्र का उद्धार करो। निराशा को दूर कर आशा का प्रसार करो।

इस स्मृति में एक सत्य है—

मनुज आज कर्म हूंढ रहे हैं सबको वह बल में कर ले तो प्रस्तुत हीरों का बड़ा ताज है सखे आज के इस प्रभात में बने आज की सुदृढ़ योजना फिर कल या तुमको खोजेंगे तुम्हें पड़ना कुछ न बोलना स्वर ऊषा के सुनो सुनाओ। आज आज तुम खुशी मनाओ।

हमारे कार्य हों मानवमात्र के लिए

आओ कर कुछ ऐसे कर्म
जिससे हो सर्वत्र हमारा नाम।
हम हों सबकी प्रतिष्ठा के पात्र
न हों किसी की दृष्टि के गात्र।
हों सभी दुर्गुणों से मुक्त
श्रेष्ठ शब्द हमारे लिए हो प्रयुक्त।
हम बनें राष्ट्र के निर्माण में सहायक,
हमारे कार्य हों मानव के लिए सुखदायक।

साहित्य वह है जिससे हो सबका कल्याण

जिससे हो नैतिकता का प्रसार
सच वेद प्रचार का हो संचार
उत्पन्न हो सदज्ञान सद्विचार
छिन्न भिन्न हों कुसंस्कार
मिट जाये ऊंच नीच की भावना
छा जाये परस्पर की सदभावना।
जो करे सतयुग का निर्माण
साहित्य वह है जिससे हो सबका कल्याण।

—नकुलचन्द गुप्त [illegible]
लालगंज जि० राय [illegible]

(पृष्ठ १ से आगे)

आर्यसमाज का यह विराट इतिहास यथार्थ में भारत के पुर्नजागरण और उसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्यसमाज के जन-जन का योगदान सजीव बना है।

पंजाब दिल्ली और हरियाणा की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के तीनों प्रधानों के आगामी वर्षों के लिए उन्हें कुलाधिपति चुना है। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार सक्षम विद्वान व्यक्ति हैं जो इस नवीन गुरुतर भार को वहनकर गुरुकुल का नवनिर्माण करेंगे।

सम्पादकीय--

धरम जुद्ध मोर्चा वापिस, नये सवेरे की तलाश

पंजाब में चार साल से खून की होली निरन्तर खेली जाती रही। हर रोज सवेरा नये खून की लालिमा बेगुनाहो की चीख लेकर उगता। दहशत और आतंक से दिशायें मन्न होती रही। ढोल ढमाको और भंगडों के स्वर सो गये, सद्भावना एवं प्यार प्रीति के गीतो के बोल नफरत के जबडो में खोते गये। दिन प्रतिदिन स्थिति बिगडती रही। खून और आग के दरिया को पारकर २४ जौलाई को प्रधान-मन्त्री समझौते के किनारे पर पहुंचने में सफल हुए। सारे देश ने एक स्वर से समझौते पर प्रसन्नता व्यक्त की। किन्तु सद्भावना एवं सदाशयता से हुए समझौते से कुछ काले दिलो के कोने में अंगारे सुलग रहे हैं। इस को हवा से चिंगारियां फूटने लगी हैं। यद्यपि श्री लोंगो-वाल ने तीन वर्ष पुराना धरम जुद्ध (धर्मयुद्ध) वापस ले लिया है परन्तु जत्थेदार टोहरा और सरदार बादल ने समझौते पर तीव्र असन्तोष जाहिर किया है और यह आग निरन्तर धधक रही है। जत्थेदार टोहरा ने आनन्दपुर साहब में हुई सभा में समझौते को पंजाब के सिखों के हितों के विरुद्ध बताया। उन्होने कहा मैं समझौते से कतई सहमत नहीं हू पर अधिक कुछ नही कहूंगा कही ऐसा न हो कि समझौते से हमें जो कुछ मिलने का आशा है वह भी न मिले। हमने तो मांग की थी ब्ल्यु स्टार आपरेशन में गिरफ्तार लोगो को आम माफी दी जाये और उन्हें रिहा किया जाये (जो की हुआ हो नही) सरदार बादल ने कहा कि भगौडे सैनिको और छात्रो का हम रिहा नही करा सके हालाकि इन लोगो ने हमारे लिए कुर्बानियां दी है। इस सम्मेलन मे आये २०० प्रतिनिधियों ने सत लोगोवाल के साथ तथा समझौते पर विश्वास प्रकट करते हुए हाथ उठाकर सहमति प्रकट की, केवल टोहरा और बादल ही सिर झुकाये बैठे रहे।

सत लोगोवाल साहसी नेता एवं सूझबूझ वाले नेता के रूप मे उभरे हैं। अकाली दल में जो नेता सत हरचन्द सिंह के समर्थक है उन्होने इस ऐतिहासिक समझौते पर फूल चढाये हैं। ऐसे नेताओ मे पूर्व मन्त्री सुखदेव सिंह ढो ढसा दल के कानूनी सलाहकार डा० गुरनाम सिंह तीर दो पूर्व विधायक ज्ञानी अर्जुन सिंह और एस एम धुनी ने कहा है इस समझौते से पंजाब मे व्याप्त सभी सकट दूर होगें और विकास का एक नया अध्याय शुरू होगा।

समझौते को देश व्यापी समर्थन मिलने से उग्रवादी खीझ से भर गये हैं। इधर बाबा जोगेन्दर सिंह इस ताक मे है कि कब बादल और टोहरा उधर से बौखला कर उनकी ओर मुख मोडे। अमृतसर स्वर्ण मन्दिर मे इन दिनो दोनो ग्रुपों मे नारे बाजी और तीखी झडपें होने से तनाव बना हुआ है और बाहर पुलिस सुरक्षा बल चौकसी के लिए तैनात है।

हरियाणा और राजस्थान, चण्डीगढ तथा पानी के बटवारे को लेकर आक्रोश मे भरा हुआ है। राजस्थान विधान सभा में धरना दिये बठे भरो सिंह शेखावत का कहना है हमें ऐसा प्रतीत है अकालियों को सन्तुष्ट करने के चक्कर मे राजस्थान के हितों की बलि हो रही है। राजस्थान का विपक्ष प्रधानमन्त्री से ही आश्वासन चाहता है। इधर हरियाणा मे भजन लाल के आश्वस्त होने पर भी विपक्ष के मन मे रावी व्यास के पानी और चण्डीगढ़ के बदले मे मिलने वाले इलाकों को लेकर शका बैठी हुई है। इसलिए विपक्ष के २६ विधायको ने अपने इस्तीफे अपने अध्यक्षों को सौंप दिये हैं। ३१ जुलाई को हरियाणा बन्द का भी ऐलान किया जा चुका है। इधर भाजपा ने समझौते के स्वरूप पर आपत्ति प्रकट की है। प्रमुख आपत्तिया इस प्रकार है शाहआयोग ने चण्डीगढ़ हरियाणा का दिया था लेकिन इंदिरा गांधी ने इसे पंजाब को दिया था हरियाणा का इस के बदले मे अबोहर और फाजिल्का मिला था। लेकिन नए समझौते मे चण्डीगढ़ पंजाब को दे दिया गया। पर अबोहर और फाजिल्का हरियाणा को नही दिया गया। (२) अखिल भारतीय गुरुद्वारा कानून बनाने से भारतीय राजनीति में साम्प्रदायिता बढेगी। (३) सरकार ने अकालियों से हिंसा आतक या गुरुद्वारों के दुरुपयोग के सिलसिले मे कोई लिखित आश्वासन नही लिया।

(४) नये समझौते के तहत दिल्ली दगे की जांच को दायरा बनाकर कानपुर और बोकारो करा दिया गया है लेकिन इसका दायरा पंजाब में हुई हिंसा तक नहीं बढाया गया।

(५) त्रिपक्षीय वार्ता ३ जनवरी १९८३ मे पानी विवाद पर लम्बी बातचीत हुई थी इसमें अकालियों ने कहा था कि सिर्फ समस्या हरियाणा के साथ ही नही राजस्थान के साथ भी है। उस समय सर-कार और सभी विपक्षी पार्टियो का कहना था कि १९५५ के समझौते के तहत व्यास और सतलज से राजस्थान को पानी मिलता है फिर से लागू नहीं किया जाए, लेकिन नए समझौते ने इस मुद्दे को फिर उभार दिया है।

इस प्रकार इस समझौते की धज्जियां उधेड देने की हर तरफ से कोशिश हो रही है जबकि आम जनता शान्ति हो जाने की सभावना से ही प्रसन्न है। प्रकाशसिंह बादल और गुरु चरणसिंह टोहरा ने आगामी रणनीति निर्धारित करने के लिए आपस में बातचीत कर वकीलो और बुद्धिजीवियों की एक बैठक बुलाई है। बाबा जोगेन्द्रसिंह जो सयुक्त अकाली दल की तदर्थ समिति के सयोजक हैं ने कहा है--जब तक मेरी पार्टी से सरकार बातचीत नही करेगी तब तक पंजाब में शान्ति नही होगी। वे कहते हैं सन्त लोगोवाल अब दल के अध्यक्ष नही हैं जेल से छूटने के बाद उन्होंने दल से इस्तीफा दे दिया था। इसलिए अब वे मोर्चे के डिक्टेटर नहीं हैं और न ही दल को तदर्थ समिति के सदस्य। उन्होने कहा, अभी हमारा लक्ष्य पूरा नहीं हुआ हम उसकी प्राप्ति के लिए जो ठीक समझेंगे करेंगे। आल इण्डिया सिख स्टूडंड फेडरेशन के छात्र भी इस समझौते की नीव में पलीता लगाने के लिए कमर कसे हुए हैं।

इन समस्त परिस्थितियो को मद्दे नजर रखते हुए समस्या की भयकरता और गहरी जडो का एहसास होता है लेकिन ठंडे दिमाग से विचार करें तो समझौता कभी भी बिना लिये दिये नही हुआ करता। समझौते से कभी भी कोई पूर्णत सन्तुष्ट नहीं हुआ करता इस तथ्य के अनुसार इस समझौते से समस्या के अंगारो पर पानी डालने की अच्छी कोशिश हुई है। हालाकि स्थिति यह है अकाली धडा कहना है हमें नया कुछ नहीं मिला और विपक्षी राजनैतिक दलों का कहना है सरकार ने काफी हद तक झुक कर अधिक उदारता के साथ सम-झौता किया है। इधर पंजाब मे शीघ्र ही चुनाव की घोषणा किये जाने की सभावना है, जबकि शीघ्र चुनाव कराये जाने से पंजाब का माहौल बिगड जाने की भी सभावना है। समस्त स्थितियों को ध्यान में रखकर पंजाब के तपते लोहे को शान्त करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। साथ ही पंजाब को शान्त करते करते दूसरे प्रदेश क्रुद्ध न हो जाये यह भी सरकार को ध्यान रखना चाहिए। सद्भावना और सदाशयता से जो समझौता एकमुश्त में ही कर देने का साहसिक कदम श्री राजीव गांधी ने उठाया है, देशहित मे सभी को उस पर फूल गिराने चाहिए न कि धूल।

—यशपाल सुधांशु

धर्म-प्रचार के नाम पर राजनीतिक षड्यन्त्र

लेखक—रामगोपाल शालवाले

[गताङ्क से आगे]

सेवा और प्रेम का एक नमूना

गोवा का धार्मिक न्यायालय बड़ा बदनाम न्यायालय था। वह न्यायालय उन स्त्रियों को भी जेल भेजने के लिए बदनाम था जो ईसाई बनने से इनकार करती थी। जेल में उनके साथ बलात्कार किया जाता था और पाशविक वृत्तियों की सन्तुष्टि के बाद वे धर्म विरोधिनी कही जाकर जीवित जला दी जाती थी। (श्रीयुत पारिख की पुस्तक पृष्ठ २१-२२)

सन् १५६० में गोवा के समस्त ब्राह्मणों और स्वर्णकारों को आज्ञा दी गई कि वे ईसाई धर्म को स्वीकार कर लें अन्यथा गोवा छोड़ कर चले जावें। १५६७ ई० में हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थ जब्त कर लिए गये और उपनयन विवाह और शवदाह संस्कार करने से रोक दिया गया। १५ वर्ष की आयु के समस्त गैर ईसाइयों को ईसाई मत के धार्मिक सत्संगो मे भाग लेने के लिए विवश किया गया। हिन्दुओं के मन्दिर गिराये जाकर उनके स्थान पर गिरजाघर बनाये गये। १६८४ ई० में एक राजकीय आज्ञा के द्वारा गोवा के लोगों के लिए उनकी मातृ-भाषा का उपयोग निषिद्ध ठहराया गया। उन्हें ३० वर्ष की अवधि दी गई कि वे पुर्तगाल देश की भाषा सीख लें, अन्यथा उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जायेगी। इस प्रकार उन पर बलात पुर्तगाली भाषा ठोंसी गई। इन सब कानूनों का आशय क्या था? यही कि या तो वे ईसाई धर्म स्वीकार करें अन्यथा राज्य को छोड़कर चले जावें। (नियोगी कमेटी की रिपोर्ट, अध्याय १५, पृष्ठ १६)

रोम का ईसाई (ब्राह्मण)

मानवीय प्रतिभा का नाटक रचने के लिये ईसाई मत कितनी छूट देता है, इस बात को राबर्ट डी० नोविली ने सिद्ध कर दिखाया था, जो १७ वी शती के प्रारम्भ मे भारत मे आया था। इसका जन्म इटली के उच्च घराने मे हुआ था। यह बड़ा बुद्धिमान् और अपने धर्म का बड़ा भारी प्रेमी था।

उसने देखा कि राज्यसत्ता के बल पर आदिवासियो और छोटी जातियों के लोगों के सामूहिक धर्म परिवर्तन को नीति घातक है, जिसका आश्रय फ्रांसीसी और अन्य कैथोलिक डीवाने लेते रहे थे। इससे स्पष्ट अनुभव हुआ कि जब तक उच्च वर्ग के हिन्दू ईसाई न बनेगे तब तक भारत की भूमि में ईसाइयत की जड़ें गहरी न जम सकेंगी

अत उसने फ्रांसीसी नीति का परित्याग करके अपनी नीति अपनाई। यह रोमन कैथोलिक साधु पुर्तगाल से मदुरा पहुंचा। इसने भगवे वस्त्र धारण किये। माथे पर चन्दन लगाया, गले में यज्ञोपवीत डाला, जिसमे क्रास लटका हुआ था। वह मदुरा के ब्राह्मणों के मुहल्ले मे मकान लेकर रहने लगा। उसने कहा—मैं रोम का ब्राह्मण हू। आर्यावर्त्त के एक प्राचीन कुल से सम्बद्ध हू। उसने तमिल तैलगू और संस्कृत पढ़ी, शाकाहारी बना और ब्राह्मणो के ढग से रहने लगा। उसने ब्राह्मणों से बने ईसाइयो के लिये ईसाई सन्ध्यावन्दना नामक एक प्रार्थना पुस्तक लिखी। इतना ही नही उसने येशुवेद नामक एक ग्रन्थ रच डाला। १८४० तक यह वेद सच्चा ग्रन्थ माना जाता रहा। इसमे ईसा का जीवन तथा उनकी शिक्षा का वर्णन था। जब प्रोटेस्टेण्ट पादरियो ने इस रहस्य का भण्डाफोड़ किया तभी इस ग्रन्थ की मान्यता कम हुई।

१६०७ से १६११ तक ४ वर्ष मे ८७ ब्राह्मणों को ईसाई बनाया। यह नोबिली की बहुत बड़ी सफलता थी, जिससे उसकी प्रसिद्धि बढ़ी। इस ब्राह्मण साधु ने ४ वर्ष तक कार्य किया जो अपना गोत्र रोमन बताया करता था। अपने छल-प्रपच और व्यक्तित्व मे १ लाख लोगों को ईसाई बनाया। सन् १६५६ ई० मे ८६ वर्ष की आयु मे उसका देहान्त हो गया।

इस प्रकार तलवार और छल से विदेशी मिशनरी भारत मे अपने धर्म का प्रचार करने मे सफल हुए।

अंग्रेजी राज्य मे इन लोगों ने सेवा, प्रेम आदि अनेक प्रकार के हथकण्डों से अपनी सख्या बढ़ाने का प्रयत्न किया।

अंग्रेजी सरकार भली प्रकार जानती थी कि अपने राज्य की जड़ें मजबूत करने के लिए ईसाइयों की सख्या बढ़ानी चाहिये। अत सरकारी कोष से करोड़ो रुपये खर्च करके हजारों स्कूल, कालिज, गिरजाघर, हस्पताल, अनाथालय, नर्सिंग होम आदि संस्थाए देश के कोने-कोने में खोली गईं। इन सब का एक ही उद्देश्य था—सेवा के नाम पर धर्म परिवर्तन। पादरियो का अंग्रेज अफसरों के साथ विधिवत् सम्पर्क रखा जाता था, कहीं-कहीं तो प्रधान पादरी के अधिकार डिप्टी कमिश्नर के बराबर होते थे। इस प्रकार सन् १८५७ की राज्य-क्रान्ति के पश्चात् सेवा, शिक्षा और सरकारी नौकरियों के माध्यम से भारत की हिन्दू जनता को ईसा की भेड़ों में सम्मिलित किया जाता था।

भारत में ईसाइयो की सख्या

सन् १२६१ में केवल १०० हिन्दू ईसाई बने और सन् १९५१ तक ८१ लाख ५७ हजार १५ सौ ६५ लोग ईसाई बनाये जा चुके थे।

अंग्रेज भारत छोड़कर चले गये। उनके साथ-साथ विदेशी मिशनरी भी बिस्तरे गोल करके यूरोप की ओर जाने की तैयारी करने लगे। कई गिरजाघर बेच दिये गये। उस समय उनकी सख्या २०६७ थी। किन्तु हमारी राष्ट्रीय सरकार की धर्मनिरपेक्ष घोषणा होते ही पादरियों ने भारत छोड़कर जाने का विचार बदल दिया और दृढ़ता से पैर जमा लिये। मिशनरी लोग भली प्रकार जानते हैं कि हिन्दू का धर्म परिवर्तन होने के पश्चात पूर्वज तथा राष्ट्रीयता बदल जाती है। इसी धर्म परिवर्तन की नीति का अन्तिम परिणाम पाकिस्तान था। मुहम्मद बिन कासिम के साथ कुछ हजार मुसलमान भारत में आगे थे। उनमें से कुछ तो लूट का माल लेकर चले गए और कुछ यहीं बस गये। निरन्तर इस्लामी हमलों तथा मौलवियों द्वारा प्रचार एव हिन्दुओं में फैले हुए अन्धविश्वास आदि कारणों से मुसलमानों की सख्या लगभग ८ करोड़ हो गई और संसार के मुस्लिम राष्ट्रों में सब से बड़ा और सब से शक्तिशाली मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान बनकर खड़ा हो गया जो सदा के लिए भारत के लिए भारी खतरा बना ही रहेगा।

पाकिस्तान बनने का प्रधान कारण हिन्दू का धर्म परिवर्तन करके मुसलमान बन जाना ही था। विदेशी मिशनरी तथा भारत विरोधी विदेशी राजनीतिज्ञ इस तथ्य को भली प्रकार जानते हैं और हमारी सरकार की अत्यन्त दब्बू-नीति का लाभ उठाकर जहाँ पाकिस्तानी लुटेरे दिन दहाड़े सीमावर्ती भारतीय क्षेत्रों में घुसकर खुली लूट मचाकर आनन्दपूर्वक लौट जाते हैं वहां समाचार मिलने पर हमारे प्रधानमंत्री एक प्रेस नोट जारी कर देते हैं, अथवा पाकिस्तान सरकार को जोरदार कागजी प्रोटैस्ट भेजकर अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य का पालन करके निश्चिन्त हो जाते हैं।

इस निर्बल नीति को विदेशी मिशनरी भली प्रकार जानते हैं और जहाँ सन् १९४७ में अंग्रेजी राज्याधिकारियों के साथ साथ भारत छोड़कर जाने की तैयारी कर रहे थे, वहां आज अपने पैर जमाकर कई भारतीय क्षेत्रों को ईसाई स्थान बनाने की तैयारी कर रहे हैं।

ऊपर की पंक्तियों में बताया जा चुका है कि देश का बटवारा होने के समय सन् १९४७ में विदेशी पादरियों की सख्या २०६७ थी, किन्तु नेहरू राज्य के इन १७ वर्षों में धर्म के नाम पर राज्यसत्ता हथियाने वाले विदेशी प्रचारकों की सख्या सरकारी आंकड़ो के अनुसार १९२६ में ४८७७ हो गई। छोटे बड़े ईसाई संस्थानों मे प्रचारक का काम करने वाले पादरियों की सख्या यदि जोड़ दी जावे तो ८ हजार से अधिक गोरी चमड़ी वाले मिशनरी भारत के कोने-कोने में फैले हुए हैं।

इन गोरे प्रचारकों की ईसाई संस्थाओं को पश्चिम के २० विदेशों से भारी धनराशि भारत की गरीब जनता को ईसाई बनाने के लिए भेजी जाती है।

रिजर्व बैंक आफ इण्डिया के द्वारा जनवरी सन् १९५० से जून सन् १९५४ तक २९ करोड़ २७ लाख ३९ हजार रुपया विदेशी मिशनरियों को बाहर से आया।

किस देश से कितना रुपया आया

देश	रुपया
अमेरिका	२०,६८,६३,०००
कनाडा	१,६७,५६,०००
बैलजियम	६४७,०००
डेनमार्क	२३,६१,०००
फ्रांस	७,६१,०००
जर्मनी	११,१६,०००
नारवे	२७,६७,०००
स्वीडन	६४,४१,०००
स्विटजरलैण्ड	१५,७७,०००
इंगलैंड	४,८३,८६,०००
अन्य देशों से	१४,७२,०००
विविध	३५२६,०००
कुल योग	२९,२७,३९,०००

(क्रमशः)

कुछ लोगों को सत्य का तथ्य छिपाने में ही अपनी योग्यता की सार्थकता दीखती है। तथ्यों को तोड मरोडकर प्रस्तुत करने मे उन्हें आनन्द आता है। आजकल श्री खुशवन्त सिंह, डा० महीप सिंह आदि कई सिख सज्जन यही कार्य कर रहे हैं बाबा अर्जुनसिंह (वीर भगत सिंह जी के दादा) ने लिखा है कि सिखों को हिन्दुओ से पृथक करने का षडयन्त्र उन्नीसवी शताब्दी के अन्त मे चला। यह सब कुछ अंग्रेज की राजनीति से हुआ। सिखो मे पृथकतावाद के लिए ये लोग आर्यसमाज को दोष देते है।

इतिहास का तथ्य यह है कि महर्षि दयानन्द के विचारो वा व्यक्तित्व से प्रभावित होकर स्थान स्थान पर सिख आर्यसमाज मे आए और तन मन धन से आर्यसमाज की सेवा करके जीवन को सफल बनाकर गौरवान्वित हुए। सरदार बसाखासिंह जी ने तो लाहौर के उपदेशक विद्यालय मे एक छात्रवृत्ति भी लगा रखी थी।

बहुत कम लोगो को आज इस बात का पता है कि आर्यसमाज के आरम्भिक युग के कवियो गायको मिशनरियो व सेवको मे एक सरदार काहनसिंह जी थे। आप अमृतसर के रहने वाले थे। किसी कार्यालय मे कार्य करते थे। दिन रात उन्हे आर्यसमाज के प्रचार की धुन रहती थी। उनके भजन तब आर्यसमाज मे ऐसे ही लोकप्रिय थे जैसे भक्त अमीचन्द जी के। वह भक्त जी के युग मे ही हुए। अंधविश्वास पर सरदार जी ने अपनी कविताओ व भजनो मे कडा प्रहार किया। 'खुश' व 'बेकस' उपनाम से लिखते थे। दोनों उपनामो का भजनो मे प्रयोग किया करते थे। संगीतज्ञ भी थे।

जप ईश्वर को जप ईश्वर को
'खुश' होकर प्रभु 'बेकस'
की विनती सुनले

यह उनका बडा लोकप्रिय भजन था। आर्यसमाज बच्छोवाली लाहौर ने

तरुणमञ्च—

आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठो का अनावरण

आर्यों की वीरगाथा—६

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

सिद्धान्त के अनुकूल भजनो का एक संग्रह 'आर्य संगीत भजन पुष्पावली' नाम से छापा था। उसमे उपरोक्त भजन के अतिरिक्त और भी रचनाएँ आपकी सम्मिलित की गई।

आर्यसमाज की भावी पीढी को सरदार काहनसिंह जी सरीखे आर्यों के उत्साह का लग्न से प्रेरणा लेनी चाहिए। आप आर्यसमाज के सब कार्यो को अपने हाथ से करते हुए भाव विभोर हो जाते थे। झाडू लगाना पडे या दरी बिछानी पडे वह सब कार्यों मे आगे रहते थे। बडे प्रभावशाली थे। खीच खाचकर लोगो को समाज मे लाते थे।

पुलिस का भय नही, लाभचंद का भय अधिक था।

आर्यसमाज के आरम्भिक युग मे लाभचन्द जी भी एक नामी भजनोपदेशक हुए हैं। उन्होने छूतछात की जड उखाडने का बडा गौरवपूर्ण कार्य किया। वह स्यालकोट के निवासी थे। दुकानदारी भी की और किसी वकील के मुन्शी भी रहे कभी जुआ खेलने के भी उस्ताद माने जाते थे। आर्य बने तो जीवन ही पलट गया।

मेलो पर प्रचार करने मे बडे दक्ष थे। उनकी लग्न व निर्भीकता का श्रोताओ पर बडा प्रभाव पडता था। उन दिनो मेलो पर ठग लोग ताश के पत्तो के खेल से भोले भाले लोगो को खूब लूटा करते थे। जब लाभचन्द किसी मेले पर पहुँच जाते तो ये जुआ खेलने वाले उनका बडा सम्मान करते थे। वे समझते थे कि यह व्यक्ति उनसे निकलकर एक ऊंचा मानव बन गया है। यह धर्म व जाति सेवा का यश लूट रहा है।

प० विष्णुदत्त जी पंजाब के एक बडे प्रसिद्ध आर्य नेता एक मेले पर आर्यसमाज के प्रचारार्थ गये। प० विष्णुदत्त जी वकील ने लिखा है कि वहा मैंने देखा कि जुआ खेलने खिलाने वाले उतना पुलिस से नही डरते थे जितना लाभचन्द से। कारण यह कि पुलिस वालो को तो वे लोग पैसा देकर चुप करा देते थे परन्तु लाभचन्द को भय अथवा प्रलोभन से चुप कराना असम्भव था।

निम्न वर्ग के लोगो के जीवन सुधार के लिए लाभचन्द जी जैसे आर्य वीरो ने जो ऐतिहासिक कार्य किया है उसका मूल्याङ्कन करना अति कठिन है।

एक आर्य सैनिक

दिवंगत आचार्य नरदेव जी वेदतीर्थ के पिता जी श्री निवास राव जी एक प्रसिद्ध आर्यसमाजी थे। उनके आर्यसमाजी बनने की कहानी बडी रोचक है। आचार्य नरदेव जी ने अपनी आपबीती मे यह कहानी पूरी जाच पडताल करके नही दी मुझे श्रीमान् श्रीनिवास राव जी के एक लेख से इस कहानी का प्रामाणिक विवरण मिला है।

घटना इस प्रकार से है कि श्रीनिवास रावजी ऋषि दयानन्द के बडे विरोधी थे। आप पर पूना के श्री विष्णु शास्त्री चिपलूणकर का गूढ रंग चढा हुआ था। अत आप को चिपलूणकर बडा जातिप्रेमी व धर्म रक्षक मानते थे। एक मित्र गोविन्द राव ने श्रीनिवास राव जी को ऋषिकृत ग्रन्थ दिये परन्तु झूठ बोल देते कि इन्हें पढ रहा हू। एक बार आप पूना गये।

वहा अपने गुरु चिपलूणकर के पास बैठे थे कि एक सैनिक आया। उसने आते ही नमस्ते कही। नमस्ते शब्द सुनते ही चिपलूणकर ने ऋषि दयानन्द के पावन व मन्तव्यो पर अपना अनाप शनाप भाषण झाडना आरम्भ किया। वह आर्य सैनिक शान्ति से सब कुछ सुनता रहा। जब चिपलूणकर थककर हट गये तो उसने उनकी सब आपत्तियो का उत्तर देकर आर्य सिद्धान्तो का योग्यता से मण्डन किया इससे श्रीनिवास राव जी बडे प्रभावित हुए।

श्री के मन पर चिपलूणकर जी का जो प्रभाव था सब दूर हो गया। घर लौटकर ऋषि के ग्रन्थ पढे। एक एक बात का ज्ञान पडते लगे और अब वह आर्यसमाज के दीवाने सैनिक बन गये। उन्होने उस आर्य सैनिक का नाम नही दिया। लगता है कि वह हरियाणा पंजाब अथवा उ० प्र० का आर्य जवान होगा। पूना मे सैनिक छावनी तो है ही। श्रीनिवास राव जी अब सदा के लिए आर्यसमाज के हो गये। वीरवर प० लेखराम की संगति ने सोने पर सुहागे का कार्य किया।

क्या कब्र है आज भी हमे यह समझना चाहिए कि वैदिक धर्म का प्रचार करना केवल हमारे उपदेशको मान्य पुरोहितो व साधुओ का ही कार्य नहीं। प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है कि वह वेद के प्रचार मे तत्पर रहे।

●

किशोरमञ्च—

नचिकेता

प्रस्तोता बलजीत शास्त्री

वाजश्रवा नाम के एक ऋषि थे। एक बार उन्होने सर्वमेध यज्ञ किया। इस यज्ञ को जो व्यक्ति करता है। वह सब कुछ दान कर देता है। वह मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर सकता है।

यज्ञ के आखिरी दिन वाजश्रवा ने दान देना शुरू किया। उनके पास गायें अधिक थी। दान देते देते वे सोचने लगे कि यदि इस प्रकार सारी अच्छी गौए दे दूगा तो मेरे पास कुछ भी नही बचेगा। वे बूढी गायो का दान करने लगे। यह बात उनके लडके को अच्छी नही लगी। लडके का नाम नचिकेता था। वह अभी किशोर अवस्था मे ही था। वह सोचने लगा— कही पिताजी मेरे लिए तो ऐसा नही कर रहे हैं। वह दौडता हुआ पिता के पास गया और बोला—पिता जी! ये सब गौएँ तो आपने ब्राह्मणो को दे डाली और मुझे किसे दोगे।

यह सुनकर पिता को बडा गुस्सा आया और वे नचिकेता को डांटने लगे। उन्होने डाटते हुए कहा मैं तुझे यमराज को दूगा। यह सुनकर नचिकेता ने यमराज के पास जाने की तैयारी कर ली। उसके पिता जी को यह बात मालूम हुई। उन्हे बडा दुख हुआ क्योकि उन्होने आवेश मे यह कह दिया था। नचिकेता को बिल्कुल डर नही लगा और वह यमराज के पास जाने के लिए तैयार हो गया। पिता ने उसे रोकने की कोशिश की। नचिकेता ने एक न सुनी और कहा मुझे यमराज के पास जाना है। उनसे साक्षात्कार करना है डरना नही है। हम अपने पापो के कारण उनसे डरते हैं। इतना कहकर नचिकेता ने पिता के चरण छुए। वह वहाँ से चल पडा। बहुत दूर चलने पर वह यमराज के द्वार पर पहुचा। यमराज कही बाहर गये हुए थे। नचिकेता बाहर ही ठहर गया। जब यमराज लौट कर आये तब उन्होने आगन चबूतरे पर मुनि कुमार को देखा।

यमराज ने पूछा— तुम कौन हो? नचिकेता ने नम्रता पूर्वक कहा मैं वाजश्रवा मुनि का पुत्र हूँ। मेरा नाम नचिकेता है। मेरे पिता जी ने सर्वमेध यज्ञ किया था। उन्होने उस यज्ञ की दक्षिणा मे मुझे आपके सुपुर्द किया है।

यमराज को बडा आश्चर्य हुआ। उन्होने नचिकेता से पूछा—तुम्हे मेरे पास आने मे डर नही लगा? नचिकेता ने उत्तर दिया— भगवन्! सांसारिक मनुष्य हमे डरा देते हैं। हमे डरना नही चाहिए। आप तो सब की भलाई करते हैं। यदि

(शेष पृष्ठ ६ पर)

व्यासपीठ--

उपनिषत् कथा माला—१२

पवित्रता

लेखक—स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

दो चीजो के साथ मे दो चीजें बधी हुई है, जब तुम उन चीजो को हाथ मे लोगे तो स्वयमेव ही असली दो चीजें प्राप्त हो जायेंगी सफाई और सादगी। जिस समय यह दोनो तुम्हारे कब्जे मे हुयी उस समय इसका पारितोषिक क्या मिलेगा? तन्दुरुस्ती और सादगी, तो इनके साथ अपने आप आ जावेगी। सफाई क्या है? एक तो सफाई है कपड़े की चाहे कपडा कीमती न भी हो पर साफ होना चाहिए चाहे वह दो आने गज का ही क्यो न हो। यहा तो सफाई चाहिए। खाने मे तुम दो दाल रोटी चाहिए। पर दाल अच्छी और रोटी अच्छी हो, सिकी हो। प्राचीन समझदार माताए इस कायदे से भोजन बनाना जानती थी। उनको पता था कि फाल्गुन और चैत्र मे किस चीज का उपयोग करना चाहिये। ज्येष्ठ-आषाढ में किस चीज का और श्रावण मे किस चीज का यह भी वह जानती थी। वह आजकल की तरह आदमियो से यह कभी नही पूछती थी कि आज क्या बनाऊ? यह वह स्वयमेव ही जानती थी। प्रकृति ने दुनिया की रचना इतनी अच्छी की है कि मनुष्य बीमार नही हो सकता। जिस मौसम मे आम होता है, ज्यादा खाने से अजीर्ण हो जाता है। आम के साथ यदि दस पांच जामुन खा ले तो आम का दोष दूर हो जायेगा। फाल्गुन मे फोड़े फुन्सी हो जाते हैं उस समय के साथ बेर होते हैं जो फोडे फुन्सी को दूर करते हैं। माताओ को इन बातो को जानना चाहिए। इस प्रकार यदि यह बाते व्यवहार मे लाई जाये तो रोज इस प्रकार रुपये मे १० आने काम हो जाये। सफाई क्या है? साफ रहने को सफाई कहते हैं।

मै एक बार पंजाब मे भावद्दीन मण्डी गया उस जगह सफाई नही थी। वहा सब होटलो मे रोटी खाते है, साथ मे मास भी होता है। वहा कोई ऐसा ढाबा-रसोईखाना नही जहा मास न हो, समाज के पास एक दुकान है वहा एक नौजवान लडका बैठा हुआ मास खा रहा था उसके नजदीक ही एक आदमी जूती पहन बर-तन साफ रहा था और जूते मजे हुए पात्रो से लग रहे थे उस नौजवान ने कहा अरे भाई तू करता क्या है? कटोरे और गिलासो मे तेरे जूते लग रहे है। इतने मे एक दूसरा आदमी उस नौजवान से बोला-- चमडा है, इसको सिर्फ लगता है पर जो तू खा रहा है वह तो भीतर का है इसमे उनमे कहासुनी हो गयी, फिर तो लट्ठ चल गए, सो बात क्या है? दुनिया का नियम है कि खाने मे सफाई होवे। घर मे सफाई होनी चाहिये। यह तो हुई सफाई बाहर की। अब मन की भी सफाई होनी चाहिए। दिल के दोषो को साफ करो। फिर परमात्मा का साक्षात्कार हो जावेगा। दिल जिसका मलीन है, उसका क्या ठिकाना। दिल की सफाई होनी चाहिये। लेन-देन मे सफाई होनी चाहिए। पहली मे सफाई और दूसरी सादगी से क्या मत-लब? जो इन्सान तबियत का सादा होता है वह गुणग्राही होता है यह नियम है। दिल भी सादा होना चाहिए, कपडा भी सादा होना चाहिए, जैसे सादे कागज पर जो लिखते है वह पढ लिया जाता है। पर यदि लिखे कागज पर फिर लिख दिया जाय तो पहले का लिखा हुआ भी गया और दूसरा भी गया। तो जिसकी तबि-यत मे सादगी होती है। वह गुणग्राही होता है। हम गुणग्राही है। नही, यूरोप देश मे जिस तरह के कपडे बनते हैं वैसे हम भी बनाने लगे। वे हैट लगाते थे हमने भी हैट लगा लिया। वे टाई लगाते थे, हमने भी लगा ली। सब कुछ किया, पर क्या उनके गुण भी हमारे मे आये? जैसे वे टाइम के पाबन्द हैं वैसे हम नही हैं। जैसे उनको देश का प्रेम है वैसा हम मे नही। जिस प्रकार वे कपडे आदि से साफ रहते हैं क्या हम वैसे है? नही। क्यो नही हम गुणो को ग्रहण करते। हमारे मे सादगी नही, अगर सादगी होती तो वे गुण आ जाते है। गुण ग्रहण करना तो बहुत अच्छी बात है। भाई! कोई परमे-श्वर ने उनमे गुण नही डाल दिये हैं। उनने सिर जैसे हम है वैसे ही उनको बनाया है। परन्तु देखो आज हम कैसे हैं

जो यूरुप करेगा वही हम करेंगे।
जिधर वह चलेगा उधर हम चलेंगे॥
वह पढेगा हम भी पढेंगे।
वह लडायेगा, हम लडेंगे॥

यह बात है। गुरु गोबिन्दसिंह जी ने सिक्खो को कच्छा (जांघिया), कड़ा, केश और कृपाण ये पांच चीजें दी थी, पर किसी ने नही अपनाया। लेकिन जब यही चीजें यूरुप वाले पहनने लगे तो हम रिका मे लडाई हुई, वहा पतलून पहनते थे। इससे उठने मे बड़ी मुश्किल होती थी। जब सिपाही लडाई मे गिर जाते तो पतलून के कारण उनसे जल्दी नही उठा जाता था। एक बार कप्तान ने एक सिपाही के गिर जाने पर उसने पतलून को घुटने के नीचे नीचे से काट डाला। तब वह उठा। सब से नीचे तक का तो हो गया मोजा और ऊपर का हो गया नेकर। अब इसको सब पहनने लग पडे। हम सादी तबियत के नही हैं। आन्तरिक गुण जो हमारे हैं, वे कुछ मैले हैं। इनको साफ करने वाली सादगी है इस लये यह गुण है।

'साफ कर दिल को तू अपने
सिकन्दर हो जमाने का।'

अक्लमन्द आदमी बच्चे के भी सच्चे उपदेश को ग्रहण कर लेता है। हमे गुण-ग्राही होना चाहिये। जिस समय सफाई और सादगी हमारे पास होगी, उस समय हम मे तन्दुरुस्ती और सादगी अपने आप आ जावेगी। यही ज्ञान का तकाजा है। तुम सादे मत रहो सफाई से मत रहो तो तुम्हारी तन्दरुस्ती अवश्य बिगड जावेगी। सादगी नही आती है। इस वास्ते मेरे भाई ज्ञान का तकाजा है कि जिसके पास सादगी है उसको आजामयी लेने में बड़ा जोर नही लगाना पडेगा। थोडी ही हिम्मत से आ जावेगा।

ज्ञान के पीछे ताकत, बल है। बल कई किस्म का है। एक है जिस्मानी ताकत। जिस इन्सान की जिस्मानी ताकत ठीक है, वह इन्सान बीमारियों से बचता है। जिसकी जिस्मानी ताकत ठीक नही है वह बार बार बीमार होगा।

दूसरी है आत्मिक शक्ति और तीसरी है सामाजिक ताकत। ऋषि दयानन्द जी ने कहा था कि आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य ससार के प्राणिमात्र का उपकार करना है। ऐ आर्यो! इस बात को जान लो कि ससार का उपकार करना तुम्हारा उद्देश्य है। कितना बोझ आर्यो के कन्धो पर रख दिया है। इससे ऊंचा कोई उद्देश्य, इन्सान नही बना सकता। कोई अपने मुल्क की भलाई करेगा, कोई मनुष्य जाति का। पर ससार का उपकार करना आर्यो का मुख्य उद्देश्य बताया। इस उद्देश्य मे हम काम-याब तब होगे जब पहले हम अपनी शारी-रिक उन्नति कर लें। फिर आत्मिक उन्नति करो। पीछे से सामाजिक उन्नति करना। कौन पुरुष व समाज ससार का उपकार करने मे समर्थ होगा। वही पुरुष और समाज जो अपनी जिस्मानी ताकत को पैदा करेगा। जिसकी जिस्मानी ताकत ठीक होगी, उसकी आत्मिक अवस्था ठीक होगी। तीसरे आत्मिक बल और जिस्मानी ताकत मिलकर उससे जो समाज बनेगा, वही ससार का काम करेगा। जो आपस मे ही लडते हैं वे क्या ससार का उपकार करेंगे, इसलिए इन ताकतो को हमे सग-ठित करना चाहिये। □

(पृष्ठ ५ से आगे

कोई मनुष्य मरे नही तो उसके दुख भी नहीं दूर हो सकते।'

यमराज बड़े प्रसन्न हुए। उन्होने नचिकेता से कहा-- तुम मुझ से तीन वर मांगो।' नचिकेता ने कहा मेरे पिता मेरे से प्रसन्न हो जाएँ। यमराज ने कहा, ठीक है ऐसा ही होगा।

फिर उसने कहा कृपा करके मुझे स्वर्ग प्राप्ति का मार्ग बता दीजिए। यह विद्या भी उसको दे दी। इसके बाद नचि-केता ने कहा मुझे आत्मा के स्वरूप के बारे मे बतलाइये। मरने के बाद मनुष्य का क्या होता है?

यह सुनकर यमराज को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होने कोई दूसरा वरदान मागने को बात कही। नचिकेता ने कहा, सब कुछ नष्ट हो जाने वाला है। आप मुझे कृपा करके यही बताइये। यमराज ने उसे प्रलो-भन दिये। रथ, हाथी घोडे, बाग-बगीचे, महल, दास, दासी, रानी, राज्य आदि पर

नचिकेता ने यह बात सुनकर कहा — 'यमराज! ससार की सब वस्तुएँ नाश को प्राप्त हो जाने वाली है। मुझे इन चीजो की जरूरत नहीं। मैं तो यही जानना चाहता हू कि मरने के बाद मनुष्य का क्या होता है।' यमराज यह सुनकर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होने कहा ससार मे मनुष्य के सामने दो रास्ते है, एक हितकर दूसरा सुखकर। एक आत्मिक कल्याण का दूसरा भोग विलास का। मनुष्य ससार की वस्तुओ से प्रेम करते है और आत्मा की उन्नति की ओर ध्यान नही देते हैं, वे सुखी रहते हैं।

नचिकेता को यह सुनकर बड़ी प्रस-न्नता हुई। उसने सांसारिक सुखो के स्थान मे आत्मा की उन्नति को ही अच्छा समझा। यमराज ने उसे आत्मा के स्वरूप का ज्ञान कराया वह उसे पाकर बड़ा सुखी हो गया। हम भी ऐसे जिज्ञासु बनें और ससार मे अपने को अमर बनायें।

आर्यवीर दल—आर्यसमाज का भविष्य ।

क्या आर्यसमाज यह वर्ष युवा वर्ष के रूप में ले सकेगा ?

(उत्तमचन्द्र शरर)

आर्यसमाज बालब्रह्मचारी दयानन्द की बनाई संस्था है जिसका लक्ष्य ऋषि राज ने संसार की शारीरिक आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति लिखा है। ऋषि ने स्वयं जीवन भर इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए सतत संघर्ष किया धार्मिक क्षेत्र में पाखण्ड का खण्डन कर वेदोक्त धर्म का प्रतिपादन किया। सामाजिक क्षेत्र में पिछड़ी तथा असहाय जातियों तथा वर्गों का संरक्षण किया शारीरिक उन्नति के लिए ब्रह्मचर्य पालन का उपदेश दिया ऋषि के स्वर्गवास के पश्चात् आर्यसमाज ने इस कार्य को यथाशक्ति सम्पन्न किया। आज का भारत आर्यसमाज का ऋणी है। देश की सामाजिक धार्मिक तथा राष्ट्रीय उन्नति के लिए जो प्रयास आर्यों ने किया वह शायद किसी अन्य संस्था ने किया हो आर्यों को इस पुनीत कार्य मे नाना प्रकार की आपत्तियो से जूझना पड़ा कई महापुरुषो का बलिदान भी देना पड़ा परन्तु बलिदानी वीर सदा आगे ही बढ़ते रहे। यह भी एक सत्य है कि आर्यों के इस सर्वतोमुखी उन्नति के कार्यक्रम को कुछ सीमाओं मे बांध कर रख देना स्वयं ऋषि के मन्तव्यों को पूरा न समझना ही है। शुद्धि हो या गोरक्षा, वेदप्रचार हो अथवा पाखड खण्डन दलितोद्धार हो अथवा विदेशी संस्कृति का विरोध यह सारा आर्यसमाज का ही कार्यक्षेत्र है, उसे एक सीमा मे बांधना शायद आर्यसमाज के साथ अन्याय होगा।

आर्यसमाज तो समय की आवश्यकता है, अभी कार्य बहुत शेष है पथ तथा मतो के आडम्बर कुछ कम नही हुये, पाखड जोरो पर है। जात पात की जंजीरे रूप बदल कर सुदृढ़ हो रही हैं, शुद्धि के सुदर्शन चक्र को चलाने के लिए कई श्रद्धानन्द और लेखराम चाहिये, सामाजिक कुरीतियो ने आर्यजाति को सत्वहीन बना दिया है राष्ट्र चरित्रवान् देशभक्तों की प्रतीक्षा मे है, अत आर्यसमाज का मिशन तो पूरा करना शेष है इसमे कोई सन्देह नही, कि यह सब कुछ वेद सम्मत मार्ग पर चलकर ही सम्भव है।

प्रश्न होता है ऐसे उपयोगी समाज का जो मानवता का उपासक है राष्ट्र की हर प्रकार की उन्नति का जामिन है, ऐसे संगठन का भविष्य कैसा लगता है, यह चर्चा पहले कम थी, अब अधिक है और यहां तक देखा गया है 'तबीओ के चेहरे भी उतरे हुए हैं'।

आर्यसमाज मे युवक कम आ रहे है अत भविष्य धूमिल सा है। परन्तु यदि युवको को आर्यसमाज मे लाने का सफल प्रयास किया जावे तो आशा का प्रकाश निराशा के तम को दूर कर सकता है। मेरी इस विषय मे सार्वदेशिक सभा के कर्णधारो से प्रार्थना है कि यदि वे स्वीकार करे तो यह वर्ष आर्यसमाज मे भी युवा वर्ष के रूप मे मनाया जावे। राष्ट्र तो युवाशक्ति को अनुशासन का पाठ पढ़ा कर राष्ट्रीय सेवाओं के लिए तैयार कर रहा है आर्यसमाज भी आर्यजाति के पहलुओं को अनुशासित और संगठित करे। उसके लिए आर्यवीर दल से उपयोगी संगठन को कार्य का माध्यम बना दिया जावे। प्रत्येक समाज मे वर्ष भर की आय का चतुर्थांश युवाशक्ति के संगठन पर व्यय हो प्रत्येक समाज मे आर्यवीर दल तथा आर्यकुमार सभा की शाखाएं स्थापित की जाएं समाज के अधिकारियो मे भी अनुशासित तथा कर्मठ युवको को स्थान दिया जावे। धर्माभियान के समान यह वर्ष युवाभियान के रूप मे पूरी शक्ति से चलाया जावे यदि युवाशक्ति का हम वर्ष भर मे कुछ भी संगठन कर पाये तो यह एक उपलब्धि ही होगी। 'कुछ खार कम तो होंगे, गुजरेंगे हम जहां से'। आर्यवीर दल आर्यसमाज का भविष्य है। इस सत्य को स्वीकार कर लेना चाहिये कि जो कार्य एक युवक कर सकता है वह वृद्धो से सम्भव नही और यह भी सत्य है कि जो अनुभव बुजुर्गों के पास है वह नव शिक्षित युवा के पास नही। युवक बड़ो का आशीर्वाद प्राप्त करे, बड़े अपना स्थान युवको को देने मे प्रसन्नता अनुभव करें 'परस्पर भावयन्त' वाली बात बन जाये तो निराशा के बादल छट सकते है। अन्त मे एक आवश्यक बात यह कि सार्वदेशिक सभा के संगठन से जुदा कोई भी व्यक्तिगत अथवा समूहगत संगठन आर्यों मे विरोध तो उत्पन्न कर सकता है संगठन को बढ़ावा नही दे सकता और सार्वदेशिक की ओर से युवाओं का एक ही संगठन है—आर्यवीर दल।

ओ३म् ध्वज ले जाग उठना धर्म है

भैरवदत्त शुक्ल
महाराजा अग्रसेन विद्यालय, पो० सिकुनिया २६२९०६ जि० खीरी, (उ० प्र०)

दाय ऋषि का प्रिय सहेजे,
ओ३म् ध्वज ले जाग उठना धर्म है!

राजनीतिक कल्मषों से
विश्व के सब राष्ट्र भरते जा रहे।
दुष्टता प्रिय जीव चारो ओर
युग-उपलब्धि चरते जा रहे
त्यागियो को तोड़ भोगी
पामरो के दल उभरते आ रहे,
अन्न-धन होते हुए
शिशु नवयुवक नर नारि मरते जा रहे,

थक गये संचार साधन
खो गये स्वर बन निरर्थक व्योम मे
ध्यान कुछ देता नही
मानव हुआ इतना कुटिल बेशर्म है!
ओ३म् ध्वज ले जाग उठना धर्म है॥

क्या हुआ, यदि मिल न पायी
लोल प्रिय विश्राम की अंगनाइयां
क्या हुआ यदि बज न पायी
हर्ष पानी शान्ति की शहनाइयां
क्या हुआ यदि फल न पायी
लक्ष्य के उल्लास की अमराइयां
क्या हुआ यदि चल न पायी
सुख भरे इतिहास की पहुनाइयां,

धैर्य-शर्म उर मे भरे
प्रिय त्याग के संकेत सारे मान कर
दिग्भ्रमित जड़ संशयो का
दूर करना ही प्रथम युग-कर्म है।
ओ३म् ध्वज ले जाग उठना धर्म है॥

पढ़ ऋचाओं के स्वरो को,
तुम यजुष् के याग मग पर बढ़ चलो,
साम सरगम से 'स्वयंभू'
के सहज अनुराग गिरि पर चढ़ चलो,
गह अथर्व — अनन्त गरिमा,
शिव प्रगति की पीठिका प्रिय गढ़ चलो,
व्यावहारिक वर्ण-वैभव
से सभी सिद्धान्त-आनन मढ़ चलो,

ब्राह्मणों-आरण्यको का ले विभव
सब उपनिषद पहिचान कर
दर्शनो का सोच पाना,
स्मृति नियोजित बुद्धिवादी ★ वर्म है!
ओ३म् ध्वज ले जाग उठना धर्म है॥

क्रूर मिथ्या कुप्रथाओं
के भयावह से हरो अतिचार तुम
रूढ़ियो के बीच उलझी
युग-मनीषा का करो उद्धार तुम
उभरते आक्रामको का
एकय-बल से जम करो प्रतिकार तुम
साम्य की सच्ची सलोनी
व्यावहारिक छवि करो तैयार तुम,

आश्रमो की मंजु सीमा
मे सभी पुरुषार्थ के सकल भर
अत करता कटु विकल्पो का
सजीला सरल पाला मर्म है!
ओ३म् ध्वज ले जाग उठना धर्म है॥

आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका द्वारा विश्व आर्य सम्मेलन

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उपरोक्त सभा तारीख १४, १५ १६, १९८५ को अपने हरएक महोत्सव और विश्व आर्य सम्मेलन का आयोजन कर रही है। जिसके लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की अनुमति मिल चुकी है। हम आशा करते हैं कि भारत से और अन्य देशों से अधिक से अधिक व्यक्ति वहां पहुँच कर इसे सफल बनायेंगे। इसके लिए निम्नलिखित तैयारियाँ इच्छुक यात्री अभी से कर लें।

१ अपना पासपोर्ट बनवा लेवें। उसमें प्रवास के देशों में साउथ अफ्रीका का नाम अवश्य लिखवा लेवें। वैसे सामान्य रूप में साउथ अफ्रीका के लिए भारत सरकार अनुमति नहीं देती है। पासपोर्ट के सम्बन्ध में आपको स्थानीय ट्रेवल एजेण्ट या क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय आपको मार्ग-दर्शन दे सकेंगे। आप हमें भी लिखें जिससे यहाँ की वीसा फार्म आपको भेज देंगे।

२ भारत की प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएँ सार्वदेशिक सभा से सम्पर्क स्थापित करें। सम्भव है उन्हें यात्रियों का कोटा अधिक न मिले, तो आप स्वतन्त्र प्रयत्न करें।

३ अन्य भाई बहिन भी स्वतन्त्र रूप से पासपोर्ट और यहां के प्रवेश पाने की अनुमति के लिए प्रयत्न करें।

४ अपने मार्ग व्यय और प्रवास के लिए आवश्यक धन राशि इकट्ठी करें और एक्सचेंज के नियमों को समझ लेवें। दुतर्फी यात्रा के लिए 'वापसी टिकट' बनवाना आवश्यक है। दिल्ली से डरबन का एक तरफ का किराया लगभग १६०००/- रुपये और बम्बई से डरबन का किराया लगभग १७,५००) रुपये होगा। निश्चित किराया अपने ट्रेवल एजेण्ट से मालूम कर लें।

५ हमारी राय यह है कि आने वाले प्रतिनिधि तथा प्रवासी बन्धु मारीशस होकर डरबन पहुंचें। लौटते समय 'लुसाका' तथा नेरोबी होते हुए वापस भारत आ सकते हैं यदि वे चाहें। अन्यथा मारीशस होकर ही वापस आ सकते हैं।

६ प्रवासी भाई बहिन यदि वे चाहें तो, होटल में ठहर सकते हैं। जिसका किराया लगभग १० ५० अमेरिकन डालर प्रति व्यक्ति प्रति दिन होगा। वैसे सभा स्थानीय आर्य अनाथालय में भी ठहरने की व्यवस्था कर रही है। जिसका किराया मात्र ५ अमेरिकन डालर प्रतिदिन होगा।

७ आप चाहें तो डरबन में तीन सप्ताह तक ठहर सकते हैं। वैसे सम्मेलन का कार्य ४ ५ दिन में समाप्त हो जाएगा।

८ यदि आप सम्मेलन के कार्यक्रम में संगीत नृत्य अथवा अभिनय के कार्यक्रम देने में रुचि रखते हों तो इसकी सूचना हमें सितम्बर १९८५ से पूर्व अवश्य भेज दें जिससे आप को उन प्रोग्रामों में शामिल करने पर विचार किया जा सके।

९ वीसा के फार्म की कापी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली से प्राप्त की जा सकती है। वीसा फार्म के साथ पासपोर्ट के पहले चार पृष्ठों की फोटो स्टेट कापी जिसमें पासपोर्ट नम्बर व्यक्ति की पहचान, साउथ अफ्रीका में प्रवेश करने की अनुमति आदि हो भेजना आवश्यक है। पासपोर्ट भेजने की आवश्यकता नहीं है। हर व्यक्ति के दो फोटोग्राफ होने चाहिए जिसमें पीछे उसके हस्ताक्षर स्पष्ट अक्षरों में (अंग्रेजी में पूरा नाम व जन्म तारीख लिखी हो)।

१० ट्रेवल एजेण्ट से बात करके यलो फीवर तथा कोलरा के टिको का सर्टिफिकेट फार्म के साथ भेजे जावें।

११ पासपोर्ट में प्रवास के देशों में 'साउथ अफ्रीका प्रवेश पर निषेध, लिखा रहता है। इसको रद्द करवाना, आवेदक के लिए जरूरी है। भारत सरकार से दक्षिण अफ्रीका में प्रवेश की अनुमति मिलने में प्रायः कुछ विलम्ब होता है अतः हमारा सुझाव है कि आप अपने पासपोर्ट के पहले चार पृष्ठों की फोटो कापी एवं वीसा फार्म पहले ही भरकर हमें भेज दें। दक्षिण अफ्रीकी सरकार वीसा फार्म पर यह मानकर अनुमति दे देती है कि वहां पहुंचने के समय तक भारत सरकार की अनुमति पासपोर्ट पर मिल जायगी।

१२ डरबन में सितम्बर मास में हल्की गरमी पड़ती है। वहां इस समय मध्य ग्रीष्म ऋतु का मौसम होता है। अतः पहनने के लिए हल्के कपड़ों की ही आवश्यकता होती है।

१३ इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त करने और मार्ग दर्शन के लिए हमसे भी शीघ्र पत्र व्यवहार शुरू कर दें।

बी एस० रामभरोसे,
प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा साउथ अफ्रीका
३५ क्रास स्ट्रीट डरबन (साउथ अफ्रीका)

पं० नरदेव वेदालंकार
सभापति, वेद निकेतन

वन हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक

आर्यसन्देश के ७ जुलाई, १९८५ के अंक में "मौसम पर वनों का प्रकोप" शीर्षक से लिखित सम्पादकीय के अंतर्गत विचार महत्त्वपूर्ण तथ्यपूर्ण एवं प्रेरणादायक रहे।

निस्सन्देह वर्षा एवं आबादी की दृष्टि से वनों की अत्यधिक उपयोगिता है। यही कारण है कि हमारे देश में वनों का महत्त्व अति प्राचीनकाल से रहा है। वन हमारी संस्कृति के महत्त्वपूर्ण अंग रहे। वृद्धावस्था में वनों में जाकर शान्ति प्राप्त करने तथा भगवान् के भजन करने की एक गौरवशाली एवं सम्मानपूर्ण परम्परा रही। हमारे ऋषियों एवं मुनियों के आश्रम इन्हीं वनों में स्थित थे। सदैव वृक्षों का लगाना एक पुण्य कार्य समझा जाता रहा है। इसी से हमारे देश में वर्षा ठीक समय पर होती रही, देश सदैव धन-धान्य से परिपूर्ण रहा, वनों में लगाये गये आम जामुन महुआ तथा बेर आदि के वृक्ष हमें उचित समय पर फल देकर हमारी खाद्य समस्या को सुलझाने में सहायक रहे। नीम एवं चन्दन आदि के वृक्ष हमारे स्वास्थ्य को ठीक रखते तथा अनेक पेड़ एवं वनस्पतियाँ औषधियों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ अदा करती रहीं।

यही नहीं, उपरोक्त वन हमारे ऋषियों, मुनियों योगियों एवं चिन्तकों के लिए आवास, ध्यान तथा ज्ञान की प्राप्ति के मुख्य स्थल रहे। कौन नहीं जानता है कि ऋषियों की अन्तरात्मा में वेदों का प्रकाश इन्हीं वनों में हुआ था। भगवान् राम ने अपने चौदह वर्ष इन्हीं वनों में बिताये थे। पाँडवों ने अपने राज्य त्याग के १३ वर्ष इन्हीं वनों में बिताये। भगवान कृष्ण की मृत्यु वन में एक वृक्ष के नीचे चिंतन करते समय एक बहेलिए के तीर से हुई थी। राजकुमार सिद्धार्थ बोधिगया में एक वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त कर भगवान् बुद्ध बने थे। हमारे देश में गृहस्थाश्रम समाप्त कर वानप्रस्थ बनकर वनों में ही जीवन बिताने की परम्परा थी। यही कारण था कि यहां वृक्षारोपण, बाग लगवाना तथा वनों का विस्तार पुण्य कार्य समझा जाता रहा है। इसी से इस देश के मौर्य, गुप्त तथा राजपूत आदि सभी सम्राट् व राजे वृक्षारोपण को पुण्य कार्य समझकर जन-कल्याण की दृष्टि से उसमें विशेष रुचि लेते थे। उपरोक्त उद्धरण इस बात के स्पष्ट संकेत हैं कि सभ्यता के उदय से लेकर अंग्रेजों के आगमन के पूर्व तक हमारे देश में वनों एवं वन्यजीवन का विशेष महत्त्व रहा। अधिकाधिक वृक्षों के लगाने की परम्परा रही। जिस प्रकार कि ये वन हमें जलाने, इमारतों के निर्माण, बैलगाड़ी, रथ तथा हल्दी के लिए आवश्यक अन्य वस्तुओं के बनाने के लिए प्रचुर मात्रा में लकड़ी देते

उपरोक्त स्थिति के विपरीत वनों की उपेक्षा विश्व की अन्य प्राचीन सभ्यताओं के लिए घातक सिद्ध हुआ। जिस प्रकार कि जहां वनों के लगाने व संरक्षण की ओर समुचित ध्यान नहीं दिया गया मिस्र मेसोपोटेमिया तथा दजला फरात की अन्य सभ्यताएं विनष्ट होकर इतिहास की सामग्री बन गईं।

दुख का विषय है कि अंग्रेजी साम्राज्य के स्थापना के बाद हमारे देश में भी वनों के विनाश की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई। इसका कारण अंग्रेजों द्वारा बनाई गई रेल लाइनें सड़कें कारखाने तथा बसाये गये नये नये नगर आदि थे जिनका निर्माण वनों के विनाश के बाद ही सम्भव हो सका। निःसन्देह उपरोक्त कार्य जनहित की दृष्टि से आवश्यक थे परन्तु ऐसा करते समय यदि अंग्रेज शासकों ने वृक्षारोपण के कार्यक्रम को बढ़ावा दिया होता तो वृक्षों एवं वनों के विनाश की वर्तमान स्थिति कदापि न होती। दुख का विषय है कि स्वाधीनता के बाद हमारी राष्ट्रीय सरकार ने भी इस ओर समुचित ध्यान नहीं दिया। जिसके फलस्वरूप वृक्षों की संख्या तथा वनों का क्षेत्रफल घटता गया।

प्रसन्नता का विषय है कि वैज्ञानिकों की वन संबंधी रिपोर्टों तथा सुन्दरलाल बहुगुणा ऐसे महानुभावों द्वारा चलाये गये चिपको आन्दोलनों के फलस्वरूप सरकार का ध्यान इस ओर विशेष रूप से आकर्षित हुआ तथा वह इस दिशा में विशेष सक्रिय हुई। प्रतिवर्ष मनाये जाने वन-महोत्सव, वृक्षों के कटने पर प्रतिबन्ध तथा वृक्षारोपण पर विशेष जोर इसके प्रमाण हैं। आवश्यकता है कि उस सम्बन्ध में निम्न सुझावों की ओर ध्यान दिया जाय-

(१) प्रतिवर्ष वनमहोत्सव मनाकर अधिकाधिक वृक्षों के लगाने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया जाये। यह कार्य केवल सरकारी स्तर पर न कर अधिकाधिक जनता को इसमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाय। (२) एक वृक्ष काटने वाले के लिए उसी जीव के दस वृक्ष लगाने का कानून बनाकर उसका पालन कठोरता के साथ कराया जाय। पौधों को लगाने वाले ही वृक्षों के मालिक घोषित किये जायें। उनकी रक्षा का उत्तरदायित्व भी उन्हीं पर हो। (३) सरकार द्वारा सड़कों तथा रेलवे लाइनों के किनारे अधिकाधिक वृक्ष लगवाये जायें तथा उनकी रक्षा के विशेष उपाय किये जायें। (४) ईंधन निमित्त लकड़ी के प्रयोग को सीमित करने के लिए सरकार शीघ्रातिशीघ्र सौर ऊर्जा के विकास की ओर विशेष ध्यान दे। (५) दूरदर्शन तथा आकाशवाणी द्वारा वृक्षारोपण तथा वृक्षों के महत्त्व के संबंध में विशेष कार्यक्रम एवं वार्तायें प्रसारित की जायें।

सरकार को चाहिए कि वह उपरोक्त सुझावों की ओर ध्यान दें।

सकलचन्द्र शर्मा [illegible]

(पृष्ठ ४ से आगे)

इस प्रकार जनवरी सन् १९५० से जून सन् १९५४ तक २९ करोड़, २७ लाख रुपया भारत मे विदेशों से आया। इस धनराशि से धर्मपरिवर्तन देश के अनेक भागो मे बड़े वेग से होने लगा। आश्चर्यजनक सफलता को देखकर यह विदेशी सहायता जहा ४॥ वर्षों में २९ करोड २७ लाख थी वहा समाचार पत्रो मे सरकारी क्षेत्रों से बताये गये सूत्रो के अनुसार गत २॥ वर्षों में ३४ करोड हो गई। १९७६-७७ में ९४ करोड ४० लाख ३३ हजार १५ रु० विदेशो से मिशनरियों को प्राप्त हुए।

अंग्रेजी राज्य के १५० वर्षों मे इतनी तीव्र गति से ईसाइयत नहीं बढी थी जितनी नेहरू राज्य की धर्मनिरपेक्षता की नीति के कारण स्वतन्त्रता के इन १७ वर्षों मे बढी है।

पुराने कांग्रेसी नेता पंजाब के भू० पू० राज्यपाल माननीय श्री गाडगिल महोदय ने ९ फरवरी १९५९ को जगाधरी में प्रेस बायटेरियन चर्च की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर विदेशी पादरियो को अभय दान देते हुए कहा था कि ईसाई मिशनरियो ने जितना काम स्वतन्त्रता के इन १० वर्षों मे किया है उतना काम पराधीन भारत के ५० वर्षों मे भी नही किया था।

द्रविड कडगम तथा बौद्धमत

द्रविड कडगम के नेता दक्षिण मे ब्राह्मण विरोधी योजना की आड मे खुलकर हिन्दुत्व का सर्वनाश कर रहे हैं। भगवान राम के चित्र जलाये जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त उत्तर भारत के हरिजनो को सलाह दी जा रही है कि वे हिन्दू धर्म छोडकर बौद्ध बन जावें। अभी अभी कानपूर मे राज्य की रिपब्लिक पार्टी की शाखा में भाषण देते हुए द्रविड नेता श्री इ० वी० रामस्वामी नायकर ने कहा कि आपको ब्राह्मण देवताओ से छुटकारा प्राप्त करना होगा अन्यथा आप इस निम्न पद से ऊपर उठकर दैवी पद प्राप्त न कर सकेंगे। अत पिछडी जातियों को हिन्दू मजहब छोडकर बौद्धमत अपना लेना चाहिए।

स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् सरकारी खजाने मे करोडो रुपये खर्च करके बौद्ध धर्म का प्रचार किया जा रहा है। इन १० वर्षों मे सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओ से जितना साहित्य प्रकाशन किया गया, उनमे आर्य हिन्दू मान्यताओ पर भारी चोटें की गई हैं। 'भगवान बुद्ध' नामक पुस्तक मे जो साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित की गई है जनता की अहिंसक भावनाओ को बदलकर मासाहार का प्रचार करने के निमित्त लिखा गया है। भगवान बुद्ध, महावीर स्वामी मास खाते थे तथा प्राचीनकाल के ब्राह्मण गोमास भक्षी थे। इस प्रकार का साहित्य बहुत बडी धनराशि व्यय करके प्रकाशित किया जा रहा है। श्रीयुत के० एम० मुन्शी द्वारा लिखित 'वैदिक एज' तथा अन्य पुस्तकें इसी मनोवृत्ति का एक नमूना है।

कम्युनिस्ट पार्टी

हिन्दू जाति की संख्या को भारी क्षति पहुचाने वाली उपर्युक्त संस्थाओ का थोडा थोडा उल्लेख हम ने ऊपर की पक्तियों मे करने का यत्न किया है। किन्तु रोटी और अर्थ के नाम पर एक और बहुत बडी जोंक पुराने भारतीय आर्य हिन्दू विचारो मे लगी हुई है और बडी तीव्र गति से नवयुवको मे परिवर्तन करके कार्ल मार्क्स तथा लेनिन और स्टालिन के रूसी विचारो का प्रचार कर भारतीय परम्परा को खोखला कर रही है उसका नाम है—कम्युनिस्ट पार्टी। देश के कारखानो मे हडतालें करवाना, मिल मालिक और मजदूरो मे झगडे पैदा करना 'दुनिया के मजदूरो एक हो जाओ' का नारा लगवाकर काफी यूनियन, ठेला यूनियन, श्रमजीवी संघ नाई यूनियन, धोबी यूनियन आदि अनेक प्रकार की यूनियनें बनाकर और चलते काम तथा लगी नौकरियो को छुटवाकर हर मामले मे हडताल करवाकर स्वय चौधरी बन जाना इस पार्टी के नेताओ का प्रधान काम है। जो लोग इस पार्टी के चक्कर में पड जाते हैं उनका धर्म कर्म संस्कृति, सभ्यता आदि सब काफूर हो जाता है। कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य भारतीय सभ्यता, संस्कृति तथा रीति रिवाजो एव पूर्वजों मे विश्वास नही रखते। होली, दीपावली दशहरा रामनवमी कृष्ण जन्माष्टमी आदि त्योहार मनाना ठीक नही समझते। हा, यदि कोई त्योहार मनाना हो तो मई दिवस अथवा लेनिन, स्टालिन आदि रूसी नेताओ का जन्म दिवस बडी धूमधाम से मनाया जाता है। जलूस निकाले जाते हैं, जलसे किये जाते हैं। इस पार्टी का उद्देश्य है—अन्न खाना भारत का और गीत गाना रूस के। ईसाई मिशनरियो की तरह यह पार्टी भी आर्य हिन्दू विचारो तथा परम्परा को नष्ट भ्रष्ट करके रूसी साम्यवाद के प्रसार मे पूरी शक्ति लगा रही है। कोई नही जानता इस पार्टी के नेता राजनीतिक शक्ति हथिया लेने पर क्या रग बदलें।

हिन्दू जाति के लिए यह पार्टी भी एक भारी खतरा है।

ऊपर की पक्तियो मे आने वाली भयकर विपत्तियो की ओर सूत्ररूप से कुछ सकेत किए गए हैं।

आर्य धर्म तथा भारतीयता-विरोधी अमरीका इग्लैण्ड आदि यूरोपीय देशों से समर्थित ईसाई मिशनरी आक्रमणात्मक योजना, पाकिस्तान से सहायता प्राप्त मुस्लिम तबलीग तथा रूसी इशारो पर नाचने वाली कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम अन्ततोगत्वा इन सब का हल क्या है? आर्य जाति और भारतीयता कैसे सुरक्षित हो सकती है?

भयानक सर्वनाश की समस्या का समाधान

आज से ८० वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जब अपना प्रचार कार्य आरम्भ किया और आर्यसमाज की स्थापना कर दी थी तब कुछ लोगो ने महर्षि दयानन्द से प्रश्न किया कि क्या आप भी एक नये मत की स्थापना कर रहे हैं? महर्षि ने बड आदरभाव मे उत्तर दिया कि—ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि पर्यन्त जिस पुनीत वैदिक धर्म का हमारे पूर्वज मानते चले आये हैं उसी के यथार्थ स्वरूप के दिग्दर्शन और रक्षण के लिए आर्यसमाज की स्थापना की जा रही है। कोई नया मत प्रचलित करने का मेरा मन्तव्य नही है वैदिक धर्मावलम्बी ऋषि मुनियो की परम्परा सुरक्षित रहे यही हार्दिक इच्छा है।

महर्षि की उपर्युक्त आकाक्षा को पूर्ण करने के निमित्त अंग्रेजी राज्य की छत्रछाया मे बढने वाले विदेशी पादरियो मे बडी वीरता के साथ आर्यसमाज ने टक्कर ली। ईसाई मिशन का खुला मुकाबला करने के लिए करोडो रुपया खर्च करके समूचे देश मे हजारो स्कूल कालिज गुरुकुल अनाथालय वनिता आश्रम औषधालय खोल दिये। खुले मैदान मे शास्त्रार्थ करके आर्य विद्वानो ने पादरियो के छक्के छुडा दिये। आर्यसमाज को विश्वास था कि अंग्रेजों के चले जाने के बाद ईसाई पादरियों की गतिविधिया स्वय शान्त हो जायेगी। किन्तु भारत सरकार की धर्मनिरपेक्ष नीति और अमेरिका इग्लैण्ड आदि की कूटनीतियां तब सामने आईं जब हजारो गोरे पादरी करोडो रुपये की सहायता से देश की पिछडी जातियो को द्रुतगति से ईसाई बनाने लगे। नागा प्रदेश मे पादरियो की गतिविधि से भारत सरकार परिचित है जहा सरकार के प्रति षडयन्त्रकारी विद्रोह किया जा रहा है। इसके साथ ही हिन्दुओ की संख्या घटाकर किस प्रकार विदेशी तत्त्वो को प्रोत्साहन मिल रहा है यह हम ऊपर बता चुके है। ऐसी स्थिति मे हिन्दू मात्र का परमधर्म है कि इस पवित्र कार्य मे आर्यसमाज को योगदान दें। प्रत्येक ग्राम और कस्बे मे आर्यसमाज स्थापित हो। समाजरूपी पुलिस चौकी की स्थापना के पश्चात् कोई विदेशी मिशनरी भारतीय परम्परा की चोरी नही कर सकता। इसलिए आर्यसमाजो की स्थापना सर्वत्र होनी चाहिए।

प्रत्येक हिन्दू अपनी आय का कम से कम एक रुपया इस पवित्र कार्य के लिए आर्यसमाज को दान दे जिससे विदेशी धन का मुकाबला किया जा सके।

गाव गाव मे संस्कृत और हिन्दी की पाठशालाओ की स्थापना की जाय जिनमें प्रारम्भिक कक्षाओ मे बालको की धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध हो।

देश मे ७० लाख नामधारी साधु है यदि इनमे से कुछ हजार भी इस पवित्र कार्य मे लगने का प्रयत्न करे तो राष्ट्र एव धर्म का आनेवाली भयकर आपत्ति से बचाया जा सकता है।

देश के विभिन्न प्रान्तो के एम पढे लिखे विद्यार्थियो को ट्रेनिंग देकर अपने अपने क्षेत्रो मे कार्यों पर नियुक्त करने की योजना पर अविलम्ब आचरण होना अत्यावश्यक है।

देश की समस्त आर्यसामाजिक सनातनधर्मी जैन एव हिन्दू संस्थाओ की ओर से सामूहिक आन्दोलन प्रारम्भ कर देना चाहिए, जिसके द्वारा सरकार से बलपूर्वक माग की जाय कि विदेशी पादरियो की अराष्ट्रीय प्रवृत्तियो को रोकने के लिए उन्हे भारत से अविलम्ब निकाल कर देश और धर्म के प्रति होने वाले भयानक षड्यन्त्रो से गरीब प्रजा की रक्षा करे।

पिछडी जातियो के निवास स्थानो पर जाकर उनकी पुरानी धार्मिक प्रवृत्तियों को जागृत कर पादरियो की गतिविधियो से उन्हे सतर्क करना और उनमें धार्मिक विचारो का प्रसार करना अत्यन्त आवश्यक है।

हम जानते हैं कि इस महान कार्य के सम्पादन मे भारत सरकार अपनी दब्बू नीति के कारण शायद कुछ न कर सके किन्तु महर्षि दयानन्द का आर्यसमाज आर्यवीरो के दल-बल को लेकर इस महान् कार्य मे जुट जाने के लिए सन्नद्ध है। इस कार्य की सफलता के लिए देश के सेठ, साहूकार, व्यापारी और साधारण जनता सभी को मिलकर आर्यसमाज की सहायता करनी चाहिए। अन्य किसी संस्था का इस ओर ध्यान नहीं।

समाचार-सन्देश

दिल्ली आर्यसमाजों के साप्ताहिक सत्संग कार्यक्रम ४ अगस्त १९८५ रविवार

प्रतापनगर—प० आशाराम प्रेमी। अशोकनगर—प० देवराज वैदिक मिशनरी। आर्यपुरा—प० बलबीर शास्त्री। आनन्द विहार—प० जयभगवान भजन मण्डली। विवेक विहार—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती परिव्राजक। किशन गज—प० ओमप्रकाश शास्त्री। कालका जी—प० नत्रपाल आर्य। किगज्वे कैम्प - ब्रह्मचारी मनुदेव शास्त्री। गाधीनगर—प० आशानन्द भजनीक। गीता कालोनी- आर्यवीर रणजीत राणा। गोविन्दपुरी—प० तुलसीराम आर्य। गोविन्द भवन—प० अमरनाथ कान्त आर्योपदेशक। जनकपुरी बी-१—महात्मा मुनी शकर। जनकपुरी सी ३—डा० सुखदयाल भूटानी। टैगोर गार्डन—प० चुन्नीलाल आर्य। तिमारपुर—प० सोमदेव शास्त्री। तिलकनगर - महात्मा रामकिशोर वैद्य। देवनगर—प० रमेशचन्द्र वेदाचार्य। न्यू मोतीनगर - प० वेदप्रकाश शास्त्री। नारायण विहार—ब्र० रामबीर। प्रीतमपुरा—प० सत्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार। पजाबी बाग—प० उदयश्रेष्ठ धर्माचार्य। पजाबी बाग एक्सटेन्सन—डा० रघुनन्दन। बसई दारापुर—मा० मोहनलाल गाधी। महरौली—स्वामी यज्ञानन्द सरस्वता। महावीरनगर—प० अमीचन्द्र मतवाला। मोडलबस्ती—महात्मा वेदभिक्षु। मोतीबाग—ब्रह्मचारा नरेन्द्र शास्त्री। राणाप्रताप नगर—प० चमनलाल आर्य। रघुबरपुरा—प० वेदव्यास आर्य। रमेशनगर—श्रीयमव्रत शास्त्री। लाजपत—प० धर्मवीर शास्त्री विद्यावाचस्पति। लड्डूघाटी—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री। विनयनगर—आचार्य श्यामलाल जी। श्रीनगर—प० मनोहर लाल ऋषि। हौजखास—प० हरिश्चन्द्र आर्य।

व्यवस्थापक
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेदप्रचार

आर्यसमाज की गतिविधियां

प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली का शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री से मिला

महिलाओ का परिवार व राष्ट्र मे शान्ति तथा एकता रखने मे बडा योगदान रहा है। और आज भी इस क्षेत्र मे उनको भूमिका निभानी है। ये शब्द प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी ने प्रान्तीय आर्य महिला सभा के शिष्ट मण्डल से कहे। उन्होने भारतीय सस्कृति के प्राचीनतम व आधार भूत मूल्यो की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी महिलाओ को बताई और उनके कार्य की रक्षक के रूप मे महिलाओ की जिम्मेदारी को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बतलाया। प्रान्तीय आर्य महिला सभा की ओर से प्रधान मत्री श्री राजीव गाधी को वेद तथा वैदिक साहित्य भी भेंट किया गया।

सवाददाता

प्रचार वाहन द्वारा प्रचार

दि० १ जुलाई दोपहर १ बजे से २ बजे तक सेवाकेन्द्र कार्यालय मण्टो हाउस मे प्रचार रखा गया यहा के इन्चार्ज श्री प० रमेशचन्द्र शर्मा जी के निमत्रण पर यह प्रचार काय रखा गया था। जिसमे प० आशाराम प्रेमी, श्याम राघव प० चुन्नीलाल, प० ज्योतीप्रसाद द्वारा सगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत हुआ। यह कार्यक्रम शिव मन्दिर के प्रागण मे सघन वृक्षो की छाया मे सम्पन्न हुआ। स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती वेद प्रचार अधिष्ठाता ने आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डाला और हास्य कविताओ द्वारा मनोरजन किया। कार्यालय के सभी कर्मचारियो ने विशेष माग प्रकट की कि अगले शुक्रवार को भी अवश्य आयें। श्री रमेशचन्द्र जी शर्मा ने ५१) दान दिया और श्रीमती गुलाबदेवी ने १०) दान दिया हर्ष उल्लास के साथ सभी ने भाव भीनी विदाई देकर स्वागत किया।

सत्यार्थप्रकाश की परीक्षाएँ

मानव जीवन, सद्गृहस्थ व सदनागरिक और राष्ट्र निर्माण के कार्य मे अत्यन्त उपयोगी, महर्षि दयानन्द कृत पवित्र ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की चार प्रकार की परीक्षाएँ, गत दो दशको से पूरे भारत देश में आर्य युवक परिषद् दिल्ली,(रजि०) द्वारा कराई जाती हैं, जिनसे लाखो परिवारो को लाभ पहुचा है।

इस वर्ष ये परीक्षाऐं २२ सितम्बर को होगी। यह वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय युवावर्ष है। अत ऋषि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने हेतु इस बार अधिक से अधिक युवा बाल वृद्ध, स्त्री-पुरुष इन परीक्षाओ में बैठ कर अपने कर्त्तव्य का पालन करें।

पूरी जानकारी के लिए परीक्षा मन्त्री चमनलाल एम० ए०/एच-६४, अशोक विहार फेज I, दिल्ली-५२ से सम्पर्क करें।

चमनलाल (परीक्षा-मन्त्री)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रचार कार्य

दिल्ली सभा के आर्य भजनोपदेशक प० आशाराम प्रेमी श्याम राघव द्वारा आर्यसमाज सराय रोहिला श्री ज्ञानचन्द्रआर्य के निमत्रण पर २७ जुलाई को शास्त्रीनगर मे प्रचार रखा गया जिसके फलस्वरूप ५१) सभा को दान प्राप्त हुआ।

२८ जुलाई रविवार को श्री होशियारसिंह जी द्वारा सर छोटूराम सरल इन्स्टीट्यूट एण्ड टैकनोलोजी कझावला, दिल्ली ११००८१ मे वेदप्रचार रखा गया। जिसमे प० आशाराम प्रेमी की भजन मण्डली का सायकाल ३ बजे से ५ बजे तक भजनोपदेश रहा। हजारो श्रोतागणो ने प्रचार से धर्म लाभ उठाया और १०१) सभा के लिए दान प्राप्त हुआ।

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती वेद प्रचार अधिष्ठाता द्वारा २० जुलाई प्रात चन्द्र आर्य विद्यालय सूरज पर्वत में यज्ञ के पश्चात् छात्राओं के मध्य में शिक्षाप्रद उपदेश हुआ। २०) सभा को दान प्राप्त हुआ।

२८ जुलाई को गाँव असावती मे स्वामी जी द्वारा यज्ञ व उपदेश हुआ जिसमे कई व्यक्तियों को यज्ञोपवीत धारण कराया और मद्य-मास का सेवन बन्द कराया। सभी ने अटल व्रत लिया कि अभक्ष्य पदार्थ का भक्षन नही करेंगे। साथ साथ ही एक शिशु का नामकरण सस्कार भी कराया गया।

ललित मोहन नाम रखा गया। इस अवसर पर गाव के प्रतिष्ठित व्यक्ति और महिलाएँ भारी सख्या मे उपस्थित रहे। महाशय भजनलाल जी ने कार्यक्रम के पश्चात् मद्य निषेध का उपदेश दिया और सभा को ६१ रु० दान दिया। सभी महानुभावो ने भावभीनी विदाई देते हुए भजन मण्डली द्वारा कार्यक्रम रखने की माग करी।

श्रमदान और सेवा का आदर्श रूप

२० जौलाई, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामन्त्री श्री डा० धर्मपाल के आग्रह पर सभा के अधिकारी एव कार्यकर्ताओ ने सभा कार्यालय की सुव्यवस्था एव स्वच्छता के लिए श्रमदान एवं सेवा का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर महामन्त्री डा० धर्मपाल, श्री देवव्रत शर्मा, श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्री सुरेन्द्र हिन्दी, श्री प्रियतम दास रसवन्त, श्री जगदीश, श्री रामकिंकर, श्री धर्मवीर शास्त्री आदि अधिकारी एव कार्यकर्ताओ ने भाग लिया।

इस श्रमदान मे विशेष बात यह थी सभा अधिकारी झाड़ू कपड़ा आदि लेकर सफाई और रिकार्ड की व्यवस्था के लिए धूल मे सने कार्य कर रहे थे। बिना किसी भेदभाव के मिलजुलकर सेवा कार्य करने का यह उदाहरण श्लाघनीय है।

—सम्पादक

श्रीमती नेमवती धर्मार्थ ट्रस्ट ६१ ई कमलानगर दिल्ली-७ द्वारा प्रचलित त्रि-सूत्री स्वर्णिम योजना

१ देश और जाति उत्थान हेतु प्रचारार्थ अपनी जीप वाहन की निःशुल्क सेवा प्रदान करना।

२ वैदिक मिशनरी निर्माण केन्द्र मथुरा में, युवक एव प्रौढ जीवन दानी व्यक्तियों को निःशुल्क प्रशिक्षित कराकर ससम्मान उपयुक्त कार्यक्षेत्र और समुचित दक्षिणा की व्यवस्था कराना।

३ शुद्ध साहित्य एव तथा भूमि लाईफ नेचुरल आदि मासिक मूल्यवान पत्रिकाओ को उन व्यक्तियो व सस्थाओ को, जो मूल्य देने की स्थिति मे नही हो, उन्हें निःशुल्क अथवा अल्प मूल्य पर प्राप्त कराना।

सम्पर्क करे—श्यामसुन्दर आर्य
६१ ई० कमलानगर, देहली ७

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक की स्मृति में स्थिर-निधि

आर्यसमाज दीवानहाल की महती सभा मे श्री पाठक जी को शोक श्रद्धांजलि दी गई। साथ मे श्री पाठक जी की स्मृति मे एक स्थायी निधि खोलने का प्रस्ताव पास किया गया जिसके द्वारा उनकी लिखी हुई पुस्तको एव लेखो आदि का प्रकाशन भविष्य मे भी किया जाता रहे। प्रस्ताव पारित होने पर निम्नलिखित महानुभावो ने अपनी ओर से धन देने का आश्वासन दिया है। आर्य जनता से निवेदन है इस निधि को स्थायित्व देने हेतु आप अधिक से अधिक दान सार्वदेशिक सभा कार्यालय दिल्ली को भेजने की कृपा करें।

क्रम	नाम	राशि
१	दयानन्द सेवाश्रम सघ की ओर से	५०००)
२	श्री रामगोपाल जी शालवाले प्रधान सार्व० सभा	१०००)
३	श्री सूर्य नारायण शर्मा	१०००)
४	श्री केशवचन्द पाठक	१०००)
५	आर्यसमाज दीवानहाल प्राप्त (धनराशि)	२००१)
६	श्री ब्रह्मदत्त जी स्नातक	२०१)
७.	श्री राधाकृष्ण वर्मा C/o आ० स० दीवानहाल	२०१)
८.	श्री कमलेश कुमार C/o आ० स० दीवानहाल	१०१)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ का ६१वा अधिवेशन तथा वार्षिक निर्वाचन

आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का ६१ वा वार्षिक अधिवेशन २७ २८ जुलाई १६८५ को डी०ए०वी० कालज लखनऊ मे हुआ। सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल जी शालवाले का पूण निदशन इस अवसर पर रहा समस्त उत्तर प्रदेश मे आयसमाजो से १ ५०० के लगभग प्रतिनिधि उपस्थित थे। भूतपूव ससद सदस्य प० शिवकुमार शास्त्री जी इस अवसर पर पधारे और आय जगत् के श्रेष्ठ विद्वान् भी सम्मिलित हुए।

सावदशिक सभा के प्रधान श्री शाल वाले जी ने अपने ओजस्वी भाषण मे प्रदेश के आय समाजियो म नवीन प्रेरणा और जागति उत्पन्न की तथा धर्मान्तरण के विरुद्ध सगठित होकर काय करने की प्ररणा की

वार्षिक निर्वाचन

१९८५ के लिए सवसम्मति से निम्न लिखित पदाधिकारियो का चयन किया गया —

प्रधान — प० इन्द्र राज जी मरठ
उपप्रधान — १ श्री देवीदास आय कानपुर
२ श्री प्रमचन्द शर्मा हाथरस
३ श्रीमती सतोष कपूर (एम०एल०सी०) मिर्जापुर
४ प० सच्चिदानन्द शास्त्री दिल्ली
५ श्री धमन्द्रसिंह

मन्त्री — श्री मनमोहन तिवारी लखनऊ
उपमन्त्री — १ श्री जयनारायण अरुण बिजनौर
२ श्री दवपाल आय मुजफ्फरनगर
३ श्री बाकेलाल दयल ननीताल
४ डा० विनय प्रताप गगा सपुर
५ श्री जिन कुमार जलाली अलीगढ
कोषाध्यक्ष — श्री कृष्ण बलदेव महाना लखनऊ
सहायक कोषाध्यक्ष — श्री वीरेन्द्र आय अमर हा
पुस्तकालयाध्यक्ष — श्री विजयपाल शास्त्री कानपुर
उप पुस्तकालयाध्यक्ष — श्री सुरेन्द्र रत्न ठक

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ

श्री ओमप्रकाश गुप्त का निधन

आयसमाज ब्रह्मपुरी (घौं) दिल्ली के प्रधान श्री ओमप्रकाश गुप्त का १८ जौलाई को आकस्मिक निधन हो गया। दिवगत आत्मा के प्रति आयसमाज के सदस्यो ने प्रार्थना श्रद्धाञ्जलि अर्पित की २१ जौलाई को उनकी स्मति मे यज्ञ तथा शोक सभा आयोजित की जिसमे श्री गुप्त के आयसमाज मे किये सेवा कार्यों की सराहना की गयी।

मन्त्री
किशनलाल आय

सावदेशिक आय वीर दल समापन समारोह की झलकी
मञ्चस्थ दायें श्री ला० इन्द्र नारायण श्री बालकिशन वरागी श्री सुखदेव श्र डा० धमपाल श्री बाल दिवाकर हस

शिविर मे प्रदशन करते हुए आय वीर

समीक्षा

महान् शिक्षा शास्त्री महात्मा हंसराज

आर्यसमाज देश के १९-९-८५ के अंक में पृष्ठ पर बन्धुवर श्री ... मैं ... पुस्तक के विषय में मनीषी जी ने बहुत सुन्दर ... मे बहुत कुछ लिखा है तथापि मैं भी कुछ निवदन करना चाहता हू। लेखक व प्रकाशक उचित समझे तो मेरे निवेदन पर विचार करके अगले सस्करण का सुधार कर ले।

पृ० ५६ पर लिखा है कि ऋषि जी जब पजाब पधारे तो उनके व्याख्यानो का महात्मा हसराज पर बड़ा प्रभाव पड़ा। यह भी लिखा है कि लाहौर मे महात्मा जी ने ऋषि के व्याख्यान सुने। यह बात असत्य है। महात्मा जी ने न तो ऋषि के प्रवचन सुने न ही ऋषि जी के दर्शन किए महात्मा जी तो ऋषि के लाहौर आगमन के बहुत देर बाद लाहौर मे शिक्षा के लिए आए।

एक स्थान पर महात्मा जी को "मसीहा" भी लिखा है। लेखक ने महात्माजी और मसीह मे क्या समानता देखी ? यूं ही मसीह की बडाई कर दी। अच्छा होता लेखक महात्मा जी के मसीह पर विचार प्रकट करते।

प्राचीनकाल की शिक्षा मे व्यवस्था ... पृ० ६४ ... लगाए मिलाई ... लेखक ने इसका उल्लेख न करके एक भूल की है।

बीकानेर के अकाल के समय सेवा कार्य मे अग्रणी ला० लाजपतराय जी की चर्चा ही नही।

महात्मा जी को या तो शिक्षा शास्त्री के रूप मे ही प्रस्तुत किया जाता—यदि जीवन के अन्य पक्ष छूए थे तो उनकी वेद प्रचार के लिए सतत साधना वा उनके आध्यात्मिक जीवन पर भी अलग अलग अध्याय लिख दिये जाते। महात्माजी के पाण्डित्य, गहन अध्ययन की भी कुछ तो चर्चा की होती। लेखक के सत्प्रयास पर पुन बधाई। —राजेन्द्र जिज्ञासु

आर्यसमाज दुर्गापुरी लोनी रोड शाहदरा दिल्ली का वार्षिक चुनाव

आज दिनांक २१-७-८५ को वार्षिक चुनाव हुआ जिसका विवरण इस तरह है--

प्रधान—श्री देशपाल जी
उपप्रधान—श्री पुरुषोत्तम जी
मन्त्री—श्री रघुबीर सिंह जी
उपमन्त्री—श्री मूलचन्द गम्भीर
कोषाध्यक्ष—श्री रामनारायण शर्मा
उपकोषाध्यक्ष—श्री चन्द्रभानु सुमन
पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री सुखवीर सिंह जी
लेखानिरीक्षक—श्री ऋषिपाल जी
प्रचार मन्त्री—श्री विष्णुदत्त जी

मन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

पुस्तक समीक्षा

वन्दना

वेद ब्राह्मण उपनिषद् गृह्यसूत्रादि के अधिकारी विद्वान् डा० कृष्णलाल द्वारा लिखित विभु वैभवम् विश्वनीड ई० ६३७ सरस्वती विहार, दिल्ली' द्वारा प्रकाशित 'वन्दना' नामक पुस्तक दृष्टिपथ मे आयी। यह पुस्तक जहा बाह्य आकार से सादगी को प्रस्तुत करती है वही प्रथम पृष्ठ से ही पढ़ने की तीव्र आकाक्षा इसकी विशेषता को प्रकट करती है। इसमे विद्वान् लेखक द्वारा वेद से चुने हुए पैंतालीस मन्त्रो के सरल सुबोध पदच्छेद, अन्वय, पदार्थ एव भावार्थ के माध्यम से हृदय स्पर्शी प्रभावशाली शैली युक्त आध्यात्मिक भावना से अनुप्राणित एव ओतप्रोत ज्ञानपिपासुओ और श्रद्धालुओ की परमात्मा मे परमश्रद्धा तथा प्रकृति के दृश्यमान् समूचे स्थावर जङ्गम पदार्थों मे उस नियन्ता की विराजमान सत्ता के प्रति प्रगाढ निष्ठा बलवत्तर होती जाती है निःसकोच साहस पूर्वक कहने मे समर्थ हूँ कि नास्तिक पुरुष मे भी इस पुस्तक से आस्तिकता के भाव एव सस्कार जाग्रत व उद्बुद्ध होने मे विलम्ब नही होना चाहिए।

इसका आवरण इतना उच्चस्तरीय है यह निस्सन्देह शिक्षा सस्थानो सामाजिक व्यक्तिगत जीवन मे प्रतिदिन सश्रद्ध बोलकर मनमकर सुख शान्ति की प्राप्ति की जा सकती है। प्रत्येक परिवार मे आबाल वृद्ध द्वारा इसका उपयोग कर जीवन को सरस बनाया जा सकता है। स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जैसे प्रखर वेद एव सिद्धान्तमर्मज्ञ विद्वान् सन्यासी द्वारा इस पुस्तक की भूमिका लिखा जाना उक्त विशेषताओ को प्रमाणित करती है।

समीक्षक
रूपकिशोर शर्मा

वार्षिक निर्वाचन

दिनांक ७ जुलाई ८५ को महिला आर्यसमाज हरीनगर घण्टाघर का वार्षिक निर्वाचन सर्वसम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान	श्रीमती प्रकाशवती वर्मा
उपप्रधान	श्रीमती ज्ञानदेवी खन्ना
मन्त्री	श्रीमती राजरानी सूदन
कोषाध्यक्ष	श्रीमती सत्या चौधरी

भवदीय
(आनन्द प्रकाश वर्मा) मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ मे मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

वर्ष ९ अंक ३९ | रविवार, १८ अगस्त, १९८५ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८६ | श्रावण २०४२ | दयानन्दाब्द १६१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २० रुपये | आजीवन २०० रुपये | विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

स्वाधीनता की यज्ञवेदी पर सर्वस्व अर्पण करने वाले 'होता'

लेखक—यशपाल सुधांशु

कई शताब्दियो की गुलामी की जञ्जीरों को तोडकर अनेक अन्धड तूफानो का मुख मोड़कर भारत देश ने स्वाधीनता प्राप्त की। इस स्वाधीनता के लिए कितने सारे क्रांतिकारी वीरो, शहीदो ने अपनी जान कुर्बान करी, कितनी चढती जवानियो ने अपने जिगर के खून से सीच कर भारत के नन्दन वन को सब्ज किया। ये स्वाधीनता दिवस अमर शहीदो की स्मृति का, उनके नगमे गुनगुनाने का, बलिदानियो की देशरागिन भावनाओ का सत्कार करने का दिन है। सर्वप्रथम स्वराज्य और स्वाधीनता की चिन्गारी फोडने वाले महर्षि दयानन्द स्तुत्य हैं जिनके संकेत एवं प्रेरणा पर १८५७ के वीरो ने आजादी की प्राप्ति के लिए अंगडाई ली, देश के कुण्ठित मानस को झकझोरा। अपने प्रिय शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा को विदेश भेजा जो क्रान्तिकारियो का प्रबल उन्नायक बना। वीर वीरांगना झासी की

रानी लक्ष्मीबाई, शूरवीर तात्या टोपे मगल पाण्डे, चन्द्रशेखर आजाद, वीर भगतसिह, राजगुरु सुखदेव, रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिह, अश्फाक उल्ला, मदनलाल धीगडा, उधमसिह, करतारसिह सराबा आदि अनेक महान् क्रातिकारी जिन्होंने अंग्रेज सरकार को प्रकम्पित किया। भारत माता के ये दुलारे स्तुत्य हैं। श्रद्धानत है मस्तक उस बगाली बोस सुभाषचन्द्र पर जिसने अंग्रेजो की नजरबन्दी तोडकर, छिपते छिपाते अफगानिस्तान से जर्मनी और फिर जापान पहुचकर दुनिया को हैरत मे डाला और सिगापुर पहुच आजाद हिन्द फौज बनायी। एक पूरी फौज लेकर अंग्रेज फौजो से मुकाबला करने निकल पडा वीर बहादुर। उस केहरी शेर की दहाड से भारत का बच्चा जाग पडा, अंग्रेजी साम्राज्य की नीव हिल गयी। सम्मान का अर्घ्य है उन नर केहरियो को जिन्होने अपने तप बलिदान यातना, त्याग और खून के छीटो से भारत मा के गौरवपूर्ण मस्तक पर कुकुम लगाया। वे तपपूत जननायक स्वामी श्रद्धानन्द, लोकमान्य तिलक, महात्मा गाधी, सरदार पटेल, कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर, लाला लाजपतराय शचीन्द्र नाथ, जवाहरलाल नेहरू तथा देश के तमाम प्रबुद्ध जन जो स्वाधीनता आन्दोलन के लिए जेलो मे गये। धन्य

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अपने उपदेशक विद्वानों का सम्मान अवश्य करें

—सूर्यदेव

४ अगस्त १९८५ को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत वेदप्रचार कार्य मे सहयोग देने वाले आर्य विद्वानों की एक बैठक आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल दिल्ली में सांय ४ बजे सपन्न हुई। सर्वप्रथम सभी उपस्थित महानुभावों का स्वागत करते हुए महामन्त्री डा० धर्मपाल ने इस बैठक के उद्देश्यो पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज की बैठक मे निम्नलिखित चार विषयों पर मान्य उपस्थित बन्धुओ के सुझाव आमन्त्रित किये जायेंगे तथा विचार विमर्श के पश्चात् भावी कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित की जायेगी—

१ वेदप्रचार कार्यक्रम—आर्यसमाज मन्दिरों मे, सार्वजनिक स्थानो पर, विद्यालयो मे तथा साहित्य प्रकाशन, विक्रय अथवा निःशुल्क वितरण द्वारा।

२ सभा का वेदप्रचार विभाग-आवश्यकताएँ तथा सभावनाएँ।

३ आर्य विद्वानो तथा उपदेशको के प्रस्ताव।

४ क्रियान्वयन प्रक्रिया।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक—यशपाल 'सुधांशु' एम० ए० | व्यवस्थापक—डा० सच्चिदानन्द | प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

सत्संग वाटिका

वेद मे कई स्थानों पर दार्शनिक तत्त्वो का विश्लेषण करते हुए आत्म-मीमासा की प्रेरणा पाई जाती है। जो लोग आत्मविज्ञान को कुछ भी महत्त्व न देकर इधर-उधर की बातो में जीवन लगा देने को ही परम पुरुषार्थ मान बैठते हैं। उनकी भ्रान्त धारणा को दूर करने तथा युग युगान्तर से प्रसुप्त जिज्ञासा को जागृत करने के लिए भगवान् वेद अनेक मन्त्रो के द्वारा उपदेश देते हैं। उपर्युक्त मन्त्र के स्फूर्तिदायक वचनो पर ध्यान दीजिये।

(१) क प्रथम ददर्श — किसने शरीर की उत्पत्ति से भी पूर्व विद्यमान रहने वाले आत्मा को देखा अर्थात् दृढ निश्चय-पूर्वक जान लिया कि यह जीवात्मा पहले ही वर्तमान था और शरीर की रचना का उपक्रम बहुत पीछे की घटना है। इस आत्मा की विचित्र और आश्चर्यकारिणी शक्ति को देखो कि वह अनादि और अविनाशी आत्मा —

(२) यत् अनस्था जायमानम् अस्थन्वन्त बिभर्ति—स्वय तो अस्थि से रहित है परन्तु उत्पन्न होने वाले शरीर को अस्थियो से भरपूर कर देता है और दिन प्रतिदिन शरीर का पालन-पोषण करके उसको सुदृढ और बलवान् बना देता है, जैसे कोई भवन खम्भो पर खड़ा होता है, वैसे ही हमारा शरीर अस्थिपञ्जर पर खड़ा है। उत्पत्ति के समय से लेकर अस्थियों का स्तम्भ भी उत्पन्न होता रहता है और शरीर के अग-प्रत्यग भी समुन्नत होते रहते हैं। यह सब जीवात्मा की ही महिमा है, परन्तु आश्चर्यजनक बात यह है कि जीवात्मा स्वय तो इतना सूक्ष्म है कि उसके स्वरूप मे अस्थि क लेशमात्र भी नहीं और शरीर अस्थियों से भरपूर है।

मन्त्र मे सकेत किया है कि शरीर को अस्थन्वन्तम् अर्थात् अस्थियो से बलिष्ठ बनाने वाला शरीर से सर्वथा पृथक् है जो शरीर को बिभर्ति पालन-पोषण द्वारा हृष्ट पुष्ट करता है, 'बिभर्ति' क्रिया का कर्त्ता कोई और ही तत्त्व है जो शरीर की वृद्धि का मुख्य कारण है। यदि शरीर से पृथक् कोई चेतन आत्मा न होता तो शरीर की उत्तरोत्तर वृद्धि कदापि न हो पाती परन्तु होती है। यही कारण है कि आत्मा के न रहने पर मृतक शरीर की किसी प्रकार की वृद्धि नहीं होती क्योंकि वृद्धि करने वाला यहा से चला जाता है।

कई लोग विचार किया करते हैं कि-

(३) असु असृक् भूम्या.—'प्राण और रक्त' ये तो भूमि अर्थात् पचभूतो के उपादान से बनते हैं और ये ही शरीर में जीवन के कारण हैं। इन से पृथक् आत्मा

।विवाह बकर स्वागत किया।

वैदिक आध्यात्म विज्ञान

लेखक—इन्द्रराज

को ददर्श प्रथम जायमानमस्थन्वन्त यदनस्था बिभर्ति।
भूम्या असुरसृगात्मा क्वस्वित् को विद्वासमुपगात् प्रष्टुमेतत् ॥

ऋ० १।१६४।४

★

के निर्माण मे प्राण और रक्त का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है और बाह्य दृष्टि से यही दो तत्त्व शरीर की अभिवृद्धि और स्थिति के प्रधान कारण भी प्रतीत होते हैं, परन्तु ये तो कार्य हैं और इन के कारण पृथ्वी आदि पच महाभूत हैं। अत यह तो समझ में आ सकता है कि पचभूतो के कार्य अन्न जलादि से प्राण और रक्त की उत्पत्ति होकर शरीर की रचना, वृद्धि और पुष्टि होती है इसी हेतु शरीर अन्न-मय, रक्तमय है।

परन्तु शरीर केवल प्राण, रक्त, मास और अस्थि आदि पाँच भौतिक तत्त्वों के सघात ही का नाम नही है, शरीर में कोई जीवित जाग्रत तत्त्व भी है। जब शरीर एक जीता जागता मास का पुतला है तो जीवन कहाँ से आया? इस प्रश्न का उत्पन्न होना भी स्वाभाविक है। अत मन्त्र कहता है कि यह भी विचार करो कि—

(४) आत्मा क्वस्वित्—शरीर में जीवन की ज्योति जगाने वाला, अनेक क्रियाओं का सचालक और अनन्त प्रेरणाओं का प्रेरक 'आत्मा' कहां से आया? इस जीवन का कारण कौन है? क्या प्राण और रक्त आदि के समान जीवन तत्त्व का भी पृथ्वी आदि पचभूत ही कारण हैं अथवा उस तत्त्व की कोई अपनी स्वतन्त्र सत्ता है और यह आत्मा तत्त्व किसी भी उपादान से उत्पन्न नहीं है। मन्त्र ने कहा है कि शरीर को यथार्थ तया समझने के लिए शरीर के मूल तत्त्वो पर दृष्टि डालनी चाहिए। शरीर की स्थिति से प्रतीत होता है कि शरीर एक अस्थिपिञ्जर है। इस अस्थिपिञ्जर मे प्राण और रक्त का सचार हो रहा है और इस सचार से जीवनलीला चल रही है, परन्तु इस पुतले में कोई 'आत्मा' नाम का अलौकिक तत्त्व भी विराजमान है जो इस शरीर से, इस शरीर की क्रिया से और इस शरीर के उपादान से या मूल कारण से उत्पन्न नही हुआ है किन्तु उस की उत्पत्ति होने के समय से बहुत पहले से ही विद्यमान था। इसलिए मंत्र ने उसे 'प्रथम' कहा है। यह शरीर के अन्दर है और अन्दर रहकर शरीर का 'बिभर्ति' अर्थात् पालन पोषण करता रहता है। देख लीजिए जब वह पालक, पोषक, जीवनदायक तत्त्व

समपन्नान (परीक्षा-सम्पन्ना)

के चिह्न समाप्त हो जाते हैं, यह पालन-कर्ता, पोषणकर्ता और जीवनदाता शरीर मे कही से आता है और किसी स्थान को फिर प्रस्थान कर जाता है, आत्मा की इस उत्क्रान्तिगति और अतीत के भाव को स्पष्ट करने के लिए मन्त्र ने क्वस्वित् अर्थात् कहाँ से तथा कही न कहीं से अवश्य आता है। इस शब्द का प्रयोग किया है, मन्त्र ने उस आने जाने वाले और शरीर के भरण पोषण करने वाले अविनाशी अलौकिक तत्त्व का शुभ नाम भी बता देने की कृपा की है। शरीर की बंजर भूमि के हरा-भरा करने वाले हाड़-मांस तथा रक्त के बने अपवित्र पुतले को जीवनामृत प्रदान कर पवित्र करने वाले तथा इस जड़ शरीर की सूनी बस्ती के कण कण में ज्योति को जगाकर चकाचौंध कर डालने वाले का नाम आत्मा है आत्मा।

आत्मन् शब्द का अर्थ भी बड़ा विचित्र है। ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर ने इस तत्त्व को जैसा पाया वैसा ही इस का नाम रखा है। निरुक्ताचार्य महर्षि यास्क ने आत्मन् का निर्वचन करते हुए लिखा है कि—

आत्मा अततेर्वा आप्तेर्वा
व्याप्तिकर्मण । निरुक्त

उसका नाम आत्मन् इसलिए है कि यह सदा ही एक शरीर में निवास नहीं करता किन्तु एक को छोड़ दूसरे में और दूसरे को छोड़ तीसरे में तथा तीसरे को छोड़ चौथे शरीरमें जाता है और इस प्रकार निरतर घर बदलता रहता है। इसके आत्मन् नाम रखने का दूसरा कारण यह भी है कि यह जब शरीर में प्रवेश करता है तो तत्काल शरीर के प्रत्येक अग को गतिमान् कर देता है और जब तक शरीर मे रहता है तब तक लगातार गति देता रहता है जिस से शरीर की अभिवृद्धि होती रहती है। इस तत्त्व को आत्मन् इस लिए भी कहा जाता है कि यह तत्त्व जब शरीर में प्रवेश करता है तो उसी समय शरीर के कण कण में जीवन ज्योति फैल जाती है और शरीर का कोना-कोना जग-मगा उठता है और जब तक शरीर में रहता है तब तक अपनी इस नगरी को जीवन ज्योति से प्रकाशित किये रखता

वह जीवन ज्योति का प्रकाश करने वाला, शरीर के कोने-कोने को जागृत रखने वाला और निरतर गति करते रहने वाला अलौकिक आत्मा कहां से आता है और क्यों आता है तथा कब से आता है और कब तक शरीरों में आवागमन करता रहेगा? इस प्रकार के अनेकों प्रश्न हैं जिन पर विचार करना परमावश्यक है परन्तु दुःख और आश्चर्य की बात है कि-

एतत् प्रष्टुम् क विद्वासम् उपगात्—इन बातों को पूछने के लिए कौन जिज्ञासु है जो आत्मज्ञानी विद्वान् के पास पहुंचा हो। अध्यात्म विद्या के प्रश्न आत्मज्ञानी विद्वान् के पास जाकर ही करने चाहिएँ और वही इस प्रकार की कठिन समस्याओं का सरलतया समाधान कर सकता है परन्तु यह जिज्ञासा सर्वसाधारण के मस्तिष्क मे नही उपजती और न ही प्रत्येक विद्वान् इन गुत्थियों को खोल सकता है। इसके लिए तो पूछने और बताने वाले दोनों असाधारण होने चाहिए। कठोपनिषद् के शब्दों में—

आश्चर्योऽस्य वक्ता कुशलोऽस्य लब्धा
आश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्ट ।

कठो० द्वितीय वल्ली ६

अर्थात् इस आत्मज्ञान का (वक्ता) वक्ता (आश्चर्य॰) कोई विरला ही होता है। (अस्य) इसका (लब्धा) पाने वाला (कुशल) कोई प्रवीण ही होता है। (कुशलानुशिष्ट) प्रवीण पुरुष से उपदेश पाया हुआ (ज्ञाता) जानने वाला (आश्चर्य.) कोई विशेष ही होता है।

भगवती श्रुति इस आत्मा को सद्गुरु से जानने के लिए उत्प्रेरित कर रही है। है। यह आध्यात्मिक विज्ञान कोई आध्यात्म में डूबा हुआ मर्मज्ञ ही बता सकता है परन्तु पूछने वाला तो होना चाहिए। वेद कहता है इस आत्म तत्त्व को पूछने के लिए कौन किसी आ   ग्नी के पास जाने का उपक्रम करता है।

पुन कठ मुनि यमाचार्य के मुख से नचिकेता को समझाते हुए सारे ससार के आत्मजिज्ञासुओ को सम्बोधित करते हैं—

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं
पथस्तत्कवयो वदन्ति ॥

कठो० तृतीय वल्ली १४

ऐ जन्म-जन्मान्तरों से मोह निद्रा में सोये हुए जिज्ञासुजनो! "उत्तिष्ठत" उठो केवल उठो ही नहीं अपितु "जाग्रत" जागो और ब्रह्म को जानने वाले योग्य विद्वानों के पास जाकर उस आत्मतत्त्व को जानो। निश्चय ही यह आध्यात्मिक मार्ग छुरे की धार के समान कठिन है। केवल सूक्ष्मदर्शी कवि, मनीषी लोग ही इस कठिनता से प्राप्त होने वाले आत्म-तत्त्व को बता सकते हैं।

आइए, वैदिक आध्यात्म के इस रहस्य को किसी आत्मदर्शी से पूछ कर और उसे जानकर अपना इस विषय का अज्ञान

सम्पादकीय—

सांस्कृतिक अस्मिता और स्वाधीनता

सारा ससार चमत्कृत है भारत की सस्कृति और सभ्यता पर। हिमालय से भी ऊची आकाश को छूती, सागर की गहराई से अधिक गहरी हमारी सस्कृति सब से पुरातन और सब से नूतन है। इसीलिए मानव की सभ्यताओं के इतिहास मे भारतीय सभ्यता की एक विशेष पहचान और अस्मिता है। ससार मे सभ्यता और सस्कृति के कई प्राचीन केन्द्र रहे है किन्तु उनमे से अधिकाश को आज हम भग्नावशेषो के माध्यम से ही जानते है। भारतीय सभ्यता मे एक अविच्छिन्न निरन्तरता है। भारत पर बाहर से आक्रमण हुए, अन्दर से कृतघ्न राष्ट्रघातियो ने चोट की, जात-पात, ऊच-नीच छूआछूत के विषधर सदैव डसते रहे फिर भी हमारे अन्दर ऐसी शक्ति रही है कि हम पहले की अपेक्षा अधिक सगठित, जाग्रत और विजयी बनकर खडे हुए। हमारी सामर्थ्य है कि अनेक अवरोधो के बावजूद हमारी हस्ती कभी मिटी नही और न मिटेगी। इसका मूल कारण है हमारी मनीषा। सनातन की खोज मनीषा से जुडी है। हमने धर्म को भी परीक्षण की कसौटी से ऊपर नही माना। भारतीय सस्कृति को बचाये रखने मे उसके प्रश्न, शका, असहमति, विरोध, सुधार और विद्रोह की परम्पराओ का बडा हाथ रहा है। इसीलिए हम आज भी विद्यमान है। पराधीनता के युग मे हम सजग थे, आज भी है।

हमे स्वाधीनता मिली। इसमे हमने सर्वस्व न्योछावर किया। हमारे साथी क्रांतिकारी भी थे और शान्तिपूर्ण सत्याग्रह आन्दोलन चलाने वाले भी। काग्रेस ने योजनाबद्ध रूप से कार्य किया और आज भी हमारी सरकार राष्ट्र निर्माण के कार्य मे लगी है। हमारी सरकार स्वतन्त्र देश अर्थात् बगलादेश के सृजन मे भी भाग ले चुकी है। गोआ और पाडिचेरी तथा सिक्किम को राष्ट्र का अग बना चुकी है। भारत की छ सौ रियासतो को राष्ट्र मे विलय कर चुकी है जो आसान काम नही था। इसे सरदार वल्लभभाई पटेल जैसी मेधा का व्यक्ति ही कर सकता था। उसके हाथ मे पूरी सगठन की बागडोर थी। प० नेहरू गाधी के बाद राष्ट्र निर्माता रूप मे याद किये जाते हैं। उनके भी अपने विरोधी थे। पर उस समय के राष्ट्रनेताओ मे सहनशीलता थी। वे सब एक दूसरे की बात को राष्ट्रहित मे सहन करते थे। हमारे देश मे नेता थे, हमारे ही अग पाकिस्तान मे नवाब और सेनापति। परिणाम आपके सामने है।

परिवर्तन आवश्यक है। साप भी केचुल छोडता है, यद्यपि यह कष्टप्रद प्रक्रिया है। भारत की राजनीति मे भी बदलाव आये हैं। काग्रेस मे भी। गाधी के युग मे भी और इन्दिरा गाधी के युग मे भी। पर इस बदलाव से नवजीवन का ही सचार हुआ है।

गाधी के पहले भी स्वाधीनता के लिए सशक्त प्रयास हुए हैं। पर वह युग भिक्षा युग था—आवेदन, प्रतिवेदन का युग। गाधी युग आया, पर अचानक नही, धीरे धीरे। जब महात्मा गाधी भारतीय राजनीतिक गगन मे सूर्य बनकर चमके और धीरे धीरे अपने कार्यक्रम की पखुडिया खोलकर सामने रखने लगे तब उनके बहुत से कार्य ऐसे थे, जो पहले भी बग-भग या स्वदेशी आन्दोलन के रूप मे सामने आ चुके थे। सरकारी शिक्षा सस्थाओ का बायकाट और राष्ट्रीय विद्यालयो की स्थापना हो चुकी थी। कागडी, बनारस, अलीगढ, दिल्ली की सस्थाएँ, इसी कडी मे आती है। विपिन चद्रपाल, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, एनी बेसेन्ट, अरविन्द लाजपतराय, तिलक, सावरकर शचीन्द्रनाथ सान्याल इसी दिशा मे पहल कर चुके थे। कवीन्द्र रवीन्द्र का 'एकला चलो रे' उस समय का क्रांति गीत था। जो स्वाधीनता सग्राम के लिए ललकारता था। श्रद्धानन्द का सीना सगीनो के सामने खुला था। तिलक का स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है युवको मे प्राण फूकता था। गाधी भारतीय राजनीति के भगीरथ हुए। वे राजनीति को उच्च और मध्यवर्ग के स्वर्ग से उतारकर साधारण जनता की धरती पर ले आये। उनकी कार्यप्रणाली से कई बार नेहरू जी भी क्षुब्ध हुए। चौरी चौरा आन्दोलन के स्थगन पर उन्होने स्वय लिखा है, 'मैं समझता हूँ सभी प्रमुख नेता क्षुब्ध हुए, हा गाँधी जी के अलावा। पिता जी, जो उस समय जेल काट रहे थे वे बहुत परेशान हुए। रहे तरुण लोग व बहुत उत्तेजित हुए। हमारी आशाओ का उठता हुआ सौध एकाएक धराशायी हो गया।' महात्मा जी के विचार 'यद्यपि जीवन के सम्बन्ध मे हमारे दृष्टिकोण के फासले निश्चित रूप से बढते चले गये पर आज हम एक दूसरे के जितने करीब हैं, कभी उतने करीब न थे।' महत्त्वपूर्ण हैं। ये उद्गार निर्लिप्त युगद्रष्टा के हैं।

प० नेहरू का अनेक बार विरोध हुआ पर देश की बेहतरी के लिए, वे भी नम्रतापूर्वक इस विरोध के सामने झुकते गए। इसीलिए आज हमारा दुनिया मे स्थान है। हमारी महान उपलब्धिया हैं—बगलादेश की स्थापना, खाद्य मे पूर्ण रूप से निर्भरता, हिन्द सोवियत सधि, दूरदर्शन का प्रारम्भ, गुटनिरपेक्षता की अध्यक्षता, देशी राज्यो का भारत मे विलय, गोवा की मुक्ति सिक्किम का विलय बैंको का राष्ट्रीयकरण, स्वतन्त्रता सेनानियो का सम्मान।

आज हम धर्म निरपेक्षता की बात कह सकते हैं, पर इसमे हम कहा तक सफल हुए हैं। हिन्दू कोडबिल ने हिन्दू स्त्रियो को अधिकार दिए। मुस्लिम औरतो को कौन अधिकार दिलायेगा ? गाधी धर्म-निरपेक्षता के लिए शहीद हो गए। रोम्या रोला ने कहा था—'गाधी क्रूस के बिना ईसा है। इन्दिरा की शहादत ने राष्ट्रीयता की भावना को ऊचा उठाने की देश को शक्ति दी है।

आज देश की बढती हुई आबादी घोर गरीबी जातिवाद, क्षेत्रवाद, आतकवाद का विष चारो ओर फैल रहा है, हमे इससे निपटना है। हम आशा करते हैं कि एक नई सस्कृति एक नई शक्ति के प्रतीक के रूप मे युवा प्रधानमन्त्री राजीव गाधी के नेतृत्व मे स्वाधीनता दिवस के अवसर पर प्रण करने की आवश्यकता है कि हम देश की सभी बुराइयो को दूर करके ही रहेंगे। भारत को सबल एव सम्पन्न राष्ट्र बनायगे। १८५७ का जेहाद अग्रेजो के खिलाफ था, पर यह आज का जेहाद इन बुराइयो के विरुद्ध होगा। हम आक्रोश आतक और हिंसा पर नियत्रण कर लगे। हमारी प्रगतियात्रा नये क्षितिज की ओर बढ रही है। हम सभी क्षेत्रो में उच्चतम टेक्नोलोजी अपना कर जापान की तरह श्रम सस्कृति का विकास करके अन्य देशो के समतुल्य न होकर आगे बढ निकलेंगे। इस आशाभरी परिकल्पना को साकार करने के लिए ससार मे और विशेष रूप से भारतीय उपमहाद्वीप मे शान्ति रहे।

—डा० धर्मपाल

फांसी का फंदा चूमनेवाली हंसी

१५ अगस्त यानी भारत की आजादी का दिन आज से ३८ साल पहले गुलामी की जंजीरें काटकर भारत ने आजादी की श्वास ली थी। प्रत्येक भारतवासी का मस्तक उस दिन गर्व से ऊंचा उठ गया था। हरेक चहरे पर मुस्कान थी। लेकिन इस खुशी के अवसर पर देश के उन हजारों लाखों लोगों को भी हमने याद किया था, जिन्होने आजादी की लड़ाई लड़ते हुए अपने प्राणो की बलि चढा दी थी और अपने खून से आजादी के बीज को सींचा था। जाने ऐसे कितने किशोर और युवक थे जिन्होने सुख सुविधाओ से भरी जिंदगी के मुकाबले कांटो भरी राह को चुना, अंग्रेजो के दिल दहलाने वाले अत्याचार सहे और हसते हसते फाँसी के फंदे को चूम लिया। भगतसिंह चन्द्रशेखर आजाद रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला, राजगुरु, सुखदेव करतार सिंह, दलीप सिंह हेमू कालानी, ऊधमसिंह और न जाने कितने ऐसे नाम हैं, जो अपने वतन की आजादी के लिए मर मिटे। १५ अगस्त का दिन उन्ही के सपनों उन्ही के संकल्पों और उन्ही के बलिदानों का प्रतिफल है।

ऐसे युवको मे एक था खुदीराम बोस जिसे ११ अगस्त १९०८ को अंग्रेजों ने फाँसी पर चढा दिया था। उस समय खुदीराम की उम्र थी कुल १८ साल। लकिन खुदीराम जब १३ साल का ही था तभी वह आजादी की इस लड़ाई में कूद चुका था। एक अन्धेरी रात को घने जंगल के बीच मां काली की विकराल मूर्ति के सामने उसने क्रांति की दीक्षा ली थी। प्रतिज्ञा की थी कि देश की आजादी के लिए प्राणो की बाजी लगाने से भी वह नहीं हिचकेगा।

उसकी प्रतिज्ञा पूरी हुई पाच साल बाद घटना मुजफ्फरपुर की है। वहा का जिला मजिस्ट्रेट था किंग्स फोर्ड नाम का एक निर्दयी अंग्रेज देशभक्तों और क्रांतिकारियो को वह कठोर से कठोर सजाए दिया करता था। यातनाए देने में उसे सुख मिलता था। देशभक्ति उसकी नजर मे सबसे बडा अपराध था। आखिरकार क्रांतिकारियों ने इस आंख की किरकिरी को दूर करने का निर्णय लिया। उसे मौत के घाट उतार देने की जिम्मेदारी सौंपी गयी खुदीराम बोस को।

खुदीराम बोस अपने एक साथी के साथ मुजफ्फरपुर पहुँचा। छिपे तौर पर किंग्स फोर्ड की दिनचर्या का पता लगाया। मालूम हुआ कि किंग्स फोर्ड रोज शाम को घोडा गाडी मे बैठकर मनोरंजन और आमोद-प्रमोद के लिए गौरे सैनिकों के क्लब में जाता है। दोनों क्रांतिकारियों ने तय किया कि क्लब से लौटते समय उसे बम से उड़ा दिया जावे। ३० अप्रैल १९०८ को उन्हें अवसर मिल गया और उन्होंने घोड़ागाड़ी पर बम फेंक कर उसे चूर-चूर कर डाला। पर एक गलती हो गई। वैसी गाड़ी किंग्स फोर्ड के पास थी उसी तरह की गाड़ी एक अंग्रेज वकील केनेडी की भी थी। दुर्भाग्य से खुदीराम ने केनेडी की गाड़ी को ही किंग्स फोर्ड की गाड़ी समझ लिया। इस तरह किंग्स फोर्ड तो बच गया पर केनेडी की पत्नी की घटनास्थल पर मृत्यु हो गयी

बम फेंकते ही खुदीराम भाग निकला था। जंगल-जंगल झाड झखाड भरा २५ मील का रास्ता दौडते हुए उसने तय किया पर अन्त पकडा गया। अदालत में उसने निडर होकर बयान दिया कि वह अत्याचारी किंग्स फोर्ड की हत्या करना चाहता था। बेकसूर श्रीमती केनेडी को मारने का उसका इरादा नही था। श्रीमती केनेडी की मौत पर उसे अफसोस है।

क्रांतिकारियों के सम्बन्ध में सूचनाए और दल के सदस्यों तथा नेताओ के नाम जानने के लिए जेल मे खुदीराम को कठोर यातनाए दी गयीं। लेकिन भारत के उस सच्चे सपूत ने हसते हसते सारे अत्याचार सह लिये। न तो उसके मुख से उफ निकली, न क्रांति दल के बारे में कोई जानकारी। जेल के अधिकारियों ने उसे फुसलाने की कोशिश भी की, फिर भी उन्हें सफलता न मिली।

आखिरकार खुदीराम बोस को फासी की सजा सुना दी गयी। उस समय भी खुदीराम के होंठों पर मुस्कान थिरक रही थी। अपने फैसले मे जज ने कहा कि अगर वह चाहे तो एक सप्ताह के भीतर हाई कोर्ट में अपील कर सकता है।

'नहीं इसकी कोई जरूरत नही है। खुदीराम ने कहा अंग्रेज मेरे देश के दुश्मन हैं दुश्मन की अदालत कभी इन्साफ नहीं कर सकती। फासी मेरे लिए सजा नहीं है, बल्कि सबस बडा उपहार है और इसे मैं खुशी से स्वीकार करता हु। हा अगर आप इजाजत दें तो मैं अदालत मे उपस्थित अपने देशवासियो को बम बनाने की तरकीब बताना चाहूगा, ताकि भारत मा का कोई लाल उस काम को पूरा कर सके जो मैं नही कर पाया।'

भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास में अंकित १५ अगस्त का दिन आज भी सूरज की तरह चमकता है। सर्वस्व त्याग और बलिदान का जीवत प्रतीक आज भी इन अक्षरो के पीछे फांसी का फंदा चूमते समय खुदीराम बोस के होंठों पर आयी मुस्कान झिलमिलाती है। १५ अगस्त शहीद दिवस नही, एक प्रेरणा दिवस है।

मनुर्भव

इन्सान हो यदी अरे इन्सान बन के देख।
धरती की शान बेजुबान की आन बन के देख॥

ईमान तेरा बेजुबान को सता रहा
नादान चार रोज का मेहमान बन के देख॥

धुन ऐसी लगी धन की रतन को गवा रहा।
कुछ सुन सके तो सुन ले एक कान बन के देख॥

भगवान और कौन है भगवान के पुतले।
भगवान है तू ही अरे भगवान बन के देख॥

अज्ञान या प्रज्ञान व विज्ञान ज्ञान कर्म।
तू धर्म का है मर्म शर्म पान बन के देख॥

अन्यायियो के मान भरे कुल जहान में।
औरङ्गजेब की तरह शैतान बन के देख॥

जीवन की अहमियत को जिसने नही समझ।
दिल मे किसी के दर्द का तूफान बन के देख॥

क्या खोया और पाया रजिस्टर को तो टटोल।
मत मोल करे मोल की दुकान बन के देख॥

'आकुल' कवि के गीत सुने अनसुने न कर।
कवियो के कलम तीर की कमान बन के देख॥

रचयिता प्रकाशवीर आकुल

ओ छद्म उजालो!

—देवेन्द्र कुमार 'देव'

ओ छद्म उजालो! हमें आस मत दिखलाओ।
हम स्वय तिमिर को दलने के अभ्यासी हैं॥

तिकड़मी हवाओं के बल पर उठकर तुमने,
छू लिया व्योम को, इसमें कोई बात नहीं।
मत समझो तुम पर ही निर्भर है विश्व क्योंकि
इस धरती पर हर पल रहती है रात नहीं॥

बहकाओ मत अपनी क्षणभगुर द्युतिमा से।
हम अपनी पहचानो के दृढ विश्वासी हैं॥

हमने देखे हैं अगणित युग के परिवर्तन
गर्वोन्नत वैभव देखे हैं उठते—गिरते।
हम महाहठी हैं, महाकाल के आमन्त्रण,
जो टाल दिया करते हैं यों चलते फिरते॥

मत दम्भ जमाव की बीहड़ता का दो हमको।
हम नहीं पले हैं, उनके आदि निवासी हैं॥

जो कभी समय का सूर्य स्वय को कहते थे,
खद्योत बने क्षण में ही डरकर भाग गये।
अलसाये जोबन, बधिर कर्ण नगराजों के,
मेरी ही हुंकारों को सुनकर जाग गये॥

तुम जिन्हें सफलता, सुख-सुविधा कहते हो, वे।
मेरे चौखट के राजमहल की दासी हैं॥

तरुणमञ्च—

आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठो का अनावरण

आर्यों की वीरगाथा—७

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

हम वीर हैं डरना क्या जानें ?

देश की इस समय की सब से बड़ी मांग यह है कि देश को वीर विप्र चाहिए। यह मांग कौन पूरी करेगा ? आर्यसमाज को ही यह कार्य करना है। राष्ट्रद्रोही क्रूर हत्यारे बैंक लूट लें, लुक छुपकर लोगों की स्टेनगनों से हत्या कर दें, बम फैक्टरियां बना लें, तो इन में से किसी को फांसी नहीं दी जाती। सद्भावना वा एकता के नाम पर ऐसे लोगों को छोड़ा जाता है। इस प्रकार देश क्या बचेगा ? आवश्यकता है देश को श्रद्धानन्द, लाजपत, सुभाष, सावरकर, स्वतन्त्रानन्द, नरेन्द्र (सोमानन्द) जैसे प्रणवीरों की। सङ्कटों के सामने छाती तानकर हुंकारने वाले और घातकों को ललकारने वाले इन तेजस्वी पुरुषों का स्मरण करके आर्य जाति कायरो की 'अहिंसा' से मुक्ति पाए।

हैदराबाद सत्याग्रह के दिनों की बात है, पूज्य श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज रेल मे यात्रा कर थे। श्री महाराज एक पेसेंजर गाड़ी से पूना जा रहे थे। आप थर्ड क्लास के डिब्बे में बिस्तरा बिछाकर लेट गये। अभी गाड़ी शोलापुर से नही चली थी। आयजन जो विदा करने आए, वही खडे थे कि एक व्यक्ति महाराज के पास आया और कहा कि जिस डिब्बा में वह है, उसमें और कोई नही इसलिए आप वहां चलकर लेटें। महात्मा जी सतर्क थे ही। एक आर्य को भेजा, जाओ इसका डिब्बा देखकर आओ, क्या इससे अच्छा है और वहां और कोई भी है ? उसने लौटकर बतलाया कि छोटा सा डिब्बा है। वहा चार, पांच हैदराबादी मुसलमान हैं। उन्हीं के सिखाने पर वह पाजी महात्मा जी को उस डिब्बा में दिखाने के लिए आया था। ऐसी घटनाएँ तब घटती रहती थीं परन्तु हमारे नेता व आर्यजन शीश हथेली पर धर कर आगे बढ़े। शत्रु भी हाथ डालते हुए सोचता था। ऋषि दयानन्द जी से लेकर कृष्णराव इटेकर वा उनकी पत्नी माता गोदावरी देवी तक न जाने कितने आर्यों ने वीर गति पाई। फिर भी देश जाति के शत्रु आर्यसमाज से भयभीत थे। आर्यसमाज आतंकित न हुआ।

महात्मा नारायण स्वामी जी के शब्द हैं—

"शोलापुर निवासियों में से अनेक हमारे शुभचिन्तक हमारे पास आते और कहते थे कि मैं कभी कहीं अकेला न जाया करू क्योंकि यह बात खतरे से खाली नही।"

फिर आगे लिखा है कि मैं और स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी नित्य प्रात ४ बजे उठकर जंगल चले जाते थे। ढाई तीन मील दूर जाकर शौच स्नान आदि से निवृत्त होकर प्राय सात बजे के लगभग लौटा करते थे।

षण्टों नगर के बाहर आर्यनगर में ये महात्मा कार्य करते थे। जब नारायण स्वामी जेल चले गये तो स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी अकेले बाहर भ्रमण को जाते। शोलापुर निवासियों ने मुझे स्वय बताया कि हमने कई बार श्री महाराज को रोका परन्तु लौह पुरुष स्वतन्त्रानन्द का एक ही उत्तर था कि "डरना किस बात से ? दस बीस के लिए तो फिर मैं अकेला ही पर्याप्त हूं।" मैंने विस्तार से ये बातें लौहपुरुष ग्रंथ में लिखी हैं।

महात्मा नारायण स्वामी जब जेल गये तो वह अपना मृत्यु पत्र DEATH WILL लिख कर गये। इससे स्पष्ट है कि महाराज इस धर्म युद्ध में जीवन आहुत करने की पूरी तैयारी करके गये थे। आज आर्यसमाज को ऐसे महान् तपस्वी, निर्भीक मृत्युञ्जय महाबलि नेता चाहिए। राजनेताओं वा शासन की परिक्रमा करने वाले समाज का कुछ न संवार सकेंगे। तभी तो आर्यसमाज के बडे बडे कार्यक्रमो में रौनक के लिए शासक बुलाने पडते हैं। ढोंगी गुरुओं की भीड़ कितनी हो जाती है। ऐसा क्यों ? आज प० लेखराम, आर्यमुनि, श्याम भाई वाली अखण्ड निष्ठा वाले व्यक्तियों के हाथ में हमारी बागडोर नही।

आओ आर्यवीर दल, आर्ययुवक समाजें, आर्यकुमार सभाएं और व्यायामशालाएं स्थान स्थान पर खोलें तभी हम अभय बन सकेंगे।

एक वे दिन थे—

लौह पुरुष सरदार पटेल को धमकी भरे पत्र मिलने लगे। मुस्लिम लीगी गुण्डे उन्हें जान से मारना चाहते थे। गुरुकुल कांगड़ी के कुछ ब्रह्मचारियों ने उन्हें पत्र लिखकर उनकी रक्षा के लिए अपनी सेवाएं भेंट कीं। सरदार पटेल ने ऋषि के शब्दों को उद्धृत करते हुए उन आर्यवीरों का धन्यवाद किया। उन्होंने ब्रह्मचारियो को लिखा, "प्रभु की इच्छा ही पूर्ण होगी, मृत्यु से मैं डरता नही।"

आए दिन आर्य जाति के निर्दोष लाल मारे जा रहे हैं। गुरुकुलों के ब्रह्मचारी, डी०ए०वी० कालेजों के छात्र अब कहां हैं। वे दिन फिर लौट सकते हैं। सोया तप तेज फिर जगाना होगा।

'आर्यों को निकाल दो—

लाला लाजपत राय के निष्कासन के दिनों की बात है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने (तब महात्मा मुंशीराम थे) एक ऐतिहासिक भाषण दिया था। उसकी चर्चा उनके कई जीवन चरित्रों में है परन्तु पूरा भाषण सम्भवत किसी ने नही दिया। सौभाग्य से मुझे वह ऐतिहासिक भाषण मिल गया है। भाषण क्या है सिंह की दहाड़ वा हुंकार है।

उसी ऐतिहासिक भाषण मे स्वामी जी ने एक घटना सरकार के दमन चक्र की दी है। हरियाणा के एक ग्राम मे डिप्टी कमिश्नर साहब गये। आसपास के नम्बरदारों, जैलदारों को बुलवाया गया। अंग्रेज साहब के बुलावे पर सब आ गये। साहब ने विशेष बात यह कही कि देखो अपने अपने ग्रामों मे आर्यसमाज को घसने न देना। यदि कही कोई आर्यसमाजी है तो उसे ग्राम से निकाल दो। साहब को यह पता न था कि जिन चौधरियों से वह बात कर रहा था उनमें अधिकांश आर्यसमाजी थे।

सूझबूझ वाले एक चौधरी ने बड़ी नीतिमत्ता से कहा कि यदि हम किसी को ग्राम से निकालेंगे तो आपकी सरकार हमें ही दबाएगी। इसलिए साहब बहादुर आप ही इन आर्यों को हमारे यहां से निकालें। इस पर साहब बोले, "नही हम तो इन्हें नही निकाल सकते। आप निकालें हम आपको कुछ न कहेंगे।"

इस पर वह आर्य चौधरी बोला— "साहब जिन आर्यसमाजियों पर हाथ डालते हुए आप की सरकार डरती है, हम उन्हें कैसे निकाल दें।" यह था आर्यसमाज का तेज। खेद है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उन चौधरियों का नाम वहां नहीं दिया। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी उनके नाम बताया करते थे, हमें उनमें से केवल चौधरी जुगला का नाम ही याद है। शेष नाम स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के लेखों में खोजने पड़ेंगे। आर्यो ! आओ प्रभु की वाणी वेद की विमल रचनाओं को सुनें व सुनावें और उस अतीत को फिर वर्तमान कर दें।

किशोरमञ्च—

अंगिरा ऋषि का उपदेश

प्रस्तोता—बलबीर शास्त्री

शौनक नामक विद्वान् अंगिरा ऋषि के पास गया और बोला गुरु जी मुझे ससार से विरक्ति है, मैं घर-बार छोड़ कर संन्यासी बनना चाहता हूं। गुरु जी बोले—'घर गृहस्थी में रहते हुए भी भगवान का भजन किया जा सकता है।

गुरुजी का उपदेश सुनकर शौनक गृहस्थ जीवन व्यतीत करने लगा। वह सदा अपने आत्मा की उन्नति के बारे में सोचता था। उसके पास बहुत धन था, किन्तु वह उस सारे सुख को झूठा सुख समझता था।

एक दिन उसके घर अंगिरा ऋषि आये। शौनक ने प्रसन्न होकर उनका स्वागत किया। आत्मा की उन्नति के विषय में पूछा। आत्मा को वह जानने की इच्छा की। अंगिरा ऋषि ने कहा—'पहले एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रत धारण करो। तपस्या करो। बाद में तुम्हें ज्ञान मिलेगा।

अंगिरा ऋषि चले गये। बाद मे शौनक ने तपस्या की। एक वर्ष बाद वह अंगिरा ऋषि के आश्रम में गये। ऋषि ने उन्हें बहुत सी ज्ञान की बातें सिखायीं। उन्होंने कहा—'विद्या दो प्रकार की होती है। एक विद्या से हम ससार के सुख प्राप्त करते हैं, परन्तु सच्चा सुख नही मिलता। दूसरी विद्या हमें आत्मा के उन्नति की ओर ले जाती है। उसी के द्वारा हमें सच्चा सुख मिल सकता है।'

शौनक की समझ में ये बातें नही आयी। उसने इनके बारे मे फिर पूछा। ऋषि ने कहा—'खाली वेदों के पढने या यज्ञ करने से मनुष्य आत्मा की उन्नति नहीं कर सकता।' इन सब को अपने जीवन में उतारे और उसी प्रकार अपना जीवन बनाये। कथनी और करनी में अन्तर न हो।

शौनक ने फिर आत्मा की उन्नति का उपाय पूछा। अंगिरा ऋषि ने कहा—'ईश्वर का कोई रूप नही है, फिर भी वह सब जगह, सब चीजो में मौजूद है। उसी ने सारा जगत् बनाया है। वह सब को दिखाई नही पडता। वह सब वस्तुओ में समाया हुआ है। उसे तो वही देखता है जो

(शेष पृष्ठ ९ पर)

व्यासपीठ—

उपनिषत् कथा माला–१४

वेदामृत

लेखक—स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

ओ३म् अन्ति सन्त न पश्यति,
अन्ति सन्त न जहाति ।
देवस्य पश्य काव्य,
न ममार न जीर्यति ॥

यह वेद मन्त्र है। कोई भी ऐसा नही है जो साक्षात् अथवा परम्परा सम्बन्ध से ईश्वर का अनुनय ही न करता हो। सब चाहे लोक व्यवहार के बताने वाले हो, चाहे विज्ञान के, परन्तु सब को साक्षात् या परम्परा सम्बन्ध से ध्येय परमेश्वर की प्राप्ति मे ही वेदमन्त्र बतायेंगे। साक्षात् सम्बन्ध होता है। जैसे आप से किसी ने पुस्तक मांगी। आपने उसको पुस्तक पकड़ा दी, यह तो हुआ साक्षात् सम्बन्ध। पुस्तक मैंने किसी को दी और उसने उसको दी, यह परम्परा सम्बन्ध है। चाहे मुख्य रूप से, चाहे गौण रूप से ईश्वर की ही विवक्षा वेद करता है।

अन्ति सन्त न पश्यति ।

अविद्या ग्रस्त जो मनुष्य है वह परमात्मा के यद्यपि अत्यन्त निकट है फिर भी नही देख सकता। एक तो यह बात, दूसरी बात यह है कि 'अन्ति सन्त न जहाति' इसका इतना पटुतम सम्बन्ध है कि उससे अलग हो ही नही सकता। इसको बाद मे कहा।

देवस्य पश्य, काव्य
न ममार न जीर्यंति।

उस परमात्मा को जानने के लिए उस देव का जो काव्य है, उसको देखो! उसका फल क्या होगा? न फिर मृत्यु का सम्बन्ध है न जीर्णता का। कारण यह है कि जरा मृत्यु व्याधियां, ये सब ससार के मार्ग मे हैं। ससार के मार्ग से पृथक् होने पर यह तीनो चीजें नही रहती। फिर आत्मा के साथ उनका सम्बन्ध नही होता। ससार के मार्ग में कही गयी उन वस्तुओं से पृथक् हो जावे तो वह उस पूर्ण शक्ति को पहचान सकता है। इसका कारण यह है कि ससार के अन्दर हरएक चीज जो बनी हुई है उसका अवश्य ही कुछ न कुछ परिणाम है। कोई भी चीज ऐसी नही है जिसका कुछ परिणाम न हो। ससार के अन्दर जितनी चीजें बनी हुई हैं वे सब परिवर्तनशील हैं। किसी फारसी कवि ने कहा भी है—

जमाना यक बबाबूदे अगर
नमेयाफ फरजन्द जाफर

अगर जमाना एक रस रहने वाला होता तो आज जो बच्चा है वह कल बाप नही होता। जमाना बदलने पर छोटा बच्चा बाप की जगह ले लेता है और बाप रवाना होता है। समय एक रस रहने वाला नही, यह परिवर्तनशील ससार एक रस कभी नही रह सकता, एक एक क्षण बीतने पर ससार बीत जाता है। इस परिवर्तन अवस्था को १ अरब ९७ करोड वर्ष के करीब बीत गये हैं। दिन रात के चक्कर मे इतना लम्बा जमाना बीत गया। दिन रात तो मोटा परिवर्तन है। दिन और रात मिलाकर २४ घण्टे होते हैं। १ घंटे के ६० मिनट होते हैं। १ मिनट ६० सैकिण्ड होते हैं। सेकिण्ड से भी छोटा समय कालवित् पुरुष ने क्षण माना है। इस क्षण का कोई भी विभाग नही किया जा सकता। एक क्षण बीता, दूसरा क्षण बीता और तीसरा क्षण भी बीत गया। इसी तरह क्षण क्षण करते इस सृष्टि को १ अरब ९७ करोड वर्ष बीत गये। सस्कृत का एक एक शब्द बहुत मतलब रखता है। समस्त ससार को क्षणभगुर कहा गया है। एक एक क्षण मे भी इसका परिवर्तन होता जाता है। इसके नाम से ही इसका अर्थ भी मालूम हो जाता है। जैसे भूगोल का नक्शा। इस नाम के कहने के साथ ही यह भी सबूत कर दिया गया कि पृथ्वी गोल है। सारी की सारी आयु इसी क्षण से ही बीती जाती है। मनुष्य का एक एक क्षण परिवर्तनशील है। जो चीजें बनी हुई होती हैं उन सब में परिवर्तन होता है। जो चीज बनी ही नही उसके अन्दर तो परिवर्तन की ताकत लग ही नही सकती। जैसे कणाद ऋषि ने कहा है—

नित्येष्वभावात् अनित्येषु
भावात् कारणे कालाख्य ।

इसकी ताकत जाहिर कहा है? नित्य मे तो जाकर यह काल आप ही गुम हो जाता है। अनित्य में यह जाहिर होता है, जो पैदा ही नही हुई है उस पर काल की गति का असर नही होता। एक चीज पैदा हुई, उसको दस वर्ष बीत गये, ऐसा कह सकते हैं। इसके अन्दर भूतकाल भी है, वर्तमान काल भी और भविष्यत्काल भी है। जो चीज पैदा ही नहीं होती वह कदीमी सिद्ध ही है। नित्य पदार्थों में काल का अभाव रहता है और अनित्य में काल का भाव।

भाइयो! संसार के अन्दर जो कोई चीज बनी है वह काल के प्रभाव से ही बनी है। बिना काल की सहायता से कोई नही बन सकती। इससे काल की महत्ता जाहिर है। ससार में जिसने पहचान लिया कि समय एक वस्तु है, उसने समय व्यर्थ नही खोया। जिसने समय के महत्त्व को नही समझा, परन्तु समय तो बीतता ही चला गया, वह समय ठहर नहीं सकता। जैसे एक बच्चा १८ वर्ष का हो गया और उसने बी० एस-सी० पास कर लिया और जिसने नही पढ़ा वह भी १८ वर्ष की आयु का तो हो ही गया, उसकी लापरवाही से उसमे फल नही आया, परन्तु जिसने बी० एस-सी० की पढाई की तो उसको फल की प्राप्ति हो गई। समय दोनों का बीता। इसका मतलब यह है कि समय की कीमत को पहचानना चाहिए।

'समय एव करोति बलाबलम् ।'

समय ही मनुष्य को बलवान् और निर्बल कर देता है। जिसने खेलने-कूदने मे ही समय बिता दिया, समय का महत्त्व नही समझा तो वह दुर्बल हो जाता है। अगर समय को समझ लेगा तो वह बलवान् हो जाएगा। समय तो दोनो का ही बीतता है, किसी का नही ठहरता, इसलिए जो अक्लमन्द आदमी हैं वही समय का उपयोग ठीक रीति से करते हैं। क्योंकि—'गया वक्त फिर हाथ आता नही, गया ऐश आराम पाता नही', गया वक्त हाथ मे नही आता इसलिए ज्ञान को प्राप्त करने में समय को बिताना चाहिए, क्योंकि ज्ञान नित्य वस्तु है। नित्य वस्तु पर काल का प्रभाव नहीं होता। इसलिए कहा है कि—

'देवस्य काव्य पश्य'

वह परमेश्वर, जो देव है, उसके काव्य को देख। उस देव का काव्य वेद ही हो सकता है और वह वेद चार प्रकार के हैं—

ऋग्, यजु., साम और अथर्व० ।

अब हम तो वेदों को मानते हैं, परन्तु दूसरे नहीं मानते, मुसलमान नहीं मानते, ईसाई नही मानते। वह कहेंगे कि हम तो वेद को नहीं मानते तो यह ठीक है। वेद नाम ज्ञान का है। कोई भी इन्सान यह नहीं कह सकता कि मैं ज्ञान को नहीं मानता। अगर कोई ऐसा कह दे तो उसकी मूर्खता होगी। तो वह ज्ञान चार प्रकार का है—ऋग्, यजु, साम और अथर्व। जैसे गणित के चार भेद हैं—जोड़, बाकी, गुणा और भाग, इनके अन्दर ऐलजबरा वगैरह सब आ जाते हैं। इसी तरह ज्ञान के भी चार भेद हैं। जो आदमी उन्नति की तरफ जायेगा वह देखेगा कि हिन्दुस्तान पतितावस्था मे है। मैं तो कहूंगा कि हिन्दुस्तान पतितावस्था मे नही, वह तो और सब देशों को मालामाल बनाने वाला है। जुगराफिये मे अगर आप देखेंगे तो आपको मालूम होगा कि जैसा यह है वैसा और कोई दूसरा देश नही है। परन्तु आजकल के इतिहास मे बिलकुल निकम्मा सिद्ध होता है, क्योंकि हमारे मे आलस ज्यादा है। जो काम जिस समय करना चाहिए, उस समय नही करते, बेमतलब के लड़ाई-झगड़े करते हैं। सब आदमियो को अगर कोई एक विद्वान् आदमी अच्छे रास्ते पर ले जाना चाहे तो वह आदमी अक्लमन्द और ज्ञानवृद्ध होना चाहिए, तभी ले जा सकता है।

अब हम "ऋक्" को लेंगे। ऋक नाम स्तुतिकर्म का है। वेद तो सामान्य शब्द है। उसके साथ मैं ऋग्, यजु, साम और अथर्व ये चार विशेषण लगे हुए हैं। ऋग् जो है वह स्तुतिकर्म है। जब कोई अक्लमन्द आदमी होगा वह पहले परमेश्वर की बनाई हुई चीजों की तारीफ करेगा। मूर्तियो को हमने बना लिया और कह दिया कि यह परमेश्वर है, लेकिन जब परमेश्वर की तारीफ करेंगे तो कहेंगे कि परमेश्वर सर्वव्यापक है, सर्वशक्तिमान् है, सर्वज्ञ है, सर्वत्र व्याप्त है। इन विशेषणो से जब हम परमात्मा की स्तुति करेंगे तो पता लगेगा कि मूर्ति ही ईश्वर है या कोई और ही शक्ति। यह जो ज्ञान है ऋग् है। अब हम सांसारिक पदार्थों में यों ही चले आते हैं। एक आदमी ने गुलाब के फूल को देखा उसमे खूब अच्छी सुगन्ध है, रंग भी बहुत अच्छा है। इसे देख कर वह आदमी कहता है कि यह फूलों का राजा है। पहले तो उसने सुगन्धि की तारीफ की। इसके बाद मे उसने विचारा कि यह दिमाग को तर करने वाला है, मनोहर है, सुन्दर है। जिस जमीन पर ये पत्तियां गिर जाती हैं उस जमीन की मिट्टी सुगन्धित हो जाती है। यह सारा 'ऋग्' का स्थान होगा। दूसरा है 'यजु', उसमें यह विचार आता है कि यह सुगन्धि है तो अच्छी, परन्तु यह उस फूल से अलग रहते हुए भी अस्थिर रह सकती है या नहीं। यजुष का काम यह है कि वह भिन्न वस्तुओं के योग से कोई उपयोगी पदार्थ बना सके। उसी को लेकर 'यजु', ही के ज्ञान से बल से तरह तरह के इत्र हिना वगैरह तैयार किये जाते हैं। ये संबल की भूमि पर बनते हैं। इस कैसे

वेदामृत

निकलता है? जैसे सौंफ का अर्क निकाला जाता है, उसी तरह से उधर तो तीन-चार तोले सदल का तेल डाल देते हैं और इधर गुलाब के फूल डाल देते हैं। सदल के तेल का यह स्वभाव है कि वह अपनी सुगन्ध को छोड़ कर दूसरी सुगन्ध को तत्काल ग्रहण कर लेता है। सदल का तेल १) तोला मिलता है और वह १ तोले की कीमत से १०) रु० तोला कैसे हो गया? उसने अपने आपको छुपाया। अपने को जाहिर नहीं किया। दूसरे के गुणों को ग्रहण किया। अपने आपको छुपा करके जो दूसरे के गुणों को प्रकट करता है, उसकी कीमत इसलिए बढ़ जाती है। सदल के तेल की कीमत इसलिए बढ़ जाती है कि वह अपने गुणों को छुपा करके दूसरों को जाहिर कर देता है। अगर उसमें हिना डाल दो तो वह हिना हो जाता है, मोतिया डाल दो, मोतिया बन जाता है। इसी तरह जो इन्सान दूसरे के गुणों को दिखाने वाले होते हैं, उनकी कीमत बढ़ जाती है। जो अपने ही को दिखाते रहेंगे, उन लोगों की कीमत नहीं बढ़ सकती। जैसे सरसों का तेल है, उसमें कितना ही हिना डाल दो, तो भी वह अपने रोगन और अपनी बू को नहीं छोड़ेगा। सरसों के तेल की कीमत इसीलिए नहीं बढ़ती कि वह अपने आपको दिखाता है। तो इस तरह यजुष् का स्थान है मेल करना। किसी चीज के मिलाने से कौन-सी ताकत होगी? यह है यजु का काम। जैसे गुलाब की सुगन्ध में सदल मिला देने से इत्र बन गया, बस इसी ज्ञान का नाम यजुर्वेद है। अब साम क्या है। ऋक् प्रशंसा करता है। उपयोग बताना काम यजु का है। उसका जो नतीजा निकला, वह बताना साम का काम है। हरएक आदमी नतीजे को देखता है। अगर कोई इम्तहान देता है और वह उसके अन्दर फर्स्ट डिवीजन में आ जाता है, तो उसको बहुत ही खुशी होती है। परमेश्वर के सच्चे स्वरूप को जानने के लिए जो कोशिश करता है और जब वह परमात्मा के स्वरूप को पहिचान लेता है तो वह परमात्मा स्वरूप बन जाता है। यह साम है। अथर्व का कोई स्थान नहीं है। सबने देखा है। यजु को मूल में रखकर जोड़ा है। साधन की निवाणी को लेकर उसी में कुछ न कुछ उन्नति करने या बढ़ाने को ही अथर्व कहते हैं। जैसे आजकल बड़ी बाइन पर बड़े बड़े इञ्जन दौड़ते हैं। वे ४० फीट लम्बे और १६ फीट चक्करदार होते हैं। अगर गुणों को न लेते गये होते और कुछ न कुछ बढ़ाए नहीं गये होते तो आज क्या इतने बड़े इञ्जन नजर आ सकते थे? पहले के जो इञ्जन थे, वे बिलकुल छोटे छोटे थे। अथर्व कोई भिन्न की वस्तु नहीं रखता, परन्तु वह साम के नतीजा निकालने के पश्चात् जो जो उसके अन्दर रुकावटें डालने वाली वस्तुएं हैं, उन सब को हटाता है और उनकी सहायक वस्तुओं को इकट्ठा करता है। इसीलिए कहा है कि—

"पश्य देवस्य काव्यम्"

देव का काव्य क्या है। किसी ने कह दिया कि दीवानहाल अच्छा है। यह तो मेरा शब्द-ज्ञान हुआ, परन्तु मैंने देहली में जाकर दीवानहाल में जाकर दीवान हाल को देखा, यह मेरा देखना हुआ। इसी तरह से परमात्मा का ज्ञान यहाँ पर वेद में विद्यमान है। मैंने जिसका भजन किया वह परमात्मा सारी सृष्टि में विद्यमान है।

किसी भी चित्र को देखकर तीन बातों का ज्ञान होता है। जिसका चित्र होगा, उसके चरित्र का ज्ञान होगा, चित्रकार चित्र बनाने वाले के चरित्र का ज्ञान, तीसरे उस चित्र का ज्ञान होगा। इसी तरह चित्र देखने से, जिसका चित्र होगा, उसकी तसवीर मालूम होगी, चित्र खींचने वाले की तदबीर मालूम होगी और फिर उस चित्र की जो तदबीर है, मालूम होगी। घड़ी ही मौजूद है, उसको देखने से ज्ञान होता है कि ६ बजे हैं। ससार की जितनी भी वस्तुएँ हैं, उन सब में ज्ञान का विषय सम्बन्ध है, परन्तु जो परमात्मा है, उसके अन्दर ज्ञान का स्वरूप सम्बन्ध है। संसार बाह्य है। ससार का कोई न कोई तो कर्ता अवश्य है। जैनी लोग कहते हैं कि संसार का कोई कर्ता नहीं है तो यह कैसे हो सकता है? किसी कारीगर ने एक भद्दी तस्वीर बनाई, चलता हुआ एक छोटा लड़का भी जिसको देखकर कहेगा कि यह भद्दी तस्वीर किसने बनाई है? तो फिर जो सृष्टि चित्र, विचित्र, अद्भुत, अनुपम बनी है, वह किसी न किसी की बनाई हुई अवश्य है। लेकिन देखने वाला हर एक व्यक्ति सृष्टि के सौन्दर्य और चित्र-विचित्रता के अन्दर ही मोहित हो जाता है, क्योंकि ससार तो बड़ा विचित्र है। एक से एक खूबसूरत चीजें हैं, जब आदमी उनको देखता है, तो वह उनकी सुन्दरता में फस कर उसके बनाने वाले को भूल जाता है। उसका जो मुसव्वर परमेश्वर है, उसके पास नहीं ले जा सकता। एक पुरुष ने एक बहुत अच्छा बगीचा लगाया, उसके अन्दर कई अच्छे-अच्छे मकान, फव्वारे, पौधे, फुलवारी वगैरह लगाये। अब उसके अन्दर जो आदमी देखने गये, उनमें से एक ने कहा कि यह फव्वारा कितना अच्छा बना हुआ है। एक ने कहा—पानी कितना ठंडा है। एक ने कहा कि ये फूल कितने अच्छे हैं। वहाँ पर एक आदमी आया और उसने कहा कि अरे तुम लोग इन चीजों की क्या प्रशंसा करते हो, बनाने वाले की प्रशंसा करो। जिस तरह वे लोग बगीचे को देखते हुए भूल गये, उसी तरह ससार की चीजों को देखकर मनुष्य उसके कर्ता को भूल जाता है। वही मनुष्य विद्वान् है, अक्लमन्द है, जिसने ससार को देखकर उसके करने वाले को पहचाना है और उसको नहीं भूला है। ससार क्या है? ससार तो एक इशारा है। ससार की हर एक चीज इशारा कर रही है। जो विद्वान् होता है वही उसको पहचान सकता है। जो अद्वितीय अनुपम कर्ता को पहचानता है, वही विद्वान् है।

प्रभु विश्वास

जिधर देखता हू खुदा ही खुदा है।
खुदा से नही चीज कोई जुदा है ॥
जब अव्वल और आखिर
खुदा ही खुदा है।
तो अब भी वही
कौन उसके सिवा है ॥
सर्व भरोसे छोड़ के,
आया तेरे द्वार ।
मेरे कर की तार है,
कर तेरे करतार ॥
कहते हैं प्रभु इसलिए,
तुमको सब करतार।
रहत सदा है जगत् का,
तेरे ही करतार ॥
नहीं समझ-बूझी साधना,
नहीं तीर्थ व्रतदान।
मात भरोसे रहत है,
ज्यों बालक नादान ॥

□

बाली एक सांस्कृतिक केन्द्र

ले०—रामाज्ञा वैरागी

बाली भूमि पर जब सूरज की पहली किरण उतरती है, तो एक चमकदार सतरंगे इन्द्रधनुष का रूप ले लेती है। आज सुबह उठा तो बाहर कुछ ऐसा ही दृश्य नजर आया और मेरी आंखें देखती रह गयी किरणों की ओर। ये किरणें ठीक वैसे ही हंस रही थी, जैसे बाली के लोग मुस्कुराते हैं। सूरज की इन चमचमाती किरणों के साथ बाली के लोगों का क्या सम्बन्ध है। आज सुबह उठते ही समुद्र के किनारे टहलने गया। सूरज की किरणें समुद्र की उठती गिरती लहरों के साथ खेल रही थीं।

सूरज कितना उदार है, जो सभी पर समान दृष्टि रखता है, समान व्यवहार करता है। कुछ ये ही सोचता-गुनता स्नान संध्या आसन व्यायाम करता रहा। इतने में हमारी ग्रुप लीडर उषा जी ने सूचना दी कि हम सभी अल्पाहार के लिए रेस्टोरेन्ट चलें। ब्रेड, बटर, चाय तथा फलों में पपीता, परिपुष्ट अल्पाहार के बाद आज हमें बाली के गवर्नर श्री मंत्र जी के यहाँ मिलने जाना है। इतने में ६ बजे ठीक गवर्नर के निजी सचिव गाड़ी लेकर हम सभी को लेने आ गये। हम उनके साथ बाली के गवर्नर श्री मन्त्र जी के आवास पहुँच गए।

बाली के गवर्नर श्री मन्त्र जी का बैठकखाना देखकर हम सभी चकित रह गए। पूरे बैठक खाने में रामायण की सम्पूर्ण चित्रावली अंकित है। कहीं राम, कहीं सीता, कहीं लक्ष्मण तो कहीं हनुमान् का चित्र। एक बहुत ही आकर्षक चित्र था लक्ष्मण को शक्तिबाण लगने वाली घटना का। सामने की दीवार पर सेतुबंध के बंधने के समय का चित्र जिसमें बन्दर पत्थर समुद्र में डाल रहे थे। कई आकर्षक चित्र रामायण तथा महाभारत काल के अंकित देखे गये। कुछ ही देर बाद अन्दर से बुलाहट आ गयी और हम सभी ने अन्दर की बैठक में प्रवेश किया, श्री मंत्र जी ने हमारा सादर स्वागत किया, बिस्कुट के साथ चाय पिलायी। श्री सत्यकेतु विद्यालंकार ने बातचीत करते हुए हम सभी का परिचय कराया। श्री मंत्र जी के मधुर व्यवहार से हम बहुत प्रभावित हुए। अन्त में उनके साथ सामूहिक चित्र भी लिये गए। उसके बाद उन्होंने पुनः हमें अपनी गाड़ी से देन पसार बाजार तक छोड़ने की व्यवस्था की। हमने कई दर्शनीय स्थानों का भ्रमण किया।

कला बाली के जीवन का अभिन्न अंग है। वहां के लोग कला के प्रति समर्पित है। बाली के लोग अपने जीवन को नाटक समझ कर जीते हैं। कहने का अर्थ है कि अपनी जिन्दगी को हर्ष और उल्लास के साथ जीने के अभ्यासी हो गए हैं। बाली के लोग मुस्करा कर जीते हैं। वहां मैंने कहीं भी झगड़ते नहीं देखा। परस्पर विवाद नहीं देखा। किसी के चेहरे पर उदासी या शिकन नहीं देखी। यहां तक लोगों का कहना है कि यदि दो मोटर साइकिलें आमने सामने टकरा भी गयी तो दोनों के चालक मुस्कराकर चल देंगे किन्तु परस्पर विवाद झगड़ा संघर्ष नहीं करेंगे। यह बहुत बड़ी बात है कि बाली के लोग इसी खुशी की जिन्दगी बिता रहे हैं। बाली द्वीप मंदिरों की नगरी है हजारों विख्यात मन्दिर हैं।

नोट—विशेष विवरण के लिए मेरी 'दक्षिण पूर्व एशिया यात्रा' पुस्तक पढ़ें।

वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में आर्यसमाज क्या चाहता है?

लेखक—यशपाल आर्यबंधु

आर्यसमाज यद्यपि एक सार्वभौम आन्दोलन है तथापि आर्यावर्त्त देश की उसने कभी भी उपेक्षा नही की। उसके संस्थापक ने तभी लिखा था कि 'जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नही हो सकता।' स्पष्ट है कि आर्यसमाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति की अवहेलना नही कर सकता। वह उसकी सर्वांगीण उन्नति चाहता है। वह चाहता है कि आर्यों का यह आदि देश सभी प्रकार से समृद्ध, सम्पन्न एव शक्तिशाली बने। किन्तु आज देश के सम्मुख जिस प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न हो चुकी है वह उसकी समृद्धि सम्पन्नता एव समर्थ बनने मे बाधक है। आज अलगाववादी प्रवृत्तिया जितना खुल कर कार्य कर रही है उतना पहले कभी नही कर पाई। कही साम्प्रदायिकता, कही प्रातीयता, कही जातीयता तो कही भाषायी आधार पर अलगाव की प्रवृत्तिया दिनो दिन बढती दिखाई दे रही है। आर्यसमाज एक देशभक्त सस्था है। अत उसका चिन्तित होना स्वाभाविक है। इसी लिए आयसमाज सभी राष्ट्रवादी शक्तियो को इनके विरुद्ध प्रबल सघष करने का आह्वान करता है।

वोट की राजनीति को प्रभावित करने के लिए सामूहिक धर्म परिवतन की घिनौनी घटनाओ स भी आयसमाज अत्यन्त उद्विग्न है और इसका प्रबल विरोध करता है आयसम 1 धमपरि-वर्तन के पी. . दशा शक्तयो के हाथ और धन की ओर ध्यान दिलाना चाहता है और माग करता है कि देश के ईसाई और इस्लामीकरण के लिए विदेशों से आने वाले धन पर अविलम्ब रोक लगाई जाये। साथ ही आर्यसमाज यह भी चाहता है कि सामूहिक धम परिवतन पर कानूनी प्रतिबध लगे। आर्यसमाज अल्प-सख्यको के नाम पर किसी वर्ग विशेष की तुष्टिकरण की शासन की नीति को देश के लिए घातक समझता है। और इसमे अविलम्ब आमूलचूल परिवर्तन की माँग करता है। साथ ही आयसमाज देश के तथाकथित पिछड वग पर सवर्णो के अत्याचारो की घोर निन्दा करता है। आर्यसमाज चाहता है कि अस्पृश्यता आदि की घिनौनी भावनाए उन्मूलित हो जायें और सभी वर्ग बिना किसी भदभाव के परस्पर प्रीति प्रेम एव भाईचारे का व्यव-करें। आर्यसमाज यह भी चाहता है कि समाज के दुबल वर्ग का दुबलताओ का कोई भी राजनीतिक दल लाभ न उठाये अपितु उन दुबलताओ क निवारण के लिए ठोस उपाय एव उद्योग करे। आर्य-समाज चाहता है कि सभी देशवासी जातीयता, प्रातीयता एव स्वार्थपरता आदि की अति सकीर्ण एव क्षुद्र भावनाओ से ऊपर उठकर सम्पूर्ण देश के हित की बात सोचें। आर्यसमाज देश मे राष्ट्रीय एव भावनात्मक एकता का सम्पादन करना चाहता है और चाहता है कि अल-गाव की प्रवृत्तियो एव भावनाओ का उन्मूलन कर समस्त देशवासी एकता के सूत्र मे आबद्ध एव निबद्ध हो जाये। यह कार्य देशभक्ति की भावनाओ को उजागर किए बिना सम्भव नही। अत आर्यसमाज समस्त देशवासियो मे देशभक्ति की भ. भावनाएँ भरना चाहता है। आर्यसमाज के सस्था.क ने अपने देशवासियों के लिए उद्बोधन दिया था कि—'हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है आगे होगा उसकी उन्नति तन मन धन मे सब जने मिलकर प्रीति से करे।

आर्यसमाज गौ को राष्ट्र की धार्मिक एव सास्कृतिक धरोहर समझता है। गौ के साथ देशवासियो की मातृतुल्य भाव-नाओ को देखते हुए आर्यसमाज गोवध-निषेध की माँग करता है। धार्मिक और सास्कृतिक दृष्टि से ही नही आर्थिक दृष्टि से भी सम्पूर्ण गोवश के वध पर पूर्ण प्रति-बन्ध की आर्यसमाज प्रबल माग करत है। वह चाहता है कि गोवध की समस्या को दलगत राजनीति से अथवा सम्प्रदायवाद से ऊपर उठकर हल किया जाये। आर्यसमाज चाहता है कि देश की बहुसख्यक जनता की भावनाओ का समुचित आदर किया जाये। आर्यसमाज बहुमत की भावनाओ के अनादर की प्रवृत्ति की निन्दा करता है।

आर्यसमाज का यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से राजनीति से कोई सीधा सम्बन्ध नही तथापि वह राजनीति की उपेक्षा भी नही करता। वह राजनीति को स्वार्थपरता, साम्प्रदायिकता, प्रातीयता, जातीयता, आदि की सकीर्णता से तथा भ्रष्टाचार, अनाचार आदि से सर्वथा उन्मुक्त देखना चाहता है। वह चाहता है कि देश का शासन सदैव ईमानदार, सदाचारी, योग्य तथा नीतिमान् देशभक्तो के सबल हाथो मे सुरक्षित रहे। आर्यसमाज राजनीति के वर्तमान भ्रष्ट तौर तरीको की निन्दा करता है। वह चाहता है कि राजनीति अनीति का शिकार न हो। राजनीति के क्षेत्र मे आर्यसमाज अधिकार और कर्त्तव्य दोनो को महत्त्व देता है। वह चाहता है कि अधिकार के नाम पर कर्त्तव्यों की बलि न दी जाये एव न ही कर्त्तव्य के नाम पर किसी को उसके अधिकारो से वंचित रखा जाये। आर्यसमाज चाहता है कि राजनेतागण देश के हित को सर्वोपरि समझें और जनता के कष्टो के निवारण में सदैव तत्पर रहें। आर्यसमाज चाहता है कि देश की समस्त सम्पदा एव साधनो का उसके सभी नागरिको को समान रूप से उपभोग का अधिकार हो एव प्रत्येक व्यक्ति की उन्नति के समान अवसर प्राप्त हो।

आर्यसमाज वेद प्रतिपादित समाज-वाद लाना चाहता है। यह प्रजातन्त्र का तो समर्थक है, पर मूर्खों के बहुमत का समर्थन नही करता। उसकी मान्यता है कि वोटो को गिनने की अपेक्षा तोलना अधिक उपयुक्त एव श्रेयस्कर है क्योकि एक मूर्ख और एक महाविद्वान् की सम्मति एक समान कभी नही हो सकती। सौ मूर्ख भी यदि किसी बात को मिलकर कहे तो भी वह एक विद्वान् की यथार्थ युक्ति-युक्त बात की समता नही कर सकती। अत आर्यसमाज चाहता है कि सविधान का ढाचा कुछ इस प्रकार का बने कि विद्वानो की सम्मति का विशेष आदर हो सके। उदाहरण के लिए बैंको के राष्ट्रीयकरण के लिए एक अर्थशास्त्री अथवा नीतिनिपुण व्यक्ति की सम्मति एक रिक्शा चालक अथवा अनपढ मजदूर की सम्मति एक तुला पर नही रखी जा सकती।

आर्यसमाज ससार में व्याप्त सामा-जिक विषमताओ को दूर करना चाहता है। वह चाहता है कि जन्म, जाति, कुल, रंग तथा धन आदि के आधार पर ऊंच-नीच की भेदमूलक भावनाएँ परस्पर नष्ट हो जायें और मानव-मात्र एक ही परम पिता की सन्तान होने के नाते परस्पर प्रेम प्रीति, समता एव सह-अस्तित्व की भावना से रहें। आर्यसमाज भ्रातृत्व का पाठ पढाना चाहता है। वह ऐसे समाज का निर्माण करना चाहता है कि जहाँ न तो कोई शोषक हो न कोई शोषित। आर्य समाज अस्पृश्यता के कलक को सदा सदा-के लिए मिटा देना चाहता है। आर्यसमाज चाहता है कि प्रत्यक देश मे बाल-विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह एव बहु विवाह आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगे और विवाह गुण, कम और स्वभाव के आधार पर हो न कि जन्मगत जाति-पाति के आधार पर। आर्यसमाज यह भी चाहता है कि ससार विवाह के आदर्श को समझे क्योकि विवाह एक उत्तरदयित्वपूर्ण मर्या-दित कर्म है। दायित्वहीन अमर्यादित भोग-लिप्सा नही। यह एक पवित्र बन्धन है भोग का फ्री लाइसेंस नही। आर्यसमाज चाहता है कि सम्पूर्ण मानव समाज समुन्नत हो। मानव समाज एक आदर्श समाज बने। समाज की उन्नति के लिए आर्यसमाज व्यक्ति की उन्नति पर अधिक बल देता है। क्योकि सामाजिक इकाइयो का सामूहिक रूप ही तो समाज है। व्यक्ति के सुधरने से ही समाज सुधर सकता है। आर्यसमाज चाहता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहे किन्तु सब की उन्नति मे अपनी उन्नति समझे यही सामाजिक उत्थान का मूलमन्त्र है। आर्यसमाज चाहता है कि प्रत्येक व्यक्ति सही अर्थों मे मानव बने अपने परिवार और फिर समाज को मानवता का पाठ पढ़ाया। व्यक्ति-व्यक्ति के सुधरने से समाज, फिर राष्ट्र और अन्तत विश्व सुधर सकता है। और आर्यसमाज विश्व को सुधारना अपना परम कर्त्तव्य समझता है।

इत्योम् शम्

(यशपाल आर्यबंधु)
आर्य निवास, चन्द्रनगर,
मुरादाबाद-२४४००१

विश्वासहीन

ले०—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता वेदप्रचार

चोर और ज्वारी के, शराबी व्यभिचारी के,
चरित्रहीन नारी के साथ नही रहिये।

यार दगाबाज से, नारी बे लिहाज से,
साधू नशेबाज से, बात नही करिये ॥

गुण्डो की जमात में, ओलो की बरसात मे,
झगडे की बारात मे, पैर नही धरिये।

कोढी की काया का, सपने की माया का,
बादल की छाया का, विश्वास नही करिये ॥

जप का शास्त्रीय स्वरूप

धर्मवीर शास्त्री, विद्यावाचस्पति

एक भ्रान्त धारणा जप के सम्बन्ध में आज हमारे समाज मे(हिन्दू समाज में) अभी तक भी बनी हुई है कि

राम नाम का गिद्धा,
चाहे पुट्ठा चाहे सिद्धा ।।

अर्थात् राम के नाम का जाप चाहे सीधा जपा जाये चाहे उल्टा इससे कोई फर्क नहीं पड़ता परमात्मा अवश्य प्रसन्न हो जाते हैं। इस सन्दर्भ मे कुछ लोग किसी कवि का यह कविता का अंश प्रमाण रूप मे प्रस्तुत करते हैं।

उल्टा नाम जपा जग जाना।
वाल्मीकि भये ब्रह्म समाना ।।

अर्थात् यह सर्वविदित है कि राम के नाम का उल्टा जाप अर्थात् राम राम राम ऐसा न कहकर मरा मरा, मरा करते रहने से वाल्मीकि ऋषि जो हुए हैं, वे ब्रह्म के समान हो गए थे। इस प्रकार के और भी अनेक प्रमाण पुराणों के अलावा तुलसी 'रामचरित मानस' आदि के प्रस्तुत किये जाते हैं। साथ ही अनेक पुराणों की कथाएँ भी जो सर्वथा अवैदिक हैं और विज्ञान सम्मत नहीं हैं प्रस्तुत की जाती हैं जिनसे यह साबित करने की कोशिश की जाती है कि भूल से भी यदि किसी ने 'नारायण' या 'राम' आदि शब्द मुख से बोल दिया तो मृत्यु समय में वह सद्गति को प्राप्त कर लेता है।

यदि उपरोक्त धारणा जनक इन वाक्यों की वास्तविकता पर विचार करें तो पता चलेगा कि ये मान्यताएं अवैदिक और तर्कहीन हैं।

सर्वप्रथम तो जप की दृष्टि से राम नाम ही उपयुक्त नहीं है उसके लिए 'ओ३म्' शब्द है और ग्रन्थो के ऐसे अनेक प्रमाण दिए जा सकते हैं जो ओ३म् नाम की महिमा से भरे पड़े हैं तथा ओ३म् नाम के जप का ही विधान करते हैं।

ओ३म् प्रतिष्ठ ।। वेद
तस्य वाचक: प्रणव ।। योग
ओ३म् इत्येकाक्षरं परब्रह्म ।। गीता

इत्यादि सद् ग्रन्थों के वाक्यों का इस राम नाम से विरोध है। और फिर दूसरी बात यह है कि बिना विचारे ही नाम स्मरण (जप) करना कहां की समझदारी है? इसके अतिरिक्त उल्टा नाम जपना तो कैसे उपयोगी हो सकता है? यह बात तो व्यवहार के भी विरुद्ध है। अगर कोई किसी का नाम उल्टा लेकर पुकारे तो क्या वह सुनने वाला उस पर गौर करता है? नहीं। बल्कि वह उल्टा नाम लेने वाला उपहास का पात्र ही बनता है।

इस उल्टे नाम के जप वाली गलत तथा अनार्ष-धारणा का निवारण करने हेतु मैं केवल एक सूत्र जो योग शास्त्र का है स्वाध्यायशील पाठको के सामने रख रहा हू पाठक विचार करे। सूत्र इस प्रकार है---

तज्जपस्तदर्थभावनम् ।। योग १-२८।।

इस सूत्र में पतञ्जलि ऋषि जी जप की परिभाषा बतला रहे हैं। वे कहते हैं--'तत् जप' उस परमात्मा के नाम का जप क्या है? तदर्थभावनम् उस नाम के अर्थ की भावना। यह है जप। इसे हम एक उदाहरण से समझेंगे। जब हम 'जल' शब्द का प्रयोग करते हैं तो 'जल' कहते ही हमारे मन मस्तिष्क मे जल के गुणो का जैसे शीतलता, तरलता, उससे प्यास के बुझने का, इत्यादि का विचार भी तुरन्त आ जाता है। 'अग्नि' शब्द को कहते ही सोचते ही हमारे मन मे उसके गुण प्रकाशशीलता, उष्णता आदि गुणो का तुरन्त ध्यान हो जाता है। किसी व्यक्ति को हम बुलाएँ तो उसके गुणो का हमारे मन मस्तिष्क में तुरन्त आभास होने लगता है। ऐसे ही परमात्मा का नाम, मुख्य नाम तथा जप की दृष्टि से जो बिल्कुल उपयुक्त नाम 'ओ३म्' है उसका जप करने से उसके अर्थ का भी चिन्तन होते रहना चाहिए।

परमात्मा का जप की दृष्टि से तो 'ओ३म्' नाम है जैसा कि योगदर्शनकार कहते हैं—तस्य वाचकः प्रणव ।। योग १।२६ उस परमात्मा का वाचक ओ३म् नाम है तो जो वाचक है वह ही मन से चिन्तनीय भी है। वैसे आज जप के लिए लोग अलग अलग नाम बताते हैं। कोई राम राम जपने की बात कहता है कोई नम शिवाय, कोई नमो भगवते वासुदेवाय कोई नमो भगवते, आदि अनेक नाम जप के लिए बताते तथा करते भी हैं परन्तु ओ३म् नाम ही जप की दृष्टि से उपयुक्त है जैसा कि योग दर्शनकार ने ऊपर 'तस्य वाचक• प्रणव' में वर्णन किया और वह जप भी कैसा हो "तज्जपस्तदर्थभावनम्" उस ओ३म् नाम का जप उसके अर्थ की भावना पूर्वक करना चाहिए। ऊपर दिये गये उदाहरणों से हम यह समझ गये हैं कि किसी वस्तु के नाम का प्रयोग करने से उस वस्तु के गुण-धर्म मन मे आ जाते हैं। वैसे ही परमात्मा के नाम ओ३म् का भी चिन्तन जब हो तब अर्थ पूर्वक हो। 'ओ३म्' का अर्थ मुख्य रूप से रक्षा करने वाला होता है तो इस ओ३म् नाम का जप करते हुए इस का अर्थ "सबकी रक्षा करने वाला" भी जप का विषय होना चाहिए। 'ओ३म्' का विचार मन में उठते ही हम सोचें कि वह परमात्मा सब का रक्षक है, मेरा भी रक्षक है। मेरे अणु अणु मे प्रविष्ट होकर मेरी रक्षा कर कर रहा है। यदि मैं बीमार हू तो मेरी बीमारी दूर हो रही है। मेरी हर चीज की रक्षा का भार उसी का है। केवल शरीर ही नही बल्कि मेरा मन मेरी आत्मा की रक्षा का कार्य भी वह कर रहा है। अब मेरे मन में स्वस्थता है। आत्मा मे स्वस्थता है। शरीर मे स्वस्थता है मेरी रक्षा हो रही है। अब मुझे कोई नही मार सकता, कोई नही सता सकता, अब मैं उसकी गोद में हू। उस सर्व रक्षक की जिसका नाम ओ३म् है मेरी अदभुत रीति से रक्षा हो रही है। मैं उसके सहारे पर हूँ, उसके आश्रय मे हू। उसकी छाया (सहारे मे) हू और जो उसकी छाया में (आश्रय मे) आ जाता है उसे मिलता है अमृत सुख। "यस्य च्छाया ऽमृतम्" अर्थात् जिसकी छाया ही अमृत है जिसका सहारा न लेना मृत्यु जैसे कष्ट का कारण है सो मैं तो छाया मे हू। उसी को मैं पुकार रहा हूँ। वह मेरे शरीर मे मेरे आगे पीछे दायें बायें ऊपर नीचे सभी ओर होकर मेरी रक्षा कर रहा है। ऐसी भावना के साथ जप किया जाना चाहिए। और वास्तव में ऐसा जप ही ईश्वर के नाम का सच्चा जप कहला सकता है।

संक्षेप मे कहे तो यो कहना पड़ेगा कि योग दर्शनकार ऋषि पतञ्जलि प्रभु नाम के सार्थक जप के उद्घाटक व समर्थक हैं।

हमे एक बात और ध्यान मे रखनी होगी कि महर्षि पतञ्जलि योग (उपासना के) मामले मे हमारे लिए प्रमाण हैं। क्योंकि वे उपासना के विशेषज्ञ (स्पेशलिस्ट थे। जैसे कोई आख का स्पेशलिस्ट डाक्टर होता है तो वह आख के बारे मे विशेष ज्ञान रखता है। कर्ण रोग विशेषज्ञ कान के विषय मे, हड्डी का विशेषज्ञ हड्डी के विषय मे, पेट का विशेषज्ञ पेट के विषय मे आपरेशन के मामले मे शल्य चिकित्सक विशेष जानकारी रखता है तथा अपने विषय मे प्रामाणिक माना जाता है। वैसे ही जप के बारे मे योग दर्शनकार पतञ्जलि का वचन हमारे लिए प्रमाण की चीज हो जाता है। और वे कहते हैं--

"तज्जपस्तदर्थभावनम्" उस परमात्मा के नाम का जप उसके अर्थ की भावना सहित होता है तो हमे उनकी बात को जप विशेषज्ञ समझ कर ओ३म् नाम का सार्थक भावना से जप करना चाहिए। वाणी से नही मन से मनन पूर्वक जप करें। यही जप का शास्त्रीय स्वरूप है। नाम का 'उल्टा जाप' या भूल से लिया गया 'प्रभु नाम' जप की (स्मरण की) कोटि में नहीं आता। अत• यह उल्टे 'नाम जप' की धारणा त्याग कर हमे 'ओ३म्' नाम का सार्थक, भावना से जप करना चाहिए। ●

अंगिरा ऋषि का उपदेश

(पृष्ठ ५ का शेष)

प्रकृति के प्रत्येक रूप को उसका रूप जानकर उसे देखता है। अपने समान सबको समझता है। सारी प्रकृति की आश्चर्य जनक बातें उसका ही स्वरूप हैं, जो जन सामान्य को दिखाई नही देती हैं। ज्ञानी पुरुष उसे ज्ञान नेत्रों से देखता है। दूसरी विद्या आत्मा की उन्नति का तरीका बताती है। उसी के द्वारा हमे सच्चा सुख मिल सकता है।'

यज्ञ के विषय में शौनक ने पूछा---अंगिरा ऋषि बोले---केवल खाली यज्ञो के करने से भी हम उस उन्नति को नही कर सकते जिससे सच्चा सुख मिलता है। केवल दान करने से भी उस सुख की प्राप्ति नही होती जिसे आनन्द कहते हैं। ये सारी बातें तभी जीवन में आती है। जब आदमी झूठ न बोले, हिंसा न करे, चोरी न करे, धोखा न दे, छल न करे, अपनी आत्मा के समान सब की आत्माओ को जाने। यही यज्ञ करने का लाभ है, दान देने का उद्देश्य है। खाली यज्ञ किया, खाली दान दिया। जीवन में इन बातों को नही उतारा, तो सुख नहीं मिलेगा।

दूसरे दिन वह फिर ऋषि के पास गया, इस बार ऋषि ने बताया--'भगवान सब के मन की बात जानते हैं। हमे सदा सत्य बोलना चाहिए। मन को वश मे रखना चाहिए। कभी बुरे काम नही करने चाहिए। सासारिक सुखो के स्थान मे आत्मा की उन्नति पर ध्यान देना चाहिए।

यह सुनकर शौनक को सुख मिला और ज्ञान मिला, ज्ञान नेत्र खुल गये। उसने अंगिरा ऋषि को प्रणाम किया। घर लौट आया, उनके बताये हुए उपदेशों के अनुसार दिन बिताने लगा। उसका जीवन एव गृहस्थ जीवन सुखी हो गया। इस रास्ते पर जो भी चलेगा उसे ही सुख की प्राप्ति होगी। हम थोड़ी देर के लिए मिलने वाला सुख ढूंढते हैं। बाद मे दु खी होते हैं। क्यो न ऐसा सुख ढूढें जो कभी समाप्त न हो और वह सुख है आत्मा एव परमात्मा को जानना। आओ हम सब इसी रास्ते को ढूढें जिस पर चलने को अंगिरा ऋषि ने शौनक ऋषि को कहा था।

समाचार-सन्देश

दिल्ली आर्यसमाजों के साप्ताहिक सत्सग कार्यक्रम
१८ अगस्त १९८५ रविवार

प्रतापनगर– श्री भीष्मदेव शास्त्री। अशोकनगर—प० चुन्नीलाल आर्य। अमरकालोनी– प० उदयश्रेष्ठ धर्माचार्य। आर्यपुरी– महात्मा मुनिशकर जी। आनन्दविहार—प० विश्वप्रकाश शास्त्री आर्योपदेशक। इन्द्रपुरी—महात्मा राम किशोर वैद्य महोपदेशक। किंग्जवे कैम्प—प० ओमप्रकाश शास्त्री। ग्रेटर कैलाश न०१—प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री। गुड-मण्डी—प० वेदप्रकाश शास्त्री। गोविन्द-पुरी—प० नरेन्द्रकुमार शास्त्री। चूना-मण्डी—प० आशाराम भजनीक। जनक-पुरी बी-२—प० रमेशचन्द्र वेदाचार्य। जगपुरा—आर्यवीर रणजीतसिंह राणा। टैगोर गार्डन—प० देवराज वैदिक मिश नरी। देवनगर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री आर्य प्रचारिका। दरियागंज—प० अमरनाथ कान्त आर्योपदेशक। न्यू मोती-नगर—डा० वेदप्रकाश महेश्वरी। श्री निवासपुरी—डा० रघुनन्दनसिंह महो-पदेशक। नारायणविहार—प० मुनीदेव भजनोपदेशक। प्रीतमपुरा – मा० मोहन लाल गांधी जी। पजाबी बाग—प० धर्म-वीर शास्त्री विद्यावाचस्पति। प्रशान्त विहार–स्वामी यज्ञानन्द सरस्वती। पजाबीबाग एक्सटेन्शन- प० सत्यदेव स्ना-तक रेडियो कलाकार साथ प० जोती-प्रसाद ढोलक कलाकार। बसई दारापुर—प० बलवीर शास्त्री। भोगल –ब्र० मनु-देव शास्त्री। महरौली—प० अमीचन्द्र मतवाला। मोडल बस्ती - प० तुलसीराम आर्य प्रचारक। मोतीबाग—प० वेदव्यास भजनोपदेशक। राणाप्रताप बाग—प० अशोक विद्यालकार। रघुवरपुरा न० २—प० जयभगवान मण्डली। राजौरीगार्डन—महात्मा देवेशभिक्षु। लक्ष्मीबाई नगर ई० १२०८—ब्र० सुशीलकुमार शास्त्री। लड्डूघाटी पहाडगंज—प० नेत्रपाल शास्त्री सोहनगंज—प० सोमदेव शास्त्री। श्रीनगर पण्डित हरिश्चन्द्र शास्त्री। शालीमार बाग- प० मनोहरलाल ऋषि। हौजखास-ब्र० रामवीर शास्त्री।

व्यवस्थापक
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग

'स्वाधीनता दिवस : हमारा संकल्प'

आज हम अपने स्वाधीनता दिवस की अडतीसवी वर्षगाठ मना रहे हैं। नि-सन्देह हमने भौतिक क्षेत्र मे असीमित प्रगति की है। निर्माण, विज्ञान, टैक्ना-लाजी, सेना व खाद्यान्न के क्षेत्रो मे आश्चर्यजनक विकास हुआ है। राष्ट्र का बाह्य स्वरूप पूर्णतया परिवर्तित हो गया गया है। उद्योगों की प्रगति भी कम गौरव की बात नही हैं। लेकिन इसके विपरीत उसी गति से राष्ट्रीय चरित्र का भी पतन हुआ है। ऋषि मुनियो की पवित्र सस्कृति के देश मे आज मानवता कराह रही है। सारे देश मे निम्न स्तर से लेकर उच्च-स्तर तक, प्रत्येक क्षेत्र मे भीषण भ्रष्टा-चार, अकमण्यता, स्वार्थान्धता का साम्राज्य फैला हुआ है। भाई भाई के खून का प्यासा हो गया है। साम्प्रदायिक तनाव, अराष्ट्रीय गतिविधिया राष्ट्र के माथे पर कलक बनी हुई हैं। घूसखोरी का बाजार गम है। तस्करी, कन्लेशन की बहुतायत है। अपहरण, बलात्कार, डकैती, हत्या आज के युग मे साधारण सी बात है। दहेज के नाम पर हत्याए निरन्तर हो रही हैं। व्यवस्था, शान्ति की जिम्मे-दार, पुलिस स्वय भ्रष्टाचार के शिकजे मे फसी हुइ है। नैतिकता, मानवीयता, सच्चरित्रता, सद्भावना लुप्त होती जा रही हैं। यदि इन्सान की इन्सानियत नहीं रहेगी, तो इस असीमित भौतिक विकास का क्या होगा?

आइए। हम भारत के लोग, स्वाधी-नता दिवस के पुण्य पर्व पर सकल्प लें एक महान् राष्ट्र के निर्माण का और भारत में फैल रही दानवी प्रवृत्तियो को समाप्त करने का। यही स्वाधीनता के लिए मर मिटने वालो के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

भवदीय,
रामेश्याम 'आर्य' एडवोकेट

चतुर्वेद पारायण यज्ञ

२१ अगस्त १९८५ प्रात काल १ सितम्बर तक यज्ञ भवन प्रयाग निकेतन जवाहरनगर दिल्ली मे श्री स्वामी जीवना-नन्द एव प० लक्षपति शास्त्री की अध्यक्षता मे चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है। श्रद्धालुजन भारी सख्या मे पधार कर धर्म लाभ उठावें।

निवेदक
अर्जुनदेव

वेद कथा—

आर्यसमाज लाजपत नगर नयी दिल्ली मे २६ अगस्त से ३१ अगस्त तक रात्रि ९ से १० बजे तक कथा प० शिव-कुमार जी शास्त्री भूतपूर्व सांसद द्वारा होगी। भजन रात्रि ८ से ९ बजे तक श्री गुलाबसिंह जी राघव के होंगे।

प्रेषक
प० भेदश्याम

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य (पंजीकृत)
१५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

सूचना

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, की साधारण सभा की बैठक रविवार १८ अगस्त १९८५ को साय ३-३० बजे आर्य समाज मन्दिर हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१ मे होगी।

विचारणीय विषय–

१ शोक प्रस्ताव

२ गत बैठक की कार्यवाही की सम्पुष्टि।

३ वार्षिक विवरण (रिपोर्ट)

४ गत वर्ष के आय-व्यय का ब्यौरा

५ नये वर्ष के लिए अधिकारियो एव अन्तरग सभा का निर्वाचन।

६ अन्य विषय।

आप इस सभा के माननीय सदस्य हैं। कृपया अवश्य दर्शन दें।

नोट १ सहयुक्त सदस्यो से विनम्र अनुरोध है कि वे अपना सदस्यता शुल्क ५/- रुपये कार्यालय में जमा करा दें अथवा १८ अगस्त १९८५ को साथ लेते आवें।

२ जिन समाजो ने अभी तक ८५-८६ का सम्बन्ध शुल्क ३०/ रुपये और २ प्रतिनिधियों के नाम, घर के पते सहित, सदस्यता शुल्क १०/- रुपये अभी तक नहीं भेजा है, वे भी कार्यालय मे जमा करा दें अथवा साधारण वार्षिक अधिवेशन मे साथ लेते आवे।

३ सभा कार्यालय सभी कार्यदिवसों पर अपराह्न ३ से ६ बजे तक खुला रहेगा।

भवदीय
(सूर्यदेव) महामन्त्री

वेद प्रचार सप्ताह अवश्य मनाइये!

भारत की समस्त आर्यसमाजें वेद प्रचार सप्ताह अगस्त सितम्बर में अपनी-अपनी आर्यसमाजो में वेद कथा कर मनाती हैं। आपसे प्रार्थना है कि इस वर्ष भी यह कार्यक्रम अवश्य रखे। इस उप-लक्ष्य में आपको किसी विद्वान् की आ-वश्यकता हो तो आप हमें सूचित करने की कृपा करें। आपसे एक प्रार्थना और करनी है। जैसा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की आर्यसमाजें एक सप्ताह रक्षा-बन्धन से लेकर जन्माष्टमी तक वेद कथा सप्ताह मनाती हैं। अच्छा तो यह रहेगा कि इस सप्ताह से एक सप्ताह पहले व बो सप्ताह बाद भी यह प्रोग्राम बना लेते हैं। इस उपलक्ष्य मे हम आपको अच्छे विद्वान् उप-लब्ध करा सकते हैं। दिल्ली की आर्य समाजो और स्त्री आर्यसमाजों मे हर रविवार को सत्सग होते हैं। अगर रवि-वार या किसी अन्य दिन के लिए उपदे-शको भजनोपदेशको की आवश्यकता हो तो सभा कार्यालय को सूचित करने की कृपा करें।

महामन्त्री
डा० धर्मपाल
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

आर्यसमाज की प्रधान सड़क दुर्घटना में घायल

आर्यसमाज, उदयपुर की प्रधान श्रीमती मालती अग्रवाल कल ३-८-८५ रात्रि चरक छात्रावास के पास कार पेड से टकरा जाने के कारण घायल हो गई। तत्काल उन्हे सामान्य चिकित्सालय के आपातकालीन कक्ष पहुचाया गया जहाँ उनकी आखो में शीशे चले जाने के कारण रात्रि को ही आपरेशन कर निकाला गया दुर्घटना का कारण ज्ञात करने पर मालूम हुआ कि सामने से आ रही बस से बचाव करते समय यह दुर्घटना हुई।

आर्यसमाज के मत्री ज्ञानप्रकाश गुप्ता ने एक विज्ञप्ति मे बतलाया है कि आज आर्यसमाज मन्दिर मे होने वाली अतरग की मासिक बैठक स्थगित कर दी गई तथा साप्ताहिक सत्सग के उपरान्त समस्त सदस्यो ने उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की ईश्वर से प्रार्थना की।

श्रीमती अग्रवाल सामान्य चिकित्सा-लय के महिला नेत्र कक्ष के पलग न० १ (एक) मे भर्ती हैं उनकी तबीयत पहले से सुधार पर हैं।

(ज्ञानप्रकाश गुप्ता)
मन्त्री, आर्यसमाज उदयपुर

योग्य रिश्तों के लिए मिलें

आजकल योग्य वर या सुयोग्य वधू को खोज पाना, उत्तम कुलो का मिल पाना, बिना दहेज के विवाह इच्छुकवर प्राप्त कर लेना अत्यन्त कठिन कार्य है सुशील गुणवती सुन्दरवधू को ढूढ पाना असाधारण कार्य है। जनसेवा को ध्यान मे रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने वयस्क लडके लडकियों के मेल मिलाने के लिए आदर्श आर्य विवाह केन्द्र की स्थापना की है। अत आप अपने सुपुत्र एवं सुपुत्रियों के नाम शीघ्रातिशीघ्र सभा कार्यालय मे पजीकृत करायें। अपने परि-चय पत्र मे निम्न जानकारी देना न भूलें–

१ आयु, कद, शिक्षा, वर्ण, व्यव-साय, फोटो कापी।

२ अपनी इच्छा—क्या आप बाहर भेजने के पक्ष मे है? परिवार के सदस्यों का परिचय शाकाहारी अथवा ... क्या कोई रोग तो नही है? क्या अन्तरजातीय विवाह करना चाहेंगे।

सयोजक आदर्श आर्य विवाह केन्द्र
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली

उपदेशक विद्वानो का सम्मान करे

(पृष्ठ १ से आगे)

वेदप्रचार विभाग के अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानद जी ने अपने गत वर्ष के कार्य का विवरण दिया और बताया कि दिल्ली सभा ने इस वर्ष आर्यसमाजो एव विद्यालयों के अतिरिक्त ग्रामों में, पुनर्वास कालोनियों मे पिछडी बस्तियों में झुग्गी झोंपडियों में तथा सार्वजनिक स्थानों पर सफलता पूर्वक वेदप्रचार कार्य किया है। इसके बाद उन्होने महानुभावो के सुझाव आमन्त्रित किए।

मुख्य प्रस्ताव निम्न प्रकार है —

१ वेदप्रचार विभाग ऐसा प्रयास करे कि आर्यसमाजो मे वक्ता का अनादर न हो तथा अन्त समय मे स्थान और समय का परिवर्तन न किया जाये तथा कहीं पर भी एक साथ दो प्रचारक न भेजे जायें।

२ आर्यसमाजों को यह निर्देश दिया जाये कि वे उपदेशकों को समुचित मार्ग-व्यय तथा दक्षिणा दें तथा उनका जलपान आदि से सत्कार करें।

३ सभा के वैतनिक अवैतनिक उपदेशकों की बैठकें महीने दो महीने मे अवश्य बुला ली जाया करें।

४. सभा का साप्ताहिक पत्र आर्य सन्देश सभी उपदेशको को नि शुल्क भेजा जाये।

५ आर्यसमाजों मे पुरोहितों का उचित सम्मान हो तथा उनकी क्षमताओं का प्रयोग सध्या हवन आदि सिखलाने, सस्कृत ?? ने वाचनालय की व्यवस्था करने तथा योग आदि की कक्षाएँ लगाने मे किया जाये।

६ सभा की ओर से सार्वजनिक रूप से उपदेशको का सम्मान किया जाय।

७ उपदेशको की क्षमता बढाने के लिए उन्हें प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है, जिसके लिए योग्य विद्वानो द्वारा उन्हें प्रशिक्षित कराया जाये।

८ उपदेशक समय पर आर्यसमाज मन्दिर में पहुँचें तथा जहा तक सम्भव हो अपने भाषण को पहल से तैयार करके ले जायें। वे वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार ही बोलें।

९ ब्राह्मण, सन्यासी, विद्यार्थी इन्हें सम्मान की आकाक्षा नहीं करनी चाहिए, यदि यह परिश्रम से कार्य करेंगे तथा त्याग की भावना रखेंगे तो इनका सम्मान स्वयमेव होगा।

१० प्रचारकों का जीवन वैसा ही हो जैसा वह बोलते हैं। वह सब एक झण्डे के नीचे अनुशासित रहकर कार्य करें। प्रचार और व्यवहार दोनों में ही उपदेशको को अच्छा होना चाहिए। जो कार्यक्रम वह स्वीकार करें उनमें वह अवश्य पहुँचें। इस सबध में वैतनिक या अवैतनिक सभी उपदेशकों को अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

११ आर्यसमाजों के अधिकारी श्रद्धा और सद्भाव का परिचय दें।

१२ आर्यसमाजों को हमें आशीवाद नही बनाना चाहिए। आर्यसमाज मन्दिरो का उपयोग मूलत वेद प्रचार के लिए ही किया जाना चाहिए।

१३ सभा प्रधान श्री सूर्यदेव जी न बैठक का समापन करते हुए कहा कि जहा योग्यता है उसे कोई ठुकरा नही सकता। शिष्टाचार कहता है कि हम मान वाले वक्ता का सम्मान करें। आर्यसमाज मे अपनी बात को कहने की सभी को स्वतन्त्रता है। कुछ अन्य सगठनो मे तो प्रचारक अपनी बात कह भी नही सकते। यदि हम आचारवान हैं तो निश्चय ही हमारा सम्मान होगा। यदि हम उच्छृखल हैं तो हमारा सम्मान हमारे बच्चे भी नही करेंगे। कमिया अधिकारियो, उपदेशकों दोनो मे है मैंने देखा है प० रामचन्द्र देहलवी सदर बाजार से चलकर अपनी चटाई लेकर आते थे तथा रेलवे स्टेशन के सामने और ज्यादा भीड हो जाने पर पार्क मे प्रचार करते थे। आज के प्रचारकों को उसी कर्तव्य भावना से कार्य करना चाहिए। उन्होंने बाद मे सभा की आर्थिक स्थिति से भी उपस्थित सदस्यों को अवगत कराया।

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग ने सभी उपस्थित सदस्यो को अमूल्य सुझाव तथा स्वस्थ रहते हुए वेदप्रचार में सलग्न रहने का आशीर्वाद दिया। श्री वेदव्रत शर्मा ने धन्यवाद देते हुए कहा कि मान्य विद्वानो द्वारा दिये गए सुझावों के अनुसार हम कार्य करने का पूर्ण प्रयास करेंगे, तथा उपदेशकों के सम्मान के लिए यथोचित प्रयास करेंगे। उन्होंने आर्यसमाज दीवान हाल के अधिकारियों का इस बैठक की व्यवस्था करने तथा जलपान द्वारा स्वागत करने के लिए धन्यवाद किया।

इस बैठक मे स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, सभा प्रधान श्री सूर्यदेव, सभा महामन्त्री डा० धर्मपाल, मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा श्री सोमदेव शर्मा शास्त्री आचार्य रविदत्त गौतम, प० लक्ष्मीदास श्री जय प्रकाश आर्य, श्री नेत्रपाल आर्य, श्री अमर नाथ कान्त श्री रणजीत सिंह राणा, श्री चमनलाल श्री ब्रह्मप्रकाश वागीश, श्री धर्मवीर शास्त्री श्री मनुदेव शास्त्री, श्री मायाराम आर्य श्री यशपाल शास्त्री, श्री मनोहर लाल ऋषि श्री हरिदेव आचार्य, श्री चुन्नीलाल आर्य, श्री सत्यदेव स्नातक श्री वेदव्यास श्री मुनीदेव आर्य, श्री ज्योति प्रसाद श्री रामकिशोर वैद्य, श्री ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, श्री यश पाल सुधांशु, श्री वेदपाल शास्त्री श्री रामचन्द्र शर्मा, श्री बलेशकुमार शारो, श्री आशाराम प्रेमी, श्री गुलाबसिंह राघव श्री उदयश्रेष्ठ, धर्माचार्य, श्री बलजीत शास्त्री, श्री विद्याराम मिश्र आचार्य श्री अमीचद मतवाला श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, श्री स्वामी ज्ञानेश्वरानन्द आदि उपस्थित थे।

स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग

सर्वस्व अर्पण करने वाले 'होता'

(पृष्ठ १ का शेष)

हैं वे महर्षि दयानन्द के अनुयायी जिनके कारण स्वाधीनता का यज्ञ सफल हुआ क्योंकि देश की आजादी के लिए जेलो मे जाने वाले ८० प्रतिशत आर्यसमाजी थे। शूर धर्म के इन पुजारियो को देश जाति का प्रणाम। क्योंकि—

शूर धर्म है, अभय दहकते
अगारो पर चलना,
शूर धर्म है शोणित असि
पर धरकर शीश मचलना।
शूर धर्म कहते हैं,
छाती तान तीर खाने को,
शूर धर्म कहते हैं हसकर
हलाहल पी जाने को ॥

इन्ही अमर बलिदानियो के कारण अन्धेरे के बीच स्वाधीनता का सूरज उगा। आज का भारत २१ वीं शताब्दी की ओर सुनहरे भविष्य की कामना लिए बढ रहा है परन्तु जैसी वर्तमान विकट स्थितियाँ हैं उन्हें पार करना मामयिक चुनौती है। इस समय चुनौती है। बढती हुई आबादी घोर गरीबी, अशिक्षा, जातिवाद, क्षेत्रवाद और सब से क्रूर आतकवाद। रवीन्द्रनाथ ने लिखा

शताब्दीर सूर्य आजि
रक्तमेघ माझे,
अस्त गेलो हिंसार
उत्सवे, आजि बाजे।
अस्त्र शस्त्रे झकारे
उन्माद रागिनी,
भयकारी। दयाहीन
सभ्यता नागिनी ॥
स्वार्थ बधे छे
सघात लोभे लोभे,
छूटे छे सग्राम
प्रलय मथन क्षोभे।

"इन रक्तवर्ण मेघो के बीच इस शताब्दी का सूर्य अस्त होता दिखाई दे रहा है। आज हिंसा के इस उत्सव मे शस्त्र अस्त्रो के बीच आधुनिक सभ्यता नागिन बनकर मृत्यु भी भयकर रागिनी पर नृत्य कर रही है। मनुष्य का एक स्वार्थ दूसरे स्वार्थ से टकरा रहा है। लोभ के साथ लोभ का सघर्ष मचा है और इस प्रलय सग्राम मे रत मानव आत्मविश्वास के पथ पर बढता चला जा रहा है।"

इस अन्धड भरे तूफान में भी आत्मविश्वास का होना, आगे बढने की शक्ति सजोये रखना, सकल्प की दृढता और दूरदृष्टि का होना अत्यावश्यक है। यही हमारे राष्ट्र की गौरवपूर्ण अस्मिता है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

वर्ष ६ अंक ४० | रविवार २५ अगस्त १९८५ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८६ | श्रावण २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २० रुपये | आजीवन २०० रुपये | विदेश में ५० डालर ३० पौंड

निराशा वादी शल्य मत बनो, आशा और कर्मठता के प्रतीक कृष्ण बनो —रामगोपाल शालवाले

नई दिल्ली १८ अगस्त १९८५। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के निर्वाचन से पूर्व सामयिक प्रधान का आसन ग्रहण करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने कहा कि आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की स्थापना उस समय हुई थी जब देश भर मे कही भी ऐसी सभा नही थी। कानपुर मे काफी समय बाद केन्द्रीय सभा की स्थापना हुई। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी सभा के तत्वावधान मे चीन के हमले के समय तत्कालीन गृहमन्त्री श्री चह्वाण को रामलीला मैदान मे आयोजित विशाल समारोह मे ५१ हजार रुपये और एक तलवार भेंट की गयी थी। समूचे देश मे इस सभा की छाप है। मुझे दुःख होता है जब मेरे कुछ निराश साथी सब कुछ करते हुए भी कहते हैं कि हम अच्छी तरह नही कर पाये। सब तरह सम्पन्न होते हुए भी कहते है कि हम भूखे हैं नगे हैं। मैं मानता हू कि हमे और अधिक कार्य करना चाहिए। सगठन के अन्तर्गत कार्य करना चाहिए। करते हुए लोगो के मार्ग मे अवरोध नही पैदा करने चाहिए। हो सके तो उनको सहारा देना चाहिए। मुझे यह प्रसग याद आता है जब महाभारत के युद्ध मे कर्ण के सारथी शल्य थे और वे उस वीर योद्धा कर्ण को बार-बार सूतपुत्र अयोग्य कहकर हतोत्साहित कर रहे थे। जब सारथी ही हतोत्साहित करे तो कार्यकर्ता कैसे कार्यों को सुचारु रूप से सम्पन्न कर सकता है। दूसरी ओर कृष्ण हर प्रकार अर्जुन को प्रेरित कर रहे थे उसका उत्साह-वर्धन कर रहे थे उसका मोह भग कर रहे थे। द्रोपदी चीरहरण और अभिमन्यु की मृत्यु का बदला लेने के लिए उकसा रहे थे। परिणामत विजयश्री भी पाण्डवो को ही मिली जिसमे कृष्ण का बहुत बडा हाथ था।

इसलिए मेरे प्यारे भाइयो, उत्साह से काम करो। साथियो का उत्साह वर्धन करो, उन्हे सहयोग दो। जीत तुम्हारी होगी। उन्होने पजाब की समस्या मीनाक्षीपुरम मे किये जा रहे कार्यो पर सतोष व्यक्त

(शेष पृष्ठ ९ पर)

आर्य केन्द्रीय सभा के निर्वाचित प्रधान श्री महाशय धर्मपाल

श्री महाशय धर्मपाल

दानवीर, धर्मप्रिय, सत्यनिष्ठ, निश्छल सरल प्रकृति के स्वामी, एम० डी० एच० प्रा० लि० के स्वत्वाधिकारी, सुप्रसिद्ध उद्योगपति महाशय धर्मपाल आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान सर्वसम्मति से हर्ष और उल्लास के वातावरण मे निर्वाचित हुए।

श्री महाशय धर्मपाल अपने पूज्य पिता श्री स्व० महाशय चुन्नीलाल के सत्यनिष्ठ ईमानदार, परोपकारी, दानी स्वभाव को आदर्श मानकर समाज सेवा मे सलग्न हैं। उन्होने अपनी पूज्या माता चन्ननदेवी की मधुर स्मृति को जीवन्त रूप देने के लिए माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय सुभाष नगर मे बनवाया जो हजारो रोगियो को नेत्र ज्योति प्रदान कर रहा है। जनकपुरी मे भी दो बडे अस्पताल दु खियो के दु खहरण का कार्य महाशय जी शुभ सकल्प के कारण कर रहे हैं। श्री महाशय चुन्नीलाल चैरिटेबल ट्रस्ट के अन्तर्गत एक चलता फिरता

(शेष पृष्ठ ११ पर)

महामन्त्री श्री अशोक कुमार सहगल

श्री अशोक कुमार सहगल

कर्मठ कार्यकर्ता धुन के धनी, हसमुख, मधुर स्वभाव जनसेवा के लिए कृतसकल्प अमेरिकन एक्सप्रेस बैंक के उच्च अधिकारी, महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के अगाध श्रद्धालु श्री अशोक सहगल के आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री चुने जाने पर हार्दिक बधाई।

श्री अशोक सहगल आर्यसमाज राजेन्द्र नगर के १२ वर्षों से लगातार रहे हैं। उनके कारण उस क्षेत्र के जन जन तक आर्यसमाज का सन्देश पहुचा है। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के वे १९७४ से लेकर १९७८ तक महामन्त्री रहे। उनके द्वारा उस काल मे किये गये कार्यो को आर्य जगत अब तक स्मरण करता रहा है। १९७५ की अन्तर्राष्ट्रीय आर्यसमाज स्थापना शताब्दी के वे सयोजक थे। दूर दराज तथा देश-देशान्तर से पधारे लाखो आर्यो के स्वागत सम्मान और आवास व्यवस्था के लिए श्री अशोक कुमार की सेवा की काफी प्रशसा की गई थी।

सत्संग वाटिका

निर्भय बनो, निर्भय करो

सुरेशचन्द्र वेदालकार

यतो यत समीहसे ततो नो अभय कुरु।
श न कुरु प्रजाभ्योऽभय न पशुभ्य ॥
यजु० अ० ३६ । म० २२

(यत यत) जिस जिस स्थान मे तू (समीहसे) कम करता है उस उस स्थान में (न) हमारे लिए (अभयम्) अभय दान (कुरु) कर (न प्रजाभ्य) हमारी प्रजा के लिए (शम् अभय) कल्याण कारक अभय (कुरु) करो और (न पशुभ्य) हमारे पशुओ को भी (अभयम्) अभयदान कर।

इस मत्र मे ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि हे ईश्वर ! जिस जिस स्थान मे तुम्हारा कम चलता है उस उस स्थान से हमारे लिए हमारी प्रजाओ और पशुओ के लिए कल्याण मय अभयदान कीजिए ।

कल्याण कारक परमेश्वर अभय कैसे कर सकता है ? व स्तव मे भय एक छलना है । भय कोई वस्तु नही है। मैंने एक घटना कही पढी थी कि एक बार एक डाकू जिस पर कई हत्याओ के अभियोग थे और वह आजीवन कारावास की सजा भुगत रहा था एक दिन जेल के पहरेदार के कमरे मे पहुचा जहा चाभियाँ रखी हुई थी पहरेदार और उसके अन्य साथियो की ओर पिस्तौल तान कर बोला हाथ ऊपर करो ।

उस डाकू की भयकरता का अनुमान करके उसकी आज्ञा के अनुसार उन्होने हाथ उठा दिए और उसके पूछने पर चाभियो का गुच्छा भी से बता दिया। उसने पहरेदारो के सरदार को छोडकर दूसरो का कालकोठरियो मे बन्द कर दिया । फिर सरदार से कहा चलो फाटक खोलो और मुझे इस प्रकार मोटर पर शहर के बाहर ले चलो सरदार उसे लेकर बाहर निकला जहा जेलर पेडो के नीचे टहल रहा था जेलर ने एक कैदी को सरदार के साथ आराम से मोटर मे बैठते देखा तो उसे कोई सन्देह नही हुआ। इस समय डाकू पिस्तौल को कोट के नीचे छिपाए हुए था और यह तनी सरदार की ही ओर थी

कुछ दूर जाकर उसने सरदार को मोटर से नीचे उतार दिया और स्वय मोटर चलाने लगा । ... सरदार के नीचे उतरने पर वह पिस्तौल सरदार के सामने नीचे पटक दी उसे नमस्ते की और मोटर स्टार्ट कर दी।

मोटर के चल पडने पर जब सरदार को होश आया और उसने वह पिस्तौल पडी देखी तो उसे समझ आया कि यह लकडी की पिस्तौल है और मैं व्यर्थ ही डर रहा था। इसी प्रकार जीवन मे भय भी लकडी की पिस्तौल है। हमारी अधिकाश सीमाए और निराशाएँ लकडी की पिस्तौल की छलना से अधिक नही। हम छलनाओ को न पहचान कर उन्हें यथार्थ की शक्ति दे देते हैं। तब वे हमे दुख के कारागार मे डाल देती हैं और सभी सुयोगो से वचित कर देती हैं।

हमें जीवन में आनेवाली आपत्तियो से भयभीत नही होना चाहिए। प्रत्येक आपत्ति अभिशाप ही नही होती । जीवन मे आने वाली प्रारभिक आपत्तिया अनेक बार आशीर्वाद सिद्ध होती हैं । वे हमे शिक्षा भी देती हैं और हमारे प्रयत्नो मे हमे साहसी भी बनाती हैं । इसलिए इस मत्र मे कहा गया गया है कि हे ईश्वर ! आप हमारी और हमारी प्रजाओ की रक्षा कीजिए और अभय कीजिए जिससे निडर होकर हम सब अपने कर्मों को कर सके । परमेश्वर के निज और मुख्य नाम ओ३म् शब्द का अर्थ ही यही है। परमेश्वर क्योंकि हमारी रक्षा करता है इसलिए उसे ओ३म् कहते हैं। वह परमेश्वर निश्छल साहस पूर्ण कार्यों मे सदा हमारी रक्षा करता है। परमेश्वर सत्य साहस और निष्काम कर्म मे कैसे मनुष्य की रक्षा करता है ? एक ऐतिहासिक घटना द्वारा यह सत्य देखा जा सकता है

यूनान मे एक गुलाम खानदान मे क्रियो नामक कलाकार था । सौन्दर्य उसका इष्टदेव था । वहाँ एक कानून बना और गुलामो के लिए ललित कला का क्षेत्र अवरुद्ध कर दिया गया जिन दिनो यह कानून लागू किया गया उन दिनो क्रियो कुछ सुन्दर मूर्तियो के निर्माण मे लगा हुआ था । सगमरमर के टुकडो मे उसने अपने हृदय की अनुभूति बिठाकर उनमे आत्मा डाल दी थी। उसे कला का सर्वोत्तम पुरस्कार वहाँ के सम्राट परीक्लीज से पाने की आशा थी। पर इस कानून ने उसकी आशाओ पर तुषारापात कर दिया।

क्रियो की एक बहन था। उसने यह समाचार जानकर सच्चे हृदय से प्रभु से प्रार्थना की हे ईश्वर मेरे भाई की रक्षा करो ! तुम्हारे चरणो मे हमारा मस्तक अर्पित है । तुम्हारी कृपा ही अब हमारी रक्षा कर सकती है। तुम हमे अभय दो कि कला के विकास में हम निडर होकर सहयोग कर सकें।

वह अपने भाई को लेकर तहखाने में गई और उसे अपना काम चालू रखने की सलाह दी। उसने कहा इसमे मैं भी तुम्हारी सहायता करूगी। भगवान् हमारा साथ देंगे ।

उन्ही दिनों एथेन्स मे कला के नमूनो की प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। पेरीक्लीज उसका सभापतित्व कर रहे थे। एक स्थान पर सुन्दर मूर्तिया थी । ऐसा मालूम होता था कि जैसे ललित कलाओ के अधिष्ठाता देवता अपोलो ने स्वय उनका निर्माण किया है ।

ये मूर्तिया किसने बनाई हैं ? दर्शको ने पूछा । शान्ति रक्षक अस्त व्यस्त कपडो वाली धूल भरे बालो वाली अभयता की मूर्ति सी एक लडकी को पकड लाए । पर फिर भी लडकी नही बोली। पेरीक्लीज ने उसे कैदखाने ले जाने का आदेश दिया। इस आदेश को सुनते ही भीड को चीरता हुआ एक युवक पेरीक्लीज के पास पहुचा और बोला क्षमा करो । उस लडकी को बचा लो। अपराधी मैं हू ये मूर्तिया मेरे गुलाम हाथो ने तैयार की है।

गुलाम और कला ? जनता चिल्लाई इस जेल मे बन्द करो।

परीक्लीज ने खडे होकर कहा जब तक मैं जीवित हू ऐसा नही हो सकता । आज भी कला के इतिहास मे क्रियो का नाम अमर है यह है परमेश्वर द्वारा प्रदत्त अभय का उदाहरण । इसलिए मन्त्र कहता है कि हे ईश्वर ! तू जहा जहा विद्यमान है वहाँ वहा हमारी प्रजाओ को निर्भय कर और उनकी रक्षा कर।

भय आत्म विश्वास का शत्रु है। भय के कारण दुनिया मे बहुत से लोग अपनी योग्यता का समुचित पुरस्कार पाने से वञ्चित रहते हैं और अपने सद्गुणो से स्वय को अपने परिवार और सबधियो को तथा अपने देश को लाभ नही पहुचा सकते क्योंकि वे एक अज्ञात भय के बोझ के नीचे दबे रहते हैं।

पुरुषो की रक्षा के साथ साथ पशुओ की रक्षा की भी बात कही गई है। पशुओ को अभय कैसे प्राप्त हो सकता है ? उनको अभय मनुष्य ही दे सकते हैं। इसीलिए भारतीय सस्कृति मे कहा गया है गाय बैलो के साथ प्रेम करो उनसे पूरा काम लो मगर उनका ख्याल भी रखो। उनको समय पर पानी पिलाओ समय पर घास दो । उन्हें चाबुक मत मारो ! आर मत चुभाओ ।

महाराष्ट्र मे एक पिठोरी अमावस्या का पर्व मनाया जाता है । इस अमावस्या को बैलो को विश्राम दिया जाता है। उनका शृगार किया जाता है किसानों की स्त्रियो के पैरो के आभूषण बैल के पैरो में पहनाये जाते हैं और गले मे माला डाली जाती है । बैलो का जलूस निकाला जाता है। उनके लिए एक महाराष्ट्रीय पक्वान्न पुरणपोली का नवेद्य लगाया जाता है। घी की धार छोडी जाती है। बैलो का सत्कार किया जाता है । क्यो ? इसके पीछे बैलो और पशुओ के अभयदान की भावना रहती है। जिस बैल की गर्दन पर हमने जुआ रखा जिसकी गर्दन पर घट्टे पड गए जो धूप कीचड मे काम करते हैं जिन्होने हल चलाया चरस चलाई गाडियाँ खीची क्रोध मे आकर हमने जिन्हें चाबुक मारे आर चुभाई जिनके परिश्रम से हरे भरे होकर हमारे खेत लह लहाने लगे और अनाज से लद गए। जिनके परिश्रम से मोतियो की तरह ज्वार और सोने की तरह गहू पकते हैं जिनके परिश्रम से धान और मक्का अरहर और चना होता है उस कष्ट मूर्ति बैल को अभय की भावना से परिपूजित कर उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने को वह दिन मनाया जाता है ।

गाय को तो माता के समान पवित्र और पूज्य माना गया है । अश्व आदि की रक्षा की बात वेदो मे सर्वत्र पाई जाती है।

इस प्रकार वेद का मत्र कहता है कि प्रभु कृपा पर आश्रित रहकर मनुष्य को निर्भय बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि आप जीवन मे सफलता चाहते हैं और अपनी दबी हुई शक्ति को पुनर्जीवित करना चाहते हैं तो कठिनाइयों और विपत्तियों को भयकर समझना छोड दीजिए । उनसे बिल्कुल प्रभावित न होइए । कठिनाइयो से भयभीत न होकर उन्हें इस दृष्टि से देखना चाहिए कि उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है ? फिर पूर्ण निर्भयता के साथ उन्हें दूर करने मे लग जाइए । तभी जीवन सफल बनेगा। एक कवि ने कहा है

भय का दामन छोड दे,
भय से भय मत मान।
यह है मिथ्या कल्पना
जान सके तो जान॥

卐 वचन-सन्देश 卐

शरीर और आत्मा दोनो बलवान्

जो केवल आत्मा का बल अर्थात् विद्या ज्ञान बढाये जायें और शरीर का बल न बढ़ावें तो एक ही बलवान् सैंकडों ज्ञानी और विद्वानों को जीत सकता है। और जो केवल शरीर ही का बल बढाता जाये आत्मा का नही तो भी राज्य पालन की उत्तम व्यवस्था बिना विद्या के कभी नही हो सकता। बिना व्यवस्था के सब आपस में ही टूट-फूट विरोध लडाई-झगडा करके नष्ट-भ्रष्ट हो जाये। इसलिए सर्वदा शरीर और आत्मा के बल को बढ़ाते रहना चाहिए।

जैसा बल और बुद्धि का नाशक व्यभिचार और अति विषयासक्ति है वैसा और कोई नहीं है। विशेषत क्षत्रियो को दृढाङ्ग और बलयुक्त होना चाहिए। क्योकि जब वे ही विषयासक्त होंगे तो राज्य-धर्म ही नष्ट हो जायेगा। —महर्षि दयानन्द

सम्पादकीय—

व्योम को छूता व्यक्तित्व

कई सदियो की गुलामी के बाद जैसे ही भारतवर्ष स्वाधीन हुआ नयी उमगों, नये उत्साह, नवीन क्रान्ति की लहरों को लेकर उन्नत होता चला गया। जिस देश में स्वदेशी सुई नही बनती हो और उसी देश में स्वदेशी उपग्रह, स्वदेशी परमाणु ऊर्जा केन्द्र, बडे-बडे उद्योग कल कारखाने अनाज उत्पादन मे आत्मनिर्भरता, यातायात और परिवहन मे सलग्न, सम्पूर्ण गाडिया भारतीय हो, टैंक, तोप, रेलगाडी, वायुयान, जलयान स्वनिर्मित हो, कई बार जो भारत सीमा पर मडराते खतरो-आक्रमणों का मुंह तोड जवाब देकर समस्त विश्व को चौका चुका हो, उस युवा भारतवर्ष को जवान और सबल होते देख दूसरी ईर्ष्यालु शक्तिया क्या चुप बैठ सकेंगी ? जी नहीं। वे ईर्ष्या मे दग्ध शक्तिया भारतवर्ष के स्वप्निल महल को धराशायी करने मे जुटी थी और जुटी हैं। ३१ अक्तूबर १९८४ को देशद्रोहियों की गोलियो से भारत मां का लाडली विश्व की नेत्री प्रियदर्शिनी छलनी कर दी गयी। दिशाओं मे खून के साथ आतक फैल गया। लगा भारत के स्वप्निल महल की नीव लडखडा गयी। हर दिल चीखता-कराहता दिखाई पडा। ऐसा जान पडा जैसे भारत से उसकी गंगोत्री छीन ली गई और सारी दुनिया में कोई दूसरी गगोत्री भी नही। जो कही से लाकर स्थापित की जा सके। हताश-निराश सतप्त लोगों की आखों मे कोप की चिन्गारिया फूटने लगा। हिंसा का ज्वालामुखी फूट पडा। दिल्ली के साथ दूसरे शहरो-प्रातो मे भी हिंसक प्रतिक्रियाएं हुई जो बडी ही दुर्भाग्यपूर्ण थी। खीज और बौखलाहट भरे वातावरण में श्री राजीव गाधी भारत के प्रधानमन्त्री बने। दिल्ली मे धुंआ उठ रहा था। घर म मां की अर्थी थी, बाहर आक्रोश से भरी भीड थी। ऐसे में उन जवान कन्धो ने एक से अर्थी उठाई दूसरे से देश की जिम्मेदारी। उसका हौसला, उसकी हिम्मत कमजोर नही पडी। देश की आंखों ने अपने आसू पोछे। धीरे-धीरे देश की उखडती सासें अविरत हो गयी। एकाएक निर्वाचन की घोषणा हुई। देश की एकता और अखण्डता की अपील करते युवा प्रधानमन्त्री को भारत की जनता ने इतने बहुमत से चुना जो एक ऐतिहासिक आश्चर्य बन गया।

भारतीय राजनीति मे अनेक वर्षो के बाद बदलाव के स्पष्ट लक्षण दिखाई देने लगे। निर्वाचन के बाद सत्ता में आते ही उन्होंने घोषणा कर दी कि वे पजाब समस्या को हल करने के लिए हर सभव प्रयत्न करेंगे। दिल्ली तथा दूसरे स्थानो पर ट्राजिस्टर बम काण्ड के बाद दहशत भरे वातावरण मे प्रधानमन्त्री का पूर्व निर्धारित विदेश यात्रा का कार्यक्रम जोखिम भरा होने से आम राय थी कि उन्हें विदेश यात्रा पर नही जाना चाहिए किन्तु खतरों से खेलने वाला यह युवा विदेशों में भारतीय सस्कृति, अपनी मान्यता एव विचारों के झण्डे फहराकर आया जो अत्यन्त गरिमामय था।

ससद के मानसून सत्र के शुरू होने वाले दिन पजाब पर समझौता अचानक संत लोंगोवाल के साथ कर लिया गया जिस पर उन्हें देशव्यापी समर्थन मिला। १५ अगस्त को लालकिले के प्राचीर से भाषण देने से चार घण्टे पूर्व असम समस्या का समझौता भी कर लिया गया। उस रात प्रधानमन्त्री सोये नहीं। सुबह पौने तीन बजे ब्रह्मपुत्र की घाटी के लोगों के लिए उन्होंने नये प्रभात की तथा स्वाधीनता दिवस की अनुपम भेंट दी। १७ अगस्त को जब पजाब मे हुसैनपुर में रेलवे कोच फैक्टरी का प्रधानमन्त्री ने शिलान्यास किया तो पजाब मे चुनाव कराने की घोषणा कर दी गयी। इसके साथ चुनाव का मार्ग प्रशस्त करने में भी उन्होंने कई एक कदम उठाये। निरपराध और विभिन्न अपराधो मे पकडे गये लोगो की रिहाई भी अनायास कर दी गई और अब तक लगभग २००० लोग रिहा किये जा चुके हैं।

जिन किसानो ने बिजली के बिल अदा नही किये थे उनके कनैक्शन न काटे जाने का फैसला किया गया। महाराजा रणजीत सिंह की बरसी भी सरकारी स्तर पर मनाई गई। सैनिक भगोडो की बहाली के आदेश किये गये। लगभग ९०० ऐसे भगोडों को काम पर लगा दिया गया।

कहने का मतलब यह है कि काफी हद तक उदार होकर भी उन्होने समस्याओ को सुलझाया। प्रधानमन्त्री इसके लिए बधाई के पात्र हैं। उन्होने लालकिले के प्राचीर से राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए कहा था कि सिर्फ दस माह पूर्व विदेशो मे पूछा जा रहा था कि क्या भारत की एकता और अस्तित्व कायम रहेगा ? उन्होने कहा था—भारत को अपने ऊपर विश्वास है और हम किसी भी दबाव के सामने घुटने नही टेकने वाले है। श्री राजीव गाधी की वाणी मे नये भारत की आशाएँ, आकाक्षाएँ और आत्मविश्वास मुखरित हो रहा है। पजाब और असम की समस्याओं के हल और गुजरात में आरक्षण विरोधी आंदोलन की आग बुझाये जाने के बाद आशा और विश्वास की नई किरणे दिखाई दे रही हैं।

लेकिन इसका यह मतलब नही है कि अब देश के सामने कोई समस्या नहीं रह गई है जो लोग साम्प्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद जैसी जहरीली भावनाओं को उभार कर देश मे गडबड फैलाते रहे हैं उन्हें इस जादू के डण्डे से आकाश में विलीन नही किया जा सकता। वे आज भी मौजूद हैं। कल वो फिर सिर उठा सकते हैं। पजाब और असम विधानसभाओं के चुनाव का आयोजन और सघर्ष से क्षत आहत इन दोनों राज्यो मे यदि लोकप्रिय सरकारो की स्थापना हो गई तो यह भारतीय लोकतन्त्र की बडी भारी जीत मानी जाएगी। देश की एकता और अखण्डता को चुनौती देने वाली ताकतो के गाल पर यह एक करारा जोरदार घूसा होगा और इसकी इस समय आवश्यकता भी है। श्रीलंका मे तमिलो की समस्या भी भारत के प्रधानमन्त्री के लिए चुनौती है। हमें आशा भी है इसी सद्भाव के साथ वे इस समस्या को भी अवश्य सुलझा सकेंगे। अब तक के तथ्यों से यह प्रमाणित है हमारे युवा प्रधानमन्त्री में दूसरे को समझने की और उन्हें अपनी बात समझाने की अद्भुत क्षमता है। अनावश्यक मानापमान की भावना में विश्वास रखने की बजाय शान्ति और सौहार्द के वातावरण मे समस्याओं का समाधान निकालने मे विश्वास रखते हैं। इसके लिए उनकी जितनी भी प्रशसा की जाये थोडी है।

—यशपाल सुधांशु

देश की वर्तमान पतनोन्मुखी स्थिति में आचार पालन अत्यन्त आवश्यक

—चमनलाल

आज भौतिकता की घार विषैली सर्वव्यापी हवा ने हमारे जीवनो को इतना विषैला और विकृत कर दिया है कि प्रथम तो सम्भवत कोई भी व्यक्ति ऐसा नही दीख पडता, जो इससे प्रभावित न हुआ हो दूसरे इससे प्रभावित व्यक्ति कुछ ऐसे नास्तिक और स्वार्थान्ध हो गए हैं कि मानो जैसे उन्होने अपनी अन्यायपूर्ण स्वार्थ सिद्धि हेतु देश, राष्ट्र और समाज के बहुमूल्य हितो की होली ही कर दी हो। ऐसे ही दुराचारी, दुष्प्रवृत्तिपूर्ण पापाचारी लोग कागज के कुछ टुकडों के बदले देश और राष्ट्र के बहुमूल्य रहस्यो को विदेशियो के हाथो बेचने मे लेशमात्र भी नही लजाते । बड बडे सरकारी और गैर सरकारी अधिकारी लोग गरीबो के लिए सिर छिपाने के लिए मकान निर्माण कार्य मे लगे बिना बुनियाद अथवा कमजोर बुनियाद वाले मकान और उनके निर्माण मे निम्न श्रेणी की निर्माण सामग्री का प्रयोग करके लोगों के जान लेवा मकान बनाने से जरा भी उस नीली छत्री वाले शक्तिशाली भगवान से नही डरते।

वायुयन्त्रो मे रेलगाडियो मे, बसो मे कारो और अन्य सार्वजनिक स्थानो पर जान लेवा बम रखकर धर्म के न म पर सहस्रो बेगुनाह आबाल वृद्ध बच्चे जवान स्त्री पुरुषो की जान लेने मे जरा भी नही सकोच करते दलित, अल्पसख्यक लोगो की आर्थिक तथा सामाजिक दशा सुधारने के नाम पर उनसे निवाचन के समय मत प्राप्त करन हेतु आरक्षण की नीति का सहारा लेकर अयोग्य लोगो को पदो पर स्थापित करके न केवल योग्य व्यक्तियो का गला घोटा जा रहा है बल्कि सरकारी सेवाओ मे अयोग्य अथवा कम अयोग्य व्यक्तियो को नियुक्त करके देश और राष्ट्र का बहुत अहित कर रहे हैं और उम जाति पानि पर आधारित आरक्षण के नाम पर अयोग्यो की पदोन्नति करना और भी अन्यायपूण व्यवहार है इसी दूषित नीति के फलस्वरूप जो नरसहार आज महर्षि दयानन्द और राष्ट्र पिता महात्मा गाधी की जन्मभूमि गुजरात मे हो रहा है, वह किसी स छुपा नहीहै । इसी दूषित वातावरण से प्रभावित सभी वर्गों के लोगो न आचार के मूल्यो को अपने जीवन मे से इसे तुच्छ और सारहीन वस्तु समझकर ऐसे बाहर फैंक दिया है मानो जैसे कोई दूध मे से मक्खी निकाल कर फेक दे । देखने मे आता है कि जीवन का कोई भी तो क्षत्र ऐसा नही रहा, चाहे वह सामाजिक हो या राजनीतिक, धार्मिक हो वा अन्य कोई और जो इस दूषित वृत्ति से प्रभावित न हुआ हो। यह एक महान चिन्ता का विषय है राष्ट्र और समाज के लिए। अत ऐसी स्थिति मे सुधार लान के लिए और लोगो के विचारो मे परिवतन लाने के हतु यहा किन्ही पुरुषो शास्त्रो और स्मृतियो के आचार सम्बन्धी कुछ बहुमूल्य अमृत वचन दिये जा रहे हैं जिनको जीवन मे धारण करने से लोग न केवल अपना सुधार कर पायेंगे, अपितु वह राष्ट्र, देश और समाज के नैतिक जीवन मे सुधार लेने के भागी बनेंगे । ऐसे ही सुधार की आज अत्यन्त आवश्यकता ।

आचाराल्लभते ह्यायुरा-
चाराल्लभते श्रियम्,
आचाराल्लभते कीर्ति
पुरुष प्रेत्य चेह च।
सर्वलक्षणहीनोऽपि य
सदाचार ान् भवेत्,
श्रद्धानोऽनसूयश्च शत
वर्षाणि जीवति ॥

अर्थात् सदाचार पालन करने वाले को आयु तथा कान्ति की प्राप्ति होती है। सदाचारी इहलोक एव परलोक मे कीर्ति को प्राप्त करता है। यदि कोई विशेष गुण न भी हो परन्त् असूयारहित भगवदीय विघान पर पूर्ण श्रद्धा वाला है, सदाचारी है तो ऐसा व्यक्ति शत वष जीवी होता है।

न स्वे सुखे वै कुरुत प्रहर्ष,
नान्यस्य दु खे भवति प्रहृष्ट ।
दत्त्वा म पश्चान्न कुरुतेऽनुताप,
स कथ्यते सत्पुरुषार्यशील ॥

अर्थात जो अपने सुख मे प्रसन्न नही होता, दूसरो के दु ख के समय हर्ष नही करता तथा जो दान देकर पछताता नही, वह सत्पुरुषार्यशील अर्थात सदाचारी कहलाता है।

पाप्मान ह्येष हन्ति यो यजते।

अर्थात यज्ञ करने वाला पाप का नाश करता है।

सर्वस्मात् पाप्मनो निर्मुच्यते ।
य एव विद्वानग्निहोत्र जुहोति ॥

अर्थात अग्निहोत्र यज्ञ करने वाला व्यक्ति पापो से मुक्त हो जाता है।

आचारवान् सदा पूतो
सदैवाचारवान् सुखी ।
आचारवान् सदा धन्य
सत्य सत्य च नारद॥

अर्थात् आचारवान् मनुष्य सदा पवित्र रहता है, सुखी रहता है और धन भी प्राप्त कर लेता है और सचमुच वह जन धन्य हो जाता है।

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति ।
न चेदिहावेदीन्महती विनष्टि ॥

अर्थात् यदि इस मनुष्य जीवन में परब्रह्म को जान लिया तब तो कुशल है, किन्तु यदि इस जीवन के रहते रहते आलस्य प्रमाद के कारण उसे नही जाना तो महान विनाश है।

अमेध्यो वै पुरुषो यदनृत वदति।

अर्थात झूठ बोलने वाला व्यक्ति अपवित्र कहलाता है।

नित्य सत्य रतिर्यस्य
पुण्यात्मा सुष्ठुता व्रजेत्।
ऋतौ प्राप्ते व्रजेन्नारी
स्वीयां दोषविवर्जित ॥
स्वकुलस्य सदाचार
कदापि नो विमुञ्चति ।
एतत्ते हि समाख्यात
गृहस्थस्य द्विजोत्तम ॥
ब्रह्मचर्यं मया प्रोक्त
गृहिणां मुक्तिद किल।

(सुमना अपने पति से कहती है)— ब्राह्मण श्रेष्ठ ! सदा सत्य कर्मों मे जिसका अनुराग है, जो पुण्यात्मा होकर साधुशीलता का आश्रय लेता है, ऋतुकाल मे अपनी ही स्त्री के साथ सगत होता है, वह स्वय दोषो से दूर रहता हैं और अपने कुल के सदाचार का कभी त्याग नही करता, सचमुच वही सच्चा सदाचारी है। यही गृहस्थ का ब्रह्मचर्य है। और यही ब्रह्मचर्य गृहस्थो को सदा मुक्ति प्रदान करने वाला है।

दुराचाररतो लोके
गर्हणीय पुमान् भवेत।
व्याधिभिश्चाभि भूयते
सदाल्पायु सुदु खभाक् ॥

अर्थात सदाचार के पालन न करने से मानव निन्दगामी, रोगी दुखी और अल्पायु हो जाता है।

सदाचारेण सिद्धयेच्च
ऐहिकामुष्मिक सुखम ।

अर्थात् सदाचार से इस लोक तथा परलोक के समस्त सुख सिद्ध हो जाते हैं।

सदाचारेण देवत्वमृषित्व
च तथा लभेत्।

अर्थात् सदाचार से मनुष्य देवत्व और ब्रह्मत्व को प्राप्त करके महान् बन जाता है।

क्रोध कामो लोभमोही
असन्तोष विधिवासा,
अकृपासूये मानशोको
स्पृहा च ।
ईर्ष्या जुगुप्सा च
मनुष्य दोषा,
वर्ज्या सदा
द्वादशैते नराणाम ॥
एकैक पर्युपास्ते ह
मनुष्यान मनुजर्षभ ।
लिप्समानोऽन्तर तपा
मृगाणामिव लुब्धक ॥

अर्थात काम, क्रोध, लोभ मोह असतोष निर्दयता असूया अभिमान शोक, स्पृहा, ईर्ष्या और निन्दा ' मनुष्यो मे पाये जाने वाले ये बारह दोष सदा ही त्यागने योग्य हैं। नरश्रेष्ठ जैसे व्याध मृगो को मारने का अवसर देखता हुआ उनकी राह मे लगा रहता है उसी प्रकार इन मे से एक एक दोष मनुष्य का छिद्र देखकर उस पर आक्रमण कर देता है।

धैर्य की महिमा

जो मुसीबत मे नही घबडाते
वे सफलता के शिखर पर चढ जाते
दुष्टो का विनाश कर दम लेते
राम कृष्ण गाधी कहलाते
क्राति के बीज बोते
दयानन्द बुद्ध महावीर बन जाते
देश को महान् बनाते
विक्रमादित्य इन्दिरा सम अमर हो जाते
धैर्य से महान् कार्य होते
उससे रहित व्यक्ति बेकार होते

वे उठा रहे है कदम आत्मघाती

जो रात दिन केवल पैसा कमाते हैं
पैसे के बल पर अपनी अकड दिखाते हैं
पैसे को अपना देवता ठहराते हैं
उसके लिए पाप करने मे न सकुचाते हैं
ऐसे धनपतियों को न सच्चा सुख मिलता है
सदैव चिन्ता मे उनका शरीर घुलता है
उन्हें न कभी सच्ची नींद आती है
भोजन पचाने में मुसीबत खडी हो जाती है
जो ऐसे जीवन के हैं अभिलाषी
वे उठा रहे हैं कदम आत्मघाती

—शकुन्तचन्द गुप्त विशारद

स्वामी दयानन्द— एक संन्यासी योद्धा

लेखक—श्री मदनगोपाल

१९५० के मध्य मे जब प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम की शताब्दी मनाये जाने की योजना बन रही थी, उस समय एक वैदिक विद्वान् ने १८५७ के गदर से सम्बन्धित लेखो का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि महर्षि दयानन्द सरस्वती (१८२४-८३) ने इस १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम मे बड़ा ही सक्रिय योगदान दिया था। इन विद्वान् का नाम है—स्वामी वेदानन्द सरस्वती, जिन्होने १९५४ मे स्वामी विरजानन्द की जीवनी लिखी। इसमे उन्होने कहा है, कि १८५५ मे स्वामी पूर्णानन्द ने महर्षि दयानन्द को धार्मिक कार्यों की प्रेरणा देने के साथ साथ यह परामर्श दिया था कि वह मथुरा में प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द जी महाराज से मिलें। स्वामी दयानन्द ने मथुरा जाने के बजाय मध्य भारत मे भ्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। यह वही स्थान थे जहां पर बाद मे ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध विद्रोह हुआ। स्वामी वेदानन्द ने लिखा है कि यह विचारधारा सभवत लोगो को सही न लगे, पर इसको एकदम गलत भी नही कहा जा सकता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वतन्त्रता सग्राम मे सक्रिय भाग लिया था अथवा नही, यह आर्यसमाज के क्षेत्र मे विवाद का विषय है। इस विषय पर कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। कुछ लोग इस विचारधारा का विरोध करते हैं कि स्वामी दयानन्द ने स्वतन्त्रता सग्राम मे भाग लिया था, जब कि कुछ दूसरे इस विचारधारा का पूर्णतया समर्थन करते हैं। जो लोग यह कहते हैं कि स्वामी दयानन्द ने इस सग्राम मे भाग नही लिया था उनकी दलील यह है कि १८७० तक दयानन्द केवल धार्मिक कार्यों से सम्बन्धित रहे और उन्होने स्वय को राजनीति से दूर रखा। इस विचारधारा को इस आधार पर सही नही माना जा सकता कि उस समय स्वामी दयानन्द की आयु ३२ वर्ष थी। और यह एक ऐसी आयु है जब व्यक्ति की भावनाए और विचारधारा विद्रोहात्मक होती है। और ऐसे मामलो मे सक्रिय भाग लेने की व्यक्ति की रुचि होती है। यह बात एक और तथ्य से सिद्ध हो जाती है, कि बाद के वर्षों मे महर्षि दयानन्द ने स्वदेशी राज्य और स्वराज्य की बात को प्रचारित किया है। उन्होने नमक कर का भी विरोध किया था। उन्होने राष्ट्रीय भाषा की बात कही थी, उन्होंने स्त्री शिक्षा पर बल दिया तथा अस्पृश्यता का विरोध किया। इनसे यह स्पष्ट है कि भले ही वह धार्मिक नेता थे पर वह राजनीति से अछूते नही थे। वस्तुत वह दूरदृष्टि वाले व्यक्ति थे, उनकी विचारधारा ने बाद मे चलकर महात्मा गाधी के लिए भी दिग्निर्देशन का कार्य किया। उस समय विदेशी राज्य का विरोध हो रहा था और दयानन्द जैसा व्यक्ति इस विचारधारा से अप्रभावित नही रह सका।

महर्षि दयानन्द के प्रारम्भिक जीवन सम्बन्धी हमारा ज्ञान उनके उस भाषण पर आधारित है, जो उन्होने १८७५ मे पूना मे दिया था और बाद मे अन्य १४ भाषणों सहित मराठी में छपा था।

महर्षि दयानन्द ने अपनी जीवनी से सम्बन्धित ३ लेख हिन्दी मे लिखवाये थे। इन लेखो के लिए १८७९ मे थियोसोफिस्ट सोसायटी के अध्यक्ष कर्नल एच० एस० अलकाट ने प्रार्थना की थी। यह लेख अग्रेजी मे अनूदित किये गये और सोसायटी पत्र "थियोसोफिस्ट' के अक्तूबर १८७९ दिसम्बर १८७९ और नवम्बर १८८० मे प्रकाशित हुए थे। सम्भवत महर्षि दयानन्द अपनी जीवनी को धारावाहिक रूप से लिखते, पर इसे बन्द कर दिया गया क्योकि उनके थियोसोफिस्ट सोसायटी से बाद मे चलकर सम्बन्ध खराब हो गये थे।

यह कहा जाता है कि महर्षि दयानन्द अप्रैल १८५६ से कानपुर और इलाहाबाद के निकट क्षेत्रों मे देखे गये। वह जनवरी, फरवरी १८५७ मे इलाहाबाद मे थे और मार्च १८५७ मे गढमुक्तेश्वर मे मार्च २६, १८५७ से नवम्बर १८६० तक यह कहा जाता है कि वह नर्मदा के किनारे किनारे इसके स्रोत अमरकण्टक तक गये। १८६० मे वे स्वामी विरजानद के पास पहुंचे थे। मार्च १८५७ से नवम्बर १८६० तक के समय के लिए स्वामी दयानन्द की चुप्पी ने विद्वानो के अन्दर यह उत्सुकता जागृत की और उन्हे यह सोचने के लिए प्रेरित किया कि वे १८५७ के स्वतन्त्रता सग्राम से सम्बन्धित थे।

उन्नीस वर्ष पश्चात् स्वामी वेदानद सरस्वती ने अपनी पुस्तक का दूसरा सशोधित एव परिवर्धित सस्करण प्रकाशित कराया। इसमे उन्होने श्री मीर-मुश्ताक के फारसी मे लिखे हुए सर्वखाप पचायत के निर्णयो को परिशिष्ट के रूप मे दिया। इसमे उन्होने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि स्वामी जी स्वतन्त्रता सग्राम मे सक्रिय रूप से भाग ले रहे थे। सर्वखाप पचायत का मुख्य कार्यालय सौरम मुजफ्फरनगर मे था। इस पचायत मे मथुरा से प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानद को भी बुलाया गया था। उन्होने चुने हुए लोगो की इस बैठक मे राष्ट्रीय स्वतन्त्रता कैसे प्राप्त करें, इस विषय पर परामर्श दिया था। लगभग इसी समय सत्यप्रिय शास्त्री की "भारतीय स्वतन्त्रता के सग्राम मे आर्यसमाज का योगदान' प्रकाशित हुई थी। इसम भी उन्होने दयानन्द के योगदान की बात लिखी है। श्री पिण्डी दास ज्ञानी ने भी "१८५७ के स्वतन्त्रता सग्राम मे स्वराज्य प्रवर्तक महर्षि दयानन्द का क्रियात्मक योगदान" प्रकाशित कराया।

१९७० मे पण्डित दीनबन्धु का "योगी का आत्मचरित्र"—३८ वर्षों का अज्ञात जीवन प्रकाशित हुआ। इसमे यह दावा किया गया है कि महर्षि दयानन्द ने १८५७ के युद्ध मे भाग लिया था, यह महर्षि दयानन्द के उन आत्मचरितात्मक टिप्पणियो पर आधारित है जो उन्होने अपने दर्जनो प्रशसकों को बगाल प्रवास के समय लिखाई थी। उन्होने यह भी कहा था कि यह सब उनके जीवनकाल मे प्रकाशित नही होना चाहिए। यह टिप्पणिया बगाली भाषा मे लिखी हुई थी और श्री दीनबन्धु ने यह दावा किया है कि उन्होने इन सब टिप्पणियो को खोज निकाला है।

इस विवरण के अनुसार १८५५ मे दयानन्द ने माउण्ट आबू से हरिद्वार के लिए अपनी यात्रा प्रारम्भ की। वे अजमेर, जयपुर, दिल्ली, मेरठ होते हुए गए। वह जहा भी कही ठहरे बाजार मे, धर्मशाला मे, स्नान घाट पर अथवा मदिर मे उन्होने सब जगह यही पाया कि लोग यह कह रहे थे कि अग्रेज भारतवर्ष को राहु और केतु की तरह ग्रस रहे हैं। दिल्ली मे एक युवा ने साधुओ पर कटाक्ष करते हुए कहा कि यह लोग भारत की दशा को देखते हुए भी केवल अच्छे भोजन और अच्छे रहन-सहन में ही रुचि रखते हैं। दयानन्द को बाद मे पता लगा कि वह युवा व्यक्ति हाथरस के जिमीदार दयाराम का पौत्र था, जो अग्रेजो के विरुद्ध लड़ाई मे मारा गया था और जो क्रान्तिकारी राजा महेन्द्र सिंह का पूर्वज था। दिल्ली मे लालकिला के सामने एक महाराष्ट्रियन साधु ने दयानन्द को सलाह दी कि वह हरिद्वार मे जाकर अपने आपको पवित्र करे तथा देश की रक्षा के लिए कार्य करे। उस साधु ने बताया कि वह भी उन सैकडो साधुओं मे से एक है जो इसी उद्देश्य को लेकर सारे देश मे घूम रहे है। बाद मे २५० साधु दिल्ली से मेरठ, बैरकपुर और वैलूर की ओर गये। इन सब गतिविधियो के लिए केन्द्रीय व्यक्ति दिल्ली के जोगमाया मदिर का एक पुजारी त्रिशूल बाबा था। यह साधु अपने हाथ मे कमल का प्रतीक लेकर चल रहे थे और साधारण लोगो के बीच मे रोटिया लेकर चलते थे। इस विद्रोह के लिए मई ३१ निश्चित की गयी थी पर दुर्भाग्यवश मगलपाण्डे ने समय से पूर्व २१ मार्च को अपनी कार्यवाहिया प्रारम्भ कर दी थी।

उपर्युक्त टिप्पणियो से यह भी पता लगता है कि वैष्णव लोगो ने इस कार्य मे साधुओ के सहयोग का विरोध किया था। उनका कहना था कि मन्दिर देवताओ के स्थान है। यहां पर केवल देवताओ की पूजा होनी चाहिए। किसी देश समाज अथवा राष्ट्र की नही।

पुन हरिद्वार मे दयानन्द ऐसे लोगो के सम्पर्क मे आये जिन्होने १८५७ के सग्राम मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बाद मे हार के पश्चात् कुछ नेताओ ने नेपाल मे शरण लेने का प्रयास किया था, जहां उनको शरण नही मिल सकी थी। दयानन्द धनुष कोटि, कन्याकुमारी और रामेश्वर भी गये। जहा वह साधुओ के एक ऐसे वर्ग से मिले, जिनका कहना था कि वह दिल्ली के जोगमाया मदिर से आये है। दयानन्द ने उनमे से एक को पहचान भी लिया था। यह नाना साहब थे। दयानन्द के कहने पर उसने सन्यास लिया और स्वामी दिव्यानद बनकर दयानन्द के राज्य मोरवी मे गये जहा पर वह मृत्युपर्यन्त एक धनी व्यक्ति के साथ वेश बदलकर रहे। उनकी स्मृति मे एक बहुत बडा स्मारक बनाया गया जिसके लिए बिठूर के मन्दिर से धन प्राप्त हुआ था।

दीनबन्धु का कहना है कि बगाली भाषा मे प्राप्त टिप्पणियो को पहले प्रकाशित नही किया जा सकता था और उन्हे १८८३ मे दयानन्द की मृत्यु के पश्चात् भी इनको प्रकाशित नही किया जा सका क्योकि सभी लेखक ब्रह्मसमाजी थे और वह सभी दयानन्द से द्वेष रखते थे। यह बात उल्लेखनीय है कि दयानन्द को ब्रह्म-

(शेष पृष्ठ ९ पर)

उपनिषत् कथा माला—१५

दुःख और सुख

लेखक—स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

एक श्लोक यह है—

निर्मानमोहा जितसगदोषा
अध्यात्मनित्या निवृत्तकामा ।
द्वन्द्वैर्विमुक्ता सुखदु खसज्ञै-
र्गच्छन्त्यमूढा पदमव्यय तत ॥

ससार मे दु ख के कारण हैं मान और मोह। इस मान और मोह से जो दूर ह वह है निमानमोहा। निगतौ मान मोहौ येपा ते निर्मानमोहा। मोह क्या है और मान क्या है? ससार की वस्तुओ मे दिल की अज्ञानपूवक फँसावट का नाम है मोह। मोह दु ख का कारण है पर जिस मनुष्य के दिल की फँसावट ससार की किसी वस्तु मे ज्ञानपूवक है उसका नाम प्रम है। यह (प्रम) सुख का कारण है।

दो लडके थे। उनका आपस में प्रेम हो गया। व कालेज मे पढते थे। एक अक्लम द था तो दूसरा भी चतुर लेकिन थोडा उद्दिमल था। वह सोडावाटर पीता था [illegible] प्यास हो या न हो। एक दिन उसने अपने दूसरे मित्र से बफ का पानी पीने का आग्रह किया। उसने कहा अब प्यास लगगी तब पानी पीवगे। कोई आदमी [illegible] मे से आ या हो और घबराया हुआ हो उसको उस वक्त ठण्डा पानी पीने पर जो आ [illegible] आता है व [illegible] नन्द बगैर प्यास क [illegible] न वा [illegible] आता। मैं अपनी [illegible] कि जब मै गाडी से चल [illegible] था [illegible] प्यास लगी। [illegible] नहा मिला त [illegible] मरा प्यास [illegible] रही। मैं कम डल [illegible] बाहिर निकाले था जैपुर मे एक आदमी ने कह क्या आपको पान च हुए [illegible] मने कहा हा भाई' वह ठण्डा पाना ले आया मैं उसकी तारीफ [illegible] ने [illegible]। [illegible] वासियो की आदत [illegible] हो गई कि [illegible] प्यास क बिना ही [illegible] और बरफ का व्यवहार करने लगे ह। मेहनत करने क पीछ आराम कितना अच्छा सुख का देने वाला है यह हमे तब मालूम होगा जब हम मेहनत कर। इसी प्रकार खूब प्यास लगने पर ही ठण्डे पानी का आनन्द आ सकता है।

सुकरात जैसे आदमी भी दुनिया मे हुए हैं। उनसे कभी किसी ने पूछा कि क्या आप कभी ठण्डा पानो पीत है? उस ने कहा जिस समय मुझे प्यास अच्छी लग जाती है उस समय पानी पीता हू। किसी ने कहा कि हम तुम्हारे खाने मे कभी चटनी नहीं देखते हैं। उसने कहा, जब खुब भूख लगती है उसी समय मैं खाता हू चाहे वह दाल हो या चटनी हो या और कोई खाने की चीज हो। जब भूख या प्यास नहीं लगती है तब न तो कुछ खाता हूँ और न पीता हू।

प्राचीन आर्यों ने भोजन को तीन भागो मे बांटा है (१ हित (२) मित (३) ऋत। हमे भोजन कैसा करना चाहिए? हित अर्थात् हितकारी ऐसा भोजन जो शरीर को फायदा पहुँचावे और दूसरा मित अर्थात परिमित भोजन करे भूख से ज्यादा नहीं खावे और तीसरा ऋत यानी समयानुकूल भोजन करे। यह तो हुई प्राचीन आर्यों की बात। आजकल तो ऐसा है कि ब्राह्मण लोग जब किसी दावत और भोज मे सम्मिलित होते हैं तो पहले भाग पी लेते हैं ताकि तीन चार लड्डू ज्यादा खावें। खाने के वक्त तो वे ज्यादा खा जाते हैं पर पीछे तक लीफ उठाते हैं। इस वास्ते वह लडका जो सोडावाटर पीता था रोज सिनेमा भी देखता था। पर दूसरा जो न तो सोडा वाटर या सिगरेट ही पीता था न सिनेमा का ही शौकीन था उससे उसके मित्र ने पूछा मित्र कभी सिनेमा मे भी नहीं जाते और न सोडावाटर ही पीते हो? उसने कहा ठीक है कोई बात नहा। मैं कभी-कभी जब जरूरत होती है तब सोडावाटर भी पी लेता ह और सिनेमा भी देख लेता ह पर तुम्हारी तरह हमेशा नहीं। तुम्हारी तो आदत ही ऐसी हो गई है। अच्छा तुम मुझे सिनेमा म आज क्यो ल जाते हो? उसन उत्तर दिया तुम हमारे मित्र हो सिनेमा मे जाओगे तो हम तुम बराबर हो जावेंगे। उसने कहा कि यदि तुम नहीं ले जाओगे तो भी तो हम तुम दोनो बराबर ही रहेगे। आखिर वही हुआ वह सिनेमा नहीं गया। बहुत से निकम्मे लडको को बहुत से बुद्धिमान लडके अपनी बुद्धिमानी से प्रभावित करके अपनी तरफ आकर्षित कर लेते हैं। इसी प्रकार एक और उदाहरण लीजिये—

एक आदमी था पहले के लोग अगूठी पहना करते थे पर आजकल के लोग नहीं पहिनते उस आदमी के एक कोई मित्र था। उस आदमी ने अपने मित्र से कहा तुम हमारे मित्र हो, इस समय मुझे एक अगूठी की जरूरत है। तुम हमे दो। हम तुमको याद करेंगे।' उसने कहा क्या याद करोगे? उसने उत्तर दिया याद करेंगे कि देखो हमारे एक मित्र थे, उनसे हमने तीन-चार दिन के लिए एक अगूठी मागी थी सो उन्होंने दी। उसने उत्तर दिया, मैं तो तुम्हें अगूठी नहीं दूंगा तब भी याद रह जाऊँगा कि मेरे मांगने पर भी मित्र ने मुझे अगूठी नहीं दी। इस वास्ते मोह जो है यह दु ख का कारण है। मनुष्य का प्रेम ज्ञान-पूर्वक होना चाहिए। अज्ञान पूर्वक दिल की लगन का नाम मोह या ज्ञान पूवक दिल की लगन का नाम प्रेम है। यह हुई द्वन्द्व की चर्चा।

मान क्या है? अन्त करण की प्रवृत्ति को मान कहते हैं अर्थात आन्तरिक दिल की फसावट जो होती है उसका नाम मान है और मान और मोह जो हैं ये दोनों ही दु ख के कारण हैं। इन दोनो से मुक्त होने पर ही हम निर्मानमोहा हो सकते हैं।

अब आगे है जितसगदोषा जिसने सगदोष को जीत लिया है। सग दोष बहुत बुरी चीज है। इसको आप भी स्वीकार करेंगे इससे बहुत से दूसरे अवगुण पैदा हो जाते हैं। जैसे गीता मे कहा है—

सगात्सजायते काम
कामात्क्रोधोऽभिजायते।
क्रोधाद्भवति सम्मोह
सम्मोहात्स्मृतिविभ्रम ॥

जैसे सग मे बैठ जाओगे वैसे ही विचार हो जावेंग। सोहबत का असर अवश्य हो जावेगा। लेकिन इस सग का असर किस पर होग जो मान और मोह को जीत कर निर्मानमोहा हो गये हैं उन पर इस सगदोष का असर नहीं होता। वे जितसगदोषा कहलाते हैं। पद्मपत्रमिवा म्भसा' कमल के पत्र की तरह जो जल के बीच मे रहता है और जल ही मे वृद्धि को प्राप्त होता है। परन्तु वह उसके दोष से वचित रहता है क्योकि उसमें सगदोष नहीं है पानी की बूद अगर उसके ऊपर पड जावे तो भी वह पत्ता गीला नहीं होता है वह बूद मोती की तरह गोल बन कर पत्तें पर इधर उधर हिलती रहती है, पर उसके ऊपर कोई असर नहीं होता परन्तु यदि किसी पीपल या बड के वृक्ष के पत्तें पर पानी की बूद गिर जावे तो वह पत्ता गीला हो जाता है। ये दोष "निर्मानमोहा में नहीं हो सकते।

अब अध्यात्मनित्याविनिवृत्तकामा

आत्मचिन्तन में आत्मविचार मे आप कहें कि किस तरह से रहा जाता है। देखो—

जिसके लिए यह सब चीज हैं, वह कैसा है। अगर इसका पता लग जावे तो फिर किसी को कोई दु ख न रहे।

एक वक्त का जिक्र है कि पजाब के एक गांव में एक आदमी मिट्टी (चीनी की मिट्टी) खोदने गया। पहला फावडा मार कर कुछ मिट्टी उसने अपनी टोकरी मे डाली। दूसरा फावडा मारा तो वह एक पात्र पर गिर पडा। वह पात्र तांबे का था। उस पात्र मे जब उसने देखा तो उसे बहुत सी अशर्फियां व रुपये दिखाई दिये। वे करीबन ४५ हजार की चीजें थी जो कि एक छोटे से पात्र मे रखी थी। जिस समय उसने फावडा मारा था तो वह अगूठे पर भी लगा था जिससे उसका अगूठा कट गया था पर उसने उस वक्त खुशी के मारे उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया। वह उस पात्र को मिट्टी मे छिपा कर घर ले गया और अपनी स्त्री से कहा कि इसको सम्भाल कर रख। फिर जब वह अपने इस काम से निवृत्त हुआ तो उस अगूठे के कटने के दु ख से बहुत व्याकुल हो गया लेकिन पहले कुछ भी दर्द मालूम नहीं हुआ। सामने पैसा आ गया था, जिसकी खुशी से उसका दु ख दब गया था। वह तो पैसे की खुशी थी, पर जिस को आत्मा का पता लग जावे तो उस खुशी को वही जान सकता है दूसरा नहीं। तो अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामा' इस का अथ अध्यात्मचिन्तन मे मस्त रहना, यह अवस्था जिसकी हो जाती है उसकी सब कामनाएँ दूर हो जाती हैं।

इच्छा द्विविधा इच्छा दो प्रकार की है। एक स्वार्थ इच्छा और दूसरी परार्थ इच्छा। जैसे यह उसको दो, यह मेरे को दो। अगर उसकी चेष्टा अपने निज के लिए है तो वह स्वार्थ इच्छा कहलाती है। अगर उसकी चेष्टा अपने निज के लिये नहीं तो वह परमार्थ इच्छा कहलाती है।

आगे द्वन्द्वैर्विमुक्ता' द्वन्द्व अर्थात् दु ख और सुख उससे मुक्त हो गये। जीवन्मुक्त दशा के बीच मे यह शरीर ही आगे नहीं मिलता है। शरीर के साथ ही सुख और दु ख दोनों हैं। जीवन्मुक्त को न मान की इच्छा है, न लोभ की और न लालच की। यदि उसके जीवन में शक्ति है तो वह लोकोपकारार्थ अर्थात् दूसरों की

(शेष पृष्ठ ७ पर)

भारत की शिक्षा-प्रणाली दोषपूर्ण है ।

भाग-१

ओमप्रकाश त्यागी
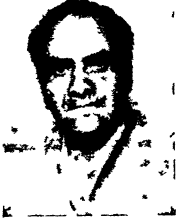
देश का विभाजन धार्मिक आधार पर हुआ । मुसलमानों ने अपने वर्ग को भारत में अलग वर्ग माना और उन्होंने अपने लिए अलग स्थान की माग की। कांग्रेस पार्टी ने मुसलमानो को अलग वर्ग नही माना, परन्तु बाद मे भारत मे दो वर्ग स्वीकार किये गए उसी आधार पर देश का विभाजन हुआ। समूचे भारत मे वहा मुसलमानो के ६० प्रतिशत या इससे अधिक लोगो ने अलग प्रान्त की मांग की उसे ब्रिटिश सरकार ने स्वीकार किया।

भारत-विभाजन के पश्चात् मुस्लिम लीग के प्रेसीडेन्ट मि० जिन्ना ने पूज्य महात्मा जी को कहा कि दो देशो के हिन्दू और मुसलमानो को आराम से इधर से उधर जाने की बात मान ली जाय। परन्तु महात्मा गाधी जी ने इसकी बात नहीं मानी । श्री जिन्ना जो बात चाहते थे वही हुआ परन्तु बड़ी मारकाट के बाद हुआ लाखो व्यक्ति दोनो तरफ मारे गये । बहिनो का अपमान हुआ और अरबो की सम्पत्ति लूट ली गयी।

भारत विभाजन के पश्चात् मुसलमानो ने अपने देश (पाकिस्तान) को इस्लामिक देश बना दिया और हिन्दुओ के अधिकारो को समाप्त कर दिया। भारत भी अपने देश को हिन्दू राष्ट्र घोषित कर सकता था, परन्तु दुर्भाग्यवश इसने ऐसा नही किया। इसके नेताओं ने अपने देश को 'सेक्यूलर' घोषित किया और यहा के सभी निवासियो को सभी क्षेत्रो मे अधिकार और पूजा की छूट दी।

भारत का सैक्यूलर होना लोगो को अच्छा लगा। भारत के सभी लोगो के अधिकार व कर्तव्य एक होंगे। इसका किसी ने भी विरोध नही किया। सभी के लिए एक समान कानून बनाये जायेंगे। परन्तु जनता को उस दिन अजीब सा लगा कि जब सरकार ने केरल आदि देश में मुस्लिम लीग पर प्रतिबन्ध न लगाकर उसके साथ मिलकर वहा सरकार बनाई। यह समस्या लोगो के मस्तिष्क मे नही आई ।

भारत ने सैक्यूलर वाद के विरुद्ध देश मे हिन्दुओ के लिए अनेको कानून "हिन्दू कोड बिल बनाये" तब जनता सतर्क हो गई और उसको यह लगा कि सैक्यूलर नाम दिखाने के लिए है। परन्तु कांग्रेस सरकार की नीति पुरानी ही है। जनता ने जगह जगह मीटिंग की, और सरकार का ध्यान आकर्षित किया कि उसे देश के लिए एक कानून बनाना चाहिए दो नही। परन्तु श्री जवाहरलाल जी ने अपने मन की बात की और कानून बनाते चले गये। अब कानून मुसलमान और काश्मीर को देखकर बनते है।

देश को सब से बड़ा आश्चर्य उस दिन हुआ जब कि देश मे शिक्षा प्रणाली चालू हुई। चाहिए तो यह था कि लार्ड मैकाले की पढाई समाप्त कर भारत की शिक्षा पद्धति चालू की जाय परन्तु शोक कि लार्ड मैकाले को स्वीकार किया और कानून बनते गये।

कानून का सबसे बड़ा दोष उस दिन हुआ जब कि भारत में अल्पसख्यक और बहुसख्यक वर्ग मानकर दो कानून बनाये गये। अल्पसख्यक वर्ग मे मुसलमान और ईसाई थे और देश की ८० प्रतिशत आर्य (हिन्दू) जनता बहुसख्यक वर्ग मे गयी। सरकार ने अल्पसख्यको को अपने स्कूलो को चलाने, शिक्षक नियुक्त करने या निकालने, शिक्षा मे धार्मिक शिक्षा देने की छूट दी और बहुसख्यक वर्ग को यह अधिकार नही दिया गया।

कानून का दुष्परिणाम यह हुआ कि बहुसख्यक वर्ग हिन्दू शिक्षा का दृष्टि से भले आगे हो परन्तु उसके विद्यार्थी सदाचार भारतीय सस्कृति तथा देशभक्ति से शून्य हो गए। जब कि अल्पसख्यक वर्ग के स्कूलो मे घोर साम्प्रदायिक बच्चे बनने लगे हैं।

भारत मे आर्यसमाज शिक्षा के क्षेत्र मे बहुत आगे है। परन्तु बहुसख्यक वर्ग मे यह भी आ गया। सरकार की नीति का ध्यान कर आर्यसमाज के अनेको लोगो ने अपने को अल्पसख्यक वर्ग बनाने का प्रयत्न किया, परन्तु सार्वदेशिक सभा ने उनकी इस नीति को न माना। परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाज को आगने वालों का स्थान आर्य स्कूलो मे नही रहा, उनके अलावा वहा और लोग आ गये। कहने का तात्पर्य यह हुआ कि आर्यसमाज का प्रयास बेकार सिद्ध हुआ।

सैक्यूलर स्टेट होने के नाते सरकार को एक ही कानून बनाना चाहिए था। शिक्षा के लिए अल्पसख्यक वर्ग और बहुसख्यक वर्ग क्या सैक्यूलर की देन है। समस्त रूस तथा अमरीका में एक ही कानून है परन्तु अपने देश को सैक्यूलर घोषित करने वाले स्वय आचरण मे साम्प्रदायिक हैं। जब सरकार ही अपने आचरण मे साम्प्रदायिक है तो फिर देश के विद्यार्थी उसकी बात क्यो माने। नवयुवको मे ही साम्प्रदायिकता हिंसा, अलगाववाद के बारे हैं। फिर सरकार इनसे कैसे पीछा छुडायेगी। जो हमने कार्य किया है उसका परिणाम हमे भुगतना ही पड़ेगा।

जब ८० प्रतिशत जनता के बच्चे अपने मनमाने ढग से पढ रहे हैं और अल्पसख्यक वर्ग के बच्चे घोर साम्प्रदायिक बन रहे हैं तब सरकार स्वय सोचे कि वह देश मे एकता और सुरक्षा कैसे लायेगी उसकी नीतियो का कोई अर्थ नही है। सरकार को यह बात समझ लेनी चाहिए कि उसकी भूल के कारण भारत के प्रत्येक प्रान्त मे अशान्ति है।

भारत की शिक्षा दोषपूर्ण है। इसे सैक्यूलर के अनुकूल होना चाहिए। ऐसे होने पर ही देश एकता सुरक्षा तथा सरकार की नीति का पालन करेगा अन्यथा कुछ नही होगा। सरकार की उक्त दोषपूर्ण नीति का कुपरिणाम यह हुआ कि—

१ देश की ८० प्रतिशत जनता के बच्चे ऊट पटाग बन रहे हैं।

२ मुसलमान ईसाई के बच्चे घोर साम्प्रदायिक बन रहे हैं।

३ प्रधानमत्री की घोषणा देश की एकता व सुरक्षा कैसे चलेगी।

४ समूचा देश अलगाव के चक्कर में है और नवयुवक ही हिंसक बन रहे हैं।

दु:ख और सुख

(पृष्ठ ६ का शेष)

भलाई के लिए कार्य करता है उसके लिए तो कोई दूसरा काम ही नही। बड़े आदमियो का ऐसा ही स्वभाव होता है।

महात्मा गाधी आ रहे थे। किसी ने कह दिया अरे! इस बोरे को उठा कर इधर रखना। इस जगह यदि कोई दूसरा आदमी होता तो कहता कि क्या मैं तेरे बाप का नौकर हू जो उठा कर रखू। आप भी यही जवाब देते परन्तु महात्मा जी ने उसे उठा कर ठीक जगह पर रख दिया। जब वे उठा कर चल दिए तो लोगो को मालूम हुआ कि ये तो महात्मा गाधी है। तब तो उसको बड़ा पश्चात्ताप हुआ। महात्मा जी ने कहा, इस मे पश्चात्ताप करने की तो कोई बात नही है। तुम मे इस वजन को उठाने की शक्ति नही मैंने इसको उठा कर रख दिया तो इस प्रकार एक दूसरे को मदद देना आदमी का कर्तव्य है। यह जो काम महात्मा जी ने किया पैसो के लिए नही किया। इस प्रकार अपने को भी किसी की मदद के लिए कुछ उठा न रखना चाहिए। विनिवृत्तकाम दूसरो के हित के लिए है, अपने निज के लिए नही। महर्षि दयानन्द को कौनसा सुख हुआ ? कुछ नही। फिर अपने सारे ससार के सुखों को छोड कर जवानी की हालत मे सारे काम को छोड कर क्यो धर्म प्रचार किया ' उनकी निजी कोई कामना नही थी। यदि कोई कामना है तो ससार के कल्याण और भलाई की। वे चाहते थे कि ससार सुखमय हो जावे। कहा गया है कि "द्वन्द्वैर्विमुक्ता सुखदु:खसज्ञै" का।

कागज को आप जला दो। बस जावगा और फिर उसके आप अक्षर भी पढ लीजिए। आप उनको पढ सकते हैं। लेकिन इस कागज की पुडिया भी आप बाध सकते है ? नही जरा हवा की लहर आई कि वह उड जाएगा इसी तरह यदि रस्सी को जला दो तो उसकी बल जावेगी, जल जाने पर भी उसके बट वैसे ही नजर आवेंगे। पर उससे किसी चीज को नही बाध सकते।

इसलिए सुख और दु:ख से अलग हो गये। शरीर पर कुछ उसका असर नजर आता है। वह भी होगा कोई परवाह नही। यह भी प्रारब्ध की वस्तु है। पर अन्त मे—

गच्छन्त्यमूढा पदमव्यय तत् ।

अमूढा = मोह रहित। जो मोह से रहित हो गये और जिन्होने निज स्वरूप को जाना व 'गच्छन्ति अमूढा पदम् अव्यय तत्' उस पद का जो 'अव्यय' है प्राप्त हो जाते हैं।

दोनो ही मार्ग अच्छे हैं कोई किसी मार्ग से जाता है, कोई किसी मार्ग से जाता है। उसके विषय मे—

कर्मज बुद्धियुक्ता हि
फल त्यक्त्वा मनीषिण ।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ता
पद गच्छन्त्यनामयम् ॥

निर्मानमोहा जितसगदोषा,
अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामा ।
द्वन्द्वैर्विमुक्ता सुखदु:खसज्ञै-
र्गच्छन्त्यमूढा पदमव्यय तत् ॥

सम्पादक के नाम पत्र

"मुस्लिम पर्सनल लॉ : विरोध क्यों"

भारतवष के सर्वोच्च न्यायालय ने जब से तलाक दी गई मुस्लिम महिल भ्रो के भ्रधिकारो के सम्बन्ध मे निणय दिया हे तब से इस देश के कट्टर मुस्लिमो द्वारा घम के नाम पर उसका प्रतिवाद कर कानून मे परिवर्तन की माग की जा रही है। उन्हाने पिछ्ल ईद पत्र को शरीयत बचाओ दिवस के रूप मे विरोध स्वरूप मनाया। कई स्थाना पर इसके विरुद्ध मुस्लिम जनमत का एकत्रित कर महिला-भ्रो क समानता के भ्रधिकारो को छीनने का प्रयास किया जा। है इस तरह उनका यह प्रयास रुढिवादिता अन्धविश्वास एव धर्मान्धता द्योतक है।

वास्तव मे इस्लाम ने नारी को दासता का प्रतीक बताया है, जिसका स्पष्ट उल्लेख नवाब छतारी के पौत्र डा० आनन्द सुमन (पूर्व डा० रफत अखलाक) ने वैदिक घम मे दीक्षित होने के पश्चात् "मैंने इस्लाम क्यो छोडा तथा इस्लाम मे नारी मैं इस प्रकार किया है ---

"रजस्वला (मासिक धर्म मे स्त्री) को कह दो अपवित्र हैं पृथक् रखो। ऋतु समय मे उसके पास मत जाओ, जब तक कि वह प[illegible] न हो [illegible]ए। तुम्हारी बीबिया तुम्हार लिए खेतिया हैं। बस जाओ जिस तरह चाहो [illegible] न खेन [illegible] तुम को अल्लाह लगव (व्यथ) शपथ मे नही पकडता। सिपारा २ सूरत २ आयत २२२, २२३ व २२४।

इस प्रकार यद्यपि रजस्वला काल मे स्त्री स्पश वर्जित हे तथापि औरत को खेती समझकर इच्छानुसार प्रयोग करना स्पष्टत मात्र काम वासना पूर्ति की प्रवृत्ति का द्योतक है।

पुन कुरआन मे औरत को जो दर्जा दिया गया है वह आयत १८७ सूरत २ सिपारा २ मे इस प्रकार है— जरारोजे (उपवस) की रात तुम्हारे लिए हलाल की गई। मदन्नोन्सव करना अपनी पत्नियो से।

इतना हीं नही औरत के साथ निम्न प्रकार के व्यवहार का भी आदेश इस्लाम ने दिया है

"तुम रहो सिर्फ घर मे,
बाहर न निकलो घर से'

कुरआन— २२ ३६ ३८

उपर्युक्त उदाहरण ही स्त्री जाति के स्थान का पर्याप्त विवरण प्रदर्शित करता है। स्त्री— माता, बहन, पत्नी, पुत्री सब कुछ है। प्राचीन काल मे हमारे देश मे गार्गी, मैत्रेयी विद्योत्तमा, सीता सावित्री दमयन्ती आदि नारिया हुई हैं। वह हमारे लिए आदर्श हैं। इसीलिए मनुस्मृति मे कहा गया कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। परन्तु इस्लाम ने नारी का जो स्वरूप प्रस्तुत किया है उसके कारण आज मुस्लिम महिलाओ मे जागृति आई है तथा सर्वोच्च न्यायालय के निणय न उसमे द्विगुणित उत्साह का सचार किया है।

हमारे मुस्लिम बधुओ को इस सच्चाई से इन्कार नही करना चाहिए और वतमान वैज्ञानिक युग मे सामाजिक, व आर्थिक स्थिति क परिप्रेक्ष्य मे अपने दृष्टिकोण तथा व्यवहार मे परिवर्तन करना चाहिए। यदि सर्वोच्च न्यायालय का निणय धार्मिक हस्तक्षेप के रूप मे माना जाता है तो मुस्लिम कानून की दड सहिता को भी सारे मुस्लिम बधुओ को स्वीकार करना चाहिए।

भारत सरकार को भी इस दृष्टि से विचार कर ऐसे कानून का प्रावधान करना चाहिए कि भारतवर्ष मे रहने वाला प्रत्येक नागरिक भारतीय है और उसके ऊपर एक समान कानून लागू होना चाहिए। हमारा देश धर्म निरपेक्ष राज्य है, परन्तु इसका यह अर्थ नही कि सभी धम के व्यक्ति स्वतत्र रूप से अपन सुविधाजनक कानून का निर्माण एव पालन करें। प्रत्यक धर्म का उद्देश्य मानवीय कल्याण है। अत यदि मानवता की रक्षा, विश्व-बन्धुत्व, शाति एव मैत्री के लिए कोई नियम बनता वह वरणीय होता है न कि उच्च-नीच लडाई झगडा आदि का भेद-भाव कराने वाल धार्मिक पाखड व अन्ध-विश्वास का माना जाय।

जस्टिस एम० एच० बेग ने सर्वोच्च न्यायालय के शाह बानो के केस मे स्पष्ट मत व्यक्त किया है कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले के विरुद्ध आन्दोलन पूर्णत अनुचित व गुमराह करने वाला है। यह निश्चित रूप से हमारे सविधान की सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक न्याय कायम करने की सवैधानिक योजना मे फिट नही बैठता। सच्चा आक्रोश ऐसी बातो पर नही बल्कि पाखड, अज्ञानता व मूर्खताओं के विरोध मे केन्द्रित होना चाहिए।

आशा है न्यायपालिका की गरिमा व नारी-सम्मान की भावना को दृष्टि मे रखकर हमारे देश के नागरिक विचार करेगे तथा भारत सरकार भी सारे देश मे समस्त भारतीय नागरिको हेतु एक-समान सहिता का निर्माण करेगी।

भवदीय
(सुरेशचन्द्र "शास्त्री")
५८७, मुठ्ठीगज, इलाहाबाद

भारत में मुसलमानों की संख्या कैसे बढ़ी

श्रीमान जी,

भारत मे मुसलमानो की सख्या जोर जुल्म से जबरदस्ती करने से बढी वरना जब कासिम ने सिन्ध पर हमला किया। उस समय उसके साथ ४००० मुसलमान थे। लेकिन आज कम ज्यादा करके मुसलमानो की सख्या १२ करोड के लगभग है। अब कोई पूछे कि मुसलमानो की सख्या कैसे बढ़ी।

१ यह कि कासिम, गौरी, कुतुबुद्दीन एबक, अल्तमश, अलाउद्दीन खिलजी, लोधी, आदि ने जब भी मौका मिला हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया।

२ यह कि उन्होने हथियार लेकर लोगो को डरा धमकाकर जबरदस्ती मुसलमान बनाया जो कि तलवार के जोर से मुसलमान बने।

३ कई बादशाहो ने एक सरकुलर निकाला, या तो नौकरी मे लगे हिन्दू मुसलमान बन जाए। वरना उन्हें कत्ल कर दिया जायेगा।

४ बहुत से बादशाह खाना तब खाते थे जब किसी विशेष सख्या मे हिन्दुओ को मुसलमान बना लेते थे। इस प्रकार से बाबर, हुँमायूँ, अकबर, जहागीर और शाहजाँह आदि ने भारत मे गऊ हत्या बद की। परन्तु औरगजेब के समय गऊ हत्या व जजिया दोबारा लगा दिये गए।

५ हिन्दू बच्चो, औरतो व लोगो को पकडकर अपने देश मे ले गये जहा पर उनका मूल्य टका लगाया गया। इस प्रकार से हिन्दुओ की आबादी कम से कम होती गई और ज्यादा आबादी मुसलमानो की होती गई।

६ यह कोई मिशाल नही कि, कोई हिन्दू तर्क वितर्क करके मुसलमान बना हो। इसलिए एक पाकिस्तान बनने के बाद हिन्दुओ को डर है कि मुसलमानो के लिए दूसरा पाकिस्तान न बन जाए। क्योंकि अरब देशो स अन्धा धुन्ध पैसा आ रहा है। जिसके लालच मे आकर हिन्दू मुसलमान बन रहे हैं। इसके अलावा हिन्दुओ पर परिवार नियोजन लागू करके सरकार न ठीक ही नही किया। बल्कि परिवार नियोजन का मसला हिन्दुओ और मुसलमानो पर एकसा लागू होना चाहिए।

अत प्रार्थना है कि सारे मामले की जांच पडताल की जाए। और हिन्दुओ के साथ न्याय किया जाए।

जयदेव गोयल
पत्रकार जीन्द

मिनिस्टर का आदेश नहीं चाहिए, कुछ सेवा पानी करो

आदरणीय श्री मिर्धा जी,

सादर नमस्ते।

आपको स्मरण होगा कि हम आपको २६ ७-८५ को स्व० श्री ललित माकन जी के साथ मिले थे। आपको महाशय चुन्नीलाल चैरिटेबल ट्रस्ट के लिए दूरभाष के सम्बन्ध मे आपसे प्रार्थना की थो। आपके आदेश के अनुसार श्री के० सी० मित्तल, उपनिदेशक ने अपने पत्र सख्या ६३/१/८५ पी०एच०ए० दि० २९/७/८५ के अनुसार आदेश भी जारी कर दिये थे।

मैं श्री मित्तल जी का आदेश प्राप्त होने पर ७-८-८५ को कर्मशियल आफिसर (प्रथम) से मिला था। उन्होने हमारा पत्र लेकर बेमूड मे आपको बुरा भला कहते हुए उस पर आदेश जारी किए थे। किसी कारणवश मे दिल्ली से बाहर चला गया।

वहा से लौटने पर कल १६-८-८५ को जब मैं उनसे पुन मिला तो उन्होंने कहा कि मिनिस्टर साहब के कहलवाने से या उनके आदेश जारी करवाने से टेलीफोन थोडे ही मिल जाते हैं जब तक सेवा पानी न की जाए। मैंने आपकी फाइल असिस्टैण्ट जनरल मैनेजर श्री ए० के० गुप्ता को भेज दी है। श्री गुप्ता जी के पास जब मैं गया तो उन्होने मुझे अकेले मे कहा कि आपका कर मुक्ति प्रमाणपत्र ३१ मार्च १९८३ तक का है। या तो आप आगे का प्रमाणपत्र ले आइये या हमारी सेवा कर दीजिए।

मैंने श्री गुप्ता से कहा कि यह तो विशेष श्रेणी मे हमे टैलीफोन मिल रहा है, यदि साधारण श्रेणी मे भी यदि मिनिस्टर साहब टेलीफोन दिलवाना चाहें तो दे सकते हैं। इसके बाद भी मैंने उनसे निवेदन किया कि मैं आपको लिखित देने को तैयार हूँ कि हमने आगे के लिए कर मुक्ति के लिए प्रार्थना पत्र दिया हुआ है, आने पर आपको दे दिया जायेगा। परन्तु वह बिना सेवा के कार्य करने को तैयार नही हुए।

उसके बाद मे उपमहाप्रबन्धक श्री सुबोध सक्सेना जी से मिलने गया तो उनके निजी सचिव श्री जैन ने कहा कि साहब प्रतिदिन ५-६ व्यक्तियो को मिलते हैं। आपका नम्बर २-९-८५ को आयेगा। आप उस दिन आकर मिल ले, क्योंकि मुझे पता चला है कि कमर्शियल आफिसर तथा असिस्टेण्ट मैनेजर के आदमी ने आकर उन्हें सूचित कर दिया था कि इन्हें मिलने न दिया जाये।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

स्वामी दयानन्द--एक सन्यासी योद्धा

(पृष्ठ ५ से आगे)

समाजियो ने बगाल में बुलाया था। जब दिसम्बर १८७३ में वह कलकत्ता में थे, तब वह देवेन्द्रनाथ टैगोर और केशवचन्द्र सेन मे मिले। केशवचन्द्र सेन दयानन्द से बहुत अधिक प्रभावित हुआ और इच्छा प्रकट की कि यदि दयानन्द अग्रेजी जानते तो वह उन्हें ब्रिटेन मे ले जाते। दयानन्द ने कहा कि काश केशवचन्द्र सेन संस्कृत जानते और वह पश्चिम का अन्धानुकरण न करते। दयानन्द ने सेन की सलाह मानकर अपना सारा कार्य सस्कृत की जगह हिन्दी में करना शुरू कर दिया था।

बाद में वर्षों में दयानन्द और ब्रह्मसमाज में भेद इतने अधिक बढ़ गये थे कि ब्रह्मसमाजियों ने दयानन्द को लाहौर में बुलाया पर उनके भाषणों का बाईकाट किया और दयानन्द के रहने की व्यवस्था भी एक मुस्लिम प्रशंसक के घर करनी पड़ी। यह भेद इतने ज्यादा बढ़े कि लाहौर में ब्रह्मसमाज के सस्थापक श्री दयालसिंह मजीठिया ने लिखा है कि आर्यसमाज के सदस्यों को उनके ट्रस्ट तथा अन्य सस्थाओं से निकाल बाहर किया जाये।

फिर भी दयानन्द के बहुत से बगाली प्रशसक थे और यह उल्लेखनीय है कि दयानन्द की जीवनी लिखने वालों में देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय थे, जिन्होंने दयानन्द चरित्र (१८९६) आदर्श सुधारक दयानन्द और विरजानन्द चरित्र लिखे। मुखोपाध्याय ने विभिन्न स्थानों की यात्रा करके ऐसी सामग्री इकट्ठी की थी जो बाद के जीवनी लेखक श्री घासीराम के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुई। श्री घासीराम ने दयानन्द की जीवनी देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय और प० लेखराम की उर्दू कृति पर आधारित की है। दीनबन्धु के इस दावे को कि दयानन्द के बगाली प्रशसकों ने कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणियां लिखी थीं, इसको असम्भव नहीं माना जा सकता। उन्होंने बगाली में जो इधर-उधर टिप्पणियां उपलब्ध थीं उन्हीं के आधार पर दयानन्द की जीवनी लिख दी। १८५८ से १८६० तक के सबध में दीनबन्धु का कहना है कि स्वामी जी जनवरी, फरवरी १८५७ में सबल और मुरादाबाद में थे और गढ़मुक्तेश्वर में मार्च १८५७ में थे। वह कानपुर जून ५ को पहुचे। मसवकर घाट जून २२ को और कानपुर और इलाहाबाद के बीच घूमते रहे। मई, जून जौलाई १८५७ में वह मिरजापुर में थे। जुलाई में बिठूर में और सितम्बर में विन्ध्याचल में। नवम्बर में वह चन्दनगढ़ और बनारस में थे। उनका कहना है कि इसके बाद भी वह रीवां जिले में नर्मदा के स्रोत तक पहुँचे थे। रीवां में उस समय बघेल सरदार का राज्य था। रीवा की फौजों ने नवम्बर, दिसम्बर १८५७ में विद्रोह किया।

दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में मूर्ति पूजा के संबध में लिखा है कि १८५७ में जब बघेल बिठूर के आसपास रहते थे, उन्होंने अग्रेजों का विरोध किया और अंग्रेजों ने उनके मदिरों पर बम बरसाये। "तुम्हारी मूर्तियां बघेलों को बचाने के लिए उस समय क्या कर रही थीं। वह मक्खी तक भी नहीं मार सकी।" दीनबन्धु का कहना है कि दयानन्द द्वारा यह विवरण ऐसा लगता है जैसे उनकी स्वय की साक्षी हो। उन्होंने यह ही कहा है कि दयानन्द लगभग उन्हीं स्थानों पर घूमे जहाँ पर उस समय या कुछ बाद में भीषण युद्ध हुआ। यह विवाद आज भी चल रहा है कि महर्षि दयानन्द ने स्वतन्त्रता सग्राम के प्रथम दौर मे भाग लिया था। अथवा नही। इस लेख में ऊपर दिये गये ऐतिहासिक तथ्य यह सिद्ध करते है कि दयानन्द ने इस पहली लड़ाई में सक्रिय योगदान दिया, उन्होंने लोगों को प्रेरणा दी तथा भले ही भारतीय इस पहली लड़ाई में हार गये हों पर उनके अन्दर एक ऐसा विश्वास जागृत हो गया था कि वह अग्रेजों को अवश्य उखाड़ फेंकेंगे। दयानन्द ने सर्वत्र स्वराज्य को ही अच्छा बताया और बाद में हमे स्वराज्य मिला भी। महात्मा गांधी को मार्ग दिखाने वाले वस्तुत: दयानन्द ही थे।

स्टेटसमैन से साभार

मिनिस्टर का आदेश

(पृष्ठ ८ से आगे)

अब आप ही बतायें कि इस भ्रष्टाचार का कैसे अन्त हो सकता है। क्या आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को भी ऐसे भ्रष्ट तरीके अपनाने चाहिए।

यदि आपके विभाग में ही आपके आदेश की इस प्रकार से अवहेलना की जाती है, और धज्जियां उड़ाई जाती हैं, तो आम लोगों का क्या हाल होगा, इसका आप स्वयं अनुमान लगायें।

अत: मेरा आपसे अनुरोध है कि आप इस मामले की जांच करायें और ऐसे भ्रष्ट लोगों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करें, जिससे नीचे वाले अधिकारियों को भी सबक हासिल हो सके।

मैं आशा करता हू कि भ्रष्टाचार मिटाने में आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्ताओं, जिन्होंने बिना रिश्वत के काम कराने की कसम उठा रखी है, का उत्साह बढ़ाने के लिए उपर्युक्त अधिकारियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करेंगे।

भवदीय

ओमप्रकाश आर्य, मंत्री

निराशावादो शल्य··

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

किया और बहराइच, गोण्डा वाराणसी के धर्मान्तरण की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने बताया कि केन्द्रीय सभा पर्वों का धूमधाम से आयोजन करती है। इस इस वर्ष दिल्ली में आर्यसमाज दीवान हाल की स्थापना शताब्दी मनायी जायेगी। हमारा विश्वास है कि आर्य वीरों के शिविरों तथा प्रशिक्षण के माध्यम से ही आर्यसमाज के आन्दोलन को गति प्रदान की जा सकती है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग मभा की बैठक में भी महत्त्वपूर्ण निश्चय आर्यवीर दल को ऊर्जा प्रदान करने का ही हुआ है। दीवानहाल की ओर से एक हजार आर्य वीरों का शिविर इस वर्ष दिल्ली में लगाया जायेगा।

जब हम इतने महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। हमें निर्वाचनों के समय शान्ति, सद्बुद्धि और एकता से काम लेना चाहिए।

आर्यसमाज मन्दिर हनुमान् रोड नई दिल्ली मे आर्य केन्द्रीय सभा का वार्षिक अधिवेशन सभा प्रधान महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता में हुआ। गायत्री मत्र के पश्चात् महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने ससद सदस्य श्री ललित माकन, श्रीमती गीताजली माकन, श्री बालकृष्ण खन्ना, श्री पाठक, श्री प्रतापसिंह (करनाल), आदि के निधन पर शोक प्रस्ताव रखा। सभी ने खड़े होकर दो मिनट मौन रहकर उन्हें श्रद्धाजलि दी। तत्पश्चात् श्री सूर्यदेव ने मभा के वार्षिक अधिवेशन को कार्यवाही को प्रस्तुत किया। प्रिंसिपल श्री ओमप्रकाश ने कहा कि मैं और मेरे साथी कुछ समय से महसूस कर रहे हैं कि कार्य मे शिथिलता आई है। इस बात का उपस्थित सदस्यो ने विरोध किया और कहा कि कार्य बढा है और आगे भी बढ़ना चाहिए। श्री रामनाथ सहगल, श्री मामचद रिवारिया, श्री राज सिंह भल्ला, श्री विजय गुप्ता ने कहा कि आर्य केन्द्रीय सभा का गत वर्ष का कार्य प्रशसनीय है। सभी ने तालियो से इस बात का अनुमोदन किया। सभा को वार्षिक रिपोर्ट सर्वसम्मति से सपुष्ट हुई। इसके बाद आय-व्यय विवरण और बजट प्रस्तुत करते हुए महामन्त्री ने बताया कि जब हमने सभा सभाली उस समय इसके पास ६,००० रुपये का फिक्स डिपोजिट और लगभग ८०० रुपये का कर्जा था। आज इसके पास ११,००० रुपये का फिक्स डिपोजिट तथा सात हजार रुपया कोष में है। आय व्यय विवरण तथा बजट सर्वसम्मति से पारित हुआ।

डा० धर्मपाल मन्त्री ने प्रस्ताव रखा कि आज भी दिल्ली को आर्य समाजों की सख्या को देखते हुए हमें अन्तरग सभा के सदस्यों को सख्या ३१ से बढाकर ४१ कर देनी चाहिए। इस प्रस्ताव पर श्री रामनाथ सहगल ने कहा कि वधानिक दृष्टि से संविधान सशोधन का कार्य नैमित्तिक सभा में किया जाना चाहिए, यदि कोई वधानिक आपत्ति न हो तो सशोधन इसी साधारण सभा की बैठक मे पारित कर लिया जाये। उन्हें बताया गया कि वार्षिक साधारण सभा सर्वोच्च है और आज आवश्यक कोरम भी पूरा है। तीन वर्ष पहले सविधान में सशोधन किया गया था। अत यह सशोधन प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया जाये। श्री राजसिंह भल्ला श्री मामचद रिवारिया श्री रामनाथ सहगल, श्री लाजपत राय आदि मान्य सदस्यो ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

इसके पश्चात् सभा प्रधान महाशय धर्मपाल ने वर्तमान कार्यकारिणी के कार्यकाल की समाप्ति की घोषणा की। सामयिक प्रधान के लिए श्री ओमप्रकाश श्री रामनाथ ने लाला रामगोपाल शालवाले का नाम प्रस्तावित किया। श्री लाजपत राय तथा अन्य अनेक सदस्यो ने उनके नाम का अनुमोदन किया।

लाला रामगोपाल शालवाले ने सामयिक प्रधान का पद ग्रहण किया। सारा सभागार तालियों की गडगडाहट से गूज उठा। उन्होंने मान्य सदस्यो को सगठित रहने की प्रेरणा दी और प्रधान पद के लिए नाम आमत्रित किए। श्री हरबससिंह खैर ने महाशय धर्मपाल जी का नाम प्रस्तावित किया। श्री रामशरणदास आर्य और श्री लाजपत राय ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया। लाला जी ने दूसरा नाम आमन्त्रित किया। कोई नाम न आने पर उन्होंने सर्वसम्मति से महाशय धर्मपाल को सभा का प्रधान निर्वाचित घोषित किया। सभी सदस्यों ने ताली बजाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। श्री लाजपत राय, श्री राजसिंह भल्ला आदि ने प्रस्ताव रखा कि कार्यकारिणी के गठन का कार्य महाशय धर्मपाल जी को ही सौंप दिया जाय। लाला जी ने कहा कि महामन्त्री का चुनाव भी आप अभी कर लें। श्री ईश्वरचद आर्य, श्री रामशरण दास आर्य ने श्री अशोक कुमार सहगल का नाम प्रस्तावित और अनुमोदित किया। सभी ने करतल ध्वनि से इस प्रस्ताव

(शेष पृष्ठ ११ पर)

समाचार सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली के साप्ताहिक सत्सग मे २५ अगस्त १९८५ को श्री महेश विद्यालकार द्वारा विशेष प्रवचन होगा।

मन्त्री

१ आर्यसमाज त्रिनगर मे ३० अगस्त से ३ सितम्बर तक पण्डित आशाराम प्रेमी भजनोपदेशक भजन मण्डली द्वारा रात्रि को ८ बजे से १० बजे तक मधुर सगीत एव वेद प्रवचन होगा।

२ आर्यसमाज रघुवरपुरा न० २ मे ४ सितम्बर से ८ सितम्बर तक आचार्य हरिदेव सिद्धान्त भूषण तर्क केसरी द्वारा वेद प्रवचन होगा। कथा से पूर्व प० चुन्नी लाल आर्य भजनोपदेशक के मधुर भजनोपदेश होगे।

३ आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश न० १ मे २ से ८ सितम्बर तक प० अशोक विद्यालकार द्वारा वेद प्रवचन का आयोजन किया है। जिसमे प० वेदव्यास भजनोपदेशक एव श्री प्रभा और श्यामवीर राघव के मधुर भजन रखे गये हैं।

४ आर्यसमाज सफदरजग इन्क्लेव में पण्डित यशपाल सुधाशु एम०ए० सम्पादक आर्य सन्देश जी द्वारा वेदकथा का कार्यक्रम रहेगा। कथा से पूर्व प० वेदव्यास आर्य प्रचारक द्वारा मधुर सगीत सुनने को मिलेगा यह कार्यक्रम ४ सितम्बर से ८ सितम्बर तक धूमधाम से सम्पन्न होगा।

५ आर्यसमाज सदरबाजार पहाड़ी धीरज मे वेदप्रचार ३० अगस्त से ८ सितम्बर तक धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है जिसमे प० सत्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार के भजनोपदेश होगे प० ज्योति प्रसाद ढोलक वादक साथ रहेगे।

६ आर्यसमाज देवनगर मे ९ सितम्बर से १५ सितम्बर तक प० आशाराम प्रेमी श्री श्यामवीर राघव द्वारा भजनोपदेश होगे। समय रात्री ८ बजे से १० बजे तक रहेगा।

७ आर्यसमाज राणाप्रताप बाग मे ९ से १५ सितम्बर तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया जा रहा है जिसमे प० वेदव्यास भजनोपदेशक एव प० अमरसिंह तबला वादक का कार्यक्रम रहेगा, साथ ही ८ सितम्बर ८५ को दोपहर बाद एक विशाल शोभायात्रा निकाली जायेगी।

८ आर्यसमाज राजौरी गार्डन मे ९ से १४ सितम्बर ८५ तक वेद सप्ताह मनाया जा रहा है जिसमे प० सत्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार एव ज्योतिप्रसाद ढोलक कलाकार द्वारा भजनोपदेश होगे।

९ आर्यसमाज शालीमार बाग मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर विद्वान् सन्यासी उपदेशको के श्रीकृष्ण जीवन पर व्याख्यान होगे। साथ ही प० सत्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार के मधुर भजन होगे।

१० आर्यसमाज अशोकनगर का वार्षिकोत्सव धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। सभा के भजनोपदेशक पण्डित चुन्नीलाल जी आर्य के जोशीले भजनोपदेश होगे।

११ आर्यसमाज नयाबास मे वेदप्रचार सप्ताह मनाया जा रहा है जिसमे महात्मा रामकिशोर वैद्य महोपदेशक जी का वेद प्रवचन रहेगा।

१२ आर्यसमाज शकरपुर विस्तार मे ५ से ८ सितम्बर तक प्रात ६ ३० बजे से ८ बजे तक विशेष यज्ञ प्रवचन रखा गया है यज्ञ के ब्रह्मा प० धर्मवीर शास्त्री विद्यावाचस्पति जी होगे। ८ सितम्बर रविवार को श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया जायगा जिसमे महात्मा विद्वान् भजनोपदेशक पधार रहे है।

१३ आर्यसमाज न्यू मोतीनगर मे १ से ७ सितम्बर ८५ तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया जा रहा है जिसमे प० शिवाकान्त उपाध्याय का प्रवचन और प० जय भगवान भजन मण्डली के मधुर भजन होगे।

१४ आर्यसमाज १५ हनुमान् रोड मे वेदप्रचार सप्ताह १ सितम्बर से ८ सितम्बर तक मनाया जायगा जिसमें प० मदनमोहन विद्यासागर (हैदराबाद) जी का वेदप्रवचन रखा गया है कथा से पूर्व मधुर संगीत का कार्यक्रम रहेगा।

आर्यसमाज चूनामण्डी पहाड़गज नई दिल्ली ४ सितम्बर से ८ सितम्बर तक वेद प्रवचन श्री प० रामप्रसाद वेदालकार द्वारा किया जायेगा।

समय—रात्रि ९ बजे से १० बजे तक।

व्यवस्थापक
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का छठा वार्षिक खुला अधिवेशन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश का छठा वार्षिक अधिवेशन नौजवान उभरते हुए पत्रकार प० यशपाल सुधांशु (सम्पादक आर्य सन्देश) की अध्यक्षता मे २५ अगस्त, रविवार दोपहर २ बजे आर्यसमाज अनारकली मन्दिर मार्ग मे समारोह पूर्वक होगा। परिषद् अध्यक्ष श्री अनिल कुमार आर्य ने बताया दिल्ली, हरियाणा, पजाब, उत्तर प्रदेश व अन्य राज्यो से ५०० नौजवान भाग लेंगे।

इस अवसर पर श्री अमर स्वामी जी महाराज श्री प० क्षितीश वेदालकार, ब्र० विश्वपाल जयन्त, लाला इन्द्र नारायण, श्री रामनाथ सहगल, महाशय धर्मपाल, श्री रामचन्द्र विकल डा० गणेशदास (करनाल) व अनेक मूर्धन्य आर्य विद्वान् व नेता भाग लेंगे। मण्डल व शाखाधिकारियो की नियुक्तियां व ध्वज, सोटी, फुटबाल उन्हें कार्यक्रम मे दी जायेंगी।

आर्यसमाजें व आर्य युवक पूर्ण वेशभूषा में ठीक १ ३० बजे पहुचें व अपनी बसें, ट्रक, मैटाडोर गाड़ियो मे अधिक से अधिक सख्या में पधारकर सगठन का परिचय दें।

चन्द्रमोहन आर्य
प्रेस सचिव
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली

आर्यसमाजों के निर्वाचन

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली का वार्षिक चुनाव २८ ७ ८५ को श्री शिवलाल वासुदेवा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये —

प्रधान—श्री द्वारकानाथ सहगल
मुख्य उप प्रधान—श्री शिवलाल वासुदेवा
उपप्रधान—श्री कृष्णलाल भाटिया
उप प्रधान—श्री रामकिशन जी गुप्त
उप प्रधान—श्री नेमराज आर्य
उपप्रधान—श्री दीवान पुरुषोत्तमलाल जी
उप प्रधान—श्री बलराज कोहली
मत्री—श्री शादीलाल जी
प्रचार मत्री—श्री अशोक कुमार सहगल
उपमत्री—श्री प्राणनाथ कक्कड़
उप मत्री—श्री शिवकुमार जी
उप मत्री—श्री हेमराज बांगा
उप मत्री—श्री मोहनलाल बख्शी
कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश
उपकोषाध्यक्ष श्री चुन्नीलाल
उप कोषाध्यक्ष श्री धर्मचन्द जी
पुस्तकाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश आहूजा
लेखा निरीक्षक श्री सुरेन्द्रमोहन गुप्ता

(द्वारकानाथ सहगल)
प्रधान
आर्यसमाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली-६०

आर्यसमाज नया बांस दिल्ली का ६५ वां वार्षिक अधिवेशन रविवार दिनांक १४ ७-८५ को प० सत्यदेव विद्यालकार की अध्यक्षता मे निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान—ला० ओमप्रकाश कपडे वाले
उप प्रधान—श्री पूर्णचन्द्र अरोड़ा
उप प्रधान—,, ओमप्रकाश क्रीम वाले
मन्त्री—,, शिव कुमार आर्य
उप मन्त्री—,, धर्मपाल आर्य
उप मन्त्री—,, राजेन्द्र कुमार दाल वाले
उप मन्त्री—,, ब्रह्मानन्द शर्मा
कोषाध्यक्ष—,, राजेन्द्रनाथ गोटे वाले
पुस्तकाध्यक्ष—श्री नन्दकिशोर आर्य

इसके अतिरिक्त सर्व सम्मति से अन्तरग सभा के लिए १५ सदस्य भी चुने गये।

भवदीय
शिवकुमार आर्य (मन्त्री)
आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली

जिला आर्यसमाज, समस्तीपुर का वार्षिक निर्वाचन दिनाक २१ ७ ८५ बार रविवार को श्री रामप्रसाद आर्य के अध्यक्षता में सौहार्दपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित पदाधिकारी एव अन्तरग सदस्य चुने गये।

श्री रामप्रसाद आर्य—प्रधान
,, दीन दयाल काबड़ा—उप प्रधान
,, विशेश्वर प्रसाद यादव—उपप्रधान
,, नवल किशोर शास्त्री—मन्त्री
,, रामलाल आर्य—उप मन्त्री
,, बजरगलाल झुन झुन वाला—उपमन्त्री
,, हरि नारायण वैद्य—कोषाध्यक्ष
,, सुरेशचन्द्र आर्य—पुस्तकाध्यक्ष
,, हरिशचन्द्र जी—लेखा निरीक्षक

निवेदक
मन्त्री, नवल किशोर शास्त्री
जिला आर्यसमाज समस्तीपुर (बिहार)

अन्तरंग सूचना

सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश समिति की एक अत्यावश्यक बैठक शनिवार दिनाक २४ अगस्त १९८५ को साय ४ बजे आर्यसमाज मन्दिर, १५ हनुमान् रोड नई दिल्ली मे होनी निश्चित हुई है।

आप इस समिति के माननीय सदस्य हैं। कृपया बैठक मे समय पर पधारकर अपने सहयोग तथा विचारो से लाभान्वित करें।

भवदीय
(श्यामसुन्दर चिरवानी)
मन्त्री

महाशय धर्मपाल

(पृष्ठ १ का शेष)

चिकित्सालय दिल्ली के ग्रामीण तथा पिछड़ी बस्तियों में निःशुल्क चिकित्सा सेवा का कार्य कर रहा है। श्री महाशय जी ने कई एक शिक्षण संस्थाएँ भी स्थापित की हैं। पिछले ५ वर्षों से उनकी अध्यक्षता में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली दिनोदिन उन्नत होती हुई प्रशस्ति प्राप्त कर रही है। हम मान्य महाशय जी को शतायु होने की मगल कामना करते हैं।

(पृष्ठ ६ से आगे)

का स्वागत किया। मान्य लाला जी ने श्री अशोक कुमार सहगल को महामन्त्री निर्वाचित घोषित किया और घोषणा की प्रधान और महामन्त्री दोनों मिलकर कार्यकारिणी का गठन कर लगे। प्रस्ताव रखा गया कि वर्ग प्रतिनिधियों का चुनाव टोलियों में सदस्यों को बाटकर यहीं पर करा लिया जाये। इस प्रक्रिया को लम्बा जानकर निर्णय किया गया कि सभा प्रधान और महामन्त्री क्षत्रीय कार्यकर्ताओं से परामर्श करके स्वय ही वर्ग प्रतिनिधि भी चुन लें।

सभा प्रधान महाशय धर्मपाल जी और नवनिर्वाचित महामंत्री श्री अशोक सहगल ने उपस्थित सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

श्री सूर्यदेव ने सुचारु रूप से अधिवेशन सम्पन्न होने पर उपस्थित सदस्यों का तथा जलपान के लिए महाशय धर्मपाल जी और आर्यसमाज हनुमान रोड के अधिकारियों का धन्यवाद किया।

राजेन्द्र दुर्गा
प्रचार मन्त्री
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा मन्त्र प्रतियोगिता

वेद प्रचार दिवस का पर्व ६-९-८५ को सोमवार प्रातः ११ बजे से साय ४.३० बजे तक दयानन्द वाटिका में मान्य बहिन ईश्वरदेवी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न होने जा रहा है। मन्त्र प्रतियोगिता में यजुर्वेद के ३५ अ० के मन्त्र १२ से २२ तक होगी।

एक सप्ताह के अन्दर अपने नाम निम्न पते पर भेज दीजिये।

प्रकाश आर्य सभा मन्त्रिणी
३०३१ हिन्दुतक रोड
नई दिल्ली ५

श्रावणी यज्ञ

आर्यसमाज पंजाबी बाग नई दिल्ली २६ में १ सितम्बर [illegible] सितम्बर १९८५ तक यजुर्वेद से प० पृथ्वीराज शास्त्री के ब्रह्मत्व में होगा। यज्ञ की पूर्णाहुति ८ सितम्बर रविवार प्रातः ९ बजे होगी।

निवेदक
म [illegible] (वेद प्रकाश)

सम्बन्धित विद्यालय ध्यान दें

आप अपने विद्यालय की वर्ष १९८४-८५ की प्रमुख गतिविधियों की रिपोर्ट तथा परीक्षाओं और अन्य प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करने वाले छात्र छात्राओं के नाम भिजवाने की कृपा करें। हमारा विश्वास है कि इससे विद्यालय के अध्यापक अध्यापिकाओं छात्र छात्राओं का उत्साहवर्धन होगा और वे और भी अच्छा कार्य आगामी वर्षों में कर सकेंगे।

आर्य विद्या परिषद द्वारा आयोजित नैतिक शिक्षा परीक्षा के सम्बन्ध में परिपत्र आपकी सेवा में भेजा जा चुका है। आप इस सबध में यथाशीघ्र आवश्यक कार्यवाही करने की कृपा करें।

आप दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशकों भजनोपदेशकों और मानव उपदेशकों को अपने विद्यालय में नैतिक शिक्षा पर भाषण देने हेतु समय समय पर आमन्त्रित करें जिससे कि छात्रों का सही मार्गदर्शन हो सके। कुछ आर्य विद्वानों के नाम और पते आपको सूचनार्थ नीचे लिखे जा रहे हैं।

१ स्वामी विद्यानद जी सरस्वती डी १४/१६ माडल टाउन दिल्ली ९ दूरभाष ७१२७६२८

२ स्वामी स्वरूपानद जी सरस्वती आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली दूरभाष ३१०१५० ३११२८०

३ डा० महेश विद्यालकार बी०जे० २८ पूर्वी शालीमार बाग दिल्ली ५२ दूरभाष ७११२५६१

४ डा० रघुवीर वेदालकार ए०एम०/३ शालीमार बाग दिल्ली ५२ दूरभाष ७११९६७१

५ डा० प्र[illegible] वेदालकार ७२ रूपनगर दिल्ली ७ दूरभाष

६ डा० [illegible] उपाध्याय जे० [illegible] २१ [illegible] दिल्ली ६

७ आचार्य हरिदेव सि० भूषण मकान न० ७६ गली नम्बर २२ मौहनपुर [illegible] नई दिल्ली ५ दूरभाष ५६८४६५

८ आचार्य रामकिशोर बैद्य सी ४५ डी०टी०सी० कालोनी हरिनगर डिपो नई दिल्ली ६४

९ श्री धर्मवीर शास्त्री आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली ६ दूरभाष २३७५४०

१० श्री सत्यदेव स्नातक आर्यसमाज रघुवरपुरा न०२ गली न० ५ दिल्ली ३१

११ श्री चुन्नीलाल आर्यसमाज मोगल दिल्ली-१४

१२ श्री वेदव्यास आर्यसमाज अनाज मण्डी शाहदरा दिल्ली ३२

१३ श्री आशाराम आर्यसमाज अशोकनगर नई दिल्ली १८

१४ श्री यशपाल सुधाशु आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली ६ दूरभाष २३७५४०

१५ श्री प्रि० चन्द्रदेव १६बी/१० डब्ल्यू०ई०ए० देव नगर नईदिल्ली ५ दूरभाष ५६३५४६

१६ प० सत्यभूषण वेदालकार एफ० २६ ग्रीन पार्क नई दिल्ली १६

१७ श्री प्रमचद श्रीधर ३६ ई० महाराजा रणजीत सिंह रोड आदर्शनगर दिल्ली दूरभाष ७४२४३१

आप इन विद्वानों से सीधा सम्पर्क कर लें तथा समय और तिथि की सूचना कार्यालय को भी देने की कृपा करें।

धन्यवाद !

(डा० धर्मपाल आर्य)
महामन्त्री

श्रावणी पर्व एव वेद प्रचार सप्ताह

दिनाक २० अगस्त ८५ से ७ सितम्बर ८५ तक समारोह पूर्वक मनाया जायेगा जिसमें प्रातःकाल [illegible] यज्ञ प्रातः साढ़े ६ से साढ़े ८ बजे तक प्रतिदिन होगा तथा रात्रि को ८.३० बजे से ९.३० बजे तक श्री प० वाचस्पति जी उपाध्याय द्वारा वेद कथा होगी।

भवदीय
बाबूराम आर्य (मन्त्री)

रजि० न० डी० (सी०) ७५६ साप्ताहिक 'आर्यसन्देश' २६ अगस्त, १६८५ बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० यू १३६
R No Post in N D P S O on 23 8 85 Licensed to post without prepayment, Licence No. U 139

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ,
फोन २६१८३८ चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन . ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वांचक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर दिल्ली-३१ में मु...

वर्ष ८ अंक ४१ | रविवार, १ सितम्बर, १९८५ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८६ | भाद्रपद २०४२ | दयानन्दाब्द १६१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २० रुपये | आजीवन २०० रुपये | विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

प्रधानमन्त्री द्वारा माता चन्नन देवी धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय के कार्यों की सराहना

नई दिल्ली, २९ अगस्त १९८५

आज भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी जी ने माता चन्नन देवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, जनक पुरी, नई दिल्ली द्वारा श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के ६०वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आज से १९ नवम्बर १९८५ तक प्रारम्भ किए जा रहे 'नेत्र ज्योति बचाओ' अभियान का शुभारम्भ करते हुए चिकित्सालय की टीम को अपने निवास स्थान पर बुलाकर अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

इस टीम में चिकित्सालय के ६ डाक्टर, ७ नर्सों के अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले, भूतपूर्व केन्द्रीय स्वास्थ्य उपमन्त्री सुश्री कुमुद बैन जोशी, भूतपूर्व संसद सदस्य श्री हरदयाल जी देवगण, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, महामन्त्री डा० धर्मपाल, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल तथा अन्य कई गण्यमान्य व्यक्ति सम्मिलित थे।

चिकित्सालय के सचिव श्री ओम प्रकाश आर्य ने श्री राजीव गांधी जी को पिछले पांच वर्षों में श्रीमती गांधी के जन्म दिनों के अवसर पर किए गए कार्यों की रिपोर्ट तथा अब तक चिकित्सालय द्वारा किए गए कार्य का संक्षिप्त विवरण दिया। आपने यह भी बताया कि इस वर्ष श्रीमती गांधी जी के जन्मदिन पर दिल्ली के ६९ ग्रामों में जा जाकर नेत्र परीक्षण किये जायेंगे। ६९ हजार स्कूली बच्चों के स्कूलों में जा जाकर नेत्र परीक्षण किये जायेंगे ६९ हजार नेत्र सुरक्षा सम्बन्धी नियम प्रधानमन्त्री जी के चित्र एवं सन्देश सहित प्रकाशित कराकर वितरित किये जायेंगे तथा इस अवसर पर लगभग ५०० निःशुल्क नेत्र आपरेशन किये जायेंगे।

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी जी ने चिकित्सालय के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए चिकित्सालय के अधिकारियों तथा डाक्टरों का धन्यवाद किया।

ओमप्रकाश आर्य
चिकित्सालय सचिव

आर्यसमाज दीवान हाल का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

१९८५-८६ के लिए पूर्वाधिकारी पुनर्निर्वाचित

आर्यसमाज दीवान हाल का १००वां वार्षिक अधिवेशन २५ अगस्त को श्री सूर्य देव प्रधान की अध्यक्षता में सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। गत वर्ष के आय-व्यय की स्वीकृति के पश्चात् आगामी दिसम्बर में मनायी जाने वाली शताब्दी के कार्यक्रम को अन्तिम रूप दिया गया तथा गत वर्ष के अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को ही आगामी वर्ष १९८५-८६ के लिए निर्वाचित घोषित किया गया।

आर्यसमाज दीवान हाल शताब्दी समारोह की तैयारियां प्रारम्भ

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली के मन्त्री श्री मूलचन्द गुप्त की घोषणा के अनुसार आर्यसमाज दीवान हाल शताब्दी समारोह के कार्यक्रम १५ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर तक धूमधाम से सम्पन्न होंगे। जिनमें चतुर्वेद पारायण यज्ञ भाषण, लेखन प्रतियोगिताएँ, वैदिक विद्वानों की संगोष्ठियां तथा विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन होगा। समारोहस्थल पर अनेक प्रदर्शनियां भी आयोजित की जायेंगी। जिनमें आर्यसमाज दीवान हाल के कार्य एवं आन्दोलनों को स्मरण कराती झांकियां होंगी। इस अवसर पर जहाँ भव्य स्मारिका, अनेकों पुस्तकों, ट्रैक्टों और फोल्डर्स का प्रकाशन किया जायेगा वहां पुरातन आर्य-साहित्य प्रदर्शनी का भी आयोजन होगा। □

पाठक वृन्द ध्यान दें

आर्यसन्देश साप्ताहिक का ८ सितबर का अंक विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा। अतः इस बार का अंक केवल समाचारों के लिए ही चार पेज का प्रकाशित किया जा रहा है। १५ सितम्बर का अंक भी हम केवल समाचार अंक चार पेज का ही प्रकाशित करेंगे। २२ सितम्बर से आर्यसन्देश हर सप्ताह नवीन लेखों और खोजपूर्ण सामग्री के साथ सुन्दर साजसज्जा के साथ प्रकाशित होता रहेगा।

सम्पादक, आर्यसन्देश

समाचार सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि द्वारा साप्ताहिक सत्संगों की व्यवस्था

१ सितम्बर १९८५ रविवार

आर्यसमाज दीवान हाल मे प० क्षितीश वेदालंकार द्वारा प्रवचन

अन्धामुगल प्रतापनगर—प० देवराज वैदिक मिशनरी। अशोकनगर—प० मुरारीलाल बेचैन। आर्यपुरा—प० रमेश चन्द वेदाचार्य। आनन्दविहार—प० अमर नाथ कान्त आर्योपदेशक। किंग्जवे कैम्प—आर्यवीर रणवीरसिंह राणा। किशनगंज मिल एरिया—स्वामी यज्ञानन्द सरस्वती। गांधीनगर—प० चुन्नीलाल आर्य। गीता कालोनी—ब्र० भीष्म। गोविन्दपुरी—प० रवीन्द्रनाथ पाठक। गोविन्द भवन—प० वेदप्रकाश शास्त्री। जनकपुरी बी २—डा० सुखदयाल भूटानी। जनकपुरी सी० ३—प० राधेश्याम शर्मा एम०ए०। टैगोर गार्डन—प० सोमदेव शास्त्री। तिमारपुर—प० मनुदेव शास्त्री। तिलक नगर—प० जयभगवान जी। देवनगर—डा० रघुनन्दन सिंह। नगर शाहदरा—प० अमीचन्द मतवाला। न्यू मोतीनगर—प० उदय श्रेष्ठ धर्माचार्य। नारायणविहार—स्वा० प्रज्ञानन्द सरस्वती। पंजाबी बाग—प० वेदव्यास आर्य। पंजाबी बाग एक्सटेंशन—आचार्य हरिदेव सिद्धांत भूषण जी। महरौली—मा० मोहनलाल गांधी। महावीर नगर—पं० बलवीर सिंह शास्त्री। मौडल बस्ती—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री मोतीबाग—प० सुशीलकुमार शास्त्री। राणाप्रताप बाग—महात्मा मुनी शंकर वानप्रस्थ। राजौरी गार्डन—डा० वेद प्रकाश महेश्वरी। रमेश नगर—आचार्य रामवीर शास्त्री। रघुवरपुरा—श्री मुनी देव भजनोपदेशक। लाजपत नगर—डा० छविकृष्ण शास्त्री। लड्डू घाटी—प० नेत्र पाल आर्य। हौजखास—प० हुक्मिचन्द आर्य। त्रि नगर—प० चमनलाल जी। विवेक विहार—प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री। अशोक विहार—प० सत्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार इत्यादि।

व्यवस्थापक
स्वामी स्वरूपानन्द
अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग
दिल्ली सभा

आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल दिल्ली मे
३० अगस्त से ७ सितम्बर तक

वेद प्रचार सप्ताह

प्रतिदिन प्रात ७ ३० बजे से ९ ०० बजे तक
यजुर्वेद पारायण यज्ञ
३० अगस्त को प्रात ७ ३० बजे से
श्रावणी उपाक्रम
सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार
एवम्
हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान-दिवस
३१ अगस्त से ६ सितम्बर १९८५
रात्रि ७॥ बजे से ९ बजे तक
आर्यसमाज के विद्वान् महोपदेशक वैद्य रामकिशोर जी द्वारा

वेद-प्रवचन

प्रवचन से पूर्व श्री गुलाब सिंह जी 'राघव' के भजन होंगे।
७ सितम्बर शनिवार से प्रात ७ ३० बजे से योगीराज श्री कृष्ण जन्मोत्सव मनाया जायेगा।
कृपया उपरोक्त कार्यक्रमो मे पधार कर धर्म लाभ उठायें।

मूलचन्द गुप्त
मन्त्री
आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल
दिल्ली

वेदप्रचार सप्ताह

वेद सप्ताह ९ सितम्बर से १५ सितम्बर १९८५ तक आर्यसमाज अशोक विहार फेज-१ में मनाया जाएगा।

प्रात ६ बजे से ७ ३० तक यज्ञ
ब्रह्मा श्री वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय

रात्रि ८ ३० से ९ बजे तक भजन
९ ०० से १० बजे तक वेदकथा
(श्री वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय)

१५ सितम्बर १९८५ रविवार पूर्णाहुति
प्रात ७ ३० से ११ ३० तक

भजन श्री विजय भूषणार्य एव आर्य स्त्री समाज अशोक विहार-१

उपदेश डा० उषा रानी शास्त्री एव श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय।

जसवन्त लाल मदान
कार्यालय मंत्री
आर्यसमाज अशोक विहार, फेज-१

गत वर्षों की भांति आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी में दिनांक ३० अगस्त से ७ सितम्बर १९८५ (श्रावणी से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी) तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया जाएगा जिसमें श्री धर्मपाल शास्त्री, आचार्य गुरुकुल ततारपुर गाजियाबाद व श्री रामप्रसाद संगीताचार्य, वाराणसी पधार रहे हैं।

कार्यक्रम

नित्य प्रतिदिन प्रात ७ बजे से ९ बजे तक विभिन्न परिवारो मे विशेष यज्ञ एव रात्रि ७ बजे से १० बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन आर्यसमाज मन्दिर, लल्लापुरा वाराणसी में होगा।

बुद्धदेव आर्य
व्यवस्थापक
आर्यसमाज लल्लापुरा,
वाराणसी

आवश्यक सूचना

दिल्ली की सभी स्त्री आर्यसमाजो को सूचित किया जाता है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा मे उपदेशक भजनोपदेशको की पूर्ण व्यवस्था है। आप अपने साप्ताहिक सत्संगो के लिए उपदेशक, संगीत कलाकारों की सेवा प्राप्त करें। एक सप्ताह पूर्व पत्र व्यवहार कर अपने सत्संग के लिए उपदेशक महानुभावो का कार्यक्रम रखें। हमे फोन न० ३१०१५० पर सम्पर्क करें।

व्यवस्थापक
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेद प्रचार
दि०आ०प्र० सभा

आर्यसमाज आशा पार्क में स्वतंत्रता दिवस समारोह

दिनांक १५-८-८५ को आशा पार्क निवासी कल्याण सभा (रजि०) की ओर से कालोनी मे ३९वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारोह बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर ध्वजारोहण श्री शान्तिप्रकाश जी नारंग प्रधान, आर्य समाज आशा पार्क के द्वारा किया गया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए जिन महान् वीरों ने अपने प्राणों की बलि दी थी उन को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। माननीय प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी के साहसिक कार्य और सूझबूझ की प्रशंसा की गई। राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत राष्ट्रीय गीत तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। सभा के प्रधान श्री सरदार सिंह के द्वारा बच्चो मे मिठाई आदि बाँट कर समारोह का विधिवत् समापन किया गया।

निरंजन देव सचदेवा
मन्त्री आर्यसमाज आशा पार्क नई दिल्ली

हम सुधरेंगे जग सुधरेगा

आर्यसमाज मुहल्ला गोबिन्दगढ़, जालंधर शहर मे दिनांक १४ अगस्त से १९ अगस्त तक, स्त्री आर्यसमाज की ओर से वैदिक सत्संग यज्ञ, भजन एव वेद प्रवचनो का सुन्दर आयोजन किया गया। वैदिक यति मण्डल के सक्रिय सदस्यो पू० जगदीश मुनि वानप्रस्थ एव आचार्य ब्र० आर्य नरेश जी द्वारा यह सब कार्यक्रम सफलता से सम्पन्न हुआ। शुद्ध वेद पाठ शिविर भी चला। वेद मन्त्रो की व्याख्या करते हुए ब्रह्मचारी जी ने माता-पिता को अपना जीवन दैनिक यज्ञ, सन्ध्या व स्वाध्याय से पवित्र बना कर अपनी सन्तानो को वैदिक संस्कार अपनाने की प्रेरणा देने का उपदेश दिया।

ब्रह्मचारी जी व मुनि जी आजकल पंजाब मे एकता व शान्ति के लिए वैदिक यज्ञो व वेद प्रवचनो का आयोजन करते हुए शान्ति यात्रा कर रहे हैं।

कृष्णा कोछड़
मन्त्रिणी

चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति

यज्ञ भवन जवाहर नगर दिल्ली में २१ अगस्त से आयोजित चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति १ सितम्बर रविवार को होगी। इस यज्ञ के ब्रह्मा एव ऋत्विक् स्वामी जीवनानन्द तथा प० लक्ष्पति शास्त्री हैं। प्रारम्भ के दिन से ही श्रद्धालु जन भारी संख्या मे यज्ञ मे भाग लेते रहे हैं। यज्ञ की पूर्णाहुति ११ बजे होगी। अनेक सुयोग्य विद्वानो के प्रवचनों का भी इस अवसर पर आयोजन किया गया है।

निवेदक
अर्जुन देव

युवा वर्ष के उपलक्ष्य म

६ ४५ से रात्रि ८ बजे तक

भाषण-प्रतियोगिता

विषय श्रीकृष्ण क्यो महान् थे ?

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर ८ से ८ ३० बजे तक

पुरस्कार वितरण श्री अनिल नरेन्द्र प्रधान सम्पादक दनिक वीर अजन साध्य

सार्वजनिक सभा ८ ३० से रात्रि १० बजे तक

मुख्य वक्तागण

डा० धमपाल आय महाम त्री दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा
श्री प्रेमचन्द गोयल अध्यक्ष ला० रामचन्द्र अनाज वा न धर्माथ ट्रस्ट नया बाजार
लाला किशोरी लाल प्रसिद्ध समाज सवी आयसमाज सदर बाजार
श्रीमती प्रकाश आर्या महासचिव प्रान्तीय आय महिला सभा दिल्ली र य
श्री केवलकृष्ण सेठी सचिव आयसमाज प्रताप नगर
श्री अनिल कुमार आय महामन्त्री केन्द्रीय आय युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश
आचाय देवव्रत शास्त्री उपप्रधानाचाय ला० गोबिन्दराम गुरुकुल सीनियर सैकण्डरी स्कूल राम बाग रोड
श्री जुगल किशोर सचालक वैदिक मुद्रणालय आयसमाज पुल बगश
श्री धमवीर प्रधान केन्द्रीय आय युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश
प० खुशी राम शर्मा अधिष्ठाता महाशय चुन्नीलाल वेद प्रचार धर्माथ ट्रस्ट

नोट—१ श्रीमती प्रकाश आर्या आचाय देवव्रत शास्त्री श्री धमवीर जी भाषण प्रतियोगिता के निर्णायक होगे।
२ सत्याथप्रकाश परीक्षा मे बैठ २०० छात्र छात्राओ मे प्रथम १० पुरस्कृत होगे।
३ लोकनायक श्री कृष्ण ट्रैक्ट ५० ००० छपवाने मे सहयोग देने वाले आय सज्जन भी यहाँ सम्मानित होंगे।

चन्द्रमोहन आर्य
सयोजक

योग एव सस्कृत प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

ज्ञानपुर (वाराणसी) विश्वभारती अनुसधान परिषद् ज्ञानपुर द्वारा आयोजित योग और सस्कृत प्रशिक्षण शिविर का समापन करते हुए सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के कुलपति डा० रामकरण शर्मा ने कहा कि योग जिसको आजकल मैस्मरिज्म कहा जाता है ऐसी कोई वस्तु नही है। योग वह वस्तु है जो हमारे शरीर इन्द्रिय आत्मा मन और बुद्धि को बल प्रदान करता है। महर्षि पतजलि के मत को उद्धृत करते हुए आपने कहा कि जीवन अच्छी तरह जीने के चार मूल मन्त्र है—मैत्री करुणा मुदिता और उपेक्षा इनकी व्याख्या करते हुए आपने इन्हे जीवन मे अपनाने पर जोर दिया। सस्कृत भाषा की चर्चा करते हुए आपने कहा कि सस्कृत भाषा एक महाभाषा है। जो देश की सभी भाषाओ को सभी भाष भाषियो को एक दूसरे के साथ जोडने मे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। कायक्रम के आरम्भ मे परिषद् के निदेशक डा० कपिल देव द्विवेदी ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए योग के विभिन्न पहलुओ पर प्रकाश डाला और शिविर में छात्रो द्वारा उत्साहपूर्ण भाग लेने पर उन्हें बधाई दी। परिषद् के अध्यक्ष डा भारतेन्दु द्विवेदी ने परिषद् की उपलब्धियो का विवरण प्रस्तुत किया। समारोह की अध्यक्षता डा० बालचन्द श्रीवास्तव, भू० पू० उच्च शिक्षानिदेशक उ० प्र० ने की। आपने इस प्रकार के शिविर प्रतिवर्ष लगाने की अपील की। इस अवसर पर योगासनो तथा आयवीर दल के प्रशिक्षक श्री कीर्तिदेव शास्त्री द्वारा नाक से रस्से से सरिया मोडना काच पीसना कागज की तरह थाली फाडना आदि का भी प्रदर्शन हुआ समारोह के अन्त मे प्रो० विद्याशकर त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आयम्बु आय
प्रचार मन्त्री
विश्वभारती अनुसधान परिषद्
ज्ञानपुर वाराणसी

आर्य वीर दल हरियाणा का ९वा प्रातीय महासम्मेलन २०, २१, २२ सितम्बर को कैथल मे होना निश्चित

पलवल। सावदेशिक आयवीर दल हरियाणा का नौवां प्रान्तीय महासम्मेलन इस वष २० से २२ सितम्बर तक श्रीमती इन्दिरा गाधी कन्या महाविद्यालय कैथल मे बडी धूमधाम से मनाया जाना निश्चित हुआ है। सम्मेलन के अध्यक्ष लाला राम गोपाल जी वानप्रस्थ प्रधान सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली होगे

शुक्रवार २० सितम्बर की रात्रि को आय वीर गोष्ठी तथा विशाल कवि सम्मेलन होगे। शनिवार २१ ९ ८५ को प्रात यज्ञ मे प्रो० राम विचार जी का प्रवचन होगा। साय ३ बजे आय वीरो की भव्य रली नगर के मुख्य मार्गों से गुजरेगी इस मे १००० आय वीर पूण गणवेश मे भाग लगे। रात्रि को राष्ट्रीय समस्याए और आयसमाज सम्मेलन होगा जिसमे प्रो० शेर सिंह जी (प्रधान आय प्रतिनिधि सभा हरियाणा) प० बाल दिवाकर जी हस (प्रधान सेनापति सावदेशिक आय वीर दल) आचाय सत्यप्रिय जी (हिसार) डा० रामप्रकाश जी (चण्डीगढ) भाषण दगे।

रविवार २२ ९ ८५ को प्रात प० शिवकुमार जी शास्त्री का प्रवचन यज्ञोपरान्त होगा। आय वीर दल और आय समाज सम्मेलन स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे होगा मुख्य वक्ता श्री बीरू राम जी प्रिंसिपल सवदानन्द जी श्री चन्द्रप्रकाश सत्यार्थी आचाय सत्यप्रिय जी होगे।

स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती यज्ञ के ब्रह्मा होंगे। सामा तथा गोष्ठी का सयोजन आचाय देवव्रत जी (उपप्रधान सेनापति सार्वदेशिक आय वीर दल) करगे। कवि सम्मलन का समायोजन डा० राणा प्रताप सिंह गन्नौरी करेंगे। सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री बाबूराम जी गुप्ता एडवोकेट होगे। सम्मेलन के सयोजक श्री हरीराम जी आय मण्डलपति रहेग

आप सभी इस महत्त्वपूर्ण सम्मेलन म सपरिवार एव मित्रो सहित भारी सख्या मे सादर निमन्त्रित है कृपया इस सम्मेलन म भाग लेकर आय शक्ति एव एकता का परिचय द। दल की तन मन धन से सहायता भी कर।

अजीत कुमार आय
मन्त्री आय वीर दल हरियाणा

आवश्यक सूचना

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के कायकर्ता महानुभाव उपदेशक भजनोपदेशक स त ० ५ बुधवार एव शनिवार को सभा कार्यालय अवश्य पहुंचने का ध्यान रख। वेदप्रचार व्यवस्थापक से सम्पर्क करके अपने कायक्रमो की जानकारी कर और वेदप्रचार अधिष्ठाता की आज्ञानुसार कायक्रमो पर समय पर पहुंच कर सम्पन्न कराय। आशा है अवश्य ध्यान रखा जाएगा

धन्यवाद।

व्यवस्थापक
अधिष्ठाता वेदप्रचार

शोधपूर्ण भव्य विशेषांक

सुदर्शन चक्रधारी, महान् भारत के प्रणेता, युग प्रवर्त्तक, रिपुदमन, गोपालनन्दन, तप और सयम के आदर्श, महान् राजनेता, महान् योगी, दीनबन्धु विश्वा-मित्र कर्मयोगी, अलौकिक दार्शनिक, आप्त पुरुष, योगेश्वर श्री कृष्ण जी महाराज की जन्माष्टमी पर आर्यसन्देश साप्ताहिक का एक भव्य शोधपूर्ण लेखो, वचनो गीतो से सुसज्जित विशेषाक ८ सितम्बर को प्रकाशित किया जा रहा है। आर्यसन्देश के ग्राहको को विशेषाक मुफ्त दिया जायेगा।

इसलिए जल्दी कीजिए, आर्यसन्देश साप्ताहिक का वार्षिक शुल्क २० रुपये या आजीवन २०० रुपये भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित करा लेवे।

पता—
सम्पादक आर्यसन्देश साप्ताहिक
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

वर्ष ९ अंक ४१ | रविवार १५ सितम्बर १९८५ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८६ | भाद्रपद २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २० रुपये | आजीवन २०० रुपये | विदेश में ५० डालर ३० पौंड

आर्यसन्देश विशेषांक का विमोचन एवं

खण्ड खण्ड भारत कोअखण्डित करने वाले महामानव का मधुर स्मरण

७ सितम्बर दिल्ली, आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली के तत्त्वावधान मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी धूमधाम से मनाई गयी। इस अवसर पर श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे अनेक वक्ताओ ने योगेश्वर श्री कृष्ण के पवित्र एव उदात्त जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। केन्द्रीय ससदीय मन्त्री श्री एच० के० एल० भगत ने आर्यसन्देश साप्ताहिक के योगेश्वर श्री कृष्ण विशेषाक का विमोचन किया। श्री भगत ने श्री कृष्ण की महानताओ का वर्णन करते हुए कहा, मुझे उनकी दार्शनिक मान्यताओ मे प्रगाढ श्रद्धा है। इस असार ससार मे तो कुछ दिन आगे कुछ दिन पीछे एक दिन सब को ही जाना है परन्तु यह स्मरण रखना चाहिए—नैन छिन्दन्ति शस्त्राणि शस्त्र इस आत्मा को नही काट सकते और न ही जला सकते, शरीर पर ही आघात हो सकता है। शरीर ही मरता मिटता है आत्मा नही। इसलिए यह मान्यता मनुष्य को शक्ति और साहस देती है। उन्होने आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के अनुयायियो द्वारा किये गए और किये जा रहे कार्यों की भूरि-भूरि प्रशसा की, श्री भगत ने बताया मैं कुछ समय पूर्व लाहौर गया था, मैं वहा डी०ए०वी० कालिज भी देखने गया, मैंने वहा के रजिस्टर में लिखा यह कालिज अब इस्लामिया कालिज बन गया है यह पहले डी० ए० वी० कालिज था जिसकी स्थापना महात्मा हसराज ने की थी। मैं इसी कालिज में पढा हूं। यदि यह डी० ए० वी० कालिज न होता तो न जाने कितने मुझ जैसे साधारण परिवार के लोग पढ ही न पाते। उन्होने सामयिक चर्चा करते हुए कहा—जिस भारत की सुदृढता के लिए महर्षि दयानन्द, महात्मा गाधी तथा अनेक बलिदानियों ने अपना सर्वस्व अर्पण किया है वह भारत सदा अखण्ड रहेगा उसे कोई तोड नही सकेगा।

श्री रामगोपाल शालवाले ने अपने वक्तव्य मे कहा, आज से पाच हजार वर्ष पूर्व चक्रधर श्री कृष्ण जी महाराज ने खण्ड-खण्ड हुए भारत को अखण्ड भारत किया था। आततायी राजाओ की क्रूरता से पिसती प्रजा को अपनी कुशलनीतियो से छुडाया था। आज आवश्यकता है श्री कृष्ण की नीतियो और महानताओ को अपनाने की

इस अवसर पर श्री प० जयप्रकाश आर्य प्रतिनिधि (भूतपूर्व) इमाम बेतिया एव यशपाल सुधाशु तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

आर्यसमाज दीवानहाल मे एक सप्ताह तक श्री महात्मा रामकिशोर द्वारा मनोहर एव प्रेरणाप्रद वेदकथा हुई तथा श्री गुलाबसिह राघव द्वारा मधुर भजन हुए। वेद सप्ताह के अवसर पर यजुर्वेदीय यज्ञ का भी आयोजन किया गया था जिसके ब्रह्मा श्री प० यशपाल सुधाशु तथा ऋत्विक श्री सुरेन्द्र शास्त्री एव श्री धर्मवीर शास्त्री थे।

आर्यसमाज का शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री से मिला

आर्यसमाज का शिष्टमण्डल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व मे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी से मिला और ज्ञापन दिया। इस ज्ञापन में कहा गया है कि सैनिको के सेवा कार्य में रहते समय कुछ तत्त्व उनकी सम्पत्ति आदि पर कब्जा कर लेते हैं। इसलिए सैनिकों को इस मामले में वैधानिक सरक्षण दिया जाये तथा इससे सम्बद्ध मुकद्दमो का निपटारा शीघ्र किया जाये। ज्ञापन मे यह भी अनुरोध किया गया कि पजाबी की लिपि देवनागरी की जाये। इससे पजाब में हिन्दी का विकास होगा। श्री रामगोपाल शालवाले ने आर्यसमाज दीवानहाल की शताब्दी का उद्घाटन करने का अनुरोध किया। प्रधान मन्त्री ने सिद्धान्तत: इस निमन्त्रण को स्वीकार करते हुए इस अवसर पर एक डाक टिकट जारी करने की सम्भावना पर भी विचार करने का आश्वासन दिया। श्री शालवाले ने काश्मीर की समस्या और उसके समाधान के लिए महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये। उन्होंने दिल्ली मे जनता शासन के समय पुरानी इमारतो के सामने सम्प्रदाय विशेष के लोगो को पूजा करने की अनुमति समाप्त करने का भी अनुरोध किया। □

सम्पादक—[illegible] 'सुधांशु' एम० ए० | व्यवस्थापक—डा० [illegible] | प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

आर्यसमाज सफदरजंग के वार्षिकोत्सव पर विशाल सम्मेलन

आर्यसमाज सफदर जंग इन्क्लेव नई दिल्ली में वेद सप्ताह के अवसर पर वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रातःकाल बृहद यज्ञ श्री डा० वाचस्पति के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। रात्रि में प० यशपाल सुधांशु (सम्पादक आर्य सन्देश) द्वारा अत्यन्त रोचक एवं आध्यात्मिक ज्ञान से भरपूर वेदकथा हुई, तथा श्री वेदव्यास के मधुर भजन हुए। रविवार ८ सितम्बर को विशाल सम्मेलन का समायोजन हुआ। इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति श्री डा० सत्यकेतु तथा कुलपति श्री डा० सत्यकाम वर्मा का भव्य स्वागत हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता श्री डा० सत्यकेतु ने की। सम्मेलन में डा० सत्यकाम वर्मा प० जैमिनी शास्त्री, श्री डा० वाचस्पति श्री उपाध्याय श्री प्रेमचन्द्र श्रीधर श्री सूर्यदेव जी आदि वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

डा० सत्यकाम वर्मा ने कहा—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रति जो आर्य जगत में एक आस्था बनी हुई थी। स्वामी श्रद्धानन्द ने जो इस गुरुकुल के माध्यम से स्वप्न देखा था मैं उसी स्वप्न को पूर्ण करने का, गुरुकुल विश्वविद्यालय गौरव को पुनः स्थापित करने का हरसम्भव प्रयत्न करूंगा।

प० जैमिनी शास्त्री ने श्री कृष्ण के मोह रहित मद रहित स्वरूप का मनोरम व्याख्या से चित्रण किया। डा० वाचस्पति ने श्री कृष्ण के दार्शनिक, नीतिमान योद्धा आदि गुणों का भरपूर व्याख्यान किया। श्री प्रेमचन्द्र श्रीधर ने भी अपना ओजस्वी भाषण देते हुए कहा आर्यसमाज के अंगड़ाई लेने का समय आ गया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा—श्रीकृष्ण का वास्तविक स्वरूप हिन्दू समाज से खो गया है। केवल बाल्यकाल की लीलाओं को पौराणिक जगत् याद करता है। उनका हथियारों से सजा आततायियों को ललकारता स्वरूप कौन याद करेगा? उनका अखण्डित भारत को एक भारत करने का महान् कौशल कौन याद करेगा? सारथी बनकर अर्जुन को अन्याय से जूझने की महान् प्रेरणा देने वाले दार्शनिक को कौन याद करेगा? यह सही स्वरूप स्मरण करने वाला तो आर्यसमाज है और महर्षि दयानन्द के अनुयायी ही हैं।

आर्यसमाज मन्दिर के प्रधान श्री हरबन्स लाल खेर ने मन्दिर द्वारा चलायी जा रही गतिविधियों का उत्साहवर्द्धक परिचय दिया।

राजधानी में वेदप्रचार सप्ताह की धूमधाम

आर्यसमाज शालीमार बाग ने दिल्ली में वेद सप्ताह के अवसर पर अनेक विद्वानों को आमन्त्रित किया। प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री के द्वारा एक सप्ताह वेदकथा हुई। श्री ब्रह्मप्रकाश वागीश यज्ञ के ब्रह्मा थे श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर श्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री डा० महेश विद्यालंकार डा० धर्मपाल महामन्त्री दिल्ली आ० प्र० सभा तथा डा० रघुवीर वेदालंकार आदि वक्ताओं के प्रवचन हुए।

भव्य जुलूस

आर्यसमाज राणा प्रताप बाग दिल्ली की ओर से श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर एक भव्य जलूस का आयोजन किया गया जिसमें अनेक आर्यसंस्थाओं ने भाग लिया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भी नेतृत्व एवं सहयोग दिया गया।

नवीन आर्यसमाज दयानन्द विहार का वेदसप्ताह

आर्यसमाज दयानन्द विहार दिल्ली में २७ अगस्त से १ सितम्बर तक वेदकथा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प० यशपाल सुधांशु के द्वारा वेदप्रवचन हुए। क्षेत्र की धार्मिक जनता ने अगाध श्रद्धा से बढ़-चढ़कर भाग लिया।

आर्यसमाज कृष्णानगर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

आर्यसमाज कृष्णनगर में जन्माष्टमी के अवसर पर अनेक वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये। सभा प्रधान श्री सूर्यदेव ने श्री कृष्ण के उज्ज्वल चरित्र का श्रद्धालु जनता को स्मरण कराया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किये जा रहे उत्साह वर्द्धक कार्यक्रमों का भी परिचय दिया।

आर्यसमाज सीताराम बाजार दिल्ली

इस आर्यसमाज में डा० वाचस्पति उपाध्याय की मनोरम वेदकथा हुई वेद सप्ताह के हो अन्तर्गत प्रातःकाल यज्ञ का भी आयोजन किया गया।

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली

महात्मा रामकिशोर वैद्य की गीता एवं वेद की पुनीत शिक्षाओं पर आधारित मधुर शैली में प्रेरक कथा हुई। हैदराबाद सत्याग्रह के बलिदान होने वाले वीरों का भी स्मृति दिवस मनाया गया।

आर्यसंदेश का संकल्प

आर्यसंदेश की व्यवस्था तथा लेखों के स्तर में सुधार के लिए तथा वितरण संख्या में वृद्धि करने हेतु एक बैठक बुधवार २१ अगस्त १९८५ को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड में सभाप्रधान श्री सूर्य देव जी की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में डा० धर्मपाल डा० गणेशीलाल श्री विमलकान्त शर्मा श्री राजेन्द्र दुर्गा श्री अजय भल्ला, श्री श्रद्धानन्द प० यशपाल जी सुधांशु श्री रामशरण दास आर्य, श्री आचार्य रामकिशोर वैद्य श्री वेदव्यास श्री आसाराम आदि कार्यकर्त्ताओं और विद्वानों ने भाग लिया।

आर्यसंदेश ही वस्तुतः दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वेद प्रचार के लिए किये जा रहे कार्यों तथा अन्य समाज कल्याण के लिए किये जा रहे कार्यों का यथातथ्य चित्र प्रस्तुत कर सकता है यह इस संस्था का बिगुल है। यह इस संस्था का शंख है जो लोगों का ध्यान आकर्षित करता है कार्यकलापों का विवरण प्रस्तुत करता है तथा अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं को प्रशस्त पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। आर्य संदेश में सुधार की बात प्रारंभ करने से पूर्व महामन्त्री डा० धर्मपाल ने सम्पादक श्री यशपाल जी सुधांशु का निष्ठापूर्वक कार्य करने और आर्यसंदेश के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए सत्प्रयास करने के लिए धन्यवाद दिया और बताया कि यह बैठक जहां इस बात पर विचार करने के लिए है कि आर्य संदेश किस प्रकार मनुष्य के शारीरिक आत्मिक और सामाजिक कल्याण के लिए कार्य करे। इस बात पर भी विचार करने के लिए है कि किस प्रकार इसको आत्म निर्भर बनाया जाये। बड़े-बड़े लक्ष्य रखने की आवश्यकता तो है पर आधार भूमि की दृढ़ता को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। हम तभी कूद सकते हैं जब हमारे पैर मजबूत जमीन पर टिके हों।

इन बातों पर विचार विमर्श के पश्चात निम्नलिखित निर्णय सर्व-सम्मति से लिये गये।

१ इसकी पृष्ठ संख्या १२ ही होनी चाहिए।

२ समय समय पर विशेषांक निकाले जाने चाहिए। विशेषांक ऐसे आकार में हों कि लोग उसे संभाल कर रख सकें। साथ ही उनकी सामग्री भी संग्रहणीय हो।

३ आर्य संदेश में विभिन्न स्तंभ प्रारंभ किए गये हैं। यह अच्छा प्रयास है। स्वास्थ्य संबन्धी परिचर्चा भी प्रारंभ की जाये। इसके लिए डा० विवेकपाल, वैद्य ओंकार दत्त, वैद्य प्रहलाद दत्त, वैद्य नित्यानंद आदि की सेवाएं प्राप्त की जा सकती हैं।

४ इसकी आर्थिक स्थिति में सुधार आवश्यक है। आर्यसंदेश के व्यवस्थापक, सभा के सभी अधिकारी श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्री अजय भल्ला,

(शेष पृष्ठ ३ पर)

समाचार सन्देश

जैन समाज भी आर्य प्रचारक से प्रभावित हुए बिना न रह सका

निजाग (अलवर) स्थानीय आर्यसमाज के वेदप्रचार सप्ताह का शुभारम्भ वैदिक प्रवक्ता डाक्टर आनन्द सुमन (पूर्व नवाब छतारी) ने किया। डा० सुमन ने वेद के सन्देश से स्थानीय जनता का मन मोह लिया, वेदकथा के सुन्दर प्रवचनो से डा० सुमन ने स्थानीय स्तर पर आर्य-समाज की ज्योति को प्रज्वलित किया आश्चर्य तो यह कि आर्यसमाज के विरोधी विचारधारा के जैन समुदाय ने भी डा० सुमन को अपने प्रसिद्ध तीर्थस्थल देहरा मन्दिर पर आमन्त्रित किया व उनके विचार सुने, डा० सुमन ने अपने उद्बोधन में कहा कि वद दो अरब वर्ष से सनातन सस्कृति का सन्देश मनुष्य मात्र को प्रदर्शित कर रहा है। वेद न नरबलि को मानता है न पशु बलि को यह एक दुष्प्रचार है। हमे सारे सम्प्रदायो के मोह से निकलकर वेद की विचारधारा को फैलाना है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड,

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह

दिनाक ७ सितम्बर ८५ को साय ७ ०० बजे से ११-०० बजे शनिवार को आर्यसमाज आर्यपुरा सब्जी मडी दिल्ली-६ के प्राङ्गण में बडी धूमधाम के साथ मनाया गया। जिसमें वैदिक सिद्धान्तो के आधार पर योगीराज कृष्ण जी का आदर्शचरित धर्म प्रेमी सज्जनो के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। साथ मे श्रीकृष्ण जी के जीवन पर झाँकिया भी आयोजित की गई। योगीराज के चरित से सम्बन्धित भजनो का अनोखा कार्यक्रम हुआ। अनेक भजन मण्डलियो ने कई उच्चकोटि के विद्वानो ने जिनका लक्ष्य जनता के मध्य योगीराज का सच्चा आदर्श चरित पहुचाना है पधार कर उत्तम भाषण किये। इस कार्यक्रम से पूर्व एक बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसका सरक्षकत्व पुरोहित धर्मेन्द्र शास्त्री विद्यावाचस्पति जी ने किया।

राजवीर आय मत्री
आर्यसमाज आयपुरा
सब्जी मण्डी, दिल्ली-७

प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा हरितृतीया पर्व हर्ष उल्लास से सम्पन्न

हरितृतीया पर्व हर्षोल्लास और बडी धूमधाम से बुद्धा गार्डन के विशालतम प्रागण मे मान्य बहिन सत्यवती जी वि नकृता की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

आज के पर्व के मुख्य आकर्षण थे बच्चो और नवयुवतियो द्वारा अधिक से अधिक दौड मे भाग लेना और पुरस्कार प्राप्त करना।

बहिनो ने बहुसख्या मे यथा समय पहुंचकर अपने सगठन का परिचय दिया। किलकारियाँ भरती बच्चो की टोलिया फूली नही समाती थीं। ऐसा लग रहा था जैसे कोई मेला लगा हो। परस्पर प्रीतिभोज की अपनी हो विधा थी।

सभा अधिकारियो ने बड उत्साह से भाग लेकर पुरस्कार प्रदान किये। जिसमे सभा प्रधाना सरला जी महता मान्य बहिन सुशीला जी आनन्द, तारा वैद्य, चाद रानी अरोडा इत्यादि।

१०० से भी अधिक प्रतियोगिता मे बहिनो ने भाग लिया। प्रत्येक कार्यक्रम यथासमय सम्पन्न हो गया इन्द्रदेव ने महती कृपा की। यज्ञ के समय नन्ही-नन्ही बू दो से आशीर्वाद देकर फिर विश्राम करते रहे।

सभा मन्त्रिणी
प्रकाश आर्या

आर्यसमाज शकरपुर दिल्ली में बृहद् यज्ञ

शकरपुर क्षत्र के धार्मिक जनो द्वारा आर्यसमाज के प्रागण मे विराट् यज्ञ का आयोजन हुआ, जिसमे प० धर्मवीर शास्त्री ब्रह्मा एव प्रवचनकर्ता थे। ८ सितम्बर को जन्माष्टमी का पर्व भी मनाया गया जिसमें स्वामी स्वरूपानन्द ने ओजस्वी कविताओं द्वारा कृष्ण चरित का बखान किया।

(पृष्ठ २ का शेष)

आर्यसन्देश का सकल्प

श्री सुरेन्द्र हिन्दी श्री सुशील महाजन श्री विमल कान्त शर्मा श्री ओमप्रकाश सुनेजा आदि आजीवन सदस्य बनाकर तथा विज्ञापन सहयोग देकर दिलवाकर आर्य सदेश के कोष की वृद्धि मे विशेष सहयोग द। सभा के सभी उपदेशक प्रतिनिधि तथा आर्यसमाजो के मत्री स्वय आजीवन सदस्य बन और दिसम्बर ८५ तक कम से कम दस सदस्य अवश्य बनाये।

५ आजीवन सदस्यो से प्राप्त धन अलग खाते मे रखा जाये जिसे वर्ष के बाद आर्यसदेश निमित्त स्थायी कोष मे परिवर्तित कर दिया जाये। उसका ब्याज केवल खर्च किया जाये।

६ समाचार पत्र के लिए कागज के कोटा हेतु आवेदन पत्र दे दिया जाये। इस कार्य को श्री राजेन्द्र दुर्गा (सयोजक) श्री विमल कान्त शर्मा और श्री सुरेन्द्र हिन्दी के सहयोग से करगे।

७ डी ए.वी पी के विज्ञापन प्राप्त करने की सारी औपचारिकतायें पूरी की जा चुकी हैं। श्री विमल कान्त शर्मा (सयोजक) इस कार्य को शीघ्र पूरा कर दगे।

८ बिना पूव भुगतान के आय सदेश को पोस्ट करने को अनुमति मिल चुका है इसके लिए सभी ने प्रसन्नता यक्त की

९ आयसदेश का सदस्यता शुल्क समाप्त हाने पर ग्राहको को जा पत्र भजा जाये उसका भाषा शिष्ट होनी चाहिए

१० आय प्रतिनिधि सभा की सभी बैठको मे आर्यसदेश का विषय अवश्य रखा जाये

११ आर्यसदेश के श्री कृष्ण जन्माष्टमी विशेषाक के लिए श्री सुरेन्द्र हिन्दी (सयोजक) श्री राजेन्द्र दुर्गा श्री सुशील महाजन, श्री श्रद्धानन्द, श्री रामशरण दास आर्य डा० गणेशीलाल तथा सभी मत्री और उपदेशक, विज्ञापन प्राप्त करने मे सहयोग करगे।

१२ आर्यसदेश मे वैवाहिक विज्ञापन भी दिये जाय। इसके लिए पूरा प्रारूप श्री राजेन्द्र दुर्गा उपलब्ध करायेंगे। सभी आर्यसमाजो को एक परिपत्र भेजा जाये कि उनके यहाँ जो भी शादी हो उन्हें आर्यसदेश का वार्षिक ग्राहक अवश्य बनाया जाये।

१३ आर्यसदेश दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का अग है। अत इसमे आर्यसमाज के आर्य नेताओ और सभा की सूचना विशेष सज्जा के साथ प्रकाशित की जानी चाहिएँ।

शान्ति पाठ और सभा प्रधान एव अन्य उपस्थित सज्जनो के धन्यवाद के पश्चात बैठक समाप्त हुई। □

निर्वाचन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर महानगर की अन्तरग सभा का वार्षिक निर्वाचन दिनाक ११ अगस्त १९८५ को आर्यसमाज सीसामऊ मे श्री पुत्तीलाल यादव की अध्यक्षता म सम्पन्न हुआ, जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान प० विजयपाल शास्त्री
उपप्रधान श्रीमती सरला चौधरी
" श्री आशादीन वर्मा
" श्री गोरखनाथ गुप्ता
मन्त्री डा० हरपालसिंह पी०एच०डी०
उपमन्त्री श्रीमती डा० आशा रानी राय पी०एच०डी०
" श्री हरिश्चन्द्र साहनी
" श्री रिपुदमन कुमार भल्ला
कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसादआर्य
सह० डा० अमरपाल सिंह पी०एच०डी०
लेखानिरीक्षक श्री पुत्तीलाल यादव

हरपाल सिंह
मन्त्री
आर्य उपप्रतिनिधि सभा
कानपुर महानगर

स्वतन्त्रता दिवस समारोह

बिडला आर्य गर्ल्स सीनियर सैकेण्डरी विद्यालय का स्वतन्त्रता दिवस समारोह माननीय वेदप्रकाश खुल्लर की अध्यक्षता मे दिनाक १४ ८ ८५ बुधवार को आर्यसमाज बिड़ला लाइ स के प्रागण मे बडी धूमधाम से मनाया गया। ध्वजारोहण कार्यकारिणी पार्षद श्री खुल्लर द्वारा सम्पन्न हुआ। विद्यालय की छात्राओ ने देशभक्ति पूर्ण सास्कृतिक कायक्रम प्रस्तुत किया। एक छात्रा ने स्वामी दयानन्द की अटूट देशभक्ति एव राष्ट्र प्रम पर अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि एव आगन्तुको द्वारा कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशशा की गई।

प्रिसिपल
बिडला आर्य गर्ल्स सीनियर सैके० स्कूल बिडला लाइन्स दिल्ली ७

वर्ष ६ अंक ४४ | रविवार २२ सितम्बर १९८५ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८६ | भाद्रपद २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१
मूल्य एक प्रति ८ पैसे | वार्षिक २० रुपये | आजीवन २०० रुपये | विदेश में ५० डालर ३० पौंड

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के कुलाधिपति डा. सत्यकेतु एवं कुलपति श्री सत्यकाम वर्मा

दिल्ली सभा द्वारा स्वागत समारोह

श्री सत्यकाम वर्मा

रविवार १५ सितम्बर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वाधान में आर्यसमाज हनुमान् रोड नई दिल्ली में डा० सत्यकेतु एवं डा० सत्यकाम वर्मा के स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा—यह प्रसन्नता का विषय है कि गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं कुलपति अपने ही गुरुकुल के स्नातक तथा लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान है। गुरुकुल विश्वविद्यालय ने समस्त विश्व को सुयोग्य विद्वान लेखक एवं वक्ता प्रदान किये हैं। एक समय तक धार्मिक सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में गुरुकुल के स्नातकों का वर्चस्व रहा। इस समय फिर हमारे सामने चुनौती है। वही खोई प्रतिष्ठा फिर पाने को मुझे आशा है। श्री सत्यकेतु जी और श्री सत्यकाम जी अपने कार्यों और प्रयासों से इस संस्था को उसी उच्च स्थान तक पहुंचाने में सक्षम हो सकेंगे। श्री शालवाले ने हंसते हुए कहा—आप दोनों के गले में पड़ी हुई मालाएं जितनी हैं और जितनी इनकी पत्तियां हैं उतने ही कर्त्तव्यों का बोझ आप लोगों के कन्धों पर है।

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह ने दोनों विद्वानों की विद्वत्ता और स्वभाव एवं कार्य कुशलता की प्रशंसा की तथा गुरुकुल के भविष्य की कुशल कामना की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा—यह माना कि मार्ग दुर्गम है और कांटों व पत्थरों से भरा हुआ है। कुशलता और योग्यता इसी में है कि बेधड़क निडर और उत्साहित होकर विपरीत परिस्थितियों में भी कार्य पूरा कर लिया जाये। इस समय प्रत्येक आर्य नर नारी का ध्यान गुरुकुल के वर्तमान और भविष्य की ओर लगी हुई है। गुरुकुल में केवल १० विद्यार्थियों का होना स्थिति की गम्भीरता को प्रकट कर रहा है। झगड़े और मुकद्दमेबाजी तथा अन्य प्रकार की समस्याएं वहां अब तक है। हमारे मान्य कुलाधिपति और कुलपति हम सब की आशाओं को विश्वास में बदल पायेंगे मैं ऐसी शुभ कामना करता हूँ।

श्री रामलाल मलिक ने सभा का ध्यान आर्य विद्वानों और पुरोहितों के सम्मान की ओर दिलाया।

दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल ने स्वागत करते हुए हार्दिक बधाई दी और कहा—सबसे पुरानी और सबसे अच्छी हमारी गुरुकुल शिक्षा पद्धति है। इसका जितना प्रचार प्रसार होगा उतना ही हम ऋषि के ऋण को चुका पायेंगे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने गुरुकुल की गौरव गरिमा का बखान करते हुए भविष्य के उज्ज्वल हो सकने की मंगल कामना की।

डा० सत्यकेतु एवं डा० सत्यकाम ने अपने शालीन शब्दों में वक्ताओं की आशाओं के अनुरूप कार्य करने का विश्वास दिलाया। इस अवसर पर अनेक गण्यमान्य जन उपस्थित थे। □

स्व. श्री देवव्रत धर्मेन्दु—एक युग की कहानी का अन्त

वयोवृद्ध वैदिक धर्म के सेनानी श्री देवव्रत धर्मेन्दु का १६ सितम्बर को निधन हो गया। धू-धू करती चिता की लपटों में उनके पार्थिव शरीर के साथ एक युग की कहानी समाप्त हो गयी। जमुना के तीर पर वैदिक मन्त्रों की पवित्र ध्वनियां और अन्त्य संस्कार में सम्मिलित नगर आर्यजनों के बीच अचानक वह सरल कर्मठता का प्रतीक चेहरा मेरे मानस पटल पर उभरा। एक-एक कर उनके कार्यों से जुड़ी अनेक स्मृतियां रह-रह कर याद आने लगीं।

महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से लेकर स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हंसराज के निर्देशों पर शुद्धि तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के कार्यों तक उनके जीवन की एक प्रेरक मधुर स्मृति है। संस्थाओं के सिंहासनवाद और सत्तावाद से अलग हटकर वे धर्म प्रचार वेद प्रचार आर्य भाषा के उत्थान राष्ट्र निर्माण और युवकों में चरित्र निर्माण के महान् कार्य में लगे रहे। वे दल एवं वर्ग से ऊपर रहे, सबको अपना प्यार बांटते रहे। शिमला के पहाड़ी गांवों में घूम-घूम कर उन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार किया। साथ ही पहाड़ी क्षेत्रों की अनेक समस्याओं के निदान का भी। उनका कार्य स्तुत्य है।

दिल्ली में रहते हुए प्रचार प्रसार के उनके कार्य। में आर्य युवक परिषद के माध्यम से आर्यसमाज के क्षेत्र के लिए कर्मठ और चरित्रवान युवक तैयार करने का उनका संकल्प काफी हद तक सफल हुआ। एक कुशल वक्ता होने के साथ और अनेक सम्मेलनों में अपनी विद्वत्ता का परिचय देते हुए उनके

(शेष पृष्ठ ११ पर)

जीवन सार्थक और श्रेष्ठ कैसे हो ? आत्मचिन्तन के क्षण

आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

केन उपनिषद में एक कथा आती है। पृथ्वी अप तेज वायु आकाश आदि इन तत्त्वों में अभिमान आ गया कि हम ही सर्वशक्तिमय है। वह अपने स्वामी और निर्माता को भूल गये। उन की जांच करने और उनका अभिमान तोड़ने के लिए ब्रह्म' शक्ति ने उनकी परीक्षा ली। ब्रह्म ने अपनी दी हुई शक्ति को इन पंच तत्त्वों से छीन लिया। अब पांचों तत्त्व जड़वत् एकदम निश्चेष्ट हो गये। उन्हें अपनी भूल जब ज्ञात हुई तब उन्होंने क्षमा मांगते हुए ब्रह्म शक्ति से प्रार्थना की। इसके पश्चात् पृथ्वी अप तेज वायु आकाश पुन सशक्त हो गये। ठीक यही स्थिति आज के मानव की है। अभिमान में फंस कर वह अपने को शक्ति का भण्डार समझने लगता है तभी दुख कष्ट प्राप्त करता है।

प्रभु शक्ति का विनम्रता से स्मरण करते रहना चाहिए फलत वह प्रसुप्त शक्ति पुन जागृत हो जाती है।

भीष्म की साधना

महाभारत शान्तिपर्व के अनुसार स्वच्छा से मृत्यु का जब वरण वृद्ध पितामह भीष्म रण शय्या पर मृत्यु के लिए अहर्निश तप साधना रत पितामह द्वारा दीर्घ जीवन पर आधारित प्रकाशप्रद उपदेश श्रवण करने जन समूह एकत्र होता था। इस दीर्घकाय शान्तिपर्व में इन्हीं सब अनुपम उपदेशों का संग्रह है। आत्मिक शुद्धि के क्या उपाय है। इसके उत्तर में पितामह कहते हैं—

आत्मा नदी संयमपुण्यतीर्था,
सत्योदका शीलतटा दयोर्मि।
तत्राभिषेकं कुरु पाण्डुपुत्र
न वारिणा शुध्यति चान्तरात्मा॥

यह आत्मचिन्तन रूप नदी, जिसके दोनों किनारे संयमरूप सत्यरूपी जल, शील रूपी घाट है। हे पाण्डुपुत्रो! वहीं स्नान करो जिससे अन्तरात्मा शुद्ध हो जायेगा, केवल जल द्वारा आत्मशुद्धि नहीं हो सकती।

जीवन में छिद्र

वैदिक धर्म में पवित्र जीवन और उसके संरक्षण और पवित्रता का साधन हृदय को श्रेष्ठ गुण का भण्डार बनाने पर विशेष बल दिया गया है—

ओ३म यन्मे, छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मेतद्दधातु। शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः॥

यजु० ३६।२

इसका अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्द 'आर्याभिविनय' में कहते है—हे परमेश्वर! मेरे हृदय(प्राणात्मा) मन बुद्धि, विज्ञान विद्या और सब इन्द्रिय इन इनके छिद्र के विकार इनको निर्मूल करके सत्य, धर्मादि में स्थापन आप ही करो। आप सब भुवनों के पति हैं। इसीलिए आपसे बार बार प्रार्थना है कि सब दिन हम लोगों पर कृपा दृष्टि से कल्याणकारक हो। हे परमात्मन! आपके बिना हमारा कल्याणकारक कोई नहीं है। हमको आप ही का सब प्रकार का भरोसा है, सो आप ही पूरा करेंगे।

जैसे नौका में छोटा छेद भी डुबो देने में समर्थ हो सकता है वैसे ही मन व आत्मा में भी कोई स्वल्प पाप ही धीरे धीरे बढ़ता हुआ जीवन नौका को डुबो देने में समर्थ हो सकता है महाभारत में नारद श्री कृष्ण संवाद में नारदमुनि पाप छिद्र के निष्कासन के दो प्रकार के उपाय बताते है—

दो उपाय नारदमुनि द्वारा

१ परिमार्जन और अनुमार्जन। पहले प्रकार के उपाय के अन्तर्गत क्षमा सरलता और कोमलता के द्वारा पाप निवारण होता है और दूसरे साधन अनुमार्जन के अन्तर्गत सेवा सत्कार, विनम्रता और समर्पण द्वारा हृदय में सद्गुणों के प्रति प्रीति, श्रद्धा विश्वास के संकल्प उदित और परिवर्धित होते हैं।

अर्थ शौच सर्वप्रथम

जीवन को प्रथम पवित्र बनाने के लिए सभी ऋषियों ने जितने साधन बताये हैं उनमें मुख्य अर्थ 'शौच" है।

सर्वेषामेव शौचाना
अर्थशौचं परम स्मृतम्।
यो अर्थेन शुचिर्हि स
शुचि न मृद्वारि शुचि॥

सब प्रकार की शुद्धता में अर्थ शुचि अर्थात् धन सम्पत्ति इत्यादि की शुद्धता सर्वोपरि है। जो व्यक्ति इस शुद्धता का पालन करता है वह वास्तविक शुद्ध है

मनु कहते है कि जल से शरीर शुद्ध होता है मन की पवित्रता सत्य व्यवहार, आत्मा की पवित्रता अध्यात्मविद्या और तपोमय जीवन तथा विचार और मानसिक चिन्तन के साथ स्वाध्याय तथा शास्त्र अध्ययन से होती है। युधिष्ठिर के एक प्रश्न के उत्तर में भीष्म कहते हैं कि तीर्थो में श्रेष्ठ तीर्थ विशुद्ध हृदय ही है। पवित्र वस्तुओ में अति पवित्र विशुद्ध हृदय ही है। श्रेष्ठ जिसे आचरण में लाये वह आचरण सर्वश्रेष्ठ है। इसीलिए गीता में भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि श्रेष्ठ पुरुष जिस प्रकार आचरण करते है अन्य व्यक्ति उसी का अनुकरण करते हैं।

सदाचार सम्बन्धी नियम पालन जीवन पद्धति के लिए सन्त कबीर के शब्दों में और पवित्रता के मार्ग पर चलने के लिए सदा सावधान और जागरूक रहना होगा। कबीर कहते है—

तेरी गठरी में लागे चोर बटोहिया का सोवे। जागु सवेरा बाट घनेरा फिर नहो लाग जोर। भव सागर इक नदी बहत है, बिनु उतरे जाये बोर।

कहत कबीर सुनो भाइ साधो। जागत कीज भोर।

वेद के शब्दों में—

जो जागता है उसे ही ऋचाएँ चाहती है जो जागता है उसे ही सामवेद प्राप्त होता है, जो जागता है उसे ही प्रभु कहते हैं कि मैं तुम्हारा ही मित्र हूँ। महर्षि दयानन्द ने विषपान करके भी हमे जगाया पर आज हम उस ऋषि की अमृतवाणी सुन करके भी नहीं जाग रहे है। जाग कर ही हम ऋषिऋण से मुक्त हो सकते है

उठ जाग जाग रे स्वाभिमान

उत्तम चन्द शरर एम० ए०

मेरे मानस की अमर ज्योति, मेरे जीवन के अमर प्राण
उठ जाग

तेरे बल वैभव का न पार, तेरी शक्ति का क्या बखान ?
तेरे माथे की भृकुटि से रिपुदल थर थर कम्पायमान
उठ जाग जाग रे

तू श्री कृष्ण का चक्र, शिवा की असि राम का धनुष बाण
राणा प्रताप का कवच तू ही, गोविन्द सिंह का चण्डी गान
उठ जाग

तू जागे तो जीवन जागे, तू सोये तो नर मृत समान
तू प्राणी का प्रेरणा स्रोत, तुझ बिन प्राणी केवल मसान
उठ जाग

तेरी हुंकृति से जगता है, मानव का सुप्त वैभव महान्
तुझ बिन अमृत भी गरल तुल्य, तू दे तो विष भी सुधा पान
उठ जाग जाग रे स्वाभिमान

आर्यवीर दल की आवश्यकता

लेखक—ओमप्रकाश त्यागी

आज ससार अशान्ति का घर बना हुआ है। पशुता इस मे खुलकर ताण्डव नृत्य कर रहा है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को निगलने का प्रयत्न कर रहा है। एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय का विनाश करने पर तुला है। इस पागलपन ने भगवान् की सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ देन 'मनुष्य' का मूल्य दो कौडी कर दिया है। ईश्वर पुत्र मनुष्य के जीवन से आज, लोग बनाए हुए पत्थर के भवनो, मन्दिरो और मस्जिदो का मूल्य अधिक समझते हैं। मातृ-शक्ति जिस की गोद मे बैठकर अमृत पिया है, आज लोग उसी की टांगे पकड कर बाजारो मे घसीटते फिरते है और उसे नाना प्रकार अपमानित करते हैं। बच्चे और बूढ़ तक इस मूर्खाग्नि के ईंधन बन रहे है। इतना ही नही, इस पागलपन के प्रचार करने वाले अथवा इन पागलो के सरदारों को लोग देवता समझते है और उन्हे बहुत बडा राजनीतिज्ञ (Politician) कह कर पुकारते हैं। आज जो व्यक्ति जितना ही बडा मक्कार, झूठा, धोखेबाज तथा निर्दयी होता है, वह उतना ही बडा नेता समझा जाता है। ये धूर्त नेता अपना पशुता पर राष्ट्रीयता तथा धर्म का मुलम्मा (पानी) चढाकर साधारण जनता को अन्धा बना रहे है।

आखिर यह सब क्यो हो रहा है? इसका विरोध क्यो नही किया जाता? आज क्या बड-बडे सम्पादक अपने पत्रो मे इस पशुता का प्रोत्साहन दे रहे है? इन समस्त प्रश्नो के उत्तर की खोज मे यदि मनुष्य ध्यानावस्थित होकर विचार करे तो वह एक ही परिणाम पर पहुचेगा कि आज ससार मे ऐसे श्रेष्ठ वीर पुरुषों का अभाव है जो सत्य की रक्षार्थ गुण्डो का दमन कर सके। दूसरे शब्दो मे आज ससार मे आर्यवीर तथा आर्यवीर दल का अभाव है। किसी नाम विशेष से द्वेष होने के कारण बहुत से साथियो को शायद मेरा यह बात अखरेगी परन्तु बात सत्य है। आज नही तो कल उन्हे यह सत्य स्वीकार करना ही पडेगा। नाम मे भले ही कोई परिवर्तन करने की चेष्टा करे परन्तु इस सत्य से वह कदापि विमुख नही हो सकता।

ससार मे मुख्यत आज तीन प्रकार के व्यक्ति पाये जाते हैं। पहले गुण्डे, दूसरे शरीफ हिजडे तथा तीसरे वीर पुरुष गुण्डो की परिभाषा अथवा उनके स्वरूप का वर्णन मै आरम्भ मे ही कर चुका हू। ये स्वार्थान्ध हैं और अपने स्वार्थ की पूर्ति समस्त उचित तथा अनुचित उपायो से करते रहते हैं। राष्ट्र-उन्नति, धर्म रक्षा तथा विश्व शान्ति इनके मुख्य नारे हैं, और इन्हीं श्रेष्ठ नारो की आड मे ये अपने समस्त कुकर्म करते हैं। इन गुण्डो के एकदेशीय ही नही अपितु सार्वभौमिक सङ्गठन बने हुए है। इन के पास अतुल सम्पत्ति साधन तथा सेनाएं है सभो के स्वार्थ आपस मे टकराते रहते हैं जिनके परिणामस्वरूप समय-समय पर युद्धाग्नि भडकती रहती है।

शरीफ हिजडे वे है, जिनके हृदय मे भलाई से प्रेम तथा बुराई से घृणा है परन्तु उनको यह घृणा उनके हृदय को सीमा का कभी उल्लङ्घन नही कर पाता, और ना हो उस मे उल्लङ्घन करने का साहस है। वे गुण्डो को बुरा ही नहो समझते अपितु हृदय से उनका विनाश चाहते हैं, परन्तु उन मे गुण्डो का सामना करने का साहस नही है। वे मृत्यु से भय खाते हैं, न इनका कोई सङ्गठन है, ना ही इनके पास यथेष्ट धन तथा साधन है।

तीसरे वीर पुरुष है, जो मृत्यु को कुछ नही समझते। जिन मे विरोधात्मक शक्ति कूटकूट कर भरी है। परन्तु इनके हृदयो मे गुण्डो के विनाश की उमङ्ग नही है। इनमे विद्या का अभाव है, जिसके परिणामस्वरूप वे गुण्डो की चालाकियो को न समझकर उल्टे उनके शस्त्र बन जाते हैं। इन का भोलापन इनकी शक्ति का दुरुपयोग करा रहा है। धन तथा साधन इनके पास हैं ही नही, जिसके कारण इनका सगठन होना कठिन है। दूसरे जब इनके हृदय ही भाव शून्य है तो फिर इनके सगठन का प्रश्न ही कैसे उठ सकता है।

अनुपात के विचार से ससार मे गुण्डे पिचहत्तर, शरीफ हिजडे बीस तथा वीर पुरुष पाच प्रतिशत हैं। इस प्रकार आज दुनिया मे गुण्डो का एकछत्र राज्य है। इन्हीं के दमन का प्रश्न आज ससार के भले मनुष्यो के मस्तिष्क चाट रहा है। यह बात दृढता के साथ कही जा सकती है कि इस समस्या का हल शरीफ हिजडे या मूर्ख वीर पुरुष कदापि नही कर सकते। ससार को आज ऐसे पुरुषों की आवश्यकता है, जिनके हृदय मनुष्यता से भरे हो। 'जीओ और जीने दो" जिन का नारा हो। अन्याय तथा अत्याचार का विरोध ही नही अपितु इन का विनाश करने का जिनमें साहस हो। अपने इस लक्ष्य की पूर्ति मे जिन्हें अपने सर्वस्व को बाजी लगाने की उमङ्ग हो, अर्थात् ससार को ऐसे श्रेष्ठ वीर पुरुषों की आवश्यकता है, जिनके हृदय और मस्तिष्क दोनों ठीक हों, बुद्धि तथा शक्ति का जिनमे समन्वय हो। आवश्यकता है। आज एक ही देश के नही अपितु ससार भर के श्रेष्ठ पुरुषों के एक दृढ सगठन की आवश्यकता है, जिस के द्वारा ससार को गुण्डो से रहित करके विश्व शान्ति की स्थापना की जा सके।

ऐसे ही श्रेष्ठ वीर पुरुषो के सगठन के लिए 'आर्यवीर दल' की रचना हुई है। इस का यह नाम भी इसी लक्ष्य को दृष्टि मे रखकर रखा गया है। मेरा दृढ विश्वास है कि इस प्रकार के सगठन का नाम इस से अधिक अच्छा और हो ही नही सकता। यह नाम अपने लक्ष्य को पूर्णतया व्यक्त करता है। आर्यवीर दल के जयघोष भी इसी लक्ष्य की पूर्ति करते हैं। जैसे—

(१) वैदिक धर्म की जय हो।
(२) आर्यवीरो जागो।
(३) ससार के श्रेष्ठ पुरुषो एक हो जाओ।

इस प्रकार ससार को गुण्डो के दमनार्थ एक सुदृढ आर्यवीर दल की आवश्यकता है, जिस मे प्रत्येक भले वीर पुरुष को भाग लेना चाहिए। यदि भले पुरुषो ने अपने को सगठित न किया तो इसके बडे कुपरिणाम होगे। याद रहे आज गुण्डापन अपनी सीमा को लाघकर पशुता पर आ गया है। ऐटम बम जैसे भयकर अस्त्र का सहारा लेकर यह पशुता क्या नही कर सकती। सचमुच आज मनुष्यता सङ्कट मे है, यदि इसकी रक्षा न की गई तो फिर बचे खुचे भले व्यक्तियो को भी विवश ही इसी गन्दी कीचड का सहारा लेना पडेगा। इसलिए आर्यवीरो आओ हम सर्वप्रथम आर्यावर्त मे ऐसे सगठन की रचना करके विश्व को सच्ची शान्ति का सन्देश सुनाए।

आर्य वीरदल के कर्त्तव्य

आर्यवीर दल के दो महान् कर्त्तव्य हैं—

(१) आर्य धर्म, आर्य जाति और आर्य सस्कृति की रक्षा करना।
(२) समाज मे सेवा एव आत्मत्याग का आदर्श उपस्थित करना।

प्राय सेवा और रक्षा दो विरोधी शब्द है इन दोनो कर्त्तव्यो का पालन एक व्यक्ति कैसे करे यह विचारणीय है। परन्तु जब हम वैदिक वर्ण व्यवस्था पर दृष्टिपात करते हैं तो हमारी यह कठिनाई दूर हो जाती है।

आर्य जाति एक योद्धा जाति रही है। जिस मे कार्य और सुविधा की दृष्टि से चार वर्णों की स्थापना हुई थी। इस वर्ण व्यवस्था मे विद्या प्राप्ति और उसका उपयोग (आविष्कारादि) ब्राह्मण के हाथ मे सौपा गया। रक्षा और शासन क्षत्रिय के अधिकार में दिया गया। समाज का भरण-पोषण और आर्थिक व्यवस्था (Supply Department) वैश्य जाति को मिली तथा समस्त समाज की सेवा शूद्र वर्ण के व्यक्ति करे, ऐसी व्यवस्था की गई। प्रत्येक वर्ण के कर्त्तव्य निर्धारित करने का अर्थ यही था कि प्रत्येक वर्ण मे चारो वर्णों के गुणो के समन्वय के साथ साथ अपना एक गुण विशेष रूप से होना चाहिए अर्थात् एक ब्राह्मण ज्ञान, तप त्याग के बाहुल्य के साथ रक्षा, पोषण और सेवा के भाव भी अपने मे अवश्य धारण करे। क्षत्रिय में रक्षा और शासन की प्रमुख भावना के साथ-साथ ज्ञान, पोषण और सेवा भाव होना आवश्यक है। वैश्य के अन्दर उसके पोषण गुण की प्रमुखता के साथ-साथ ब्राह्मण धर्म का ज्ञान, क्षात्र धर्म की शक्ति और शूद्र धर्म की सेवा भावना भी होनी चाहिए। इसी प्रकार शूद्रो के सम्बन्ध मे समझे।

जब हमे वैदिक वर्ण व्यवस्था द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि क्षत्रिय के अन्दर रक्षा और शक्ति के गुणो की प्रमुखता के साथ शेष विद्या, पोषण और सेवा के गुण भी होने अनिवार्य हैं तो सेवा और रक्षा के कर्त्तव्यो का पालन किस प्रकार आर्यवीर कर सकते हैं, यह स्पष्ट हो जाता है। आर्यवीर दल आर्य जाति की क्षात्र शक्ति है। यदि यह शक्ति केवल रक्षा ही में व्यय हो तो रक्षा कार्य के अभाव मे इस शक्ति का दुरुपयोग पाशविकता मे भी हो सकता है और निर्बलो के शोषण मे भी लग सकती है। अत शक्ति का दुरुपयोग न हो इसी भावना से क्षात्र धर्म की शक्ति का समन्वय सेवा एव आत्मत्याग के साथ किया गया है। सेवा मे विनम्रता की आवश्यकता होती है, अत एक क्षत्रिय मे जहा विरोधी के सम्मुख दृढता पाई जावे वहा दीनो एव दुर्बलों के सम्मुख सेवा की विनम्रता भी दिखाई दे, यही आदर्श क्षात्र धर्म है।

अत आर्य वीरदल मे इस भावना को बल मिलना ही चाहिए कि आर्य वीरो का प्रमुख कार्य आर्य धर्म, आर्य जाति और आर्य सस्कृति की रक्षा करना तो है ही परन्तु आर्य जाति की रक्षा मे विरोधी के सम्मुख दृढता का परिचय देते हुए आर्य जाति के साथ विनम्रता का बर्ताव भी होना चाहिए। इस विनम्रता के अभाव मे ही बडप्पन का अहकार पैदा हो जाता है। प्राय सेवा का प्रमुख कार्य तो शूद्र वर्ण के व्यक्ति ही करेगे परन्तु यदि आवश्यकता पडी तो सेवा कार्य तथा रक्षा के कार्य का उत्तरदायित्व भी आर्यवीर दल पर है। इस कर्त्तव्य को प्रत्येक आर्य वीर पहिचाने। यदि कोई आर्यवीर प्यासे को पानी पिलाता है, भूखे को अन्न देता है। आग, पानी, अथवा अन्य आपत्ति मे फसे हुए व्यक्तियो की प्राण रक्षार्थ सेवा कार्य करता

आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी

प० तुलसीराम स्वामी

ले०—डा० भवानीलाल भारतीय

अपने युग के अद्वितीय शास्त्रज्ञ लेखक तथा उच्चतम वक्ता प० तुलसीराम स्वामी का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला ३ सं० १९२४ वि० (१८६७ ई०) को परीक्षितगढ़ जिला मेरठ मे पण्डित हजारीलाल स्वामी के यहां हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा पिता के सान्निध्य मे हुई। ९ वर्ष की आयु मे यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुआ। ११ वर्ष की अवस्था मे बालक तुलसीराम शीतला रोग से आक्रान्त हुआ। परिणाम स्वरूप उन्हे एक नेत्र की हानि उठानी पड़ी। गढ़मुक्तेश्वर मे पण्डित लज्जाराम से संस्कृत भाषा और व्याकरण का अध्ययन किया। अन्य शास्त्र भी पढ़े। १९४० वि० मे स्वामी दयानन्द लिखित सत्यार्थप्रकाश वेदांग प्रकाश तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थो के पढ़ने से उनका झुकाव आर्यसमाज की ओर हुआ। पुन १९ [illegible] वि० मे देहरादून जाकर प० युगलकिशोर से अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य आदि व्याकरण के आर्ष ग्रन्थो का अध्ययन किया स्वामी दयानन्द के निकट लेखक के रूप मे रहने वाले प० दिनेशराम से भी पढ़ने का अवसर मिला।

प० तुलसीराम को आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान मेरठ निवासी बाबू घासीराम के सम्पर्क मे आने का अवसर मिला। अब वे विधिवत आर्यसमाज के सभासद बने। १८८७ मे आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिमोत्तर प्रदेश (वर्तमान उत्तर प्रदेश) के संगठन मे योग दिया तथा जीविकोपार्जन हेतु मेरठ के देवनागरी स्कूल मे कुछ काल तक संस्कृत अध्यापन कार्य किया। इसी बीच प्रसिद्ध सनातनी विद्वान प० अम्बिकादत्त व्यास मेरठ आये और सनातन धर्मसभा के तत्वावधान मे पौराणिक मन्तव्यो का प्रचार करने लगे। तुलसीराम स्वामी ने प्रबल युक्तियो और प्रमाणो से व्यास जी के प्रचार का खण्डन किया। [illegible] देवनागरी विद्यालय के प्रबन्धक उनसे [illegible] हो गए। स्वामी जी ने [illegible] त्यागपत्र दे दिया और पूर्णरूपेण आर्यसमाज के कार्य को अपने [illegible] आर्यसमाज [illegible] कार्य की [illegible] तुलसीराम स्वामी ने विधर्मियो [illegible] किये जिनमे कुचेसर, पटना, परीक्षितगढ़, [illegible] दानापुर [illegible] आदि के शास्त्रार्थ प्रसिद्ध हैं। १९[illegible] वि० मे तुलसीराम जी आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिमोत्तर प्रदेश के उपदेशक नियुक्त हुए और प्रान्त भर मे प्रचार कार्य मे जुट गए। १९५० वि० मे प० भीमसेन शर्मा ने स्वामीजी को प्रयाग स्थित अपने प्रेस सरस्वती यन्त्रालय का मैनेजर नियुक्त किया। अत स्वामी जी भीमसेन जी के सहयोगी [illegible] प्रयाग मे गए और आर्य सिद्धान्त के सम्पादन मे प० भीमसेन के सहायक बने। इस अवधि मे उन्होने सैद्धान्तिक विषयो पर अनेक लेख लिखे।

१९[illegible]५ वि० मे प० तुलसीराम ने मेरठ मे स्वामी प्रेस की स्थापना की और साहित्य लेखन तथा प्रकाशन के महत् यज्ञ का आरम्भ किया। जनवरी १८९७ से मासिक वेदप्रकाश का प्रकाशन आरम्भ किया। यह बड़ा लोक प्रिय हुआ। इसमे आर्यसमाज के सिद्धान्तो के मण्डनात्मक लेखो के अतिरिक्त विरोधी विद्वानो द्वारा लिखे जाने वाले आक्षेपात्मक लेखो तथा ग्रन्थो का प्रमाण पुरस्सर खण्डन भी छपता था। वेदप्रकाश की फाइल आर्यसमाज आन्दोलन के गत्यात्मक स्वरूप को जानने की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। १९६० वि० मे प० लेखराम की स्मृति मे स्वामी जी ने उपदेशक विद्यालय की स्थापना की। इस विद्यालय से प० सत्यव्रत शर्मा प० रुद्रदत्त शर्मा प० ज्वालादत्त शर्मा प० मणिशंकर प० मनुदत्त तथा स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जैसे उच्च कोटि के उपदेशक निकल कर प्रचार क्षेत्र मे आये। १९०९ से १९१[illegible] ई० तक स्वामी जी आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के प्रधान रहे। प्रान्त के गवनर सर जेम्स मेस्टन ८ अगस्त १९१३ को गुरुकुल वृन्दावन आये। उस समय स्वामी जी गुरुकुल मे अध्यापन करते थे। गुरुकुल के सुचारु सचालन को देख कर गवनर अत्यंत प्रसन्न हुए। ३ जुलाई १९१५ को विसूचिका रोग मे प० तुलसीराम स्वामी का निधन हुआ।

प० तुलसीराम आर्ष वाग्मी तथा सरस्वती के वरदपुत्र लेखक थे।

उन्होने अपने जीवन काल मे लगभग ५० ग्रन्थ लिखे जिनमे विभिन्न शास्त्रो के भाष्य व्याख्यान खण्डनमण्डन परक ग्रन्थ तथा प्रतिद्वन्द्वी पडितो के लिखे आक्षेप मूलक ग्रन्थो के सटीक उत्तर आदि प्रमुख है। स्वामी जी के कृतित्व का विवरण नीचे दिया जा रहा है —

ऋग्वेद भाष्य— स्वामी दयानन्द कृत ऋग्वेद भाष्य सप्तम मण्डल के ६१ वे सूक्त के द्वितीय मन्त्र पर ही समाप्त हो जाता है। इससे आगे का भाष्य प० तुलसीराम स्वामी ने लिखना प्रारम्भ किया था जिसका उनके स्वामी प्रकाशन वेदप्रकाश के जुलाई १९१६ के अंक से होने लगा था। यह भाष्य संस्कृत तथा हिन्दी दोनो भाषाओ मे लिखा जाता था। प० तुलसीराम के दिवगत होने पर उनके अनुज प० छुट्टनलाल स्वामी ने इसका कुछ अंश लिखा। परन्तु यह ऋग्वेद भाष्य पुस्तकाकार नही छप सका।

सामवेद भाष्य— यह भाष्य भी संस्कृत तथा हिन्दी मे लिखा गया है। दो भागो मे इसका प्रथम प्रकाशन स्वामी प्रेस मेरठ मे हुआ कालान्तर मे इस भाष्य को सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा जनज्ञान प्रकाशन (दयानन्द संस्थान) दिल्ली ने संस्कृत भाग छोड़ कर प्रकाशित किया। स्वामी जी ने ईश केन, कठ और तलवकारोपनिषद भाष्य मुण्डक उपनिषद् पर भाष्य रचना की।

श्वेताश्वतरोपनिषद भाष्य — जीवेश्वर भेद परक व्यवस्था युक्त यह संस्कृत हिन्दी भाष्य पदच्छेद और अन्वय पूवक किया गया है। १८९७ ई० मे रचा गया।

मनुस्मृति भाष्य — मनुस्मृति का यह पाण्डित्य पूर्ण भाष्य हिन्दी भाषा मे लिखा गया है। क्षेपक अंशो का सतर्क विवेचन किया गया है। प्रथम संस्करण १९१४ ई० मे प्रकाशित हुआ। १९७९ वि० तक इस ग्रन्थ के ९ संस्करण प्रकाशित हुए।

षडदर्शन भाष्य

सांख्य दर्शन

योगदर्शन— स्वामी प्रेस मेरठ प्रथम संस्करण १९११ मे प्रकाशित।

न्याय दर्शन वैशेषिक दर्शन

वेदान्त दर्शन

मीमांसादर्शन—तुलसीराम स्वामी जी ने इस दर्शन के प्रथम २५ सूत्रो का ही भाष्य लिखा।

विदुरनीति— यह टीका १९५५ वि० (१८९८ ई०) मे प्रथम बार प्रकाशित हुई।

श्रीमद्भगवद्गीता भाष्यम् — वैदिक मान्तव्यानुसारी यह सरल सुबोध भाष्य स्वामी प्रेस से प्रकाशित हुआ। इसका द्वितीय संस्करण श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ द्वारा २०३४ वि० (१९७७ ई०) मे प्रकाशित हुआ।

नारदीय शिक्षा—इस शिक्षा शास्त्र विषयक ग्रन्थ का सम्पादन तथा प्रकाशन स्वामी जी ने फाल्गुण १९६३ मे स्वामी प्रेस मेरठ से किया।

श्लोक युक्त निरुक्त (निघण्टु)

श्लोक बद्ध वैदिक निघण्टु— अग्निचित श्री भास्कर राय दीक्षित कृत निघण्टु का सम्पादन व प्रकाशन तुलसीराम स्वामी द्वारा १८९८ ई० मे किया गया।

भर्तृहरि कृत नीतिशतक का अनुवाद— आर्य चर्पट पञ्जरिका —सरस्वती यन्त्रालय इटावा से प्रकाशित— १८९६ ई०।

खण्डन मण्डन के ग्रन्थ—

ऋगादिभाष्यभूमि का केन्द्र पराग— द्वितीयोश ब्रह्मकुमार उदासीन लिखित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के खण्डन परक ग्रन्थ का यह उत्तर सरस्वती यन्त्रालय प्रयाग १९५० वि० (१८९३ ई०) मे प्रकाशित हुआ।

भास्करप्रकाश सनातन धर्म के विद्वान प० ज्वालाप्रसाद मिश्र ने सत्यार्थ प्रकाश के खण्डन मे दयानन्द तिमिर भास्कर ग्रन्थ लिखकर खेमराज श्रीकृष्ण दास के वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई मे १९५१ वि० मे प्रकाशित कराया था। प० तुलसीराम ने इसका सटीक उत्तर भास्कर प्रकाश के रूप मे लिखा। भास्करप्रकाश का प्रथम भाग। सत्यार्थप्रकाश के तीन प्रथम समुल्लासो का मण्डन) स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती सम्पादित भारतोद्धारक मासिक मे धारावाही छपने के पश्चात इन्ही स्वामी जी द्वारा पृथक् १८९७ ई० मे पुस्तकाकार छपा। पुन सम्पूर्ण ग्रन्थ इसी वर्ष (१८९७ ई०) स्वामी प्रेस मेरठ से छपा। भास्करप्रकाश का द्वितीय संस्करण १९०४ मे तथा ततीय सस्करण १९१३ मे छपा।

दिवाकरप्रकाश भास्करप्रकाश के प्रथम तीन समुल्लासो के खण्डन मे प० ज्वालाप्रसाद मिश्र के अनुज प० बलदेव प्रसाद मिश्र ने धर्म दिवाकर पुस्तक लिखी। दिवाकरप्रकाश लिख कर तुलसीराम स्वामी ने धर्मदिवाकर का खण्डन किया। १९[illegible]० मे द्वितीय संस्करण छपा।

मूर्तिपूजाप्रकाश १९५७ वि० मे प्रकाशन।

पितृपितृ यज्ञ — मृतक श्राद्ध खण्डन मे लिखा गया ग्रन्थ। प्रथम संस्करण १९०६ ई० और १९७१ वि० तृतीय संस्करण।

भीमप्रश्नोत्तरी प० भीमसेन शर्मा कृत आक्षेपो का उत्तर १९१४ ई० मे प्रकाशित।

अज्ञाननिवारण — पादरी खड़गसिंह के व्याख्यान आर्यतत्व प्रकाश का खण्डन। स्वामी प्रेस मेरठ से १८९७ मे प्रकाशित।

तुलसीराम स्वामी के चार व्याख्यान— स्वामी प्रेस मेरठ मे प्रकाशित १९०५ मे तृतीय संस्करण ये व्याख्यान पृथक्श भी छपे थे।

तरूण मंच

उद्बोधन आर्य वीरों के लिए

रामाज्ञा वैरागी
संचालक—आर्य वीर दल बिहार

युवा पीढ़ी राष्ट्र की सबसे शक्तिशाली शक्ति होता है। इस शक्ति का क्षय राष्ट्रीय क्षति है। शक्ति आपका है आप शक्ति के प्रतीक हैं। हमारी एक सजीव संस्कृति है पर वह क्या है? आप इसका बखान भी नही कर पाते इसलिए कि आप अपने संस्कारों से परिचित नही है। आप स्वाधीन हैं। बिना इसके ज्ञान के कि स्वतन्त्रता क्या है? आप धार्मिक विचारधारा के साथ हैं बिना यह जाने कि धर्म क्या है? आप जीवित हैं बिना यह जाने कि जीवन क्या है। आपको इस का सही बोध होना चाहिए

आइए हम सभी मिलकर अपने महान् कर्त्तव्यों के पथ पर कदम से कदम मिलाकर चलना प्रारम्भ करें। आप यह तो जानते ही है कि छोटे छोटे सोते मिलकर बड़ी नदी का रूप लेते हैं। सभी दिशाओं से आता मन्द-मन्द समीर मिलकर तीव्रगामी पवन का रूप लेता है। पक्षी झुण्ड बांधकर उड़ते है और उससे वे निर्भीकता का अनुभव करते है। आप देख रहे हैं विश्व की परिस्थितियां बदल रही हैं इन स्थितियों मे सुधार का नितान्त आवश्यकता है। ऐसे सुधार और परिवर्तन की जहा मानव मानव का शोषण न कर सके हमे सामाजिक शोषण के विरुद्ध आमन्त्रित क्रान्ति के लिए शारीरिक मानसिक तथा सामाजिक शक्ति की आवश्यकता है। इसके लिए हमे अजेय साधना का दीपक जलाना होगा।

समय का स्वर है कि मन के प्रलोभनों से दूर हमे नास्तिकवाद के दूषित विकारों से वचक शान्ति के शूल भरे पथ पर क्रान्ति पथ पर अग्रसर होना है

चलिए हम एक साथ मिलकर पंक्तिबद्ध होकर पूरी सावधानी के साथ अपने निश्चित लक्ष्य को ओर बढ़े।

आप सुनिए, दूर सुदूर दिशाओं से अभियान के गीतों की ध्वनि अनुगुंजित हो रहा है।

चलिए, बिल्कुल सोच चलिए। एक निश्चित उद्देश्य निर्धारित लक्ष्य आपकी अविकल प्रतीक्षा कर रहा है। यह सम्भव है कि आज की परिस्थिति आपका जीवन माग सकता है। इसलिए निर्भय और निःसंकोच अपने को उत्सर्ग करने की भावना को लेकर आगे बढ़िए। यह भी सम्भव है कि आपको मातृवेदी की बलिवेदी पर अपना शीश चढ़ाना पड़े लेकिन गूढ सामाजिक अनुशासन आपके भीतर बलिदान और समर्पण की भावना चाहता है आप अपने को सादर समर्पित करें। राष्ट्र के लिए समाज के लिए और मानवता के लिए। विज्ञान के अनुभव ज्ञान वर्तमान की अनुभूति आपके लिए अजय कोष होगा।

आइए चलिए आगे बढ़िए। हमारा दर्शन सीधा और स्पष्ट है। कितने साहसी आर्यवीर हैं जो हमारे साथ अग्नि पथ पर चलने को तैयार हैं। राष्ट्र के भविष्य के लिए मानवता के बहुमुखी विकास के लिए, विशाल और क्रान्तिकारी कार्यक्रम आपके समक्ष है इसकी सम्पूर्णता के लिए यह विस्तृत अनुरोध और आदेश पत्र है।

आइए हम एक सूत्र के भीतर बंधकर घोषित करें। समाज के श्रेष्ठ पुरुषों एक हो जाओ कृण्वन्तो विश्व मार्यम। जहा भी हो अपने को संगठित करो और कार्यारम्भ करो हम सभी तुम्हारे साथ हैं

आर्य बन्धुओं आज का समाज धीरे धीरे कठिन समस्याओं से घिरता जा रहा है कहिए घिर गया है। विश्व की सारी समस्याओं के समाधान और निदान का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व क्रांतिदर्शी महर्षि दयानन्द जी ने आर्यसमाज को सुपुर्द किया था। महर्षि ने उसके लिए व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत की थी। संसार का जटिल समस्याओं के समूल विनाश के लिए जिन कुशल हाथों की आवश्यकता है, वे हमारे तरुण आर्यवीरों के पास हैं। नये विश्व के निर्माण के यज्ञ मे आर्यवीरों का प्रमुख स्थान है।

आर्य वीर दल राष्ट्र के विकास के लिए दृढ सकल्पी तरुणों का एक संगठन है जो मात्र लाठी चलाने वालों या व्यायाम करने वालों का संगठन नही है। यह मानवता के हित मे उन अकुलाते प्राणों के आर्य वीरो का दृढ संगठन है जो मानवता की सेवा के लिए अपने जीवन की बाजी लगाता रहा है। यह आर्य वीर दल मात्र संगठन या संस्था नही यह एक आन्दोलन है। दानवता के विरुद्ध क्रान्ति की ज्वाला है। अत्याचार तथा कुरीतियों कुविचारों के विरुद्ध धधकती आग है। अबलाओं का रक्षक और कमजोरों का सहारा है।

आर्य वीर दल विराम नही अभियान का समर्थक है। उसके साथ प्रगतिशील आर्य जाति है। ऐसी जाति जो विनाश की ओर नही निर्माण की ओर उन्मुख होती है। इस प्रकार आर्य वीर दल एक प्रक्रिया है और साधन भी आर्य वीर दल यज्ञ है और आहुति भी।

किशोर मंच

इन्द्र-विरोचन

बलवीन शास्त्री

देवताओं मे सबसे बड़ा इन्द्र था। दैत्यों (राक्षसों) मे सबसे बड़ा विरोचन था। एक बार विरोचन और इन्द्र आत्मा और परमात्मा के विषय मे बात करने लगे। दोनों की समझ मे कुछ भी नही आया। वे खूब सोचने लगे। अन्त मे दोनो ब्रह्मा जी के पास गये। ब्रह्मा जी ने पास बठाया। इन्द्र बिल्कुल सादे कपड़ो मे था और विरोचन ने राजाओं के कपड़े पहन रखे थे। उन्होने ब्रह्मा जी से कहा— हम आत्मा और परमात्मा के विषय मे कुछ बताइए। आत्मा क्या है और परमात्मा के साथ उस का क्या सम्बन्ध है?' प्रजापति ब्रह्मा ने कहा कि पहले दोनो एक वर्ष तक ब्रह्मचर्यव्रत धारण करके मेरे पास रहो। फिर तुम्हे इसके विषय मे बताऊंगा। दोनो ने ब्रह्मा जी की बात मान ली। एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करके फिर दोनो प्रजापति के पास गये ब्रह्मा (प्रजापति) ने उन्हें एक कटोरा दिया और कहा—जाओ देखो इसमे तुम्हें क्या दिखायी देता है।

दोनो ने कटोरे मे देखा। उसमे इन्हें शरीर की छाया दिखाई दी। उन्होने कहा—कटोरे मे हमे शरीर को छाया दिखाई देती है। हमारे दाढी, मूछ केश, कुण्डल मुकुट आदि दिखाई पड़ते है।

इसके बाद प्रजापति ने उनके वस्त्र उतरवा दिये। उन्होने फिर से कटोरे मे देखने के लिए कहा। दोनो ने फिर देखा। उन्हे फिर से शरीर को छाया दिखाई दी उन्होने फिर प्रजापति से जाकर कहा कि शरीर की छाया दिखाई देती है। प्रजापति ने कहा— यह शरीर हो ब्रह्म है।

यह बात सुनकर दोनो अपनी राजधानी लौट गये। ब्रह्मा (प्रजापति) को बात याद करके विरोचन तो अपने शरीर को ही सब कुछ समझने लगा। वह खूब अच्छा खाता अच्छा पहनता और शरीर को मजा कर रखता। उसके साथी भी ऐसा ही करने लगे और आपस मे झगड़ कर नष्ट हो गये।

इन्द्र ने ऐसा नही किया। उसने आत्मा के बारे मे सोचा, उसकी समझ मे नही आया कि शरीर ही किस

(शेष पृष्ठ ११ पर)

महात्मा गांधी और स्वामी श्रद्धानन्द दोनों को एक जैसी वीरगति प्राप्त हुई

डा० कमल किशोर गोयनका

भारत के आधुनिक काल के इतिहास मे उन्नीसवी शताब्दी अनेक कारणो से महत्त्वपूर्ण है। एक प्रमुख कारण यह है कि इस शताब्दी मे अनेक युग पुरुषो दार्शनिको सुधारको विद्वानो जननेताओ आदि ने जन्म लिया और देश की सोयी और दासता मे जकडी जनता को जाग्रत किया। ऐसे महा पुरुषो मे महात्मा गाधी और स्वामी श्रद्धानन्द का नाम इतिहास के पृष्ठो पर स्वर्णाक्षरो मे अकित है महात्मा गाधी और स्वामी श्रद्धानन्द दो ऐसे युगपुरुष हुए जिन्होने अपने अपने क्षेत्रो मे क्रान्ति उत्पन्न कर दी।

स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म २२ फरवरी १८५ तथा महात्मा गाधी का जन्म अक्तूबर १८ ९ को हुआ। इस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द गाधी से लगभग १२ वर्ष बडे थे। स्वामी श्रद्धानन्द जब सन् १ ७९ मे बरेली मे आये व स्वामी दयानन्द से अपनी जिज्ञासाओ को शान्त कर रहे थे तब गाधी प्रारम्भिक पाठशाला मे शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। स्वामी श्रद्धानन्द अर्थात मुन्शी राम सन १८८६ मे आर्यसमाज के विधिवत् सदस्य बने तब गाधी नवी कक्षा के छात्र थे।

गाधी मई १ ९३ मे एक बैरिस्टर के सिलसिले से भारतीयो का मुकदमा लडने के लिए दक्षिण अफ्रीका गये तो उस समय तक मुन्शीराम आर्यसमाज की सम्पूर्ण गतिविधियो पर छा गये और आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने।

गाधी दक्षिण अफ्रीका मे कई भारतीय आर्यसमाज के प्रचारको के सपर्क मे आये और उनके आत्म त्याग एव देशभक्ति को देखकर वे इतने प्रभावित हुए कि जुलाई १९०५ मे जब आर्यसमाज के प्रचार के लिए भाई परमानन्द दक्षिण पहुंचे तो गाधी ने उन्हें जोहानिसबर्ग मे मानपत्र समर्पित किया

इधर भारत मे स्वामी श्रद्धानन्द ने २६ नवम्बर १ ९८ मे आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम मे गुरुकुल स्थापना का प्रस्ताव स्वीकार करा लिया था और अनथक प्रयत्नो से सन १ २ मे गुरुकुल कांगडी की स्थापना करवा दी।

महात्मा गाधी ने दक्षिण अफ्रीका मे भारतीय कुलियो के सम्मान एव अधिकारो के लिए सन १ ० मे सत्याग्रह आरम्भ किया यह जन आदोलन धरना देना बिना परवाना फेरी लगाना और व्यापार करना मागने पर पजीकृत प्रमाणपत्र न दिखाना अगूठो की छाप देने से इन्कार करना और नटाल की सीमा पार करके ट्रासवाल मे प्रवेश निषेध का उल्लघन करना आदि अनेक रूपो मे चल रहा था।

स्वामी श्रद्धानन्द को इस आदोलन की जानकारी मिली और उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि गाधी के नेतृत्व मे लड जाने वाले इस सत्याग्रह आदोलन को धन की आवश्यकता है। स्वामी श्रद्धानन्द ने तुरन्त गुरुकुल के छात्रो का कुली के रूप मे काय करके धन सग्रह करने की प्रेरणा दी इस प्रकार सगृहीत धन मेरे प्रिय भाई सम्बोधन से पत्र के साथ गाधी को भेजा

स्वामी श्रद्धानन्द और गाधी के प्रथम परिचय की यह कहानी स्वय महात्मा गाधी ने यग इण्डिया के ६ जनवरी १९२७ के अक मे स्वामी जी के स्मरण शीर्षक से प्रकाशित की।

गाधी जी ने अपने सस्मरण मे लिखा स्वामी जी ने मुझे जो पत्र भेजा था वह हिंदी मे था। उन्होने मुझे मेरे प्रिय भाई कहकर सम्बोधित किया था इस बात ने मुझे मुन्शीराम का प्रेमी बना दिया। इस प्रकार इस छोटे से सम्पर्क मे जो सम्बन्ध बना वह स्वामी श्रद्धानन्द के शहीद होने तक घनिष्ठ एव आत्मीय सम्बन्धो के रूप मे चलता रहा

महात्मा गाधी के दक्षिण अफ्रीका से भारत आने पर स्वामी श्रद्धानन्द से उनकी पहली भेट गुरुकुल कागडी मे ६ अप्रैल १ १५ को हुई। गाधी ९ जनवरी १९१५ को दक्षिण अफ्रीका से बम्बई बन्दरगाह पहुंचे और शान्तिनिकेतन मे महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर से मिलते हुए ५ अप्रैल को हरिद्वार मे प्रवेश किया। गाधी को स्वामी श्रद्धानन्द से इतने शीघ्र मिलाने का श्रेय सी एफ एन्ड्रयूज को है जिन्होने गाधी को यह सलाह दी थी कि भारत जाने पर भारत के तीन महान सुपुत्रो के दर्शन अवश्य करने चाहिए इन तीन महान सुपुत्रो मे एक स्वामी श्रद्धानन्द भी थे।

गाधी ने भारत आने से कई मास पूर्व २७ मार्च १९१४ को नेटाल (दक्षिण अफ्रीका) से स्वामी श्रद्धानन्द को पत्र मे ऐंड्रयूज के सुझाव और उनके दर्शन की अपनी उत्सुकता को व्यक्त किया महात्मा गाधी ने प्रिय महात्मा जी सम्बोधन के बाद पत्र मे लिखा श्री एन्ड्रयूज मुझे आपके नाम और काम के बारे मे बतला चुके हैं। इसलिए ऐसा नही लगता कि मैं किसी अजनबी को लिख रहा हूँ। आशा है इस सम्बोधन के लिए आप मुझे क्षमा करेंगे क्योकि मैं और श्री एन्ड्रयूज दोनो ही आप और आपके काम के बारे मे चर्चा करते समय यही सम्बोधन करते रहे हैं। श्री ऐन्ड्रयूज ने मुझे यह भी बतलाया था कि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर और श्री सुशील कुमार रुद्र पर आपका कितना अधिक प्रभाव पडा है। उनसे मुझे पता चला है कि आपके शिष्यों ने सत्याग्रहियो के लिए कितना काम किया था उन्होने गुरुकुल के जीवन के इतने सुन्दर शब्द चित्र खीचे थे कि यह पत्र लिखते समय लगता है जैसे मैं गुरुकुल मे ही पहुंच गया हूं। श्री एन्ड्रयूज ने मेरे मन मे उक्त तीनो स्थानो को देखने और इन सस्थाओ के प्रधान भारत के तीन महान सुपुत्रो के प्रति सम्मान प्रकट करने की उत्कृष्ट अभिलाषा जगा दी है

महात्मा गाधी के गुरुकुल कांगडी पहुंचने से पहले मगनलाल गाधी फोनिक्स पाठशाला के २५ छात्रो के साथ वहा पहुंच चुके थे गाधी ने ८ फरवरी १९१५ का पत्र लिखकर स्वामी श्रद्धानन्द का बच्चो को प्रेम देने तथा उनके साथ परिश्रम करने के लिए धन्यवाद दिया और लिखा बिना आमत्रण ही आपके निकट पहुंच कर आपके चरणो मे सिर झुकाना मेरा कर्त्तव्य है।

गाधी अप्रैल १९१५ को गुरुकुल कागडी पहुंचे जहा स्वामी श्रद्धानन्द की उपस्थिति मे गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने उनका स्वागत करते हुए मानपत्र भेंट किया।

गाधी ने अपने उत्तर मे अन्य बातो के साथ स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा उन्हे भाई कहने की बात का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए कहा महात्मा जी ने मुझे अपने एक पत्र मे भाई कहा है उसका मुझे गर्व है। कृपया आप लोग यही प्रार्थना करें कि मैं उनका भाई बनने के योग्य हो सकू। मैं २८ वर्ष बाद अपने देश मे आया हू मैं कोई सलाह नही दे सकता। मैं तो मार्गदर्शन प्राप्त करने आया हू और जो भी मातृभूमि की सेवा मे लगा है ऐसे प्रत्येक प्राणी के सम्मुख झुकने के लिए तैयार हूं। मैं अपने देश की सेवा मे प्राण देने के लिए तैयार हू। अब मैं विदेश नही जाऊगा। मेरे एक भाई (लक्ष्मीदास गाधी) चल बसे हैं। मुझे आशा है कि महात्मा जी उनका स्थान ले लेगे और मुझे भाई मानेंगे।

स्वामी श्रद्धानन्द ने भाई के नाते मानो आशीर्वाद देते हुए कहा मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि आप अब भारत मे रहेंगे और अन्य लोगो की भाति बाहर रहकर भारत की सेवा करने के लिए विदेश नही जायेंगे। मुझे आशा है कि गाधी भारत के लिए ज्योति स्तम्भ बन जाएगे। स्वामी श्रद्धानन्द की यह भविष्यवाणी कितनी सच हुई, यह हम भारत वासी ही नही सारा ससार जानता है।

महात्मा गांधी स्वामी श्रद्धानन्द के जीवनकाल मे दो बार ८ अप्रैल १९१५ तथा २० मार्च १९१६ को गुरुकुल कागडी गये तथा उनके शहीद होने के लगभग चार मास उपरान्त १९ मार्च १९२७ को दीक्षान्त भाषण देने गए थे।

इससे पूर्व गाधी २० मार्च १९१६ को गुरुकुल के वार्षिक उत्सव पर जब आये तो उन्होने गुरुकुल कागडी को स्वशासित प्रजातन्त्रीय और राष्ट्रीय सस्था मानते हुए स्वामी श्रद्धानन्द की प्रशसा करते हुए कहा था आर्यसमाज की गतिविधि का सर्वश्रेष्ठ परिणाम कदाचित गुरुकुल की स्थापना और उसके परिचालन मे दिखाई पडता है यह ठीक है कि महात्मा मुन्शीराम की प्रेरणादायक उपस्थिति ही इसकी शक्ति का अधिष्ठान है किन्तु यह सस्था सच्चे अर्थों मे एक स्वशासित प्रजातन्त्रीय और राष्ट्रीय सस्था है किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता या आश्रय से वह बिलकुल मुक्त है। इस भाषण मे गाधी ने निर्धन व्यक्तियों द्वारा दान देने तथा सस्था के प्रबधको की जबरदस्त सगठन शक्ति की मुक्तकठ से प्रशसा की।

महात्मा गाधी ने अपनी आत्मकथा मे पहली यात्रा के अनुभव के सबध मे लिखा जब मैं पहाड से दीखने वाले महात्मा जी के दर्शन करने और उनका गुरुकुल देखने गया तो मुझे बडी शान्ति मिली। हरिद्वार के कोलाहल और गुरुकुल की शान्ति के बीच का भेद स्पष्ट दिखाई देता था। महात्मा ने मुझे अपने प्रेम से नहला दिया ब्रह्मचारी मेरे पास से हटते ही न थे।

यात्रा के बाद महात्मा गाधी और स्वामी श्रद्धानन्द मे सहयोग निरतर बढता गया और स्वाधीनता सग्राम मे कई बार मिलकर काम किया। जब अग्रेजो ने रोलट अधिनियम लागू किया तो स्वामी श्रद्धानन्द ने ३० मार्च १९१९ को दिल्ली मे ४० हजार व्यक्तियों

(शेष पृष्ठ ११ पर)

१६ सितम्बर को ७०वें जन्मदिवस पर

आर्य विद्वान्-हिन्दी सेवी आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन

शिवकुमार गोयल

आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन'

हिन्दी के अनन्य साधक आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन इन दिनो दिवगत हिन्दी सेवियो की स्मृति को चिर-स्थायी बनाने के महत्त्वपूर्ण यज्ञ मे सलग्न हैं। दस खण्डो मे प्रकाश्य इस विशाल ग्रन्थ के दो खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। इस ग्रन्थ मे देश-विदेश के हजारों हिन्दी सेवी लेखको, कवियो, पत्रकारों, हिन्दी प्रचारको के प्रामाणिक परिचय प्रकाशित किये जा रहे है।

श्री सुमन जी मूलत आर्यसमाजी तथा कांग्रेसी हैं। आर्यसमाज से ही उन्हें हिन्दी सेवा के सस्कार मिले। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे प्रसिद्ध विद्वान प० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ के श्री चरणो मे अध्ययन के दौरान उन्होने वैदिक धर्म व भारतीय सस्कृति की सेवा का सकल्प लिया। जिसमे वे ७० वर्ष की आयु मे अभी तक लगे हुए है।

सुमन जी को हिन्दी साहित्य व सस्कृति की सेवा के लिए राष्ट्रपति ने गत वर्ष श्री 'पद्मश्री' से सम्मानित किया। उन्हे पत्रकार शिरोमणि, साहित्यमार्तण्ड, साहित्य वाचस्पति आदि की उपाधियो से विभूषित किया जा चुका है। स्वाधीनता सेनानी के रूप मे उन्हें प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने ताम्रपत्र भेंट किया था।

सुमन जी आर्यसमाज मे सक्रिय योगदान करते रहे है। मारीशस मे १९७३ मे आयोजित १२ वे आर्य महा-सम्मेलन मे हुए कवि सम्मेलन के वे अध्यक्ष थे। ३५ वर्षो तक उन्होने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की अतरग समिति मे विभिन्न पदो पर रह कर शिक्षा क्षेत्र मे योगदान किया।

स्वाधीनता सेनानी

सुमन जी ने स्वाधीनता आदोलन मे भी सक्रिय भाग लिया था। सन् १९४२ मे भारत छोडो आदोलन मे वह लाहौर मे गिरफ्तार किए गए। वह देश की स्वाधीनता के लिए फीरोजपुर जेल मे पूरे दो वर्ष तक यातनाए सहन करते रहे। पजाब सरकार द्वारा पजाब से निष्कासित कर दिए जाने पर वह अपने ग्राम बाबूगढ (मेरठ) आ गए। सुमन जी को सक्रिय नेता समझकर उत्तर प्रदेश सरकार ने बाबूगढ मे नजरबन्द कर दिया। लगभग दस मास तक वे अपने गाव मे नजरबन्द रहे।

सुमन जी ने फीरोजपुर जेल मे "कारा" नामक एक रोचक खण्ड काव्य की रचना की थी। इस सुन्दर खण्ड काव्य मे सन् १९४२ के राष्ट्रीय आन्दोलन का सरस वर्णन सुमन जी ने अनोखे ढग से किया है। "कारा" मे सुमन जी के देश के युवको का यो आह्वान किया है।

> हम बढे हमारे जीवन में,
> बरबस तूफान अघोर उठे।
> सदियो से सोते भारत के
> तरकस का तीखा तीर उठे।
> युग-युग से परवशता पिजरे,
> का बन्दी भारत कीर उठे।
> है जग मग जिसमे पावन,
> वह वीरो का शमशीर उठे।
> हम जलती आहो से रिपु के,
> प्राणो को जलता छोड चले।
> "जय हिन्द' हमारा नारा है,
> हम लाल किले की ओर चले।

सुमन जी ने जहा अपनी ओजस्वी लेखनी के माध्यम से स्वाधीनता सग्राम मे योग दिया वहा उनकी ओजस्वी वाणी ने भी देश की तरुणाई को जाग्रत करके स्वाधीनता के समर यज्ञ मे लगने को सर्वस्व समर्पित करने का आह्वान भी किया। नजरबन्द रहते समय उन्होने 'कारा' के अतिरिक्त 'बन्दी के गाने" नाम के काव्य सकलन की रचना भी की थी। अगस्त क्रान्ति के रोचक इतिहास के रूप मे उनके 'हमारा सघर्ष', 'नेताजी सुभाष', 'आजादी की कहानी' आदि राष्ट्रीय भावनाओ से ओत प्रोत ग्रन्थ उल्लेखनीय है।

सुमन जी एक यशस्वी साहित्यकार के साथ साथ निर्भीक व सफल पत्रकार भी रहे हैं। उन्होने जहां 'मनस्वी' 'शिक्षा सुधा' एव लाहौर के दैनिक 'हिन्दी मिलाप' के सम्पादकीय विभाग मे काफी समय तक कार्य किया वहीं उनके सम्पादकीय लेख ओजस्वी व राष्ट्रीय भावनाओ से ओत प्रोत होते थे।

सुमन जी ने लगभग चार दर्जन पुस्तक लिखकर व सम्पादित करके हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि मे अपूर्व योग दिया है। 'आधुनिक हिन्दी कवियित्रियो के प्रम गीत," "हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ प्रेमगीत", हिन्दी के लोकप्रिय कवि", मल्लिका", 'हिन्दी साहित्य नये प्रयोग", "साहित्य सोपान" 'सुमन सौरभ" "आधुनिक हिन्दी साहित्य", "हिन्दी साहित्य और प्रगति" आदि लोकप्रिय ग्रन्थो की रचना करके उन्होने हिन्दी साहित्य की भारी सेवा की।

७० वें वर्ष को आयु मे साहित्य की सेवा मे निरन्तर रत हैं। इसी प्रकार शतायु होकर वे हिन्दी सेवा मे लगे रहें, यही कामना है।

'धर्मदूत'
पिलखुवा (उ० प्र०)

दिल्ली के आर्य वीरो आओ कैथल चलें

(उत्तमचन्द्र शरर)
सचालक आर्यवीर दल हरियाणा

२० से २२ सितम्बर तक कैथल मे हरियाणा प्रान्तीय आर्यवीर सम्मेलन पूरे समारोह से मनाया जा रहा है। सम्मेलन की अध्यक्षता आर्यजाति के निर्भीक प्रहरी श्री ला० रामगोपाल जी वानप्रस्थ करेगे। हरियाणा मे इस प्रकार प्रत्येक वर्ष प्रान्तीय स्तर पर सम्मेलन होते रहते हैं जिसमे प्रान्त भर के आर्यवीर, तथा समाजे सम्मिलित होकर समारोह को सफल बनाती हैं। दिल्ली आर्यसमाज का मुख्य केन्द्र है। देश के विभाजन के पश्चात् लाहौर के स्थान पर दिल्ली आर्यो का गढ बना है। प्रसन्नता की बात है कि दिल्ली में आर्यवीर दल भी अपना स्थान बना पाया है। आर्यवीर दल आर्य-समाज का खड्गधर बाजू है। युवा वर्ग का आर्यसमाज मे प्रवेश द्वार आर्यवीर दल ही है अत दल आर्य समाज का भविष्य है। हरियाणा के इस प्रान्तीय सम्मेलन में दिल्ली के आर्यवीरो तथा समाजों को आमन्त्रित करने मे प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूँ। हरियाणा दिल्ली का समीपवर्ती प्रान्त है। दिल्ली के आर्यबन्धु यदि थोडा सा कष्ट करे तो हरियाणा के आर्यवीरों का उत्साह वे अपनी उपस्थिति से बढा सकते हैं। इस के साथ ही सेवादल का सुन्दर रूप भी प्रस्तुत कर सकते हैं। आर्यसमाज का युवा वर्ग अपने इस सगठित कार्यक्रम से देश के सम्मुख अपना उज्ज्वल रूप प्रस्तुत कर सकता है। अत दिल्ली के आर्यबन्धुओ से साग्रह निवेदन है कि वे २० २१, २२ सितम्बर को कैथल के लिए ही रिजर्व रखे।

सम्मेलन मे देश भर के आर्य नेता पधार रहे हैं। पजाब के चुनावो के कारण पजाब का वह सहयोग तो हमे न मिल सकेगा जो हम चाहते हैं फिर भी पजाब तथा हिमाचल के आर्यवीर भी इस में यथापूर्व सम्मिलित होंगे। आज देश तथा समाज के सम्मुख कई चुनौतियां हैं, आतकवाद का राक्षस मुह बाये खडा है, साम्प्रदायिकता, देश के विभाजन के पश्चात् भी हमारा पीछा नही छोड रही, समाज मे छूतछात तथा दहेज जैसी भयङ्कर बीमारिया समाज को सत्त्व हीन बना रही हैं। उधर धार्मिक क्षेत्र में अन्धविश्वास और पाखण्ड आज के विज्ञान के युग मे भी आर्य-समाज तथा बुद्धिजीवियो को चैलेंज कर रहे हैं। इन तमाम पापो के विरुद्ध आर्यसमाज के युवा वर्ग की सगठित आवाज आज समय की माग है। अत दिल्ली तथा आसपास के आर्यबन्धु इस आवाज को प्रभावी बनाने मे दल के कार्यकर्ताओ को सहयोग अवश्य दे।

मेरी यही कामना है कि समय की इस माग को पूरा करने के लिए एक वृहद् सम्मेलन आर्यवीर दल दिल्ली को ओर से बुलाया जाए। दिल्ली देश की तमाम गतिविधियों का केन्द्र है, यदि आर्यवीरो का सग-

(शेष पृष्ठ ९ पर)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

देश धर्म और संस्कृति की रक्षा हेतु चरित्रवान् युवक आगे आयें

—यशपाल सुधांशु

अध्यक्ष यशपाल सुधांशु अध्यक्षीय भाषण करते हुए।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के वार्षिक अधिवेशन मे अध्यक्षीय भाषण करते हुए युवा पत्रकार एवम् आर्यसन्देश के सम्पादक श्री यशपाल सुधांशु ने आर्य युवको का आह्वान किया कि वे देश धर्म की रक्षा मे तत्पर हो। उन्होने युवको की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा–सभी देशो मे युवको की रुचियां शारीरिक विकास, आत्मिक विकास से अलग हटकर विद्रोह एवं नशे पाप सगीत तथा कर्त्तव्य विमुखता की ओर बढ़ी है। धार्मिक नैतिक मूल्यो का ह्रास भी विश्वभर के युवको मे हुआ है। हिप्पीइज्म की आंधी, कैबरे और जोन की संस्कृति हमारे अपने देश मे भी घर करती जा रही है। तप, सयम और सदाचार से अभिभूत हमारी सांस्कृतिक अस्मिता न जाने कहा धूमिल हो गया है। अनेक राष्ट्रीय समस्याए भी आज हमारे सामने मुह बाये खड़ी है। जिनका सामना करने के लिए आज तेज से युक्त बलवान् युवको की आज नितान्त आवश्यकता है।

नैतिक और चारित्रिक गुणो से युक्त देशभक्त युवको और उनके सगठनो की आज स्थान स्थान पर आवश्यकता है। यह समय की पुकार है।

श्री सुधांशु जी आर्यसमाज अनारकली (मन्दिर मार्ग) मे आयोजित युवक रैली के समापन समारोह मे बोल रहे थे। ... ने इस अवसर पर
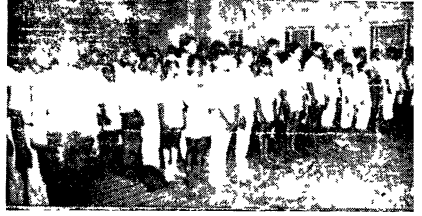
आर्य युवक ध्वजारोहण के समय ध्वज गीत गाते हुए।

अधिकारियो, मण्डल नायको, शाखा नायको को भी पुरस्कार ... सिल डोरी, बैज आदि से सम्मानित किया।

इस अवसर पर अध्यक्षता कर रहे श्री यशपाल सुधांशु को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली की ओर से एक ट्राफी भी प्रदान की गयी जिसे आर्य जगत् के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार ने भेंट किया।

इस रैली मे विभिन्न स्थानो से आये सैकड़ो युवको ने भाग लिया

चन्द्र मोहन आर्य
प्रेस सचिव

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के समापन समारोह में दायें से श्रीमती प्रकाश आर्य, श्री क्षितीश वेदालंकार, श्री यशपाल सुधांशु, श्रीमती सरला मेहता, श्री विश्वपाल जयन्त, श्री धर्मवीर एव श्री अनिल आर्य।

परायण महायज्ञ की पूर्णाहुति

आर्यसमाज मन्दिर न्यू मोतीनगर मे श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य मे किये जा रहे यजुर्वेद परायण महायज्ञ की पूर्णाहुति ८ सितम्बर को हुई। इस अवसर पर श्रद्धालु जनता द्वारा पूर्ण सहयोग किया गया। आर्यसमाज मन्दिर मे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ के अलावा वेदकथा तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी का भी आयोजन किया गया जिसमे सर्वश्री प० शिवाकान्त उपाध्याय, प० भारद्वाज पाण्डेय, प० भारत मित्र शास्त्री आदि विद्वानो के सुन्दर उपदेश हुए। इस पुण्य अवसर पर श्री जय भगवान आर्य की भजन मण्डली द्वारा मनोरम भजन भी सुनाये गये, जिसमे जनता ने भरपूर लाभ उठाया। अन्त मे समाज के प्रधान श्री तीर्थराम जी आर्य ने सब का धन्यवाद किया तथा समाज की ओर से यज्ञशेष के रूप मे सिलाई की मशीन और यजमानो को स्वामी दयानन्द की अमर कृति सत्यार्थप्रकाश भेंट किया।

तीर्थराम आर्य
प्रधान

सितम्बर के प्रवचनकर्त्ता

आर्यसमाज विवेक विहार में रविवार के साप्ताहिक सत्सग मे निम्नलिखित महानुभावो की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

रविवार	उपदेशक महोदय
१५-९-८५	श्री प० रविदत्त जी गौतम एम ए साहित्याचार्य
२२-९-८५	श्रीयुत यशपाल सुधांशु
२९-९-८५	श्रीयुत जैमिनी शास्त्री

दर्शनाभिलाषी
आर सी कथूरिया
मंत्री आर्यसमाज, विवेक विहार

सम्पादक के नाम पत्र

प्रधानमन्त्री के नाम एक पत्र

वैसे तो देश के प्रधान मन्त्री होने के नाते आपके पास ऐसी ठोस व्यवस्था है ही जिससे आपको देश मे घटने वाली प्रत्येक ऐसी घटना की जानकारी मिलती रहती है जिसका सीधा सम्बन्ध देश की अखण्डता, एकता तथा सुरक्षा से है। किन्तु फिर भी मैं देश का एक हितचिन्तक नागरिक होने के नाते आपका ध्यान इस समय पाकिस्तान द्वारा हमारे देश मे चलाये जा रहे छल युद्ध की ओर अवश्य दिलाना चाहता हूं। नीचे लिखी जिन घटनाओ का मैं इस पत्र मे उल्लेख कर रहा हूँ। मैं उसे पाकिस्तान द्वारा हिन्दुस्तान पर एक छल आक्रमण ही मानता हू। यह पत्र मैं इस आशा मे लिख रहा हूँ कि आप इस पर गम्भीरता से विचार कर इस ओर सभी आवश्यक पग उठाने की कड़ी व्यवस्था करेंगे।

पाकिस्तान को सन् १९७१ के युद्ध मे बुरी तरह परास्त होने के बाद यह बात पूरी तरह स्पष्ट हो गयी थी कि वह हिन्दुस्तान को सीधा आक्रमण कर कभी भी परास्त नही कर पायेगा। इसी प्रकार के विचार पाकिस्तान तथा अमरीका के युद्ध विशेषज्ञो ने भी व्यक्त किए है। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि पाकिस्तान के युद्ध विशेषज्ञो ने सोचा कि हिन्दुस्थान पर एक छल आक्रमण किया जाए ताकि उसे अन्दर से तोड़ा जा सके और जब पाकिस्तान हिन्दुस्थान पर आक्रमण करे तो उसे हिन्दुस्थान के अन्दर पाकिस्तान समर्थक पचमागी तत्त्वों का समर्थन और सहायता मिल सके और हिन्दुस्थान को अन्दर से तोड़ कर कमजोर किया जाए।

ऐसा लगता है कि इसके लिए पाकिस्तान ने अपनी नयी रणनीति में हिन्दुस्थान मे तीन विशिष्ट स्थान जम्मू कश्मीर पजाब तथा हैदराबाद को चुना है। पाकिस्तान अन्त त जम्मू कश्मीर को हिन्दुस्थान से अलग कर एक मुस्लिम राज्य स्थापित करने की कल्पना करता है। इसके लिए पाकिस्तान तथा शेष मुस्लिम जगत् हिन्दुस्थान के इस्लाम के जनूनी कट्टरवादी तथा पृथकतावादी तत्त्वो को खुल कर आर्थिक व सामरिक सहायता कर रहे हैं। जिसके कारण आज कश्मीर घाटी एक मिनी पाकिस्तान का रूप धारण कर चुकी है। इसका प्रमाण समस्त देश के लोगो को हिन्दुस्थान और वैस्टइण्डीज के बीच खेले गये क्रिकेट मैच मे वहा के मुख्य मंत्री शेख फारूक अब्दुल्लाह की उपस्थिति मे पाकिस्तान झण्डे लहराये जाने तथा हिन्दुस्थानी खिलाड़ियो के प्रति दूषित व्यवहार को देखने से मिल जाता है। आज भी भले ही वहाँ शाह की काग्रेस समर्थक सरकार है किन्तु कश्मीर घाटी की पाकिस्तान परस्त नीति तथा स्थिति मे कोई परिवर्तन नही है और यह स्थिति तब तक बनी रहेगी जब तक सविधान की अस्थायी धारा ३७० को समाप्त नही किया जाएगा। ऐसी मेरी मान्यता है।

पाकिस्तान का दूसरा मोर्चा है पजाब इसके लिए पाकिस्तान मे जनरल नियाजी की देख रेख मे लगभग एक लाख मुसलमानो को सिख बनाकर उन्हें सिख मत की सभी बातों तथा आतकवादी एव पृथकतावादी गतिविधियो के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। जिससे उन्हें पजाब मे भेजकर उग्रवादी सिखो के साथ मिलकर देश मे अराजक तथा पृथकतावादी कार्यक्रमो को चलाया जा सके। इसके लिए पाकिस्तान मे सिखो को भी उग्रवादी गतिविधिया सिखाने के लिए भी सैनिक शिविर स्थापित किए गए है। जिसके बारे मे आपने भी कई बार इस सम्बन्ध मे यह कहा है कि पाकिस्तान मे उग्रवादियो को प्रशिक्षण दिया जा रहा है इसके हिन्दुस्थान के पास प्रमाण हैं। यह मोर्चा पजाब का भी इसीलिए बनाया गया है ताकि जब पाकिस्तान हिन्दुस्थान पर आक्रमण कर उस समय ये पृथकतावादी सिख बने मुसलमान तथा उग्रवादी सिख हिन्दुस्थान को अन्दर से कमजोर कर उसकी सहायता कर।

पाकिस्तान का तीसरा मोर्चा हैदराबाद है जो एक मुस्लिम बाहुल्य नगर है। सम्भवत यह तो आपको भी विदित ही है कि विभाजन के समय निजाम हैदराबाद को पाकिस्तान मे मिलाना चाहता था जिसके लिए वहा पर रजाकारो का युद्ध भी हुआ था किन्तु हमारे लौह पुरुष सरदार पटेल ने हैदराबाद को हिन्दुस्थान मे मिला कर उसकी सब आशाओ पर पानी फेर दिया था। इसके बाद १९८१ से निरतर जो हैदराबाद म साम्प्रदायिक दगे हो रहे है उनके पीछे यही पाकिस्तान समर्थक पचमागी तत्त्वो जिनको पाकिस्तान से सहायता मिलती है का ही हाथ है। ताकि यहा मजहबी जनून और पृथकतावादी तत्त्व सक्रिय रहे और यहा आतक व्याप्त रहे। हैदराबाद के आस पास के क्षेत्र को विशेषरूप से मत परिवर्तन के लिए भी निश्चित किया गया है। जहा पर रहने वाले हरिजनो को पैट्रो डालर के बल पर प्रलोभन देकर मुसलमान बनाया जा रहा है ताकि हैदराबाद को एक अलग मुस्लिम राज्य बनाया जा सके।

इसके अतिरिक्त हिन्दुस्थान के सीमावर्ती राजस्थान, पजाब गुजरात, आसाम आदि राज्यो मे मुसलमानों की घुसपैठ भी बड़ पैमाने पर हो रही है। "मुस्लिम इण्डिया" अखबार के अनुसार १९८३ से पूर्व पाच वर्ष मे लगभग ७६ हजार पाकिस्तानी हिन्दुस्थान मे प्रवेश कर रह रहे हैं। इस प्रकार यह सख्या इससे भी कही अधिक लाखो की है। ये सभी तत्त्व पाकिस्तानी होने के नाते यहा समय समय पर तोड-फोड आतकवादी तथा साम्प्रदायिक दगे कराने मे सलग्न रहते हैं। हिन्दुस्थान की विदेशियो के प्रति नरम नीति के कारण इस समय हिन्दुस्थान विश्व का सब से बड़ा अनाथ आश्रम बन चुका है। इसके अतिरिक्त यहाँ की वोटो की राजनीति भी इस सम्बन्ध मे कड़ी कार्यवाही करने मे बाधक है। इस प्रकार पाकिस्तान प्राचीन यूनानी 'ट्रोजन होर्स' की तरह हिन्दुस्थान के भीतर प्रवेश कर उसे स्थान स्थान से तोड़ने मे लगा हुआ है। फिर चाहे वह मुरादाबाद हो या अलीगढ अथवा मेरठ हो या हैदराबाद।

आशा है आप उपरोक्त मुद्दों पर गम्भीरता से ध्यान देकर दलगत एव कुर्सीगत स्वार्थो से ऊपर उठकर देश की अखण्डता और एकता पर हो रहे पाकिस्तान के इस आन्तरिक छल युद्ध को समाप्त करने के लिए सभी आवश्यकता कार्यवाही करेंगे जिससे पाकिस्तान जो हमारी अखण्डता और एकता पर प्रहार कर रहा है उसके मुह पर करारी चपत लगाई जा सके।

भवदीय
विद्यान स्वरूप
एक हितचिन्तक नागरिक

आर्य संन्यासी क्या करें ?

आर्यजगत मे जो सन्यासी विद्वान हैं, बहुत अच्छा प्रवचन दे सकते हैं बहुत अच्छे व्याख्यान दे सकते हैं बोलने की शैली अच्छी है वक्तृत्व कला के धनी हैं, वाणी मे रस है उनका सर्वत्र सम्मान होता रहा है उनको खाने पीने की रहने की कही कमी नही। परन्तु जो सन्यासी विद्वान नही वेदो शास्त्रो के ज्ञाता नही बहुत कम पढ लिखे है प्रवचन व्याख्यान देने की कला ज्यादा अच्छी नही वे किसी गिनती मे नही उन का सम्मान नही उनको रोटी कपडा नही रहने को स्थान नही कभी किसी आर्यसमाज मदिर मे भटकने फिरते हैं कभी कही।

आर्य विचारो के होने के नाते ऐसे सन्यासियो का सरक्षण सभाओ को करना चाहिये जिससे कि अपना भरण पोषण कर सक दर दर मागने की स्थिति मे न हो जाए तथा पौराणिको के सम्पर्क म शामिल न हो जाए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इस पर विशेष रूप से गम्भीरता के साथ विचार करके इस समस्या का हल करे।

२ इसी प्रकार पुरोहितो की समस्या है। आर्यसमाजो मे विद्वान् ऋषि भक्त और आर्यसमाज के दीवाने पुरोहित होने चाहिए। इसका प्राय अभाव है। टकारा से तथा दूसरे किसी सस्था से जो लोग पुरोहिताई करने आर्यसमाजो मे गए हैं, प्राय असफल रहे है पुरोहित मे जो गुण होने चाहिये विद्वत्ता धीरता, गभीरता सहनशीलता निर्लोभिता होनी चाहिए इसका अभाव है।

आर्यसमाजो मे उत्तम पुरोहित न मिलने की बडी समस्या है, सभाओ को इसपर विचार करके, दृढ आर्यसमाजी, विद्वान् सेवा भाव रखने वाले आर्यसमाज का प्रचार करने वाले, गुटबन्दी से दूर रहकर प्रचार करने वाले पुरोहित तैयार करने चाहिए।

जगतराम आर्य
गाधीनगर

(पृष्ठ ७ का शेष)

ठित रूप दिल्ली मे कही लाया जा सके और देश के विशिष्ट आर्य नेता यदि दल के मच से आज के देशद्रोहियो के विरुद्ध सगठित अभियान चला सके तो आर्यसमाज देश का नेतृत्व सम्भाल सकता है। आर्यसमाज के नेताओ ने यदि इस ओर ध्यान दिया तो हरियाणा आर्यवीर दल प्रमुख रूप से इसमे भाग लेकर सहयोग दे पायेगा।

हरियाणा आर्यवीर दल आज प्रगति के पथ पर अग्रसर है उस के पास ४ शिक्षक प्रान्त के लिए कार्य कर रहे है उसे कुछ समर्पित आर्यवीर सौभाग्य से प्राप्त है जिनके जीवन का उद्देश्य आर्यवीर दल की सेवा ही है। उस की एक अपनी मासिक पत्रिका भी है कुछ उच्चपद सोन आर्यबन्धु हृदय से उसका सरक्षण कर रहे हैं। दल की ८० के लगभग शाखाएँ प्रान्त मे चल रही है। स्वामी ओमानन्द जैसे तपस्वी नेता का शुभाशीर्वाद दल को प्राप्त है। इस परिस्थिति मे यदि दिल्ली के आर्यवीर अपने सहयोग का हाथ बढाय तो हरियाणा आर्यवीर दल उनका आभारी होगा। और निश्चय ही यह छोटा भाई समय आने पर लक्ष्मण के समान, राम की सेवा करने मे अपना गौरव अनुभव करेगा। आर्यो ! आओ विरोधी शक्तियो के सम्मुख हम एक होकर आर्यसमाज तथा ऋषि दयानन्द के पवित्र नाम को उज्ज्वल बनाये।

समाचार सन्देश

साप्ताहिक सत्संगो का विवरण
रविवार २२ सितम्बर १९८५

आर्य समाज प्रताप (अमर कालोनी) प० उम्प्रकाश शर्मा आर्य किंग्जवे कम्प प० देवराज वदिक मिशनरी गीता कालोनी—श्री मगनलाल बेचन गुरुमण्डी—ब्र० भीष्मदेव । गोविन्द भवन—स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती। चना-म प० अशोककुमार शास्त्री। टगोर गार्डन स्वामी यज्ञानन्द जी। तिलक नगर—प० मुनीदेव भजनोपदेशक देवनगर प० रमेशचन्द्र वनाचार्य। नारायण विहार प० वदप्रकाश आर्य। प्रीतमपुरा—डा० रघनन्दन सिंह पजाबी बाग—डा० वदप्रकाश माहेश्वरी। पंजाबी बाग-प० अशोक कुमार विद्यालकार भोगल—श्रीमती प्रकाशवती। महावीरनगर प० राधेश्याम शर्मा। मौडल बस्ती—आर्यवीर रणजीत सिंह राणा मोती बाग—डा० सुख दयाल भूटानी राजौरी गार्डन—महात्मा देवेश भिक्षु रमेशनगर—श्री बलवीरसिंह शास्त्री। लक्ष्मीबाई नगर—मा० मोहनलाल गाधी। विजयनगर-आर्यवीर नेत्रपाल आर्य। सोहन गंज-ब्र० मनुदेव शास्त्री। सदर बाजार—मा० छवि कृष्ण शास्त्री। साकेत—प० सुशील शास्त्री हौजखास-प० तुलसीराम आर्य। त्रिनगर प० अमर नाथ कान्त जी। अशोक विहार—प० हरिश्चन्द्र आर्य इत्यादि

व्यवस्थापक
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग सभा

आर्य वीर दल के बढते कदम

युवकों मे राष्ट्रीय चारित्रिक नैतिक मूल्यो एव वैचारिक क्रान्ति लाने के लिए आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश ने दिल्ली के विभिन्न स्थानो पर शिविर एव सम्मेलन आयोजित करने के लिए अनेक योजनाए बनाई है। आर्य वीर दल आपके बच्चो युवको मे जागृति के लिए शारीरिक एव मानसिक आत्मिक उन्नति के लिए आह्वान करता है। समस्त आर्यसमाजो के अधिकारियो से निवेदन है कि अपने मन्दिर मे आर्य वीर दल की शाखाए आयोजित कर तथा युवको को आर्यसमाज की ओर आकृष्ट करने के लिए रचनात्मक कदम उठाय।

प्रीतमदास रसवन्त

नई दिल्ली आर्य वीर दल के शिविर मे फड़कती भुजाओ और बलिष्ठ मुट्ठियो के द्वारा काच पीसते युवक दर्शको को परिचय देते हुए श्री मागे राम आर्य।

प्रचार वाहन द्वारा प्रचार कार्य विवरण

१—आर्यसमाज आशापार्क २६ २७ २८ सितम्बर रात्रि ८ बजे से १० बज तक प० सत्यदेव जी स्नातक रेडियो कलाकार एव ढोलक वादक जोती प्रसाद द्वारा सगीत का कार्यक्रम रखा गया है जिसमे महात्मा रामकिशोर वैद्य महोपदेशक का वेद प्रवचन रखा गया है। प० चुन्नीलाल भजनोपदेशक जी के मधुर भजन भी होगे

२—आर्यसमाज बुराड़ी ग्राम मे तीन दिवस के लिए प्रचार वाहन द्वारा वेद प्रचार का आयोजन किया गया है। ० सितम्बर से २ अक्टूबर रात्री को ८ बजे से १० बजे तक प० वेदव्यास जो रेडियो कलाकार प० चुन्नीलाल आर्य भजनोपदेशक का प्रोग्राम रहेगा। साथ ही स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती वेदप्रचार अधिष्ठाता का प्रवचन होगा। स्वामी सत्यवेश जो प्रधान आर्यसमाज बुराड़ी द्वारा प्रचार की व्यवस्था करायगे

—आर्यसमाज रघुवरपुरा न०२ मे १ अक्टूबर से १० अक्टूबर तक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चन्द्र जी राघव के सर्वोत्तम प्रेरणा दायक जीवन कथा का आयोजन किया है। यह रामायण की कथा प० सत्यदेव जी स्नातक सगीत कलाकार द्वारा प्रस्तुत की जायेगी। ढोलक वादक प० ज्योतिप्रसाद जी रहेंगे।

४—आर्यसमाज किंग्जवे कम्प मे ७ अक्टूबर से १३ तक महात्मा रामकिशोर महोपदेशक का वेद प्रवचन होगा कार्यक्रम रात्री ८ बजे से १० बज तक रहेगा कथा से पूर्व प० चुन्नीलाल भजनोपदेशक के मधुर भजन हुआ करगे

५—आर्यसमाज महावीर नगर मे २९ सितम्बर से ६ अक्टूबर तक आचार्य हरिदेव सिद्धान्त भूषण तक केसरी का वेद प्रवचन होगा जिसमे कथा से पूर्व मधुर भजनो का भी कार्यक्रम होगा।

व्यवस्थापक
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग
दिल्ली सभा

नि शुल्क वैवाहिक सम्बन्ध सेवा

आर्यसमाज मन्दिर रमेशनगर
नई दिल्ली ११००१५

हमारे यहा विवाह योग्य लडके एव लडकियो का रजिस्ट्रेशन प्रति दिन साय बजे तक हाता है। मिलने का समय रविवार ११ से १२ बजे होगा

भवदीय
(मन्त्री) सुरेन्द्र महाजन

आवश्यक निदेश

सभा के पूर्व परिपत्रो मे दिल्ली की समस्त सम्बन्धित आर्यसमाजो के अधिकारियो से बार बार प्रार्थना की गयी है कि आप अपने आर्यसमाज के चुनाव सपन्न करा लें और वर्ष १९८४ ८५ मे आर्य समाज द्वारा किए गए कार्य का वृत्तान्त विवरण घोषित सभासदो की सूची आर्य व्यय परा सभ को देय राशिया दशाश वेदप्रचार तथा आर्यसन्देश का शुल्क तथा आगामी तीन वर्षो के लिए सभा के लिए प्रतिनिधियो के नाम उनके पूरे पते सहित सभा कार्यालय को भिजवा दें। बार बार लिखने पर भी अभी तक आपका आर्य समाज द्वारा उपयुक्त औपचारिकताए पूरी नहा की गयी

बार बार एक कार्य के लिए लिखने से सभा का धन व्यय मे स्टेशनरी प्रिंटिंग तथ डाक आदि पर खर्च हो जाता है। हमारी सभी का कर्तव्य है कि सभा के अनावश्यक खर्च को बचाय तथा सभा द्वारा मागी गयी जानकारी को समय पर सभा कार्यालय को भिजवाय ताकि सभा का सगठन सुदृढ बना रहे।

सभा का वार्षिक अधिवेशन निकट भविष्य मे होने जा रहा है और सभा का वार्षिक विवरण भी प्रकाशित होना है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि आपका आर्य समाज की गतिविधिया भी उसमे सम्मिलित की जायें।

मुझे पूर्ण आशा है कि आप पत्र मिलते ही उपर्युक्त सभी जानकारियां तथा देय राशिया सभा को यथाशीघ्र भिजवा दगे।

सभा आप सभा के सहयोग और सद भाव की अपेक्षा करती है। भवदीय
डा० धर्मपाल आर्य)
महामन्त्री

आर्यवीर दल के लिए अत्यावश्यक निवेदन

जैसा कि आपको पूर्व पत्र दिनांक ८ ७ १९८५ मे प्रार्थना की गयी थी कि आप अपनी आर्यसमाज मे सार्वदेशिक आर्यवीर दल के लिए एक अधिष्ठाता का चयन करके उसका नाम/निवास का पता आय तथा दूरभाष नम्बर आदि सभा कार्यालय को भिजवा द। अभी तक आपकी आर्यसमाज की ओर से यह नाम और विवरण प्राप्त नहीं हुए आशा है आपने अपनी आर्यसमाज के निर्वाचन के समय एक अधिष्ठाता का चयन कर लिया होगा यदि आपने अभी नहीं चुना हो तो अपनी समाज की अन्तरंग सभा की बैठक बुलाकर इस कार्य को यथाशीघ्र पूरा कर ल। कृपया चुने गय मनोनीत किये गए अधिष्ठाता के नाम निम्न फार्म पर भर कर सभा कार्यालय को यथाशीघ्र भिजवाने का कष्ट कर ताकि युवको में नई चेतना जागृत की और आर्यसमाज का, सगठन सुदृढ हो स्मरण रह अधिष्ठाता की आयु १८ से ४५ वर्ष तक हो तथा वह अपकी आर्यसमाज की ओर से आर्यवीर दल की समिति का सदस्य होना चाहिए।

कृपया अविलम्ब कार्यवाही कर अनुगृहीत कर डा० धर्मपाल आर्य
महामन्त्री

(पृष्ठ ६ का शेष)

गांधी और श्रद्धानंद की वीरगति

के जुलूस का नेतृत्व करते हुए इसका विरोध किया। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा गांधी को भेजे गए तार के अनुसार इस दिन हुए गोलीकांड में ४ हिंदू ५ मुसलमान मारे गए तथा १३ घायल एवं २० लापता हुए।

गांधी ने ३ अप्रैल, १९१९ को इस बलिदान एवं धैर्य के लिए स्वामी श्रद्धानन्द को तार दिया और लिखा रोलट कानून का विरोध करने में आपने तथा दिल्ली के लोगों ने जिस अनुकरणीय धैर्य से काम लिया है इसके लिए मैं आपको तथा दिल्ली के लोगों को साधुवाद देता हूं। हम उसके पीछे निहित दमन की भावना का विरोध कर रहे हैं। यह कोई आसान काम नहीं है।

लेकिन वीरमगाम और अमृतसर में हुए दुखदायी कांडों के बाद जब गांधीजी ने सत्याग्रह स्थगित कर दिया तो स्वामी श्रद्धानन्द ने दिल्ली समिति भंग करके आंदोलन से अपना हाथ खींच लिया। स्वामी श्रद्धानन्द गांधी की ओर से निराश हो गए और उन्होंने गांधी के दृष्टिकोण का जोरदार विरोध किया। यह दोनों की महानता थी कि प्रेमभाव फिर भी बना रहा। गांधी ने 'स्वामी जी के संस्मरण' में लिखा है कि जितना जोरदार उनका विरोध होता था उतना ही जोरदार उनका प्रेम भी होता था।

स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या से गांधी को बड़ा आघात लगा। गांधी कांग्रेस कमेटी की बैठक में भाग लेने के लिए गोहाटी जा रहे थे। उन्हें सोरभोग नामक एक छोटे से रेलवे स्टेशन पर लाला लाजपतराय का तार मिला। गांधी इस हत्या से स्तब्ध थे किंतु उनके विचार में यह हत्या नहीं "वीरगति" थी। गांधी ने गोहाटी की २४ दिसम्बर १९२६ की बैठक में इसे 'अपूर्व मरण' एवं 'धन्य मृत्यु' कहा और कामना की कि ऐसी मृत्यु हम सब को मिले।

२६ दिसम्बर १९२६ के अधिवेशन में गांधी ने स्वयं शोक प्रस्ताव रखा और उसमें स्वामी श्रद्धानन्द के देशप्रेम, निष्ठा निर्भयता एवं अन्य गुणों की प्रशंसा की।

"यंग इंडिया (३०-१२-१९२६) में" शहीद श्रद्धानन्द जी' शीर्षक से लिखी अपनी श्रद्धांजलि में गांधी ने उन्हें 'वीरता का अवतार" 'कर्मवीर" एवं "योद्धा" कहा तथा लिखा, "धर्म और सत्य" के लिए प्राण देने के कारण मृत्यु भी धन्य हो गयी।" गांधी ने ९ जनवरी १९२७ को बनारस में उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए गंगा स्नान किया और उस "महान आत्मा" के कार्यों को पूरा करने की ईश्वर से प्रार्थना की।

महात्मा गांधी ने स्वामी श्रद्धानन्द के हत्यारे अब्दुल रशीद को दोषी न मानकर उन अखबारों एवं लोगों को उत्तरदायी ठहराया जो स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय और मदनमोहन मालवीय को इस्लाम का शत्रु घोषित कर रहे थे। गांधी ने अनेक बार स्पष्ट शब्दों में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द 'इस्लाम के शत्रु" नहीं हैं। गांधी ने कहा कि हिन्दू-मुसलमानों को इस हत्या से शिक्षा लेनी चाहिए और उनके रक्त से अपने अपने हृदय का पाप धो देना चाहिए। गांधी ने प्रतिशोध और बदले की भी घम विरोधी कहा और निर्देश दिया कि हिंदुओं को आत्म-संयम रखना चाहिए।

महात्मा गांधी स्वामी श्रद्धानन्द को, कुछ मामलों में असहमति के बावजूद अपना भाई आदरणीय सहयोगी मानते हुए उनके गुणों के प्रशंसक बने रहे। अस्पृश्यता निवारण के लिए उन्होंने जो कार्य किये उनकी गांधी ने सदैव मुक्त कंठ से प्रशंसा की। यद्यपि दोनों देशभक्तों के क्षेत्रों एवं कार्यप्रणाली में अंतर था, लेकिन क्या यह संयोग ही था कि दोनों को एक जैसी वीरगति प्राप्त हुई।

कादम्बिनी से साभार

ए/६८ अशोक विहार फेज-I दिल्ली ५२

(पृष्ठ १ से आगे)

देवव्रत धर्मेन्दु

बाद भी उन्होंने केवल भाषण देने तक ही अपने आप को सीमित नहीं रखा। बल्कि उन्होंने उनको चिर-स्थायी बनाने के लिए उन्होंने रचनात्मक कार्य प्रारम्भ किये। बालक बालिकाओं, युवक युवतियों में धार्मिक सामाजिक नैतिक मूल्यों के प्रतीक अनेक विषयों पर प्रतियोगिताएं आयोजित करना तथा सत्यार्थप्रकाश यज्ञ संस्कार सम्बन्धी परीक्षाएं आयोजित करना तथा युवकों को परोपकारी एवं सेवा-कार्यों के लिए उत्साहित करते रहना उन्होंने अपने जीवन का अंग बना लिया था। अपने जीवन में जो धन वैभव उन्होंने प्राप्त किया अपने पास नहीं रखा और न स्वयं उसके उपभोग का आनन्द लिया वरन एक तपस्वी याजक बनकर आर्य अनाथालय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और अन्य आर्य सामाजिक संस्थाओं, गरीब छात्रों के लिए अर्पित कर दिया।

धीर, गम्भीर एवं सौम्य प्रसन्न चित्त धर्म की धुन के धनी कुशल वक्ता, कुशल लेखक कुशल पुरोहित, कुशल प्रशासक कुशल युवा नेता श्री देवव्रत धर्मेन्दु को आर्य सन्देश परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

—यशपाल सधाशु

(पृष्ठ ५ से आगे)

इन्द्र-विरोचन

प्रकार ब्रह्म हो सकता है। वह फिर ब्रह्मा (प्रजापति) के पास आया और अपनी शंका को सुनाया।

ब्रह्मा जी (प्रजापति) ने कहा—बेटा! तुम्हारी बुद्धि देखकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस बार तुम्हारे साथ विरोचन क्यों नहीं आया? इन्द्र ने कहा—वे शरीर को ही सब कुछ समझने लगे। हर समय सुख से जीवन बिताते हैं। शारीरिक सुख को ही वे सच्चा सुख समझते हैं। इस बात से अलग हट कर सोचना नहीं चाहते।

इतना सुनकर ब्रह्मा जी ने इन्द्र को फिर से ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने के लिए कहा। इन्द्र फिर वापस आ गया। उसने एक वर्ष तक ब्रह्मचारी का पवित्र जीवन बिताया। एक वर्ष के बाद ब्रह्मा जी के पास गया। ब्रह्मा जी ने कहा—संसार में ब्रह्मचर्य से बढ़कर कोई तप नहीं है। इसी के द्वारा हम ब्रह्मविद्या प्राप्त कर सकते हैं।

इन्द्र ने ब्रह्म के स्वरूप को जानने की इच्छा की। ब्रह्मा जी ने कहा आत्मा या ब्रह्म का कोई स्वरूप नहीं होता। इस शरीर के नष्ट हो जाने पर भी आत्मा अमर रहती है। आत्मा कभी मरती नहीं। इसे किसी प्रकार का रोग या कष्ट नहीं होता।"

ब्रह्मा जी ने यह उपदेश इन्द्र को दिया, जो देवताओं का राजा था, जिनकी सात्त्विक वृत्तियां थीं। विरोचन असुरों का नेता था। जो खाना, पीना, रहना यही जीवन तत्त्व है ऐसा समझते हैं वही असुर हैं, तामसिक वृत्ति वाले हैं। इन्द्र ने उनकी आज्ञा मानी और पवित्र जीवन बिताया। आनन्द और सुख से जीवन भर गया। इन्द्र को सच्चा ज्ञान मिला। विरोचन को नहीं मिला। इसलिए वह दुःखी रहता था। सुख और दुःख की यही पहचान है। □

स्व० श्री पं० देवव्रत धर्मेन्दु श्रद्धांजलि सभा

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से

२२ सितम्बर रविवार को

आर्यसमाज दीवान हाल में प्रातः १० बजे पं० देवव्रत धर्मेन्दु की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया है, इस अवसर पर पहुँचकर कर्तव्य का पालन करें।

मन्त्री—आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली

आर्यसमाज करौलबाग में वेद प्रचार सप्ताह एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

३० अगस्त से ७ सितम्बर तक आर्यसमाज करौलबाग नई दिल्ली में वेदकथा एवं वृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री प्रो० रामकिशोर जी की वेदकथा एवं श्री गलाबसिंह राघव द्वारा मधुर भजनों का रसास्वादन कराया गया।

७ सितम्बर को आर्यसमाज के प्रांगण में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री प्रो० रामकिशोर, प्रो० रमेश चन्द्र श्री आचार्य हरिदत्त शास्त्री श्री मोदप्रकाश शास्त्री एवं श्री अजय भल्ला आदि वक्ताओं ने श्रीकृष्ण के उदात्त चरित्र पर प्रकाश डाला। सभा का संचालन श्री ओमप्रकाश सुनेजा ने किया।

निवेदक
कार्यालय मन्त्री
दयालचन्द गुप्त

"कैथल में कवि सम्मेलन"

पलवल। आर्यवीर दल हरियाणा का प्रान्तीय महा सम्मेलन २२ सितम्बर रविवार से कैथल में हो रहा है। २२ सितम्बर रात्रि ६ बजे कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया है जिसमें निम्नलिखित आर्य कविगण पधार रहे हैं-प्रो० उत्तमचन्द शरर (संचालक), डा० [illegible] सियाराम निर्भय (आरा), श्री सत्यपाल बेदार (दिल्ली) श्री गंगा राम दीवान, श्री मुन्नवर साहिब, श्री व्याकुल जी एवं अन्य कई कविगण।

(अजीत कुमार आर्य)
मंत्री आर्यवीर दल हरियाणा

संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के लिए शुभ सूचना

"राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान" से [illegible] सुलतानपुर महरौली दिल्ली-३० में खुल गया है जिसमें विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा एवं आवास की सुविधा है और जनवरी से ७५ रु० मासिक छात्रवृत्ति भी छात्रों को दी जाएगी।

मनुदेव शास्त्री, प्रिंसीपल
सीताराम विद्यामन्दिर
दुर्गापुरी सुल्तानपुर
महरौली दिल्ली [illegible]

वष १ अंक ४७ | रविवार १३ अक्तूबर, १९८१ | सृष्टि सवत् १९७२९४९०८६ | आश्विन २०४२ | दयानन्दाब्द १६१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २० रुपये | आजीवन २०० रुपय | विदेश मे ५० डालर ३० पौंड

गड़बड़ी फैलाने के लिए पाक से धन

नई दिल्ली, २१ सितम्बर। गुप्तचर एजेन्सियो ने केन्द्र सरकार को आग्रह किया है कि पाकिस्तान ने पजाब के अलावा उत्तर भारत के कुछ अन्य क्षेत्रो मे अशाति पैदा करने के उद्देश्य से कट्टरपथी मुस्लिम नेताओ और सगठनो को व्यापक स्तर पर आर्थिक सहायता देने की पेशकश की है

गुप्तचर एजसियो की सूचना के अनुसार पाकिस्तान सरकार ने 'वीसा देने का उदार नीति के नाम पर बडा सख्या म भारत के मुस्लिम नेताओ व्यापारियो और सादग्ध व्यक्तयो का पाकिस्तान आने की सुविधा दे दो है। पाकिस्तान इन लोगो के माध्यम से भारत मे 'मुस्लिम पर्सनल ला' और 'इस्लाम' की रक्षा के नाम पर मुस्लिम समुदाय को भारतीय समाज से अलग अलग करने का कुप्रचार तथा दगे करवाने का इरादा रखता है।

विदेशो मे भारत विरोधी षड्यन्त्र पर नजर रखने वाले गुप्तचर सगठन ने अपनी रिपोर्ट म जामा मस्जिद के इमाम मौलाना अब्दुल्ला बुखारी द्वारा इसी महीने के प्रारम्भ मे की गई पाकिस्तान यात्रा का उल्लेख भी किया है। रिपोर्ट के अनुसार शाही इमाम ने पाकिस्तान के नेताओ और पत्रकारो के बीच जाकर कहा, भारत मे हिन्दू, मुसलमानो और सिखो पर बुरी तरह अत्याचार कर रहे हैं। भारताय मुसलमाना क पास इन जुलमो क विरुद्ध सघष करने क आवश्यक साधन नहो हैं। इस काम के लिए पाकिस्तान सरकार और जनता को लडाई लडने के लिए आर्थिक और अन्य सहायता करनी चाहिए।

इमाम बुखारी ने खुलेआम यह यह भी कहा कि हम पाकिस्तान को ताकतवर देखना चाहते हैं। उन्होने असम मे ५० हजार और मुरादाबाद मे पाच हजार मुसलमानो के मारे जाने तथा भारत मे मुसलमानो के पर्सनल ला के कुछ प्रावधानो के विरुद्ध अदालती फैसलो का उल्लेख करते हुए इस्लामी परम्पराओ की रक्षा की दुहाई भी दी है। इमाम की टिप्पणियो को पाकिस्तानी अखबारो ने सुर्खियो मे छापा है। पाकिस्तानी नेताओ ने इमाम के साथ हुई गुप्त वार्ताओ मे हर सम्भव सहायता के वायदे किए हैं।

गुप्तचर एजेसिया पाकिस्तान के इरादो को विफल करने के लिए भारत म सक्रिय अन्य धार्मिक नेताओ की गतिविधियो पर भी कडी नजर रखे हुए है और इनके विरुद्ध आवश्यक कार्रवाई करने की सलाह भी दे रही हैं।

बताया जाता है कि आजमगढ के इमाम मौलाना ओबेदुल्ला खान के एक कट्टर साम्प्रदायिक और उत्तेजक भाषण के टेप को मुस्लिम क्षेत्रो में सुनवाने और मुफ्त बटवाने की रिपोर्ट भी सरकार को दी गई है। राजस्थान के पाली कस्बे की मिल्लत मे दिये गए इस भाषण मे मौलाना ओबेदुल्ला खान ने तलाकशुदा मुस्लिम बीवी की परवरिश का खर्चा देने सम्बन्धी उच्चतम न्यायालय के फैसले का कडा विरोध करने और पर्सनल ला के लिए खून की नदिया बहा देने की पुरजोर अपील की है।

इस भाषण मे मौलाना ओबेदुल्ला खान ने कहा है कि मस्लिम किसी कोर्ट के पाबन्द नही है। ये किसी कोट मे सफाई देने नही जायगे लेकिन कुरान या पर्सनल ला के खिलाफ कोट मे जाने वालो का सफाया कर दिया जाएगा। यदि पर्सनल ला बदलने की कोशिश हुई तो बाला साहेब देवरस अटलबिहारी वाजपेयी और राजीव गाधी को भी कलमा पढने के लिए मजबूर होना पड सकता है।

बताया जाता है कि इटेलीजेन्स ब्यूरो की रिपोर्ट पर भोपाल मे इस भाषण के टेप की प्रतिया जब्त कर ली गई हैं लेकिन दिल्ली उ० प्र० और विहार के मुस्लिम बहुल क्षत्रो मे अब भी यह टेप धडल्ले से बट और बज रहे है। इन राज्यो के प्रशासन ने अब तक कोई ठोस कार्रवाई नही की है।

(नवभारत टाइम्स से साभार)

युवा पीढ़ी को महर्षि दयानन्द का सन्देश सुनायें —सूर्यदेव

आर्यसमाज शाहाबाद मुहम्मदपुर दिल्ली मे आयोजित एक मास के आर्यवीरदल के शिविर के समापन समारोह के अवसर पर बोलते हुए सभा प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा—

आज की आवश्यकता है कि ग्राम ग्राम शहर शहर मे युवको के शारीरिक बौद्धिक और आत्मिक विकास के लिए इस प्रकार के आर्यवीर दल के शिविर लगने चाहिए। उन्होने अज्ञान, अभाव और अत्याचार मिटाने के लिए तथा देश की एकता और अखण्डता के लिए युवको को आगे आने के लिए आह्वान किया तथा प्रेरणा दी कि सभी आर्य नर-नारियो को अपने लडके और लडकियो को आर्य सत्सगो मे लाना चाहिए और उन्हें अपने धर्म और सस्कृति का परिचय कराना चाहिए। आर्यसमाज का उद्देश्य तो व्यक्ति और समाज के सर्वतोमुखी विकास शारीरिक आत्मिक सामाजिक लौकिक एव पारलौकिक हर प्रकार के उत्थान से जुडा हुआ है। वदिक मन्त्र य सर्वोत्कृष्ट एव वैज्ञानिक है इनके प्रचार प्रसार के लिए हमे हर सम्भव प्रयत्न करने चाहिए।

'इस अवसर पर ५० युवको ने तलवार भाले तथा व्यायाम आदि का सुन्दर प्रदर्शन किया जिसको जनता ने मन्त्रमुग्ध होकर देखा।' यह शिविर श्री धर्मवीर वशिष्ठ प्रशिक्षक के नेतत्व मे सम्पन्न हुआ, सार्वदेशिक आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के अधिष्टाता श्री प्रियतमदास रसवन्त तथा मन्त्री श्री श्यामसुन्दर विरमानी तथा श्री रामसिह, श्री जगवीर सिह श्री राजेश मैत्री शाखानायक आदि का भी योगदान इस अवसर पर स्तुत्य है।

मन्त्री
आर्यसमाज शाहाबाद मुहम्मदपुर

सम्पादक—यशपाल 'सुधांशु' एम०ए० | व्यवस्थापक—डा० गणेशीलाल | प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

आइये वेदमाता की शरण में चलें

लेखिका—श्रीमती सुशीलादेवी विद्यालकृता सिकन्दराबाद

ओ स्तुता मया वरदा वेदमाता, प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजानाम् । आयु प्राग प्रजा पशून कीर्त्ति द्रविण ब्रह्मवर्चस मह्य दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥

यह अथर्ववेद का मत्र है। इसमे प्रभु कहते हैं। ऐ मानवो ! मैंने वेदमाता वेदरूपी माता स्तुता=प्रस्तुत कर दी है। यह कैसी है ? वरदा= वर देने वाली। तुम्हारी झोली खुशियो से वरदानो स भर देने वाला है। सबको पढने की प्रेरणा दो। यह वेदमाता द्विजानाम्=द्विजो को पावमानी पवित्र करने वाली है। द्विज कौन ? जिसके दो जन्म हुए हो। एक जन्म माता के गर्भ से तथा दूसरा जन्म आचार्य गर्भ से। आचार्य उपनयमान ब्रह्मचारिण कृणुते गर्भमन्त.। त रात्रस्तिस्र उदरे बिभर्त्ति त जात द्रष्टुमभिसयन्ति देवा । माँ जन्म देती है शरीर का। आचार्य उसे दूसरा जन्म देकर आत्मवान् बनाना है। वेदमाता ऐसे द्विजो को पवित्र कर देती है। उनके जीवन कुन्दन बन जाते हैं।

फिर क्या देती है वेदमाता ? सुनिये—आयु, प्राण प्रजा पशु, कीर्ति द्रविण और ब्रह्मवर्चस।

मनुष्य को तीन प्रकार की इच्छाय होती है-पुत्रैषणा, वित्तैषणा लोकैषणा।

पुत्रैषणा=सतान की इच्छा सभी को होती है। सबकी गोद भरी रहे = [illegible] कुल [illegible] जाता है। [illegible] [illegible] सन्तान [illegible] पुत्र पु [illegible] नामक नरक से त्राण करता है जो एक है पुत्रषणा वेदमाता [illegible] इस इच्छा को भी पूर्ण करती है।

वित्तैषणा धन की इच्छा। झोली सबकी भरी रहे। कोई गरीब न हो अभाव ग्रस्त न रहे। सबके घर धन-धान्य से परिपूर्ण रहे। वेदमाता पशून् पशु शब्द से ही सुख समृद्धि नापी जाती थी। किसके पास पशुधन—गाय, बैल, घोडे, हाथी कितने है, इसी से समृद्धि का पता चलता था तो वेदमाता पशु भी देती है।

वित्तैषणा=पूरी करती है।

लोकैषणा=कीर्त्ति यथा, मान नाम सभी चाहते हैं। बुरे काम करने वाला भी चाहता है कि कोई उसे बुरा न कहे। धन जाये पर नाम न जाये। वेदमाता कीर्त्ति भी देती है। इसके साथ-साथ वेदमाता आयु और प्राण शक्ति भी देती है। जीवेम शरद. शतम। आयु प्राण। तात्पर्य यह कि जो वेद का स्वाध्याय करता है। वेद पढ कर उसके अनुसार अपने जीवन का सचालन करता है उसे जीवन मे भगवान् के आशीर्वाद से सब कुछ प्राप्त हो जाता है।

चार चीजो के समूह का नाम मनुष्य है। शरीर मन बुद्धि और आत्मा। हमारे पुरुषार्थ भी चार ही कहे गये हैं— धर्म, अर्थ काम और मोक्ष। शरीर के लिए आवश्यकता है अर्थ की। अर्थ याने शरीर को जीवित रखने के साधन। रोटी, कपडा, मकान, शिक्षा। जब जीवन है शरीर को खाना चाहिए। कोई बढिया खाये या घटिया पर चाहिए सबको ही खाना। जीवन चल नही सकता यदि शरीर को अर्थ याने शरीर रक्षा के लिये आवश्यक, अनिवार्य साधन उपलब्धन न हो।

शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनम्।

चाणक्यनीतिसूत्र मे भी कहा है—
सुखस्य मूल धर्म ।
धर्मस्य मूलम् अर्थ ।

सुख का मूल धर्म है परन्तु धर्म का मूल अर्थ है। अत अर्थमेवार्जय निष्फला क्रिया धन पदा करो।

मन के लिए आवश्यकता है काम की। बिना कामना के मन ही क्या ? हा कामनायें शिव हो शुभ हो।

बुद्धि के लिए धर्म की आवश्यकता है, धर्म के कारण ही बुद्धि मे सत् असत् का विवेक पैदा होता है।

आत्मा को मोक्ष की आवश्यकता है। हमे शरीर और मन के बधन से मुक्त होना है। कैसे ? शरीर और मन के द्वारा ही। यह एक ऐसी पहेली है जिसे सुलझाना है। इसका उपाय है—

तराजू लो। एक पलड मे अर्थ और काम को रखो। दूसरे पलडे मे रखो धर्म को तराजू की डडी बुद्धि के हाथ मे दे दो न अर्थ और काम को छोडो, न धर्म को छोडो। धर्म पूर्वक अर्थ और काम का उपभोग करोगे तो आत्मा को मोक्ष मिल जायेगा।

महाभारतकार व्यास जो कहते हैं। ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष न च कश्चित् शृणोति मा। धर्मादर्थश्च कामश्च स धर्म किं न सेव्यते ? अर्थ और काम बुरे नही। शरीर के लिए अर्थ अनिवार्य है और मन के लिए काम अनिवार्य है। वह मन ही क्या ? जिसमे कोई कामना न हो ?

अर्थ ग्राह बनकर उसने न लगे। मन मे बुरी कामनाय न आये। मन शिवसकल्पी हो इसके लिए धर्मपूर्वक अर्थ और काम का उपभोग करो। आज अर्थ और काम का पलडा भारी हो गया है। धर्म का पलडा हल्का हो गया है। इसीलिये इतनी अशान्ति इतना असन्तोष है।

टका धर्म टका कर्म, टका हि परमपदम। टका यस्य गृहे नास्ति हा टका टकटकायते। टका ही धर्म। टका ही कर्म बन गया है। मनुष्य का निर्माण नही हो रहा। पहिले आश्रम व्यवस्था थी। ब्रह्मचर्य मे धर्म का अध्यात्म सग्रह सज्ञान मिलता था गृहस्थ-अर्थ-सम्पादन का आश्रम था पर धर्म पूर्वक। वानप्रस्थ, सन्यास मोक्ष की साधना आत्म साक्षात्कार के आश्रम थे। सीढी चढते चढते आदमी मनुष्य बनकर लक्ष्य तक पहुच जाता था। लक्ष्य सभी का होता था—

त्रिविधदु खात्यन्तनिवृत्ति अत्यन्तपुरुषार्थ ।

आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक दुःखों से पूर्ण निवृत्ति पाना ही जीवन यात्रा का चरम लक्ष्य था। हम वेदो को भूल गये। वेद की शरण मे आओ सब कुछ मिलेगा। कब ? जब मह्य दत्त्वा प्रभु के अर्पण करके 'तेन त्यक्तेन' की भावना से ससार के विषयो का भोग करोगे। तब आपको व्रजत ब्रह्मलोकम् प्रभु का ब्रह्मलोक=मोक्ष प्राप्त हो सकेगा।

यत् करोषि यदश्नासि यज्जुहोसि ददासि यत् यत्तपस्यसि कौन्तेय कुरुष्व मदर्पणम् यह भगवदर्पण की भावना के बिना प्रभु का प्रसाद पाना कठिन है। उपनिषदो मे अष्टावक्र की कथा प्रसिद्ध है। राजा जनक ने अष्टावक्र से कहा पाच मिनटो मे प्रभु के दर्शन करा दो। अष्टावक्र ने कहा कराता हू परन्तु तब, जब आप अपना मन मुझे दे दें। मन एकाग्र तो प्रभु दर्शन होते हैं। चचल लहरों मे अपना मुख नही दिखाई पडता। स्थिर पानी मे ही हमारा मुख प्रतिबिम्बित होता है। जीना भी एक कला है। इस वेदमाता की गोद मे बैठकर सीखा जा सकता है। आइये श्रावण मास है। वेद का पढना, पढाना, सुनना, सुनाना, सब आर्यों का परम धर्म है। वेदमाता की गोद मे बैठकर अभ्युदय और नि श्रेयस का अमृत पान करें।

परामर्श बहुमूल्य है

परमात्मा ने तुमको दिया
इसका सदुपयोग करो
बदले मे कुछ न लिया
इससे परोपकार करो
ऐसे कार्य करो
जिससे दुबारा मनुजतन प्राप्त हो
ऐसा मार्ग अपनाओ
जिससे सच्चा सुख प्राप्त हो
निस्सन्देह परमात्मा प्रदत्त
यह जीवन अमूल्य है
इसको सभालकर रखना
परामर्श बहुमूल्य है

—शकुनचन्द गुप्त विशारद
लालगंज, रायबरेली (उ.प्र.)

सारी उलझनों का हल है आर्यसमाज !

कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर के हृदयोद्गार

★

आर्यसमाज एक बडे उद्देश्य को लेकर स्थापित हुआ था। अज्ञान के अन्धकार को समाज से दूर भगाने के महान् प्रयत्न को आर्यसमाज ने निरन्तर जारी रखा। आर्यसमाज राह भूले जहाजों के लिए लाईट हाउस का काम देता है।

मैं एक जगह किसी लखपति सेठ महोदय से चन्दा मांगने गया। आर्यसमाज का नाम सुनते ही वे गरज उठे और कहा—क्या आर्यसमाज अभी मरा नहीं है? मैंने कहा—आर्यसमाज नहीं मर सकता, मेरे जैसा व्यक्ति मर जाये तो कोई बात नहीं, लेकिन आर्यसमाज को तो जिन्दा रहना है। अगर कोई यह समझे कि आर्यसमाज मर जायेगा, तो वह निरा मूर्ख है।

कुछ यात्री एक नाव मे सफर कर रहे थे। रास्ते मे तूफान के कारण नाव डावाडोल होने लगी। साथी यात्री ने एक से कहा—भाई नाव डूबने वाली है। कुछ उपाय करो। तो वह कहता है—डूबने वाली है तो डूबने दो। मल्लाह का ही नुकसान है। उसने हम से किराया ज्यादा ले लिया है। वह अपने पाप का फल भोगेगा।

लेकिन वह यात्री यह भूल गया कि नाव के साथ वह स्वयं भी डूब कर मर जायगा। ऐसी ही बात हमारे कुछ भाई किया करते हैं। आर्यसमाज वह नाव है जिसमे सारी सभ्यता, सारी संस्कृति, गीता, रामायण, वेद और आध्यात्मिक भावनाएं संजोकर सुरक्षित रखी गई हैं। अज्ञानियो! अगर यह किश्ती डूबी तो हम सब डूब जायगे। याद रखो इस बात को, आर्यसमाज के गौरव मे हमारा गौरव है। आर्यसमाज के जीवन मे हमारा जीवन है। आर्यसमाज की मौत मे हमारी मौत है, आर्यसमाज के अभिमान मे हमारा अभिमान छिपा हुआ है।

एक आर्यसमाज के शानदार जुलूस मे मैंने अपने भाई-बहनो को सैनिक रूप मे देखा, हरियाने के वीरो को अपनी मस्ती मे देखा। राजस्थान की केसरिया रंग की साडी पहने बहनो को जब मैं देख रहा था तो उस समय मेरे दिल की कलियां खिल रही थी और मेरी आशा का सुमन विकसित हो उठा। दिल मे एक ध्वनि हुई—आर्यसमाज जिन्दाबाद। महर्षि का स्मरण किया। अरे आर्यो यह तुम्हें क्या मालूम कि इस संस्था के बनाने में कितनी जिन्दगियां लगी हैं। इसकी बुनियाद के अन्दर कितने नेताओ के जीवन गले हैं? उन बलिदानियो का बलिदान निष्फल न करो। आर्य वीरो, मैं कोई विद्वान् नही हूँ। वेद मन्त्रो की गम्भीरता तो ये पंडित आपको बतायेंगे। मैं तो एक बात कहता हूं। आर्यसमाज के साप्ताहिक उत्सवो मे कुछ वेद के मन्त्र पढ जाते है। उन मन्त्रो मे क्या लिखा है—"संगच्छध्वं संवदध्वं ' समझो इन मन्त्रो को गहराई को।

राजनीति मे आकर लोग लडे तो कुछ अच्छा भी लगता है, लेकिन यहा आर्यसमाज मे आकर जो लोग मन्त्री, प्रधान या कुछ और बनने के लिए लडना चाहते है। चपरासियो पर हुकूमत चलाने के लिए, तो मैं कहूँगा कि तुम अपनी शक्ति नष्ट कर रहे हो। अपनी सारी तपस्या पर पानी फेरते हो। अगर तुम्हें कबड्डी खेलनी हो तो जाओ पोलिटिकल मैदान मे खेलो। अगर एम० पी० के लिए टिकट मिल गया तो तुम्हारे पांच वर्ष के लिए पौ बारह हैं।

अपनी संस्था के आदर्श को कायम रखो। संगठित रहो! संगठित रहोगे तो दुनिया तुम्हारे सामने झुकेगी। वरना वही तुम्हें झुकायेगी। आपने जो चुनाव करते हो, उसमे सर्वसम्मत चुनाव करो—ऐसा प्रयत्न करो। उसमें चुनाव न करना पडे, वोट न डालने पडे, झगडे न हो, इस बात की कोशिश करो। जो कुछ कर्मठ आर्य हो जिनके चरित्र पर आपको विश्वास हो उनको आने दो काम करने के लिए। यह प्रवृत्ति न आने दो कि हम अपने स्वार्थ को ऊपर रखकर आर्यसमाज को ही हानि पहुंचाने पर तुल जाय। मैं सारे भारत वर्ष मे घूमता हू। मैंने यह अनुभव किया है कि आर्यसमाज सारे भारत की आत्मा है। अगर आत्मा मर गई तो भारत की भारतीयता नष्ट हो जाएगी। वैदिक संस्कृति नष्ट हो जाएगी। आर्यसमाज को छोडकर और कोई संस्था है फिरका परस्ती से लडने वाली? मुह से तो सभी लडते हैं, पट्ठे उनसे हाथ मिलायगे ऐन मौके पर अपने स्वार्थ के लिए। फिरकापरस्त तो वे ज्यादा हैं जो फिरकापरस्ती के साथ फिरकापरस्त संस्थाओ के साथ हाथ मिलाते हैं और उनकी पीठ ठोकते हैं। यह वास्तव मे शर्म की बात है। आज ईसाई पादरियो मे यह दम नही है कि व आर्य विद्वानो के मुकाबले मे आवें। इन विद्वानो को रहने दो मेरा ही मुकाबला करने आ जाय, तो देखूं। आज ईसाई पादरी नाइमजूस की मीठी गोलियां खिलाकर राम व कृष्ण के भक्तो की चोटियां काट रहे हैं। आज बडे-बडे धर्माचार्य आर्यसमाज के खिलाफ लैक्चर देते फिरते है, लेकिन मुसलमानो की फिरकापरस्ती का मुकाबला करने के लिए कोई आगे नही आता। ईसाइयो का जवाब देने के लिए कोई तैयार नही है।

आज बहुत लोग बौद्ध धर्म का प्रचार करते हैं। हमारी सरकार भी उनकी पीठ ठोका करती थी। बौद्धो ने राम और कृष्ण के मन्दिरो से उनकी मूर्तियो को निकाल फेंक कर उनकी जगह बुद्ध की मूर्ति रखी गई है। जिनको हमने सिर पर चढाया, वे ही आज हमारी आस्तीन के सांप बन रहे हैं।

वे प्रचार करते रहते हैं कि संसार धोखे की टट्टी है। तुम कुछ मत करो। कोई किसी का बाप नही, कोई किसी का बेटा नही। मैंने कहा "अगर इस जगत् मे कोई किसी का नही है तो यह सारा जगत् यतीमखाना हुआ। यह जगह पूर्ण है, क्योंकि यह पूर्ण मे से निकला है। अगर यह दुनिया की महफिल झूठी है और सपना है तो तुम्हारे सामने मुश्किल ही मुश्किल है।

एक पण्डित ने लिखा—हिन्दुस्तान मे प्लेग बम्बई मे पैदा हुआ और आर्यसमाज का काम भी दयानन्द ने बम्बई मे ही शुरू किया था। प्लेग और आर्यसमाज एक बराबर हैं। प्लेग चूहो से शुरू होता है।

उन पण्डित जी के लिए मेरा जवाब यही है कि आर्यसमाज पाखण्डियो के लिए प्लेग ही है। मौलवियो के लिए, पादरियो के लिए, अज्ञान फैलाने वाला के लिए रूढिवादियो के लिए आर्यसमाज प्लेग है और प्लेग हो रहेगा। आर्यसमाज का प्लेग बम्बई से चला और ऊंचे स्वर मे कहता है कि ईसाई भाइयो, सफाई करो, नही तो मैं आ रहा हू।' सफाई हो रही है। किताबें बदल गयी। किताबो के तर्ज बदल गए। भारतवर्ष के अन्दर जितने अच्छे कानून बन रहे हैं, वे कोई इन लोगो ने थोडे ही ईजाद किए हैं? वे सब हमारे पीसे हुए को फिर पीसा गया है। आज देश के अन्दर दहेज कानूनन बन्द कर दिया गया है तो पहले इसकी आवाज किसने उठायी थी? बच्चो के ब्याह न हो, बूढो के ब्याह न हो यह सब आंदोलन पहले आर्यसमाज ने चलाये थे और वे ही बात आज हमारी सरकार अमल मे ला रही है। अगर गो-हत्या को बन्द करने की आवाज आज उठ रही है तो दयानन्द का यह अपने जीवन मे देखा हुआ पहला स्वप्न था। अगर आज हमारे देश में गो-हत्या बन्द नही हुई तो यह हमारे लीडरो की कमजोरी की निशानी है। हिन्दी राष्ट्रभाषा हो यह सपना दयानन्द ने देखा था। आज वह स्वीकार हो हो गयी है। राष्ट्रभाषा की पट्टरानी की जगह वह जा बैठी।

अगर आर्यसमाज को कोई कमजोर करना चाहे अपने मे से ही, तो मैं यह कहूगा कि चलो, दोनो चलकर ताला लगा देते हैं। लेकिन याद रखो, आर्यसमाज कभी नही मरेगा। अगर हमारे हाथ से दयानन्द के स्वप्न की पूर्ति न होगी, तो कोई बात नही, दूसरो के हाथो से होगी। भावी सन्तान ही सही, इस स्वप्न को साकार कर दिखायेगी। क्योंकि विश्व का, मानव के कल्याण का और कोई रास्ता ही नही है, दुनिया को दयानन्द के रास्ते पर आना होगा।

वेदोऽखिलो धर्म मूलम

प्रेमचन्द श्रीधर एम० ए०

गुरुवर विरजानन्द व्याकरण के सूर्य थे। उनके पार्थिव शरीर के त्याग करने पर देव दयानन्द ने कहा था, 'आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया है।' ऐसे महान् गुरु के चरणों में बैठकर देव दयानन्द ने पाणिनि की अष्टाध्यायी और पातञ्जल का महाभाष्य पढा था और आर्ष-अनार्ष ग्रन्थों के अन्तर को समझा था। आर्ष-अनार्ष ग्रन्थो के अन्तर को समझना ही देव दयानन्द को महानतम उपलब्धि थी। इसी उपलब्धि ने ही भावी भारत के इतिहास में एक नया अध्याय जोड दिया।

देव दयानन्द ने स्पष्ट किया कि वाङ्मय के दो रूप हैं। अपौरुषेय और पौरुषेय। पुन पौरुषेय के भी दो रूप हैं आर्ष और अनार्ष। आर्ष वाङ्मय ब्रह्मा से जैमिनी पर्यन्त और उसके उपरान्त का सारा वाङ्मय आचार्य साहित्य अनार्ष वाङ्मय की श्रेणी में आता है। जिनकी आस्था अपौरुषेय ज्ञान में है उन्हें आस्तिक और शेष सब को उन्होंने नास्तिक कोटि का स्वीकार किया। क्योंकि—

नास्तिको वेदनिन्दक।
—मनु०

जो वेद के अपौरुषेयत्व को स्वीकार करता है वही आस्तिक है। देव दयानन्द ने इसलिए स्पष्ट रूप से घोषणा की—

"वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढना, पढाना सुनना सुनाना, सब आर्यो का परम धर्म है।"
—आर्यसमाज का तीसरा नियम

श्रावणी उपाकर्म पर वेद कथाओं का प्रारम्भ होता है। इसका मुख्य उद्देश्य ही वेद का प्रचार-प्रसार रहता है। इस शुभ अवसर पर वेद के सम्बन्ध में कुछ चिन्तन, मनन उपयुक्त रहेगा। इसी दृष्टि से हम निम्न तीन मूल भूत प्रश्नों पर विचार करेंगे।

१ वेद की उत्पत्ति किस प्रकार हुई ?
२ वेद का कर्ता कौन है ?
३ वेदों का प्रयोजन क्या है ?

हर सत्य का आधार प्रमाण होता है। प्रमाण भी दो प्रकार का है। स्वत प्रमाण और परत प्रमाण। जब अपौरुषेयत्व की बात करते हैं तो इसका अर्थ है कि वेद स्वत प्रमाण हैं। ईश्वर का दिया हुआ मानव मात्र के लिए श्रेष्ठतम ज्ञान है। वेद का ज्ञान बिना किसी भेदभाव के सब मनुष्यों के लिए है। वे भले ही वे किसी भी जाति वर्ग अथवा देश के भी अन्य धर्मग्रन्थ हैं सब परत प्रमाण हैं, क्योंकि वे मनुष्य कृत है। मनुष्य सर्वज्ञ सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् कभी नहीं हो सकता। वह अल्पज्ञ है और उसकी शक्ति सीमित है। इस सीमितता और अल्पज्ञता के कारण ही उसमें अपूर्णता है। अपूर्णता कभी पूर्णता को जन्म नही दे सकती। इसलिए मनुष्यकृत सभी ग्रन्थ अपूर्ण हैं और उनमें शाश्वत तथा सार्वभौम सत्यों का भी अभाव है। प्राय ऐसे ग्रन्थों की मान्यताएँ साम्प्रदायिक तथा एकपक्षीय हैं।

ज्ञान भी दो प्रकार का है। स्वाभाविक तथा नैमित्तिक। पशु पक्षी अपने स्वाभाविक ज्ञान के कारण ही तैरना और उडना जानते हैं। एक मल्लाह के पुत्र को भी अपने पिता से नदी में तरना सीखना पडेगा। तैरना तो अलग बात है, मनुष्य के बच्चे को चलना और बोलना भी सीखना पडता है। ऐसे बहुत से प्रयोग किए गए जिनमे मनुष्य के बच्चों को मानव समाज के वातावरण से अलग थलग रखा गया और बच्चे कुछ भी नही सीख पाए। केवल वन में जिन पशुओं के बीच उन्हें रखा गया वैसा उनका भी स्वभाव बना। इससे स्पष्ट है कि मनुष्य के लिए नैमित्तिक ज्ञान की आवश्यकता है। वेद ईश्वर के द्वारा दिया गया नैमित्तिक ज्ञान है जो सृष्टि के प्रारम्भ में मिला।

मैक्समूलर तो अपने धार्मिक विश्वास मे ईसाई थे। वे लिखते हैं—

"If there is a God who has created heaven and earth it will be unjust on his pasf if he deprives millions of his sons born before Moses, of his divine knowledge Reasons and comparative study of religions declares that God gives his divine knowledge from his first appearance on Earth"

अर्थात् यदि धरती और आकाश का रचयिता कोई ईश्वर है तो उसके लिए यह अन्याय पूर्ण होगा कि वह मूसा से पूर्व उत्पन्न अपने लाखों पुत्रों को अपने ज्ञान से वञ्चित रखे। तर्क और धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन सृष्टि के आदि में ही अपना ज्ञान मनुष्यो को देता है।

शिक्षा के बिना ज्ञान की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

नोपदेशमन्तरा ज्ञानोत्पत्ति।

हम अपने माता पिता और आचार्य से ज्ञान प्राप्त करते हैं परन्तु आदि सृष्टि में इन सबके ज्ञान प्राप्ति का साधन क्या था ?

सर्गादौ वेदोपदेश पूर्वेषामपि गुरुणा। स एव पूर्वेषामपि गुरु कालेनानवच्छेदात्।

इस प्रकार परमात्मा 'गुरूणां गुरु' ठहरा।

स्वामी विद्यानन्द जी महाराज ने अपने ग्रन्थ वेदमीमासा में बडा सुन्दर तर्क दिया है। वे लिखते हैं कि जितनी भी मानव कृतियां हैं उनके कर्ता का स्मरण किसी न किसी रूप में होता है परन्तु वेद के कर्ता का नहीं अत वेद निश्चित रूप से ईश्वरीय हैं।

तन्त्र वार्तिक की व्याख्या में आचार्य कुमारिल भट्ट ने कहा है—

कर्त्तु स्मरणाभावादपौरुषेया वेदा।

इस प्रकार प्रत्येक कल्प के आदि में जब सृष्टि का प्रादुर्भाव होता है तब—

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। ऋ० १०।१९०।३

और इस प्रकार अपने अनन्त ज्ञान बल से परमात्मा ने ऋत और सत्य को जन्म दिया—

ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।

अनादिनिधना नित्या
वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या
यत सर्वा प्रवृत्तय: ॥

सृष्टि के आदि में स्वयम्भू परमात्मा से ऐसी दिव्य वाणी (वेद) का प्रादुर्भाव हुआ जो नित्य है और जिससे ससार की प्रवृत्तियां चलीं। सायणाचार्य के निम्न श्लोक के अनुसार भी वेद ईश्वर द्वारा नि श्वसित ज्ञान है।

यस्य नि श्वसित वेदा,
यो वेदेभ्योऽखिल जगत्।
निर्ममे तमह वन्दे

और ऋग्वेद के मन्त्र १०।९०।९ के अनुसार वेद की उत्पत्ति—

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत,
ऋच सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे
तस्माद यजुस्तस्मादजायत ॥

सत् जिसका नाश कभी नहीं होता, चित् जो सदा ज्ञान स्वरूप है, आनन्द जो सदा सुख स्वरूप है। उसी परम ब्रह्म परमात्मा से (ऋच) ऋग्वेद (यजु) यजुर्वेद (सामानि) सामवेद और (छन्दांसि) इस शब्द से अथर्ववेद भी, ये चारों वेद उत्पन्न हुए। इस मन्त्र में 'जज्ञिरे' और 'अजायत' इन दोनों क्रियाओं के अधिक होने से वेद अनेक विद्याओं से युक्त हैं, ऐसा जाना जाता है। इसी प्रकार 'तस्मात्' इस से यह निश्चय होता है कि वेद ईश्वर से ही उत्पन्न हुए किसी मनुष्य से नहीं। 'छन्दांसि' शब्द से अथर्ववेद को ग्रहण करना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभा यभूमिका में ऐसा अर्थ किया है।

"वेद की किसी व्याख्या की सफलता या विफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें वैदिक धर्म का केन्द्रीय विचार क्या माना गया है और स्वय वेद की अपनी अन्त.साक्षी उस विचार की कहां तक पुष्टि करती है।" इस विषय में महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण बिल्कुल स्पष्ट है और उसका आधार अखण्डनीय है।

—श्री अरविन्द
'महर्षि दयानन्द और वेद'

वेद के एक अन्य मन्त्र से भी स्पष्ट होता है कि वेदों की उत्पत्ति का प्रकाश ईश्वर करता है। कहा है—

"अथर्ववेद मेरे मुख के समतुल्य, सामवेद लोमों के समान, यजुर्वेद हृदय के समान और ऋग्वेद प्राण के नाई है। इस मन्त्र में सारी सृष्टि को धारण करने वाले परमात्मा को वेद की वाणी में 'स्कम्भ' कहा है।

स्कम्भ त ब्रूहि कतम स्विदेव स।
—अथर्ववेद १०।७।२०

और देखिए शतपथ ब्राह्मण के अनुसार—

एव वा अरे महतो भूतस्य नि:श्वसितमेतद् यद् ऋग्वेदो यजुर्वेद: सामवेदोऽथर्वाङ्गिरस।
—श० ब्रा० १०।३।४।१०

यहां भी वेदों को ईश्वर से नि:श्वसित कहा है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वेदों का कर्ता परमेश्वर को छोड़कर अन्य कोई नहीं। [illegible]

उर्दू की मांग का विरोध और आर्यसमाज

—सन्तोष 'कण्व'

देश के विभिन्न भागों में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने की मांग समय-समय पर उठती रही है। भारत विभाजन के तत्काल बाद उत्तर प्रदेश में यह स्वर उठा। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन उस समय राज्य विधान सभा के अध्यक्ष थे। उन्होंने स्पष्ट कह दिया—'राज्य की एकमात्र भाषा हिन्दी है, प्रान्त के समस्त कार्य हिन्दी में ही होंगे।'

टंडन जो तेजस्वी राष्ट्र भक्त थे। उन्होंने सदन में घोषणा की थी—'उत्तर प्रदेश विधान सभा में लगभग सवा चार सौ सदस्य हैं, उनमें से एक भी सदस्य मेरे विरुद्ध होगा, तो मैं उसी दिन अध्यक्ष पद से त्याग पत्र दे दूगा।' फिर किसी ने उर्दू की माग नहीं उठाई।

भारत विभाजन के घाव ताजा थे। उर्दू की माग उन पर नमक के समान थी। अत किसी को उससे सहानुभूति नहीं थी। साथ ही माग उठाने वाले भी आत्म ग्लानि के शिकार थे, क्योंकि वे जानते थे कि उर्दू के नाम पर पाकिस्तान बनवा लेने के बाद शेष भारत में उर्दू के लिए कोई स्थान नहीं है। न ही कोई स्वाभिमानी सरकार इसे कभी स्वीकार कर सकती है।

फिर भी गुप्त प्रयास जारी रहे, क्योंकि तत्कालीन प्रधान मन्त्री जवाहर लाल नेहरू मुसलमानों का आवश्यकता से अधिक पक्षपात करने के लिए विख्यात थे। वे उर्दू के विद्वान नहीं थे, फिर भी बोल चाल में (जान बूझकर) उर्दू शब्दो का बहुलता से प्रयोग करते थे। भले हो वे अंग्रेज क्यों न प्रतीत हो। मुस्लिम संस्कृति और उर्दू भाषा उन्हें अत्यत प्रिय थी। उन्होंने स्पष्ट कहा था—'मैं शिक्षा को दृष्टि से अंग्रेज हूं, सांस्कृतिक दृष्टि से मुसलमान हूं और आकस्मिक दुर्घटनावश हिन्दू हूं।'

कहते हैं कि कांग्रेस कार्य समिति में किसी प्रस्ताव पर ज़ोरदार बहस चल रही थी। नेहरू जी पर कुछ कहते तो बन नहीं पड़ता था, बस बार-बार यही दोहरा रहे थे कि इसे राष्ट्रीय मुसलमान पसन्द नहीं करेंगे। इस पर सरदार वल्लभ भाई पटेल ने हंसते हुए कहा था—'मुझे तो मुसलमानों में कोई राष्ट्रीय दिखाई देता नहीं। हां, एक ही राष्ट्रीय मुसलमान है, जिसका नाम जवाहर लाल नेहरू है।'

बात हंसी की थी, हंसी में टल गई। देश का तत्कालीन वातावरण ऐसा था कि चाहकर भी नेहरू जी उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने की मांग का समर्थन नहीं कर सके। एक सार्वजनिक सभा में उन्हें कहना पड़ा था—'हम उर्दू की तरक्की चाहते हैं, किन्तु वह उत्तर प्रदेश की दूसरी भाषा नहीं बनाई जा सकती। ऐसा करने से राज्य का खर्चा दुगना हो जाएगा और बहुत तरह की अड़चनें आयेंगी।'

नेहरू जी उर्दू को दूसरी भाषा बनाने का विरोध मात्र आर्थिक स्थिति के कारण कर रहे थे। दूसरे वे यह भी जानते थे कि उर्दू की परम्परागत लिपि कार्यालयों के कामकाज में जटिलताएं ही उत्पन्न करेगी।

आर्यसमाज की दृष्टि में यह कारण गौण है। प्रश्न राष्ट्र के हित का है। खर्चा दुगना हो या चौगुना, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए किया जाएगा। हमारा विरोध कुछ कटु सत्यों पर आधारित है, जिनकी चर्चा आगे करेंगे।

उर्दू वाले इस स्थिति का लाभ उठाते हुए समय-समय पर अपनी मांग मुखर करते गए। १५ अगस्त १९४७ को अनेक ज्वलन्त समस्याएं हल हो सकती थी और सम्पूर्ण राष्ट्र उनका एक स्वर से समर्थन करने को तत्पर था, परन्तु नेहरू जी की हठधर्मी के कारण ऐसा नहीं हो सका। आगे चलकर देश के विभिन्न भागो में भाषा समस्या उठ खड़ी हुई।

विडम्बना देखिए कि भारत विभाजन के प्रथम दशक में ही 'राज्य पुनर्गठन आयोग (१९५६)' ने भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की अनुशंसा कर दी। आर्यसमाज कभी भी इसका पक्षधर नहीं रहा। आज भी नहीं है। हम भाषा, भाव और भावना में ऐक्य के पक्षधर हैं। राष्ट्रीय एकता और अखण्डता भाषायी एकता पर निर्भर करती है।

उपर्युक्त आयोग ने राजभाषा के सम्बन्ध में निम्न अनुशंसा की थी—

'जिस राज्य में ७० प्रतिशत से अधिक एक भाषायी समूह हो उस राज्य को एक भाषी तथा उसके अतिरिक्त ३० प्रतिशत से अधिक बोलने वाला कोई अन्य भाषा-समूह हो, उस राज्य को द्विभाषी घोषित किया जा सकता है।'

'जिन जिलो में राज्य की घोषित राजभाषा के अतिरिक्त ७० प्रतिशत से अधिक बोलने वाला कोई अन्य भाषा समूह हो तो उस भाषा को उस जिला विशेष में सरकारी काम काज के लिए अतिरिक्त राजभाषा घोषित किया जा सकता है।'

सन् १९७५ में श्री इन्द्र कुमार गुजराल की अध्यक्षता मे Committee for promotion of Urdu गठित की गई। उस ने भी आयोग की उपर्युक्त अनुशसा को दोहरा दिया।

बिहार और उत्तर प्रदेश को जनगणना से मुसलमानों की सख्या ३० प्रतिशत से बहुत कम है। दूसरे सभी मुसलमान उर्दू भाषी नहीं हैं। इस आधार पर कुछ लोग उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने का विरोध कर रहे है। इनमे सत्तारूढ़ दल कांग्रेस के विधायक, मन्त्री और सांसद भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय जनता पार्टी, लोकदल, विद्यार्थी परिषद्, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद् जैसे सगठन भी इसी पक्ष में हैं। उर्दू की संवैधानिकता का मामला सर्वोच्च न्यायालय के विचाराधीन है।

परन्तु आर्यसमाज का पक्ष इससे भिन्न है। जो लोग उर्दू की मांग को असंवैधानिक बता रहे हैं, वे परोक्ष रूप से मुसलमानों को उत्तर प्रदेश व बिहार मे अपनी आबादी शीघ्रातिशीघ्र ३० प्रतिशत से अधिक करने को प्रेरित कर रहे हैं, जिससे इस्लामीकरण की आंधी तेज हो गई है। यदि वे अपने लक्ष्य में सफल हो जाते हैं, तो उर्दू की मांग को असंवैधानिक बताने वालो पर क्या तर्क बचेगा? क्या उस समय उर्दू को द्वितीय राजभाषा बना दिया जाएगा?

उर्दू की मांग के साथ उसकी मानसिकता जुड़ी है। जिन्ना और उनके साथियों ने कहा था कि उनकी (मुसलमानों की) भाषा उर्दू है। वे हिन्दी वालों के साथ नही रह सकते। उन्हें अलग जगह चाहिए। इसी जिद के कारण भारत टूटा। पाकिस्तान बना। जिनको उर्दू राजभाषा बनानी थी, वे स्वेच्छा से पाकिस्तान गए। हमने किसी को रोका नही। अब इस खण्डित भारत मे, अथवा उसके किसी राज्य विशेष मे उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने की जिद करना क्या अनुचित एवं राष्ट्र-द्रोह नही है? यदि ऐसा ही करना था, तो विभाजन ही नही किया जाता। दोनों बातें एक साथ नही चल सकतीं।

भारत-विभाजन के समय उर्दू में काम करने के अभ्यासी लोगो की सख्या आज की अपेक्षा कहीं अधिक थी। उन्हें हिन्दी में काम करना मुश्किल था। जब उस समय उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने की आवश्यकता नही पड़ी तो आज कौन सा पहाड़ टूट पड़ा?

उर्दू के पक्षधरो का कहना है कि उर्दू भी भारत को भाषा है। भारत में ही पैदा हुई, फली-फूली और विकसित हुई। हिन्दी राष्ट्र-भाषा है। उर्दू उसका अधिकार नहीं छीनती। हिन्दी पटरानी है, तो उर्दू को छोटी रानी बनाकर रख लो।

हमारा मत इससे भिन्न है। उर्दू भारत की भाषा नही है। होती तो पाकिस्तान की राष्ट्र भाषा नहीं बनती। किसी भारतीय भाषा को पाकिस्तान अपनी राष्ट्र भाषा कदापि नही बना सकता।

वहाँ पर स्वतन्त्रता है। अपनी उर्दू को रानी बनाओ या पटरानी, हमारे यहाँ सौतों का चलन नहीं है।

उर्दू पाकिस्तान की राष्ट्र भाषा है। वहाँ की सरकारी भाषा है। उसको यह दर्जा देने के लिए ही हमने अपनी मातृ भूमि का विभाजन स्वीकार किया था। कलेजे पर पत्थर रखा था। माताओ ने लाल खोए थे बहनों का सुहाग लुटा था। किसी का भाई बिछुड़ा था, तो किसी की बहन लुटी थी। बाप की लाठी टूटी थी, किसी का सहारा छूटा था। नृशंसता के उस ताण्डव नृत्य में धरती कांपी थी, आकाश रोया था, मानवता तड़पी थी, किसके लिए? उर्दू के लिए। उर्दू वालों की जिद के लिए। जिन्ना के पागलपन के लिए। अब किस बात का हिस्सा मांगा जा रहा है? इस बचे हुए भारत में उर्दू के लिए कहाँ जगह है? क्या वह कुर्बानी कम थी? क्या वह खून पानी

उपनिषत् कथा-माला—१७

उपासना

लेखक—स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

मनुष्य बिना अहकार के रहे। सत्कर्म के करने से मनुष्य को जो अभिमान सा होता है उसका नाम अहकार है—सस्कृत भाषा मे इसे अहता (अहभाव) अथवा मम-ता कहा है। कोई भी सत्कर्म अहकार के साथ मिलकर अपने असली स्व रूप मे नही रहना परन्तु वह किया हुआ कम न किए के तुल्य हो जाता है। विद्वानो ने इस दोष को दूर करने के लिए बडे सुन्दर उपदेश दिये हैं—उनका वचन है कि यदि बाए हाथ से कोई शुभ काम किया जावे तो उसका ज्ञान दाए हाथ को भी न हो। यदि मस्तिष्क किसी के साथ भला करे तो मन इससे बेखबर रहे-ये वचन मनुष्य को इस बुरी आदत (अहकार) को छुडाने के लिए काफी हैं। मनुष्य से यदि कोई काम अच्छा हो जाता है तो वह अपनी प्रशसा सुनने के लिए हर ओर कान लगाए रखता है यदि कोई उसकी बडाई न करे तो फिर विवश होकर लोगो के सामने अपनी प्रशसा स्वय ही करने लग जाता है। यह एक ऐसा कडा बन्धन है, ऐसी कडी जजीर है कि मनुष्य का इससे स्वतन्त्र होना बडा कठिन है। अपनी प्रशसा चाहना अपने आप मे एक बडा भारी पाप है। इसके प्रभाव से रसायन भी निष्फल हो जाता है।

बीज अपने को छुपाता है तो वृक्ष पैदा है और जो बीज बाहर पडा रहता है वह बीज या तो पद-दलित हो जाता है या उसे पशु-पक्षी खा जाते हैं। इसको सस्कृत भाषा मे निष्काम कर्म कहा गया है। प्रभु-भक्तो के मन मे इसे नाश होने वाला लिखा है। जैसे धान के ऊपर के छिलके को अलग कर देने मे फिर वह खाने के काम तो आता है परन्तु आगे उत्पत्ति करने के योग्य नहीं रहता। सत्य कर्म के साथ प्रशसा का लगा हुआ छिलका मनुष्य को ससार मे बार बार लाने का कारण बनता ही रहता है, इसको दूर कर देने से नाशवान नाश हो जाता है और शेष ससार मे रह जाते हैं।

प्रभु भक्त इस बात को जानकर कर्म करते हैं। और सत्य पथ मे आ-[illegible] होते हैं। और फिर साक्षात्कार मे जाकर आराम पाते हैं। इसलिए अपनी प्रशसा आप करना भारी भूल है। लिखा है—

> तारीफ अपनी आप मत
> करना कभी तू भूल कर।
> ऐब अपना देख ऐबे गैर
> पर मत कर नजर॥

जो मनुष्य इस बुरी आदत वाला है वह अधरे मे है। उच्च से उच्च मनुष्य भी अपनी प्रशसा करने से छोटा और पवित्र होने पर भी खोटा हो जाता है। यह एक प्रकार का पाप है जो मनुष्य मे पर दोष निकालने का स्वभाव बढाता है। और ससार मे उसको नाकारा बनाता है। स्वार्थी पुरुष अच्छे मनुष्यो के सग से घबराता है और कोई विचार-शील मनुष्य उसको समीप नही आने देता। स्वार्थता सत्य पथ से हटाकर कुमार्ग पर चलाती है और फिर दु:ख को समीप लाती है। बुद्धिमान् मनुष्य वह है जो अपने दुर्गुणो पर ध्यान रखे और दूसरे के दुर्गुणो की पडताल न करे।

> स्वार्थ से काम सारे
> दुनिया मे हैं बिगड जाते।
> गुप्त कहाँ वह भेद जिसे
> सभा मे हैं सुनाते॥

स्वार्थ से सब काम बिगड जाते हैं इससे चोट खाकर फिर वे बनने मे नही आते। जैसे किसी भेद को जन साधारण की सभा मे सुनाकर यह बताना कि यह गुप्त भेद है किसी से मत कहना इस वचन से लोगो को हसाना और अपने को मूर्ख बनाना है। जो मनुष्य स्वार्थी हो जाता है वह स्वय अपने आप को धोखा देता है और वह शुभ आचरण को बेचकर दुराचरण को मोल लेता है। इससे सुख-दुख मे समभाव बना रहता है और पद-पद पर कष्ट आते हैं। यह स्वार्थ एक बला है जो शरारत को जगाती है जो कभी दूर नही होती। स्वार्थता एक आत्मिक व्याधि है जिसके साथ असत्य बोलना भी शामिल है। स्वार्थ को पूरा करने के लिए झूठ और धोखा देना भी उसका स्वभाव हो जाता है—

> हुआ दिल जो आलूदा
> हिरसा हवा से,
> नहीं चमकता फिर
> वह नूरेखुदा से।

प्रभु से मिलाप तो मनुष्य को प्राप्त ही है और वह सदा उसके समीप है। प्राप्य वस्तु व्यापक से भिन्न नही हो सकती। केन्द्र और घेरे का सम्बन्ध सदा से है। अनुचित सासारिक विचार मनुष्य के चित्त को हर समय परेशान करके उसकी पवित्रता को तृष्णा से बिगाड देते हैं। इसलिए बुरे काम की जिम्मेदारी से बचने के लिए जीवन के कार्य क्रम को सत्य तथा उचित प्रकार से बनाना आवश्यक है। मन की शुद्धता से जो पुरुष प्रभु के दर्शन की चेष्टा करता है। वह भूल पर है। जैसे 'र' के आगे 'व' न लिखा जाये तब तक 'ख' नही हो सकता बस, जब तक मन शुद्ध न हो प्रभु प्राप्ति नहीं होती। फिर अन्त करण प्रकाशित होकर प्रभु-दर्शन से स्वयमेव आह्लादित हो जाता है। मन की शुद्धता के बिना प्रभु प्राप्ति के लिए मनुष्य जिस प्रकार की चेष्टा करता है वह सब व्यर्थ जाती है।

अत उपासना की विधि चित्त की चचलता को दूर करके परमेश्वर प्राप्ति के योग्य बना देती है। यदि मनुष्य इस अवस्था को ठीक बना ले, तो ज्ञान पथ की ओर उसका पग बढ सकता है इसके बिना नही। इसलिए, प्रभु भक्तो का वचन है—

> दिलबर तेरा तेरे आगे खडा है।
> मगर नुक्स तेरी नजर मे पडा है॥

जिस की खोज मे लोग हैरान व परेशान हैं वह तो सामने खडा है। परन्तु इसको इन बाहरी आंखो से देखना चाहते हैं। उनकी आंखो से जो वस्तुए दीखती हैं, वे सब महसूस की जाती हैं, परन्तु परमात्मा अगो से परे है। इसलिए वह किसी भी अग से मालूम नही हो सकता। ठीक मस्तिष्क का दूसरा नाम 'ज्ञान' है। प्रभु-भक्त अपने अपने अनुभव से उसको देख सकते हैं। परन्तु उसको ससार के झूठे प्रेम ने बुरा बना दिया है, जब तक यह बुराई दूर न की जाय तब तक उसका दर्शन कठिन है। जैसे कि आंख से सुनने का और कान से देखने का कार्य कठिन है।

इसलिए प्रभुभक्त मन की शुद्धि के लिए ठीक यत्न करता है। उन ही पुस्तको का पठन पाठन करता है जिसमें यह विषय हो। उन मनुष्यो की सगति मे आना पसन्द करता है, जो उसमे दक्ष हैं। ससार का कोई भी ऐसा कार्य जो इस मार्ग में रुकावट डाले, वह नही करता है। यह वह उपाय है जिससे लोक और पर-लोक दोनो सुधर जाते हैं।

> जब शत सहस्र इच्छाओं से
> सब हृदय कलुषित होवे।
> फिर कहा प्रभु की ज्योति
> से अन्तर आलोकित होवे?

इच्छाओ का बढते जाना हृदय में एकाग्रता उत्पन्न नहीं होने देता। अभिलाषा हृदय रूपी सागर मे एक लहर सी उठाती है, फिर उससे दूसरी तीसरी लहर स्वयमेव बनती जाती है—इस अवस्था में हृदय में मैल बढता जाता है। यह बार बार जीवन और मृत्यु की आफत को साथ लाती है, इससे पीछा छुडाना ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य है। परन्तु हरएक विचार को यहा पहुंच नही, अनुचित इच्छा से हृदय की शुद्धता नही, दोष-युक्त स्वभाव को दूर करने वाली पुण्य कमाई नही। परन्तु जो अचानक के प्रेमी हैं जो इस गूढ विषय को हल करने के योग्य हैं, वे सदा कम होते हैं, हर कोई इस पथ का पथिक नहीं। जिसके पूर्व शुभ कर्म सहायक हों, वर्तमान का पुरुषार्थ ठीक प्रकार से हो और प्रभु की कृपा सहायता हो, वह इस मार्ग पर चल सकता है और वह निश्चय भाग्यवान् है, जिस को योग्य पथ प्रदर्शक मिले। परन्तु आजकल योगियो की, गुरुओं की और गुरु-मन्त्रों की बडी ही चरचा हो रही है, इसके पीछे ससार की एक भारी सख्या अपनी सुध-बुध खो रही है। बडी विचित्र बात है कि जो चीज हर अवस्था में कम होनी चाहिए, जिसकी कमी ही सुन्दरता की द्योतक है, जिसकी अधिकता से प्रकृति भी डरती है, मनुष्य अपनी अधूरी चेष्टा से यदि इसी ओर प्रयत्नशील हो तो सिवा बुरे परिणाम के और क्या हो सकता है? प्रत्येक सम्प्रदायवालों ने अपने शिष्य वर्ग को बढाना और उन्हें अपने सिद्धान्त का अन्ध-

उपासना

विश्वासी बनाना ही अपना विशेष कर्तव्य जान लिया है। भारत वर्ष इस बात का दीवाना है, इसीलिए तो इसको न कोई खडे होने का स्थान है, और न कोई ठहरने का ठिकाना। कितनी भूल है, कितना अन्ध-विश्वास है कि गुरु को परमेश्वर से ऊँचा स्थान दिया जाए। इससे प्रकट है कि यह देश सत्य मार्ग पर आरूढ नहीं। ऐसी अनुचित चेष्टा तो हृदय की शुद्धता प्रकट नहीं करती, परन्तु भूल को जतानी है। विद्वानो का तो कथन है—

जिन्दगी को रास्ती से तू गुजार।
कर्म फल से फिर रहेगा सुबकसार।।

मनुष्य को चाहिए कि वह अपने जीवन को सत्य-मार्ग पर ही चल कर व्यतीत करे और बनी हुई बात को अपने हाथ से न बिगाडे। यह नियम कर्म के फल से मुक्त होने का है। मनुष्य बुरे कार्य के बोझ से हल्का हो जाता है। अन्त करण की प्रवृत्ति विश्व-प्रेम से झुक जाती है, फिर सत्कर्मों से मेल व दुष्कर्मों से वैर हो जाता है। सुख मे उसी प्रभु का धन्य-वाद और दु ख मे शान्ति अनुभव करने का स्वभाव हो जाता है। फिर जीवन मे न तो अधिक आनन्द और न मृत्यु से अधिक घबराहट होती है। हर एक को सुखी देखकर खुश होना और दु ख में हाथ बटाना उसका स्वभाव हो जाता है। इन नियमो के पालन करने से मनुष्य मे मनुष्यता आ जाती है, यदि ऐसा न हो तो लोभ-लालच आदि के प्रभाव से हृदय घबराता है। मनुष्य को सासारिक कारोबार मे सच्चा रहना चाहिए और कभी भी मुख से झूठ या कटु वचन न कहना चाहिए। व्यवहार और व्यापार मे नेकी से काम करना और धोखा-देही से डरना चाहिए, इससे मान-मर्यादा और शुभ कमाई प्राप्त होती है।

निश्चय से और विचारशील की सगति से आत्मा अमर हो जाता है। यह विचार बहुत अच्छा है। जिसके अनुसार निश्चय करने से परमात्मा का मिलाप होता है। कामवासना की अधिकता से डरना, गृहस्थ के नियमों को भली प्रकार से पालना, लोभ और इच्छाओं से पराजित न होकर इस पर विजय पाना, यह मनुष्य का पूरा कर्तव्य है। इस कर्तव्य को पूरा करते रहना मनुष्य को बुद्धिमान् बनाता और उसको सभी की बेचनी से नहीं ले जाता है। इस प्रकार से जीवन बिताना ठीक है। जो इस पर आचरण करता है, वह ही पूरा मनुष्य है। जो इन नियमो का पालन नही करता वह चाहे किसी का गुरु हो या शिष्य, वह गवार है। जाच करने से यह प्रमाणित हो चुका है कि जब तक मन अनुचित इच्छाओं से बरी न हो तब तक भलाई की लता कैसे हरी हो? वह मनुष्य इस पथ में कैसे गति करेगा, जिसके नेत्रो मे मनुष्यपूजा, की धूल पडी हो। मनुष्य को परमेश्वर से अधिक मानना भलाई को बेचकर बुराई को मोल लेना है जो ऐसा करते हैं वह सच्चाई से घबराते हैं, और झूठ के समीप होते जाते हैं। गुरु तो अपनी चतुरता से माल उडाने लगे और शिष्य जन धोखे मे आने लगे। कैसी बात है जिसका न मोल है और न पता है केवल वहम-परस्ती है, जिससे मनुष्य समाज पर बडा ही आघात है। हा, यह सत्य है, इस काम को वही कर सकता है जो ससार को पढाने और दुनिया से कमाने की अक्ल रखता हो। हर एक इस विद्या का प्रवीण नही इस मनुष्य पूजा से तो यह प्रकट है—

भूलकर हमने खुदा को
कैसा अधा किया।
अपने घर के बीच मे
आप ही को गुम किया।।

मेरे मित्र! मनुष्य-पूजा प्रभु-पूजा के उच्च नियम को मनुष्य के दिलो से दूर हटाकर उनको कगाल बना देती है। यह ऐसी भूल है जैसे कि जिह्वा और कान रखने वाला खुद को गूँगा और बहरा बना दे या अपने ही घर मे घर स्वामी गुम हो जाए। ऐसी बातो का बनाना केवल अपनी भूल पर लोगो को हँसाना है। जो जिसके योग्य हो उसको वैसा समझना जिसको मनोवृत्ति ससार के उपकार मे हो उसका मान करना उसके उपकार को न भूलना भला ही है, मगर उसको भूल जाना चाहिए। यह जो कुछ कहा गया है उपासना को सीढी के विपरीत होने से कहा है। यह तो मनुष्य के स्वभाव को शुभ बनाकर परमात्मा की ओर, जो सर्व भलाइयो का केन्द्र है, ले जाती है। इसके बिना प्राप्त किए साक्षात्कार की सीढी किसी को नही मिलती है। उपासना की रीति बुरे रास्ते पर चलने वाले भूले दिल को जो इसका शत्रु और बुराई चाहने वाला है, बचाती है। इसके सहारे ही अगर मनुष्य मे बनावट का स्व-भाव न हो, दिल पर काबू हो जाता है। इस इशारे पर दुनिया के सब विद्वान सहमत हैं, यही एक बात है कि जिस पर चलने से मनुष्य ससार के बधन से मुक्त होकर मुक्ति को प्राप्त करके सदा के लिए प्रसन्नचित्त हो जाता है। इस काम के करने को इस नियम पर कटिबद्ध होना चाहिए जिससे आगे आगे आत्मा की शक्ति बढती जाये, और सासारिक मोह के जजाल से कमजोरी सामने न आवे। वह यह है—

आख कान मुह बन्द
कर नाम निरजन ले।
अन्दर के पट तब खुलें
बाहर के पट दे।।

देखने के योग्य वस्तु को देखना और न देखने के योग्य को न देखना आँख को बन्द करना है। सुनने के योग्य शब्दो को सुनना और न सुनने के योग्य शब्दो को न सुनना कान को बन्द करना है। फिजूल बातो से से जिह्वा को रोकना और शुभ और हित की बातो का करना जिह्वा को बन्द करना है। इस अमल के दृढ हो जाने से प्रभु की शर्त है कि अगर आत्म साक्षात्कार और प्रभु-दर्शन न हो तो मुझे झूठा समझो मेरा उपहास करो। यह अमल बार बार परमात्मा के गुणो के प्रकट होने मे उसके प्यार में बडा ही सहायक है। मगर आज कल इस पर अमल गलत तरीके से हो रहा है। घण्टा दो घण्टा के लिए आख कान मुख को बन्द करना ही शुभ काम मान लिया गया है। यह किसी सीमा तक साधन के रूप मे ठीक तो हो सकता है अगर इससे ठीक रास्ता खुल जाय, मगर यह नहीं होता है। असली नियम जिसमे भूल नही है, वह ऊपर लिखा गया है कि आख कान और जिह्वा का ठीक रास्ता मे जाना सिद्धि का कारण तो हो सकता है इसके बिना दूसरा कोई उपाय नहीं। अगो के द्वारा बाहरी धूल जो दुनियादी असर लेकर अत-करण मे जाम होता है वही उसके जीवन को बर्बाद करने मे जड पकड लेता है। इन इन्द्रियो और सस्कारो के दोष से दूषित होकर मनुष्य जानता हुआ न जानने और सुनता हुआ न सुनने वालो के बराबर होता है। दुनिया मे देखा जाता है, सही है गलत नही हो सकता है। दिखावटी अमल करने वाले जो भीतरी शक्ति को नही सभालते हैं उनका स्वभाव ज्यादातर कठोर देखा गया है और बाहरी आडम्बर मे फँसकर कुछ अभिमान और कुछ अपने बडप्पन को स्तुति सदा करते ही रहते हैं, इस लिए सारी बनावट मतलब निकालने के लिए प्रमाणित होती है और जो भले लोग ठीक रास्ते पर चल रहे हैं वह किधर से आते हैं और कहा को जाते हैं। कुछ पता नही चलता है। वह ससार को कहा बढाते हैं, फरक है दुनिया के चाहने वालो का, इस रास्ते मे कदम नही बढता है और अगर दिखावट के लिए चले तो कदम कदम पर गिर पडता है, इसलिए उपासना मनुष्य को अन्दर की सफाई को ठीक करके असली जगह तक पहुचाती और परमात्मा से मिलाती है।

खून की नदियों की चेतावनी का उत्तर

अकाली समस्या से अभी हम सुलझ ही नहीं पाये थे कि एक और दस्तक दरवाजे तक आ पहुची । इस्लामियत का शैतान बौखला उठा। श्री जगन्नाथ शास्त्री द्वारा एक खबर १५ सितम्बर दिल्ली से प्रेषित होकर १६ सितम्बर को "दैनिक" भास्कर में छपी। शीर्षक था, खून की नदियो की चेतावनी। इस खबर से देश के बहुसख्यक समुदाय पर चोट तो है ही, साथ ही देश में अशाति फैला कर एक नये विभाजन की ही प्रक्रिया है। इसका हर देशभक्त को डटकर विरोध करना चाहिए, मौलाना उबेदुल्ला खान जोश मे आकर होश को भूल रहे हैं। उत्तर में निवेदन है कि आपके ही घर की औरते मुस्लिम पर्सनल लॉ से तंग आकर न्यायालय का दरवाजा खटखटाती हैं। न्यायालय का काम है, न्याय देना इसमें किसी वर्ग विशेष का दोष नहीं जो आप इतना बौखला रहे हैं। माननीय बालासाहब देवरस श्री अटलबिहारी वाजपेयी एव देश के प्रिय नेता माननीय श्री राजीव जी को कलमा पढ़ाने की बात और हमारी पवित्र गीता एव गुरु ग्रथ साहिब को मिटाने की बात, वास्तव मे हिन्दू समुदाय पर एक गभीर चोट है। पर मैं समझता हू कि गीता और गुरु ग्रन्थ साहिब को मिटाने वाला और इन उच्च नेताओं को कलमा पढाने वाला शायद अभी पैदा नहीं हुआ। याद रहे आपके उच्च कोटि के मौलवी और इस्लाम के अच्छे अच्छे पढे लिखे लोग, भी अब वैदिक धर्म में दीक्षित होकर गायत्री मत्र पढने लगे हैं। आपको मदीना यूनिवर्सिटी,के वाइस चांसलर आदरणीय भाई अमरेश जी और छतारी नवाब के पौत्र डा० भाई आनद सुमन जी से मिलना चाहिए। मौलाना उबेदुल्ला खान का कथन है कि मुसलमान ही भारत के सच्चे सपूत है। हम मानते हैं कि भारत मे अनेक मुसलमान देशभक्त हुए हैं। मान्यवर रसखान, आदर के योग्य मोहम्मद अली साहब, अमर शहीद अशफाक उल्ला, पूर्व राष्ट्रपति माननीय डा० जाकिर हुसैन एव फखरुद्दीन अली अहमद साहब और भूतपूर्व केन्द्रीय मत्री आदरणीय छागला जैसों पर हमें गर्व है। मौलाना खान जैसे पाकिस्तानी एजेट और जिन्ना जैसे देशद्रोही लोग भारत माता के सच्चे सपूत नहीं हो सकते। जिन्होंने देश का बटवारा कराके भारत माता के तीन टुकडे करा दिये वर्ना आज भारत विश्व में सर्वशक्तिमान राष्ट्र होता। मौलाना खान का तर्क है कि श्रीमती इन्दिरा गाधी का अग रक्षक कोई मुसलमान होता तो उनकी हत्या नहीं होती। आपके इस कथन पर भी प्रश्नचिह्न लग जाता है, क्योंकि भारत मे अग्रेजों का पैर जमाने वाला मीर जाफर क्या मुसलमान नहीं था, झांसी वाली महारानी लक्ष्मीबाई का तोपची जो अग्रेजो से मिल गया था, खुदा बक्श क्या मुसलमान नहीं था।

इससे आपकी यह कल्पना भी निराधार हो जाती है। मौलाना खान का कहना है कि जो कोई कुरान और हमारे पर्सनल लॉ को छेडेगा उसकी सफाई देने हम कोर्ट में नहीं आवेंगे। बल्कि उनकी ही सफाई कर देंगे। इससे यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि मौलाना खान को भारतीय सविधान और न्यायालय में विश्वास नहीं है आपको तो अपनी पाकिस्तानी इस्लामिक तलवार में विश्वास है। पर मियां याद है आपको, जिस पर्सनल लॉ की हिमायत करके आप बौखला कर अनर्गल भाषण कर रहे हैं उस लॉ के हिमायती पाकिस्तानी सरकार ने बगलादेश में पर्सनल लॉ को मानने वालों पर ही बार बार अत्याचार किये। उनकी रक्षा हिन्दू वीर वाहिनी ने ही की थी उस समय आप कहा थे जब एक लाख पाकिस्तानी तलवार ने घुटने टेक दिये थे। यह है आपकी पाकिस्तानी ताकत जिसके स्वर में आप बोल रहे हैं। मौलाना खान एक बात और फरमाते हैं जो अत्यन्त गभीर एवं विचारणीय है। आपका कहना है कि हम पिछले इतिहास को दोहरायेंगे,किन्तु यह आपको मताब्ध का भ्रम है। पिछला इतिहास हमें याद है लगभग ७०० वर्ष पूर्व एक विदेशी लुटेरे मुहम्मद गजनवी को सम्राट पृथ्वीराज चौहान ने १७ बार माफ किया था। पर मौलाना खान के अब्बा ने एक बार भी नहीं बख्शा। गुरु गोविन्दसिंह के दोनों बच्चे जिन्दा दीवार में चुनवा दिये थे। जिसे हम अभी भूले नहीं हैं। बन्दा वैरागी एव वीर हकीकत राय की निर्मम हत्या हमें याद है जिसे हम भूले नही हैं। ऐसी दर्दनाक घटनाओं से इतिहास भरे पडे हैं। जो मौलाना खान जैसे मतान्ध लोगों के घिनौने कुकृत्य का परिणाम था। हम वसुधैव कुटुम्बकम् के मानने वाले लोग हैं। जियो और जीने दो में विश्वास करते हैं। इसलिए मौलाना खान से अनुरोध है कि पिछले इतिहास को न दोहराये। अभी क्षत्रपति शिवाजी एव महाराणा प्रताप का रक्त मौजूद है, भरे दरबार में तुम जैसे पाजियों का सिर काटने वाले वाले वीर अमरसिंह राठौर का रक्त मौजूद है। भारतीय हिन्दुत्व के रक्त को गर्माने की कोशिश न करो वरना परिणाम भयकर होंगे। मौलाना खान की तरह ही बहुत से अलगाववादी एव देशद्रोही लोग साम्प्रदायिक जहर फैलाकर हमारे देश की एकता एव अखण्डता के लिए खतरा पैदा कर रहे हैं। जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी जो आजकल पाकिस्तान गये हुए हैं। वह भी वहां भारत के खिलाफ विष वमन कर रहे हैं। भारत सरकार को चाहिए कि वह मौलाना जैसे लोगों को अविलम्ब गिरफ्तार कर दण्डित करें और देश हित को देखते हुए कश्मीर को धारा ३७० शीघ्रातिशीघ्र समाप्त की जाये और सभी के

(शेष पृष्ठ ११ पर)

खून की नदियों की चेतावनी

(जगन्नाथ शास्त्री द्वारा)

दिल्ली की घनी मुस्लिम बस्तियो में निशुल्क वितरित हो रहे एक भाषण के टेप में चेतावनी दी गई है कि यदि कुरान या मुस्लिम परसनल ला बदलने के बारे मे कोई कार्रवाई की गई तो खून की नदिया बह जायेगी।

यह टेप आजमगढ मस्जिद के इमाम मौलाना उबेदुल्ला खान के राजस्थान के पाली कस्बे में मिल्लत में दिये गये भाषण का है।

इसमे दावा किया गया है कि केवल मुसलमान ही भारत के सच्चे सपूत हैं। महात्मा गाधी या इन्दिरा गाधी की हत्या किसी मुसलमान ने नहीं की। यदि इदिरा गाधी जी के अगरक्षक मुसलमान होते तो यह दिन नहीं देखना पडता। भारत की गोपनीय सूचनाएं विदेशों को बेचने वाला कुमार नारायण भी मुसलमान नहीं है।

भाषण में कहा गया है कि यदि कुरान नही रहेगी तो फिर गीता और गुरु ग्रथ साहब भी नही रहेंगे। मुसलमान किसी कोर्ट मे सफाई देने नही जायेंगे, लेकिन कुरान या पर्सनल ला के खिलाफ कोर्ट मे जाने वाले को सफाई कर दी जायेगी।

मौलाना का कहना है कि कुरान पर पाबदी लगाने या पर्सनल लॉ बदलने को कोशिश की गई तो हो सकता है कि इतिहास खुद को दोहराये एव बाला साहब देवरस, अटल बिहारी वाजपेयी और राजीव गांधी को कलमा पढना पड जाये।

भाषण में कहा गया है कि मुसलमान ही सच्चे वफादार हैं। इसीलिये भारत की धरती मा मुसलमानों को मरने के बाद भी अपने सीने में जगह देती है। मुसलमान कब्रिस्तान तक मे सच्चा हिन्दुस्तानी है, जब कि अच्छे अच्छे भारत रत्न जीते जी हिंदुस्तानी रहे पर मरने के बाद पाकिस्तानी बन गये क्योकि उनकी राख हवा में बिखेर दी जाती है, जो जाकर पाकिस्तान में थमती है।

मौलाना का कहना है कि पाकिस्तान बनाने में जितना जिन्ना का हाथ है, उतना ही सरदार पटेल का। जितना मुसलमानों का दोष है,उतना ही भारत के गैर मुसलमानों का। जिन्होंने पाकिस्तान मागा, चले गये। हम किसी को दया पर जिन्दा नहीं हैं। भारत किसी के बाप की जागीर नहीं है।

भाषण में बार बार चेतावनी दी गई है कि वह जबान काट ली जायेगी, वह खाल खींच ली जायेगी, जो कुरान या पर्सनल ला के खिलाफ होगी।

यह आरोप भी लगाया गया है कि बगलादेशी मुसलमानो की आड में बिहार में हजारो भारतीय मुसलमानों के नाम वोटर लिस्ट से काट दिये गये।

भाषण के टेप मे कहा गया है कि आज मुसलमानो का कत्लेआम हो रहा है, अस्मते लूटी जा रही हैं और बच्चों को खत्म किया जा रहा है।

मजेदार बात यह है कि सैकडों ऐसे टेप मुस्लिम बस्तियो मे फ्री बांटे एव सुने जा रहे हैं लेकिन केन्द्रीय गृह मन्त्रालय को कोई जानकारी नहीं है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बड़े सहज भाव से कहा "हां, उडती-उडती खबर सुनी है कि ऐसा कोई टेप है।"

(दैनिक भास्कर)

उर्दू की मांग

(पृष्ठ २ से आगे)

था ? अरे ! उर्दू और उर्दू वालों की जिद के लिए हमने जो बलिदान दिया है, उसकी कोई मिसाल दे दो तो हम जाने ।

उर्दू भारत में पैदा हुई, ठीक है। खरपतवार भी तो खेत मे पैदा होती है । उसे कोई सभालकर नही रखता उर्दू भारतवासियों के सहयोग से उत्पन्न नहीं हुई थी । पश्चिम और मध्य एशिया से आए लुटेरों ने जब यहां अपने राज्य स्थापित किये तो उनके समक्ष भाषा समस्या उत्पन्न हुई । उनकी सेना में अरब, ईरान, टर्की, अफगानिस्तान बल्ख बुखारा आदि कितने ही देशों के लोग थे। नगरो के बाहर इनकी छावनियां थीं। सब अपनी अपनी भाषा बोलते थे । कोई किसी की भाषा नहीं समझता था । बडी परेशानी होती थी । धीरे धीरे काम चलाऊ भाषा बनी । 'भाषा' तो नहीं 'बोली' ठीक रहेगा। अग्रेजों की छावनी से भी 'गोराशाही बोली' चली थी। उर्दू लुटेरों के लश्कर की भाषा है । उनकी, जिन्होंने भारतीय नारियों का सतीत्व लूटा था, मन्दिरों को तोडा था, बच्चो को काटा था, पुस्तकों को जलाया था, भारत को उजाडा था ।

'लश्कर' को छावनी या उर्दू भी कहते हैं । इसीलिए लुटेरों की छावनी की बोली को 'लश्कर की बोली' या उर्दू की बोली कहा जाता था । कालान्तर में इस बोली के लिए उर्दू शब्द ही रूढ हो गया ।

पाकिस्तान ने उर्दू को यो ही अपनी राष्ट्र भाषा नहीं मान लिया। वास्तविकता यह है कि पाकिस्तान के लोग स्वय को उन्हीं लुटेरो का वशज मानते हैं। भारत और भारतीयों के प्रति उनकी शत्रुता का भी यही कारण है ।

उर्दू की मांग उठाने वाले भारतीय मुसलमानों के मन मे भी यही भाव बैठा हुआ है कि वे भी उन्हीं लुटेरों के वशज हैं भारतवासियों के नहीं । यह हमारा नहीं वरन् उनका अपना विचार है।

अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के सस्थापक सैयद अहमद खाँ लिखते हैं—

"मुसलमान इस देश के मूल निवासी नहीं हैं । वे भूतकालीन विजेताओं के साथ यहां आए और धीरे धीरे यहां आकर बस गए। भारतीय मुसलमान उस जाति के वंशज हैं, जो एक समय इस देश पर राज्य करती थी । तुम सोचो कि तुम कौन हो ? हमारी कौम क्या है ? सात शताब्दियों तक राज्य किया है। हमारी कौम उन लोगों के खून से बनी है, जिनसे न केवल भारत एशिया और यूरोप भी कापते थे । हमारी कौम ने अपनी तलवार से सम्पूर्ण भारत जीता था । मैं तुम्हें फिर याद दिलाना चाहता हू कि तुमने विभिन्न कौमों पर राज्य किया है और कई मुल्कों को शताब्दियों तक अपने आधीन रखा है । तुम जानते हो कि राज्य करना क्या होता है ?"

उर्दू की माग किसी देशभक्त की मांग नहीं है । उर्दू वालों को देश की चिन्ता भी नहीं है। उनके महान शायर इकबाल का कहना है—

> अगर मुल्क हाथों से
> जाता है, जाए ।
> तू अहकाम-ए-हक से
> न कर बेवफाई ।।

और अहकाम -ए - हक, उन्हें 'दारुल हरब' को 'दारुल इस्लाम' बनाने की प्रेरणा देता है। वे हिन्दी को काफिरों की भाषा मानते हैं। इसीलिए उर्दू का झण्डा उठाए हुए हैं।

एफ०के० दुर्रानी का निम्न उद्धरण पढिये और सोचिए—

'But India is a geographical unity, is also a fact, which the Muslims must never forget There is not an inch of the soil of India which our fathers did not once purchase with their b'ood We can not be false to the blood of our fathers India the whole of it is therefore of heritage and it must be reconquered for Islam Our ultimate ideal should be the unification of India, spiritually as well as politically under the banner of Islam The final political salvalion of India is not otherwise possible

दुर्रानी साहब लिखते हैं—

"लेकिन भारत की भौगोलिक एकता भी एक तथ्य है जिसे मुसलमानों को नहीं भूलना चाहिए । भारत की एक इच भूमि भी ऐसी नहीं जिसे हमारे पूर्वजों ने अपना रक्त बहाकर न खरीदा हो। हम अपने पुरखों के रक्त का अपमान नहीं कर सकते । इस दृष्टि से सम्पूर्ण भारत ही हमारी बपौती है । इसे इस्लाम के लिए पुन जीतना चाहिए। अत इस्लाम के झण्डे के नीचे भारत का आध्यात्मिक और राजनीतिक एकीकरण करना ही हमारा अन्तिम उद्देश्य है। इसके बिना भारत की पूर्ण राजनीतिक मुक्ति असम्भव है।

सक्षेप में, उर्दू को द्वितीय राज भाषा बनाने की माग एक गहरे षड्यन्त्र का हिस्सा है । प्रश्न ३० प्र०श० से अधिक का नहीं है । उर्दू के लिए पाकिस्तान बन चुका है । शेष भारत में अब उसका कोई भविष्य नहीं है । इस सत्य को स्वीकारने में किसी को किसी प्रकार की विप्रति नहीं होनी चाहिए, न हिन्दू को और न मुसलमान को ।

आर्ष वाणी प्रसारण

निवेदन है दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पजाब आदि में आर्यसमाज के प्रचार का श्रेय यदि किसी को दिया जा सकता है तो वह आर्यसमाज के भजनोपदेशक हैं परन्तु समय की आवश्यकता बदलने के कारण न तो प्रभावशाली योग्य भजनोपदेशक ही रहे और न परम्परागत हारमोनियम ढोलक पर सुनने वाले श्रोता ही । उनके मन को रिझाने, मन में झकार पैदा करने का काम यन्त्रीकृत उन्नत साज के साथ दिल को छूने वाले निर्जीव कैसेटों के गीतों ने ले लिया है। आकाशवाणी इस मनोविज्ञान का पूरा लाभ उठा रहा है और कामुकता प्रधान गीतों का प्रसारण कर वातावरण को दूषित कर रहा है। रविवार को दूरदर्शन पर दिखाई जाने वाली फिल्म के कारण आर्य-

की बैठकें समाप्त हो गई हैं ।

अत आप इस मनोविज्ञान का लाभ अपने पुरुषार्थ से भी तथा प्रभावशाली व्यक्तियों के प्रभाव से आकाशवाणी के माध्यम से उठाकर आर्यत्व के गीतों को वायुमण्डल मे प्रसारित कर अथवा करवा कर उद्देश्य प्राप्ति की ओर बढ सकते हैं।

अपने द्वारा किये पुरुषार्थ के क्षेत्र में आप योजना बद्ध तरीके से दिल्ली की आर्यसमाजों में चारों तरफ गीतो के प्रसारण हेतु लाउडस्पीकर फिट कराके सेट प्लेयर यन्त्र द्वारा आर्यसमाज के कैसेटों के प्रसारण से यह काम पूरा कर सकते हैं। बहुत से आर्यसमाजों के पास लाउडस्पीकर हैं भी परन्तु न तो वह उचित स्थानों पर लगे हैं और न ही उनकी ध्वनि आर्यसमाज मन्दिर से बाहर आती है । अत उनके यह लाउडस्पीकर

बदलवाने हैं और उचित स्थान पर फिट कराने हैं । इन ध्वनि विस्तारक यन्त्र से प्रतिदिन एक घण्टा नित्य कैसेटो द्वारा आर्ष वाणी का प्रसारण किया जाए तो समय की पुकार की पूर्ति से लाभ ही लाभ होगा । यह विधि आर्यसमाजो के दैनिक सत्सगों को भी सरस बनायगी ।

लोग आर्षवाणी के गीतो को दिन भर गुनगुनाकर आत्मा में आनन्द लेते रहेंगे ।

आर्यसमाज के उद्देश्यपूर्ण गीतों को हम बलात् क्षेत्र के लोगों के कानों में डालकर विचार पैदा कर सकेंगे।

आर्यसमाज के केसेटो की माग बढने से अच्छे अच्छे सगीतज्ञ पैदा होने लगेगे और केसेट निर्माण कम्पनियो का होंसला बढ नये नये न केवल सामान्य केसेट ही तैयार करगें अपितु यह उद्योग वीडियो कॅसेट की ओर भी बढ जायेगा।

दिल्ली की आर्यसमाजों का एक यह सफल प्रयोग हरियाणा, उत्तर प्रदेश राजस्थान और पजाब आदि प्रान्तों मे फैल जायेगा और आर्यसमाज मे नवजीवन व्याप्त हो जायेगा ।

केसेटों द्वारा प्रचार फ्री के बराबर होगा जबकि भजनोपदेशक को बुलाने पर काफी व्यय एव व्यवस्था करनी होती है और फिर जनता सुनने आती नहीं ।

कुछ लोग अपने निजी उत्साह से अपने घरों में प्रसारण करते हैं परन्तु यदि यह कार्यक्रम आर्यसमाजों से भी हो तो आर्यसमाज का अस्तित्व लोगों को दृष्टिगोचर होग ।

ओ३म् प्रकाश गुप्त
२३, वीर सावरकर ब्लाक
शकरपुर मोड, दिल्ली-९२

श्री जसवन्त राय को पत्नी शोक

आर्यसमाज राणा प्रताप बाग के प्रधान श्री जसवन्त राय साही की धर्मपत्नी का २६ सितम्बर को निधन हो गया । श्रीमती पुष्पा साही आर्यसमाज की कर्मठ कार्यकर्त्री थीं । उन के देहावसान पर आर्यसमाज राणा प्रताप बाग की ओर से एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें दिवगत आत्मा के सद्गुणों को स्मरण किया गया।

निवेदक
जगदीश आर्य
मन्त्री

समाचार सन्देश

दिल्ली आर्य वीर दल के २० युवकों द्वारा
प्रान्तीय आर्यवीर दल महासम्मेलन, कैथल में सोल्लास भाग
विशाल शोभा यात्रा निकाली गई

हरियाणा आर्यवीर दल के निमन्त्रण पर आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के २० आर्यवीरों ने नौवें प्रान्तीय आर्यवीर महासम्मेलन, कैथल में सोल्लास भाग लिया। आर्यवीर दल दिल्ली के यह युवक, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की (मैटाडोर) प्रचार-वाहन में बैठकर वैदिक नारों को गुंजाते हुए २२ सितम्बर, ८५, शनिवार दोपहर दो बजे सभास्थल इन्दिरा गांधी कन्या महाविद्यालय, कैथल पहुंचे। भोजन आदि के उपरान्त साढ़े तीन बजे प्रारम्भ हुई शोभायात्रा में विभिन्न प्रदेशों से आये हुए आर्यवीरों के साथ, दिल्ली आर्यवीर दल के यह युवक लाठी, भाले, तलवारों से सुसज्जित पूर्ण गणवेश में सम्मिलित हुए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य पत्र, आर्यसन्देश एव योगीराज श्री कृष्ण पर लिखा हुआ ट्रैक्ट लघु पुस्तिका प्रचार एव प्रसार के लिए सभास्थल पर निःशुल्क वितरित किया गया। आयोजकों ने आर्यवीरों के ठहरने एव खाने पीने की सुन्दर व्यवस्था की थी इसके लिए सभी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

श्यामसुन्दर विरमानी
मंत्री
आर्यवीर दल, दिल्ली प्रदेश

आर्यसमाज तिमारपुर में यज्ञ व वेदकथा सम्पन्न

आर्यसमाज तिमारपुर, दिल्ली-७ मे १६ सितम्बर से २२ सितम्बर तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ एव वेदकथा समारोहपूर्वक सम्पन्न हुई। वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् पूज्य प० सत्यप्रिय जी आचार्य यज्ञ के ब्रह्मा थे तथा श्री कर्मवीर जी व पुरोहित श्री नानक चन्द जी आर्य वेद पाठी थे। सर्वश्री चौ० भीमसिंह, विनोद शर्मा, आनन्द प्रकाश गुप्ता, कृष्णलाल पोपली, मल्होत्रा जी, श्रीमती शान्ति देवी, सुभाष सूद एव विमल कान्त शर्मा बारी-बारी से यजमान बने। यज्ञ के पश्चात् प्रतिदिन आचार्य श्री सत्यप्रिय जी ने वेद मन्त्रों की सरल, सहज रोचक व मनोहारी व्याख्या की। रात्रि को सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री प्रेमचन्द जी श्रीधर एम०ए० को वेदकथा हुई। साथ ही रात्रि को आचार्य श्री सत्यप्रिय जी का भी प्रवचन होता रहा। कथा से पूर्व भजनोपदेशक श्री सत्यदेव जी स्नातक रेडियो कलाकार एव तबला वादक श्री ज्योति प्रसाद जी ने अपने मधुर भजनों द्वारा सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया। यज्ञ व कथा मे समाज के सभी पदाधिकारियों ने सदस्यों एव नगर के निवासियों ने काफी सख्या मे उपस्थित होकर उत्साहपूर्वक भाग लिया। यज्ञ शेष वितरण के पश्चात् लगर का भी आयोजन किया गया। माता चन्नन देवी आर्य नेत्र धर्मार्थ चिकित्सालय के चलवाहन ने भी १५ सितम्बर को काफी सख्या में स्थानीय रोगियों की आँखों की भी जाँच की।

भवदीय
विमलकान्त शर्मा
उपमन्त्री
आर्यसमाज तिमारपुर
दिल्ली-७

आर्यसमाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव बड़े समारोह पूर्वक १५ हनुमान रोड में ११ अक्तूबर से १३ अक्तूबर तक मनाया गया। इस अवसर पर एक सप्ताह पूर्व श्री प० मदनमोहन विद्यासागर का वेद प्रवचन हुआ। जिसमे धार्मिक जनता ने सहर्ष भाग लिया। प्रवचन से पूर्व श्री सोहनलाल पथिक के मधुर भजन हुए। उत्सव के अवसर पर अनेक गण्यमान्य व्यक्तियों और विद्वानों के प्रवचन हुए।

निवेदक
मन्त्री
आर्यसमाज हनुमान रोड,
नई दिल्ली

ग्राम प्रचार

आर्यसमाज आशा पार्क के तत्वावधान में वेद प्रचार का आयोजन किया गया। यह प्रचार कार्य २६ से २८ सितम्बर १९८५ तक आशा पार्क मार्केट के मध्य में होता रहा। जिस में महात्मा राम किशोर वैद्य महोपदेशक जी का वेद प्रवचन हुआ साथ ही प० सत्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार के मधुर भजनोपदेश से जनता ने धर्म लाभ प्राप्त किया। दिल्ली सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी ने स्वास्थ्य सम्बन्धी कविताओं और हास्य कविताओं द्वारा श्रोतागणों को लाभान्वित किया। आशा पार्क मार्केट में भारी सख्या मे श्रोतागण आते रहे। आर्यसमाज तिलक नगर जनक पुरी और अशोक नगर से सभी आर्य बन्धु आते रहे साथ ही सभी ने इस वेद प्रचार कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशसा की और अपनी कालोनियों में कार्यक्रम रखने के लिए आग्रह किया और इस कार्यक्रम के लिए सभा अधिकारियों का धन्यवाद किया गया।

व्यवस्थापक
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता, वेदप्रचार

आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली) का कीर्तिमान

आर्य जनता को यह जानकर हर्ष होगा कि आपकी प्रिय सस्था कन्या गुरुकुल नरेला की कन्याओं ने इस वर्ष महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की शास्त्री परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थियो की योग्यता सूची (मेरिट लिस्ट) में आठ में से पाच स्थान (प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पञ्चम तथा षष्ठ) तथा एक स्वर्ण पदक प्राप्त कर विश्वविद्यालय में अपना कीर्तिमान स्थापित किया है। इसका श्रेय कन्या गुरुकुल के कुलपति पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के पुण्य तप, तेज एव ब्रह्मनिष्ठ आश्रमप्राण मान्यवर्या आचार्या बहन सुमित्रा जी की सुव्यवस्था तथा कर्तव्यपरायण स्नातिका बहनों की लगन को है। भारत के सात राज्यों से आई कन्याओं को महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट आर्ष पद्धति के अनुसार शिक्षा-दीक्षा देने वाली एकमात्र इस शिक्षण सस्था के लिए तन मन धन से पूर्ण सहयोग देना आर्य जनता का पुनीत कर्तव्य है।

—सवाददाता द्वारा

दिल्ली आर्यसमाजों के अधिकारी ध्यान दें

समस्त आर्यसमाज के अधिकारी महानुभावों से अनुरोध है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशकों एव भजनोपदेशकों के कार्यक्रम निश्चित करने के लिए वेदप्रचार व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द से मिलें। जो केवल उपदेशक से मिलकर, व्यवस्थापक से सम्पर्क किये बिना कार्यक्रम बनायेंगे उनको सहयोग कर पाने में हम असमर्थ हैं। व्यवस्थापक से तिथि रजिस्टर में अकित करा लेवें तथा उनसे लिखित पत्र अवश्य ले लें।

महामन्त्री
धर्मपाल
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

आर्यसमाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली द्वारा वेद प्रचार

६.९.८५ से १४.९.८५ को रात्रि तथा १५.९.८५ को उपनिषदों के महान् विद्वान् प्रो० रतनसिंह जी एम०ए० के प्रवचन होते रहे। श्रोतागण काफी सख्या में पधारते रहे तथा उन पर आर्यसमाज का प्रभाव बहुत अच्छा रहा। प्रवचनों से पूर्व श्री सत्य देव जी रेडियो कलाकार के भजन भी होते रहे।

८.९.८५ को आर्यसमाज की ओर से श्री कृष्ण जन्म दिवस मनाया गया।

नन्दकिशोर भाटिया
मन्त्री

आर्यसमाज घौंडा दिल्ली-५३ में श्रीकृष्ण जन्म महोत्सव

आर्यसमाज के प्रांगण में ७ सितंबर से ८ सितम्बर तक श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर एक समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें वैदिक विद्वानों ने श्री कृष्ण के महान् चरित्र पर अपने व्याख्यान दिये। क्षेत्र की धार्मिक जनता ने सोत्साह भाग लिया। इस अवसर पर श्री प० दिनेश चन्द शास्त्री और आचार्य सत्यप्रिय के प्रवचन हुए।

निवेदक
लक्ष्मणदास गुप्ता
मन्त्री, आर्यसमाज घौंडा

धर्ममूलम

(पृष्ठ ४ का शेष)

कल्याणी हैं और सब मनुष्यों के लिए बिना किसी भेदभाव के दिया गया ज्ञान है।

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानी जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय।

—यजु० २६।२

वेद का पवित्र और कल्याणकारी ज्ञान जन जन के लिए है। वेद अन्य धर्मग्रन्थों की तरह किसी एक जाति सम्प्रदाय या वर्ग का धर्मग्रंथ नहीं है। वेद पढ़ने और सुनने का अधिकार सब को है इसलिए मनु महाराज ने कहा है—

धर्म जिज्ञासमानाना प्रमाण परम श्रुति मनु २।१२

धर्म के जिज्ञासुओं के लिए वेद ही एकमात्र प्रमाण है। पूर्व मीमांसा में आया है—

वेदप्रतिपाद्यप्रयोजनवत अर्थो धर्म।

धर्म के जिज्ञासुओं के लिए वेद ही एकमात्र प्रमाण हैं। धर्म वही है जो वेद के द्वारा प्रतिपादित है और धर्म अर्थ काम मोक्ष—चारों प्रयोजनों की सिद्धि करने वाला है।

श्री भारतेन्द्रनाथ (स्वा० वेद भिक्षु ने अपनी पुस्तक Message of the Arya Samaj to the Universe में लिखा है—

Among all the books of knowledge the Vedas are the only one that give this knowledge namely—

1 The teachings are for all men in this world without exception for all times and for all lands. They are not at all meant for any special land age or particular society

2 There is nothing in them that is against the laws of creation of the world nor against the laws of finding out truth nor against the world of well wishing sacred souls nor against any good behaviour with regard to men in the world

3 The teachings are not against science nor against good thoughts or things They inculcate a knowledge devoid of confusion and prejudices

वेद शाश्वत नैतिक मूल्यों का ज्ञान है जो सब कालों देशों जातियों वर्गों तथा विभिन्न सम्प्रदायों के मानवों के लिए कल्याण सुख समृद्धि तथा आनन्द का मार्गदर्शक है। उन शाश्वत सत्य ज्ञान के कुछ मन्त्रों पर ध्यान दीजिए—

सगच्छध्व संवदध्व
स वो मनांसि जानताम।
देवा भाग यथा पूर्व
सजानाना उपासते॥

ऋग्वेद १०।१९१।२

यस्तु सर्वाणि भूता
न्यात्मन्नेवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं
ततो न विजुगुप्सते॥

—यजु० ४० ६

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्र तन्न आसुव॥

यजु० ३० ३

दृते दृह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम। मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥ —यजु० ३६।१८

सहृदय सामनस्यम
विद्वेष कृणोमि व।
अन्यो अन्यमभिहर्यत
वत्स जातमिवाघ्न्या॥

अथर्व० ३।३०।१

इस प्रकार वेद शाश्वत सत्य का ज्ञान हैं जो सब प्राणियों के कल्याण के लिए सृष्टि के प्रारम्भ में ही ईश्वर के द्वारा नैमित्तिक ज्ञान के रूप में मिले। वेद के पठन पाठन श्रवण और मनन तथा ज्ञान के अनुरूप आचरण से ही मनुष्य मात्र के जीवन का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। उन सब का जो इस पवित्र मार्ग के अनुयायी हैं। यह धर्म और कर्तव्य है कि निष्ठापूर्वक अपनी समग्र शक्ति को इसके प्रचार प्रसार में लगा दें तभी कृण्वन्तो विश्वमार्यम का लक्ष्य पूरा हो सकता है।

खून की चेतावनी

(पृष्ठ ८ से आगे)

लिए एक आचार संहिता बनाई जाये। मैं प्राचीन भारतीय संस्कृति के मानने वाले लोगों से आशा करता हूँ कि वह भी अपनी संस्कृति एवं भारत भूमि की रक्षा के लिए सचेत रहें। और ऐसे देशद्रोहियों से कह दें कि वन्दे मातरम कहना होगा या भारत से जाना होगा।

सीताराम आर्य
प्रधान आर्यसमाज विदिशा

आर्यसमाज आशा पार्क में वेद प्रचार

आर्यसमाज आशा पार्क (फतेह नगर) नई दिल्ली १८ में दिनांक २६ २७ २८ सितम्बर १९८५ को वेद प्रचार का कार्यक्रम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार वाहन द्वारा उत्साह से मनाया गया। इस अवसर पर महात्मा राम किशोर जी महोपदेशक के प्रवचनों द्वारा तथा प० सत्यदेव जी स्नातक रेडियो कलाकार ने अपने भजनों द्वारा वेद प्रचार किया। जनता ने बड़े ध्यान एवं रुचि पूर्वक इस कार्यक्रम को सुना तथा उनके लिए बड़ा उपयोगी भी रहा है। स्वामी स्वरूपानन्द जी ने अपनी हास्य कविताओं द्वारा जनता का मनोरंजन किया लोगों ने भी इस का पूरा आनन्द उठाया।

आशा पार्क की इस छोटी सी नई कालोनी में आर्यसमाज का यह पहला वेद प्रचार हुआ है जो इस प्रकार से सफल और सराहनीय रहा है। भवदीय

नरंजनदेव सचदेवा
मन्त्री

रजि० नं० डी० (सी०) ७५६   साप्ताहिक आर्यसन्देश   १३ अक्तूबर १९८५   बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं०
R No   Post in N D P S O on 11 10 85   Licensed to post without prepayment Licence No

आर्यसमाज कलकत्ता स्थापना शताब्दी वर्ष

निबन्ध प्रतियोगिता

आर्य महिला शिक्षा मण्डल ट्रस्ट द्वारा आयोजित

विषय नारी उत्थान और आर्यसमाज

(उपलब्धियाँ सभावनाए एव कर्तव्य)

पुरस्कार—प्रथम १५०० रु० द्वितीय १३०० रु० तृतीय १ ...

निबन्ध प्राप्ति की अन्तिम तिथि ३१ १२ १९८५ ई०

नियमावली

१ निबन्ध अग्रजी हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि मे हो।

२ अधिकतम शब्द सख्या ३ ००० हो सकती है

३ लेख की विषयवस्तु और मौलिकता के लिए लेखक स्वय उत्तरदायी होगे।

४ निबन्ध की तीन प्रतियाँ फुलस्केप कागज पर एक ओर टाइप की हुई या लिखी हुई भेजना आवश्यक होगा।

५ निबन्ध मे लेखक का नाम पता परिचय आदि नही होना चाहिए।

६ लेखक का नाम पता हस्ताक्षर युक्त प्रतियोगिता मे प्रवेशार्थ पत्र अलग कागज पर निबन्ध के साथ सलग्न करना आवश्यक होगा।

७ लेख के प्राप्त न होने नष्ट होने अथवा क्षतविक्षत अवस्था मे प्राप्त होने का दायित्व आर्य महिला शिक्षा मण्डल ट्रस्ट का नही समझा जाएगा

८ पुरस्कृत लेखो के प्रकाशन का अधिकार आर्य महिला शिक्षा मण्डल ट्रस्ट को होगा

९ प्रतियोगिता मे प्रविष्ट लेख वापस नही किये जायगे किन्तु प्रतियोगिता के निर्णय की घोषणा के पश्चात् अपने लेख को अन्यत्र प्रकाशित करने मे लेखक स्वतन्त्र होगे।

१० पुरस्कृत व्यक्तियो को निर्णय की ... डाक द्वारा दे दी जाएगी।

११ प्रतियोगिता मे निबन्ध भेजने ... समझा जाएगा कि लेखक को प्रतियोगिता की शर्त स्वीकार हैं।

१२ निर्णायक मण्डल का निर्णय अन्तिम होगा।

निबन्ध भेजने का पता—
श्री मन्त्री जी

आर्य महिला शिक्षा मण्डल ट्रस्ट
२० विधान सरणी कलकत्ता

किशनलाल पोद्दार (प्रधान)   रुलियाराम गुप्त (मन्त्री)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

वर्ष ९ अंक ४८ | रविवार, २० अक्तूबर, १९८५ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८६ | आश्विन २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २० रुपये | आजीवन २०० रुपय | विदेश मे ५० डालर, ३० पौंड

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

राष्ट्र रक्षा के लिए आरक्षण समाप्त करना आवश्यक है

—डा० धर्मपाल

आज भारत की परिस्थितियां बडी विषम हैं। इसे अन्दर और बाहर दोनो ओर से खतरा है। पजाब आसाम, नागालैण्ड, आन्ध्रप्रदेश, तेलगाना सभो प्रदेश धधक रहे हैं। जब हम किसी प्रान्त विशेष को किसी आधार पर आरक्षण की सुविधा देते हैं जैसे काश्मोर मे मिल रही हैं। धर्म अथवा जाति के आधार पर विशेष सुविधाएँ देते है तो अन्य लोग भी उसी प्रकार की सुविधाएँ पाने का प्रयास करते हैं, और आन्दोलन चलाते हैं। वे स्वतन्त्र राष्ट्र स्थापित करने का प्रयास करने मे लगे हैं। राष्ट्र रक्षा के लिए अलगाववादियों को नष्ट करने के साथ साथ उसकी भावना को समाप्त करना आवश्यक है। आज मनुष्य का चरित्र भी पतन की ओर जा रहा है। सरकार भी इस दिशा में योगदान करती है। शराब के व्यवसाय को केवल उत्पादन शुल्क प्राप्त करने के लिए बन्द करने मे असमर्थ है। मद्य सभी बुराइयों की जड है। ये विचार डा० धर्मपाल ने आर्यसमाज हडसन लाईन, गुरु तेग बहादुर नगर दिल्ली-९ के वार्षिकोत्सव पर व्यक्त किए। इस अवसर पर डा० प्रशान्त कुमार वेदालकार ने अपने भाषण में सम्पूर्ण भारत की दुर्दशा का विवरण दिया और आर्यसमाज से अपेक्षा को कि एक देशव्यापी आदोलन चलाया जाना चाहिए। मनुष्य अच्छा बनेगा तो समाज भी अच्छा बनेगा। अत मनुष्य का निर्माण आवश्यक है। यह कार्य केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। इस अवसर पर आर्यसदेश के यशस्वी सम्पादक श्री प० यशपाल सुधाशु ने आर्यजनों का आह्वान किया कि वे सभी मिलकर कार्य करे, आचारवान बने, विवेकी हों और दृढ सकल्पी बने तभी राष्ट्र का कल्याण सम्भव है। राष्ट्र सम्मेलन का सयोजन श्री गजेन्द्र दुर्गा ने किया।

आर्यसमाज किग्स्वे कैम्प मे पिछले एक सप्ताह से सुप्रसिद्ध विद्वान ओजस्वी वक्ता प० यशपाल सुधाशु की कथा हुई और प० चुन्नीलाल के भजन हुए। १२ अक्टूबर को आर्य महिला सम्मेलन और आर्ययुवक सम्मेलन सम्पन्न हुए।

निवेदक
गोपाल आर्य मत्री

पाकिस्तान द्वारा राजस्थान सीमा पर

बड़े पैमाने पर युद्धाभ्यास

पाकिस्तान ने राजस्थान से लगने वाली सीमा चौकियों के आस-पास युद्धाभ्यासों मे बढोतरी कर दी है। भारी मात्रा में अस्त्र शस्त्र सामरिक महत्त्व के ठिकानों पर इकट्ठे किये जा रहे हैं। प्राप्त समाचारो के अनुसार यह आशका व्यक्त की जा रही है, आगामी कुछ महीनों में पाकिस्तान इस सीमा क्षेत्र मे भडकाने वाली कार्रवाई कर सकता है। पाकिस्तान ने अपनी सीमा चौकियो पर सुरक्षा सैनिको की सख्या में बढोतरी कर दी है। पश्चिमी राजस्थान से लगने वाली सीमान्त चौकियों पर पाकिस्तान ने पाचवी और दूसरी कोर लगा रखी है। न० भा० के अनुसार पाकिस्तान ने पश्चिमी सीमान्त पर सैनिक महत्त्व के ठिकानो पर अमेरिकी राडार लगा रखे हैं। हाल मे इनकी सख्या मे भी वृद्धि की गयी है। यह भी आशका व्यक्त की गई है कि जसलमेर बाडमेर से लगी सीमा मे पाकिस्तान ने अपने ठिकानो पर इलेक्ट्रोनिक हथियारो को भी इकट्ठा करना शुरू कर दिया है।

सीमा पर चल रही अवाछनीय और खतरनाक गतिविधिया चिन्ता का विषय हैं। खुली सीमाओं के कारण असम मे विदेशी नागरिको की घुस पैठ की समस्या का सामना करना पडा और पजाब मे सिख आतकवादियो को हथियार प्रशिक्षण की सुविधा मिली। अब राजस्थान के साथ लगने वाला ४७० किलोमीटर क्षेत्र भी चर्चा का विषय बना है। यहाँ विदेशियो और आतकवादियो की घुस पैठ के अलावा तस्करी भी एक बडी समस्या है।

यह उल्लेखनीय है कि सितम्बर मे पाकिस्तान की वायुसेना ने वायुसेना दिवस मनाया था इस अवसर पर एयर चीफ मार्शल जमाल अहमद खान ने एक आदेश जारी कर वायुसेना के अधिकारियो और जवानो से कहा कि वे किसी भी चुनौती का मुकाबला करने के लिए तैयार रहे। उन्होंने कहा कि यदि हम पर युद्ध थोपा गया तो हम उसका कडा जवाब देने मे सक्षम है।

इसी दिन पाकिस्तान की वायुसेना के सभी ठिकानो, फजल, लाहौर, सरगोधा, चकलाला और पेशावर के वायुसेना अड्डो पर जवानों को शपथ दिलाई गयी कि वे किसी भी परिस्थिति मे दिलेरी से मुकाबले के लिए तैयार रहे।

सम्पादक—यशपाल 'सुधांशु' एम०ए०   व्यवस्थापक—डा० [illegible]   प्रधान सम्पादक — [illegible]

सन्ध्या-योग

लेखक—जगत् कुमार शास्त्री

१—आओ भाई सज्जन पुरुषो ! हम सन्ध्या करे, ओङ्कारोपासना करे गायत्री मन्त्र का अनुष्ठान और ओंकार का जप करे। प्रात काल सूर्य के उदय होने से पहले और सायकाल सूर्य के अस्त होने के पीछे सध्या का समय है। पच महायज्ञो मे सन्ध्या प्रथम और मुख्य है। इसे ब्रह्म यज्ञ भी कहते हैं। इसका एक प्राचीन नाम अहुत' भी है। ("जपोऽहुतो, हुतो होम " मनुस्मृति तृतीय अध्याय) गायत्री मन्त्र व सावित्री मन्त्र की अनुष्टान विधि भी यही है। ओङ्कार जप विधि अथवा ओङ्कारोपासना भी यही है। इसके ये विभिन्न नाम कुछ तो शास्त्रकारो के विचार प्रकार के आधार पर हैं, कुछ साधको उपासको के श्रेणी विभाग के आधार पर। यदि काई अपना सारा जीवन वा अधिकाश समय सन्ध्या अर्थात स्तुति प्रार्थना और उपासनापूर्वक भगवान के सम्यक ध्यान मे व्यतीत कर सके तो भी बहुत कम है। परन्तु यदि कोई अधिक समय प्रभु भक्ति मे न लगा सके तब भी दोनो समय सन्ध्या अवश्य करे। सन्ध्या मे गायत्री मन्त्र का अनुक्रमानुसार विशेष पाठ और विचार तथा अनुक्रमानसार ही प्रणव जप भी अवश्य ही करे। जो ऐसा नही करता शास्त्रो मे उसे दोषी माना गया है। उसके बहिष्कार का आदेश भी दिया गया है -

२—प्राचीन इतिहास ग्रन्थो को देखने से ज्ञात होता है कि हमारे पूर्वज राम कृष्ण सीता कुन्ती आदि एव सब ऋषि मुनि महात्मा, साधु सन्त आदि नियम पूर्वक सन्ध्योपासना किया करते थे। यात्रा युद्ध रोग तथा घोर विपत्ति के समय मे भी वे अपने सन्ध्या व्रत का परित्याग न करते थे। तभी तो वे बड बड काम करने दीर्घ आयु को प्राप्त करने मे भी समर्थ हुए थे। आज भी उनकी यशोगाथाए ससार मे गाई जा रही है। ईश्वर को उन पर विशेष कृपा था। क्योकि वे सब ईश्वर के सच्चे भक्त थे।

३ आज ससार मे ढग का स्थान ढोग ने ले रखा है। दिखावा प्रतिदिन बढता ही चला जा रहा है। मानो सत्य लगडा हो गया है और झूठ के पाव लग गये है। नास्तिकता और उसके परिणाम मे चरित्र-हीनता बढ रही है और भी नाना प्रकार की कुप्रथाए एव दु खो का बढाने वा । विचार तरग प्र ि न हो रही हैं। सच्चे आस्तिकजन ही इस स्थिति का सामना कर सकेगे। और बढती हुई दु ख तथा अन्ध-कार परम्प ओ को रोक सकेगे। ईश्वर भक्ति से ही पाप मात्र का क्षय होगा पुण्य का उदय होगा और सच्चे आस्तिक नर-नारी ही अपने जीवन सग्राम मे विजय लाभ करेगे।

४—सन्ध्या के मन्त्रो का पाठ धीरे धीरे स्थिर एव शान्तचित्त होकर करना चाहिए उच्चारण शुद्ध एव स्पष्ट हो। साथ ही साथ सन्ध्या मन्त्रो के अर्थों का मनन और विचार भी होता रहे। अर्थ को जाने बिना सन्ध्या योग सफल और सुखद न हो सकेगा। अर्थ को जाने बिना न तो मन एकाग्र न ही सन्ध्या कर्म मे प्रीति बढेगी। तोता रटन पर्याप्त नही है। उच्च स्वर की अपेक्षा मन ही मन मे पाठ और जप आदि करने के लाभ अधिक है। कभी कभार सम्मिलित सन्ध्या समगो मे जो उच्चस्वर मे पाठ किया जाता है वह तो इसलिए होता है कि जिनको सन्ध्या के मत्र शुद्ध-शुद्ध याद नही है उनको भी व सस्वर म याद हो जायें। वह सन्ध्या का अनुष्ठान नही होता। प्रशिक्षण तो वह है ही।

५—वैदिक सन्ध्या विषयक छोटी बडी और गद्य-पद्यमयी अर्थ-ज्ञापक पुस्तक बहुत से विद्वानो ने बनाई हैं। सभी उत्तम हैं। साधको को अपनी अपनी योग्यता और सुविधा के अनुसार किसी भी एक पुस्तक की सहायता से, अथवा किसी मित्र वा अन्य विद्वान् की सहायता से सन्ध्या के सब मन्त्रो का शुद्ध उच्चारण और अर्थ सीख लेना चाहिए। विभिन्न विद्वानो के अर्थ-प्रतिपादन में जो शाब्दिक भेद-प्रभेद पाये जाते हैं, वे सब ऊपरी है। वे तो गौण ही हैं। वास्तविक और तात्त्विक भेद उनमे नही हैं। अत उपासको को भेद में भी अभेद मान कर ही चलना चाहिए। अर्थ भेद के विभ्रम मे नही पडना चाहिए। स्वाध्याय से इस प्रकार के सभी सशय आसानी से ही मिट जाते हैं। (परस्पर विरुद्ध अर्थ न होने चाहिए।)

६—सन्ध्या की महिमा हमारे आर्यशास्त्रो मे बहुत विस्तार के साथ गाई गई है। उपनिषत्कारो एव स्मृतिकार महर्षियो ने वैदिक सन्ध्योपासना पर सर्वाधिक बल दिया है। उपासना के अभाव में तो मानव-जीवन रूखा, फीका कडवा फुसफुसा और अशान्त बन जाता है। ऐसी अवस्था मे उत्तम ज्ञान भी मानसिक विलास अथवा वाग्जाल होकर रह जाता है। सिद्धान्त उसे कहते हैं, जिसके अन्त मे सिद्धि अवश्य ही मिलती है। सिद्धान्त आचरण के लिए बने हैं, वाद विवाद से सिद्धान्तो की परख होती है।

७—प्रात काल की सन्ध्या के पश्चात रात के कार्यों का, और सायकाल की सन्ध्या के पश्चात् दिन के कार्यो का भली प्रकार विचार भी करना चाहिए। यदि किसी से कभी कोई भूल चूक हुई हो, तो उस के सुधार का उपाय करना उचित है। ऐसा अभ्यास करने से मनुष्य का चरित्र अत्यन्त निर्मल जीवन शान्त और स्वभाव अति सौम्य, शुद्ध एव स्निग्ध हो जाता है। फिर प्रभु-भक्ति मे मन भी खूब लगने लगता है और अन्त मे मनुष्य ब्रह्मानन्द मे लीन होने की सिद्धि भी प्राप्त कर लेता है।

८—जो लोग उपासना कर्म द्वारा अपने-अपने जीवन को सुखी, सफल तेजस्वी और शान्त बनाना चाहते है उनको सभी प्रकार के मादक द्रव्यो तमोगुणी एव रजोगुणी भोजनो अशिव पदार्थों, चरित्र-हीन मित्रो और काम क्रोध मद मोह लोभ तथा अहकाररूपी मनो-विकारो का परित्याग अवश्य ही कर देना चाहिए। इसे ही षड्रिपु-दमन कहते हैं।

९—तप के नाम पर शरीर को कष्ट देना या सुखा डालना अनु-चित है। किसी जगल-पहाड मे जाना शुद्ध वायु के सेवन एकान्तवास विशेष अभ्यास और प्रकृति-निरीक्षण के लिए तो ठीक है अन्यथा नही। घर-गृहस्थी का परित्याग करके तथाकथित वैरागी या रमते-राम बन जाना तो एक प्रकार की कायरता ही है। कर्त्तव्य-कर्मों से यह विमुखता और शास्त्र विहित जीवन-सघर्ष से यह पलायनवाद किसी के लिए किसी रूप मे भी श्रेयस्कर नही है। सन्यास तो अपरि-ग्रह और त्यागवाद ही है।

१०—अपनी-अपनी सन्ध्या उपासना, जप, अनुष्ठान, साधना आदि-आदि भक्ति-धर्म के छोटे-बडे सभी कार्यक्रम उपासक अपने आप ही करे। नौकरो या मुनीमो से करवाने का काम यह नही है। किसी को शुभ कर्मो मे प्रेरित या उत्साही करना तो बात ही दूसरी है।

११—सन्ध्या-माता की शरण ग्रहण करो। तन के चोले को भक्तिवाद के रग मे रगो। मन-बन्दर को वश मे करो। सच्चे उपासक बनो। उपासना के लाभ बहुत हैं।

क्या बरनाला उग्रवादियों का इलाज कर सकेंगे ?

तीन वर्षों से पंजाब में आग और धुआं उठता रहा है हर दिन कोई शोला फूट पड़ता और लोगों के दिलों में दहशत व्याप जाती। युवा प्रधानमन्त्री ने समस्या का समाधान करने का हर सम्भव प्रयास किया। स्व० श्री लोंगोवाल के साथ हुए समझौते से सारे देश को आशा बंधी थी, कि पंजाब समस्या का समाधान हो गया किन्तु सन्त लोंगोवाल की हत्या से फिर आशाओं पर पानी फिर गया। लेकिन प्रधानमन्त्री ने चुनाव कराकर फिर समस्या को सुलझाने का साहस दिखाया। पंजाब में चुनाव का बिगुल बजा। सिख और हिन्दुओं ने एकजुट होकर आतंकवाद के मुकाबले में वोट डाले। दूसरी तरफ बाबा जोगेन्द्रसिंह की पार्टी ने चुनाव का बायकाट करने का फैसला किया। उग्रवादियों ने चुनाव में रुकावट डालने में कोई कसर नहीं छोड़ी। चुनाव शुरू होने से एक दिन पहले धारीवाल, बटाला, दीनानगर, अमृतसर, फरीदकोट और तलवंडी सरबो में उग्रवादियों ने बम के धमाके किये। बटाला में एक बम धमाके से तीन बच्चे मर गये और राज्य सभा के सदस्य महेन्द्रप्रसाद अमृतसर के प्रमुख पर्यवेक्षक की दो लाख की कार तहस-नहस हो गई। अमृतसर में चुनाव शुरू होने से दो दिन पूर्व आतंकवादियों ने दो इंका कार्यकर्ताओं को जहरीला प्रसाद खिलाकर मौत की नींद सुला दिया। कई स्थानों पर टाइम बम भी मिले। दिल्ली रेलवे स्टेशन के बाहर एक ट्रांजिस्टर बम काण्ड से तीन व्यक्तियों को मौत की बलि चढ़ा दिया गया। इसके बावजूद चुनाव हुए, अकालियों की सरकार बन गई। केन्द्र सरकार भी यही चाहती थी। उग्रवाद का सफाया अकाली सरकार के हाथों से हो।

१४ दिसम्बर १९२० को जब अकाली दल बना था किसी प्रकार की साम्प्रदायिक भावना का बीज भी उसमें नजर नहीं आता था किन्तु जैसे जैसे अकाली दल ने ताकत पकड़ी उसमें कई ऐसे तत्त्व शामिल हो गये जिनके कारण अकालीदल कई बार टुकड़े टुकड़े हो गया। उग्रवादी तत्त्वों ने अकालियों की फूट का अच्छा लाभ उठाया। अकाली दल में यह नारा उठता रहा, धर्म और राजनीति साथ साथ चलेगी। राजनीति की कुर्सी को पाने के लिए कुछ नेताओं ने उग्रवादी तत्त्वों पर हाथ धरे रखा जिससे उग्रवादी शक्तिशाली होते गये। इन्हीं के कारण अब तक पंजाब में आतंकवादी ज्वालामुखी से लावा निकलता रहा है। अकालीदल की सरकार तो बन गयी पर प्रश्न यह है क्या अकाली दल उग्रवादी धड़े को नंगा करके आतंकवादियों का सफाया करने में सफल होगा? क्या वह सन्त लोंगोवाल के आदेशों के अनुसार हिन्दू सिख एकता के लिए काम करेगा और स्वयं में उगते धड़े बन्दी के फोड़े का इलाज कर पायेगा ?

श्री सुरजीतसिंह बरनाला सर्वसम्मति से पंजाब के मुख्यमन्त्री बने हैं। उन्होंने कहा भी है- 'नयी सरकार का पहला काम सारे पंजाब की आंखों के आंसू पोंछने का होगा। हम ऐसी सरकार बनायेंगे जिसे राज्य का हर आदमी अपना समझ सके।" हम श्री बरनाला की सफलता के लिए शुभाशंसा देते हैं कि वे सफल हों पर इस स्थिति से इन्कार नहीं किया जा सकता कि बरनाला लोंगोवाल नहीं हैं वे सामूहिक अकाली नेतृत्व का एक हिस्सा हैं। बराबर वालों में वरिष्ठ सारे दल को अपने साथ साथ लेकर चलना उनके लिए एक चुनौती है। मुख्यमन्त्री की शपथ ग्रहण करने के बाद श्री बरनाला गुरुद्वारे में अरदास के लिए पहुंचे इससे उनकी धार्मिकता का तो पता चलता है किन्तु राज्य के ४८ प्रतिशत हिन्दुओं की श्रद्धा और भावना का प्रतीक किसी हिन्दू मन्दिर में जाना भी उचित नहीं समझा। इससे हिन्दुओं के मन में क्या विचार उगेंगे। शायद वही जो किसी सिख प्रेक्षक ने कहे थे। अगर पंजाब में कांग्रेस की सरकार बनती है तो सिख जनता इसे हिन्दुओं की सरकार कहेगी। तो क्या अब अकाली सरकार पर हिन्दू विश्वास न करें ? जब कि यह भी अजीब रवैया है जेलों से काफी सिख रिहा किये गये और किये जा रहे हैं परन्तु जेलों में बन्द अधिकांश हिन्दू अभी भी रिहा नहीं किये गए। दूसरी ओर पंजाबियों ने अपने मन में २९ सितम्बर को बरनाला के मुख्यमन्त्री चुने जाने पर खुशियां मनायी और खुशहाली की आशाएँ जगायी। लेकिन आने वाला समय अकाली दल के लिए चुनौतियों से भरा हुआ है। पिछले तीन वर्षों से पंजाब केन्द्र की सहायता पर चलता आ रहा है अब एक तरफ लोगों के ऊपर टैक्सों का बोझ डालना तथा दूसरी तरफ उग्रवाद को साफ करना काफी जोखिम भरा काम है। सन्त लोंगोवाल और राजीव गांधी के बीच हुए समझौते ने आने वाले पंजाब का रास्ता तय कर दिया था। पंजाब की नयी सरकार के लिए उस रास्ते पर चलना कड़ी चुनौती है। यह सच है कि सिखों के विशाल बहुमत ने इस चुनाव में आतंकवादी रीति नीति के खिलाफ वोट दिया है। बेअन्तसिंह की विधवा विमल खालसा का सिर्फ ४०० वोटों से हार जाना इस बात का संकेत है कि उग्रवादियों से सहानुभूति रखने वाले अभी हैं। पंजाब की नयी सरकार को उग्रवादियों के इन हिमायतियों का मन भी बदलना होगा। उसे अपने कार्यों से सिद्ध करना होगा कि भिंडरावाले और उसके सहयोगियों का रास्ता गलत था। पंजाब और सिख दोनों के लिए अहितकर था। उग्रवादियों के हौसले अभी भी बुलन्द है भारत से बाहर जो षड्यन्त्र अभी चल रहे हैं वास्तव में काफी चिन्ताजनक हैं प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की ब्रिटेन यात्रा से तीन दिन पूर्व ब्रिटिश पुलिस ने लगभग एक दजन आतंकवादियों को गिरफ्तार किया है। ऐसा कहा जा रहा है कि इन लोगों ने श्री राजीव गांधी की हत्या का षड्यन्त्र रचा था।

यह भी बहुत स्पष्ट है कि पंजाब के आतंकवादियों को अमेरिका ब्रिटेन और कनाडा के बसे सभी सिखों से सहायता मिलती रही है। आतंकवादी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी और सन्त लोंगोवाल जैसे सुविख्यात लोकप्रिय नेताओं की हत्या कर चुके है और अब भी वे षड्यन्त्र करने में लगे हुए हैं लेकिन यह कुछ असामान्य सा प्रतीत होता है जब कभी प्रधानमन्त्री वाशिंगटन या लन्दन पहुंचने वाले होते हैं तभी वहां की सरकार को आतंकवादियों की गतिविधियों की जानकारी मिलती है। क्या यह सच नहीं है कि रेगन प्रशासन और थैचर सरकार को पूरी तरह मालूम है कि उनके देशों में भारत विरोधी गतिविधियां चल रही हैं। दोनों सरकारों को खालिस्तान की मांग करने वाले मुट्ठीभर सिखों की सारी कारस्तानियों की जानकारी है। कुछ राजनैतिक प्रेक्षकों का यह भी विचार है कि अमेरिका, ब्रिटेन तथा कनाडा के शासकों ने जानबूझकर भारत को खण्डित करने का षड्यन्त्र रचने वालों को आश्रय दे रखा है। इन उग्रवादियों का जो भारत से बाहर हैं सम्बन्ध पंजाब के किसी सूत्र से भी जुड़ा हुआ लगता है। जो योजनाएं बाहर बनती हैं उनका प्रयोग भारत में होता है। इसलिए बरनाला सरकार को देश की अखण्डता को चुनौती देने वाली ताकतों से लड़ने के लिए कमर कसनी ही होगी। चुनौती के वे लोग जो बन्दूक और बम की भाषा में बात करते हैं। कल तक ये बन्दूक उन पर तनी हुई थी जिन्हें उग्रवादी आपरेशन ब्लूस्टार के लिए उत्तरदायी समझते थे। अब यह बन्दूक उन पर भी तन सकती है जिन्हें सिख पन्थ के स्वयम्भू संरक्षक सिखों का गद्दार कह रहे है। मतलब साफ है नयी अकाली सरकार को इन भटकों को नयी राह ही नहीं दिखानी उन्हें उस राह पर चलाने का दायित्व भी निभाना है। अगर प्यार की भाषा उन्हें समझ न आये तो उनकी भाषा से ही उन्हें सही रास्ते लगाना होगा।

—यशपाल सुधांशु

व्यासपीठ

उपनिषत् कथा-माला—१८

कर्मकाण्ड

लेखक—स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

हुक्म है श अ का
नू हो पाक दिल।
हो नेक सब से
मुहब्बत से मिल।

नेक काम मनुष्य को नेक बनाता है और बुरे कामों से मनुष्य बुरा बन जाता है नेक काम से हृदय शुद्ध होता और बुरे काम से अज्ञान बढ़ता है नेक आदमी प्रभु का इच्छुक और इच्छाओं का जो मनुष्य को बुरे कामों की ओर खींचती हैं दमन करता है पापों का रास्ता खुल जाने से संसार में कष्ट और मुसीबत दिन प्रतिदिन बढ़ता जाता हैं कमण्यता मनुष्य को पापों से हटा कर कल्याणमार्ग पर अग्रसर करती है बुरे काम न करो— दुःख पाओगे कमजोर हो जाओगे। यह बात स है कि कोई भी पुरुष शुरू से ही अपने आप बुरा नहीं बनता है जिस स्टेशन पर वह खड़ा है उसके एक ओर बुराई और दूसरी ओर भलाई है यदि बेसमझी में वह अपने कदम को बुराई की ओर बढ़ाता है तो भलाई से दूर हो जाता है पर यदि वह सोच समझकर पुण्यमार्ग को ग्रहण करता है तो उतना ही अधिक वह पुण्य पाता है यही चक्कर आगे चलता हुआ एक को तो प्रभु से जा मिलाता है और दूसरे को संसार में घुमाता रहता है परन्तु आजकल विद्वान भी बदल गया है—जिस काम के करने से मनुष्य का हृदय पवित्र और अन्तःकरण शुद्ध हो उसे तो कोई विरला ही निभाता है जिसमें सब का आराम हो दुःख सुख में परस्पर सहयोग हो अन्य से किसी को कष्ट न हो उस काम का कोई कोई ही करता है परन्तु आजकल हर कोई बाहरी आडम्बरों का शौकीन है और इनके विरुद्ध कही गई बातों पर कान तक नहीं धरता।

जैसे कोई मत ईश्वर की पूजा बिल्कुल चुपचाप करना अच्छा मानते हैं और कोई घण्टा घड़ियाल बजा कर पूजा पाठ करना ठीक मानता है कोई माला से ईश्वर को जपता है तो दूसरा अग्नि को तपता है एक का मुख पश्चिम को है तो दूसरे का पूर्व को किसी ने मोक्ष को कैसे माना है तो दूसरे ने उसे उल्टा जाना है इस विषय में कहाँ तक कहें हर एक मत ने अपने को दूसरे से पृथक करने का कोई न कोई ढंग निकाला हुआ है वह किसी हद तक ठीक हो सकते हैं परन्तु वास्तविकता को ठीक करने में सहायक होते पर ऐसा तो न हुआ। मनुष्य ने बाह्य आडम्बर को ही सब कुछ मानकर असलियत को खो दिया जिससे यह संसार झगड़ों का केन्द्र बन गया। धर्म की तो यह आज्ञा थी कि मनुष्य नेक और शुद्ध आचरण करता हो उसके हृदय में घमंड और अभिमान न हो एक दूसरे के साथ प्रेम का बर्ताव करे शत्रुता के बीज बोने से और फसाद करने से सदा दूर—यह तो हुआ ढोंग को वास्तविकता का स्थान देने से सकड़ो प्रकार के बखेड़े होंगे यह तो ठीक है कि मनुष्यों में कुछ न कुछ भेद होता है परन्तु इस भेद की अधिकता को जमाना शत्रुता कहता है असूल तो झगड़ों को मिटाना है इसकी अज्ञानता से मनुष्य झगड़ों को उठाता है असलियत तो यह है—

नेकी की ताकत नहीं
तो बदी से परहेज कर।
अपने ऊपर जुल्म करने से
सदा ईश्वर से डर।

मनुष्य का यह मुख्य कर्त्तव्य है कि वह शुभ काम करने वाला ही बने यदि इसमें यह शक्ति न हो तो बुरे कामों से दूर रहना तो आवश्यक है यह तरीका तो संसार के हित और कल्याण का है। जब मनुष्य अपने स्वभाव को बुराई से हटा कर उसके प्रभाव को दिल से मिटा देता है तब उसका ध्येय नेकी करने का स्वभाव हो जाता है चित्त की प्रवृत्ति किसी न किसी ओर होनी आवश्यक है बुराई का स्रोत बन्द होते ही भलाई का मार्ग आप ही खुल जाता है जो मनुष्य किसी के साथ बुराई करता है वह आज नहीं तो कल मुसीबत में फंसता है अन्याय से किसी को दुःख पहुंचाना अपने आप को स्वयमेव मुसीबतों में फसाना है परमात्मा दुःख नाशक है अतः जो मनुष्य किसी को मुसीबत से बचाता है वह भी अपनी योग्यता के अनुसार प्रभु के इस गुण का भागी बन जाता है, फिर कभी वह कष्ट नहीं पाता। प्रभु स्वतन्त्र है। अतः जो कोई किसी को बन्धन से मुक्त कराता है वह मुक्ति पद को पाता और प्रभु के समीप हो जाता है। प्रभु दयालु है। अतः जो किसी पर दया करता है वह अमरत्व प्राप्त कर कभी नहीं मरता। हर हाल में खुश रहना बुरी बात मुख से कभी न कहना सुख-दुःख के आघात को शान्तिपूर्वक सहना परमेश्वर की आज्ञा है।

इनके बदले में स्वास्थ्य प्रसन्नता और सम्मान पाता है। इसलिए मनुष्य बुरे कामों से बचे और भलाई के लिए आगे बढ़े। संसार के किसी मनुष्य को दुःख देना किसी धर्मवान का कर्त्तव्य नहीं है मेरे मित्र! आप तनिक इन असूलों पर ध्यान दें कि ये मनुष्य को दुनिया के रास्ते से निकाल कर प्रभु से मिलाप की ओर किस प्रकार ले जाते हैं। जो मनुष्य को अन्याय से कष्ट पहुंचाता है वह प्रभु से दूर हो जाता है। भलाई करना बुराई से परे रहना और परहेजगारी का जीवन बिताना परमेश्वर को प्राप्त करने का एक विशेष मार्ग है। और किसी भी ईमानदार को जो सच्चे अर्थों में धर्मवान है दूसरों को कष्ट देने का ध्यान तक नहीं हो सकता धर्म एक सच्चा मार्ग है जो प्रभु तक जा पहुंचता है। इस पर चलने वाला कभी भटकता नहीं। वह उपाय जो प्रभु से मिलाप में सहायक हो उस पर आचरण करने से कौन कष्ट पाता है? मनुष्य की गिरावट का मुख्य कारण दूसरों को दुःख पहुंचाना ही है—

बुराई या भलाई जो है करते।
सदा उसका है वैसा फल वे भरते।

मनुष्य बुरे या भले काम के प्रभाव से कभी बच नहीं सकता। यह नियम बड़ा मजबूत और बारीक है सारा संसार इसी नियम के अनुसार चल रहा है किसी के पाँव सफलता चूम रही है तो कोई अपने (व्यक्तित्व) को ही मिटा रहा है। विचारकों ने इसकी खोज की है। यह नियम जैसे को तैसा है रत्ती भर भी नहीं बदला। मनुष्य पहाड़ों की कन्दराओं में जाकर अपने को छिपाए, चाहे अपने को सागर की तह में छिपाए और चाहे आकाश पर उड़ जाए। पर इस संसार भर के राज्य में कोई ऐसी जगह नहीं जहाँ कर्म अपने परिणाम से पीछा छुड़ा सके। इसीलिए विद्वान ने कहा है कि जो मनुष्य औरों के साथ बुराई अथवा भलाई करता है उनका परिणाम लौट कर उसी को प्रभावित करता है जिससे सांसारिक दुःख या सुख पैदा होता है और यदि भला काम फल की इच्छा से रहित हो जिस में दिखावट या बनावट का लगाव न हो तो वह (भलाई) कर्त्ता को मोक्ष की ओर ले जाता है। इसलिए धर्म की यह आज्ञा है कि बुरे कामों का त्याग करना ही चाहिए और नेक कार्य यदि फल की दृष्टि रखकर किया जावे तो वह सांसारिक सुख देता है पर यदि भलाई फल की अनिच्छा से की जाए तो उसका फल मोक्ष है। अब मनुष्य को अधिकार है कि जिधर को चाहे अपनी गति बढ़ाए—

शरअ का फरमान है
नेकी से सारे काम कर।
मत बदी कर भूल से
मत किसी को बदनाम कर।।

अब आप शुभ कामों पर जो सुख का कारण है उन पर ध्यान दें— शुद्ध मति सच्चा ज्ञान सहनशीलता होशियारी सत्यता पवित्रता इन्द्रिय दमन मनोनिग्रह सुख दुःख की अधिकता में निर्लेपता बुरे कामों से भय सत्कर्मों में निडरता दया, आराम सन्तोष भक्ति दान शुभ कामना नशे से परहेज आदि अच्छी आदतें प्रभु की ओर ले जाती हैं। जिन खूबियों से सब को लाभ और संसार में शान्ति स्थापित हो वही ईश्वर की आज्ञा है उनका पालन करना मनुष्य का मुख्य कर्त्तव्य है और जिन मनुष्यों में ये गुण हों वे देवता कहलाते हैं। देवता का कोई विशेष प्रकार का शरीर नहीं होता। देवता तो गुणवान को कहते हैं।

जिन बुरे कामों से मनुष्य स्वयं कष्ट उठाता है और औरों को कष्ट पहुंचाता है वे सब दुष्टों के प्रिय दुर्गुण हैं जो निम्नलिखित हैं—

अज्ञान बुराई करना, कुविचार,

(शेष पृष्ठ ११ पर)

श्रेष्ठ मानव जीवन निर्माण : साधन शील और उसके अंग

नीतिकारों के शब्दों में

आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार

महाभारत शान्तिपर्व, राजधर्म प्रकरण के अध्याय १२४ मे दुर्योधन और धृतराष्ट्र--पुत्र-पिता का सवाद है जिसमे भीष्मपितामह, युधिष्ठिर तथा अन्य कई विद्वान् भी उपस्थित थे। इसका प्रारम्भ धृतराष्ट्र द्वारा पुत्र दुर्योधन को सतप्त देख कर इस प्रश्न से होता है कि तुम्हारे इस प्रकार सतप्त होने का क्या कारण है जब कि तुम्हारे पास लौकिक सुख समृद्धि के सब साधन उपस्थित है। दुर्योधन स्वभावत पाण्डवो से बडी ईर्ष्या करता था। उसने कहा--युधिष्ठिर के घर म हजारो स्नातक स्वर्णपात्रो मे भोजन करते हैं जब कि मेरे महलो मे कुछ सैकडा स्नातक भोजन करने आते है। इसी प्रकार दुर्योधन ने वस्त्र, अश्व इत्यादि अन्य कई जड चेतन वस्तुओ और पशु पक्षियो का भी जिक्र किया। धृतराष्ट्र ने पुत्र को ईर्ष्या, द्वेष के त्याग का उपदेश देते हुए कहा--

हे पुत्र! यदि तू युधिष्ठिर सदृश लक्ष्मी वैभव इत्यादि करना चाहता है तो शीलवान् बन। तब दुर्योधन का यह पूछना स्वाभाविक ही था कि यह शील क्या है? तब धृतराष्ट्र ने प्राचीनकाल का इतिहास सुनाते हुए लक्ष्मी के एक कथन के प्रमाण से शील के अंगो का निम्न वर्णन किया -- अर्थात् (१) धर्म (२)सत्य (३) सदाचार और (४)लक्ष्मी। हे बुद्धिमान्! ये चारो शील के मूल है। इसका अधिक व्याख्या करते हुए धृतराष्ट्र कहता है--

किसी के भी प्रति मन, वाणी, कर्म से द्रोह न करना, दया, यथाशक्ति दान, यह शील कहा जाता है। प्राचीनकाल के नीतिकारों--भर्तृहरि विदुर, चाणक्य इत्यादि ने "शील" का कुछ अधिक विस्तार से विवेचन किया है। इनके वचनों को हम यहां उपस्थित करते हैं।

शीलवान व्यक्ति के गुण--भर्तृहरि

मन, वचन और शरीर से सत्कर्म रूपी अमृत से पूर्ण होकर तीनों लोकों को अपने उपकारो से तृप्त करने वाले तथा दूसरों के परमाणु सदृश छोटे से गुणों को भी पर्वत के सदृश मानकर अपने हृदय में सदा प्रसन्न होने वाले उत्तम शीलवान् पुरुष कितने हैं? विरले ही हैं।

तृष्णा का त्याग, क्षमा धारण, मद का त्याग, पाप में प्रीति का त्याग, सत्य बोलना, सज्जनों के मार्ग का अनुसरण, विद्वानों की सेवा, पूजनीय व्यक्तियो का आदर, शत्रुओं के प्रति भी नम्र व्यवहार। अपने गुणों को छिपाना, अपने यश की रक्षा, दुखियों के प्रति दया यह सत्पुरुषों के लक्षण हैं।

शील सर्वश्रेष्ठ भूषण है--

धन सम्पत्ति की शोभा सज्जनता, शूरवीरता की शोभा, वाक् सयम, (बढ बढ डीगे न मारना) ज्ञान की शोभा, शान्ति, विद्या को शोभा नम्रता, धन की शोभा सुपात्र को दान, तप की शोभा, क्रोध न करना, प्रभुता की शोभा, क्षमा और धर्म का भूषण निश्छल व्यवहार है। पर इन सब का मूल शील सदाचार सर्वश्रेष्ठ है।

विदुरनीति

जो शान्त हुए वैर को नही भडकाता, न घमण्ड करता है, अपने को हीन नहीं जताता है "दुर्गति मे पडा हूँ" ऐसा कहकर अकार्य नही करता आर्य उसे परम आर्यशील कहते हैं।

अपने सुख में बहुत हर्ष नही करता न ही दूसरे के दुःख मे प्रसन्न होता है। जो देकर पश्चात्ताप नही करता, वह सत्पुरुष आर्य शील कहलाता है।

इस ससार में पुरुष का शील ही मुख्य है, जिसका यह नष्ट हो जाता है, उसका न तो जीने का प्रयोजन और न धन से उसे कोई लाभ होना है।

विद्यामद धनमद, तीसरा देश अथवा कुल का मद होता है। अहकारियो के लिए यह मद उन्मादक होते हैं किन्तु सज्जनो के लिए यही दमन का साधन होते हैं।

चरित्रहीन का कुल (उत्तमकुल मे जन्म) प्रमाण नही, ऐसा मेरा विचार है। नीच कुल में उत्पन्न का वृत्त (सदाचार ही उसकी विशिष्टता होती है)।

चाणक्य नीति

(१) विद्या अभ्यास से, परिवार शील से, गुण से आर्य और क्रोध नेत्र से पहचाने जाते हैं।

(२) रूप की शोभा गुण से, कुल की शोभा शील से, विद्या की शोभा सफलता से और धन की शोभा उसके प्रयोग से होती है।

(३) गुणहीन व्यक्ति का रूप, शील से हीन का कुल प्रयोग मे न आने आने से विद्या, और व्यवहार मे न से धन का नाश होता है।

(४) जिसके पास विद्या नही, तप नही, दान नही, शील नही, गुण और धर्म नही ऐसे मनुष्य इस पृथ्वी पर भार रूप मे मृग के समान विचरते हैं।

इस प्रकार शील के सम्बन्ध में प्राचीन नीतिग्रन्थो मे जो विविध-रूप बताये गये हैं, उनका वर्णन करने के बाद धृतराष्ट्र अपने पुत्र दुर्योधन को अन्त मे कहते हैं--

हे पुत्र! यदि तू युधिष्ठिर से भी विशिष्ट होना चाहता है, तो इस प्रकार जीवन का तत्त्व जानकर शीलवान् बन।

के सी ३७/बी अशोक विहार, दिल्ली- ५२

यज्ञोपवीत-महिमा

(एक गीत)

यज्ञोपवीत लेकर खुद को निहारना है।
जीवन सुधारने का सकल्प धारना है॥
हर झूठ की तरफ से मुह अपना फेरना है।
सच्चे व्रतो का पालन करने की प्रेरणा है॥
तप त्याग साधना को हर दम उभारना है।
जीवन सुधारने का • ॥
गायत्री जाप सन्ध्या स्वाध्याय यज्ञ करना।
दुष्टो की सगति मे हरगिज न पांव धरना॥
भगवान् को कभी न दिल से बिसारना है।
जीवन सुधारने का • • •• ॥
समझो ये तीन ऋण हैं कन्धे पे तीन धागे।
जब तक हैं प्राण इन से व्यक्ति कभी न भागे॥
निष्कपट स्वच्छ सुन्दर जीवन गुजारना है।
जीवन सुधारने का • ॥
पितरो की टहल सेवा देवो की उचित पूजा।
ऋषियो सग जैसा कर्त्तव्य है न दूजा॥
माता पिता गुरु के ऋण को उतारना है।
जीवन सुधारने का • ॥
नेकी के काम करके तत्काल भूल जाना।
निष्काम भाव होकर औरो के काम आना॥
शिक्षा का सूत्र है यह मन में विचारना है।
जीवन सुधारने का ॥
शुभ चिह्न आर्यो का यज्ञोपवीत है यह।
सब श्रेष्ठ लोग पहने ऋषियो की रीत है यह॥
दुनिया में "पथिक" इस के यश को निखारना है।
जीवन सुधारने का •• ॥

लेखक--प० सत्यपाल "पथिक"

यथार्थवाद के परिप्रेक्ष्य में

ऋषि दयानन्द का दार्शनिक चिन्तन

ले०—जगदीश आर्य, सिद्धातरत्न, 'विशारद' सासाराम

दशन दृश धातु से बना है। श का अर्थ है देखना। देखता तो सभी कोई है—कीट पतगादि सभी देखते हैं। परन्तु यहा देखना एक विशेष अर्थ मे आया है। दार्शनिक चिन्तन मे विवेचनात्मक दृष्टि से जीवन जगत को देखना ही दर्शन है।

दर्शन मे दो मुख्य तत्त्व है—द्रष्टा और दृश्य और दोनों के सहयोग से बना है दर्शन। यह सारा ब्रह्माण्ड दृश्य है। द्रष्टा आत्मा है। दर्शन शास्त्र के किसी विशेष विचारधारा से अपने को सम्बन्धित रखने वाला व्यक्ति दार्शनिक कहा जाता है।

मनुष्य और दार्शनिकता का अटूट सम्बन्ध है। बिना दर्शन (Philosphy) के मनुष्य रह ही नही सकता।

दार्शनिको को मैं तीन कोटिया मे विभाजित करता हूं। प्रथम तो वे हैं जो टेबल पर बैठकर दर्शन की बात करते हैं उनके विचार जीवन से कोई मेल नही रखते हैं। दूसरे वे हैं जो केवल दर्शन के हो लिये दर्शन-शास्त्र का अध्ययन करते हैं। वे अपने ब्रेन को दार्शनिक विचारो से इसलिए पम्प करते हैं ताकि दूसरे लोग उन्हे दार्शनिक समझे। तीसरी कोटि मे वे आते हैं जो स्वभावत दार्शनिक होते हैं। उनका चिन्तन यथार्थवाद से समन्वित रहता है उनके दार्शनिक विचारो से मानवता लाभान्वित होती है। ऋषि दयानन्द इसी कोटि के दार्शनिक थे।

स्वामी दयानन्द जन्मजात दार्शनिक (Born Philospher) थे। वे भावुक या काल्पनिक फिलास्फर नही थे। उन्होने दर्शनशास्त्र का किसी गुरुकुल या विद्यालय मे अध्ययन नही किया था उनके जीवन की दो घटनाएँ ऐसी हैं जो यह प्रमाणित करती हैं कि उन्हें मा के दूध की घूटो के साथ ही दर्शन मिला था। पहली घटना तो चौदह वर्ष की आयु मे घटी शिवरात्रि के दिन। पिता जो कट्टर शैव थे और अपने पुत्र को भी शैवोपासक बनाना चाहते थे। उसे शिवरात्रि का व्रत रखने के लिए प्रेरित किया। शिव की अलौकिक स्वचमत्कारिक कथाओ को सुना कर बालक मूलशकर (दयानन्द का बचपन का नाम) को उत्साहित किया। मूल जी के मस्तिष्क मे यह दृढता से जमा देते हैं कि शिवरात्रि को निष्ठापूर्वक व्रत रखने वाले भक्तो को शिव साक्षात दर्शन देते हैं। बालक मूल जी शिव मन्दिर मे रात्रि के समय व्रतानुष्ठान मे लीन है। तभी एक छोटी सी सामान्य घटना घटती है। कुछ चूहे बिल से निकलते हैं और शिव प्रतिमा पर उछल-कूद मचाते हैं। मूलशकर इसे देख कर आश्चर्य चकित हो उठता है। उनके बाल मस्तिष्क मे प्रश्नो की बिजलियाँ कौंध उठती हैं। क्या यह वही शिव है जिस की अलौकिक कथाओ को मैंने सुना है, जो अपने त्रिशूल से अनेक भयकर राक्षसो को नष्ट करते हैं अपने तीसरे नेत्र से कामदेव को भस्म किया है वह अपनी रक्षा इन क्षुद्र चूहो से क्यो नही कर पा रहा है? क्या यह वही शिव है? बालक अपनी शकाओ को पिता के समक्ष रखता है। पिता जो उत्तर देते हैं उस उत्तर से वह सतुष्ट नही होता है और तब बडी निर्भयता से पिता से कहता है कि मैं व्रत नही रखूगा। वह घर पहुचता है और व्रत को तोड कर भोजन कर लेता है। सच्चे शिव को प्राप्त करने का मन मे सकल्प लेता है उसे मूर्ति पूजा से विरक्ति हो जाती है।

शिवरात्रि की घटना से तीन बातो का पता लगता है—१ बालक मूल की जिज्ञासु वृत्ति २ सच्चे शिव की प्राप्ति का सकल्प, और ३ निर्भयता से अपने विचारो को प्रकट करना।

एक दार्शनिक के लिए जिज्ञासु होना पहली शर्त है। वेदात का पहला सूत्र है—

अथातो ब्रह्मजिज्ञासा।

दूसरी बात यह बताती है कि उस अल्पायु मे भी अपने कठोर पिता के समक्ष निर्भयता से अपनी शका को रखता है। दार्शनिक के लिए निर्भयता का गुण आवश्यक है ताकि वह अपनी विचारधारा को ससार के सामने रख सके। तीसरी बात, शिव की प्राप्त करने का कठोर व्रत का लेना है।

दूसरी घटना—पाच वर्षों के बाद घटती है। बालक मूल अपनी बहन और चाचा के मृत्यु-दृश्यो का साक्षात् देखता है। उसके बाल-मस्तिष्क में इस दृश्य से एक विलक्षण प्रतिक्रिया होती है। प्रश्न उठता है मृत्यु क्या है? क्या सभी को एक न एक दिन मरना है? क्या मृत्यु से बचा नही जा सकता?

दूसरी घटना से दो प्रश्न उत्पन्न हुए—१ मृत्यु क्या है? २ इस से कैसे बचा जा सकता है।

ऋषि दयानन्द का सारा जोवन निम्न चार प्रश्नो को सुलझाने मे लग जाता है—

१ शिव क्या है?
२ उसे कसे प्राप्त किया जाए?
३ मृत्यु क्या है? और
४ और उससे कैसे बचा जाए?

दर्शनशास्त्र का भी यही मुख्य विषय है। परमात्मा क्या है? किस विधि से उसे प्राप्त किया जा सकता है? तथा मोक्ष क्या है? और उसकी प्राप्ति के क्या साधन हैं?

अत स्वामी दयानन्द एक जन्मजात दार्शनिक (Born Philospher) थे इसमे किंचित भी सन्देह नही।

ऋषि दयानन्द ने दर्शनशास्त्र पर अलग से किसी ग्रन्थ की रचना नही की। उनके स्वरचित ग्रन्थो मे दार्शनिक सूत्र यत्र-तत्र बिखरे हैं। सत्यार्थ प्रकाश तृतीय सप्तम अष्टम, नवम आदि समुल्लास मे प्रसगवश दार्शनिक मन्तव्यो के अध्ययन से पता चलता है कि वे उच्चकोटि के दार्शनिक थे। परन्तु कुछ विद्वानो का मत है कि उनके स्वकृत ग्रन्थो में जो प्रसगवश भारतीय दर्शनो के कुछ मन्तव्यो के उद्धरण मिलते हैं, वे मन्तव्य ऋषि दयानन्द के न होकर उन दर्शनो का ही मन्तव्य कहना युक्ति सगत है। किन्तु मेरा विचार इस विचार से भिन्न है। मेरी धारणा है कि स्वामी जी ने भारतीय दर्शनो का आधार लेकर जिन मन्तव्यो का समन्वय किया है, उन्हें 'दयानन्द-दर्शन' कहना ही युक्ति सगत है। आज की भाषा मे यह कहा जा सकता है कि प्राचीन दार्शनिक सिद्धातों को दयानन्द ने एक नवीन शैली, नवीन भाषा में सुबोध सरल ढग से उसे प्रतिपादित किया। 'नवीन कवर मे पुरानी पुस्तक'।

स्वा० दयानन्द महाराज ने विविध प्रकारो से दार्शनिक तत्त्वो का प्रतिपादन किया है। किसी सम्प्रदाय विशेष का अनुगमन नहो किया है। उनके मन्तव्य सम्प्रदाय निरपेक्ष तथा सम्पूर्ण जीवन से सम्बन्ध रखते हैं।

श्री दयानन्द महाराज ने गद्य सूत्रात्मक शैली मे अपने लघु ग्रन्थों मे दर्शन तत्त्वो का निरूपण किया है। जैसे 'आर्योद्देश्य रत्न माला' एव स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश। इन लघुतम पुस्तको मे दर्शन के मौलिक तत्त्वों का विवेचन प्रस्तुत है। अत हम नि सकोच कह सकते हैं कि दयानन्द एक मौलिक दार्शनिक हैं।

यह बडे ही खेद की बात है कि आर्यसमाज ने सस्थागत रूप मे उनके निरूपित दार्शनिक मन्तव्यो का कोई प्रामाणिक भाष्य तैयार नही किया है। बाह्य उत्सवो, विशेष समारोहों पर लाखो रु० का बजट बनता है। जो दो-तीन दिनो के तमाशे का नाटक कर समाप्त हो जाता है। इन उत्सवों एव समारोहो से किंचित् ही लाभ होता है। जितना लाभ होता है उस से कही अधिक ही हानि होती है। काश! इन बजटों का दशाश भी उन के दार्शनिक मन्तव्यो के भाष्य मे लगता तो आज विश्व मे दयानन्द, दूसरे शकराचार्य के रूप मे समादृत होते। हाय! हमारी (हमारे विद्वानो) की अकर्मण्यता से हमारा फर्स्ट क्लास का दार्शनिक आचार्य पीछे पड गया है। अस्तु।

ऋषि दयानन्द के दर्शन पर आधिकारिक ग्रथ बहुत ही अल्प हैं। यह प्रयास भी व्यक्तिगत ही है। अग्रेजी मे दो पुस्तकें बडी ही अच्छी हैं। स्व० प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय की Phoilosophy of Dayanand तथा उनके सुपुत्र स्वा० सत्यप्रकाश जी की A critical study of Philosophy cf Dayanad हिन्दी मे उपाध्याय जी की ही एक लघु पुस्तक 'शकर रामानुज एव दयानन्द' भी अच्छी पुस्तक है। अभी हाल ही मे डा० श्रीनिवास शास्त्री जी, प्रो० दयानन्द पीठ कुरुक्षेत्र विश्व०ने दयानन्द दर्शन—'एक अध्ययन' पुस्तक लिखी है। यह पुस्तक कई दृष्टियो से अच्छी है। श्री देवप्रकाश जी गुप्त ने भी 'दयानन्द-दर्शन' नामक एक पुस्तक लिखी है। ये सभी प्रयास व्यक्तिगत हैं—सस्थागत नही। हा, डा० सत्यप्रकाश जी की पुस्तक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने प्रकाशित की है।

स्वामी जी के दर्शन के आधार पर प० उदयवीर जी शास्त्री के जो

६ दर्शनों का भाष्य प्रकाशित किये हैं, वे भी अनुपम हैं। प० उपाध्याय जी का 'अद्वैतवाद', 'शांकर भाष्यालोचन', 'जीवात्मा', 'मैं और मेरा भगवान्' (मूल पुस्तक अंग्रेजी में 'I and my g d') एवं आस्तिकवाद आदि पुस्तक भी दयानद दर्शन के सिद्धान्त के आधार पर उपलब्ध है। पर ये सभी पुस्तकें दयानन्द के मौलिक दर्शन के रूप मे नहीं हैं। अस्तु।

अब मैं अपने मुख्य विषय पर आता हू। स्वामी दयानन्द का दर्शन एक यथार्थवादी दर्शन है (Philosophy free from scepticism and full of hope life and vitality) है, जो जीवन के साथ गहरा सम्बन्ध रखता है। उनके सभी दार्शनिक मतव्यों को अगर हम यथार्थवादी दृष्टिकोण से उपस्थित करें, तो एक ग्रन्थ बन जायेगा। और दूसरी बात यह भी है कि मुझ में इतनी योग्यता एव क्षमता भी नही है कि इस विषय पर कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखू। इस लघु निबन्ध में उन के कतिपय दार्शनिक विचारों का अध्ययन प्रस्तुत कर रहा हू। मेरा यह लेख एक सकेत मात्र है। आर्य-दार्शनिक विद्वानों से मेरा यह नम्र निवेदन है कि वे, 'दयानन्द-दर्शन एक यथार्थवादी दर्शन है' इस पर एक स्वतन्त्र ग्रन्थ की रचना करे।

यथार्थवाद से समन्वय

त्रैतवाद का सिद्धान्त—

इस सिद्धान्त में भोक्ता, भोग्य एव परमात्मा पर विचार प्रस्तुत किया गया है। भोक्ता जीव, भोग्य-जड जगत् है, तथा परमात्मा इस जगत् का कर्त्ता-धर्त्ता और जीवो के कर्म फलों का प्रदाता है।

जड जगत् सुख एव दु:खमय है। स्वामी दयानन्द ने इस सृष्टि को सुख एव दु ख से मिश्रित माना है। बौद्धों का यह सिद्धान्त कि जगत्मात्र दु:खमय है 'सर्वस्य ससारस्य दु खात्मत्व' बौद्ध धर्म ससार को दु खमय मानकर तथा इसे क्षणिक बतला कर ससार त्यागने का उपदेश देता है।

शांकर-सिद्धान्त के अनुसार यह जगत् मिथ्या है, माया है। एक ब्रह्म ही सत्य है। अत ब्रह्म की प्राप्ति के लिए इस मिथ्या एव माया जगत् को त्यागना ही जीवन का परम लक्ष्य है। बौद्धों एवं शंकर का दार्शनिक सिद्धान्त पलायनवादी सिद्धांत है। इनके स्थान पर दयानन्द का सिद्धान्त यह प्रतिपादन करता है कि ससार सत्य है अत इसका भोग करना है, संसार से पलायन नहीं करना है। यह ससार दु खमय है, इसका निराकरण करते हुए दयानन्द यह प्रतिपादन करते हैं कि ससार केवल दु खमय नहीं है, सुख और दु ख दोनों सापेक्षिक हैं। बिना दु ख के सुख का आनन्द नही मिल सकता है।

'ससार पूर्ण उपभोग करने के लिए है।' ऋषि दयानन्द का सिद्धान्त है। परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि चार्वाकों की तरह केवल सांसारिक सुखों को ही वांछनीय बतलाया है। वे (स्वामी जी) भोग के साथ सयम की आवश्यकता पर दृढता के साथ जोर देते हैं। यजुर्वेद के इस सिद्धान्त को जीवन में उतारने को कहते हैं। 'तेन त्यक्तेन भु जी था'[1] अर्थात् त्याग के साथ भोग करो।

जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है, ऐसा प्रतिपादन कर मनुष्य को कर्म करने की प्रेरणा देते हैं। कर्म स्वातन्त्र्य पर दयानन्द बहुत बल देते हैं। उनकी यह धारणा है कि मनुष्य स्वतन्त्र रूप से कर्म करके ही उन्नति के शिखर पर चढ सकता है, या पतन की खाई में भी गिर सकता है। मनुष्य अपने कर्मों से ही 'देव', असुर पिशाच, राक्षस बन जाता है।[2] दयानन्द दर्शन नियतवादी नहीं है, पुरुषार्थवादी है।

जिस प्रकार जीव कर्म करने में स्वतंत्र है, उसी प्रकार परमात्मा उनके कर्मों को फल देने में भी स्वतन्त्र है। ईश्वरीय व्यवस्था में जीवों की स्वतन्त्रता की एक सीमा है वह असीमित नहीं है। फल भोगने मे वह परतन्त्र है। परमात्मा स्वभाव से ही न्याय करता है, वह अन्याय कभी नहीं करता। बिना पुरुषार्थ किये वह कुछ नही देता। दयानन्द ने स्पष्ट कहा है कि केवल प्रार्थना करने से कुछ नहीं मिल सकता। प्रार्थना के साथ पुरुषार्थ आवश्यक है। सत्यार्थ-प्रकाश मे लिखते हैं— अपने पुरुषार्थ के उपरान्त प्रार्थना करनी चाहिए। जो परमेश्वर के भरोसे आलसी होकर बैठे रहते हैं, वे महामूर्ख हैं। क्योंकि जो परमेश्वर की आज्ञा है, उसको तोडकर सुख कभी नहीं प्राप्त करेगा।''[3]

मुक्ति, उसका स्वरूप और उसके प्राप्ति के साधन—

ऋषि दयानंद ने इस विषय पर सत्यार्थप्रकाश और ऋ० भा० भूमिका में विस्तृत रूप से विचार प्रस्तुत किया है। उन्होंने यह प्रतिपादन किया है कि जीव स्वभावत पवित्र है, परन्तु ससार में आकर अज्ञान एव अविद्या में फसकर बन्धन में पड जाता है। 'बन्ध' एव 'मोक्ष' का स्वरूप बताते हुए कहते हैं —

'बन्ध-सनिमित्तक अर्थात् अविद्या निमित्त से है। जो जो पाप कर्म ईश्वर भिन्नोपासना अज्ञानादि सब दु ख फल करने वाले हैं, इसीलिए यह बन्धन है, कि जिसकी इच्छा नहीं और भोगना पडता है।[4]

मुक्ति—''अर्थात् सब दु खो से छूटकर बधन रहित सर्वव्यापक ईश्वर और उसकी सृष्टि मे स्वेच्छा से विचरना, नियत समय पर्यन्त मुक्ति का आनन्द भोगकर पुन ससार में आना।''

मुक्ति के साधन – ईश्वरोपासना अर्थात् योगाभ्यास धर्मानुष्ठान, ब्रह्मचर्य से विद्या प्राप्ति, आप्त विद्वानो का सग, सत्य विद्या, सुविचार और पुरुषार्थ है।

'आर्योद्देश्यरत्नमाला' में भी यही व्याख्यात है।[5]

ऋषि दयानद के समय मुक्ति और उसकी प्राप्ति के सम्बन्ध में बडा ही भ्रम फैला था। मुक्ति का अर्थ कुछ लोगों के मतानुसार जीव का ब्रह्म हो जाना तथा परमात्मा से मिल जाना अर्थात् उसका 'लय' हो जाना था। उसकी प्राप्ति का साधन केवल रामकृष्ण का नाम जपना तथा गगा आदि नदियों में स्नानादि माना जाता रहा। अकर्मण्यता और मुक्ति (भक्ति) दोनों का सम्बन्ध था। इन विचारधाराओं के प्रवर्तक कोई सामान्य जन नहीं थे। बल्कि अपने युग के महान् दार्शनिक विद्वान् आचार्य शकर, रामानुज, माध्व, निम्बार्क एव वल्लभ थे। ऋषि दयानन्द ने इस प्रवाह को उलट दिया। कर्मण्यता को मोक्ष से जोड–कर उसे यथार्थवादी बनाया। यह भी सत्य है कि आज भी मुक्ति की गलत परिभाषा से लोग चिपटे है, किन्तु स्वामी जी की विचारधारा का भी प्रभाव कम नही पडा है। दयानन्द ने साख्य दर्शन के अनुसार दुखों से छूटने का उपाय बतलाना ही पुरुषार्थ बताया और इसी का फल मुक्ति है, ऐसा प्रतिपादन किया।[6] दु ख तीन प्रकार के हैं।

(क) आध्यात्मिक — अर्थात् शरीर सम्बन्धी पीडा जैसे ज्वरादि।

(ख) आधिभौतिक—दूसरे प्राणियों से दु खित होना। जैसे सर्पादि तथा चोर डाकुओ से प्रताडित होना।

(ग) आधिदैविक— प्राकृतिक घटनाओं से जैसे भूकम्प, बाढ, सूखा ओलों की वृष्टि, साइक्लोनादि।[7]

स्वामी जी ने दु खों का क्लासिफिकेशन (वर्गीकरण) किया है। क्रम स० (क) और (ख) के द्वारा जो दु ख मिलते है, उनकी रोकथाम करना, मानव के वश मे है। क्रम स० (ग) की रोकथाम हमारे हाथ में नही है। जो कि आज का विज्ञान भी इन्हें रोकथाम करने का प्रयास तो करता है, फिर भी ये हमारे वश में नही रहते।

मोक्ष से पुनरावर्तन—

स्वामी दयानन्द मुक्ति को अनन्त नहीं मानते। उनका यह सिद्धान्त है कि मुक्ति में सुख भोगने के पश्चात् जीव पुन ससार में लौटता है, यह प्रतिपादन बिल्कुल नवीन सा लगता है। ऋषि दयानन्द का मुक्ति विषयक यह सिद्धान्त एक क्रांतिकारी विचार है। भारतीय चिन्तको की यह सर्वमान्य मान्यता रही है कि मोक्ष के बाद जीव पुन शरीर धारण नही करता है। अपनी इस धारणा को वे छान्दोग्योपनिषद्[8] ब्रह्म सूत्र,[9] एव गीता[10] के प्रमाणो से पुष्ट करते हैं।

दयानन्द अपने सिद्धान्त के प्रतिपादन में ऋग्वेद[11] के मत्रो को, सांख्य[12] को सूत्रों के प्रस्तुत करते हैं। युक्ति और तर्क से भी अपने मत की पुष्टि करते हैं। वे निम्न तर्क प्रस्तुत करते हैं—

१ जीव के साधन परिमित हैं, अत उनका फल अनन्त कैसे हो सकता है।

२ यदि मुक्त जीव मोक्ष से पुन न लौटे तो एक दिन ऐसा आयेगा कि ससार से जीव का उच्छेद हो जावेगा।

३ दु:ख के बिना सुख का अनुभव नही हो सकता। मुक्ति का आकर्षण यही है कि जीव दु ख के बाद सुख और सुख के बाद दु ख को अनुभूति प्राप्त करे।

४ परमात्मा न्यायकारी है, अत होने वाले कर्मों का फल अनन्त नहीं हो सकता। स्वामी जी ने पुनरावृत्ति के सिद्धान्त का प्रतिपादन कर इस विचार को यथार्थ जीवन से जोडा है।

दर्शनों का समन्वय—

भारतीय एव पाश्चात्य दार्शनिकों का यह मत रहा है कि भारतीय षड्दर्शनों में परस्पर विरोध है। स्वा० दयानन्द प्रथम दार्शनिक हैं, जिन्होने युक्ति, तर्क एव शास्त्रों के प्रमाण से सिद्ध किया है कि षड्-दर्शनों में विरोध नही है। दार्शनिको की यह अपनी कल्पना है, मनघडन्त सिद्धान्त है।

स्वामी जी ने षड्दर्शनो मे अविरोध कैसे माना है सो उन्ही के शब्दो मे दे रहा हू।

जैसे एक विद्या मे अनेक विद्याओ के अवयवो का एक दूसरे से भिन्न प्रतिपादन होता है, वैसे ही सृष्टि विद्या के भिन्न भिन्न छ अवयवो का छ शास्त्रो मे प्रतिपादन करने मे इनमे कुछ भी विरोध नही है।[13] इस विषय पर स०प्र० के तृतीय एव अष्टम सम० मे विस्तृत रूप से विवेचन किया गया है। ऋषि दयानन्द का यह प्रतिपादन बहुत ही चमत्कारिक है।

इस सम्बन्ध मे वर्तमान समय के प्रसिद्ध दार्शनिक स्व० डा० राधाकृष्णन के मत का भी अवलोकन पाठक कर। मैं इसे उद्धृत करने का लोभ सवरण नही कर सकता। वे लिखते हैं—

The six systems agree on a certain essentials The acceptance of the Veda implies that all the systems have drawn from a common reservoir of thought All the systems protest against the scepticism of the Buddhists and erect a standard of objective reality and truth as opposed to an eternal unstable flux All the systems accepts the view of the great world rhythm vast periods of creation maintenance and dissolution follows each other in endless succession [14]

ईश्वर, जीव एव प्रकृति—

ईश्वर—सभी आस्तिक दार्शनिको ने ईश्वर की सत्ता मे विश्वास प्रकट किया है। अगर मतभेद है तो उसके गुण-कर्म एव स्वभाव के प्रतिपादन मे। ईश्वर के स्वरूप का प्रतिपादन जीवन से सीधा सम्बन्ध रखता है। कसे सुनिये—

नास्तिकता—जो लोग ईश्वर को सर्वव्यापक मानते हुए भी किसी एक विशेष स्थान मे निवास मानते हैं। जैसे वैकुण्ठ लोक, क्षीरसागर, कैलाश पर्वत, सातवाँ आसमान आदि तथा ईश्वर अपने भक्तो का अपराध क्षमा करता है धर्म की स्थापना के लिए मनुष्य रूप मे जन्म लेता है इत्यादि, ये सिद्धान्त मनुष्य को पाप करने से नहा रोक सकते। क्योकि वह यह समझता है कि परमात्मा तो एक विशेष स्थान पर निवास करता है, मेरे अपराधो को नही देख रहा है। अगर मैं करता हू भी तो भी उसकी स्तुति, प्रार्थना करने पर वह मुझे क्षमा कर देगा। यह भावना अपराधो को बढावा देती है। जब जब अधर्म बढता है, ईश्वर अवतार ग्रहण करेगा और धर्म की स्थापना करेगा। धर्म की स्थापना और अधर्म का उच्छेदन मानव वश की बात नही है। यह भावना अकर्मण्यता फैलाती है। इसे ही नास्तिकवाद कहते हैं।

आस्तिकता—आस्तिकवाद का जीवन की यथार्थता से गहरा सबध है। एक भौतिकवादी (अनीश्वरवादी) की जीवन पद्धति और एक अध्यात्मवादी (ईश्वरवादी) की जीवन-पद्धति मे बहुत बडा अन्तर है। भौतिकवादी का लक्ष्य आनन्द प्राप्त करना है। चाहे वह किसी भी ढग से मिले यही उनके जीवन का मोटो है।

"ऋण कृत्वा घृत पिबेत्—अगनालिगनाजन्य सुखमेव पुमर्थता'। जो यह मानते हैं कि मैं केवल शरीर हू। मेरा यह प्रथम और अन्तिम शरीर है। वह शरीर के अतिरिक्त कुछ और सोच ही नही सकता। समाजशास्त्रियो ने इस भावना को नष्ट करने के लिए विविध उपाय सुझाये हैं। परन्तु चतुर चालाक मनुष्य इन उपायो से बचने का भी रास्ता निकाल ही लेता है।

अब आइये अध्यात्मवादियो के जीवन पद्धति का निरीक्षण कर। ईश्वरवादी का सिद्धान्त है—

"मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्ष —मैं सब प्राणियो को मित्र की दृष्टि से देखू। "सर्वे-वेदा यत्पदमामनन्ति तपासि सर्वाणि च यद्वदन्ति यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्ति तत्त पद सग्रहेण ब्रवीमि'—अर्थात् जिस पद का सभी वेद वर्णन करते हैं, जिसके लिए सब तप आदि व्रत किये जाते हैं, जिसकी इच्छा से ही ब्रह्मचारी, ब्रह्मचर्य का पालन करता है, वही ईश्वर है। सभी भूत-प्राणियो को मित्र की दृष्टि से देखने वाला आस्तिक किसी से घृणा द्वष नही करेगा—ईश्वर प्राप्ति के लिए वह ब्रह्मचय का पालन करेगा। जिसका आदश ईश्वर प्राप्ति नहीं है, वह ब्रह्मचर्य का धारण क्यो करेगा। उसके लिए तो ललनाओ का आलिगन ही परम पुरुषार्थ है।

क्रमश

पाद टिप्पणिया—

१ यजुर्वेद ४०।१
२ स्वमतव्यामतव्य प्रकाश (लि० स्वामी दयानन्द)
३ सत्यार्थप्रकाश सप्तम समु०
४ स्वमतव्यामतव्य प्रकाश मन्तव्य स० ११, १२, १३
५ आर्योद्देश्यरत्नमाला व्याख्यात रत्न स० २५।३०
६ साख्यदर्शन—"अथ त्रिविध दु खात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थ ।" अ० १ सू० १ (भाष्यकार स्वा० ब्रह्ममुनि परिव्राजक, प्रकाशक—आर्य सा० म० लि० अजमेर)
७. स०प्र० समु० ६ पृष्ठ ३८० (प्र० रामलाल कपूर ट्रस्ट)
८ छान्दोग्यो०—न च पुनरावर्तन्ते ८।१५।१
९ वेदान्तदर्शन, शारीरिक सूत्र 'अनावृत्ति' शब्दादनावृत्ति शब्दात्' (४।४।२२)
१०. गीता 'यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परम मम ।" १५।६
११ ऋ० म० १ सू० २४ म० १-२
१२ साख्य दर्शन "इदानीमिव सर्वत्र नात्यन्तोच्छेद ।" १।१६१
१३ 'ऋ० दयानन्दप्रतिपादित वैदिकदर्शनम्" सम्पादिका एव अनुवादिका—प० प्रज्ञा देवी आचार्या, पा० कन्या महाविद्यालय, वाराणसी पृ० स० २३।२४। इस ग्रन्थ के मूल लेखक काशी पडित सभाध्यक्ष राष्ट्रपति सम्मानित म० म० डा० गोपाल शास्त्री दशन केशरी (अब स्व०) जी हैं।
१४ A critical study of Philosophy of Dayanand By Dr S. Prakash D Sc Page 93-94.

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशकों के कार्यक्रम

महात्मा रामकिशोर वैद्य के कार्यक्रम

१४ से १९ अक्तूबर ८५	रामायण की कथा	आनन्द निकेतन दिल्ली
२० से २७ अक्तूबर ८५	यज्ञ-प्रवचन प्रात	चौ० खानचन्द जी निवास बी ४/३ कृष्ण नगर दिल्ली
२८ से ३१ अक्तूबर ८५		आर्यसमाज प्रताप नगर दिल्ली
१ से ८ नवम्बर ८५		आर्यसमाज अमर कालोनी दिल्ली
११ से १७ नवम्बर ८५		आर्यसमाज शालीमार बाग दिल्ली
२१ से २७ नवम्बर ८५	यज्ञ-प्रवचन	श्री राधश्याम गुप्ता के निवास स्थान एक्स २९८१ रघुबरपुरा न० २ दिल्ली

आचार्य हरिदेव सिद्धान्त भूषण तर्क केसरी के कार्यक्रम

२५, २६, २७ अक्तूबर ८५		सोनीपत (हरियाणा)
२८ व २९ अक्तूबर ८५	प्रवचन, रात्रि	पश्चिम विहार दिल्ली
१, २ ३ नवम्बर ८५		आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल
४ से १० नवम्बर ८५		आर्यसमाज बसई दारापुर दिल्ली

ढोलकवादक श्री ज्योति प्रसाद आर्य के कार्यक्रम

१४ व १५ अक्तूबर ८५		वेद सस्थान राजौरी गार्डन
१६, १७ १८ अक्तूबर ८५	ग्राम प्रचार	प्रशान्त विहार, दिल्ली
२८ से ३ नवम्बर ८५		आर्यसमाज प्रताप नगर दिल्ली
४ से १० नवम्बर ८५		आर्यसमाज बसई दारा पुर दिल्ली

पं० सत्यदेव स्नातक रेडियो दूरदर्शन कलाकार के कार्यक्रम

१४ व १५ अक्तूबर ८५		वेद सस्थान राजौरी गार्डन
१६, ७, १८ अक्तूबर ८५	ग्राम प्रचार	प्रशान्त विहार दिल्ली
१८ से २३ अक्तूबर ८५		वेद भारती प्रचार समिति राजौरी गार्डन
२५, २६, २७ अक्तूबर ८५		वैदिक प्रचार समिति सोनीपत
२८ से ३ नवम्बर ८५		आर्यसमाज प्रतापनगर दिल्ली
४ से १० नवम्बर ८५		आर्यसमाज बसई दारा पुर दिल्ली
२४, २५, २६ नवम्बर ८५		आर्यसमाज गाजियाबाद (उ० प्र०)

पं० वेदव्यास भजनोपदेशक के कार्यक्रम

१४ से १९ अक्तूबर ८५	आर्यसमाज साकेत दिल्ली
२४, २५, २६ अक्तूबर ८५	वैदिक प्रचार समिति सोनीपत
२८ से ३१ अक्तूबर ८५	आर्यसमाज लाजपत नगर
१ से १० नवम्बर ८५	आर्यसमाज अमर कालोनी दिल्ली
११ से १७ नवम्बर ८५	आर्यसमाज शालीमार बाग दिल्ली

पं० चुन्नीलाल भजनोपदेशक के कार्यक्रम

१४ से २३ अक्तूबर ८५	अवकाश रहेगा
२४ से २७ अक्तूबर ८५	आर्यसमाज कोसी कला (मथुरा)
२८ व २९ अक्तूबर ८५	आर्यसमाज विनय नगर दिल्ली
१, २, ३ नवम्बर ८५	आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल (हरियाणा)

(विज्ञापन परिशिष्ट)

स्व० श्री केशवचन्द्र बुग्गा के प्रति एक श्रद्धांजलि

जन्म—१८ सितम्बर १९११ मृत्यु १९ सितम्बर १९८४

(स्व० श्री केशवचन्द्र बुग्गा)

आप का जन्म पंजाब प्रांत के जालधर जिला में हुआ। इनके पू० पिता प० दौलतराम जी यू० पी० शिक्षा विभाग मे शिक्षक थे अत उनका निवास स्थान मेरठ अथवा रुडकी ही रहा। इनकी लगभग सारी शिक्षा मेरठ मे हुई। इतिहास मे एम ए करने के पश्चात इन्होंने L L B कोपरीक्षा पास की। वकालत का अभ्यास करने के लिए रुडकी गए। परतु इस व्यवसाय की मलिनता को इनका न्यायप्रिय हृदय सहन न कर सका। दस महीने के पश्चात ही इनका मन उचाट हो गया।

इन्होंने अपने पिता से अनुरोध किया कि वे उन्हे अपने व्यवसाय मे ही लगाए। इनके पिता जी ने इन्हें शिक्षा प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए टिमरनी (C P) मे भेज दिया। दैवयोग से इनके वहा पहुचते ही वहा का विद्यालय बद हो गया परतु किसी प्रकार से यह खण्डवा के एक स्थानीय स्कूल मे शिक्षक पद को पा गए और वही रहने लगे। यह एक आदर्श शिक्षक थे शिक्षण कार्य से अत्यंत प्रेम था। इतिहास राजनीति के अतिरिक्त अग्रेजी और गणित (उच्च गणित) पर पूर्ण अधिकार था। छात्र इनसे अत्यंत प्रेम करते थे और सहशिक्षक इनके ज्ञान से लाभ उठाते थे। समय पालन तथा कर्तव्यपरायणता इनके विशेष गुण थे।

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री हरिशंकर परसाई इनके शिष्य रहे उन्होंने हिन्दी की पत्रिका मे अपने अनुभव लिखते हुए इनकी बडी प्रशसा की है। वे लिखते हैं—

हमे एक शिक्षक पढाते थे केशवचद्र बुग्गा। उनके कक्षा मे आते ही हम प्रसन्नता से नाच उठते थे और सोचा करते थे कि हम भी ऐसे ही शिक्षक बनेगे। उनके पढाने का तरीका हमे अत्यन्त रुचिकर लगता था।

इसके अतिरिक्त फिल्मी अभिनेता अशोक कुमार और किशोर कुमार भी इनके शिष्य रहे हैं।

विवाह के पश्चात यह देहली मे आ गए। यहा कुछ दिन एक Bank मे काय किया परतु मन नही रमा अत इन्होंने दिल्ली के सरकारी शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय मे शिक्षा प्रशिक्षण प्राप्त किया और देहली के सुप्रसिद्ध स्कूल मे श्री महावीर जन हायर सकेण्डरी स्कूल मे शिक्षक बन गए वहा पर भी इन्होंने अपनी कर्तव्यपरायणता तथा निश्छल स्वभाव से पर्याप्त यश प्राप्त किया छात्रो के प्रति इनका व्यवहार कठोर परन्तु प्रेममय होता था यही कारण है कि सेवा-निवृत्ति के पश्चात भी वे इनके दर्शनो को आते रहते थे। न केवल छात्र वरन शिक्षक भी इनके ज्ञान से लाभ उठाते थे तथा अपनी समस्याओ का हल कराते। इनका अग्रेजी का ज्ञान श्रेष्ठ होने के कारण तथा गणित पर अधिकार होने के कारण इन विषयो के लेखक भी इनकी सहायता लेते थे।

इनके चरित्र मे सत्यता और सिद्धात दोनो कूट कूट कर भरा हुआ था।

प्राय कहा करते। थे मैं मेरठ आर्यसमाज मे नियम-पूर्वक जाया करता था। वही पर मुझे आर्यसमाज के प्रति विश्वास उत्पन्न हुआ। आर्यसमाज के सिद्धातो के प्रति इनकी आस्था थी अत कोई अध-विश्वास या रूढिप्रियता इनके स मने नही ठहर सकती थी जाति पाति तथा जन्म-पूजा के घोर विरोधी थे चाहे कोई भी अवसर हो व किसी परम्परागत अधविश्वास को तोड देते थे हा ईश्वर भक्ति के भक्तो से काफी प्रेम था।

यह सच्चे साहित्य प्रेमी थे। अग्रेजी तथा उर्दू साहित्य के ऊपर तो इतना अधिकार था कि आप उनके पास घटो बठे रहिए वे आपको अग्रेजी को तथा उर्दू की कविताएँ रहते। इनको ईश्वर ने विलक्षण सुनाते प्रतिभा तथा स्मरण शक्ति दी थी। देश विदेश के राजनैतिक इतिहास के अतिरिक्त यह आर्यसमाज के इतिहास तथा इसकी गतिविधियो की पूरी जानकारी रखते थे।

इनके चरित्र मे कुछ ऐसे गुण थे। जो सब को प्रभावित करते रहते थे इन का सब से बडा गुण था अनुशासन प्रियता य उ प्रेम जो केवल बाहर हा नही घर मे भी चलता रहता था

यही कारण है कि सेवा निवृत्ति के पश्चात भ इनके स शिक्षक और छात्र इनके पास आते रहते थे और श्रद्धा से शीश झुकते थे।

प्रकाशवती शास्त्री
जनमन्दिर नई दिल्ली

जातपात—मानवता का शत्रु

डा० आनन्द सुमन

मानव जाति का प्रत्येक सदस्य अपने कर्मो के आधार पर ही वास्तव बनना चाहिए। जन्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था को स्वीकार करके समाज ने अपने आप को अनेक प्रकार के सकटो मे घर लिया है। आज मानव समाज भिन्न भिन्न समुदायो मे बट कर मानव मात्र का ही अहित कर रहा है। अपने हाथो अपने ही पर मे कुल्हाडी मारने वाली बात को सार्थक करना ही उसका ध्येय बन गया लगता है।

फलस्वरूप जातिवाद ने सम्पूर्ण मानव समाज व विश्व के प्रति एक विकट समस्या उत्पन्न कर दी है। अब तो विभिन्न पथो के अनुयायी भी अपने को जाति के रूप मे मानने लगे हैं। जहाँ किसी प्रपत्र (फार्म) आदि मे जाति का कोष्ठक आता है, वहा तुरन्त हिन्दू, मुस्लिम ईसाई जैन बौद्ध सिख आदि अन्यान्य शब्दो का प्रयोग करते हैं। वास्तव मे यह कोष्ठक होना ही नही चाहिए। वेदों में वर्ण-व्यवस्था का स्वरूप कर्म के आधार पर है जन्म के आधार पर नही। इस से भी आगे बढकर वेद व्याख्यानुसार— ब्राह्मणोऽस्य मुख-मासीद बाहू राजन्य कृत । ऊरू तदस्य यद्वैश्य पदभ्यां शूद्रोऽजा-यत ॥ अर्थात मख ब्राह्मण है जो ज्ञान पूर्ण है। भुजाए क्षत्रिय हैं जो रक्षा करती हैं। उदर वैश्य है जो जीवन सामग्री वितरण करता है। पैर शूद्र है जो जीवन को गति प्रदान करते हैं सेवा करते हैं। यदि इस मत्र के आधार पर हम देखे तो एक ही व्यक्ति चारो वर्णों मे आता है प्रत्येक व्यक्ति का चिन्तन मनन मस्तिष्क से, रक्षा-कार्य हाथो से, शरीर को रक्त-वितरण आदि उदर से, सेवा कार्य पैरों से होता है। किन्तु दो हजार वर्ष की गुलामी ने हमे चिन्तन शून्य बना दिया। हम आर्ष सस्कृति व सत्य धर्म का मार्ग त्याग कर व्यक्तिवादी और सम्प्रदायवादी विचार धारा के रग मे रग गये। तथाकथित शासको ने हम पर मन चाहे अत्याचार किये तथा हमे व हमारी विश्ववारा सस्कृति को उजाडने के लिए हमारी शिक्षा पद्धति का स्वरूप विपरीत दिशा मे मोड दिया। इसका भी बडा प्रभाव हमारी जीवन पद्धति पर पडा। दूसरा हमारी स्वतन्त्रता के पश्चात जो नेता हमे प्राप्त हुए व भी आर्ष सस्कृति से परिचित न थे उन्होने जिस प्रदेश मे ब्राह्मण का पलडा भारी देखा वहा ब्राह्मणवाद जहा वैश्य का [illegible] देखा वहा वैश्यवाद जहा शूद्रो का देखा वहा शूद्रवाद को बढावा दिया।

प्रारम्भ मे हम ब्राह्मण क्षत्रिय आदि के आधार पर बटे, फिर धीरे-धीरे उपाधियो सम्मानार्थ दिये उपनामो को भी जाति माना जाने लगा जैसे दीक्षित चतुर्वेदी त्रिपाठी तिवारी रायसाहब रायजादा, ठाकुर पठान खान आदि आदि। इसी प्रकार गोत्र उपनाम भी जाति बनते गये यहा तक कि कबीरपन्थी नानक के चेले मोहम्मद के चेले अली के चेले (शिया) सभी अपने को जाति बना कर बठे हैं। मठ धोशो जैसे वातावरण बन गया मानवता व धर्म दोनो ही विकृत हो गये विषाक्त हो गये। जातपात तोडना बडा आवश्यक है। इस काय को प्रत्येक बुद्धिजीवी मिलकर करे। सर्वप्रथम हम मानव है तत्पश्चात् कर्म के आधार पर हमे जो भी वर्ण प्राप्त होना है वह हमारा वर्ण है। अत

(शेष पृष्ठ १० पर)

समाचार सन्देश

साप्ताहिक सत्संगों का विवरण

रविवार २० अक्तूबर १९८५

अन्धा मुगल प्रताप नगर—प० तुलसीराम आर्योपदेशक अशोक नगर—स्वामी यज्ञानन्द सरस्वती, अमर कालोनी—डा० रघुनन्दनसिह, आनन्द विहार एल ब्लाक—महात्मा देवेशभिक्षु, इन्द्रपुरी श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री किंगज्वे कम्प—प० धर्मवीर शास्त्री विद्यावाचस्पति, गुजरावाला टाउन पार्ट-२—भीष्मव्रत शास्त्री, ग्रेटर कलाश न-१—डा० मु दयाल भूटानी गुडमण्डी—स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती गोविन्दपुर—प० मुनिदेव भजनोपदेशक, चूनामण्डी पहाडगज—प० कामेश्वर शास्त्री, जनकपुरी बी-२—प० देवराज वदिक मिश्नरी, जगपुरा विस्तार—डा० कृष्णदत्त शर्मा, टैगोर गार्डन—प० अशोक कुमार शास्त्री, तिमारपुर—आर्यवीर रणजीतसिह राणा, तिलक नगर—प० ब्रह्मप्रकाश वागीश, देवनगर—डा० सुभाषचद शास्त्री, दरिया गज—ब्र० अखिलेश व्याकरणाचार्य, श्री निवासपुरी—प० राधश्याम शर्मा, नारायण विहार—ब्र० रामवीर शास्त्री, प्रीतमपुरा—प० सोमदेव शास्त्री, प्रशात विहार—ब्र० मनुदेव शास्त्री, पजाबी बाग—प रमेशचन्द्र वेदाचार्य, बसई दारा पुर—श्री अमीचन्द मतवाला, भोगल—डा० वेदप्रकाश महेश्वरी, मोडलबस्ती—प०, मुरारीलाल बेचन महावीर नगर—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, राणा प्रताप बाग—श्री अमरनाथ कान्त, रघुवरपुरा-प० जय भगवान मण्डली, राजौरी गार्डन—प० हरिशचन्द्र आर्योपदेशक, रमेश नगर—श्री नेत्रपाल आर्य लक्ष्मीबाई नगर ई-१२०८—प० वेदप्रकाश शास्त्री, सोहनगज—महात्मा मुनिशकर वानप्रस्थी, शादी खामपुर—प० बलवीर सिह शास्त्री शालीमार बाग—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, परिव्राजक--आर्य नगर—मा० मोहन लाल गाँधी, मोतीबाग—ब्रह्मचारी वेदप्रकाश आर्य।

व्यवस्थापक
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग
दिल्ली सभा

१९८५ ई० के वर्ष में दयानन्द अनुसंधान पीठ पंजाब विश्वविधालय से पी०एच०डी० उपाधि प्राप्त विद्वान्

डा० वेदपाल वर्णी

आपने शतपथ ब्राह्मण तथा महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर १९८५ मे पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की है। विद्वान् शोधकर्ता ने सस्कृत में प्रस्तुत किये गये अपने शोध प्रबन्ध मे शतपथ को वेदार्थ प्रक्रिया का विस्तार पूर्वक ऊहापोह कर महर्षि भाष्य से उसका समायोजन किया है। इसी प्रसग मे वैदिक यज्ञो का स्वरूप, यजुर्वेद का प्रतिपाद्य आदि नाना विषयो की गम्भीर विवेचना शोधकर्ता ने की है। डा० वर्णी ने अपने भावी शोधकार्य के रूप मे शतपथ ब्राह्मण को विस्तृत ऐतिहासिक समीक्षा को ही चुना है।

डा० राजपाल सिह

भारतीय षड्दर्शन का आर्यसमाज की देन पर डा० राजपाल सिह को इसी वर्ष उपाधि प्रदान की गई है। डा० सिंह ने आर्यसमाज के दार्शनिक विद्वानो के कृतित्व का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

डा० धर्मदेव शर्मा

आपका शोध का विषय स्वामी दयानन्द रचित सस्कारविधि का गृह्यसूत्रो से तुलनात्मक अध्ययन था। इस विषय के सदर्भ मे शोधकर्ता ने विभिन्न गृह्यसूत्रो का अध्ययन कर सस्कारविधि प्रोक्त सस्कारों के विधि विधान से उनकी तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत की है।

पजाब विश्वविद्यालय मे डा० ओमपाल शास्त्री को प्रेमचन्द के परवर्ती हिन्दी उपन्यासकारो पर आर्यसमाज को विचारधारा का प्रभाव शीर्षक शोध काय पर १९८५ ई० मे पी० एच० डी० उपाधि प्रदान की है।

दयानन्द अनुसधान पीठ के अध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय के निर्देशन मे सम्पन्न उक्त शोध कार्यों के अतिरिक्त सम्प्रति स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य मे देवता तत्त्व, स्वामी दयानन्द की सस्कृत व्याकरण शास्त्र को देन, पुनर्जागरण आन्दोलनो को दार्शनिक पृष्ठभूमि आदि विषयो पर भी शोध कार्य किये जा रहे हैं।

वेदपाल
कार्यालय सचिव
दयानन्द अनुसधान पीठ, चडीगढ

आर्यसमाज पंखा रोड "सी ब्लाक" जनक पुरी, नई दिल्ली-५८ में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज मन्दिर के प्रागण मे उपस्थित जनसमूह के सम्मुख आर्य विद्वानो ने अपने ओजस्वी विचार प्रकट करते हुए कहा—

आज देश की स्थिति गम्भीर है—अलगाववाद के नारे है। मनुष्य-मनुष्य का प्राणघातक बन रहा है ऐसे समय मे हमे भी सतर्क रहकर अपने कर्तव्य कर्म का पालन करते हुए राष्ट्रहित मे आगे बढना होगा। आज पजाब, जहा पर कभी गुरु गोविन्द सिह जी तथा स्वामी दयानन्द श्रद्धानन्द, महात्मा हसराज वीर लेख राम ने प्रेम और सौहार्द का वातावरण बनाया था और जगह जगह आर्य स्कूलो, डी० ए०वी० स्कूलो-कालेजो की नीव रखी थी- उसका स्वरूप विकृत हो रहा है। ऐसे समय मे हमे एक जुट होकर महानऋषियो की प्रेरणा को लेकर आगे बढना है। विघटनकारी तत्त्वो को समाप्त करने के लिए योगिराज श्री कृष्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर जो हमारे आदर्श महान् पुरुष थे। उन्होने डी० ए० वी० शिक्षण सस्थाओ को प्रगति का मूल्याकन भी उपस्थित जनसमूह को कराया।

इस समारोह के अन्य प्रमुख वक्ता थे—स्वामी मुनीश्वरानद जी, श्री दरबारी लाल जी,, डा० राधाकृष्ण ठाकुर, प्रधान, धार्मिक एव सामाजिक महासघ जनकपुरी, श्री शिवकुमार शास्त्री (विकास पुरी), और विराट सुपुत्र श्री शिवकुमार जी यह कार्य बडे उत्साह एव हर्ष भरे वातावरण मे ७ सितम्बर को सम्पन्न हुआ।

(वैद्य महेन्द्रपाल सिंह आर्य)
मन्त्री

कन्याओं को वेदाचार्य बनाने के लिए कन्या वेदगुरुकुलम् बरेली में कन्याओं को प्रविष्ट कराइए

कन्याओ को आरम्भ से वेद पढाया जायेगा बनारस सस्कृत यूनिवर्सिटी की प्रथमा, मध्यमा शास्त्री, वेदाचार्य परीक्षाए दिलाई जायगी। इन परीक्षाओ के द्वारा कन्याए हाई-स्कूल इन्टर बी ए एम ए परीक्षाएँ भी कर सकती हैं।

आजकल के कन्यागुरुकुलो मे लडकियो को साहित्याचार्य व्याकरणाचार्य कराया जाता है। एक भी कन्या गुरुकुल ऐसा नही जहा कन्याओ को वेदाचार्य कराया जाता हो। आश्रम तथा भोजन व्यवस्था गुरुकुल मे रहेगी। स्वतन्त्र स्थानीय कन्याएँ भी पढने आ सकती हैं। कन्या की आयु कम से कम दस बारह वर्ष और पाचवी श्रेणी उत्तीर्ण हो। प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, वेदाचार्य कक्षाओ मे भी प्रवेश हो सकता है यदि किसी ने पूर्व परीक्षाएं पास की हुई हो।

निवेदक
वेदाचार्य, आचार्य विश्वश्रवा व्यास एम ए. (सचालक)

वेदाचार्या
सावित्री देवी शर्मा एम ए

वेदाचार्या
श्रीमती देवी शास्त्री एम ए.
(मुख्याधिष्ठात्री)
(आचार्या)
वेदमन्दिर १०३ बाजार मोतीलाल
बरेली (उ० प्र०)

तीन सौ व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत ग्रहण किये।

आर्यसमाज डालटेन गज (पलामु) बिहार मे स्वामी श्रेयानन्द वैदिक यति की अध्यक्षता मे वेद प्रचार का कार्य सम्पन्न हुआ। यजुर्वेदीय यज्ञ मे हजारो लोगो ने आहुति प्रदान की। इस अवसर पर तीन सौ लोगो ने यज्ञोपवीत ग्रहण किये।

निवेदक
वैद्य महेन्द्र

बड़े बूढ़ों का सम्मान करो !

जिस राष्ट्र देश और जाति के व्यक्ति अपने पूर्वजो, बडो का आदर मान करते हैं उनके महान और श्रेष्ठ कार्यों से प्रेरणा लेते हैं तथा पुरुषार्थ करते हैं वे सदा श्री, सम्पन्नता और वैभव के स्वामी होते है तथा सभी के बीच यश और कीर्ति के भी भागी होते हैं। 'अभिवादन शीलस्य नित्य वृद्धोपसेविनः। चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्।' जो व्यक्ति वृद्ध लोगो की सेवा करते हैं और अभिवादन शील हैं उनकी आयु विद्या यश और बल बढते हैं।

आज की समस्या भीषण है। परिवारो के विघटन के कारण वृद्ध लोगो को वह सम्मान नही मिलता जो उन्हें परम्परा से मिलता आया है वे केवल सुबह दूध लाने या शाम को पार्क मे टहलने तक ही रह गये हैं। वृद्ध लोगो को धन अथवा सहानुभूति की अपेक्षा सम्मान की आवश्यकता है। लोगो मे इस भावना को जागृत करने के लिए दिल्ली मे एक स्वय सेवी सस्था कार्यरत है—ऐज केयर इण्डिया ए ६७ साउथ एक्सटेंशन पार्ट II नई दिल्ली-४८

इसी सस्था के सहयोग से जाकिर हुसैन कालेज साध्य के एन एस एस के स्वय सेवको ने बी के दत्त कालोनी और अलीगज कालोनी मे वृद्ध लोगो की स्थिति का सर्वेक्षण किया इस अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष मे इन छात्रो का दावा है कि जिन वृद्ध लोगो को इन्होने सूची बनाई है उनको वाछित सहायता ये छात्र ऐज केयर के माध्यम से और अन्य सस्थाओ के माध्यम से उपलब्ध करायगे। बहुत एक महीना बाद तथा ऐसे ही अन्य अन्तराल पर इस कालोनी मे आकर देखते रहेगे कि उन्हे सहायता दी है गई या नही। इन छात्रो को वृद्धो का सेवा करते समय आशीर्वाद मिले हैं और लोगो ने इनके लम्बे जीवन के लिए दुआ की है।

इस सम्बन्ध मे शनिवार १२ अक्तूबर को आयोजित सर्वेक्षण मूल्याकन समारोह मे श्री अशोक जन महानगर पार्षद ने कहा कि छात्रो मे ऐसी भावना उत्पन्न करने की जरूरत है कि वे अपने बडो का सम्मान करें। मुख्य अभिभाषण मे श्री महर्षि ने कहा कि हम ऐसी पीढी तैयार कर जो बूढो का सम्मान करे। फिर हमे ऐज केयर जैसी सस्था की जरूरत न रहेगी। इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय की डा० ऊषा बनर्जी और ऐजकेयर के श्री एन डी जैन ने वृद्धो की सेवा की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। ऐजकेयर के अध्यक्ष श्री एन डी जैन ने कहा कि युवा लोगो मे ऐसी भावना उत्पन्न करने की आवश्यकता है कि अपने बडो का सम्मान कर। समारोह के आयोजक डा० धमपाल आर्य ने कहा कि हमने इन युवा छात्रो को इस कार्य से इसलिए जोडा कि वे अपने घर मे बडो बूढो का सम्मान करना सीख।

कर्मकाड

(पृष्ठ ४ का शेष भाग)

कुकर्म बुरी नीयत बूरे दृश्य देखना, दुष्कर्म करना स्वार्थता आत्मश्लाघा भीरुता सुस्ती नुक्ताचीनी व्यर्थ क्रोध धर्मान्धता घमण्ड अयोग्य इच्छा लोभ तृष्णा बेहूदा बोलना अनसुनना, बुरा स्वभाव बुरे सग मे प्रीति सन्मार्ग मे रुकावट—कहा तक कहें—विद्याभ्यास मे घृणा अज्ञानता और दुष्कर्मो मे प्रवृत्ति उस का आदेश हो जाता है शैतान कोई विशेष प्रकार का देहधारी नही। जिसमे यह बुरा यां हो वह मनुष्य, शैतान है।

इन दोनो मे से बहुत से एक जैसे और एक ही अर्थ रखने वाले जान पडते हैं पर ऐसा नही है उनमे थोडा-थोडा भेद है। जैसे तृष्णा व लोभ दोनो समान दीखते हैं पर उनके अर्थ मे थोडा भेद अवश्य है ऐसा ही सब जगह जान लें। ये सब बुरी आदत किसी मनुष्य मे एक ही समय प्रकट नही होती। समय आने पर अपने बल को बढाती हैं। एक के प्रकाश मे दूसरी दब जाती है उनके बढावघटाव को जानने वाला मनुष्य मद गुणो का प्रचार कर बुरी आदतो से अपना पीछा छुडा लेता है। इस नियम से ही मनुष्य मुक्त पाता है और प्रभु के समीप होता है। इस सत्य-मार्ग पर न चलकर मनुष्य दुःख उठाता है और बदनाम हो जाता है। □

आर्यसमाज शादीपुर खामपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज के भवन मे १६ सितम्बर से २२ सितम्बर तक वार्षिक उत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री कृष्णदत्त ब्रह्मचारी श्री प्रकाश चन्द शास्त्री, श्री सुभाषचन्द श्री अशोक विद्यालकार श्री स्वामी योगानन्द तथा स्वामी प्रमानन्द जी आदि महानुभावो के द्वारा वेद प्रवचन हुए।

मन्त्री, कलाराम

अभी बाकी है !

महावीर 'नीर' विद्यालकार गुरुकुल कांगडी

तुमने सब कुछ दिया हमे पर मन का दान अभी बाकी है।
बगिया को बहार तो दे दी सौरभ दान अभी बाकी है।।
हर अधियारे पथ पर तुम तो
जब उजियाला कर जाते हो।
मैं सोचा करता तब मन में कुछ तम जाल अभी बाकी है··
तुमने कुटिया के बदले मे,
राजभवन के स्वप्न दिखाये।
यहा अरमान अभी तो क्वारे, कितना दर्द अभी बाकी है
तुम ने शासन के कारण ही,
ये कानून बना डाले हैं।
किन्तु हर कानून वृथा जब, मन-सस्कार अभी बाकी है
तुमने हिन्दी के बदले मे
अग्रजी का मान बढाया।
किन्तु जन-जन की भाषा का, शुभ सम्मान अभी बाकी है·
तुमने तूफानो को बाधा,
नदियो को कगन पहनाये।
किन्तु परीक्षा-काल है यह तो कितना काम अभी बाकी है·
कितना टीस अभी क्वारी है,
कितने दद विधुर फिरते।
हर आसू अमृत हो जाये वह वरदान अभी बाकी है
तुमने बहुत निर्माण कर लिये
और योजना बहुत बना ली।
किन्तु चमन की खुशहाली का वह मधु गान अभी बाकी है
तुमने सीमा की रक्षा मे,
कितने पहरेदार बिठाय।
किन्तु हमारा यश हो जिससे वह अभियान अभी बाकी है

रजि० न० डी० (सी०) ७५६ साप्ताहिक 'सार्वदेशिक' २० अक्तूबर १६८५ बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० यू १३६
R No Post in N.D P S O on 18-10-85 Licensed to post without prepayment, Licence No U 139

जातपात

(पृष्ठ ६ का शेष)

नाम के साथ वर्ण लिखना आवश्यक नहीं हम अपने नाम के साथ यदि कुछ न भी लगाय तो अति उत्तम।

राष्ट्रीयता की विचार धारा व राष्ट्रभा ा के अनुसार हमारा नामकरण हो तो परेशानी क्या है? अरब मे रहने वाला व्यक्ति यदि अपना नाम अब्दुल्ला रखता है तो इसमे बुरा क्या है? भारत में रहने वाले को अपना नाम श्याम, कृष्ण या इसी प्रकार का कोई नाम यदि उत्तम लगता है तो बुरा क्या है? हमें सम्प्रदाय के आधार पर नामकरण नही करना चाहिए। हमे तो नामकरण अपनी राष्ट्रभाषा को दृष्टिगत रखते हुए करना चाहिए। जातपात समाप्त करके ही मानव समाज वास्तव म मानवता के उत्तम व सत्य माग को स्त्राकार कर सकता है। केवल हि दुओ मे हा जातपात नही है मुसलमान ईस ई व अन्। समुदायो मे भी है। किन्तु हमे मानवता के नाते जातपात त्याग कर अपने नाम को सार्थक करना चाहिए

हम ज्ञान प्राप्त कर मानवो को ज्ञानोपदेश द तो हम ब्राह्मण हैं। हम वीर्य रक्षा कर ब्रह्मचय का पालन कर बल प्राप्त कर व समाज की रक्षा कर तो हम क्षत्रिय हैं। हम न्यायपूर्ण विधि से धनाजन करें व उस धन को यथायोग्य प्रत्येक मे वितरित कर द तो हम वश्य हैं, हम समाज को गति प्रदान कर समता प्रदान कर व सेवाकार्य द्वारा मानव समाज की सहायता करें तो हम शूद्र हैं। मानव समाज को वेदज्ञान के अनुसार वर्ण स्वीकार करने चाहिए— यही इस युग की प्रथम आवश्यकता है।

वैदिक प्रवक्ता,
तपोवन आश्रम,
देहरादून—२४८००८

आर्य समाज मन्दिर माकेन नई दिल्ली वेदकथा

आर्यसमाज माकेन मे १४ अक्तूबर स १६ अक्तूबर तक श्री यशपाल सुधाशु सम्पादक आयसदेश की मनाहर वेदकथा सम्पन्न हुई। जिसमे श्री प० वेदव्यास के मधुर भजन हुए। इस अवसर पर अनेक श्रद्धालु नर नारियो ने बढ चढ कर भाग लिया। आयसमाज मन्दिर साकेत मे नियमित सत्सग के साथ एक पुस्तकालय एव धमार्थ चिकित्सालय भी चल रहा है। जिससे सैकडो लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

निवदक
मन्त्री राजेन्द्र द गुणसागर
सक्सेना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन. ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी० (सी०) ७५६

ओ३म्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वर्ष ९ अंक १० | रविवार, ३ नवम्बर, १९८५ | सृष्टि सवत् १९७२९४९०८६ | आश्विन २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २० रुपये | आजीवन २०० रुपय | विदेश मे ५० डालर ३० पौंड

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पर

❀ आर्यसन्देश का उत्कृष्ट विशेषांक ❀

अपने पाठको की पुरजोर माग को ध्यान मे रखकर साप्ताहिक आर्यसन्देश अपनी गौरवमयी परम्परा के अनुसार महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली) पर एक उत्कृष्ट लेखो से भरपूर आकषक विशेषाक प्रकाशित कर रहा है। यह विशेषाक नवीन तथ्यो शिक्षाप्रद एव प्ररणाप्रद लेखो से सुसज्जित सग्रहणीय होगा। आर्यसन्देश के ग्राहक इसे नि शुल्क प्राप्त कर सकगे।

यदि आप अपने घर बैठे ऋषियो आप्तपुरुषो सन्तो विद्वानो की वाणी एव सत्योपदेश पढना चाहते हैं तो आज ही साप्ताहिक आर्यसदेश के सदस्य बन जाइये और विशिष्ट विशेषाक भी नि शुल्क प्राप्त कीजिए।

पता सम्पादक—
साप्ताहिक आयसन्देश,
१५ हनुमान रोड नई दिल्ली
११०००१

विशेषांक की झलकियां—

* दश की आजादी का दीवाना राजस्थान की भील जाति का गुरु अल्हड सन्त—गोविन्द गुरु
  महर्षि दयानन्द का अनोखा शिष्य जिसने स्वतन्त्रता के लिए सेना सजायी थी। इतिहास का मार्मिक प्रसग
* अग्रेज चित्तौड के किले को अपने कब्जे मे लने के। षड्यन्त्र रच रहे थे। ऋषि दयानन्द ने इसकी रक्षा के लिए अद्भुत साहसिक कार्य किया। इतिहास की गुफा मे छिपा ऋषि दयानन्द का एक महान् कार्य।
* स्वामी दयानन्द ने आध्यात्मिक जगत् मे अनोखी क्रान्ति की, उस क्रान्ति से ससार चमत्कृत हो सकता है। इसी कारण वे जगत् गुरु और विश्व वन्द्य हैं।
* ऋषि दयानन्द ने बृहत् भारत का स्वप्न देखा था। उस स्वप्न को पूर्ण करने के लिए उन्होने क्या मन्त्र दिया ?

अनेको खोजपूर्ण, अध्यात्म, शिक्षाप्रद, मनोरजक, ऐतिहासिक लेखो का अपूर्व सकलन होगा इस विशेषाक मे।

आज ही अपनी प्रति सुरक्षित कराइये।

इन्दिरा-स्मृति

कविवर प्रणव" शास्त्री
एम०ए० महोपदेशक
शास्त्री सदन रामनगर (कटरा)
आगरा-६ (उ०प्र०)

बता दे कोई मनुष्यता की महापुजारिणी कहाँ गई है।
अदम्य दुर्गादेवी सी जो वो सिंहवाहिनि कहाँ गई है ॥१॥
सजाया जिसने स्वतन्त्रता के स्वरूप शृगार भारती को।
जगाया जिसने प्रसन्नता से प्रसुप्त मानो स्वभारती को।
विकास वीणा बजाने वाली सरस्वती सी कहा गई है। २॥
धरा के दुःख मे दुखी रही जो दुखो की कहती रही कहानी।
धरा न होवे अधीर मन मे न धैर्य खोवे विपन्न प्राणी।
धरा के पुत्रो! जरा तो बोलो धरा की पुत्री कहाँ गई है ॥३॥
नही गगन मे कही घिर ये प्रपञ्चवादी घटाए काली।
न नाच पाये महासमर की विनाशकारी अकाल काली।
पुकार ऐसी उठाने वाली सशक्त वाणी कहा गई है ॥४॥
न दुष्ट दुश्मन की चाहना का यहाँ न होने दिया बसेरा।
उसे चटा दी जमीन जिसने यहाँ जो चाहा कर अँधेरा।
प्रकाश पौरुष दिखाने वाली विजय भवानी कहाँ गई है ॥५॥
कही भी उल्लू ले घूकसेना न डाल पाय चमन मे डेरा।
नई चमक से नई दमक से किया है जिसने यहा सवेरा।
नया ही सूरज उगा गई जो उषा किरण वो कहा गई है ॥६॥
सुझाई जिसने सुचारुता से समानता की सुरूप रेखा।
गिरे हुओ को लगा रहे हो गले से ऊँचे कि स्वप्न देखा।
स्वराष्ट्र का चित्र निखार देती वो रग रचना कहाँ गई है। ७॥
कि जाते जाते भी रक्त जल से प्रफुल्लता से जिसे है सीचा।
दिया है आशीष प्रसन्नता से अमर अखण्डित रहे बगीचा।
दधीचि ऋषि की मिसाल बनकर सदा सुहागिनि कहाँ गई है ॥८॥

सम्पादक—यशपाल 'सुधांशु' एम० ए० | व्यवस्थापक—डा० [illegible] | प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

समाचार सन्देश

अखिल भारतीय आर्य युवा महासम्मेलन

नई दिल्ली १० अक्तूबर (बृहस्पतिवार)। आर्यसमाज अनारकली (मन्दिर मार्ग) के ६१वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर आगामी २४ नवम्बर रविवार को आर्य युवा नेता ब्रह्मचारी आर्य नरेश की अध्यक्षता में 'अखिल भारतीय आर्य युवा महासम्मेलन का आयोजन किया गया है। जिसमें १००० प्रतिनिधि भाग लेने आ रहे हैं।

युवा महासम्मेलन संयोजक व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के महासचिव श्री अनिल कुमार आर्य ने एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि २३ नवम्बर, शनिवार को देश के विभिन्न राज्यों के आर्य युवक संगठनों के प्रमुख नेताओं व विद्वानों की बैठक होगी जिसमें युवा वर्ष पर नौजवानों के लिए एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम बनाने तथा राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी भूमिका निभाने के उद्देश्य से भावी कार्यक्रम बनाया जायेगा

आर्य नेता व डी०ए०वी० प्रबन्धकर्त्री सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री दरबारी लाल ने समस्त भारत के डी०ए०वी० स्कूल कालेजों के प्रतिनिधियों को भी युवक महासम्मेलन को सफल बनाने के आदेश दिए हैं। महासम्मेलन की सारी व्यवस्था आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली कर रही है।

राष्ट्रीय स्तर के इस युवा महासम्मेलन के लिए दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर जन सम्पर्क अभियान तथा क्षत्रीय युवक सम्मेलनों का आयोजन भी किये जा रहे हैं।

चन्द्रमोहन आर्य
(प्रेस सचिव)
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद
दिल्ली प्रदेश

सिराज खां, सूरज कुमार बने

भुवनेश्वर। कुछ दिन हुए वार्नागीर के श्री सिराज खाँ द्वारा कुमारी किरण अग्रवाल के अपहरण के विषय को लेकर उड़ीसा में प्रबल हलचल मची हुई थी। गत ता० ६-१०-८५ को भुवनेश्वर आर्यसमाज मंदिर में श्री सिराज खा को शुद्धि संस्कार के पश्चात उनका विवाह सुश्री किरण के साथ सम्पन्न होकर एक संघर्ष का सुखान्त समापन हो गया

श्री सिराज सुश्री किरण तथा उनके अधिवक्ता और आत्मीय स्वजन कटक उच्च न्यायालय में न्यायमूर्ति श्री राधाचरण पटनायक के समक्ष अपनी सम्मति प्रकट करके भुवनेश्वर आर्यसमाज की सहायता से विवाह के निमित्त प्रस्ताव दिया था। माननीय न्यायमूर्ति ने इसे स्वीकार करते हुए अपने दीर्घ निर्णय में कहा है— 'अधिवक्ता ने यह निवेदन किया कि मामला मित्रता पूर्वक सुलझा लिया गया है और इस प्रकार एक विस्फोटक स्थिति का सुखान्त समापन हो गया है। यह भी तय हुआ है कि श्री सिराज और सुश्री किरण आर्यसमाज की पद्धति के अनुसार विवाह बंधन में एक हो जाएंगे।

भुवनेश्वर आर्यसमाज के नवनिर्मित महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारक यज्ञ मंडप में कटक भुवनेश्वर तथा उड़ीसा के बहु प्रतिष्ठित व्यक्तियों की उपस्थिति में श्री सिराज का शुद्धि संस्कार हुआ। श्री सिराज ने बड़ी प्रसन्नता के साथ श्री सूरजकुमार" नाम ग्रहण किया। शुद्धि के अनन्तर श्री सूरज कुमार और कुमारी सुश्री किरण अग्रवाल का विवाह संस्कार अनुष्ठित हुआ।

उड़ीसा के सभी समाचार पत्रों ने इस समाचार को प्रमुख स्थल पर प्रकाशित किया।

प्रियतमदास

शुद्धि समाचार

कलकत्ता २ अक्टूबर। आर्य समाज बड़ा बाजार द्वारा आज माय एक भव्य समारोह में शेख अमीरुद्दीन पुत्र शेख लतीफुद्दीन लालदीघी धार (पूर्व) पो० व थाना चन्द्रनगर, जिला हुगली (प० बंगाल) के आवेदन पर उनकी शुद्धि श्री प० ईश्वरदत्त वैद्य के पौरोहित्य में को गयी जिसमें समाज के मंत्री मुरलीधर चन्द आर्य तथा समाज के विशिष्ट सहयोगियों सहित ग्राम जनता के लोग भी उपस्थित हुए। शुद्धि के उपरान्त उनका नया नाम अमरजीत स्वीकृत हुआ।

पाखण्ड खण्डन का आह्वान

श्री रामनाथ सहगल का वक्तव्य

(निज संवाददाता द्वारा)

पिछले दिनों दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित दो समाचारों के बारे में आर्य जनता का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। पहला समाचार लन्दन का है जहां श्री प० श्रीराम शर्मा की उपस्थिति में गायत्री परिवार की ओर से आयोजित यज्ञ कार्यक्रम के अवसर पर स्वामी प्रज्ञानन्द ने तथाकथित भगवानों से सावधान रहने का उपदेश देते हुए कहा कि—अब समय आ गया है कि हम लोगों को अपने मकानों पर सूचना पटों पर 'बीवेयर आफ डाग' के स्थान पर 'बीवेयर आफ गाड' अर्थात कुत्तों से सावधान के स्थान पर भगवानों' से सावधान लिखवा कर लगाना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि ये तथाकथित भगवान कुत्तों से भी अधिक काटने वाले और गिरे हुए हैं।

दूसरा समाचार न्यूयार्क से आया है। लगभग ३ वर्ष पूर्व तथाकथित भगवान् आचार्य रजनीश भारत छोड़कर अमेरिका में आरेगान में जा बसे। करोड़ों रुपये की विस्तृत भूमि खरीद कर वहां रजनीशपुरम की स्थापना की। समार की सब से मूल्यवान कार राल्स-रायस का रजनीश प्रयोग करते हैं। उनकी घड़ी की जंजीर में मूल्यवान हीरे पड़ हुए हैं। उनके आश्रम में उन्मुक्त सेक्स की पूरी छूट है। विलासी जीवन व्यतीत करने वाले भगवान रजनीश का कहना है कि उनके अनुयायियों ने उनके साथ धोखा किया, उनकी हत्या का प्रयास किया तथा उन्हें करोड़ों डालर कर्ज में डुबो दिया।

अब रजनीशपुरम से समाचार से प्राप्त हुआ है कि भगवान रजनीश के लगभग दो हजार अनुयायियों ने रजनीश को भूतपूर्व निजी सचिव मा आनन्दशीला द्वारा रजनीशवाद" पर प्रकाशित पुस्तक की ५००० प्रतियों व सचिव के कपड़ों की अर्थी बनाकर नाच-गा कर उनकी अन्त्येष्टि कर दी।

इन दोनों समाचारों से इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है कि तथाकथित नकलो भगवान् भगवानों के पाखण्ड से पाश्चात्य भौतिकवादी जगत् का एक वर्ग ऊब चुका है। पाखण्ड व ढोंग से आकर्षण होता है। इसलिए शुरू में इनकी ओर झुकना स्वाभाविक है। परन्तु पाखण्ड की पोल खुलने पर उस से घृणा भी जल्दी ही हो जाती है।

हमारे देश में भी ईश्वर के नाम पर अनेक पाखण्ड फैले हुए हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन पाखण्डों के कारण समय समय पर देश को राष्ट्रीय क्षति उठानी पड़ी है आर्यसमाज अपने जन्म-काल से ही इस प्रकार के पाखण्डों का विरोधी रहा है। अपने प्रारंभिक काल में पाखण्ड खण्डन के लिए आर्यसमाज ने विधर्मियों से अनेक शास्त्रार्थ किए। अब इस दिशा में शिथिलता आई हुई है। मैं अपने आर्य विद्वान उपदेशक व प्रचारक महानुभावों से निवेदन करूंगा कि-पाखण्ड खण्डन के कार्यक्रम में पूरी शक्ति के साथ जुट जाये।

भवदीय
(गजेन्द्रप्रसाद मालवीय)
कार्यालयाध्यक्ष

वेदप्रचार विभाग का द्वितीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा संचालित वेद प्रचार विभाग का वार्षिक उत्सव दिनांक २७-१०-८५ रविवार सायं ३ बजे ६/४४ कीर्ति नगर इण्टस्ट्रीयल एरिया (M D H) में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मान्यवर श्री रामगोपाल वानप्रस्थ की अध्यक्षता में मनाया गया।

इस अवसर पर अनेक प्रतिष्ठित विद्वानों ने धार्मिक जनता का मार्गदर्शन किया।

खुशीराम शर्मा
वेद प्रचार अधिष्ठाता

'वेद प्रचार सप्ताह'

आर्यसमाज यमुना विहार (रजि) दिल्ली के तत्त्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह २ से ६ अक्तूबर तक सर्व श्री आचार्य रामचन्द्र जी की अध्यक्षता में पाच दिवसीय यज्ञ के पश्चात् पूर्ण आहुति सहित बड़ समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन यज्ञ, उपदेश तथा भजनों की मधुर ध्वनि के साथ श्री स्वामी कृष्णानन्द जी, श्री प० अखिलेश जी श्री प० नानक चन्द्र जी श्री भूदेव जी आदि विद्वानों ने भाग लेकर वेद मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

कमल किशोर आर्य
उपमन्त्री
आर्यसमाज यमुना विहार (रजि.)
दिल्ली-५३

आर्यसमाज सान्ताक्रुज में आर्य ध्यान योग केन्द्र का उद्घाटन

आर्यसमाज ने अपने स्थापना दिवस पर नवनिर्मित वातानुकूलित ध्वनि शून्य भारत वर्ष की आर्य समाजों में सर्व प्रथम ध्यान योग केन्द्र का उद्घाटन पूज्य स्वामी सत्यपति जी के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए स्वामी जी महाराज ने कहा कि आर्यसमाज ने यह कार्य करके अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया है, इसकी बहुत बडी आवश्यकता थी जो आज पूरी हो रही है। मुझे आशा है कि इस ध्यान योग केन्द्र से बम्बई की जनता अधिक से अधिक लाभान्वित होगी। इसे देख कर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है। यहा आकर वास्तविक शाति मिलती है, यहा आकर ध्यान लगाया जा सकता है। ऐसे ध्यान योग केन्द्र का निर्माण प्रत्येक नगर मे होना चाहिए। परमात्मा यहा के कार्यकर्ताओं को शक्ति प्रदान करे, जिससे ऋषि के अधूरे कार्यों को पूरा करते रहें।

अन्त मे महामन्त्री कैप्टिन देवरत्न आर्य ने बताया कि इस ध्यान योग केन्द्र के लिए श्री राजेन्द्र बाहरी जी ने २००००/= रुपये की वातानुकूलित मशीन तथा श्री केवलकृष्ण जी मेहरा ने ऊनी कालीन भेन्ट किया है। इनके सहयोग से हम इसे पूरा कर पाये है।

(कैप्टिन देवरत्न आर्य)
महामन्त्री

आर्यसमाज मन्दिर, बाई ब्लाक, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली में रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के सत्यवती स्मारक भवन का उद्घाटन

बुधवार दिनाक २ अक्टूबर, १९८५ को बडे समारोह पूर्वक प्रात ८ बजे से साढे १२ बजे तक सम्पन्न हुआ। कार्रवाई प्रात ८ बजे विशेष यज्ञ से आरम्भ हुई। उसके पश्चात् प्रात १० से ११ बजे तक रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के छोटे-छोटे बच्चो ने बहुत आकर्षक वैदिक विचारधारा से ओत प्रोत सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस अवसर पर लाला रामगोपाल जी शालवाले प्रधान, सार्वदेशिक सभा, श्री धर्मदत्त जी, प्रशासक, नई दिल्ली नगर पालिका (मुख्य अतिथि के रूप मे), श्री रतनचन्द जी सूद, श्री रामलाल मलिक, श्री हरबस सिह जी सेर, प्रधान दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल डा० धर्मपाल जी, महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री रामनाथ सहगल, मन्त्री, आर्य प्रादेशिक सभा श्री राजेन्द्र दुर्गा, मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा तथा दिल्ली की बहुत सी आर्यसमाजो के अधिकारी एव सदस्य व श्री रतनचन्द जी सूद के परिवार के सभी लोग उपस्थित थे। सत्यवती स्मारक भवन का उद्घाटन श्री जे० आर० सूद (सुपुत्र श्री रतनचन्द जी सूद) जी ने किया। इस भवन के १८ कमरो का निर्माण लगभग ५ लाख रुपये की लागत से श्री रतनचन्द जी सूद ने अपनी स्वर्गीय धर्मपत्नी श्रीमती सत्यवती जी सूद की स्मृति में कराया है।

श्री धर्मदत्त जी, प्रशासक, नई दिल्ली नगर पालिका ने घोषणा की कि रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल को शीघ्र मान्यता दी जायेगी। श्री रोशनलाल गुप्त, प्रचार मन्त्री आर्य समाज सरोजिनी नगर, प्रबन्धक, रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल ने सभी का हार्दिक धन्यवाद किया।

रोशनलाल गुप्त
प्रचारमन्त्री आर्यसमाज
एव प्रबन्धक रतनचन्द
आर्य पब्लिक स्कूल

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज शालीमार बाग, दिल्ली का वार्षिकोत्सव ११ से १७ नवम्बर ८५ को धूमधाम से मनाया जा रहा है, जिसमे महात्मा रामकिशोर वैद्य महोपदेशक का वेदप्रवचन और प० सत्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार के भजनोपदेश हुआ करेंगे। श्री ज्योतिप्रसाद ढोलक कलाकार साथ रहेंगे।

वेद कथा एवं वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अमर कालोनी में १ से १० नवम्बर तक वेद कथा और वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा है, जिसमे महात्मा रामकिशोर जी वेद यज्ञ के ब्रह्मा रहेंगे। रात्रि को वेद रहेगा। प० वेद व्यास भजनोपदेशक का सगीत का कार्यक्रम रखा गया है।

व्यवस्थापक
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

अन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना

यह आवश्यक है कि हिन्दू अपनी सन्तानों की शादिया गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर करे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने तत्वावधान में एक अन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना की गई है। यहा इस बात का ध्यान रखा जाता है कि अन्तर्जातीय विवाह में दहेज बाधक न हो। अब तक लगभग ८० अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हो चुके हैं और सब दम्पती सुखी हैं। आफिस का समय ११ से ५ बजे तक है और साय ५ बजे से ७ बजे तक व्यक्तिगत बातचीत के लिए सुरक्षित है। विवाह इच्छुक युवक युवति अथवा उनके सरक्षक निम्न पते पर सपर्क करे।

डा० मदनपाल वर्मा
अधिष्ठाता-अन्तर्जातीय विवाह विभाग
आर्यसमाज (अनारकली), मदिर मार्ग
नई दिल्ली-११०००१

नोट—सेवा नि शुल्क है।

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के नव निर्वाचन अधिकारी

प्रधान श्री रामचन्द्रराव जी कल्याणी
उपप्रधान श्री डा० गोविंदराव जी गौरे बोधन
उपप्रधान श्री पुरुषोत्तम रेड्डी जी पादन्नापेठ
उपप्रधान श्री के० करुणाकर जी सूर्यनगर
मन्त्री श्री माणिकराव जी शास्त्री बेगम बाजार
उपमन्त्री श्री नागमल्लप्पा जी गोशामहल
उपमन्त्री श्री लक्ष्मण सिह जी ध्रुवपेठ
उपमन्त्री श्री के० व्ही रेड्डी जी जडचरर्ला
कोषाध्यक्ष श्री राजा वी० किशन लाल जी
पुस्तकाध्यक्ष श्री प० कुर्मा स्वामी जी शास्त्री

निवेदक
आर्य प्रतिनिधि सभा
आन्ध्र प्रदेश
हैदराबाद

चम्पारण जिला निर्वाचन सम्पन्न

दिनांक २२-९-८५ को स्थानीय नर कटिया गज आर्यसमाज में श्री राम वृक्षलाल की अध्यक्षता में चम्पारण जिला सभा का निर्वाचन हुआ। जिसमें आगामी वर्ष के लिए सर्व श्री रामाज्ञा बैरागी प्रधान तथा वी० के० शास्त्री मन्त्री चुने गये।

मन्त्री प्रधान के अतिरिक्त २१ अन्य सदस्य तथा पदाधिकारी चुने गए हैं। सभी कार्य शान्ति पूर्ण वातावरण में सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ।

रामचन्द्र
भूतपूर्व मन्त्री
चम्पारण जिला सभा, बिहार

आर्यसमाज सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली-२९ का निर्वाचन

वार्षिक चुनाव दिनाक २२-९-८५ को श्री लाला रामशरणदास जी की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए। निम्न प्रकार हैं।

प्रधान श्री वी० डी० भण्डारी
उप प्रधान श्री जे० एल० आजाद
मत्री श्री रामचन्द्र गुप्त
उपमन्त्री श्री के० कुमार
कोषाध्यक्ष श्री बी० डी० जसूजा

मन्त्री
रामचन्द्र गुप्त

आर्यसमाज बम्बई की वार्षिक साधारण सभा दिनाक २९-९-१९८५ को सम्पन्न हुई जिसमे आगामी वर्ष के लिए पदाधिकारी सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए हैं। कृपया अपने प्रतिष्ठित पत्र में प्रकाशित करने की कृपा करे।

निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए—

परामर्शदाता श्री प० दयाशकर जी शर्मा
प्रधान श्री गणपत राय आर्य
उपप्रधान श्री जगनप्रसाद गौतम
उपप्रधान श्री भाऊलाल शर्मा
मन्त्री श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय
उपमन्त्री श्री चमनलाल चाँदना
कोषाध्यक्ष करसन दास राणा
पुस्तकाध्यक्ष श्री भद्रसेन मिश्र

राजेन्द्रनाथ पाण्डेय
मन्त्री

आर्यसमाज लाजपत नगर में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन

आर्यसमाज लाजपत नगर, नई दिल्ली के उत्सव के अवसर पर श्रद्धेय श्री रामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता मे राष्ट्र रक्षा सम्मेलन दिनांक ३-११-८५, रविवार प्रात. १० से १ बजे तक मनाया जा रहा है।

प्रेषक
मेघश्याम वेदालकार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन. ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली नं० १०, ... दिल्ली-३१ में मुद्रित रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

वर्ष ९ अंक ४ ५ | रविवार, ८ दिसम्बर, १९८५ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८६ | मार्गशीर्ष २०४२ | दयानन्दाब्द—१६१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २० रुपये | आजीवन २०० रुपए | विदेश में ५० डालर ३० पौंड

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के शिष्टमण्डल की केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री एस० बी० चव्हाण से भेंट

हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों के सम्बन्ध में ज्ञापन

दिल्ली १० नवम्बर।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में आज प्रात आर्यसमाज के शिष्टमण्डल ने केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री एस० बी० चव्हाण से भेंट कर उन्हें हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों के सम्बन्ध मे एक ज्ञापन पत्र दिया।

शिष्टमण्डल ने गृहमन्त्री का ध्यान आकृष्ट करते हुए बताया कि हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों के सामने पेंशन प्राप्त करने मे कुछ विशेष कठिनाइयां हैं। १९३८-३९ मे पश्चिमी पंजाब (जो अब पाकिस्तान मे है) के लोगों ने भी सत्याग्रह मे भाग लिया था। तत्कालीन निजाम स्टेट अब तीन प्रान्तो मे विभाजित हो चुका है। उस समय जो लोग जेलो में गये थे, उन्हें निजाम सरकार ने कोई प्रमाण पत्र नही दिया था। यह आन्दोलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान मे चला था और सभा ने सत्याग्रहियो को प्रमाण पत्र भी दिये थे।

शिष्टमण्डल ने यह भी बताया कि अधिकांश सत्याग्रही अब तक दिवंगत हो चुके है। जो थोड़े बहुत लोग इस समय वृद्धावस्था मे जी रहे हैं, उनके पास अब ४७ वर्ष के उपरान्त कोई प्रमाण पत्र शेष नहीं है।

शिष्टमण्डल ने सरकार से मांग की कि जिस प्रकार राष्ट्रीय आन्दोलन के सेनानियों को कांग्रेस के प्रमाण पत्र के आधार पर स्वतन्त्रता सेनानी माना गया था उसी प्रकार केन्द्र सरकार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उक्त सत्याग्रह के रिकार्ड के आधार पर प्रमाणित लोगो को स्वतन्त्रता सेनानी स्वीकार कर और गृहमन्त्रालय द्वारा स्वीकृत पेंशन योजना का लाभ प्रदान करे।

गृहमन्त्री श्री चव्हाण ने, तुरन्त सभा से सूची भेजने के लिए कहा और आश्वासन दिया कि वे राज्य सरकारों से बातचीत करके इसका निर्णय जल्दी करेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि निजाम हैदराबाद अब आन्ध्र, कर्नाटक और महाराष्ट्र मे विभाजित हो चुका है।

शिष्टमण्डल मे प्रो० शेरसिंह, श्री ओमप्रकाश त्यागी प० शिवकुमार शास्त्री, श्री सोमनाथ एडवोकेट और लक्ष्मीचन्द आदि सम्मिलित थे।

सच्चिदानन्द शास्त्री
उपमन्त्री

श्री शोरीलाल खन्ना का निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले के छोटे भाई श्री शोरीलाल जी खन्ना का अमृतसर मे लम्बी बीमारी के पश्चात् १७।११।८५ को देहावसान हो गया है। श्री शोरीलाल जी पहले बम्बई मे व्यापार करते थे। कुछ वर्ष पूर्व वह अमृतसर मे बस गए थे। वह अपने पीछे एक पुत्र छोड़ गए हैं।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और परिवार को इस महान् वियोग को धैर्य पूर्वक सहन करने की शक्ति दे।

डा० धर्मपाल

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की बैठक सम्पन्न

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की बैठक रविवार १।१२।८५ को आर्यसमाज मन्दिर दीवानहाल मे सम्पन्न हुई। इसमें दिनांक ३०।१०।८५ की कार्यवाही सम्पुष्ट की गयी तथा संविधान को अन्तिम रूप देकर प्रकाशन की स्वीकृति दी गई। शेष पदाधिकारियो तथा कार्यकारिणी के सदस्यो का निर्वाचन किया गया। कुल पदाधिकारी और कार्यकारिणी इस प्रकार है। प्रधान-प्रो० शेरसिंह उपप्रधान—श्री सूर्यदेव और श्री वीरेन्द्र मन्त्री—डा० धर्मपाल सहायक मन्त्री-श्री प्रकाशवीर शास्त्री और श्री आशानन्द आर्य कोषाध्यक्ष-डा० हरिप्रकाश सदस्य लाला रामगोपाल जी शालवाले स्वामी ओमानन्द, श्री हरवंशलाल शर्मा, महाशय धर्मपाल जी तथा सभी पदेन सदस्य। इस पर लाला रामगोपाल शालवाले ने कहा कि मैं गुरुकुल कांगड़ी के किसी भी झगड़े मे नहीं पड़ना चाहता और न ही मैं वहां किसी सभा का सदस्य ही बनना चाहता हूं मेरे पास बहुत काम हैं। मेरा सार्वदेशिक सभा का कार्य भी हर्ज होता है। वहां आपस मे लोग झगड़ा करते हैं। मेरे पास बहुत शिकायत आती है। सभी उपस्थित सदस्यो ने माननीय लाला रामगोपाल जी शालवाले से एक स्वर मे अनुरोध किया है कि आप हमारे मान्य नेता हैं, आर्यसमाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान है। आप पंजाब सभा के त्रिशासन के भी सर्वमान्य अधिकारी हैं। इस सभा का सदस्य बनने की हमारी प्रार्थना को आप अवश्य स्वीकार करें। अनेक अनुरोधों एवं प्रार्थनाओं पर किसी प्रकार मान्य

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक—[illegible] 'सुधांशु' एम० ए० | सहसम्पादक—डा० [illegible] | प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

जीवन-संगीत

—चमनलाल (पूर्व प्रधान आर्यसमाज अशोक विहार)

विधु दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार।
देवस्य पश्य काव्यं महित्वाऽद्या ममार स ह्यः समान ॥"

ऋग्—१०।५५।५
साम—३२५७ २७८२

★

यह मन्त्र बड़ा महत्त्वपूर्ण है इस लिए भी कि यह ऋग्वेद में एक बार और सामवेद में दो बार आया है। इस मन्त्र में सत्रह शब्द हैं-पहले पद में आठ और दूसरे में नौ शब्द है। इस मन्त्र में मानव को अपने बचपन जवानी तथा बुढ़ापे को याद दिलाकर अन्त में विधि के विधान में बधी आने वाली मृत्यु के स्वागत का संकेत है। मृत्यु जैसी घोर भयवाहनी वस्तु को जगत नियन्ता प्रभु की ओर से भेजी हुई उसको उपहार के रूप में स्वीकार करने का आदेश है न कि उससे घबराकर परमात्मा को कोसने लगे प्राणी। यही नहीं इस मन्त्र में मानव को उसके अपने जीवन की नश्वरता असारता का चिन्तन करा कर प्रभु के प्रति सच्ची निष्ठा एवं श्रद्धा धारण करके वेद विहित कार्यों को करके हम संसार रूपी भवसागर से पार होने का बड़ा सुन्दर चित्रण है। जैसा कि ऊपर कह आये है कि मन्त्र में मानव जीवन की तीन अवस्थाएँ-बालपन जवानी तथा बुढ़ापा की ओर ध्यान दिलाकर अन्त में चौथी मृत्यु को प्रभु के उपहार रूप में लेने को कहा गया है। जीवन में क्रमिक परिवर्तन के फलस्वरूप ये अवस्थाएँ होती हैं योगिराज श्रीकृष्ण जी ने भी गीता अध्याय दो श्लोक तेरह में इन अवस्थाओं का इस प्रकार बड़ा सुन्दर वर्णन किया है

देहिनो अस्मिन यथा
देहे कौमार यौवन जरा।
तथा देहान्तरप्राप्ति
र्धीरस्तत्र न मुह्यति॥'

यदि विचार पूर्वक देखा जावे तो जीवन में ये क्रमिक परिवर्तन मानो एक संगीत के समान हैं। संगीत प्रायः वही अच्छा और रुचिकर होता है जिसमें उतार चढ़ाव हो। गायक कभी मीठे हल्के स्वर में और कभी ऊँचे उग्र स्वर में गाता है। इस के अभाव में प्रायः लोग गानों को नीरस (Dull) समझते हैं। परन्तु यह जीवन संगीत ऐसा सुरीला मीठा और रसीला है कि किसी भी अवस्था में आदमी इससे ऊबता नहीं। शिशुत्व रत्व और युवावस्था की तो बात ही क्या दुखदायी बुढ़ापा जरावस्था से आदमी युक्त होना नहीं चाहता चाहे वह कितनी ही भयंकर और दुखदायी क्यों न हो।

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डम
दशनविहीनं जातं तुण्डम।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डम
तदपि न मुञ्चति आशा पिण्डम॥

ऐसी दयनीय अवस्था में भी कोई मरना नहीं चाहता वरन ऐसा प्रायः देखने अथवा सुनने में भी आता है कि बहुधा लोग यम के द्वारा भेजे हुए उसके दूतों को भी लताड़न का विफल प्रयास करते हैं।

नानाविध कलाओं खाना पकाने की कला खाने खाने की कला मल मूत्र त्यागने की कला स्नान करने की कला और संगीत कला आदि कलाओं से परिपूर्ण यह जीवन चार अवस्थाओं से युक्त संगीतमय नहीं यह स्वयं संगीत सा प्रतीत होता है। अतः आओ जरा उपर्युक्त मन्त्र के अर्थों के माध्यम से जीवन संगीत का कुछ रसास्वादन करें। विधु दद्राणं समने बहूनाम नव जात शिशु चन्द्रमा की मानिन्द बड़ा सुन्दर लगता है बच्चा चाहे किसी पशु पक्षी का भी क्यों न हो और यदि किसी के बच्चा न हो तो वह सुन्दर मनमोहक शिशु उसकी वेदना का कारण भी बन जाता है। जैसे चन्द्रमा सब को प्यारा लगता है परन्तु वही शीतलता का देने वाला चन्द्र कृष्ण और यशोदा को बीधने वाला हो जाता है। जब कृष्ण उसको पाने की इच्छा करता है और बेचारी यशोदा कृष्ण को नानाविध फुसला कर सन्तुष्ट करने में विफल हो जाती है। शिशु जब कुछ बड़ा हो जाता है चलने फिरने का प्रयास करता है और नानाविध चेष्टा में करने लगता है, तो सभी सगे सम्बधी-माता पिता भाई बहन, चाचा चाची बुआ मौसी सभी की उत्सुकता का कारण बन जाता है। उस शिशु की उलटी सीधी बार बार गिरके उठने की चेष्टाओं को देखकर सभी आनन्द विभोर हो उठते हैं। भक्त सूरदास के वर्णन में माता यशोदा कृष्ण के चलने को देखने के लिए कितनी उत्सुक हैं। यही कारण है कि बच्चे को घर का चिराग कहा जाता है क्योंकि इसके बिना घर अन्ध बन जाता है। कैसा है बच्चे का लावण्य? युवानं सन्तं समने बहूनाम। इसके पश्चात जब बच्चा शिशु और कौमार अवस्था को पार कर युवा अवस्था को प्राप्त होता है तो अपनी निखरी चढ़ती जवानी में भी शिशु की न्याई अनेकों को बीधने वाला हो जाता है जब वह उभरती जवानी में युवा अथवा युवती न जाने कितनों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। कतिपय लोग किसी सुन्दर आकर्षक युवा को देखकर उस को अपने जामाता के रूप में पाने का प्रयत्न करते हैं और कई अन्य किसी सुन्दर युवती को अपनी पुत्रवधू के रूप में अपने घर की लक्ष्मी बनाना चाहते हैं परन्तु उन चाहने वालों को वे अप्राप्य होने के कारण कुछ चुभने से लगते हैं परन्तु यह जवानी कब तक रहती है। कुछ ही समय तक अपना चमत्कार दिखाकर धूप की मानिन्द आंखों से ओझल हो जाती है और कभी वापस नहीं आती। इसी लिए किसी ने बड़ा सुन्दर कहा है—'जो जाकर न आती वह जवानी देखी" और देखते ही देखते उसे बुढ़ापा आ दबोचता है जो उसको लेकर जाता है इसीलिए कहा भी है जो आकर नहीं गया वह बुढ़ापा देखो। 'पलितो जगार" इस अवस्था में जवानी का वह लावण्य सौन्दर्य काई काई हो जाता है और सब अङ्ग प्रत्यङ्ग शिथिल पड़ जाते हैं और इस अवस्था में वह सुन्दर युवा अब पोपले मुंह (बिना दन्त के) वाला बन्दर की न्याई व्यवहार करने लगता है और अब तक प्यार करने वाले चाहने वाले सभी छोटे बड़े उसे घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं और चाहते हैं कि जल्दी ही यह इस संसार से विदाई ले। इस चौथी अवस्था में भगवान का ही एकमात्र सहारा रह जाता है। शेष सब बन्धु बान्धव तो उस बेचारे की नितान्त उपेक्षा ही करते दिखाई देते हैं।

देवस्य पश्य काव्यं महित्वाऽद्या
ममार स ह्यः समान।

ऐसी दयनीय चौथी अवस्था में प्रभु अपनी महान उदारता और कृपा से मृत्युरूपी उपहार उसकी सहायतार्थ भेजते हैं और वह इस उपहार को पाकर उस क्लेशमयी दयनीय अवस्था से मुक्ति पा जाता है। और लोगों को केवल यही कहते सुनते हैं कि प्रभु का विधान भी कैसा विचित्र है कि कल ही जो अमुक व्यक्ति जीवित था आज इस संसार से चल बसा है। प्रभु ने नानाविध संसार की अद्भुत रचना की है और मृत्यु एक बड़ी विचित्र किन्हीं के लिए भयावही और दूसरों के लिए सुन्दर और आनन्ददायिनी सिद्ध होती है। सारा संसार इस मृत्यु शब्द तक से भयभीत हो जाता है परन्तु सन्त कबीर जैसे उसी के स्वागत के लिए सर्वदा तैयार रहते हैं। उन्होंने क्या ही सुन्दर कहा है—

जिस मरने से जग डरे
मेरे मन आनन्द।
इस मरने से ही पाइये
पूरण परमानन्द ॥

मृत्यु एक पहेली है जिस का समाधान आज तक भी बड़े बड़े नहीं कर सके। यह शाश्वत है अमीर गरीब, धनवान निर्धन, राजा रङ्क विद्वान अविद्वान सभी के लिए समान है। संसार में यही एक ऐसी वस्तु है जिस ने सब को एकसमान एक स्थान पर आ खड़ा कर दिया है। इस का सभी जगह साम्राज्य है, कोई इसके पाश से

(शेष पृष्ठ ९ पर)

समाचार सन्देश

पूर्वी उ० प्र० आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

सुलतानपुर गत दिवस पूर्वी उ० प्र० आर्यवीर दल का सप्त दिवसीय शिविर का शुभारम्भ दयानन्द जू० हा० स्कूल शास्त्रीनगर सुलतानपुर मे प्रदेशीय आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री बेचनसिह मिर्जापुर द्वारा ध्वजोत्तोलन एव वदिक राष्ट्रगान के साथ सम्पन्न हुआ। इस शिविर मे ४०० आर्यवीरो ने भाग लिया।

श्री बेचनसिह ने आर्य शिविर की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस से क्षत्र सुसस्कारित होगे। आर्यवीर दल के प्रदेशीय सचालक श्री अवध बिहारी खन्ना वाराणसी ने वतमान युवक पीढी की कुत्सित मनोवृत्ति का चित्र खीचते हुए छात्रो से आर्यवार बनने का शिविर के माध्यम से आह्वान किया, शिविर के सरक्षक श्री रामकिशोर त्रिपाठी ने वैदिक जीवन आदर्शों पर प्रकाश डाला। वक्ताओं मे सर्व श्री रामकृष्ण जायसवाल ओमप्रकाश एडवोकेट, भीमकुमार सिह मल्ल प० राम अविनाश त्रिपाठी एव धुरेन्द्रसिह शिविरार्थियो को अपना आशीर्वाद देते हुए शिविर को साधना स्थलीय के रूप मे अपनाने का आग्रह किया।

इसी अवसर पर दयानन्द जू० हा० स्कूल के निर्मित ३ कक्ष श्री रामहृदय जायसवाल कक्ष श्री सतीशचन्द्र चोपडा कक्ष, श्री स्व० जगबहादुरसिह कक्ष का उद्घाटन फैजाबाद के सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री माताप्रसाद त्रिपाठी के द्वारा सम्पन्न हुआ। सभी अतिथियो का स्वागत शिविर सयोजक एव प्रधानाचार्य श्री प्रयागदीन जायसवाल एव अम्बिकाप्रसाद चौरसिया द्वारा किया गया।

अन्तिम दिन समापन के अवसर पर प्रात यज्ञ के पश्चात् दिल्ली के सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हस तथा सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् आचार्य प्रज्ञामित्र फैजाबाद की विशेष उपस्थिति मे शिविर मे भाग लेने वाले ४०० शिविरार्थियों का [illegible] सस्कार तथा प्रतिज्ञापत्र कार्यक्रम अत्यन्त प्रेरणादायी [illegible] रहा।

सायंकाल राजर्षि रणञ्जयसिह [illegible] की अध्यक्षता में आर्यवीरों का शारीरिक प्रदर्शन हुआ। छात्रो के सामूहिक नेतिक्रिया, नेत्रक्रिया तथा दण्ड चालन का कायक्रम अनोखा था। श्री सजय कुमार अरोडा गोंडा का सिर एव जाघ पर रखकर टयूबलाइट फोडना श्री शभूराम द्वारा बाह पर ईंट रखकर फाडना भी अत्यन्त प्रशसनीय रहा। दीक्षात भाषण के अन्तर्गत श्री बालदिवाकर हस जी ने सभी प्रशिक्षार्थियो से स्वामी दयानद की कठोर तपस्या से प्ररणा लेते हुए वदिक धर्म प्रचारार्थ शिविर से घर जाने के बाद भी कभी निराश न होने का आग्रह किया।

राजर्षि रणञ्जयसिह ने आग्रह किया कि प्रशिक्षार्थियो को मातृदेव पितृदेव, एव आचार्यदेव को भावना से जीवन यात्रा करनी चाहिए। अन्य वक्ताओं में श्री दीनानाथ मुन्शीगज, रमाशकर जी किराकत, अशोक त्रिपाठी वाराणसी, डा० राजेन्द्रप्रसाद कूतपुर, श्री ओमप्रकाश एडवोकेट प्रधान भीमकुमार सिह मल्ल अधिष्ठाता, श्री बेचनसिह सचालक श्री उदयबिहारी खन्ना, श्री मुन्नीलाल जी किराकत सरक्षक श्री रामकिशोर त्रिपाठी कार्यक्रम सचालक श्री रामकृष्ण जायसवाल, उपसचालक श्री प्रयागदीन जायसवाल ने प्रशिक्षार्थियो को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर दयानन्द जू०हा० स्कूल के सभी अध्यापक श्री उदयराज प्रजापति कार्यालय इन्चार्ज श्री रामलाल मौय राशन इन्चार्ज, श्री उमाशकर द्विवेदी श्री सूर्यनाथ पाण्डेय धनपतगज, श्री जटाशकर तिवारी श्री जगदीश मिश्रा ने मैस का कार्यभार देखा, श्री हौसिलाप्रसाद तिवारी, श्री रामकेवल जायसवाल यज्ञ को व्यवस्था को अच्छे ढग से सम्पन्न कराया। श्री चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र एव श्री बैजनाथसिह ने अतिथियो का स्वागत किया। इस शिविर को सम्पन्न कराने मे मुख्य रूप से श्री प० रामकिशोर त्रिपाठी एव श्री प्रयागदीन जायसवाल का विशेष सहयोग रहा।

प्रयागदीन जायसवाल
शिविर सयोजक

आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका कीनिया-नेरोबी की [illegible] निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका अपनी स्थापना काल से ही पूर्वी अफ्रीका ही नहीं अपितु भारत से दूर सभी पार देशीय क्षत्रो मे वदिक मन्तव्यो और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा सस्थापित आर्यसमाज के सिद्धातो के प्रचार प्रसार मे लीन रहा है। आज भी यह सभा पूर्व मर्यादाओ को सुरक्षित रखता हुआ आगे ही आगे बढता जा रहा है। इस वर्ष सभा का निर्वाचन २४ नवम्बर १९८४ ई० को सवसम्मति से दो वर्ष के लिए अर्थात १९८६ ई० तक अतीव प्रसन्नता एव सदभावनाओ से परिपूर्ण वातावरण मे हुआ। निर्वाचन के पश्चात सभाप्रधान श्री हरबशराय जी साही ने अपने साथियो को साथ लेकर युगाण्डा तनजानिया और कीनिया आदि सभी प्रदेशो की आर्यसमाजो का दौरा किया और आर्य बन्धुओ को मिलकर उत्साह प्रदान किया। इस दौरे का बडा ही सफल प्रभाव रहा।

इस वर्ष की गतिविधियो मे उल्लेखनीय कार्य कीनिया राष्ट्र मे ईसाई और इस्लाम धर्म के साथ साथ हिन्दू धर्म की शिक्षा को भी अनिवार्य रूप से लागू कराने का भरसक यत्न है। इस राष्ट्र की सरकार ने धर्मशिक्षा सभी शिक्षण संस्थाओ मे इसी सत्र (Session) से पाठयक्रम मे निर्देशित कर अनिवाय कर दो थो। किन्तु इसमे केवल इस्लाम और ईसाई धर्म को ही लिया गया था। हिन्दू धर्म का कही भी नाम नही था। सभा के अधिकारियो श्री० डा० वदीराम जी शर्मा के अनथक प्रयत्नों से इस सरकार ने हिन्दूधम को भी पाठयक्रम मे सम्मिलित करना स्वीकार कर लिया। किन्तु हिन्दूधर्म का मार्ग अन्य धर्मों के समान सरल नही था। फिर भी डा० शर्मा जी ने हिन्दू-धर्म का पाठयक्रम तैयार किया और सरकार के शिक्षा मन्त्रालय को मेरे माध्यम से भेजा। किन्तु हमारे ही कई अन्य विचारो वाले सज्जनो ने अपने आप को हिन्दूधम के शीर्षक से युक्त पाठयक्रम को स्वीकार करने मे कुछ बाधाए उपस्थित की। इन सभी बाधाओ को भी डा० वदीराम जी ने बडी ही सूझ-बूझ से राज्य सरकार को पूरी तरह सन्तुष्ट करके और दूसरे भाइयो को भी समझाकर शान्त किया और परमात्मा की कृपा मे हिन्दूधर्म को भी इस राष्ट्र के बच्चे पढने का अवसर प्राप्त कर सकेंगे। डा० साहिब सरकार की शिक्षा नीति के पैनल पर एक वरिष्ठ सदस्य के रूप मे मनोनीत हैं। और इनसे आर्य समाज का मान और आन को सर्वोपरि प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। डा० साहब आजकल धर्मशिक्षा के अध्यापकों को तैयार कर रहे है और स्वय सभी मुसलिम, जन सिख, ईसाई विद्यालयो मे जाकर हिन्दूधर्म पर अपने भाषण देते हैं। इस प्रकार सभा वैदिक धर्म के प्रचार मे दत्तचित्त है।

लखनराम साही
(हरबशराय साही)
सभा प्रधान

निर्वाचन सूची १९८५-८६ के दो वर्षों के लिए

श्री हरबशराय जी शाही सभाप्रधान
श्री महेन्द्र जी भल्ला वरिष्ठ उपप्रधान
श्री शीलकान्त जी वर्मा उपप्रधान मम्बासा (समुद्र तटीय क्षेत्रार्थ)
श्री राजेन्द्रपाल जी चड्ढा उपप्रधान किसुमू (पश्चिमी क्षेत्रार्थ)
श्री बलवीर जी ढाडा महामन्त्री
श्री मधुकुमार जी भल्ला उपमन्त्री एलडोरेट
श्री वीरेन्द्र कुमार जी वर्मा उपमत्री
श्री गिरधारीलाल जी सेठी कोषाध्यक्ष
श्री धर्मेन्द्र जी कपिला सह-कोषाध्यक्ष
श्री अमरनाथ जी फक्के वेद-प्रचाराधिष्ठाता
श्रीमती निर्मला वशिष्ठ पुस्तकाध्यक्ष

१. इन्हीं के साथ चौदह सदस्य अन्तरग सभा के लिए निर्वाचित हुए।
२. श्रद्धानन्द नर्सरी स्कूल के लिए श्री नवलकुमार भल्ला निर्देशक और श्रीमती पुष्पा मदन, मैनेजर निर्वाचित हुए।

प्रमाणित प्रति
सभा प्रधान

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पर समारोह पूर्वी दिल्ली में विशाल सभा

१७ नवम्बर दिल्ली। आर्यसमाज गीता कालोनी मे पूर्वी दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो की ओर से एक विशाल सभा आयोजित की गई। जिसमे वैद्य रामकिशोर, श्री वेदप्रकाश क्षेत्रीय, श्री डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव सभा प्रधान आदि वक्ताओं ने महर्षि दयानन्द के जीवन एव मन्तव्यों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर पूर्वी दिल्ली के हजारो [illegible] उपस्थित थे।

शाक में मांस परोसा

आज दिनांक ३।११।८५ के आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग मे यह जानकर बडा आश्चर्य और दुख हुआ कि अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय मे २८।२९।३० अक्तूबर १९८५ को अन्तर्राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक सम्मेलन सम्पन्न हुआ। जिसके सन्दर्भ मे सुलेमान हाल मे आयोजित रात्रि भोज मे शाकाहारी अतिथियो को अलग भोजन व्यवस्था मे पूर्व नियोजित ढग से शाक मे मास का मिलावट की गयी। जिससे मेहमानो मे रोष व्याप्त हो गया और उस घृणित काण्ड की अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के एक रीडर ने पुलिस मे एफ आई आर दर्ज कराई। इस घटना से आर्य जगत की धार्मिक भावना को ठेस पहुची है। सत्सग मे अनेक वक्ताओं ने घोर निन्दा की।

हम जिला प्रशासन से अपेक्षा करते है कि वे इस घटना को गम्भीरता से लें और दोषी व्यक्तियों को उचित दण्ड दिया जाय ताकि भविष्य मे इस प्रकार की पुनरावृत्ति न हो।

सत्यपाल पचनदा
प्रधान

एक भाषा व एक लिपि से राष्ट्रीय एकता सम्भव

लालगज (रायबरेली) बेसवारा डिग्री कालेज (महाविद्यालय) में प्रख्यात महिला उद्धारक, राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने राष्ट्रीय एकता व अखण्डता विषय पर भाषण देते हुए कहा कि राष्ट्रीय एकता नारो व बातो से नही होगी इसके लिए सामूहिक कदम उठाने पडगे। देश की एक ही भाषा हिन्दी व सभी राज्यों की भाषाओ की लिपि भी एक ही देवनागरी होनी चाहिए। देश मे सब के लिए एक ही कानून भी होना आवश्यक है। सम्प्रदाय विशेष के लिये अलग से कानून बनाना अनुचित होगा।

श्री आर्य ने कहा कि एकता के लिए विद्यार्थियो मे देशभक्ति, त्याग व तपस्या की भावना छोटेपन से ही उत्पन्न करना आवश्यक है। शिक्षा ग्रामीणोय हो जहा गरीब अमीर एक साथ रहे तथा शिक्षा प्राप्त करें।

कालेज के प्राचार्य श्री अमरबारी सिह ने श्री देवीलाल आर्य का भव्य स्वागत किया तथा आभार प्रकट किया। रात्रि मे वेदप्रचार सघ के तत्वावधान में प्रयाग मार्ग चौराहा पर आयोजित विशाल सभा मे श्री देवीदास आर्य का अभिनन्दन किया गया। श्री आर्य ने छुआछूत व जातिवाद को छोडने पर बल दिया। सभा की अध्यक्षता श्री रामकुमार रस्तोगी ने की।

रामकुमार रस्तोगी
आर्यसमाज

आर्यसमाज गोविन्दपुरी का वार्षिकोत्सव

वतमान सन्दर्भ मे चार सूत्र

—यशपाल सुधाशु

आयसमाज गोविन्दपुरी का मुख्य अधिवेशन २४ नवम्बर को बड समारोह पूवक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री रामसरण दास आर्य, श्री यशपाल शास्त्री, श्री बलजीत शास्त्री श्री यशपाल सुधाशु आदि वक्ताओं ने उदबोधन दिया। आर्यसन्देश के सम्पादक श्री सुधाशु ने कहा, वर्तमान सन्दर्भ मे आर्यसमाज की दीप शिखा को और भी अधिक प्रज्वलित और उद्बुद्ध करने के लिए चार सूत्रो को अपनाने की नितान्त आवश्यकता है। और वे सूत्र हैं—१. सेवा २ स्वाध्याय ३ सत्सग सहयोग ४ परस्पर सहयोग।

आयसमाज का इतिहास सेवा का ज्वलन्त उदाहरण है। महर्षि दयानन्द के अनुयायियो ने सेवा करते करते अपने बलिदान दिये हैं। उन्हें आदर्श मानकर हम यह स्मरण रखें कि अपने मन्दिर मे हम सेवा की पवित्र भावना से प्रवेश करें न कि पद और मान पान की इच्छा से। उन्होने कहा इस समय हमारा स्वाध्याय कम होता जा रहा है। आर्यसमाज के पुस्तकालयो मे घून लगने लगी है। पुराने आर्यो मे स्वाध्याय का गुण बडा विशेष था। आज हमे सत्सग मे नियमित पहुचने का व्रत लेना होगा। और गली, मौहल्लो, पार्को मे कथाओ के आयोजन किये जाने चाहिए। मन्दिरो से बाहर निकलकर वेदो का सन्देश जन जन तक पहुचना समय की पुकार है। और चौथा सूत्र है परस्पर सहयोग। आर्यसमाज मन्दिर मे आने वाले महर्षि के सभी अनुयायी समस्त भाई बहनो मे एक दूसरे के साथ बन्धुत्व का पवित्र नाता है। अत: एक दूसरे के दुख में सहभागी होना चाहिए। इस प्रकार परस्पर सहयोग अपेक्षित है।

इस वार्षिकोत्सव के पूर्व एक मनोहर वेदकथा भी हुई। जिसमें प्रवचनकर्ता श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय थे। मनोहारी गायक श्री राघव के भजन हुए।

सम्वाददाता आर्यसन्देश

आर्यसमाज सराय रोहल्ला वार्षिक चुनाव

३ नवम्बर, १९८५ को आर्यसमाज सराय रोहल्ला का १९८५-८६ के लिए वार्षिक चुनाव हुआ। जिसमे निम्न पदाधिकारी चुने गए।

श्रीमती आर शर्मा जी, प्रधान
श्री ज्वालाप्रसाद जो उपप्रधान
श्री रोशनलाल उपप्रधान
„ उत्तमचन्द मत्री
„ देवसैन बढ्ढा उपमत्री
„ रामनेहरु उपमत्री
„ ज्ञानचन्द कोषाध्यक्ष
„ सुशीलकुमार प्रचारमत्री

उत्तमचन्द्र
मन्त्री

आर्यसमाज विकासपुरी में विराट जन सभा

१० नवम्बर नई दिल्ली। आर्यसमाज विकासपुरी मे क्षेत्र के समस्त आर्यसमाजों की ओर से विराट् जनसभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री डा० महेश विद्यालकार, चौ० बख्तसिंह, श्री डा० धर्मपाल, श्री गौरीलाल शास्त्री ने अपने ओजस्वी शब्दों में महर्षि दयानन्द के महान् कार्यों और आर्यसमाज की भावी योजनाओ पर वक्तव्य दिये। क्षेत्र की धार्मिक जनता ने बढ चढ भाग लिया।

सम्वाददाता

आर्यसमाज निर्माण विहार दिल्ली-९२ का प्रथम वार्षिक उत्सव सम्पन्न

२८ अक्तूबर से ३ नवम्बर ८५ तक सैन्ट्रल पार्क निर्माण विहार मे बड समारोह पूर्वक मनाया गया। २८ अक्तूबर से २ नवम्बर तक प्रात: ७ ३० से ८ ३० बजे सामवेद महायज्ञ व रात्रि को ८ ३० से ९ ३० बजे श्री जैमिनि शास्त्री जी की वेद कथा हुई। ३ नवम्बर को प्रात ८ से ९ ३० बजे को पूर्णाहुति हुई और १०बजे से दोपहर १ बजे तक चरित्र निर्माण सम्मेलन ला० रामगोपाल जी शालवाले प्रधान सार्वदेशिक सभा की अध्यक्षता मे हुआ। श्री विद्याप्रकाश सेठो मुख्य अतिथि थे। अनेक विद्वानों ने पधार कर अपने विचार रखे।

प्रेम प्रकाश
मन्त्री
आर्यसमाज निर्माण विहार

निर्वाचन

सभा का वार्षिक चुनाव १।९।८५ को आर्यसमाज मदिर, अशोक नगर में श्री दर्शनलाल बजमानी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गए —

प्रधान श्री राजाराम आय
उपप्रधान, महाशय सुखदेव आर्य, श्री भीमसेन आर्य
मंत्री, हरीश कुमार आर्य
सहमत्री श्री चन्द्रभान सतिया, श्री भीमसेन चड्ढा
कोषाध्यक्ष श्री चन्द्रभान आहूजा
लेखापरीक्षक श्री यशपाल आनन्द
भण्डारपाल श्री नन्दलाल भाटिया

हरीश कुमार आर्य
मत्री
आर्यसमाज मदिर, अशोक नगर

श्री हरिकिशनसिह मलिक को श्रद्धांजलि

स्वर्गीय श्री हरकिशन मलिक की दर्दनाक हत्या से समस्त आर्य जगत् मे शोक व्याप्त हो गया। उनकी स्मृति मे १० नवम्बर को आर्यसमाज दीवान हाल मे एक श्रद्धाञ्जलि सभा प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता मे हुई। इस अवसर पर अनेक गण्यमान्य महानुभावो ने दिवगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धाजलियां अर्पित कीं। श्री मलिक रिटायर्ड सेशन जज दिल्ली, आर्यसमाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता दानी एव परोपकारी थे। उन्होंने सेवामुक्त होने के बाद अपना सारा समय समाज सेवा में व्यतीत किया। वे सत्यनिष्ठ मधुर स्वभाव, कर्मठ, अपनी बात निर्भयता एवं दृढ़ता से कहने में प्रसिद्ध थे। प्रसिद्ध सन्यासी श्री ओमानन्द जी ने उनको समाज सेवा एव दान के गुण की भूरि भूरि प्रशसा की। इस अवसर पर श्री डा धर्मपाल, श्री सोमनाथ मरवाह, श्री मामचन्द रिवाडी, श्री मूलचन्द आदि वक्ताओ ने उनके प्रति श्रद्धा-वचन कहे।

अनेक समाजसेवी सस्थाओ ने शोक प्रस्ताव पारित किये जिसमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, आर्यसमाज दीवान हाल आदि सस्थाएँ शामिल हैं।

निजी संवाददाता

सच्चे भारत माता के सपूतो जागो !!!

प० ब्रह्मप्रकाश वागीश, पुरोहित
आर्यसमाज शालीमार बाग, दिल्ली-५२

संसार का प्रत्येक प्राणी स्वतन्त्र रहना चाहता है। जैसे बधा पशु टूटने पर भाग जाता है, पिंजरे मे बन्द पक्षी यदि निकलने का अवसर प्राप्त कर ले तो उड़ जाता है, पकडे गए सर्प, बिच्छू आदि भी भाग जाते हैं। यहा तक कि वर्षों से चिडियाघरों से नाना प्रकार के वन्य प्राणी भागते हुए पाए जाते हैं। अभी थोड़े ही दिनों पूर्व एक चिडियाघर के तोते ने ऐसे लोहे के जंगले को काट दिया। जिसको बब्बर शेर भी नहीं तोड सकता था। उस तोते को दुबारा पकड़ कर दोहरे पिंजरे में रखा गया है। तो मनुष्य जाति का तो कहना ही क्या ?

संसार के श्रेष्ठतम व्याकरणाचार्य महर्षि पाणिनि ने कर्त्ता की परिभाषा की है जो पूर्ण स्वतन्त्र हो यथा स्वतन्त्र कर्त्ता। संसार के सभी राष्ट्र स्वतन्त्र रहना चाहते हैं। इसके लिए नाना प्रकार के युद्ध होते आये हैं तथा होते रहेगे, यह स्वाभाविक है। परिवार का प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र रहना चाहता है जिसके फलस्वरूप परस्पर मे लडाई झगडे भी देखे जाते हैं।

स्वतन्त्रता की अनेक मर्यादाए हैं। वैसे यदि सब को स्वतन्त्रता की पूरी पूरी छूट दे दी जाए तो अपना विनाश भी अवश्यभावी है। आर्यसमाज का दसवां नियम सब मनुष्यो का सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए तथा प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें। इसके आधार पर परतन्त्रता की स्वतन्त्रता है। स्वतन्त्रता वेदोक्त कानून है जिसके आधार पर चलना ही स्वतन्त्रता है।

कुछ लोग तो स्वतन्त्रता का मनमाना अर्थ करते हुए व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय, प्रान्तीय या वर्ग विशेष के आधार पर एक दूसरे पर हावी होने के लिए नर संहार पर तुलकर अपना तथा पराया अहित करने में ही लगे रहते हैं। बल्कि देखा गया है कि भारतवर्ष को छोड़कर अन्य देशस्थ वरिष्ठ अधिकारी लोग पूर्ण अन्याय पूर्वक दूसरों को दबाना चाहते हैं।

हमारे देश का सदा से ही स्वाभाविक नियम रहा है कि किसी को भी अन्याय पूर्वक न दबाया जाये। परन्तु हमारे देश पर जिन जिन लोगों ने शासन किया, उन्होंने बड़े-बड़े क्रूर अत्याचार किए। इसके लिए इतिहास साक्षी है। पुरुषोत्तम नामेश, स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा अन्य क्रान्तिकारियों की लेखावली पढ़ने से यह बात बिल्कुल सत्य हो जाती है।

किसी भी दृढ़ तथा विशाल भवन का मूल नींव के वे पत्थर होते हैं जो दिखलाई नहीं देते। इसी प्रकार से किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र के वे क्रान्तिकारी ही राष्ट्ररूपी भवन के पत्थर होते हैं जिस पर देश उन्नत रूप से खड़ा है। शोक की बात है कि उन लोगों के विषय मे, प्रामाणिक तथ्यो तथा उनके बलिदानो को जन साधारण की जानकारी से परे रखा जा रहा है।

किसी भी देश को स्वतन्त्रता दिलाने वाले मृत्यु को निमन्त्रण देकर क्यो बुलाते है। जिस मौत की बात सुनकर बडे बडे योग्य व्यक्ति भी प्राय भयभीत हो जाते हैं इसलिए कि हमारे देश मे अमानवीय अत्याचार बन्द होकर प्राणीमात्र को जीने का पूर्ण अधिकार प्राप्त हो। स्वतन्त्रता के लगभग ४० वर्ष बाद क्या हुआ तथा क्या हो रहा है ? क्या इसी के लिए स्वतन्त्रता प्राप्त की गई थी ?

स्वतन्त्रता का लक्ष्य क्या था ? सोचिए पशु-पक्षियो का वध रोका जाए। अपनी भाषा का सभी स्तरों पर प्रयोग हो तथा भारत विशाल तथा समुन्नत हो। स्वतन्त्रता के पश्चात् गोवंश का नाश, राष्ट्रभाषा की पूर्ण अवहेलना, विदेशी रीति-रिवाज, खानपान व्यवहार, माद्य मांस आदि का सेवन, अश्लीलता का जोरदार प्रचार करके युवाशक्ति को कमजोर करना और शेष भारत को पुन खण्ड खण्ड करने की मिलीभगत चल रही है।

कुत्ता कौन है ? कुत्ता कै करके वमन करके खा लेता है। इसी प्रकार हम अंग्रेजों का वमन खा रहे हैं। कुत्ते की नकल कर रहे हैं। अंग्रेजी को पूर्ण वरीयता हम दिला रहे हैं। हम विरोध ही नही करते। हम सहनशीलता का दावा करते हैं। हमें पैसा चाहिए, देश, धर्म, परिवार भाड में जाये। जहां इस विचारधारा के लोग होंगे, वहां सर्वनाश ही तो होगा।

ऐ भारतवासियो, यदि आप में उन क्रान्तिकारियों का खौलता हुआ रक्त है तो क्यो नहीं भारत माता की रक्षार्थ सर्वस्व अर्पण कर देते। भारत माता के टुकडे करने वाले तथा पृथकता की मांग करने वाले कपूत हैं, सपूत नही। उन्हें चाट जाओ। उन्हें खतम कर दो।

याद रखो किसी वृक्ष के मूल मे पानी डालने से वृक्ष बढ़ेगा, फलेगा, फूलेगा भी। इसी प्रकार यदि देश बचेगा तो घर, सडक, बाग बगीचे, नाना प्रकार के विज्ञान, कारखाने खेत व्यापार तथा जन समुदाय बचेंगे अन्यथा नही। देश को बचाओ।

याद रखो प्रत्येक राष्ट्र अपने देश की पूर्व निर्धारित मान्यताओ के आधार पर चलता है। धर्मशास्त्र और परम्पराएं उसका मार्ग दर्शन करती हैं। स्वतन्त्र राष्ट्र का संविधान होता है। पर हमारे देश के आकाशवाणी, दूरदर्शन, समाचार पत्र और राजकीय अधिकारी नये ढग से नये रास्ते पर चल रहे है।

किसी भी देश की स्वतंत्रता 'करो या मरो' पर आधारित होती है। देवासुर संग्राम सर्वविदित है। महाभारत सर्वविदित है। हमारे अपने घर मे कोई आग लगाने आये, तो हम तुरन्त आग बुझाने का उपक्रम करते हैं। हमारे देश मे आग लगी है। इसे कौन बुझायेगा ? जिस देश की युवाशक्ति बुरी तरह कामाग्नि दुर्व्यसन, मद्य-पान, मांसाहार करने में लगी हो, उस देश का महाविनाश सामने ही है। अत सभी संभल जाओ। अगडाई लो। भारतमाता का अंग काटना तो दूर, छूने वालो को सपरिवार, समूल नष्ट कर दो। उन का बीज तक पृथ्वी से मिट जाए, ऐसा प्रयास करो।

जीजाबाई, लक्ष्मीबाई, सीता, सावित्री, सुलभा, दुर्गा, काली आदि की सगिनी नारियो अपनी अपनी कृपाण हाथ में लेकर नरमुण्डो को एकत्रित करके दिखा दो कि हम भारतमाता को बुरी नजर से देखने वालों की यही दशा करती हैं।

गुरु विरजानंद, स्वामी दयानन्द, चन्द्रशेखर आजाद, बिस्मिल, भगतसिंह भाई परमानन्द, सुभाषचन्द्र, बोस, वीर सावरकर इत्यादि हजारों बलिदानियो का खून, खून था पानी नहीं। यदि आप मे रक्त की पवित्रता का तनिक भी आभास है तो क्यों स्वतन्त्र देश को परतन्त्रता की ओर ले जा रहे हो। आवश्यकता इस बात की है कि हम एक जुट होकर संघर्ष करें, तभी सफल होगे। विरोध करो तन मन धन से उन नीचों का जो हमारे देश मे रहकर जी रहे हैं और गुण गाते हैं विदेशों का। अधिकार मागे नही मिलता, भुजदण्डों से छीना जाता है, सच्चाई मानी नही, मनवाई जाती है। इस काम को कुकर्मी और आत्मा से बलहीन लोग नहीं कर सकते। चोर का चोर विरोध नही करता। इस प्रकार से हम भी चोर है यदि हम अराष्ट्रीय तत्त्वों का विरोध नही करते।

यदि आप अपने को स्वतन्त्र समझते हैं तो नाम काम सभी बदलने होंगे। मुसलमान आये, उन्होने प्रयाग का नाम बदलकर इलाहाबाद कर दिया। अंग्रेजो ने भी अपने देश की भाषा और संस्कृति के आधार पर भी नामकरण किया। हमे तो अपने नाम अपने ढग से रखने चाहिए, पर हम सेक्टर रखते हैं चण्डीगढ मे, बोकारो मे और आर के पुरम मे क्यो ?

तुम सब को महापाप लगेगा यदि भारतीयता को तिलाजलि देकर अपने घरो मे डैडी, मम्मी, पापा इत्यादि महापातक शब्दो का प्रयोग करोगे। इन शब्दो का अर्थ मृत और पापी का बोधक है। टीटू, नीटू, रीटू चीटू, पप्पू, गुडडू शब्द भी घरो में घुस गए हैं। हम लोग चोटी और जनेऊ छोडकर भद्दी वेषभूषा अपनाकर हीजडे बन रहे हैं। नारी विदेशी नर बनने की इच्छा कर रही है।

भाइयो ! कहां तक लिखूं। यदि ठीक ढग से लिखूं तो रोना आता है। तथा विशाल ग्रन्थ बन जाये। आज हर घर का प्रत्येक सदस्य भारतवर्ष का परम शत्रु बन रहा है। विवाह, भोज, चुनाव सभा, खेलकूद आदि सभी मे विदेशीपना है। ऐसा लगता है कि अपने देश मे कुछ ग्राह्य रहा ही नहीं। जो संसार लगभग दो अरब वर्ष तक भारतवर्ष के चक्रवर्ती राज्य की व्यवस्था के अन्तर्गत चलता रहा, वह आज घुटने टेक चुका है। हमी मे खोट है।

कुछ लोग हैं, जो पूर्ण भारतीय हैं पर वे अत्यल्प हैं। उन्हें राजसत्ता, जनसत्ता, वर्गसत्ता तथा धन आदि

(शेष पृष्ठ ११ पर)

एक घटना और एक दुर्घटना

लेखक—म०म० आचार्य विश्वश्रवा व्यास वेदाचार्य एम० ए०
वेदमन्दिर बरेली

(घटना)

दीवान बहादुर बाबू हरबिलास जी शारदा उन व्यक्तियों में से थे जिन्होंने महर्षि के दर्शन किये थे। वे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की अनेक बातें सुनाया करते थे। दीवान बहादुर साहब जीवन भर परोपकारिणी सभा के सदस्य रहे।

डा० रघुवीर संसार प्रसिद्ध महान् रिसर्च स्कालर थे। दीवान बहादुर साहब ने डा० रघुवीर को परोपकारिणी सभा में महर्षि के ग्रंथों के सम्पादनार्थ रखा। डा० रघुवीर कुछ काल अजमेर में काम करते रहे पर डा० रघुवीर यह चाहते थे कि महर्षि के ग्रन्थों पर उनका नाम सम्पादक के रूप में छापा जावे पर दीवान बहादुर साहब ने इसे स्वीकार नहीं किया और स्पष्ट कह दिया कि आप रहें या न रहें पर महर्षि के ग्रन्थों पर केवल महर्षि का ही नाम रहेगा अन्य किसी का नहीं। डा० रघुवीर छोडकर चले गये। दीवान बहादुर साहब ने कोई परवाह नहीं की। अतः आर्यजगत यह देख ले कि परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाशादि ग्रन्थों पर महर्षि का ही नाम है। अन्यत्र प्रकाशित प्रत्येक ग्रंथ पर लम्बी लम्बी भूमिकाएं इसका गलत उसका गलत केवल हमारा सही है। ऐसी तू तू मैं मैं ग्रन्थ से पूर्व भरी रहती है।

(एक दुर्घटना)

महर्षि वेद विज्ञान विद्यापीठ नोएडा गाजियाबाद में अनार्ष ग्रंथों की परीक्षाएं तोडकर आर्ष पाठविधि से प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, आचार्य परीक्षाओं का कोस बनाया गया है। संस्कृत यूनीवर्सिटी वाराणसी ने उसे स्वीकार करके मान्यता भी दे दी। पर अभी उस में कुछ सुधार की आवश्यकता है अतः महेश योगी जी को सत्यार्थप्रकाश संस्कारविधि में लिखित आर्ष पाठविधि देखनी थी। मैं तदर्थ महात्मा अमर स्वामी जी के आश्रम, गाजियाबाद गया कि सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि वहां मिल जायगे।

महात्मा अमर स्वामी जी उस सत्यार्थप्रकाश को लिये बैठे थे जो ताम्रपत्र पर अंकित कराया गया है उसकी भयंकर अशुद्धियों पर निशान लगा रहे थे। वे सब अशुद्धियों को संग्रह करके परोपकारिणी सभा को भेजेंगे कि ऐसा अशुद्ध सत्यार्थप्रकाश ताम्रपत्र पर अंकित कराया गया है। मेरे पास वह ग्रन्थ नहीं था मैंने पहलीबार उसे देखा। कुछ स्थल मैंने भी देखे जैसे सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में निरुक्त के नाम से प्रमाण दिया है—

'ऋषयो मन्त्रदृष्टयो
मन्त्रान् सम्प्रादु।'

पर ऐसा पाठ निरुक्त में कहीं नहीं है। ये तीन स्थानों के टुकड़े हैं ऐसा छापना चाहिए—ऋषय मन्त्रदृष्टय• मन्त्रान् सम्प्रादु

(एक भयंकर धक्का)

दीवान बहादुर साहब ने सत्यार्थ प्रकाश के टाइटल पेज पर भी डा० रघुवीर का नाम देना स्वीकार नहीं किया पर इस ताम्रपत्र वाले सत्यार्थ प्रकाश पर सत्यार्थप्रकाश के प्रत्येक पृष्ठ पर सेठों के नाम, दुकानदारों के नाम फर्मे के नाम, कम्पनी के नाम पूर्ण पते सहित ताम्रपत्र पर अंकित किए गए हैं। सत्यार्थ-प्रकाश को ताम्रपत्र पर अंकित करके अमर नहीं बनाया गया है। प्रत्युत सत्यार्थप्रकाश की छाती पर व्यापारियों को पूर्ण पते सहित ताम्रपत्र पर अंकित किया गया है। इसीलिए उन्होंने धन दिया होगा। उस दृश्य को देखकर एक गहरा धक्का मुझे लगा। यदि आज दीवान बहादुर साहब जीवित होते तो ऐसा जघन्य कृत्य कभी न होता। पता नहीं परोपकारिणीसभा के लोग कुछ देखते हैं या नहीं। वह सत्यार्थ प्रकाश लगता नहीं। फोलियो सत्यार्थ प्रकाश का ऐसा नहीं जो मुद्रित सत्यार्थप्रकाश पर जैसा डाला जाता है। सार्वदेशिक सभा को इस दृश्य का ज्ञान नहीं है। आर्यजगत को चाहिए कि इस ताम्रपत्र वाले सत्यार्थ प्रकाश को गलवा देवे यह आर्यसमाज के इतिहास में एक कलङ्क है। ●

जीवन संगीत

(पृष्ठ २ का शेष)

बचा नहीं है। कृष्ण भगवान् ने गीता में बड़े सुन्दर शब्दों में कहा है—

जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु।
ध्रुवं जन्म मृतस्य च।

यही बात किसी सन्त ने इस प्रकार कही है—

अस्मिन् परिवर्तनशील संसारे
मृत को वा न जायते।

इसकी शाश्वतता को ध्यान में रखते हुए स्वर्गीय स्वामी केवलानन्द जी ने भजन की एक कली में कैसा सुन्दर कहा है—

यहां बड़-बड़ विद्वान् हुए,
बलवान हुए धनवान हुए।
पर मौत के पंजो से केवल,
कोई रचना में आकर बचा न॥

इस मृत्यु के शासन को वेद में भी बड़े मार्मिक शब्दों में इस प्रकार वर्णन किया गया है—

मृत्युरीशे द्विपदा
मृत्युरीशे चतुष्पदाम्।
तस्मात्त्वां मृत्योर्गोपते-
रुद्भरामि सभाविभे॥
अथर्ववेद ८।२।२३

अर्थात् मृत्यु दो पायों व चारपायों पर एक सम शासन करती है। परमात्मा कहता है कि आ, मेरे पास आ, मत भयभीत हो क्योंकि उस भूपति मृत्यु से तो केवल मैं ही तुम्हें ऊपर उठा सकता हूं। प्रसिद्ध पाश्चात्य चिन्तक (Andrew Jackson) ने भी इस मृत्यु के शासन की इस प्रकार पुष्टि की है—

When death comes, he respects neither age nor merit He sweeps from this earthly existence the sick and the strong the rich and the poor and should teach us to live to be prepared for death

अतः सिद्ध हुआ कि मृत्यु कभी भी और किसी को भी आ दबोच लेती है यह एक अतिथि की तरह है जिसका सत्कार करना हमारा कर्तव्य है। यह टाला जाने वाला कोई साधारण निमन्त्रण नहीं समझना चाहिए।

बन्धुओ! हमें चाहिए कि इस क्षण भंगुर संसार में इस नश्वर जीवन की असारता को समझ कर इसके पालन पोषण में ही आसक्त होकर अपना बहुमूल्य समय व्यर्थ नष्ट न करें। बुद्धिमत्ता तो इसमें है कि मौत रूपी वज्र गिरने से अचेत होने से पूर्व ही—

'प्रणीति अभिआवर्तस्व
विश्वेभि सखिभि सह।"
अथर्व-७।१०५।१

वेद विहित कार्यों-व्यवहारों को करते हुए उस आनन्दस्वरूप हिरण्यरूप को अपना रक्षक बना ले—

'अग्नि पुरा तनयित्नोर चित्ताद्धि-
हिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्।
ऋग् ४।३।१

यही बात उपनिषद में भी कही है—

'महद्भयं वज्रमुद्यतम् य
एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति।'

इसी क्रमिक जीवन परिवर्तन को विद्वानों ने 'जीवन संगति' के नाम से पुकारा है उर्दू में इसे 'तराने जिन्दगी और अजल भाषा में इसको कहा गया है। इस जीवन संगति को एक उर्दू शायर ने दरिया के रूप में सम्बोधित करके उससे ऐसे कहलवाया है। यह रचना दो वर्ष पुरानी है।

शायर दरिया से—

सुना प्यारे दरिया
कुछ अपनी कहानी,
कहा से तेरा बहना
आता है पानी।
किधर जा रहा है
टहलता - टहलता,
कदम तोल-तोल और
बल-बल है चलता॥

दरिया का उत्तर—

पहाडी है अपनी
जन्म भूमि प्यारी,
झडी पै थी बसा
की हस्ती हमारी।
था ऊंचे पै सूत के
इन अपना भूला,
चमन चार सू
जिसके था एक फूल
निकल आया इकदिन
मैं दीवाना बनकर,
मचाता चला शोर
खा-खा के चक्कर।
कहीं फूल थे मुझे
पै झुक झुकके आते,
लजा करते होंठों
में कुछ मुस्काते॥
पहाडों के नीचे मैं
बहुत उछला कूदा,
किनारों के अन्दर
चला में मटकता।
मगर अब गया वह
खुशी का जमाना,
वह जाता रहा मोजो
का सब तराना॥
अब तो आता है कानों
में शोरे समन्दर,
गया कोई दम में
पियरो के अन्दर॥

अतः अन्त में यही कहूंगा कि हमारे पाठको! यदि जीवन को सफल करना चाहते हो, और मृत्यु के भय से बचना चाहते हो तो—

"नारायण दो चीजों का ध्यान रख, यदि चाहता है कल्याण।
याद करने को मौत,
भजने को श्री भगवान्॥ ●

जीवनोपयोगी प्राण-शक्ति

—सोमवेद

★

प्राचीन योग शास्त्रियों ने प्राण विद्या का विकास किया, जिससे प्रत्येक मनुष्य स धन विहीन होने पर भी अपने जीवन मे स्वास्थ्य-लाभ कर सकता है उन्होने प्राणायाम नामक एक ऐसी क्रिया का आविष्कार एव प्रयोग किया जिसमे मानव शरीर मे होने वाले प्राण का नियमन एव सवर्धन मनुष्य के हाथ मे हो गया। मनुष्य ने इसमे न केवल शारीरिक स्वास्थ्य लाभ ही किया, अपितु मन का वशीकरण भी कर लिया।

मुख्य प्राण दस है—प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय।

प्राण—आख, कान मे मुख-नासिका द्वारा निकलता हुआ ठहरता है। भीतर के दूषित परमाणु बाहर निकालता है। भुक्त अन्न को पुरीष, जल को स्वेद एव मूत्र और रसादि को वीर्य बनाना प्राण का ही काम है। इसके स्वस्थ रहने से पुरुष का वीर्य बढता है एव हिमवत् जमता है। तथा स्त्री के रजोविकार नष्ट हो जाते हैं।

शरीर के ऊपरी भाग मे यह कार्य करता है। इस प्राण के साथ सूर्य का मुख्य सम्बन्ध है। क्योकि दोनो तैजस हैं। इसी कारण परमेश्वर ने शरीर के ऊपर के भाग मे नेत्रों को बनाया है। इसी सम्बन्ध से सूर्योदय होने पर नेत्रों की शक्ति बढती है।

अपान—दूषित वायु को गुदा द्वार से निकालता है। गुदा से मल, उपस्थ से मूत्र और अण्डकोष से वीर्य निकालता तथा गर्भ को नीचे ले जाता है। स्त्री गर्भाधान के समय वीर्य को इस अपान वायु से ही ग्रहण करती है। अतएव अपान वायु के अशुद्ध-बिगडने पर गर्भ स्थिति नही होती।

शरीर के नीचे का भाग इसके आधीन रहता है। पार्थिव अग्नि के सम्बन्ध से अपान की चाल नीचे को है।

जठराग्नि भी पार्थिव ही है। इस के ठीक रहने से अपान वायु की समता और अन्यथा होने से विषमता हो जाती है। इसी कारण अपान वायु के कुपित होने से रोग हो जाते हैं। स्वप्न में वीर्य-पात होना भी अपानु वायु के (बिगडने पर) निमित्त कारण से होता है।

प्राण व अपान का परस्पर सबन्ध यह है कि जिस नाडी से अपान वायु नीचे को जाता है उसी नाडी से ऊपर को वाणी निकलती है। इसी कारण बोलते समय अपान वायु नही निकलता अथवा जब अपान वायु निकलता है तब बोल नहीं पाते। अत इस प्रक्रिया का भी ध्यान रखना अनिवार्य है।

समान—शरीर में सर्वत्र रस पहुचाता है। अर्थात् भुक्त अन्न-जल को पचाकर शरीर के सब अ गों (अस्थि, मेदा, चर्म, बनाने वाली नाडियों) को तदनुकूल यथायोग्य विभाग देता है।

व्यान—कमल के तुल्य आकार वाले हृदय मे ही यह रथ रूपी शरीर का स्वामी जीवात्मा रहता है। इसी हृदय में एक सौ एक नाड़ी हैं। इन एक सौ एक नाडियों मे से एक एक की सौ-सौ शाखा नाडी फूटती हैं। अर्थात् मूल एक सौ एक नाडियों मे एक-एक मे सौ-सौ शाखा निकलती हैं। उन शाखा नाडियों मे से एक-एक के बहत्तर-बहत्तर हजार प्रतिशाखा नाडिया होती हैं। इन मूल और प्रतिशाखा रूप सब नाडियो मे व्यान प्राण विचरता है। शरीर में सर्वत्र गति करता है। जिससे शरीर में चेष्टा आदि कर्म, जीवात्मा मन के सयोग से करता है। सूक्ष्म एव स्थूल नाडियों मे रक्त सचार करना भी इसी का कार्य है।

उदान—कण्ठमूल में रहता हुआ शिरपर्यन्त गति करता है। शरीर को उठाये रखना और बल-पराक्रम वृद्धि करना इसका काम है। यह अन्न-पान को भीतर खींचकर समान वायु को सौंप देता है। सुषुम्णा नाडी के साथ नाभि से ऊपर की ओर उठता हुआ पुण्य-कर्म से जीवात्मा को सुख भोग की उत्तम सामग्री से युक्त तथा पापकर्म के सचित होने पर दुःख की सामग्री और तिर्यगादि योनि प्राप्त कराता है। तथा पुण्य-पाप सम होने पर मनुष्य योनि प्राप्त कराता है।

उदान प्राण के द्वारा ही शरीर के प्राण का ब्रह्माण्ड के प्राण से सबन्ध है। योगी जन इसी के द्वारा स्थूल शरीर से निकलकर लोक-लोकान्तर में घूम सकते हैं।

नाग—इसके द्वारा छींकना, डकारना, अनिच्छित का वमन करना एवं हस्तादि होते हैं।

कूर्म—इसके द्वारा शरीर मे सकोचनीय कार्य, यथा पलक मारनादि होते हैं।

कृकल—इसके द्वारा क्षुत्पिपासा-भूख प्यासादि की उत्पत्ति होती है।

देवदत्त—इसके द्वारा निद्रा, तन्द्रा, जम्हाई आदि क्रिया होती हैं।

धनञ्जय—इसके द्वारा मूर्छा, बेहोशी तथा खर्राटा भरना आदि होते हैं।

विवेचन—प्राण धारण करने की रीति जब ज्ञात हो जाती है, तब चक्षु के शक्तिहीन होने पर भी पुन उत्तम दृष्टि प्राप्त की जा सकती है। प्राण जाने की सम्भावना होने पर भी पुन प्राण की स्थिरता की जा सकती है। भोग भोगने की अशक्यता होने पर भी भोग भोगने की शक्यता हो सकती है। मृत्यु पास आने के कारण सूर्यदर्शन अशक्य होने पर भी दीर्घ आयुष्य की प्राप्ति होने के पश्चात् पुन सूर्य की उपासना हो सकती है। प्राण-रीति के अनुकूल मति रखने से यह सब कुछ हो सकता है।

प्राण, अपानादि सब प्राणो की प्रतिष्ठा यदि उत्तम रीति से की जाए तो मनुष्य ज्ञान ज्योति को प्राप्त करता है। इस ज्योति से मनुष्य मनसा, वाचा और कर्मणा शुद्ध पवित्र हो जाता है। क्योकि प्राण हमारा इन्द्रियों का राजा है।

"राजा मे प्राण" (यजु० २०।५) इतना ही नही अपितु इन्द्रियो के भोगो का स्वाहाकार जब प्राण-सवर्धन के लिए होता है तब मनुष्य अत्यन्त तेजस्वी हो जाता है। प्राण के सवर्धन एव सरक्षण से मनुष्य मृत्यु से भी भयभीत नही होता। इस भय को दूर करने में वह सफल हो जाता है। अत परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए, मेरे नाक मे प्राण स्थिरता से रहे। मेरा कान, नेत्र और प्राण छिन्न-भिन्न न होता हुआ मेरे शरीर में कार्य करे। यह प्राण मेरा मित्र बना रहे।

शरीर में प्राण की गति ठीक रहने से रुधिर की शुद्धि होती है और अपान की गति से मल-मूत्रोत्सर्ग उत्तम प्रकार से होते हैं। इन दोनों के वशीभूत होने से शरीर सम्पूर्णतया नीरोग रहता है। अर्थात् प्राण से शक्ति का सवर्धन तथा अपान से विष को दूर करके स्वास्थ्य का सरक्षण होता है।

अतृप्त इन्द्रिय होने से मनुष्य भोगों की ओर तीव्र गति से जाता है। और पतित हो जाता है। इस प्रकार भोगों मे फसे हुए मनुष्य प्राण शक्ति खो बैठते है। क्योंकि शरीर मे स्वस्थ प्राण के होने पर ही वीर्य स्वस्थ रहेगा।

जीव गर्भ के अन्दर रहता हुआ भी प्राण-अपान के व्यापार करता है। इसी कारण वहा उसका जीवन चलता है। यह प्राण ही जब प्रेरणा करता है तब जीव गर्भ से बाहर आता है।

हमारे शरीर में जो जो इन्द्रियादिक शक्तिया हैं वे सब प्राण के माध्यम से ही कार्य करती हैं। सुषुप्ति दशा मे सब इन्द्रियां तमोगुण रूप अन्धकार समुद्र में डूब जाती हैं। इसी कारण शरीर का स्वामी जीवात्मा न देखता, न सुनता और न बोलता है। क्योकि उस समय मन भी तमोगुण रूप अ धकार मे लीन हो जाता है। तब भी एक प्राण ही मनुष्य को जताता है कि वह जीवित है। प्राण के शरीर से निकलते ही सब इन्द्रियो की शक्ति भी निष्फल जाती है।

प्राण—शक्ति यज्ञ से बलवान् बनती है। अनेक अर्थों मे से यज्ञ का एक अर्थ सत्कर्म करना भी है। स्वार्थ परता से प्राण शक्ति का सकोच होता है। तथा परहित, जनता की भलाई करने से प्राण-शक्ति विकसित होती है। इसलिए(यजु० ६।११) मे कहा गया "प्राण यज्ञ के लिए समर्पित हो।" अथर्ववेद मे प्राण को औषधि कहा गया है। क्योकि जब प्राण को शक्ति शरीर से पृथक् हो जाती है तब किसी भी औषधि का उपयोग नही होता। प्राण-शक्ति के बिना मुख में पानी भी अन्दर नही जाता।

शरीर में आठ चक्र हैं। मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, सूर्य, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा और सहस्रार-इनमें प्राण कार्य करता है। क्रमश गुदा से लेकर सिर तक आठ स्थानो में ये आठ चक्र हैं। पीठ के मेरुदण्ड में इनकी स्थिति है। मस्तिष्क मे सहस्रार चक्र का स्थान है। प्राण का एक केन्द्र हृदय में है। प्राण-अपान द्वारा प्राण-चक्र की आगे पीछे गति

(शेष पृष्ठ ८ पर)

कुछ तड़प कुछ झड़प

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन अबोहर

आर्यसमाज और बाबू शिवव्रत लाल

एक नया प्रहार—सितम्बर मास के दूसरे सप्ताह के दैनिक पजाब केसरी के एक अक मे श्री खुशवन्त सिंह का एक लेख प्रकाशित हुआ। यह लेख हिन्द समाचार उर्दू में भी छपा होगा। मैं यदा कदा श्री खुशवन्त सिंह के लेखो को विहगम दृष्टि से देखा करता हूँ। यह महोदय हिन्दुओं पर विशेष रूप से आर्यसमाज पर चोट करने से चूकते नही। बलिहारी पजाब केसरी के सञ्चालको की जो हिन्दू जाति पर ऐसे कृपालुओं के प्रहार करवाने में अपनी उदारता मानते है। इस समय मेरे सामने पजाब केसरी मे छपा उपरोक्त लेख नही।

इस लेख मे श्री शिवव्रत लाल एम ए की बडाई करते हुए लिखा है कि वह बड़े योग्य और आध्यात्मिक व्यक्ति थे। वह एम ए मे एल एल डी थे। इस विभूति को प० हसराज (महात्मा हसराज) वह ला० लाजपत राय आर्यसमाज मे लाए, आर्य गजट का सम्पादक बनाया। फिर आर्यसमाज के नेताओ द्वारा दूसरे मतो की आलोचना से दुखी होकर आर्यसमाज को छोड गये। होशियारपुर के श्री फकीर चन्द इनके उत्तराधिकारी बने। शिवव्रत लाल जी राधा स्वामियो की दयाल बाग शाखा के गुरु बने और दाता दयाल नाम से सम्मानित किये जाते थे।

खेद है कि आर्यसमाज ऐसे झूठ की पोल खोलने मे प्रमाद करता है। आर्यसमाज पर बडी चतुराई से प्रहार किये जाते हैं और हमे पता ही नही चलता।

खुशवन्तसिंह जी को पता ही नही कि दाता दयाल शिवव्रत लाल आर्यसमाज में लाए नही गये, वह आप ही आए थे। इन्हे यह भी पता नही कि एक युवक को प्रोत्साहन देने के लिए उन्हें आर्य गजट का सम्पादक बनाया गया था अन्यथा आर्यसमाज मे तब प्रख्यात दार्शनिक डा० दीवानचन्द जैसे युवक आर्य गजट की सेवा करने के लिए थे। भाई परमानन्द जैसे प्रतिभाशाली तपस्वी विद्वान् की लेखनी की तब धूम मची हुई थी। श्री शिवव्रत ने आर्य गजट नहीं छोडा, उन्हे आर्य गजट छोडना पडा या ऐसे कहिए कि उन्हे आर्य गजट से हटाया गया, अनियमितता के कारण। वह अनियमितता क्या थी? इस पर अभी मैं कुछ नही लिखता। यह महात्मा हसराज जी की सज्जनता थी कि उन्होने इस पर कोई कड़ा दण्ड न दिया।

श्री शिवव्रत लाल जी तो वेदाती भी बने। वह स्वामी राम तीर्थ के भी गीत गाते रहे। फिर वेदान्त क्यो छोडा? श्रीमान् जी वह तो यहा से वहा, वहा से यहा, वहा से कही और घूमते ही रहे।

रही खण्डन के कारण आर्यसमाज को छोडने की बात सो भी खूब कही। शिवव्रत लाल जी ऋषि के गीत भी गाते रहे तब क्या उन्हे पता नही था कि आर्यसमाज अवैदिक मतो का खण्डन करता है?

राधा स्वामी मत ने क्या दूसरो का खण्डन नही किया? राधा स्वामियो की पुस्तको मे आपके सिख मत का भी खुल कर खण्डन किया गया है, पढ़ना हो तो दाता दयाल जी के उत्तराधिकारियो में से राधा स्वामी गुरु साहिब जी महाराज का साहित्य पढ लीजिए। राधा स्वामियो का स्पष्ट लेख है कि पूर्व के ऋषि, मुनि महात्मा, व्यास, वसिष्ठ रामकृष्ण और इस्लाम के नबी भी सब भटके हुए थे। दाता दयाल के जिन फकीरचन्द जी (परम दयाल) की आप स्तुति कर रहे है उनके शब्द हैं—"वो सब के सब वास्तविकता से अपरिचित थे।" राधा स्वामी गुरु जी का वचन है—

"नही आत्म परमात्म मानूँ"

फिर लिखा है "अल्लाह खुदा रसूल न मानो"

"ऋषि मुनि सब
धोखा खाया।
क्या व्यास
वशिष्ठ भुलाया॥"

ईसाई मत के सस्थापक ईसा वा जैन तीर्थङ्करों पर भी चोट की गई है। प्रमाण चाहिए तो हम दे दें। वैसे अयथार्थ अप्रामाणिक समीक्षा तो अनुचित है। यदि सभ्य समाज में विचारक शास्त्र चर्चा करते हुए युक्ति वा प्रमाणों से एक दूसरे का खण्डन करें तो इससे घबराना नही चाहिए। सन्त कबीर ने क्या खतना (सुन्नत) की, मूर्ति पूजा आदि की तीखी आलोचना नहीं की? सिख गुरुओं ने क्या दूसरों का खण्डन नही किया?

जिन परम दयाल फकीरचन्द जी की खुशवन्त सिंह बडाई करते हैं, वह परम दयाल अपने प्रवचनो में अपनी बडाई आप ही कर लिया करते थे और उनके द्वारा दूसरों का खण्डन पढना हो तो 'जनता जनार्दन' साप्ताहिक होशियारपुर का ८/१५ अप्रैल १९८१ ई० का एक ही अक आद से अन्त तक पढ ले, सब पता चल जावेगा। अत आर्यसमाज पर खण्डन का कटाक्ष करना अपनी अज्ञानता को दर्शाना है। यह सस्ती लोकप्रियता पाने के लिए एक कायरता पूर्ण प्रहार है।

यह छद्मवेशी समाज सेवक—

अबोहर मे १८-८-१९८५ ई० को एक शिव मन्दिर का शिलाविन्यास किया गया। इसके लिए अनेको लोगो को निमन्त्रण पत्र भेजे गये। शिवलिङ्ग पूजा के लिए बनाए गये इस मन्दिर के सचालक कौन हैं, यह पढकर पाठक चौक पडेंगे। उस निमन्त्रण पत्र के नीचे सचालक के रूप मे दो नाम हैं एक है श्री हसराज आर्य जो अब विधान सभा का चुनाव लड रहे है और दूसरे महापुरुष हैं डा० राजकुमार चौहान। यह श्रीमान् अब इस बढी हरियाणा के नन्मोला कस्बा के डी० ए० वी० कालेज के आचार्य हैं। यह महोदय एक ही समय में दो दो आर्यसमाजो के सदस्य रहे हैं और श्री हसराज आर्य यहा के आर्यसमाज के प्रधान रहे हैं। श्री चौहान वही महानुभाव हैं जिनको वेदों ने अपनी देहली की बलिदान शताब्दी के नगर कीर्तन का भार सौपा था। ऐसा मैंने तब पढ़ा था। आर्यसमाज को गम्भीरता से सोचना है कि वोट नोट के चक्र मे फंसे लोगों से समाज को कैसे बचाया जावे। सस्ती लीडरी के लिए आज छद्मवेश में कई प्रकार के लोग समाज का अनिष्ट कर रहे हैं। पुराने आर्य समाजी वैदिक मर्यादा वा वैदिक संस्कारों का प्रचार करने के लिए दृढ प्रतिज्ञ थे। उन्होंने कितने कष्ट सहे। वैर विरोध का सामना किया परन्तु डगमगाए नहीं। आइए! ऐसे महानुभावों से समाज को बचावें।

कुछ भूलो का सुधार—

आर्य प्रादेशिक उपसभा हरियाणा ने महर्षि बलिदान शताब्दी पर एक स्मारिका निकाली मुझे यह स्मारिका अभी अभी प्राप्त हुई है। इसमे मेरे लेख मे छापे की अशुद्धियों के कारण कुछ भयङ्कर भूलें हुई हैं। आर्य सन्देश द्वारा मैं कुछ का सुधार करना चाहता हू। कारण यह है कि यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बातें हैं—

राव युधिष्ठिर सिंह रेवाड़ी वालों की पत्नी प्रथम भारतीय महिला थी जिसे भारतीय नव जागरण के उषा काल मे किसी सस्था ने कोई पद दिया। यह रेवाडी के आर्यसमाज की प्रधान चुनी गई। स्मारिका में राव युधिष्ठिर जी की पुत्री छपा है। यह भूल छापे की है। वर्तमान केन्द्रीय मन्त्री राव वीरेन्द्र सिंह उन माताजी के प्रपौत्र है।

मेरे लेख मे कुछ पक्तियां कन्हैया लाल जी अलखधारी के बारे मे छूट गई जिससे देहरादून के महाशय मुहम्मद उमर का नाम अशुद्ध छपा है उनका नाम ऋषि ने श्री अलखधारी लिखा था। गुरदासपुर के श्री लाला हरजस राय (मौलाना अब्दुल अजीज) Extra Asstt Commissioner का नाम भी अशुद्ध छपा है। खोज करने वाले विद्वान् नोट करल। □

प्राण शक्ति

(पृष्ठ ७ का शेष)

होती है। प्राण का एक भाग शरीर की शक्तियो के साथ सम्बन्ध रखता है। दूसरा भाग आत्मा की शक्ति के साथ सदैव सबन्ध बनाये रखता है। जीवात्मा ही प्राणों का आधार है। इसी के आश्रय से शरीर के बीच प्राणो की स्थिति रहती है।

निष्कर्ष—जो मनुष्य तत्त्व से प्राण को जानता है वह जीता हुआ ससारी सुख भोगकर प्राणायामादि रूप योगाभ्यास करके आत्मज्ञान युक्त हुआ मरने के पश्चात् मुक्त हो जाता है।

पता—
डी० ए० वी० मा० स्कूल
शालीमार बाग, दिल्ली

रूढ़िवादिता के खिलाफ जंग की शुरुआत

मुस्लिम समाज इस समय बहुत घबराया हुआ है। १४०० साल बाद इस्लाम में यह भूकम्प आया है जिसने इस्लाम की खोखली पड़ती दीवारों को हिलाकर रख दिया है। रुढ़िवादिता के जालों को पकड़ने वाले मुल्लाओं के दिमाग पर शाहबानो केस ने करारा झटका दिया है। वे इस समय क्षुब्ध हैं कि कहीं अशिक्षित बहुल मुस्लिम समाज अपने अधिकारों को पहचानने न लग जाये और उनका महत्त्व समाप्त न हो जाये। सुप्रीमकोर्ट के इस फैसले को जो कुरान के दायरे के अंदर बिना पक्षपात के हैं हस्तक्षेप किये हुआ है उसे गलत साबित करने वालों के साथ हिन्दुस्तानी समाज तक सीमित नहीं हैं बल्कि इसकी सीमा संसार के सारे मुसलमान देशों का परिधि तक फैली हुई है। वास्तव में शाहबानो केस का यह फैसला इन सारे देशों को खुली चुनौती है जो धर्म की आड़ लेकर औरतों पर घोर अत्याचार करते हैं और उनका अधिकार हजम करते रहे हैं। यह क्रान्तिकारी कदम उन लोगों के विरोध में है जो आजतक औरत को उसके सही अधिकारों से वंचित करते रहे हैं। शाहबानो केस से यह स्पष्ट है कि यह लड़ाई केवल मात्र मुस्लिम महिलाओं का लड़ाई नहीं है बल्कि इस लड़ाई में हर वह औरत शामिल है जो किसी भी धर्म, समाज देश का हो और अत्याचारों को किसी भी रूप में सहन कर रही हो। सम्भवतः इसी गूढ़ता और विस्तृतता के कारण इसका विरोध इतना व्यापक हो रहा है जो कि अमानवीय है।

शाहबानो की शादी १९३२ में इन्दौर के एक वकील श्री मुहम्मद अहमद के साथ हुई थी। १९७५ तक पति पत्नी का जीवन बड़ा सुखमय बीता। मतलब जीवन के कामतो ४४ वर्ष जो बेगम शाहबानो ने अपने पति के साथ बिताये हर्ष और उल्लास से रहे। १९७५ में पति मुहम्मद अहमद ने यकायक बेगम शाहबानो को घर से बाहर निकाल दिया। बेगम शाहबानो ६९ वर्ष का बुढ़िया हो चुकी था। इस उम्र में किसका आसरा ढूंढती। कौन इस उम्र में उसे पत्नी स्वीकार करता। आखिर उसे अदालत ही एक सहारा दिखायी दी। और उसने इन्दौर के न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत में फौजदारी कानून के तहत १२५ वीं धारा में अपने पति पर ५०० रुपये प्रतिमास भरण पोषण का दावा ठोका। न्यायालय ने बेगम शाहबानो के पक्ष में निर्णय दिया और मुहम्मद अहमद को २५ रुपये प्रतिमास देने का आदेश दिया। यह निर्णय अगस्त १९७९ में दिया गया शाहबानो को यह राशि अपने खर्च के लिए बहुत कम लगा। उन्होंने मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय में न्यायिक मजिस्ट्रेट के फैसले पर पुनर्विचार के लिए याचिका दायर की। जुलाई १९८० में उच्च न्यायालय ने मुहम्मद अहमद को १७९-२० रु० प्रति माह देने का आदेश दिया। इस मुहम्मद अहमद ने सर्वोच्च न्यायालय सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल कर उच्च न्यायालय के निर्णय को गलत बताया। सर्वोच्च न्यायालय के पांच न्यायाधीशों की संवैधानिक पीठ ने इस याचिका पर सुनवाई शुरू की। इसमें प्रमुख मुख्य न्यायाधीश श्री वाई० वी० चन्द्रचूड थे। पीठ ने मुहम्मद अहमद की अपीलों को खारिज कर दिया। देश के इस सर्वोच्च न्यायालय की पीठ ने निर्णय दिया कि "एक तलाकशुदा मुस्लिम औरत तब तक अपने पूर्व पति की पत्नी कहलाएगी जब तक वह दूसरी शादी नहीं कर लेती। अतः धारा १२५ के अन्तर्गत उस महिला को यह अधिकार प्राप्त है कि उसका पति उसे जीवन यापन का खर्चा दे। पर्सनल ला के प्रावधानों को मुआवजे से कोई लेना देना नहीं है।" मुस्लिम पर्सनल ला में यह प्रावधान है कि इद्दत की समयावधि में पति अपनी पत्नी को जीवन यापन का खर्चा देगा। इद्दत तीन मास तक की वह अवधि है जिसमें पत्नी पाक जीवन जीते हुए किसी दूसरे मर्द के साथ पत्नी वाला सम्बन्ध नहीं रख सकती। इसके बाद ही वह दूसरी शादी कर सकती है। सुप्रीमकोर्ट ने अपने निर्णय में यह स्पष्ट किया कि धारा १२५ के अन्तर्गत एक मुस्लिम पति को अपनी तलाकशुदा पत्नी को इद्दत की अवधि के बाद भी जीवन यापन का खर्च देना होगा। संवैधानिक पीठ ने और स्पष्ट किया कि "सही स्थिति यह है कि यदि तलाकशुदा पत्नी जीवन यापन करने में सक्षम है तो इद्दत के बाद पति की जिम्मेदारी समाप्त हो जाती है, उसे खर्च देने की जरूरत नहीं। विद्वान् न्यायाधीशों ने कहा कि यह कहना उचित नहीं है कि एक मुस्लिम महिला धारा १२५ के अन्तर्गत जीवन यापन खर्च की मांग नहीं कर सकती। मुस्लिम पर्सनल ला में 'मेहर' वह राशि नहीं जिसे तलाक के वक्त दिया जाये।" न्यायाधीशों ने यह भी कहा कि धारा १२५ अपने चरित्र में पूरी तरह से धर्म निरपेक्ष है। यह समाज में शुद्धता के लिए प्रतिबद्ध है। संवैधानिक पीठ ने पूरे देश में सभी वर्गों के लिए समान सिविल कोर्ट बनाने का सुझाव दिया। उससे राष्ट्रीय अखण्डता मजबूत होगी। विद्वान न्यायाधीशों ने यह भी कहा—"भारतीय संविधान का ४४वां अनुच्छेद मृतपत्र" बनकर रह गया है जिसमें कहा गया है कि सरकार को पूरे देश में समान सिविल कोड लागू करने को मान्यता दिलाने के प्रयत्न करने चाहिए।

सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय को लेकर पूरे देश में एक बार तहलका मचा। सरकार के अन्दर और बाहर इसके पक्ष और विपक्ष में मत प्रकट होने लगे। केन्द्रीय सरकार के दो मन्त्रियों ने इस विषय पर बड़ी बहादुरी के साथ परस्पर विरोधी विचार व्यक्त किये। प्रबुद्ध नेता जरूर मुस्लिम समाज को समय के साथ चलने की सलाह दे रहे हैं। जनतापार्टी के महासचिव सैयद शाहबुद्दीन ने सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को मुसलमानों के धार्मिक मामले में दखल माना।

मुस्लिम पर्सनल ला में सुधार करने वाला भारत अकेला देश नहीं है। सबसे बड़े मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान में इसमें संशोधन हो चुका है १९६१ में वहां यह कानून बना दिया गया था कि कई शादियाँ करने से पूर्व सरकार की मंजूरी लेनी होगी। उसके अलावा टर्की मिस्र, इंडोनेशिया, अलजीरिया ट्यूनिशिया, मोरक्को, सीरिया, जोर्डन व सूडान आदि देशों में इसमें संशोधन हो चुका है। इन सबसे ऊपर इस्लामी गणराज्य ईरान की सर्वोच्च न्यायिक कौंसिल ने पत्नियों के हकों की रक्षा के लिए कुछ निर्देशक सिद्धांत जारी किये हैं। जिसके दो भाग हैं। शादी के वक्त मैरिज अफसर शादी के सर्टिफिकेट पर इन निर्देशक सिद्धांतों की प्रतियां नत्थी करके देता है। एक भाग में जब पति पत्नी को तलाक देता है तो पत्नी के क्या अधिकार हैं, इसका खुलासा और दूसरे में पति के अत्याचारों से तंग आकर पत्नी द्वारा तलाक दिये जाने के अधिकारों की बाबत जानकारी है। वह १२ अधिकार ईरान में पत्नी को दिये गए हैं।

और इधर भारत के मुसलमान कह रहे हैं संविधान के अनुच्छेद ४४ को या तो समाप्त कर दिया जाए अथवा मुसलमानों को इसका अधिकार क्षेत्र से बाहर रखा जाये। खास तौर पर आल इण्डिया मुस्लिम लीग के अध्यक्ष सुलेमान सेठ और मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड यह शोर मचा रहे हैं। शाहबानो बेगम ने ७ साल छोटी अदालत से लेकर बड़ी अदालत तक बड़ी दिलेरी के साथ वह मुकदमा लड़ा है। आखिर उसकी झोली में उसका मुंह मांगा फल इन्साफ के साथ आ ही गया। परन्तु कट्टरपंथी मुस्लिमों का दबाव भी उस अबला पर लगातार पड़ता रहा और वही हुआ जिसका डर था वह झुक गई। उसने सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को वापिस लेने की मांग कर दी। कुछ सुधारवादी मुस्लिम संगठनों ने यह आरोप लगाया कि रूढ़िवादी मुस्लिम संगठनों के दबाव में आकर ही उसने अपना ताजा वक्तव्य दिया है। भू० पू० मुख्य न्यायाधीश श्री वाई बी० चन्द्रचूड ने कहा है कि इस फैसले से एक सामाजिक उथल-पुथल पैदा हो गई है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि फैसले पर पुनर्विचार हो। उन्होंने कहा इस फैसले से शरीयत में हस्तक्षेप के आरोप का कोई दम नहीं है। अदालत को कुरान के संदर्भ में शरीयत की विवेचना का अधिकार है। श्री चन्द्रचूड ने कहा इस फैसले पर जो विवाद खड़ा हुआ है उसके लिए मुसलमान कट्टरपंथियों की धर्मान्धता और किसी परिवर्तन को न स्वीकार कर सकने के रवैये को ही दोषी ठहराया जा सकता है। उन्होंने कहा इस फैसले के विरोध से यह सिद्ध हो गया है कि इस तरह के फैसले की समाज में जबरदस्त आवश्यकता थी।

हमारा कहना इतना ही है सरकार ४४वें अनुच्छेद के अनुसार समस्त देश में एक कानून लागू करना चाहिए तथा समय की आवाज के साथ चलना चाहिए।

—यशपाल सुधांशु

युवा वर्ष पर आर्य युवकों के नाम सन्देश

डा० प्रशात वेदालकार

आर्य यवको !

इस समय विश्व का प्रत्येक राष्ट्र यह वष अन्त र्राष्ट्रीय यु प क रूप मे म रहा है हमारे दश मे भी ११ जनवरी १९८५ को स्व मी विवेका न्द के न्म दिवस पर हमारे युवा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी ने युवावर्ष का उद घाटन किया था और ११ जनवरी को युवा दिवस भी घोषित किया। उस समय यह आशा बधी थी कि हमारी सरकार युवा-वग को एक रचनात्मक दिशा देगी और युवा शक्ति का देश के विकास के लिए उपयोग करेगी। पर मुझे यह कहते हुए अत्यन्त दु ख हो रहा है कि युवा वर्ष समाप्त होने को है, पर अभी तक देश मे न युवको को कोई रचनात्मक दिशा दो जा सकी है न देश के विकास के लिए उनका कोई सदुपयोग किया गया है और न उनके लिए किसी काय की कोई ऐसी योजना बनी है, जिससे वे लाभान्वित हो।

युवावर्ष के नाम पर इस देश के कुछ युवक मास्को मे आयोजित युवा समाराह मे भाग लेने के लिए गये थे, पर वहा पर इन युवको ने अपनी जिस विलासी वृत्ति का परिचय किया उससे मेरे देश की प्रतिष्ठा पर आच आई। नवम्बर मास मे दिल्ली विश्व विद्यालय की ओर से निर्गुट देशो के युवको का एक सम्मेलन बुलाया गया पर यह सम्मेलन भी युवको के लिए किसी रचनात्मक योजना पर विचार नही कर सका।

मैंने बचपन मे एक कविता पढी थी, जिसकी पहली पक्ति थी—'बताए तुम्हे जवान जवानी किसको कहते है, दें जग को जीवनदान जवानी उसको कहते हैं।" इस पक्ति मे यौवन को किसी आयु विशेष के साथ नही बाधा गया, वरन उसे एक पवित्र और ऊची भावना के साथ सम्बद्ध किया गया है। युवक वह है जो स्वार्थों को तिलाजलि देकर नि स्वार्थ और परोपकार की भावना से राष्ट्र, नही नही विश्व के कल्याण के लिए आत्मसमर्पण की भावना रखता हो जिस समय महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना करके आर्यसमाज का लक्ष्य ऋग्वेद का यह वाक्य कि कृण्वन्तो विश्वमार्यम् स्थापित किया था, उस समय वे भी आर्यजन मे यही भावना भरना चाहते थे कि वे अपने स्वार्थों को छोड दें और प्रतिदिन यज्ञ करते हुए विश्व के कल्याण के लिए अपनी आहुति, आत्मबलिदान भावना से भर उठे।

याद रखो, हमे विश्व को आर्य और ससार मे जितना अशिव है, जो अकल्याणकारी है, दुष्ट स्वभाव व दुष्ट कर्म हैं उन सबको नष्ट करना है। ऋग्वेद ने ससार को श्रेष्ठ बनाने की जहा प्रेरणा दी वहा ससार की दुष्ट प्रवृत्ति को नष्ट करने का आदेश भी दिया।

याद रखो ससार को श्रेष्ठ बनाना है तो पहले हमे स्वय श्रेष्ठ बनना होगा। साधु और मानवीय दृष्टि से ऊचा व्यक्ति ही दूसरे को सत्कर्म पर प्ररित कर सकता है। जो स्वय दुष्ट है वह दूसरो की दुष्टता को दूर करने को बात सोच भी कैसे सकता है?

जब मैं तुम्हे कहता हू कि तुम अच्छे बनो तो मेरा अर्थ होता है कि तुम्हारा सारा व्यक्तित्व पूर्ण हो। तुम शरीर से पुष्ट बनो। यदि तुम शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ और दुबल हो तो तुम जीने योग्य भी नही हो। तुमने पढा और सुना होगा—वीरभोग्या वसुन्धरा यह पृथ्वी वीरो के भोग के लिए ही है। तुम्हे अपने मे वीरता की भावना भरनी होगी। वीरता के लिए अपनी मासपेशियो को पुष्ट करना होगा। उसके लिए प्रतिदिन कठिन परिश्रम और व्यायाम करने का अपना स्वभाव बनाना होगा। कालिदास ने कहा था—शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनम्। शरीर धर्म का अपने कर्त्तव्य की पूर्ति का प्रथम साधन है। यदि तुमने ससार को श्रेष्ठ बनाने का अपना कर्त्तव्य पूर्ण करना है तो पहले अपने शरीर को पुष्ट बनाओ। मुझे तुम्हे यह भी बनाना है कि वीरता वा पुष्ट शरीर म तुम्हे निर्बलो व अनाथों की दुष्ट स्वभाव से रक्षा करनी है। वीर व पुष्ट होने का अर्थ किसी को अनावश्यक रूप से दबाना या प्रताडित करना नही है।

जब मैं तुम्हे श्रेष्ठ बनने के लिए कहता हू तब तुम्हे अच्छा और तीक्ष्ण मस्तिष्क वाला बनने की भी प्रेरणा देता हू ताकि तुम अपनी प्रखर बुद्धि से अपने प्राप्त शरीर का ठीक उपयोग कर सको। तुम्हारा मस्तिष्क ऐसा हो जिसमे नीर क्षीर विवेक की क्षमता हो। सत्य को पहचानने और असत्य को त्यागने की समझ दो।

समय पर ठीक निर्णय कर सको और इतना विकसित हो कि सदा नये ज्ञान को ग्रहण करने में सक्षम हो। तभी तुम समझ सकोगे कि विश्व मे क्या हेय है और क्या ग्राह्य जब तुम्हे ससार के दुष्टों को नष्ट करने का कार्य सौंपा गया है तो बिना विवेक व ज्ञान के तुम यह काम नही कर पाओगे। ससार में कौन दुष्ट है और कौन साधु? यह बात तुम बिना अच्छे मस्तिष्क के नही जान सकते। अपना अच्छा मस्तिष्क करने के लिए तुम्हे सदा अपने माता पिता, किसी अच्छे गुरु व पथ-प्रदर्शक के सम्पर्क मे रहना होगा? उनके प्रति तुम्हे आस्था रखनी होगी। गीता मे कहा है—'श्रद्धावान लभते ज्ञानम्" श्रद्धा व विश्वास से ही मस्तिष्क मे नित नया ज्ञान आता है और विवेक शक्ति बढती है। जो विचारधारा अनास्था का प्रचार करती है वह हेय है। आज समाज मे ऐसी भौतिकता पर आधारित अनेक विचारधाराए हैं जो व्यक्ति को अनास्था का पाठ पढाकर उनके मस्तिष्क को विकृत कर देती हैं। तुम्हे उन सबसे बचना है। मैं तुम्हे कहना चाहता हू कि तुम महर्षि दयानन्द के शिष्य हो उन्हीं के ग्रन्थो का मनन करो और उन्हीं से अपनी दिशा निर्धारित करो।

पर याद रखो पुष्ट शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क वाले व्यक्ति भी भ्रष्ट आचरण के दोषी देखे गये हैं। मैं तुम्हे अच्छे चरित्र का भी उपदेश देना चाहता हू। कोई भी ऐसा काम मत करो जिसे करने पर तुम्हे गर्व न हो। अच्छे चरित्र की निशानी यही है कि व्यक्ति अपने किये हुए काम का हर जगह वर्णन कर सकता हो। यदि तुमने कोई ऐसा काम किया है जिसे तुम किसी को बता ही नहीं सकते तो वह निषिद्ध कर्म है, उससे बचो। तभी चरित्र पुष्ट होता है।

यह सच है कि आज के युग मे सत्याचरण करने व ईमानदारी से रहने में अनेक कठिनाइयां आती हैं। पर तुम जिस ऊची और महान् सस्था से सम्बद्ध हो और जिस देव पुरुष महर्षि दयानन्द की तुम सतान हो उनके लिए कुछ भी कठिन नहीं

स्मरण रखो तुमने वही काम करने हैं जो दूसरों के कल्याण के लिए हो। यदि तुम्हारे किसी काम से किसी को हानि होनी हो उसे कभी मत करो। महाभारत मे धर्म की परिभाषा आत्मन प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत' के रूप मे की गई है। दूसरे के प्रति वहा व्यवहार करो जैसा व्यवहार तुम दूसरे से चाहते हो। तुम्हारे किसी काम से किसी का दिल न दुखे। वरन तुम्हारे कामो से दूसरो का कल्याण होना चाहिए। महात्मा तुलसीराम ने 'परहित सरिस धरम नहिं कोई कहकर मनुष्य को यही प्ररणा दी थी। महर्षि दयानन्द ने भी अपने ग्रन्थो म बारम्बार यही कहा है कि ससार का उपकार करना हम सबका परम धर्म है।

मैं यह सब तुम्हे इसलिए कह रहा हू कि देश का युवा वग आज किंकर्त्तव्य विमूढ है यह कुछ करना चाहता है पर उसे कुछ सूझता नही है। उसके सामने आज कोई आदर्श नही है। मुझे विश्वास है कि दयानन्द के शिष्य उनके लिए आदर्श सिद्ध होंगे।

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की प्रेरणा से देश को स्वतन्त्र कराने के लिए इस देश के हजारो युवको ने प्राणो की आहुति दी थी। आर्यसमाज के सौ वर्षों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि आर्यसमाज ने देश की स्वतन्त्रता मे महान योगदान किया। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने विदेश मे इण्डियन होमरूल लीग की स्थापना करके वैदिक सस्कृति का प्रसार विदेशो में भी किया, जिस से देश का स्वाभिमान जागा। लाला लाजपतराय स्वामी श्रद्धानन्द भाई परमानन्द, सरदार अजीतसिंह, श्री मदनलाल ढीगरा, श्री रामप्रसाद बिस्मिल, श्री गेंदालाल, डा० रोशन सिंह जी सरदार भगतसिंह, चौ० मुख्त्यारसिंह श्री हरविलास शारदा तथा अन्य अनेक स्वतन्त्रता प्रेमियो ने महर्षि से प्रेरणा प्राप्त कर देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने को बलिदान किया। मालाबार के मोपला विद्रोह, राजस्थान व बगाल के अकाल बिहार के भूकम्प, देश-विभाजन और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सन् १९५७ में पजाब में हिन्दी, रक्षा-आन्दोलन आदि द्वारा आर्यसमाज ने सदा अन्याय के विरुद्ध सघर्ष किया।

देश को स्वतन्त्रता दिलाने मे, देश की कुरीतियों व अन्धविश्वासो को विनष्ट करने मे, देश की शिक्षा-प्रणाली में भारतीयता का स्वर

साधना-शिविर का समापन

नई दिल्ली १० नवम्बर । वेद सस्थान में आयोजित सप्त दिवसीय साधना शिविर का समापन १० नवम्बर को प्रात काल स्वस्तियाग की पूर्णाहुति के साथ हो गया। इस शिविर मे ३५ शिविरार्थियो ने यजुर्वेद के शिवसकल्प मन्त्रो का गहराई से चिन्तन किया । व्यक्ति और सपूर्ण मानव-समुदाय का विराट मन शिवसकल्प वाली अपनी स्थिति तक प्रत्येक बिखरे हुए टूटे मन को उठा सकता है, उठाना चाहता है। इस विराट मन की आकाक्षा को पूरा करने से धरती की विनाशकारी शक्तिया पराजित होंगी और विनाश के साधनो पर प्रभावशाली ढगो से रोक लगाई जा सकेगी। मानवता के विनाश को रोकने के लिए आज की यह सब से बडी और प्रथम आवश्यकता है।

इस उपयोगी शिविर मे महात्मा दयानन्द, स्वामी दयानन्द, सस्थानाध्यक्ष डा० अभयदेव शर्मा डा० बद्री प्रसाद पचोली माता नरेन्द्रार्या आदि के प्रवचनो के अतिरिक्त सध्या आसन, प्राणायाम और ध्यानविधि का अभ्यास कराया गया। वेदमन्त्रो के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास भी कराया गया। अगला शिविर मई १९८६ मे आयोजित किया जाएगा।

अभयदेव शर्मा
अध्यक्ष
वेद सस्थान, नई दिल्ली

भारत माता के सपूतो

(पृष्ठ ५ का शेष)

की सत्ता मे कुचलकर रख दिया है। पुनरपि वे अग्नि की तरह बार-बार सघर्षरत हैं। अन्त मे उन्ही का सघर्ष रग लायेगा। नकली, गद्दार, पदलोलुप, दासता की जकडी गई बेडियो वाले लोग इसी प्रकार काला मुह करके मुर्दा की जिन्दगी जियेंगे।

ओ! ऋषि महर्षि, रामकृष्ण आदि की सन्तानो आज आवश्यकता है रावण तथा कस को मारने की, जिससे भारतमाता माता बनी रहकर आपको आशीर्वाद देवे। तभी आपको और आपकी भावी सन्तान को सच्चे अर्थों मे आशीर्वाद प्राप्त होगा।

आज आवश्यकता है कर्ण और भामाशाह की। उन लोगो की आवश्यकता है जिनके हृदय पटल मे देशभक्ति की हर समय आग जलती रहती है। जो भारत विश्व को शाति दे सकता है मानवता का सदेश दे सकता है वह अन्धानुकरण कर रहा है। वह अपनी शक्ति नही पहचानता वह उस राजा के समान है जो बड़े राज्य का स्वामी होते हुए भी अपनी शक्ति को न पहचान कर अपने को केवल झोपडी मात्र का स्वामी मानता है।

आज हमारी पहली आवश्यकता है कि देशभक्तो का दृढ समान करें। क्रान्तिकारी और खून खोला देने वाले भाषणो का आयोजन करें। लेखो पुस्तको, पत्र-पत्रिकाओ आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि के माध्यम से देशभक्ति का प्रचार करें। सम्पूर्ण वातावरण को देशभक्ति की वाणी से गु जायमान कर दें। तभी हमारी नसों मे भरी दासता नपुसकता का विष निकलेगा और इनमे देशभक्ति का अमृत छलक उठेगा। घर घर प्रत्येक व्यक्ति का जीवन बोल उठेगा—भारतमाता की जय।

卐

शोक-समाचार

आर्यसमाज सान्ताक्रूज के महामन्त्री कॅप्टिन देवरत्न आर्य के अनुज भ्राता व स्वर्गीय आचार्य भद्रसेन जी के छठे पुत्र प्रियरत्न आर्य का नासिक में २७ वर्ष की अल्पायु में आकस्मिक निधन हो गया। प्रियरत्न फिल्मी दुनिया से सगीत निर्देशक के रूप में जुडे हुए थे। राजस्थानी फिल्म पिया मिलन की आस सहित अन्य कई फिल्मो में उन्होंने सगीत दिया था।

गत वर्ष महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर आपने अपने पूज्य पिता श्री की स्मृति मे 'श्रद्धा' कॅसिट तैयार किया था। जिसका विमोचन अजमेर मे निर्वाण शताब्दी के अवसर पर किया गया था, जिसकी काफी सराहना भी की गई थी।

आज शुक्रवार दिनाक १५।११।८५ को साय ५ बजे उनकी आत्मा की शान्ति के लिए आर्यसमाज मदिर सान्ताक्रूज मे शाति यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमे बम्बई महानगरी की समस्त आर्यसमाजो आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई द्वारा स्वर्गीय प्रियरत्न आर्य के कार्यो को स्मरण करते हुए उनके इस छोटी सी आयु मे चले जाने पर हार्दिक शोक प्रकट किया और अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री

शुभ विवाह सम्पन्न

आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता विश्वदेव शास्त्री की सुपुत्री उर्मिल का शुभ विवाह दिलीपकुमार सुपुत्र स्वर्गीय श्री सतीशचन्द्र जी (इजीनियर जल निगम) उ०प्र० के साथ दिनाक २७ नवम्बर, १९८५ बुधवार को आर्यसमाज हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१ मे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी व श्री यशपाल सुधाशु ने अपने आशीर्वाद दिये।

युवा वर्ष पर

(पृष्ठ ४ का शेष)

अतीत में स्त्री जाति के उद्धार में, दलित एवं अछूत कही जाने वाली जातियों के उत्थान में धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रकट करने में तथा अपने देश के गौरवपूर्ण ऐतिहासिक पृष्ठों को उजागर करने में आर्य युवकों का कार्य अविस्मरणीय है।

क्या तुम आर्यसमाज के उस गरिमापूर्ण इतिहास को स्मरण करके उसी प्रकार का आदर्श प्रस्तुत नहीं कर सकते? निश्चित कर सकते हो। यदि मन में ऊंची भावना हो। हृदय में यौवन हिलोरें ले रहा हो। और मस्तिष्क में उच्च गुबार हो तो सब कुछ हो सकता है।

आज का युवक अपने महापुरुषों से, देश के गौरवपूर्ण इतिहास से, अपने प्रेरक पर्वों से कट चुका है। आर्यसमाज उन्हें उसी जड़ से फिर से जोड़ना चाहता है। पर यह काम केवल उपदेशों से होने वाला नहीं है। उसके लिए उदाहरण चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम उनके लिए उदाहरण बनोगे और उनका मार्ग दर्शन करोगे।

युवा वर्ष में यदि तुमने यौवन के वास्तविक आदर्शों को अपने जीवन में धारण कर लिया तो उससे जहां तुम्हारा अपना कल्याण होगा, आर्य समाज का नाम ऊंचा होगा, वहां राष्ट्र भी समुन्नत होगा। विश्व को एक नई दिशा प्राप्त होगी। आओ, मेरे वीरो, कमर कस लो। एक बार संकल्प करने की आवश्यकता है फिर मंजिल तुम्हारे कदम चूमेगी।

डा० प्रशान्त वेदालंकार
७/२ रूपनगर, दिल्ली-७

गुरुकुल कांगड़ी की बैठक

(पृष्ठ १ का शेष)

लाला जी ने स्वीकार कर लिया। इस पर सभी सदस्यों ने हर्ष व्यक्त किया। तत्पश्चात अन्य विषयों पर निर्णय लिए गए। कुलाधिपति, कुलपति, मुख्याधिष्ठाता, सहायक मुख्याधिष्ठाता, आचार्य तथा आचार्या कन्या गुरुकुल देहरादून सभी ने इस संकल्प को दुहराया कि वे सभी गुरुकुल की गौरवमयी परम्परा के अनुरूप, मिलकर कार्य करेंगे और गुरुकुल को उन्नति के शिखर पर ले जाने का यथाशक्ति प्रयास करेंगे। उल्लास एवं हर्ष के वातावरण में बैठक सम्पन्न हुई।

प्रचार-विभाग
सत्यपाल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन: ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली नं० १०, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

वर्ष ९ अंक ५६ रविवार, १५ दिसम्बर, १९८५ सृष्टि सवत् १९७२९४९०८६ मार्गशीर्ष २०४२ दयानन्दाब्द—१६१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २० रुपये आजीवन २०० रुपये विदेश में ५० डालर ३० पौंड

कश्मीर से धारा ३७० को शीघ्र समाप्त कर देना चाहिए

—सूर्यदेव

आर्यसमाज पश्चिम पुरी नई दिल्ली में वार्षिकोत्सव पर ध्वजारोहण करते समय डा० धर्मपाल ने कहा—'आर्यसमाज का एक नियम है अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।' इस ध्वज के नीचे खड़े होकर हम प्रतिज्ञा करें कि अविद्या का नाश करने में हम कभी पीछे नहीं हटेंगे। कुछ समाजों के अधिकारी ऐसे उपदेशकों की माग करते हैं जो केवल मीठी भाषा बोलते हैं सकारात्मक बोलते है खण्डन की बात नहीं करते हैं। मैं कहता हूँ कि जब तक खण्डन नहीं करेंगे, जब तक बर्तन को माज नहीं लेंगे, तब तक शुद्धता कहा से आएगी। पहली बात को मिटा कर ही दूसरी बात बन सकती है। टेप पर पिछला मिटाकर ही नया लिखा जा सकता है। दयानन्द को स्वामी विरजानन्द ने कहा था जो अब तक पढ़ा है उसे भूल जाओ। इन पोथियों को यमुना नदी में फेंक कर आओ। अतः हमारा कर्तव्य होना चाहिए कि हम अविद्या का पाखण्ड का, अन्धविश्वास का नाश करने में सदा तत्पर रहे, किसी से कोई समझौता न करें।

इस अवसर पर अनेक गण्यमान्य महानुभाव उपस्थित थे। क्षेत्र के धार्मिक जनो ने उत्साहपूर्वक कार्यक्रम मे भाग लिया।

सवाददाता आर्यसन्देश

पाखंड खंडनी की आवश्यकता है

—डा० धर्मपाल

आर्यसमाज मे राष्ट्रीय रक्षा सम्मेलनों का आयोजन क्यों किया जाता है? राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा करना सरकार का दायित्व है, सेनाओं का कर्तव्य है। फिर हम क्यों इन सम्मेलनों का आयोजन करते है? इसलिए करते हैं कि राष्ट्र केवल भूभाग ही नहीं होता, राष्ट्र वहा के नर-नारी होते है। राष्ट्र वहा की आत्मा होती है। हम उनकी आत्मा की रक्षा करना चाहते है। यह रक्षा आर्यसमाज के माध्यम से हो सकती है। उसके चरित्र का निर्माण यही पर हो सकता है। हमारे राष्ट्र रक्षा सम्मेलनों के आयोजन का प्रयोजन यही है। यह उद्गार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने आर्यसमाज चूना मण्डी के वार्षिकोत्सव पर आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन मे अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहे। इस अवसर पर डा० धर्मपाल, श्री प० मदनमोहन विद्यासागर, प० क्षितीश वेदालंकार ने भी सभा को सम्बोधित किया।

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-२ के वार्षिकोत्सव पर बोलते हुए सभा प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा कि राष्ट्र रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि प्रदेश विशेष को कोई विशेष अधिकार न दिये जाय। काश्मीर को धारा ३७० को तुरन्त समाप्त कर दिया जाय। इसी धारा के लालच मे अन्य प्रदेशों के लोग अपनी अपनी स्वायत्तता की माग करते हैं और देश का विघटन का खतरा पैदा हो जाता है। □

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर

विशाल शोभा यात्रा

प्रति वर्ष की भाति इस वर्ष भी स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बुधवार, दिनाक २५ दिसम्बर १९८५ को धूमधाम से मनाया जायेगा।

इस अवसर पर प्रात १० बजे से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन (नया बाजार) से शोभा यात्रा का आयोजन किया गया है जो निर्धारित मार्ग से होती हुई लाल किला मैदान पर पहुंच कर एक जन सभा मे परिवर्तित हो जाएगी। इस सभा मे आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता तथा देश के प्रसिद्ध नेताओं के भाषण होंगे।

महाशय धर्मपाल, प्रधान — अशोक कुमार सहगल, महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा (पंजीकृत) दिल्ली राज्य
१५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१

बाबा पृथ्वीसिंह आजाद नहीं रहे

चंडीगढ़ १० दिसम्बर पंजाब के भूतपूर्व मन्त्री आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद का खरड़ मे निधन हो गया। खरड़ यहा से लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर है। पंजाब सरकार ने दिवंगत नेता के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए आज अपने कार्यालय बन्द कर दिए।

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने स्वतन्त्रता सेनानी व पंजाब के भूतपूर्व मन्त्री पृथ्वी सिंह आजाद की मृत्यु पर दुःख व्यक्त किया है।

श्रीमती कृष्णा आजाद के नाम एक संवेदना सन्देश मे राष्ट्रपति ने बाबा आजाद को एक प्रमुख साहित्य-

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक—यशपाल 'सुधांशु' एम० ए० व्यवस्थापक—डा० गणेशीलाल प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल

मुनि-चोरी के दण्ड का महत्त्व : युधिष्ठिर का विषाद : द्रौपदी-व्यास-कृष्ण द्वारा उद्बोधन : युधिष्ठिर का राजतिलक : अवबोधक प्रसंग

—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

शंख और दो भाई तपस्वी ऋषि नगानदी पर दोनों के सुरम्य वृक्षों और फल फलों से लदे आश्रम थे एक बार लिखित के आश्रम में सद्य प्रसूता गौ किसी प्रकार आश्रम से निकल रास्ता भूल भटक गई देर तक नहीं आयी। लिखित ऋषि का चिंतित हो और उसकी खोज में आश्रम से बाहर जाना स्वाभाविक ही था। काफी देर तक भटकने के बाद अपने बड़े भाई शंख के आश्रम के पास गौ मिल गई। देर तक भाग दौड़ करने के फलस्वरूप लिखित को भूख ने व्याकुल किया। उसने तत्काल बड़े भाई शंख के आश्रम में लगे पके सुस्वादु फलों से भूख की तृप्ति की। इसी समय शंख भी वहां अचानक आ गये। उन्होंने भाई को फल खाते देख उनसे पूछा कि यह फल तुमने कहां से लिये? लिखित ने समीप आ खड़े बड़े भाई को प्रणाम कर कहा यह आप के उद्यान के ही तो फल हैं। इस के साथ अपने आश्रम से गौ के गुम हो जाने और उसकी तलाश में अपनी देर तक की खोज और भूख लगने की सारी कहानी सुना दी। शंख ने इस पर अपना असन्तोष प्रकट करते हुए कुछ कर्कश स्वर में कहा तुमने मुझ से पूछे बिना स्वयं ही मेरे उद्यान में से चोरी की है इसलिए तुम अब राजा के पास जा अपने इस कुकर्म का ब्यौरा सुना। अपना अपराध स्वीकार कर राजा से समुचित दण्ड की प्रार्थना करो। लिखित मुनि बड़े भाई के आदेश से राजा प्रद्युम्न के पास गये और अपने अपराध की सारी कहानी सुना राजा से दण्ड दिये जाने का अनुरोध किया।

अपराध स्वीकृति पर राजा से दण्ड का आग्रह

राजा बड़े असमंजस में पड़ गये उसने तत्काल मंत्रिमण्डल की बैठक बुलाई। मंत्रिमण्डल ने राजा के साथ सहानुभूति प्रकट करते हुए सहज ही किसी निर्णय तक पहुंचने में असमर्थता प्रकट की। मंत्रिमण्डल में एक वृद्ध और शास्त्रज्ञ मंत्री भी थे। वह उस समय उपस्थित न थे। उन्हें बुलाया गया और उनसे पथप्रदर्शन मांगा गया। उन्होंने समूचा मामला सुन कर कहा—अपराध का दण्ड (कानून का पालन) तो अवश्य होना चाहिए। वह छोटा है या बड़ा यह मतभेद का विषय है। परन्तु राष्ट्र चरित्र की रक्षा और न्याय व्यवस्था को सब प्रकार के पक्षपात से अछूता रखने के लिए उसके पालन में किसी प्रकार का भी नर्म नर्म नहीं होना चाहिए। वृद्ध विद्वान मन्त्री ने मनु अ० ७ श्लोक १७, १६ के प्रमाण से कहा—

दण्ड ही शासक है दण्ड ही जागता है

(१) जो दण्ड है वही पुरुष राजा वही न्याय का प्रचारकर्ता और सब का शासनकर्त्ता वही चारों वर्ण और चारों आश्रमों के धर्म का प्रतिभू अर्थात जामिन है।

(२) वही प्रजा का शासनकर्ता सब प्रजा का रक्षक सोने हुए प्रजा जनों में जागता है। इसलिए बुद्धिमान दण्ड को ही धर्म कहते हैं।

(३) जो दण्ड अच्छे विचार से धारण किया जाय तो वह सब प्रजा को आनन्दित करता है और जो बिना विचार चलाया जाये तो सब ओर से राजा का विनाश करता है।

लिखित मुनि को दण्ड

राजा ने जब उस वृद्ध मन्त्री से पूछा कि अब इस लिखित ऋषि को चोरी के अपराध में क्या दण्ड दिया जाये? तब वृद्ध मन्त्री ने कुछ समय के गहन चिन्तन के बाद कहा—न्यायविदों का मत है कि जिस अंग से व्यक्ति अपराध करता है वह काट देना चाहिए पर यह बहुत कठोर और अपराधी के भावी सुधार के मार्ग को सर्वथा अवरुद्ध कर देता है जो उचित प्रतीत नहीं होता। इसीलिए मेरा सम्मति में इस युवक को ऐसा दण्ड दिया जाये जिससे हाथ से दीर्घ काल तक कड़ा परिश्रम किया जाये।

वृद्ध मन्त्री का यह मत राजा और मंत्रिमण्डल ने पसन्द किया। लिखित ऋषि कुमार को यह दण्ड सुना दिया गया और इसकी सूचना उसके बड़े भाई शंख ऋषि को भी दे दी गई।

युधिष्ठिर की पत्नी द्रौपदी का अपने पति को समझाना

व्यास मुनि ने यह कथा उस समय सुनाई जब युधिष्ठिर राज्य और गृहस्थ आश्रम छोड़ वैराग्यवान हो वानप्रस्थ और सन्यास का जीवन व्यतीत करने का निश्चय कर चुके थे। महाभारत शान्ति पर्व के अन्तर्गत राजधर्म अनुशासन पर्व के नवम अध्याय से लेकर अगले अध्यायों तक श्रीकृष्ण द्रौपदी और पांचों पाण्डवों सहित सभगोष्ठी में सबने एक स्वर से अपने बड़े भाई युधिष्ठिर के उपयुक्त निश्चय का प्रबल विरोध करते हुए उसे अपने कर्तव्य राजधर्म और गृहस्थ धर्म के पालन का उपदेश कई प्रकार की प्राचीन अर्वाचीन कथाओं और उपाख्यानों द्वारा पुष्ट किया। प्रसंगवश हम यहां उस निराधार सर्वथा असत्य कपोल कल्पित और नारी के लिए कलंक रूप लोक प्रचलित मिथ्यावाद का जोरदार खण्डन करना चाहते हैं जिसके अनुसार द्रौपदी के पांच पति युधिष्ठिर सहित कहे जाते हैं। महाभारत के अनेक प्रमाणों से यह सिद्ध किया जा चुका है कि द्रौपदी का एकमात्र पति युधिष्ठिर ही था। इस प्रकरण के चतुर्दश अध्याय में इस सभा में उपस्थित व्यास मुनि श्रीकृष्ण पंचपाण्डव तथा प्रमुख नागरिकों की उपस्थिति में प्रवक्ता वैशम्पायन पहले ५ श्लोकों में द्रौपदी का परिचय देते हुए कहते हैं—

अपने भाइयों के मुख से वेदों के सिद्धान्तों के अनुसार सुनकर भी जब धर्मराज युधिष्ठिर कुछ नहीं बोले तब महान कुल में उत्पन्न युवतियों में श्रेष्ठ विशाल नेत्रा राजा युधिष्ठिर के प्रति अभिमान रखने वाली राजा की सदा ही लाडली धर्मज्ञा महारानी द्रौपदी अपने पति देव नृप श्रेष्ठ युधिष्ठिर की ओर सम्बोधित कर सान्त्वनापूर्ण परम मधुर वाणी में बोली—

द्वैतवन में ११ वर्ष के वनवास और एक वर्ष के अज्ञातवास में आपके इन सब भाइयों ने सर्दी गर्मी आंधी पानी आदि प्रतिकूल स्थितियों में सब सहते हुए आपका साथ दिया उस समय आपने कहा था कि वीर बन्धुओ! दुर्योधन और उसके साथियों को हराकर हम पृथ्वी को शत्रुओं की लाशों से पाट देंगे। उस समय उदारतापूर्ण नाना प्रकार के यज्ञों द्वारा भगवान की आराधना करते हुए विजय प्राप्त कर वनवास जनित दुःख सुख में परिणत हो गया। वीर महाराज! द्वैत वन में अपने भाइयों को स्वयं ही ऐसे वीरतापूर्ण वचन कहने के बाद फिर आज हम लोगों को क्यों छोड़ रहे हैं?

द्रौपदी ने अपने निराश पति युधिष्ठिर को निम्न प्रकार शब्दों में कहा—

१ न क्लीबो वसुधा भुङ्क्ते
  न क्लीबो धन मश्नुते।
न क्लीबस्य गृहे पुत्रा
  मत्स्याः पङ्क इवासते॥
  म० भा० शांतिपर्व १४।१३

अर्थात जो कायर और नपुंसक है वह पृथ्वी का उपभोग नहीं कर सकता न ही धन उपार्जन कर सकता और न ही उसे भोग सकता है। जैसे केवल कीचड़ में मछलियां नहीं होतीं उसी प्रकार नपुंसक के घर में पुत्र नहीं होता है।

२ जो दण्ड देने की शक्ति नहीं रखता उस क्षत्रिय की शोभा नहीं होती। दण्ड न दे सकने वाला राजा इस पृथ्वी का उपभोग नहीं कर सकता। हे भारत! दण्डहीन राजा की प्रजाओं को कभी सुख नहीं मिलता। वीर और आत्मबल की धनी इस वार भारतीय नारी द्रौपदी के यह शब्द आज हमारे देश की वर्तमान राजनीतिक स्थिति पर अक्षरशः घटते हैं।

राजा के लिए दण्ड उचित कर्म —व्यास

इस सभगोष्ठी में उपस्थित व्यास

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद : एक मधुर स्मृति

★

स्वतन्त्रता सेनानियो के सम्बन्ध मे लिखते हुए महात्मा गाधी ने बाबा पृथ्वीसिंह आजाद को स्वाधीनता के मदिर की यात्रा करने वाला सहयात्री कहा था। महात्मा जी ने कहा था, कोई भी क्रान्तिकारी उनके महान् साहसिक कार्यो की बराबरी कर सकता है, मगर उनसे आगे नही जा सकता।

पृथ्वीसिंह आजाद का जीवन अस्तव्यस्त रहा तथा वे कठिनाइयो से जूझते रहे। उनका जन्म १५ सितम्बर, १८९२ को पजाब की पटियाला रियासत के लालरू गाव मे एक निधन परिवार म हुआ था। कुछ समय तक वे अपने पिता के साथ रहे, जो बर्मा मे पशुओ की देखरेख करके अपना जीवन निर्वाह कर रहे थे। बर्मा से वे सिंगापुर गए और फिर मनीला। वहा स अमरीका गये।

अपने मे राष्ट्रीयता की भावना के उत्पन्न होने का श्रेय उन्होने आर्यसमाज एव ऋषि दयानन्द, महात्मा गाधी और बगाल के क्रातिकारियो को दिया। उनके अनुसार सब स पहल आयसमाज ने १९०७ मे उन्हे प्रभावित किया। इसके बाद वे बगाल क सशस्त्र विद्रोह और लाला लाजपतराय के निर्वासन से प्रभावित हुए। विदेशी दमन से उन्हे सर्वाधिक घृणा थी। उन्हे अपने बाल्यकाल मे कनाडा को आरा मशीनो (इमारती लकडी के कारखानो) मे काम करना याद है। वहा रहने के दौरान वे आन्दोलन की ओर उन्मुख हुए जिसकी परिणति अतत १९१४ मे गदरपार्टी की स्थापना म हुई।

गदरपार्टी के सदस्यो ने ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत के निरादर एव अवमानना को समाप्त करने के लिए स्वदेश लौटने और देश की स्वाधीनता के लिए बगावत का नेतृत्व करने का सकल्प लिया था। गदरपार्टी के अध्यक्ष बाबा सोहन भाखना के नेतृत्व मे पार्टी के कुछ साहसी सदस्य १९१४ मे एक जहाज मे भारत पहुचे। यह पार्टी इससे पूर्व कैलिफोर्निया मे बनाई गई थी। बाबा उस समय जहाज मे ही थे, जब भारत पहुचते ही गदरपार्टी के सदस्यो को गिरफ्तार कर लिया गया।

उसी समय पहला लाहौर षड्यन्त्र काड का मुकदमा शुरू हुआ था। चौबीस क्रान्तिकारियो का मृत्युदण्ड और शेष को अण्डमान मे आजीवन कारावास दिया गया। बाबा पृथ्वीसिंह उनमे से एक थे। केवल सात व्यक्तियो को फासी हुई। बाबा ने अण्डमान जेल से सेल्युलर जेल मे राजनीतिक बदियो के प्रति किए जा रहे दुर्व्यवहार के विरोध स्वरूप १५५ दिन की भूख हडताल को थी। बाबा जेल मे छह वर्ष तक रहे।

जून १९२१ मे स्वदेश लौटते समय उन्हें पुलिस के साथ मद्रास से राजमहेंद्री भेजा गया। वर्तमान आन्ध्र प्रदेश मे आम्ले के निकट वे चलती रेलगाडी की खिडकी से बाहर कूद गए। रात भर वे ग्रामीण क्षेत्र मे दौडते रहे। अगली शाम वे फिर पकड गये और जेल मे डाल दिये गए। दुबारा नवम्बर, १९२२ मे राजमहेन्द्री से रेल द्वारा नागपुर ले जाये जाते समय वे अमरावती के निकट धडनेरा मे चलती हुई रेलगाडी के शौचालय से कूद गए और भूमिगत हो गये। अगले १६ वर्षों तक उनका कोई पता नही चला। वेश बदलकर वे कुछ समय तक भावनगर मे युवा लोगो को शारीरिक व्यायाम सिखाते रहे और उनमे राष्ट्रीयता की भावना जगाते रहे। उन्होने १९३१ मे कराची मे हुए काग्रेस अधिवेशन मे भाग लिया, जहा उनकी भेंट खान अब्दुल गफ्फार खा से हुई।

कराची से छद्मवेश मे वे सोवियत सघ पहुचे। कई बार उन्हें अफगानिस्तान मे पकडा गया परन्तु हर बार वे किसी तरह बच निकले। सोवियत सघ मे भी वे दो महीने जेल मे रहे। यह पता चलने पर कि वे गदरपार्टी के सदस्य है उन्हे छोड दिया गया। फिर व मास्को मे ठहरे और तीन वर्ष तक उन्होने मार्क्सवाद का अध्ययन किया। छद्मवेश मे ही व १९३४ म काबुल पहुचे जहा व पकडे गये और १३ महीने जेल मे बन्द रहे। जनता के दबाव मे आकर उन्हे छोड दिया गया। फिर व जाली पासपोर्ट पर पाडिचेरी होते हुए मद्रास पहुचे। बाबा ने १९३५ से १९३८ के बीच बम्बई और कलकत्ता मे कम्युनिस्ट पार्टी को मजबूत बनाने के लिए कार्य किया।

महात्मा गाधी से उनकी भेट १९ मई १९३८ को जुहू मे हुई। गाधी जी की सलाह पर उन्होने पुलिस के आगे आत्मसमर्पण कर दिया, जिसने उन्हे फिर कुछ समय के लिए जेल मे बन्द रखा। जेल से रिहा होने पर उन्होने गाधी जी के साथ उनके आश्रम मे काम किया।

बाबा उन कुछ पुराने स्वतन्त्रता सेनानियो मे से थे, जिन्होने इस वर्ष २३ फरवरी को पोर्ट ब्लेयर मे राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह द्वारा सम्पन्न 'समर्पण समारोह' मे भाग लिया था।

बाबा पृथ्वीसिंह आजाद का खेल जगत् से भी काफी निकट का रिश्ता रहा। इस उम्र मे भी व इतने सक्रिय थे कि बुजुग एथलेटिक मे उन्होने देश और विदेश मे खूब नाम कमाया।

अभी हाल ही मे हुई विश्व बुजुर्ग एथलेटिक्स चैम्पियनशिप मे बाबा पृथ्वीसिंह आजाद ने सौ मीटर की दौड जीतकर अद्भुत मिसाल कायम की।

(नवभारत टाइम्स से साभार)

स्वामी श्रद्धानन्द उपदेशमाला

आर्यसन्देश साप्ताहिक अपने सकल्पानुसार एक और विशेषाक अपने प्रिय पाठको के लिए शीघ्र प्रकाशित कर रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द अद्भुत विचारक, जीवन प्रभा को जाज्वल्यमान कर सकने मे समर्थ महान् उपदेशक, लेखक मनीषा राष्ट्रनायक थे। उनके मधुर अध्यात्म उपदेशो का एक सकलन हम स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की स्मृति मे प्रकाशित कर रहे हैं। यह विशेषाक आपको जीवन भर स्मरण रह सकेगा ऐसा हमारा विश्वास है। साप्ताहिक आर्यसन्देश के सदस्यो के लिए यह नि शुल्क होगा। अत आप भी आज ही २० रुपये वार्षिक, २०० रुपये भेजकर आजीवन सदस्य बन जाइये और अनेक विशेषाक तथा प्रति सप्ताह घर बैठे आर्यसन्देश पत्रिका द्वारा उच्चकोटि के लेखो का आनन्द लीजिए।

सम्पादक आर्यस देश
१५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली

महर्षि दयानन्द का मोक्ष राष्ट्र का दुर्भाग्य

——जगत्राम आर्य

ऋषिवर !

आप तो आनन्दचित्त होकर स्वर्ग का आनन्द भोग रहे हैं अपका वह देश जिसके लिए आप दिन रात बेचैन रहते थे जिस देश के सुधार के लिए आपको अनेको बार विषपान करना पड़ा उसकी दशा का भी आपको कुछ अनुमान है।

आप जीवन पर्यन्त परमपिता परमात्मा की आज्ञा का पालन करते रहे। जीवन पर्यन्त आपने एक भी बुरा कर्म नही किया। कर्मों के फलदाता आपसे बहुत ही प्रसन्न थे जिस कारण आपको मोक्ष प्राप्त हुआ और जन्म मरण के चक्कर से छूट गये। इससे तो अच्छा था आप एक दो तो बुरे कर्म अपने जीवन मे कर जाते जिससे आपको फिर भारत मे जन्म लेना पडता और पूर्व जन्म का अधूरा काम पूरा कर लेते।

आपने आर्यसमाजो की स्थापना की थी। आपके प्रभाव के कारण उस समय भी हजारो जन आर्यसमाजी बन चुके थे। आपने रूढियो कुरीतियो, अन्धश्रद्धा अन्ध विश्वास को दूर करने का काम आर्यों को सौंपा। आप हमे मझधार मे ही छोड़कर मोक्ष को प्राप्त कर गये। यदि पाच वर्ष और रह जाते तो देश का बहुत सुधार हो जाता। हमे यह दुर्दिन न देखने पडते।

आपके व्यक्तित्व कृतित्व और वक्तृत्व मे जादू का असर था। परिस्थितियाँ और वातावरण विपरीत होने के बावजूद भी जितना काम आप अकेले कर गये परिस्थितिया अनुकूल होने पर भी हम दो करोड आर्यसमाजी उतना काम नही कर सके।

स्वदेशी संस्कृति, स्वभाषा तथा स्वतन्त्रता का नाद सर्वप्रथम आपने ही बजाया था। आपने कहा था—'अपना राज्य चाहे कैसा भी हो विदेशी राज्य से फिर भी अच्छा है भारत मे भारतीयो का राज्य ही होना चाहिए।

सन् १८५७ में आपने भारत को स्वतन्त्र कराने का काम सूत्रधार के रूप मे किया आप भारत को तुरन्त स्वतन्त्र कराना चाहते थे। आपके बाद आर्यों ने भी यह सोचा कि भारत को पहले अंग्रजो से मुक्त कराया जाए। फिर आर्यसमाज का प्रचार और प्रसार करना स्वतन्त्र भारत मे सुगम हो जाएगा। अत परिस्थितिया अनुकूल हो जाएगी। तो ऋषिवर का स्वप्न भी साकार हो जाएगा अत आर्यसमाजी जी-जान से भारत के स्वतन्त्रता संग्राम मे कूद पड़े। आर्योपदेशक भजनोपदेशक, हमारे गुरुकुलो, स्कूलो, कालेजो के अध्यापक और छात्र सभी आजादी के दीवाने बनकर स्वतन्त्रता संग्राम मे कूद पड़े। यातनाएं सहीं और बलिदान हुए, अन्त मे भारत स्वतन्त्र हुआ। जिसका श्रेय महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायी आर्यों को मिलना चाहिए था परन्तु ऐसा हुआ नही। आजादी के बाद राष्ट के जो प्रशासक और भाग्य विधाता बनते रहे। उनको आर्यसमाज के सम्बन्ध मे पता भी नही था कि भारत को स्वतन्त्र कराने मे अधिकतम योगदान आर्यसमाजियो का रहा है इसलिए भारत को स्वतन्त्र कराने का श्रेय आर्यसमाज को है। और न ही आर्य नेताओ ने उनके कानो तक आवाज पहुचायी। परिणाम यह हुआ कि स्वतन्त्रता के बाद आर्यसमाज को पूछा भी नही गया।

भारत को स्वतन्त्रता के जन्मदाता महर्षि दयानन्द सरस्वती के मुकाबले मे राजा राममोहनराय ने भारत के लिए कोई विशेष काम नही किया। ऋषि दयानन्द का राजा राममोहन से कोई मुकाबला ही नही। फिर भी शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार ने राजा राममोहनराय के नाम पर बीस लाख रुपये का अनुदान वार्षिक देकर उनका स्मारक कायम कर रखा है और भारत को स्वतन्त्र कराने वाले महर्षि दयानन्द का कोई स्मारक नही बना पाये और न ही उनके नाम पर कोई अनुदान दिया गया है।

देव दयानन्द अपनी आर्यसमाजो की हालत तो आकर देखें मुझे तो ऐसी हालत देखकर छुप छुप कर रोना आता है।

ऋषिवर ! आपका आर्यसमाजो के सदस्य चालीस पचास वर्ष जैसे पहले होते थे वैसे नही रहे। अब तो आर्यसमाजी स्वाध्यायशील नही है। आज के आर्यसमाजी आर्यसमाज और दयानन्द को समझ ही नही। ऋषि दयानन्द के भक्त और आर्यसमाज के दीवाने समाप्त हो रहे हैं। अब नकली, फसली, अवसरवादी लोग आर्यसमाजो मे रुपये के जोर से अपना सिक्का चलाना चाहते हैं। मेरे जैसे पुराने आर्यसमाजी जिन्होने आज से पचास साठ वर्ष पहले का आर्यसमाज का स्वर्ण युग देखा है व दुखी है और बेबस हैं।

ऋषिवर ! हम पर दया करो। आपका नाम ही दयानन्द है, आपने आजीवन परमात्मा की आज्ञा का पालन किया है। वे सच्चिदानन्द आप से प्रसन्न हैं आपका कहना मानते हैं उनको हमारी ओर से कहे कि आपके अमृतपुत्र आर्य जन आपकी अमर देन वेदो के प्रचार और प्रसार करने वाले दु खी हैं और वेदोद्धारक ऋषिवर दयानन्द का आह्वान करते है। प्रभो ! हमारी पुकार सुनो हमारे ऋषिवर को एक बार पुन भारत मे जन्म दे जिससे भारत मे सुधार हो।

प्रभो ! हमारे पास सच्चा और सुच्चा सौदा है परन्तु पारखी नही है। आपके वेदो का ज्ञान रूपी प्रसाद लेने हमारे पास नही आते जहा गला सड़ा दुर्गन्ध वाला सस्ता सौदा है वहा ग्राहको की भीड लग रही है। उस सौदे का उपयोग करके हानि भी उठाते है पर समझते नही। प्रभो ! उनको सदबुद्धि दे।

आर्यसमाजो मे कुछेक लोग ऐसे भी हो गये हैं जिन्होने सुन रखा है कि संसद मे विपक्ष मजबूत होना चाहिए। संसद मे तो यह आशय होता है कि नेता लोग कोई ऐसा काम न करें जिससे देश और धर्म का ह्रास हो, वह ही फार्मूला आर्यसमाजों मे लाना चाहते है। हालांकि प्रत्येक साप्ताहिक सत्संग मे ऋग्वेद के अंतिम सूक्त का पाठ होता है और अर्थ भी बोला जाता है कि "चित्त मन सब एक हो"। संसद का फार्मूला आर्यसमाजो मे नही चलाना चाहिए। आर्यसमाज वेदो पर आधारित एक विशुद्ध धार्मिक संस्था है। ऐसे लोग आर्यसमाजो मे भी गुटबन्दी बना कर विपक्ष को मजबूत बनाने का कुकर्म करते हैं। ऐसे अनार्य लोग आर्यसमाज का कोई भी काम नही करते और न ही दूसरो को करने देते हैं। आर्यसमाज का विघटन करके दूर बैठ कर तमाशा देखना चाहते हैं। वे आर्यसमाज के शत्रु हैं। एक व्यक्ति अपनी योग्यता, क्षमता, लगन और उत्साह के साथ आर्यसमाज का अच्छा काम करता है। आर्यसमाज को अपनी मा समझकर आर्यसमाज की सेवा करता है। ऐसे व्यक्ति को सहयोग देना चाहिए, यही आर्यत्व है। परन्तु होता क्या है कि ईर्ष्या और द्वेष के कीचड मे फँसकर आर्यसमाज के अच्छे भले चल रहे काम मे बाधा एवं विघ्न डालकर आर्यसमाज के काम को नही चलने देते कितने खेद की बात है।

आर्यसमाजो मे कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं जिन्होने अधिकारी पद पर रहते हुए भी आर्यसमाज का तन मन से बिल्कुल काम नही किया न ही उनमें आर्यत्व है परन्तु फिर भी अधिकार पद की इच्छा बनी रहती है। अधिकार पद लेने के लिए गुटबन्दी बनाते है लडाई झगडा करते है और अव्यवस्था फैलाकर वातावरण खराब करते है।

जो लोग अधिकार पद की इच्छा न रखते दिन रात आर्यसमाज का ही चिन्तन करते रहते है और आर्यसमाज का काम दिन रात करते रहते है उनसे शिक्षा तथा प्रेरणा लेनी चाहिए। आर्यसमाज का भूत जिस के सिर पर सवार हो वह अधिकार पद लिए बिना भी आर्यसमाज का काम किए बिना नही रह सकते।

आर्यसमाजो मे प्राय ऐसे लोगो ने वातावरण दूषित कर रखा है। आर्यसमाजो की उन्नति नही होने देते। आर्य जनो को सर्वदा ऐसे व्यक्तियो से सावधान रहना चाहिए।

जगत्राम आर्य
गांधीनगर, दिल्ली-३१

आर्यसमाज पटेल नगर नई दिल्ली द्वारा
वेद प्रचार तथा वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज पटेल नगर द्वारा पटेल पार्क में पं० यशपाल सुधांशु की मनोहर वेदकथा हुई। इस अवसर पर हजारो नर-नारियो ने दो सप्ताह तक आर्ष ग्रन्थो पर आधारित अमृत मय ज्ञान का आनन्द लिया। वेद कथा के अन्तिम सन्ध्या वेला में ३०० पुरुष महिलाओ ने अपने दोष त्याग करने का तथा सद्गुण ग्रहण करने का व्रत लिया। आयोजन का संचालन श्री जैसाराम तनेजा ने किया।

प्रात काल एक सप्ताह यजुर्वेदीय यज्ञ हुआ जिसके ब्रह्मा श्री प्रेम चन्द श्रीधर थे। अनेक श्रद्धालु नर-नारियो ने श्रद्धा पूर्वक आहुति प्रदान की। अन्तिम दिवस श्री सोमनाथ मरवाह के सभापतित्व मे आर्य संगठन सम्मेलन हुआ।

मन्त्री
आर्यसमाज

महर्षि दयानन्द समग्र क्रान्ति के अग्रदूत थें

लेखक—रतनलाल आर्य निजारा अलवर (राजस्थान)

उन्नीसवी शताब्दी के अन्त और बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे आर्यावत देश म मुख्य रूप से राजनीति के क्षेत्र मे देश की जो दुर्दशा थी वह सर्वाविदित थी एक ओर अंग्रेजो का साम्राज्य व देश गुलामी की जंजीरो मे जकडा हुआ, दूसरी ओर सामाजिक क्षेत्र मे मनुष्य मनुष्य के मध्य भेदभाव की दीवार, अज्ञानान्धकार, नारी जाति की दयनीय स्थिति, धार्मिक जगत् म एकेश्वरवाद के स्थान पर बहुदेवतावाद निराकार परमात्मा के स्थान पर मूर्ति पूजा एव अवतारवाद ने स्थान ग्रहण कर रक्खा था, इतना ही नही बल्कि कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था की जगह जन्माधिकार पर आधारित ब्राह्मण मण्डली ने अपना आसन ग्रहण कर रक्खा था।

ऐसे मे परम पिता परमात्मा के नियमानुसार धर्म एव सत्य को पुन स्थापित करने हेतु ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। घटनाए तो घटित होती ही रहती है मगर उन घटनाओ की ओर किसी व्यक्ति या महापुरुष का ही ध्यान जाता है जिनके ऊपर परमात्मा की कृपा दृष्टि होती है। ऐसी ही घटनाए, महर्षि दयानन्द के जीवन मे घटित हुई, हम इस क्षेत्र मे अधिक विस्तार म न जाकर पाठको को सिर्फ मूर्ति पूजा से सबधित घटनाए देते है। महर्षि ने अपने पिता जी के कहने पर व्रत उपवास रक्खा, और उस उपवास रखने का कोई फल प्राप्त न होकर जीवन मे एक नया बोध उत्पन्न हुआ और उसी बोधोत्पन्न होने से ही आज इस आर्यावर्त देश तो क्या विश्व को एक नई क्रान्ति या मानवता के क्षेत्र मे नई दिशा मिली। जिस क्रान्ति का आज भारत ने ही नही बल्कि समस्त विश्व ने उसका अनुसरण किया, चाहे वह राजनीति हो या धार्मिक जगत हो या फिर चाहे सामाजिक क्षेत्र हो, महर्षि दयानन्द ही एक ऐसे महामानव थे जिन्होने अपनी सूक्ष्म बुद्धि से प्रत्येक क्षेत्र मे विचार मथन कर समस्त राष्ट्र को नई दिशा प्रदान करते हुए अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे अंग्रेजो के साम्राज्य के विरोध मे लिखा कि विदेशियो का राज्य चाहे कितना ही अच्छा हो मगर पूर्ण सुखदायक राज्य तो स्वदेशियो के राज्य होने मे ही है। दुर्दिन जब आते हैं तब ऐसे ही मानवता को कष्ट उठाने पडते हैं, जब तक एक मत, एक हानि-लाभ एक ही भाषा न होगी तब तक पूर्ण सुख की कल्पना करना निरर्थक है। इतना ही नहीं ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवे समुल्लास की अनुभूमिका मे लिखा कि महाभारत युद्ध के पश्चात इस आर्यावर्त देश की बडी हानि हुई है। दिनोदिन यह देश रसातल की ओर जा रहा है। आगे महर्षि लिखते हैं कि गुप्त हुए ज्ञान का पुनर्मिलना बडा ही दुष्कर कार्य है। जैनी, पुरानी, किरानी और कुरानी यह सब मतो के मूल हैं। इसके पश्चात ही इस आर्यावर्त देश मे शाखा शाखान्तर व मत-मतान्तर प्रचलित हुए है। इनको कोई अन्यथा नही कर सकता। आज जितना भी सम्प्रदायवाद इन बहुदेवतावाद के मानने पर मिल रहा है और दिनो-दिन राष्ट्रीयता नाम की चीज नही के बराबर है, अगर हम महर्षि दयानन्द के बताए हुए मार्ग पर चले जैसा कि उन्होंने वर्ण व्यवस्था के बारे मे उद्घोष करते हुए लिखा और वेद का मन्त्र उद्धृत करते हुए कहा—

> ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्
> बाहू राजन्य कृत ।
> उरू तदस्य यद्वैश्य,
> पद्भ्या शूद्रोऽजायत ॥

अर्थात—जिस प्रकार शरीर मे मुख श्रेष्ठ है, इसी प्रकार समाजरूपी शरीर मे जिसके कर्म ब्राह्मण के तुल्य हो, जैसा कि स्वामी जी ने लिखा है यज्ञ करना, कराना, दान देना और दान लेना, वेदोक्त धर्म का प्रचार व वेद का पढना और पढाना इत्यादि इसी प्रकार से जिस प्रकार शरीर मे बाहुबल अधिक है वही राज्याधिकारी हो सकता है अन्य नही। तीसरा वर्ण जिस प्रकार शरीर मे पेट का स्थान है जो कि सभी अंगो को भोजन का समान विभाग कर देता है इसी प्रकार समाजरूपी शरीर मे जो वैश्य है उस का भी यह कार्य होना चाहिए कि वह समाज के सभी वर्गों मे धन का समान रूप से बटवारा करे और अभाव का नाश करे चौथा वर्ण जिस प्रकार शरीर में पैरो की स्थिति है कि सारे शरीर का बोझ ढोते हैं, इसी प्रकार समाज रूपी शरीर मे जिसको पढने पढाने से कुछ नही आवे अर्थात् निर्बुद्धि हो उसे शूद्र कहना, मगर महर्षि ने लिखा कि शूद्र भी अपने उत्तम कर्म से द्विज सज्ञा को प्राप्त होता है और द्विज अगर नीच काम करे तो वह भी शूद्र हो जाता है। महर्षि ने समाज मे अस्पृश्य समझे जाने वालो के प्रति बहुत महान् कार्य किया है। महर्षि दयानन्द के पश्चात ही स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा गाधी ने इस कार्य को आगे बढाया। यह सारा कार्य ही ऋषि दयानन्द की आवाज थी। आज अगर उनके पद चिह्नो पर अगर आर्यावर्त देश का मानव चले तो इसमे कोई शक नही कि हम अपने पिछले गौरव को पुन प्राप्त कर सकते हैं। इस वर्ण व्यवस्था पर आधारित सामाजिक व्यवस्था अगर पुन गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से सरकार द्वारा व्यवस्थित हो तो किसी प्रकार का भेदभाव असमानता साम्प्रदायिकता छूआछूत, राष्ट्र की एकता और अखण्डता की जगह पर एक ही भाषा, एक ही मत कायम रहकर आर्य साम्राज्य की एव रामराज्य की कल्पना परिलक्षित हो सकती है।

धार्मिक जगत मे भी हम एकेश्वरवाद पर ऋषि दयानन्द के बताए हुए मार्ग पर चले तो सारा ससार ही मोक्ष का आनन्द ले सकता है और तभी ससार म पूर्ण शान्ति सम्भव है। कई देशो मे तो ईश्वर तक को मान्यता नही है और जिस देश मे हैं यहा पर भी एक ईश्वर के स्थान पर स्वय सिद्ध परमात्मा मौजूद है और अलग अलग मतो के प्रादुर्भाव होने से मनुष्य की बुद्धि भ्रमित सी हो गई है, इसलिए महर्षि दयानन्द ने धार्मिक क्षेत्र मे एकेश्वरवाद पर बल देते हुए लिखा और वेद का मन्त्र उद्धृत करते हुए कहा कि 'न तस्य प्रतिमास्ति यस्य नाम महद्यश ।'

अर्थात उस निराकार परमात्मा की कोई प्रतिमा नही है जिसका कि नाम बडी महानता के साथ लिया जाता है, इसी के साथ उन्होने ईशोपनिषद के मन्त्र का हवाला देते हुए कहा कि—

> अन्धन्तम प्रविशन्ति ये
> असम्भूतिमुपासते ।
> ततो भूय इव ते तमो
> येसम्भूत्या रता ।

अर्थात वे मनुष्य अन्धकार मे प्रविष्ट होते हैं जो असम्भूति अर्थात (जड प्रकृति की उपासना करते हैं) होने से जो प्रकृति द्वारा निर्मित सृष्टि कुछ स्थूल जडपदार्थो की जैसे विमूर्तियादि की उपासना करते हैं इसीलिए तो महर्षि दयानन्द ने मूर्तिपूजा और अवतारवाद का प्रबल तर्क और युक्ति से खण्डन किया और एक ईश्वर का प्रचार किया और कहा कि परमात्मा सर्वव्यापक है उसकी मूर्ति या प्रतिमा नही है और जो मनुष्य परमात्मा को एक स्थान पर जानता और मानता है वह पापादि कर्म और कुचेष्टा किये बिना नही रह सकता बल्कि जो मनुष्य परमात्मा को सर्वव्यापक मानता और जानता है वह किसी भी जगह यहा तक कि अपने मन मे भी दुर्भावना नही आने देता मगर आजकल की ब्राह्मण मण्डली ईश्वर को मूर्ति पूजा के दायरे मे सीमित कर रामलीलाओं और रासलीलाओ द्वारा मूर्ति पूजा और अवतारवाद को बढावा दे रही है और मनुष्य मात्र को परमात्मा के सही स्वरूप का दिग्दर्शन न कराकर अन्धकार की गहरी खाई म ढकेल रही है। इसलिए अगर ऋषि दयानन्द न होते तो आपका यह आर्यावर्त देश न जाने कहा रसातल म जा गिरता। फिर भी उनकी उत्तराधिकारिणी आर्यसमाज देश मे फैले मूर्तिपूजा अवतारवाद छूआछूत का इतना ही नही जो मुस्लिम आक्रान्ताओ द्वारा हमारे समाज मे अस्पृश्य समझे जाने वाले लोगों का विदेशी धन के नाम पर धर्मान्तरण कर रहे हैं एव अन्य सामाजिक अभिशाप एव राष्ट्र के विरोध स्वरूप जितने भी कार्य हैं ध्यान देकर इस देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य जैसा आर्यसमाज कर रही है अन्य नही। इसी प्रकार जो महर्षि दयानन्द ने प्रत्येक क्षेत्र मे जो वैचारिक क्रान्ति की वह सदा ही सदा अनुकरणीय थी और रहेगी।

चतुर्वेद पारायण यज्ञ

१५ दिसम्बर से २७ दिसम्बर ८५ तक
समय प्रात ७ ३० से ९।३० तक
आहुतियो द्वारा यज्ञ
ऋग्वेद तथा यजुर्वेद
रात्रि ७ ३० से ९ बजे तक
मन्त्र पाठ पारायण
सामवेद अथर्ववेद
स्थान श्री मनोहर विद्यालकार का निवास १७० छत्ता भवानी शकर, फतेहपुरा (चिम्मन लाल की धर्मशाला के सामने)
प्रवचन प्रतिदिन दोनो समय २ या ३ बार दस दस मिनट
श्री सत्यभूषण योगी अथवा
प० हरिशरण सिद्धान्तालकार आर्य

भवदीय

मानव का कल्याण मानवता से

—श्रीमती प्रकाश सूद एम०ए० ग्रीनपार्क

ससार मे ईश्वर का चना मे मानव को सर्वोत्कृष्ट कृति की सज्ञा दी गई है। अन्य सब प्राणी केवल अपने कल्याण की सोचते हैं और दूसरे जानवरों म कौर छीनकर खाने मे भी नही हिचकिचाते क्योकि उनमे बुद्धि का अभाव है। मनुष्य को इसी-लिए सर्वोच्च माना गया है कि उसमे एक विलक्षण शक्ति है जिसका नाम हमारे शास्त्रो ने बुद्धि व विवेक कहा है। विवेक के कारण ही मानव धर्म-कर्म करके मानवता का कल्याण कर सकता है। यदि मानव मे यह भिन्नता नही तो निम्नलिखित कहावत के अनुसार यह मानव कहलाने का अधि-कार ही नहा रखता—

आहारनिद्राभय मैथुनञ्च,
सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिका विशेषो,
धर्मेण हीना पशुभि समाना ॥

अर्थात आहार निद्रा भय और विलास वासना चारो बात मनुष्य और पशु मे एक समान ही हुआ करती हैं। धर्म ही वह मूल विशेषता है जो मनुष्य और पशु मे भेद करती है। धर्म के अभाव मे मनुष्य पशु से भी गया बीता है। जिसे मनुष्य के लिए धर्म कहा गया है। वह वास्तव मे यही है कि मनुष्य केवल अपने लिए जीने वाला और केवल अपने सुख स्वार्थों का ध्यान रखने वाला प्राणी नही है। वह एक सामाजिक प्राणी है अत उसका प्रत्येक कार्य-व्यापार प्रत्येक कदम अपना ही नही बल्कि सम्पूर्ण समाज और जीवन का हित साधन करने वाला होना चाहिए यही मनुष्यता का सच्चा लक्षण है।

किन्तु अतिखेद के साथ यह स्वी-कार करना पडगा कि आज का मनुष्य निहित स्वार्थी और आत्म-जीवी होता जा रहा है। वह अन्धा-धुन्ध अपनी स्वार्थ साधना मे तीव्र गति से भाग रहा है। उसे दूसरो के दुख अन्याय अत्याचार अविश्वास देखने की चिन्ता नही। यही कारण है कि आज चारो ओर भय और अशाति का वातावरण बना हुआ है, हाहा-कार मचा हुआ है। दैहिक, दैविक, भौतिक तापा आज जलाए सब को आपा' इसे प्रभुता का ही लक्षण कहा जाएगा। आज सारे जीवन मे और समाज मे प्रभु-वृत्तिया घर कर गई है। वह इस कसौटी पर पूरा नही उतरता कि "वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।' जब तक सब के कल्याण की भावना मनुष्य मे जागृत नही होती तब तक जाति देश और राष्ट्र का उत्थान सम्भव नही होगा। इस मानव कल्याण की भावना से ओत-प्रोत होकर ही हमारे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी मध्य-प्रदेश के आदिवासियो मे कैसे अनेक व्यक्तिगत दुख गाथाए सुनने गए। उसके पश्चात उडीसा के दीन दुखियो की पुकार सुनकर अभाव व भय से त्रस्त लोगो को पूर्ण आश्वासन देकर उनके कष्ट निवारण के लिए पूर्ण सहयोग के लिए कहा है। यह मानव योनि ही ऐसी दुर्लभ योनि है जिसमे मानव दूसरो के कष्ट हरण कर सकता है और मानवता का कल्याण करने मे समर्थ हो सकता है। आज मनुष्य मे भ्रष्टाचार व चरित्र हनन का बोलबाला अधिक हो गया है क्योकि वह मानवता के हित को भूल गया है। आज एक देश दूसरे देश को निगलना चाहता है और शक्तिशाली राष्ट्र अपनी प्रभु सत्ता से छोटे राष्ट्रों को आख दिखा रहे हैं और महाशक्तियो के बल पर उन्हे भयभीत कर रहे है। जब तक समाज की देश की, राष्ट्र की प्रवृत्ति धर्म विमुख रहेगी राष्ट्र का कल्याण यथासम्भव नही है। सुख व समृद्धि उसी के पाव चूमती है जो मानवता के कल्याण के लिए अग्रसर होता है।

इस नर तन को पाकर कोई न कोई मागलिक कार्य अवश्य करना चाहिए। यह पच भौतिक शरीर तो अवश्यम्भावी नश्वर है या आत्मा अमर है और उसी व्यक्ति की आत्मा बलशाली व पवित्र होती है जो पाप वृत्ति से दूर रहकर सत्सगति मे अधिक समय व्यतीत करता है। धर्म के अनुसार आचरण करता है अपनी वृत्तियो का बाह्यमुखी न करके अन्त-र्मुख करता है उसका ध्येय मानव मात्र का कल्याण ही होता है और परपीडा को वह अपनी पीडा समझता है और दूसरो के थोड मे दुख को भी महान समझकर उसके निवारण का पूर्ण प्रयास करता हुआ सच्चे पिता ईश्वर की गोद का अधिकारी हो जाता है। जन्म-मरण के बन्धन से दूर होकर वह अमरात्मा हो जाता है।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

बुरों की भलाई करना आदर्श परोपकार

—पृथ्वीसिंह बेधडक आर्य भजनीक

टेक बुरो की भलाई करना सबसे अच्छा काम है।
छुडा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥
छोडकर बुराई बुरा अच्छे काम करने लगे
शायद उसको देख उसका भाई भी सुधरने लगे।
बताओ तो इससे अच्छा और क्या प्रोग्राम है
छुडा दे बुराई उसकी जिस से वह बदनाम है ॥१॥
कोई बुरा होता नही बुरी हो बुराइया
लूटता था रोजाना जो लोग और लुगाइया।
जिसका आज सिद्ध ऋषि वाल्मीकि नाम है
छुडा दे बुराई उसकी जिस से वह बदनाम है ॥२॥
शिक्षा देकर दूर करो अज्ञानी की अज्ञानता,
अगर शिक्षा देने पर भी किसी की नही मानता।
फिर तो उस पापी के लिए राम है घनश्याम है,
छुडा दे बुराई उसकी जिस से वह बदनाम है ॥३॥
मुसलमान ने ही मुसलमान को बरबाद किया,
भारत ने कुर्बानी करके बगला को आजाद किया।
पूछो जिया से क्या अब भी खतरे मे इस्लाम है,
छुडा दे बुराई उसकी जिस से वह बदनाम है ॥४॥
बहादुरशाह जफर का बेटा एक रोज मथुरा गया,
वजानन्द के पैर पकडे पाच गिन्नी देकर कहा।
खुदा के फरिश्ते तुझे शाह का सलाम है,
छुडा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है ॥५॥
स्वामी दयानन्द ने कहा था तहसीलदार को,
छोड दो शराब सुनो वेद के प्रचार को।
अमीचन्द तू हीरा है पर वेश्याओं का गुलाम है,
छुडा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है ॥६॥
पिलाया था दूध जहर गेर करके किसी ने,
पाँच सौ रुपये दे करके कहा था यह ऋषि ने।
दयानन्द की तरफ से यह आपको इनाम है,
छुडा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है ॥७॥
ईश्वर की असली भक्ति सत्यार्थ-प्रकाश मे,
यस्य नाम महद्यश ग्यारहवे समुल्लास मे।
ज्ञान से अच्छा जाप ओ३म् नाम ध्याम शाम है,
छुडा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है ॥८॥
एक डेढ मिनट बाकी रह गया था फासी का,
कितना अच्छा फिकरा था यह भक्त ईसा मसी का।
डू गुड ऐण्ड फोरगेट आखिरी कलाम है।
छुडा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है ॥९॥
कृष्ण जैसी नीति रहे राम सी मर्यादा रहे,
पृथ्वीसिंह बेधडक कहै शासन प्रजावाद रहे।
जिला मेरठ अन्दर जिसका शिकोहपुर ग्राम है,
छुडा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है ॥१०॥

टिप्पणी -आर्यसमाज के सुविख्यात आर्य भजन उपदेशक वीर आशु कवि चौधरी पृथ्वीसिंह बेधडक ने अपने स्वर्गवास से कुछ पहले, दुर्जनो के सुधार तथा उनके दोष निवारणार्थ १० पद्यों का यह गीत बनाया गया था। जैसे साधुओं के सत्सग से रत्नाकर डाकू कवि वाल्मीकि ऋषि बना था। भारत ने बगलादेश स्वतन्त्र कराया। गुरु वृजानन्द को राजनैतिक गुप्त मथुरा पचायत श्रीकृष्ण जन्माष्टमी स० १९१३ वि० मे दिल्ली नरेश बहा-दुर शाह का बेटा फिरोजशाह ने गुरु को पाच गिन्नी भेटकर सम्मान किया तथा अपने पिता का भी सम्मान सदेश दिया था। वह शाहजादा सग्राम हार के पश्चात मक्का मदीना जाकर सन १८९६ ई० मे गुजरा था। महर्षि दयानन्द के उपदेश से अमीचन्द आर्य भजनीक बना। विषदाता जगन्नाथ को महर्षि ने पाच सौ रुपये दिए वह पश्चात्ताप पूर्वक दुर्गति सहित मरा। कहा है ईसा मसीह ने फासी के समय भी परोपकार की बात कही थी, ईश्वर भक्ति तथा ओ३म स्मरण सर्वश्रेष्ठ उपासना है, दुराग्रही दुष्टो के लिए रामकृष्ण का दण्ड चाहिए। चौधरी पृथ्वीसिंह का ग्राम शिकोहपुर है।

प्रेषक निहालसिंह आर्य
पता जसौर खेडी रोहतक

पुस्तक समीक्षा–

'प्रभुदर्शन'

लेखक श्री यशपाल जी 'आर्यबन्धु'
प्रकाशक महिला आर्यसमाज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद। मूल्य केवल प्रचार

'प्रभुदर्शन' की बात प्राय सभी मत मतान्तर करते हैं और इस सबध मे आज जितना भ्रम व्याप्त है शायद ही अन्य किसी विषय मे हो। प्रस्तुत पुस्तक मे लेखक ने प्रभुदर्शन का वैदिक दृष्टिकोण अत्यन्त सरस और सरल शब्दो मे सुन्दर तर्क और शास्त्रीय प्रमाण के साथ प्रस्तुत किया है।

श्री यशपाल जी आर्यबन्धु अनेक वर्षों से अपने लेखो तथा लघु पुस्तको के माध्यम से इस वैदिक साहित्य की निरन्तर सेवा कर रहे है। हमारा विश्वास है कि आर्यजगत मे इस प्रकार के अथक प्रयास की न केवल सराहना होगी और अधिक से अधिक पुस्तक वितरण द्वारा प्रचार प्रसार होगा अपितु साहित्य प्रकाशन की सेवा हेतु अवश्य आयसमाज के प्रकाशन विभाग की सहायता करगे।

श्री 'आर्यबन्धु' स्वाध्यायशील और आर्यसमाज हरथला कालोनी मुरादाबाद के सक्रिय सदस्य हैं। उनकी बीस के लगभग इस प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

मैं उन्हे और आर्यसमाज के महिला विभाग को जिन्होने उनको प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन कराया है बधाई देता हू।

प्रमचन्द्र श्रीधर एम ए
३६/ई रणजीतसिंह मार्ग
आदर्शनगर दिल्ली-११००३३

गांव शहर बिकते हैं

यज्ञ भग्न हो जाता है
जब समिधा और आहुति मे
हव्य तो वही रहता है
मन दूषित हो जाता है
और जब—
इदन्न मम का स्थान
स्व अहम् ले लेता है
तब अवतरित होता है जयचन्द
और सोमनाथ का भव्य शिवालय
खड-खड होकर बिखर जाता है
गौरी के राक्षसी कदमो में।

× × ×

राम का वन गमन
दयानन्द का वैराग्य
महावीर का अपरिग्रह
बुद्ध का राज्य त्याग
मात्र ऐतिहासिक घटनाए नही थी
इनकी पृष्ठभूमि मे था
समाज को समष्टिगत
शुद्ध जीवन के सकल्प का पाठ
ब्रह्म सम्राट् दशकन्धर की भगिनी
इन्द्र की अप्सराए
और वैशाली की आम्रपाली
उद्दीप्त यौवन, धन छवि लेकर भी
पराजित हो रह गई थी

× × ×

क्यो घूमता रहा गाधी मात्र लगोटी मे
कैसे समझ पाये आन्ध्रवासी उसकी
भाषा
कोंकड, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु
कैसे बन गए उसके अनुगामी
निरन्तर उपवास शुद्धि सत्याग्रह
इन सब का सुदर्म क्या था ?
दो पैसे सेर के नमक हेतु
दाण्डी यात्रा, लाठी चार्ज और
चौंसठ हजार व्यक्तियो का
कारावास भर देना
हँस कर सहना सभी यातनाए

× × ×

क्या केवल अडतीस वर्षो मे
राष्ट्र का चरित्र बदल जाता है
यज्ञ वही रहता है
मन कलुषित हो जाता है
लग जाती है मेवादारो की
लम्बी चक्रव्यूही पक्तिया
और राजनयिक भवनो मे
सेवादार छलते है
सेवक की अर्जी पर
हजूर की मर्जी पर
गाव शहर बिकते हैं।
सेनाधिकारी बन जाते हैं
लारकिस बन्धु, और व्यापारी-
मणिकलाल कुमर नारायण
सेवक हनुमान् की गरिमा भूलकर
चुराने लगते हैं स्वामी के रहस्य
अर्थात शूद्र
अपनी क्षुद्रता पर उतर आते हैं
जलने लगने हैं सविधान के पृष्ठ
देश जायदाद का रूप ले लेता है
बँटने लगते हैं उसके भू भाग
यज्ञ भग्न हो जाता है
और बिखर जाते हैं चारो ओर
राक्षस ही राक्षस!

—नरेश गुप्त 'नीरज'

देवदयान्द बता गये

लेखक—स्वर्गीय प० देवेन्द्र जी तूफान
स्थान पो० सुरजपुर जि० गाजियाबाद (यू०पी०)

भारत देश हमारा प्यारा बन जाए स्वर्ग नगरिया।
देव दयानन्द बता गए हमे वैदिक धर्म डगरिया ॥
एक ब्रह्म का पूजन हो ना पूज दर दीवारो को।
सन्ध्या हवन कर नर-नारी रख शुद्ध विचारो को।
अन्न के घट-पट भरे हुए हो कोठ खास कुटरिया।
सभा सचिव मन्त्री ससद मे मनु वद के ज्ञाता हो।
राज्य की गद बनाकर खेल राम भरत से भ्राता हो।
सीता जैसी माता हो जो तज दे महल अटरिया ॥
शिल्प शास्त्र के पडित हो और सुखी सभी किसान हो।
कान पकड लाए शेरो के बच्चे भरत समान हो।
मृग के तुल्य बगड मे उछल बछड गाय बछरिया।
आई है शुभ घडी देश मे फिर स नव निर्माण की।
शुद्ध भावना बनी रह प्रभु देवेन्द्र तूफान की
चाहे कोई उछाले सोना चादी बीच बजरिया ॥

गाजर के गुण

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

आजकल गाजर की फसल शुरू हो गई है और बाजार मे सभी प्रकार की गाजर उपलब्ध है। गाजर कई रगो मे होती है जैसे कि काली नारगी बैगनी और लाल रग की गाजर। इन सभी प्रकार की गाजरो मे अनेको प्रकार के गुण होते हैं। किन्तु विशेष लाभ की दृष्टि से देशी गाजर अधिक लाभदायक होती है।

कहावत है कि—

गाजर, बबआ आमला
जो खाय मन लाय।
क्षुधा बढे कब्जी मिटे,
खून साफ हो जाय ॥

गाजर के उपयोग करने व खाने का ढग इस प्रकार—गाजर कच्ची खाने से तथा चबा-चबा कर खाने से पेट साफ रहता है। गाजर मे १२ किस्म के लवण पाये जाते हैं। इसमे सल्फर, सोडियम क्लोरीन मैगनेशियम, कैलशियम सिलकन पोटशियम इत्यादि सभी तत्त्व मोजूद है। जो कि कब्जी दूर करने म सहयोगी हैं।

गाजर स्वास्थ्य वर्धक और गुणकारी तत्त्वो का भण्डार है। गाजर के रस मे उपरोक्त सभी तत्त्व पाये जाते हैं जो लाभकारी व पुष्टिकारक होते हैं। गाजर का हलुवा बना कर भी खाया जाता है। गाजर को छील कर बीच की नली को निकाल देना चाहिए। फिर पानी मे धोकर घीया कस म कस कर दूध मे पकाना चाहिए गाढा होने पर मीठा मिला कर हलुवा तैयार होता है। कुछ लोग मावा (खोआ) भी मिलाते हैं जिसमे बादाम पिस्ता काजू इलायची मिलाकर तयार करत है जिसके सेवन करन म शरीर पुष्ट होना है।

गाजर की सब्जी बना कर खाने से पेट साफ रहता है तथा पेट की बीमारी खत्म होती है। रक्त शुद्ध होना है। इसलिए गाजर का उपयोग अवश्य करना चाहिए। गाजर को बालू म भून कर खान मे बहुत गुण बढ जात हैं किन्तु ठण्डी करके खाना चाहिए नही तो दातो की जड खराब हो जाती हैं।

गाजर का मुरब्बा भी बनाया जाता है जो कि कब्जी को खत्म कर के भूख बढाता है। गाजर के रस मे थोडा सा गुड मिलाकर पीने से मूत्र विकार दूर हाता है। साथ ही चर्म रोग ठीक होते हैं। सस्ती मिलती है। आजकल मौसम है प्रयोग कर लाभ उठायें।

समाचार सन्देश

आगामी १५ फरवरी १९८६ को दिल्ली में डी०ए०वी० शताब्दी समारोह पर विशाल शोभा यात्रा कार्यक्रम

सभी आर्यसमाजों व आर्यजनों से इसमें भाग लेने की अपील

दिल्ली, ४ दिसम्बर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने आगामी १५ फरवरी १९८६ को डी० ए० वी० शताब्दी समारोह पर निकलने वाले विशाल शोभा यात्रा मे सम्मिलित होने के लिए सभी आर्य समाजो व कार्यकर्ताओ को विशेषकर दिल्ली की समस्त आर्य जनता से अपील की है कि इस दिन सभी लोग अन्य कार्यक्रमो को छोडकर इस शोभा यात्रा मे बडी सख्या मे भाग लें।

यह शोभा यात्रा प्रात ११ बजे लालकिला मैदान मे प्रारम्भ होगी और चादनी चौक घण्टाघर नई सडक चावडी बाजार हौजकाजी अजमेरी गेट, मिण्टो रोड, कनाट प्लेस रीगल बिल्डिंग, पार्लियामेण्ट स्ट्रीट सरदार पटेल चौक गोल डाकखाना, बिडला मन्दिर से होती हुई साय ५ बजे आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे समाप्त होगी।

इस अवसर पर अनेक कार्यक्रमो का भी आयोजन किया जा रहा है।

प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा,
दिल्ली

विस्थापितो और घुसपैठियो मे भेद किया जाए

हिन्दू रक्षा समिति की अध्यक्षा पंडिता राकेश रानी का वक्तव्य

असम समझौते के अन्तर्गत बगलादेश से असम मे आए लोगो को १० साल के लिए मतदान से वचित करने का निणय विवाद का विषय बन गया है। इसके कारण बगलादेश से आए हिन्दू विस्थापितों के मन में आक्रोश पनप रहा है। उनका कहना है कि भारत विभाजन के समय उन की इच्छा के विरुद्ध उन्हे बगलादेश तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान मे रहने के लिए विवश किया गया था। उन्होने कभी पाकिस्तान बनाने का न तो समथन किया था और न ही उन्होने मातृभूमि भारत से अपना सम्बन्ध विच्छेद किया था। इसलिए ये घुसपैठिये नही बल्कि विस्थापित हैं और मातृभूमि मे ससम्मान वापस लौटना उनका अधिकार है। बगला देश से आये हिन्दुओ के इस कथन मे वजन है। वे घुसपैठिये नही बल्कि विस्थापित हैं इसके विपरीत असम मे भूमि हडपने और राजनैतिक स्वार्थो को दृष्टिगत रखकर इसे बगलादेश मे मिलाने की योजना मन मे रखने वाले मुस्लिम तत्त्व घुसपैठिए हैं। घुसपैठिया और शरणार्थियो मे अन्तर समझना चाहिए। भारत सरकार ने पहले भी पश्चिमी पाकिस्तान से आने वाले हिन्दुओ को विस्थापित माना था। अब श्री लका से भागकर आने वाले पीडित तमिल हिन्दुओ को भी सरकार विस्थापित ही मानती है और उन्हे पूरा सरक्षण दे रही है। फिर इन बगलादेश के विस्थापितो को हिन्दुओ के साथ ही सौतेलापन क्यो? बगलादेश से निहित स्वार्थों के कारण घुसे मुस्लिम घुसपैठियो के स्तर पर रखने के पीछे केवल वोट की राजनीति की मानसिकता काम कर रही है। हमारा सभी राष्ट्रवादी नागरिको और सस्थाओ से अनुरोध है कि वे बगला देश से आए इन हिन्दू विस्थापितो के हितो के लिए आवाज उठाए। इनका मताधिकार रद्द करना इनके साथ घोर अन्याय है।

भवदीय
राधेश्याम शर्मा

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा, जिला राजकोट (सौराष्ट्र) भारत सरकार द्वारा अकालग्रस्त क्षेत्र घोषित

आय जनता की सूचनाथ निवेदन है कि युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द की जन्म भूमि टकारा, आज अकाल के कराल गालो मे जा रहा है। भारत सरकार ने टकारा (जिला-राजकोट) सहित समस्त सौराष्ट्र को अकालग्रस्त घोषित कर दिया है।

टकारा मे इस समय उपदेशक विद्यालय गौशाला आदि कार्य महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा द्वारा चलाये जा रहे हैं। इसके कारण टकारा ट्रस्ट को काफी आर्थिक सकट का सामना करना पड रहा है। वहा पर पानी बिल्कुल सूख गया है, जिस से काफी सकट उत्पन्न हो गया है।

मेरी समस्त आयसमाजो स्त्री-आर्यसमाजो एव अन्य आर्य सस्थाओ से तथा सभी आर्यजनो से भी प्राथना है कि इस सकट की घडी मे हमारी आर्थिक सहायता करने की कृपा कर इसके लिए हम आपके आभारी रहेंगे। यह सहायता की राशि आप चैक/ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा ३६३६५० (सौराष्ट्र] गुजरात अथवा इसके उप कार्यालय महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा, आर्यसमाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-१ के पते पर भिजवा सकते हैं।

रामनाथ सहगल
मन्त्री

वेद प्रचार गोष्ठी

अजमेर १८-११-१९८५ परोपकारिणी सभा के तत्वावधान मे ऋषि मेले के अवसर पर मध्याह्न सत्र मे चर्चा की गई। रामस्वरूप सयोजक गोष्ठी ने कहा कि (१) ऋषिकृत वेद भाष्य उसी शैली में पूरा हो (२) सब भाषाओ मे इसका अनुवाद हो (३) आक्षेपों का निराकरण हो। (४) एक निर्धारित रूप रेखा अनुसार विभिन्न देशों के मूलवासियो मे वैदिक धर्म के उपदेश की व्यवस्था हो। इन मुद्दो पर गभीर विचार करने के लिए लब्धप्रतिष्ठ वैज्ञानिक शिक्षा वेत्ता स्वामी सत्य प्रकाश जी की अध्यक्षता मे गोष्ठी हुई।

क्रमश स्वामी ओमानन्द जी महाराज (प्रधान, परोपकारिणी सभा] सत्यप्रिय शास्त्री (हिसार) प० आनन्दप्रिय जी (बडौदा), डा० भवानीलाल जी भारतीय (चडीगढ), प्रो० शेरसिंह जी (नई दिल्ली), वैद्य प० ब्रह्मानन्द जी (अजमेर), कु० सरोजिनी (आचार्या-कन्या गुरुकुल चित्तौड), प० अनन्तराम जी (ब्यावर) बजरग लाल जी (डोडियाणा), धर्मवीर जी (छातडी), वशीलाल जी (देवली), सोहनलाल शारदा जी (शाहपुरा भीलवाडा) वैद्य लक्ष्मण सिंह जी, श्रीमती मिथिलेश (महिला आर्यसमाज अजमेर), भजनोपदेशक बेगराज जी, ओकारराम वानप्रस्थी जी (खिवसर), प्रदीप (सांचोर), वैद्य धर्मसिंह जी कोठारी ने विचार व्यक्त किये। शान्ति पाठ किरोडीमल जी गुप्त ने किया।

सब वक्ताओ ने सक्षेप मे व सरल भाषा मे अपनी बात रखी। उपरोक्त चारों विषयो के बारे मे क्या कमिया रही हैं? क्यो रही हैं? कमी कैसे दूर हो सकती हैं? इन सब पर चर्चा की गई। वक्ताओं ने आगे के कार्य की दिशा की ओर सकेत किए।

श्रोताओं का यह आग्रह रहा कि इस प्रकार की गोष्ठी बार बार हो। उपरोक्त चारो विषयो पर अलग अलग से कई कई दिन गोष्ठी होनी आवश्यक है। इन चारो पर गोष्ठी हर भाषा, हर क्षेत्र मे हो, भारत के अलावा अन्य देशों में भी हो। मात्र गोष्ठी से ही सन्तोष न कर लिया जाये वरन चारो प्रकार के रचनात्मक कार्य त्वरित गति से चल। ये अपेक्षाए श्रोताओ की रही। विश्वास है इन महत्त्वपूर्ण कार्यों के सचालन मे आर्यसमाज सगठन का सतत सहयोग परोपकारिणी सभा को मिलता रहेगा।

रामस्वरूप
गोष्ठी सयोजक

धार्मिक पिक्चर

प्रचार पर्दे पर आप भी अपने आर्यसमाज मे कराइए।

गोहत्या, दहेज, महासमुद्रा के विरुद्ध तथा आर्यसमाज के शहीदो की पूर्ण जीवनिया स्लाइडस द्वारा दिखलाई जाती हैं। जोशीले गीत भी होते हैं। बिजली का प्रबन्ध अवश्य हो।

आशानन्द भजनीक
आर्य भवन
१/६३५६ प्रतापपुरा, गली न० २
वेस्ट रोहतास नगर
शाहदरा, दिल्ली-३२

दिल्ली की आर्यसमाजों के साप्ताहिक सत्संग

रविवार १५ दिसम्बर १९८५

प्रतापनगर-ब्र० भीष्मव्रत शास्त्री, आनन्दविहार जेलरोड—प० हरिश्चन्द्र आर्य। आर्यपुरा सब्जीमण्डी—प० उदयश्रेष्ठ धर्माचार्य। इन्द्रपुरी—प० वेदप्रकाश शास्त्री। किंग्जवे-कैम्प—प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री। गुजरावाला टाउन—डाक्टर रघुनन्दन सिंह। गोविन्दपुरी—स्वामी यज्ञानन्द सरस्वती। लक्ष्मीनगर विस्तार—प० चुन्नीलाल आर्य भजनोपदेशक। चूनामण्डी पहाड़गज—डा० छविकृष्ण शास्त्री। जनकपुरी बी ब्लाक—डा० धर्मदेव शर्मा। तिमारपुर—श्री अमीचन्द्र मतवाला। तिलकनगर—डा० वेदप्रकाश महेश्वरी। देवनगर—प० सोमदेव शास्त्री। दरियागंज—ब्रह्मचारिणी, पण्डिता रामदेवी एम०ए०। नागलराय—ब्रह्मचारी मनुदेव शास्त्री नारायण विहार-प० रामवीर शास्त्री, श्रीनिवास पुरी—प० अमरनाथ कान्त आर्योपदेशक। टैगोर गार्डन—पं० कामेश्वर शास्त्री। प्रीतमपुरा—प० नेत्रपाल आर्य। प्रशान्तविहार—प० चमनलाल आर्योपदेशक। पंजाबीबाग एक्सटेन्सन—प० वेदव्यास आर्य भजनोपदेशक। पंजाबी बाग—आचार्य हरिदेव सिद्धान्तभूषण। भोगल—महात्मा देवेश भिक्षु। मौडलबस्ती—प० तुलसीराम आर्य। मोतीबाग—प० बलवीरसिंह शास्त्री। महावीरनगर—प० रमेशचन्द्र वेदाचार्य। राणाप्रताप बाग—प० अशोक विद्यालंकार। राजौरी गार्डन—पं० ब्रह्मप्रकाश वागीश। रमेशनगर—आर्यवीर रणजीतसिंह राणा। लक्ष्मीबाई नगर-प० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्त शास्त्री। लड्डूघाटी—मा० मोहनलाल गांधी। सोहनगंज-पं० मुनिदेव भजनोपदेशक। शालीमार बाग-डा० सुभाषचन्द्र शास्त्री। शादी खामपुर—प० देवराज वैदिक मिशनरी। श्रीनगर—श्रीमती कस्तूरी देव आर्या। हौजखास—आचार्य श्यामलाल। अनाजमण्डी शाहदरा—महात्मा रामकिशोर वैद्य। दीवानहाल—आचार्य हरिदेव सिद्धान्तभूषण। वोट क्लब दोपहर १ बजे से २ बजे तक ९ १०, ११, १२ १३ दिसम्बर आचार्य हरिदेव सिद्धान्त भूषण तक केशरी का प्रवचन होगा।

व्यवस्थापक
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेदप्रचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशकों के कार्यक्रम

दिसम्बर १९८५

१ महात्मा रामकिशोर जी वैद्य महोपदेशक ९ दिसम्बर से १५ दिसम्बर आर्यसमाज अनाजमण्डी शाहदरा २२, २३, २४ दिसम्बर-आर्यसमाज सोहना [हरियाणा) २८, २९ दिसम्बर आर्यसमाज मोतीनगर नई दिल्ली-१५

२. पण्डित सत्यदेव स्नातक रेडियो टी०वी० कलाकार ९ से १५ दिसम्बर तक अनाजमण्डी शाहदरा, संगीत कार्यक्रम रहेगा।

३ पण्डित जोतीप्रसाद ढोलक कलाकार ९ से १५ दिसम्बर अनाजमण्डी शाहदरा-संगीत कार्यक्रम।

४ प०वेदव्यास आर्य प्रचारक संगीत कलाकार ९ से १५ दिसम्बर, आर्यसमाज कृष्णनगर कार्यक्रम रहेगा, १८ से २२ दिसम्बर, आर्यसमाज ऋषिनगर सोनीपत (हरियाणा)।

५. आचार्य हरिदेव सिद्धान्तभूषण ९ से १३ दिसम्बर, दोपहर बोट क्लब कार्यक्रम रहेगा।

६ पं० चुन्नीलाल आर्यप्रचारक संगीतज्ञ १५ दिसम्बर प्रातः ९ बजे, लक्ष्मीनगर विस्तार (संगीत कार्यक्रम) १६ से २० दिसम्बर तक दोपहर १ बजे से २ बजे तक वोट क्लब कार्यक्रम संगीत द्वारा प्रस्तुत करेंगे।

व्यवस्थापक
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग
दि० आ० प्र० सभा

हरिजन युवक बनवारी विधर्मियों के चंगुल से मुक्त करा दिया गया

तिजारा। दिनांक ४-१२-८५ ग्राम खातीवाडा (टपूकड़ा] की मस्जिद के इमाम दुल्ली फकीर आदि साथियो द्वारा हरिजन युवक बनवारी को धर्म परिवर्तन के लिए उठा लिया गया था जिसको थाना टपूकड़ा के अथक प्रयासों से आर्यसमाज एवं विश्व हिन्दू परिषद तिजारा के कार्यकर्ताओं ने मुक्त कराकर शुद्ध कर लिया गया है।

बिशनदास आर्य
मन्त्री
आर्यसमाज तिजारा, अलवर

आर्यवीर दल की देन युवकों का शारीरिक स्वास्थ्य विकास

ले०—रामाज्ञा वैरागी संचालक
सार्वदेशिक आर्यवीर दल बिहार

युवकों की पीढ़ी, राष्ट्र के भविष्य की आधारशिला होती है। इस आधारशिला को सशक्त रखने के लिए युवकों के शारीरिक स्वास्थ्य के विकास की दिशा में आर्यवीर दल का प्रयास हमारे सामने है। आर्यवीर दल की शाखाओं और शिविरों के माध्यम से युवकों को पूर्ण अनुशासित जीवन जीने और ब्रह्ममुहूर्त में उठने की प्रवृत्ति को जागृत करने की प्रेरणा दी जाती है। इन शाखाओं के माध्यम से शारीरिक शक्ति को सशक्त बनाने का प्रयत्न किया जाता है। दैनिक व्यायाम का अभ्यास युवकों के लिए सक्षम सिद्ध होता है। ऐसे असंख्य उदाहरण हमारे सामने हैं, जो आर्यवीर दल में सम्बद्ध होने से पूर्व आचरणहीन ही नहीं शक्ति से क्षीण हो चुके थे उनके भीतर संगठित चरित्र शक्ति का निर्माण ही नहीं हुआ वरन् उनके भीतर नवजीवन का संचार हुआ। वे एक आदर्श और साहसी युवक के रूप में समाज के बीच प्रतिष्ठित हुए। आर्यवीर दल की स्पष्ट मान्यता है कि चरित्रवान युवक ही जागृत राष्ट्र के निर्माण में सही भागीदार होते हैं। युवकों का चरित्र ही राष्ट्रीय चरित्र को निरूपित करता है। आर्यवीरदल आज भी अपने इसी लक्ष्य और उद्देश्य को लेकर अग्रसर है।

साधना की भूमि या साधना मन्दिर

पृथ्वी राष्ट्र का शरीर है, जनता प्राण है और संस्कृति है मन शरीर प्राण और मन के सम्मिलन से ही राष्ट्र की आत्मा का निर्माण होता है। हमारे देश का नाम आर्यावर्त है, भारत है। भारतीय तात्पर्य आर्य संस्कृति की स्पष्ट परिभाषा है—कृण्वन्तो विश्वमार्यम और हमारी संस्कृति का स्वर है—सर्वे भवन्तु सुखिन। इस परिभाषा के अध्ययन के लिए शिक्षा और स्वाध्याय अनिवार्य है। वेदों में उत्तम कोटि के राष्ट्र निर्माण के लिए मानसिक तेज तथा शारीरिक शक्ति की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की गई है। इसी दृष्टि से इस परम पावन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आर्य वीरदल और स्वाध्यायी प्रकृति को अनुप्रेरित करने, ब्रह्मचर्य धर्म पालन करने के साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य की समुन्नति के लिए और विशिष्ट गुणों की ओर अभिरुचि जागृत करने के लिए साधना भूमि या साधना मंदिर के निर्माण की योजना को अंतिम रूप दिया गया। आर्य वीर दल की ओर से भारत के विभिन्न प्रदेशों में बहुत सारे साधना मंदिर स्थापित किए गए। यह योजना समग्र रूप से प्रशंसित और प्रतिष्ठित हुई है। बीच में कुछ शिथिलता भी आई है किन्तु अब पुन जागरण है। जिसके लिए हमारे प्रधान संचालक श्री बाल दिवाकर हंस तथा उपप्रधान संचालक डा० देवव्रत आचार्य समर्पित हैं। आर्यवीर दल के कार्यों की विशेष जानकारी हेतु 'आर्यवीर दल एक परिचय" पुस्तक छप गई है अवश्य पढ़े।

शोध-संगोष्ठी

"आज दिनांक २४ ११-८५ ई० को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोला झाल मेरठ (उत्तर प्रदेश) में पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में एक शोध संगोष्ठी सम्पन्न हुई। जिसका संयोजन डा० निरूपण जी विद्यालंकार ने किया है। इस संगोष्ठी का विषय था—'वैदिक संहिताओं में देवतावाद' इस संगोष्ठी में प्रोफेसर शेरसिंह, श्रीमती प्रभात शोभा, डा० कर्णसिंह, डा० वेदपाल (पंजाब वि० वि०), डा० रमा दुबलिश, डा० वेदप्रकाश, कु० शीला (शोध छात्रा दि० वि०वि०), सुनीता वर्मा, श्री सोमदेव शतांशु, श्री शिवशंकर तथा ब्रह्मचारी वाचस्पति आदि वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये। अन्त में गुरुकुल के मन्त्री प० श्री इन्द्रराज जी ने सब को धन्यवाद देते हुए शोध संस्थान की योजना पर प्रकाश डाला अगली संगोष्ठी १३ जनवरी १९८६ को आयोजित करने का निश्चय किया गया।

भवदीय
इन्द्रराज मन्त्री

ग्रेटर कैलाश १ मे आर्य युवा सम्मेलन सम्पन्न

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश १ के वार्षिकोत्सव पर आर्य युवा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए श्री अजय सहगल ने सामाजिक संस्थाओ से माग की कि वे युवको को उचित प्रतिनिधित्व दे। युवा वर्ष के उपलक्ष्य मे कुछ आर्य संस्थाए ही कार्यक्रमो मे युवाओ का ध्यान दे पाई है। आर्यसमाज के प्रारम्भिक इतिहास मे हम देखते है कि युवा वर्ग की प्रचार शैली व उत्साह से ही आर्यसमाज ने बहुमुखी उन्नति की।

प्रसिद्ध अध्यक्ष श्री बलवीर एम ए ने आर्यसमाजो से अपील की कि वे युवको को आकर्षित करने के लिए मन्दिरो मे अखाडे व्यायामशालाए जूडो कराटे केन्द्र और योगासन कक्षाओ का आयोजन करे।

युवा पत्रकार श्री नरेन्द्र अवस्थी ने कहा कि कोई भी संस्था युवको के आने से ही गतिशील होती है। युवाओ को व्यसनो से मुक्ति दिला कर राष्ट्र की सेवा मे उन्हे आर्यसमाज ही लगा सकता है।

चन्द्रमोहन आर्य

आर्य सत्याग्रह हैदराबाद पेंशन का मामला

दिल्ली २ दिसम्बर।

जिन लोगो ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १९३८-३९ मे सार्वदेशिक सभा द्वारा सचालित निजाम हैदराबाद के विरुद्ध आदोलन मे भाग लिया था और जिन्हे जेल की सजा हुई था। उन सब सत्याग्रहियो से निवेदन है कि अपना प्रार्थना पत्र अपने नाम पिता के नाम स्थान वहा से सत्याग्रह के लिए गए थे और जहा गिरफ्तार हुए तिथि, जेल का नाम जहा प्रारम्भ मे भेजे गए और वहा से छूटे तथा छूटने की तिथि के विवरण सहित अधिकतम २० दिसम्बर १९८५ तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २ के पते पर भिजवा देवे ताकि उनका मामला केन्द्रीय सरकार के सामने पेंशन हेतु स्वीकृत कराया जा सके। इसके उपरान्त यदि कोई व्यक्ति छूट गया तो सार्वदेशिक सभा उनके मामले मे किसी भी प्रकार के सहयोग के लिए उत्तरदायी नही होगी।

रामगोपाल शालवाले
प्रधान सार्वदेशिक सभा दिल्ली

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल की छात्राओ के वेदप्रचार की धूम

२६ ८ ८५ से २९ ८ ८५ तक मातृ मन्दिर की छात्राओ ने पलामू बिहार के अन्तर्गत विश्रामपुर मे आयोजित विशाल यजुर्वेद पारायण यज्ञ मे ऋत्विज का कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। बालिकाओ के मधुर वेद मन्त्रोच्चारण से दूर २ के अनेक ग्रामो की लाखों की संख्या मे जनता मन्त्रमुग्ध रही और उन्होने बालिकाओ का स्नेह से सत्कार किया वस्त्र तथा ११०१) रु० की थैली भेट की।

बालिकाओ के भावपूर्ण प्रेरणा प्रद कार्यक्रमो शाखा का मोल, दहेज का वापसा, हिन्दी वेदपाठ प्रशिक्षणम सत्यार्थ प्रकाशस्य रहस्यम (संस्कृति) आदि कार्यक्रमो का धूम रही।

आचार्या डा० पुष्पावती जी के प्रवचनो मे जनता अत्यधिक प्रभावित रही। ग्रामीण जनता के स्नेह से अभिभूत होकर आचार्या जी ने भविष्य मे आवश्यक सहयोग देने तथा वहा कन्या गुरुकुल खोलने का आश्वासन दिया। आचार्या जी ने उन्हे ऋषि दयानन्द प्रदर्शित वैदिक पथ अनुसरण की प्रेरणा दी।

लुधियाना मे विशाल पारिवारिक सत्संग

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना के सहयोग से आर्य युवक सभा की ओर से रविवार ३ नवम्बर १९७५ को साय ३ १५ बजे से ६ बजे तक श्री राम शुक्ल जी यादव के निवास स्थान पर पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया तथा उनका मनोहर प्रवचन हुआ। वेद प्रचार भजन मण्डली लुधियाना की ओर से श्री किरपा राम जी आर्य तथा श्री यशपाल जी आर्य ने भजनो का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस सारे समारोह की अध्यक्षता श्री नवनीत लाल जी ढीगरा प्रधान आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना, ने की। बहुत बडी संख्या मे सत्संग प्रेमियों ने इस सत्संग में भाग लेकर धर्म लाभ उठाया।

रोशन लाल आर्य
अध्यक्ष
वेद प्रचार विभाग
आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज बसई दारापुर रतन पार्क रामगढ ई एस आई कालोनी नई दिल्ली ११००१५ मे ४ नवम्बर से १० नवम्बर १९८५ तक वेदप्रचार सप्ताह का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमे यज्ञ के ब्रह्मा डा० धर्म देव शर्मा तथा सतदेव जी रेडियो कलाकार के प्रतिदिन भजन और आचार्य हरिदेव जी तक केशरी द्वारा कथा के माध्यम से वेद मार्ग पर चलने का सदुपदेश हुआ। पूर्णाहुति के दिन प्रो० भारत मित्र जी शास्त्री खुशी राम जी ने यज्ञ एव वेद के सम्बन्ध मे सदुपदेश दिया। इसी अवसर पर श्री राजकुमार जी त्यागी सदस्य दिल्ली नगर निगम ने प्रो० दुनीचन्द पुस्तकालय एव वाचनालय का अपने करकमलो से उदघाटन किया और ३१०० रुपये प्रदान कर सभी लोगो को वेद उपनिषद रामायण आदि ग्रन्थो के अध्ययन की प्रेरणा दी। स्व० प्रो० दुनीचन्द जी की पुत्री श्रीमती शान्ति सभरवाल ने ५००/ रुपये तथा धार्मिक पुस्तक प्रदान की। श्री मनसाराम जी भूतपूर्व कौसलर ने सभी का धन्यवाद और समय समय पर अच्छे-अच्छे ग्रन्थो के अध्ययन के लिए आन का निमन्त्रण दिया।

कृष्ण कुमार छाबडा
मन्त्री
आर्यसमाज बसई दारा पुर
नई दिल्ली ११००१५

आर्यसमाज शालीमार बाग दिल्ली मे योग प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह सम्पन्न

माननीय श्री स्वामी अपरोक्षानन्द जी महाराज के निर्देशन मे २० ११ ११८५ से चलाये जा रहे योग प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह निम्न कार्यक्रमानुसार आयोजित किया गया है—

रविवार दिनाक १ १२ १९८५

प्रात ५ ३० बजे यज्ञ
६ ०० बजे योगाभ्यास
७ ३० बजे योग प्रशिक्षण शिविर समापन समारोह

अध्यक्षता स्वामी अपरोक्षानन्द जी वक्ता ब्रह्मचारी जितेन्द्र व साथी डा० रघुवीर वेदालकार डा० धर्म पाल।

प्रात ८ ४५ बजे शान्तिपाठ व प्रसाद वितरण

आप सब सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक
ओमदत्त भारद्वाज भगवती प्रसाद हरिराम गुप्त जगदीश चन्द्र गुप्ता देवराज कालरा कमला लाल बाड डा० आर०के० गोयल भोला ठाकुर आर्य्येय वेदप्रकाश महता नानक चन्द गुप्ता।

सर्वप्रिय दानवीर प्रधान श्री सोहनलाल जी तुली के आकस्मिक निधन पर भावभीनी श्रद्धाजलि

आर्यसमाज किशनगंज (मिल एरिया) दिल्ली के श्रद्धेय प्रधान श्री सोहनलाल जी तुली जिनका आकस्मिक निधन १० ११ ८५ को हुआ और क्रिया रस्म बुधवार दिनाक २० ११ ८५ को हुई उसमे आर्यसमाज किशनगंज (मिल एरिया) की ओर से निम्नलिखित श्रद्धाजलि प्रस्तुत की गई।

श्रद्धेय श्री सोहनलाल जी तुली आर्यसमाज किशनगंज (मिल एरिया) दिल्ली के जन्म देने वाले इन महापुरुषो मे से एक महान पुरुष थे जो कि आगे चलकर वे एक आर्यसमाज के कमठ कार्यकर्ता के रूप मे उभरे और वर्षो तक इस आर्यसमाज के प्रधान पद को सुशोभित करते रहे। उनके अथक परिश्रम त्याग निस्वार्थ सेवा तथा उनकी निष्ठावान शुभ भावनाओ का ही यह श्रेय है कि इस क्षेत्र में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ इस आर्यसमाज का अपना एक महत्वपूर्ण ऊचा स्थान है। इन शब्दो के साथ दिवगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

इसके अतिरिक्त इस आर्यसमाज के वर्तमान प्रधान डा० एस एस कामरा एव कविराज श्री बी सी जोशी प्रधान बाजार कमेटी किशन गंज दिल्ली ६ के अतिरिक्त आर्य समाज के एक प्रमुख नेता मलिक रामलाल श्री ओमप्रकाश शास्त्री श्रीमती कौशल्या मलिक भूतपूर्व कान्सलर श्री बलबीर मित्र आनन्द और श्री कामेश्वर शास्त्री ने भी अपनी श्रद्धाजलि दिवगत आत्मा की शान्ति एव सदगति के लिए भेट की। इस शोक सभा मे १५०० से भी अधिक बहन और भाई उपस्थित थे।

[जे पी पाठक]
मन्त्री
आर्यसमाज किशन गंज
(मिल एरिया) दिल्ली-६

आवश्यकता है

सुयोग्य वर वधू मेल मिलान के लिए श्री आत्मदेव, संयोजक आदर्श विवाह केन्द्र दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली से सम्पर्क करें।

निम्न युवकों युवतियों के लिए सुयोग्य मेल वाछित हैं —

सुयोग्य वर चाहिए—

१ कन्या २४ वर्ष ५-३ बी० ए० पिता दिल्ली में व्यापाररत, २ कन्या २२ वर्ष ५-४ बी/काम सरकारी सेवा मे ३ कन्या २१ वर्ष ५-४ बी० काम गृहकार्य मे दक्ष, ४ कन्या २१ वर्ष, ५-४ एम०ए०बी० एड, ५ कन्या २४ वर्ष ५-३ बी०ए० आय एक हजार रुपये मासिक ६ कन्या २८ वर्ष ५-३ बी० काम, सरकारी सेवारत, आय १,५००/- मासिक ७ कन्या २३ वर्ष ५-३ बी०काम पिता प्रिंसिपल, ८ कन्या २३ वर्ष बी० ए० बी०एड पिता आई०ए०एस० ९ कन्या २२ वर्ष ५ ५ बी०ए० बी०एड० सरकारी सेवा ७०० रुपये मासिक, १० कन्या २६ वर्ष ५ २ बी० ए०, ११ कन्या २८ वर्ष ५ फुट नर्सिंग ट्रेण्ड कार्यरत १२ कन्या २२ वर्ष, ५-५ बी० ए० आय ११५० रुपये मासिक १३ कन्या २१ वर्ष ५-२ अध्यापिका ११००/- रुपये मासिक, १४ कन्या २० वर्ष ५-४ बी०ए० ट्रेनिंग कोर्स, ओप्रेटर टेलीफान आय ११००/- मासिक।

सुयोग्य वधू चाहिए—

१ युवक २५ वर्ष ५-७ मैकेनिकल इन्जीनियर आय १८००/- रुपये मासिक २ युवक २५ वर्ष ५-८ इंच इलैक्ट्रीकल इंजीनियर आय १५००/- मासिक ३ युवक २५ वर्ष ५-२ एम० बी०बी०एस०, ४ युवक २८ वर्ष ५-८ इंच एम० बी० बी० एस० २३००/- मासिक, ५ युवक ३० वर्ष ५ ७ इंच एम०बी० बी०एस० अपना क्लिनिक ६ युवक ३० वर्ष ५-८ एम०बी०बी० एस० अपना क्लिनिक ७ युवक ३० वर्ष ६ प्रोफेसर पी० एच०डी० आय २,५००/- मासिक, ८ युवक २८ वर्ष ५-८ मैकेनिकल इन्जीनियर आय २ ३००/- मासिक, ९ युवक २२ वर्ष ५-७ बी० काम, अपना कार्यटाइप फोटोस्टेट २,०००/- मासिक १० युवक २७ वर्ष ५-८ इंच बी०काम इण्डियन एयर लाइन्स १८०० मासिक, ११ युवक २७ वर्ष ५-७ एल०एल०बी० अपना व्यापार २,००० - मासिक १२ युवक २८ वर्ष ५ फट एम० काम यूनियन बैंक आय १,८०० - मासिक, १३ युवक ३३ वर्ष ५-४ बी० ए० आय १२००/ मासिक, १४ युवक २८ वर्ष ५ ८ सरकारी सेवा १०००/- मासिक।

डा० धर्मपाल आर्य
महामन्त्री

मुनि-चोरी

(पृष्ठ ७ का शेष)

मुनि ने पूर्वोक्त शंख और लिखित कथा को और सकेत करते हुए कहा— हे पाण्डव श्रेष्ठ युधिष्ठिर! राजा सुद्युम्न द्वारा लिखित को दण्ड प्रदान रूपी श्रेष्ठ कर्म के फलस्वरूप निश्चय ही उच्चतम पद प्राप्त होगा व्यास मुनि कहते हैं—

(१) महाराज! प्रजाजनो का पालन पूर्णरूप से करना ही क्षत्रिय का मुख्य धर्म है। अन्य काम कुमार्ग तुल्य हैं। अत तुम मन को शोक में निमग्न मत करो।

(२) हे धर्मज्ञ सत्पुरुष! तुम अपनी पत्नी व भाइयो की हितकर बात सुनो। राजन् दण्डधारण कानन का पालन! ही क्षत्रिय धर्म है। सिर मुंडाकर सन्यासी बन जाना ठीक नही।

शोक मत करो —श्रीकृष्ण

इस सगोष्ठी मे श्रीकृष्ण भी उपस्थित थे। अर्जुन ने उनसे प्रार्थना की—हे माधव! धर्मपुत्र युधिष्ठिर स्वय भाई बन्धुओ के वियोग से शोक सन्तप्त हो स्वय ही दुःख सागर मे डूब गये हैं। आप इन्हे धैर्य दीजिए। उस समय श्रीकृष्ण बोले—

१ सिंह पुरुष! तुम शोक मत करो। शोक तो शरीर को सुखा देने वाला होता है। इस समरागण मे जो वीर मार गये है वे फिर सहज ही मिल सके यह सभव नही है।

२ राजन! जैसे सपने मे मिले हुए धन जागने पर मिथ्या हो जाते हैं उस प्रकार आज क्षत्रिय महासमर मे नष्ट हो गये है उनके दर्शन अब सभव नही है।

३ क्षत्रिय धर्म मे तत्पर रहने वाले वेद वेदाङ्गो के पारगत यह शूर वीर नरेश पुण्यमयी वीरगति को प्राप्त हुये है उनके लिए तुम्हे शोक नही करना चाहिए।

युधिष्ठिर का नगर मे प्रवेश

अपना धर्मशोला वीरागना बुद्धिमती द्रौपदी तप पूत व्यासमुनि और नीति तथा धर्म के अगाध भण्डार श्रीकृष्ण तथा अपने चारो भाइयो के उत्साहवर्धक शब्दो को सुन युधिष्ठिर की आत्मविश्वास की ज्योति प्रदाप्त हो गई। सुसज्जित आकर्षक स्वस्थ रथ पर माता कुन्ती महारानी द्रौपदी और अस्त्र शस्त्रो से सज्जित भाइयो और सेना सहित उच्च स्वर समन्वित विभिन्न वाद्य यन्त्रो और मस्त गज अश्व आदि के रथ पर विराजमान वेद पाठी विद्वान् द्विज वर्ग के गुणगान और मगल स्तोत्र पाठ की मधुर वाणी से गूंजते हस्तिनापुर नगरी मे सहस्रो लाखो आबाल वृद्ध नर-नारियो का हर्ष ध्वनि और सतत पुष्प वर्षा सहित सम्राट् युधिष्ठिर ने राजधानी हस्तिनापुर मे प्रवेश कर आय साम्राज्य की चतुर्दिक लहराती ध्वजा फहराई।

आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार
के सी ३७/बी अशोक विहार
दिल्ली-५२

गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल का महोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल मु०नगर का २१ वा वार्षिक महोत्सव २४ से २७ नवम्बर तक बडे हर्षोल्लास के वातावरण मे सम्पन्न हुआ। महोत्सव मे समाज सुधार आन्दोलन आर्य सम्मेलन शिक्षा सम्मेलन किसान सम्मेलन व व्यायाम सम्मेलनो का आयोजन किया गया। महोत्सव मे लगभग ५० हजार लोगो ने भाग लिया।

सम्मेलन मे सवश्री स्वामी आनन्द वेश जी शक्तिवेश जी चन्द्रदेव जी, घोरसिंह शास्त्री प्रमपाल शास्त्री चौ० प्रियव्रत जी सहदेव बघडक, वीरेन्द्रवीर खेमचन्द, शान्ति स्वरूप जौली, आदि अनेक मुख्य वक्ताओ ने देश की समस्याओ जैसे शराब का बढता हुआ प्रचलन दहेज अनुशासन हीनता, राष्ट्रीय सुरक्षा वर्तमान शिक्षा प्रणाली देश की अखण्डता किसानो की समस्या आदि विभिन्न विषयों पर अपने अपने विचार व्यक्त किये।

स्वामी आनन्दवेशजी की अध्यक्षता मे २४ नवम्बर से चल रहे यजुर्वेद महायज्ञ की पूर्णाहुति २७ नवम्बर को हुई। गुरुकुल की पवित्र यज्ञवेदी पर हजारो नर नारियो ने यज्ञोपवीत ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ आदि की दीक्षाए ली और शराब मास, धूम्रपान आदि समस्त निषिद्ध पदार्थों को त्यागने की प्रतिज्ञाए की।

इस महायज्ञ के अध्यक्षीय भाषण मे वेदो के प्रकाण्ड विद्वान श्री स्वामी आनन्दवेश जी महाराज ने अपनी पुरातन सस्कृति एव यज्ञो के महत्व पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज के सभी वर्गों को राष्ट्र उत्थान एव अखण्डता के लिए सतत क्रियाशील रहना चाहिए।

सवाददाता आर्यसन्देश

रजि० न० ৗ० (मो०) ৩৬   साप्ताहिक आर्यसन्देश   १५ दिसम्बर १९८५   बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० यू १३९
R N No 3238/77   Post in N D P S O on 13 12 85   Licenced to post without prepayment Licence No U 139

बाबा पृथ्वीसिह

(पृष्ठ १ का शेष)

कार व महान समाज सुधारक बताया। उन्होने कहा कि पजाब के लिए उनकी सेवाओ को विशेषत पिछड वर्गो के लिए किए गए कार्यों को लम्बे समय तक याद किया जाएगा। उनका मृत्यु से अपूरणीय क्षति हुई है

पजाब और हरियाणा के मुख्य मन्त्रियो और अनेक नेताओ ने भी बाबा आजाद को अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा—श्री आचार्य पृथ्वीसिह आजाद स्वतन्त्रता सग्राम के प्रबल योद्धा महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी महात्मा गाधी के दिशा निर्देशन मे अनेक आदोलनो मे बढ चढ कर भाग लेने वाले राष्ट्र सेवक थे। …जनो के

महात्मा गाधी ने वहा भेजा था उन्होने हरिजनो के बीच रहकर उन की शिक्षा सहयोग कर सही रास्ता दिखाया और उन्हे धर्म परिवर्तन से बचाया। प० मदनमोहन मालवीय ने उन्हे काशी बुलाकर सम्मानित किया और आचार्य शब्द से सम्बोधित किया। श्री आचार्य जी सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान रहे। गुरुकुल कागडी के कुलाधिपति और पजाब प्रतिनिधि सभा के भी प्रधान रहे हैं। जीवन के अन्तिम काल मे उनकी इच्छा सत्यार्थप्रकाश का गुरुमुखी मे अनुवाद करने की थी जो पूरी नही हो पाई। उनके जाने से आर्य जगत को गहरी क्षति पहुचा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली आर्यसमाज दीवान हाल गुरुकुल कागडी हरिद्वार आदि अनेक सस्थाओ से शोक सवेदना के सदेश मिले हैं।

मानव का कल्याण

(पृष्ठ ६ का शेष)

ऐसे मनुष्य हमेशा अपने सामने इस उक्ति का अनुसरण करते हैं हीरा जनम अमोल है तू इसे न गवा प्यारे और वह ईश्वर से सदव यही प्रार्थना करता हुआ इस ससार मे विचरण करता है।

सब का भला करो भगवान।
सबका सब विधि हो कल्याण॥

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी० (डी०) ७१९